धन्य व्यक्ति प्रभु की महिमा और महानता की प्रशंसा करता है।
[भजन संहिता पर चिंतन]

विषय-सूची

परिचय

सचमुच धन्य है वह व्यक्ति (भजन 1)

परमेश्वर के वचन पर मनन करके (भजन 1)

दुष्टों का मार्ग बनाम धर्मियों का मार्ग (भजन 2)

परमेश्वर, जो मेरा सिर ऊँचा करता है (भजन 3)

हे लोगों (भजन 4)

"काँपो और पाप न करो" (4:4)

"मेरे सामने अपना मार्ग सीधा करो" (भजन 5)

आँसुओं की प्रार्थना (भजन 6)

धर्मियों को स्थापित करो! (भजन 7)

परमेश्वर जो क्रोधित होता है (7:11)

"मनुष्य क्या है?" (भजन 8)

प्रभु पर भरोसा रखो! (भजन 9)

प्रभु जो दीन-दुखियों की इच्छाओं को सुनता है (भजन 10)

अहंकारी विचार (10:4)

"यदि नींव ही नष्ट हो जाए, तो धर्मी क्या कर सकते हैं?" (भजन 11)

भक्तों द्वारा चाही गई सुरक्षित शरण (भजन 12)

भक्त और विश्वासी (12:1-4)

प्रार्थना की प्रक्रिया (भजन 13)

परमेश्वर के लोग घेरे में (भजन 14)

परमेश्वर की उपस्थिति में रहो! (भजन 15)

प्रभु के बिना मेरे पास कोई भलाई नहीं है (भजन 16)

मेरी प्रार्थना पर कान लगाओ (भजन 17)

"हे प्रभु, मेरी शक्ति, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ" (18:1-19)

परमेश्वर जो मेरी धार्मिकता के अनुसार प्रतिफल देता है (18:20-27)

विजय का रहस्य (18:28-42)

प्रभु जो मुझे राष्ट्रों का प्रधान बनाता है (18:43-50)

परमेश्वर का वचन (भजन 19)

इसकी और अधिक चाह करो! (19:10)

"अब मैं जानता हूँ" (भजन संहिता 20)

पिता परमेश्वर, जो मेरे दिल की इच्छा वाली प्रार्थना को अस्वीकार नहीं कर सकते (20:4; 21:2)

"प्रभु की शक्ति" (भजन संहिता 21)

जब मदद करने वाला कोई न हो (22:1-11)

"मेरी मदद के लिए जल्दी आओ" (22:12-21)

'प्रभु ने यह किया है' (22:22-31)

एक संतुष्ट जीवन (भजन संहिता 23)

ज़रूरत का गहरा एहसास होना चाहिए (23:1)

वह व्यक्ति जिसकी परमेश्वर के साथ संगति है (भजन संहिता 24)

"प्रभु, इसे याद रखना" (25:1-7)

अपनी दया के अनुसार मुझे याद रखना (25:7)

वह रास्ता जो मुझे चुनना है (25:8-15)

"मेरी आत्मा की रक्षा करो और मुझे बचाओ" (25:16-22)

उस जगह से प्रेम करो जहाँ परमेश्वर की महिमा वास करती है! (1) (भजन संहिता 26)

उस जगह से प्रेम करो जहाँ परमेश्वर की महिमा वास करती है! (2) (भजन संहिता 26)

एक डरावनी स्थिति (27:1-6)

"एक चीज़ जो मैंने प्रभु से माँगी है" (27:4)

'हे मेरी आत्मा, परमेश्वर पर आशा रख!' (27:7-14)

क्या तुम्हें इसका पक्का विश्वास है? (27:13)

एक कलीसिया जो प्रभु द्वारा नहीं बनाई गई (भजन संहिता 28)

एक कलीसिया जो प्रभु द्वारा स्थापित नहीं की गई (28:5)

प्रभु को उसके नाम के योग्य महिमा दो! (भजन संहिता 29)

हे परमेश्वर, मेरे सहायक बनो! (भजन संहिता 30)

परमेश्वर पर भरोसा रखो! (31:1-8)

"फिर भी" वाला विश्वास (31:9-14)

जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है (31:15-24)

धन्य व्यक्ति (भजन संहिता 32)

नेक लोगों का कर्तव्य (भजन संहिता 33)

भले ही चीज़ें योजना के अनुसार न हों (33:11)

तेज से जगमगाओ! (34:1-7)

"प्रभु का भय मानो" (34:8-14)

"धर्मी लोगों को कई मुसीबतों का सामना करना पड़ता है" (34:15-22)

उन्हें हवा के सामने भूसे जैसा बना दो! (35:1-8)
परमेश्वर जो मुझे बचाता है (35:9-16)
परमेश्वर जो मेरी समृद्धि में खुश होता है (35:17-18)
"तेरी ज्योति में हम ज्योति देखते हैं" (भजन संहिता 36)
जो प्रभु की ओर देखता है (भजन संहिता 37)
शिकायत न करो! (37:1, 7, 8)
धैर्य रखो और इंतज़ार करो! (37:7)
दुष्ट बनाम धर्मी (37:17-22)
परमेश्वर जो हमारे कदमों को स्थिर करता है (37:23-30)
वे बातें जिनके कारण हम लड़खड़ाते हैं (37:31)
"मेरे पाप के कारण" (38:1-12)
मानवीय रिश्ते (38:11)
"हे प्रभु, मेरा उद्धार" (38:12-20)
"हे मेरे परमेश्वर, मुझसे दूर न रह" (38:21-22)
"मुझे मेरी कमज़ोरी का एहसास करा" (भजन संहिता 39)
हमारे प्रति प्रभु के अनगिनत विचार (40:1-10)
"हे प्रभु, मेरी मदद करने में जल्दी कर" (40:11-17)
आइए ज़रूरतमंदों का ध्यान रखें (भजन संहिता 41)
परमेश्वर में आशा रखो! (भजन संहिता 42)
"तेरा परमेश्वर कहाँ है?" (42:5)
"मेरी बहुत बड़ी खुशी" (भजन 43)
निराशा और चिंता (43:5)
पुराने दिनों में प्रभु ने क्या किया (44:1-8)
"भले ही हम पर ये सब बीता है" (44:9-12)

कुशल लेखक की कलम जैसी ज़बान (भजन 45)

कुशल लेखक की कलम जैसी ज़बान (45:1)

"शांत हो जाओ, और जानो कि मैं ही परमेश्वर हूँ" (भजन 46)

हमें परमेश्वर की स्तुति क्यों करनी चाहिए? (भजन 47)

परमेश्वर जो मृत्यु तक हमारी अगुवाई करता है (भजन 48)

"परमेश्वर मुझे अपनाएगा" (भजन 49)

आइए हम धन-दौलत पर भरोसा न करें। (49:6-8)

जानवरों जैसे लोग (49:12, 20)

दिखावटीपन (भजन 50)

सच्ची आराधना जो परमेश्वर को भाती है (भजन 51)

"मैं हमेशा परमेश्वर की दया पर भरोसा रखूँगा" (भजन 52)

मूर्ख लोग (भजन 53)

प्रभु जो मेरी आत्मा को संभालता है (भजन 54)

"अपना बोझ प्रभु पर डाल दो" (भजन 55)

परमेश्वर पर भरोसा रखो! (भजन 56)

परमेश्वर के वचन की स्तुति (56:4, 10)

"मेरे आँसुओं को अपनी कुप्पी में रख ले" (56:8)

अपना मन स्थिर करो! (भजन 57)

जब मेरी आत्मा अन्याय सहती है (भजन 57:6)

न्याय करने वाला परमेश्वर (1) (भजन 58)

न्याय करने वाला परमेश्वर (2) (भजन 58)

आइए हम प्रभु की शक्ति के गीत गाएँ (भजन 59)

"हमें फिर से बहाल कर!" (भजन 60)

"जब मेरा मन व्याकुल हो" (भजन 61)

आइए सिर्फ़ परमेश्वर का चुपचाप इंतज़ार करें (भजन 62)

जब मेरा मन डगमगाता है (62:8)

"हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है" (भजन 63)

जेम्स का गीत: जंगल में गाई गई स्तुति (63:3)

परमेश्वर के कामों पर गहराई से सोचें! (भजन 64)

"तेरे मंदिर की सुंदरता से तृप्त" (भजन 65)

"आओ और देखो कि परमेश्वर ने क्या किया है!" (भजन 66)

"सारी जातियाँ तेरी स्तुति करें!" (भजन 67)

हे धर्मी लोगों, आनंदित हो और खुश हो (68:1-18)

परमेश्वर जो हमें शक्ति और सामर्थ्य देता है (1) (68:19-35)

परमेश्वर जो हमें शक्ति और सामर्थ्य देता है (2) (68:19-35)

वह जो परमेश्वर को अधिक प्रसन्न करता है (भजन 69)

वे मसीही जो दुःख में भी परमेश्वर को अधिक प्रसन्न करते हैं (69:30-31)

हे परमेश्वर, मेरी जल्दी सहायता कर (भजन 70)

एक ज़रूरी प्रार्थना (70:1, 5)

'मैं हमेशा आशा रखूँगा' (71:1-14)

एक सुंदर बुज़ुर्ग (71:9)

'मुझे और भी महान बना' (71:15-24)

आदर्श राजा (भजन 72)

शुद्ध हृदय वाले (1) (भजन 73)

शुद्ध हृदय वाले (2) (भजन 73)

हे प्रभु, याद रख! (भजन 74)

न्यायाधीश परमेश्वर (भजन 75)

परमेश्वर जो स्वयं को हमारे सामने प्रकट करता है (भजन 76)

मैं अपनी आवाज़ से परमेश्वर को पुकारूँगा (भजन 77)

मेरी कमज़ोरी (77:10)

जब मैं कमज़ोर होता हूँ (77:10-12)

"आने वाली पीढ़ियों को बताएँ" (78:1-22)

एक अस्थिर हृदय (78:23-41)

सच्चे मन से (78:42-72)

हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर (भजन संहिता 79)

"हमें बचा" (भजन संहिता 80)

परमेश्वर हमसे क्या चाहता है (भजन संहिता 81)

"हे परमेश्वर, उठ और दुनिया का न्याय कर" (भजन संहिता 82)

"उन्हें पता चले कि तू ही पूरी पृथ्वी पर सबसे ऊँचा है" (भजन संहिता 83)

धन्य व्यक्ति (भजन संहिता 84)

"हमें अपना उद्धार दे" (भजन संहिता 85)

अपने सेवक को मज़बूत कर! (भजन संहिता 86)

सच्ची कलीसिया (भजन संहिता 87)

"मेरी पुकार पर कान लगा" (भजन संहिता 88)

धन्य व्यक्ति (89:1-18)

परमेश्वर जो मुझे मज़बूत करता है (89:19-52)

हमें अपने दिनों को गिनना सिखा (भजन संहिता 90)

"मेरी शरण" (भजन संहिता 91)

प्रभु के गहरे विचार (भजन संहिता 92)

आओ हम धन्यवाद के साथ परमेश्वर की स्तुति करें (92:1)

हमें दुष्टों की समृद्धि को कैसे देखना चाहिए? (92:7)

"प्रभु का राज है" (भजन संहिता 93)

परमेश्वर जो न्याय करता है (भजन संहिता 94)

वे जो परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करते हैं (भजन संहिता 95)

सच्चे उपासक (भजन संहिता 96)

"प्रभु का राज है" (भजन संहिता 97)

"प्रभु के लिए नया गीत गाओ" (भजन संहिता 98)

परमेश्वर के शासन में कलीसिया (भजन संहिता 99)

हम परमेश्वर के पास कैसे जाएँ? (भजन संहिता 100)

आदर्श राजा और उसकी आदर्श प्रजा (भजन संहिता 101)

मसीही जो सच्चे मन से सही रास्ते पर चलते हैं (भजन संहिता 101:2)

दुखी व्यक्ति की प्रार्थना (भजन संहिता 102)

आओ हम परमेश्वर के सभी उपकारों को न भूलें (भजन संहिता 103)

"हे प्रभु, तेरे काम कितने महान हैं!" (भजन संहिता 104)

आइए परमेश्वर के कामों को याद रखें (भजन संहिता 105)

मुझे कृपा के साथ याद रखें (भजन संहिता 106)

परमेश्वर बड़े पाप के बीच भी बड़ी कृपा करता है (भजन संहिता 106:6-12)

परमेश्वर के महान प्रेम को समझें (भजन संहिता 107)

क्या आप परमेश्वर के महान प्रेम को समझते हैं? (भजन संहिता 107:43)

"मैं भोर को जगाऊंगा" (भजन संहिता 108)

"मैं प्रार्थना करने वाला व्यक्ति हूँ" (भजन संहिता 109)

"तुम्हारे जवान सुबह की ओस की तरह हैं" (भजन संहिता 110)

"अच्छी समझ" (भजन संहिता 111)

मैं पूरे दिल से परमेश्वर का धन्यवाद करूँगा और हमेशा उसकी स्तुति करूँगा (भजन संहिता 111:1, 10)

जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं, उन्हें आशीष मिलती है (भजन संहिता 112)

"प्रभु के सेवकों, स्तुति करो" (भजन संहिता 113)

परमेश्वर के पवित्र स्थान के रूप में कलीसिया (भजन संहिता 114)

जिन्हें परमेश्वर का आशीर्वाद मिला है (भजन संहिता 115)

"मैं जीवन भर प्रार्थना करूँगा।" (भजन संहिता 116)

"मैं जीवन भर प्रार्थना करूँगा" (116:1-12)

वे कारण जिनसे हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए (भजन संहिता 117)

"प्रभु का धन्यवाद करो" (भजन संहिता 118)

जो उस मार्ग (वचन) पर चलता है (119:1-8)

एक जवान व्यक्ति अपने मार्ग को कैसे शुद्ध रख सकता है? (119:9-16)

"ताकि मैं आपके विरुद्ध पाप न करूँ" (119:11)

"ताकि मैं आपके विरुद्ध पाप न करूँ" (119:11)

आध्यात्मिक ऊर्जा (119:11, 56)

जीवन का उद्देश्य (119:17-24)

मैं प्रभु के वचन की ओर दौड़ूँगा! (119:25-32)

"मैं इसे अंत तक निभाऊंगा" (119:33-40)

आज़ादी में चलें! (119:41-48)

खुद को दिलासा दें! (119:49-56)

वह प्रभु जिसने मुझे उम्मीद दी (119:49-50)

ईश्वर के वचन से ईसाई नेताओं की जीत (119:49-56)

मेरी संपत्ति (119:56)

अपने कदम मोड़ें! (119:57-64)

अपने दिल से कठोरता दूर करें! (119:70)

दुख सहने के फायदे (119:71-72)

प्रभु के वचन का इंतज़ार करें! (119:73-80)

'हे प्रभु, आप मुझे कब दिलासा देंगे?' (119:81-88)

"मेरी खुशी" (119:89-96)

समझदार व्यक्ति (119:97-104)

आइए हम आखिर तक डटे रहें! (119:105-112)

साफ़-साफ़ जानें कि आप किससे प्यार करते हैं और किससे नफ़रत! (119:113-120)

"अब प्रभु के काम करने का समय है" (119:121-128)

"अपने वचन में मेरे कदमों को मज़बूती से जमाए रखें!" (119:129-136)

जब मुझ पर मुसीबत और परेशानी आए (119:137-144)

प्रभु को पुकारें! (119:145-152)

'हे प्रभु, मुझे नई ज़िंदगी दें!' (119:153-160)

ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करें! (119:161-168)

"तब मैं आपकी तारीफ़ करूँगा" (119:169-176)

"भले ही मैं शांति चाहता हूँ..." (भजन संहिता 120)

ईश्वर, मेरा मददगार (भजन संहिता 121)

मेरी आत्मा की रक्षा कौन करता है? (121:7)

जो कलीसिया से प्रेम करते हैं, वे फलते-फूलते हैं (भजन संहिता 122)

केवल प्रभु की ओर देखें (भजन संहिता 123)

यदि परमेश्वर हमारी ओर न होता (भजन संहिता 124)

जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है (भजन संहिता 125)

"यह एक सपने जैसा था" (भजन संहिता 126)

जब तक प्रभु न बनाए, तब तक सब व्यर्थ है। (भजन संहिता 127)

"जो प्रभु का भय मानते हैं" (भजन संहिता 128)

"उन्होंने मुझे नहीं हराया" (भजन संहिता 129)

प्रतीक्षा (भजन संहिता 130)

अपनी आत्मा को शांत और स्थिर कैसे करें (भजन संहिता 131)

दूध छुड़ाए हुए बच्चे जैसा हृदय (भजन संहिता 131)

दूध छुड़ाए हुए बच्चे जैसी आत्मा (भजन संहिता 131:2)

कभी न बदलने वाला परमेश्वर (भजन संहिता 132)

कलीसिया की एकता (भजन संहिता 133)

"प्रभु को धन्यवाद दें" (भजन संहिता 134)

प्रभु की स्तुति करें! (भजन संहिता 135)

"प्रभु का धन्यवाद करें" (भजन संहिता 136)

परमेश्वर का धन्यवाद करें! (भजन संहिता 136:1)

जब हम कलीसिया के बारे में सोचते हैं (भजन संहिता 137)

सबसे बड़ी खुशी (भजन संहिता 137:6)

मैं पूरे मन से प्रभु का धन्यवाद और स्तुति क्यों करता हूँ (भजन संहिता 138)

मेरी आत्मा को बल दें! (भजन 138:3)

वह परमेश्वर जो मुझे परखता और जानता है (भजन 139)

वह परमेश्वर जो दुखियारों का पक्ष लेता है (भजन 140)

परन्तु हे प्रभु, मेरी आँखें आप पर टिकी हैं (भजन 141)

"जब मेरा मन भीतर से हिम्मत हारने लगता है" (भजन 142)

निराश हृदय (भजन 143)

हमारे जीवन में दोहराई जाने वाली स्थितियाँ (भजन 143:5)

"मुझे सुबह आपकी दया की बातें सुनने दें" (भजन 143:8)

धन्य हैं ऐसे लोग (भजन 144)

हे प्रभु, मनुष्य क्या है कि आप उसकी परवाह करते हैं? (भजन 144:3-4)

मैं प्रभु की महिमा करता हूँ। (भजन 145)

महान प्रभु की महिमा करो (145:3)

लोगों पर भरोसा न करो; परमेश्वर पर भरोसा करो। (भजन 146)

अपने परमेश्वर की स्तुति करना अच्छा और सुंदर है। (भजन 147)

परमेश्वर की स्तुति करो! (147:1)

अपने परमेश्वर की स्तुति करना अच्छा है। (147:1)

स्वर्ग और पृथ्वी की सभी चीज़ें, परमेश्वर की स्तुति करो! (भजन 148)

परमेश्वर, जो नम्र लोगों को उद्धार से सजाता है (भजन 149)

हे परमेश्वर, कृपया मुझे सुंदर बनाइए। (149:4)

"जिसमें भी साँस है, वह प्रभु की स्तुति करे" (भजन 150)

निष्कर्ष

परिचय

मैं भजन-संहिता (Psalms) पर मनन करना चाहता था। अपनी कमज़ोरी, नादानी और कमियों के बीच खुद को असहाय महसूस करते हुए, मैंने परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए ऐसा करने का फ़ैसला किया। हालाँकि बाइबल में पैंसठ अन्य किताबें हैं, पर मुझे ठीक-ठीक नहीं पता कि मैंने भजन-संहिता को ही क्यों चुना; फिर भी, मेरा मानना है कि रोज़ाना पाँच भजन (और नीतिवचन का एक अध्याय) पढ़ने के लिए चर्च से मिले प्रोत्साहन का मुझ पर असर हुआ था। डॉ. मार्टिन लॉयड-जोन्स की किताब *स्पिरिचुअल डिप्रेशन* (Spiritual Depression) में लिखी बातों, खासकर भजन 42:5, 11 और भजन 43:5 पर उनके विचारों का भी मुझ पर गहरा असर पड़ा। जब भी मैं खुद को लेकर निराश होता या तरह-तरह की मुश्किलों से परेशान होता, तो मैं भजनकार की तरह अपनी आत्मा से कहता: "हे मेरी आत्मा, तू क्यों उदास है? तू मेरे भीतर इतनी बेचैन क्यों है? परमेश्वर पर भरोसा रख..." जब मैंने परमेश्वर को पुकारा, तो मैंने उन्हें—अपने सहायक (भजन 121)—के रूप में महसूस किया, जिन्होंने मुझे "अपने परमेश्वर की स्तुति करने" (भजन 42:5, 11; 43:5) के योग्य बनाया। मैं इस अनुभव को और ज़्यादा गहराई से पाना चाहता था। यह देखकर कि भजनकार ने मुश्किलों के बीच परमेश्वर को कैसे पुकारा और आखिर में उनकी स्तुति की, मैं भी उसी अनुग्रह का आनंद लेना चाहता था। इसीलिए मैंने भजन-संहिता पर मनन करने का फ़ैसला किया।

भजन-संहिता पर मनन का यह संग्रह उन लेखों को मिलाकर बनाया गया है जिन्हें मैंने हमारी साप्ताहिक बुधवार की प्रार्थना सभाओं में उपदेश देने के बाद मूल पाठ को दोबारा पढ़कर तैयार किया था। परमेश्वर की कृपा से, सभा के बाद मैं अपने अध्ययन-कक्ष में लौटता था ताकि उस भजन पर और मनन कर सकूँ जिस पर मैंने अभी-अभी उपदेश दिया था, और अपने विचारों को लिखकर व्यवस्थित कर सकूँ। मैंने इसका शीर्षक "धन्य व्यक्ति प्रभु की ऊँचाई और महानता की स्तुति करता है" इसलिए चुना क्योंकि जब मैंने पहले भजन (भजन 1:1) की पहली आयत में बताए गए "धन्य व्यक्ति" और आखिरी भजन (भजन 150:6) की आखिरी आयत में "हर वह चीज़ जिसमें साँस है" उससे प्रभु की स्तुति (हल्लेलुयाह) करने के आह्वान पर विचार किया, तो मुझे भजन 40, "हाउ ग्रेट दाऊ आर्ट" (How Great Thou Art) (जिसका मूल शीर्षक "ओ लॉर्ड माय गॉड, व्हेन आई इन ऑसम

वंडर" था) के कोरस की याद आई: "मेरी आत्मा प्रभु की ऊँचाई और महानता की स्तुति करती है।" इन बातों को जोड़कर और भजनों (Psalms) पर समग्र रूप से विचार करने के बाद, मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि "धन्य व्यक्ति प्रभु की महानता और महिमा की प्रशंसा करता है।" मेरी प्रार्थना है कि आप और मैं भी उन धन्य लोगों में शामिल हों जो प्रभु की महानता और महिमा की प्रशंसा करते हैं।

परमेश्वर की कृपा से यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा हर तरह की आत्मिक आशीष पा लेने के बाद,

पास्टर जेम्स किम का संदेश
(अक्टूबर 2015 — इस प्रार्थना के साथ कि जब तक हमारे शरीर में साँस है, हम प्रभु की महानता और महिमा की प्रशंसा करते रहें)

सचमुच धन्य है वह व्यक्ति

[भजन संहिता 1]

चर्च में मज़ाक-मज़ाक में कही जाने वाली एक बात है जिसे "शैतान की धन्यताएँ" (Satan's Beatitudes) कहा जाता है। उन आठ धन्यताओं में से, मैं तीन पर ध्यान दिलाना चाहता हूँ जिन्होंने खास तौर पर मेरा ध्यान खींचा:

पहली धन्यता: "धन्य हैं वे जो थकान और व्यस्तता का बहाना बनाकर चर्च नहीं जाते, क्योंकि वे मेरे सबसे भरोसेमंद कार्यकर्ता बनेंगे।"

दूसरी धन्यता: "धन्य हैं वे जो पादरी की गलतियों या कमियों में दोष निकालते हैं, क्योंकि वे बिना किसी अनुग्रह (grace) को पाए उपदेश सुनेंगे।"

सातवीं धन्यता: "धन्य हैं वे जो बाइबल पढ़ने या प्रार्थना करने के लिए बहुत व्यस्त हैं, क्योंकि वे आसानी से मेरे प्रलोभनों में फँस जाएँगे और आखिर में मेरे मज़ाक का पात्र बनेंगे" (स्रोत: इंटरनेट)।

शैतान की इन तीन धन्यताओं पर विचार करते हुए, मेरा मानना है कि यह मज़ाक आज के ईसाइयों के लिए बहुत प्रासंगिक है। मुझे बहुत शर्म और लज्जा महसूस होती है, खासकर जब मैं सातवीं धन्यता के बारे में सोचता हूँ और यह महसूस करता हूँ कि कितने ईसाई दुनिया के लिए मज़ाक का पात्र बन गए हैं। हम ईसाई दुनिया के लिए हँसी का पात्र क्यों बन गए हैं? मेरा मानना है कि एक कारण यह है कि हम परमेश्वर के वचन का फल लाने में असफल रहे हैं। दूसरे शब्दों में, हम मज़ाक का पात्र इसलिए बने हैं क्योंकि हम ऐसा जीवन नहीं जी रहे हैं जो वचन को दर्शाता हो—ऐसा जीवन जहाँ वचन हमारे चरित्र का हिस्सा बन जाए। वचन की बाढ़ के बीच, हमने केवल बौद्धिक ज्ञान बढ़ाया है। हमारे पास बहुत सारी जानकारी हो सकती है, फिर भी हमारे जीवन में सच्चे

बदलाव की कमी है। यही ईसाई जीवन की वर्तमान सच्चाई है। बदलाव का अनुभव करने के लिए, हमें बुनियादी बातों की ओर लौटना होगा। हमें परमेश्वर के वचन की ओर लौटना होगा।

भजन संहिता 1 में, परमेश्वर हमें बताते हैं कि "धन्य व्यक्ति" असल में कौन है। मूल हिब्रू भाषा के आधार पर और अधिक स्पष्ट रूप से कहें तो, परमेश्वर भजन संहिता 1 में हमें सिखाते हैं कि वह "सचमुच धन्य व्यक्ति" कौन है। हमें परमेश्वर से यह शिक्षा सीखनी चाहिए और उसका पालन करना चाहिए, और ऐसा जीवन जीना चाहिए जो उनके वचन को दर्शाता हो। दूसरे शब्दों में, हमें अपने जीवन में बदलाव लाना होगा ताकि हम वे बन सकें जिन्हें परमेश्वर सचमुच धन्य मानते हैं। तो, वह व्यक्ति कौन है जिसे परमेश्वर सचमुच धन्य मानते हैं? परमेश्वर जो सबक हमें देते हैं, उसे समझने के लिए मैं दो बातों पर विचार करना चाहता हूँ।

पहला, सचमुच धन्य व्यक्ति पाप से दूर रहता है। भजन संहिता 1:1 को देखिए: "धन्य है वह मनुष्य जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, न पापियों के मार्ग में खड़ा होता है, और न ही ठट्ठा करने वालों की मंडली में बैठता है।" यह वचन बताता है कि सचमुच धन्य व्यक्ति हर तरह के पाप से—चाहे वह छोटा हो या बड़ा—खुद को दूर रखता है। यहाँ, "छोटे पाप" का मतलब है दुष्टों की सलाह पर चलना। सचमुच धन्य व्यक्ति न तो दुष्टों की सलाह पर ध्यान देता है और न ही उसमें कोई दिलचस्पी लेता है। जब उसके सामने दो रास्ते होते हैं—धर्मी का मार्ग (वचन 6) और पापियों का मार्ग (वचन 1)—तो वह पापियों के मार्ग पर कभी कदम भी नहीं रखता।

आज हममें से कई ईसाई अक्सर दुष्टों के बहकावे में आ जाते हैं और न केवल अपनी आँखें और कान, बल्कि अपना दिल भी उन्हें सौंप देते हैं। हमें दुष्टों के मार्ग पर बिल्कुल भी कदम नहीं रखना चाहिए; फिर भी, हम अक्सर उस रास्ते पर चल पड़ते हैं और साथ ही प्रभु की प्रार्थना करते हुए कहते हैं, "हे प्रभु, हमें परीक्षा में न पड़ने दे।" फिर हम अपनी पसंद और हालात को सही ठहराने लगते हैं। हैरानी की बात है कि अब हमें इस बात से कोई हैरानी भी नहीं होती। इसका कारण यह है कि हम छोटे-मोटे पापों के उस रास्ते पर चलने के इतने आदी हो गए हैं। यहाँ हम एक बात भूल रहे हैं: छोटे पापों के इस रास्ते पर चलने से आखिरकार हम बड़े पाप में गिर जाते हैं। यह बड़ा पाप क्या है? यह है पापियों के मार्ग में खड़ा होना। हम दुष्टों की सलाह मानकर चलना शुरू करते हैं, लेकिन आखिरकार हम खुद को पापियों के मार्ग में खड़ा पाते हैं। क्या कभी-कभी हम खुद को बिना जाने ही पापियों के मार्ग पर चलते हुए नहीं पाते? लेकिन, सचमुच धन्य व्यक्ति दुष्टों की सलाह—यानी छोटे पापों के उस

रास्ते—पर नहीं चलता और इसलिए पापियों के मार्ग में खड़ा नहीं होता। इसके बजाय, वह धर्मियों के मार्ग पर चलता है, एक ऐसा मार्ग जिसे परमेश्वर मान्यता देते हैं (वचन 6)। इसके अलावा, सचमुच धन्य व्यक्ति अहंकारी लोगों की मंडली में नहीं बैठता (वचन 1)। "अहंकारी लोगों की मंडली" का मतलब है वह जगह जहाँ दुष्ट लोग बैठते हैं, जो परमेश्वर से नफ़रत करते हैं। जो लोग पाप की ओर बढ़ते हैं, वे पहले दुष्टों की सलाह मानते हैं, फिर खुद को पापियों के मार्ग में खड़ा पाते हैं, और आखिरकार उन अहंकारी लोगों की मंडली में बैठ जाते हैं जो परमेश्वर से नफ़रत करते हैं। फिर भी, सच में धन्य व्यक्ति ऐसे सभी पापों—चाहे वे छोटे हों या बड़े—से दूर रहता है।

हमें इस बात पर गहराई से सोचना चाहिए: "जब पाप से बचने की बात आती है, तो हम पाप के बढ़ते हुए स्वभाव को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते, जो छोटे से बड़े की ओर बढ़ता है" (पार्क युन-सन)। हमें पाप के इस बढ़ते क्रम से सावधान रहना चाहिए। हमें सबसे छोटे पाप की जड़ को भी पूरी तरह से काट देना चाहिए। कारण यह है कि अगर हम इस मामले को हल्के में लेते हैं और सिर्फ़ उत्सुकता में बुरे लोगों की सलाह मानते हैं, तो आखिरकार हम खुद को अहंकारी लोगों की जगह पर बैठा हुआ पाएंगे। इस खतरे को पहचानते हुए, हमें ज़रा से भी पाप से बचना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन के करीब आना होगा। यह दो रास्तों के बीच का चुनाव है: या तो हम परमेश्वर के वचन के करीब आएं और पाप से दूर रहें, या फिर हम पाप के करीब जाएं और परमेश्वर के वचन से दूर हो जाएं।

आखिरकार, सच में धन्य व्यक्ति वह है जो परमेश्वर के वचन के करीब आता है।

भजन संहिता 1:2 को देखें: "परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है, और दिन-रात उसकी व्यवस्था पर मनन करता है।" वह सच में धन्य व्यक्ति परमेश्वर के वचन के करीब आकर पाप से दूर रहता है। वह "यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है और दिन-रात उसकी व्यवस्था पर मनन करता है" (पद 2)। क्योंकि वह परमेश्वर से प्रेम करता है, इसलिए वह परमेश्वर की आवाज़ सुनना चाहता है। वह परमेश्वर की स्तुति करते हुए गाता है, "प्रभु की आवाज़ सुनने से बढ़कर कोई खुशी नहीं है" (भजन 500, पद 1)। चूँकि उस सच में धन्य व्यक्ति की आत्मा को प्रभु की आवाज़ सुनने में खुशी और संतुष्टि मिलती है, इसलिए वह दिन-रात परमेश्वर के वचन पर मनन करता है। तो फिर, उसे कौन-कौन से आशीष मिलते हैं? तीन आशीष हैं:

(1) उस सच में धन्य व्यक्ति को मिलने वाला आशीष एक ऐसा विश्वास है जो फल लाता है। भजन संहिता 1:3 को देखिए: "वह पानी की धाराओं के किनारे लगाए गए पेड़ के समान है, जो समय पर फल देता है..." यह आशीष आयत 1 में बताए गए "दुष्ट" लोगों से बिल्कुल अलग है। जहाँ दुष्ट लोग कोई नैतिक या चरित्र-संबंधी फल नहीं देते (पार्क युन-सन), वहीं सचमुच आशीष पाने वाला व्यक्ति नैतिकता और चरित्र, दोनों में फल लाता है। इसके अलावा, क्योंकि वह ऐसा जीवन जीता है जो धीरे-धीरे परमेश्वर के वचन को अपनाता है और पवित्र आत्मा के फल लाने वाले व्यक्ति के रूप में पवित्र होता जाता है, इसलिए वह निस्संदेह सचमुच आशीष पाने वाला व्यक्ति है।

(2) सचमुच आशीष पाने वाले व्यक्ति को मिलने वाली आशीष जीवन-शक्ति से भरपूर विश्वास है।

भजन संहिता 1:3 को देखिए: "...जिसके पत्ते कभी नहीं मुरझाते..." यह आशीष भी आयत 1 में बताए गए "पापी" से बिल्कुल अलग है। जहाँ पापी सही लक्ष्य तक पहुँचने में असफल रहता है (पार्क युन-सन), वहीं सचमुच आशीष पाने वाले व्यक्ति में जीवन-शक्ति होती है—जो विश्वास का असली लक्ष्य है—और इस प्रकार वह निस्संदेह सचमुच आशीष पाने वाला व्यक्ति है।

(3) सचमुच आशीष पाने वाले व्यक्ति को मिलने वाली आशीष समृद्धि की आशीष है।

भजन संहिता 1:3 को देखिए: "..." "वह जो कुछ भी करता है, उसमें सफल होता है।" सचमुच आशीष पाने वाला व्यक्ति अपने सभी कामों में समृद्धि की आशीष का आनंद लेता है क्योंकि परमेश्वर उसके साथ है। कितना सचमुच आशीष भरा जीवन है यह! घोर कठिनाई और दुख के बीच भी, वे समृद्धि की आशीष का आनंद लेते हैं क्योंकि परमेश्वर उनके साथ है। बाइबल से अय्यूब के बारे में सोचिए। भारी दुख और पीड़ा का सामना करने के बावजूद, वह परमेश्वर के वचन के करीब रहा, धैर्य के साथ सहन किया, और पाप से दूर रहा (अय्यूब 1:22; 2:10)। नतीजतन, उसने परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव किया—सिर्फ़ उनके बारे में सुनने से आगे बढ़कर उन्हें अपनी आँखों से देखा (42:5)। इसके अलावा, उसे शुरुआत की तुलना में परमेश्वर से और भी बड़ी आशीषें मिलीं (आयत 12)। इस तरह, सचमुच आशीष पाने वाला व्यक्ति विश्वास का फल लाता है और दुख के बीच भी

एक जीवंत, विश्वासपूर्ण जीवन जीता है। इस प्रकार, वे परमेश्वर के काम का अनुभव करने की आशीष का आनंद लेते हैं, जिसमें सब कुछ भलाई के लिए काम करता है (रोमियों 8:28)। इसके विपरीत, दुष्ट लोग "उस भूसे के समान हैं जिसे हवा उड़ा ले जाती है" (भजन संहिता 1:4); वे नेक लोगों को मिलने वाली आशीषों का आनंद नहीं ले पाते, "न्याय के समय टिक नहीं पाते" (पद 5), और आखिर में नष्ट हो जाते हैं (पद 6)।

सचमुच आशीष पाने वाला व्यक्ति पाप से दूर रहता है। सचमुच आशीष पाने वाला व्यक्ति परमेश्वर के वचन के करीब आता है। मेरी प्रार्थना है कि आप और मैं ऐसे ही सचमुच आशीष पाने वाले लोग बनें।

परमेश्वर के वचन पर मनन करके

"परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है, और उसकी व्यवस्था पर रात-दिन मनन करता है" (भजन संहिता 1:2)।

जो मसीही परमेश्वर से प्रेम करते हैं, वे उसके वचन से भी प्रेम करते हैं। और जो मसीही परमेश्वर के वचन से प्रेम करते हैं, वे उसे अपने दिल के करीब रखते हैं; इसलिए, वे उस पर रात-दिन मनन करते हैं। भजन संहिता 1:2 हमें बताती है कि धन्य व्यक्ति "यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है।" दूसरे शब्दों में, धन्य व्यक्ति को परमेश्वर के वचन में ही आनंद और खुशी मिलती है। नतीजतन, जो धन्य व्यक्ति परमेश्वर के वचन से प्रसन्न होता है, वह उस पर रात-दिन मनन करता है (पद 2)। तो, परमेश्वर के वचन पर मनन करने का क्या अर्थ है? "मनन" क्या है? मनन का अर्थ है परमेश्वर की आवाज़ सुनना। जब हम पवित्र शास्त्र पढ़ते हैं, तो हमें परमेश्वर की उस आवाज़ को सुनना चाहिए जो पवित्र आत्मा हमसे कहता है। हमें मनन करने का—बाइबल के माध्यम से परमेश्वर की आवाज़ सुनने का—लगन से अभ्यास करना चाहिए और हमें खुद को परमेश्वर के वचन के नज़रिए से अपने जीवन को देखने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए। यदि हम इस अनुशासन की उपेक्षा करते हैं, तो हम अंततः केवल दुनिया, शैतान या स्वयं अपनी ही आवाज़ें सुनते रह जाएँगे। इसलिए, हमें परमेश्वर के वचन पर लगन से मनन करना चाहिए। मनन का समय वह समय है जब हमारी आत्मा को आवश्यक पोषण मिलता है। हमें अपने विचारों पर धीरे-धीरे और गहराई से विचार करना चाहिए। हमें बाइबल को वैसे ही पढ़ना और उस पर मनन करना चाहिए जैसे कोई खनिक सोने की खोज में खुदाई करता है। तो, परमेश्वर के वचन पर मनन करके हम क्या हासिल करना चाहते हैं?

पहला, परमेश्वर के वचन पर मनन करने के माध्यम से, हमें यीशु को और अधिक जानना चाहिए।

पवित्र शास्त्र को पढ़ते, सुनते, अध्ययन करते और उस पर मनन करते समय हम जो खोजते हैं, वह यीशु का ज्ञान है। बाइबल "उसकी कहानी" है—यीशु की कहानी। पुराना नियम मसीहा, यीशु मसीह के बारे में किए गए वादों की कहानी है। इसके विपरीत, नया नियम यीशु की कहानी है, जो उन वादों को पूरा करने के लिए आए थे। विशेष रूप से, नया नियम बताता है कि कैसे यीशु पुराने नियम की भविष्यवाणियों के अनुसार आए, हमें बचाने के लिए क्रूस पर चढ़ाए गए और मरे, और तीसरे दिन फिर जी उठे; यह उनके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद कलीसिया की कहानी और उनके वापस आने के वादे को भी बताता है। इसलिए, हमें हर दिन परमेश्वर के वचन को ध्यान से पढ़ना, सुनना, उसका अध्ययन करना और उस पर मनन करना चाहिए, ताकि हम यीशु के बारे में अपना ज्ञान और गहरा कर सकें। ऐसा करने से, जब यीशु हमसे पूछेंगे, "तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?" तो हम भी प्रेरित पतरस की तरह यह कह सकेंगे: "तू मसीह है, जीवित परमेश्वर का पुत्र" (मत्ती 16:15–16)।

दूसरी बात, परमेश्वर के वचन पर मनन करके, हमें परमेश्वर पिता के हृदय जैसा बनने की कोशिश करनी चाहिए।

पवित्र शास्त्र केवल यीशु मसीह के बारे में एक कहानी नहीं है; यह परमेश्वर पिता के हृदय को भी प्रकट करता है, जिन्होंने हमें उद्धार का अनुग्रह देने के लिए अपने एकलौते पुत्र को पृथ्वी पर भेजा। इसलिए, जब हम परमेश्वर के वचन में आनंद लेते हैं और उस पर मनन करते हैं, तो हमें उस हृदय—उन भावनाओं और इरादों—पर गहराई से सोचना चाहिए जिन्हें परमेश्वर हमें बताना चाहते हैं। एक बार सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान भजन संहिता 103:13 पर मनन करते हुए मुझे परमेश्वर पिता के हृदय की एक झलक मिली। पवित्र आत्मा की अगुवाई में, मैं समझ पाया कि उनका हृदय करुणा से भरा है—एक पिता का हृदय जो मुझ जैसे पापी पर दया और कृपा करता है। बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर पिता उन लोगों पर दया करते हैं जो उनका भय मानते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक पिता अपने बच्चों पर दया करता है (पद 13)। यह उस सृष्टिकर्ता परमेश्वर के बारे में बताता है—जो हमारी बनावट को अच्छी तरह जानते हैं—कि वे मुझ पर दया करते हैं; मैं तो बस एक नश्वर इंसान हूँ जो पाप के कारण मिट्टी में मिल जाने वाला है और घास की तरह क्षणभंगुर हूँ; वे हमेशा क्रोधित नहीं रहते और न ही मेरे पापों का बदला लेते हैं, बल्कि मेरे अपराधों को मुझसे उतना ही दूर कर देते हैं जितना पूरब पश्चिम से दूर है (पद 10–15)। जब मैं परमेश्वर पिता के ऐसे हृदय को थोड़ा-बहुत समझने लगा, तो मैंने सच्चे मन से प्रार्थना की कि मैं

भी उनके हृदय जैसा बन सकूँ। उस दौरान, मुझे याद है कि कैसे परमेश्वर पिता ने मुझे हमारे चर्च परिवार के उन सदस्यों के बारे में सोचते हुए प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया जिनसे वे प्रेम करते हैं। मैं कोई दिखावटी सेवा कार्य नहीं करना चाहता। परमेश्वर पिता के हृदय का अनुकरण करते हुए—जो मनुष्य के आंतरिक स्वरूप को देखते हैं—मैं पूरे दिल से अपनी सेवा करना चाहता हूँ। आप अपनी आस्था का जीवन कैसे जीना चाहते हैं—चाहे घर पर हों, काम पर हों या चर्च में? मेरी प्रार्थना है कि जब हम परमेश्वर के वचन पर मनन करें, तो हम पिता परमेश्वर के हृदय को समझ सकें और ऐसी आस्था के साथ जी सकें जो उनके हृदय के अनुरूप हो।

तीसरी बात, परमेश्वर के वचन पर मनन करके हमें अपनी आस्था में दृढ़ रहना चाहिए और आत्मिक लड़ाई में जीत हासिल करनी चाहिए।

यीशु का दूसरा आगमन तेज़ी से निकट आ रहा है। इसलिए, हमें आने वाले समय के लिए तैयार रहना चाहिए; हमें उन मुसीबतों का सामना करने के लिए तैयारी करनी चाहिए जो हमारे सामने आएँगी। यह जानते हुए कि उसका समय कम है, शैतान हमें—यानी यीशु में विश्वास करने वालों को—बहकाने की अपनी कोशिशें तेज़ कर रहा है। वह पूरी ताकत से कोशिश कर रहा है कि हम आस्था से भटक जाएँ और यीशु से दूर हो जाएँ। हमें तैयार रहना होगा। शैतान के खिलाफ़ इस आत्मिक लड़ाई को लड़ने के लिए, हमें अपनी आस्था में और भी मज़बूती से खड़े रहना होगा। तब, मुसीबतों और सतावट के बीच भी, हम प्रेरित पौलुस की तरह कह पाएँगे: "मैंने अच्छी लड़ाई लड़ी है, मैंने दौड़ पूरी कर ली है, और मैंने आस्था को बनाए रखा है" (2 तीमुथियुस 4:7)।

बुरे लोगों का रास्ता बनाम नेक लोगों का रास्ता

[भजन संहिता 2]

मुझे एक बार की बात याद है जब मैं एक ईसाई किताबों की दुकान पर गया था। वहाँ मेरी मुलाक़ात एक सीनियर पादरी से हुई, जिन्होंने कहा, "अगर आप कोरिया में अपनी मिनिस्ट्री (सेवा का काम) जारी रखते, तो आपके बहुत सारे फॉलोअर्स होते..." (मैंने 2001 से 2003 तक कोरिया में पढ़ाई और सेवा की थी)। मैंने मज़ाक-मज़ाक में उस बुज़ुर्ग पादरी को एक किताब दिखाई जो मेरे हाथ में थी—जिसका नाम था *Grace in the Wilderness* (वीरान जगह में परमेश्वर की कृपा)—ताकि मैं अपना नज़रिया समझा सकूँ। मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मेरा मानना था कि कोरिया में शहरी मिनिस्ट्री के बजाय अमेरिका के लॉस एंजिल्स में "वीरान जगह की मिनिस्ट्री" (wilderness ministry) करना ही मेरे लिए परमेश्वर की इच्छा थी। *Grace in the Wilderness* किताब में यह बात लिखी है: "सीखने का मतलब है बदलना। अगर आप बदले नहीं हैं, तो आपने सीखा नहीं है... जब तक आप बदलते नहीं हैं, ज्ञान सच में आपका नहीं होता।" मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ। जैसे-जैसे मैं इस वीरान जैसी जगह में परमेश्वर की महान कृपा का अनुभव करता हूँ—चाहे थोड़ा ही सही—मैं खास तौर पर उनके वचन की शक्ति को महसूस करता हूँ। इसीलिए, परमेश्वर के वचन को पढ़ने, उस पर मनन करने, उपदेश तैयार करने और उसका प्रचार करने के बाद भी, मैं अपने विचारों को व्यवस्थित करने और उन्हें लिखने के लिए एक बार फिर उस पर सोचता हूँ। फिर भी, जब मैं खुद से पूछता हूँ, "क्या बस इतना ही है?" तो मैं बस यही जवाब दे पाता हूँ, "नहीं।" ऐसा इसलिए है क्योंकि सच्ची सीख के लिए "बदलाव" (transformation) ज़रूरी है (हेंड्रिक्स)। नतीजतन, मैं खुद से पूछता हूँ: "वचन की शक्ति के ज़रिए मैं सच में किस तरह का बदलाव महसूस कर रहा हूँ?" हो रहे कई बदलावों के बीच, मैं महसूस करता हूँ कि प्रभु मुझे अपने वचन के ज़रिए 'चट्टान' पर मज़बूती से स्थापित कर रहे हैं। यह वही स्थापित करने का काम है जिसे करने का वादा प्रभु ने किया था (मत्ती 16:18)। खास तौर पर, जब भी मुझे अपनी मिनिस्ट्री में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, तो मैं महसूस करता हूँ कि प्रभु मुझे उन वादों को मज़बूती से थामे रहने के लिए प्रेरित करते हैं जो उन्होंने 'विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च'—जो

उनका शरीर है—से किए हैं। या यूँ कहें कि मैं महसूस करता हूँ कि प्रभु उन्हीं वादों के ज़रिए *मुझे* मज़बूती से थामे हुए हैं। परमेश्वर के वचन से आया एक और बदलाव यह है कि प्रभु मुझे सिखा रहे हैं कि मैं उनके वचन को सीधे अपनी आत्मा से बात करने दूँ। यह ट्रेनिंग बहुत पहले शुरू हुई थी, जब मैंने डॉ. मार्टिन लॉयड-जोन्स की किताब *Spiritual Depression* पढ़ी थी। मुझे वह बात आज भी अच्छी तरह याद है। मेरे लिए यह एक बड़ी चुनौती थी जब मैंने डॉ. लॉयड-जोन्स को यह बताते हुए पढ़ा कि कैसे भजनकार अपनी ही आत्मा से बात करते हुए कहते थे, "हे मेरी आत्मा, तू क्यों उदास है? तू मेरे भीतर इतनी परेशान क्यों है? परमेश्वर पर भरोसा रख..." (भजन संहिता 42:5, 11; 43:5)। उस पल से, मैंने सीखना शुरू किया कि कैसे परमेश्वर के वचन को अपनी आत्मा से बात करने दूँ। नतीजतन, जब सेवा का काम मुश्किल हो जाता है, तो मैं अक्सर प्रभु के वादे—"मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा" (मत्ती 16:18)—को अपनी आत्मा से बात करने देता हूँ; ऐसा करने पर, मैं पवित्र आत्मा को महसूस करता हूँ जो मुझे फिर से मज़बूती से खड़े होने और ताकत के साथ अपनी सेवा जारी रखने में मदद करता है।

पिछले हफ़्ते, भजन संहिता 1 पर मनन करने के बाद, मैंने कलीसिया के कई सदस्यों को चुनौती दी कि वे अपनी आत्मा से कहें, "तुम सचमुच धन्य हो, [अपना नाम लिखें]!" मैंने भी अपनी आत्मा से कहा, "तुम सचमुच धन्य हो, जेम्स!" मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि प्रभु ने मुझे दुष्टों के रास्ते पर चलने से बचाया है और नेक लोगों के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रभु ने मुझे दुष्टों के रास्ते पर न चलने, पापियों के रास्ते में न खड़े होने और अहंकारी लोगों की जगह पर न बैठने के लिए समर्थ बनाया है, बल्कि प्रभु के नियम में खुशी मनाने और दिन-रात उस पर मनन करने के लिए प्रेरित किया है (भजन संहिता 1:1–2)। क्योंकि प्रभु मुझे विश्वास का फल चखने ("अपने समय पर फल देना"), एक जीवंत आध्यात्मिक जीवन जीने ("जिसके पत्ते कभी नहीं मुरझाते") और उनके साथ अपने सभी कामों में समृद्धि का आशीर्वाद पाने ("वह जो कुछ भी करता है, उसमें सफल होता है") का मौका देते हैं, इसलिए मैं अपनी आत्मा से कह पाया, "तुम कितने धन्य हो, जेम्स!" आज, मैं दुष्टों के रास्ते और नेक लोगों के रास्ते पर मनन करना चाहता हूँ, और उन्हें भजन संहिता 2 के संदेश के संदर्भ में देखना चाहता हूँ। मैं "संदर्भ" इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि भजनकार भजन संहिता 1 की शुरुआत इन शब्दों से करते हैं कि "वह मनुष्य कितना धन्य है..." और भजन संहिता 2 का समापन—खासकर आयत 12 के दूसरे भाग में—यह कहते हुए करते हैं कि "वे कितने धन्य हैं [जो प्रभु की शरण लेते हैं]।" दूसरे शब्दों में, चूँकि भजनकार भजन संहिता 1 और भजन संहिता 2 के बीच एक संबंध बनाता है, इसलिए हमें भजन संहिता 2 पर

भजन संहिता 1 के अगले भाग के रूप में मनन करना चाहिए। इस मनन का मुख्य विषय "दुष्टों का मार्ग" (1:6) और "धर्मी का मार्ग" (1:6) है।

सबसे पहले, आइए दुष्टों के मार्ग पर विचार करें। यह किस तरह का मार्ग है? हम इसके बारे में तीन पहलुओं से सोच सकते हैं:

पहला, दुष्टों का मार्ग क्रोध का मार्ग है।

हम जिस दुनिया में रहते हैं, वह एक गुब्बारे की तरह है। ऐसा लगता है जैसे इस दुनिया के लोगों का गुस्सा फटने ही वाला है, ठीक वैसे ही जैसे फटने की कगार पर खड़ा गुब्बारा। जीवन की कठिनाइयों और व्यस्तता के बीच, बहुत से लोग तनाव के कारण परेशान रहते हैं... ऐसा लगता है कि लोग बहुत चिड़चिड़े हो गए हैं। शायद इसीलिए वे ऐसे लोगों को ढूंढते रहते हैं जिन पर वे अपना गुस्सा निकाल सकें। इसके अलावा, कई लोग नफ़रत, जलन और ईर्ष्या से भरे अपने बेकाबू अंदरूनी गुस्से की आग में घी डालने का काम करते हैं। ऐसे समय में रहते हुए, हमें उन दुष्टों के गुस्से पर विचार करना चाहिए जो हमारा विरोध करते हैं। हालाँकि हमें इस सच्चाई का तुरंत असर महसूस नहीं हो सकता—क्योंकि हम एक ऐसे देश में रहते हैं जो धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी देता है—लेकिन मिशन क्षेत्रों में स्थिति बिल्कुल अलग है जहाँ ऐसी स्वतंत्रता नहीं है; वहाँ, जो लोग यीशु मसीह का विरोध करते हैं, वे उन लोगों को जेल में डाल देते हैं और सताते हैं जो अपने लोगों को सुसमाचार सुनाते हैं।

भजन संहिता 2:1 के शब्दों पर विचार करें: "जातियाँ क्यों क्रोध करती हैं और लोग व्यर्थ में क्यों षड्यंत्र रचते हैं?" "जातियाँ क्यों क्रोध करती हैं..." वाक्यांश उन सांसारिक लोगों के रवैये की ओर इशारा करता है जो मसीहा—यीशु—को खत्म करने की कोशिश में "दांत पीसते हैं, शोर मचाते हैं और हमला करते हैं" (पार्क युन-सन)। हम पुराने नियम की इस भविष्यवाणी का पूरा होना—जिसमें बताया गया था कि कैसे विरोधी नफ़रत पालेंगे और मसीहा पर हमला करेंगे—नए नियम के सिनॉप्टिक सुसमाचारों में देख सकते हैं। दुनिया के जिन लोगों ने यीशु के गाल पर थप्पड़ मारा, उनके चेहरे पर थूका, उन्हें मारा और सताया, वे गुस्से से भरे हुए थे; उन्होंने उन्हें मारने की बेताब कोशिश में दांत पीसे और चिल्लाए, "उन्हें क्रूस पर चढ़ाओ!" फिर भी, हैरानी की बात यह है कि जो

लोग इस तरह गुस्सा कर रहे थे, वे वही यहूदी थे जिन्हें बचाने के लिए यीशु आए थे, और धार्मिक नेता ही पर्दे के पीछे से यह सब करवा रहे थे। फरीसियों और महायाजकों की तरह—जिन्होंने आशीष को ठुकरा दिया और नेक लोगों के रास्ते के बजाय बुरे लोगों का रास्ता (यानी "साँप के बच्चों" का रास्ता) चुना—यीशु के खिलाफ गुस्सा करने वाले लोग, हैरानी की बात है कि, हमसे बहुत अलग नहीं थे। इसलिए, इस बात की पूरी संभावना है कि हम भी गुस्से का रास्ता अपना सकते हैं—जो बुरे लोगों का पहला रास्ता है। जब हम परमेश्वर के प्रति गुस्से, पवित्र परमेश्वर के सामने की गई ऐसी "प्रार्थनाओं" और "स्तुति" के बारे में सोचते हैं जिनका कोई मतलब नहीं होता (बस शोर मचाने जैसा होता है), और ऐसी दिखावटी जीवनशैली के बारे में सोचते हैं जो यीशु को हमारे जीवन से दूर करना चाहती है, तो हमें सोचना चाहिए कि क्या हम खुद बुरे लोगों के इसी रास्ते पर तो नहीं चल रहे हैं।

दूसरी बात, बुरे लोगों का रास्ता बेकार की चीज़ों के पीछे भागने का रास्ता है।

Grace in the Wilderness किताब में एक बात लिखी है: "अपनी योजनाएँ पेंसिल से लिखो, फिर इरेज़र परमेश्वर को सौंप दो।" इसे पढ़कर मैंने अपनी सेवा-कार्य (मिनिस्ट्री) के बारे में सोचा: "क्या मैं सचमुच अपनी सेवा-कार्य की योजनाएँ परमेश्वर को सौंप रहा हूँ? या क्या मैं आध्यात्मिक पूर्णतावाद (spiritual perfectionism) की सोच के साथ अपनी सेवा-कार्य कर रहा हूँ..." "क्या मैं खुद को समर्पित करने में नाकाम हो रहा हूँ ताकि परमेश्वर काम कर सकें? और क्या इस वजह से मेरी सेवा-कार्य बेकार हो रही है?" मेरा मानना है कि यह सवाल न सिर्फ मेरी सेवा-कार्य पर, बल्कि सभी ईसाइयों के जीवन पर भी लागू होता है। हमें खुद को परखना चाहिए कि क्या हम अपना निजी जीवन, पारिवारिक जीवन और पेशेवर या व्यावसायिक जीवन बहुत ज़्यादा अपनी योजनाओं के अनुसार जी रहे हैं। हमें खुद से पूछना चाहिए कि क्या हम सचमुच सब कुछ प्रभु को सौंप रहे हैं, और उन्हें अपने जीवन, परिवारों, व्यवसायों और कलीसियाओं को बनाने दे रहे हैं।

भजन संहिता 2:1 को देखिए: "जातियाँ क्यों क्रोध करती हैं और लोग व्यर्थ की योजनाएँ क्यों बनाते हैं?" यह अंश हमें बताता है कि दुनिया के लोग बेकार की योजनाओं में लगे रहते हैं। इसका मतलब है कि हालाँकि दुनिया के लोगों ने यीशु—मसीहा—को खत्म करने की कोशिश में उन्हें क्रूस पर चढ़ाया, लेकिन उनकी कोशिशें आखिरकार बेकार गईं (पार्क युन-सन)। इसका कारण यह है कि परमेश्वर ने यीशु को तीन दिन बाद फिर से जीवित कर दिया। भले ही दुनिया ने यीशु को मार डाला और उन्हें कब्र में रख दिया, फिर भी उनके काम बेकार

साबित हुए क्योंकि वे तीसरे दिन कब्र से जी उठे (पद 7: "मैंने तुझे उत्पन्न किया है")। इस प्रकार, यीशु का विरोध करने वाली इंसानी योजनाएँ फेल होनी ही हैं। प्रभु की उपस्थिति के बिना बनाई गई कोई भी योजना केवल एक बेकार कोशिश है। इसीलिए मूसा ने मिस्र से निकलने के दौरान घोषणा की थी कि जब तक परमेश्वर उनके साथ नहीं जाएगा, तब तक वह कनान देश नहीं जाएगा (निर्गमन 33:15)। परमेश्वर के बिना बनाई गई योजना एक बेकार योजना के अलावा और कुछ नहीं है।

तीसरी बात, बुरे लोगों का रास्ता साज़िश और विरोध का रास्ता होता है।

भजन संहिता 2:2 को फिर से देखिए: "पृथ्वी के राजा डटकर खड़े होते हैं और शासक मिलकर प्रभु और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध साज़िश रचते हैं।" यह अंश बताता है कि कैसे पृथ्वी के राजा और शासक प्रभु और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध साज़िश रचते हैं। यह दुनिया के नेताओं के यीशु मसीह को मारने की साज़िश रचने और उनका विरोध करने के बारे में बताता है। इसके अलावा, उन्होंने उनके द्वारा लगाए गए बंधनों को तोड़ने और रोक-टोक को हटाने की कोशिश की (पद 3)। दूसरे शब्दों में, यीशु मसीह को मारने की कोशिश करने वाले बुरे लोगों ने सच्चाई को एक भारी बोझ के रूप में देखा; नतीजतन, उन्होंने उस बोझ से खुद को आज़ाद करने के लिए उस सच्चाई को ठुकरा दिया और उसे हटाने की कोशिश की (पार्क युन-सन)। इस अंश ने मुझे अबशालोम के सलाहकार अहीतोफेल की याद दिला दी, जिसने राजा दाऊद को मारने की कोशिश की थी। अगर अबशालोम ने अहीतोफेल की सलाह मानी होती, तो वह अपने पिता, राजा दाऊद को मारने में सफल हो सकता था; हालाँकि, परमेश्वर ने दाऊद के सलाहकार हूशै को अबशालोम के पास भेजा, और हूशै की रणनीति से अहीतोफेल की सलाह नाकाम हो गई (2 शमूएल 17:14)। नतीजतन, राजा दाऊद बच गया, जबकि अबशालोम की मौत हो गई (18:14–15)। इस बाइबिल के वृत्तांत पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि जब भी इस संसार के राजा या शासक यीशु, मसीह के विरुद्ध षड्यंत्र रचते हैं, तो परमेश्वर की दृष्टि में यह एक हास्यास्पद बात होती है—ऐसी बात जिस पर वे उपहास करते हैं (भजन संहिता 2:4)।

मेरा मानना है कि आज के पाठ में उल्लिखित "अभिषिक्त" (पद 2) न केवल यीशु, मसीह को संदर्भित करता है, बल्कि हमारे वर्तमान युग के पादरियों पर भी लागू हो सकता है। मुझे यह बात प्रभावित करती है कि जब कलीसिया के भीतर लोग अपने पादरी का विरोध करने के लिए षड्यंत्र रचते हैं, तो परमेश्वर स्वर्ग से हंसते हैं और

उपहास करते हैं। हम कितनी बार देखते हैं कि कलीसिया के भीतर लोग लापरवाही से "अभिषिक्त"—पादरी—का विरोध करते हैं और उन्हें हटाने की सक्रिय रूप से योजना बनाते हैं? यह वास्तव में खेदजनक है कि वे इस बात पर विचार नहीं करते कि परमेश्वर किस प्रकार क्रोध और कोप से जल उठेंगे (पद 5)। वास्तव में, जिस युग में हम जी रहे हैं, वह आध्यात्मिक अंधकार का समय है।

तो फिर, धर्मी का मार्ग क्या है? हम इस पर तीन तरह से विचार कर सकते हैं:

पहला, धर्मी का मार्ग पश्चाताप का मार्ग है।

भजन संहिता 2:10 को देखें: "इसलिए, हे राजाओं, बुद्धिमान बनो; हे पृथ्वी के शासकों, चेतावनी लो।" यहाँ दी गई सलाह—"बुद्धिमान बनो" और "चेतावनी लो"—पश्चाताप का आह्वान है (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, सच्ची बुद्धि और शिक्षा इस बात में निहित है कि हम उस क्रोध के मार्ग से—जो यीशु मसीह का विरोध करता है, यानी व्यर्थ योजनाएँ बनाने और उनके विरोध में खड़े होने का मार्ग—शीघ्रता से मुड़ें और पश्चाताप करें।

दूसरा, धर्मी का मार्ग सेवा का मार्ग है।

भजन संहिता 2:11 को देखें: "भय के साथ प्रभु की सेवा करो और कांपते हुए आनंद मनाओ।" बाइबिल हमें सेवा करने के लिए कैसे कहती है? यह हमें "भय के साथ" सेवा करने के लिए कहती है। दूसरे शब्दों में, बाइबिल हमें पवित्र परमेश्वर की सेवा कांपने और आनंद मनाने के मिश्रण के साथ करने का निर्देश देती है। इसलिए, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के बाद भी, हमें ऐसे सेवक बनना चाहिए जो यह स्वीकार कर सकें, "मैं एक अयोग्य सेवक हूँ; मैंने बस वही किया है जो मुझे करना चाहिए था" (लूका 17:10)।

अंत में, तीसरा बिंदु यह है कि धर्मी का मार्ग आराधना का मार्ग है। भजन संहिता 2:12 को देखिए: “पुत्र को चूम लो, कहीं ऐसा न हो कि वह क्रोधित हो जाए और तुम रास्ते में ही नष्ट हो जाओ, क्योंकि उसका क्रोध जल्दी भड़क उठता है। वे सभी धन्य हैं जो उसकी शरण लेते हैं।” यहाँ, बाइबल हमें “पुत्र को चूमने” का आदेश देती है। इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ है यीशु मसीह, यानी मसीहा की आराधना करना (पार्क युन-सन)। फिर भी, जब भी मैं

इस आयत पर मनन करता हूँ, तो मुझे वह दृश्य याद आता है जब यहूदा इस्करियोती ने यीशु को तब चूमा था जब वह उन्हें गिरफ्तार करने आया था। मैं यहूदा इस्करियोती के बारे में सोचता हूँ—वह दुष्ट व्यक्ति जिसने यीशु के साथ विश्वासघात किया, जिसके बारे में यीशु ने कहा था कि अच्छा होता यदि वह कभी पैदा ही न हुआ होता—और उस पल के बारे में जब उसने यीशु को चूमा था। बेशक, ऐसा काम किसी ऐसे व्यक्ति का व्यवहार नहीं है जो धर्मी लोगों के रास्ते पर चल रहा हो; बल्कि, यहूदा इस्करियोती के काम दुष्टों के रास्ते को दर्शाते हैं। यहाँ हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि यीशु एक झूठे आराधक—जैसे यहूदा इस्करियोती—की दुष्टता की ओर इशारा कर रहे हैं, जो धोखे भरे होंठों से आराधना करता है। क्या ऐसा हो सकता है कि हम भी हर रविवार परमेश्वर की ऐसी झूठी आराधना कर रहे हों? जबकि हम अपने होंठों से प्रभु का सम्मान, स्तुति और आराधना करते हैं, क्या हमारा हृदय उनसे दूर तो नहीं है? क्या हमारे होंठ, यहूदा इस्करियोती के होंठों की तरह, धोखे भरे तो नहीं हैं? जो लोग धर्मी लोगों के रास्ते पर चलते हैं, वे सच्चे होंठों से प्रभु की आराधना करते हैं (आयत 12)। हमें उन लोगों में शामिल होना चाहिए जो धर्मी लोगों के इस रास्ते पर चलते हैं।

प्रिय लोगों, हमें—परमेश्वर की संतानें जिन्हें यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा धर्मी ठहराया गया है और जो धार्मिकता के रास्ते पर चल रहे हैं—अपना जीवन कैसे जीना चाहिए? यदि हम अभी दुष्टों के रास्ते पर चल रहे हैं, तो हमें वापस मुड़ना चाहिए, पश्चाताप करना चाहिए और आनंदित हृदय और आदर की भावना के साथ प्रभु की सेवा करनी चाहिए। हमें प्रभु की सच्ची आराधना करनी चाहिए। इसके अलावा, भले ही दुष्ट लोग क्रोध करें, बेकार की योजनाएँ बनाएँ और हमारे खिलाफ साजिश रचें, हमें परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए, उन्हें अपनी शरण बनाना चाहिए, और वफादारी और दृढ़ता के साथ धर्मी लोगों के उस रास्ते पर चलना चाहिए जिस पर स्वयं प्रभु चले थे। ऐसा व्यक्ति सचमुच धन्य है।

वह परमेश्वर जो मेरा सिर ऊँचा करता है

[भजन संहिता 3]

क्या आपने कभी "सिर झुकाए हुए व्यक्ति" वाली बात सुनी है? घर बदलते समय, पति के सामने यह चुनने की स्थिति आती है कि वह ट्रक में कहाँ बैठे: (1) ड्राइवर के बगल वाली सीट पर, या (2) पीछे सामान रखने वाली जगह (कार्गो एरिया) में। "पीछे सामान रखने वाली जगह" चुनने के कारणों में ये शामिल हैं: (1) "सामान की सुरक्षा के लिए," (2) "परिवार के सदस्यों की वजह से जगह नहीं थी," (3) "पैसे बचाने के लिए," और (4) "बस मज़े के लिए।" क्या आप जानते हैं कि असल जवाब क्या है? पता चला कि सही जवाब—ऊपर बताई गई बातों में से कोई नहीं—यह है: "कृपया मुझे फेंकना मत; मुझे अपने साथ ले चलो।" हाहा। हालाँकि एक तरह से यह मज़ेदार जवाब है, लेकिन मैं इसे कोरिया की एक दुखद सच्चाई के आईने के तौर पर भी देखता हूँ। ऐसे कोरियाई पुरुष हैं जो जल्दी रिटायरमेंट के बाद शर्म से अपना सिर झुका लेते हैं; वे "बेरोज़गारी सिंड्रोम" से जूझते हैं—एक ऐसी स्थिति जिसमें व्यक्ति यह मानने लगता है कि "मैं ज़िंदगी में नाकाम हो गया हूँ" और वह अपनी पत्नी और बच्चों का सामना नहीं कर पाता जो पूरी तरह से उस पर निर्भर थे। कहा जाता है कि वे नुकसान, धोखे, हार और निराशा की भावनाओं से जूझते हैं। एक कोरियाई वेबसाइट पर "सिर झुकाए हुए पुरुषों" के बारे में एक लेख पढ़ने के बाद, मैंने "सिर झुकाए हुए ईसाइयों" के अस्तित्व के बारे में सोचना शुरू किया। ईसाई भी निश्चित रूप से नुकसान, धोखे, हार और निराशा की भावनाएँ महसूस कर सकते हैं। हालाँकि, जिस भावना के कारण ईसाई अपना सिर और भी ज़्यादा झुका लेते हैं, वह है "अपराध-बोध": जैसे ये विचार कि "मेरे पाप की वजह से मेरा बच्चा ऐसा हो गया" या "मेरे पाप की वजह से मेरा परिवार इस बुरी हालत में है।" हमारे दिलों में गूँजने वाली ये आवाज़ें हमें नुकसान, हार, निराशा और—सबसे बढ़कर—अपराध-बोध की भावनाओं में जकड़ सकती हैं।

भजन संहिता 3 के आज के हिस्से में बताए गए भजनकार दाऊद के पास भी शर्म से अपना सिर झुकाने की पूरी वजह थी। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उसने अपने वफादार सैनिक उरियाह को मार डाला था और बतशेबा को अपनी पत्नी बना लिया था... ऐसा इसलिए भी है क्योंकि दाऊद को शायद बहुत पछतावा हो रहा था कि अपने ही पाप के कारण उसे अपने बेटे अबशालोम से भागकर एक भगोड़े की तरह रहना पड़ रहा था (भजन संहिता 3 तब लिखी गई थी जब दाऊद अपने बेटे अबशालोम से भाग रहा था)। अगर हम खुद को दाऊद की जगह रखकर सोचें, तो हम कल्पना कर सकते हैं कि वह शर्म से सिर झुकाए सोच रहा होगा, "मैं अपने पाप के कारण इस बुरी हालत में पहुँच गया हूँ," या "मेरा परिवार इसलिए बर्बाद हो गया क्योंकि मैं घर के मुखिया के तौर पर अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी नहीं कर पाया।" फिर भी, हैरानी की बात है कि भजन संहिता 3 की आयत 3 का दूसरा भाग बताता है कि दाऊद मानता है कि परमेश्वर ही वह है जो "मेरा सिर ऊँचा करता है।" दाऊद की यह बात हमारे लिए कितनी बड़ी तसल्ली और हिम्मत देने वाली है! आज, "वह परमेश्वर जो मेरा सिर ऊँचा करता है" विषय के तहत, मैं भजन संहिता 3 पर मनन करना चाहता हूँ और उस अनुग्रह को विनम्रता से स्वीकार करना चाहता हूँ जो परमेश्वर मुझे और आपको देता है।
पहली बात जिस पर मैं विचार करना चाहता हूँ, वह है "मेरे विरोधियों का बढ़ना।"

भजन संहिता 3, आयत 1 देखें: "हे यहोवा, मेरे विरोधी कितने बढ़ गए हैं! कितने ही लोग मेरे विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं!" इस अंश में, दाऊद कहता है, "मेरे विरोधी कितने बढ़ गए हैं!" वह बताता है कि बहुत से लोग उसके विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं (आयत 1) और बहुत से लोग उसके बारे में कहते हैं, "परमेश्वर में उसे कोई मदद नहीं मिलेगी" (आयत 2)। इन आयतों (भजन संहिता 3:1–2) में "बहुत" शब्द तीन बार आया है। यह दोहराव बताता है कि हम मसीहियों के लिए विरोधियों की संख्या कम होने के बजाय शायद बढ़ेगी। जब हम "धर्मी के मार्ग" (आयत 6) पर चलते हैं—यानी दुष्टों की सलाह मानने, पापियों के मार्ग पर खड़े होने या निंदा करने वालों की मंडली में बैठने से इनकार करते हैं, और इसके बजाय दिन-रात परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं (1:1–2)—तो दुष्ट, पापी और अहंकारी लोग हमारा विरोध करेंगे, और उनकी ताकत बढ़ेगी (3:1–2)। इसीलिए भजनहार भजन संहिता 2:2 में "पृथ्वी के राजाओं" के डटकर खड़े होने और शासकों के मिलकर षड्यंत्र रचने की बात करता है। इसका एक साफ़ उदाहरण हमें मसीहा, यीशु मसीह—यानी "अभिषिक्त" (पद 2)—के जीवन में मिलता है। उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले की एक दिलचस्प बात यह है कि हेरोदेस और पीलातुस, जो पहले दुश्मन थे, उसी दिन दोस्त बन गए (लूका 23:12)। ठीक जैसे हेरोदेस और पीलातुस—जो कभी दुश्मन

थे—यीशु के विरोध में दोस्त बन गए, वैसे ही दुनिया के लोग दोस्त बनकर हमें, यानी उनके चेलों को गिराने की कोशिश में एकजुट हो जाते हैं। एक तरह से, मेरा मानना है कि दुश्मनों की बढ़ती संख्या दो में से एक बात का संकेत है: (1) यह परमेश्वर की ओर से अनुशासन का एक रूप है क्योंकि, दाऊद की तरह, मैंने पवित्र परमेश्वर के विरुद्ध कोई गंभीर पाप किया है; या (2) यह नेक लोगों का नसीब है... ...इस बात का सबूत कि कोई व्यक्ति ईमानदारी से सही रास्ते पर चल रहा है। हमारे दुश्मन—जो दहाड़ते हुए शेर की तरह विश्वासियों को भी गिराने के लिए हम पर झपटते हैं (देखिए 1 पतरस 5:8)—कौन सा घातक प्रहार करना चाहते हैं? यह ठीक वही आवाज़ है जो कई दुश्मनों ने दाऊद के लिए कही थी: "उसे परमेश्वर से कोई मदद नहीं मिलेगी" (भजन संहिता 3:2)। इन कई दुश्मनों ने दाऊद की आत्मा पर जो बात कही, वह यह थी: "परमेश्वर तुम्हें नहीं बचाएगा; वह तुम्हारी रक्षा नहीं करेगा।" यह निस्संदेह शैतान की एक घातक आवाज़ है, जिसका मकसद हमारे विश्वास को खत्म करना है। यह आवाज़ तब बहुत साफ़ सुनाई देती है जब हम थक चुके होते हैं और मुश्किलों और संकटों के बीच टूट चुके होते हैं। जब हमारी आत्मा यह आवाज़ सुनती है, "देखो, तुम इतना दर्द और मुश्किल झेल रहे हो, फिर भी चाहे तुम कितनी भी प्रार्थना करो, परमेश्वर तुम्हारी मदद नहीं कर रहा है," तो वह आवाज़—जो हमारी आध्यात्मिक ताकत कम होने पर बहुत साफ़ सुनाई देती है—हमारी आत्मा को निराशा और चिंता में डुबोने के लिए काफ़ी होती है। तो ऐसे समय में हमें क्या करना चाहिए? हमें आगे बढ़ते रहना चाहिए और विश्वास के ज़रिए जीत हासिल करनी चाहिए: "विश्वास ही जीत है, विश्वास ही जीत है; ओ, प्रभु यीशु में विश्वास दुनिया पर जीत दिलाता है" (भजन 397, कोरस)।

दूसरी और आखिरी बात जिस पर मैं विचार करना चाहता हूँ, वह है "बढ़ता हुआ विश्वास" (मेरे विश्वास में बढ़ोतरी)।

मेरे दुश्मनों का बढ़ना मेरे विश्वास को बढ़ाने का एक बेहतरीन मौका हो सकता है। आइए, बढ़ते हुए विश्वास की तीन विशेषताओं पर विचार करें:

(1) बढ़ता हुआ विश्वास वह "विश्वास है जो 'लेकिन' कहता है" या "धारा के विपरीत चलने वाला विश्वास" है।

भजन संहिता 3:3 को देखें: "परन्तु हे यहोवा, तू मेरा..." ...ढाल, मेरी महिमा, और मेरे सिर को ऊँचा उठाने वाला है।" हालाँकि कोरियाई बाइबल में इस आयत में कोई संयोजक शब्द नहीं है, लेकिन मूल हिब्रू और अंग्रेज़ी संस्करणों में "लेकिन" (But) शब्द शामिल है। दूसरे शब्दों में, जब भजनकार दाऊद का सामना उसे गिराने की कोशिश कर रहे बहुत से शत्रुओं से हुआ—ऐसे शत्रु जो उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहते थे, "परमेश्वर तुझे नहीं बचाएगा"—तब भी वह अडिग रहा। इसके बजाय, उसने साहसपूर्वक अपने विश्वास की घोषणा की: "परमेश्वर मेरी ढाल, मेरी महिमा और मेरे सिर को ऊँचा उठाने वाला है।" ठीक इसी को "धारा के विपरीत चलने वाला विश्वास" कहा जाता है (पार्क युन-सन)। "विश्वास वास्तव में कठिनाइयों और विपरीत परिस्थितियों में भी आनंद मनाता है" (पार्क युन-सन)। हमें दुनिया की पापपूर्ण धाराओं के विपरीत तैरना चाहिए। झरने के बहाव के विपरीत ऊपर की ओर तैरने वाली मछली की तरह, हमें भी सांसारिक पाप के गिरते हुए पानी के विरुद्ध ऊपर चढ़ना चाहिए। यह कितनी बड़ी चुनौती है! फिर भी, जब कई शत्रु उसकी जान लेना चाहते थे और दावा करते थे कि परमेश्वर उसकी मदद नहीं करेगा, तब दाऊद ने उनकी बातों का जवाब एक साहसी घोषणा से दिया: परमेश्वर उसका रक्षक ("मेरी ढाल") है, वह जो उसे महिमा देता है ("मेरी महिमा") है, और—इसके अलावा—वह जो उसे आशा, सांत्वना और विजय देता है ("मेरे सिर को ऊँचा उठाने वाला") है (पार्क युन-सन)। विश्वास की कितनी अद्भुत घोषणा! हमें दाऊद द्वारा दिखाए गए इस "लेकिन" वाले विश्वास—इस "धारा के विपरीत चलने वाले विश्वास"—को अपनाना चाहिए। दुनिया हमारी आत्मा से कुछ भी कहे—या हम स्वयं परमेश्वर के बारे में कुछ भी कहें—हमें विश्वास की सही घोषणा करने में सक्षम होना चाहिए। भले ही दूसरे परमेश्वर के बारे में झूठ बोलें, हमें धोखा नहीं खाना चाहिए; इसके बजाय, हमें उन झूठों के खिलाफ मजबूती से खड़े होना चाहिए और सच्चाई को स्वीकार करते हुए घोषणा करनी चाहिए, "लेकिन परमेश्वर..." और उसके सच्चे स्वरूप को मानना चाहिए। हमें अपनी आत्मा के सामने भी घोषणाएँ करनी चाहिए और उन विरोधियों पर विजय पाने के लिए लड़ना चाहिए जो हमारे सामने हैं या हमारे भीतर घुस आए हैं।

(2) बढ़ता हुआ विश्वास "प्रार्थना करने वाला विश्वास" होता है।

भजन संहिता 3:4, 7 और 8 के शब्दों पर ध्यान दें: "मैं ऊँचे स्वर में प्रभु को पुकारता हूँ, और वह अपने पवित्र पर्वत से मुझे उत्तर देता है (सेलाह)... हे प्रभु, उठ! हे मेरे परमेश्वर, मुझे बचा! क्योंकि तू मेरे सभी शत्रुओं के गाल

पर प्रहार करता है; तू दुष्टों के दाँत तोड़ देता है। उद्धार प्रभु का है; तेरा आशीर्वाद तेरे लोगों पर हो! (सेलाह)।" इन आयतों में, हम दाऊद को परमेश्वर को पुकारते हुए देखते हैं (जैसे, आयत 4: "मैं ऊँचे स्वर में प्रभु को पुकारता हूँ...")। ऐसा लगता है कि जैसे-जैसे उसके दुश्मन बढ़ते गए, वह परमेश्वर पर उतना ही अधिक निर्भर होता गया और उनसे प्रार्थना करता रहा। विशेष रूप से, परमेश्वर द्वारा प्रार्थनाओं के पिछले उत्तरों (आयत 7) से भरोसा पाते हुए, उसने उस मुश्किल और संकट के समय में परमेश्वर से उद्धार—यानी छुटकारा—की विनती की। हालाँकि उसके दुश्मन लगातार कहते रहे कि "परमेश्वर तुम्हें नहीं बचाएगा," दाऊद ने उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया; इसके बजाय, यह विश्वास करते हुए कि "परमेश्वर मेरा उद्धारकर्ता है," उसने अपनी आत्मा से इस सच्चाई को कहा और विश्वास के साथ आगे बढ़ते हुए परमेश्वर से उद्धार की विनती की। जब दाऊद ने विनती की, "हे प्रभु, उठ," तो वह अपने विरुद्ध उठने वाले बहुत सारे दुश्मनों का सामना करने में अपनी असमर्थता को स्वीकार कर रहा था (आयत 7)। इससे हमें एक बहुमूल्य सीख मिलती है: परमेश्वर की बचाने की शक्ति तब प्रकट होती है जब हम इंसानी सीमाओं को स्वीकार करते हैं, परमेश्वर की अनंतता को देखते हैं और अपनी विनतियों के साथ उनके पास जाते हैं। इन सीखों को ध्यान में रखते हुए, मेरा मानना है कि परमेश्वर से विनती न करना इंसानी सीमाओं को स्वीकार करने से इनकार करने और अप्रत्यक्ष रूप से यह कहने के बराबर है कि हमें परमेश्वर के अनंत स्वभाव पर निर्भर रहने की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसे रवैये को बढ़ता हुआ विश्वास नहीं कहा जा सकता। जो विश्वासी इंसानी सीमाओं से अनजान रहता है और केवल खुद पर भरोसा करके दुश्मनों से लड़ने की कोशिश करता है, वह निश्चित रूप से लंबे समय तक संघर्ष नहीं कर पाएगा और अंततः उसे केवल हार और निराशा ही मिलेगी। ऐसा लगता है कि शैतान लगातार हमारी आत्माओं में फुसफुसाता है: "तुम थके हुए और नींद में हो; प्रार्थना मत करो—बस सो जाओ। तुम बिना प्रार्थना के भी अपनी सेवकाई संभाल सकते हो। खुद पर भरोसा करो और जैसे चाहो वैसे सेवकाई करो। अगर चीजें ठीक नहीं होती हैं, तो तब प्रार्थना करने में बहुत देर नहीं होगी।" तो फिर, आपको क्या लगता है कि शैतान की चाल क्या है? उसकी चाल हमें यह झूठ विश्वास दिलाने की है कि "तुम्हारे भीतर असीम शक्ति है; खुद पर भरोसा करो; तुम ही ईश्वर हो।" इसलिए, हमें सतर्क और प्रार्थनाशील रहना चाहिए, और ईश्वर के उद्धार का अनुभव करना चाहिए। हम खुद को नहीं बचा सकते। हमें प्रार्थना करनी चाहिए। हमें उस ईश्वर से विश्वास के साथ पुकारना चाहिए जो उद्धार करता है।

(3) बढ़ता हुआ विश्वास वह है जो "डरता नहीं है।"

भजन संहिता 3:6 के शब्दों पर विचार करें: "भले ही दस हज़ार दुश्मन मुझे हर तरफ से घेर लें, मैं नहीं डरूँगा।" यहाँ, भजनकार दाऊद स्वीकार करता है, "भले ही दस हज़ार दुश्मन मुझे हर तरफ से घेर लें, मैं नहीं डरूँगा।" स्वाभाविक रूप से, जैसे-जैसे दुश्मनों की संख्या बढ़ती है, हमारा डर भी बढ़ता है; फिर भी दाऊद नहीं डरा। यह ठीक उसी व्यक्ति की प्रतिक्रिया है जिसका विश्वास बढ़ रहा है। जिन ईसाइयों का विश्वास सचमुच बढ़ रहा है, वे पाते हैं कि जैसे-जैसे उनके दुश्मन बढ़ते हैं, भरपूर प्रार्थना के माध्यम से उनका डर कम हो जाता है। डर निश्चित रूप से होता है; हालाँकि, दाऊद की तरह, वे घोषणा करते हैं कि वे नहीं डरेंगे और विश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं। दाऊद ऐसी घोषणा इसलिए कर पाया क्योंकि उसे प्रार्थना से शक्ति मिलती थी, जिसने ऐसे विश्वास को बल दिया जो मुश्किल हालात का सामना करने में सक्षम था। जब हम प्रार्थना करते हैं, तो लोगों का डर गायब हो जाता है और उसकी जगह ईश्वर के प्रति श्रद्धापूर्ण विस्मय ले लेता है। जो लोग ईश्वर से डरते हैं, वे आम इंसानों से नहीं डरते—और वास्तव में डर भी नहीं सकते। दाऊद का भरोसा ईश्वर पर था—वह ढाल जो उसे पीछे और आगे से बचाती थी; वह ईश्वर जो उसके कई दुश्मनों के बीच भी और बड़ी महिमा प्रकट करेगा; और वह ईश्वर जो उसका सिर ऊँचा करता है, और निराशा, हताशा या हार के बजाय आशा, सांत्वना और जीत देता है। इसी भरोसे के कारण, वह अपने दुश्मनों से नहीं डरा; इसके बजाय, वह शांति से लेटकर सो सका (पद 5)। एक साहसी विश्वासी जो संकट के बीच भी चैन की नींद सो सकता है—कितना अद्भुत विश्वास है यह! जैसे गहरी लहरें सतह की उथल-पुथल के नीचे भी शांत रहती हैं, वैसे ही हम भी चुपचाप अपनी नज़रें ईश्वर पर टिका सकते हैं—चाहे हमारे दुश्मन कितनी भी ज़ोर से हमला क्यों न करें—बशर्ते हममें उस पर गहरा विश्वास हो। यही शांत स्थिरता हमारी असली ताकत है [(यशायाह 30:15) "...शांति और भरोसे में ही तुम्हारी ताकत है"]।

प्रियजनों, दुनिया हमें हार मानकर सिर झुकाने पर मजबूर करना चाहती है। शैतान हमें ऐसे ईसाई बनाने के लिए हर मुमकिन चाल चलता है जो हार मानकर सिर झुकाए चलते हैं, और हमें नुकसान, धोखे, नाकामी, निराशा और अपराध-बोध का कड़वा अनुभव कराता है। वह हमारे खिलाफ दुश्मन भेजता है और हम पर दुख और मुसीबतें डालता है। वह हमारे कानों में फुसफुसाता है, "परमेश्वर तुम्हें नहीं बचाएगा," ताकि हम अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर की ओर न देखें और न ही उस पर भरोसा करें। फिर भी, शैतान की चालें जितनी तेज़ होती हैं, हमें उतना ही ज़्यादा अपने विश्वास को परिपक्व करने और बढ़ते हुए विश्वास को पाने की ज़रूरत महसूस करनी चाहिए। यह बढ़ता हुआ विश्वास वह है जो धारा के विपरीत चलता है, प्रार्थना में लगा रहता है और निडर

रहता है। मेरी प्रार्थना है कि हम सब मज़बूती के साथ जीत के रास्ते पर चलें और गाएँ, "विश्वास ही जीत है! विश्वास ही जीत है! हे शानदार प्रेम, जो दुनिया पर जीत हासिल करता है" (भजन 397, कोरस)।

हे नश्वर मनुष्यों

[भजन संहिता 4]

जब मैं लगभग रोज़ दुनिया भर में लोगों की अलग-अलग कारणों से मौत की खबरें सुनता हूँ, और अपने आस-पास के प्रियजनों को बीमारी और बुढ़ापे के कारण गुज़रते हुए देखता हूँ, तो मुझे भजन 474 की तीसरी पंक्ति के बोल बहुत प्यारे लगने लगे हैं: "यह दुनिया पाप और मरने के अनगिनत तरीकों से भरी है..." ऐसी खबरें सुनकर मुझे एहसास होता है कि मेरा हर दिन जीवित रहना वास्तव में ईश्वर की कृपा का एक अनमोल उपहार है। मुझे ऑनलाइन किम वू-जिन की एक रचना भी मिली जिसका शीर्षक था "मृत्यु का गीत" (*सा-उई चानमी*)। यहाँ उसकी कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं: "आँसुओं से बनी यह दुनिया—/ क्या मेरे मरने पर सब खत्म हो जाएगा?/ हे खुशी की तलाश करने वाले नश्वर मनुष्यों,/ तुम जो खोज रहे हो वह व्यर्थ है... / हे नश्वर मनुष्य, व्यर्थता में भागते हुए,/ क्या तुम्हें एहसास है कि तुम्हें धोखा दिया गया है?/ सांसारिक चीजें तुम्हारे लिए केवल खालीपन हैं;/ मृत्यु के बाद कुछ नहीं बचता।" जब हम खुद से पूछते हैं—कम उम्र में भी—कि जीवन वास्तव में क्या है, तो मेरा मानना है कि इस क्षणभंगुर, व्यर्थ दुनिया में एक सच्चे अर्थपूर्ण जीवन को जीना ही वह जीवन है जो ईश्वर को प्रसन्न करता है। आज, भजन संहिता 4 पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं "हे नश्वर मनुष्यों!" (पद 2) शीर्षक के तहत इस अर्थपूर्ण जीवन के तीन पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ।

सबसे पहले, मैं उन तीन बातों पर विचार करना चाहता हूँ जिनके लिए नश्वर मनुष्यों को पश्चाताप करना चाहिए।

(1) हमें ईश्वर की महिमा को शर्म में बदलने के पाप के लिए पश्चाताप करना चाहिए।

भजन संहिता 4:2 देखें: "हे नश्वर मनुष्यों, तुम कब तक मेरी महिमा को शर्म में बदलते रहोगे? तुम कब तक भ्रम से प्यार करोगे और झूठ के पीछे भागोगे? (सेलाह)" इस अंश में, भजनकार दाऊद पूछता है, "हे नश्वर मनुष्यों, तुम कब तक मेरी महिमा को शर्म में बदलते रहोगे?" यहाँ, "मेरी महिमा" का अर्थ उस शाही महिमा से है जो ईश्वर ने राजा दाऊद को प्रदान की थी; यह अंश उन विरोधियों के शत्रुतापूर्ण कार्यों के संबंध में पश्चाताप का आह्वान करता है जो उस महिमा को शर्म में बदलना चाहते थे।

तो फिर, इस शब्द को हमारे समय में कैसे लागू किया जा सकता है? मेरा मानना है कि प्रभु के सेवक—जो कलीसिया में अभिषेक प्राप्त है—का विरोध करना भी एक ऐसा पाप है जो ईश्वर की महिमा को शर्म में बदल देता है। हालांकि हम ईसाइयों को परमेश्वर की महिमा के लिए जीना चाहिए, लेकिन हमें खुद को परखना चाहिए कि कहीं हम ऐसे तरीके से तो नहीं जी रहे हैं जिससे वह महिमा दुनिया की नज़र में शर्म की बात बन जाए। बाइबल पूछती है, "कब तक" हम परमेश्वर की महिमा को शर्म में बदलेंगे? यह हमें पश्चाताप करने, वापस लौटने और इस अंधेरी दुनिया में परमेश्वर की महिमा को प्रकट करते हुए जीने के लिए प्रेरित करती है।

(2) हमें बेकार चीज़ों से प्यार करने के पाप के लिए पश्चाताप करना चाहिए।

भजन संहिता 4:2 को फिर से देखें: "हे मनुष्यों, तुम कब तक मेरी महिमा को शर्म में बदलोगे? तुम कब तक बेकार चीज़ों से प्यार करोगे और झूठ के पीछे भागोगे? (सेलाह)" इस आयत में, भजनकार दाऊद पूछता है, "हे मनुष्यों, तुम कब तक... बेकार चीज़ों से प्यार करोगे?" यहाँ, दाऊद बेकार कामों—खासकर परमेश्वर द्वारा चुने गए व्यक्ति, दाऊद का विरोध करने जैसे व्यर्थ काम—से प्यार करने या उनमें "खुशी पाने" के पाप के लिए पश्चाताप करने का आह्वान करता है।

सभोपदेशक की पुस्तक में, ज्ञानी व्यक्ति कहता है, "व्यर्थता ही व्यर्थता, सब कुछ व्यर्थ है" (सभोपदेशक 1:2)। इस क्षणभंगुर दुनिया में रहते हुए, हमें खुद से पूछना चाहिए कि क्या हम ऐसी ज़िंदगी जी रहे हैं जो "बेकार" चीज़ों—जिनका कोई असली मूल्य नहीं है—से प्यार करती है। परमेश्वर की महिमा के लिए जीना वास्तव में

एक मूल्यवान काम है—जिसका अनंत मूल्य है—और यह ऐसी ज़िंदगी है जिसे सभी ईसाइयों को जीने की कोशिश करनी चाहिए। हालाँकि, अगर हम समझौता करने वाली ज़िंदगी जी रहे हैं—ऐसी चीज़ों के पीछे भाग रहे हैं जो या तो क्षणभंगुर हैं या पूरी तरह से बेकार हैं—तो बाइबल हमें व्यर्थ चीज़ों से प्यार करने के पाप के लिए पश्चाताप करने के लिए प्रेरित करती है (भजन संहिता 4:2)।

(3) हमें धोखे के पीछे भागने के पाप के लिए पश्चाताप करना चाहिए।

भजन संहिता 4:2 को फिर से देखें: "हे मनुष्यों, तुम कब तक मेरी महिमा को शर्म में बदलोगे? तुम कब तक बेकार चीज़ों से प्यार करोगे और झूठ के पीछे भागोगे? (सेलाह)" यहाँ, भजनकार—दाऊद—पूछता है, "हे मनुष्यों, तुम कब तक... झूठ के पीछे भागोगे?" यहाँ "झूठ" शब्द का अर्थ धोखा या चालबाज़ी है। डेविड के कई दुश्मनों ने पहले ही यह झूठा दावा करके उसका विरोध किया था कि "परमेश्वर तुम्हें नहीं बचाएगा" (3:2)। फिर भी, भजन 4 में, उसके दुश्मन धोखे का इस्तेमाल करके किसी भी तरह उसका विरोध करते रहे। यह झूठ कि "परमेश्वर तुम्हें नहीं बचाएगा," असल में यह दावा है कि "परमेश्वर बचाने वाला नहीं है।" यह एक ऐसा धोखा है जिसका मकसद इंसान को परमेश्वर को बचाने वाला मानने से रोकना है।

आज भी, शैतान ऐसे धोखों के ज़रिए हमें परमेश्वर से मिलने वाले उद्धार पर शक करने के लिए उकसाता है। झूठ का पिता होने के नाते, शैतान हमें अपने जाल में फँसाने के लिए लगातार कोशिश करता है, ताकि हम परमेश्वर की प्रभुता और हमारे लिए किए गए उसके उद्धार पर सवाल उठाने लगें। शैतान का एक और धोखा हमें खुद को धोखा देने के लिए उकसाना है। आइए हम याकूब 1:22 की बातों को अपनी ज़िंदगी में लागू करें: "सिर्फ़ वचन को सुनो मत, और खुद को धोखा मत दो। जैसा उसमें कहा गया है, वैसा करो।" हम अक्सर शैतान के उस धोखे में आ जाते हैं जो हमें परमेश्वर के वचन को सिर्फ़ सुनने के लिए कहता है, न कि उसे अमल में लाने के लिए। भजनकार हमें खुद को धोखा देने के इस पाप से तौबा करने के लिए कहता है।

दूसरी बात, मैं उन दो चीज़ों पर गौर करना चाहूँगा जिन्हें हमें समझना चाहिए।

(1) हमें यह समझना चाहिए कि परमेश्वर ने भक्त लोगों को अपने लिए चुना है।

भजन 4:3 को देखिए: "जान लो कि प्रभु ने भक्त लोगों को अपने लिए अलग किया है; जब मैं प्रभु को पुकारूँगा तो वह सुनेगा।" यहाँ, भजनकार डेविड कहता है, "जान लो कि प्रभु ने भक्त लोगों को अपने लिए अलग किया है।" इसका मतलब है कि चूँकि परमेश्वर ने डेविड—और असल में सभी पवित्र लोगों—को अपनी महिमा के लिए चुना और नियुक्त किया है, इसलिए कोई भी चीज़ उनके प्रति उसके प्यार को अलग नहीं कर सकती (पार्क युन-सन)। यह कितनी बड़ी तसल्ली और अनुग्रह की बात है! यह सच्चाई रोमियों 8:35–39 की याद दिलाती है: "कौन हमें मसीह के प्यार से अलग करेगा? क्या मुसीबत, या तंगी, या सतावट, या अकाल, या नंगापन, या खतरा, या तलवार? ... क्योंकि मुझे यकीन है कि न मौत, न ज़िंदगी ... और न ही पूरी सृष्टि में कोई और चीज़, हमें हमारे प्रभु मसीह यीशु में परमेश्वर के प्यार से अलग कर पाएगी।" आज के वचन, भजन संहिता 4:3 में, "भक्त" (godly) शब्द का अर्थ है "वह जिस पर कृपा की गई है"—यानी, जिसे परमेश्वर की दया और प्रेम मिलता है। यह ईश्वरीय दया और प्रेम इसलिए नहीं बदलते क्योंकि परमेश्वर ने हमें "अपने लिए" चुना है। इसलिए, हम परमेश्वर की महिमा को अपमान में नहीं बदल सकते। हमारे विरोधियों की बेकार की कोशिशें और धोखेबाज़ी इस सच्चाई को कभी नहीं बदल सकतीं।

(2) हमें यह समझना चाहिए कि परमेश्वर भक्तों की प्रार्थनाएँ सुनते हैं।

भजन संहिता 4:3 का आखिरी हिस्सा देखिए: "...जब मैं प्रभु को पुकारूँगा तो वह सुनेगा।" यह वचन बताता है कि भजनकार दाऊद का मानना था कि परमेश्वर ही उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं। यहाँ याद रखने वाली ज़रूरी बात यह है कि परमेश्वर भक्तों की प्रार्थनाएँ इसलिए नहीं सुनते कि दाऊद या हम खुद भक्त हैं, बल्कि इसलिए सुनते हैं क्योंकि हमारे परमेश्वर "धार्मिकता के परमेश्वर" हैं (पद 1)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का प्रार्थना का उत्तर देना कभी भी हमारी अपनी धार्मिकता पर आधारित नहीं होता; बल्कि, वह केवल अपनी धार्मिकता के आधार पर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं। हमें इस सच्चाई को समझना चाहिए।

तीसरी बात, मैं उन तीन चीज़ों पर विचार करना चाहूँगा जो हमें करनी चाहिए।

(1) हमें डरना चाहिए और पाप नहीं करना चाहिए।

भजन संहिता 4:4 के पहले हिस्से को देखें: "कांपो, और पाप मत करो।" यहाँ "कांपने" (tremble) शब्द का अनुवाद सेप्टुआजेंट (पार्क युन-सन) में "क्रोधित होना" (be angry) के रूप में किया गया है। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब है कि हमें गुस्से में आकर पाप नहीं करना चाहिए। इसे दूसरे तरीके से कहें तो, इसका मतलब है कि पाप पर हमारे गुस्से के कारण हमें और पाप नहीं करने चाहिए (पार्क युन-सन)।

हमें अब गुस्से में आकर पाप नहीं करना चाहिए। हमें अब ऐसे पाप नहीं करने चाहिए जो परमेश्वर की महिमा को शर्म में बदल दें। इसके अलावा, हमें अब व्यर्थ चीज़ों से प्रेम नहीं करना चाहिए। हमें अब ऐसा जीवन नहीं जीना चाहिए जो धोखे की तलाश में हो। हमें ऐसे पापों को दोहराना नहीं चाहिए; इसके बजाय, हमें इस बात पर गुस्सा होना चाहिए कि हमने अतीत में उन्हें किया था और दोबारा पाप न करने का संकल्प लेना चाहिए।

(2) हमें अपने ही दिलों से बात करनी चाहिए और शांत रहना चाहिए।

भजन संहिता 4:4 के बाद वाले हिस्से को देखें: "...अपने बिस्तर पर अपने दिल में मनन करो, और शांत रहो।" यदि "रात" का अर्थ आम तौर पर उस समय से है जब हम आराम करने के लिए लेटते हैं, तो भजनकार हमें इस समय के दौरान अपने ही दिलों से बात करने और शांत रहने की चुनौती दे रहा है। बाइबिल हमें बिना सोचे-समझे काम न करने के लिए कहती है, बल्कि रात की शांति में खुद पर चुपचाप विचार करते हुए परमेश्वर के सामने शांत रहने के लिए कहती है।

हमें खुद को यह सिखाने की ज़रूरत है कि परमेश्वर का वचन हमारे दिलों से बात करे। यह प्रशिक्षण बहुत ज़रूरी है क्योंकि दुनिया और शैतान की आवाज़ें हमारे अंदर बहुत आसानी से सुनी जा सकती हैं। परमेश्वर के वचन को हमारे दिलों से बात करने देने के निरंतर प्रशिक्षण के बिना, हम अनिवार्य रूप से परमेश्वर के विरुद्ध पाप करते रहेंगे। इसलिए, हमें मनन के अनुशासन का अभ्यास करके पाप के विरुद्ध लड़ाई में जीत हासिल करनी चाहिए—परमेश्वर को अपने वचन के माध्यम से हमारे दिलों से बात करने देना। इस मननशील अनुशासन का एक ज़रूरी हिस्सा परमेश्वर के सामने शांत और स्थिर रहना सीखना है। हमें शांत रहना चाहिए ताकि परमेश्वर हमें अपना सच्चा स्वरूप दिखा सके। ऐसी शांति हमारी ताकत बन जाती है (यशायाह 30:15)।

(3) हमें पछतावे भरे दिल के साथ पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर रहना चाहिए। भजन संहिता 4:5 के इन शब्दों पर ध्यान दें: "धार्मिकता के बलिदान चढ़ाओ और प्रभु पर भरोसा रखो।" परमेश्वर के सामने "धार्मिकता का बलिदान" क्या है? यह है "टूटा हुआ मन"—यानी, पछतावे से भरा दिल (51:16, 17)। भजनकार हमें परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखते हुए पछतावा करने के लिए प्रेरित करता है। अगर हम पवित्र परमेश्वर के विरुद्ध किए गए पापों के लिए टूटे हुए मन से पछतावा नहीं करते, तो हम यह दावा नहीं कर सकते कि हम ऐसा जीवन जी रहे हैं जो पूरी तरह से उस पर निर्भर है। जो लोग परमेश्वर पर निर्भर रहते हैं, वे ही पछतावा करते हैं।

अंत में, जब लोग पछतावा करते हैं, वह समझते हैं जो उन्हें समझना चाहिए, और वह करते हैं जो उन्हें करना चाहिए, तो इसके क्या परिणाम होते हैं? भजन संहिता 4 का आज का अंश ऐसे चार परिणामों पर प्रकाश डालता है:

1. परमेश्वर हम पर दया करेगा और हमारी प्रार्थनाएँ सुनेगा (पद 1)।
2. परमेश्वर अपना मुख हम पर चमकाएगा (पद 6)।
3. प्रभु हमारे दिलों में खुशी भर देगा (पद 7)।
4. क्योंकि परमेश्वर हमें सुरक्षित रखेगा, हम शांति से सो पाएँगे (पद 8)।

ये आशीषें उन लोगों को मिलती हैं जो जानते हैं कि उन्हें किस बात के लिए पछतावा करना है, क्या समझना है और क्या करना है, और वे उसके अनुसार काम भी करते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी इन आशीषों का अनुभव करें।

"कांपो और पाप न करो"

"कांपो और पाप न करो; जब तुम अपने बिस्तर पर हो, तो अपने दिलों को टटोलें और चुप रहें" (भजन संहिता 4:4)।

बाइबल हमें आदेश देती है, "कांपो और पाप न करो" (भजन संहिता 4:4)। फिर भी, परमेश्वर के इस वचन को अपने जीवन में लागू करना बहुत मुश्किल है। खासकर, "कांपने" के निर्देश का पालन करना तब तक असंभव है जब तक कि दिल में परमेश्वर के प्रति आदर न हो। बाइबल कहती है, "प्रभु का भय मानना ही बुराई से घृणा करना है" (नीतिवचन 8:13)। इसलिए, जब हम किसी प्रलोभन का सामना करते हैं, तो हमें इस वचन के अनुसार उसे ठुकरा देना चाहिए और पाप करने से बचना चाहिए। हालाँकि हम जानते हैं कि हमें यही करना चाहिए, लेकिन हमारा पापी स्वभाव प्रलोभन का सामना करते ही उसके करीब जाने की इच्छा करता है। अपने इस पहलू को देखकर, हम यह सवाल किए बिना नहीं रह सकते कि क्या सचमुच हमारे अंदर ऐसा "कांपना" मौजूद है।

हम सबसे ज़्यादा पाप कब करते हैं? हम तब पाप करने के सबसे ज़्यादा जोखिम में होते हैं जब हम "मुसीबत" में होते हैं (भजन संहिता 4:1)। भजनकार दाऊद को "अपने बेटे अबशालोम" (भजन संहिता 3) के साथ-साथ "अपने विरोधियों" (पद 1) और "अपने सभी दुश्मनों" (पद 7) के कारण मुसीबत का सामना करना पड़ा था। हालाँकि, इन बाहरी मुश्किलों से भी ज़्यादा दाऊद पर जिस बात का बोझ था, वह था यह ताना: "बहुत से लोग कहते हैं, 'उसे परमेश्वर से कोई मदद नहीं मिलेगी'" (पद 2)। यही बात हम पर भी लागू होती है। अगर बहुत से लोग हमसे कहें, "तुम्हें परमेश्वर से मदद नहीं मिलेगी," तो हम—जो पहले से ही मुसीबत में हैं—उनकी बातों से आसानी से निराश हो सकते हैं। इसके अलावा, हम परमेश्वर की ओर देखने के बजाय लोगों से मदद मांगने का पाप कर सकते हैं। यहाँ तक कि हम परमेश्वर से नाराज़ भी हो सकते हैं या परमेश्वर की कलीसिया को छोड़ने तक की हद तक जा सकते हैं।

मुसीबत का सामना करते समय हम किस तरह का पाप कर सकते हैं? हम "परमेश्वर की महिमा को शर्म में बदलने" का पाप कर सकते हैं (4:2)। हम परमेश्वर की महिमा को शर्म में कैसे बदल सकते हैं? हम दो तरीकों पर विचार कर सकते हैं:

(1) हम व्यर्थ चीज़ों से प्रेम करके और झूठ का पीछा करके परमेश्वर की महिमा को शर्म में बदल सकते हैं। भजन संहिता 4:2 का बाद वाला हिस्सा देखें: "...तुम कब तक बेकार की चीज़ों से प्यार करोगे और झूठ के पीछे भागोगे?" मुश्किल समय में, हम अक्सर परमेश्वर की मदद का इंतज़ार नहीं कर पाते; इसके बजाय, हम आसानी से बेकार की चीज़ों और झूठ की ओर मुड़ जाते हैं और उनकी ओर खिंचे चले जाते हैं। आखिरकार, इससे हम परमेश्वर की महिमा का अपमान कर सकते हैं।

(2) गलत काम करके और परमेश्वर पर भरोसा न करके हम परमेश्वर की महिमा को शर्म में बदल सकते हैं।

भजन संहिता 4:5 देखें: "धार्मिकता के बलिदान चढ़ाओ और प्रभु पर भरोसा रखो।" मुश्किलों का सामना करते समय, अगर हम परमेश्वर पर भरोसा नहीं करते या धर्मी परमेश्वर की मदद का इंतज़ार नहीं करते, तो इस बात का बड़ा खतरा होता है कि हम खुद पर भरोसा करने लगें और गलत काम कर बैठें।

तो, मुश्किलों का सामना करते समय हमें क्या करना चाहिए?

पहला, हमें डरना (यानी परमेश्वर का आदर करना) चाहिए और पाप नहीं करना चाहिए।

भजन संहिता 4:4 का पहला हिस्सा देखें: "कांपो और पाप मत करो..." कुछ विद्वान इस आयत को इफिसियों 4:26 से जोड़ते हैं, जिसमें कहा गया है, "क्रोध में पाप मत करो।" इसलिए, उनका सुझाव है कि जब हमें गुस्सा आए, तब भी हमें—परमेश्वर के प्रति आदर के कारण—डरना चाहिए और पाप करने से बचना चाहिए।

दूसरा, हमें अपने दिल में बात करनी चाहिए। भजन संहिता 4:4 का बाद वाला हिस्सा देखें: "...जब तुम अपने बिस्तर पर हो, तो अपने दिलों को टटोलें और चुप रहें।" हमें शांत समय में, शांत जगह पर और शांत मन से प्रभु

के पास जाना चाहिए ताकि हम परमेश्वर के वचन पर गहराई से मनन कर सकें। ऐसा करते समय, हमें परमेश्वर के वचन के आगे झुकना चाहिए और उसे अपनी आत्मा से बात करने देनी चाहिए।

तीसरा और आखिरी, हमें चुप रहना चाहिए।

भजन संहिता 4:4 का बाद वाला हिस्सा फिर से देखें: "...जब तुम अपने बिस्तर पर हो, तो अपने दिलों को टटोलें और चुप रहें।" हमें "शांत रहना और यह जानना कि मैं ही परमेश्वर हूँ" सीखना चाहिए (46:10)। हमें यह भी पहचानना चाहिए कि परमेश्वर पर भरोसा करना ही हमारी ताकत है (यशायाह 30:15)। इसलिए, मुश्किलों के बीच हमें डरकर पाप नहीं करना चाहिए (भजन संहिता 4:4)।

"मेरे सामने अपना रास्ता सीधा करो"

[भजन संहिता 5]

एक बार मैं अपने सास-ससुर और बच्चों को अपने भतीजे का जन्मदिन मनाने के लिए एक रेस्टोरेंट ले गया। चूँकि मुझे रास्ते की जानकारी नहीं थी, इसलिए मैंने पहले ही ऑनलाइन रास्ता देख लिया और सुरक्षित रूप से रेस्टोरेंट पहुँच गया। हालाँकि, घर लौटते समय मैं रास्ता भटक गया। मेरे भटकने का कारण यह था कि, वहाँ जाने के लिए जिस रास्ते का इस्तेमाल किया था, उसी रास्ते से वापस आने के बजाय मैंने एक अलग रास्ता चुना। मैंने यह दूसरा रास्ता इसलिए चुना क्योंकि मुझे यकीन था कि यह आखिर में घर जाने वाले हाईवे तक ले जाएगा। मेरे ससुर परेशान हो गए जब उन्होंने मुझे भटकते हुए देखा, क्योंकि उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। मैंने उन्हें भरोसा दिलाते हुए कहा, "क्या आपको मुझ पर भरोसा नहीं है? मुझ पर विश्वास रखें, पिताजी। यह सड़क पक्का घर जाने वाले हाईवे तक ले जाएगी।" फिर भी, जब मैं उस चुने हुए रास्ते पर आगे बढ़ा, तो मैं रास्ता भटक गया और घर की दिशा के ठीक उलटी तरफ बहुत दूर निकल गया। आखिरकार, मैंने मान लिया कि मैं रास्ता भटक गया हूँ; रास्ता पूछने के लिए मैं पास के एक गैस स्टेशन पर रुका। गैस स्टेशन के कर्मचारी द्वारा बताए गए निर्देशों का पालन करके, हम सुरक्षित घर लौट पाए। इस अनुभव से मैंने जो सबक सीखा, वह यह है कि आत्मविश्वास होना ज़रूरी है, लेकिन गलत जानकारी पर आधारित आत्मविश्वास खतरनाक हो सकता है। मेरा आत्मविश्वास तथ्यों पर नहीं, बल्कि मेरी अपनी धारणाओं पर आधारित था।

हवाई जहाज़ से देखने पर, लॉस एंजिल्स बिल्कुल चेकरबोर्ड जैसा दिखता है। यहाँ की सड़कें ज़्यादातर सीधी रेखाओं में बनी हैं; घुमावदार सड़कें बहुत कम हैं। इससे लॉस एंजिल्स में रास्ता ढूँढना काफ़ी आसान हो जाता है। इसी वजह से, मैंने मान लिया कि जो दूसरा रास्ता मैंने चुना है, वह भी सीधा होगा। हालाँकि, वह रास्ता घुमावदार निकला। ड्राइवर की सीट से वह सीधा दिख रहा था, लेकिन असल में ऐसा नहीं था। इसी तरह, विश्वास का रास्ता हमेशा सीधी रेखा में नहीं होता; रास्ते में घुमावदार हिस्से भी आते हैं। विश्वासियों के तौर पर, हमें सीधे

रास्ते पर चलना चाहिए, फिर भी हम गलती से खुद को यकीन दिला सकते हैं कि घुमावदार रास्ता ही सही है, और उस गलती के आधार पर आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सकते हैं। ज़ाहिर है, फिर हमें गलत चुनाव का नतीजा भुगतना पड़ता है। इसलिए, हमें सीधा रास्ता चुनना चाहिए और उस पर ईमानदारी से चलना चाहिए। तो, बाइबल में बताए गए "सीधे रास्ते" का असल में क्या मतलब है? भजन संहिता 5:8 में, भजनकार दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता है, "मेरे सामने अपना मार्ग सीधा कर।" कई टेढ़े-मेढ़े रास्तों और लुभावने भटकावों के बावजूद, दाऊद प्रभु के रास्ते पर सीधा चलना चाहता था—और सचमुच, उसने ऐसा ही किया। भजन संहिता 5 पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं ऐसे जीवन के तीन पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ जो प्रभु के रास्ते पर सीधा चलता है।

पहला, जो जीवन प्रभु के रास्ते पर सीधा चलता है, वह "प्रार्थना का जीवन" होता है। भजन संहिता 5:1–3 के शब्दों पर विचार करें: "हे यहोवा, मेरी बातों पर कान लगा; मेरे ध्यान पर विचार कर। हे मेरे राजा और मेरे परमेश्वर, मेरी पुकार की आवाज़ सुन, क्योंकि मैं तुझसे प्रार्थना करूँगा। हे यहोवा, तू सुबह मेरी आवाज़ सुनेगा; सुबह मैं उसे तेरी ओर करूँगा, और ऊपर देखूँगा।" हाल ही में, जब मैं कलीसिया—मसीह की देह—की सेवा कर रहा हूँ, तो मैंने महसूस किया है कि परमेश्वर मुझे दिखा रहे हैं कि मैं प्रभु के रास्ते पर सीधा चलने में असफल हो रहा हूँ क्योंकि मैं ठीक से प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ। मैं खुद को बाईं या दाईं ओर भटकते हुए पाता हूँ। मेरी अस्थिर और बिना लक्ष्य वाली पादरी की सेवा यह दिखाती है कि मेरे प्रार्थना जीवन में कोई समस्या है। इसलिए, प्रभु मुझे प्रार्थना करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। वह मुझे पश्चाताप के लिए बुला रहे हैं, मुझे बिना लक्ष्य के भटकना बंद करने और इसके बजाय प्रार्थना के माध्यम से उनकी इच्छा को समझकर सीधे रास्ते पर चलने का मार्गदर्शन कर रहे हैं। जो व्यक्ति प्रभु के सीधे रास्ते पर चलता है—बाईं या दाईं ओर भटकने के खतरे के बीच—वह परमेश्वर के सामने अपना "ध्यान" (पार्क युन-सन के अनुसार "परमेश्वर पर केंद्रित विचार या उन्हें समर्पित हृदय") प्रस्तुत करता है (पद 1)। दूसरे शब्दों में, वे विनती में परमेश्वर के सामने अपना दिल खोलकर रख देते हैं। विशेष रूप से, भजनकार ने "सुबह" (पद 3) प्रार्थना में अपना दिल खोलकर रखा और उत्सुकता से उत्तर की प्रतीक्षा की (पद 3)। पादरी स्पर्जन ने एक बार कहा था, "प्रार्थना वह चाबी होनी चाहिए जो दिन की शुरुआत करे और वह ताला जो उसे समाप्त करे" (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, अपनी दिनचर्या शुरू करने से पहले, हमें जल्दी उठना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए, "हे प्रभु, आज मुझे तेरे रास्ते पर सीधा चलने में मदद कर।" फिर, उस रास्ते पर ईमानदारी से चलने के बाद, सोने से पहले हमें दिन भर की बातों पर सोचना चाहिए और उस कृपा के

लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए जिससे हम सही रास्ते पर चल पाए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमें अच्छी नींद आती है, क्योंकि हम जानते हैं कि हमने एक ऐसा दिन बिताया है जिससे परमेश्वर की महिमा हुई है। लेकिन, अगर हम प्रार्थना नहीं करते—जो हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी के लिए बहुत ज़रूरी है—तो हम पाप की चपेट में आ सकते हैं; प्रभु के साथ रहने के बजाय, इस बात का बहुत ज़्यादा खतरा रहता है कि बुराई हमारे साथ रहने लगे (पद 4)। इसलिए, हमें अपने दिन की शुरुआत और अंत प्रार्थना के साथ करने की अच्छी आदत डालनी चाहिए।

दूसरी बात, प्रभु के रास्ते पर सीधा चलने वाला जीवन "आराधना का जीवन" होता है।

भजन संहिता 5:7 पर गौर करें: "लेकिन मैं, आपके अपार प्रेम के कारण, आपके घर में प्रवेश करूँगा; आदर के साथ आपके पवित्र मंदिर की ओर झुककर आराधना करूँगा।" भजनकार दाऊद ने तब भी परमेश्वर की आराधना की जब हालात ऐसे थे कि आराधना करना नामुमकिन लगता था। उसने आराधना का जीवन जिया, जबकि उसके आस-पास अनगिनत "घमंडी" लोग (पद 5), "बुरे काम करने वाले" जिनसे प्रभु नफ़रत करते हैं (पद 5), "झूठ बोलने वाले" जिनका प्रभु नाश करते हैं (पद 6), और वे लोग जो "खून-खराबे और धोखेबाज़ी में मज़ा लेते हैं"—ऐसे लोग जिनसे प्रभु घृणा करते हैं (पद 6)—मौजूद थे। जब बाकी सब टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर चल रहे थे, तब दाऊद प्रभु के सीधे रास्ते पर कैसे चल पाया? हमारे आस-पास भी शायद बहुत से ऐसे लोग हों जो प्रभु के सीधे रास्ते पर चलने के बजाय टेढ़े-मेढ़े या डगमगाते हुए रास्तों पर चलते हैं। फिर भी, जब मैं सोचता हूँ कि दाऊद कैसे प्रभु के सीधे रास्ते पर चल पाया—हालातों से ऊपर उठकर—तो मुझे लगता है कि इसके दो कारण थे:

(1) पहला कारण यह है कि दाऊद प्रभु के रास्ते पर सीधा चल पाया क्योंकि उसने प्रभु की भरपूर दया और प्रेम पर भरोसा किया (पद 7)।

इन बेहद बुरे लोगों के कामों को देखकर, उसे एहसास हुआ कि जिस अच्छे रास्ते पर वह चलना चाहता था, उसके लिए वह अपनी ताकत पर भरोसा नहीं कर सकता था, बल्कि उसे पूरी तरह से परमेश्वर की दया पर

निर्भर रहना था (पार्क युन-सन)। परमेश्वर की भरपूर दया और प्रेम का सहारा लेने के कारण ही वह इतने सारे बुरे दुश्मनों, सतावटों, मुश्किलों, दर्द और तकलीफों के बीच भी परमेश्वर की आराधना कर सका।

(2) दूसरा कारण यह है कि दाऊद प्रभु का भय मानता था।

परमेश्वर का भय मानने के कारण, वह मुश्किल हालात से ऊपर उठ सका और "मेरे राजा, मेरे परमेश्वर" (पद 2) की सच्ची आराधना कर सका। जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, वे बुराई से नफरत करते हैं; इसलिए वे टेढ़े-मेढ़े रास्ते के बजाय प्रभु का रास्ता चुनते हैं और उस पर सीधा चलते हैं।

दाऊद परमेश्वर की महान कृपा और दया के कारण ही—बहुत सारे बुरे दुश्मनों के बीच भी—अपना ध्यान पूरी तरह परमेश्वर पर टिकाकर उनकी आराधना कर सका; वह ऐसी स्थितियों में भी आराधना कर सका क्योंकि वह प्रार्थना करने वाला व्यक्ति था। और हम? क्या हम मुश्किलों, कठिनाइयों, दर्द और ज़ख्मों के बीच भी परमेश्वर की आराधना करते हैं? या मुश्किल हालात से प्रभावित होकर हम परमेश्वर की आराधना नहीं कर पाते? अगर हम परमेश्वर की स्तुति और आराधना नहीं कर पाते हैं, तो इसका कारण हमारी प्रार्थना-जीवन में कोई कमी होना है। जो लोग प्रार्थना नहीं करते, वे आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना नहीं कर सकते। प्रभु की भरपूर दया और प्रेम पर भरोसा न होने और प्रभु का भय न मानने के कारण, वे कई तरह की मुश्किलों और प्रलोभनों के बीच परमेश्वर की आराधना करने में नाकाम रहते हैं। इसलिए, हमें सोमवार से ही प्रार्थना के ज़रिए रविवार की आराधना की तैयारी करनी चाहिए। और प्रभु के दिन, हमें "प्रभु के घर में प्रवेश करना" (पद 7) चाहिए और उनकी आराधना करनी चाहिए। ऐसा जीवन ही प्रभु के रास्ते पर सीधा चलने वाला जीवन है।

तीसरी और आखिरी बात, प्रभु के रास्ते पर सीधा चलने वाला जीवन "आनंद का जीवन" है। भजन संहिता 5:11 को देखिए: “परन्तु जो तेरी शरण लेते हैं, वे सब आनन्दित हों; वे सदा आनन्द के गीत गाएं, और तू उन्हें अपनी शरण में रखे, ताकि जो तेरे नाम से प्रेम करते हैं, वे तुझमें खुश हों।” तो फिर, आनन्द क्या है? जब हम ईसाई जिस आनन्द को महसूस करते हैं और अनुभव करते हैं, उस पर विचार करते हुए मैंने यीशु के बारे में सोचा। मैंने सोचा कि क्या बाइबल में कोई ऐसा अंश है जिसमें कहा गया हो कि “यीशु आनन्दित हुए।” हालाँकि, मेरी सीमित जानकारी के अनुसार, ऐसा कोई वचन मुझे याद नहीं आया। इसके बजाय, मुझे वह पल याद आया जब

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु का बपतिस्मा किया और वे प्रार्थना कर रहे थे; जब पवित्र आत्मा उन पर उतरी, तो स्वर्ग से एक आवाज़ आई: "तू मेरा प्रिय पुत्र है; तुझसे मैं बहुत प्रसन्न हूँ" (लूका 3:22)। जब इस बात पर विचार किया जाता है कि परमेश्वर पिता अपने एकलौते पुत्र, यीशु से क्यों प्रसन्न थे, तो मेरा मानना है कि इसका कारण यह है कि यीशु ने पिता की इच्छा का पूरी तरह से पालन किया—बेथलहेम से लेकर गोलगोथा में क्रूस पर अपनी मृत्यु तक। फिर मैंने खुद से पूछा: क्या बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है कि पृथ्वी पर अपने जीवन के दौरान—बेथलहेम से क्रूस तक—यीशु "आनन्दित" हुए? इंसानी नज़रिए से, यह दुख, दया और शोक का जीवन था... फिर भी मेरा मानना है कि परमेश्वर पिता की नज़र में, यीशु ने आनन्द का जीवन जिया। जो जीवन परमेश्वर पिता को प्रसन्न करता है, उसमें ज़रूरी नहीं कि उस तरह का "आनन्द" हो जिसकी हम आम तौर पर कल्पना करते हैं। हालाँकि, जिस सच्चे आनन्द का अनुभव हमें करना है, वह स्वयं परमेश्वर पिता का आनन्द है—एक ऐसा आनन्द जिसे पुत्र, यीशु ने भी साझा किया। यदि हम प्रार्थना और आराधना का जीवन जीते हैं जो ईमानदारी से यीशु के मार्ग का अनुसरण करता है, तो हम परमेश्वर के आनन्द का स्वाद चख सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं। यह वह आनन्द है जिसे वे सभी विश्वासी साझा करते हैं जो प्रभु के मार्ग पर चलते हैं ("वे सब आनन्दित हों") और यह एक शाश्वत आनन्द है ("सदा आनन्द के गीत गाएं") (वचन 11)। इस आनन्द का एकमात्र उद्देश्य स्वयं प्रभु हैं ("प्रभु में आनन्दित हों") (वचन 11)। जो ईसाई केवल प्रभु में अपना आनन्द पाते हैं, वे अंत तक ईमानदारी और दृढ़ता से उनके मार्ग पर चलेंगे—प्रभु में आनन्दित होते हुए, जो स्वयं उन पर आनन्दित होते हैं—भले ही दुनिया में कोई उन्हें न समझे। एक बुधवार की शाम, जब मैं अपने छोटे से ग्रुप के साथ एक खास गाना गाने के लिए प्रार्थना-सभा में आगे बढ़ा, तो मैंने देखा कि मेरी सबसे छोटी बेटी, ये-उन, थोड़ी देर से दौड़ती हुई आ रही थी और मेरी पत्नी का हाथ पकड़ने की कोशिश कर रही थी। उस नज़ारे को देखकर मेरे मन में एक बात आई: "अगर मैं प्रभु के रास्ते पर सीधा और सही चलना चाहता हूँ, तो मुझे उनका हाथ मज़बूती से पकड़ना होगा। या यूँ कहें कि प्रभु को ही मेरा हाथ मज़बूती से पकड़ना होगा ताकि मैं उस रास्ते पर सही ढंग से चल सकूँ।" प्रभु हमारे हाथ मज़बूती से थामे रहते हैं, इसीलिए हम कई तूफ़ानों, मुश्किलों और परेशानियों के बावजूद उनके रास्ते पर वफ़ादारी और सच्चाई से चल पाते हैं—उस दिन तक जब वे हमें अपने पास बुला लेते हैं। मैं प्रार्थना

करता हूँ कि आज आप और मैं प्रभु के रास्ते पर सीधे चलें—प्रार्थना, आराधना और खुशी का रास्ता—बिना दाएँ या बाएँ मुड़े।

आंसुओं भरी प्रार्थना

[भजन संहिता 6]

अपने चर्च के बाइबल सम्मेलन की तैयारी करते समय, परमेश्वर के कोमल प्रेम से प्रभावित होकर मैंने आंसुओं के साथ प्रार्थना की। सम्मेलन के पहले सत्र को शुरू करने से पहले, गेस्ट स्पीकर ने दो अन्य पादरियों के साथ एक रेडियो गॉस्पेल प्रसारण साक्षात्कार में भाग लिया। मुझे उम्मीद थी कि वे साक्षात्कार के दौरान हमारे चर्च के सम्मेलन का ज़िक्र करेंगे, और जब उन्होंने इसके बारे में कुछ नहीं कहा तो मुझे थोड़ी निराशा हुई। हालाँकि, उसके कुछ ही समय बाद, *जूंगआंग इल्बो* के एक रिपोर्टर—जिनसे मैं कभी नहीं मिला था—ने चर्च में फ़ोन किया और हमारी मंडली के बारे में साक्षात्कार करने के लिए कहा। फ़ोन रखने के बाद, मैंने अपनी मेज़ पर सिर झुकाया और परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए रो पड़ा। मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मैंने परमेश्वर के कोमल, व्यक्तिगत प्रेम को महसूस किया था। यह अनुभव करने के बाद कि परमेश्वर मेरी छोटी-छोटी इच्छाओं को भी जानते हैं और उन्हें पूरा करते हैं, मैंने उनके प्रेम के जवाब में कृतज्ञता और गहरी भावना के आँसू बहाए।

भजन संहिता 6:6 में, हम देखते हैं कि भजनकार दाऊद बताते हैं कि कैसे वे हर रात अपने बिस्तर को आँसुओं से भिगो देते थे। मैं उन आँसुओं के पीछे के अर्थ पर विचार करता हूँ। मेरा मानना है कि दाऊद के आँसू पश्चाताप के आँसू थे। इस सम्मेलन की तैयारी के दौरान, मुझे जो अनुग्रह मिला, वह यह एहसास था कि मुझमें ऐसे पश्चाताप के आँसुओं की कमी थी। गेस्ट स्पीकर ने रेडियो साक्षात्कार के दौरान इस बात पर ज़ोर दिया था कि सम्मेलन में भाग लेने वाले हम लोगों को पश्चाताप करने वाले हृदय की आवश्यकता है; मुझे एहसास हुआ कि मेरे अपने पश्चाताप के आँसू काफी हद तक सूख चुके थे। दाऊद ने अपने किए गए पापों के लिए परमेश्वर के क्रोध से उपजी सज़ा के बजाय, प्रेम से उपजी परमेश्वर की अनुशासनात्मक सज़ा पाने की इच्छा की। इस प्रेमपूर्ण अनुशासन (पद 2-3) के कारण अपनी हड्डियों और आत्मा के कांपने के बीच, उन्होंने परमेश्वर के सामने पश्चाताप के आँसू बहाए। "शारीरिक पीड़ा सहते हुए पाप के लिए पश्चाताप करने की क्षमता पवित्र आत्मा का एक उपहार है" (पार्क

यूं-सन)। दाऊद ने पश्चाताप के आँसू बहाए—जो पवित्र आत्मा का उपहार है—और ऐसा उन्होंने उस शारीरिक पीड़ा के कारण किया जो उन पर आई थी। यह पहचानते हुए कि यह पीड़ा उनके पाप के जवाब में परमेश्वर का प्रेमपूर्ण अनुशासन था, उन्होंने इसे उचित माना और इससे बचने की कोशिश नहीं की। यही पश्चाताप की मानसिकता है (पार्क यूं-सन)।

मुझमें पश्चाताप की इस मानसिकता का भी अभाव है। ऐसा लगता है कि मैंने पाप के प्रति अपनी सारी संवेदनशीलता खो दी है; नतीजतन, मैं न केवल पाप को पाप नहीं मानता, बल्कि ऐसा लगता है कि मुझमें ऐसा करने की क्षमता ही खत्म हो गई है। मुझमें भगवान के प्यार भरे अनुशासन से डरने के बजाय उसे ठुकराने की प्रवृत्ति है। अभी, ऐसा लगता है कि मैं भगवान के प्यार भरे अनुशासन को विनम्रता से स्वीकार करने के बजाय उससे बचने की कोशिश कर रहा हूँ। सच तो यह है कि जब मैं भगवान के अनुशासन से गुज़र रहा होता हूँ, तब भी मुझे अपने पाप की असलियत का पता नहीं होता। इसलिए, मुझे भगवान के सामने बहुत आँसू बहाने चाहिए। हालाँकि मुझे निश्चित रूप से कृतज्ञता, समर्पण और प्रेम के आँसू बहाने चाहिए, लेकिन अभी मैं जो आँसू बहाना चाहता हूँ, वे पश्चाताप के आँसू हैं। इसका कारण शायद यह है कि ऐसे आँसुओं के बिना, मैं अशुद्ध आत्मा के साथ ईमानदारी से कृतज्ञता, समर्पण या प्रेम व्यक्त नहीं कर सकता।

धर्मी लोगों को स्थापित करें!

[भजन संहिता 7]

इस हफ़्ते, मेरी कार में कुछ दिक्कत थी, इसलिए मैं चर्च की गाड़ी से हैमबर्गर की दुकान पर गया। वहाँ मुझे हमारी कलीसिया का एक सदस्य मिला। मिलते ही उसने मुझसे पूछा, "क्या आपने देखा कि थोड़ी देर पहले यहाँ क्या झगड़ा हुआ था?" पता चला कि किसी दूसरे व्यक्ति के साथ बहस के दौरान, हमारे चर्च के सदस्य ने उस व्यक्ति के चेहरे पर थूक दिया था। ज़ाहिर है, वह व्यक्ति बहुत गुस्से में था। नतीजतन, वह व्यक्ति अपने एक दोस्त के साथ वापस आया और हमारे चर्च के सदस्य के साथ बहस फिर से शुरू हो गई। मैंने दूसरे पक्ष से माफ़ी मांगी और कहा, "मुझे खेद है।" हालाँकि, उनमें से एक व्यक्ति की नज़र चर्च की उस गाड़ी पर पड़ी जिसे मैं चला रहा था; उस पर चर्च का नाम देखकर उसने हमारे सदस्य से सवाल किया, "जो व्यक्ति चर्च जाता है, वह ऐसा व्यवहार कैसे कर सकता है?" मुझे सचमुच बहुत दुख हुआ। हमारे सदस्य की बहस और किसी के चेहरे पर थूकने जैसी गलत और अशोभनीय हरकत ने परमेश्वर की महिमा को धूमिल कर दिया था और हमारे चर्च की प्रतिष्ठा को भी नुकसान पहुँचाया था। सीनियर पास्टर होने के नाते, मैंने ज़िम्मेदारी का गहरा एहसास किया। मैंने खुद से पूछा, "मुझे अपनी पास्टोरल सेवा कैसे निभानी चाहिए?" भजन संहिता 7 पर मनन करते हुए, मैंने भजनकार की आयत 9 की प्रार्थना पर ध्यान केंद्रित किया: "धर्मी लोगों को स्थापित करें।" इस अनुभव और अपनी प्रार्थनाओं के ज़रिए, मुझे धर्मी लोगों को तैयार करने में अपनी पूरी कोशिश करने की चुनौती महसूस हुई। हाल ही में हुई उपदेशों की एक सीरीज़ के दौरान, गेस्ट पास्टर ने उस घटना के बारे में बात की जब अब्राहम ने सदोम और अमोरा के विनाश से पहले लूत को बचाने के लिए परमेश्वर से विनम्रतापूर्वक पूछा था कि क्या वे पचास, पैंतालीस, चालीस, तीस, बीस या यहाँ तक कि दस धर्मी लोगों की खातिर उन शहरों को बख्श देंगे। यह सुनकर, मुझे पक्का यकीन हो गया कि हमारा चर्च सिर्फ़ इसलिए बर्बाद नहीं होना चाहिए क्योंकि हमारे पास दस धर्मी लोग नहीं हैं। मुझे चुनौती महसूस हुई कि मैं हर एक व्यक्ति को धर्मी इंसान बनाने के काम में पूरे दिल से जुट जाऊँ। हालाँकि मेरा मन संख्याओं पर ध्यान देने का कर सकता है, लेकिन मुझे भरोसा है कि प्रभु हमारी

संख्या बढ़ाएँगे; अभी के लिए, मेरी प्राथमिकता हर व्यक्ति को परमेश्वर के वचन से पोषित करना, उन्हें धार्मिक जीवन जीने के लिए सिखाना और प्रोत्साहित करना, और उनके लिए प्रार्थना करना है। मुझे गेस्ट पास्टर के साथ कार में हुई बातचीत भी याद है। उन्होंने "सस्ती कृपा" (cheap grace) के बारे में बात की—एक ऐसा विचार जो आज बहुत मायने रखता है, क्योंकि बहुत से ईसाइयों को विश्वास का तोहफ़ा मिला है और यीशु को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु मानकर उन्हें धर्मी ठहराया गया है, फिर भी वे एक धर्मी जीवन जीने में नाकाम रहते हैं। अगर परमेश्वर की कृपा से धर्मी ठहराया जाना सिक्के का एक पहलू है, तो धर्मी जीवन जीना दूसरा पहलू है; फिर भी, ऐसा लगता है कि हम इस ज़िम्मेदारी को नज़रअंदाज़ करते हुए परमेश्वर की कृपा से जीने का दावा करते हैं। यह सचमुच सस्ती कृपा है। अफ़सोस की बात है कि सच्चाई यह है कि कई पादरी भी इस तरह की "सस्ती कृपा" को ही पसंद करते हैं। जैसे-जैसे विश्वास और रोज़मर्रा की ज़िंदगी के बीच फ़ासला बढ़ता जा रहा है—जिसका नतीजा यह होता है कि मंच से सुनाए गए वचन और असल ज़िंदगी में उस वचन का पालन करने के बीच तालमेल नहीं रहता—ईसाई धर्म ऐसी हालत में पहुँच गया है जहाँ "किराये के मज़दूर" जैसे पादरी, जो यीशु जैसे नहीं हैं, हर जगह छा गए हैं।

तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? हमें मिलकर प्रार्थना करनी चाहिए और परमेश्वर से कहना चाहिए कि "धर्मियों को खड़ा करें!" परमेश्वर धर्मियों को कैसे खड़ा करते हैं? आज, भजन संहिता 7 पर ध्यान देकर, मुझे उम्मीद है कि हम सीख पाएँगे कि परमेश्वर धर्मियों को कैसे स्थापित करते हैं और परमेश्वर और लोगों के सामने धर्मी जीवन जीने का संकल्प ले पाएँगे।

पहला, परमेश्वर अधर्मी हालात के ज़रिए धर्मियों को खड़ा करते हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर अन्यायपूर्ण परिस्थितियों में भी धर्मियों को स्थापित करते हैं।

दाऊद जिस हालात से गुज़रे, वह सचमुच अन्यायपूर्ण था। अगर उन्होंने कोई "गलत काम" (या पाप) किया था, तो वह बस परमेश्वर के नाम पर फ़िलिस्तीनी सेनापति गोलियत को हराना था; फिर भी, राजा शाऊल जलन की वजह से उन्हें मारना चाहते थे, क्योंकि लोगों ने यह नारा लगाया था: "शाऊल ने हज़ारों को मारा है, और दाऊद ने दसियों हज़ारों को।" नतीजतन, दाऊद को इस अन्याय के बीच राजा शाऊल से भागना पड़ा। फिर भी, परमेश्वर की अद्‌भुत योजना के ज़रिए, इस अन्यायपूर्ण मुश्किल घड़ी में भी, परमेश्वर दाऊद की बेगुनाही और

पवित्रता को साबित कर रहे थे। भजन संहिता 7:3–5 को देखिए: "हे यहोवा मेरे परमेश्वर, अगर मैंने ऐसा किया है, अगर मेरे हाथों में कोई बुराई है, अगर मैंने उसके साथ बुरा किया है जो मेरे साथ शांति से रहता था, या बिना किसी वजह के अपने दुश्मन को लूटा है, तो दुश्मन मेरी जान का पीछा करे और मुझे पकड़ ले; वह मेरी ज़िंदगी को ज़मीन पर रौंद दे और मेरी इज़्ज़त को धूल में मिला दे।" दाऊद असल में यह कह रहा था, "अगर मैंने कोई गलत काम किया है—चाहे किसी दोस्त के खिलाफ या दुश्मन के खिलाफ—तो मुझे मरने की सज़ा मिलनी चाहिए।" सचमुच अन्यायपूर्ण हालात में भी, दाऊद की "धार्मिकता" और "ईमानदारी" साफ़ झलक रही थी (आयत 8)।

इस अन्यायपूर्ण दुनिया में रहते हुए, हम धर्मी ईसाइयों को कई अन्यायपूर्ण हालात का सामना करना पड़ सकता है। हम धोखाधड़ी का शिकार हो सकते हैं, हम पर झूठे आरोप लग सकते हैं, या हमें कई तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे समय में, दाऊद की तरह, हमें इन अन्यायपूर्ण हालात का इस्तेमाल अपनी "धार्मिकता" और "ईमानदारी" (आयत 8) दिखाने के मौके के तौर पर करना चाहिए और इस तरह परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए। हमें परमेश्वर और लोगों के सामने अपनी बेगुनाही या पवित्रता ज़ाहिर करनी चाहिए। अन्यायपूर्ण हालात के बारे में बड़बड़ाने और शिकायत करने के बजाय, हमें ऐसे लोग बनना चाहिए जो जानते हों कि कैसे इन हालात का इस्तेमाल धार्मिकता और ईमानदारी दिखाने के मौके के तौर पर किया जाए—यानी सच्चे धर्मी लोग।

दूसरी बात, परमेश्वर प्रार्थना के ज़रिए धर्मी लोगों को स्थापित करते हैं।

दाऊद ने अन्यायपूर्ण हालात का सामना करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना की। और वह कैसी प्रार्थना थी? वह एक "सच्ची" या "ईमानदार" प्रार्थना थी। अधर्मी हालात के बीच परमेश्वर से की गई सच्ची प्रार्थना... परमेश्वर का यह कितना अद्‌भुत इंतज़ाम है! धर्मी लोगों को स्थापित करते हुए, परमेश्वर उन्हें अन्यायपूर्ण हालात में भी ईमानदार प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करते हैं। आखिरकार, परमेश्वर उन लोगों को ऊपर उठाते हैं जो अन्यायपूर्ण हालात का सामना करते हुए ईमानदारी से प्रार्थना करते हैं। हम धर्मी दाऊद की ईमानदार प्रार्थना के तीन मुख्य पहलू देख सकते हैं:

(1) भरोसा।

मुसीबत और अन्यायपूर्ण हालात के समय, दाऊद ने अपनी ताकत पर भरोसा नहीं किया; इसके बजाय, प्रार्थना करते समय उसने खुद को परमेश्वर की शक्ति और इच्छा के हवाले कर दिया (पार्क युन-सन; आयत 1 – "मैं तेरी शरण लेता हूँ")। "जो ऐसा कर सकता है, वह निश्चिंत रह सकता है, यह पक्का जानते हुए कि परमेश्वर उद्धार करेंगे" (पार्क युन-सन)। अन्यायपूर्ण हालात में भी, दाऊद ने सिर्फ़ प्रभु की ओर देखा और सिर्फ़ उन पर भरोसा किया। उसने परमेश्वर को अपनी ढाल भी बनाया [(आयत 10) "मेरी ढाल परमेश्वर के पास है, जो सच्चे दिल वालों को बचाता है"]।

(2) एक पवित्र जीवन। भजन संहिता 7:3–5 में, दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता है और उन घटनाओं को याद करता है जैसे कि गुफा वाली घटना, जब वह अपने दुश्मन राजा शाऊल को मार सकता था, लेकिन उसने उसे जीवित छोड़ दिया (1 शमूएल 24:1–15)। अपनी बेगुनाही बताते हुए दाऊद की प्रार्थना हमें सिखाती है कि हमें भी अपने जीवन की सच्चाई और ईमानदारी के आधार पर परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। पवित्र जीवन जीते हुए हमें परमेश्वर से प्रार्थना क्यों करनी चाहिए? क्योंकि हमारा परमेश्वर "धर्मी परमेश्वर है जो मन और हृदय को परखता है" (भजन संहिता 7:9)।

(3) परमेश्वर का न्याय।

भजन संहिता 7:6–16 में, दाऊद परमेश्वर के न्याय के आधार पर उनसे प्रार्थना करता है (खासकर आयत 6, 8 और 11 में)। यह "परमेश्वर के न्याय पर आधारित उम्मीद की प्रार्थना" है (पार्क युन-सन)। जैसे दाऊद ने अन्यायपूर्ण स्थिति से छुटकारा पाने के लिए प्रार्थना की—उससे गुहार लगाई जो "धर्मी न्यायकर्ता" है और "वह परमेश्वर है जो हर दिन क्रोध प्रकट करता है" (आयत 11)—वैसे ही हमें भी धर्मी और न्याय करने वाले परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

परमेश्वर नेक लोगों को अन्याय या नाइंसाफ़ी वाली स्थितियों में भी सच्ची प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करते हैं। जो लोग नेक जीवन नहीं जीते, वे ऐसी स्थितियों का सामना करते समय परमेश्वर से सच्ची प्रार्थना करने के बजाय बेईमानी भरी बातें और काम करने लगते हैं। लेकिन, हमारी सच्ची प्रार्थनाओं के ज़रिए हमारे जीवन और हमारे सामने आने वाली स्थितियों में परमेश्वर की नेकी ज़ाहिर होती है। इसलिए, जब हम अन्याय का सामना करें, तो हमें परमेश्वर से और भी ज़्यादा सच्ची प्रार्थना करनी चाहिए।

तीसरी बात, परमेश्वर न्याय के ज़रिए नेक लोगों को स्थापित करते हैं।

परमेश्वर, जो हर दिन क्रोधित होते हैं (वचन 11), उन पापियों का अचानक विनाश करके बुरे लोगों का नाश और नेक लोगों का उद्धार करते हैं जो बुराई से भरे हैं और पछतावा नहीं करते (वचन 12)—वे "धधकते तीरों" (वचन 13) का इस्तेमाल करते हैं, जो बिजली गिरने का एक रूपक है (पार्क युन-सन)। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि बुरे लोग शरारत (दूसरों को नुकसान पहुँचाने की गुप्त साज़िशें) रचते हैं और बुराई को जन्म देते हैं (वचन 14)। चूँकि वे बार-बार बुराई को जन्म देते हैं, इसलिए परमेश्वर अपना न्याय प्रकट करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। आखिरकार, न्याय के ज़रिए, परमेश्वर बुराई में डूबे पापियों को—बिजली की तरह—गिराकर नेक लोगों को स्थापित करते हैं। उनका न्याय नेक लोगों को बचाता है और बुरे लोगों का नाश करता है, क्योंकि वे नेक लोगों में पाई जाने वाली नेकी और ईमानदारी के अनुसार न्याय करते हैं (वचन 8)।

परमेश्वर पवित्र और न्यायपूर्ण हैं; वे ऐसे परमेश्वर हैं जो अन्याय का न्याय करके अपनी नेकी प्रकट करते हैं। परमेश्वर अपने नेक लोगों के लिए—जो अन्यायपूर्ण और नाइंसाफ़ी वाली स्थितियों में होते हैं—बुरे और अधर्मी लोगों का न्याय करके उद्धार का काम पूरा करते हैं। इसलिए, हमें अपने परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए और उनसे प्रार्थना करनी चाहिए। हमें परमेश्वर से सच्ची प्रार्थना करनी चाहिए। और हमें उम्मीद के साथ आगे देखना चाहिए—इस उम्मीद के साथ कि बुरे लोगों पर परमेश्वर के न्याय के ज़रिए हमें छुटकारा मिलेगा। आखिरकार, परमेश्वर हमारी नेकी और ईमानदारी को सही साबित करेंगे, और हमें नेक लोगों के तौर पर स्थापित करेंगे।

एक ऐसा परमेश्वर जो क्रोधित होता है

"परमेश्वर धर्मी न्यायकर्ता है, वह परमेश्वर जो हर दिन अपना क्रोध प्रकट करता है" (भजन संहिता 7:11)।

कल दोपहर, मैं अपने बेटे डायलन और अपनी दो बेटियों, येरी और यीउन को डायलन के स्कूल ले गया। जब हम स्कूल के खेल के मैदान में इंतज़ार कर रहे थे, तो मैंने देखा कि खेलते समय यीउन ने एक दूसरे कोरियाई बच्चे को मारा। मैंने यीउन से कहा कि वह उस बच्चे से माफ़ी मांगे और कहे, "मुझे माफ़ कर दो।" लेकिन यीउन ने बात नहीं मानी और अपनी ज़िद पर अड़ी रही; आख़िरकार, वह मेरे सामने ही रोने लगी। भले ही खेलते समय उसने जो किया, उसके लिए उसके पास कोई वाजिब वजह रही हो, लेकिन सच तो यह था कि उसने किसी को मारा था, और मैं उसकी इस ग़लती को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था। अगर वह मेरी बात मान लेती और जिस बच्चे को मारा था उससे माफ़ी मांग लेती, तो मैं उसे माफ़ कर देता; लेकिन चूँकि उसने अपने पिता की बात मानने या माफ़ी मांगने से ज़िद में आकर इनकार कर दिया, इसलिए मेरे पास उसे भीड़ से दूर ले जाकर सज़ा देने के अलावा कोई चारा नहीं था। इस पर वह और ज़ोर से रोने लगी। जैसे ही मैं यीउन को उस बच्चे के पास ले जाने वाला था जिसे उसने मारा था, स्कूल की छुट्टी हो गई और डायलन बाहर आ गया। डायलन से मिलने के बाद, मैं यीउन को उस दूसरे बच्चे के पास ले गया और उसे माफ़ी मांगने का एक और मौका दिया, लेकिन उसने फिर भी मेरी बात मानने या माफ़ी मांगने से इनकार कर दिया। नतीजतन, मैंने यीउन की तरफ़ से उस बच्चे से माफ़ी मांगी और प्यार से बच्चे के सिर पर हाथ फेरा।

कल यीउन के साथ हुई इस घटना के बारे में सोचते हुए, आज सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान मैंने अपने और परमेश्वर पिता के बीच के रिश्ते के बारे में सोचा। मैंने इस बात पर विचार किया कि परमेश्वर पिता अपने बच्चों को कैसे अनुशासित करते हैं—ठीक वैसे ही जैसे मैंने अपनी बेटी यीउन को अनुशासित किया था, जब उसने मेरी बात नहीं मानी थी और कुछ ग़लत करने के बाद माफ़ी नहीं मांगी थी। हालाँकि, भजन संहिता 7:11 में

परमेश्वर का वर्णन सिर्फ़ एक ऐसे परमेश्वर के रूप में नहीं किया गया है जो हमें अनुशासित करते हैं, बल्कि एक ऐसे परमेश्वर के रूप में किया गया है जो "हर दिन अपना क्रोध प्रकट करते हैं।" यह आयत पहली बार में उलझन भरी लग सकती है, क्योंकि हम आम तौर पर परमेश्वर पिता को प्रेम, अनुग्रह, दया और करुणा के परमेश्वर के रूप में देखते हैं। फिर भी, बाइबल बताती है कि एक "धर्मी न्यायकर्ता" के रूप में, परमेश्वर उन लोगों से हर दिन क्रोधित होते हैं जो "पश्चाताप नहीं करते" (आयत 12)। इस नज़रिए से, मैंने सोचा कि क्या प्यार की वजह से ये-उन को अनुशासित करने का मेरा तरीका—भले ही उसमें थोड़ा "गुस्सा" भी शामिल था—असल में सही था।

लेकिन उससे भी ज़्यादा, जब मैंने अपने सामने खड़ी ये-उन के बारे में सोचा, तो मुझे ख्याल आया कि क्या मैंने भी परमेश्वर पिता के सामने ठीक वैसा ही व्यवहार नहीं किया था। मैंने सोचा कि क्या मैंने इससे भी बड़ा पाप किया है: जैसे ये-उन ने दूसरे बच्चे को मारा और साफ़ तौर पर पाप किया; फिर भी, पछतावा करने और माफ़ी मांगने के बजाय, हो सकता है कि मैं अपने आँसुओं से परमेश्वर पिता को "मैनिपुलेट" करने की कोशिश कर रहा था—ठीक वैसे ही जैसे ये-उन ने अपने आँसुओं से मुझे, यानी अपने पिता को, मैनिपुलेट करने की कोशिश की थी। मैंने यह भी सोचा कि क्या मैं परमेश्वर पिता के सामने अपने पाप को पाप मानने से ज़िद में इनकार कर रहा था, ठीक वैसे ही जैसे ये-उन ने मेरी बात सुनने से ज़िद में इनकार किया था। इस आत्म-चिंतन के ज़रिए, मुझे एहसास हुआ कि ये-उन का कल वाला व्यवहार मेरे अंदर भी मौजूद है। मैं खुद को एक ऐसे बच्चे के रूप में देखता हूँ जिसका कोई इलाज नहीं हो सकता। आज सुबह की प्रार्थना के दौरान, जब मैं भजन-संहिता पर मनन कर रहा था, तो मुझे एहसास हुआ कि परमेश्वर पिता के बारे में मेरी सोच कुछ असंतुलित हो गई थी। मैं परमेश्वर को ऐसे रूप में देखने लगा था जो गुस्से से जल उठते हैं जब मैं, उनका बच्चा, अपने पापों के लिए पछतावा नहीं करता। इस सोच के ज़रिए, मुझे एहसास हुआ और मैंने माना कि वे सही गुस्से वाले परमेश्वर इसलिए हैं क्योंकि वे मुझसे बहुत गहरा प्यार करते हैं—वे मुझे एक बेदाग़, पवित्र बच्चा बनाना चाहते हैं। मैं उस गुस्से में भी मेरे लिए उनका प्यार महसूस करता हूँ—एक पिता का प्यार जो मुझे पछतावे की ओर ले जाता है और मेरे पापों को धोता है, भले ही इसके लिए उन्हें रोज़ गुस्सा ही क्यों न करना पड़े।

"इंसान क्या है?"

[भजन संहिता 8]

रविवार, 15 नवंबर 2005 को दो लोगों का निधन हो गया। दोनों 79 साल के थे (अमेरिकी उम्र के हिसाब से)। एक मेरे दोस्त के पिता थे और दूसरे मेरे अपने पिता के साथ काम करने वाले एक सीनियर पादरी थे। एक का अंतिम संस्कार बौद्ध रीति-रिवाजों के अनुसार किया गया, जबकि दूसरे को ईसाई अंतिम संस्कार के बाद कब्रिस्तान में दफनाया गया। उनकी मौत के बारे में सोचते हुए, मुझे एक बार फिर इंसान की असलियत पर विचार करने का मौका मिला।

बाइबल में, भविष्यवक्ता यशायाह ने इंसान को "घास" जैसा बताया है (यशायाह 40:6), पौलुस ने उसकी तुलना "मिट्टी के बर्तन" से की है (2 कुरिन्थियों 4:7), और याकूब ने उसे "धुंध" जैसा कहा है (याकूब 4:14)। घास जैसा जीवन, नाज़ुक मिट्टी के बर्तन जैसा जीवन, धुंध जैसा जीवन जो थोड़ी देर के लिए दिखता है और फिर गायब हो जाता है—अगर हमेशा के नज़रिए से देखें, तो इंसानी ज़िंदगी शायद उतनी लंबी या शानदार नहीं है जितनी हम अक्सर सोचते हैं। संक्षेप में, कोई यह भी सोच सकता है कि क्या इंसान सच में मामूली हैं। फिर भी, हैरान करने वाली सच्चाई यह है कि इतने सारे लोगों के बीच, हम ईसाइयों को परमेश्वर ने अपने प्यार की वजह से चुना है और अब हम उद्धार की कृपा का आनंद ले रहे हैं। इसीलिए भजनकार दाऊद भजन संहिता 8:4 में पूछते हैं: "इंसान क्या है कि तू उसे याद रखता है, और इंसान का बेटा क्या है कि तू उसकी परवाह करता है?" इसी बात को ध्यान में रखते हुए, मैंने "इंसान क्या है?" विषय पर कृपा से जुड़े चार सवाल पूछे हैं:

पहला सवाल है: "इंसान क्या है कि तू बच्चों और दूध पीते शिशुओं के मुँह से ताकत कायम करता है?" भजन संहिता 8:2 पर विचार करें: "बच्चों और दूध पीते शिशुओं के मुँह से तूने ताकत ठहराई है, ताकि तू अपने दुश्मनों की वजह से दुश्मन और बदला लेने वाले को चुप करा सके।" यहाँ "बच्चों" (babes) शब्द का मतलब है "वे बच्चे

जिन्होंने अभी-अभी बोलना शुरू किया है" (पार्क युन-सन)। जहाँ तक "दूध पीते शिशुओं" की बात है, यहूदी रीति-रिवाजों में हिब्रू औरतें कई सालों तक अपने बच्चों को दूध पिलाती थीं; इससे माँ के दूध से पल-बढ़ रहे शिशु की तस्वीर सामने आती है। आखिरकार, इस बात का मतलब कि परमेश्वर ने "बच्चों और दूध पीते बच्चों के मुँह से शक्ति ठहराई है," यह है कि विश्वास करने वाले परमेश्वर को वैसे ही जानते हैं जैसे एक बच्चा—बिना किसी भेदभाव के—जानता है (पार्क युन-सन)।

जब हम बच्चों और दूध पीते बच्चों की तरह नम्रता से परमेश्वर के वचन—आध्यात्मिक दूध—की इच्छा करते हैं, तो परमेश्वर हमें अपना ज्ञान देते हैं और हमें उन्हें जानने के काबिल बनाते हैं। यह कितनी अद्‌भुत कृपा और आशीष है! हम कौन हैं कि हम परमेश्वर को जान सकें? इसके अलावा, जब हम बच्चों और दूध पीते बच्चों की तरह नम्रता से परमेश्वर के वचन के लिए तड़पते हैं, तो परमेश्वर हमारे ज़रिए अपने वचन की शक्ति को प्रकट करते हैं। इस तरह, परमेश्वर "दुश्मन और बदला लेने वाले को चुप करा देते हैं" (पद 2)। मैं परमेश्वर की कृपा के लिए बहुत आभारी हूँ—कि कैसे उन्होंने मुझ जैसे व्यक्ति, जेम्स को, यूहन्ना 6:1–15 में बुलाहट के शब्द और मत्ती 16:18 में विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च में लौटने का वादा बताया; और कैसे, जब उन्होंने मुझे—मेरी कमज़ोरी में—सिर्फ़ उनकी ओर देखने के लिए प्रेरित किया, तो उन्होंने मेरी आत्मा को फिर से जीवित करने और बहाल करने के लिए उन वादों की शक्ति को दिखाया।

दूसरा सवाल है: "इंसान क्या है, कि तू उससे प्यार करता है और उसकी परवाह करता है?"

भजन संहिता 8:4 को देखिए: "इंसान क्या है कि तू उसे याद रखता है, और इंसान का बेटा क्या है कि तू उससे मिलने आता है?" यह पद पूछता है, "इंसान क्या है कि तू उसे याद रखता है?" मूल हिब्रू भाषा में, "याद रखने" (या "सोचने") के तौर पर अनुवादित शब्द का मतलब है "याद करना," जो प्यार को दिखाता है। इसके अलावा, यह पद पूछता है, "और इंसान का बेटा क्या है कि तू उससे मिलने आता है?" यहाँ, "मिलने आने" (या "परवाह करने") शब्द का मतलब है "देख-रेख करना" या "ध्यान रखना" (पार्क युन-सन)। "तेरे आकाश, तेरी उंगलियों का काम, चाँद और तारे, जिन्हें तूने ठहराया है" (पद 3) को देखते हुए, भजनकार दाऊद उस कृपा पर हैरान होता है जिससे परमेश्वर इंसान से प्यार करते हैं और उसकी परवाह करते हैं। आप क्या सोचते हैं? जब हम

परमेश्वर की रचना को देखते हैं—विशाल आकाश, चाँद और तारों की तुलना अपने जीवन से करते हैं—तो क्या हमें यह आश्चर्य नहीं होता कि हम, जो मिट्टी के मामूली बर्तन जैसे हैं—घास या धुंध की तरह बहुत छोटे—क्या सच में परमेश्वर के प्यार और देखभाल के लायक हैं? फिर भी, और भी आश्चर्य की बात यह है कि सारी रचना में, परमेश्वर ने केवल हमें—इंसानों को—अपनी ही छवि में बनाया। इसी वजह से हमें परमेश्वर का प्यार और देखभाल मिलती है। परमेश्वर की कैसी अद्‌भुत कृपा और प्यार है यह!

मैं, जेम्स—एक मामूली इंसान—परमेश्वर की कृपा के लिए केवल धन्यवाद ही दे सकता हूँ; मैं सोचता हूँ कि मैं क्या हूँ कि परमेश्वर की अनगिनत अद्‌भुत रचनाओं के बीच, उन्होंने मुझे अपनी छवि धारण करने और अपने खास प्यार और देखभाल के आशीर्वाद का आनंद लेने का मौका दिया है।

तीसरा सवाल है: "इंसान क्या है कि तूने उसे महिमा और सम्मान का ताज पहनाया है?"

भजन संहिता 8:5 को देखें: "तूने उसे स्वर्गदूतों से थोड़ा कम बनाया और महिमा और सम्मान का ताज पहनाया।" इस वचन के दो अर्थ हैं: (1) यह भविष्यवाणी करता है कि यीशु, जो इंसानियत का प्रतिनिधित्व करते हैं, दुख सहेंगे और मरेंगे—स्वर्गदूतों से कम बनाए जाकर—ताकि जी उठने और स्वर्ग जाने के बाद उन्हें ऊँचा स्थान मिले (इब्रानियों 12:6-9); और (2) जब मसीह के द्वारा छुड़ाए गए संतों की बात होती है, तो इसका मतलब है कि उन्हें पूरी तरह से छुटकारा मिलेगा और वे मसीह की छवि में बदल जाएंगे (पार्क युन-सन)। मसीहा के लिए भविष्यवाणी वाला अर्थ पहले ही पूरा हो चुका है। यीशु मसीह, जो मसीहा हैं, क्रूस पर मरे, फिर जी उठे, स्वर्ग गए और परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठे। परमेश्वर पिता ने यीशु को ऊँचा स्थान दिया। इस तरह, दूसरा अर्थ हमारे लिए बाकी है। जिस दिन यीशु लौटेंगे, हम पूरी तरह से छुड़ाए जाएंगे और मसीह की छवि में बदल जाएंगे। उस समय, परमेश्वर हमें "महिमा और सम्मान का ताज पहनाएंगे।" इंसान क्या है, कि उसे ऐसा अद्‌भुत, महिमामय और सम्मानजनक आशीर्वाद मिले?

मैं क्या हूँ—जेम्स, एक मामूली इंसान—कि मुझे ऐसी महिमा और सम्मान का ताज पहनाया जाए? यह परमेश्वर की कृपा के अलावा और क्या हो सकता है?

चौथा और आखिरी सवाल है: "इंसान क्या है, कि तूने उसे अपने हाथों के कामों पर राज करने के लिए नियुक्त किया है?" भजन संहिता 8:6 को देखिए: "आपने उसे अपने हाथों की रचनाओं पर शासन करने के लिए बनाया है; आपने सब कुछ उसके पैरों के नीचे कर दिया है।" पाप में गिरने से पहले, इंसानों के पास पूरी सृष्टि पर शासन करने का अधिकार था, जो उन्हें परमेश्वर से मिला था। लेकिन, पाप करने की वजह से इंसानों ने वह अधिकार खो दिया और वे सही मायनों में सृष्टि का आदर्श तरीके से शासन करने में नाकाम रहे। फिर भी, मसीह के छुटकारे के ज़रिए, इंसान आखिर में पूरी सृष्टि पर शासन करने का पद हासिल करेंगे, जिस दिन उद्धार का काम पूरा हो जाएगा (पार्क युन-सन)। इंसान आखिर क्या है कि उसे शासन करने का ऐसा पद मिले? यह सिर्फ़ परमेश्वर की असीम कृपा ही हो सकती है।

मुझे भजन 410 की पहली पंक्ति याद आती है: "अद्भुत कृपा! कितनी मधुर आवाज़ है—जिसने मुझ जैसे पापी को बचाया।" परमेश्वर ने उसे बचाया जो सच में किसी काम का नहीं था; उन्होंने हमें खुद को जानने और उनके प्यार और देखभाल की आशीषों का आनंद लेने का मौका दिया; और उन्होंने वादा किया कि प्रभु की वापसी के दिन, वे हमें महिमा और सम्मान का ताज पहनाएंगे और हमें पूरी सृष्टि पर शासन करने के पद पर बिठाएंगे। सच तो यह है कि जब हम सोचते हैं कि इंसान घास, मिट्टी के बर्तन या धुंध के समान हैं, तो हम बस यही कह सकते हैं, "मैं समझ नहीं सकता" कि वे हमें ऐसी आशीषें क्यों देते हैं।

प्रभु पर भरोसा रखें!

[भजन संहिता 9]

हम ईसाइयों के लिए, निराशा के पल हमें परमेश्वर की ओर ले जाते हैं। आखिरकार, निराशा एक तड़प में बदल जाती है, और वह तड़प परमेश्वर में आशा जगाती है, जिससे हम उनकी स्तुति करते हैं। इसीलिए भजनकार भजन संहिता 42:11 में कहता है: "हे मेरे मन, तू क्यों उदास है? तू मेरे भीतर क्यों इतना बेचैन है? परमेश्वर पर आशा रख, क्योंकि मैं अभी भी उसकी स्तुति करूँगा, जो मेरा उद्धारकर्ता और मेरा परमेश्वर है।" यहाँ, भजनकार अपनी आत्मा को "परमेश्वर पर आशा रखने" का आदेश देता है—यह प्रभु पर भरोसा रखने के उसके संकल्प की घोषणा है। जब हम ईसाई दुनिया में अलग-अलग हालात के कारण निराशा का सामना करते हैं, तब पवित्र आत्मा उस निराशा को परमेश्वर के लिए एक तड़प में बदल देता है, और हमें उन पर और भी अधिक भरोसा करने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार, भजन संहिता 9:10 में दाऊद कहता है कि "जो तेरे नाम को जानते हैं, वे तुझ पर भरोसा रखते हैं।" आइए अब भजन संहिता 9 के अंश के आधार पर उन तीन तरीकों पर विचार करें जिनसे प्रभु पर भरोसा रखने वाले लोग अपना जीवन जीते हैं:

पहला, जो लोग प्रभु पर भरोसा रखते हैं, वे पूरे दिल से परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं और उनमें आनंदित और उत्साहित होते हैं।

भजन संहिता 9:1–2 को देखें: "मैं पूरे दिल से प्रभु का धन्यवाद करूँगा; मैं तेरे सभी अद्भुत कामों का वर्णन करूँगा। मैं तुझमें खुश होऊँगा और आनंद मनाऊँगा; हे परमप्रधान, मैं तेरे नाम की स्तुति गाऊँगा।" दाऊद ने पूरे दिल से धन्यवाद दिया और प्रभु में आनंद मनाया क्योंकि परमेश्वर ने दाऊद के दुश्मनों और उनके देशों को हरा दिया था। दाऊद ने यहाँ धन्यवाद दिया, आनंद मनाया और उत्साह दिखाया, इसका कारण यह नहीं था कि

उसके दुश्मन बर्बाद हो गए थे, बल्कि इसलिए कि परमेश्वर की धार्मिकता और महानता प्रकट हुई थी (पार्क युन-सन)।

मैं खुद से पूछता हूँ: परमेश्वर के सामने मेरे धन्यवाद, आनंद और उत्साह का असली स्रोत क्या है? क्या मैं, दाऊद की तरह, पूरे दिल से धन्यवाद देता हूँ और प्रभु में आनंद मनाता हूँ क्योंकि परमेश्वर का स्वभाव—उनकी प्रभुता और उनका स्वरूप—प्रकट हुआ है? या मैं इस आधार पर आनंद मनाता और धन्यवाद देता हूँ कि परमेश्वर ने क्या *किया* है, न कि इस आधार पर कि वे *कौन* हैं? जब मैं इस पर विचार करता हूँ, तो मुझे मानना पड़ता है कि कई बार मैं प्रभु पर पूरी तरह से भरोसा करने में असफल रहता हूँ। इसकी वजह यह है कि मेरा भरोसा अक्सर उनके कामों पर होता है, न कि उनके असली स्वभाव पर। मैं भला परमेश्वर के सभी कामों को कैसे समझ सकता हूँ? इसलिए, अगर मैं प्रभु पर उनके कामों के आधार पर भरोसा करता हूँ, तो अक्सर मैं उनके अलावा दूसरी चीज़ों पर भरोसा करने का पाप कर बैठता हूँ—सिर्फ़ इसलिए क्योंकि मैं अपनी सीमित समझ से उनके कामों को पूरी तरह नहीं समझ सकता।

जो लोग सच में प्रभु पर भरोसा करते हैं, वे पूरे दिल से धन्यवाद देते हैं और खुश होते हैं जब परमेश्वर का स्वभाव—उनकी सर्वोच्च सत्ता और असलियत—ज़ाहिर होती है। दाऊद ने पूरे दिल से धन्यवाद दिया और खुशी मनाई क्योंकि उसने परमेश्वर के "सही फ़ैसले" (पद 4) को समझा और महसूस किया था। ऐसा इसलिए था क्योंकि उस सही फ़ैसले के ज़रिए परमेश्वर का न्याय ज़ाहिर हुआ था। अपनी मौजूदा तकलीफ़ों और सतावट के बीच, दाऊद ने पुरानी घटनाओं को याद करके प्रभु का धन्यवाद किया और खुशी मनाई: कि कैसे प्रभु ने, जिन्होंने "उसके हक़ और उसके मामले को संभाला" और "सिंहासन पर बैठे" (पद 4), दुष्टों को डांटा और नष्ट किया, और "उनके नाम को हमेशा के लिए मिटा दिया" (पद 5-6)। यहाँ तक कि अपनी मौजूदा मुश्किलों और परेशानियों के बीच भी, हमें पूरे दिल से शुक्रगुज़ारी, खुशी और परमेश्वर में आनंद के साथ उनका सामना करना चाहिए—यह याद करते हुए कि कैसे उन्होंने हमारे पिछले अनुभवों में खुद को परमेश्वर के तौर पर ज़ाहिर किया था।

दूसरी बात, जो लोग प्रभु पर भरोसा करते हैं, वे परमेश्वर को अपना "गढ़" (मज़बूत ठिकाना) बनाते हैं।

भजन संहिता 9:9 पर गौर करें: "प्रभु दबे-कुचले लोगों के लिए एक गढ़ है, मुसीबत के समय एक गढ़ है।" जब भजनकार दाऊद का सामना "मौत के दरवाज़ों" जैसी स्थितियों से हुआ और उसे अपने दुश्मनों के हाथों तकलीफ़ उठानी पड़ी (पद 13), तो उसने न सिर्फ़ परमेश्वर के स्वभाव—खासकर उनकी धार्मिकता—को याद करके पूरे दिल से प्रभु का धन्यवाद किया और खुशी मनाई, बल्कि मौत के मुहाने पर खड़े होकर प्रभु को अपना गढ़ भी बनाया। पद 9 में, दाऊद कहता है कि प्रभु "मुसीबत के समय एक गढ़" हैं; यहाँ "मुसीबत" के लिए इस्तेमाल शब्द एक ऐसे मूल शब्द से आया है जिसका मतलब है "कट जाना" (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, दाऊद ने प्रभु को अपना गढ़ ठीक तब बनाया जब सारी उम्मीदें खत्म हो चुकी थीं। यह कितना कीमती विश्वास है! डेविड का प्रभु को अपनी शरण और मज़बूत गढ़ बनाना—मौत के दरवाज़े पर भी पूरी तरह से उन पर भरोसा करना—विश्वास का सचमुच एक शानदार उदाहरण है।

डेविड की तरह, हमें भी प्रभु को अपना मज़बूत गढ़ बनाना चाहिए और पूरी तरह से उन पर भरोसा करना चाहिए, जब दुनिया की सारी उम्मीदें खत्म होती दिखें और आगे बढ़ने का कोई रास्ता न नज़र आए। हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि हमारे प्रभु ऐसे परमेश्वर हैं जो उन्हें कभी नहीं छोड़ते जो उन्हें खोजते हैं (पद 10)। इसके अलावा, क्योंकि हमारे प्रभु ऐसे परमेश्वर हैं जो ज़रूरतमंदों की पुकार को नहीं भूलते (पद 12) और दया से भरपूर प्रभु हैं जो हमारे दुख को देखते हैं (पद 13), इसलिए हमें उन्हें अपना मज़बूत गढ़ बनाना चाहिए। क्योंकि वह हमें नहीं भूलते—सच तो यह है कि वह हमें भूल ही नहीं सकते—और यह पक्का करते हैं कि हम कभी भी पूरी तरह निराश न हों (पद 18), इसलिए हमें मज़बूती से उन्हें अपना गढ़ बनाना चाहिए। मुसीबत के समय हमें उनकी शरण लेनी चाहिए और उनकी सुरक्षा मांगनी चाहिए।

तीसरी और आखिरी बात, जो लोग प्रभु पर भरोसा करते हैं, वे परमेश्वर की स्तुति करते हैं।

भजन संहिता 9:2, 11 और 14 पर विचार करें: "मैं तुझ में आनन्दित और मगन होऊँगा; हे परमप्रधान, मैं तेरे नाम का भजन गाऊँगा... सिय्योन में रहनेवाले यहोवा का भजन गाओ! लोगों में उसके कामों का प्रचार करो... ताकि मैं तेरी सारी स्तुति कर सकूँ, और सिय्योन की बेटी के फाटकों में तेरे उद्धार में आनन्दित हो सकूँ।" भजनकार डेविड परमेश्वर की स्तुति करने का संकल्प करता है, इस उम्मीद पर भरोसा करते हुए कि प्रभु—

उसका मज़बूत गढ़—उन लोगों को नहीं छोड़ेंगे जो उस पर भरोसा करते हैं और उसे खोजते हैं, बल्कि दया दिखाएंगे, उन्हें मौत के दरवाज़े से बचाएंगे और उद्धार की कृपा देंगे। यह विश्वास करते हुए कि वह उसे मौत के दरवाज़े (पद 13) से सिय्योन के दरवाज़े (पद 14) तक ले जाएंगे, डेविड अपनी आत्मा से प्रभु की स्तुति किए बिना नहीं रह सका। पुराने नियम से डेविड की यह स्तुति प्रेरितों के काम 16:25 में पॉल और सिलास के जेल में प्रार्थना करने और परमेश्वर की स्तुति करने की घटना की याद दिलाती है: "पर आधी रात को पॉल और सिलास प्रार्थना कर रहे थे और परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और कैदी उन्हें सुन रहे थे।" इसी तरह पॉल और सिलास उस जेल से छुड़ाए गए थे। इसी तरह, हम भी किसी भी मुश्किल या परेशानी के बीच परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं: "जब मैं मुश्किलों का सामना करता हूँ और मेरा विश्वास कमज़ोर पड़ने लगता है, तो मैं उस प्रभु पर और भी ज़्यादा निर्भर हो जाता हूँ जिस पर मेरा भरोसा है। जैसे-जैसे साल बीतते जाते हैं, वे ही मेरे एकमात्र सहारे बने रहते हैं; चाहे कुछ भी हो, मेरा भरोसा यीशु पर है" (भजन 342, पद 1 और कोरस)।

जो विश्वासी प्रभु का नाम जानता है, वही उस पर निर्भर रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने अतीत को याद करता है और इस बात पर मनन करता है कि उसने कैसे परमेश्वर की सर्वोच्चता और स्वभाव का अनुभव किया है; नतीजतन, वे पूरे दिल से धन्यवाद देते हैं और मौजूदा दुख और मुश्किलों के बीच भी प्रभु में आनंदित होते हैं। ऐसा करके, वे प्रभु को अपना गढ़ बनाते हैं और उनकी शरण में जाते हैं। खासकर जब दुनिया की सारी उम्मीदें खत्म हो जाती हैं, तो वे ही परमेश्वर की स्तुति करते हुए कहते हैं, "मेरी आत्मा की आशा क्या है? हमारे प्रभु यीशु के अलावा और कोई नहीं" (भजन 539)। जब ऐसा होता है, तो परमेश्वर—जो हमारी स्तुति के बीच वास करते हैं—उनके ज़रिए अपनी महिमा और शक्ति को प्रकट करेंगे।

वह प्रभु जो दीन-दुखियों की इच्छा सुनता है

[भजन संहिता 10]

कल बुधवार की सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, पवित्र आत्मा ने मुझे परमेश्वर के सामने वह इच्छा रखने के लिए प्रेरित किया जो उन्होंने मेरे दिल में डाली थी। जब मैंने अपने दिल की गहरी टीस के साथ उस इच्छा को व्यक्त किया, तो मेरी आँखों से कुछ आँसू बह निकले—वे आँसू सच्ची तड़प से उपजे थे। वह इच्छा "परमेश्वर की पवित्रता और परमेश्वर की महिमा" के लिए थी। उन्होंने मुझे पवित्र और महिमामय परमेश्वर की गोद में विश्राम पाने के लिए पूरे जोश के साथ प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया—पुकारते हुए, "मारनाथा!" और "हे प्रभु, शीघ्र आ!"

भजन संहिता 10:17 हमें बताती है कि प्रभु वह परमेश्वर है जो "दीन-दुखियों की इच्छा" सुनता है। जब हम पवित्र और महिमामय परमेश्वर के सामने दीनता से झुकते हैं और अपनी प्रार्थनाएँ और इच्छाएँ उनके सामने रखते हैं, तो वे ऐसे परमेश्वर हैं जो सुनते हैं और उत्तर देते हैं। आइए सबसे पहले इस बात पर विचार करें कि आज के वचन में बताए गए "दीन-दुखी" कौन हैं। हम उनकी चार विशेषताएँ पहचान सकते हैं।

पहला, दीन-दुखी वे हैं जो "पीड़ित" (या "गरीब/ज़रूरतमंद") हैं।

भजन संहिता 10:2 और 9 को देखें: "अपनी घमंड में दुष्ट व्यक्ति कमज़ोर [पीड़ित] लोगों का शिकार करता है, जो उसकी रची चालों में फँस जाते हैं... वह छिपकर शेर की तरह घात लगाए बैठा रहता है; वह असहाय लोगों को पकड़ने के लिए घात लगाता है; वह असहाय को पकड़ता है और उन्हें अपने जाल में खींच ले जाता है।" सच्चा विश्वासी वह है जो पीड़ित है। यहाँ, "पीड़ित" का अर्थ है "वह जो कष्ट सहता है" (पार्क युन-सन)। इस पापपूर्ण संसार में रहते हुए, सच्चे विश्वासी "दुष्टों" के हाथों कष्ट सहते हैं (वचन 3, 4, 14, 15)। दुष्ट लोग यीशु में

विश्वास करने वाले संतों को विभिन्न तरीकों से सताते हैं। इसलिए, जब भी हम ऐसी विपत्ति का सामना करें, तो हमें दीनता से झुकना चाहिए और परमेश्वर पिता से सच्ची प्रार्थना करनी चाहिए।

दूसरा, दीन-दुखियों का वर्णन "अकेले" लोगों के रूप में किया गया है।

भजन संहिता 10:8, 10 और 14 को देखिए: “वह गाँवों में घात लगाकर बैठता है; अपनी छिपने की जगहों से वह बेगुनाहों की हत्या करता है, और बेसहारा लोगों पर छिपकर नज़र रखता है... वह झुककर और छिपकर बैठता है; बेसहारा लोग उसकी ताकत के आगे गिर जाते हैं... लेकिन हे परमेश्वर, तू मुसीबत और दुख को देखता है; तू उसे अपने हाथ में लेने पर विचार करता है। पीड़ित व्यक्ति खुद को तुझ पर सौंप देता है; तू अनाथों का मददगार है।” एक सच्चा संत अकेला व्यक्ति होता है। प्रभु की धार्मिकता के लिए इंसान को लाज़िमी तौर पर अकेलेपन और तन्हाई का अनुभव होता है। अन्याय से भरी दुष्टों की दुनिया में रहते हुए, हम वे लोग हैं जो प्रभु की धार्मिकता के लिए अकेलेपन को चुनते हैं। अधर्मी लोगों की दुष्टता के कारण दुख सहते हुए, इस पापी दुनिया में हमें अकेलापन और तन्हाई महसूस होती है।

तीसरी बात, नम्र लोगों को "गरीब" कहा गया है।

भजन संहिता 10:12 को देखिए: “हे प्रभु, उठ! हे परमेश्वर, अपना हाथ उठा। बेसहारा लोगों को मत भूल।” एक सच्चा संत गरीब व्यक्ति होता है—ज़रूरी नहीं कि वह भौतिक धन-दौलत में गरीब हो, बल्कि आत्मा में गरीब होता है। दुख और ज़ुल्म के बीच, हमारी आत्माएँ लाज़िमी तौर पर गरीब हो जाती हैं। नतीजतन, हम स्वर्ग के राज्य की चाहत करने लगते हैं (मत्ती 5:3)। ठीक वैसे ही जैसे मूसा, मिस्र से निकलने के बाद जंगल में रहते हुए, अपनी परिस्थितियों से गरीब हुई आत्मा के साथ कनान की प्रतिज्ञा की हुई भूमि के लिए गहराई से तरसता था, वैसे ही हम भी—इस जंगल जैसी दुनिया में रहते हुए—अपने स्वर्गीय घर के लिए और भी ज़्यादा तरसते हैं।

चौथी बात, "नम्र" का मतलब है "अनाथ और सताए हुए लोग।"

भजन संहिता 10:18 पर विचार कीजिए: "अनाथों और सताए हुए लोगों के साथ न्याय करना, ताकि धरती का इंसान और ज़ुल्म न कर सके।" सच्चे विश्वासी वे लोग हैं जिन्हें "धरती के इंसान" (पद 18) द्वारा सताया जाता है। इस दुनिया में, सच्चे विश्वासी बिना माता-पिता वाले अनाथों की तरह रहते हैं। वे ऐसे अनाथ हैं जो शैतान—जो दुनिया के लोगों का पिता है—के हाथों ज़ुल्म और मुश्किलों का सामना करते हैं।

तो फिर, "नम्र लोगों की इच्छा" क्या है? हम चार बातों पर विचार कर सकते हैं।

पहली बात, नम्र लोगों की इच्छा यह है: "दुष्ट और घमंडी लोग उन्हीं चालों में फँस जाएँ जो उन्होंने रची हैं।" भजन संहिता 10:2 पर विचार करें: "दुष्ट लोग अपने घमंड में गरीबों को सताते हैं; उन्हें उन्हीं चालों में फँसने दें जो उन्होंने रची हैं।" भजनकार कहता है, "उसने एक गड्ढा खोदा और तैयार किया, और उसी गड्ढे में गिर पड़ा जो उसने बनाया था" (7:15)। दूसरे शब्दों में, दुष्ट और घमंडी लोगों द्वारा खोदा गया "गड्ढा" यह सोच है कि "कोई परमेश्वर नहीं है" (10:4)। उन्होंने इस धारणा के आधार पर एक गड्ढा खोदा है कि परमेश्वर का अस्तित्व नहीं है—एक ऐसा गड्ढा जो ऐसे विचारों से भरा है जैसे "परमेश्वर देख नहीं रहा है," "परमेश्वर भूल गया है," और "परमेश्वर ने अपना मुँह छिपा लिया है" (पद 11)। नतीजतन, दुष्ट लोग अपनी ही चालों में फँस जाते हैं (पद 2)। इसी परिणाम के लिए दीन-हीन लोग परमेश्वर से अपनी इच्छा की प्रार्थना करते हैं।

दूसरा, दीन-हीन लोगों की इच्छा यह है: "गरीबों को न भूलें।"

भजन संहिता 10:12 को देखें: "हे प्रभु, उठ! हे परमेश्वर, अपना हाथ उठा! पीड़ितों को न भूल।" दुष्टों की सोच यह होती है कि कोई परमेश्वर नहीं है, और इसलिए, कोई ऐसा परमेश्वर गरीबों को कभी याद नहीं रखेगा। इसीलिए भजनकार—जो एक सच्चा विश्वासी था—ने परमेश्वर के सामने अपनी इच्छा व्यक्त की और उनसे पीड़ितों को न भूलने का आग्रह किया।

तीसरा, दीन-हीन लोगों की इच्छा यह है: "दुष्ट की बुराई को तब तक खोजें जब तक कि उसका कोई नामो-निशान न रहे।"

भजन संहिता 10:15 को देखें: "दुष्ट की भुजा तोड़ दें; उसकी बुराई को तब तक खोजें जब तक कि उसका कोई नामो-निशान न रहे।" भजनकार ने प्रार्थना की कि परमेश्वर न केवल अत्यंत दुष्ट लोगों की शक्ति को गिरा दें बल्कि उन्हें पूरी तरह से नष्ट भी कर दें ताकि उनकी बुराई का कोई अंश न बचे। चूँकि भजनकार परमेश्वर का आदर करता था और बुराई से बहुत नफ़रत करता था, इसलिए उसने पवित्र और धर्मी परमेश्वर से उस बुराई को पूरी तरह से मिटाने की विनती की।

अंत में, दीन-हीन लोगों की चौथी इच्छा यह है: "दुष्टों का न्याय करें ताकि दुनिया के लोग हमें और न डरा सकें।"

भजन संहिता 10:18 को देखें: "अनाथों और पीड़ितों के साथ न्याय करें, ताकि धरती का मनुष्य और अधिक अत्याचार न कर सके।" भजनकार ने प्रार्थना की कि परमेश्वर दुनिया के लोगों का न्याय करें, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे दीन-हीन लोगों को और न डरा सकें। तो फिर, परमेश्वर ने भजनकार की प्रार्थना का उत्तर कैसे दिया? दूसरे शब्दों में, भजनकार ने किस तरह के परमेश्वर का अनुभव किया?

पहला, प्रभु वह परमेश्वर है जो सब कुछ देखता है।

भजन संहिता 10:14 को देखें: "परन्तु तू ने तो देखा है, क्योंकि तू दुःख और क्लेश पर ध्यान देता है, ताकि उसे अपने हाथ में ले सके; असहाय व्यक्ति अपने आप को तुझ पर सौंप देता है; तू अनाथों का सहायक है।" प्रभु वह परमेश्वर है जो पृथ्वी पर दुष्टों के क्रूर कामों और संतों की अन्यायपूर्ण दुर्दशा को देखता है। हालाँकि दुष्ट कहते हैं, "प्रभु नहीं देखता" (पद 4) या "परमेश्वर भूल गया है; उसने अपना मुँह छिपा लिया है; वह इसे कभी नहीं देखेगा" (पद 11), भजनकार परमेश्वर की महिमा के लिए विलाप करते हुए पूछता है, "दुष्ट परमेश्वर का त्याग क्यों करते हैं? उन्होंने अपने मन में क्यों कहा है, 'तू हिसाब नहीं माँगेगा'?" (पद 13) (पार्क युन-सन)। परमेश्वर ही वह है जो दुःख और क्लेश पर ध्यान देता है (पद 14)। वह वह परमेश्वर है जो सब कुछ देखता है।

दूसरा, प्रभु वह परमेश्वर है जो अपने ही हाथ से बदला चुकाता है।

भजन संहिता 10:14 को फिर से देखें: "परन्तु तू ने तो देखा है, क्योंकि तू दुःख और क्लेश पर ध्यान देता है, ताकि उसे अपने हाथ में ले सके; असहाय व्यक्ति अपने आप को तुझ पर सौंप देता है; तू अनाथों का सहायक है।"

दुष्ट—यह मानते हुए कि परमेश्वर नहीं देखता और उनके मन में परमेश्वर का कोई विचार नहीं होता (पद 4)—अपने आप से कहते हैं, "मैं कभी नहीं हिलूँगा; सभी पीढ़ियों तक मुझे कभी विपत्ति का सामना नहीं करना पड़ेगा" (पद 6); फिर भी प्रभु ही वह है जो उनका "न्याय" करता है (पद 18) और दुष्टों की शक्ति को पूरी तरह नष्ट कर देता है (पद 15)।

अंत में, प्रभु वह है जो उन सच्चे संतों की सहायता करता है जो उस पर भरोसा करते हैं। भजन संहिता 10:14 को फिर से देखें: "परन्तु तू ने इसे देखा है, क्योंकि तू दुःख और क्लेश पर ध्यान देता है, ताकि उसे अपने हाथ में ले सके; असहाय व्यक्ति अपने आप को तुझ पर सौंप देता है; तू अनाथों का सहायक रहा है।" जो लोग उसका नाम जानते हैं, वे उस पर भरोसा करते हैं (9:10), इसलिए वे नम्रता से अपनी विनती प्रभु के सामने रखते हैं। हमारा प्रभु वह परमेश्वर है जो ऐसी इच्छा-भरी प्रार्थनाओं को सुनता है और उनका उत्तर देता है। जिस परमेश्वर ने भजनकार की ज़रूरत के समय मदद की थी, वह आज भी हमारे साथ है और ज़रूरत के समय मदद के लिए अपनी कृपा देता है।

हमारा प्रभु वह है जो नम्र लोगों की इच्छाओं को सुनता है। वह ऐसा परमेश्वर है जो दुखियारों, अकेले लोगों, मन से दीन-हीन लोगों, अनाथों और संतों में से सताए हुए लोगों की नम्र प्रार्थनाओं को सुनता है और उनका उत्तर देता है। वह ऐसा प्रभु है जो दुष्टों और घमंडी लोगों—जो हमें सताते और दबाते हैं—को उनके अपने ही जाल में फँसा देता है; वह उनका न्याय करता है और उन्हें पूरी तरह नष्ट कर देता है, ताकि वे फिर कभी गरीबों को डरा-धमका न सकें। वह गरीबों को कभी नहीं भूलता और उनकी प्रार्थनाएँ सुनता है; सब कुछ देखते हुए, वह दुष्टों का न्याय सच्चाई से करता है और नम्र लोगों को उद्धार की कृपा देता है। आइए, हम नम्रता से अपनी विनती इस परमेश्वर के सामने रखें।

अहंकारी विचार।

“दुष्ट व्यक्ति अपने अहंकार में परमेश्वर की खोज नहीं करता; उसके सभी विचारों में परमेश्वर के लिए कोई जगह नहीं होती” (भजन संहिता 10:4)।

प्रभु हमारे सभी विचारों को जानते हैं। वे जानते हैं कि हम कब अपने दिलों में बुरे विचार रखते हैं (मत्ती 9:4)। वे जानते हैं कि हम कब अपना मन परमेश्वर की बातों पर नहीं, बल्कि इंसानों की बातों पर लगाते हैं (मरकुस 8:33)। वे हमारे विचारों की व्यर्थता को भी जानते हैं (भजन संहिता 94:11)। खास तौर पर, प्रभु हमारे दिलों में छिपे अहंकारी विचारों को साफ-साफ देख लेते हैं (लूका 1:51)। तो, ये अहंकारी विचार क्या हैं?

पहला, हमारे दिलों में एक अहंकारी विचार यह होता है कि “कोई परमेश्वर नहीं है।”

भजन संहिता 10:4 को फिर से देखें: “दुष्ट व्यक्ति अपने अहंकार में परमेश्वर की खोज नहीं करता; उसके सभी विचारों में परमेश्वर के लिए कोई जगह नहीं होती।” बेशक, यीशु में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए गए लोगों के तौर पर, हम यहाँ बताए गए “दुष्ट” नहीं हैं। फिर भी, अपने “पुराने स्वभाव” की प्रवृत्तियों का पालन करते हुए, हम अक्सर दुष्टों की तरह ही अहंकारी विचार पालते हैं। वह अहंकारी विचार यह है कि “कोई परमेश्वर नहीं है।” दूसरे शब्दों में, जब हम अहंकारी होते हैं, तो हमारे विचारों में परमेश्वर के लिए कोई जगह नहीं होती (पद 4)। इसके अलावा, जब हम अहंकारी होते हैं, तो हम परमेश्वर की खोज नहीं करते (पद 4); असल में, हमें उन्हें खोजने की ज़रूरत भी महसूस नहीं होती। फिर भी, जब हम जो कुछ भी करते हैं उसमें सफल होते हैं (पद 5), तो हमारे दिल लालच और लोभ से भर जाते हैं। हम अपनी इच्छाओं पर घमंड करते हैं और लालच में डूबे रहते हैं (पद 3), और हम परमेश्वर को धोखा देते हैं और उनका अनादर करते हैं (पद 3)। इस प्रकार, हमारी अहंकारी

सोच में परमेश्वर के लिए कोई जगह नहीं होती (पद 4)। यही हमारे अहंकार की मूर्खता है। भजन संहिता 14:1 का पहला भाग देखें: “मूर्ख अपने मन में कहता है, ‘कोई परमेश्वर नहीं है’...।” घमंडी लोगों के मूर्ख मन में परमेश्वर के लिए कोई जगह नहीं होती।

अगर हम इस सोच के साथ जीते हैं कि “कोई परमेश्वर नहीं है,” तो हम घमंड कर रहे होते हैं। अगर हम यह सोचते हुए लालच और लोभ में डूबे रहते हैं कि कोई परमेश्वर नहीं है, तो हम घमंड कर रहे होते हैं। यह सोचना कि "कोई ईश्वर नहीं है," अहंकार भरी सोच है। हमें इस अहंकारी सोच को छोड़ देना चाहिए। ईश्वर का अस्तित्व है। ईश्वर सचमुच हैं। हमारे ईश्वर जीवित ईश्वर हैं। यह विनम्रता वाली सोच है। हमें इसी सोच के साथ ईश्वर के सामने जीना चाहिए।

दूसरी बात, हमारे दिलों में एक अहंकारी सोच यह होती है: "मैं कभी नहीं डगमगाऊंगा, और चाहे हालात कैसे भी हों, मुझे कभी मुश्किलों का सामना नहीं करना पड़ेगा।"

भजन संहिता 10:6 को देखें: "दुष्ट लोग कहते हैं, 'मैं कभी नहीं डगमगाऊंगा; मुझे कभी मुश्किलों का सामना नहीं करना पड़ेगा'" (कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। अगर हम ईश्वर की खोज किए बिना—इस अहंकारी सोच के साथ कि उनका कोई अस्तित्व नहीं है—अपने काम करते हैं और सफल हो जाते हैं (पद 4-5), तो हम निश्चित रूप से और भी अहंकारी हो जाते हैं। यह न समझकर कि ईश्वर का न्याय होने वाला है, हम खुद को यकीन दिलाते हैं कि "हमारे रास्ते हमेशा सुरक्षित हैं" (पद 5)। अहंकार की इस हालत में, हम खुद से कहते हैं, "मैं कभी नहीं डगमगाऊंगा; मुझे कभी मुश्किलों का सामना नहीं करना पड़ेगा" (पद 6)। हम कल्पना करते हैं कि हम "दर्द से मुक्त एक स्वस्थ जीवन जिएंगे, और दूसरों की तरह कभी मुश्किलों या बीमारी का सामना नहीं करेंगे" (73:4-5, कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। नतीजतन, हम अहंकार को हार की तरह पहनते हैं, और हमारे लालच की कोई सीमा नहीं रहती (पद 6-7, कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। यह जाने बिना कि ईश्वर का न्याय होने वाला है, हम मान लेते हैं कि हमारा रास्ता हमेशा सुरक्षित रहेगा, और खुद से कहते हैं, "मैं कभी नहीं डगमगाऊंगा, और न ही कभी मुश्किलों का सामना करूंगा" (10:6)। यह सोच अहंकार से पैदा होती है।

अगर हम जिस रास्ते पर चलते हैं वह हमेशा सुरक्षित रहता है, तो इस बात का बहुत बड़ा खतरा होता है कि हम खुद को यह सोचने का धोखा दे बैठें कि यह हमारी अपनी काबिलियत की वजह से है। इससे भी बड़ा धोखा यह मानना है कि "मैं कभी नहीं डगमगाऊंगा।" हम यह गलतफहमी इसलिए पालते हैं क्योंकि हम खुद को यकीन दिलाते हैं कि हमें कभी मुश्किलों का सामना नहीं करना पड़ेगा। फिर भी, इस झूठी और बेकार सोच की बुनियाद हम खुद ही हैं। हम अपनी स्थिरता का आधार अपने अंदर कैसे पा सकते हैं? यह सचमुच एक बेकार और अहंकारी सोच है—जिसे हमें पूरी तरह से छोड़ देना चाहिए। हमारी स्थिरता की असली बुनियाद सिर्फ प्रभु हैं; वही हमारी मज़बूती की चट्टान हैं (1 कुरिन्थियों 10:4)। इसलिए, हमें अपना बोझ ईश्वर पर डाल देना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो प्रभु हमें संभालेगा और कभी भी हमें डगमगाने नहीं देगा (भजन संहिता 55:22)।

तीसरी बात, दिल में आने वाला एक अहंकारी विचार यह मानना है कि "परमेश्वर हमें भूल गया है और उसने अपना चेहरा छिपा लिया है, वह देखना नहीं चाहता।"

भजन संहिता 10:11 पर विचार करें: "वे सोचते हैं कि परमेश्वर उन्हें भूल गया है, उसने अपना चेहरा छिपा लिया है, और वह देख नहीं रहा है" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। अहंकारी दुष्ट लोग बेबस लोगों पर बहुत अत्याचार करते हैं (पद 2)। वे अपने दिल की इच्छाओं पर घमंड करते हैं और लालच में डूबे रहते हैं (पद 3)। उनके मुँह श्राप, झूठ और हिंसा से भरे होते हैं, जबकि उनकी जीभ के नीचे शरारत और बुराई छिपी होती है (पद 7)। वे निर्दोषों को गुप्त स्थानों पर मार डालते हैं, और उनकी आँखें बेबस लोगों की घात में लगी रहती हैं (पद 8)। वे बेबस लोगों को पकड़ने के लिए छिपकर घात लगाते हैं (पद 9)। फिर, वे हिंसा से बेबस लोगों को गिरा देते हैं (पद 10)। ऐसा करते समय, वे सोचते हैं, "परमेश्वर उन्हें भूल गया है और उसने अपना चेहरा छिपा लिया है इसलिए वह देख नहीं रहा है" (पद 11)। यही अहंकार की मानसिकता है: गुप्त रूप से पाप करना और यह मानना कि परमेश्वर देख नहीं रहा है। फिर भी, भजनकार क्या कहता है? "हे प्रभु, तूने उनके बुरे कामों को देखा है" (पद 14)।

यदि हम यह सोचकर गुप्त रूप से परमेश्वर के विरुद्ध पाप करते हैं कि उसने अपना चेहरा छिपा लिया है और वह देख नहीं रहा है, तो यह एक अहंकारी विचार है। परमेश्वर हमारे गुप्त पापों को देखता है। वह हमारे हर कदम पर नज़र रखता है (अय्यूब 34:21)। इसके अलावा, वह हमारे दिलों और अंतःकरण की जाँच करता है (नीतिवचन 16:2; 21:2; भजन संहिता 7:9)। जो लोग सचमुच इस सच्चाई पर विश्वास करते हैं और इसे समझते

हैं, वे उस परमेश्वर के सामने कभी भी अहंकारी विचार नहीं रखेंगे जो उनके दिलों और अंतःकरण को देखता है। इसके बजाय, परमेश्वर के सामने खुद को सबसे बड़ा पापी मानकर, वे विनम्रतापूर्वक अपने पापों को स्वीकार करेंगे और खुद को विनम्र बनाएंगे।

चौथी बात, हमारे दिलों में एक अहंकारी विचार यह मानना है कि "परमेश्वर मुझे सज़ा नहीं देगा।"

भजन संहिता 10:13 को देखें: "दुष्ट लोग परमेश्वर का अनादर कैसे कर सकते हैं और यह कैसे कह सकते हैं कि 'वह मुझे सज़ा नहीं देगा'?" अहंकारी दुष्ट लोग परमेश्वर का अनादर करते हैं। घमंडी और बुरे लोग, जो अपने दिल की इच्छाओं पर गर्व करते हैं और अपने लालच को खुली छूट देते हैं, वे परमेश्वर को धोखा देते हैं और उनका अनादर करते हैं (पद 3)। अपने घमंड में, वे बेबस लोगों पर बहुत ज़ुल्म करते हैं (पद 2); वे उन्हें पकड़ भी लेते हैं (पद 9) और हिंसा के ज़रिए उन्हें गिरा देते हैं (पद 10), और साथ ही यह भी मानते हैं कि परमेश्वर उन्हें सज़ा नहीं देगा (पद 13)। वे ऐसा इसलिए सोचते हैं क्योंकि परमेश्वर उन्हें तुरंत सज़ा नहीं देता (सभोपदेशक 8:11)। नतीजतन, वे बुराई करने में और भी निडर हो जाते हैं (पद 11)।

अगर हम पाप करने में निडर होते हैं, तो ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर हमें तुरंत सज़ा नहीं देता। परमेश्वर हमें तुरंत सज़ा क्यों नहीं देता? ऐसा इसलिए है क्योंकि वह चाहता है कि हम पछतावा करें और उसकी ओर लौटें (रोमियों 2:4)। फिर भी, हम उसकी दया, सहनशीलता और धीरज की बहुतायत का अनादर करते हैं (पद 4)। हम परमेश्वर का अनादर कैसे करते हैं? हम उसका अनादर तब करते हैं जब अपने घमंड में उसके विरुद्ध पाप करते हुए हम सोचते हैं, "परमेश्वर मुझे (या हमें) सज़ा नहीं देगा।" तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? हमें अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए और उनके लिए पछतावा करना चाहिए। हमें परमेश्वर का अनादर करने के पाप के लिए पछतावा करना चाहिए। हमें परमेश्वर के सामने उन पापों को स्वीकार करना चाहिए और उनके लिए पछतावा करना चाहिए जो हम छिपकर करते हैं।

यह सोचना कि "कोई परमेश्वर नहीं है," एक घमंडी सोच है। यह सोचना कि "मैं कभी नहीं डगमगाऊंगा, और मुझे किसी मुसीबत का सामना नहीं करना पड़ेगा," एक घमंडी सोच है। यह सोचना कि "परमेश्वर हमें भूल गया है और उसने अपना मुँह छिपा लिया है," भी एक घमंडी सोच है—ऐसी सोच जो परमेश्वर की नज़र में घमंड भरी है। हमें ऐसी सभी घमंडी सोच को क्रूस के चरणों में छोड़ देना चाहिए। यीशु के कीमती लहू पर भरोसा करते

हुए, हमें हर घमंडी सोच के लिए पछतावा करना चाहिए। इसके अलावा, हमें एक नम्र सोच विकसित करनी चाहिए; हमें यीशु जैसी सोच अपनानी चाहिए और नम्रता के साथ सोचना चाहिए (देखें फिलिप्पियों 2:5)।

"अगर नींव ही नष्ट हो जाए, तो धर्मी लोग क्या कर सकते हैं?"

[भजन संहिता 11]

साल 2005 को याद करते हुए जो बात सबसे पहले मन में आती है, वह है अमेरिका के न्यू ऑरलियन्स में आया 'हरिकेन कैटरीना' (तूफान)। कहा जाता है कि इस तूफान की वजह से न्यू ऑरलियन्स के लगभग दस लाख निवासियों को दूसरे राज्यों में जाने के लिए मजबूर होना पड़ा; कुछ लोगों ने तो इस बड़े पैमाने पर हुए पलायन को "ब्लैक एक्सोडस" (अश्वेतों का पलायन) तक कहा है। आम राय यही है कि इस भारी तबाही की मुख्य वजह मजबूत तटबंधों (levee) का न बन पाना और उनका सही रखरखाव न हो पाना था। दो चौंकाने वाली बातें सामने आती हैं: पहली, 2005 की शुरुआत में अमेरिकी सेना ने न्यू ऑरलियन्स में तटबंधों की मरम्मत के लिए 37 मिलियन डॉलर की मांग की थी, लेकिन सरकार ने बजट घटाकर 3.9 मिलियन डॉलर कर दिया। दूसरी, खबर है कि न्यू ऑरलियन्स लेवी बोर्ड ने वित्तीय कुप्रबंधन किया; तटबंधों के रखरखाव के लिए मिले फंड का इस्तेमाल उन्होंने कसीनो खरीदने में कर दिया। यह वाकई बहुत अफसोस की बात है; जरूरी निवेश नहीं किया गया और जो फंड मिला, उसका सही इस्तेमाल नहीं हुआ। नतीजतन, जब तूफान आया, तो लेक पोंटचार्ट्रेन के पास दो जगहों पर तटबंध टूट गए, जिससे शहर के ज्यादातर हिस्सों में भयानक बाढ़ आ गई।

मैं सोचता हूँ कि क्या हमने भी कोई मजबूत नींव रखी है। जो दिल, परिवार और चर्च एक मजबूत नींव पर बने होते हैं, वे अडिग रहते हैं—वे पहरा देने और टिके रहने में सक्षम होते हैं—भले ही पाप की लहरें, हरिकेन कैटरीना जैसे तूफान की तरह, तेजी से क्यों न आएं। लेकिन, अगर हम सही नींव रखने में निवेश नहीं करते—या अगर हम निवेश तो करते हैं, लेकिन उन संसाधनों का इस्तेमाल अपने दिलों, परिवारों और चर्चों की नींव

बनाने के बजाय कहीं और करते हैं—तो पाप की लहरें आने पर सब कुछ निश्चित रूप से ढह जाएगा और बिखर जाएगा। हमें अपने दिलों, परिवारों और चर्चों की नींव पर गौर करना चाहिए।

भजन संहिता 11:3 में, भजनकार दाऊद पूछते हैं, "अगर नींव ही नष्ट हो जाए, तो धर्मी लोग क्या कर सकते हैं?" यहाँ "नींव" (foundation) शब्द का मूल हिब्रू से शाब्दिक अनुवाद करने पर यह बहुवचन में आता है—"नींवें" (foundations)। इसका अर्थ है "न्याय और सच्चाई" (जे. रिडरबोस)। दूसरे शब्दों में, जिस समय शाऊल दाऊद पर अत्याचार कर रहा था, उस समय न्याय और सच्चाई की नींव ढह चुकी थी। और जिस दौर में हम जी रहे हैं, उसका क्या? वह भी इससे अलग नहीं है। हम भी ऐसे दौर में जी रहे हैं जहाँ न्याय और सच्चाई की नींव ढह चुकी है। तो ऐसे समय में हमें कैसे जीना चाहिए? मैं आज के पाठ से दो बातें सीखना चाहूँगा।

पहली बात, ऐसे दौर में जब न्याय और सच्चाई की नींव ढह गई है, हमें परमेश्वर पर और ज़्यादा भरोसा करना चाहिए।

भजन संहिता 11:1 को देखिए: "मैं यहोवा की शरण लेता हूँ। तो फिर तुम मुझसे कैसे कह सकते हो: 'पक्षी की तरह अपने पहाड़ पर भाग जाओ'?" यहाँ दाऊद कहता है, "मैं यहोवा की शरण लेता हूँ..." शाऊल और उसके आदमियों के ज़ुल्म का सामना करते हुए भी—ऐसे समय और हालात में जब न्याय और सच्चाई कहीं नहीं मिल रही थी—दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा किया। क्योंकि उसने ऐसी तकलीफ़ और ज़ुल्म के बीच भी प्रभु पर भरोसा रखा, इसलिए वह उन सबके बीच भी परमेश्वर में सुरक्षित महसूस कर सका (पार्क युन-सन)। फिर भी, यहाँ दिलचस्प बात दाऊद के दोस्तों का सुझाव है। उन्होंने दाऊद को सलाह दी कि वह "पक्षी की तरह... पहाड़ों पर भाग जाए" (पद 1)। वजह यह थी कि "दुष्ट लोग अपने धनुष तानते हैं; वे सीधे मन वालों पर अंधेरे में छिपकर तीर चलाने के लिए उन्हें प्रत्यंचा पर चढ़ाते हैं" (पद 2)। यह सलाह सुनने में बहुत सही लग रही थी। क्योंकि दुष्ट लोग दाऊद—एक नेक इंसान—को नुकसान पहुँचाना चाहते थे, इसलिए उसके दोस्तों ने उससे पहाड़ों पर भाग जाने को कहा, ठीक वैसे ही जैसे कोई गौरैया पहाड़ों की झाड़ियों में भाग

जाती है। फिर भी, दाऊद ने सुनने में सही लगने वाली इस सलाह को नहीं माना; इसके बजाय, उसने प्रभु की शरण ली। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसे सिर्फ़ प्रभु पर भरोसा था।

हमें सोचना चाहिए कि अगर हम दाऊद की तरह किसी खतरे में फँस जाएँ तो हम क्या करेंगे। हमारे सामने एक चुनाव है: क्या हम प्रभु के पास भागेंगे और उसमें सुरक्षा पाएँगे, या हम अपने दोस्तों की सलाह मानकर पहाड़ों पर भाग जाएँगे और प्रभु के अलावा दूसरे लोगों या चीज़ों पर भरोसा करके सुरक्षा ढूँढेंगे? हमें इसका जवाब पहले से पता है। हम जानते हैं कि अगर हम प्रभु के अलावा किसी और पर या किसी और चीज़ पर भरोसा करते हैं तो हमें सच्ची सुरक्षा नहीं मिल सकती। दूसरों या दूसरी चीज़ों पर भरोसा करने से शायद कुछ समय के लिए सुरक्षा का एहसास हो, लेकिन उससे वह शांति और सुरक्षा नहीं मिल सकती जो सिर्फ़ प्रभु दे सकते हैं। इसलिए, हमें सिर्फ़ प्रभु के पास भागना चाहिए। वही हमारा मज़बूत गढ़ और हमारी शरण है। खासकर आज के दौर में, जब न्याय और सच्चाई की नींव ढह चुकी है, हमें न्याय और सच्चाई के परमेश्वर पर भरोसा करके सच्ची सुरक्षा और हिफ़ाज़त का अनुभव करना चाहिए।

आखिरकार, ऐसे दौर में जब न्याय और सच्चाई की नींव ढह चुकी है, हमें नेकी और सच्चाई के रास्ते पर चलना चाहिए।

हमें नेकी और सच्चाई के रास्ते पर क्यों चलना चाहिए? इसलिए क्योंकि परमेश्वर नेक है और उसे नेक काम पसंद हैं। भजन संहिता 11:7 पर गौर करें: "क्योंकि प्रभु नेक है, उसे नेक काम पसंद हैं; नेक लोग उसका चेहरा देख पाएँगे।" जिन्हें परमेश्वर ने नेक ठहराया है, हमें भी नेकी से प्यार करना चाहिए और वफ़ादारी से नेकी के रास्ते पर चलना चाहिए। हालात जितने मुश्किल हों, हमें उस रास्ते पर उतनी ही मज़बूती से डटे रहना चाहिए (पार्क युन-सन)। सचमुच, परमेश्वर के न्याय का दिन नज़दीक आ रहा है। हम ऐसे दौर में जी रहे हैं जहाँ चारों तरफ़ घना अंधेरा और बुराई फैली हुई है। ऐसे समय में, जब अंधेरी ताकतें "नेक दिल" वालों (पद 2) को बहकाने और उन्हें नेकी के रास्ते से हटाकर पाप की ज़िंदगी की ओर ले जाने की कोशिश करती हैं, तो "नेक" (पद 7) बनकर आखिर तक वफ़ादारी से चलना एक बहुत बड़ी चुनौती है। अपने दिल को सही रखना, नेकी के रास्ते से प्यार करना और उस रास्ते पर चलना एक मुश्किल काम है—खासकर ऐसे दौर में जब न्याय और सच्चाई की नींव ढह चुकी है।

हम ऐसे दौर में जी रहे हैं जहाँ बुराई के चौड़े रास्ते हर तरफ़ साफ़ दिखाई और सुनाई देते हैं। इसलिए, नेकी के तंग और मुश्किल रास्ते पर चलना—अक्सर अकेले—प्रभु पर भरोसा किए बिना नामुमकिन है। यह एक अकेला रास्ता है, फिर भी यही वह रास्ता है जिस पर खुद प्रभु चले थे। दाऊद इस रास्ते पर इसलिए चल पाया क्योंकि उसे यकीन था कि जिस प्रभु पर उसने भरोसा किया है, वह नेक और बुरे, दोनों तरह के लोगों को देखता है (पद 4–7)। दाऊद जानता था कि परमेश्वर—जो अपनी नज़र से बुरे लोगों को परखता है (पद 4: "देखता/परखता है") और "बुरे लोगों और हिंसा पसंद करने वालों से नफ़रत करता है" (पद 5)—सही समय पर उनका न्याय करेगा (पद 6)। इसके साथ ही, दाऊद को इस बात पर भी भरोसा था कि परमेश्वर नेक लोगों को "परखता" है (पद 5)। यहाँ, "परखने" शब्द का मतलब "जाँच" या "परीक्षा" है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर नेक लोगों की मदद करने से पहले उनकी परीक्षा लेते हैं। परमेश्वर नेक लोगों की परीक्षा इसलिए लेते हैं ताकि यह देख सकें कि क्या उनके दिल सच्चे हैं (पद 2) और क्या वे ईमानदार हैं (पद 7)। इसके अलावा, परमेश्वर यह भी देखते हैं कि क्या वे पूरी तरह से उन पर भरोसा करते हैं, और जब वे उस परीक्षा में पास हो जाते हैं, तब परमेश्वर उनकी मदद करते हैं। दाऊद पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा करते थे; वे सच्चे दिल और ईमानदारी वाले इंसान थे। इसीलिए उन्हें परमेश्वर की मदद मिल सकी।

हम ऐसे दौर में जी रहे हैं जहाँ न्याय और सच्चाई खत्म हो गई है। यहाँ तक कि हमारे अपने अंदर भी—जो खुद को ईसाई कहते हैं—हमारे दिलों में न्याय और सच्चाई की नींव काफी हद तक ढह गई है। हमारे परिवारों और चर्चों की नींव भी ढहती हुई दिख रही है। तो फिर, ऐसे समय में हमें कैसे जीना चाहिए? हमें परमेश्वर पर और भी ज़्यादा भरोसा करना चाहिए और अपने दिलों, परिवारों और चर्चों में न्याय और सच्चाई की नींव को मज़बूती से जमाना चाहिए। हमें यह पक्का करना होगा कि ये नींव मज़बूत हों ताकि हम उन पर अपने जीवन, परिवारों और चर्चों को सुरक्षित रूप से बना सकें। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम सुरक्षित रहते हैं, चाहे पाप की तूफ़ानी लहरें हमारे खिलाफ कितनी भी ज़ोर से क्यों न उठें। हमें ईमानदारी से नेकी के रास्ते पर चलते रहना चाहिए। भले ही हमारे चारों ओर बुराई के चौड़े रास्ते दिखाई और सुनाई देते हों, हमें नेकी के संकरे रास्ते पर ही चलना चाहिए। इसलिए, हमें इस अंधेरी दुनिया में परमेश्वर के न्याय और सच्चाई की रोशनी फैलानी चाहिए।

भक्तों की मनचाही सुरक्षित जगह

[भजन संहिता 12]

अपनी किताब *द नेक्स्ट जनरेशन लीडर* में, पादरी एंडी स्टेनली "5 Cs" के बारे में बताते हैं। आखिरी "C" है "Character" (चरित्र)। लेखक इस बात पर ज़ोर देते हैं कि आने वाली पीढ़ी के नेताओं को चरित्र पर ध्यान देना चाहिए। इस बात को समझाने के लिए, वे ऐसे सर्वे का ज़िक्र करते हैं जिनसे पता चलता है कि लोग ऐसे नेताओं को ही *फॉलो* करना चाहते हैं जो ईमानदार, साफ़-गो, सच्चे और भरोसेमंद हों। फिर भी, आज के दौर में—जहाँ अनगिनत नेता हैं जिन्हें लोग सिर्फ़ मजबूरी में फॉलो करते हैं (ज़्यादातर इसलिए क्योंकि हर कोई नेता बनना चाहता है)—हमें रुककर सोचना चाहिए कि हमारे आस-पास कितने ऐसे नेता हैं जिन्हें हम *सचमुच* फॉलो करना चाहते हैं। वजह यह है कि ऐसे नेता हमारी सोच से कहीं कम हो सकते हैं।

भजन संहिता 12:1 में, दाऊद अफ़सोस जताते हुए कहते हैं, "भक्त लोग गायब हो गए हैं; इंसानों के बीच से वफ़ादार लोग खत्म हो गए हैं।" यहाँ तक कि दाऊद के आस-पास भी कोई भक्त या वफ़ादार इंसान नहीं था। यहाँ "भक्त इंसान" (godly man) का मतलब है वह व्यक्ति जिसे पसंद किया जाता है—खासकर, जिसे परमेश्वर प्यार करते हैं (पार्क युन-सन)। और साफ़ तौर पर कहें तो, "भक्त इंसान" एक "वफ़ादार इंसान" होता है; यह ऐसे मज़बूत चरित्र वाले व्यक्ति के बारे में बताता है जो भरोसे के लायक है (पार्क युन-सन)। परमेश्वर का प्यारा भक्त इंसान उस प्यार की वजह से मनमानी नहीं करता; बल्कि, वह मज़बूत इरादे वाला बनता है (पार्क युन-सन)। इससे यह सवाल उठता है: "क्या मैं सचमुच एक भक्त इंसान हूँ?" मैं खुद से पूछता हूँ कि क्या मेरा चरित्र मज़बूत और भरोसेमंद है। फिर भी, यह सवाल अजीब लग सकता है, क्योंकि हम शायद ही कभी खुद से ऐसा सवाल पूछते हैं। एक ज़्यादा जाना-पहचाना सवाल—या शायद वह सवाल जो हमें पूछना *चाहिए*—यह है, "क्या वह व्यक्ति सचमुच भरोसेमंद है?" हम शायद ही कभी खुद से पूछते हैं,

"क्या मैं एक भरोसेमंद इंसान हूँ?" क्योंकि हम अक्सर इस बात की ज़्यादा चिंता करते हैं कि *दूसरों* में यह गुण है या नहीं, बजाय इसके कि हम खुद इसे अपनाएँ। इसलिए, हमें रुककर खुद से पूछना चाहिए—एक बार, या बेहतर होगा कि बार-बार—"क्या मैं सचमुच एक भरोसेमंद इंसान हूँ?"

हम ऐसे दौर में जी रहे हैं जहाँ आपसी भरोसा कम है। यह ऐसा समय है जब पादरियों को अपनी मंडली के लोगों पर—और यहाँ तक कि एक-दूसरे पर—भरोसा करने में मुश्किल होती है, और मंडली के लोग पादरियों पर वैसा अटूट भरोसा नहीं करते जैसा वे पहले किया करते थे। भजन संहिता 12 के संदर्भ में इसकी मूल वजह पर विचार करते हुए, मेरा मानना है कि इसका जवाब "ईश्वर-भक्त लोगों" की घटती संख्या में है (पद 1)। सच तो यह है कि दुनिया ऐसी जगह बन गई है जहाँ ईश्वर-भक्त लोगों को ढूँढना मुश्किल है—चाहे वे पादरी हों या कलीसिया के सदस्य। मैं खुद से पूछता हूँ: मेरे आस-पास कितने पादरी सचमुच ऐसे ईश्वर-भक्त नेता हैं जिनका मैं पूरे दिल से अनुसरण करना चाहूँगा? आज इस अंश पर मनन करते हुए, मैंने अपनी कलीसिया के लिए कुछ बातें तय की हैं: (1) पहली बात, एक सीनियर पादरी के तौर पर, मैं एक दृढ़ चरित्र विकसित करने और एक भरोसेमंद व्यक्ति बनने का संकल्प लेता हूँ। मैं हार न मानने और चरित्र की परिपक्वता के लिए प्रयास करने का निश्चय करता हूँ—ताकि मैं ऐसा पादरी बन सकूँ जो धीरे-धीरे प्रभु जैसा बनता जाए। (2) दूसरी बात, मैं कलीसिया के नेताओं के बीच परमेश्वर के प्रेम को बाँटने और दृढ़ चरित्र व भरोसेमंद लोगों को तैयार करने पर ज़्यादा ध्यान देने का संकल्प लेता हूँ। (3) आखिर में, तीसरी बात यह है कि कलीसिया के नेताओं और सदस्यों, दोनों को ही आपसी भरोसे पर आधारित समुदाय बनाने के लिए प्रयास और प्रार्थना करनी चाहिए।

तो, भजन संहिता 12:5 में बताए गए ईश्वर-भक्त व्यक्ति का "सुरक्षित स्थान" (या "सुरक्षा") क्या है? वह और कुछ नहीं बल्कि "उद्धार" है (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, "वह सुरक्षा जिसकी उसे चाहत है" उस उद्धार की ओर इशारा करती है जिसके लिए ईश्वर-भक्त, "दुखी" और "ज़रूरतमंद" लोग (पद 5) बेसब्री से तरसते हैं (पार्क युन-सन)। इसीलिए भजनकार दाऊद ने आज के अंश के पहले पद में परमेश्वर से प्रार्थना की—"हे प्रभु, मदद कर"—और छुटकारा माँगा। दाऊद ने प्रभु से ऐसी प्रार्थना क्यों की? इसलिए क्योंकि झूठ, चापलूसी भरी बातों और दोहरी सोच वाली बातों से भरे समय में (पद 2)—और जब हर तरफ दुष्ट लोग मनमानी कर

रहे थे (पद 8)—ईश्वर-भक्त लोगों पर बुरी तरह ज़ुल्म हो रहा था और वे अपनी ज़रूरतों के कारण कराह रहे थे (पद 5)। ईश्वर-भक्त लोगों को ऐसे ज़ुल्म और सतावट का सामना इसलिए करना पड़ा क्योंकि वे सच पर चलने वाले थे (पद 6)। परमेश्वर के वचन की सच्चाई को जीने वाले व्यक्ति के तौर पर, दाऊद को झूठ बोलने वालों, चापलूसों और दोहरी सोच रखने वालों और अपनी ज़बान से डींगें मारने वालों ने सताया। ये बुरे लोग यहाँ तक कहते थे, "हम अपनी ज़बान से जीतेंगे; हमारे होंठ हमारे अपने हैं—हमारा मालिक कौन है?" (वचन 4), और वे अपनी मर्ज़ी से अपनी बातों से लगातार पाप करते थे। क्या ऐसे लोग सच्चे और परमेश्वर को मानने वाले दाऊद को चैन से रहने देते? इसीलिए दाऊद ने मदद के लिए परमेश्वर को पुकारा। उसने परमेश्वर से उद्धार की विनती की—दूसरे शब्दों में, उसने सुरक्षा की जगह माँगी। उसकी प्रार्थना के जवाब में, परमेश्वर ने दाऊद से वादा किया: "...मैं अब उठूँगा और उसे उस सुरक्षा में रखूँगा जिसकी वह इच्छा करता है..." (वचन 5)। यह एक वादा था कि परमेश्वर अब बस खड़े होकर तमाशा नहीं देखेंगे। चूँकि उनका तय समय आ गया था, इसलिए वे अब बस देखते नहीं रहेंगे कि उनके भक्त लोग ज़ुल्म सह रहे हैं। उन्होंने वादा किया कि वे ज़रूर कुछ करेंगे। परमेश्वर ने दाऊद से वादा किया कि वे उद्धार का काम करेंगे, और ऐसे उठेंगे जैसे नींद से जाग रहे हों। उन्होंने घोषणा की कि वे भक्तों की रक्षा करेंगे और उन्हें हमेशा सुरक्षित रखेंगे (वचन 7)।

हम ऐसी दुनिया में रहते हैं जहाँ झूठ बोलने वाली, चापलूसी करने वाली, दोहरी बातें करने वाली और बुरे लोगों की ज़बानें बेरोकटोक चल रही हैं—निडर और बेलगाम, जो आसमान तक पहुँच रही हैं। चूँकि बहुत से ईसाई ऐसी ज़बानों का शिकार हो जाते हैं, इसलिए हम ऐसे दौर में जी रहे हैं जहाँ परमेश्वर को मानने वाले और वफ़ादार लोग कम होते जा रहे हैं। ऐसे समय में, हमें परमेश्वर को मानने वाले लोग बनने की कोशिश करनी चाहिए—ऐसे लोग जिनका चरित्र मज़बूत हो और जिन पर भरोसा किया जा सके। इसके अलावा, बुरे लोगों के ज़ुल्म और सताए जाने के बावजूद—जो अक्सर हमारी धार्मिकता बढ़ने के साथ और बढ़ जाता है—हमें धार्मिक जीवन जीने की कोशिश नहीं छोड़नी चाहिए; बल्कि, हमें पूरे दिल से परमेश्वर को पुकारना चाहिए और उनके उद्धार की इच्छा करनी चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारे प्रभु हमें उस "सुरक्षित जगह" पर पहुँचा देंगे जिसकी हम इच्छा करते हैं। परमेश्वर अब बस खड़े होकर देखेंगे नहीं; वे उठेंगे और हमें उस सुरक्षित जगह पर पहुँचा देंगे। जीत!

भक्त और विश्वासी लोग

“हे प्रभु, सहायता कर, क्योंकि भक्त लोग अब नहीं रहे; इंसानों के बीच से विश्वासी लोग गायब हो गए हैं। हर कोई अपने पड़ोसी से झूठ बोलता है; उनके चापलूसी भरे होंठ दोहरे मन से बात करते हैं। प्रभु उन सभी चापलूस होंठों और डींगें मारने वाली जीभों को काट डाले—जो कहते हैं, ‘हम अपनी जीभ से जीतेंगे; हमारे होंठ हमारे अपने हैं—हमारा मालिक कौन है?’” (भजन संहिता 12:1-4)।

इस दौर में जब भक्त और विश्वासी लोग कम होते जा रहे हैं, हमें किस तरह के ईसाई बनना चाहिए? हमें भक्त और विश्वासी लोग बनना चाहिए। भजन संहिता 12:1-4 के आधार पर, मैंने भक्त और विश्वासियों की सोच की तीन विशेषताएँ पहचानी हैं।

पहला, भक्त और विश्वासियों का दिल सच्चा होता है।

जो लोग अधर्मी और अविश्वासी होते हैं, उनका दिल धोखे से भरा होता है। नतीजतन, वे निश्चित रूप से झूठ बोलते हैं (पद 2)। हालाँकि, हमें सच बोलना चाहिए। हमें परमेश्वर और दूसरों के सामने ईमानदार होना चाहिए, और खुद के प्रति भी ईमानदार रहना चाहिए। हमें सच्चाई के वचन के द्वारा अपने दिलों को शुद्ध करना चाहिए (1 पतरस 1:22)। हमारे दिल ऐसे होने चाहिए जो परमेश्वर की सच्चाई से आज़ादी का आनंद लें (यूहन्ना 8:32)। ऐसे दिल से, परमेश्वर की सच्चाई स्वाभाविक रूप से हमारे होंठों से निकलनी चाहिए।

दूसरा, भक्त और विश्वासियों का मन एक होता है।

भक्त और विश्वासी कभी भी दोहरे मन वाले या अस्थिर नहीं होते (याकूब 1:8)। अधर्मी और अविश्वासी लोगों का मन दोहरा होता है; वे मन में तलवार तेज़ करते हुए होंठों से चापलूसी करते हैं (भजन संहिता 12:2)। ऐसे चापलूसी भरे होंठ बर्बादी की ओर ले जाते हैं (नीतिवचन 26:28)। हालाँकि, भक्त और विश्वासी अपने होंठों से चापलूसी नहीं करते। उनके अंदर के मन और बाहर की बातों में कोई अंतर नहीं होता। वे झूठ नहीं बोल सकते और ऐसी बातें नहीं कहते जिनका कोई मतलब न हो; इसके बजाय, वे सच्चे दिल से ईमानदारी से बात करते हैं। एक मन और एक मकसद के साथ, वे परमेश्वर और लोगों के सामने ईमानदारी और सच्चाई से जीते हैं।

तीसरा, भक्त और विश्वासियों का दिल विनम्र होता है।

भक्त और विश्वासी अपने होंठों से परमेश्वर की बड़ाई करते हैं। इसके उलट, जो लोग परमेश्वर को नहीं मानते और विश्वासी नहीं हैं, वे चापलूसी भरी बातों से डींगें मारते हैं और कहते हैं, "हम अपनी ज़बान से जीत हासिल करेंगे; हमारी ज़बान हमारी अपनी है—हम पर किसका अधिकार है?" (भजन संहिता 12:4)। चूँकि उन्होंने यीशु को अपने दिलों में प्रभु के रूप में स्वीकार नहीं किया है, इसलिए वे अपनी ज़बान को अपनी ही चीज़ समझते हैं और उसका इस्तेमाल अपनी बड़ाई करने के लिए करते हैं। वहीं दूसरी ओर, जो लोग परमेश्वर को मानते हैं और विश्वासी हैं, वे यीशु को अपने दिलों में प्रभु मानकर जीते हैं और यह समझते हैं कि प्रभु ही उनकी ज़बान पर भी अधिकार रखते हैं। इसलिए, वे अपनी ज़बान प्रभु को समर्पित करते हैं और उसका इस्तेमाल उनकी बड़ाई करने और उनकी महिमा करने के लिए करते हैं।

प्रार्थना की प्रक्रिया

[भजन संहिता 13]

अपनी किताब *दिस इज़ सक्सेस* (This Is Success) में, ए. डब्ल्यू. टोज़र लिखते हैं: "हमें सभी लोगों का सम्मान करना चाहिए। हो सकता है कि हम अभी उनके बाहरी रूप-रंग के आधार पर उनका सम्मान न कर पाएं, लेकिन हमें 'मेमने' (यीशु) के लहू और पवित्र आत्मा की नई करने वाली शक्ति के ज़रिए उनमें बदलाव की संभावना को देखते हुए उनका सम्मान करना चाहिए।" कोई व्यक्ति दूसरों में बदलाव की इस "संभावना" को तब तक नहीं देख सकता जब तक वह खुद न बदल रहा हो। जब हम चाहते हैं कि कोई और बदले और सोचते हैं, "वह व्यक्ति क्यों नहीं बदलता?", तो अक्सर इसका कारण यह होता है कि हम खुद नहीं बदल रहे होते हैं।

तो, इस बदलाव का अनुभव करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? बाइबल हमें प्रार्थना करना सिखाती है। जब हम प्रार्थना करते हैं, तो हमारे सामने आने वाली परिस्थितियों के असल में बदलने से पहले हमें खुद में बदलाव महसूस करना चाहिए। इस मायने में, प्रार्थना के बाद हम पहले जैसे नहीं, बल्कि अलग होने चाहिए। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि प्रार्थना करने से पहले हम शांति से रहित हों और नफ़रत, बेचैनी और चिंता से भरे हों, लेकिन प्रार्थना के बाद हमें एक ऐसा बदलाव महसूस होना चाहिए जिससे हमारा दिल शांति, प्यार और भरोसे से भर जाए।

भजन संहिता 13 में, हम भजनकार दाऊद की प्रार्थना से पहले और बाद की स्थिति में साफ़ फ़र्क देखते हैं। मुझे उम्मीद है कि उसकी प्रार्थना की प्रक्रिया—यानी प्रार्थना से पहले, उसके दौरान और उसके बाद की उसकी स्थिति—पर मनन करने से हमें वह अनुग्रह मिल सकता है जो परमेश्वर हमारे लिए चाहता है।

सबसे पहले, प्रार्थना से पहले दाऊद की स्थिति "कब तक?" वाले सवाल से ज़ाहिर होती है। भजन संहिता 13:1–2 देखें: "हे प्रभु, कब तक? क्या तू मुझे हमेशा के लिए भूल जाएगा? तू कब तक मुझसे अपना मुँह छिपाए रखेगा? मुझे कब तक अपने विचारों से जूझना होगा और दिन भर दिल में दुख सहना होगा? मेरा दुश्मन कब तक मुझ पर हावी रहेगा?" भजनकार दाऊद ने परमेश्वर से पुकारते हुए चार बार "कब तक?" पूछा। उसने यह सवाल तब किया जब उसका मन बहुत उदास था और वह लंबे समय से अपने "दुश्मन" (पद 4) की वजह से बहुत ज़्यादा मुश्किलों का सामना कर रहा था (पार्क युन-सन)। हम भी कभी-कभी ऐसे दुख और शिकायत का अनुभव कर सकते हैं। व्यक्तिगत रूप से, जब मैं अपने प्यारे दोस्तों को सुसमाचार सुनाने के बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ, तो कभी-कभी मैंने भी तड़पते हुए पुकारा है, "प्रभु, कब तक?" आपके बारे में क्या? क्या आपने कभी लंबे समय तक मुश्किलों का सामना करते हुए और अपने सब्र और क्षमता की सीमा महसूस करते हुए दुख भरी प्रार्थना की है—यह पूछते हुए कि "और कब तक?" हमारे विश्वास के जीवन में, कई बार हमारा मन उदास हो जाता है, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद का हुआ था। एलिय्याह भी एक बार झाड़ी के नीचे उदासी में डूबे हुए बैठे थे और उन्होंने मरने की इच्छा जताई थी। हमारे जीवन में भी ऐसे पल आते हैं जब हम इतने उदास महसूस करते हैं कि हमें समझ नहीं आता कि क्या करें। हालाँकि, ऐसे समय में निराशा में डूबने के बजाय, हमें इस अनुभव का इस्तेमाल परमेश्वर की ओर बढ़ने के मौके के तौर पर करना चाहिए। हमें और भी ज़्यादा घुटने टेककर प्रार्थना करनी चाहिए और परमेश्वर से सच्चे दिल से विनती करनी चाहिए। रेवरेंड पार्क युन-सन ने एक बार कहा था, "कभी-कभी हम दिन की तरह परमेश्वर की कृपा का प्रकाश महसूस करते हैं, लेकिन रात की तरह आध्यात्मिक बेचैनी महसूस करना भी परमेश्वर की कृपा ही है।" सचमुच, यह बात सही है। क्योंकि जब हम आध्यात्मिक रूप से घुटन और बेचैनी महसूस करते हैं, तो हमें परमेश्वर से पुकारकर पूछना चाहिए, "और कब तक?" यह भी परमेश्वर की कृपा ही है।

दाऊद ने आध्यात्मिक घुटन और बेचैनी महसूस की क्योंकि उन्हें लगा कि परमेश्वर उन्हें हमेशा के लिए भूल गए हैं और प्रभु ने उनसे अपना मुँह मोड़ लिया है (पद 1)। उन्होंने कहा, "मैं अपने मन में विचार करता हूँ और दिन भर मेरे दिल में दुख रहता है" (पद 2); यहाँ, "विचार करने" का मतलब है "चिंता में डूबे रहना और दुख के कारण मन में तरह-तरह के ख्यालात आना" (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, दाऊद का मन दुख से पैदा हुई चिंता और बदलते विचारों से भरा हुआ था, जिससे उनके दिल में लगातार दुख बना रहता था। हम कितनी बार ऐसी स्थितियों में होते हैं? कितनी बार हम चिंता और दुख महसूस करते हैं, और अपने दुख के कारण विचारों के

बवंडर में घिरे रहते हैं? डॉ. पार्क युन-सन ने कहा, "जब कोई व्यक्ति विश्वास के साथ मानसिक पीड़ा सहता है, तो उसे समझ मिलती है और परमेश्वर की कृपा प्राप्त होती है। लेकिन, कृपा के परमेश्वर से दूर ले जाने वाली चिंता—यानी अविश्वास से पैदा हुई मानसिक पीड़ा—नुकसानदायक होती है।" हमें अविश्वास से पैदा होने वाली ऐसी नुकसानदायक और बेकार की चिंता में नहीं पड़ना चाहिए। इससे बचने के लिए, हमें प्रार्थना की जगह पर आना चाहिए, विनम्रता से घुटने टेकने चाहिए और प्रभु से सच्चे दिल से पूछना चाहिए, "और कब तक?" हमें अब अविश्वास की आहें नहीं भरनी चाहिए, बल्कि विश्वास की आहें भरनी चाहिए।

दूसरी बात, दाऊद की प्रार्थना के तरीके के बारे में यह है कि उसने डर के माहौल में भी परमेश्वर से प्रार्थना की।

भजन संहिता 13:3–4 पर विचार करें: "हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरी ओर देख और मुझे उत्तर दे। मेरी आँखों में ज्योति दे, नहीं तो मैं मृत्यु की नींद सो जाऊँगा, और मेरा शत्रु कहेगा, 'मैंने उसे हरा दिया है,' और मेरे गिरने पर मेरे दुश्मन खुश होंगे।" यहाँ, "मृत्यु की नींद" का अर्थ है "आध्यात्मिक मृत्यु—परमेश्वर की कृपा से दूर हो जाने की स्थिति" (पार्क युन-सन)। जब दुश्मनों की वजह से आई मुश्किलों के कारण किसी की आत्मा थक जाती है और निराशा गहरी हो जाती है और बनी रहती है, तो परमेश्वर की दयालु मदद न मिलने से आध्यात्मिक दृष्टि धुंधली होने का खतरा पैदा हो जाता है, जिससे आध्यात्मिक मृत्यु हो सकती है (पार्क युन-सन)। दाऊद को इस तरह की आध्यात्मिक मृत्यु की चिंता थी—सांसारिक चिंता नहीं। उसने परमेश्वर से प्रार्थना की क्योंकि उसे डर था कि उसका दुश्मन जीत सकता है। अपने दुश्मन को परमेश्वर का दुश्मन मानते हुए, वह उस दुश्मन पर जीत हासिल करना चाहता था; इसलिए, उसने दुश्मन पर जीत के लिए परमेश्वर से विनती की। उसने इसलिए भी प्रार्थना की क्योंकि उसे डर था कि अगर दुश्मन जीत गया, तो वह खुद डगमगा जाएगा और उसके दुश्मन खुश होंगे। संक्षेप में, दाऊद ने परमेश्वर से प्रार्थना की ताकि वह डगमगाए नहीं। इस स्थिति के बीच, उसने प्रार्थना की: "हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरी ओर देख और मुझे उत्तर दे। मेरी आँखों में ज्योति दे" (पद 3)। यहाँ "विचार करने" के रूप में अनुवादित शब्द का शाब्दिक अर्थ है "देखना" (पार्क युन-सन)। दाऊद चाहता था कि परमेश्वर उसे देखे, इससे भी ज़्यादा वह चाहता था कि उसकी अपनी आध्यात्मिक आँखें खुलें ताकि वह परमेश्वर को देख सके। इसके बाद, वह परमेश्वर को देखना चाहता था क्योंकि परमेश्वर ने उसकी आध्यात्मिक आँखें खोल दी थीं।

A.W. टोज़र के एक दोस्त ने एक बार कहा था, "बहुत सारे लोगों की भीड़ का इकट्ठा होकर एक छोटे परमेश्वर को देखने के बजाय, कुछ लोगों का इकट्ठा होकर एक महान परमेश्वर को देखना बेहतर है।" ये बहुत गहरे शब्द हैं। हमें आराधना के दौरान परमेश्वर की महानता को देखना और महसूस करना चाहिए। इसके अलावा, हमें प्रार्थना के दौरान भी परमेश्वर की महानता को देखना और महसूस करना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो दूसरी चीज़ें—जैसे मुश्किलें, परेशानियाँ और समस्याएँ—हमारी नज़र में छोटी लगने लगती हैं। लेकिन, अगर हम बिना विश्वास के सिर्फ़ शिकायत करते हुए प्रार्थना करते हैं जिसमें दूसरी चीज़ें बड़ी लगने लगती हैं, तो महान परमेश्वर हमें छोटे लगने लगेंगे। इसलिए, दाऊद की तरह, हमें अपने डर के बीच परमेश्वर से विनती करते हुए उनकी उपस्थिति का अनुभव करना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो प्रार्थना के बाद हमारे अंदर एक बदलाव आता है।

आखिर में, तीसरी बात यह है कि प्रार्थना के बाद दाऊद में एक बदलाव आया।

किस तरह का बदलाव आया? हम दाऊद में तीन बदलाव देख सकते हैं:

(1) दाऊद ने परमेश्वर की दया और प्रेम पर भरोसा किया।

भजन संहिता 13:5 देखें: "परन्तु मैंने तेरी दया पर भरोसा रखा है..." प्रार्थना करने से पहले, दाऊद को लगा कि परमेश्वर उसे भूल गए हैं और अपना मुँह छिपा लिया है, लेकिन प्रार्थना के दौरान, उसने दयालु परमेश्वर का अनुभव किया। नतीजतन, उसने प्रार्थना के बाद भी उसी दयालु परमेश्वर पर भरोसा करते रहने का फ़ैसला किया। (2) दाऊद प्रभु के उद्धार में खुश हुआ।

फिर से भजन संहिता 13:5 देखें: "परन्तु मैंने तेरी अटूट दया पर भरोसा रखा है; मेरा मन तेरे उद्धार में आनन्दित होगा।" दाऊद, जो प्रार्थना से पहले थका हुआ और निराश था, प्रार्थना के बाद प्रभु के उद्धार में खुश हुआ। यह खुशी उद्धार के भरोसे से मिली थी; यह इसलिए हुई क्योंकि प्रार्थना के बीच में, दाऊद की मुलाक़ात प्रभु, अपने उद्धारकर्ता से हुई।

(3) दाऊद ने परमेश्वर की स्तुति करने का फ़ैसला किया।

भजन संहिता 13:6 देखें: "मैं प्रभु के लिए गाऊँगा, क्योंकि उसने मेरे साथ बहुत भलाई की है।" दाऊद ने परमेश्वर की स्तुति करने का फ़ैसला किया क्योंकि परमेश्वर ने उसके साथ बहुत उदारता से व्यवहार किया था। परमेश्वर ही वह है जो हमारे साथ भी उदारता से व्यवहार करता है। जब हम, दाऊद की तरह, प्रार्थना में विश्वास के ज़रिए प्रभु की उदार कृपा का अनुभव करते हैं, तो हम भी परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं—मुश्किलों या जेल में होने पर भी, ठीक वैसे ही जैसे पौलुस और सीलास ने किया था (प्रेरितों के काम 16:25)।

प्रार्थना हमारे लिए, यानी परमेश्वर की संतानों के लिए, एक बहुत बड़ा सौभाग्य और आशीष है। यह परमेश्वर की कितनी अनमोल कृपा है कि जब हम थके हुए होते हैं और लगातार मुश्किलों और परेशानियों के बोझ तले दबे होते हैं, तब भी हम आध्यात्मिक तड़प के साथ उनसे पुकार सकते हैं—विश्वास और विनती के साथ यह कह सकते हैं, "हे प्रभु, कब तक?" जब हम अपने डर के बीच परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं और उस महान, शक्तिशाली, दयालु और हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर से मिलते हैं—जो हर तरह की स्तुति के योग्य हैं—तो हम निश्चित रूप से बदल जाते हैं। फिर, प्रार्थना से बदलकर, हम परमेश्वर की प्रेमपूर्ण दया पर और अधिक भरोसा करते हैं और उनके उद्धार के भरोसे में आनंदित होते हैं, और उनकी दयालु देखभाल के लिए उनकी स्तुति करने के लिए प्रेरित होते हैं।

"हर वह चीज़ जिसमें साँस है, प्रभु की स्तुति करे। हालेलुयाह" (भजन संहिता 150:6)।

परमेश्वर के लोगों का घिरा होना

[भजन संहिता 14]

जब मैं साल 2005 को खत्म कर रहा था, तो मैंने आखिरी बुधवार, 28 दिसंबर को भजन संहिता 14 पर मनन किया। पूरे साल—"मैं प्रभु के वचन की ओर दौड़ूंगा" थीम के तहत—मैंने भजन संहिता 119 पर मनन करने में कई महीने बिताए, और उसके बाद बुधवार को भजन संहिता पर एक साप्ताहिक सीरीज़ शुरू की, जो भजन संहिता 1 से शुरू होकर साल के आखिर तक भजन संहिता 14 तक पहुँची। उस आखिरी बुधवार को भजन संहिता 14 पर मनन करने से मेरा मन कृतज्ञता से भर गया। मैं प्रभु का शुक्रगुजार था कि उन्होंने मुझे पूरे 2005 में भजन संहिता पर मनन करने के लिए प्रेरित किया। हालाँकि ऐसी अनगिनत बातें थीं जिन पर मैं पछतावा कर सकता था, लेकिन परमेश्वर ने मुझे पछतावे के बजाय अपनी कृपा के लिए कृतज्ञ हृदय दिया। जिन बातों पर मुझे पछतावा हो सकता था, उनके बारे में भी मैंने अपना नज़रिया बदलने और विश्वास के साथ धन्यवाद देने का संकल्प लिया। नतीजतन, मैं साल 2005 को शांत और कृतज्ञ हृदय के साथ समाप्त कर पाया।

सच तो यह है कि हमें बस विश्वास के ज़रिए अपना नज़रिया बदलने की ज़रूरत है। उदाहरण के लिए, निर्गमन 14:3 में मिस्र से निकलने के दौरान मूसा और इस्राएलियों के जंगल में "घिरे हुए" (या फँसे हुए) होने का वर्णन है। यह मिस्र के राजा फिरौन का नज़रिया था; उसी सोच के आधार पर, उसने अपनी सेना को इकट्ठा किया और मूसा और इस्राएलियों का पीछा किया, और लगभग उन तक पहुँच ही गया था। उस समय, इस्राएलियों की सोच भी अविश्वासी फिरौन जैसी ही थी। यह मानते हुए कि वे फँस गए हैं, उन्होंने उस जंगल को जहाँ वे खड़े थे, "कब्रिस्तान" कहा (वचन 11)। हालाँकि, मूसा का नज़रिया अलग था। उन्होंने उस जगह को कब्रिस्तान के तौर पर बिल्कुल नहीं देखा; बल्कि, उन्होंने इसे उद्धार की जगह के तौर पर देखा जहाँ वे परमेश्वर की शक्ति का अनुभव करेंगे। मूसा के शब्द सुनिए: "...डरो मत। मज़बूती से खड़े रहो और तुम वह उद्धार देखोगे जो प्रभु आज तुम्हें देगा। जिन मिस्रियों को तुम आज देख रहे हो, उन्हें तुम फिर कभी नहीं देखोगे। प्रभु तुम्हारे लिए लड़ेंगे;

तुम्हें बस शांत रहने की ज़रूरत है" (वचन 13-14)। यह नज़रिया इस्राएलियों के नज़रिए से कितना अलग है! विश्वास पर आधारित नज़रिया अविश्वास पर आधारित नज़रिए से बहुत अलग होता है। भजन संहिता 14 में, भजनकार दाऊद ने कैद में होने की बात कही है; वह एक "कैदी" बन गया था (पद 7)। उसे किसने कैद किया था? उसे "मूर्ख" ने कैद किया था (पद 1)। यहाँ "मूर्ख" के लिए हिब्रू शब्द *नाबाल* है। दिलचस्प बात यह है कि दाऊद की कहानी में अबीगैल—जो बाद में दाऊद की पत्नी बनी—के पति का नाम भी नाबाल था। हालाँकि हमें यह नहीं पता कि उसका नाम "मूर्ख" के अर्थ वाला कैसे पड़ा, लेकिन दाऊद ने ऐसे ही मूर्खों की कैद में रहते हुए भजन संहिता 14 की रचना की थी। भजन संहिता 14:1 में मूर्ख का वर्णन ऐसे व्यक्ति के रूप में किया गया है जो अपने मन में कहता है, "कोई परमेश्वर नहीं है।" सच तो यह है कि आज दुनिया में ऐसे बहुत से मूर्ख हैं। हम भी कह सकते हैं कि हम मूर्खों से घिरे हुए हैं, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद था। यहाँ, "मूर्ख" का अर्थ "व्यावहारिक नास्तिक" (पार्क युन-सन) से है। सैद्धांतिक नास्तिक के विपरीत, व्यावहारिक नास्तिक अपने होंठों से तो परमेश्वर को मानता है, लेकिन अपने कामों से उसका इनकार करता है। प्रेरित पौलुस ऐसे लोगों का वर्णन "घृणित, आज्ञा न मानने वाले और कोई भी अच्छा काम करने के अयोग्य" (तीतुस 1:16) के रूप में करता है। आज हमारे सामने जो पाठ है, वह दाऊद को घेरे हुए मूर्ख लोगों की पाँच विशेषताओं को बताता है।

पहली बात, मूर्ख वे हैं जो भलाई नहीं करते।

भजन संहिता 14:1 और 3 को देखें: "मूर्ख अपने मन में कहता है, 'कोई परमेश्वर नहीं है।' वे भ्रष्ट हैं, उनके काम बुरे हैं; कोई भी भलाई करने वाला नहीं है... सब भटक गए हैं, सब भ्रष्ट हो गए हैं; कोई भी भलाई करने वाला नहीं है, एक भी नहीं।" भजनकार दाऊद घोषणा करता है, "कोई भी भलाई करने वाला नहीं है" और "कोई भी भलाई करने वाला नहीं है, एक भी नहीं।" हालाँकि मूर्ख लोग अपने होंठों से परमेश्वर की प्रशंसा कर सकते हैं—यह कहते हुए कि "परमेश्वर भला है"—लेकिन वे अपने जीवन में भलाई न करके परमेश्वर की भलाई का इनकार करते हैं। भले ही उन्होंने परमेश्वर की भलाई का अनुभव किया हो (34:8), वे बुरे काम करने वाले हैं क्योंकि उन्होंने सभी अच्छे कामों को छोड़ दिया है। बाइबल उनके बुरे कामों को "भ्रष्टता" और "घिनौने काम" (14:1) बताती है। यहाँ, भ्रष्टाचार का मतलब है "नैतिक भ्रष्टाचार"—खासकर, "एक ऐसा घोर पाप जिसे इंसान अपनी कोशिशों से ठीक नहीं कर सकता" (पार्क युन-सन)। वे "भ्रष्ट" लोग हैं (पद 3)।

दूसरा, मूर्ख वे हैं जो परमेश्वर को जानने की कोई कोशिश नहीं करते।

भजन संहिता 14:2 देखें: "यहोवा स्वर्ग से सब मनुष्यों पर दृष्टि करता है कि देखे कि कोई समझदार है या कोई परमेश्वर को खोजने वाला है।" हालाँकि वे अपनी बातों से कहते हैं कि वे परमेश्वर को जानते हैं, लेकिन मूर्ख—जो असल में उसे नहीं जानते—उसे खोजने की कोई कोशिश नहीं करते। असल में, उन्हें परमेश्वर को जानने की ज़रूरत भी महसूस नहीं होती। परमेश्वर के "नीचे देखने" और परखने के बावजूद, मूर्खों में से एक भी परमेश्वर को जानने की कोशिश नहीं करता।

तीसरा, मूर्ख वे हैं जो भटक गए हैं।

भजन संहिता 14:3 देखें: "वे सब भटक गए हैं; वे सब मिलकर भ्रष्ट हो गए हैं; कोई भलाई करने वाला नहीं है, एक भी नहीं।" यह उन लोगों के बारे में है जो परमेश्वर को जानने के रास्ते से हट गए हैं (पार्क युन-सन)। उनमें परमेश्वर को खोजने की इच्छा भी नहीं होती; वे सिर्फ़ परमेश्वर को नहीं खोजते बल्कि उसके साथ-साथ दूसरी चीज़ों के पीछे भागते हैं; वे परमेश्वर से पहले दुनिया की चीज़ों को खोजते हैं; वे बिना जोश के उसे खोजते हैं; वे लगातार उसे नहीं खोजते; वे उसके वचन के अनुसार उसे नहीं खोजते (गलत शिक्षा); और वे उसे गलत समय पर खोजते हैं (जैसे जब पछतावा करने की ज़रूरत हो तब न करना) (पार्क युन-सन)।

चौथा, मूर्ख वे हैं जो परमेश्वर के लोगों पर ज़ुल्म करते हैं।

भजन संहिता 14:4 देखें: "क्या सब बुरे काम करने वालों को कोई ज्ञान नहीं है, जो मेरे लोगों को ऐसे खा जाते हैं जैसे रोटी खाते हैं और यहोवा से प्रार्थना नहीं करते?" मूर्ख बिना किसी हिचकिचाहट के परमेश्वर के लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और इसे मामूली बात समझते हैं; इसलिए, "सब बुरे काम करने वालों को कोई ज्ञान नहीं है" (पद 4)।

आखिर में, मूर्ख वे हैं जो परमेश्वर से प्रार्थना नहीं करते।

भजन संहिता 14:4 को फिर से देखें: "क्या सब बुरे काम करने वालों को कोई ज्ञान नहीं है, जो मेरे लोगों को ऐसे खा जाते हैं जैसे रोटी खाते हैं और यहोवा से प्रार्थना नहीं करते?" परमेश्वर के लोगों पर ज़ुल्म करने का पाप करने के बाद भी, वे पछतावे के साथ परमेश्वर को नहीं पुकारते।

भजन संहिता 14 हमें क्या बताती है कि जब परमेश्वर के लोग ऐसे मूर्खों से घिर जाते हैं और बुरी हालत में होते हैं, तो परमेश्वर क्या करते हैं? यह तीन बातें बताती है:

पहली बात, यह हमें बताती है कि परमेश्वर उनके साथ हैं।

भजन संहिता 14:5 देखिए: "वे वहाँ बहुत डर गए हैं, क्योंकि परमेश्वर धर्मी लोगों के साथ हैं।" हालाँकि ऐसा लग सकता था कि जब दाऊद और परमेश्वर के लोग मूर्खों के सतावे से घिरे थे, तब परमेश्वर वहाँ नहीं थे, लेकिन जो परमेश्वर "इम्मानुएल" (हमारे साथ परमेश्वर) हैं, वे निश्चित रूप से उनके साथ थे। तब भी जब हमारे विचार और भावनाएँ कुछ और कहती हैं—शायद इसलिए क्योंकि हमें लगता है कि हम मूर्खों से घिरे हुए हैं—परमेश्वर हमारे साथ रहते हैं। जब परमेश्वर का समय आता है, तो हम इस सच्चाई को समझेंगे और उनकी उपस्थिति का पूरा अनुभव करेंगे।

दूसरी बात, यह हमें बताती है कि परमेश्वर एक शरणस्थान बन जाते हैं।

भजन संहिता 14:6 देखिए: "तुम बुरे लोग गरीबों की योजनाओं को नाकाम करते हो, लेकिन प्रभु उनकी शरण हैं।" मूर्ख लोग परमेश्वर के लोगों से नफरत करते हैं और उनकी योजनाओं को शर्मिंदा करने या बर्बाद करने की कोशिश करते हैं—और कभी-कभी वे उन्हें नाकाम करने में सफल भी हो जाते हैं—लेकिन परमेश्वर अपने लोगों के लिए शरणस्थान का काम करते हैं। परमेश्वर उन संतों के लिए—यानी आयत 6 में बताए गए "गरीबों" के लिए—शरणस्थान का काम करते हैं, जो उन पर विश्वास करने और सही जीवन जीने के कारण कठिनाई और सतावे का सामना करते हैं।

आखिरकार, तीसरी बात यह है कि परमेश्वर अपने लोगों को बचाते हैं।

भजन संहिता 14:7 देखिए: "काश, इस्राएल का उद्धार सिय्योन से होता! जब प्रभु अपने लोगों की किस्मत बदलते हैं, तो याकूब खुशी मनाएगा और इस्राएल आनंदित होगा।" हालाँकि परमेश्वर के लोग खुद को मूर्खों की कैद में और बुरी हालत में पा सकते हैं, लेकिन जब परमेश्वर का तय समय आता है, तो वे उन्हें बचाते हैं। जब परमेश्वर अपने लोगों को बचाते हैं, तो वे बुरे लोगों का विनाश भी करते हैं (पार्क युन-सन)। परमेश्वर का उद्धार "अपने लोगों की किस्मत बदलने" में है (आयत 7)। उस पल, परमेश्वर के लोग खुशी मनाएंगे और आनंदित होंगे (आयत 7)। हमारा दुख बस कुछ पल के लिए है, जबकि हमारा आनंद हमेशा के लिए होगा।

मिस्र से निकलने के समय इस्राएलियों की तरह, हम भी अभी इस रेगिस्तान जैसी दुनिया से होते हुए 'वादे की धरती'—यानी स्वर्ग—की ओर यात्रा कर रहे हैं। यीशु, जो सच्चे मूसा हैं, हमारी अगुवाई कर रहे हैं और हम अपनी नज़रें उन पर टिकाए हुए हैं। फिर भी, इस सफ़र में हम खुद को जंगल में फँसा हुआ पा सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे कभी मूसा और इस्राएली फँसे थे। हम हर तरफ़—पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण—देख सकते हैं, लेकिन कोई समाधान नहीं मिलता; हमें ऐसा संकट महसूस हो सकता है मानो हम चारों तरफ़ से घिर गए हों। ऐसे पलों में, हमें इस्राएलियों की तरह—जो अविश्वासी फ़िरौन जैसे हो गए थे—सिर्फ़ दुनियावी हालात को नहीं देखना चाहिए और न ही संकट को कब्रिस्तान समझना चाहिए, या निराश होकर शिकायत नहीं करनी चाहिए। हमें मूसा और परमेश्वर के ख़िलाफ़ बड़बड़ाने का पाप नहीं करना चाहिए। इसके बजाय, मूसा की तरह हमें स्वर्ग की ओर देखना चाहिए और अपनी नज़रें प्रभु पर टिकानी चाहिए, ताकि संकट और घिरे होने की उस हालत को परमेश्वर की बचाने वाली शक्ति को ज़ाहिर करने के मौक़े में बदला जा सके। हमें इस बात पर भरोसा और यकीन रखना चाहिए कि परमेश्वर हमारे साथ है, और वह हमारी पनाहगाह और उद्धारकर्ता है। आप परमेश्वर की बचाने वाली शक्ति का अनुभव करें।

परमेश्वर की उपस्थिति में बने रहें!

[भजन संहिता 15]

हम मसीही बिना डगमगाए अपने विश्वास की यात्रा कैसे जारी रख सकते हैं? हम इस दुनिया में बिना विचलित हुए—विश्वास में दृढ़ और अपनी गवाही के प्रति सच्चे रहकर—कैसे जी सकते हैं? आज, मैंने CNN पर वेस्ट वर्जीनिया में कोयले की खदान में हुए विस्फोट के बारे में एक खबर सुनी; तेरह खनिकों में से बारह की मौत हो गई, और एक की हालत गंभीर बनी हुई है। जब वे लोग 41 घंटों तक ज़मीन के नीचे फंसे रहे, तो चर्च में जमा हुए उनके परिवारों और दोस्तों ने यह शुरुआती—हालांकि गलत—खबर सुनकर खुशी मनाई और चर्च की घंटियां बजाईं कि सभी तेरह लोग बच गए हैं। उन्होंने "अमेज़िंग ग्रेस" (अद्भुत अनुग्रह) भजन भी गाया। हालाँकि, लगभग तीन घंटे बाद, उन्हें पता चला कि जानकारी गलत थी: बारह लोगों की मौत हो गई थी, और केवल एक को बचाया जा सका था। चर्च में मौजूद एक व्यक्ति ने देखा कि जब लोगों ने पहली, गलत खबर सुनी तो वे "परमेश्वर की स्तुति" कर रहे थे, लेकिन जब तीन घंटे बाद दूसरी, सही खबर आई तो वे "कोसने" लगे। उस समय, माइनिंग कंपनी के चेयरमैन मिस्टर हैटफ़ील्ड ने कहा, "हमने तेरह चमत्कारों के लिए प्रार्थना की थी। हम उस एक चमत्कार का जश्न मनाना चाहते हैं जो हुआ।" हम उन लोगों की भावनाओं को कुछ हद तक समझ सकते हैं जिन्होंने पहली खबर सुनकर "अमेज़िंग ग्रेस" गाकर परमेश्वर की स्तुति की, और फिर दूसरी खबर सुनकर कोसने लगे; फिर भी, हम उनके विश्वास में डगमगाहट महसूस किए बिना नहीं रह सकते। मेरा मानना है कि ऐसी डगमगाहट सिर्फ़ उन्हीं तक सीमित नहीं है—यह हममें भी मौजूद है। जब हम खुश होते हैं तो हम स्तुति और धन्यवाद करते हैं, लेकिन मुश्किल और कठिनाई के समय—खासकर जब किसी प्रियजन की मृत्यु का सामना करना पड़ता है—तो हम लगातार धन्यवाद और स्तुति करने के बजाय परमेश्वर से नाराज़ हो सकते हैं या उन्हें कोस भी सकते हैं। मेरा मानना है कि विश्वास में ऐसी डगमगाहट—निरंतरता की इस कमी—का मूल

कारण हमारी कमज़ोरी है कि हम परमेश्वर पर पूरी तरह भरोसा नहीं कर पाते और उन्हें वैसा नहीं मानते जैसे वे वास्तव में हैं। भजन संहिता 15 के संदर्भ में, इसका कारण परमेश्वर की उपस्थिति में न बने रहना है।

भजन संहिता 15:1 में, भजनकार दाऊद पूछता है, "हे प्रभु, तेरे पवित्र डेरे में कौन रह सकता है? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन निवास कर सकता है?" असल में यह पूछना है कि, "वह कौन है जो परमेश्वर की उपस्थिति में रहता है?" इस सवाल के जवाब में, दाऊद इस हिस्से में दस जवाब देते हैं। मैं इन दस जवाबों को "परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के दस नियमों" के तौर पर देखता हूँ। इन दस नियमों का ईमानदारी से पालन करने पर हमें यह आशीष मिलती है कि "जो ऐसा करता है, वह कभी नहीं डगमगाएगा" (पद 5)। तो, परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के लिए ये दस नियम क्या हैं?

पहला नियम है ईमानदारी से जीना।

भजन संहिता 15:2 के पहले हिस्से को देखें: "जो सच्चाई से चलता है..." यहाँ, "सच्चाई" (या ईमानदारी) का मतलब पवित्रता या सच्चाई से है। इसका मतलब है ऐसा चरित्र जो अडिग हो और जिसमें कोई छल-कपट न हो—यानी दोहरी ज़िंदगी जीने के बिल्कुल उलट (पार्क युन-सन)। अय्यूब इसका एक उदाहरण है। अय्यूब 2:3 में, हम देखते हैं कि परमेश्वर शैतान के सामने अय्यूब की तारीफ़ करते हैं: "पृथ्वी पर उसके जैसा कोई नहीं है; वह बेदाग और सच्चा है, परमेश्वर का डर मानने वाला और बुराई से दूर रहने वाला इंसान है। तुमने बिना किसी वजह के मुझे उसके खिलाफ उकसाया, फिर भी उसने अपनी ईमानदारी बनाए रखी।" हालाँकि शैतान के हमलों की वजह से अय्यूब बहुत ज़्यादा तकलीफ़ में था, फिर भी वह अपनी ईमानदारी पर अडिग रहा। चूँकि अय्यूब परमेश्वर की उपस्थिति में रहता था, इसलिए उसने हालात कैसे भी हों—यहाँ तक कि जब उसके सभी बच्चे मर गए थे, तब भी—अपने मुँह से कोई पाप नहीं किया। वह ऐसा इसलिए कर पाया क्योंकि उसके सच्चे चरित्र ने उसे परमेश्वर का डर मानकर जीने के लिए प्रेरित किया। सच तो यह है कि सच्चे लोग हालात, लोगों या शैतान से भी नहीं डरते; इसके बजाय, परमेश्वर का डर मानकर वे ऐसी ज़िंदगी जीते हैं जो बुराई से दूर रहती है। दाऊद ने तब भी अपनी ईमानदारी बनाए रखी जब "मूर्खों" ने उसे घेर लिया और सताया (भजन संहिता 14)। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर दिल को परखते हैं और "ईमानदारी से खुश होते हैं" (1 इतिहास 29:17)।

दूसरा नियम है धार्मिकता का पालन करना।

भजन संहिता 15:2 के बीच वाले हिस्से को देखें: "...धार्मिकता का पालन करता है..." यहाँ, "धार्मिकता" का मतलब है "वह जो परमेश्वर की नज़र में सही है" (पार्क युन-सन)। हालाँकि, शैतान लोगों को धोखा देकर ऐसी चीज़ों को सही मानने पर मजबूर करता है जो परमेश्वर की नज़र में सही नहीं हैं। यह शैतान की सचमुच एक डरावनी चाल है। इसका एक उदाहरण हम उत्पत्ति 3 में "उस स्त्री" (हव्वा) की कहानी में देख सकते हैं। जब साँप उस स्त्री के पास आया और उसे भले-बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल खाने के लिए उकसाया—एक ऐसा काम जो परमेश्वर की नज़र में बिल्कुल भी सही नहीं था—तो शैतान ने उस फल को "देखने में अच्छा" (उत्पत्ति 3:6) बना दिया। आज भी, शैतान हमें आँखों की लालसा में फँसाकर धोखा देता है; वह परमेश्वर की नज़र में जो सही है उसे इंसानों के लिए गलत और जो गलत है उसे सही दिखाता है। फिर भी दाऊद, जिसे धर्मी ठहराया गया था, ने शैतान के प्रलोभनों के बावजूद एक धर्मी जीवन जिया। उसने परमेश्वर की नज़र में जो सही था, उसे किया, न कि उसे जो सिर्फ़ लोगों को सही लगता था।

तीसरी बात दिल से सच बोलने के बारे में है।

भजन संहिता 15:2 का बाद वाला हिस्सा देखिए: "...और अपने मन से सच बोलता है।" दाऊद जानता था कि प्रभु मन की गहराई में सच्चाई चाहता है (भजन संहिता 51:6)। वह समझता था कि परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के लिए, इंसान को दिल से सच बोलना चाहिए। हालाँकि, जिनका चरित्र अस्थिर होता है और जो दोहरी ज़िंदगी जीते हैं, वे सच के बजाय अपने मन में झूठ बोलते हैं। ऐसे लोग परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं रह सकते। मुँह से प्यार का दिखावा करना जबकि मन में नफ़रत रखना खुद के साथ बेईमानी है; इसलिए, कोई यह दावा नहीं कर सकता कि वह परमेश्वर की नज़र में धर्मी जीवन जी रहा है। चूँकि वे परमेश्वर की नज़र में सही काम करने में असफल रहते हैं, इसलिए वे धार्मिकता का पालन नहीं करते। बाइबल हमें ऐसा जीवन न जीने की सलाह देती है। इसके बजाय, यह हमें परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के लिए—परमेश्वर और दूसरों, दोनों के सामने—दिल से सच बोलने के लिए प्रेरित करती है। चौथा आदेश यह है कि अपनी ज़बान से किसी की बुराई या निंदा न की जाए।

भजन संहिता 15:3 का पहला हिस्सा देखिए: "जो अपनी ज़बान से बुराई नहीं करता..." यहाँ "बुराई करने" (निंदा करने) के शब्द का मतलब अपने "पैरों" का इस्तेमाल करना भी है। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब है इधर-उधर घूमना—लोगों से मिलने के लिए अपने पैरों का इस्तेमाल करना—और अपनी बातों से दूसरों को नुकसान पहुँचाना (पार्क युन-सन)। आसान शब्दों में कहें तो, ज़बान से बुराई करने का मतलब है ऐसी बातें कहना जिनसे दूसरे लोग गलत रास्ते पर चले जाएँ या ठोकर खाएँ। ऐसी बातों में बिना किसी आधार के अफ़वाहें फैलाना या पड़ोसियों के बारे में कानाफूसी करना शामिल है—ऐसी बातें जो आखिरकार उन्हें नुकसान पहुँचाती हैं। यह निश्चित रूप से परमेश्वर की उपस्थिति में रहने वाले संत का जीवन नहीं है। हमारे पैर ऐसे सुंदर पैर होने चाहिए जो यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करें; वे दूसरों को नुकसान पहुँचाने वाली बातें फैलाने के लिए नहीं हैं। शब्द सचमुच बहुत महत्वपूर्ण हैं। दिन की शुरुआत किसी प्यार भरी बात, तारीफ़, हौसला बढ़ाने वाली बात या खुशी देने वाली बात सुनकर करना बहुत अच्छा लगता है; इसके विपरीत, दिन की शुरुआत बुराई करने या नकारात्मक बातें सुनने से करने पर मन भारी और उदास हो जाता है। इसीलिए पौलुस कुलुस्सियों 4:6 में यह सलाह देते हैं: "तुम्हारी बातचीत हमेशा अनुग्रह भरी और समझदारी भरी (जैसे नमक मिली हुई) हो, ताकि तुम जान सको कि तुम्हें हर व्यक्ति को क्या जवाब देना चाहिए।" यहाँ जो शब्द खास है, वह है "समझदारी भरी" या "संतुलित" (यानी "नमक मिली हुई")। हमें हमेशा अनुग्रह के साथ बोलने के लिए बुलाया गया है—एक ऐसा काम जिसका अभ्यास करना आसान नहीं है—और मैं समझता हूँ कि अपनी बातों में "समझदारी" लाने के लिए न केवल अनुग्रह की, बल्कि बुद्धि की भी ज़रूरत होती है।

पाँचवीं आज्ञा यह निर्देश देती है कि किसी दोस्त के साथ बुराई न की जाए।

भजन संहिता 15:3 के बीच वाले हिस्से पर गौर करें: "...और न ही अपने पड़ोसी के साथ बुराई करता है..."। यह आज्ञा पहले चर्चा किए गए तीसरे नियम के विपरीत है: "धार्मिकता का अभ्यास करना"। इसका मतलब है कि जो व्यक्ति परमेश्वर की उपस्थिति में रहना चाहता है, उसे पड़ोसी के खिलाफ बुराई करने के बजाय वह काम करना चाहिए जो परमेश्वर की नज़र में सही हो। दूसरे शब्दों में, किसी को अपने पड़ोसी को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए। हम पड़ोसी के खिलाफ किस तरह की बुराई कर सकते हैं? उदाहरण के लिए, अगर कोई पड़ोसी पाप करता है लेकिन उसकी ज़िम्मेदारी लेता है और उसे स्वीकार करता है, तो धार्मिकता का अभ्यास करने वाला व्यक्ति उसे माफ़ कर देता है और अपना लेता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर पछतावा करने

वाले दिल को धर्मी मानते हैं और उसे अपने साथ संगति का मौका देते हैं (लूका 18:13–14) (पार्क युन-सन)। हालाँकि, जो व्यक्ति ऐसे पड़ोसी के साथ बुराई करता है—उसे धर्मी मानने या अपनाने से इनकार करता है, और इसके बजाय उसकी निंदा करता है—वह उसे संगति देने में नाकाम रहता है। यह अपने पड़ोसी के साथ बुराई करने के बराबर है; ऐसा व्यक्ति परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं रह सकता। इसलिए, परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के लिए, हमें अपने पड़ोसियों के प्रति बुराई नहीं करनी चाहिए।

छठा नियम यह आदेश देता है कि अपने पड़ोसी की बुराई या निंदा न की जाए।

भजन संहिता 15:3 का दूसरा हिस्सा देखिए: "...और न ही अपने पड़ोसी की बुराई करता है।" याकूब 3:9–11 सिखाता है कि जीभ का मकसद परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करना है। अगर हम इसका इस्तेमाल दूसरों को नुकसान पहुँचाने के लिए करते हैं, तो हम उस मकसद को पूरा करने में नाकाम रहते हैं। खास तौर पर, प्रेरित याकूब चेतावनी देता है, "अगर तुम्हारे दिलों में कड़वी जलन और स्वार्थी महत्वाकांक्षा है, तो इसके बारे में डींगें न मारो और न ही सच्चाई से मुकरो" (पद 14)। वह ऐसी समझ को सांसारिक, अधार्मिक और शैतानी बताता है (पद 15), और कहता है कि इससे अव्यवस्था और हर तरह की बुरी हरकतें पैदा होती हैं (पद 16)। परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के लिए, हमें अपने पड़ोसियों की बुराई नहीं करनी चाहिए, बल्कि उनके साथ ईमानदारी से पेश आना चाहिए। हमें अपने दिलों से सच बोलना चाहिए।

सातवीं बात यह है कि बुरे लोगों को तुच्छ समझना और जो प्रभु का भय मानते हैं, उनका सम्मान करना।

भजन संहिता 15:4 का पहला हिस्सा देखिए: "जिसकी नज़र में बुरा व्यक्ति तुच्छ है, लेकिन जो प्रभु का भय मानने वालों का सम्मान करता है..."। यहाँ, "बुरा व्यक्ति" का मतलब है वह जो परमेश्वर का अनादर करता है; हमें उनका पक्ष पाने के लिए उनका सम्मान करने की कोई ज़रूरत नहीं है (पार्क युन-सन, कैल्विन)। हालाँकि, हमें उनका सम्मान करना चाहिए जो परमेश्वर का भय मानते हैं। भजन संहिता 25:14 कहता है, "प्रभु उनसे अपने भेद बताता है जो उसका भय मानते हैं..."। जो लोग परमेश्वर की उपस्थिति में रहते हैं, वे उसके साथ गहरा संबंध रखते हैं, और हम उनका सम्मान किए बिना नहीं रह सकते। परमेश्वर उनके साथ है जो उसका भय मानते

हैं (103:13, 17)। इसलिए, हमें परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के लिए उन्हें तुच्छ समझना चाहिए जिन्हें परमेश्वर तुच्छ समझता है और उनका सम्मान करना चाहिए जो उसका भय मानते हैं।

आठवीं आज्ञा अपनी मन्नतों या वादों को पूरा करने का निर्देश है।

आज के पाठ में भजन संहिता 15:4 का बाद वाला हिस्सा देखिए: "...जो नुकसान होने पर भी अपनी शपथ निभाता है, और अपना इरादा नहीं बदलता।" परमेश्वर उनसे खुश होता है जो उसके सामने किए गए संकल्प को पूरा करते हैं (पार्क युन-सन)। यहाँ, "मन्नत" या "वचन" का मतलब परमेश्वर की सच्चाई और भलाई के बारे में किया गया वादा है। उपदेशक 5:4 में कहा गया है, “जब तुम परमेश्वर से कोई मन्नत मानो, तो उसे पूरा करने में देर न करो। उसे मूर्ख लोग पसंद नहीं हैं; अपनी मन्नत पूरी करो।” इसलिए, हमें बिना सोचे-समझे मन्नत नहीं माननी चाहिए। अगर हमने कोई मन्नत मानी है, तो हमें उसे ज़रूर पूरा करना चाहिए। ऐसा करने से हम परमेश्वर की उपस्थिति में रह सकते हैं।

नवीं आज्ञा यह निर्देश देती है कि ब्याज पर पैसे उधार न दिए जाएँ।

भजन संहिता 15:5 का पहला भाग देखिए: “जो ब्याज पर पैसे उधार नहीं देता...।” पुराने यहूदी कानून में, किसानों को ब्याज पर पैसे उधार देने पर रोक गरीबों के प्रति दया दिखाने का एक काम था (लैव्यव्यवस्था 25:35–38)। नतीजतन, हिब्रू कानून अपने ही साथी हिब्रू लोगों को दिए गए कर्ज पर ब्याज लेने की इजाज़त नहीं देता था; इसका मकसद गरीब लोगों की तकलीफों को कम करना था। जो लोग इस कानून को नहीं मानते, वे सिर्फ़ पैसे के लालच में ऐसा करते हैं (पार्क युन-सन)। इसलिए, परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के लिए, अपने पड़ोसियों के प्रति प्यार दिखाते समय हमें ब्याज पर पैसे उधार नहीं देने चाहिए।

आखिरी, यानी दसवीं आज्ञा यह निर्देश देती है कि रिश्वत के बदले बेगुनाह को नुकसान न पहुँचाया जाए।

भजन संहिता 15:5 का बीच का भाग देखिए: “...जो बेगुनाह के खिलाफ रिश्वत नहीं लेता...।” बाइबल हमें आज्ञा देती है: “रिश्वत न लो, क्योंकि रिश्वत देखने वालों को अंधा कर देती है और नेक लोगों की बातों को बिगाड़ देती

है" (निर्गमन 23:8)। परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के लिए, हमें रिश्वत लेकर बेगुनाह को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए।

भजन संहिता 15:5 का आखिरी भाग देखिए: "...जो ये काम करता है, वह कभी नहीं डगमगाएगा।" यह परमेश्वर का वादा है कि जो लोग ईमानदारी से इन आज्ञाओं का पालन करते हैं—जो उनकी उपस्थिति में रहने के लिए ज़रूरी हैं—वे कभी नहीं डगमगाएँगे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब इन आज्ञाओं का ईमानदारी से पालन करके अपने विश्वास के जीवन में मज़बूती और अडिगता से खड़े रहें, और इस तरह परमेश्वर की उपस्थिति में रहें।

प्रभु के अलावा, मेरे पास कोई भलाई नहीं है।

[भजन संहिता 16]

आप विश्वास के जीवन को क्या मानते हैं? जैसे-जैसे समय बीतता गया, मेरा यह मानना हो गया है कि विश्वास का जीवन असल में भजन संहिता 73:25 और आयत 28 के पहले हिस्से में लिखी बातों को स्वीकार करने के बारे में है: "स्वर्ग में मेरा कौन है, सिवाय तेरे? और पृथ्वी पर भी तेरे अलावा मेरी कोई इच्छा नहीं है... लेकिन मेरे लिए, परमेश्वर के करीब रहना ही अच्छा है।" विश्वास का वह जीवन जो प्रभु के करीब आता है—जो आशीषों का असली स्रोत है—सचमुच एक आशीषपूर्ण जीवन है। सभी आशीषें उसी से मिलती हैं। हमारे पापों का धुलना, आत्मिक ताज़गी मिलना और सब चीज़ों का बहाल होना—ये सभी आशीषें यीशु से मिलती हैं (प्रेरितों के काम 3:17–26)। जो विश्वासी प्रभु—जो सभी भलाई का स्रोत है—की आशीषों को गिनने की समझ रखता है, उसके दिल और होंठों से निकलने वाली बात वही होती है जो आज के वचन, भजन संहिता 16:2 में लिखी है: "...तेरे अलावा, मेरे पास कोई भलाई नहीं है।"

मैं उन पाँच खास आशीषों पर विचार करना चाहूँगा जिनका अनुभव भजनकार दाऊद ने किया, जैसा कि आज के वचन में बताया गया है।

पहली आशीष है प्रभु की सुरक्षा।

भजन संहिता 16:1 को देखें: "हे परमेश्वर, मेरी रक्षा कर, क्योंकि मैंने तुझमें शरण ली है।" जब भजनकार दाऊद पर खतरा आया, तो वह प्रभु की शरण में गया। यहाँ हम दो मुख्य तरह के खतरों की पहचान कर सकते हैं: पहला, मौत का खतरा (आयत 10), और दूसरा, मिली-जुली आस्था या गलत विश्वास का खतरा (आयत 4) (पार्क

युन-सन)। एक खतरा उसके शारीरिक जीवन से जुड़ा था, जबकि दूसरा उसके विश्वास से। दाऊद की तरह, हमें भी दो तरह के खतरों का सामना करना पड़ सकता है: शारीरिक और आत्मिक। फिर भी, दाऊद ने इन खतरों को प्रभु के करीब आने के मौकों में बदल दिया। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह समझता था कि प्रभु के करीब आना एक आशीष है (भजन संहिता 73:28)। आज के वचन, भजन संहिता 16:1 में, दाऊद का यह कहना कि उसने प्रभु में "शरण ली", विश्वास के उस नज़रिए को दिखाता है जिसमें परमेश्वर पर भरोसा और सुरक्षा का अहसास शामिल है (पार्क युन-सन)। शरीर और आत्मा दोनों को प्रभावित करने वाले खतरों के बीच, उसने पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा किया; नतीजतन, उसे प्रभु की सुरक्षा मिली।

दूसरी आशीष है प्रभु द्वारा हमारी विरासत की सुरक्षा।

भजन संहिता 16:5 का बाद का हिस्सा देखें: "...आप मेरे हिस्से को बनाए रखते हैं।" परमेश्वर न केवल हमारी विरासत हैं, बल्कि उस विरासत की रक्षा करने वाले भी हैं। जब किसी विश्वासी के पास विरासत होती है, तब भी उसकी रक्षा करना कोई आसान काम नहीं है। फिर भी, क्योंकि स्वयं प्रभु उसकी रक्षा करते हैं, इसलिए चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है (पार्क युन-सन)। परमेश्वर ही वास्तव में हमें एक सुंदर विरासत देते हैं। दाऊद के लिए एक "सीमा रेखा" तय की गई थी (पद 6); यह विरासत प्राप्त करते समय भूमि के सर्वेक्षण को दर्शाता है, जिसका अर्थ है कि परमेश्वर ने दाऊद को उसका हिस्सा दिया था। इसके अलावा, परमेश्वर केवल विरासत ही नहीं देते; वे उसकी रक्षा भी करते हैं। जिस तरह उन्होंने अब्राहम के लिए कनान की सुंदर भूमि तय की थी, उसी तरह वे हमें प्रतिज्ञा की हुई भूमि देते हैं और अपनी दी हुई विरासत की रक्षा करते हैं, जिससे हम एक आशीषपूर्ण जीवन जी पाते हैं। तीसरी आशीष है प्रभु की शिक्षा।

भजन संहिता 16:7 का पहला हिस्सा देखें: "मैं प्रभु की स्तुति करूँगा, जो मुझे सलाह देते हैं..." वास्तव में आशीषपूर्ण आत्मा वह है जो परमेश्वर का प्रकाशन प्राप्त करती है और उसके अनुसार जीती है। प्रेरित पतरस इसका एक उदाहरण हैं। उन्होंने यीशु से कहा, "आप मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र हैं," यह एक ऐसी बात थी जिसे स्वयं परमेश्वर ने उन पर प्रकट किया था (मत्ती 16:16–17)। नतीजतन, प्रभु ने पतरस से कहा, "धन्य हो तुम, शमौन योना के पुत्र" (पद 17)। आज के अंश, भजन संहिता 16 में, दाऊद ने प्रभु की स्तुति की क्योंकि उन्हें उनके प्रकाशन से मार्गदर्शन मिला और एक सुंदर विरासत प्राप्त हुई (पद 7)। उन्होंने यह भी कहा, "मेरा हृदय

मुझे रात में शिक्षा देता है" (पद 7)। उन्हें रात की शांति में प्रभु की शिक्षा प्राप्त करने में आनंद आता था (पार्क युन-सन)। जो आत्मा रात में हृदय पर अंकित सत्य के वचन से शिक्षा प्राप्त करती है, वह वास्तव में धन्य है।

चौथी आशीष है मेरे दाहिने हाथ पर प्रभु की उपस्थिति।

भजन संहिता 16:8 का मध्य भाग देखें: "...क्योंकि वे मेरे दाहिने हाथ पर हैं..." यह बात कि प्रभु दाऊद के दाहिने हाथ हैं, इसका मतलब है कि परमेश्वर उन्हें सबसे शक्तिशाली मदद दे रहे थे (पार्क युन-सन)। दाऊद, जिन्होंने प्रभु में शरण ली और खतरनाक स्थितियों में सुरक्षा पाई, उन्होंने परमेश्वर की शक्ति देने वाली ताकत का अनुभव किया। जब हम पूरी तरह से बेबस, निराश और थकान से चूर हो जाते हैं, तो प्रभु हमारे पास आते हैं और अपनी प्रतिज्ञा के वचन के ज़रिए हमारी कमज़ोरी के पलों में हमें बहुत ताकत देते हैं; जो लोग उनकी उपस्थिति का अनुभव करते हैं, उनके दिल और होंठों से स्वाभाविक रूप से यही बात निकलती है: "हे प्रभु, मेरी शक्ति, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ" (18:1)।

पाँचवीं आशीष यह है कि प्रभु जीवन का मार्ग दिखाते हैं।

भजन संहिता 16:11 के पहले हिस्से को देखें: "तू मुझे जीवन का मार्ग दिखाएगा..." दाऊद ने ये शब्द अनंत जीवन में प्रवेश करने की आशीष की आशा में कहे थे (पार्क युन-सन)। आज के पाठ का 10वाँ पद, जो यीशु के जी उठने की भविष्यवाणी करता है, प्रेरितों के काम 2:27–28 में उद्धृत किया गया है। दूसरे शब्दों में, मसीह के जी उठने में अपने विश्वास के ज़रिए, दाऊद ने अपने खुद के जी उठने पर विश्वास किया और उसकी आशा की। जिस प्रभु ने उन्हें अनंत जीवन का वह मार्ग दिखाया, वे ही दाऊद की "आशीष" थे, ठीक वैसे ही जैसे हम भी यह कहने के लिए प्रेरित होते हैं, "तेरे बिना मेरे पास कोई अच्छी चीज़ नहीं है" (भजन संहिता 16:2)।

तब हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि जो व्यक्ति प्रभु से ऐसी आशीषें पाता है—जो वास्तव में हमारी आशीष हैं—उसे कैसा व्यवहार करना चाहिए। हम ऐसे जीवन के चार पहलुओं पर विचार कर सकते हैं जो प्रभु को अपनी आशीष के रूप में अपनाता है।

पहला, संत आनंदित होता है।

भजन संहिता 16:3 को देखें: "पृथ्वी पर जो संत हैं, वे ही उत्तम लोग हैं, जिनमें मेरा सारा आनंद है।" एक संत दूसरे संतों में आनंद कैसे पाता है? ऐसा इसलिए है क्योंकि वे उनकी "उत्तमता" की ओर आकर्षित होते हैं (पार्क युन-सन)। यहाँ, "उत्तमता" का अर्थ महिमा या भव्यता है। यह उस विरासत की महिमा को दर्शाता है जो आने वाले जीवन में प्राप्त होगी, जो परमेश्वर की संतान होने के दर्जे के अनुरूप है (पार्क युन-सन)। उस महिमा का प्रकाश तब दिखाई देता है जब कोई संत इस दुनिया में परमेश्वर की इच्छा के अनुसार पवित्र जीवन जीता है। जब हम ऐसे संत को देखते हैं, तो हम उनकी प्रशंसा करते हुए सोचते हैं, "वाह! वे सचमुच परमेश्वर की संतान हैं," या "वे ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें परमेश्वर की संतान होने की महिमा मिलेगी" (पार्क युन-सन)। इसलिए, संत को आनंदित होना चाहिए।

दूसरी बात, मूर्तियों के प्रति नफ़रत होती है।

भजन संहिता 16:4 का पहला भाग देखें: "जो लोग किसी दूसरे देवता को भेंट चढ़ाते हैं, उनके दुख बढ़ जाते हैं..." दाऊद ने संकल्प लिया कि वह मूर्तियों को खून का पेय-बलिदान नहीं चढ़ाएगा और न ही उनके नामों का ज़िक्र अपने होंठों से करेगा। उसने मूर्तिपूजकों के साथ कोई संबंध न रखने का भी संकल्प लिया। जो संत प्रभु के साथ रहता है—जो सच्ची आशीष का स्रोत है—वह झूठी आशीषों का दावा करने वाली मूर्तियों की सेवा करके दोहरा जीवन कैसे जी सकता है? जो लोग प्रभु के साथ रहते हैं, जो हमारी आशीष है, उन्हें मूर्तियों से नफ़रत करनी चाहिए और परमेश्वर का विरोध करने वालों से घृणा करनी चाहिए।

तीसरी बात, व्यक्ति हमेशा प्रभु को अपनी उपस्थिति में रखता है।

भजन संहिता 16:8 का पहला भाग देखें: "मैं प्रभु को हमेशा अपने सामने रखता हूँ..." यह उन लोगों के लिए उपलब्ध अनुग्रह है जो परमेश्वर के वचन पर विश्वास करते हैं और प्रार्थना करने, पश्चाताप करने और आज्ञा मानने का प्रयास करते हैं (पार्क युन-सन)। हमें डगमगाना नहीं चाहिए, क्योंकि हम परमेश्वर के साथ चलते हैं (पद 8)। प्रभु के निकट आना एक आशीष है, और एक धन्य आत्मा जो धन्य प्रभु के साथ रहती है, वह उन्हें लगातार अपनी उपस्थिति में रखती है।

चौथी बात, आनंद और खुशी होती है। भजन संहिता 16:9 का पहला भाग देखें: "इसलिए मेरा हृदय प्रसन्न है और मेरी महिमा आनंदित होती है..." दाऊद स्वीकार करता है कि क्योंकि परमेश्वर उसके साथ है, इसलिए उसका हृदय प्रसन्न है, उसकी आत्मा आनंदित है, और उसका शरीर सुरक्षित है। विशेष रूप से, पद 11 बताता है कि जब दाऊद ने प्रभु की ओर देखा—जिसके साथ वह स्वर्ग में हमेशा रहेगा—तो उसने पवित्र आत्मा के माध्यम से स्वर्ग में मिलने वाले पूर्ण आनंद और अनंत सुख का पूर्व-अनुभव किया। हमें भी दाऊद की तरह प्रसन्न और आनंदित होना चाहिए। हमें आनंदित होना चाहिए क्योंकि प्रभु, जो सभी आशीषों का स्रोत है, ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से हमें अनंत राज्य की आशा दी है। यह सचमुच धन्य लोगों का जीवन है।

आज के वचन पर मनन करते हुए, मैंने अपने जीवन के बारे में सोचा। मैंने खुद से पूछा कि क्या मैं सचमुच अपने दिल की गहराई से यह मानता हूँ कि "प्रभु के अलावा, मेरे पास कोई अच्छी चीज़ नहीं है" (वचन 2)। प्रभु द्वारा दिए गए पाँच आशीषों पर विचार करते हुए—जो मेरे लिए सबसे बड़ा आशीष हैं—मैं यह माने बिना नहीं रह सकता कि मुझे वास्तव में अपने जीवन में ये आशीष मिल रहे हैं। मैंने प्रभु की सुरक्षा को खुद महसूस किया जब मुझे बुधवार की सुबह की प्रार्थना सभा में जाते समय टायर बदलना पड़ा; टायर पूरी तरह से फ्लैट हो गया था और फट गया था। मैं परमेश्वर की सुरक्षा के लिए बहुत आभारी था, खासकर यह याद करते हुए कि कैसे एक दोस्त ने पिछले हफ़्ते देखा था कि वही टायर पुराना था और कहीं-कहीं से उखड़ रहा था—एक ऐसी चेतावनी जिसके लिए मैं तब आभारी था। जब यह नया लगाया गया टायर फिर से फ्लैट हो गया, तो मैं हाईवे पर एक खतरनाक स्थिति का सामना कर सकता था, लेकिन परमेश्वर ने मुझे एक गंभीर दुर्घटना से बचाया, और इसके लिए मैं बहुत आभारी हूँ। जो प्रभु मेरी रक्षा करते हैं—वही मेरा आशीष हैं। मैं प्रभु के अलावा किसी और आशीष की इच्छा नहीं करता; मैं सबसे बड़े आशीष की तलाश करता हूँ। जब मैं ऐसा करता हूँ, तो बाकी सभी आशीष गौण हो जाते हैं। इसलिए, दाऊद की तरह, मैं सच्चे दिल से यह कहना चाहता हूँ, "आपके अलावा, मेरे पास कोई भलाई नहीं है।"

मेरी प्रार्थना पर कान लगा

[भजन संहिता 17]

"असल में, दिल की प्रार्थना एक ऐसी धारा की तरह है जो रोज़मर्रा की ज़िंदगी की कई लहरों के नीचे लगातार फुसफुसाती रहती है। यह हमें दुनिया में रहते हुए भी उससे अलग रहने और अकेलेपन के बीच से ही अपने परमेश्वर तक पहुँचने का मौका देती है।" (हेनरी नूवेन, *द लाइफ़ ऑफ़ प्रेयर*)

"रोज़मर्रा की ज़िंदगी की कई लहरें"... हम हर दिन अपनी ज़िंदगी में कई तरह की लहरों का सामना करते हैं। ये लहरें अलग-अलग तरह की और अलग-अलग आकार की होती हैं। इन लहरों के बीच, हमें सर्फ़िंग (लहरों पर सवारी करने) की कला में माहिर होना होगा। मेरा मानना है कि इस सर्फ़िंग कौशल का पहला तत्व "दिल की प्रार्थना" है। हेनरी नूवेन ने दिल की इस प्रार्थना को "एक ऐसी धारा" बताया है "जो रोज़मर्रा की ज़िंदगी की कई लहरों के नीचे लगातार फुसफुसाती रहती है।" यह लहरों के नीचे एक लगातार फुसफुसाहट है—ठीक वैसे ही जैसे सतह के बहुत नीचे शांत धाराएँ बहती हैं। मेरा मानना है कि ऐसी शांति उस आत्मा की स्थिति को दर्शाती है जो "अकेलेपन के बीच" से परमेश्वर तक पहुँचती है। अकेलेपन के बीच, हम परमेश्वर के पास ठीक वैसे ही जा सकते हैं जैसे हम हैं—आध्यात्मिक रूप से पूरी तरह खुले और सच्चे होकर। हम चुपचाप अपने दिल की बात कह सकते हैं। हन्ना की तरह, हम भी अपने दुख के साथ परमेश्वर के सामने आ सकते हैं और फूट-फूटकर रोते हुए प्रार्थना कर सकते हैं (1 शमूएल 1:10)। इस दौरान, हमें एक अद्भुत सच्चाई का पता चलता है: अकेलेपन के बीच, हमें एहसास होता है कि परमेश्वर की हमारे लिए चाहत, हमारी उनके लिए चाहत से कहीं ज़्यादा है। दूसरे शब्दों में, हमें एहसास होता है कि हमारी प्रार्थनाओं को सुनने की परमेश्वर की इच्छा, उनकी आवाज़ सुनने की हमारी इच्छा से कहीं ज़्यादा है। भजन संहिता 17 में, भजनकार दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता है—एक

ऐसी प्रार्थना जिस पर परमेश्वर कान लगाते हैं। यह एक ऐसी प्रार्थना थी जो “धोखे से रहित होंठों” से निकली थी (पद 1); दूसरे शब्दों में, दाऊद ने परमेश्वर से ईमानदारी से प्रार्थना की। दाऊद परमेश्वर से इतनी ईमानदारी से गुहार कैसे लगा पाया? इससे हम तीन सबक सीख सकते हैं।

पहला, “मेरे न्याय” की बात है।

भजन संहिता 17:2 देखें: “मेरा न्याय तेरी उपस्थिति से हो; तेरी आँखें निष्पक्षता से देखें।” दाऊद का यह न्याय प्रभु की उपस्थिति से ही निकला था। डेविड ने इस सही समझ के साथ भगवान से ईमानदारी से प्रार्थना की, तब भी जब वह "जानलेवा दुश्मनों" (पद 9, 11) से घिरा हुआ था—ऐसे दुश्मन जो बहुत अहंकारी थे (पद 10), चालाक साजिशें रचते थे, और जिनमें शेर जैसी ताकत के साथ-साथ जानवरों जैसी क्रूरता भी थी। उसकी सही समझ ने उसे इन जानलेवा दुश्मनों के भारी उत्पीड़न के बीच केवल भगवान, अपने उद्धारकर्ता की शरण लेने के लिए प्रेरित किया (पद 7)। डेविड की समझ में अन्यायपूर्ण स्थिति में भी न्याय करने वाले भगवान पर भरोसा करना शामिल था (पद 2)। उसने भगवान से अपील की, यह मानते हुए कि उद्धारकर्ता उसके और उसके जानलेवा दुश्मनों के बीच निष्पक्ष न्याय करेगा। इसके अलावा, उसने इस विश्वास के साथ प्रार्थना की कि भगवान उसकी विनती का उत्तर देंगे (पद 6)। इसके अलावा, डेविड ने इस भरोसे के साथ अपनी अपील की कि भगवान उसकी रक्षा करेंगे और उसे अपनी आँख की पुतली की तरह संभाल कर रखेंगे (पद 8)। इसी समझ के बीच डेविड ने भगवान से प्रार्थना की।

दूसरी बात, "मेरा संकल्प" है।

भजन संहिता 17:3 को देखें: "आपने मेरे दिल को परखा है और रात में मुझसे मिलने आए हैं; आपने मेरी जाँच की है और कोई दोष नहीं पाया है; मैंने संकल्प किया है कि मेरा मुँह कोई गलत बात नहीं कहेगा।" मूल हिब्रू से अनुवाद इस प्रकार है, "भले ही मेरे दिल में बुरे विचार उठें, मैं उन्हें दबा देता हूँ और उन्हें अपने होंठों से बाहर नहीं निकलने देता" (पार्क यूं-सन)। जब डेविड ने भगवान को पुकारा, तो उसने अपने मुँह से पाप न करने का पक्का संकल्प किया; फिर उसने प्रार्थना करते समय उस संकल्प को निभाया। हालाँकि उसे घेरने वाले अत्याचारी और जानलेवा दुश्मन अहंकारी बातें करते थे (पद 10), डेविड ने अपने होंठों से पाप न करने का

संकल्प लिया। उसका संकल्प इतना पक्का था कि प्रभु, जो दिल की जाँच करते हैं, को उसमें कोई दोष नहीं मिला (पद 3)। जबकि बुरे विचारों वाले लोगों के अक्सर बोलने में पाप करने की संभावना होती है, डेविड ने न तो अपने होंठों से और न ही अपने दिल में पाप किया। उसने इतने ईमानदार दिल और होंठों के साथ प्रभु से विनती की कि प्रभु को उनमें कोई कमी नहीं मिली। हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि ऐसे संकल्प को बनाए रखना—डेविड की तरह अडिग रहना—कितना मुश्किल रहा होगा, खासकर बहुत कठिन परिस्थितियों में। अहंकारी बातें करने वाले जानलेवा दुश्मनों से घिरे होने पर भी, डेविड ने उनकी घमंडी बातें सुनीं, फिर भी अपने होंठों से पाप न करने का संकल्प लिया, और उस संकल्प को अमल में लाया। वह आसानी से अपने विचारों में पाप कर सकता था; तो फिर, उसने उस मानसिक लड़ाई में बुरे विचारों को कैसे हराया और अपनी ज़बान से पाप करने से कैसे बचा? ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उसमें बुरे विचारों को दबाने की क्षमता थी। वह क्षमता परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की शक्ति है। चूँकि आत्म-संयम पवित्र आत्मा के फलों में से एक है (गलातियों 5:23), पवित्र आत्मा ने दाऊद को परमेश्वर के वचन के माध्यम से अपने विचारों पर आत्म-संयम रखने में सक्षम बनाया, जिससे बुरे विचारों पर अच्छे विचारों की जीत हुई (रोमियों 12:21)।

तीसरी बात है "मेरे कदम"।

भजन संहिता 17:5 को देखें: "मेरे कदम तेरे मार्गों पर दृढ़ता से टिके रहे; मेरे पैर नहीं डगमगाए।" जब लोग दुख, मुसीबत या संकट का सामना करते हैं, तो इस बात का बड़ा खतरा होता है कि उनके कदम भटक जाएँगे। आखिरकार, वे अपना विश्वास बनाए रखने में असफल हो सकते हैं और पाप में पड़ सकते हैं। इसलिए, पाप से बचने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन का सख्ती से पालन करना चाहिए (पार्क युन-सन)। संकट और मुसीबत के बीच, दाऊद परमेश्वर के वचन के और करीब आ गया। ऐसा करके, उसने प्रभु के होंठों के वचनों पर ध्यान देकर "खुद को विनाश करने वाले के मार्गों से दूर रखा" (पद 4)। उसने आत्म-संयम बरता, दुष्टता के मार्ग पर चलने से इनकार किया और इसके बजाय प्रभु के वचन के मार्ग पर चलना चुना। दाऊद वचन पर आधारित एक धर्मी और सीधे मार्ग पर चला।

दाऊद की सच्ची प्रार्थना पर परमेश्वर की क्या प्रतिक्रिया थी? हम दो बातों पर विचार कर सकते हैं।

पहली बात है "मेरा उद्धार"। भजन संहिता 17:13 को देखें: "हे प्रभु, उठ, उसका सामना कर, उसे गिरा दे; अपनी तलवार से मेरी आत्मा को दुष्टों से बचा।" जब हम घुटने टेककर परमेश्वर से सच्ची प्रार्थना करते हैं, तो वह हमारे भयंकर शत्रुओं का सामना करने और उन्हें गिराने के लिए उठता है। चाहे दुष्ट और अत्याचारी हमें कैसे भी घेर लें, परमेश्वर हमें उनसे बचाता है (पद 9)। इसके अलावा, वह हमारी रक्षा अपनी आँख की पुतली की तरह करता है और हमें अपने पंखों की छाया में छिपाता है (पद 8)।

दूसरी बात है "मेरी आशा"। भजन संहिता 17:15 को देखिए: "जहाँ तक मेरी बात है, मैं धार्मिकता में आपके दर्शन करूँगा; जब मैं आपके स्वरूप में जागूँगा, तो मुझे तृप्ति मिलेगी।" हम विश्वासियों की आशा केवल परमेश्वर में है (पार्क युन-सन)। हमें जो आशा दी गई है, वह आने वाले जीवन में प्रवेश करने और परमेश्वर को देखने की है। चाहे हमारी मृत्यु के समय हो या प्रभु के दूसरे आगमन के समय, हम प्रभु की धार्मिकता के द्वारा स्वर्ग में प्रवेश करेंगे और उनके स्वरूप में तृप्ति पाएँगे।

दाऊद की तरह, हमें "मेरे न्याय," "मेरे संकल्प," और "मेरे कदमों" के बारे में परमेश्वर से सच्ची प्रार्थना करनी चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर के रूप में "मेरे उद्धार" और "मेरी आशा" की आशीषों का आनंद ले सकते हैं। वास्तव में, हमने शायद अपने जीवन में इन आशीषों का अनुभव पहले ही कर लिया है। इसीलिए हम परमेश्वर के उद्धार के लिए उनकी स्तुति करते हैं और आशा में आनंदित होते हैं। चाहे रोज़मर्रा की ज़िंदगी की कोई भी लहरें हमारे जीवन से टकराएँ, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब परमेश्वर से सच्ची प्रार्थना करके उद्धार की कृपा का आनंद लें, और—अत्यधिक भावना और आशा से भरे हुए—उनकी स्तुति करें।

"हे प्रभु, मेरी शक्ति, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ।"

[भजन संहिता 18:1-19]

हम निराश क्यों हो जाते हैं? हम हताशा और मायूसी में क्यों डूब जाते हैं? हमारे जीवन के सफ़र में ऐसे पल आते हैं जब हम अपनी शक्ति खो देते हैं। ऐसे पलों में, हम हार मान लेने की स्थिति में पहुँच सकते हैं। हमें ऐसा लग सकता है कि सब कुछ छोड़ दें और हार मान लें। जब हम सोचते हैं कि ऐसा क्यों होता है, तो तीन शब्द मन में आते हैं: "हकीकत," "विचार," और "भावनाएँ।" दूसरे शब्दों में, जब मुश्किलें और परेशानियाँ हमारे जीवन में आती हैं, तो हम उस हकीकत का सामना कैसे करते हैं—जिसे हम अक्सर नकारना चाहते हैं—यह बहुत ज़रूरी है।

हमारी प्रतिक्रिया हमारे "विचारों" से शुरू होती है।

जब अचानक कोई मुश्किल या परेशानी सामने आती है, तो हमारे मन में चार सवाल उठते हैं। पहला है "क्यों?" यह हमारी स्वाभाविक आदत है कि हम पूछें, "मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ?" या "मैं ही क्यों?" असल में, यह "क्यों" वाला सवाल दिखाता है कि हम सामने मौजूद हकीकत को नकार रहे हैं। ऐसा नकारापन अक्सर खुद को पीड़ित मानने की भावना के रूप में सामने आता है, जो शिकायतों और बड़बड़ाहट के ज़रिए ज़ाहिर होता है। "क्यों?" के अलावा, एक और सवाल जो हम अक्सर पूछते हैं, वह है "कैसे?" हम यह समझने की कोशिश कर सकते हैं कि यह "कैसे" हुआ या कोई समाधान ढूँढ़ सकते हैं, फिर भी जीवन की मुश्किल हकीकतों में, हम अक्सर कोई जवाब नहीं ढूँढ़ पाते। इसके बाद, एक और सवाल जो ईसाई अक्सर पूछते हैं, वह है "क्या?" हम लगातार पूछते हैं, "परमेश्वर की इच्छा क्या है?" और अपनी हकीकत की मुश्किलों के बीच उसे समझने की कोशिश करते हैं। फिर भी, हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि हम जो जानते हैं, उससे कहीं ज़्यादा ऐसी बातें हैं जो हम नहीं जानते। हम परमेश्वर की पूरी इच्छा को कैसे समझ सकते हैं? अपनी हकीकत का

सामना करते हुए, हमें जो सवाल पूछना चाहिए, वह है, "कौन?" हमें पूछना चाहिए, "परमेश्वर कौन है?" जब हम ऐसा करते हैं, तो हम विश्वास के ज़रिए अपनी हकीकत को स्वीकार करते हैं, और परमेश्वर की सर्वोच्च सत्ता पर भरोसा करते हुए उसे मानते हैं। यह सोच हमें अपनी भावनाओं को सही तरीके से ज़ाहिर करने में मदद करती है; यह हमें भावनात्मक स्थिरता बनाए रखने और एक स्थिर सोच पर आधारित लगातार भावनाएँ व्यक्त करने में सक्षम बनाती है। भजन संहिता 18 में, भजनकार दाऊद ने जिन हालात का सामना किया, उनका वर्णन आयत 4 और 5 में किया गया है: "मृत्यु की रस्सियों ने मुझे जकड़ लिया; विनाश की बाढ़ ने मुझे डरा दिया। कब्र की रस्सियों ने मुझे घेर लिया; मौत के फंदों ने मेरा रास्ता रोक लिया।" उस दिन को याद करते हुए जब परमेश्वर ने उसे "उसके सभी दुश्मनों और शाऊल के हाथों से" बचाया था (जैसा कि भजन की शुरुआत में लिखा है), दाऊद ने अपने दिल की गहराई से यह बात कही: "हे प्रभु, मेरी ताकत, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ" (आयत 1)। यहाँ दाऊद ने "प्रेम" के लिए हिब्रू शब्द *राखम* (racham) का इस्तेमाल किया है। एक पादरी ने इसका मतलब इस तरह समझाया: "यह उस दया, करुणा और प्रेम को दिखाता है जो परमेश्वर इंसानों पर बरसाते हैं—एक ऐसा गहरा प्रेम कि जब परमेश्वर हमें देखते हैं, तो उनका दिल गहरी भावनाओं से भर जाता है और पिघल जाता है।" डॉ. पार्क युन-सन ने इस प्रेम को "इंसानी आत्मा में गहराई से बसा हुआ" बताया—एक ऐसा प्रेम जो सचमुच "दिल को पिघला देता है।" दाऊद ऐसा प्रेम इसलिए ज़ाहिर कर सका क्योंकि परमेश्वर उसकी ताकत बन गए थे। दाऊद ने कहा, "हे प्रभु, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ," क्योंकि उसने खुद परमेश्वर की शक्ति और प्रेम को महसूस किया था, जिन्होंने उसे अनगिनत मुश्किलों से बचाया था। बचाव के इन पुराने अनुभवों को याद करते हुए, दाऊद ने विश्वास के साथ अपनी मौजूदा सच्चाई को स्वीकार किया और परमेश्वर की स्तुति की (आयत 3)।

परमेश्वर ने दाऊद को उसके सभी दुश्मनों और शाऊल से क्यों बचाया? आज के हिस्से, भजन संहिता 18:1–19 से हम दो कारण जान सकते हैं।

पहला कारण परमेश्वर के स्वभाव में है—यानी, उनके दिव्य चरित्र में।

भजन संहिता 18:2 को देखिए: "प्रभु मेरी चट्टान, मेरा गढ़ और मेरा बचानेवाला है; मेरा परमेश्वर, मेरी ताकत, जिस पर मैं भरोसा करूँगा; मेरी ढाल और मेरे उद्धार का सींग, मेरा मज़बूत गढ़।" परमेश्वर ने दाऊद को इसलिए बचाया क्योंकि अपने स्वभाव से ही वे बचानेवाले हैं (पार्क युन-सन)। आज के पाठ के दूसरे पद में परमेश्वर के

स्वभाव को कई नामों से बताया गया है: "मेरी चट्टान" (ऊबड़-खाबड़ चट्टानों से घिरी जगह), "मेरा गढ़" (ऊँची पहाड़ी या पहाड़ की चोटी), "मेरा छुड़ाने वाला" (मुसीबत के समय बचाने वाला), "मेरा परमेश्वर," "मेरी शरण की चट्टान" (ऊबड़-खाबड़ पहाड़ की चोटी), "मेरी ढाल" (दुश्मन के तीरों को रोकने वाली), "मेरे उद्धार का सींग" (जीत दिलाने वाली शक्ति का प्रतीक), और "मेरा मज़बूत गढ़" (ऊबड़-खाबड़, ऊँची पहाड़ की चोटी पर बनी शरण की जगह)। संक्षेप में, परमेश्वर ने दाऊद को इसलिए बचाया क्योंकि वह दाऊद का रक्षक था। इसलिए, दाऊद ने परमेश्वर को अपना रक्षक और बचाने वाला मानकर प्रार्थना की।

दूसरा कारण जिसकी वजह से परमेश्वर ने दाऊद को उसके सभी दुश्मनों और शाऊल के हाथों से बचाया, वह यह है कि वह हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देने वाला परमेश्वर है।

भजन संहिता 18:6 को देखें: "अपनी मुसीबत में मैंने प्रभु को पुकारा; मैंने मदद के लिए अपने परमेश्वर से गुहार लगाई। उसने अपने मंदिर से मेरी आवाज़ सुनी; मेरी पुकार उसके कानों तक पहुँची।" जो परमेश्वर मेरी ताकत है, वही प्रभु मेरी प्रार्थनाओं को सुनता है। खासकर, वह प्रभु जो हमारी प्रार्थनाओं को सुनता और उनका जवाब देता है—जब हम बहुत ज़्यादा और खतरनाक मुसीबत में पुकारते हैं (पद 4-5: "मृत्यु," "बाढ़ का पानी," "पाताल") और अचानक आई उस मुसीबत के बीच मदद की गुहार लगाते हैं—वही हमारा परमेश्वर है।

तो फिर, परमेश्वर ने दाऊद को कैसे बचाया? आज भजन संहिता 18:7-15 को पढ़कर कोई भी हैरान हुए बिना नहीं रह सकता। कारण यह है कि इन पदों में परमेश्वर के बचाने के तरीके से उसकी शानदार महिमा का पता चलता है: "पृथ्वी काँप उठी और हिल गई, और पहाड़ों की नींव डगमगा गई" (पद 7); "उसकी नाक से धुआँ निकला; उसके मुँह से भस्म करने वाली आग निकली" (पद 8); उसने "आकाश को चीरकर नीचे उतरा" (पद 9); वह "करूबों पर सवार होकर उड़ा" (पद 10); उसने "अंधेरे को अपना पर्दा बनाया" (पद 11); "उसकी उपस्थिति की चमक से बादल आगे बढ़े, साथ में ओले और जलते कोयले गिरे" (पद 12); उन्होंने "बादलों की गड़गड़ाहट" और "बिजली" (पद 13-14) को प्रकट किया; और ऐसा करने पर, "समुद्र की तलहटी दिखाई देने लगी और पृथ्वी की नींव खुल गई" (पद 15)। ये सभी बातें यह बताती हैं कि जब परमेश्वर दाऊद को बचाने आए, तो वे इतनी महिमा के साथ आए कि स्वर्ग और पृथ्वी हिलने लगे (पार्क युन-सन)। यह परमेश्वर की उस महिमा का प्रदर्शन था जिसने स्वर्ग और पृथ्वी को हिला दिया—वही महिमा जिसके साथ वे दाऊद को बचाने आए थे।

डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "यह बात बहुत अद्भुत लगती है। परमेश्वर ने जो महिमा दिखाई वह बहुत विशाल थी, फिर भी उनके उद्धार का उद्देश्य एक अकेला व्यक्ति था जो बिल्कुल मामूली लग रहा था।" "क्या उन्होंने सिर्फ़ इस एक व्यक्ति को बचाने के लिए स्वर्ग और पृथ्वी को हिला दिया?" कोई भी एक व्यक्ति की प्रार्थना की महानता देखकर हैरान रह सकता है। यह देखना सचमुच अद्भुत है कि कैसे एक व्यक्ति की प्रार्थना स्वर्ग और पृथ्वी के हिलने के बीच उद्धार का एक शानदार काम शुरू कर सकती है।

मैंने एक व्यक्ति की प्रार्थना के स्वरूप पर चार तरह से विचार किया है:

पहला, प्रार्थना स्वर्ग के द्वार खोलती है।

भजन संहिता 18:16 पर विचार करें: "उन्होंने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया; उन्होंने मुझे गहरे पानी से बाहर निकाला।" जब दाऊद ने "गहरे पानी" से बाहर निकाले जाने की बात की, तो वे एक ऐसी स्थिति का वर्णन कर रहे थे जहाँ पृथ्वी के सभी रास्ते—उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम—ऐसी मुसीबत और संकट से बंद हो गए थे जिनसे बचना नामुमकिन था। फिर भी, जब उन्होंने प्रार्थना की, तो एक ऐसा दरवाज़ा खुला जिसे कोई इंसान बंद नहीं कर सकता था: स्वर्ग का द्वार। वहीं पर परमेश्वर का उद्धार का काम पूरा हुआ। इस्राएलियों के विपरीत, जो—हर तरफ़ से घिरे होने पर—सिर्फ़ पृथ्वी की ओर देखते थे और शिकायत करते हुए पूछते थे "क्यों?", मूसा ने स्वर्ग की ओर देखा और प्रार्थना की। हम जानते हैं कि परमेश्वर ने उनकी प्रार्थना सुनी, स्वर्ग के द्वार खोले और उद्धार की कृपा प्रदान की। हमारी प्रार्थनाएँ भी स्वर्ग के द्वार खोलती हैं।

दूसरा, प्रार्थना शक्तिशाली है।

भजन संहिता 18:17 पर विचार करें: "उन्होंने मुझे मेरे शक्तिशाली दुश्मन से, मेरे उन विरोधियों से बचाया, जो मुझसे बहुत ज़्यादा ताकतवर थे।" प्रार्थना हमें परमेश्वर—हमारे उद्धारकर्ता—की बचाने वाली शक्ति का अनुभव करने देती है, जो "ताकतवर दुश्मनों और हमसे नफ़रत करने वालों" से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली है। भले ही ये दुश्मन दाऊद से ज़्यादा ताकतवर थे, लेकिन प्रार्थना की वजह से वह परमेश्वर की सर्वशक्तिमान और बचाने वाली शक्ति का अनुभव कर पाया।

तीसरी बात, प्रार्थना परमेश्वर पर भरोसा करने का एक काम है।

भजन संहिता 18:18 को देखिए: "मुसीबत के दिन उन्होंने मेरा सामना किया, लेकिन प्रभु मेरा सहारा था।" हालाँकि दाऊद पर "मुसीबत का दिन" (वचन 18) आ पड़ा था, लेकिन प्रार्थना के ज़रिए वह मुसीबत का दिन परमेश्वर के उद्धार के दिन में बदल गया—एक ऐसा दिन जब वह उस पर निर्भर रह सकता था।

चौथी बात, प्रार्थना हमें यह समझने में मदद करती है कि परमेश्वर हमसे कितना खुश होता है।

भजन संहिता 18:19 को देखिए: "वह मुझे एक खुली जगह पर ले आया; उसने मुझे बचाया क्योंकि वह मुझसे खुश था।" प्रार्थना के ज़रिए, दाऊद ने न केवल परमेश्वर के उद्धार का अनुभव किया, बल्कि उसके मार्गदर्शन का भी अनुभव किया। लेकिन इससे भी ज़्यादा अद्‌भुत बात यह थी कि उसे यह एहसास हुआ कि परमेश्वर उससे कितना खुश था। इसलिए, हमारे दिलों से जो स्तुति निकलती है, वह यह है: "मैं प्रभु की खुशी बनना चाहता हूँ..."

आखिरकार, चाहे हम किसी भी मुश्किल सच्चाई का सामना करें, हमें विश्वास के साथ उसे स्वीकार करना चाहिए और प्रभु—जो हमारी ताकत है—की ओर देखना चाहिए और प्रार्थना के ज़रिए स्थिति को सुलझाना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर, हमारा रक्षा करने वाला उद्धारकर्ता, ऐसी महिमा के साथ आता है जो स्वर्ग और पृथ्वी को हिला देती है, और अपनी बचाने वाली महान शक्ति को प्रकट करता है। उस अनुभव में, हमें पता चलता है कि परमेश्वर हमसे कितना गहरा प्रेम करता है और हमसे कितना खुश होता है, जिससे हमारे पास उसकी स्तुति करने के अलावा कोई और चारा नहीं बचता। हालेलुयाह!

वह परमेश्वर जो मेरी धार्मिकता के अनुसार मुझे प्रतिफल देता है

[भजन संहिता 18:20-27]

हाल ही में, अपने बच्चों के साथ समय बिताते हुए, मुझे अपनी तीसरी संतान, ये-उन (Ye-eun) में अपनी ही एक झलक दिखाई दी। वह झलक एक ऐसे रवैये की है—जो लालच से पैदा हुआ है—और परमेश्वर से चिल्लाकर कहता है, "हे परमेश्वर, यह तो ठीक नहीं है!" एक बार मैंने अपने हर बच्चे को दस-दस चॉकलेट अंडे दिए। मेरा सबसे बड़ा बेटा, डिलन, और मेरी दूसरी संतान, ये-री (Ye-ri), अपने अंडों का मज़ा लेते हुए उन्हें धीरे-धीरे एक-एक करके खा रहे थे; लेकिन मेरी सबसे छोटी बेटी, ये-उन, ने अपनी मर्ज़ी से दसों अंडे खा लिए और फिर मेरे पास आकर और अंडे माँगने लगी। जब मैंने मना किया और बताया कि मैंने उसके बड़े भाई, बड़ी बहन और उसे बराबर-बराबर दस-दस अंडे दिए थे, तो उसका जवाब बस यही था, "यह तो ठीक नहीं है!" यह सिर्फ़ एक बार की बात नहीं थी; ये-उन अक्सर शिकायत करती रही है—खासकर जब वह अपनी तुलना अपनी बड़ी बहन से करती है—और पूछती है कि उसके साथ अन्याय क्यों हो रहा है। यह देखकर मुझे एहसास हुआ कि हालाँकि मैं और मेरे जीवनसाथी अपने तीनों बच्चों के साथ समान व्यवहार करने की कोशिश करते हैं, फिर भी ये-उन को यह अन्यायपूर्ण लगा। इस बात पर विचार करते हुए कि ये-उन ने मुझे अन्यायपूर्ण कहा, जबकि मैंने हर बच्चे को दस चॉकलेट का बराबर हिस्सा दिया था, मैं सोचने लगी कि क्या हम भी अपने स्वर्गीय पिता पर अन्यायपूर्ण होने का आरोप लगाते हैं। भले ही हम ज़ोर से न कहें, लेकिन हो सकता है कि हमारे दिलों में ऐसे विचार हों। ठीक वैसे ही जैसे ये-उन—लालच में आकर—ने स्थिति को अन्यायपूर्ण माना क्योंकि मैंने उसे और नहीं दिया, हम भी अक्सर और पाने की ज़िद भरी प्रार्थनाएँ करते हैं, जबकि हमारे पिता परमेश्वर अपने बच्चों के साथ पूरी तरह से निष्पक्ष व्यवहार करते हैं। जब पिता परमेश्वर हमारी माँगी हुई चीज़ नहीं देते, तो हम अक्सर शिकायत

करते हैं और उन पर अन्यायपूर्ण होने का आरोप लगाते हैं। जिन बच्चों में संतोष की कमी होती है—यानी परमेश्वर के वे लोग जो केवल पिता परमेश्वर से संतुष्ट नहीं होते—वे निश्चित रूप से परमेश्वर के न्याय का अनुभव करेंगे।

भजन संहिता 18:20 और 24 में, भजनकार दाऊद स्वीकार करते हैं कि हमारे परमेश्वर हमें हमारी धार्मिकता के अनुसार प्रतिफल देते हैं। एक न्यायपूर्ण परमेश्वर के रूप में, वे अच्छों को प्रतिफल देने और बुरों को दंड देने के बीच स्पष्ट अंतर करते हैं (पार्क युन-सन)। वह दया करने वालों पर दया और बेदाग लोगों के सामने अपनी पूर्णता प्रकट करते हैं (पद 25); वह पवित्र लोगों के सामने अपनी पवित्रता दिखाते हैं, लेकिन टेढ़े-मेढ़े (या बागी) लोगों को न्याय का फल देते हैं (पद 26)। वह दुखियारों—यानी नम्र लोगों—को उद्धार देते हैं, जबकि घमंडी लोगों को नीचे गिराते हैं (पद 27; पार्क युन-सन)।

हालाँकि, ऐसा लगता है कि हमारी सोच में गलतफहमी और संतुलन की कमी है। हम परमेश्वर के स्वभाव के उन पहलुओं—जैसे उनका प्रेम, अनुग्रह, दया और भलाई—पर आसानी से विश्वास करते हैं, उन पर निर्भर रहते हैं और उनका आनंद लेना चाहते हैं, फिर भी हम उनकी पवित्रता और न्याय पर ध्यान दिए बिना अपना जीवन जीते हैं। नतीजतन, जब हम इस पवित्र और न्यायपूर्ण परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में विफल रहते हैं, तब भी हम पाप को हल्के में लेते हैं—यह दावा करते हुए कि हम "बस परमेश्वर के अनुग्रह से अच्छा जीवन जी रहे हैं"—बिना सच्चे पश्चाताप के। बोनहोफ़र ने इसे ही "सस्ता अनुग्रह" (cheap grace) कहा था। हम बार-बार आज्ञा न मानने का पाप करते हैं और पाप की गंभीरता को भूल जाते हैं; हम परमेश्वर के अनुग्रह, प्रेम और विश्वासयोग्यता की व्याख्या केवल अपनी स्वार्थी इच्छाओं को पूरा करने के लिए करते हैं, और साथ ही खुद को यह सोचकर धोखा देते हैं कि हम विश्वास का सही जीवन जी रहे हैं। ऐसा करते हुए यह दावा करना कि हम परमेश्वर के अनुग्रह से जी रहे हैं, एक गंभीर गलती है। प्रेरित पौलुस कहते हैं कि जो लोग वास्तव में परमेश्वर के अनुग्रह को समझते हैं, वे उस अनुग्रह के कारण प्रभु के लिए किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में अधिक मेहनत करते हैं (1 कुरिन्थियों 15:10)। यदि हम वास्तव में परमेश्वर के अनुग्रह से जीने वाले विश्वासी हैं, तो हमें पवित्र और न्यायपूर्ण परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए पूरे दिल से खुद को समर्पित करना चाहिए।

आज के अंश में बताए गए दाऊद ने ठीक यही किया। वह परमेश्वर के मार्गों पर चलने के लिए समर्पित थे (पद 21)। वह ऐसे व्यक्ति नहीं थे जो अपने विश्वास के जीवन में केवल "सस्ते अनुग्रह" की बातें करते थे; बल्कि, उन्होंने परमेश्वर द्वारा अपने वचन के माध्यम से बताई गई आज्ञाओं का पालन करने में अपना पूरा दिल और आत्मा लगा दी। इस शास्त्र के माध्यम से, दाऊद हमें—जो वास्तव में धर्मी ठहराए गए हैं—एक धर्मी जीवन जीने की चुनौती देते हैं, जो हमारी ज़िम्मेदारी है। दाऊद ने एक ऐसा धर्मी जीवन जिया जिसमें "परमेश्वर की धार्मिकता" के साथ-साथ "मेरी धार्मिकता"—जो सिक्के का दूसरा पहलू है—का भी अनुसरण किया गया।

हम इस समय परमेश्वर के विरुद्ध वास्तव में एक गंभीर पाप कर रहे हैं। हालांकि यीशु के क्रूस की वजह से हमें धर्मी ठहराया गया है और इस दुनिया में रहते हुए परमेश्वर की महिमा के लिए एक धर्मी जीवन जीने के लिए बुलाया गया है, फिर भी हम असल में वैसा धर्मी जीवन नहीं जीते जिसकी ऐसी स्थिति मांग करती है, बल्कि हम सिर्फ़ धर्मी ठहराए गए लोगों के तौर पर अपनी स्थिति पर ज़ोर देते हैं। हम इस गलतफहमी में जीते हैं कि हम अपने विश्वास का पालन कर रहे हैं, जबकि हम पूरे दिल से धार्मिकता का फल लाने में खुद को नहीं लगाते। हम इस बात पर गर्व कर सकते हैं कि हमने कितने लंबे समय तक विश्वास का जीवन जिया है, फिर भी हम ऐसे मुकाम पर पहुँच गए हैं जहाँ हमारे जीवन में धार्मिकता का फल कहीं नहीं दिखता—बिल्कुल बिना फल वाले अंजीर के पेड़ की तरह। हम ऐसा विश्वास का जीवन जी रहे हैं जिसमें फल नहीं लगता; हम उस अंजीर के पेड़ की तरह हैं जो असल में अंजीर का पेड़ तो है, लेकिन उसमें असली फल नहीं है। यह एक असंतुलित विश्वास को दिखाता है। सिर्फ़ 'धर्मी ठहराए जाने'—यानी परमेश्वर की कृपा से धर्मी घोषित किए जाने—पर ध्यान देना और उसके बाद परमेश्वर के प्रति सच्चे आदर के साथ धर्मी जीवन न जीना, एक असंतुलित आध्यात्मिक जीवन है।

इसके उलट, दाऊद ने एक संतुलित आध्यात्मिक जीवन बनाए रखा; परमेश्वर की पवित्र कृपा में रहते हुए और उसका आदर करते हुए, उसने परमेश्वर के मार्गों पर चलने की पूरी कोशिश की। वह "अपने परमेश्वर से दुष्टतापूर्वक दूर नहीं हुआ" (पद 21)। हमें दाऊद के जीवन से ज़रूरी सबक सीखने चाहिए। इन सबकों को तीन बिंदुओं में बताया जा सकता है: पहला, हमें परमेश्वर के प्रकाशन (खुलासे) को महत्व देना चाहिए; दूसरा, हमें उस प्रकाशन के आधार पर विश्वास का सही इकरार करना चाहिए; और तीसरा, हमें ऐसा धर्मी जीवन जीना चाहिए जो उस इकरार के अनुरूप हो। हालाँकि, शैतान लगातार हम पर हमला कर रहा है। वह हमें परमेश्वर के वचन के ज़रिए उनके प्रकाशन को पाने से रोकने की कोशिश करता है। संक्षेप में, शैतान की कोशिशें "वचन

का अकाल" पैदा करने की होती हैं, ताकि परमेश्वर का प्रकाशन हम तक न पहुँच सके। आमोस 8:11 की भविष्यवाणी पर गौर करें: "प्रभु परमेश्वर कहता है: 'वे दिन आ रहे हैं जब मैं देश में अकाल भेजूँगा—भोजन का अकाल या पानी की प्यास नहीं, बल्कि प्रभु के वचन को सुनने का अकाल।'" हम आध्यात्मिक अकाल के दौर में आ गए हैं। परमेश्वर के वचन को सुनने के इस अकाल के बीच, अनगिनत आध्यात्मिक रूप से बहरे और अंधे लोग हर रविवार हमारे पूजा-स्थलों में बैठकर आराधना करते हैं। परमेश्वर के लोग हर हफ़्ते इकट्ठा होते हैं—उनकी आँखें तो हैं पर वे अपने जीवन में परमेश्वर की देखभाल, उसके काम और उसकी मौजूदगी को देख नहीं पाते, और उनके कान तो हैं पर वे परमेश्वर के उस वचन को सुन नहीं पाते जो बाढ़ की तरह बरस रहा है। यहाँ तक कि परमेश्वर के जो सेवक उसका वचन सुनाते हैं, वे भी परमेश्वर की ऐसी आवाज़ का प्रचार करते हैं जिसे उन्होंने खुद कभी नहीं सुना। जैसे बहरे लोग आपस में बातें करते हैं, वैसे ही हमारे पूजा-स्थलों में हर रविवार ऐसी बातें होती हैं जो परमेश्वर की नज़र में बेतुकी हैं। जैसा कि यशायाह अध्याय 1 में बताया गया है, ऐसी हरकतें जिनसे परमेश्वर नफ़रत करता है—जिन्हें वह अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता—वे हमारे पूजा-स्थलों में हर हफ़्ते की जा रही हैं। ऐसा लगता है कि शैतान अभी कामयाब हो रहा है। वह हमें सही शिक्षा—यानी सच्चाई—से दूर ले जाना चाहता है; वह चाहता है कि हम "ऐसे बहुत सारे शिक्षक इकट्ठा करें जो वही कहें जो हमारे खुजलाते कानों को सुनना अच्छा लगे" और हम "मनगढ़ंत कहानियों की ओर मुड़ जाएँ" (2 तीमुथियुस 4:3-4)। लगता है शैतान जीत रहा है; परमेश्वर के लोग उसके वचन से दूर होते जा रहे हैं। उसने उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने के मामले में बहुत लापरवाह बना दिया है। वह उन आज्ञाओं को मानने की ज़िम्मेदारी को तर्क देकर टालने में कामयाब रहा है, जिससे आज्ञा न मानने का पाप पंख जितना हल्का लगने लगा है। इसके अलावा, वह हमसे "सस्ती कृपा" (cheap grace) को सबसे ज़्यादा अहमियत दिलवाता है, जिससे हम परमेश्वर की पवित्रता और न्याय से दूर हो जाते हैं। नतीजतन, हम परमेश्वर की सच्चाई से भटक जाते हैं और बुराई में जीते हुए उससे बहुत दूर हो जाते हैं। लेकिन दाऊद ने ऐसा नहीं किया। शैतान के सभी हमलों और प्रलोभनों के बीच, वह परमेश्वर के वचन को सुनकर और मानकर जिया। वह वचन के सूखेपन में नहीं, बल्कि भरपूर फ़सल के मौसम में जिया। इसलिए, वह पूरे भरोसे के साथ कहता है कि परमेश्वर की "हर आज्ञा" उसके सामने थी और वह कभी भी परमेश्वर के नियमों से नहीं मुड़ा (भजन संहिता 18:22)।

दाऊद न केवल परमेश्वर के मार्गों पर चलने (पद 21) के लिए प्रतिबद्ध था, बल्कि बुराई से खुद को बचाने (पद 23) के लिए भी। उसने खुद को पाप से दूर रखा क्योंकि वह पूरे दिल से परमेश्वर का भय मानता था (पार्क युन-सन, डेलिट्ज़)। दाऊद सचमुच एक बुद्धिमान व्यक्ति था। जैसा कि नीतिवचन 16:6 कहता है कि बुद्धिमान लोग बुराई से दूर रहते हैं क्योंकि वे परमेश्वर का भय मानते हैं, दाऊद ठीक वैसा ही व्यक्ति था। रेवरेंड पार्क युन-सन ने कहा: "...वह लगातार अपने विद्रोही स्वभाव को एक खतरे के रूप में देखता था और खुद को अनुशासित करने और वश में करने का प्रयास करता था। एक बुद्धिमान व्यक्ति खुद को ही सबसे पहले खतरा मानता है और सतर्क रहता है" (पार्क युन-सन)। क्या हम वास्तव में खुद को मुख्य खतरा मानते हैं और उसी के अनुसार सतर्क रहते हैं? कोई भी यह सोचे बिना नहीं रह सकता कि कितने विश्वासी वास्तव में यह पहचानते हैं कि वे स्वयं खतरे का सबसे बड़ा स्रोत हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि बहुत कम लोग अपने विद्रोही स्वभाव को स्वीकार करते हैं और उससे सावधान रहते हैं। इसका एक कारण हमारे भीतर गहराई से बैठा यह विश्वास है कि हम जैसे हैं, वैसे ही "ठीक" हैं। यदि हम वास्तव में अपने विद्रोही स्वभाव को समझते, तो हमारे पास खुद से सावधान रहने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता। हम डर में जीते हैं क्योंकि हम अच्छी तरह जानते हैं कि ऐसी सतर्कता के बिना, हम निश्चित रूप से पवित्र और धर्मी परमेश्वर के विरुद्ध पाप करेंगे। हम पाप करने से डरते हैं, और इसके अलावा, हम परमेश्वर के पवित्र नाम को कलंकित करने से डरते हैं। हम परमेश्वर की महिमा को धूमिल करने से डरते हैं। इसलिए, हमें हमेशा जागते रहना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए। यह जानते हुए कि यदि हम शैतान को ज़रा सा भी मौका देते हैं, तो वह शेर की तरह झपटेगा और हमें पाप की ओर ले जाएगा, हमें कभी भी अपनी सतर्कता कम नहीं करनी चाहिए। इस सप्ताह, मैं अपनी कलीसिया के एक सदस्य के साथ एक नर्सिंग होम गया। हालाँकि मैं वहाँ रहने वाले व्यक्ति—एक डीकन—से पहले कभी नहीं मिला था, लेकिन प्रार्थना के बाद मैं उनसे मिलने गया क्योंकि वह मेरे साथ आए व्यक्ति के रिश्तेदार थे। वह वर्तमान में मधुमेह से पीड़ित हैं, एक ऐसी स्थिति जिसके कारण हृदय की सर्जरी और घुटने से एक पैर काटना पड़ा। फिर भी, उन्होंने स्वीकार किया कि वह अपने पैर के नुकसान को ईश्वरीय अनुशासन के रूप में देखते थे। जब उन्होंने कहा कि "प्रभु के अलावा कोई नहीं है," तो मैंने अपने दिल में परमेश्वर को चुपचाप धन्यवाद दिया। यह वास्तव में एक अनमोल स्वीकारोक्ति थी। एक पैर खोने के बाद भी परमेश्वर के उस अनुशासन को स्वीकार करना—जो उनके नेक प्रेम से उपजा है—और यह मानना कि प्रभु ही सबसे महत्वपूर्ण हैं—यह कितनी गहरी गवाही है। परमेश्वर नेक हैं। वे न्यायप्रिय परमेश्वर हैं। वे ऐसे परमेश्वर हैं जो हमारी नेकी के अनुसार हमें प्रतिफल देते हैं। जब हम परमेश्वर के मार्गों पर चलते हैं, पूरे दिल से उनका आदर करते हैं और पाप से खुद को बचाते हैं, तो परमेश्वर हमारी रक्षा करते हैं और

हमें उद्धार की कृपा प्रदान करते हैं (पार्क युन-सन)। परमेश्वर की कृपा से धर्मी ठहराए गए लोगों के रूप में, हमें नेक जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

जीत का राज़

[भजन संहिता 18:28–42]

कल रात 8:00 बजे, दक्षिण कोरिया की राष्ट्रीय टीम और L.A. गैलेक्सी के बीच एक सॉकर मैच हुआ। इस खेल को लेकर बहस का एक मुख्य मुद्दा यह था कि "थ्री-बैक" (तीन डिफेंडर वाला) या "फोर-बैक" (चार डिफेंडर वाला) डिफेंस सिस्टम अपनाया जाए। थ्री-बैक सिस्टम एक पारंपरिक तरीका है जिससे कोरियाई खिलाड़ी परिचित हैं, जबकि फोर-बैक सिस्टम को एक नई डिफेंस रणनीति माना जाता है। कहा जाता है कि पूर्व हेड कोच गुस हिडिंक ने भी 2002 वर्ल्ड कप के दौरान फोर-बैक सिस्टम का इस्तेमाल करने की कोशिश की थी, लेकिन वे वापस थ्री-बैक सिस्टम पर लौट आए क्योंकि टीम नए सिस्टम के साथ पूरी तरह तालमेल नहीं बिठा पाई थी। सेजोंग यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर ली योंग-सू, जो उस समय टेक्निकल कमेटी के चेयरमैन थे, ने कहा, "असल में, थ्री-बैक और फोर-बैक सिस्टम के बीच चुनाव का यह बंटवारा सही नहीं है। हालांकि कोच हिडिंक ने थ्री-बैक सिस्टम का इस्तेमाल किया था, लेकिन मुख्य बात पूरी टीम की 'ऑर्गेनिक मूवमेंट' (आपसी तालमेल के साथ सहज गति) थी। इसे हासिल करने के लिए रणनीति की गहरी समझ और ज़बरदस्त शारीरिक स्टैमिना की ज़रूरत थी" (स्रोत: इंटरनेट)। प्रोफेसर ली की बातों में मुझे जो बात सबसे ज़्यादा प्रभावित कर गई, वह थी "पूरी टीम की ऑर्गेनिक मूवमेंट" का विचार। चूँकि चर्च एक ही समय में एक "संगठन" (organization) और एक "जीवित इकाई" (organism) दोनों है, इसलिए मेरा मानना है कि हमारे चर्च के सदस्यों की ऑर्गेनिक सेवा भी उतनी ही ज़रूरी है। विश्वास का ऐसा ऑर्गेनिक जीवन जीने के लिए—ठीक वैसे ही जैसे सॉकर में "रणनीति की गहरी समझ" और "ज़बरदस्त स्टैमिना" की ज़रूरत होती है—हमें प्रभु की इच्छा की गहरी समझ होनी चाहिए, जो चर्च के मुखिया हैं, और हमें आध्यात्मिक शरीर के "ज़बरदस्त स्टैमिना" की भी ज़रूरत है। तभी हम अपनी आध्यात्मिक लड़ाइयों में जीत हासिल कर सकते हैं।

आज भजन संहिता 18:28–42 के अंश में, बाइबल बताती है कि जीत का राज़ पूरी तरह से परमेश्वर की शक्ति में है। परमेश्वर ने भजनकार दाऊद को लड़ाई के लिए शक्ति से लैस किया (पद 32, 39)। नतीजतन, दाऊद परमेश्वर की शक्ति से युद्ध में जीत का जीवन जी सका। तो, यहाँ जिस "परमेश्वर की शक्ति" की बात की गई है, वह क्या है? मैंने इस पर विचार किया है और पाँच पहलू पहचाने हैं।

पहला, परमेश्वर की शक्ति "ज्ञान की शक्ति" है।

भजन संहिता 18:31 को देखें: "क्योंकि यहोवा को छोड़कर परमेश्वर कौन है? और हमारे परमेश्वर को छोड़कर चट्टान कौन है?" दाऊद युद्ध में इसलिए जीत सका क्योंकि वह उस परमेश्वर को जानता था जो सच्चा परमेश्वर और चट्टान है। परमेश्वर कौन है, इसका ज्ञान ही हमारी ताकत है, और जो लोग परमेश्वर को जानते हैं, वे मजबूत होते हैं। इसलिए, हमें परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ना चाहिए। हालाँकि, शैतान उस ज्ञान को छीनकर हमें बर्बाद करने की कोशिश करता है (होशे 4:6)। इसलिए, हमें परमेश्वर को वैसा जानने की और अधिक कोशिश करनी चाहिए जैसे वह वास्तव में है (होशे 6:3)। भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह हमें "परमेश्वर को जानने पर गर्व करने" के लिए प्रोत्साहित करता है (यिर्मयाह 9:24)। हमें किस तरह के परमेश्वर पर गर्व करना चाहिए? हमें उस परमेश्वर पर गर्व करना चाहिए जो हमारे दीये को जलाता है (भजन संहिता 18:28)। "दीया जलाना" वाक्यांश समृद्धि का प्रतीक है; दाऊद—एक सैनिक—के संदर्भ में, इसका अर्थ है परमेश्वर की कृपा से युद्ध में मिली जीत (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, जिस परमेश्वर को जानने की हमें कोशिश करनी चाहिए, वह जीत का परमेश्वर है—वही जो हमें जीत दिलाता है। जब हम अपने दैनिक जीवन में जीत के इस परमेश्वर को जान लेते हैं, तो हम भी विजयी जीवन जी सकते हैं। दूसरा, परमेश्वर की शक्ति "वचन की शक्ति" है।

भजन संहिता 18:30 पर विचार करें: "परमेश्वर के विषय में, उसका मार्ग सिद्ध है; यहोवा का वचन परखा हुआ है; वह उन सभी के लिए ढाल है जो उस पर भरोसा करते हैं।" दाऊद ने परमेश्वर के वचन की शक्ति के द्वारा विजयी जीवन जिया। परमेश्वर का वचन हमारी ताकत है; उस वचन को ग्रहण करके, हम एक शक्तिशाली जीवन जी सकते हैं। प्रेरित पौलुस ने पवित्रशास्त्र के बारे में इस प्रकार कहा: "सारा पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया है, और शिक्षा, डांट, सुधार और धार्मिकता में निर्देश देने के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का मनुष्य सिद्ध हो सके और हर अच्छे काम के लिए पूरी तरह तैयार हो सके" (2 तीमुथियुस 3:16-

17)। हमें इस बात पर सोचना चाहिए कि क्या हम सचमुच बाइबल के शब्दों के ज़रिए अपने जीवन के लिए शिक्षा, सुधार और सही राह पा रहे हैं, और साथ ही नेकी की ट्रेनिंग भी ले रहे हैं। जब भी हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में बुरे विचार आते हैं या हम किसी लालच का शिकार होते हैं, तो हमें परमेश्वर के वचन को खुद को सिखाने और सुधारने देना चाहिए—ताकि हमारे गलत विचारों और तौर-तरीकों को ठीक किया जा सके—और हमें नेकी की ट्रेनिंग दी जा सके। ऐसा करने से हम खुद से, पाप से, दुनिया से और शैतान से होने वाली लड़ाइयों में जीत हासिल कर पाएँगे। परमेश्वर के उत्तम वचन के ज़रिए, दाऊद ने खुद को पाप से बचाया और अपने ही स्वभाव के खिलाफ़ लड़ाई में जीत हासिल की (भजन संहिता 18:23); दुश्मनों के सताए जाने के दौरान भी परमेश्वर के वचन की शक्ति ने उसकी रक्षा की (पद 30)। परमेश्वर ने दाऊद के पैरों को हिरण के पैरों जैसा बना दिया और उसे ऊँची जगहों पर खड़ा किया (पद 33)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर दाऊद को सुरक्षित जगह पर ले गया। सचमुच, परमेश्वर का वचन ही हमारी सुरक्षित पनाहगाह है। वही वचन हमें ऊँचाइयों पर ले जाएगा।

तीसरी बात, परमेश्वर की शक्ति "निर्भरता की शक्ति" है।

भजन संहिता 18:29 को देखिए: "क्योंकि तेरी मदद से मैं सेना पर धावा बोल सकता हूँ, अपने परमेश्वर की मदद से मैं दीवार फाँद सकता हूँ।" आम समझ यह कहती है कि बच्चा अपने माता-पिता पर निर्भर रहता है लेकिन बड़े होने पर धीरे-धीरे आज़ाद हो जाता है; हालाँकि, हमारे विश्वास का जीवन इसके उलट काम करता है। यीशु पर विश्वास करने से पहले, हम आज़ाद ज़िंदगी जीते थे, लेकिन विश्वास में आने के बाद, हम धीरे-धीरे सिर्फ़ प्रभु पर निर्भर रहकर जीना सीखते हैं—यही हमारे विश्वास के जीवन का सार है। जैसे-जैसे समय बीतता है, विश्वास का जीवन ऐसा हो जाता है जहाँ हमें एहसास होता है कि प्रभु ही एकमात्र सहारा हैं और हम उस एहसास को असल ज़िंदगी में अपनाते हैं। इसके अलावा, जो लोग प्रभु पर निर्भर रहते हैं, वे मज़बूत होते हैं। जब हम पूरी तरह से अपनी कमज़ोरी को मान लेते हैं, तो हमारी ताकत हमारे अंदर काम कर रही परमेश्वर की महान शक्ति के रूप में दिखाई देती है। दाऊद इसका एक बेहतरीन उदाहरण है। परमेश्वर के पवित्र नाम पर भरोसा करके, दाऊद गोलियत की ओर ऐसे बढ़ा जैसे कोई "सेना पर धावा बोलता है" (2 शमूएल 22:30)। हमारा नज़रिया भी बिल्कुल ऐसा ही होना चाहिए। हमें ऐसे लोग बनना चाहिए जो पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर रहकर दुनिया का सामना करने के लिए आगे बढ़ते हैं। जब हम हिम्मत और साहस के साथ आगे बढ़ते हैं और परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, तो वह हमारे लिए रास्ता चौड़ा कर देता है और हमें गिरने से बचाता है (भजन संहिता 18:36)।

चौथी बात, परमेश्वर की शक्ति "हुनर की शक्ति" है।

भजन संहिता 18:34 को देखिए: "वह मेरे हाथों को युद्ध के लिए तैयार करता है, ताकि मेरी भुजाएँ पीतल का धनुष भी मोड़ सकें।" यह वचन दिखाता है कि परमेश्वर ने दाऊद के हाथों को लड़ाई के लिए तैयार किया और उसकी भुजाओं को पीतल का धनुष खींचने के काबिल बनाया। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने दाऊद—जो एक सैनिक था—को ज़रूरी हुनर दिए। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा, "परमेश्वर उन लोगों को उनके काम के हिसाब से हुनर देता है जो उस पर भरोसा करते हैं; जैसे, वह व्यापारी को व्यापार का हुनर और लेखक को साहित्य का हुनर देता है।" उपदेशक 10:10 में लिखा है कि "बुद्धि [हुनर] सफलता लाती है।" युद्ध में जीत के लिए हुनर ज़रूरी है, और प्रभु हमें भी वह हुनर देता है। निर्गमन 36:1 में लिखा है कि अपने पवित्र स्थान को बनाने के लिए, परमेश्वर ने कुशल लोगों को बुद्धि और समझ दी, ताकि वे ज़रूरी काम कर सकें। जब परमेश्वर अपने कामों के लिए लोगों को चुनता है, तो वह सिर्फ़ उन्हें चुनता ही नहीं; बल्कि उन्हें उस काम के लिए ज़रूरी बुद्धि—या हुनर—भी देता है। हमारे पास कबूतरों जैसी मासूमियत और साथ ही साँपों जैसी समझदारी होनी चाहिए (मत्ती 10:16)। आध्यात्मिक युद्ध लड़ने और जीतने के लिए, हमें लड़ने के हुनर की ज़रूरत है। हमें पता होना चाहिए कि "मुक्ति की ढाल" (भजन संहिता 18:35) और "आत्मा की तलवार" (इफिसियों 6:17) का इस्तेमाल कैसे करना है। अगर कोई आत्मा की तलवार चलाना नहीं जानता, तो वह किसी काम की नहीं है। परमेश्वर हमें हुनर और शक्ति दोनों देता है, और उस शक्ति के ज़रिए हम जीत भरा जीवन जी सकते हैं।

आखिर में, पाँचवीं बात यह है कि परमेश्वर की शक्ति "चरित्र की शक्ति" है। भजन संहिता 18:35 को देखिए: "तूने मुझे अपनी मुक्ति की ढाल भी दी है; तेरे दाहिने हाथ ने मुझे संभाले रखा है, और तेरी कोमलता ने मुझे महान बनाया है।" "आपकी कोमलता" वाक्यांश इस बात की ओर इशारा करता है कि दाऊद इसलिए महान बना क्योंकि प्रभु ने खुद को विनम्र बनाकर दाऊद की—जो एक कमज़ोर इंसान था—कृपापूर्वक मदद की (पार्क युन-सन)। हम ईसाइयों के लिए जीत का राज़ ऐसे स्वभाव में है जो यीशु जैसा हो। खासकर, यीशु की कोमलता ही हमें इस दुनिया में जीत हासिल करने में मदद करती है।

परमेश्वर की शक्ति के इन पाँच रूपों के साथ, हमें खुद से, पाप से, दुनिया से, शैतान से और मौत से लड़ना है और उन पर जीत हासिल करनी है। सच तो यह है कि हम पहले से ही विजेता हैं और आगे भी विजेता बने रहेंगे। आइए हम सब ऐसे विजेता बनें जो जीत का झंडा लहराते हुए और जीत के गीत गाते हुए स्वर्गीय राज्य की ओर बढ़ें। जीत!

वह प्रभु जो मुझे सबसे ऊँचा उठाता है

[भजन संहिता 18:43–50]

इस दुनिया में रहते हुए, हमें कई तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। यह दुनिया ऐसी स्थितियों से भरी है जिन्हें सहना सचमुच मुश्किल होता है, और जो दिल में आँसू और दुख लाती हैं। ऐसी चीज़ों से परेशान होकर, बहुत से लोग निराशा में डूब जाते हैं और ज़िंदगी से हार मान लेते हैं—और उनमें ईसाई भी शामिल हैं। तो फिर, हमें इन मुश्किलों को कैसे देखना चाहिए? ब्रिटिश रोमांटिक कवि बायरन ने एक बार कहा था, "मुसीबत सच्चाई का पहला रास्ता है।" सच्चाई की ओर ले जाने वाला यह "पहला रास्ता"... फिर भी, यह एक ऐसा रास्ता है जो हमें पसंद नहीं आता। हम इससे बचने की कोशिश करते हैं। ऊँची लहरों का सामना करते हुए कोई भी अपनी मर्ज़ी से गहरे समुद्र में नहीं जाता; इसका कारण यह है कि हम नीचे की अथाह गहराई का अंदाज़ा नहीं लगा सकते (भजन 408)। एक ब्रिटिश कहावत है, "शांत समुद्र ने कभी कुशल नाविक नहीं बनाया।" बिना मुश्किलों का सामना किए कोई भी सफलता हासिल नहीं करता। इसी तरह, हम विश्वासी ऐसी दुनिया में परिपक्व शिष्य नहीं बन सकते जो शांत हो और जिसमें कोई मुश्किल न हो। इसलिए, हमें मुसीबत के इस "पहले रास्ते" से मुँह नहीं मोड़ना चाहिए; बल्कि, हमें इसे शुक्रगुज़ार दिल और विश्वास के साथ तय करना चाहिए।

आज के भजन संहिता 18:43–50 के अंश में, हम उस प्रभु से मिलते हैं जो हमें सबसे ऊँचा उठाता है। खासकर, आयत 43 और 48 में ये शब्द हैं: "तूने मुझे जातियों का प्रधान बनाया है" और "तूने मुझे उनके ऊपर ऊँचा उठाया है जो मेरे विरुद्ध उठते हैं।" हमारा परमेश्वर वह प्रभु है जो हमें इस दुनिया में प्रधान बनाता है। आज के अंश की आयत 46 का पहला भाग बताता है कि वह ऐसा कैसे करता है: "यहोवा जीवित है..."। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर हमारे जीवन में अपनी जीवित उपस्थिति दिखाकर हमें जातियों का प्रधान बनाता है। मैं उन तीन खास तरीकों पर विचार करना चाहूँगा जिनसे हमारा प्रभु हमारे जीवन में अपनी जीवित उपस्थिति प्रकट करता है।

पहला, प्रभु मुझे छुटकारा देकर जातियों का प्रधान बनाता है। भजन संहिता 18 की आयत 43 और 48 को देखें: "तू ने मुझे लोगों के झगड़ों से छुड़ाया है..." (आयत 43), और "तू ने मुझे मेरे शत्रुओं से बचाया है; तू ने मुझे मेरे विरोधियों से ऊँचा किया है; तू ने मुझे हिंसक मनुष्य से छुड़ाया है" (आयत 48)। प्रभु ने भजनकार दाऊद को किन चीज़ों से छुड़ाया? परमेश्वर ने दाऊद को "लोगों के झगड़ों" (आयत 43), "मेरे शत्रुओं" (आयत 48), और "हिंसक मनुष्य" (आयत 48) से बचाकर अपनी जीवित उपस्थिति का प्रमाण दिया। दूसरे शब्दों में, प्रभु—जो उद्धार का सींग है (आयत 2)—ने दाऊद को उद्धार की शक्ति देकर यह प्रकट किया कि वह जीवित है। इसलिए, परमेश्वर ने दाऊद को जातियों का प्रधान बनाया (आयत 43)।

जिस प्रकार मिस्र से निकलने के समय इस्राएलियों ने खुद को लाल सागर के सामने चारों ओर से घिरा हुआ पाया, वैसे ही हम भी खुद को बचाने में अपनी पूरी असमर्थता को पूरी तरह से महसूस करते और स्वीकार करते हैं। तभी हम सच्चे मन से स्वीकार करते हैं कि केवल यीशु ही हमारा उद्धारकर्ता है। हम परमेश्वर की बचाने वाली शक्ति का अनुभव तभी करते हैं जब हम खुद को बचाने में अपनी पूरी अक्षमता को स्वीकार करते हैं। फिर भी, अक्सर हम चुप रहने का पाप करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एलिय्याह के दिनों में माउंट कार्मेल पर इस्राएली करते थे। बाल और अशेरह के नबियों और परमेश्वर के नबी एलिय्याह के बीच हुई टक्कर के दौरान, एलिय्याह ने वहाँ मौजूद इस्राएलियों से पूछा, "तुम कब तक दो विचारों के बीच डगमगाते रहोगे? यदि प्रभु ही परमेश्वर है, तो उसके पीछे हो लो; लेकिन यदि बाल है, तो उसके पीछे हो लो," और लोगों ने उसे एक शब्द भी उत्तर नहीं दिया (1 राजा 18:21)। इसी तरह, हम अक्सर परमेश्वर—अपने उद्धारकर्ता—का अनुसरण करने में विफल रहते हैं और इसके बजाय कायरतापूर्ण चुप्पी साधे रखना चुनते हैं। जो विश्वासी यह स्वीकार करता है कि केवल प्रभु ही उद्धारकर्ता है जो उन्हें बचाता है, वह जीवित परमेश्वर की सच्चाई की गवाही देता है। हालाँकि दुनिया के लोग "चिल्ला सकते हैं, लेकिन बचाने वाला कोई नहीं है" (भजन संहिता 18:41), हमारा प्रभु अपनी महिमा प्रकट करता है और जब हम उसे पुकारते हैं तो हमें बचाने आता है, जिससे दुनिया को यह पता चलता है कि वह सचमुच हमारा उद्धारकर्ता है। परिणामस्वरूप, परमेश्वर हमें जातियों के बीच प्रधान बनाता है। दूसरी बात, प्रभु मुझे समृद्ध बनाकर दुनिया में सबसे आगे रखते हैं।

भजनकार दाऊद ने अपने दुश्मनों द्वारा किए गए अत्याचार और मुश्किलों के बीच भी परमेश्वर की भरपूर कृपा का अनुभव किया। दाऊद पर अपनी भरपूर कृपा बरसाकर, परमेश्वर ने उसे राष्ट्रों के बीच एक नेता के रूप में स्थापित किया।

परमेश्वर अपनी भरपूर कृपा के साथ हमारे साथ हैं, और ज़रूरत के समय भी अपनी जीवित उपस्थिति का एहसास कराते हैं। फिर भी, अक्सर परमेश्वर की भरपूर कृपा को महसूस करने के बजाय, हम केवल अपनी कमियों पर ध्यान देते हैं। इसका कारण हमारा अपना "आत्म-निर्भर" होना है। जो लोग सचमुच परमेश्वर की भरपूर कृपा के लिए तरसते हैं—यहाँ तक कि उस स्थिति में भी जिसे दुनिया "कमी" कहती है—वे प्रभु को पुकारते हैं; इसके ज़रिए, वे अपनी आत्मा के कानों से प्रभु की आवाज़ सुनते हैं जो कहती है, "मेरी कृपा तुम्हारे लिए काफ़ी है" (2 कुरिन्थियों 12:9)। ऐसा व्यक्ति आत्म-निर्भर नहीं बल्कि परमेश्वर पर निर्भर होता है। और जो परमेश्वर पर निर्भर होता है, वह स्वीकार करता है, "हमारी सामर्थ्य परमेश्वर से है" (3:5)।

आखिरकार, तीसरी बात: प्रभु मुझे मज़बूत (शक्तिशाली) बनाकर दुनिया में सबसे आगे रखते हैं।

भजन संहिता 18:45 को देखें: "परदेशी हिम्मत हार जाते हैं और अपने मज़बूत गढ़ों से कांपते हुए बाहर आते हैं।" हालाँकि दाऊद के दुश्मन जब उस पर हमला करते थे तो वे बहुत शक्तिशाली लगते थे, लेकिन आखिरकार परमेश्वर ने अपने सेवक दाऊद को शक्ति दी और उसके साथ खड़े रहे। इसलिए, क्योंकि परमेश्वर ने उसे मज़बूत किया (पद 32, 39), उन्होंने दाऊद के दुश्मनों को कमज़ोर कर दिया और उन्हें दाऊद से डरने पर मजबूर कर दिया।

हमारे परमेश्वर सर्वशक्तिमान हैं जो आज भी जीवित हैं—न केवल अपने सेवक दाऊद के लिए बल्कि हमारे लिए भी—और हमें अपनी शक्ति से मज़बूत करते हैं (पद 32, 39)। जब हम दुश्मनों के कारण कमज़ोरी की स्थिति में होते हैं, तो परमेश्वर हमारे साथ होते हैं और हमें शक्ति देते हैं। हमारी कमज़ोरी के ज़रिए अपनी शक्ति प्रकट करके, वे हमारे दुश्मनों के मज़बूत गढ़ों को तोड़ देते हैं और उन्हें हमसे डरने पर मजबूर करते हैं। आखिरकार, हमारे परमेश्वर ही हमें मज़बूत करते हैं और हमें जीत दिलाते हैं; वे ही परमेश्वर हैं जो हमें राष्ट्रों के बीच सबसे आगे बढ़ाते हैं।

तो फिर, परमेश्वर की इस कृपा के प्रति हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए, जो हमें दुनिया में सबसे आगे रखते हैं?

सबसे पहले, हमें परमेश्वर की स्तुति और महिमा करनी चाहिए। भजन संहिता 18:46 को देखिए: "प्रभु जीवित है! मेरी चट्टान की स्तुति हो! मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर की महिमा हो!" जिस परमेश्वर ने उसे मज़बूत किया, उसका अनुभव करने के बाद दाऊद ने उसकी स्तुति की और उसके पवित्र नाम की महिमा की। परमेश्वर सर्वशक्तिमान और धर्मी है जो दुनिया के गढ़ों को गिरा देता है; वही हमें मज़बूती से स्थापित करता है। हमारी चट्टान के रूप में, वह हमें एक ठोस नींव पर सुरक्षित रूप से खड़ा करता है और अपनी महिमा प्रकट करता है। हमें इसी परमेश्वर पर गर्व करना चाहिए और उसकी महिमा करनी चाहिए। दूसरी बात, हमें दुनिया की जातियों के बीच प्रभु का धन्यवाद करना चाहिए।

भजन संहिता 18:49 को देखिए: "इसलिए हे प्रभु, मैं जातियों के बीच तेरा धन्यवाद करूँगा और तेरे नाम की स्तुति के गीत गाऊँगा।" दाऊद ने परमेश्वर का धन्यवाद तब किया—या करते हुए किया—जब उसने परमेश्वर के उस काम का अनुभव किया जिसके द्वारा परमेश्वर ने उसे अपनी भरपूर आशीषों से जातियों के बीच सबसे ऊँचा स्थान दिया। हमें भी परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया था। हमें अपनी गरीबी और अपनी कमज़ोरियों के लिए भी परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए। कारण यह है कि इनके माध्यम से हम परमेश्वर की भरपूरता और उसकी शक्ति का अनुभव करते हैं। आइए हम परमेश्वर का धन्यवाद करें।

अंत में, तीसरी बात, हमें उद्धार और विजय के भरोसे के साथ प्रभु के दूसरे आगमन की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

भजन संहिता 18:50 को देखिए: "वह अपने राजा को महान उद्धार देता है, और अपने अभिषिक्त जन—दाऊद और उसकी संतान—पर सदा दया करता है।" यहाँ, "उसका राजा" और "उसका अभिषिक्त जन" यीशु मसीह की ओर संकेत करते हैं, जो दाऊद के वंशज हैं। दाऊद ने मसीहा—ख्रीस्त—के पहले आगमन की लालसा की और प्रतीक्षा की; वह उद्धारकर्ता जो सर्वशक्तिमान है और अनुग्रह व प्रेम से भरपूर है। दाऊद की तरह, हमें भी यीशु की वापसी की लालसा करनी चाहिए और प्रतीक्षा करनी चाहिए, जो पहली बार हमें उद्धार का अनुग्रह देने आए थे। उस प्रतीक्षा में, हमें उद्धार और विजय, दोनों के भरोसे को मज़बूती से थामे रखना चाहिए।

आइए ब्रिटिश रोमांटिक कवि बायरन के शब्दों पर एक बार फिर विचार करें: “मुसीबत सच्चाई का पहला रास्ता है।” भले ही कोई और इस श्रेष्ठता के रास्ते पर चलना न चाहे, हमें, परमेश्वर के संतों के रूप में, उसके बचाने वाले अनुग्रह, भरपूर कृपा और शक्ति पर भरोसा करते हुए वफ़ादारी से इस रास्ते पर चलना चाहिए। इस दुनिया में रहते हुए, हमें उस जीवित परमेश्वर की महिमा और धन्यवाद करना चाहिए और अपने जीवन में उसे ऊँचा स्थान देना चाहिए—उसकी कृपा को स्वीकार करते हुए जो हमें बचाती है, समृद्ध करती है और मज़बूत बनाती है, और हमें दुनिया में सबसे आगे रखती है—और हमें उद्धार और जीत के भरोसे के साथ प्रभु की वापसी का बेसब्री से इंतज़ार करना चाहिए।

परमेश्वर का वचन

[भजन संहिता 19]

परमेश्वर के लोगों के तौर पर, हमें परमेश्वर के करीब आना चाहिए और दुनिया से दूरी बनानी चाहिए। हम मसीहियों को परमेश्वर के वचन को मजबूती से थामे रखना चाहिए और दुनिया के साथ नहीं मिलना चाहिए। इसका एक कारण यह है कि जब हम दुनिया के साथ मिलकर रहते हैं, तो हम परमेश्वर के वचन से भटक जाते हैं, दाएं या बाएं मुड़ जाते हैं, और परमेश्वर के विरुद्ध पाप करते हैं। सचमुच डरावनी बात यह है कि जब हम परमेश्वर के वचन से दूर होते हैं, तो हम पाप को पाप के रूप में पहचान नहीं पाते। नतीजतन, हम बार-बार जानबूझकर पाप करने लगते हैं। आदतवश पाप में फँसकर, हम पाते हैं कि परमेश्वर के वचन के बजाय पाप हमें चला रहा है। चिंता की बात यह है कि यह आध्यात्मिक गिरावट कितनी तेज़ी से होती है। ऐसी तेज़ी से आध्यात्मिक गिरावट का कारण आखिरकार परमेश्वर के वचन से जल्दी मुँह मोड़ लेना है। व्यवस्थाविवरण 17:19 में कहा गया है कि इज़राइल का राजा बनने के लिए, उसे परमेश्वर का वचन अपने पास रखना चाहिए और जीवन भर उसे पढ़ना चाहिए, परमेश्वर का भय मानना सीखना चाहिए और कानून की सभी बातों का ध्यानपूर्वक पालन करना चाहिए। हम एक शाही याजक-समाज हैं; इसलिए, हमें भी परमेश्वर के वचन को अपने करीब रखना चाहिए, जीवन भर उसे पढ़ना चाहिए और ईमानदारी से उसे अमल में लाना चाहिए।

भजन संहिता 19 के आज के अंश में—खासकर पद 7 से शुरू होकर—भजनकार दाऊद "प्रभु की व्यवस्था" के बारे में बात करता है। इस प्रकार, "परमेश्वर का वचन" शीर्षक के तहत, मैं इस बात पर विचार करना चाहूँगा कि परमेश्वर का वचन क्या है और हमें उस पर कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए।

परमेश्वर का वचन क्या है? दाऊद हमें इसके बारे में चार तरह से सिखाता है।

पहला, परमेश्वर का वचन परिपूर्ण है और आत्मा को पुनर्जीवित करता है। भजन संहिता 19:7 के पहले हिस्से को देखें: "प्रभु की व्यवस्था परिपूर्ण है, आत्मा को पुनर्जीवित करती है..." यहाँ, "परिपूर्ण" शब्द परमेश्वर के वचन में निहित पूर्णता को दर्शाता है, जो इसके अलौकिक स्वभाव की ओर इशारा करता है (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के वचन में एक मरती हुई आत्मा को फिर से जन्म देने की अलौकिक शक्ति है। सत्य का उद्देश्य ठीक यही है। परमेश्वर का वचन ही मरती हुई आत्माओं को जीवन देता है; इसमें उन आत्माओं को फिर से जीवित करने की शक्ति है जो मर चुकी हैं—यानी परमेश्वर से अलग हो गई हैं। इसके अलावा, इस वचन में हम जैसे अपूर्ण विश्वासियों की निराश आत्माओं को ऊपर उठाने और मज़बूत करने की शक्ति है। इस प्रकार, परमेश्वर के उत्तम वचन के द्वारा, हम अपनी निराश आत्माओं में नई जान का अनुभव करते हैं।

दूसरा, परमेश्वर का वचन पक्का है, और यह साधारण लोगों को बुद्धिमान बनाता है।

भजन संहिता 19:7 का दूसरा भाग देखिए: "...यहोवा की गवाही पक्की है, जो साधारण लोगों को बुद्धिमान बनाती है।" यह कहने का मतलब कि परमेश्वर का वचन—वह सच्चाई जो परमेश्वर का ज्ञान देती है—"पक्का" है, यह है कि वह "सच्चा" है (पार्क युन-सन), और परमेश्वर का यह सच्चा वचन साधारण लोगों को बुद्धिमान बनाता है। यहाँ "साधारण" शब्द का अर्थ, मूल हिब्रू भाषा में, ऐसे व्यक्ति से है जो "खुले मन का" है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का सच्चा वचन उस व्यक्ति के भीतर काम करता है जिसका दिल खुला होता है, और उसे बुद्धिमान बनाता है। जब वचन का बीज एक खुले दिल में—अच्छी मिट्टी की तरह—बोया जाता है, तो यह बुद्धि का फल देता है। इसलिए, हमें अपने दिलों के दरवाज़े खोलने चाहिए, विश्वास के साथ परमेश्वर का वचन ग्रहण करना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए। तीसरा, परमेश्वर का वचन सीधा और सही है और दिल को खुश करता है।

भजन संहिता 19:8 का पहला भाग देखिए: "यहोवा के नियम सही हैं, जो दिल को आनंदित करते हैं..." यह कहने का मतलब कि परमेश्वर का वचन "सही" है, यह है कि वह सीधा या सच्चा है। परमेश्वर का सीधा वचन पापी के दिल को भेदता है, जिससे उसे पछतावा होता है। इंसान को दिल में खुशी केवल पछतावे के ज़रिए ही मिलती है (पार्क युन-सन)। जो दिल सही नहीं है—यानी टेढ़ा दिल—वह परमेश्वर के वचन से मिलने वाली समझ के कारण पछतावा करने पर सीधा हो जाता है। परमेश्वर का वचन सीधा और सही है। हमारे दिल भी सच्ची खुशी

पा सकते हैं जब वे सीधे और सही हो जाते हैं। सच्ची खुशी सीधे और सही दिल में मिलती है; टेढ़े दिल में सच्ची खुशी नहीं हो सकती।

आखिर में, चौथा बिंदु: परमेश्वर का वचन शुद्ध है और आँखों को रोशन करता है।

भजन संहिता 19:8 का दूसरा भाग देखिए: "...यहोवा की आज्ञा शुद्ध है, जो आँखों को रोशन करती है।" यहाँ, "शुद्ध" का अर्थ है साफ़; दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का वचन शुद्ध है। जब हमारी आत्माएँ उस शुद्ध वचन से शुद्ध हो जाती हैं, तो हमारी आत्मा की आँखें खुल जाती हैं। तब, हम परमेश्वर को देख पाते हैं (मत्ती 5:8) और उनका अनुभव कर पाते हैं। अय्यूब इसका एक बेहतरीन उदाहरण है। दुख के रास्ते पर चलने के बाद, उसने यह स्वीकार किया: “मैंने तो तेरे विषय में केवल कानों से सुना था, परन्तु अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं” (अय्यूब 42:5)। इस स्वीकारोक्ति से हमें यह सीख मिलती है कि परमेश्वर के शुद्ध वचन को थामे रखकर दुख के रास्ते पर चलने से, हम आखिरकार—आत्मा की साफ़ आँखों से—उस परमेश्वर को देख पाते हैं जिसे हमने पहले केवल सुनी-सुनाई बातों से जाना था, और साथ ही हम अपनी आत्मा की शुद्धता भी बनाए रखते हैं। हमें परमेश्वर के वचन का पालन करके अपनी आत्मा को शुद्ध करना चाहिए (1 पतरस 1:22)। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम दुख भरी ज़िंदगी में भी परमेश्वर का अनुभव कर सकते हैं।

तो फिर, हमें परमेश्वर के वचन के प्रति कैसा रवैया अपनाना चाहिए? हम चार बातों पर विचार कर सकते हैं।

पहला, हमें परमेश्वर का आदर करना चाहिए।
भजन संहिता 19:9 को देखें: “यहोवा का भय शुद्ध है, और सदा बना रहता है; यहोवा के नियम पक्के और पूरी तरह से धर्मी हैं।” परमेश्वर का वचन हमें उन्हें जानने में मदद करता है—खासकर, पवित्र और धर्मी परमेश्वर को (“यहोवा के नियम पक्के और पूरी तरह से धर्मी हैं” वाक्यांश परमेश्वर के पक्के और धर्मी न्याय की ओर इशारा करता है)। नतीजतन, जैसे-जैसे हम परमेश्वर का आदर करते हैं, हम उनके वचन का पालन करते हैं। ऐसा करने से, हमारे दिल उनके वचन से शुद्ध हो जाते हैं। जो दिल परमेश्वर का आदर करता है और शुद्ध है, उसमें पाप नहीं रह सकता। आखिरकार, जिनका दिल शुद्ध है (पद 8), वे ऐसी ज़िंदगी जीते हैं जो पाप से दूर रहती है, और वे उस पवित्र और धर्मी परमेश्वर का आदर करते हैं जिन्हें वे आध्यात्मिक आँखों से देखते हैं।

दूसरा, हमें परमेश्वर के वचन को अनमोल समझना चाहिए।

भजन संहिता 19:10 को देखें: “वे सोने से, बहुत सारे शुद्ध सोने से भी ज़्यादा कीमती हैं; वे शहद से, छत्ते से निकले शहद से भी ज़्यादा मीठे हैं।” सोना दुनिया की दौलत तो ला सकता है, लेकिन यह आध्यात्मिक समृद्धि नहीं ला सकता। प्रभु का वचन हमारी आत्माओं को समृद्ध बनाता है (पार्क युन-सन)। सोना और चाँदी दुनिया की दौलत तो ला सकते हैं, लेकिन अक्सर वे हमारी आत्माओं को कंगाल बना देते हैं। इसलिए, हमें परमेश्वर के वचन की दिल से चाहत रखनी चाहिए, क्योंकि इससे आत्मिक समृद्धि मिलती है। हम परमेश्वर के वचन की मिठास—वह मिठास जो आत्मिक समृद्धि देती है—को जितना ज़्यादा चखते हैं, उतनी ही ज़्यादा हमारी इच्छा उसे पाने की होती है। आखिरकार, नेक लोग (पद 8) परमेश्वर के वचन की चाहत रखे बिना नहीं रह सकते। नतीजतन, नेक लोगों के दिलों में खुशी होती है और वे उस खुशी का आनंद लेते हैं।

तीसरी बात, हमें परमेश्वर के वचन का पालन करना चाहिए।

भजन संहिता 19:11 देखिए: "इनसे तेरे दास को चेतावनी मिलती है, और इनके पालन में बड़ा प्रतिफल है।" दाऊद को परमेश्वर के वचन से चेतावनी मिली थी। पाप करने से बचने के लिए उसने परमेश्वर के वचन का पालन किया। इसका कारण यह था कि "प्रतिफल बड़ा है।" दूसरे शब्दों में, दाऊद ने परमेश्वर के वचन का पालन इसलिए किया क्योंकि जो लोग इसका पालन करते हैं, उन्हें इसका बहुत अच्छा "परिणाम" मिलता है ("बड़ा प्रतिफल" का मूल हिब्रू अर्थ है किसी काम के बाद मिलने वाला "बड़ा परिणाम" या "बड़ा नतीजा" [पार्क युन-सन])। हमें भी परमेश्वर की चेतावनियों को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। हमें आखिर तक परमेश्वर के वचन का पालन करना चाहिए और अपनी आत्माओं के उद्धार का प्रतिफल पाना चाहिए। आखिरकार, जो लोग अपने दिल खोलते हैं (पद 7—"सीधे-सादे लोग"), वे बुद्धिमान बनते हैं और परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं।

आखिर में, चौथी बात: हमें प्रार्थना करनी चाहिए।

भजन संहिता 19:12–13 देखिए: "अपनी भूलों को कौन समझ सकता है? मुझे छिपी हुई गलतियों से शुद्ध कर। अपने दास को जानबूझकर किए जाने वाले पापों से भी बचा; उन्हें मुझ पर हावी न होने दे। तब मैं निर्दोष हो

जाऊँगा, और बड़े अपराध से पाक-साफ़ रहूँगा।" दाऊद ने प्रार्थना की कि परमेश्वर अपने वचन के ज़रिए उसे अपनी "भूलों" को पहचानने में मदद करे। खासकर, वह "जानबूझकर किए जाने वाले पापों" को पहचानना और उनसे बचना चाहता था। इसलिए, उसकी प्रार्थना थी, "मुझे छिपी हुई गलतियों से शुद्ध कर" (पद 12) और "मुझे बड़े अपराध से बचा" (पद 13)। अगर हम बार-बार जानबूझकर पाप करते हैं, तो वह पाप हम पर हावी हो जाता है (पार्क युन-सन); दूसरे शब्दों में, पाप हम पर राज करने लगता है। इसीलिए दाऊद ने प्रार्थना की, "[पाप को] मुझ पर हावी न होने दे" (पद 13)। बाइबल सिखाती है कि जो लोग परिपक्व और सिद्ध हैं, वे प्रार्थना करने वाले लोग होते हैं। हम चाहते हैं कि जब हम परमेश्वर से प्रार्थना करें और उनके वचन पर भरोसा रखें, तो हमारी आत्मा में नई जान आए (पद 7)।

दाऊद, जो परमेश्वर के बहुत करीब थे, चाहते थे कि उनके मुँह के शब्द और उनके दिल का चिंतन परमेश्वर को—जो उनकी चट्टान और उनके उद्धारकर्ता हैं—पसंद आए (पद 14)। वे प्रार्थना करने वाले व्यक्ति थे। वे परमेश्वर के वचन को बहुत महत्व देते थे और उसे मानते थे; वे परमेश्वर का भय मानने वाले व्यक्ति थे। जो विश्वासी परमेश्वर के वचन के अनुसार जीवन जीता है, वह परमेश्वर का भय मानता है, उनके वचन को महत्व देता है और उसका पालन करता है, और उस वचन को थामे रखकर प्रार्थना करता है। परमेश्वर के सिद्ध, पक्के, सीधे और पवित्र वचन के द्वारा व्यक्ति की आत्मा में नई जान आती है, उसे ज्ञान मिलता है, दिल में खुशी मिलती है और उसकी आध्यात्मिक आँखें खुल जाती हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि वचन की ऐसी आशीषें हम सब पर बनी रहें।

इसे और ज़्यादा चाहो!

“ये सोने से, बहुत सारे शुद्ध सोने से भी ज़्यादा कीमती हैं; ये शहद से, छत्ते से निकले शहद से भी ज़्यादा मीठे हैं” (भजन संहिता 19:10)।

हाल ही में, जब मैं अपने चर्च के मुख्य हॉल (सेंक्चुरी) में हो रहे मरम्मत के काम को देख रहा हूँ, तो मुझे खुद अनुभव करने की अहमियत समझ में आई है। बेशक, यह काम पेशेवर लोग कर रहे हैं; फिर भी, उन्हें काम करते हुए देखकर, उनसे बातचीत करके और हॉल की समस्याओं व मरम्मत की प्रक्रिया के बारे में सुनकर, मुझे प्रभु से चुनौतियाँ और सीख मिल रही हैं। अगर मैं सिर्फ़ निर्माण शुरू होने से पहले और उसके खत्म होने के बाद वहाँ जाता, तो शायद मुझे बदलाव तो दिखते, लेकिन मैं उस प्रक्रिया से—यानी बदलाव के पीछे "कैसे" हुआ—पूरी तरह अनजान रहता। अगर मुझे इसके बारे में पता भी चलता, तो वह किसी और के बताए अनुसार होता, न कि निर्माण स्थल पर चीज़ों को खुद देखने, सुनने और महसूस करने के सीधे अनुभव से। काम को देखने पर पता चला कि हॉल की छत काफी नीचे झुक गई थी। ऐसा लगता है कि विशेषज्ञों को भी छत को हटाने से पहले यह अंदाज़ा नहीं था कि वह कितनी ज़्यादा झुक गई है। हालाँकि, समस्या की गंभीरता का पता चलने पर, उन्होंने बहुत अच्छी तरह से और बेहतरीन ढंग से मरम्मत का काम किया। मैं बस उनका शुक्रगुज़ार हूँ।

इस मरम्मत प्रोजेक्ट से मैंने जो आध्यात्मिक सबक सीखा है, वह है परमेश्वर के वचन को खुद अनुभव करने की अहमियत। मुझे एक बार फिर एहसास हुआ है कि परमेश्वर के जीवित और असरदार वचन का अनुभव करना कितना ज़रूरी है—इसके लिए बाइबल को खुद खोलना, उसे पढ़ना और उस पर मनन करना, और फिर उसका पालन करना और उसे अपनी असल ज़िंदगी में लागू करना ज़रूरी है। ऐसा सीधा अनुभव ही परमेश्वर के वचन को सचमुच अपना बनाने का तरीका है (भजन संहिता 119:56)। अगर हम परमेश्वर के वचन को सिर्फ़ दूसरों के ज़रिए जानते हैं, तो हम उसे गहराई से अनुभव नहीं कर पाएँगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि संदेश हम तक

किसी ऐसे व्यक्ति के ज़रिए पहुँचता है जिसने खुद उसका अनुभव किया है, न कि हमारे अपने सीधे अनुभव से। ऐसी अप्रत्यक्ष जानकारी हमें परमेश्वर के वचन के गहरे अनुभव तक नहीं ले जा सकती। चर्च अलग-अलग तरह की बाइबल स्टडीज़ इसलिए करवाते हैं ताकि लोग इतने परिपक्व हो सकें कि वे खुद परमेश्वर के वचन से पोषण पा सकें। हमें उस स्तर तक पहुँचना चाहिए जहाँ हम खुद परमेश्वर के वचन पर मनन करें, उसका अध्ययन करें और उसे सीखें। ऐसा करते हुए, हमें परमेश्वर के वचन का अनुभव खुद करना चाहिए। तभी हम भजनकार की तरह यह कह पाएँगे कि परमेश्वर का वचन "शहद और छत्ते से टपकने वाले शहद से भी मीठा है" (भजन संहिता 19:10)।

भजन संहिता 19:10 में, भजनकार दाऊद हमें परमेश्वर के वचन को "सोने, यहाँ तक कि बहुत शुद्ध सोने" से भी ज़्यादा चाहने के लिए क्यों कहता है? इसका कारण क्या है? इसका कारण यह है कि दाऊद ने व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया था कि परमेश्वर का वचन "शहद और छत्ते से टपकने वाले शहद से भी मीठा है।" मैंने वचन के प्रति दाऊद के अनुभव में चार चरण पहचाने हैं।

पहला, परमेश्वर का वचन हमें सीमाएँ देता है।

भजन संहिता 19:11 को देखें: "इसके अलावा, इनसे आपके सेवक को चेतावनी मिलती है; इनका पालन करने में बड़ा प्रतिफल है।" परमेश्वर का वचन हमारे लिए सीमाएँ तय करता है। उन सीमाओं के भीतर जीना एक आशीष है। जब हम सच्चाई के भीतर जीते हैं तो हम सच्ची आज़ादी का आनंद लेते हैं (यूहन्ना 8:32)। इसलिए, परमेश्वर के वचन के माध्यम से मार्गदर्शन और सीमाएँ प्राप्त करना एक आशीष है। दूसरा, परमेश्वर का वचन हमें अपने पापों को पहचानने में सक्षम बनाता है।

भजन संहिता 19:12 पर विचार करें: "कौन अपनी गलतियों को पहचान सकता है? मुझे छिपी हुई गलतियों से मुक्त करें।" परमेश्वर का वचन हमारे पापों को उजागर करता है (इफिसियों 5:11, 13)। यह हमारे गहरे छिपे हुए पापों को भी प्रकट करता है। एक सीमा रेखा की तरह, परमेश्वर का वचन हमारे विवेक को यह एहसास कराता है कि कब हमने पाप की सीमा पार कर ली है। हालाँकि, हममें से कुछ ऐसे भी हैं जिनका विवेक कठोर हो गया है। हमारे दिल इस तरह कठोर हो जाते हैं क्योंकि हम बार-बार ऐसा जीवन जीते हैं जो उस सीमा के आर-पार डगमगाता रहता है। शुरू में, हमें विवेक की चुभन और अपराधबोध का एहसास हो सकता है; फिर

भी, जैसे-जैसे हम सीमा पार करते जाते हैं और पापपूर्ण जीवन जीते हैं, वह जीवनशैली जानी-पहचानी हो जाती है, और अंततः, हम पाप को पाप मानना छोड़ देते हैं। दूसरे शब्दों में, हम पाप को वैसा पहचानने की क्षमता खो देते हैं जैसा वह वास्तव में है। इसलिए, परमेश्वर के वचन के माध्यम से यह एहसास करना कि हमने सीमा पार कर ली है, एक आशीष है। उसके वचन के माध्यम से अपने पापों को पहचानना एक आशीष है। इसीलिए भजनकार दाऊद ने प्रार्थना की, "अपने दास को जान-बूझकर किए जाने वाले पापों से बचाए रख; वे मुझ पर हावी न हों" (भजन संहिता 19:13)। जब हम उस सीमा को पार करके जीते हैं, तो हम जान-बूझकर—और अपनी मर्ज़ी से—पाप करने लगते हैं। हम पाप के वश में होकर जीने लगते हैं और बिना ज़्यादा पछतावे के परमेश्वर के वचन की आज्ञा नहीं मानते। हम परमेश्वर के वचन के बजाय पाप के अनुसार चलने लगते हैं। इसलिए, हमें परमेश्वर के वचन की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए, क्योंकि वही हमारे लिए सीमाएँ तय करता है। अगर हम परमेश्वर के वचन का उल्लंघन कर बैठते हैं, तो हमें परमेश्वर के वचन के ज़रिए ही इस बात का एहसास होना चाहिए। हमें परमेश्वर के पवित्र वचन को अपने पापों को उजागर करने देना चाहिए। तभी हम परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार कर पाएँगे और पश्चाताप कर पाएँगे।

तीसरी बात, परमेश्वर का वचन हमारी आत्माओं में नई जान डालता है।

भजन संहिता 19:7 देखिए: "यहोवा की व्यवस्था सिद्ध है, वह आत्मा को नया जीवन देती है; यहोवा की गवाही सच्ची है, वह साधारण लोगों को बुद्धिमान बनाती है।" जब हम परमेश्वर के वचन द्वारा तय की गई सीमाओं को पार करते हैं और उसके विरुद्ध पाप करते हैं, तो हमारी आत्माएँ पाप के बोझ और दबाव से दब जाती हैं और अपनी शांति खो देती हैं। खासकर जब हमें परमेश्वर के वचन के ज़रिए अपने किए गए पापों का एहसास होता है, तो हमारी आत्माएँ निराश या हताश हो सकती हैं। परमेश्वर का वचन ही हमारी निराश और हताश आत्माओं में नई जान डालता है। परमेश्वर अपने वचन का इस्तेमाल हमें हमारी गलतियों के बारे में बताने के लिए करते हैं और उस वचन को थामे रखकर हमें पाप स्वीकार करने और पश्चाताप करने की ओर ले जाते हैं। फिर वे अपने आशा भरे वचन के ज़रिए हमारी हताश आत्माओं को नया जीवन देते हैं। नतीजतन, हम पश्चाताप के ज़रिए मेल-मिलाप और बहाली की कृपा का आनंद लेते हैं।

आखिर में, चौथी बात: परमेश्वर का वचन हमारे दिलों को खुश करता है।

भजन संहिता 19:8 देखिए: "यहोवा के नियम सही हैं, वे दिल को खुश करते हैं; यहोवा की आज्ञा शुद्ध है, वह आँखों को रोशन करती है।" पश्चाताप करने वाला दिल न केवल माफ़ी के भरोसे से शांति का आनंद लेता है, बल्कि उस खुशी का भी अनुभव करता है जो परमेश्वर देता है। इसके अलावा, जैसे-जैसे परमेश्वर का वचन आत्मा की आँखों को रोशन करता है, इंसान को अच्छे और बुरे के बीच फ़र्क करने की बेहतर समझ मिलती है। इंसान परमेश्वर के वचन द्वारा तय की गई सीमाओं को और साफ़-साफ़ देख पाता है। नतीजतन, वह पाप को अपने दिल पर हावी नहीं होने देता; इसके बजाय, इंसान परमेश्वर के वचन को अपने जीवन पर राज करने देता है। पाप के कारण मूर्ख बनने के बजाय, परमेश्वर के वचन से बुद्धिमान बनकर (पद 7), वह सच और झूठ में फ़र्क करता है, सच को चुनता है और उससे मिलने वाली आज़ादी में जीता है। ऐसा करने से, वह उस खुशी से भरा जीवन जीता है जो परमेश्वर देता है।

परमेश्वर के वचन पर मनन करते हुए—जो हमारे लिए सीमाएँ तय करता है, हमारी गलतियों को उजागर करता है, हमारी आत्माओं को ताज़गी देता है और हमारे दिलों को खुश करता है—मुझे भजन 235 के बोल और कोरस याद आते हैं: “वह वचन कितना प्यारा और अद्‌भुत है, जीवन का वचन, वह अनमोल वचन; सचमुच, जीवन का वचन मेरे रास्ते और मेरे विश्वास को साफ़-साफ़ दिखाता है—एक सुंदर और अनमोल वचन, जीवन का स्रोत; एक सुंदर और अनमोल वचन, जीवन का स्रोत।” मेरी इच्छा है कि हम सब परमेश्वर के वचन का स्वाद चखें। आइए, भजनकार दाऊद की तरह हम सब परमेश्वर के वचन का स्वाद चखकर जिएँ, जो शहद और छत्ते से टपकने वाले शहद से भी ज़्यादा मीठा है। आइए, हम सब परमेश्वर के वचन को सोने से—यहाँ तक कि बहुत सारे शुद्ध सोने से भी—ज़्यादा कीमती समझें।

"अब मैं जानता हूँ"

[भजन संहिता 20]

क्या आपने कभी ऐसा पल महसूस किया है जब मुश्किल समय में सच्चे दिल से परमेश्वर को खोजने के बाद, आपको एहसास हुआ कि वह आपकी प्रार्थना का जवाब दे रहे हैं? अगर हाँ, तो पिछली बार ऐसा अनुभव कब हुआ था और कैसा लगा था? हाल ही में, मैंने महसूस किया है कि परमेश्वर मुझे प्रार्थना में बने रहने के लिए प्रेरित कर रहे हैं—मानो मुझे एक कोने में धकेल रहे हों। इसलिए, अपनी कई कमियों के बावजूद, मैं प्रार्थना करने की एक छोटी सी, सच्ची कोशिश कर रहा हूँ। इसके अलावा, 'प्रेरितों के काम' (Book of Acts) की किताब के ज़रिए मुझे हमारे चर्च के एक साथ प्रार्थना करने की अहमियत का एहसास हुआ है, इसलिए मैं मिलकर प्रार्थना करने की कोशिश कर रहा हूँ। फिर भी, एक सवाल उठता है: "क्या मैं सच में जानता हूँ कि परमेश्वर मेरी प्रार्थनाओं—और हमारी प्रार्थनाओं—का जवाब दे रहे हैं?" यह सवाल भजन संहिता 20 पर मनन करते समय मन में आया, खासकर "अब मैं जानता हूँ" (भजन संहिता 20:6) वाक्यांश पर। आज, मैं "अब मैं जानता हूँ" शीर्षक के तहत भजन संहिता 20 पर विचार करना चाहता हूँ।

भजनकार दाऊद को क्या एहसास हुआ? यह कि परमेश्वर मुसीबत के दिन में उसकी प्रार्थना का जवाब देते हैं (पद 1)। दाऊद ने पहचाना कि परमेश्वर ने उन प्रार्थनाओं का जवाब दिया जो उसने मुश्किल समय में पुकारकर की थीं। उसे यह भी पता चला कि परमेश्वर उसकी "सारी विनतियों" को पूरा करेंगे (पद 5)। यहाँ जिस "मुसीबत के दिन" का ज़िक्र है, वह युद्ध का समय है। हम इसे उस आयत से समझ सकते हैं जो कहती है, "हम तेरी जीत पर खुशी से चिल्लाएँगे और अपने परमेश्वर के नाम पर झंडा उठाएँगे..." (पद 5)। "जीत" और "झंडा" शब्द बताते हैं कि इस हिस्से का संदर्भ युद्ध है। इसके अलावा, भजन संहिता 20:1 का बाद वाला हिस्सा कहता है कि "याकूब का परमेश्वर" तुम्हें "ऊँचे स्थान पर सुरक्षित रखेगा"; यहाँ, "याकूब का परमेश्वर"

उस परमेश्वर की ओर इशारा करता है जो प्रार्थना सुनता है। क्या आपको याकूब की कहानी याद है? क्या आपको याद है कि कैसे, अपने परिवार और पशुओं को जब्बोक नदी के पार भेजने के बाद, उसने एक स्वर्गदूत के साथ कुश्ती की और पक्के इरादे के साथ प्रार्थना की, "जब तक तू मुझे आशीष नहीं देगा, मैं तुझे जाने नहीं दूँगा"? (उत्पत्ति 32:22–26)। जब यह कहा जाता है कि जो परमेश्वर दाऊद की प्रार्थनाएँ सुनता है, वह "उसे ऊँचे स्थान पर सुरक्षित रखता है," तो इसका अर्थ है कि वह उसे सभी युद्धों में जीत दिलाता है और राष्ट्र का सम्मान बढ़ाता है (भजन संहिता 20:1; पार्क युन-सन)। यहाँ हमें यह ध्यान देना चाहिए कि दाऊद के लिए, युद्ध एक राष्ट्रीय संकट था। एक राजा के लिए, किसी दूसरे देश के विरुद्ध युद्ध करना एक ऐसा संकट है जो व्यक्तिगत स्तर से ऊपर उठकर पूरे देश के लिए संकट बन जाता है। ऐसे समय में, राजा दाऊद ने स्वयं सबसे पहले परमेश्वर से पुकार की। हम भी संकटों का सामना कर सकते हैं—चाहे वे व्यक्तिगत हों, पारिवारिक हों, पेशेवर हों, या कलीसिया या राष्ट्र से जुड़े संकट हों। तब हमें क्या करना चाहिए? हमें दाऊद की तरह प्रार्थना करनी चाहिए। व्यक्तिगत प्रार्थना के अलावा, हमें मिलकर और सहयोग के साथ भी प्रार्थना करनी चाहिए। जिस प्रकार राष्ट्रीय संकट के समय इज़राइल के लोगों को राजा के साथ मिलकर परमेश्वर से पुकार करनी पड़ी थी, उसी प्रकार पारिवारिक संकट के समय पूरे परिवार को—न कि केवल एक व्यक्ति को—परमेश्वर से प्रार्थना करने के लिए एकजुट होना चाहिए। यही बात कलीसिया पर भी लागू होती है; जब कलीसिया किसी संकट का सामना करती है, तो पूरी मंडली को, पास्टर से लेकर सभी सदस्यों तक, प्रार्थना में एक साथ शामिल होना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम संकट के बीच परमेश्वर को हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देते हुए अनुभव कर सकते हैं। तो, परमेश्वर ने दाऊद की प्रार्थना का उत्तर कैसे दिया? और परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर कैसे देता है? मैंने इस पर पाँच दृष्टिकोणों से विचार किया है।

पहला, परमेश्वर हमारी सहायता करता है।

भजन संहिता 20:2 को देखें: "वह पवित्र स्थान से तुम्हें सहायता भेजे और सिय्योन से तुम्हें सहारा दे।" परमेश्वर ही वह है जो हमारी सहायता करता है। भले ही हमारी दृष्टि में उसकी सहायता में देरी होती हुई प्रतीत हो, लेकिन वह निश्चित है। हमें इस तथ्य पर विश्वास करना चाहिए। भजन संहिता 121:1–2 में, भजनकार स्वीकार करता है: "मैं अपनी आँखें पहाड़ों की ओर उठाता हूँ—मेरी सहायता कहाँ से आती है? मेरी सहायता प्रभु से आती है, जो स्वर्ग और पृथ्वी का बनाने वाला है।"

दूसरा, परमेश्वर हमें थामे रखता है।

भजन संहिता 20:2 के बाद वाले भाग को देखें: "...और सिय्योन से तुम्हें सहारा दे।" इसका अर्थ है कि परमेश्वर हमें थामे रखता है ताकि हम लड़खड़ाएँ नहीं। भजन संहिता 121:3 में, भजनकार कहता है, "प्रभु... तुम्हारे पैर को फिसलने नहीं देगा।" यहाँ हम भजन संहिता 73 के लेखक आसाफ को एक उदाहरण के तौर पर देख सकते हैं। वह "लगभग लड़खड़ा ही गया था" और उसके "पैर लगभग फिसल ही गए थे" (पद 2), फिर भी आखिर में वह गिरा नहीं। आसाफ के लगभग लड़खड़ाने का कारण यह था कि नेक लोग दुख उठा रहे थे जबकि बुरे लोग फल-फूल रहे थे।

तीसरा, परमेश्वर हमारी भेंटों (भक्ति के कामों) को स्वीकार करते हैं। भजन संहिता 20:3 को देखिए: "वह तुम्हारे सारे अनाज के चढ़ावे को याद रखे और तुम्हारी होम-बलि को स्वीकार करे।" यहाँ, "अनाज का चढ़ावा" आम तौर पर "भेंटों" की ओर इशारा करता है। "होम-बलि" का मतलब है ऐसी भेंट जो ऊपर उठती है, यानी ऐसी बलि जो वेदी पर आग में पूरी तरह जल जाती है (लैव्यव्यवस्था 1:3–9)। आज की भाषा में कहें तो इसका मतलब है आराधना। लेकिन एक सवाल उठता है कि परमेश्वर का हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देना और हमारी आराधना को स्वीकार करना—इन दोनों के बीच के संबंध को हम कैसे समझें? 1 शमूएल 1 में हन्ना के बारे में सोचिए; दाऊद की तरह, उसने भी अपने दिल के दुख के बीच परमेश्वर की आराधना की (1 शमूएल 1:10)। इससे हम सीखते हैं कि हमें भी मुश्किल समय में परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए। हमें अपनी परिस्थितियों से ऊपर उठकर परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए। हमारी प्रार्थना का विषय यही होना चाहिए: "कृपया हमारी आराधना स्वीकार करें!"
चौथा, परमेश्वर हमारे दिल की इच्छाओं को पूरा करते हैं।

भजन संहिता 20:4 को देखिए: "वह तुम्हें तुम्हारे दिल की इच्छा दे और तुम्हारी सारी योजनाओं को पूरा करे।" यहाँ, "दिल की इच्छा" का मतलब ऐसी इच्छा से है जो परमेश्वर की मर्जी के मुताबिक हो। जब ऐसा होता है, तो परमेश्वर हमारे दिल की इच्छाओं को पूरा करते हैं।

आखिर में, पाँचवीं बात: परमेश्वर हमें जीत दिलाते हैं।

भजन संहिता 20:5 का पहला हिस्सा देखिए: "हम तुम्हारी जीत पर खुशी से चिल्लाएँगे और अपने परमेश्वर के नाम पर अपने झंडे लहराएँगे..." हमारा परमेश्वर जीत का परमेश्वर है। वही परमेश्वर है जो हमें जीत दिलाता है। वही परमेश्वर है जो हमें लड़ाई में जीत हासिल करने और जीत के गीत गाने के काबिल बनाता है। हमारा परमेश्वर हमें जीत का झंडा लहराने के काबिल बनाता है।

तो फिर, दाऊद ने परमेश्वर से कैसे प्रार्थना की? और हमें उससे कैसे प्रार्थना करनी चाहिए?

पहला, हमें उद्धार के भरोसे के साथ परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। भजन संहिता 20:6 को देखिए: "अब मैं जानता हूँ कि प्रभु अपने अभिषिक्त को बचाता है; वह अपने पवित्र स्वर्ग से अपने दाहिने हाथ की बचाने वाली शक्ति से उसे उत्तर देगा।" हालाँकि यहाँ "अभिषिक्त" का अर्थ दाऊद से है, लेकिन अंततः यह मसीह की ओर इशारा करता है। यद्यपि लोगों ने यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया, परमेश्वर ने उन्हें मरे हुओं में से जिलाया, और इस प्रकार अपनी बचाने वाली शक्ति का प्रदर्शन किया। इसी तरह, जब हमारी कलीसिया मुसीबत के समय परमेश्वर को पुकारती है, तो वह हमें बचाता है। परमेश्वर हमें अपनी बचाने वाली शक्ति दिखाता है। इसलिए, जब हम यीशु के नाम से परमेश्वर पिता से विनती करते हैं, तो हमें उद्धार के भरोसे के साथ ऐसा करना चाहिए। सच्ची प्रार्थना भरोसे के साथ समाप्त होती है; और चूँकि वह भरोसा परमेश्वर द्वारा दिया जाता है, इसलिए यह प्रार्थना के पूरा होने की शुरुआत के रूप में कार्य करता है (पार्क युन-सन)।

दूसरा, हमें परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए।

भजन संहिता 20:7 को देखिए: "कुछ लोग रथों पर और कुछ घोड़ों पर भरोसा करते हैं, लेकिन हम अपने परमेश्वर प्रभु के नाम पर गर्व करते हैं।" यह गोलियत पर दाऊद की जीत की कहानी की याद दिलाता है। जिस तरह दाऊद ने सेनाओं के प्रभु के नाम से आगे बढ़कर गोलियत को हराया, उसी तरह हमें केवल परमेश्वर पर भरोसा करके अपनी आत्मिक लड़ाइयाँ लड़नी चाहिए। बाइबल हमें बताती है, "मनुष्य पर भरोसा करना छोड़ दो..." (यशायाह 2:22)। हमें लोगों, सैन्य शक्ति या अपनी संपत्ति पर भरोसा नहीं करना चाहिए; ऐसी सभी चीजें खत्म हो जाने वाली हैं। इसके बजाय, हमें केवल अनंत परमेश्वर—हमारे उद्धार के परमेश्वर—पर भरोसा करना चाहिए और परमेश्वर पिता से विनती करनी चाहिए।

तीसरा, हमें जीत के भरोसे के साथ परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

भजन संहिता 20:8 को देखिए: "वे घुटनों के बल गिरते हैं और हार जाते हैं, लेकिन हम उठते हैं और मजबूती से खड़े रहते हैं।" जिस परमेश्वर ने दाऊद को युद्ध में जीत दिलाई, वही परमेश्वर हमें आत्मिक युद्ध में जीत दिलाता है। इसलिए, हमें इस विश्वास के साथ प्रार्थना करनी चाहिए कि हम जीतेंगे, और हमें प्रार्थना के माध्यम से जीत हासिल करनी चाहिए। प्रेरित पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 10:13 में कहा: "तुम पर कोई ऐसी परीक्षा नहीं आई है जो मनुष्यों के लिए सामान्य न हो। और परमेश्वर सच्चा है; वह तुम्हें तुम्हारी सहनशक्ति से अधिक परीक्षा में नहीं पड़ने देगा। लेकिन जब तुम परीक्षा में पड़ोगे, तो वह उससे निकलने का रास्ता भी देगा ताकि तुम उसे सह सको।" आखिर में, चौथा पॉइंट यह है कि हमें तब तक प्रार्थना करते रहना चाहिए जब तक हमें जवाब न मिल जाए।

भजन संहिता 20:9 देखिए: "हे प्रभु, राजा को बचा! जब हम पुकारें तो हमें जवाब दे!" दाऊद की तरह, हमें भी मुसीबत के समय परमेश्वर से पुकारना चाहिए और तब तक प्रार्थना करते रहना चाहिए जब तक वह हमें जवाब न दे।

आज सुबह की प्रार्थना के दौरान, जब मैं 1 शमूएल अध्याय 1 में हन्ना की प्रार्थना पर मनन कर रहा था, तो मुझे एहसास हुआ कि परमेश्वर मेरी अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर दे रहे थे। मेरी दिली इच्छा थी कि मैं हन्ना की तरह परमेश्वर से प्रार्थना करूँ—गहरी पीड़ा और रोते हुए अपना दिल उनके सामने उँडेल दूँ—और आज सुबह की प्रार्थना-सभा के दौरान ही मुझे समझ आया कि वे सचमुच उसी प्रार्थना का उत्तर दे रहे थे। ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने कहा था, "अब मैं जानता हूँ," मुझे भी पवित्र आत्मा की प्रेरणा से यह समझ आया; नतीजतन, जो क्रूस कभी बहुत भारी लगता था, वह अचानक हल्का लगने लगा। इस एहसास से पवित्र आत्मा ने मुझे नई शक्ति दी। जब हम उस परमेश्वर को जान लेते हैं जो मुसीबत के समय हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं, तो हम जीत के गीत गा सकते हैं और जीत का झंडा फहरा सकते हैं। आइए, हम सब प्रार्थना के ज़रिए तब तक जीत हासिल करते रहें जब तक कि हम जीत का वह झंडा न फहरा दें। जीत!

परमेश्वर पिता, जो मेरे दिल की इच्छाओं को ठुकराते नहीं हैं

“वह तुम्हें तुम्हारे दिल की इच्छा पूरी करने दे और तुम्हारी सभी योजनाओं को सफल बनाए” (भजन संहिता 20:4); “तुमने उसे उसके दिल की इच्छा दी है और उसके होंठों की विनती को अस्वीकार नहीं किया है” (भजन संहिता 21:2)।

कल, गुरुवार को, मैं अपने चार ऐसे दोस्तों से मिला जिनसे मैं बहुत समय से नहीं मिला था। उनमें से तीन दोस्त ऐसे हैं जिन्हें मैं मिडिल स्कूल के समय से जानता हूँ; जब मैं बारह साल का था, तब मैं अमेरिका आ गया था। चौथा दोस्त भी मेरा पुराना साथी है—मुझसे एक साल बड़ा—जिसकी शादी मैंने पहली बार करवाई थी। हमने पूरा दिन साथ बिताया: लंच किया, फोर-बॉल बिलियर्ड्स खेला, डिनर किया और बॉलिंग भी की। मुझे लगता है कि यह पहली बार था जब हम पाँचों ने साथ में बॉलिंग की थी। हमारे मिलने का कारण यह था कि मुझे पता चला था कि इन चार दोस्तों में से एक मुश्किल दौर से गुज़र रहा है। मैंने एक और दोस्त को फ़ोन करके सुझाव दिया कि हमें उस ज़रूरतमंद दोस्त की मदद के लिए साथ आना चाहिए, और उसी दोस्त ने इस मुलाक़ात का आयोजन किया। हालाँकि माहौल गंभीर बातचीत के लिए बहुत अच्छा नहीं था, लेकिन डिनर के दौरान परमेश्वर ने मुझे हिम्मत दी, और मैंने अपने दिल की बात उनसे कहने का साहस जुटाया। मेरी गंभीरता को देखकर, मेरे दोस्तों ने ज़्यादा शराब नहीं पी और मेरी बात ध्यान से सुनी। मैंने इन चार प्यारे दोस्तों के साथ अपने दिल की सच्ची इच्छा साझा की: उनकी आत्माओं का उद्धार। मैंने यह भी बताया कि मेरी पत्नी को उनके लिए मेरी इस गहरी इच्छा के बारे में पता है। मैंने दोस्तों को एक घटना के बारे में बताया—मेरी शादी के कुछ समय बाद की बात है—जब मैं रात 3 बजे घर लौटा तो देखा कि मेरी पत्नी अभी भी जाग रही थी; हमने सुबह 6 बजे तक, पूरे तीन घंटे तक, उनकी आत्माओं के उद्धार की अपनी दिली इच्छा के बारे में बात की। मैंने यह भी बताया कि मैं उनके लिए प्रार्थना करने की आदत कैसे डालता हूँ और कैसे मैं जान-बूझकर उनसे नम्र और टूटे हुए दिल के

साथ मिलता हूँ। इसके अलावा, मैंने उन्हें बताया कि उनसे अलग होने के बाद, अक्सर अकेले घर लौटते समय मैं बहुत रोता था। एक तरह से, खाने-पीने के दौरान ऐसी बातें करने से माहौल आसानी से खराब हो सकता था। फिर भी, मेरे दोस्तों ने मेरे दिल की बात ध्यान से सुनी। पहले शायद अलग-अलग तरह की प्रतिक्रियाएँ होतीं, लेकिन कल उन्होंने मेरी दिल की इच्छा को गंभीरता से सुना। मैंने उनसे कहा कि हम यीशु में हमेशा के लिए दोस्त बन सकते हैं, और मैंने ऐसी ही कभी न खत्म होने वाली दोस्ती की अपनी इच्छा उनके साथ साझा की। मैंने यह भी कहा कि मौत की सच्चाई को देखते हुए, हमारे पास ज़्यादा समय नहीं बचा है। मैंने बस यही उम्मीद जताई कि वे जल्द ही यीशु पर विश्वास करेंगे और मेरे साथ मिलकर प्रभु की कलीसिया की सेवा करेंगे; मैंने उन्हें बताया कि यह मेरे दिल की सबसे गहरी इच्छा थी। फिर, मैंने उन्हें "न्यू लाइफ़ फेस्टिवल" के लिए आमंत्रित किया—जो इस शनिवार शाम 6 बजे मेरी कलीसिया में होने वाला एक प्रचार कार्यक्रम है—और उनसे आने का आग्रह किया। मैं आज उनसे फिर पूछने की योजना बना रहा हूँ।

कल, एक दोस्त के घर के सामने सबको छोड़ने के बाद (हमने अपनी कारें वहीं छोड़ दी थीं और मेरी कार में यात्रा की थी), मैं घर लौट आया। जब मैं पहुँचा तो रात के लगभग 10 बज रहे थे; बच्चे सो रहे थे, और मेरी पत्नी ने घर पर मेरा स्वागत किया। भले ही मैं दोस्तों के साथ देर तक बाहर रहा और अपनी पत्नी को एक बार भी फ़ोन नहीं किया, फिर भी—उनके लिए मेरे दिल की इच्छा को जानते हुए और यह समझते हुए कि मैं उनके साथ था—उसने जान-बूझकर मुझे फ़ोन नहीं किया। जब मैंने अपनी पत्नी के साथ दिन भर की बातें साझा कीं, तो मैंने उन पलों का ज़िक्र किया जब मुझे लगा कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाएँ सुन रहे हैं और उनका जवाब दे रहे हैं। एक दोस्त ने बताया कि परमेश्वर ने उसके जीवन में एक ईसाई जूनियर सहकर्मी को भेजा था, और उसने वादा किया था कि जब उसकी एक बड़ी समस्या हल हो जाएगी तो वह कलीसिया जाना शुरू कर देगा। एक और दोस्त ने नई नौकरी शुरू की थी जहाँ उसका बॉस कलीसिया का एक डीकन था जो लगातार उसे सुसमाचार सुनाता रहता था। एक तीसरे दोस्त ने बताया कि उसकी तीन साल की बेटी, जो कलीसिया द्वारा चलाए जाने वाले किंडरगार्टन में जाती थी, नर्सरी राइम्स के बजाय भजन या सुसमाचार गीत गाते हुए घर आती थी, जिससे उसने तय किया कि उसे अपनी बेटी को कलीसिया भेजना चाहिए। कल मुझे यह भी पता चला कि एक और दोस्त के परिवार के सदस्य सच्चे कैथोलिक बन गए थे। इस बारे में सोचते हुए, मुझे एहसास हुआ कि हालाँकि मैंने बीस से ज़्यादा सालों तक अपने दोस्तों के उद्धार के लिए प्रार्थना की थी—अक्सर यह सोचते हुए कि "कब तक?" (भजन संहिता 13:1-2)—परमेश्वर पिता वास्तव में मेरे दिल की इच्छा से निकली प्रार्थनाओं का जवाब शुरू से

ही दे रहे थे। आज सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, भजन संहिता 20:4 और 21:2 पर ध्यान करते हुए, मुझे यह बात और भी साफ़ और पक्के तौर पर समझ आई। मुझे एहसास हुआ कि मेरे परमेश्वर एक ऐसे पिता हैं जो मेरे दिल की गहरी इच्छाओं से निकली प्रार्थनाओं को कभी ठुकरा नहीं सकते। मुझे एहसास हुआ कि जो परमेश्वर मुझसे इतना प्यार करते हैं—यहाँ तक कि उन्होंने अपने इकलौते बेटे यीशु को क्रूस पर चढ़ने दिया—वे एक ऐसे प्यार करने वाले पिता हैं जो मेरे दिल की प्रार्थनाओं को 'ना' नहीं कह सकते। उनके वचन पर ध्यान करने और प्रार्थना के ज़रिए उस पिता के दिल को महसूस करते हुए मेरा दिल गहराई से भर आया। परमेश्वर के प्यार भरे दिल का अनुभव करते हुए मुझे शुक्रगुज़ारी और सुकून महसूस हुआ; वे ऐसे परमेश्वर हैं जो मेरे दिल की गहरी इच्छाओं से निकली प्रार्थनाओं को कभी ठुकरा नहीं सकते। मैं समझ नहीं पा रहा था कि परमेश्वर मुझ जैसे मामूली इंसान से इतना गहरा प्यार क्यों करेंगे; मैं बस परमेश्वर-पिता का सहारा लेना चाहता था। उनकी मौजूदगी में, मैंने सपने देखना शुरू किया—एक बहुत बड़ा सपना। यह सपना इंसानी क्षमता से परे था, जिसे सिर्फ़ परमेश्वर ही सच कर सकते थे। धीरे-धीरे यही सपना उनके सामने मेरी दिल से निकली प्रार्थना बन गया। मेरा सपना था कि परमेश्वर द्वारा दिए गए रिश्तों—जैसे मेरे कॉलेज के रूममेट, वे दोस्त जो यीशु पर विश्वास करने वाले थे, और दूसरे खास लोग—के ज़रिए एक शहर मसीह के प्रभाव में बदल जाए, ठीक वैसे ही जैसे कैल्विन ने जिनेवा को ईसाई शहर बनाया था। इस सपने में एक ऐसी कम्युनिटी बनाना शामिल था जो मसीह पर केंद्रित हो—जिसका आधार चर्च हो और जिसमें ईसाई स्कूल, अस्पताल, लॉ फ़र्म और बहुत कुछ हो—जहाँ प्रभु मसीह-केंद्रित सपनों वाले लोगों को तैयार करें और उन्हें परमेश्वर के राज्य को फैलाने के लिए दुनिया में भेजें। मैंने यह सपना पहली बार 1995 में कोरिया यात्रा के दौरान देखा था। अमेरिका लौटने पर, मैंने अपने कॉलेज के रूममेट्स को अपने चर्च बुलाया और उन्हें यह सपना बताया। हालाँकि, जैसे-जैसे साल बीतते गए और हम एक साझा सपने पर एकमत नहीं हो पाए, मैं निराश हो गया और हार मान ली, और आखिरकार इसके लिए दिल से प्रार्थना करना भी छोड़ दिया। फिर भी, सुबह की प्रार्थना सभाओं में, मैंने फिर से सपने देखना शुरू कर दिया है। हाल ही में, जब मैं इस सपने के बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ, तो मुझे अपने दिल में एक ज़बरदस्त जोश और उत्साह महसूस होता है। मैं खुद में एक बदलाव भी देख रहा हूँ: मेरी प्रार्थना की ज़िंदगी एक निष्क्रिय रवैये से बदलकर ज़्यादा सक्रिय और हिम्मत वाली होती जा रही है। इसकी वजह यह है कि अब मैं खुद पर, अपने कॉलेज के रूममेट्स या अपने हालात पर ध्यान देने के बजाय परमेश्वर पिता की ओर देखता हूँ। जैसे-जैसे परमेश्वर मुझे पिता के दिल को और गहराई से समझने में मदद करते हैं, मैं ज़्यादा उत्साह के साथ सपने देखने

और प्रार्थना करने लगा हूँ। चूँकि सिर्फ़ परमेश्वर ही इस बड़े सपने को पूरा कर सकते हैं, इसलिए मैं बस प्रार्थना करता हूँ। मैं सिर्फ़ उन्हीं से प्रार्थना करता हूँ, उस परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए जो मेरी आत्मा की सच्ची इच्छाओं को कभी ठुकरा नहीं सकते। मैं प्रार्थना करता हूँ कि सिर्फ़ परमेश्वर की महिमा ही प्रकट हो।

"मेरे दिल की इच्छा यीशु जैसा बनने की है; उनकी छवि को अपनाने के लिए, मैं इस दुनिया की किसी भी चीज़ को बहुत कीमती नहीं मानता। मैं यीशु जैसा बनने के लिए तरसता हूँ—उसकी तरह जिसने मुझे छुटकारा दिलाया; इसी पल मेरे दिल में आ जाइए और अपनी छवि से मुझ पर अपनी मुहर लगा दीजिए।" (भजन 505, पद 1 और कोरस)।

“प्रभु की शक्ति”

[भजन संहिता 21]

हाल ही में, गॉस्पेल गीत “वियरी एंड वॉर्न” (जिसे “यू आर माई सन” के नाम से भी जाना जाता है) अक्सर मेरे मन में आता है। मैं खुद को चुपचाप गाते हुए पाता हूँ, “जब थक-हारकर, निराश और गिरे हुए हों, और उठने की कोई शक्ति न बची हो...” ऐसा लगता है कि हमारे जीवन में बहुत सी ऐसी चीजें हैं जो हमें थका देती हैं, कमजोर कर देती हैं और निराश कर देती हैं। जब मैं उन साथी विश्वासियों को देखता हूँ जिन्हें परमेश्वर ने हाल ही में मेरे जीवन में लाया है, तो मैं उन्हें विभिन्न कठिनाइयों से जूझते हुए देखता हूँ। तो फिर, जब हम इतने थके और कमजोर हों तो हमें क्या करना चाहिए? मेरा मानना है कि हमें उस परमेश्वर से मिलना चाहिए जो—जैसा कि गीत में बताया गया है—चुपचाप पास आता है, हमारा हाथ थामता है और हमसे बात करता है। हमें परमेश्वर पिता का अनुभव करने की आवश्यकता है जो अपने उन बच्चों के पास आते हैं जो थकान से गिर पड़े हैं, मजबूती से हमारे हाथ थामते हैं और अपने वचन के माध्यम से हमें उठाते हैं।

आज के अंश, भजन संहिता 21:1 में, हमें “प्रभु की शक्ति” वाक्यांश मिलता है। जब हम जीवन की उन विपरीत परिस्थितियों से कमजोर हो जाते हैं जो हमें थका देती हैं, तो हमें प्रभु की शक्ति से भरे जाने के कार्य का अनुभव करना चाहिए। इसके लिए, मैं प्रभु की शक्ति के चार पहलुओं पर विचार करना चाहूँगा।

पहला, प्रभु की शक्ति “प्रार्थना का उत्तर मिलने की शक्ति” है।

भजन संहिता 21:2 को देखें: “तूने उसे उसके मन की इच्छा पूरी करने दी है और उसके होठों की विनती को अस्वीकार नहीं किया है (सेलाह)।” यहाँ, भजनकार दाऊद “राजा” (जिसका उल्लेख पद 1 में है) की प्रार्थना के बारे में बात कर रहा है। दूसरे शब्दों में, दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा किया और उनसे प्रार्थना की। वह वास्तव में एक “अनमोल राजा” (पार्क युन-सन) था। इस अनमोल राजा ने परमेश्वर से प्रार्थना की और अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर पाया। उसकी प्रार्थनाओं में “उसके मन की इच्छा” और “उसके होठों की विनती” (पद 2) शामिल थी। इन इच्छाओं और विनतियों को दो तरह से समझा जा सकता है:

(1) पहली प्रार्थना विनती युद्ध में विजय के लिए थी।

भजन संहिता 21:3 को देखें: “तूने भरपूर आशीषों के साथ उसका स्वागत किया और उसके सिर पर शुद्ध सोने का मुकुट रखा।” यहाँ, "शुद्ध सोने का मुकुट" उस मुकुट की ओर इशारा करता है जो किसी गैर-यहूदी राष्ट्र (शायद अम्मोनियों) को हराने और जीतने के बाद युद्ध की लूट के तौर पर लिया गया था (पार्क युन-सन)। असल में, दाऊद के भजन 21 लिखने के पीछे का मकसद इस जीत के लिए धन्यवाद देना था (पार्क युन-सन)। दाऊद ने पहले भजन 20:5 में प्रार्थना के जवाब में मिली जीत का जश्न मनाते हुए एक कविता लिखी थी: "हम तेरी जीत पर खुशी से चिल्लाएंगे और अपने परमेश्वर के नाम पर अपने झंडे उठाएंगे। प्रभु तेरी सभी प्रार्थनाओं को पूरा करे।"

(2) जीत के बाद, दूसरी प्रार्थना की विनती "जीवन" या "हमेशा की लंबी उम्र" के लिए थी।

भजन 21:4 देखें: "उसने तुझसे जीवन मांगा, और तूने उसे वह दिया—दिनों की लंबाई, हमेशा-हमेशा के लिए।"

तो फिर, प्रार्थना का जवाब मिलने की ताकत क्या है? यह खुशी और आनंद है। भजन 21:1 देखें: "हे प्रभु, राजा तेरी ताकत में खुश होता है; वह तेरी मुक्ति में कितना ज़्यादा आनंदित होता है!" यूहन्ना 16:24 की आयत पर भी गौर करें जो हमें प्रार्थना का जवाब मिलने का भरोसा दिलाती है: "अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा है। मांगो, और तुम्हें मिलेगा, ताकि तुम्हारी खुशी पूरी हो सके।" हमें नहेमायाह 8:10 के शब्दों को याद रखना चाहिए:

"...प्रभु का आनंद ही तुम्हारी ताकत है..."। हमारी ताकत उस परमेश्वर में खुशी मनाने में है जो हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देता है। हमें इस सच्चाई को अपने दिल के करीब रखना चाहिए।

दूसरी बात, प्रभु की ताकत "मुक्ति की शक्ति" है।

भजन 21:5 देखें: "तेरी मुक्ति में उसकी महिमा महान है; तूने उसे सम्मान और वैभव दिया है।" दाऊद ने माना कि युद्ध में उसकी जीत "तेरी मुक्ति के ज़रिए" मिली। दूसरे शब्दों में, उसने माना कि यह परमेश्वर की बचाने वाली शक्ति थी जिसने उसे जीत दिलाई। तो फिर, इस बचाने वाली शक्ति के ज़रिए परमेश्वर ने दाऊद को क्या आशीष दी? परमेश्वर ने दाऊद की महिमा बढ़ाई और उसे सम्मान और वैभव से नवाज़ा। नतीजतन, दाऊद परमेश्वर द्वारा बहुत ज़्यादा आशीष पाया हुआ व्यक्ति बन गया, जो प्रभु की उपस्थिति में खुशी और आनंद मनाता था (आयत 6)।

दाऊद की तरह, हमें भी परमेश्वर की बचाने वाली शक्ति का अनुभव करना चाहिए, उसकी भरपूर आशीषों का आनंद लेना चाहिए और उसकी उपस्थिति में खुश होना चाहिए। ऐसा करने के लिए, जब हम अपनी ज़िंदगी की मुश्किलों और संकटों की वजह से थक-हार जाते हैं और टूटने की कगार पर होते हैं, तो हमें अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर की शरण में जाना चाहिए। हमें उनसे पुकार लगानी चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर—जो हमारे दिल की इच्छाओं और हमारी प्रार्थनाओं को पूरा करना चाहते हैं—हमारी ज़िंदगी में उद्धार की शक्ति दिखाते हैं, जिससे हमारी महिमा बढ़ती है और हमें सम्मान और गौरव मिलता है। ऐसा करने से, हम प्रभु की उपस्थिति में आनंदित और खुश हो पाएँगे, क्योंकि उन्होंने हमें उद्धार दिया है।

तीसरी बात, प्रभु की शक्ति "प्रेम और दया की शक्ति" है।

भजन संहिता 21:7 को देखिए: "क्योंकि राजा का भरोसा प्रभु पर है, और परमप्रधान की दया के कारण वह कभी नहीं डगमगाएगा।" दाऊद एक ऐसे राजा थे जो परमेश्वर पर भरोसा करते थे। हालाँकि, जब किसी के पास शक्ति नहीं होती तो परमेश्वर पर भरोसा करना अपेक्षाकृत आसान होता है, लेकिन जब किसी के पास बहुत प्रभाव हो—जैसा कि राजा दाऊद के पास था—तो ऐसा करना मुश्किल होता है, क्योंकि इसमें अहंकार का

बहुत बड़ा जोखिम होता है (पार्क युन-सन)। आखिरकार, चूँकि दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा किया और उनकी दया से शक्ति प्राप्त की, इसलिए वे अडिग रहे; दूसरे शब्दों में, वे परमेश्वर की दया के कारण मज़बूती से खड़े रहे।

फिर भी, हम कभी-कभी क्यों डगमगा जाते हैं? इसका कारण उस स्थिति में छिपा है जो तब आती है जब हम मुश्किलों के बीच—जब हम थके हुए और टूटने की कगार पर होते हैं—सच्चे मन से परमेश्वर को पुकारते हैं और प्रार्थना का उत्तर पाकर छुटकारा (उद्धार) पाते हैं। ठीक वैसे ही जैसे 'न्यायियों' के युग में इस्राएली अपने पापों का परिणाम भुगतते हुए परमेश्वर को पुकारते थे—जिससे परमेश्वर ने उनके लिए न्यायियों को खड़ा किया और उन्हें छुटकारा दिया—लेकिन बाद में वे फिर से पाप में पड़ जाते थे; वैसे ही हम भी अक्सर मुश्किल समय में परमेश्वर को पुकारते हैं और प्रार्थनाओं के उत्तर में बचाव पाते हैं; फिर भी, पिता के प्रेम और दया को न समझ पाने के कारण, हम अपने दिलों को कठोर कर लेते हैं और एक बार फिर उनकी आज्ञा का उल्लंघन करते हैं। यह एक ऐसे बच्चे की तरह है जो पिता की बात न मानकर गलत काम करने का परिणाम भुगतने के बाद दर्द से रोता है; पिता, दया से भरकर, बच्चे को बचाता है और उसे गले लगाता है, जिससे वह उस प्रेम को महसूस कर सके। इसी तरह, परमेश्वर पिता से छुटकारा और प्रार्थनाओं का उत्तर पाने के बाद, हमें उनकी गोद में विश्राम करना चाहिए और अडिग रहने के लिए उनकी दया का अनुभव करना चाहिए। जो बच्चा अपने पिता का प्यार महसूस नहीं कर पाता, वह मज़बूती से खड़ा नहीं रह सकता। हमारी मज़बूती उस प्यार और दया पर टिकी है जो परमेश्वर उन लोगों को देता है जो उस पर भरोसा करते हैं। परमेश्वर ने दाऊद को—जिसे उसने राजा चुना, जो उसके दिल के बहुत करीब था और जिससे वह प्यार करता था—इतनी मज़बूती से स्थापित किया कि कोई उसे नुकसान नहीं पहुँचा सका। इसी तरह, हमारी मज़बूती भी पूरी तरह से प्रभु पर भरोसा करने और उसके प्यार में बने रहने से आती है। जब हम सबसे ऊँचे परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, तो वह हमें ऊपर उठाता है और हमारी रक्षा करता है ताकि कोई भी व्यक्ति या शक्ति हमें नुकसान न पहुँचा सके, और हम अडिग रह सकें।

चौथी और आखिरी बात, प्रभु की शक्ति "क्रोध की शक्ति" है। भजन संहिता 21:9 को देखिए: "जब तू क्रोधित होगा, तो तू उन्हें जलती हुई भट्टी जैसा बना देगा; प्रभु अपने क्रोध में उन्हें निगल जाएगा, और आग उन्हें भस्म

कर देगी।" परमेश्वर ने दाऊद की प्रार्थना सुनी—जिससे वह प्यार करता था—और उसे बचाने के लिए दाऊद के दुश्मनों पर अपना क्रोध बरसाया। परमेश्वर ने दाऊद के दुश्मनों पर अपना क्रोध कैसे बरसाया?

(1) परमेश्वर ने दाऊद के सभी दुश्मनों का पता लगाया।

भजन संहिता 21:8 को देखिए: "तेरा हाथ तेरे सभी दुश्मनों को ढूँढ़ निकालेगा; तेरा दाहिना हाथ उन्हें ढूँढ़ निकालेगा जो तुझसे नफ़रत करते हैं।" इसका मतलब है कि परमेश्वर खुद दाऊद के सभी दुश्मनों को ढूँढ़ेगा और उनका पता लगाएगा। तो फिर, कौन परमेश्वर से छिप सकता है?

(2) परमेश्वर ने दाऊद के सभी दुश्मनों को नष्ट कर दिया।

भजन संहिता 21:9 को देखिए: "जब तू क्रोधित होगा, तो तू उन्हें जलती हुई भट्टी जैसा बना देगा; प्रभु अपने क्रोध में उन्हें निगल जाएगा, और आग उन्हें भस्म कर देगी।" परमेश्वर ने दाऊद के उन सभी दुश्मनों को, जिनका उसने पता लगाया था, अपने क्रोध में निगल लिया और खत्म कर दिया।

(3) परमेश्वर ने दाऊद के दुश्मनों की संतानों को भी नष्ट कर दिया।

भजन संहिता 21:10 को देखिए: "तू उनकी संतानों को धरती से और उनकी वंशजों को इंसानों के बीच से मिटा देगा।" इसका मतलब है कि परमेश्वर न केवल उन दुश्मनों को नष्ट करता है जो उसका विरोध करते हैं, सताते हैं और उसे मारना चाहते हैं जिससे वह खुश होता है, बल्कि उनकी संतानों को भी नष्ट कर देता है। (4) परमेश्वर ने दाऊद के सभी दुश्मनों की कोशिशों को नाकाम कर दिया। भजन संहिता 21:11 को देखिए: “क्योंकि उन्होंने आपके विरुद्ध बुराई की योजना बनाई; उन्होंने एक ऐसी चाल चली जिसे वे पूरा नहीं कर सके।” अगर परमेश्वर का साथ न हो, तो कोई योजना कैसे सफल हो सकती है? और जो लोग राजा दाऊद के विरुद्ध साजिश रचते हैं—जिन्हें स्वयं परमेश्वर ने स्थापित किया था—वे कैसे सफल हो सकते हैं?

जो लोग प्रभु की शक्ति का अनुभव करते हैं, वे परमेश्वर की सामर्थ्य की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते। दाऊद ऐसे ही व्यक्ति थे। प्रभु की प्रार्थनाओं का उत्तर, उद्धार, प्रेमपूर्ण दया और क्रोध की शक्ति का अनुभव करने के बाद, उन्होंने परमेश्वर की सामर्थ्य की प्रशंसा की: "हे प्रभु, अपनी ही शक्ति में ऊंचे हो! हम आपकी सामर्थ्य के गीत गाएंगे और प्रशंसा करेंगे" (पद 13)। सचमुच, जब हम थके-हारे और निराशा में डूबे होते हैं—उठने की कोई शक्ति नहीं बचती—और हम परमेश्वर को पुकारते हैं, और प्रार्थना का उत्तर, उद्धार, उनकी प्रेमपूर्ण दया और हमारे शत्रुओं के विरुद्ध उनके क्रोध की शक्ति का अनुभव करते हैं, तो हम प्रभु की शक्ति और सामर्थ्य की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते। हालेलुयाह!

जब मदद करने वाला कोई न हो

[भजन संहिता 22:1–11]

आपकी ज़िंदगी में वह कौन-सा पल था जब आपने सबसे ज़्यादा तकलीफ़ महसूस की? उस समय आपके मन में क्या विचार आए? शायद एक विचार यह भी आया हो कि "मुझे कोई नहीं समझता।" क्योंकि हमें लगता है कि कोई हमें नहीं समझता, इसलिए हम यह भी मान लेते हैं कि हमारी मदद करने वाला कोई नहीं है। अगर ऐसे विचार मन में आएं, तो हमें क्या करना चाहिए? सुबह की प्रार्थना सभाओं में मैं अक्सर यह गीत गाता हूँ: "मैं प्रभु को किसी भी चीज़ के बदले नहीं छोड़ूँगा; मैं किसी और कृपा की चाह नहीं करूँगा। सिर्फ़ प्रभु ही मेरी ज़िंदगी में मददगार हैं; मैं उनका चेहरा देखने के लिए तरसता हूँ। हे प्रभु, मैं पूरे दिल और जान से आपसे प्यार करता हूँ; मेरी इच्छा है कि मैं परमेश्वर का एक वफ़ादार दोस्त बनूँ।" जब मेरा दिल भारी होता है और मैं दर्द में होता हूँ, तो इन बोलों को गाते हुए मेरा मन भर आता है: "मैं किसी और कृपा की चाह नहीं करूँगा; सिर्फ़ प्रभु ही मेरी ज़िंदगी में मददगार हैं; मैं उनका चेहरा देखने के लिए तरसता हूँ।" जैसे दर्द में डूबा बच्चा अपने माता-पिता का चेहरा देखकर सुकून और शांति पाता है, वैसे ही हम—परमेश्वर की संतान होने के नाते—गहरी तकलीफ़ में सुकून और हिम्मत पाते हैं जब हमारा दिल प्रभु का चेहरा देखने की चाह और उम्मीद से भरा होता है, क्योंकि वही एकमात्र ऐसे हैं जो हमारी मदद कर सकते हैं।

भजन संहिता 22:11 में, भजनकार दाऊद कहते हैं, "मुझसे दूर मत होइए, क्योंकि मुसीबत पास है और मदद करने वाला कोई नहीं है।" बड़ी मुसीबत का सामना करते हुए, दाऊद ने माना कि कोई और उनकी मदद नहीं कर सकता, और उन्होंने पूरी तरह से प्रभु पर भरोसा किया। आज, भजन संहिता 22:1–11 पर ध्यान देते हुए, मैं यह पूछना चाहता हूँ: जब हमारी मदद करने वाला कोई न हो, तो हमें क्या करना चाहिए? हमें प्रभु पर भरोसा करना चाहिए। भजन संहिता 22:4 को देखिए: "हमारे पूर्वजों ने आप पर भरोसा किया; उन्होंने भरोसा किया, और आपने उन्हें बचाया।" तो, हमें प्रभु पर कैसे भरोसा करना चाहिए? हम तीन बातों पर विचार कर सकते हैं।

पहली बात, जो लोग प्रभु पर भरोसा करते हैं, वे हार माने बिना उनसे पुकार लगाते हैं। भजन संहिता 22:1–2 को देखिए: "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया है? तू मुझे बचाने से, मेरी पीड़ा भरी पुकार से इतना दूर क्यों है? हे मेरे परमेश्वर, मैं दिन में पुकारता हूँ, पर तू उत्तर नहीं देता; रात में भी पुकारता हूँ, पर मुझे चैन नहीं मिलता।" दाऊद की प्रार्थना के समय हालात क्या थे? उसने बहुत ज़्यादा दुख के बीच परमेश्वर को पुकारा। दाऊद ने परमेश्वर के क्रोध का बोझ महसूस करते हुए भी उसे पुकारा (पार्क युन-सन)। इसके अलावा, उसकी प्रार्थना लगातार चलती रही; उसने दिन में प्रभु को पुकारा और रात में भी चुप नहीं रहा। दाऊद ने प्रार्थना का जीवन नहीं छोड़ा, यहाँ तक कि उस मुश्किल दौर में भी जब लंबे समय तक उसकी प्रार्थनाओं का कोई जवाब नहीं मिला (पार्क युन-सन)। भले ही ऐसा लगा कि परमेश्वर उसकी प्रार्थनाओं पर ध्यान नहीं दे रहा है (पद 1), फिर भी दाऊद डटा रहा और हार माने बिना परमेश्वर को पुकारता रहा। जब उसे लगा कि परमेश्वर ने उसे त्याग दिया है या उससे दूरी बना ली है और मदद नहीं कर रहा है, तब भी दाऊद ने हार नहीं मानी; वह परमेश्वर को पुकारता रहा। जब प्रार्थनाओं का जवाब नहीं मिलता, तो ऐसा लग सकता है कि परमेश्वर प्रार्थना करने वाले से दूर हो गया है। लेकिन असल में, परमेश्वर कभी भी सच्चे विश्वास करने वाले को नहीं छोड़ता। वह बस तुरंत जवाब नहीं देता ताकि विश्वास करने वाले की प्रार्थना और ज़्यादा सच्ची और गहरी हो सके (पार्क युन-सन)।

हमें हार नहीं माननी चाहिए; हमें प्रभु को पुकारते रहना चाहिए। जब हम इतना ज़्यादा दुख सह रहे हों कि लगे कि परमेश्वर हमसे दूर हो गया है या उसने हमें त्याग दिया है—और जब हम इतने थक गए हों कि बोझ असहनीय लगे—तब भी हमें परमेश्वर को पुकारना नहीं छोड़ना चाहिए। हमें सिर्फ़ इसलिए प्रार्थना करना बंद नहीं करना चाहिए क्योंकि परमेश्वर का जवाब देर से आ रहा है, और न ही तब छोड़ना चाहिए जब लगे कि वह हमारी कराहों को भी नज़रअंदाज़ कर रहा है। हमें प्रार्थना में क्यों डटे रहना चाहिए? क्योंकि परमेश्वर निश्चित रूप से हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देगा। भजन संहिता 22:3 को देखिए: "फिर भी तू पवित्र है, तू इस्राएल की स्तुति के बीच विराजमान है।" दाऊद ने पद 1 और 2 की बातों के बाद यह पद क्यों लिखा? उसने ऐसा क्यों किया—पहले दो पदों में यह दुख ज़ाहिर करने के बाद कि परमेश्वर दूर हो गया है और उसने उसे त्याग दिया है, और उसकी पुकार का कोई जवाब नहीं दिया—अचानक पद 3 में परमेश्वर की स्तुति की और उसकी पवित्रता को माना? ऐसा इसलिए था क्योंकि डेविड को भरोसा था कि पवित्र परमेश्वर उसकी प्रार्थना का जवाब देंगे। स्तुति करना उस काम के बारे में गाने जैसा है जो परमेश्वर ने हमारे जीवन में किया है। क्योंकि डेविड को यकीन था कि

परमेश्वर उसकी प्रार्थना का जवाब देंगे, इसलिए उसने उस प्रभु की पवित्रता को माना जो अपने लोगों की स्तुति के बीच वास करते हैं। डेविड के हिम्मत के साथ प्रार्थना करने और हिम्मत न हारने का एक कारण, मुश्किल समय में भी, यह विश्वास था कि परमेश्वर पवित्र हैं और आखिरकार संतों की प्रार्थनाओं का जवाब देंगे (पार्क युन-सन)। हमारे पवित्र प्रभु, जो अपने लोगों की स्तुति के बीच वास करते हैं, वही परमेश्वर हैं जो हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देते हैं और हमें उनके पवित्र नाम की स्तुति करने में सक्षम बनाते हैं।

दूसरी बात, जो लोग प्रभु पर भरोसा करते हैं, वे उस बचाने वाली कृपा पर विचार करते हैं जिसका अनुभव उन्होंने अतीत में किया है।

भजन संहिता 22:4–5 पर विचार करें: "हमारे पूर्वजों ने आप पर भरोसा किया; उन्होंने भरोसा किया, और आपने उन्हें बचाया। उन्होंने आपको पुकारा और बचाए गए; उन्होंने आप पर भरोसा किया और उन्हें शर्मिंदा नहीं होना पड़ा।" हम बहुत व्यस्त जीवन जीते हैं। अपने लक्ष्यों की ओर मेहनत से बढ़ते हुए, हम अक्सर रुककर अतीत को देखने में चूक जाते हैं। हम बहाने बना सकते हैं कि हमारे पास ऐसा करने का समय नहीं है। फिर भी, जो लोग प्रभु पर भरोसा करते हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि कैसे रुकें और अतीत पर विचार करें। डेविड एक बुद्धिमान व्यक्ति था जो जानता था कि अतीत को कैसे देखना है। वह अतीत के घावों और दर्द पर ध्यान केंद्रित करके निराशा या नाराजगी में नहीं डूबा; इसके बजाय, उसने उस परमेश्वर को याद किया—स्मरण किया—जिसने इज़राइल के पूर्वजों को बचाया था, और यह पक्का विश्वास पाया कि "जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वे बचाए जाते हैं।" खास तौर पर, डेविड ने इस बात को याद किया कि इज़राइल के पूर्वजों को तब उद्धार मिला जब उन्होंने प्रभु को पुकारा (पद 5)। नतीजतन, डेविड ने भी अपने दुख में परमेश्वर को इस भरोसे के साथ पुकारा कि उसकी प्रार्थना का जवाब दिया जाएगा। उसे यह भी याद था कि उसके पूर्वजों को न केवल प्रभु पर भरोसा करने से उद्धार मिला, बल्कि उन्हें "शर्मिंदा भी नहीं होना पड़ा" (पद 5)। जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वे निराश नहीं होते।

हमें समझदारी से अतीत को देखना आना चाहिए। मिस्र से निकलने के समय इज़राइलियों की तरह, जब हम दुख, मुश्किलों या संकटों का सामना करते हैं, तो हमें अपने अतीत—जैसे मिस्र में गुलामी के दिनों—के बारे में

सोचकर परमेश्वर या दूसरों के प्रति नाराजगी का पाप नहीं करना चाहिए। इसके बजाय, जब हम दर्द, मुश्किलों या संकट में हों, तो हमें परमेश्वर की ओर देखना चाहिए। हमें उस उद्धारकर्ता परमेश्वर पर मनन करना चाहिए जिसने हमें अतीत में ऐसे संकटों और मुश्किलों से बचाया था। ऐसा करते समय, संकट भरे हालात से दबने के बजाय, हमें अपने विचारों, भावनाओं और इच्छाओं को अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर के अधीन करना चाहिए। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा, "यह निश्चित है कि जो संत हमसे पहले गुज़रे हैं, उनकी आध्यात्मिक यात्राओं पर मनन करने से विश्वास में हिम्मत मिलती है।" बहुत ज़्यादा तकलीफ़ के बीच, दाऊद ने न केवल परमेश्वर पर भरोसा करके उनसे गुहार लगाई, बल्कि उन्हें इस बात का भरोसा और विश्वास की हिम्मत भी मिली कि कैसे परमेश्वर ने इज़राइल के पूर्वजों को छुटकारा दिलाने की कृपा की थी। इसके अलावा, यह याद करते हुए कि जब उनके पूर्वजों ने परमेश्वर पर भरोसा किया तो वे कभी निराश नहीं हुए, दाऊद ने—अपनी भारी तकलीफ़ में परमेश्वर पर भरोसा करते हुए और उनसे विनती करते हुए—पाया कि वह भी निराश नहीं हुआ; बल्कि, उसे उद्धार का भरोसा मिला।

आखिर में, तीसरी बात यह है कि जो लोग प्रभु पर भरोसा करते हैं, वे किसी भी स्थिति में सच्चा विश्वास बनाए रखते हैं।

भजन संहिता 22:6 पर विचार करें: "पर मैं तो कीड़ा हूँ, मनुष्य नहीं; सब लोग मेरा अपमान करते हैं और मुझसे नफ़रत करते हैं।" दाऊद जिस स्थिति का सामना कर रहा था, उसमें बुरे लोगों द्वारा सताया जाना शामिल था, जो उसे "कीड़े" जितना तुच्छ समझते थे (पार्क युन-सन)। दाऊद बहुत परेशान था क्योंकि उसके दुश्मन उसके विश्वास का मज़ाक उड़ा रहे थे और वह उनकी नफ़रत का पात्र बन गया था (पद 6-8) (पार्क युन-सन)। उसके दुश्मन उसका मज़ाक उड़ाते थे, "अपने होंठ सिकोड़ते और सिर हिलाते हुए कहते थे, 'वह यहोवा पर भरोसा करता है; तो वह उसे छुड़ाए! वह उसे बचाए, क्योंकि वह उससे खुश है!'" (पद 7-8)। किसी तरह, दाऊद द्वारा सहे गए इस मज़ाक से यीशु द्वारा क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय सहे गए ताने याद आते हैं—जब लोगों ने दूसरों को बचाने के बावजूद खुद को न बचा पाने के लिए उनका मज़ाक उड़ाया था।

ऐसे हालात में भी, दाऊद ने सिर्फ़ प्रभु पर भरोसा किया। कृपया आज का वचन देखें, भजन संहिता 22:9–10: “फिर भी तू ही है जिसने मुझे माँ के गर्भ से निकाला; तूने ही मुझे माँ की छाती पर भरोसा करना सिखाया। जन्म

से ही मैं तुझ पर निर्भर रहा हूँ; माँ के गर्भ से ही तू मेरा परमेश्वर रहा है।" "भरोसा करना सिखाया" और "तुझ पर निर्भर रहा" (खुद को सौंपना/समर्पित करना) जैसे शब्दों से हमें विश्वास का असली मतलब सीखना चाहिए। यह बस इतना है: "विश्वास का मतलब है परमेश्वर पर भरोसा करना, और साथ ही, उनके प्रति समर्पण (खुद को उन्हें सौंपना)" (पार्क युन-सन)। "समर्पण के बिना विश्वास पक्का विश्वास नहीं है" (पार्क युन-सन)। अगर कोई परमेश्वर पर भरोसा करने का दावा तो करता है लेकिन खुद को उन्हें नहीं सौंपता, तो वह सच्चा विश्वास नहीं है। हालाँकि, दाऊद मानता है कि वह जवानी से ही प्रभु पर विश्वास करने लगा था और उन पर भरोसा करके और खुद को उन्हें समर्पित करके जीया (वचन 10)। यह कितना सुंदर विश्वास है! जन्म से ही परमेश्वर को समर्पित होने और सिर्फ़ उन पर भरोसा करके जीने के कारण, दाऊद परमेश्वर पर और भी ज़्यादा भरोसा और समर्पण की भावना दिखाता है, भले ही वह अभी बहुत ज़्यादा दुख झेल रहा हो। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "अगर हमें प्रभु के प्रति अपने समर्पण का पक्का भरोसा है, तो हम इस यकीन के साथ प्रार्थना कर सकते हैं कि हमें परमेश्वर का उद्धार और अनुग्रह मिलेगा। जो व्यक्ति परमेश्वर पर भरोसा किए बिना उनकी मदद चाहता है, वह उस व्यक्ति जैसा है जो डॉक्टर को अपना शरीर सौंपे बिना सर्जरी से बीमारी ठीक करवाना चाहता है।" हमें परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखना चाहिए और उन पर निर्भर रहकर और खुद को उन्हें समर्पित करके उनसे अपनी विनती करनी चाहिए। आज, मैं भजन संहिता 22:1 के पहले हिस्से पर फिर से सोचता हूँ: "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया है?" दाऊद की यही पुकार यीशु के क्रूस पर कहे गए शब्दों में भी सुनाई देती है: "... 'एली, एली, लेमा सबक्तनी?' (जिसका मतलब है, 'हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया है?')" (मरकुस 15:34)। परमेश्वर पिता ने अपने बेटे यीशु की प्रार्थना से अपना मुँह मोड़ लिया, जबकि यीशु ने ज़ोर से उन्हें पुकारा था। पिता परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को "बचाया" नहीं। परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को त्याग दिया—जिन्होंने पिता पर भरोसा किया था और उनकी इच्छा पूरी करने के लिए खुद को मृत्यु तक समर्पित कर दिया था। पिता परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया? ऐसा इसलिए था क्योंकि वे हमें त्यागना नहीं चाहते थे—भले ही हम त्यागे जाने के ही लायक थे—बल्कि वे हमें बचाना चाहते थे, क्योंकि हम अनंत मृत्यु का सामना कर रहे थे और हमारी मदद करने वाला कोई नहीं था। पिता परमेश्वर ने यीशु को इसलिए त्याग दिया ताकि जब हम उनके नाम से प्रार्थना करें, तो हमारी प्रार्थनाएँ सुनी जा सकें। पिता परमेश्वर ने यीशु को क्रूस पर इसलिए त्याग दिया ताकि वे हमें सच्चा विश्वास दे सकें। यही परमेश्वर की कृपा और प्रेम है।

“मेरी मदद के लिए जल्दी आओ”

[भजन संहिता 22:12–21]

जब मुसीबत पास हो और मदद करने वाला कोई न हो (भजन संहिता 22:11), तो हमें लग सकता है कि कोई हमें समझता नहीं है। ऐसे पलों में, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा व्यक्ति हमारे साथ हो जो हमें समझ सके। यह सच में एक अजीब बात है: यह मानना कि कोई हमें नहीं समझता और साथ ही किसी ऐसे व्यक्ति को खोजना जो समझ सके—यह हमारे स्वभाव को दिखाता है। यह दिखाता है कि हम इंसान कितने अकेलेपन के शिकार हो सकते हैं और कितने कमज़ोर हैं। फिर भी, उस अकेलेपन के बीच, हमें कम से कम एक बार खुद से पूछना चाहिए: "मेरे आस-पास कौन है? मेरे आस-पास किस तरह के लोग हैं?" अगर कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे हम बुला सकें या जिससे मिलकर अपना दिल खोल सकें, तो अपनी मुसीबत के बीच हम और भी ज़्यादा तकलीफ सहेंगे।

भजन संहिता 22:12–21 में भजनकार दाऊद के सामने यही स्थिति थी। वह ऐसी परिस्थितियों में था जहाँ अकेलेपन ने उसकी तकलीफ को और बढ़ा दिया था; उसके पास मदद के लिए कोई और नहीं था। उसके पास अकेले परमेश्वर के पास जाने के अलावा कोई चारा नहीं था। अपने बहुत ज़्यादा दर्द और परेशानी के बीच, उसके आस-पास के सभी लोग उसके दुश्मन थे (पद 12)। इसलिए, उसने परमेश्वर से—जो उसकी ताकत का स्रोत था—विनती की कि वह उसकी मदद के लिए जल्दी आए (पद 19)। आज, भजन संहिता 22:19 और "मेरी मदद के लिए जल्दी आओ" विषय पर ध्यान देते हुए, मैं उन ज़रूरी हालात पर विचार करना चाहता हूँ जिनके कारण दाऊद को मदद के लिए विनती करनी पड़ी और उस ज़रूरी प्रार्थना के स्वरूप पर बात करना चाहता हूँ, और फिर यह सोचना चाहता हूँ कि हम इन सीखों को अपने जीवन में कैसे लागू कर सकते हैं। हम दाऊद के सामने आई उस ज़रूरी स्थिति के दो पहलुओं पर विचार कर सकते हैं।

पहला, माहौल के नज़रिए से, दाऊद अपने दुश्मनों से घिरा हुआ था।

भजन संहिता 22:12 को देखिए: "बहुत से बैल मुझे घेरे हुए हैं; बाशान के ताकतवर बैल मुझे घेरे हुए हैं।" यहाँ जिन "बैलों" या "ताकतवर बैलों" का ज़िक्र है, वे दाऊद के विरोधी थे। दूसरे शब्दों में, दाऊद के दुश्मन ताकतवर थे—बाशान के बैलों की तरह—और ऐसे लोग थे जो नुकसान पहुँचाने में हिचकिचाते नहीं थे (पार्क युन-सन)। "बाशान के ताकतवर बैल" सबसे मोटे और बड़े मवेशियों को दर्शाते हैं (WBC)। जैसे बाशान के बैल और ताकतवर मवेशी शक्तिशाली, विशाल और खतरनाक जानवर होते हैं, वैसे ही दाऊद के दुश्मन उसे घेरे हुए थे (पद 12)। इसके अलावा, दाऊद ने अपने दुश्मनों को "कुत्ते" और "बुरी भीड़" (पद 16) कहा है। उसने बताया कि इस बुरे समूह ने उसे "घेरा" और "चारों ओर से घेर लिया," और उसके "हाथ-पैर छेद दिए।" यहाँ "कुत्ते" शब्द का मतलब ऐसे बुरे लोगों से है जो बेशर्म, अशुद्ध और दूसरों को नुकसान पहुँचाने वाले होते हैं (पार्क युन-सन); इन बुरे लोगों ने दाऊद को घेरा और उसे बहुत तकलीफ दी, ठीक वैसे ही जैसे यीशु के हाथ-पैर क्रूस पर कीलों से जड़े गए थे। भजन संहिता 17:9 में भी दाऊद दुश्मनों से घिरा हुआ था: "मुझे उन बुरे लोगों से बचा जो मुझ पर ज़ुल्म करते हैं, और उन जानलेवा दुश्मनों से जो मुझे घेरे हुए हैं।" शैतान की चाल बिल्कुल यही है। शैतान की रणनीति हमें—यानी परमेश्वर के लोगों को—चारों ओर से घेरने की है, ताकि धीरे-धीरे हमारी साँसें रुक जाएँ। लूका 19:43 में कहा गया है: "क्योंकि वे दिन तुम पर आएँगे जब तुम्हारे दुश्मन तुम्हारे चारों ओर एक घेरा बनाएँगे, तुम्हें घेर लेंगे और हर तरफ़ से बंद कर देंगे।" आखिर में, शैतान हमें घेरकर फँसा लेता है; वह हमें कैद करने के लिए चारों ओर दीवार जैसा घेरा बना देता है। एक बार जब हम फँस जाते हैं, तो वह हमें निगलने की कोशिश करता है (भजन संहिता 22:13)। दाऊद के दुश्मनों ने उसे घेरकर निगलने के इरादे से हमला किया, ठीक वैसे ही जैसे कोई दहाड़ता हुआ शेर करता है। इसीलिए प्रेरित पतरस हमें सलाह देता है: "होश में रहो और सावधान रहो; क्योंकि तुम्हारा दुश्मन शैतान दहाड़ते हुए शेर की तरह घूमता रहता है और ढूँढ़ता रहता है कि किसे निगल जाए" (1 पतरस 5:8)।

दूसरी बात, हम दाऊद की मुश्किल स्थिति को अंदरूनी और निजी नज़रिए से भी देख सकते हैं।

भजन संहिता 22:14–15 पर गौर करें: "मैं पानी की तरह बह गया हूँ, और मेरी सारी हड्डियाँ अपनी जगह से हट गई हैं; मेरा दिल मोम की तरह हो गया है; वह मेरे अंदर पिघल गया है। मेरी ताकत मिट्टी के टूटे हुए टुकड़े की

तरह सूख गई है, और मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक गई है; तू मुझे मौत की धूल तक ले आया है।" तकलीफ झेलते हुए, दाऊद को ऐसा महसूस हुआ जैसे वह पानी की तरह बह रहा हो; उसे लगा कि उसकी सारी ताकत खत्म हो गई है और उसकी हड्डियाँ अपनी जगह से हटकर बेकार हो गई हैं—मानो वह खुद टूटी-फूटी, बेकार हड्डियों के ढेर के अलावा कुछ न रहा हो (WBC)। यह साफ़ है कि तकलीफों के बीच उसका शरीर सूख गया था और उसकी हिम्मत जवाब दे गई थी (पार्क युन-सन)। दाऊद की शारीरिक कमजोरी इतनी बढ़ गई थी कि उसने माना, "मैं अपनी सारी हड्डियाँ गिन सकता हूँ" (पद 17)। दूसरे शब्दों में, तकलीफों की वजह से वह इतना दुबला-पतला हो गया था कि उसकी हड्डियाँ बाहर झाँक रही थीं और उन्हें गिना जा सकता था (पार्क युन-सन)। उसके इस कमजोर और बीमार जैसे रूप को देखकर दया करने के बजाय, उसके दुश्मन उसे घूरते थे और उसका तमाशा बनाते थे (पद 17; पार्क युन-सन)। उन्होंने उसके बाहरी कपड़े आपस में बाँट लिए और उसके अंदर के कपड़े के लिए पर्ची डाली (पद 18)। हालाँकि दुश्मनों के सताने से इंसान का शरीर और हिम्मत कमजोर हो सकती है—जैसा दाऊद ने महसूस किया—लेकिन भजन संहिता 32:3-4 से पता चलता है कि परमेश्वर के खिलाफ पाप करने के बाद पछतावा न करने से भी वैसी ही हालत हो सकती है: "जब मैं चुप रहा, तो दिन भर कराहने के कारण मेरी हड्डियाँ सूख गईं। क्योंकि दिन-रात तेरा हाथ मुझ पर भारी था; गर्मी की तपिश की तरह मेरी ताकत खत्म हो गई थी।"

आखिरकार, दाऊद की हालत को बाहरी और अंदरूनी दोनों नजरियों से देखने पर, हम पाते हैं कि वह दुश्मनों से घिरा हुआ था और बहुत बड़ी मुसीबत और तकलीफ झेल रहा था। ऐसे समय में दाऊद ने क्या किया? उसने मदद के लिए परमेश्वर से ज़ोरदार प्रार्थना की। उसकी उस ज़ोरदार गुहार का स्वरूप क्या था?

सबसे पहले, दाऊद ने परमेश्वर से अपने करीब आने की विनती की।

भजन संहिता 22:19 के पहले हिस्से पर गौर करें: "हे यहोवा, दूर न रह..." मैथ्यू हेनरी के शब्द दिल को छू लेने वाले हैं: "मुसीबत का करीब आना हमें परमेश्वर के और करीब जाने के लिए प्रेरित करता है।" ऐसे ही हालात में हम उम्मीद करते हैं कि परमेश्वर हमारे करीब आए। मेरा मानना है कि ज़िंदगी में आने वाली मुश्किल और कठिन परिस्थितियाँ हमें दो रास्तों में से एक चुनने पर मजबूर करती हैं: या तो हम सच्चे दिल से परमेश्वर के करीब जाने की कोशिश करें, या फिर हम नाराज़गी पालें और उससे और दूर हो जाएँ। बहुत ज़्यादा तकलीफ और

संकट के बीच भी, दाऊद ने परमेश्वर को खोजने और उसके करीब जाने का रास्ता चुना। प्रार्थना के ज़रिए परमेश्वर के करीब जाने की कोशिश करना ही इस बात को दिखाता है कि हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमारे करीब आए। क्या यह अद्भुत बात नहीं है? दाऊद बहुत ज़्यादा तकलीफ में था क्योंकि दुश्मन—जिन्हें बैल और शेर जैसा बताया गया है—उसके पास आ गए थे और उसे खत्म करना चाहते थे; फिर भी, ऐसी हालत में भी उसने परमेश्वर के और करीब आने की विनती की। दाऊद का विश्वास हमें और भी सच्चे दिल से परमेश्वर को पुकारने के लिए प्रेरित करता है।

दूसरी बात, दाऊद ने परमेश्वर से, जो उसकी ताकत था, जल्द मदद की गुहार लगाई।

भजन संहिता 22:19 का बाद वाला हिस्सा देखिए: "...हे मेरी ताकत, मेरी मदद के लिए जल्दी आ।" यहाँ "ताकत" के लिए हिब्रू शब्द *eyal* इस्तेमाल हुआ है, जिसका मतलब है "ताकत का मूल" (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, दाऊद की तुरंत मदद की गुहार उस विश्वास पर आधारित थी जो परमेश्वर को ही ताकत का स्रोत मानता था। इससे भजन संहिता 18:1 के शब्द याद आते हैं: "हे यहोवा, मेरी ताकत, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ।" दुश्मनों के सताने से अपनी सारी ताकत खो चुका दाऊद परमेश्वर की ओर मुड़ा—जो उसकी ताकत का स्रोत था—और उससे मदद माँगी। भजन संहिता 22:14 का बाद वाला हिस्सा और आयत 15 का पहला हिस्सा देखिए: "...मेरा दिल मोम जैसा हो गया है; वह मेरे अंदर पिघल गया है। मेरी ताकत मिट्टी के बर्तन के टुकड़े की तरह सूख गई है, और मेरी जीभ मेरे मुँह के तालू से चिपक गई है।" इस नज़रिए से, मेरा मानना है कि अपनी कुछ ताकत खोना असल में अच्छी बात है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब हममें ताकत की कमी होती है, तो हम सच्चे दिल से परमेश्वर को खोजते हैं, जो हमारी ताकत है। दाऊद ने परमेश्वर से—जो उसकी ताकत का स्रोत था—क्या खास प्रार्थना की थी जिसमें उसने तुरंत मदद माँगी थी? एक शब्द में कहें तो, वह थी "मुक्ति" या "बचाव"। भजन संहिता 22:20–21 देखिए: "मेरी जान को तलवार से, मेरे अनमोल जीवन को कुत्तों की ताकत से बचा। मुझे शेर के मुँह से छुड़ा; तूने मेरी सुनी है और मुझे जंगली बैलों के सींगों से बचाया है।" यहाँ बताए गए जानवर—बैल, कुत्ते और शेर—उन दुश्मनों का प्रतीक हैं जो दाऊद और हम दोनों के खिलाफ हैं: "बैल" बेरहम, बिना सोच-समझ के इस्तेमाल की जाने वाली शारीरिक ताकत को दिखाता है; "कुत्ता" गंदगी और खतरनाक तरीके

से काटने को दिखाता है; और "शेर" शिकार करने वाले जानवर की क्रूरता को दिखाता है। ये हमारे दुश्मनों की खासियतें हैं (पार्क युन-सन)। दाऊद ने परमेश्वर से विनती की कि वह उसे इन दुश्मनों से बचाए (पद 20–21)।

जब हम बहुत मुश्किल हालात में होते हैं और मदद के लिए परमेश्वर—जो हमारी ताकत है—को पुकारते हैं, तो वह हमें उद्धार की कृपा देता है (पद 21)। भले ही हम दाऊद की तरह दुश्मनों से घिरे हों, लेकिन जब हम परमेश्वर को पुकारते हैं, तो वह हमें उद्धार के गीतों से घेर लेता है (भजन संहिता 32:7)।

आज भजन संहिता 22:12–21 के पाठ में, हम दाऊद के अनुभव और क्रूस पर यीशु के अनुभव के बीच बहुत समानताएँ देखते हैं। यीशु के दुख-दर्द पर गौर करें: उनके दुश्मनों ने उन्हें घेर लिया और उनके हाथों और पैरों में कीलें ठोक दीं; वे उनकी पीड़ा के समय उन्हें बस एक तमाशे की तरह देखते रहे; और क्या उन्होंने उनके बाहरी कपड़े आपस में नहीं बाँट लिए और उनके अंगरखे के लिए पर्ची नहीं डाली? (यूहन्ना 19:24) फिर भी, परमेश्वर पिता ने अपने दुख झेल रहे बेटे की ज़ोरदार पुकार—"हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया है?"—पर कोई ध्यान नहीं दिया और न ही उनकी मदद के लिए जल्दी की (मत्ती 27:46)। परमेश्वर पिता चुप रहे और उन्होंने अपने एकलौते बेटे यीशु को क्रूस से बचाने के बजाय उन्हें क्रूस पर मरने दिया। परमेश्वर पिता ने ऐसा क्यों किया? यह आपको और मुझे बचाने के लिए था। हमें अनंत जीवन देने के लिए, परमेश्वर पिता ने यीशु की प्रार्थना का जवाब न देने या उनकी मदद के लिए जल्दी न करने का फ़ैसला किया। इसलिए, जब भी हम अब यीशु के नाम से परमेश्वर पिता से तुरंत मदद के लिए विनती करते हैं, तो वे हमारी प्रार्थनाएँ सुनते हैं और कृपापूर्वक हमें जल्द ही छुटकारा दिलाते हैं। हालेलुयाह!

"प्रभु ने यह किया है।"

[भजन संहिता 22:22-31]

कल, जब मैं घर पर अपने बच्चों के साथ समय बिता रहा था, तो मेरी सबसे छोटी बेटी, ये-उन (Ye-eun) के साथ मेरी एक दिलचस्प बातचीत हुई। उसने मदद मांगी क्योंकि वह कुछ खाना चाहती थी; जब मैंने उसकी मदद की, तो वह बिना कुछ कहे या कोई प्रतिक्रिया दिखाए अपनी पीठ घुमाकर चली गई। इसलिए, मैंने उससे कहा "आपका स्वागत है" (You're welcome)। मैंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि मुझे बदले में "धन्यवाद" की उम्मीद थी। इसके बजाय, ये-उन ने बस मुझे वापस "आपका स्वागत है" कहा और अपने रास्ते चली गई। यह देखकर, मैंने परमेश्वर और हम, उनकी संतानों के बीच के रिश्ते पर विचार किया। मैंने सोचा कि क्या मुश्किल समय में परमेश्वर पिता से प्रार्थना करने और हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलने के बाद, हम भी चुप रहकर या उनसे मुंह मोड़कर—बिना कोई आभार व्यक्त किए अपने रास्ते पर तो नहीं चले जाते? इस व्यवहार के कारण पर विचार करते समय, मुझे पादरी चार्ल्स स्विंडोल की किताब *द ग्रेस अवेकनिंग* (The Grace Awakening) के एक कथन में इसका स्पष्टीकरण मिला: "मैं पृथ्वी पर सबसे खतरनाक धर्म-विरोधी विचार (heresy) उसे मानता हूँ जिसमें इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि हम परमेश्वर के लिए क्या करते हैं, न कि इस बात पर कि परमेश्वर हमारे लिए क्या करते हैं।" हम अक्सर अपने विश्वास को इस बात पर केंद्रित करके जीते हैं कि हमें परमेश्वर के लिए क्या करना चाहिए—या हम क्या कर रहे हैं—बजाय इसके कि उन्होंने हमारे लिए क्या किया है या क्या कर रहे हैं। नतीजतन, जब हमें मदद की ज़रूरत होती है तो हम उन्हें पुकारते तो हैं, लेकिन प्रार्थना का उत्तर मिलने के बाद अक्सर उन्हें धन्यवाद देने के बजाय उनसे मुंह मोड़ लेते हैं और अपने रास्ते चले जाते हैं। मुझे चिंता है कि हम अपने जीवन में परमेश्वर के पिछले और वर्तमान कार्यों पर गहराई से विचार करने में विफल रहते हैं; इसके बजाय, हम इस बात पर बहुत ज़्यादा ध्यान केंद्रित करते हैं और उसी में उलझे रहते हैं कि *हमने* परमेश्वर और कलीसिया—मसीह की देह—के लिए क्या किया है। परिणामस्वरूप, परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहने के

बजाय, हम नियमों पर आधारित "विश्वास" (या शायद केवल एक धार्मिक दिनचर्या) के रूप में फंस जाते हैं। नतीजतन, हम परमेश्वर की महिमा के बजाय अपनी महिमा चाहते हैं, जिससे कलीसिया के भीतर पद-प्रतिष्ठा का पदानुक्रम (hierarchy) हावी हो जाता है।

भजन संहिता 22:31 (बाद वाले हिस्से) में, भजनकार दाऊद स्वीकार करता है, "प्रभु ने यह किया है।" इसका मतलब है कि प्रभु ने उद्धार का काम पूरा कर लिया है (पार्क युन-सन)। दाऊद यह बात इसलिए कहता है क्योंकि उसने खुद प्रभु के उद्धार की कृपा का अनुभव किया है। इसलिए, मैं उन तीन तरीकों पर विचार करना चाहता हूँ जिनसे कोई व्यक्ति, जिसने प्रभु की उद्धार करने वाली कृपा का अनुभव किया है, प्रतिक्रिया देता है, और यह देखना चाहता हूँ कि हम इसे अपने जीवन में कैसे लागू कर सकते हैं।

पहला, जिन लोगों ने प्रभु के उद्धार की कृपा का अनुभव किया है, वे परमेश्वर की स्तुति करते हैं। भजन संहिता 22:22–23a देखें: "मैं अपने भाइयों को तेरा नाम बताऊंगा; सभा के बीच मैं तेरी स्तुति करूँगा। तुम जो यहोवा का भय मानते हो, उसकी स्तुति करो..." दाऊद ने परमेश्वर की स्तुति क्यों की? कारण यह है कि परमेश्वर ने दाऊद की सच्ची प्रार्थना का उत्तर दिया। आयत 24 देखें: "क्योंकि उसने दुखियारे के दुख को न तो तुच्छ समझा और न ही उससे घृणा की; न ही उसने उससे अपना मुँह छिपाया; बल्कि जब उसने उसे पुकारा, तो उसने सुना।" मूल हिब्रू पाठ में, इस आयत की शुरुआत में "क्योंकि" (या "इस कारण") शब्द आता है। इसलिए, यह आयत उस कारण को बताती है कि पिछली आयत (आयत 23) में बताए गए सभी संतों को स्तुति क्यों करनी चाहिए (पार्क युन-सन)। इस स्तुति का कारण यह है कि परमेश्वर ने "दुखियारे" - यानी दाऊद, जिसे उसके दुश्मन सता रहे थे - की रोते हुए की गई प्रार्थना को सुना (आयत 24)। संक्षेप में, उस प्रार्थना का विषय "छुटकारा" था। जैसा कि हमने पहले आयतों 20–21 में मनन किया था, दाऊद ने "सांडों," "कुत्तों" और "शेरों" जैसे दुश्मनों से बचाए जाने की विनती की थी; परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी और उसका उत्तर दिया, और उसे उन दुश्मनों से छुटकारा दिलाया। एक दिलचस्प बात यह है कि शुरू में दाऊद को लगा कि परमेश्वर उसकी प्रार्थना का उत्तर नहीं दे रहे हैं। इसीलिए, आयत 1 में, उसने पुकारा: "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया है? तू मेरी मदद करने और मेरी कराह भरी बातों से इतना दूर क्यों है?" फिर भी, दाऊद ने हार नहीं मानी; जैसे-जैसे उसने परमेश्वर से सच्ची विनती की, आखिरकार उसे अपनी प्रार्थना का उत्तर मिल गया।

जब हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं, तो हमें हार नहीं माननी चाहिए। जैसा कि हम लूका 18 में प्रार्थना के दृष्टांत से सीखते हैं, हमें प्रार्थना करते रहना चाहिए और हिम्मत नहीं हारनी चाहिए (आयत 1)। इसके बजाय, हमें तब तक प्रार्थना करते रहना चाहिए जब तक हमें परमेश्वर से जवाब न मिल जाए। जैसे याकूब ने जब्बोक नदी के किनारे जिस स्वर्गदूत से कुश्ती की थी, उसे तब तक नहीं छोड़ा जब तक उसे आशीष नहीं मिली, वैसे ही हमें भी इस दृढ़ निश्चय के साथ प्रार्थना करनी चाहिए कि जब तक परमेश्वर हमें जवाब न दें, हम हार न मानें। भले ही शुरू में ऐसा लगे कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाएँ नहीं सुन रहे हैं, हमें रुकना नहीं चाहिए; बल्कि, हमें विश्वास के साथ प्रार्थना करते रहना चाहिए—इस भरोसे के साथ कि परमेश्वर ज़रूर जवाब देंगे—जब तक कि जवाब मिल न जाए।

तो, परमेश्वर की स्तुति कौन कर सकता है? भजन संहिता 22:26 का पहला भाग देखें: "दीन-हीन लोग खाएँगे और तृप्त होंगे; जो प्रभु की खोज करते हैं, वे उसकी स्तुति करेंगे..." दूसरे शब्दों में, दीन-हीन लोग परमेश्वर की खोज करते हैं, और जो लोग उसे खोजते हैं, उन्हें उसमें तृप्ति मिलती है, जिससे वे उसकी स्तुति करते हैं। जिन लोगों को ऐसी तृप्ति मिलती है, उनके हृदय सदा जीवित रहेंगे (पद 26)। दूसरे शब्दों में कहें तो, जो लोग हमेशा के लिए आशीषपूर्ण आध्यात्मिक जीवन का आनंद लेते हैं, वही परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं (पार्क युन-सन)। इस प्रकार, दाऊद घोषणा करता है: "पृथ्वी के सभी समृद्ध लोग खाएँगे और आराधना करेंगे..." (पद 29)। दाऊद ने ज़रूरत के समय परमेश्वर से सच्चे मन से प्रार्थना की; परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया और उसके हृदय को तृप्त किया। परिणामस्वरूप, उसने स्वीकार किया, "बड़ी सभा में मेरी स्तुति का विषय तुझसे ही आता है..." (पद 25)। यह स्वीकार करना कि हमारी स्तुति परमेश्वर से ही आती है, इस बात को मानता है कि हम केवल उसकी कृपा से ही बचाए गए हैं। क्योंकि दाऊद जानता था कि मुसीबत के समय उसे जो छुटकारा मिला, वह पूरी तरह से परमेश्वर की ओर से था, इसलिए उसने उसकी स्तुति करते हुए यह माना कि जो स्तुति उसने की, वह भी प्रभु की ओर से ही आई थी।

यहाँ हमें जो सबक सीखना है, वह यह है कि हमारा परमेश्वर एक उद्धारकर्ता है जो हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है क्योंकि वह हमारी स्तुति पाना चाहता है। "यीशु" नाम का अर्थ है "उद्धारकर्ता"। इसलिए, उसका दिव्य स्वभाव ऐसा है कि वह हमें बचाने में आनंद लेता है। परिणामस्वरूप, जब हम उसे पुकारते हैं, तो वह हमारी

प्रार्थनाओं का उत्तर देता है और हमें उद्धार की कृपा प्रदान करता है। जिस आत्मा ने इस उद्धार करने वाली कृपा का अनुभव किया है, वह परमेश्वर की स्तुति किए बिना नहीं रह सकती।

दूसरी बात, जिन लोगों ने प्रभु की उद्धार करने वाली कृपा का अनुभव किया है, वे परमेश्वर की महिमा करते हैं। आज के हिस्से की 23वीं आयत में, दाऊद कहते हैं, "...याकूब के सभी वंशजों, उसकी महिमा करो..." जिन विश्वासियों ने प्रभु की बचाने वाली कृपा का अनुभव किया है, उन्हें परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए। तो फिर, हमें परमेश्वर की महिमा कैसे करनी चाहिए?

(1) हमें परमेश्वर की स्तुति और आराधना करके उनकी महिमा करनी चाहिए (आयतें 27, 29)।

दाऊद ने सभा के बीच प्रभु के लिए गीत गाकर (आयत 22) और परमेश्वर की धार्मिकता की प्रशंसा करके (आयत 31) परमेश्वर की स्तुति की। दूसरे शब्दों में, उन्होंने परमेश्वर के उद्धार के लिए उनकी प्रशंसा की (पार्क युन-सन)।

(2) हमें परमेश्वर की सेवा करके उनकी महिमा करनी चाहिए। भजन संहिता 22:30 को देखें, जो आज का मुख्य वचन है: "आने वाली पीढ़ी उसकी सेवा करेगी..." यहाँ, "आने वाली पीढ़ी" का अर्थ है उन विश्वासियों के वंशज जिनका ज़िक्र पिछली आयतों में किया गया है (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, केवल हम ही प्रभु की सेवा नहीं करते; हमारे वंशजों को भी प्रभु की सेवा करनी चाहिए और इस तरह परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए।

(3) हमें प्रभु का प्रचार करके परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए।

भजन संहिता 22:22, 30 और 31 को देखें: "मैं अपने भाइयों को तेरा नाम बताऊंगा..." (आयत 22), "...वे अगली पीढ़ी को प्रभु के बारे में बताएंगे" (आयत 30), और "वे आएंगे और उन लोगों को, जो अभी पैदा भी नहीं हुए हैं, उसकी धार्मिकता के बारे में बताएंगे—कि उसने यह किया है" (आयत 31)। हमें प्रभु के नाम का प्रचार करना चाहिए। हमें आने वाली पीढ़ियों को उस उद्धार के इतिहास के बारे में बताना चाहिए जो उसने हमारे लिए रचा है। हमें यह बताना चाहिए कि "प्रभु ने यह किया है" (आयत 31)। इस प्रकार, हमें परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए।

तीसरी बात, जो लोग प्रभु की बचाने वाली कृपा का अनुभव कर चुके हैं, वे परमेश्वर का भय मानते हैं।

भजन संहिता 22:23 का बाद वाला हिस्सा देखें: "...हे इस्राएल के वंशजों, तुम सब उसका भय मानो।" प्रार्थना का उत्तर मिलने और परमेश्वर की बचाने वाली कृपा का अनुभव करने के बाद घमंडी हो जाना आसान है। नतीजतन, हम पवित्र परमेश्वर की महिमा करने के बजाय अपनी महिमा चाह सकते हैं। हम प्रभु का प्रचार करने के बजाय खुद को बढ़ावा भी दे सकते हैं। इसलिए, परमेश्वर की बचाने वाली कृपा का अनुभव करने के बाद, हमें परमेश्वर का और भी अधिक भय मानना चाहिए। हमें परमेश्वर का भय कैसे मानना चाहिए?

(1) हमें सबसे पहले परमेश्वर को याद रखना चाहिए।

भजन संहिता 22:27 का पहला हिस्सा देखें: "पृथ्वी के कोने-कोने में लोग प्रभु को याद करेंगे..." जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, वे याद रखते हैं कि इस पृथ्वी पर केवल प्रभु ही उद्धारकर्ता हैं। हालाँकि, न्यायियों की पुस्तक में इस्राएलियों ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया क्योंकि न तो उन्होंने उसका भय माना और न ही उसे याद रखा (न्यायी 8:34–35)। भजनकार आसाफ ने भजन संहिता 77:11–12 में कहा: "मैं प्रभु के कामों को याद करूँगा; हाँ, मैं पुराने समय के तेरे चमत्कारों को याद करूँगा। मैं तेरे सभी कामों पर मनन करूँगा और तेरे महान कार्यों पर विचार करूँगा।"

(2) हमें परमेश्वर के पास लौटना चाहिए।

भजन संहिता 22:27 देखें: "पृथ्वी के कोने-कोने में लोग प्रभु को याद करेंगे और उसकी ओर मुड़ेंगे..." जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, वे न केवल उसे याद करते हैं बल्कि उसकी ओर लौटते भी हैं। जो लौटते हैं, उनके लिए परमेश्वर का आशीर्वाद है (व्यवस्थाविवरण 30:10)। जो लोग जानते और विश्वास करते हैं कि उद्धार केवल परमेश्वर का है, वे उद्धारकर्ता परमेश्वर के पास लौटते हैं। हम कहीं और मदद की तलाश में समय बर्बाद नहीं करते; इसके बजाय, हम केवल अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर के पास लौटते हैं और उससे मिलने वाली उद्धार की कृपा की ईमानदारी से इच्छा करते हैं।

(3) हमें परमेश्वर से की गई अपनी मन्नतों को पूरा करना चाहिए।

भजन संहिता 22:25 का बाद वाला हिस्सा देखें: "...मैं प्रभु का भय मानने वालों के सामने अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।" दाऊद घोषणा करता है कि अब—छुटकारा पाने के बाद—वह उस मन्नत को पूरा करेगा जो उसने मुसीबत के समय परमेश्वर से की थी। जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, वे ही उससे की गई मन्नतों को पूरा करते हैं।

यीशु हमारे उद्धारकर्ता हैं। वही प्रभु हैं जो हमें उद्धार की कृपा देते हैं। हमारे लिए उनके द्वारा किए गए उद्धार का अनुभव करने के बाद, हमें भी दाऊद की तरह यह स्वीकार करना चाहिए कि "प्रभु ने ही यह उद्धार पूरा किया है।" उद्धार की इस कृपा का अनुभव करने के बाद, हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए, उन्हें महिमा देनी चाहिए और उनका और भी अधिक आदर करना चाहिए।

एक संतोषजनक जीवन

[भजन संहिता 23]

क्या आप अपने जीवन से संतुष्ट हैं? *99 Formulas of Hope That Make Life Worth Living* (जीवन को जीने लायक बनाने वाले उम्मीद के 99 फ़ॉर्मूले) के लेखक ली जिन-हो का कहना है कि आज के लोग "संतोष की कमी" से जूझ रहे हैं। दार्शनिक सुकरात ने एक बार कहा था, "दुनिया का सबसे अमीर व्यक्ति वह है जो कम से कम चीज़ों में भी संतुष्ट रहना जानता है।" फिर भी, दुनिया में ऐसे लोगों की संख्या कहीं ज़्यादा है जो संतुष्ट रहना नहीं जानते, उन लोगों की तुलना में जो जानते हैं। अपनी बेस्टसेलिंग किताब *Pathfinders* में, अमेरिकी लेखिका गेल शीही ने सच्चे संतोष के साथ जीने वालों का वर्णन इस प्रकार किया है: (1) वे जो अपने जीवन का अर्थ और अपनी दिशा जानते हैं; (2) वे जिन्हें इस बात का कोई निराशा या पछतावा नहीं होता कि उनका जीवन व्यर्थ गया; (3) वे जिनकी अपनी एक स्पष्ट दीर्घकालिक योजना है और वे धीरे-धीरे उसे पूरा कर रहे हैं; (4) वे जिनका कोई ऐसा व्यक्ति है जिससे वे सचमुच प्यार करते हैं; (5) वे जिनका कोई अच्छा दोस्त है जिसके साथ वे अपने मन की गहरी बातें साझा कर सकते हैं; (6) वे जो खुशमिजाज़ हैं और मुश्किल स्थितियों को भी सकारात्मक और व्यापक नज़रिए से समझ और संभाल सकते हैं; (7) वे जो दूसरों की आलोचना या अपमान को बिना ज़्यादा परेशान हुए खुले मन से सुन सकते हैं; और (8) वे जिनमें डर और चिंता का सामना करने की मानसिक शक्ति है (स्रोत: इंटरनेट)।

भजन संहिता 23 के आज के अंश में, हम दाऊद से मिलते हैं, जो एक भजनकार थे और जिन्होंने संतोषजनक जीवन जिया। वे स्वीकार करते हैं, "प्रभु मेरा चरवाहा है; मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं होगी" (पद 1)। दूसरे शब्दों में, दाऊद अपनी संतुष्टि ज़ाहिर करते हैं क्योंकि प्रभु उनके चरवाहे हैं। जो विश्वासी परमेश्वर के साथ चलता है, उसका जीवन संतोष से भरा होता है। आज, धर्मग्रंथ के इस अंश पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं ऐसे जीवन

को जीने के छह तरीकों पर विचार करना चाहता हूँ जिसमें किसी चीज़ की कमी न हो—एक सचमुच संतोषजनक जीवन। मेरी प्रार्थना है कि हम भी संतोष के ऐसे जीवन का अनुभव कर सकें।
पहला, संतोषजनक जीवन जीने के लिए, हमें प्रभु से प्रावधान प्राप्त करना होगा, जो हमारे चरवाहे हैं।

भजन संहिता 23:2 को देखें: "वह मुझे हरी-भरी चरागाहों में लेटाता है; वह मुझे शांत जल के पास ले जाता है।" एक सच्चा चरवाहा अपनी भेड़ों की ज़रूरत के अनुसार चरागाह और पानी उपलब्ध कराता है। एक चरवाहा अपनी भेड़ों को "हरे-भरे चरागाहों" में इसलिए ले जाता है क्योंकि वहाँ उन्हें नरम घास मिलती है, जिसे वे बहुत पसंद करती हैं। इस तरह, एक अच्छा चरवाहा अपने झुंड को खिलाता-पिलाता है। वह उन्हें "शांत पानी" के पास भी ले जाता है ताकि वे पानी पी सकें। यहाँ "शांत पानी" का मतलब है धीरे-धीरे बहने वाला पानी—जिससे भेड़ों के लिए पानी पीना आसान होता है और यह उनकी सेहत के लिए भी अच्छा होता है (कैल्विन)। प्रभु, जो हमारा अच्छा चरवाहा है, हमें—यानी अपनी भेड़ों को—न केवल शारीरिक भोजन देता है, बल्कि आध्यात्मिक भोजन भी देता है: परमेश्वर का वचन। और वह हमें भरपूर भोजन देता है। वह "यहोवा यिरे" (प्रभु सब कुछ देगा) है—वह परमेश्वर जो हमारी सभी ज़रूरतों को पूरा करता है (उत्पत्ति 22:14)।

लेकिन, यहेजकेल के समय में इज़राइल के चरवाहे ऐसे थे जो "सिर्फ़ अपना पेट भरते थे।" इसलिए, परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता यहेजकेल के ज़रिए उनसे कहा: "...इज़राइल के उन चरवाहों पर हाय, जो सिर्फ़ अपना पेट भरते हैं! क्या चरवाहों को झुंड को नहीं खिलाना चाहिए?" (यहेजकेल 34:2)। इज़राइल के चरवाहे "मोटी भेड़ों को मार डालते हैं, उनका मांस खाते हैं और उनकी ऊन से कपड़े बनाते हैं, लेकिन झुंड को नहीं खिलाते" (पद 3)। जब चरवाहा ज़रूरी भोजन नहीं दे पाता, तो भेड़ों का क्या होता है? वे भटक जाती हैं और बिखर जाती हैं, और आखिर में शैतान का शिकार बन जाती हैं: "वे बिखर गईं क्योंकि कोई चरवाहा नहीं था, और जब वे बिखर गईं तो वे सभी जंगली जानवरों का भोजन बन गईं। मेरा झुंड सभी पहाड़ों और हर ऊँची पहाड़ी पर भटकता रहा; मेरा झुंड पूरी धरती पर बिखर गया, फिर भी किसी ने उन्हें नहीं ढूँढा या उनकी सुध नहीं ली" (पद 5-6)।

बहुत से विश्वासी भटक रहे हैं और बिखर रहे हैं, और शैतान के प्रलोभनों का शिकार हो रहे हैं। समस्या क्या है? हम इस मुद्दे पर दो नज़रियों से विचार कर सकते हैं:

(1) समस्या पास्टर के साथ है।

पास्टर समस्या क्यों है? इसलिए क्योंकि, यहेजकेल के समय के इज़राइल के चरवाहों की तरह, वे कलीसिया को खिलाने के बजाय खुद अपना पेट भरते हैं। एक और समस्या यह है कि जब वे भेड़ों को खिलाते भी हैं, तो वे उन्हें अच्छा और पौष्टिक भोजन नहीं दे पाते, जिससे आध्यात्मिक कुपोषण हो जाता है। दूसरे शब्दों में, क्योंकि वे ईमानदारी से परमेश्वर के वचन को तैयार नहीं करते और उसका प्रचार नहीं करते, इसलिए विश्वासी आध्यात्मिक कुपोषण का शिकार हो जाते हैं।

(2) समस्या विश्वासियों के साथ है। जब पादरी पूरी लगन से आध्यात्मिक भोजन की "मेज" सजाते हैं और लोगों का इंतज़ार करते हैं, तो विश्वास करने वाले उसे खाने नहीं आते। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि उनका पेट पहले से ही भरा हुआ है या उनका "आध्यात्मिक पाचन तंत्र" ठीक से काम नहीं कर रहा है। क्या यह अजीब नहीं है? हम ऐसे दौर में जी रहे हैं जहाँ "परमेश्वर के वचन की बाढ़" आई हुई है, फिर भी हम देख रहे हैं कि विश्वास करने वाले उस वचन को ग्रहण करने से इनकार कर रहे हैं। यह उस माँ की तरह है जो अपने बच्चों के लिए दिन में तीन बार बड़े प्यार से खाना बनाती है, लेकिन वे उसे खाने से मना कर देते हैं। ऐसा क्यों होता है? मेरे अपने बच्चों के मामले में, कभी-कभी ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वे खाना खाने से पहले ही स्नैक्स, कुकीज़ या कैंडी खाकर पेट भर लेते हैं; तो कभी-कभी, उनके खाने की अनियमित आदतों के कारण, जब खाने का समय होता है तो उन्हें भूख ही नहीं लगती। जहाँ तक मेरी बात है, मैं कभी-कभी नाश्ता छोड़ देता हूँ क्योंकि पिछली रात देर से किए गए भोजन का पेट अभी भी भरा हुआ महसूस होता है और वह पूरी तरह पचा नहीं होता। इसी तरह, रविवार को परमेश्वर का वचन सुनने के बाद हमें पूरे हफ़्ते उसे ग्रहण करने की ज़रूरत महसूस नहीं होती, क्योंकि हमें लगता है कि हम पहले से ही "तृप्त" हैं। दूसरे शब्दों में, जैसे खराब शारीरिक पाचन के मामले में होता है, अगर हम रोज़मर्रा की ज़िंदगी में परमेश्वर के वचन का पालन करके उसे आध्यात्मिक रूप से ठीक से "पचा" नहीं पाते हैं, तो हमें उसे दोबारा ग्रहण करने की ज़रूरत महसूस नहीं होती। नतीजतन, ऐसा लगता है कि कुछ ईसाई ऐसे हैं जिनका आध्यात्मिक पाचन तंत्र पूरी तरह से खराब हो चुका है।

एक संतुष्ट जीवन जीने के लिए, हमें ऐसे विश्वासी बनना होगा जो प्रभु—हमारे चरवाहे—द्वारा दी गई "रोज़ की रोटी" और परमेश्वर के वचन में मिलने वाले आध्यात्मिक भोजन को ठीक से ग्रहण करें। इसके अलावा, हमारे आध्यात्मिक पाचन तंत्र को प्रभावी ढंग से काम करना चाहिए। ऐसा सुनिश्चित करने के लिए, हमें वचन को सुनने

के बाद उसे अपने रोज़मर्रा के जीवन में मानना—या लागू करना—होगा। इसलिए, हमें परमेश्वर के वचन को ग्रहण करने की इच्छा के साथ उसकी ओर उत्साहपूर्वक दौड़ना चाहिए (भजन संहिता 119:32)।

दूसरी बात, एक संतुष्ट जीवन जीने के लिए, प्रभु—हमारे चरवाहे—को हमारी आत्मा को बहाल करना होगा।

भजन संहिता 23:3 के पहले हिस्से को देखें: "वह मेरी आत्मा को बहाल करता है..." यहाँ, "आत्मा को बहाल करने" वाक्यांश का अर्थ है उस आत्मा को, जिसने पाप किया है, पश्चाताप की ओर ले जाना, ताकि वह सच्चा जीवन प्राप्त कर सके (पार्क युन-सन)। जब हम पाप करने के बाद पछतावा नहीं करते, तो हमारी आत्मा पर बोझ बढ़ जाता है। दाऊद ने ऐसा महसूस किया था। भजन संहिता 32:3–4 पर गौर करें: "जब मैं चुप रहा, तो दिन भर कराहने के कारण मेरी हड्डियाँ गल गईं। क्योंकि दिन-रात तेरा हाथ मुझ पर भारी था; मेरी ताकत गर्मी के मौसम की तरह खत्म हो गई थी।" जिस आत्मा में पाप का समाधान नहीं हुआ होता, वह हमेशा किसी कमी को महसूस करती है। ऐसी आत्मा न केवल बोझ से दबी होती है, बल्कि पाप से बंधी भी होती है और सच्ची आज़ादी का अनुभव नहीं कर पाती। बिना पछतावे वाले दिल को संतुष्टि नहीं मिल सकती; जिस आत्मा में पछतावे के आँसू नहीं होते, उसे कभी संतोष नहीं मिलता। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा था: "चूँकि आत्मा केवल पाप के कारण मरती है, इसलिए उसे केवल उस पाप के लिए पछतावा करके ही फिर से जीवित किया जा सकता है।" यह सच है। जब हम अपने पापों के लिए पछतावा करते हैं, तो हमारी बोझिल आत्माएँ फिर से जीवित हो सकती हैं। हालाँकि, यह केवल परमेश्वर की कृपा से ही संभव है। दूसरे शब्दों में, हमारे प्रभु को पहले अपने वचन—जो हमारी आत्मा का भोजन है—के द्वारा हमारे पापों को उजागर करना होगा, ताकि हम पाप को पाप के रूप में पहचान सकें; तभी, अपने पाप को स्वीकार करके और पवित्र आत्मा की मदद पर भरोसा करके, हम सचमुच पछतावा कर सकते हैं। केवल प्रभु, जो हमारे चरवाहे हैं, हमारी आत्माओं को फिर से जीवित कर सकते हैं।

प्रभु का हमारी आत्माओं को फिर से जीवित करने का काम उनके वचन से गहराई से जुड़ा है। उदाहरण के लिए, भजन संहिता 119 में ऐसी आयतें हैं: "मेरी आत्मा धूल से चिपकी हुई है; अपने वचन के अनुसार मुझे फिर से जीवित कर" (आयत 25); "मेरी आत्मा भारीपन से पिघल रही है; अपने वचन के अनुसार मुझे मज़बूत कर" (आयत 28); "...अपने मार्ग में मुझे फिर से जीवित कर" (आयत 37); और "...तेरे वचन ने मुझे जीवन दिया है"

(आयत 50)। प्रभु अपने वचन के माध्यम से हमारी आत्माओं को फिर से जीवित करते हैं। हमारे चरवाहे के रूप में, वे हमें वचन—आध्यात्मिक भोजन—प्रदान करते हैं, जिससे हमारी आत्माएँ फिर से जीवित हो उठती हैं।

हममें से बहुत से ईसाई विश्वास की सच्ची आज़ादी का आनंद लिए बिना जीते हैं क्योंकि हमारी आत्माएँ बिना पछतावे वाले पापों के बोझ से दबी होती हैं। नतीजतन, भले ही हम विश्वास का जीवन जीते हैं, फिर भी हमें सच्ची संतुष्टि नहीं मिलती। समस्या क्या है? मेरा मानना है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर के वचन से पर्याप्त पोषण न मिलने के कारण, हम उस वचन की रोशनी में अपने जीवन की ईमानदारी से जाँच नहीं करते हैं। इस स्थिति में, हम पाप को पाप के रूप में पहचानने में विफल रहते हैं और इसलिए पछतावे की प्रार्थना नहीं करते हैं; परिणामस्वरूप, हमारी आत्माएँ बोझिल बनी रहती हैं। हमें अपने चरवाहे, प्रभु द्वारा प्रदान किए गए आध्यात्मिक पोषण की सच्ची इच्छा करनी चाहिए। हमें उनके वचन के आधार पर खुद की लगन से जाँच करनी चाहिए और पवित्र आत्मा द्वारा हमें दिखाए गए पापों के लिए पूरी तरह से पछतावा करना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो प्रभु अपने वचन के माध्यम से हमारी आत्माओं को पुनर्जीवित करते हैं। हम सच्ची संतुष्टि तभी पा सकते हैं जब हम परमेश्वर के वचन से पुनर्जीवित जीवन जिएं।

तीसरा, संतुष्ट जीवन जीने के लिए, हमें अपने चरवाहे, प्रभु द्वारा निर्देशित होना चाहिए।

भजन संहिता 23:3 के बाद वाले हिस्से को देखें: "...वह अपने नाम के लिए मुझे धार्मिकता के मार्ग पर ले जाता है।" "मुझे धार्मिकता के मार्ग पर ले जाता है" वाक्यांश का अर्थ है कि प्रभु, हमारे चरवाहे के रूप में, हमें एक सीधे—यानी, एक सुचारू और समतल—मार्ग पर ले जाते हैं (पार्क यूं-सन)। इस पापपूर्ण दुनिया में, बहुत से लोग धार्मिकता का मार्ग चुनने के बजाय बुराई का मार्ग चुनते हैं और उस पर चलते हैं। हालाँकि, हम ईसाइयों को धार्मिकता के मार्ग पर चलना चाहिए। ऐसे समय में, बुराई के मार्ग पर चलने वालों के बीच रहने वाले धर्मी लूत की तरह, हमारी धर्मी आत्माओं को भी पीड़ा होती है जब हम दिन-ब-दिन उनके गैर-कानूनी कामों को देखते और सुनते हैं (2 पतरस 2:8)। केवल तभी जब प्रभु—हमारे चरवाहे—अपने वचन के माध्यम से हमारी घायल, धर्मी आत्माओं को पुनर्जीवित करते हैं, हम उठ सकते हैं और एक बार फिर धार्मिकता के मार्ग पर चल सकते हैं। एक उल्लेखनीय तथ्य यह है कि प्रभु हमें धार्मिकता के मार्ग पर इसलिए नहीं ले जाते हैं क्योंकि हमारी ओर से कोई योग्यता है, बल्कि उनके अपने नाम के लिए (पार्क यूं-सन)। परमेश्वर न केवल वह है जो अपने नाम

के लिए हमारे पापों को मिटाता है; वह वह प्रभु भी है जो हमारी आत्माओं को पुनर्जीवित करता है और अपने नाम के लिए हमें धार्मिकता के मार्ग पर ले जाता है। डॉ. पार्क यूं-सन ने एक बार कहा था, "जो रास्ता परमेश्वर की नज़र में सीधा-सादा लगता है, वह हमें ऊबड़-खाबड़ और संकरा लग सकता है। फिर भी, यही स्वर्ग के राज्य का सीधा रास्ता है।" इन शब्दों में बहुत गहरी सच्चाई है। परमेश्वर का नज़रिया और हमारा नज़रिया बहुत अलग हो सकता है। इसलिए, प्रभु की अगुवाई पाने के लिए, हमें उन पर—अपने चरवाहे पर—पूरा भरोसा करना चाहिए और उनकी बात माननी चाहिए। हम, उनकी भेड़ें, सिर्फ़ चरवाहे की आवाज़ सुनें और उनके पीछे चलें। यूहन्ना 10:26–27 पर गौर करें: "तुम इसलिए विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो। मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं; मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे चलती हैं।" हमें कभी भी किसी किराए के चरवाहे के पीछे नहीं चलना चाहिए। कारण यह है कि "किराए का चरवाहा असली चरवाहा नहीं होता और भेड़ें उसकी अपनी नहीं होतीं; इसलिए जब वह भेड़िये को आते देखता है, तो भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है। तब भेड़िया झुंड पर हमला करता है और उसे तितर-बितर कर देता है। वह आदमी भाग जाता है क्योंकि वह किराए का चरवाहा है और उसे भेड़ों की कोई परवाह नहीं होती" (पद 12–13)।

हमें प्रभु की अगुवाई को ठुकराना नहीं चाहिए, जो हमारे चरवाहे हैं। जैसे कोई बच्चा अपने पिता का हाथ झटक दे—जो उसे गंदे पानी से बचाकर सूखी ज़मीन पर ले जाने के लिए था—और कीचड़ में कूदकर अपने जूते और पतलून गीले कर ले, वैसे ही हमें प्रभु का हाथ नहीं झटकना चाहिए और अपनी मर्ज़ी से नहीं चलना चाहिए। हमें प्रभु का हाथ मज़बूती से थामे रखना चाहिए, उनके वचन को अपनाना चाहिए, और उनकी अगुवाई में चलते हुए अपने प्राणों को उस वचन से ताज़गी देनी चाहिए। हमारे प्रभु, जो चरवाहे हैं, अपने नाम की खातिर हमें नेकी के रास्ते पर ले जाते हैं। जब हम उनकी अगुवाई मानते हैं और सीधे और समतल रास्ते पर चलते हैं, तो हम एक संतोषजनक जीवन जी सकते हैं।

चौथा, एक संतोषजनक जीवन जीने के लिए, हमें अपने चरवाहे, प्रभु की सुरक्षा पानी चाहिए।

भजन संहिता 23:4 देखें: "भले ही मैं घोर अंधकार की घाटी से होकर गुज़रूँ, मैं किसी बुराई से नहीं डरूँगा, क्योंकि तू मेरे साथ है; तेरी लाठी और तेरी छड़ी मुझे दिलासा देती हैं।" यहाँ, "घोर अंधकार की घाटी" (या "मृत्यु की छाया की घाटी") का मतलब है बहुत बड़ा ख़तरा (पार्क यूं-सन)। क्योंकि दाऊद ने प्रभु को अपना चरवाहा

बनाया था, इसलिए उन्हें किसी भी ख़तरे से डर नहीं लगता था। इसका कारण उनका यह विश्वास था कि परमेश्वर उनके साथ हैं। परमेश्वर यूसुफ के साथ थे, और उन्हें समृद्धि का आशीर्वाद मिला हुआ था; इसलिए, चाहे वे मिस्र के पोतीफर के घर में गुलाम के तौर पर सेवा कर रहे हों या उन्हें गलत तरीके से जेल में डाल दिया गया हो, यूसुफ ने हमेशा परमेश्वर की सुरक्षा का अनुभव किया। प्रभु, एक चरवाहे की तरह, दाऊद के साथ थे और उन्होंने अपनी लाठी और छड़ी से उनकी रक्षा की। जिस तरह एक चरवाहा अपनी भेड़ों को जंगली जानवरों से बचाने और उन्हें हरे-भरे चरागाहों और शांत पानी तक ले जाने के लिए अपनी लाठी और छड़ी का इस्तेमाल करता है, उसी तरह प्रभु—हमारे चरवाहे—हमें (यानी अपने लोगों को) शैतान और उसके साथियों (जो जंगली जानवरों की तरह हैं) से बचाते हैं और हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

दाऊद ने प्रभु के बारे में यह बात कही: "तू मेरे छिपने का स्थान है; तू मुझे मुसीबत से बचाएगा और मुझे छुटकारा मिलने की खुशी के गीतों से घेर लेगा" (भजन संहिता 32:7)। प्रभु हमारे छिपने का स्थान हैं; वे हमारी आँख की पुतली की तरह रक्षा करते हैं और हमें अपने पंखों की छाया में शरण देते हैं (भजन संहिता 17:8)। रूथ 2:12 के पहले हिस्से पर गौर करें। बोअज़ ने रूथ से कहा: "...इसराइल के परमेश्वर, प्रभु तुझे [इनाम] दें, क्योंकि तू उनके पंखों के नीचे शरण लेने आई है..." जिस तरह रूथ को प्रभु के पंखों के नीचे सुरक्षा मिली, उसी तरह हम भी अपने चरवाहे प्रभु की सुरक्षा में रहते हैं; इसलिए, हमें डरने की ज़रूरत नहीं है, चाहे खतरा कितना भी बड़ा क्यों न हो। हम प्रभु की भेड़ें हैं, जो अपने चरवाहे की सुरक्षा में जी रही हैं—और उनकी देखभाल में हमें किसी चीज़ की कमी नहीं होती। इसलिए, हम भजनकार के इन शब्दों से सहमत हैं: "प्रभु ही तेरी रक्षा करने वाला है; प्रभु तेरे दाहिने हाथ की ओर तेरी छाया है। दिन में धूप तुझे नहीं लगेगी, और न ही रात में चाँद तुझे नुकसान पहुँचाएगा" (121:5-6)।

पाँचवीं बात, संतोषपूर्ण जीवन जीने के लिए, हमें प्रभु द्वारा ऊँचा उठाया जाना चाहिए, जो हमारे चरवाहे हैं।

भजन संहिता 23:5 को देखें: "तू मेरे दुश्मनों के सामने मेरे लिए मेज़ सजाता है; तू मेरे सिर पर तेल लगाता है; मेरा प्याला लबालब भरा है।" प्रभु ही वह चरवाहा हैं जो हमारे दुश्मनों के सामने हमारे लिए दावत तैयार करते हैं। एक चरवाहे के तौर पर, उन्होंने दाऊद को दुश्मनों के सामने—जो उसे खत्म करना चाहते थे—एक शानदार जीत दी, जैसे किसी दावत में मेज़बानी की जाती है (पार्क युन-सन)। इसके अलावा, "तू मेरे सिर पर तेल लगाता

है; मेरा प्याला उमड़ता है" वाली बात दावत में खास मेहमान के सिर पर तेल लगाने की रस्म की ओर इशारा करती है (पार्क युन-सन)। परमेश्वर ने दाऊद के साथ—जिसे उसके दुश्मन सता रहे थे—किसी दावत में बुलाए गए खास मेहमान जैसा बर्ताव किया। नतीजतन, दाऊद को जो सम्मान और हिस्सा मिला, वह बहुत ज़्यादा और भरपूर था (पार्क युन-सन)।

हमारे प्रभु, जो चरवाहे हैं, वही हमें हमारे दुश्मनों के सामने ऊँचा उठाते हैं। वही प्रभु हमें जीत देते हैं और हमारे लिए दावत का इंतज़ाम करते हैं—एक ऐसी दावत जिसमें सब कुछ भरपूर होता है। इसलिए, हम एक संतुष्ट जीवन जी पाते हैं।

आखिर में, छठा बिंदु: संतुष्ट जीवन जीने के लिए, हमें अपने चरवाहे प्रभु से मिलने वाले प्यार और उम्मीद से भरा होना चाहिए। भजन संहिता 23:6 को देखिए: "निश्चय ही भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ रहेंगी, और मैं हमेशा प्रभु के घर में रहूँगा।" यहाँ, दाऊद अतीत में मिली कृपा पर सोचते हुए अपने भविष्य की ओर देखता है। अतीत में परमेश्वर का प्यार और मदद पाने के बाद (पद 1-5), उसे भरोसा था कि उसका भविष्य हमेशा सुरक्षित और आशीषों से भरा रहेगा। ऐसा इसलिए था क्योंकि प्रभु की भलाई और करुणा हमेशा उसके साथ थीं। नतीजतन, दाऊद को प्रभु के घर—परमेश्वर के राज्य—में हमेशा रहने की पक्की उम्मीद थी। ऐसी उम्मीद से भरे जीवन में किसी चीज़ की कमी नहीं होती। जिस जीवन को प्रभु—हमारे चरवाहे—का प्यार मिलता है, और जो उनकी दी हुई चीज़ों, बहाली, मार्गदर्शन, सुरक्षा और ऊँचाई का अनुभव करता है, उसका भविष्य सुरक्षित होता है। चूँकि उसने अपना वर्तमान जीवन परमेश्वर के राज्य में हमेशा रहने की पक्की उम्मीद के साथ जिया, इसलिए उसने संतुष्टि भरा जीवन जिया।

जब जीवन का अंत करीब आए, तो हमें अपने जीवन को पीछे मुड़कर देखने और दाऊद की तरह यह कहने में सक्षम होना चाहिए: "प्रभु मेरा चरवाहा है; मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं होगी" (पद 1)। अगर हम ऐसा कह सकते हैं, तो हम कह सकते हैं कि हमने एक संतुष्ट जीवन जिया है। अगर हमने प्रभु से मिले प्यार और उम्मीद से भरी ज़िंदगी जी है—उनकी दी हुई चीज़ें पाई हैं, उनके सुधारने के काम को महसूस किया है, उनकी सलाह और सुरक्षा को माना है, और उनकी कृपा का आनंद लिया है, जिसमें वे हमारे दुश्मनों के सामने भी हमें ऊँचा

उठाते हैं—तो हम सच में कह सकते हैं कि हमने संतोष भरी ज़िंदगी जी है। सिर्फ़ ऐसा ही इंसान दाऊद की तरह कह सकता है, "प्रभु मेरा चरवाहा है; मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं होगी" (पद 1)। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमें भी ऐसा ही आशीर्वाद मिले।

हमें अपनी कमी को गहराई से महसूस करना चाहिए।

“प्रभु मेरा चरवाहा है; मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं होगी” (भजन संहिता 23:1)।

2 जनवरी, 2006 को परिवार की प्रार्थना सभा के दौरान, भजन संहिता 23:1 के शब्द मेरे मन में आए। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि यह मेरी दादी की बाइबिल की पसंदीदा आयत थी, जो स्वर्ग जा चुकी थीं। जब मैंने इस आयत पर मनन किया, तो पवित्र आत्मा ने मुझे एक बात समझाई: हमें अपनी कमी को गहराई से महसूस करना चाहिए। इसलिए, मैं प्रार्थना में अपनी आत्मा से कहता हूँ: "मेरी आत्मा—जेम्स—तुम्हें अपनी कमी को गहराई से महसूस करना चाहिए!"

जिन भेड़ों का चरवाहा प्रभु होता है—जो उसकी आवाज़ सुनती हैं और आज्ञाकारी होकर उसके पीछे चलती हैं—उन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं होती। हालाँकि, अगर हम "भेड़ों की तरह भटक गए हैं, और हर कोई अपने रास्ते पर चल पड़ा है" (यशायाह 53:6), तो हमें यह स्वीकार करना पड़ता है: "प्रभु मेरा चरवाहा है, फिर भी क्योंकि मैं अपने रास्ते पर चला गया, इसलिए मुझे कमी का सामना करना पड़ रहा है।" इसका एक सटीक उदाहरण लूका अध्याय 15 में 'खोए हुए बेटे' (Prodigal Son) की कहानी है। उसने अपने पिता का साथ छोड़ दिया, अपने रास्ते पर चला गया, सही रास्ते से भटक गया और बेहिसाब फिजूलखर्ची वाली ज़िंदगी जी। सब कुछ बर्बाद करने के बाद, "उस देश में भारी अकाल पड़ा, और उसे कमी महसूस होने लगी" (आयत 14)। वह गहरी कमी का अनुभव कर रहा था। इसलिए, उस खोए हुए बेटे ने कहा: "जब उसे होश आया, तो उसने कहा, 'मेरे पिता के कितने ही नौकरों के पास ज़रूरत से ज़्यादा खाना है, और यहाँ मैं भूख से मर रहा हूँ!'" (आयत 17)। अगर हम प्रभु की आवाज़ के बजाय शैतान, दुनिया, अपनी परिस्थितियों या अपनी भावनाओं की आवाज़ सुनकर प्रभु की आज्ञा नहीं मानते हैं, तो हमें निश्चित रूप से कमी का एहसास होगा। फिर भी, हमें इस कमी को गहराई से और पूरी तरह से महसूस करना चाहिए। कारण यह है कि जब तक हम अपनी कमी को पूरी तरह से नहीं

समझते, तब तक हम अपनी मर्ज़ी से प्रभु, अपने चरवाहे की ओर वापस नहीं लौटेंगे। जैसे हम प्रभु की भरपूर कृपा की चाहत तभी करते हैं जब हमें बहुत ज़रूरत होती है, वैसे ही हम परमेश्वर की भरपूरता की तलाश तभी करते हैं जब हम अपनी कमी का पूरी तरह से सामना करते हैं। एक पादरी के तौर पर, 1 जनवरी 2006 की नए साल की प्रार्थना-सभा के बाद से—या यूँ कहें कि उससे पहले क्रिसमस के समय से ही—मैं अपनी कमियों और अपर्याप्तता की भावना से जूझता रहा हूँ। जहाँ 2005 का नया साल शारीरिक कमज़ोरी और सीमाओं से जूझते हुए शुरू हुआ था, वहीं 2006 की शुरुआत मेरे चरित्र और आंतरिक व्यक्तित्व की कमियों के उजागर होने के साथ हुई। नतीजतन, मुझे प्रभु पर और भी ज़्यादा निर्भर रहने और प्रार्थना, पवित्र आत्मा, सुसमाचार (वचन) और प्रेम की शक्ति को सच्चे दिल से चाहने के लिए मजबूर होना पड़ा है। फिर भी, मुझे अभी लंबा सफ़र तय करना है; मैंने अभी तक अपनी अपर्याप्तता की गहराई को पूरी तरह से नहीं समझा है। भले ही इसमें दर्द, तकलीफ़ और पीड़ा हो, मैं अपनी अपर्याप्तता को पूरी तरह से महसूस करना और स्वीकार करना चाहता हूँ। इसलिए, मैं सच्चे दिल से प्रार्थना करता हूँ कि मैं पूरी तरह से अपने चरवाहे, प्रभु पर निर्भर रहूँ और उनकी इच्छा का पालन करूँ, ताकि मैं बिना किसी कमी के अपनी पादरी की सेवा पूरी कर सकूँ।

वह व्यक्ति जो परमेश्वर के साथ संगति रखता है

[भजन संहिता 24]

अलग होना कभी आसान नहीं होता, फिर भी हमें अलविदा कहना सीखना चाहिए। बेशक, "अलग होने" का मतलब मौत—इस दुनिया को छोड़ना—हो सकता है, लेकिन इसमें अपना गृहनगर छोड़ना या किसी रोमांटिक रिश्ते का खत्म होना भी शामिल है। अलग होने के इन अलग-अलग रूपों के बीच, हमें दुख, दिल का दर्द और निराशा महसूस हो सकती है, या हम हताशा में भी डूब सकते हैं। हालाँकि, हमें याद रखना चाहिए कि ऐसे अलग होने के पलों में नए लोगों से मिलने की संभावना भी होती है। जब मैंने कोरिया में लगभग तीन साल बिताने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका में अपने परिवार, चर्च के सदस्यों और दोस्तों को छोड़ा, तो मुझे नए लोगों से मिलने का आशीर्वाद मिला। सबसे पहले, मैं परमेश्वर से मिला; दूसरा, मैं अपने सच्चे स्वरूप से मिला; और तीसरा, मुझे सेवा कार्य में साथी सेवकों और विश्वास में भाई-बहनों के साथ अनमोल मुलाकातों का आशीर्वाद मिला। जैसा कि हेनरी नूवेन ने कहा है, हमें अलग होने के पलों में ही नए लोगों से मिलने का मौका मिलता है।

भजन संहिता 24:3 में, भजनकार दाऊद पूछता है, "यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है? उसके पवित्र स्थान पर कौन खड़ा हो सकता है?" यह अंश उस सवाल पर बात करता है कि महान परमेश्वर—स्वर्ग और पृथ्वी के रचयिता (पद 1-2)—के साथ संगति करने के लिए कौन योग्य है। आज के पाठ पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं परमेश्वर के साथ संगति करने के लिए चार योग्यताओं पर विचार करना चाहता हूँ, और मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह हमारे लिए उन गुणों को विकसित करने का एक अवसर बने।

पहला, जो व्यक्ति परमेश्वर के साथ संगति रखता है, उसे पवित्र होना चाहिए।

भजन संहिता 24:4 के पहले हिस्से को देखें: "जिसके हाथ साफ हैं और जिसका हृदय शुद्ध है..." इस अंश का अर्थ है कि जो लोग परमेश्वर के साथ संगति करते हैं, उन्हें बाहरी और आंतरिक दोनों तरह से पवित्र होना चाहिए। "साफ हाथ" वाक्यांश बाहरी आचरण में पवित्रता को दर्शाता है, जबकि "शुद्ध हृदय" आंतरिक पवित्रता को दर्शाता है। संक्षेप में, इसका अर्थ है कि जिनके काम और हृदय साफ हैं, वे परमेश्वर के साथ संगति कर सकते हैं। बेशक, यहाँ जिस पवित्रता की बात की गई है, उसका अर्थ पूरी तरह से पाप-रहित होना नहीं है। बल्कि, यह ऐसे विश्वासी को दर्शाता है जो परमेश्वर को सबसे ऊपर रखता है—दो स्वामियों की सेवा करने से इनकार करता है और इसके बजाय केवल परमेश्वर की सेवा करने के लिए उसे "खोजता" और उसका "पीछा" करता है (पद 6; पार्क युन-सन)।

हालाँकि बाहरी स्वच्छता महत्वपूर्ण है, लेकिन हमें सबसे पहले आंतरिक पवित्रता के लिए प्रयास करना चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि बिना साफ़ दिल के सिर्फ़ अपने व्यवहार को शुद्ध रखने की कोशिश करने से शुद्धता अधूरी रह जाती है। जैसे हम अपने शरीर को साफ़ करने के लिए नहाते हैं, वैसे ही हमें अपने दिल को भी साफ़ करना चाहिए; दूसरे शब्दों में, हमें एक "आध्यात्मिक स्नान" की ज़रूरत है। यह परमेश्वर के वचन का पालन करने से मुमकिन होता है: "क्योंकि तुमने आत्मा के ज़रिए सच्चाई को मानकर और भाइयों के लिए सच्चे प्यार से अपनी आत्माओं को शुद्ध किया है, इसलिए एक-दूसरे से शुद्ध दिल से और पूरे जोश के साथ प्यार करो" (1 पतरस 1:22)। हालाँकि, इस पापी दुनिया में रहते हुए अपने व्यवहार और ज़िंदगी में शुद्धता बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है। इसीलिए भजनहार आसाफ़ ने भजन 73:13 में कहा: "सचमुच मैंने बेकार ही अपने दिल को शुद्ध किया और बेगुनाही में अपने हाथ धोए।" आसाफ़ इस नतीजे पर क्यों पहुँचा? ऐसा इसलिए था क्योंकि वह बुरे लोगों की कामयाबी से जलता था (वचन 3)। आसाफ़ ने कहा, "मेरे पैर लगभग लड़खड़ा गए थे; मेरे कदम लगभग फिसल गए थे" (वचन 2)। आसाफ़ की तरह, हममें से कई ईसाई भी अपनी शुद्धता छोड़ने के लिए ललचा जाते हैं जब हम अपनी तकलीफ़ों के बीच बुरे लोगों को कामयाब होते देखते हैं। आखिरकार, हमें बाकी सब चीज़ों से ऊपर परमेश्वर को प्राथमिकता देनी चाहिए और दो मालिकों की सेवा करने से बचना चाहिए; फिर भी, परमेश्वर की सेवा करने का दावा करते हुए, हम अक्सर उनके साथ-साथ दौलत की भी सेवा करते हैं। हालाँकि, यीशु ने साफ़ तौर पर कहा: "कोई भी दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता; क्योंकि या तो वह एक से नफ़रत करेगा और दूसरे से प्यार करेगा, या फिर वह एक के प्रति वफ़ादार रहेगा और दूसरे को तुच्छ समझेगा। तुम परमेश्वर और धन (मैमोन) दोनों की सेवा नहीं कर सकते" (मत्ती 6:24)। हमें अपने दिल में दो मालिकों की

सेवा नहीं करनी चाहिए; हमें सिर्फ़ प्रभु की सेवा करनी चाहिए। ऐसा करते समय, हमें पूरी सावधानी से अपने दिल की रक्षा करनी चाहिए। हमें शुद्ध दिल से—जो पूरी तरह से प्रभु को समर्पित हो—और शुद्ध व्यवहार के साथ प्रभु की सेवा करनी चाहिए।

दूसरी बात, जो लोग परमेश्वर के साथ संगति रखते हैं, उन्हें बेकार चीज़ों में अपना दिल नहीं लगाना चाहिए।

भजन 24:4 के बीच वाले हिस्से पर गौर करें: "...जिसने अपनी आत्मा को किसी मूर्ति [या 'बेकार चीज़ों'] की ओर नहीं उठाया है..." यहाँ, "बेकार" (या "व्यर्थ") शब्द का मतलब है "इस दुनिया की शान-ओ-शौकत और दौलत की बेकार इच्छाएँ जो परमेश्वर की सच्चाई से मेल नहीं खातीं" (पार्क युन-सन)। जो लोग दिल और चाल-चलन से पवित्र हैं—और परमेश्वर के साथ संगति बनाए रखते हैं—वे बेकार की चीज़ों के बजाय अपना ध्यान पूरी तरह परमेश्वर पर लगाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे अपने दिलों में सच्चाई से प्यार करके और अपने कामों में सच्चाई के वचन का पालन करके खुद को पवित्र करते हैं (1 पतरस 1:22)। जिन्होंने अपनी "आत्माओं को पवित्र" किया है, वे झूठ से मुक्त हैं। इसलिए, वे झूठ के धोखे में आकर इस दुनिया की बेकार की शान-ओ-शौकत और दौलत के पीछे नहीं भागते; वे उन्हें खोखली इच्छाएँ मानते हैं। जो लोग अपनी आत्माओं को पवित्र करते हैं, वे सच्चाई में बने रहते हैं। दूसरे शब्दों में, क्योंकि वे परमेश्वर से प्यार करते हैं, इसलिए वे उसकी सच्चाई और उसके वचन का पालन करते हैं (1 पतरस 1:22)।

हालाँकि, जब हम अपने जीवन की जाँच करते हैं, तो क्या हम कहीं 'काँटेदार' विश्वास तो नहीं जी रहे हैं, जिसका ज़िक्र 'बीज बोने वाले के दृष्टांत' में किया गया है? जो बीज काँटों के बीच गिरा, उसके बारे में लूका 8 कहता है: "जो बीज काँटों के बीच गिरा, वह उन लोगों को दर्शाता है जो सुनते तो हैं, लेकिन जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते हैं, जीवन की चिंताएँ, दौलत और सुख-विलास उन्हें दबा देते हैं, और वे परिपक्व नहीं हो पाते" (पद 14)। यहाँ, हम तीन ऐसी चीज़ों की पहचान कर सकते हैं जो हमारी आध्यात्मिक परिपक्वता में बाधा डालती हैं: (1) जीवन की चिंताएँ, (2) दौलत, और (3) सुख-विलास। जब हम बेचैनी और चिंता में डूबे रहते हैं, जब हम पैसे (भौतिक संपत्ति) को परमेश्वर के बराबर मानकर उसे ही सब कुछ समझने लगते हैं—उसके पीछे भागते हैं और उसकी सेवा करते हैं—और जब हम सांसारिक सुखों में संतुष्टि ढूँढ़ते हैं, तो हम आध्यात्मिक परिपक्वता हासिल नहीं कर सकते, भले ही हम परमेश्वर का वचन सुनें। विश्वास के ऐसे जीवन को "काँटेदार" कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं

होगी। प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पियों 2:3 में यह सलाह दी थी: "स्वार्थ या घमंड में आकर कुछ न करो। बल्कि, नम्रता के साथ दूसरों को खुद से बेहतर समझो।" हमें अपना दिल बेकार की चीज़ों पर नहीं लगाना चाहिए। सांसारिक चीज़ें पूरी तरह से व्यर्थ हैं। हमें बेकार की इच्छाओं की संतुष्टि के जाल में नहीं फँसना चाहिए, जिससे हमारे विश्वास का विकास रुक जाए। इसके बजाय, हमें अपना पूरा दिल और ताकत परमेश्वर की महिमा करने और इस धरती पर उसकी इच्छा पूरी करने में लगानी चाहिए।

तीसरी बात, जो लोग परमेश्वर के साथ संगति रखते हैं, उन्हें झूठी कसम नहीं खानी चाहिए। भजन संहिता 24:4 के बाद वाले हिस्से को देखें: "...जो छल से शपथ नहीं खाता।" जिनका आचरण और हृदय अशुद्ध है, वे बेकार की चीज़ों में मन लगाते हैं और इस तरह झूठ का जीवन जीते हैं। ऐसे लोग झूठी शपथ खाने से नहीं डरते। हालाँकि, यह बात कि जो लोग परमेश्वर के साथ संगति रखते हैं, वे झूठी शपथ नहीं खाते, इसके दो अर्थ हैं:

(1) परमेश्वर के साथ संगति रखने के लिए, हमें झूठ नहीं बोलना चाहिए।

जो लोग बेकार की चीज़ों में मन लगाते हैं, वे अपने मकसद को पूरा करने के लिए झूठ बोलते हैं। लेकिन, जो लोग परमेश्वर में मन लगाते हैं, वे झूठ नहीं बोलते। दूसरे शब्दों में, वे झूठी गवाही नहीं देते (पार्क युन-सन)।

(2) परमेश्वर के सामने लिए गए संकल्पों को हमें हल्के में लिए बिना पूरा करना चाहिए (पार्क युन-सन)।

दूसरे शब्दों में, जो लोग परमेश्वर के साथ संगति रखते हैं, वे अपने मन में किए गए वादों को पूरा करते हैं। वादा पूरा करते समय, उसे बिना बदले पूरा करना चाहिए, भले ही वह महंगा या नुकसानदायक साबित हो (15:4)।

परमेश्वर के वचन से पहले ही शुद्ध किए जा चुके लोगों के तौर पर, प्रभु का वचन हमारे भीतर बसा हुआ है। यूहन्ना 15:3–4 (पहला भाग) और आयत 7 (पहला भाग) देखें: "तुम तो उस वचन के कारण जो मैंने तुमसे कहा है, पहले ही शुद्ध हो गए हो। मुझमें बने रहो, जैसे मैं तुममें बना रहता हूँ... यदि तुम मुझमें बने रहो और मेरे वचन तुममें बने रहें..." जो व्यक्ति परमेश्वर के वचन से शुद्ध हो रहा है, वह प्रभु—जो दाखलता है—में बनी हुई एक शाखा के समान है और झूठ से मुक्त है। इसलिए, हमें झूठी गवाही नहीं देनी चाहिए। हमें सच बोलना चाहिए। हमें सच्चाई

का जीवन भी जीना चाहिए। हमें यह सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए कि हमारा हृदय और हमारे काम परमेश्वर के सच्चे वचन को प्रकट करें।

चौथी बात, जो लोग परमेश्वर के साथ संगति रखते हैं, उन्हें पूरे मन से उनका स्वागत करना चाहिए।

भजन संहिता 24:7–10 को देखिए: "हे फाटकों, अपना सिर ऊँचा करो! हे सनातन दरवाज़ों, तुम भी ऊँचे हो जाओ! ताकि महिमा का राजा भीतर आ सके। यह महिमा का राजा कौन है? वह प्रभु जो बलवान और सामर्थी है, वह प्रभु जो युद्ध में पराक्रमी है। हे फाटकों, अपना सिर ऊँचा करो! हे सनातन दरवाज़ों, तुम भी ऊँचे हो जाओ! ताकि महिमा का राजा भीतर आ सके। यह महिमा का राजा कौन है? सेनाओं का प्रभु, वही महिमा का राजा है। (सेलाह)" इस अंश में, दाऊद मंदिर के फाटकों को खोलने का आह्वान करता है ताकि महान परमेश्वर प्रवेश कर सकें। इस प्रकार, वह पद 7 में घोषणा करता है: "हे फाटकों, अपना सिर ऊँचा करो! हे सनातन दरवाज़ों, तुम भी ऊँचे हो जाओ! ताकि महिमा का राजा भीतर आ सके।" डॉ. पार्क युन-सन ने कहा, "यदि हम सच्चाई और ईमानदारी से परमेश्वर का स्वागत नहीं करते हैं, तो हम उन्हें महिमा के राजा के रूप में स्वीकार करने में विफल हो रहे हैं।" इसलिए, जिस तरह मंदिर के फाटक पूरी तरह खोल दिए जाते हैं, उसी तरह हमें अपने दिलों के दरवाज़े भी पूरी तरह खोल देने चाहिए। हमें पवित्र आत्मा—परमेश्वर की आत्मा—को अपने भीतर बसने और स्वतंत्र रूप से काम करने की अनुमति देनी चाहिए। ऐसा करने से, हम महान परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संगति का अनुभव कर सकते हैं।

हमें गंदगी, व्यर्थता और झूठ से भरी दुनिया से अलग होना होगा। दुनिया से इस अलगाव के बीच, हमें परमेश्वर से घनिष्ठता से मिलना होगा। उनके साथ घनिष्ठ संगति बनाए रखने के लिए, हमारे दिल और आचरण शुद्ध होने चाहिए। हमें अपना मन व्यर्थ की बातों में नहीं लगाना चाहिए, और न ही झूठी शपथ लेनी चाहिए। इसके बजाय, हमें अपने दिलों के दरवाज़े पूरी तरह खोल देने चाहिए और पूरे मन से परमेश्वर का स्वागत करना चाहिए।

“हे प्रभु, इसे याद रखना”

[भजन संहिता 25:1–7]

मेरे पास एक ऐसी याद है जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता—हमारी पहली संतान, चैरिस (जुयंग) की याद। रविवार, 29 अप्रैल 1998 को, आराधना सभा के बाद, मैं लॉस एंजिल्स के चिल्ड्रन्स हॉस्पिटल गया, जहाँ चैरिस भर्ती थी, और वहाँ के डॉक्टर से मिला। डॉक्टर ने मुझसे जो सवाल पूछा, उसे मैं कभी नहीं भूल सकता: “क्या आप चाहते हैं कि आपकी बच्ची जल्दी मरे, या आप चाहते हैं कि वह धीरे-धीरे मरे?” डॉक्टर ने यह इसलिए पूछा क्योंकि हर संभव कोशिश करने के बाद, अब और कुछ नहीं किया जा सकता था। उस पल, मैंने डॉक्टर से कहा कि बच्ची को धीरे-धीरे मरने दिया जाए। जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ कि मैंने ऐसा क्यों कहा, तो मुझे एहसास होता है कि इसके पीछे एक पिता के तौर पर मेरा अपना स्वार्थ था—भले ही बच्ची बहुत दर्द में रही होगी। अगली सुबह, सोमवार 30 अप्रैल को, अपनी पत्नी के साथ भजन संहिता 63:3 पर मनन करने के बाद, मैं अस्पताल गया और डॉक्टर से कहा कि चैरिस को जल्दी मरने दिया जाए। उस दिन, अपने माता-पिता, बड़े भाई और उनकी पत्नी, और छोटी बहन के साथ परमेश्वर की आराधना करने के बाद, मैंने चैरिस को पहली और आखिरी बार अपनी गोद में लिया। और मेरी गोद में ही वह सो गई। आज, वह याद मुझे बहुत शिद्दत से याद आ रही है।

हम सभी की अपनी-अपनी यादें होती हैं। अच्छी यादें भी हो सकती हैं, लेकिन शायद हमारे पास ज़्यादा दर्दनाक यादें होती हैं: चोट लगने, दुख सहने, दिल टूटने वगैरह की यादें। हम सभी के मन में शायद अतीत की ऐसी दर्दनाक घटनाएँ दबी होती हैं जिन्हें हम याद नहीं करना चाहते—ऐसी दुखद यादें जिन्हें भुलाने के लिए हम बहुत संघर्ष करते हैं। ये ऐसी दर्दनाक यादें हैं जिन्हें हम अपने अंदर गहराई में दबाकर रखते हैं और उन्हें बाहर नहीं लाना चाहते। हालाँकि समय बीतने के साथ ये यादें—जिन्हें हम सबसे छिपाकर रखना चाहते हैं—शायद हमें खुद भी भूल जाएं, लेकिन अक्सर किसी दूसरी दर्दनाक घटना से ये यादें फिर से उभर आती हैं। जब ऐसा होता

है, तो हम उन्हें फिर से दबाने और भुलाने की कोशिश करते हैं। अगर हम ऐसी ज़िंदगी जी रहे हैं, तो हमें हेनरी नूवेन की किताब *अ लेटर ऑफ़ कंसोलेशन* (A Letter of Consolation) की इन बातों पर ध्यान देना चाहिए: "अपनी दर्दनाक यादों का सामना करने से इनकार करके, हम दिल बदलने और पश्चाताप के ज़रिए परिपक्व होने का मौका गँवा देते हैं।" सिर्फ़ वही लोग पछतावे और दिल के बदलाव के ज़रिए परिपक्व होने का मौका पाते हैं, जिनमें अपने ज़ख्मों और दर्दनाक यादों का सामना करने की हिम्मत होती है। अगर हम परिपक्व नहीं हो पाते, तो समस्या की जड़ शायद हमारे अंदर गहराई तक बसी उन दर्दनाक यादों में हो सकती है। हो सकता है कि हम विकास और परिपक्वता के मौके इसलिए गंवा रहे हों क्योंकि हम उन यादों का सामना करने, अपना दिल बदलने और पछतावा करने में नाकाम रहते हैं। हमें अपने बंद दिलों को परमेश्वर के लिए खोलना होगा—यह काम सिर्फ़ विश्वास से ही हो सकता है। जब हमें परमेश्वर की चंगा करने की शक्ति पर विश्वास नहीं होता, तो हमारा पापी स्वभाव हमारे दिलों के दरवाज़े उनके लिए बंद रखता है। इसलिए, हमें सबसे पहले अपने दिल खोलने होंगे और परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास न करने के लिए पछतावा करना होगा। सच्ची चंगाई की प्रक्रिया तब शुरू होती है जब हम अपनी दर्दनाक यादों को यीशु की दर्दनाक यादों से जोड़ते हैं। जब हम यह जुड़ाव बनाते हैं, तो हमारे अंदर चंगाई का काम शुरू हो जाता है।

भजन संहिता 25:6 में, भजनकार दाऊद प्रार्थना करता है, "हे प्रभु, अपनी दया और अपनी करुणा को याद कर, क्योंकि वे बहुत पुराने समय से हैं।" क्या आपने कभी परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा है, "हे प्रभु, कृपया इसे याद रखना"? मुझे नहीं लगता कि मैंने कभी ऐसा किया है। मुझे दाऊद की प्रार्थना थोड़ी उलझन भरी लगती है। चूँकि परमेश्वर दया और करुणा से भरपूर हैं, तो दाऊद ने परमेश्वर से अपनी दया और करुणा को याद रखने के लिए क्यों कहा? उसने प्रभु से यह विनती क्यों की कि वे दया और प्रेम के अपने गुणों को भूलें नहीं—बल्कि याद रखें? इसका कारण यह है कि दाऊद खुद प्रभु की दया और करुणा को याद रखता था। वह अपने पापों के लिए पछतावा करते हुए प्रभु की दया पाना चाहता था। उसने प्रभु की दया को तब याद किया जब उसने अपने गुनाहों के लिए मिलने वाली ईश्वरीय सज़ा से बचने की प्रार्थना की, और उसने परमेश्वर की करुणा को तब याद किया जब वह उनकी माफ़ी पाने के लिए तड़प रहा था।

आइए अब उन चार तरीकों पर विचार करें जिनसे वे लोग अपना जीवन जीते हैं जो प्रभु की दया और करुणा को याद रखते हैं। पहला, जो लोग प्रभु की दया और करुणा को याद रखते हैं, वे उनकी ओर देखते हैं।

भजन संहिता 25:1 पर विचार करें: "हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा को तेरी ओर उठाता हूँ।" दाऊद ने अपने दुश्मनों और धोखा देने वालों के सताए जाने से हुए गहरे दुख के बीच प्रभु की ओर देखा (पद 2–3)। "मैं अपनी आत्मा को आपकी ओर उठाता हूँ" वाक्यांश का शाब्दिक अर्थ है "मैं अपनी आत्मा को आपकी ओर ऊपर ले जाता हूँ" (पार्क युन-सन)। फिर भी, यह कोई आसान काम नहीं है। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "अपनी आत्मा को ऊपर उठाना कोई आसान काम नहीं है। इसमें गहराई से बसे पाप के कारण, आत्मा रुकी हुई अवस्था में रहती है—जैसे ज़मीन से चिपकी हुई हो—और परमेश्वर की ओर मुड़ नहीं पाती।" इस बात से असहमत होना नामुमकिन है। जब हम उस आत्मा के बारे में सोचते हैं जो परमेश्वर की ओर नहीं मुड़ सकती—वह आत्मा जो रुकी हुई और दुनिया से जुड़ी रहती है—तो हमें यह मानना होगा कि इसका मुख्य कारण वास्तव में "मेरा अपना पाप" है। पवित्र परमेश्वर के सामने अपने बिना पछतावे वाले पापों के कारण, हम अपनी आत्मा को उनकी ओर नहीं उठा पाते। फिर भी, भविष्यद्वक्ता योना ने अपनी आत्मा को परमेश्वर की ओर उठाया। यह स्वीकार करने के बाद कि "यह तूफ़ान मेरी वजह से आया है," योना को समुद्र में फेंक दिया गया (योना 1:12)। फिर उसने बड़ी मछली के पेट से परमेश्वर से प्रार्थना की (योना 2)। उस प्रार्थना में, खासकर योना 2:4 में, भविष्यद्वक्ता ने प्रार्थना की: "मैंने कहा, 'मैं आपकी नज़र से दूर कर दिया गया हूँ; फिर भी मैं आपके पवित्र मंदिर की ओर फिर से देखूँगा।'" योना ने बड़ी मछली के पेट में रहते हुए भी प्रभु की ओर देखने का संकल्प किया। जिस आत्मा ने अपने पापों को स्वीकार कर लिया है और पछतावा किया है, वह फिर से प्रभु की ओर देख सकती है, ठीक वैसे ही जैसे योना ने किया था। हालाँकि, जिस आत्मा ने पछतावा नहीं किया है, वह न तो प्रभु की ओर देखती है और न ही ऐसा कर पाती है।

"अपनी आत्मा को प्रभु की ओर उठाना" का अर्थ है कि दाऊद पूरी तरह से उन पर निर्भर था (भजन संहिता 25:2)। जॉन कैल्विन ने प्रार्थना के बारे में कहा: "प्रार्थना में सबसे बड़ी बाधा एक बेचैन और डगमगाता हुआ दिल है, जो सोचता है कि उसे परमेश्वर के अलावा दूसरी चीज़ों से मदद मिल सकती है।" जब दिल बेचैन होता है, तो हम प्रभु की ओर नहीं देख पाते, क्योंकि हमारे विचार उन पर केंद्रित होने के बजाय दूसरे लोगों या चीज़ों की ओर भटकते रहते हैं। समस्या क्या है? समस्या दिल में बसा हुआ शक है। प्रेरित याकूब ने शक के बारे में इस तरह कहा: "लेकिन वह बिना किसी शक के, विश्वास के साथ मांगे, क्योंकि जो शक करता है वह समुद्र की लहर की तरह होता है जिसे हवा इधर-उधर उड़ाती और उछालती रहती है" (याकूब 1:6)। तो फिर, जो व्यक्ति विश्वास

के साथ प्रभु पर भरोसा करता है, वह क्या करता है? वह प्रभु का इंतज़ार करता है (भजन संहिता 25:3)। यहाँ, "प्रभु का इंतज़ार करने" का मतलब है सब्र के साथ उम्मीद रखना। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर की ओर देखते हुए और पूरी तरह से उस पर भरोसा करते हुए, दाऊद ने प्रभु पर अपनी उम्मीद रखी और सब्र से इंतज़ार किया (पार्क युन-सन)।

दूसरी बात, जो व्यक्ति प्रभु की दया और प्रेम-भरी भलाई को याद रखता है, वह उसकी सुरक्षा चाहता है। भजन संहिता 25:2–3 को देखें: "हे मेरे परमेश्वर, मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ; मुझे शर्मिंदा न होने दे; मेरे दुश्मन मुझ पर जीत न पाएँ। सचमुच, जो कोई तेरा इंतज़ार करता है वह शर्मिंदा न हो; वे शर्मिंदा हों जो बिना किसी वजह के धोखा देते हैं।" दाऊद ने अपने दुश्मनों और धोखा देने वालों के सताने के मुश्किल और कठिन हालात में प्रभु की सुरक्षा के लिए प्रार्थना की (पद 2–3)। यहाँ "मुझे शर्मिंदा न होने दे" की गुहार का मतलब है "मुझे असफल न होने दे," जिसका अर्थ है सुरक्षा के लिए प्रार्थना (पार्क युन-सन)। दाऊद ने अपने दुश्मनों के हाथों बहुत ज़्यादा अन्याय सहते हुए परमेश्वर की सुरक्षा और देखभाल की दिल से चाहत की। अपनी ताकत से दुश्मनों को हराने के लिए बदला लेने के बजाय, दाऊद ने पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा किया। एक विश्वासी के लिए यही सही रवैया है (पार्क युन-सन)। क्या हमारे अंदर ऐसा रवैया है? विश्वास का ऐसा नज़रिया जो परमेश्वर पर भरोसा करता है और सब कुछ उसे सौंप देता है—अपनी ताकत से दुश्मनों से बदला लेने की कोशिश करने के बजाय—यह पक्का करता है कि इंसान उन दुश्मनों के हाथों शर्मिंदा नहीं होगा। इसके उलट, परमेश्वर दुश्मनों—या उन लोगों को जो "बिना किसी वजह के धोखा देते हैं" (यानी, जो बेकार में धोखा देते हैं)—को शर्मिंदा करता है (पद 3; पार्क युन-सन)। जब दुश्मन झूठ और धोखे से हमें मुश्किल में डालते हैं, तो हमें असफलता का एहसास हो सकता है। असफलता का यह एहसास हमारे दिलों में शक के रूप में उभर सकता है, जिससे अंदरूनी उथल-पुथल मचती है और हम परमेश्वर के बजाय खुद पर या दूसरों पर भरोसा करने लगते हैं। इसलिए, हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमारे दिलों की रक्षा और हिफ़ाज़त करे। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमारे दिलों को बचाए रखे और हमें हमारे दुश्मनों के झूठ—यानी धोखे—का शिकार होने से बचाए।

तीसरी बात, जो लोग प्रभु की दया और प्रेम-भरी कृपा को याद रखते हैं, वे चाहते हैं कि उन्हें उनका सत्य सिखाया जाए।

भजन संहिता 25:4–5 पर विचार करें: "हे प्रभु, मुझे अपने मार्ग दिखा; मुझे अपने रास्ते सिखा। मुझे अपने सत्य में चला और सिखा, क्योंकि तू ही मेरे उद्धार का परमेश्वर है; मैं दिन भर तेरी बाट जोहता हूँ।" दाऊद के दुश्मनों (पद 2)—खासकर वे जिन्होंने बिना किसी कारण के विश्वासघात किया (पद 3), और बेईमान झूठे लोगों ने जिन्होंने झूठ गढ़े—ने सच्चे दाऊद को गिराने की कोशिश में उसे सताया। उस समय, दाऊद ने न केवल परमेश्वर की सुरक्षा मांगी, बल्कि उनसे यह भी विनती की कि वे उसे अपना मार्ग (सत्य) सिखाएं (पद 4)। यहाँ इस्तेमाल किए गए शब्द "तेरे मार्ग," "तेरे रास्ते," और "तेरा सत्य" सभी का एक ही अर्थ है; संक्षेप में, वे प्रभु की इच्छा को दर्शाते हैं। शैतान, जो हमारा दुश्मन है, प्रभु की इच्छा के बारे में हमें भ्रमित करने के लिए झूठ और धोखे का इस्तेमाल करता है, और वह अपने सेवकों का इस्तेमाल इसी तरह का भ्रम फैलाने के लिए करता है। इसीलिए हमें प्रभु की दया और प्रेम-भरी कृपा की बहुत ज़रूरत है। हम कितनी बार प्रभु की इच्छा को गलत समझ लेते हैं और अपनी इच्छाओं के अनुसार काम करते हैं? इसी कारण हमें प्रभु की दया की बहुत ज़रूरत है। दाऊद की तरह, हमें भी परमेश्वर की प्रेम-भरी कृपा की बहुत ज़रूरत है, क्योंकि उनकी प्रेम-भरी कृपा के द्वारा ही वे हमें अपनी इच्छा बताते हैं—या सिखाते हैं। प्रभु की इच्छा को जानने के लिए ईश्वरीय ज्ञान या प्रकाशन की आवश्यकता होती है (पद 4); जब तक परमेश्वर हमें पवित्रशास्त्र को समझने का ज्ञान नहीं देते, तब तक हम उनके वचन को नहीं समझ सकते। मत्ती 16:17 में, पतरस की स्वीकारोक्ति सुनने के बाद, यीशु कहते हैं कि "स्वर्ग में मेरे पिता" ने ही पतरस पर सत्य प्रकट किया था, जिससे वह यह कह सका, "तू मसीह है, जीवित परमेश्वर का पुत्र।" परमेश्वर के मार्गदर्शन के बिना, हम प्रभु की इच्छा को नहीं समझ सकते (भजन संहिता 25:4-5)। इसलिए, दाऊद ने प्रार्थना की: "हे प्रभु, मुझे अपना मार्ग सिखा; मैं तेरे सत्य में चलूँगा; मेरे मन को एक कर ताकि मैं तेरे नाम का भय मानूँ" (भजन संहिता 86:11)। हम प्रभु की इच्छा को तभी समझ सकते हैं जब वे हमारा मार्गदर्शन करते हैं (भजन संहिता 25:5)। चौथी बात, जो लोग प्रभु की दया और प्रेम-भरी कृपा को याद रखते हैं, वे अपने पापों की क्षमा चाहते हैं।

भजन संहिता 25:7 पर विचार करें: "हे यहोवा, मेरी जवानी के पापों और मेरे अपराधों को याद न कर; अपनी दया के अनुसार मुझे याद कर, अपनी भलाई के कारण।" अपने दुश्मनों द्वारा सताए जाने के दौरान, दाऊद ने परमेश्वर की ओर देखा; उसने अपनी जवानी के पापों को भी याद किया और पछतावे भरे दिल से तौबा की। सताहट और मुश्किलें असल में हमें परमेश्वर के करीब ले जाती हैं। जैसे-जैसे हम उनके करीब आते हैं, हमारे पाप उनकी पवित्र उपस्थिति में उजागर हो जाते हैं—न केवल हमारे वर्तमान पाप, बल्कि जवानी में किए गए

पाप भी। इसीलिए दाऊद ने प्रार्थना की और परमेश्वर से अपनी दया और प्रेम-भरी कृपा को याद रखने की विनती की। लू गुओलोंग की किताब *व्यूइंग थिंग्स फ्रॉम ए स्टेप अवे* (Viewing Things from a Step Away) में एक अंश है जो इस प्रकार है: "केवल उन बातों को याद रखना जिनके लिए हम आभारी हैं—अजीब बात है कि जहाँ दूसरों द्वारा अपमानित महसूस करने की घटनाओं को भूलना मुश्किल होता है, वहीं कृतज्ञता के पल चुपचाप हमारे दिमाग से निकल जाते हैं। इसके विपरीत, हम उन पलों को लंबे समय तक याद रखते हैं जब हमने दूसरों के प्रति दया दिखाई, फिर भी उन पलों को आसानी से भूल जाते हैं जब हमने उन्हें दुख पहुँचाया। यदि हम दूसरों से मिली मदद और कृपा को याद रखें और उनके प्रति अपनी शिकायतों को छोड़ दें, तो जीवन कहीं अधिक आज़ाद हो जाएगा। जीवन इतना छोटा है कि इसे उन बातों को याद करने में नहीं बिताया जाना चाहिए जिनके लिए हम आभारी नहीं हैं।" आइए हम सब परमेश्वर की दया और प्रेम-भरी कृपा को याद करते हुए जिएं। आइए हम अपनी नज़रें पूरी तरह से प्रभु पर टिकाकर जिएं। आइए हम आगे बढ़ें और सच्चे दिल से उनकी सुरक्षा, सच्चाई की उनकी शिक्षा और अपने पापों की क्षमा मांगें।

हे प्रभु, अपनी दया के अनुसार मुझे याद रखना।

“मेरी जवानी के पापों और मेरे अपराधों को याद न करना; हे प्रभु, अपनी भलाई के कारण अपनी दया के अनुसार मुझे याद रखना” (भजन संहिता 25:7)।

जीवन का मतलब है “यादें बनाना।” माता-पिता के साथ शुरुआती जीवन में हमारे दिलों में बसी यादों से लेकर भाई-बहनों और दोस्तों के साथ बड़े होने के दौरान बनी यादों तक, हम दूसरों के साथ अपने अनुभवों से कई तरह की यादें बनाते हैं। इन यादों को आम तौर पर दो प्रकारों में बांटा जा सकता है: अच्छी यादें और बुरी यादें। बेशक, इन दो श्रेणियों के अलावा, दर्दनाक या दुखद यादें भी होती हैं; फिर भी, इन्हें भी अंततः अच्छा या बुरा माना जा सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम उन्हें कैसे देखते हैं। क्या आपके दिल में अच्छी यादें ज़्यादा हैं या बुरी यादें? हमें समय-समय पर अपने जीवन को पीछे मुड़कर देखना चाहिए और अपनी यादों पर विचार करना चाहिए। ऐसा करते हुए, हमें और अधिक अच्छी यादें बनाने का संकल्प लेना चाहिए और कोशिश करनी चाहिए कि अच्छी यादें बुरी यादों पर हावी हो जाएं। तभी हम वास्तव में दिल से अमीर बन सकते हैं।

भजन संहिता 25:7 में, भजनकार दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता है और उनसे कहता है कि वे उसकी जवानी के पापों और अपराधों को याद न करें, बल्कि अपनी दया के अनुसार उसे याद रखें। उसने प्रभु की दया पर भरोसा करते हुए यह विनती की। क्या होता अगर उसने परमेश्वर से अपनी पवित्रता के अनुसार उसे याद करने की प्रार्थना की होती? क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? अगर परमेश्वर ने दाऊद को अपनी पवित्रता के अनुसार याद किया होता, तो उसका क्या होता? यह कल्पना से परे है। परमेश्वर की पवित्रता के प्रकाश में दाऊद के सभी पापों और अपराधों पर विचार करें; अगर परमेश्वर ने सचमुच उन सभी का हिसाब रखा होता और उन्हें याद रखा होता, तो दाऊद का क्या होता? यह अकल्पनीय है। अगर परमेश्वर हमें अपनी पवित्रता के पैमाने के अनुसार याद करते, तो न आप और न ही मैं उनके क्रोध और न्याय से बच पाते। फिर भी, अद्भुत सच्चाई यह है

कि परमेश्वर ने हमारे सभी पापों और अपराधों को अपने एकलौते पुत्र, यीशु पर डाल दिया; यीशु को क्रूस पर चढ़ाकर और उनकी मृत्यु करवाकर, परमेश्वर ने अपना सारा पवित्र क्रोध उन पर उंडेल दिया। नतीजतन, जब हम पश्चाताप करते हैं और अपने पापों और अपराधों से मुंह मोड़ लेते हैं, तो परमेश्वर न केवल उन्हें माफ कर देते हैं, बल्कि उन्हें याद भी नहीं रखते। प्रभु की इस दया और प्रेम पर भरोसा करते हुए, दाऊद ने परमेश्वर से विनती की: "अपनी दया के अनुसार मुझे याद रख" (पद 7)। उसने परमेश्वर की भलाई के लिए खुद को इस तरह याद किए जाने की प्रार्थना की।

हमें भी परमेश्वर से ऐसी ही प्रार्थना करनी चाहिए। दाऊद की तरह, हमें प्रभु की दया और प्रेम पर भरोसा करके परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। दाऊद की तरह हमें भी प्रार्थना करनी चाहिए, "अपनी दया के अनुसार मुझे याद रख," ताकि परमेश्वर की भलाई प्रकट हो सके। जब हम इस तरह प्रार्थना करते हैं, तो हमें परमेश्वर के प्रेम पर भरोसा करना चाहिए—एक ऐसा गहरा प्रेम जिसके कारण उन्होंने हमारे लिए अपने एकलौते पुत्र को क्रूस पर चढ़ा दिया (यूहन्ना 3:16)। हमें इस वादे पर पक्का विश्वास रखते हुए प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारे प्रति परमेश्वर पिता के प्रेमपूर्ण विचार रेत के कणों से भी अधिक हैं (भजन संहिता 139:17-18)। हमें विश्वास के साथ परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए, यह भरोसा रखते हुए कि वह—जो प्रेमपूर्ण विचारों से भरा है—न केवल हमारे पापों को स्वीकार करने और पछतावा करने पर हमें क्षमा करता है, बल्कि उन्हें याद भी नहीं रखता; बल्कि अपनी भलाई के कारण हमारे बारे में केवल अच्छी यादों (भलाई के विचारों) को संजोकर रखता है। इसके अलावा, हमें प्रभु के प्रेम की भावना से अपने प्रिय भाई-बहनों को याद रखने का प्रयास करना चाहिए। हमें उनकी किसी भी अप्रिय याद को अच्छी यादों से ढकने की कोशिश करनी चाहिए; हमें नकारात्मक यादों पर सकारात्मक यादों के द्वारा विजय पानी चाहिए। इस प्रकार, हमें अपने मन और हृदय को प्रभु में प्रेमपूर्ण यादों से भर लेना चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी ऐसी यादें बनाने के लिए खुद को समर्पित करें।

वह रास्ता जो मुझे चुनना है

[भजन संहिता 25:8–15]

क्या आपको अपने तय किए गए रास्ते को पीछे मुड़कर देखने पर पछतावा होता है? क्या आपने कभी सोचा है, "अगर मैंने कोई दूसरा रास्ता चुना होता तो मेरी ज़िंदगी कैसी होती? क्या मेरी ज़िंदगी बेहतर होती? क्या मैं शायद गलत रास्ते पर चल पड़ा?" जब मैं अपनी ज़िंदगी के बारे में सोचता हूँ, तो कभी-कभी खुद से पूछता हूँ, "अगर मैं अपनी जवानी के दिनों में बिना किसी मकसद के इधर-उधर न भटका होता, तो आज मैं कैसा पास्टर होता?" फिर भी, जो रास्ता पहले ही चुना जा चुका है, उस पर पछताने का क्या फ़ायदा? हालाँकि अतीत के बारे में सोचते रहना बेकार हो सकता है, लेकिन मेरा मानना है कि पीछे मुड़कर देखना, अतीत से सीखना और उस रास्ते पर विचार करना बुरी बात नहीं है जिस पर हमें वर्तमान और भविष्य में चलना चाहिए।

भजन संहिता 25:12 में, भजनकार दाऊद कहते हैं, "वह कौन है जो प्रभु से डरता है? वह उसे उस रास्ते के बारे में सिखाएगा जो उसके लिए चुना गया है।" जब मैं इस चुने हुए रास्ते की प्रकृति पर विचार करता हूँ, तो मेरा मानना है कि यह भजन संहिता 1 (1:1) में बताए गए "धर्मी लोगों के रास्ते" की ओर इशारा करता है। भजन संहिता 1 में, दाऊद बताते हैं कि ज़िंदगी में केवल दो ही रास्ते हैं: धर्मी लोगों का रास्ता और दुष्ट लोगों का रास्ता। यहाँ, धर्मी लोगों का रास्ता "वचन का रास्ता" है। जो लोग इस रास्ते पर चलते हैं, वे परमेश्वर के वचन में आनंद लेते हैं और दिन-रात उस पर मनन करते हुए जीते हैं (पद 2)। दाऊद, जो धर्मी लोगों के रास्ते पर चले, परमेश्वर के वचन में गहराई से जुड़े हुए थे; पानी की धाराओं के किनारे लगाए गए पेड़ की तरह, वे लगातार उस वचन से जीवन का जल प्राप्त करते थे (पद 3)। तो फिर, दुष्ट लोगों का रास्ता क्या है? यह एक ऐसा रास्ता है जो परमेश्वर के वचन को नज़रअंदाज़ करता है और दुष्ट लोगों की सलाह मानता है। परमेश्वर के वचन की रोशनी में अपनी अंतरात्मा की जाँच करने या धार्मिकता से जीने की कोशिश करने के बजाय, दुष्ट लोग अपनी मनमर्ज़ी और दुनिया के तरीकों के अनुसार जीते हैं। नतीजतन, वे पापियों के रास्ते पर कदम रखते हैं और उन अहंकारी लोगों

के बीच अपनी जगह बनाते हैं जो परमेश्वर को नहीं मानते। चूँकि ऐसे लोग परमेश्वर के वचन में गहराई से जुड़े नहीं होते, इसलिए वे अच्छा फल नहीं दे पाते। वे केवल भूसा पैदा करते हैं जो हवा में उड़ जाता है। यह भूसा ज़ाहिर है कि ज़मीन पर गिर जाता है; लेकिन, इसमें दाना न होने के कारण, यह जड़ नहीं पकड़ पाता। हवा इसे बस इधर-उधर उड़ा ले जाती है। इस तरह, बुरे लोगों का जीवन हमेशा अस्थिर और चंचल होता है, जिसमें उतार-चढ़ाव आते रहते हैं।

हालाँकि हमारे दो पैर हैं, पर कोई भी एक साथ दो रास्तों पर नहीं चल सकता। हमें या तो नेक लोगों का रास्ता चुनना होगा या बुरे लोगों का। हमें एक रास्ता चुनने की पूरी कोशिश करनी चाहिए और फिर उसके नतीजों को शांति से स्वीकार करना चाहिए। ज़िंदगी हमारे सामने ये दो अलग-अलग रास्ते रखती है। आप और मैं कौन सा रास्ता चुन रहे हैं? आज, भजन 25:8–15 पर ध्यान देते हुए, मैं उस चुनाव के तीन पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ जो हमें करना है; मुझे उम्मीद है कि दाऊद की तरह, हम भी वही रास्ता चुनेंगे जो परमेश्वर चाहता है और उस पर ईमानदारी से चलेंगे। पहला, वह रास्ता जो हम पापियों को चुनना है, वह अच्छा और सीधा है।

भजन 25:8 पर विचार करें: "प्रभु अच्छा और सीधा है; इसलिए वह पापियों को सही रास्ता दिखाता है।" यहाँ, उस रास्ते के दो पहलू बताए गए हैं जिसे हम पापियों को चुनना है और जिस पर चलना है:

(1) पहला है अच्छा रास्ता।

"अच्छा रास्ता" नैतिक अच्छाई वाले रास्ते को बताता है। दूसरे शब्दों में, वह अच्छा रास्ता जिस पर हम पापियों को चलना है, वह है "बुराई से मुड़ना और भलाई करना" (34:14)। अच्छे रास्ते पर चलने का मतलब है ऐसा जीवन जीना जो पाप को छोड़ दे और अच्छाई को अपनाए। अपनी किताब *God's Eye View* में, पादरी टॉमी टेनी ने कहा: "परमेश्वर आपकी खालीपन का इस्तेमाल अपनी भरपूरता को खुलकर दिखाने के लिए करना चाहता है।" हमें अपने दिलों से पापी विचारों को निकाल देना चाहिए—दुनिया के प्रति प्रेम, नफ़रत और हर तरह के बुरे विचारों को दूर करना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हमारे दिलों को अपने वचन और अपने प्रेम से भर देता है। अच्छे रास्ते को दया का रास्ता भी कहा जा सकता है। परमेश्वर को "अच्छा" (25:8) बताने का मतलब है उस दया को दिखाना जिसके साथ वह पापियों को देखता है (कैल्विन)। दया के रास्ते को चुनने का मतलब है कि, जैसे परमेश्वर अपनी अच्छाई (दया) के कारण मुझ जैसे पापी को नहीं छोड़ता, वैसे ही हमें भी

दूसरे पापियों को नहीं छोड़ना चाहिए, बल्कि परमेश्वर के दयालु दिल से उनकी परवाह करनी चाहिए। आखिरकार, अच्छे रास्ते का मतलब है पाप को छोड़ना लेकिन पापी को न छोड़ना; इसका मतलब है उन्हें प्यार से माफ़ करना और उनकी परवाह करना। हमें पापियों के प्रति दया का भाव रखना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे यीशु पापियों को बुलाने आए थे। हमें उन पर दया करनी चाहिए। हमें अपने ही पैमानों के आधार पर दूसरों को जल्दबाजी में परखने और दोषी ठहराने का पाप नहीं करना चाहिए। इसके बजाय, जैसे परमेश्वर ने हमारे पापों को माफ़ किया है, हमें भी ऐसा जीवन जीना चाहिए जिसमें हम दूसरों के पापों को माफ़ करें। इसीलिए दाऊद ने प्रार्थना की, "हे प्रभु, अपने नाम की खातिर मेरे पाप को माफ़ कर, क्योंकि यह बहुत बड़ा है" (पद 11)। क्या यह अद्भुत नहीं है? भले ही दुश्मन दाऊद को घेरे हुए थे और धोखे से उसे सता रहे थे (पद 3-4), उसने उनके पापों को उजागर करने पर ध्यान नहीं दिया; बल्कि, उसने परमेश्वर के सामने अपने पाप की गंभीरता को स्वीकार किया और अपने बड़े अपराध के लिए माफ़ी मांगी।

(2) दूसरा रास्ता ईमानदारी का रास्ता है।

आज के हिस्से, भजन संहिता 25:8 में, दाऊद उस ईमानदार परमेश्वर के बारे में बात करता है जो हमें सिखाता है; इस सीख का मतलब है कि हमें भी ईमानदार होना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर है। यह जानते हुए कि परमेश्वर "दिल को परखता है और सच्चाई से खुश होता है" (1 इतिहास 29:17), दाऊद उस परमेश्वर के सामने ईमानदारी से जिया जो दिल को परखता है। तो फिर, ईमानदारी के रास्ते पर चलने का क्या मतलब है? लूका 1:6 कहता है, "और वे दोनों परमेश्वर की नज़र में धर्मी थे, प्रभु की सभी आज्ञाओं और नियमों का बिना किसी दोष के पालन करते थे।" एक ईमानदार व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हुए जीता है। इसके अलावा, जैसे परमेश्वर हम पापियों को सही रास्ते पर ले जाता है, वैसे ही एक ईमानदार व्यक्ति दूसरे पापियों को सही रास्ते पर ले जाता है। दूसरे शब्दों में, वह पापियों को यीशु के पास ले जाता है—क्योंकि केवल यीशु के कीमती लहू के ज़रिए ही पापियों को माफ़ी मिल सकती है। दूसरी बात, वह रास्ता जिसे हम, यानी नम्र लोग, चुनते हैं, वह धार्मिकता का रास्ता है।

भजन संहिता 25:9 पर विचार करें: "वह नम्र लोगों को सही रास्ता दिखाता है और उन्हें अपना तरीका सिखाता है।" यहाँ, "नम्र" (या दीन) का मतलब उन लोगों से है जिनकी आत्मा परमेश्वर की सीख के ज़रिए नम्र हो गई है (कैल्विन)। जब परमेश्वर के बच्चे पाप करते हैं, तो वह उन्हें सही रास्ते पर लाने के लिए अनुशासित करते हैं ताकि

वे नम्र और दीन बन सकें (पार्क युन-सन)। आखिरकार, दाऊद का दिल तब नम्र हो गया जब उसने माना कि वह एक पापी है जिसने परमेश्वर के विरुद्ध गंभीर अपराध किया है और उसने पश्चाताप करते हुए क्षमा मांगी। जब हम पश्चाताप करते हैं, तो हमारे दिल नम्र—यानी दीन—हो सकते हैं। अपनी धार्मिकता में, परमेश्वर हमें प्यार की छड़ी से अनुशासित करके नम्र बनाते हैं, खासकर तब जब हम पापी होने के नाते पाप करने के बाद भी पश्चाताप नहीं करते। ऐसा करने के बाद, वह हमारे नम्र हुए दिलों की ज़मीन को धार्मिकता का मार्ग सिखाते हैं। नतीजतन, हम धार्मिकता के मार्ग पर चलने में सक्षम हो जाते हैं। हम जिस दौर में जी रहे हैं, वह भविष्यवक्ता यहेजकेल के समय की तरह ही अधर्म से भरी दुनिया है (यहेजकेल 9:9)। तो, ऐसे समय में हमें कौन सा रास्ता चुनना चाहिए? हमें नम्र बनना चाहिए—उनके वचन की शिक्षा और उनकी भलाई व सच्चाई से दीन होकर—और उनके धार्मिक मार्ग पर चलने का चुनाव करना चाहिए।

आखिर में, तीसरा बिंदु यह है कि जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, उन्हें वाचा का मार्ग चुनना चाहिए।

भजन संहिता 25:14 पर विचार करें: "यहोवा की मित्रता उन्हीं से है जो उसका भय मानते हैं, और वह उन्हें अपनी वाचा के बारे में बताता है।" दाऊद ने ऐसे समय में भी परमेश्वर का भय मानते हुए जीवन जिया जब चारों ओर अधर्म फैला था और उसके दुश्मन उसे धोखा देने की कोशिश कर रहे थे (पद 2-3)। इसी वजह से, वह सही रास्ता चुन पाया (पद 12)। ऐसी स्थिति में जब बहुत कम लोग परमेश्वर का भय मानते थे—और उसके आस-पास के बहुत से लोग प्रभु का अनुसरण करने के बजाय "शरीर की कमजोरियों में बंधकर सो रहे थे"—परमेश्वर ने दाऊद को वह रास्ता सिखाया जो उसे चुनना चाहिए था (कैल्विन, पार्क युन-सन)। वह रास्ता अच्छाई, दया, ईमानदारी और न्याय का रास्ता था। इन रास्तों पर ईमानदारी से चलने के कारण, दाऊद परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संगति का आनंद ले सका। दूसरे शब्दों में, केवल वे ही लोग परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संगति रख सकते हैं और वह रास्ता चुन सकते हैं जो उसे पसंद है। परमेश्वर चाहता है कि हम वाचा का रास्ता चुनें; यानी, परमेश्वर के वादों का रास्ता। हमें परमेश्वर के वादे वाले वचन को मजबूती से थामे रखना चाहिए और उस वादे के रास्ते पर विश्वास के साथ चलना चाहिए जिसे वह हमारे लिए खोलता है। यह प्रभु का रास्ता है—अटूट प्रेम और सच्चाई का रास्ता (पद 10)। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, उनके अलावा कोई भी संतों के उद्धार और आशीष के बारे में परमेश्वर के वादे (वाचा) को नहीं जान सकता। यह पाखंडियों और जो चुने नहीं गए हैं, उनकी समझ से बाहर है।" सच तो यह है कि क्योंकि पाखंडी और जो चुने नहीं गए हैं, वे परमेश्वर का भय नहीं

मानते, इसलिए वे परमेश्वर के वादे (वाचा) की आशीषों को न तो जान सकते हैं और न ही उनका आनंद ले सकते हैं। हालाँकि, हम वे लोग हैं जो प्रभु के वादे के रास्ते को जानते हैं और धैर्यपूर्वक विश्वास के साथ उस पर चलते हैं। इसलिए, दाऊद की तरह, हमें प्रभु के भय के माध्यम से परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संगति बनाए रखनी चाहिए। ऐसा करते हुए, हमें ईमानदारी से उस वाचा के रास्ते पर चलना चाहिए जिसे परमेश्वर हमारे सामने प्रकट करता है (पद 14)।

जिस रास्ते पर हमें चलना है, वह धर्मी लोगों का रास्ता है—अच्छाई, ईमानदारी, न्याय और वाचा का रास्ता। संक्षेप में, जिस रास्ते पर हमें चलना है, वह क्रूस का रास्ता है जिस पर स्वयं प्रभु चले थे। क्रूस का वह रास्ता बिल्कुल भी चौड़ा नहीं है; बाइबल इसे एक संकरा रास्ता बताती है। हमें जो रास्ता चुनना है, वह खुद को नकारने, हमें सौंपे गए क्रूस को उठाने और यीशु के नक्शेकदम पर चलने का रास्ता है। हमें यह रास्ता चुनना होगा और पूरी निष्ठा से इस पर चलना होगा। इसके लिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम हमेशा ऐसे लोग बने रहें जो उम्मीद के साथ परमेश्वर की ओर देखते हैं (पद 15)।

“मेरी आत्मा की रक्षा करें और मुझे बचाएं”

[भजन संहिता 25:16–22]

शैतान एक ऐसा दुश्मन है जो लगातार हमारे दिलों को निशाना बनाता है। वह बिना किसी भेदभाव के पाप के बीज बोता है, ताकि हमारे दिलों को अपने काबू में कर सके। वह लगातार हमले करता है और हमारी आँखों, कानों और विचारों के ज़रिए पाप के इन बीजों को हमारे दिलों में डालने की कोशिश करता है। जब बुरे और अशुद्ध विचार जड़ जमा लेते हैं, तो हमारे दिल शैतान के पापपूर्ण विचारों से भर जाते हैं। नतीजतन, हम पवित्रता से दूर हो जाते हैं, और बस कुछ ही समय की बात होती है जब हम असल में पाप कर बैठते हैं। लूका 21:34 चेतावनी देता है कि अगर हम सावधान नहीं रहे, तो हमारे दिल “अनैतिकता, नशे और ज़िंदगी की चिंताओं के बोझ तले दब सकते हैं।” “बोझ तले दबे” (या सुस्त) दिल का मतलब है कि लंबे समय तक अनदेखी करने और पाप के संपर्क में रहने के कारण वह कठोर और असंवेदनशील हो गया है; इसका मतलब है आध्यात्मिक मामलों के प्रति पूरी तरह से बेपरवाह हो जाना। ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम अपने दिलों की रक्षा करने में नाकाम रहे हैं।

भजन संहिता 25:20 में, भजनकार दाऊद परमेश्वर से विनती करता है, “मेरी आत्मा की रक्षा करें और मुझे बचाएं।” आज के अंश (भजन संहिता 25:16–22) पर ध्यान देते हुए, मुझे उम्मीद है कि हम इस बात पर सोच-विचार कर पाएंगे कि हमें कब और कैसे अपनी आत्मा की रक्षा करनी चाहिए और इससे ज़रूरी सबक सीख पाएंगे।

पहला, जब हम अकेले और मुसीबत में हों, तो हमें पूरी सावधानी से अपने दिलों की रक्षा करनी चाहिए।

भजन संहिता 25:16 को देखें: “मेरी ओर मुड़ें और मुझ पर दया करें, क्योंकि मैं अकेला और दुखी हूँ।” हमें पूरी सावधानी से अपने दिलों की रक्षा करनी चाहिए, क्योंकि जब हम अकेले और मुसीबत में होते हैं, तो शैतान हमारे मन पर हमला कर सकता है और पाप के बीज बो सकता है। हम अकेलेपन और दुख का अनुभव क्यों करते हैं? दाऊद को ऐसे अकेलेपन और तकलीफ का सामना इसलिए करना पड़ा क्योंकि उसने इस दुनिया के झूठ के साथ समझौता करने से इनकार कर दिया था (पार्क युन-सन)। अगर हम दुनिया के साथ समझौता करते और उसके लोगों के साथ घुल-मिल जाते, तो शायद हमें कम अकेलापन महसूस होता; लेकिन, सच्चाई से चलने वाले विश्वासी का रास्ता अकेलेपन और दुख का रास्ता होता है। दाऊद ऐसे लोगों से घिरा हुआ था जो “बिना किसी वजह के धोखा देते थे” — ऐसे दुश्मन जो बिना किसी आधार के धोखे से उसे परेशान करते थे (पद 3)। ऐसे हालात में, उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की और कहा, "मुझे अपनी सच्चाई की राह दिखा और मुझे सिखा..." (पद 5)। धोखे से भरे माहौल में उन्होंने सच्चाई के ज़रिए परमेश्वर का मार्गदर्शन और शिक्षा पाने की पूरी कोशिश की। जब हम अकेले और परेशान हों, तो हमें किसी एकांत जगह पर प्रभु की खोज करनी चाहिए। हमें यीशु के उदाहरण का पालन करना चाहिए, जो "अक्सर एकांत जगहों पर जाकर प्रार्थना करते थे" (लूका 5:16)। यहाँ "एकांत जगह" का मतलब है अकेलेपन की जगह, या असल में, ग्रीक भाषा में "जंगल" (रेगिस्तान)। अकेलेपन और दुख के बीच, दाऊद की प्रार्थना थी, "मेरी ओर मुड़ और मुझ पर दया कर" (पद 16)। यह विनती—"मेरी ओर मुड़"—परमेश्वर का चेहरा देखने की दाऊद की तड़प को दिखाती है; उन्होंने सच्चे दिल से परमेश्वर से अपनी ओर चेहरा करने को कहा। दाऊद अकेले जंगल से पवित्र एकांत के बगीचे की ओर बढ़ रहे थे। सच्चा "एकांत" सिर्फ़ अकेले रहना नहीं है; यह परमेश्वर के साथ होने की स्थिति है। दाऊद परमेश्वर की उपस्थिति के लिए तरसते थे। वे परमेश्वर की दया पर भी भरोसा करते थे। यह जानते हुए कि परमेश्वर की दया और प्रेम हमेशा से रहे हैं (पद 6), दाऊद ने परमेश्वर से उन्हें याद रखने की विनती की। इसलिए, दाऊद की तरह, जब हम अकेले और परेशान हों, तो हमें भी किसी शांत जगह पर जाकर परमेश्वर को पुकारना चाहिए। हमें उनके चेहरे की चाहत रखते हुए उनकी दया मांगनी चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम अकेलेपन और दुख के समय में अपने दिलों की रक्षा कर सकते हैं। तब परमेश्वर हमारी पुकार सुनेंगे और हमारी आत्माओं की रक्षा करेंगे।

दूसरी बात, जब हम चिंता से भरे हों, तो हमें अपने दिलों की सावधानी से रक्षा करनी चाहिए।

भजन संहिता 25:17 को देखें: "मेरे दिल की परेशानियाँ बढ़ गई हैं; मुझे मेरी मुसीबत से बाहर निकाल।" दाऊद का दिल चिंता से क्यों भरा था? इसलिए क्योंकि वे शारीरिक दर्द से गुज़र रहे थे और उन्हें अपने किए गए पापों का गहरा एहसास था (पार्क युन-सन)। इसलिए, दाऊद ने परमेश्वर से पश्चाताप की प्रार्थना की और कहा, "हे प्रभु, अपने नाम की खातिर, मेरे पाप को माफ़ कर दे, क्योंकि यह बहुत बड़ा है" (पद 11)। वे अपने ही पाप के कारण हो रही शारीरिक पीड़ा के बीच चिंतित थे। फिर भी, इस तरह की चिंता फ़ायदेमंद होती है; यही बेचैनी पछतावे की ओर ले जाती है। 2 कुरिन्थियों 7:10 में, प्रेरित पौलुस कहते हैं: "क्योंकि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख उठाने से ऐसा पछतावा होता है जो उद्धार की ओर ले जाता है, और जिसका कोई पछतावा नहीं करना पड़ता; लेकिन दुनिया का दुख मौत की ओर ले जाता है।" पौलुस बताते हैं कि दुनिया का दुख मौत की ओर ले जाता है, जबकि वह दुख जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होता है, पछतावा पैदा करता है और उद्धार की ओर ले जाता है। यहाँ तक कि भविष्यद्वक्ता योना ने भी, परमेश्वर के वचन की आज्ञा न मानकर पाप करने के बाद, अंततः अपनी तकलीफ के बीच परमेश्वर को पुकारा: "मैंने अपनी मुसीबत में प्रभु को पुकारा, और उसने मुझे जवाब दिया; मैंने पाताल की गहराई से पुकारा, और तूने मेरी आवाज़ सुनी" (योना 2:2)। जब हम पाप करते हैं, तो हमारा दिल तकलीफ से भर जाता है। उस तकलीफ की हालत में, हम दुख की गहराई में डूब जाते हैं। ऐसे समय में, दाऊद की तरह, हमें अपनी तकलीफ से छुटकारा पाने के लिए विनती करनी चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हमारी तकलीफ के बीच हमारी आत्मा की रक्षा करेगा और हमें हमारी मुसीबत से बाहर निकालेगा।

तीसरी बात, जब हम दुख और मुसीबत का सामना करते हैं, तो हमें अपने दिल की सावधानी से रक्षा करनी चाहिए।

भजन संहिता 25:18 पर विचार करें: "मेरी तकलीफ और मेरी मुसीबत पर ध्यान दे, और मेरे सभी पापों को माफ कर दे।" यह आयत दो बातें बताती है: पहली, कि कुछ दुख पाप से पैदा होते हैं; और दूसरी, कि अगर कोई पाप के कारण हुए दुख को सहते हुए विनम्रता से पछतावा करता है, तो उम्मीद है कि परमेश्वर की माफी से वह दुख दूर हो जाएगा (पार्क युन-सन)। इसीलिए दाऊद ने पछतावे की प्रार्थना की और कहा, "हे प्रभु, अपने नाम की खातिर, मेरे अपराध को माफ कर दे, क्योंकि यह बहुत बड़ा है" (आयत 11)। अपने दुश्मनों के पापों या धोखे पर ध्यान देने और उनकी आलोचना करने के बजाय, दाऊद ने उनके सतावे के बीच दुख सहते हुए

अपने खुद के पाप की गंभीरता को महसूस किया, और परमेश्वर के सामने पछतावा किया। इस नज़रिए से, “तकलीफ” हमारे लिए फायदेमंद है। इस प्रकार, दाऊद ने माना: “तकलीफ उठाने से पहले मैं भटक गया था, लेकिन अब मैं तेरे वचन का पालन करता हूँ” (भजन संहिता 119:67), और “मेरे लिए यह अच्छा है कि मैंने तकलीफ उठाई, ताकि मैं तेरे नियमों को सीख सकूँ” (आयत 71)। दुख का फायदा उस अनुग्रह में है जो हमें हमारे पापों के बारे में जागरूक करके परमेश्वर के सामने पछतावा करने के लिए प्रेरित करता है। इसलिए, जब हम मुश्किलों और परेशानियों का सामना करते हैं, तो हमें परमेश्वर के सामने पश्चाताप करना चाहिए क्योंकि ये परीक्षाएँ हमारे गंभीर पापों को उजागर करती हैं। पश्चाताप से शुद्ध हुई हमारी आत्माओं को सत्य के वचन का पालन करते हुए अपने भाई-बहनों से और भी गहरे प्रेम के साथ जुड़ना चाहिए (1 पतरस 1:22)। परमेश्वर ऐसी आत्माओं की देखभाल करते हैं।

चौथी और आखिरी बात, जब हमारे दुश्मन हमसे बहुत ज़्यादा नफ़रत करते हैं, तो हमें अपने दिलों की अच्छी तरह हिफ़ाज़त करनी चाहिए।

भजन संहिता 25:19 पर गौर करें: "मेरे दुश्मनों को देखो, क्योंकि वे बहुत सारे हैं; वे मुझसे बहुत ज़्यादा नफ़रत करते हैं।" विश्वासियों के भी दुश्मन होते हैं। हालाँकि, परमेश्वर की संतान होने के नाते, उनके दुश्मन असल में परमेश्वर के ही दुश्मन होते हैं। परमेश्वर के दुश्मन ही हम विश्वासियों के दुश्मन हैं (पार्क युन-सन)। विश्वासी के दुश्मन शैतान और उसके बुरे सेवक हैं। वे हमारा—यानी परमेश्वर की संतानों का—विरोध करते हैं, हमें धोखा देते हैं और सताते हैं। वे हमारे प्रति बहुत ज़्यादा नफ़रत रखते हैं। दाऊद के अनगिनत दुश्मन थे जो उससे बहुत नफ़रत करते थे। इसलिए, परमेश्वर की शरण लेने के बाद, उसने विनती की: "मेरी आत्मा की रक्षा कर और मुझे बचा; मुझे शर्मिंदा न होने दे, क्योंकि मैंने तुझमें शरण ली है। सच्चाई और ईमानदारी मेरी रक्षा करें, क्योंकि मैं तेरी बाट जोहता हूँ" (पद 20-21)। यहाँ, "सच्चाई" (integrity) का मतलब है बिना किसी दिखावे या पाखंड के पूरे दिल से काम करना, जबकि "ईमानदारी" (uprightness) का मतलब है सच्चाई के रास्ते पर बिना भटके सीधे चलना (पार्क युन-सन)। यहाँ तक कि जब दाऊद को अपने दुश्मनों की चालों की वजह से मुश्किलों का सामना करना पड़ा, तब भी उसने अपनी जान बचाने की बेताब कोशिश में सच्चाई का रास्ता नहीं छोड़ा। इसके बजाय, उसने पूरे दिल से प्रार्थना की कि परमेश्वर उसे सच्चाई के रास्ते पर सीधे चलने की शक्ति दे (पार्क युन-सन)। आत्मा खुद पाप के कारण काली पड़ गई है और उसमें खुद को बचाने की कोई शक्ति नहीं है; केवल

परमेश्वर ही आत्मा की रक्षा और उसे बचा सकता है (पार्क युन-सन)। जब दुश्मन हमसे बहुत ज़्यादा नफ़रत करते हैं, तो हमें उस परमेश्वर की शरण में जाना चाहिए जो हमसे सबसे ज़्यादा प्यार करता है और उसी की ओर देखना चाहिए। अपने दुश्मनों की नफ़रत के बीच, हमें परमेश्वर के महान प्रेम की गहराई को और भी ज़्यादा समझना और महसूस करना चाहिए। हमारा परमेश्वर हमारी आत्माओं की रक्षा करता है।

हमें अपने दिलों की रक्षा करने के लिए खुद को समर्पित करना चाहिए। शैतान हमें अलग-थलग करने और सताने की कोशिश करता है, हमारे मन को चिंताओं से भर देता है और हमें दुख और मुसीबत में धकेल देता है। शैतान की ऐसी चालों का सामना करते हुए, अपनी आत्मा की रक्षा करने की ज़िम्मेदारी हमारी है। ऐसा करने के लिए, हमें प्रभु की शरण लेनी चाहिए और उसे पुकारना चाहिए। हमें सच्चे दिल से परमेश्वर की सुरक्षा माँगनी चाहिए और उससे अपनी आत्मा की रक्षा करने के लिए कहना चाहिए। इसके अलावा, हमें परमेश्वर से उद्धार के लिए विनती करनी चाहिए। दाऊद ने प्रार्थना की, "मेरी ओर मुड़ और मुझ पर दया कर" (पद 16), "मुझे मेरी मुसीबत से बाहर निकाल" (पद 17), "मेरे सारे पापों को माफ़ कर" (पद 18), और "मेरी आत्मा की रक्षा कर और मुझे बचा" (पद 20)। हमें भी प्रार्थना करनी चाहिए। परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दे, हमें सभी कष्टों से बचाए (पद 22), और हमारे दिलों की रक्षा करे।

उस जगह से प्यार करें जहाँ परमेश्वर की महिमा बसती है! (1)

[भजन संहिता 26]

अपनी किताब *द गॉड चेज़र्स* (The God Chasers) में पादरी टॉमी टेनी ने कहा है: "सामूहिक आराधना इस बात पर निर्भर नहीं करती कि कितने लोग जमा हुए हैं, बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि परमेश्वर की उपस्थिति कितनी है।" मुझे लगता है कि यह बात बिल्कुल सही है। फिर भी, ऐसा लगता है कि—परमेश्वर की उपस्थिति खोजने के बजाय—हम वह चाहते हैं जिसे टेनी "माइक्रोवेव-स्टाइल, तुरंत होने वाला रिवाइवल (आध्यात्मिक जागृति)" कहते हैं। यह माइक्रोवेव में पॉपकॉर्न का पैकेट रखने और दानों को फूलते हुए देखने जैसा है; यह एक सरल, तेज़ और आसान तरीका है जिसमें बहुत कम मेहनत लगती है। हम इस तरह के "माइक्रोवेव रिवाइवल" की चाहत इसलिए रखते हैं क्योंकि हमारी आध्यात्मिक रुचि "फ़ास्ट फ़ूड" वाली हो गई है। जैसे हम अक्सर फ़ास्ट फ़ूड खाते हैं, वैसे ही हम अपने विश्वास के जीवन में भी "फ़ास्ट-फ़ूड" वाला तरीका पसंद करने लगे हैं। हम चाहते हैं कि आराधना सभाएँ छोटी और जल्दी खत्म होने वाली हों; हमें बाइबल स्टडी में होमवर्क करना पसंद नहीं है; और जब हमारी निजी समस्याओं के लिए की गई प्रार्थनाओं का तुरंत जवाब नहीं मिलता, तो हम बड़बड़ाते और शिकायत करते हैं। ऐसा लगता है कि हमारी आध्यात्मिक भूख काफी बिगड़ गई है। इसका नतीजा क्या है? नतीजा "आध्यात्मिक आर्टेरियोस्क्लेरोसिस" (धमनियों का सख्त होना) से कम नहीं है (टेनी)। फ़ास्ट फ़ूड, छोटी आराधना सभाओं या जल्दी होने वाले समारोहों को प्राथमिकता देने से आखिरकार आध्यात्मिक आर्टेरियोस्क्लेरोसिस हो जाता है। आर्टेरियोस्क्लेरोसिस का कारण क्या है? इसके कारणों में हाई ब्लड कोलेस्ट्रॉल, धूम्रपान, हाई ब्लड प्रेशर, मोटापा और व्यायाम की कमी शामिल हैं। इन कारणों में से, मोटापा और व्यायाम की कमी हमारे आध्यात्मिक जीवन के लिए खास तौर पर मायने रखते हैं। ऐसा लगता है कि हम परमेश्वर के वचन का भरपूर आनंद लेते हैं जो बाढ़ की तरह बरसता है, फिर भी हम आध्यात्मिक मोटापे से पीड़ित हैं क्योंकि हम उस वचन को मानते नहीं हैं और न ही उसे अपने जीवन में लागू करते हैं; समस्या आध्यात्मिक व्यायाम की कमी है। हालाँकि परमेश्वर के वचन को ग्रहण करने के हमारे तरीके

में अपनी समस्याएँ हो सकती हैं, लेकिन बड़ी समस्या उसे पाने के बाद आध्यात्मिक व्यायाम न करने में है। आखिरकार, आध्यात्मिक आर्टेरियोस्क्लेरोसिस हमारी सोच को बिगाड़ देता है और उसे पंगु बना देता है, ठीक वैसे ही जैसे दिमाग की नस बंद होने से स्ट्रोक हो जाता है। इसके अलावा, जैसे कोरोनरी धमनियों के बंद होने से एनजाइना, हार्ट अटैक या अचानक मौत हो सकती है, वैसे ही आध्यात्मिक आर्टेरियोस्क्लेरोसिस हमारे दिलों को मसीह के दिल में बदलने से रोकता है, जिससे हम आत्माओं से प्यार करने में असमर्थ हो जाते हैं। यही तो शैतान का काम है। “माइक्रोवेव-स्टाइल में तुरंत जोश में आना” और “आध्यात्मिक धमनियों का सख्त होना” (spiritual arteriosclerosis) ये सब शैतान के काम हैं। शैतान हमें परमेश्वर की सच्ची आराधना करने से रोकने की कोशिश करता है। आराधना में रुकावट डालकर—जो हमारी आध्यात्मिक जीवन-रेखा है—वह हमें परमेश्वर की महिमा में प्रवेश करने और उनकी उपस्थिति का अनुभव करने से रोकना चाहता है। अय्यूब इसका एक बेहतरीन उदाहरण है; शैतान ने सबसे पहले अय्यूब के पशुधन—जिसमें उसके मवेशी और भेड़ें शामिल थीं—पर हमला किया, ताकि उससे परमेश्वर की आराधना करने की क्षमता छीनी जा सके। फिर भी, हमें आराधना के बीच परमेश्वर की महिमा को देखना चाहिए। हमें आराधना के दौरान परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करना चाहिए। इसलिए, हमें परमेश्वर की महिमा में बने रहना चाहिए। हमें उस जगह से प्रेम करना चाहिए जहाँ उनकी महिमा वास करती है और उसके लिए और भी अधिक तड़पना चाहिए।

भजन संहिता 26:8 में, भजनकार दाऊद स्वीकार करता है कि वह "उस घर से प्रेम करता है जहाँ आप वास करते हैं और उस स्थान से जहाँ आपकी महिमा रहती है।" इसलिए, "उस स्थान से प्रेम करें जहाँ परमेश्वर की महिमा वास करती है" शीर्षक के तहत, मैं इस बात पर विचार करना चाहूँगा कि जो लोग उस स्थान से प्रेम करते हैं, वे कैसा आचरण करते हैं।

भजन संहिता 26 की आयतें 1 और 11 बताती हैं कि जो लोग उस स्थान से प्रेम करते हैं जहाँ परमेश्वर की महिमा वास करती है, वे ईमानदारी और सच्चाई के मार्ग पर चलते हैं: "मैं अपनी ईमानदारी में चला हूँ, और मैंने बिना डगमगाए प्रभु पर भरोसा किया है; हे प्रभु, मेरा न्याय कर" (आयत 1); "लेकिन जहाँ तक मेरी बात है, मैं अपनी ईमानदारी में चलूँगा; मेरा उद्धार कर, और मुझ पर दया कर" (आयत 11)। यहाँ "ईमानदारी में चलने" का क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह नहीं है कि दाऊद परमेश्वर की तरह परिपूर्ण और पाप-रहित था। इसका सीधा सा अर्थ है कि, संबंधित मामलों में, दाऊद बिना कोई गलती किए प्रभु के प्रति वफादार रहा। दूसरे शब्दों में, वह कभी

भी उन लोगों के समूहों के साथ नहीं मिला जो उसके समय में बुराई करते थे (आयतें 4–5; पार्क युन-सन)। संक्षेप में, दाऊद ने ईमानदारी और पूरे मन से काम किया ["'ईमानदारी' (आयतें 1, 11) के रूप में अनुवादित शब्द मूल हिब्रू में *टॉम* (tom) है, जिसका अर्थ है ईमानदारी, पूरे मन से किया गया कार्य, और इसी तरह की बातें" (पार्क युन-सन)]। इस प्रकार, दाऊद, जो उस स्थान से प्रेम करता था जहाँ परमेश्वर की महिमा वास करती है, ईमानदारी और पूरे मन के साथ जिया। अब, आज के वचन पर ध्यान देते हुए, आइए सोचें कि जो लोग इतनी ईमानदारी और पूरे मन से जीते हैं, वे अपनी आस्था का जीवन कैसे बिताते हैं... मैं बस एक बात पर विचार करना चाहूँगा।

जो लोग ईमानदारी और पूरे मन से काम करते हैं, वे डगमगाते नहीं हैं; बल्कि, वे परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं।

भजन संहिता 26:1 को देखें: "मैं अपनी सच्चाई पर चला हूँ और बिना डगमगाए प्रभु पर भरोसा रखा है; हे प्रभु, मेरा पक्ष ले।" भजनकार दाऊद ने सच्चाई के साथ—पूरी तरह और ईमानदारी से—जीवन बिताया, भले ही वह बुरे लोगों से घिरा हुआ था, क्योंकि वह उस जगह से प्यार करता था जहाँ परमेश्वर की महिमा रहती है। यह वचन इन बुरे लोगों को "झूठ बोलने वाले" (वचन 4), "धोखेबाज़" (वचन 4), "बुरे काम करने वाले" (वचन 5), "दुष्ट लोग" (वचन 5), "पापी" (वचन 9), और "हत्यारे" (वचन 9) कहता है। ऐसी स्थिति में भी, दाऊद अडिग रहा और परमेश्वर पर भरोसा रखा। अडिग रहने का मतलब है कि वह डगमगाया नहीं और न ही परमेश्वर पर अपने भरोसे में ज़रा भी शक किया। अगर हम भी दाऊद जैसी स्थिति में होते, तो क्या हम भी बिना डगमगाए परमेश्वर पर भरोसा कर पाते? क्या हम सचमुच बिना किसी शक के पूरी तरह से उस पर भरोसा कर पाते? यही सच्ची आस्था का सार है। सच्ची आस्था बिना डगमगाए पूरी तरह से केवल परमेश्वर पर निर्भर करती है। दाऊद की आस्था शुद्ध थी, उसमें कोई शक नहीं था, क्योंकि वह परमेश्वर पर भरोसा करता था (देखें याकूब 1:6)। परमेश्वर पर पूरी तरह और बिना शक के भरोसा करते हुए, दाऊद ने उससे विनती की: "हे प्रभु, मेरा पक्ष ले" (भजन संहिता 26:1)। उसने परमेश्वर से न्याय माँगा, और कहा कि वह उसकी बेगुनाही और उसका विरोध करने वाले बुरे लोगों के बीच फ़ैसला करे। दाऊद ने यह भी प्रार्थना की: "हे प्रभु, मुझे जाँच और परख; मेरे दिल और मन की परीक्षा ले" (वचन 2)। यहाँ, "जाँचने" का मतलब है दिल की गहराई से देखना, जबकि "परखने" (या "शुद्ध करने") का मतलब है धातु को शुद्ध करने के लिए आग का इस्तेमाल करने की प्रक्रिया (पार्क युन-सन)। "इसका मतलब है कि, किसी के आस्था वाले चरित्र के बारे में..." ऐसा लगता है कि यह हिलाए जाने की प्रक्रिया की ओर इशारा

करता है—जैसे मुसीबत से गुज़रना—ताकि अशुद्धियों की जाँच की जा सके (पार्क युन-सन)। डेविड ने अपने सामने आए मुश्किल और चुनौतीपूर्ण हालात को न सिर्फ़ परमेश्वर की नज़र से अपने दिल को गहराई से परखने, बल्कि खुद को बेहतर बनाने के मौके में बदल दिया। नतीजतन, परमेश्वर पर उनका भरोसा अडिग और पक्का बना रहा। यही तो विश्वास की ताकत है: बुरे लोगों के बीच दर्दनाक हकीकत का सामना करते हुए भी परमेश्वर पर भरोसा रखना, साथ ही खुद पर गौर करना और अपनी इच्छाशक्ति व दिल को बेहतर बनाना। डेविड का विश्वास ऐसा ही अडिग था।

हमारे विश्वास की क्या स्थिति है? क्या यह दाऊद के विश्वास जितना ही अटूट है? क्या हम बिना डगमगाए पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा करते हैं? दाऊद की तरह, हमें भी मुश्किलों और परेशानियों को अपने विश्वास को मज़बूत करने के मौकों के तौर पर देखना सीखना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें आज के वचन से मिली दो बातों को अपनाना होगा: पहली, मुश्किल और परेशानी के समय में, हमें परमेश्वर के वचन के ज़रिए खुद को गहराई से परखना चाहिए; और दूसरी, हमें इन समयों का इस्तेमाल अपने दिल और इच्छाशक्ति को अनुशासित करने के लिए करना चाहिए। जब हम ऐसी परीक्षाओं के दौरान अपने दिल को गहराई से परखते हैं, तो हमें अपने पापों की गंभीरता और संख्या का एहसास होना चाहिए और परमेश्वर से पश्चाताप की प्रार्थना करनी चाहिए (25:11)। इसके अलावा, इन मुश्किलों और परेशानियों के बीच, हमें अपनी मर्ज़ी के बजाय प्रभु की मर्ज़ी को समझना चाहिए और उसे पूरा करने के लिए उसका पालन करना चाहिए। दाऊद ने दुश्मनों से घिरे और सताए जाने के बावजूद दिल के इस अनुशासन का अनुभव किया। इसलिए, हमें भी मुश्किलों और परेशानियों को मौकों में बदलना सीखना चाहिए। ऐसा करते हुए, हमें अपनी परीक्षाओं के बीच परमेश्वर की महिमा को और भी ज़्यादा चमक के साथ प्रकट करना चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम ऐसे लोग बनें जो परमेश्वर की महिमा के निवास स्थान से प्रेम करें और मुश्किल और परेशानी के समय में भी उस महिमामयी ज्योति को और भी तेज़ी से चमकाएँ।

उस जगह से प्यार करें जहाँ परमेश्वर की महिमा बसती है! (2)

[भजन संहिता 26]

कुछ समय पहले, मैंने अपने चर्च की एक विज़ुअल हिस्ट्री (दृश्य इतिहास) दिखाने के लिए चर्च के एल्बम से पुरानी तस्वीरें स्कैन कीं। जब मैंने उन पुरानी तस्वीरों को स्कैन किया, तो मुझे हैरानी हुई कि समय कितनी तेज़ी से बीत जाता है; साथ ही, पुराने सदस्यों की तस्वीरें देखकर मुझे विश्वास के जीवन में वफ़ादारी—एक ज़रूरी आध्यात्मिक रवैया—के महत्व की फिर से याद आई। ऐसे दौर में जब बहुत से लोग अक्सर एक चर्च से दूसरे चर्च जाते रहते हैं, मेरा मानना है कि कई सालों तक एक ही मंडली में वफ़ादारी से सेवा करने में कुछ बहुत कीमती बात है।

भजन संहिता 26 के रचयिता दाऊद, सचमुच वफ़ादार व्यक्ति थे। क्योंकि उन्हें उस जगह से प्यार था जहाँ परमेश्वर की महिमा बसती है, इसलिए उन्होंने स्वीकार किया कि वे "अपनी सच्चाई/खराई में चले" (पद 1, 11)। यहाँ "सच्चाई/खराई में चलने" का मतलब यह नहीं है कि वे पाप-रहित या परमेश्वर की तरह परिपूर्ण थे; बल्कि, इसका मतलब है कि वे कभी भी अपने समय की पापपूर्ण भीड़ के तौर-तरीकों में नहीं ढले (पद 4, 5) (पार्क युन-सन)। संक्षेप में, इसका मतलब है कि दाऊद ने वफ़ादारी का जीवन जिया ["'सच्चाई/खराई' (integrity) के लिए हिब्रू शब्द *टॉम* (tom) है, जिसका अर्थ है वफ़ादारी, पूरे दिल से काम करना, वगैरह" (पार्क युन-सन)]। मैंने उन तीन सीखों पर विचार किया है जो हम दाऊद से सीख सकते हैं, जिन्होंने इतनी वफ़ादारी से जीवन जिया।

पहली बात, जो लोग वफ़ादारी से चलते हैं वे डगमगाते नहीं हैं; वे परमेश्वर पर भरोसा करते हैं।

भजन संहिता 26:1 को देखें: "मैं अपनी सच्चाई/खराई में चला हूँ; मैंने बिना डगमगाए प्रभु पर भरोसा किया है। हे प्रभु, मेरा न्याय कर।" मुश्किल हालात का सामना करते हुए भी, दाऊद अडिग रहे और परमेश्वर पर भरोसा

रखा। इसके बजाय, उन्होंने उन मुश्किलों का इस्तेमाल परमेश्वर से प्रार्थना करने के मौके के तौर पर किया। उन्होंने प्रार्थना की, "हे प्रभु, मेरी जाँच कर और मुझे परख; मेरे मन और मेरे दिल को आज़मा" (पद 2)। यहाँ, "जाँच करने" (examine) शब्द का अर्थ है दिल की गहराई से पड़ताल करना, जबकि "परखने" (try या refine) का अर्थ है धातु को शुद्ध करने के लिए आग का इस्तेमाल करने की प्रक्रिया (पार्क युन-सन)। यह हिलाए जाने की प्रक्रिया का संकेत देता है—शायद मुसीबतों के ज़रिए—ताकि यह देखा जा सके कि किसी के आध्यात्मिक चरित्र में कोई अशुद्धि तो नहीं है (पार्क युन-सन)। हमें भी मुश्किलों को खुद को झकझोरने और परखने देना चाहिए। वजह यह है कि बिना दर्द और मुश्किलों के, हम शायद ही कभी अपने दिल की गहराई में झाँकते हैं। ऐसा लगता है कि हम तभी रुककर खुद पर गौर करते हैं जब हम दर्दनाक हालात का सामना करते हैं। डेविड ने न सिर्फ़ मुश्किल हालात का इस्तेमाल भगवान की नज़र से अपने दिल को गहराई से परखने के लिए किया, बल्कि उन्हें खुद को बेहतर बनाने के मौके के तौर पर भी इस्तेमाल किया। नतीजतन, वह भगवान पर भरोसे में अडिग और पक्के रहे। डेविड की तरह, हमें भी ईमानदारी से चलना चाहिए और बिना डगमगाए भगवान पर भरोसा करना चाहिए।

दूसरी बात, जो लोग ईमानदारी से चलते हैं, वे प्रभु की सच्चाई पर चलते हैं।

भजन संहिता 26:3 देखें: "क्योंकि तेरी दया मेरी आँखों के सामने है, और मैं तेरी सच्चाई पर चला हूँ।" मुश्किलों के बीच भी, डेविड प्रभु के वचन के अनुसार चले, उन्होंने पाप से भरी दुनिया या बुरे लोगों के साथ समझौता करने से इनकार कर दिया। वह आसानी से घमंडी लोगों के साथ बैठ सकते थे या धोखेबाज़ों के साथ चल सकते थे, फिर भी उन्होंने विश्वास का ऐसा जीवन जिया जो ऐसे हालात से ऊपर था। यह कैसे मुमकिन हुआ? डेविड झूठ और धोखेबाज़ लोगों से भरी दुनिया में भी प्रभु की सच्चाई पर कैसे चल पाए? यह सब प्रभु की दया की वजह से ही हुआ। दूसरे शब्दों में, डेविड सच्चाई पर इसलिए चल पाए क्योंकि, मुसीबत और मुश्किलों के बीच भी, उन्होंने अपनी आज़माइशों को खुद को परखने और अपने दिल और इच्छाशक्ति को बेहतर बनाने के मौके के तौर पर देखा; इस प्रक्रिया के ज़रिए, उन्होंने अपनी आँखों के सामने भगवान की दया को देखा। क्या हम भी अपनी ज़िंदगी जीते हुए आत्मा की आँखों से भगवान की दया को देख रहे हैं?

पिछले हफ़्ते, वॉरेन वियर्सबे की किताब *Be Decisive* पढ़ते हुए मैंने भगवान की दया का अनुभव किया। मैंने उनकी दया को तब महसूस किया जब मैंने इस बात पर गौर किया कि कैसे भगवान ने न सिर्फ़ यिर्मयाह को

भविष्यवाणी का वचन दिया, बल्कि उस भविष्यवाणी के पूरा होने तक अपने सेवक की रक्षा भी की। इसे अपनी ज़िंदगी में लागू करने से मुझे बहुत सुकून और हिम्मत मिली—यह विश्वास करते हुए कि भगवान मेरी रक्षा तब तक करेंगे जब तक वह उस वादे को पूरा नहीं कर देते जो उन्होंने मत्ती 16:18 में हमारी कलीसिया से किया था: "...मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा।" क्योंकि दाऊद ने परमेश्वर की दया और भलाई को अपनी आँखों के सामने देखा था, इसलिए वह बेकार या धोखेबाज़ लोगों के साथ समझौता किए बिना प्रभु की सच्चाई के मार्ग पर चल सका। हम इसे उल्टे नज़रिए से भी देख सकते हैं: मुश्किल समय में सच्चाई के मार्ग पर चलने के बजाय हम कभी-कभी समझौता इसलिए करते हैं क्योंकि हम परमेश्वर की दया और भलाई को अपनी आँखों के सामने नहीं देख पाते। ऐसे आध्यात्मिक अनुभव के बिना—यानी आत्मा की आँखों से उनके प्रेम को साक्षात देखे बिना—अगर हमारी शारीरिक आँखें केवल हमारे सामने आने वाली मुश्किलों पर ही टिकी रहती हैं, तो हम निश्चित रूप से सच्चाई के मार्ग पर चलने में असफल हो जाते हैं और अंततः समझौता कर बैठते हैं।

हम दाऊद के जीवन का वर्णन तीन तरह से कर सकते हैं, जिसने परमेश्वर की दया और भलाई के कारण प्रभु की सच्चाई के मार्ग पर चलना जारी रखा:

(1) दाऊद ने उन लोगों का साथ नहीं दिया जो सच्चाई के अनुसार चलने में असफल रहे।

दाऊद उनके साथ नहीं चला; उसने बुरे काम करने वालों की सभा से भी नफ़रत की (पद 4–5)। यहाँ, "झूठ बोलने वाले लोगों" का अर्थ उन लोगों से है जो परमेश्वर की सच्चाई के अनुसार काम नहीं करते (पार्क युन-सन)। दाऊद, जो सच्चाई के मार्ग पर चलता था, उसने उन लोगों के तरीकों का अनुसरण नहीं किया जिन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को नज़रअंदाज़ किया (पार्क युन-सन)। "धोखेबाज़ लोगों" शब्द का अर्थ उन लोगों से है जो मुखौटा पहनते हैं—ऐसे लोग जो दिल से बुरे होते हैं लेकिन ऊपर से नेक दिखाई देते हैं (पार्क युन-सन)। जो व्यक्ति सच्चाई के मार्ग पर चलता है, वह ऐसे धोखेबाज़ लोगों को पहचान सकता है; वे उन लोगों में अंतर कर सकते हैं जो अच्छाई का दिखावा करते हैं जबकि उनके भीतर झूठ और बुराई छिपी होती है। इसके अलावा, दाऊद ने बुराई करने के लिए इकट्ठा हुए समूहों—बुरे काम करने वालों की सभा—से नफ़रत की और बुरे लोगों, विशेष

रूप से "अनियंत्रित" (या "अस्थिर") लोगों के साथ संगति करने से इनकार कर दिया—ऐसे लोग जिनमें नैतिक दृढ़ता की कमी होती है, जो बिना किसी संयम के जीते हैं और मनमाने ढंग से काम करते हैं।

(2) डेविड ने भगवान के साथ रहते हुए भी एक पवित्र जीवन बनाए रखा।

भजन 26:6 देखें: "हे प्रभु, मैं अपने हाथ निर्दोषता से धोता हूँ और तेरी वेदी के चारों ओर घूमता हूँ।" यह उस रिवाज को बताता है जहाँ एक पुजारी वेदी पर अपनी सेवा शुरू करने से पहले अपने हाथ धोता था (निर्गमन 40; व्यवस्थाविवरण 21:6–7, 30–33)। भगवान से बात करने के लिए वेदी के पास जाने से पहले, डेविड ने यह पक्का किया कि उसकी रोज़ की ज़िंदगी पवित्र हो (पार्क युन-सन)। यह वैसा ही है जैसे कोई हफ़्ते के दौरान एक पवित्र जीवन जी सकता है और फिर रविवार को भगवान के घर आकर उनसे मिलने जा सकता है।

(3) डेविड ने भगवान को धन्यवाद दिया और भगवान के किए कामों की गवाही दी।

भजन 26:7 देखें: "धन्यवाद की आवाज़ में ऐलान करना और तेरे सब अद्‌भुत कामों का बखान करना।" भगवान ने जो किया है उसके लिए धन्यवाद देना एक निजी ज़िम्मेदारी है जिसे हर व्यक्ति को पूरा करना चाहिए (पार्क युन-सन)। लेकिन, डेविड ने दूसरों को उन चीज़ों के बारे में गवाही देकर और आगे बढ़े जो भगवान ने उनकी ज़िंदगी में की थीं। उन्होंने एक प्रचारक की ज़िम्मेदारी पूरी की, दूसरों को भगवान को जानने और मोक्ष पाने में मदद की (पार्क युन-सन)।

आखिर में, तीसरी बात: जो लोग ईमानदारी से चलते हैं वे चर्च से प्यार करते हैं।

भजन 26:8 देखें: "हे प्रभु, मैं उस घर से प्यार करता हूँ जहाँ आप रहते हैं और उस जगह से जहाँ आपकी महिमा रहती है।" इसका मतलब है कि डेविड "भगवान के मंदिर—यानी चर्च" से प्यार करते थे। तो, जो व्यक्ति चर्च से प्यार करता है—जहाँ भगवान की महिमा रहती है—वह क्या करता है?

(1) वह झूठ से नफ़रत करता है। जो व्यक्ति चर्च से प्यार करता है—जो सच्चाई की चट्टान पर बना है—उसे झूठ में खुशी कैसे मिल सकती है? ऐसा व्यक्ति झूठ और पाप से नफ़रत किए बिना नहीं रह सकता। हमें ऐसे पापों से बहुत नफ़रत करनी चाहिए ताकि यह पक्का हो सके कि धोखेबाज़ी वाली बुराई कभी चर्च में न आए। खास तौर पर दुख के समय में, हमें प्रभु की आँखों को अपने दिल की गहराइयों को देखने देना चाहिए, अपने अंदर के दिखावे के पाप को पहचानना चाहिए और पूरी तरह से पछतावा करना चाहिए।

(2) जो वफादार इंसान चर्च से प्यार करता है, वह पापियों के साथ नहीं मिलता।

जो सच्चाई पर चलता है, वह धोखेबाज पापियों के साथ नहीं जाता या उनकी बातों पर ध्यान नहीं देता। इसका कारण यह है कि "बुराई उनके हाथों में है, और उनके दाहिने हाथ रिश्वत से भरे हैं" (पद 10)।

(3) जो वफादार इंसान चर्च से प्यार करता है, वह बुरे लोगों की भीड़ से नफरत करता है।

जो चर्च से प्यार करता है—जहाँ परमेश्वर की महिमा रहती है—वह बुरे लोगों की भीड़ से नफरत करता है, जहाँ परमेश्वर की महिमा नहीं है। इसका कारण यह है कि परमेश्वर खुद ऐसी भीड़ से नफरत करते हैं। भगवान ने पैगंबर यशायाह के ज़रिए कहा: "अब बेकार की बलि मत चढ़ाओ; धूप मेरे लिए नफ़रत है। नए चांद, सब्त, और सभाओं का बुलावा—मैं बुराई और पवित्र सभा को बर्दाश्त नहीं कर सकता। तुम्हारे नए चांद और तुम्हारे तय त्योहारों से मेरी आत्मा नफ़रत करती है; वे मेरे लिए परेशानी हैं, मैं उन्हें सहते-सहते थक गया हूँ" (यशायाह 1:13-14)।

मुझे याद है कि मैं गॉस्पेल गाना "जैसे पानी समुद्र को ढक लेता है" गाते हुए आँसू बहाता था। मैं उन आँसुओं के लिए तरसता हूँ—वे आँसू जो उस दिन के बारे में सोचते हुए बहते हैं जब भगवान की महिमा इस दुनिया को भर देगी। इस पापी दुनिया में रहते हुए—जहाँ भगवान का पवित्र नाम गंदा है और उनकी महिमा धुंधली है—मैं अपने पापों के लिए पछतावे वाले दिल और उनकी महिमा के लिए गहरी चाहत के साथ भगवान की तारीफ़ करना चाहता हूँ। मुझे विश्वास है कि वह दिन ज़रूर आएगा। मुझे विश्वास है कि वह दिन ज़रूर आएगा जब दुनिया भगवान की महिमा से भर जाएगी, और हम उस शान के अंदर उनकी पूरी तारीफ़ और पूजा करेंगे। जब

तक वह दिन नहीं आता, मैं इस पापी दुनिया में रहते हुए विश्वास से चलना चाहता हूँ, हमेशा उस शानदार जगह के लिए तरसता रहूँगा जहाँ भगवान रहते हैं। चाहे कुछ भी हो जाए, मैं पूरी तरह से भगवान पर भरोसा करूँगा और अडिग रहूँगा; मैं इस धोखेबाज़ दुनिया में झूठ से समझौता नहीं करूँगा बल्कि प्रभु की सच्चाई में बना रहूँगा; और मैं प्रार्थना करता हूँ कि मैं चर्च से प्यार कर सकूँ—जिसे प्रभु के खून से खरीदा गया है—और भी गहराई से।

"मैं आपके राज्य से प्यार करता हूँ, प्रभु, आपके निवास का घर, वह चर्च जिसे हमारे धन्य उद्धारक ने अपने कीमती खून से बचाया है। उसके लिए मेरे आँसू गिरेंगे, उसके लिए मेरी प्रार्थनाएँ पहुँचेंगी; मेरी चिंताएँ और मेहनत उसे दी जाएँ, जब तक कि मेहनत और चिंताएँ खत्म न हो जाएँ। अपनी सबसे बड़ी खुशी से भी ज़्यादा, मैं उसके स्वर्गीय तरीकों, उसकी मीठी संगति, गंभीर प्रतिज्ञाओं, उसके प्यार और तारीफ़ के भजनों को महत्व देता हूँ। जैसे आपकी सच्चाई हमेशा रहेगी, वैसे ही ज़ायन को धरती की सबसे चमकदार शान और स्वर्ग की और भी ज़्यादा खुशी दी जाएगी।" (भजन संख्या 246)

डर वाली स्थितियाँ

[भजन संहिता 27:1-6]

क्या आप में से कोई अभी ऐसी स्थिति का सामना कर रहा है जिससे आपको डर लगता है? अगर हाँ, तो उस डर का कारण क्या है? ऐसा लगता है कि हमारे दिलों में डर मुख्य रूप से चिंता, घबराहट और बेचैनी के कारण पैदा होता है। जब मैं "डर" के बारे में सोचता हूँ, तो यशायाह 41:10 के शब्द याद आते हैं: "डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ..." मुझे 1 यूहन्ना 4:18 भी याद आता है: "प्रेम में कोई डर नहीं होता, बल्कि सच्चा प्रेम डर को दूर कर देता है। क्योंकि डर का संबंध सज़ा से है, और जो डरता है, वह प्रेम में परिपूर्ण नहीं हुआ है।" बाइबल साफ़ कहती है कि प्रेम में कोई डर नहीं होता, फिर भी हम डर क्यों महसूस करते हैं? इसका कारण सच्चे प्रेम की कमी है।

"ईसाई व्यापारियों के नेतृत्व विकास के लिए पत्र" (अंक संख्या 64) में बताया गया है कि हमारे अंदर छिपे चार तरह के अनजाने डर हमारी ज़िंदगी को बर्बाद कर सकते हैं: (1) डर आपकी क्षमता को पंगु बना देता है। यह आपको जकड़ लेता है और हिचकिचाहट पैदा करता है, जिससे आप परमेश्वर द्वारा दिए गए उपहारों का सही इस्तेमाल नहीं कर पाते—और आखिरकार परमेश्वर की महिमा के लिए उनका इस्तेमाल करने से रुक जाते हैं। यह उस आदमी की तरह है जिसे 'टैलेंट' (योग्यता/धन) की कहानी में एक टैलेंट मिला था। (2) डर आपके रिश्तों को बर्बाद कर देता है। डर हमें दूसरों के साथ ईमानदार होने से रोकता है। ठुकराए जाने के डर से, हम मुखौटे पहनते हैं, ऐसे होने का दिखावा करते हैं जो हम असल में नहीं हैं और अपनी सच्ची भावनाओं को छिपाते हैं। डर हमें सच्चे प्रेम का अनुभव करने से रोकता है। (3) डर हमारी खुशी में बाधा डालता है; खुशी और डर एक साथ नहीं रह सकते। (4) डर हमारी सफलता में रुकावट डालता है। हम अक्सर उन चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करके खुद को विफलता की ओर ले जाते हैं जिनसे हमें डर लगता है, न कि उन नतीजों पर जो हम चाहते हैं। डर अक्सर उन्हीं चीज़ों को हकीकत में बदल देता है जिनसे हम डरते हैं।

तो फिर, हम उस डर पर कैसे काबू पा सकते हैं जो हमारी ज़िंदगी को बर्बाद कर देता है? भजन संहिता 27:1–6 के आज के अंश में, हम देखते हैं कि दाऊद ने एक डरावनी स्थिति का सामना किया। आइए हम उस डर के प्रति दाऊद की प्रतिक्रिया से तीन सबक सीखें, ताकि हम उन्हें अपनी ज़िंदगी में लागू कर सकें।

पहला, दाऊद डरावनी स्थिति में भी शांत और निडर बना रहा। भजन संहिता 27:3 को देखिए: “भले ही कोई सेना मुझे घेर ले, मेरा मन नहीं डरेगा; भले ही मेरे खिलाफ़ युद्ध छिड़ जाए, फिर भी मैं हिम्मत बनाए रखूँगा।” इतनी डरावनी स्थिति में भी दाऊद कैसे हिम्मत बनाए रख सका? ऐसा इसलिए था क्योंकि उसने अपनी नज़रें परमेश्वर पर टिकाए रखीं। डर के बीच भी, उसने चुपचाप अपनी नज़रें उस पर टिकाए रखीं जो उसकी ज्योति, उसका उद्धारकर्ता और उसके जीवन का मज़बूत गढ़ था।

(1) डरावनी स्थितियों में शांत और हिम्मत बनाए रखने का पहला तरीका है परमेश्वर की ओर देखना—जो हमारी ज्योति, हमारा उद्धारकर्ता और हमारे जीवन की शक्ति है।

दाऊद जिस स्थिति का सामना कर रहा था, वह सचमुच बहुत मुश्किल और अंधेरे से भरी थी। दाऊद के विरोधी—वे बुरे लोग जो उसके दुश्मन थे—उस पर "उसका मांस नोचने" के लिए आगे बढ़े (पद 2-3), और एक "सेना" ने उसके खिलाफ़ डेरा डाला (पद 3)। दाऊद ने खुद को "मुसीबत" के बीच पाया (पद 5)। फिर भी, इस मुश्किल स्थिति में, उसने परमेश्वर की ओर देखा, यह माना कि परमेश्वर कौन है और आगे बढ़ता रहा। नतीजतन, वह डरने के बजाय हिम्मत बनाए रख सका। डरावनी स्थितियों में दाऊद की तरह हिम्मत बनाए रखना आसान नहीं है; ऐसा इसलिए है क्योंकि जब हम खुद ऐसी परिस्थितियों का सामना करते हैं, तो डर एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया होती है। हम सिर्फ़ डर महसूस नहीं करते; हम चिंता भी करते हैं, परेशान होते हैं और घबरा जाते हैं। इंसानी स्वभाव की कमज़ोरी ही ऐसी है। यहाँ तक कि प्रेरित भी—जैसा कि बाइबल में दर्ज है—ऊँची उठती लहरों से डर गए थे, जबकि यीशु नाव में सो रहे थे। तो फिर, जब जीवन की पाप भरी लहरें और तूफ़ान हम पर टूट पड़ते हैं, तो हम डर महसूस करने से कैसे बच सकते हैं? फिर भी, कई बार हम अपने डर को मानने से इनकार कर देते हैं और इसके बजाय बेफिक्र होने का दिखावा करते हैं। ऐसा करने के बजाय, अपने दिल के डर को ईमानदारी से स्वीकार करना बेहतर है। ऐसी स्थिति में, हमें परमेश्वर के सामने आना चाहिए और चुपचाप उसका इंतज़ार करना चाहिए। हमें परमेश्वर की ओर देखना चाहिए, जो ज्योति है। यहाँ, "ज्योति" का अर्थ है

अंधेरे को अपने-आप दूर करने की शक्ति। दाऊद के संदर्भ में, "अंधेरा" उसके विरोधियों की ओर इशारा करता है; उसने अपने दुश्मनों—खासकर युद्ध में सामना की गई दुश्मन सेनाओं—को "अंधेरा" माना। दाऊद को भरोसा था कि परमेश्वर, जो ज्योति है, इस अंधेरे को पूरी तरह से दूर कर देगा। जैसे अंधेरा जितना गहरा होता है, रोशनी उतनी ही तेज़ी से चमकती है, वैसे ही हमारे हालात जितने डरावने हों, हमें उतनी ही ज़्यादा परमेश्वर की ओर देखना चाहिए—जो स्वयं ज्योति हैं—और सारे अंधेरे को दूर करने वाले उनके काम का अनुभव करना चाहिए। इसके अलावा, दाऊद ने परमेश्वर को अपनी मुक्ति का आधार माना—जीत और छुटकारा देने वाले परमेश्वर के रूप में। उन्हें भरोसा था कि परमेश्वर उन्हें किसी भी स्थिति में जीत दिला सकते हैं। उन्होंने परमेश्वर को "जीवन की शक्ति"—अपनी शरण और मज़बूत गढ़—के रूप में भी देखा। दूसरे शब्दों में, उन्हें पूरा भरोसा था कि चाहे सैन्य स्थिति कैसी भी हो, परमेश्वर उनकी रक्षा करेंगे। चाहे हमारे हालात कितने भी अंधेरे भरे क्यों न हों, हमें परमेश्वर की ओर देखना चाहिए, जो ज्योति हैं। जैसे-जैसे स्थिति अंधेरी होती जाती है, परमेश्वर की मुक्ति की ज्योति और भी तेज़ी से चमकती है; इसलिए, डरावने हालात का सामना करते समय हमें उनकी बचाने वाली शक्ति पर और भी ज़्यादा भरोसा करना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो उनकी शक्ति—जो किसी भी स्थिति में जीत दिलाने में सक्षम है—हमारे दिलों, विचारों, भावनाओं और हमारे पूरे अस्तित्व पर राज करेगी। नतीजतन, हम डरने के बजाय निडर रह पाएंगे; हम मुक्ति के भरोसे में मज़बूती से खड़े रह पाएंगे।

(2) मुश्किल हालात में डरने के बजाय निडर रहने के लिए, हमें जीत (मुक्ति) के पिछले अनुभवों पर विचार करना चाहिए।

अंधेरी स्थिति का सामना करते हुए, दाऊद ने पीछे मुड़कर देखा और याद किया कि कैसे परमेश्वर ने उनके दुश्मनों को लड़खड़ाकर गिरा दिया था (पद 2)। इसीलिए वे डर के बावजूद निडर बने रहे। मौजूदा अंधेरे के बीच भविष्य के बारे में सोचने से पहले, हमें उस बचाने वाली कृपा पर विचार करना चाहिए जो परमेश्वर ने अतीत में हम पर दिखाई है; इससे हमें प्रभु—हमारी ज्योति—के ज़रिए मुक्ति और जीत का भरोसा बनाए रखने में मदद मिलती है, भले ही हम अभी अंधेरे में हों।

(3) अंधेरे हालात में निडर और बेखौफ रहने के लिए, हमें अपना भविष्य परमेश्वर को सौंप देना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, हमें परमेश्वर पर पूरा भरोसा करना चाहिए... हमें भरोसे के साथ अपने भविष्य की ओर देखना चाहिए। दाऊद ने अपना विश्वास ज़ाहिर करते हुए कहा कि अगर युद्ध छिड़ जाए और दुश्मन की सेना उनकी जान लेने के लिए उनके खिलाफ़ डेरा डाले, तब भी वे नहीं डरेंगे (पद 3)। वे ऐसा इसलिए कह पाए क्योंकि उन्हें परमेश्वर पर पूरा भरोसा था—जो उनकी ज्योति, उनके उद्धारकर्ता और उनके जीवन की शक्ति थे।

दाऊद की तरह, हमें भी डरावने हालात का सामना करते हुए निडर रहना चाहिए। मैं फिलिप्पियों 1:6 में बताई गई इस बात पर पक्का यकीन रखता हूँ: "मुझे पूरा भरोसा है कि जिसने तुममें एक अच्छा काम शुरू किया है, वह यीशु मसीह के दिन तक उसे पूरा करेगा।" मुझे यकीन है कि हमारा वफादार प्रभु हमारे चर्च से किए गए अपने वादे को ज़रूर पूरा करेगा: "मैं अपना चर्च बनाऊँगा" (मत्ती 16:18)। चाहे हालात कितने भी डरावने क्यों न हों, मेरी इच्छा है कि हम प्रभु के वादों के अनुसार चलें—यानी डर के आगे घुटने न टेकें, मज़बूती और हिम्मत के साथ खड़े रहें, और चर्च को बनाने के प्रभु के काम में हिस्सा लें, जो कि उसका शरीर है।

दूसरी बात, डरावने हालात के बीच दाऊद ने प्रार्थना में परमेश्वर की ओर रुख किया।

भजन संहिता 27:4 को देखिए: "मैंने प्रभु से एक चीज़ माँगी है, और मैं वही माँगता रहूँगा: कि मैं अपनी ज़िंदगी के सभी दिन प्रभु के घर में रहूँ, प्रभु की सुंदरता को देखूँ, और उसके मंदिर में उससे विनती करूँ।" डर के माहौल में, दाऊद ने परमेश्वर से एक ही चीज़ माँगी। वह एक प्रार्थना यही थी कि वह परमेश्वर के घर में रहे और उसकी सुंदरता को निहारे। इतनी डरावनी स्थिति में परमेश्वर के घर की चाहत रखने का क्या कारण था?

(1) ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर पिता का चेहरा देखने से दिल का डर दूर होता है और मन को शांति मिलती है।

डरावने हालात में भी, दाऊद ने जीवन भर परमेश्वर की सुंदरता पर मनन किया। जो लोग परमेश्वर की कृपा से भरे हुए रूप पर मनन करते हैं, उन्हें डरावने हालात में भी दिल की शांति मिलती है।

(2) दाऊद प्रभु के घर में रहता था और परमेश्वर की सुंदरता को निहारता था क्योंकि वह परमेश्वर पिता की सुरक्षा चाहता था।

आज के हिस्से की आयत 5 को देखें: "क्योंकि मुसीबत के दिनों में वह मुझे अपने घर में सुरक्षित रखेगा; वह मुझे अपने पवित्र तंबू की आड़ में छिपाएगा और मुझे एक ऊँची चट्टान पर खड़ा करेगा।" दाऊद मंदिर में परमेश्वर के साथ संगति क्यों करना चाहता था (आयत 4)? क्योंकि वहाँ परमेश्वर के साथ संगति ही सभी खतरों से छुटकारा पाने का ज़रिया थी (पार्क युन-सन)। एक अमेरिकी गॉस्पेल गाना है जिसे मैं अक्सर सुनता था और उस पर मनन करता था, जब मेरा पहला बच्चा, जू-यंग, छोटा बच्चा था। उसका शीर्षक था "अंडर द शैडो ऑफ़ योर विंग्स" (आपके पंखों की छाया में), और उसके बोल कुछ इस तरह थे: "आपके पंखों की छाया में, आपके पवित्र निवास स्थान में, मैं आपका इंतज़ार करता हूँ, मेरे परमेश्वर। यहाँ आपके निवास में, आपका प्यार मुझे राह दिखाता है; मैं आपको जानने के लिए खुद को सौंपता हूँ। मुझे अपने प्यार से ढँक लें; मुझे अपने दिल की गहराइयों में ले जाएँ। मुझे अपने पंखों की छाया में सुरक्षित रखें; मैं आपको जानना चाहता हूँ।" जब मैं रात में जू-यंग के साथ समय बिताने के बाद अस्पताल की पार्किंग से गाड़ी निकालता था, तो खुले आसमान को देखते हुए मैं अक्सर यह भजन सुनता और गाता था। मैं और मेरी पत्नी प्रार्थना भरे दिल से इसे गाते थे और परमेश्वर से विनती करते थे कि जब हम बच्चे के साथ न हों, तब वह हमारे बच्चे को अपने पंखों की छाया में—उस पवित्र, गुप्त स्थान में—संभालकर रखे और छिपाए। वह भजन एक विनती भरी प्रार्थना थी, जिसमें इंसान खुद को परमेश्वर पिता की सुरक्षा में सौंपता है।

(3) क्योंकि दाऊद को उम्मीद थी कि परमेश्वर पिता उसके दुश्मनों को हरा देंगे और उसे जीत दिलाएँगे, इसलिए वह एक डरावनी स्थिति में भी परमेश्वर से एक खास विनती कर पाया (आयत 6)।

यह हिस्सा बताता है कि बहुत सारे दुश्मनों के सामने बर्बाद होने के बजाय, वह शांति और उम्मीद के साथ जीएगा (पार्क युन-सन)। हम बिना उम्मीद के मुश्किल हालात में नहीं जी सकते। फिर भी, हमारे पास प्रभु हैं, जो हमारी उम्मीद हैं। हमें अपना सिर ऊपर उठाना चाहिए और उम्मीद के साथ प्रभु की ओर देखना चाहिए।

हमें भी डरावने हालात का सामना करते समय परमेश्वर को पुकारना चाहिए। दाऊद की तरह, हमें ऐसे दिल से परमेश्वर से विनती करनी चाहिए जो उनके घर में रहने और उनकी सुंदरता को देखने की इच्छा रखता हो। खासकर डर के समय, हमें परमेश्वर के सामने चुपचाप रहना चाहिए और उनकी महिमा की चाहत रखते हुए सच्चे दिल से प्रार्थना करनी चाहिए। हमारे चारों ओर पाप की लहरें जितनी तेज़ी से उठती हैं, हम परमेश्वर के घर

की उतनी ही ज़्यादा चाहत करने लगते हैं। भजन 543, पद 2 के बोल याद आते हैं: "भले ही मैं यहाँ दुख और पाप की जगह पर रहता हूँ, मैं रोज़ उस ऊपर की शानदार, ऊँची जगह की ओर देखता हूँ।" दुनिया की इतनी सारी चिंताओं और मौत के लगातार खतरे के बीच, हम परमेश्वर के घर की चाहत क्यों न करें और उनकी सुंदरता और महिमा को क्यों न खोजें? दाऊद की तरह, हमें डर के समय परमेश्वर को पुकारना चाहिए।

आखिर में, तीसरी बात यह है कि दाऊद ने अपने डरावने हालात के बीच परमेश्वर की स्तुति की।

भजन संहिता 27:6 को देखें: "...मैं उनके पवित्र डेरे में खुशी के साथ बलिदान चढ़ाऊँगा; मैं गाऊँगा, हाँ, मैं प्रभु की स्तुति के गीत गाऊँगा।" डरावने हालात के बीच भी, दाऊद ने परमेश्वर के घर की चाहत की और उनकी सुरक्षा और जीत की उम्मीद की (पद 5)। इसके अलावा, उसने विश्वास के साथ वादा किया कि वह अपनी इच्छाओं के भविष्य में पूरे होने के लिए धन्यवाद और स्तुति करेगा (पद 6)। यह एक विजेता के रूप में परमेश्वर को धन्यवाद का बलिदान चढ़ाने का काम है (पार्क युन-सन)। यह कैसे संभव है? दाऊद अभी भी अपने विरोधियों और बुरे लोगों, जो उसके दुश्मन थे, के कारण पैदा हुई घोर मुसीबत के बीच था; वह एक विजेता के रूप में धन्यवाद भरे दिल से परमेश्वर की स्तुति करने का वादा कैसे कर सकता था? ऐसा इसलिए था क्योंकि, जब उसने परमेश्वर से विनती की, तो उसे यकीन हो गया कि जिस परमेश्वर ने उसे अतीत में जीत (मुक्ति) दिलाई थी, वह उसे बचाने और जीत दिलाने में पूरी तरह सक्षम था—चाहे वह दुश्मनों के साथ अभी का मुश्किल हालात हो या भविष्य में आने वाले ऐसे कोई भी हालात। क्या यह अद्‌भुत नहीं है? क्या यह कमाल की बात नहीं है कि हालात तो नहीं बदले, लेकिन दाऊद का दिल बदल गया था? डर की जगह भरोसे ने ले ली थी। यह उस व्यक्ति की सोच है जिसके पास सच्चा विश्वास है और जो परमेश्वर की ओर देखता है।

प्रेरितों के काम 16:25 में लिखा है, "आधी रात के समय पौलुस और सीलास प्रार्थना कर रहे थे और परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और दूसरे कैदी उन्हें सुन रहे थे।" पौलुस और सीलास अपने सामने आए हालात से हार नहीं माने; बल्कि, उन्होंने उन हालात का डटकर सामना किया। वे इतनी खुशी के साथ इसलिए रह पाए क्योंकि उनमें सच्चा विश्वास था (पार्क युन-सन)। दाऊद अपने हालात से दबा नहीं; बल्कि, उसमें एक अनमोल विश्वास था जिसने उसे उन हालात पर काबू पाने में मदद की। परमेश्वर पर अटूट विश्वास के साथ, दाऊद ने मुश्किल हालात में भी उसकी स्तुति की। जो व्यक्ति इस तरह प्रार्थना करता है, वह परमेश्वर की स्तुति कर पाता है; प्रार्थना करने वाला व्यक्ति स्तुति करने वाला व्यक्ति बन जाता है। इसलिए, जब हम डरावने हालात का सामना करें, तो

हमें भी परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया था। परमेश्वर हमसे कहते हैं, "डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ..." (यशायाह 41:10)। चाहे हम अभी किसी भी डरावने हालात में हों या भविष्य में ऐसे हालात का सामना करें, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम दाऊद की तरह हिम्मत बनाए रखें और—प्रार्थना के ज़रिए—आखिरकार ऐसे उपासक बनें जो परमेश्वर की स्तुति करते हैं।

"एक चीज़ जो मैंने प्रभु से माँगी"

"मैंने प्रभु से एक ही चीज़ माँगी है, और मैं उसी की खोज करूँगा: कि मैं अपने जीवन के सभी दिनों तक प्रभु के घर में रहूँ, प्रभु की सुंदरता को देखूँ और उनके मंदिर में उनसे विनती करूँ" (भजन संहिता 27:4)।

मुझे यूनिवर्सिटी में आने के बाद का एक समय याद है जब मैं अक्सर गिटार बजाते हुए और गॉस्पेल गीत "वन थिंग आई आस्क" (एक चीज़ जो मैं माँगता हूँ) गाते हुए रो पड़ता था। मुझे यह भजन इसलिए पसंद आने लगा क्योंकि कॉलेज के पहले साल में परमेश्वर का बुलावा मिलने और उसका पालन करने का फ़ैसला करने के बाद मुझे कई निजी मुश्किलों और तकलीफ़ों का सामना करना पड़ा था। जिन संघर्षों और दुखों से मैं गुज़र रहा था, उन्होंने मुझे एक खास चीज़ की तलाश करने के लिए प्रेरित किया। वह एक चीज़ थी "प्रभु के घर में रहना" और "प्रभु की सुंदरता" को देखना।

भजन संहिता 27:5 में, हम देखते हैं कि दाऊद अपनी मुश्किलों के बीच प्रभु के घर की तलाश कर रहा है। उसने प्रभु के घर की तलाश क्यों की? यह दुनिया हमें सिर्फ़ मुश्किलें, दर्द और दुख देती है। हालाँकि खुशी और मज़ा के कुछ पल हमें दुनिया के बारे में गलतफ़हमी में डाल सकते हैं, लेकिन आखिरकार, यह हमें सिर्फ़ मुश्किलें, दर्द और आँसू ही दे सकती है। फिर भी, हैरानी की बात है कि जब हम ईसाई ऐसी मुश्किलों, दर्द और दुखों का अनुभव करते हैं, तो हम खुद को परमेश्वर से उस "एक चीज़" को सच्चे दिल से माँगते हुए पाते हैं। जब हम दुनिया का बुरा रूप देखते हैं—जिससे निराशा, मायूसी, ज़ख्म, दर्द और आँसू मिलते हैं—तो पवित्र आत्मा हमारे दिलों में "प्रभु के घर में रहने" और "प्रभु की सुंदरता" को देखने की गहरी चाहत भर देता है। जब हम मुश्किलों, दुखों और विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हैं, तभी हमारे दिल यहोवा के घर में प्रभु के लिए तड़पते हैं—एक ऐसी जगह जो किसी भी सांसारिक "घर" से अलग है। जैसे-जैसे वह दुख बढ़ता है, हम खुद को एक खास चीज़

की तलाश में और भी ज़्यादा गंभीर पाते हैं। ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है क्योंकि, जैसा कि दाऊद ने कहा, हम चाहते हैं कि मुसीबत के दिनों में हमें उनकी पनाह की गुप्त जगह में सुरक्षित रखा जाए, उनके तंबू की आड़ में छिपाया जाए और एक चट्टान पर ऊँचा उठाया जाए (पद 5)। जैसे कोई चूज़ा बाज़ का ख़तरा महसूस होने पर अपनी माँ के पंखों के नीचे या उसकी गोद में पनाह ढूँढ़ता है, वैसे ही जब दुश्मन—यानी शैतान—हमें निगलने के लिए लालच, ज़ुल्म और तकलीफ़ें लाता है, तो हम भी यहोवा के घर में प्रभु की गोद में पनाह पाने की ज़ोरदार कोशिश करते हैं।

इसलिए, हम ईसाइयों के लिए "मुसीबत" एक ऐसी आशीष है जो हमें प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करती है। फिर भी, यह एक ऐसी प्रार्थना है जो हमें सिर्फ़ एक चीज़ माँगने के लिए मजबूर करती है: यहोवा के घर में रहना और प्रभु की उस सुंदरता को देखना जिसके लिए हम तरसते हैं। जो ईसाई दुनिया की मुसीबतों के बीच भी प्रभु की सुंदरता को देख पाते हैं, वे ही पूरे ध्यान के साथ प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना के दौरान आत्मा की आँखों से प्रभु की सुंदरता को देखने के बाद, वे अपनी प्रार्थना तभी पूरी करते हैं जब वे "चट्टान पर ऊँचे" स्थापित हो जाते हैं। मैं भी ऐसी ही प्रार्थना करना चाहता हूँ।

"हे मेरे मन, परमेश्वर की प्रतीक्षा कर!"

[भजन संहिता 27:7-14]

स्टॉर्मी ओमार्टियन ने अपनी रचना "जब आप प्रार्थना कर सकते हैं तो चिंता क्यों करें?" में कहा है, "हमें प्रतीक्षा करना पसंद नहीं है; हम तुरंत कुछ करना चाहते हैं।" मुझे यह बात बहुत गहरी और महत्वपूर्ण लगती है। परमेश्वर के सामने शांत रहकर उनकी प्रतीक्षा करने और उनकी ओर देखने के बजाय, हम अक्सर तुरंत काम करने या कदम उठाने की जल्दी करते हैं। प्रतीक्षा करते समय, हम पूछते हैं, "मुझे और कितनी देर प्रतीक्षा करनी होगी?" और जब हमें लगता है कि हम और इंतज़ार नहीं कर सकते, तो हम अक्सर कोई न कोई कदम उठा लेते हैं। इस बारे में ओमार्टियन सुझाव देती हैं कि "प्रतीक्षा के इस समय" को परमेश्वर की सेवा के समय के रूप में देखना सबसे अच्छा है। वह हमें अपना नज़रिया बदलने के लिए प्रोत्साहित करती हैं: "अगर आप मौजूदा स्थिति को केवल एक मुसीबत या कष्ट सहने के बजाय परमेश्वर की सेवा के रूप में देखते हैं, तो उसे सहना कहीं ज़्यादा आसान हो जाता है" (इंटरनेट)।

भजन संहिता 27:14 में, दाऊद कहते हैं, "यहोवा की प्रतीक्षा कर; हिम्मत रख और हौसला बनाए रख और यहोवा की प्रतीक्षा कर।" यहाँ, वह "प्रतीक्षा" शब्द को दो बार दोहराते हैं। वह "प्रतीक्षा" करने के बुलावे पर ज़ोर दे रहे हैं—खासकर, हमारी आत्माओं का परमेश्वर की प्रतीक्षा करने पर। दाऊद हमें सिखाते हैं कि प्रभु की प्रतीक्षा शांति और धैर्य के साथ करना कितना महत्वपूर्ण है। डॉ. पार्क युन-सन उन चार तरीकों के बारे में बताते हैं जिनसे विश्वासियों को मुश्किल समय का सामना करना चाहिए: (1) हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर हमारी मुश्किलों से वाकिफ़ हैं और हमें धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी चाहिए; (2) हमें विनम्रतापूर्वक उनके चरणों में प्रतीक्षा करनी चाहिए, यह मानते हुए कि परमेश्वर के काम अद्भुत हैं और अक्सर इंसानी समझ से परे होते हैं; (3) हमें प्रार्थनापूर्ण रवैये के साथ प्रतीक्षा करनी चाहिए, यह भरोसा रखते हुए कि सही समय आने पर परमेश्वर मुश्किल को दूर कर देंगे; और (4) कभी-कभी कोई कदम उठाने के बजाय शांत रहना समस्या को सुलझाने में ज़्यादा

मददगार होता है, इसलिए मामले को प्रभु पर छोड़ देना और प्रतीक्षा करना सबसे अच्छा है। आज, "हे मेरे मन, प्रभु की प्रतीक्षा कर!" शीर्षक के तहत, मैं उन तीन बातों पर विचार करना चाहता हूँ जिनकी प्रतीक्षा करने वाले लोग उम्मीद करते हैं, और उनसे कुछ सबक सीखना चाहता हूँ।

पहली बात, जो लोग परमेश्वर की प्रतीक्षा करते हैं, वे प्रभु की दया की उम्मीद करते हैं।

भजन संहिता 27:7 को देखें: "हे यहोवा, जब मैं ऊँचे स्वर में पुकारूँ तो सुन; मुझ पर दया कर और मुझे उत्तर दे!" दाऊद ने प्रभु की दया क्यों माँगी? अगर मैं उनकी जगह होता, तो भगवान से दया मांगने के बजाय शायद उनसे न्याय मांगता—उनसे गुज़ारिश करता कि वे मेरे दुश्मनों और बुरे लोगों का फ़ैसला करें जो मेरे विरोधी थे (आयत 2)। फिर भी, दाऊद ने भगवान से दया क्यों मांगी? इसलिए क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं भगवान नाराज़ होकर उन्हें छोड़ न दें (आयत 9)। उन्हें डर था कि कहीं उन्हें भी शाऊल की तरह ठुकरा न दिया जाए (पार्क युन-सन)। तो फिर, राजा शाऊल को भगवान ने क्यों ठुकरा दिया? इसलिए क्योंकि उन्होंने भगवान की बात नहीं मानी थी। इसीलिए भगवान ने राजा शाऊल को ठुकरा दिया और उन्हें राजा के पद से हटा दिया (1 शमूएल 15:23)। हालाँकि राजा शाऊल को शमूएल के ज़रिए भगवान का हुक्म मिला था कि वे अमालेकियों को मार गिराएँ और पूरी तरह खत्म कर दें, लेकिन उन्होंने उस हुक्म को नहीं माना (आयत 3)। उन्होंने भगवान की बात क्यों नहीं मानी? वजह यह थी कि, शुरू में तो राजा शाऊल खुद को मामूली समझते थे, लेकिन अमालेकियों पर जीत के बाद वे इतने घमंडी हो गए कि उन्होंने अपने लिए एक स्मारक तक बनवा लिया (आयत 12)। बाइबल कहती है कि भगवान इंसानों की तरह बाहरी दिखावे को नहीं देखते, बल्कि दिल को देखते हैं (16:7); क्योंकि राजा शाऊल का दिल घमंड से भरा हुआ था, इसलिए उस घमंड की वजह से आज्ञा न मानने के कारण आखिरकार भगवान ने उन्हें ठुकरा दिया। दाऊद को इसी बात का डर था। उन्हें डर था कि कहीं वे भी शाऊल की तरह घमंडी न हो जाएँ, उस घमंड की वजह से भगवान के हुक्मों को न मानें और नतीजतन भगवान उन्हें ठुकरा दें। दिलचस्प बात यह है कि, ऐसी स्थितियों में भी जहाँ लोगों से डरने की पूरी वजह थी, दाऊद ने लोगों के बजाय भगवान से डरना चुना। दूसरे शब्दों में, दाऊद को लोगों के ठुकराए जाने का डर नहीं था; उन्हें भगवान के ठुकराए जाने का डर था। विरोधियों और बुरे लोगों के ज़ुल्म का सामना करने (आयत 2)—खुद को "मुसीबत" में पाने (आयत 5)—और युद्ध की स्थिति में होने के बावजूद, जहाँ सेनाएँ उनके ख़िलाफ़ डेरा डाले हुए थीं (आयत 3), दाऊद ने उन लोगों के बजाय पवित्र भगवान से डरना चुना। दाऊद को भगवान का गुस्सा झेलने और ठुकराए

जाने का डर था; उन्हें डर था कि कहीं उनके दिल में घमंड के बीज न पनप जाएँ, जिससे भगवान उन्हें ठुकरा दें।

आपके और मेरे बारे में क्या? क्या आपको भी डर लगता है—जैसा दाऊद को लगता था—कि कहीं आपके दिल की गहराइयों में घमंड का बीज न पनप जाए, जिससे भगवान आपको ठुकरा दें? या क्या आप शाऊल की तरह जी रहे हैं, जो घमंड के कारण परमेश्वर के वचन को ठुकराता और उसकी आज्ञा नहीं मानता था? अगर हमने परमेश्वर के वचन को ठुकराया है और उसकी आज्ञा नहीं मानी है, तो हमें—दाऊद की तरह—परमेश्वर की दया की उम्मीद करनी चाहिए और उसका इंतज़ार करना चाहिए। अगर हम दाऊद की तरह परमेश्वर की दया चाहते हैं, तो हमें उससे पुकारना चाहिए (पद 7)। और जब हम पुकारते हैं, तो हमें परमेश्वर के जवाब का इंतज़ार करना चाहिए।

दूसरी बात, जो लोग परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, वे प्रभु का चेहरा ढूँढ़ते हैं।

भजन संहिता 27:8 को देखिए: "जब तूने कहा, 'मेरा चेहरा ढूँढ़ो,' तो मेरे दिल ने तुझसे कहा, 'हे प्रभु, मैं तेरा चेहरा ढूँढूँगा।'" यहाँ, प्रभु का चेहरा ढूँढ़ने का मतलब है ऐसे दिल से इंतज़ार करना जो उसकी दयालु उपस्थिति के लिए तरसता हो (पार्क युन-सन)। दाऊद, जो अपने दिल की गहराई में पाप करने से डरता था, उसने प्रभु का दयालु चेहरा ढूँढ़ा क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर की दया और मदद के बिना, वह पक्का अपने दिल में पाप कर बैठेगा।

पिछले रविवार, घर लौटने और खाना खाने के बाद, मैंने अपनी पत्नी के साथ एक बात साझा की। मुझे यह एहसास हुआ कि जब तक परमेश्वर अपनी दया हम पर नहीं करता और हमारे जीवन में काम नहीं करता, तब तक हम अपनी सबसे छोटी बुरी आदत भी नहीं बदल सकते। मैंने सोचा कि अगर हम परमेश्वर की दया के बिना छोटी-छोटी बुरी आदतें भी ठीक नहीं कर सकते, तो उसकी मदद के बिना हम अपने बिगड़े हुए दिलों को घमंड से कैसे बचा सकते हैं? भजन संहिता 27:9 में, दाऊद कहता है: "मुझसे अपना चेहरा मत छिपा, गुस्से में अपने सेवक को दूर मत कर; तू मेरी मदद करता रहा है। हे मेरे उद्धार के परमेश्वर, मुझे छोड़ मत या अकेला मत छोड़।" प्रभु का चेहरा पाने की चाहत में, दाऊद ने परमेश्वर की मदद माँगी और उसकी दया से उसके साथ

चलते हुए जीवन जीने की इच्छा की। इसीलिए उसने परमेश्वर से विनती की, "मुझे छोड़ मत या अकेला मत छोड़।" साथ ही, दाऊद को यह पक्का भरोसा था कि "भले ही मेरे माता-पिता मुझे छोड़ दें, प्रभु मुझे अपना लेगा" (पद 10)। उसे न केवल अपने दिल में घमंड के कारण परमेश्वर के खिलाफ पाप करने का डर था, बल्कि इस बात का भी डर था कि प्रभु उससे अपना चेहरा छिपा लेगा। उसे इस बात से डर लगता था कि वह प्रभु का दयालु चेहरा नहीं देख पाएगा—ठीक वैसे ही जैसे एक बच्चा डरता है जब वह अपने माता-पिता का चेहरा नहीं देख पाता। इसलिए, दाऊद ने सच्चे दिल से प्रभु का चेहरा देखने की प्रार्थना की। ऐसी प्रार्थना के बीच, उसे यकीन था कि वह परमेश्वर की कृपा देखेगा: "मुझे विश्वास था कि मैं प्रभु की भलाई देखूँगा" (पद 13)। यह कितना कीमती भरोसा है! परमेश्वर अपना चेहरा उन्हें दिखाता है जो उसे खोजते हैं; दाऊद, जो परमेश्वर की कृपा भरी उपस्थिति के लिए तरसता था, उसे यकीन था कि वह प्रभु की कृपा देखेगा। हालाँकि उसे डर था कि कहीं घमंड के कारण वह परमेश्वर के विरुद्ध पाप न कर बैठे, फिर भी दाऊद ने—परमेश्वर का चेहरा देखने की और भी गहरी चाहत रखकर (पद 8)—प्रार्थना की कि उसका दिल घमंड के बजाय परमेश्वर की कृपा से भर जाए, और उसे भरोसा था कि उसकी प्रार्थनाओं का जवाब मिलेगा। हमें भी अपने दिलों में घमंड को आने से रोकना चाहिए और दाऊद की तरह प्रभु का चेहरा खोजना चाहिए। जब हम, दाऊद की तरह, पूरे दिल से प्रभु की कृपा भरी उपस्थिति को सच्चे मन से खोजते हैं, तो परमेश्वर की कृपा की लहरें हमारे जीवन में बहने लगती हैं।

तीसरी बात, जो लोग परमेश्वर की ओर देखते हैं, वे प्रभु का मार्ग भी चाहते हैं।

भजन संहिता 27:11 पर विचार करें: "हे प्रभु, मुझे अपना मार्ग सिखा और मुझे सीधे रास्ते पर ले चल, क्योंकि मेरे शत्रु हैं।" दाऊद, जो प्रभु के साथ चलना चाहता था, उसने उसकी दयापूर्ण उपस्थिति की कामना की और उसे विश्वास था कि वह उसकी भलाई को देखेगा। इस संदर्भ में, उसने परमेश्वर से विनती की, और उसकी कृपा से प्रभु का मार्ग सीखने और उस पर चलने की इच्छा की। यहाँ "प्रभु का मार्ग" का अर्थ "धार्मिक मार्ग" है (पार्क युन-सन)। दुष्ट विरोधियों के सताए जाने के बीच, और इस डर से कि कहीं वह—राजा शाऊल की तरह—अहंकारी न हो जाए और परमेश्वर द्वारा त्याग न दिया जाए, दाऊद ने पूरी तरह से परमेश्वर की कृपा पर निर्भर रहते हुए, प्रभु द्वारा सिखाए गए धार्मिक मार्ग पर चलने की प्रार्थना की। उसने परमेश्वर से यह भी कहा कि "मुझे सीधे रास्ते पर ले चल"; यह सही रास्ते पर चलते हुए प्रभु की मदद मांगने की प्रार्थना थी (पार्क युन-सन)। क्योंकि उसके विरोधी और बुरे लोग जो उसका विरोध कर रहे थे, उसे सही रास्ते पर चलने से रोकने के लिए सता रहे

थे, इसलिए दाऊद ने प्रभु से प्रार्थना की और परमेश्वर के सामने स्वीकार किया कि वह उसकी मदद के बिना उस रास्ते पर ईमानदारी से नहीं चल सकता। हम इस पाठ के 12वें पद को देखकर दाऊद की स्थिति को और विस्तार से समझ सकते हैं: "मुझे मेरे विरोधियों की इच्छा पर न छोड़; क्योंकि झूठे गवाह मेरे विरुद्ध खड़े हो गए हैं, और ऐसे लोग जो हिंसा फैलाते हैं।" ऐसी स्थिति में जब उसके शत्रु उसे नुकसान पहुँचाना चाहते थे—झूठी गवाही और बुरी नीयत से निकली द्वेषपूर्ण बातें फैला रहे थे—दाऊद ने परमेश्वर से प्रभु के मार्ग, यानी धार्मिकता के मार्ग पर चलने की शक्ति के लिए विनती की।

कोई सोच सकता है कि जिस मार्ग पर दाऊद चलना चाहता था, उसे सीधा या आसान कैसे माना जा सकता है। यह सवाल इसलिए उठता है क्योंकि दाऊद जिन परिस्थितियों और माहौल का सामना कर रहा था, वे बिल्कुल भी आसान नहीं थीं। विरोधियों, बुरे लोगों और झूठ व द्वेष फैलाने वालों के सताए जाने के बीच दाऊद जिस रास्ते पर चला—और जिस पर चलने की उसने इच्छा की—उसे सीधा कैसे कहा जा सकता है? इसका उत्तर हमें तब मिलता है जब हम यीशु मसीह द्वारा अपनाए गए क्रूस के मार्ग पर विचार करते हैं। भले ही कोई रास्ता इंसानी नज़रों में आसान न दिखे, लेकिन जब हम खुद को नकारते हैं, अपना क्रूस उठाते हैं और प्रभु के पीछे चलते हैं, तो वे हमारे दिलों में ऐसी शांति भर देते हैं जो दुनिया नहीं दे सकती। दूसरे शब्दों में, प्रभु हमारे दिलों में एक आसान रास्ता बनाते हैं। ठीक वैसे ही जैसे मूसा के प्रार्थना करने पर परमेश्वर ने लाल सागर में रास्ता बनाया—जिससे इस्राएली सूखी ज़मीन पर चल सके—जबकि हालात ऐसे लग रहे थे कि आगे बढ़ना नामुमकिन है; वैसे ही प्रभु उन लोगों के दिलों में "सिय्योन का राजमार्ग" बनाते हैं जो मुश्किलों और परेशानियों के समय उनकी दया, उनके दर्शन और उनके रास्ते की तलाश करते हैं, भले ही इंसानी नज़रों में कोई आसान रास्ता न दिखे। यह परमेश्वर का कितना अद्‌भुत अनुग्रह है! जैसे उन्होंने रास्ता बनाने के लिए लाल सागर को दो हिस्सों में बाँट दिया था, वैसे ही हमारे प्रभु हमारे सामने आने वाली मुश्किलों के बीच हमारे लिए वफ़ादारी से एक आसान रास्ता बनाते हैं।

आप किस चीज़ की उम्मीद कर रहे हैं और किसका इंतज़ार कर रहे हैं? क्या आप भी दाऊद की तरह मुश्किल या ख़तरे के समय परमेश्वर की दया, उनके अनुग्रह और प्रभु के रास्ते पर नज़र टिकाए हुए इंतज़ार कर रहे हैं? क्या हम वफ़ादारी से प्रभु के दिखाए रास्ते पर ऊँचाइयों की ओर बढ़ रहे हैं? हमारे प्रभु—जो भजन 470 के

पहले पद में गाए अनुसार हमारे जीवन के रास्ते को आसान बनाते हैं—हमें सीधे रास्ते पर चलाते रहें; हम बिना दाएँ या बाएँ मुड़े, सच्चे मन से परमेश्वर की दया और अनुग्रह की तलाश करें, और उनकी मदद से मज़बूत होकर वफ़ादारी से अपने स्वर्गीय घर की ओर यात्रा करें।

क्या आपको पक्का यकीन है?

“मुझे पूरा भरोसा है कि मैं जीते-जागते लोगों की धरती पर प्रभु की भलाई देखूँगा” (भजन संहिता 27:13)।

कल बुधवार की प्रार्थना सभा के दौरान, मुझे हमारे चर्च के सीनियर पास्टर से सुसमाचार (अच्छी खबर) और उसकी शक्ति के बारे में एक संदेश मिला (संदर्भ: रोमियों 1:16–17)। संदेश सुनते समय मेरे मन में दो बातें आईं। एक तो यह कि जहाँ दुनिया हमें दुख देती है, वहीं प्रभु सुसमाचार के ज़रिए हमें खुशी देते हैं। हम ईसाई दुनिया के दिए आँसुओं के बीच भी इसलिए खुश हो सकते हैं क्योंकि यीशु मसीह हमारे साथ हैं। जब भी हम यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में सोचते हैं, तो हम खुशी मनाए बिना नहीं रह सकते—और बार-बार खुश होते हैं—क्योंकि उन्होंने हमें उद्धार का वरदान दिया है। सभा के बाद, पास्टर के ऑफिस में, मैं गुरुवार सुबह की प्रार्थना सभा की तैयारी के लिए भजन संहिता 26 से 31 तक पढ़ रहा था। मैंने भजन संहिता 27 की आयतों 3 और 11 पर मनन करने के लिए थोड़ा समय लिया। मेरा ध्यान इन आयतों की ओर इसलिए गया क्योंकि दोनों में एक शब्द बार-बार आया था: "भरोसा" या "पक्का यकीन"। कोरियाई बाइबिल में, आयत 3 में इस भावना का अनुवाद "मैं शांत/अडिग रहूँगा" (या "तब भी मुझे भरोसा रहेगा") के रूप में किया गया है, और आयत 13 में इसका अनुवाद "मैंने पक्का यकीन किया है" (या "मुझे अभी भी इसका पूरा भरोसा है") के रूप में किया गया है। इन आयतों पर मनन करने से मुझे यह सीख मिली: "जो लोग पक्का यकीन रखते हैं कि वे परमेश्वर की भलाई देखेंगे, वे संकट के समय में भी शांत और अडिग रह सकते हैं।"

भजन संहिता 27 के संदर्भ को देखें, तो भजनकार दाऊद एक संकट का सामना कर रहे थे। यह संकट एक ऐसी स्थिति से जुड़ा था जहाँ "दुष्ट" (आयत 2), "विरोधी" या "दुश्मन" (आयतें 2, 6, 11), और एक "सेना" दाऊद के खिलाफ खड़ी हो गई थी (आयत 3)। खास तौर पर, इन विरोधियों ने उन्हें घेर लिया था (आयत 6), ठीक वैसे

ही जैसे युद्ध के दौरान कोई सेना चारों ओर डेरा डाल लेती है (आयत 3)। वे झूठे गवाह थे जो नफरत और बुराई से भरे हुए थे (आयत 12)। यह एक खतरनाक स्थिति थी जहाँ ऐसे लोग उन पर हमला करने के लिए खड़े हो गए थे (आयत 12)। फिर भी, ऐसे संकट के समय में भी, डेविड का एक विश्वास पक्का था: कि वह जीवित लोगों की धरती पर परमेश्वर की भलाई देखेगा (पद 13)। इसी पक्के विश्वास के कारण, डेविड डरा नहीं (पद 1)। न केवल उसका दिल डर से मुक्त था, बल्कि वह पूरी तरह शांत भी रहा (पद 3)। इसके अलावा, उसने परमेश्वर से एक ही चीज़ मांगी: "कि मैं अपने जीवन के सभी दिनों तक प्रभु के घर में रहूँ, प्रभु की सुंदरता को देखूँ और उनके मंदिर में उन्हें खोजूँ" (पद 4)। इसके अलावा, डेविड ने खुशी-खुशी बलिदान चढ़ाए, गीत गाए और परमेश्वर के पवित्र तंबू में उनकी स्तुति की (पद 6)। उसने परमेश्वर को ऊँची आवाज़ में पुकारा (पद 7)। उसने प्रभु का चेहरा खोजने की कोशिश की (पद 8)। और डेविड ने अपनी आत्मा से कहा: "प्रभु की प्रतीक्षा करो; मज़बूत बनो, हिम्मत रखो और प्रभु की प्रतीक्षा करो" (पद 14)।

हम ईसाइयों के लिए, संकट एक अवसर है। किस तरह का अवसर? यह परमेश्वर की भलाई को देखने का एक अनमोल अवसर है। संकट के समय हम परमेश्वर की कौन सी भलाई देखते हैं? मैंने इसके छह पहलुओं पर विचार किया है।

पहला, संकट के समय हम परमेश्वर की जो भलाई देखते हैं, वह है उनकी सुरक्षा। भजन संहिता 27:5 देखें: "क्योंकि मुसीबत के दिन में वह मुझे अपने निवास में सुरक्षित रखेगा; वह मुझे अपने पवित्र तंबू की शरण में छिपा लेगा और मुझे एक चट्टान पर ऊँचा उठाएगा।" मुसीबत के दिनों में परमेश्वर ने डेविड की रक्षा की (पद 5)। उन्होंने उसे सुरक्षित रखकर और अपने तंबू की गुप्त शरण में छिपाकर उसकी रक्षा की (पद 5)।

मेरे जीवन के एक बड़े संकट के दौरान, मुझे एक अमेरिकी गॉस्पेल गीत सुनना बहुत पसंद था: "हाइड मी इन द शेल्टर" (अंडर द शैडो ऑफ़ योर विंग्स)। इसके बोल कुछ इस तरह थे: "आपके पंखों की छाया में, यहाँ आपकी पवित्रता की गुप्त जगह पर... और मुझे अपने पंखों की छाया में रखें, पवित्रता की गुप्त जगह पर सुरक्षित..." हर रात, अस्पताल से निकलने के बाद, जहाँ मेरा पहला बच्चा जू-यंग इंटेंसिव केयर यूनिट में था, मैं घर जाते समय वह गाना सुनता था। मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मैं सचमुच चाहता था कि परमेश्वर जू-यंग की सुरक्षा अपने पवित्र, गुप्त निवास स्थान में करें। सच तो यह है कि संकट का समय परमेश्वर की सुरक्षा का अनुभव करने का एक शानदार मौका होता है।

दूसरी बात, संकट के समय परमेश्वर की भलाई का जो पहलू हम देखते हैं, वह है हमें ऊँचा उठाने का उनका काम।

भजन संहिता 27:5 का बाद का हिस्सा और आयत 6 का पहला हिस्सा देखिए: "...वह मुझे एक चट्टान पर ऊँचा उठाएगा। तब मेरा सिर मेरे चारों ओर घेरा डाले हुए दुश्मनों से ऊँचा हो जाएगा..." उस संकट के बीच भी, परमेश्वर ने दाऊद को एक चट्टान पर ऊँचा उठाया (आयत 5b)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने दाऊद को उसके चारों ओर घेरा डाले हुए दुश्मनों से ऊँचा उठाया (आयत 6a)। मेरी ज़िंदगी के मुश्किल समय में परमेश्वर ने मुझे जो सबक सिखाया, उनमें से एक यह है कि लोगों के बजाय परमेश्वर द्वारा ऊँचा उठाया जाना कहीं बेहतर है। इसके अलावा, परमेश्वर द्वारा ऊँचा उठाए जाने के लिए, हमें परमेश्वर और दूसरों, दोनों के सामने विनम्र होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, जब हम परमेश्वर और लोगों के सामने विनम्र रहते हैं, तो वह हमें अपने सही समय पर ऊँचा उठाते हैं (फिलिप्पियों 2:5–11 देखें)। संकट एक मौका बन जाता है क्योंकि परमेश्वर इसका इस्तेमाल हमें विनम्र बनाने के लिए करते हैं; यह उनके द्वारा हमें ऊँचा उठाने का भी एक बेहतरीन मौका होता है।

तीसरी बात, संकट के समय परमेश्वर की भलाई का जो पहलू हम देखते हैं, वह हमारी प्रार्थनाओं के उनके जवाब में मिलता है।

भजन संहिता 27:7 पर विचार करें: "हे प्रभु, जब मैं ज़ोर से पुकारूँ तो सुन; मुझ पर दया कर और मुझे जवाब दे।" जब उसके दुश्मनों की सेनाओं ने उसके खिलाफ डेरा डाला (आयत 3) और उसे घेर लिया (आयत 6), तो दाऊद ने परमेश्वर को ज़ोर से पुकारा (आयत 7)। उसकी पुकार एक ही चीज़ पर केंद्रित थी (आयत 4): अपनी ज़िंदगी के सभी दिन प्रभु के घर में रहना, प्रभु की सुंदरता को देखना और उनके मंदिर में उन्हें खोजना (आयत 4)। इस तरह, कई संकटों के बीच, दाऊद की विनती इसी एक इच्छा पर सिमट गई।

ऐसा लगता है कि जब हम भी ज़िंदगी में बहुत बड़े संकटों का सामना करते हैं, तो हमारी प्रार्थनाएँ सरल हो जाती हैं। परमेश्वर से बहुत सारी चीज़ें माँगने के बजाय, हमारा दिल—जो मुश्किलों के बोझ तले दबा होता है—परमेश्वर के घर में रहने की चाहत से भर जाता है, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद का दिल भर गया था। इसलिए, स्वर्ग के अनंत राज्य की उम्मीद के साथ हम प्रभु के लिए और भी ज़्यादा तड़पते हैं। संकट के समय निराशा में भी, प्रभु हमें अपनी उम्मीद उन पर टिकाने और उनकी चाहत रखने के लिए प्रेरित करते हैं। संकट के ज़रिए, प्रभु हमें उनसे

सच्चे दिल से पुकारने के लिए प्रेरित करते हैं। इसके अलावा, संकट हमें यह अनुभव करने का मौका देता है कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देते हैं। यह न केवल हमारे दिलों को परमेश्वर के अनंत घर में बसाता है, बल्कि हमें इस दुनिया की बदसूरती के बीच भी परमेश्वर की सुंदरता को देखने में सक्षम बनाता है। इसलिए, संकट परमेश्वर को पुकारने का एक मौका है और हमारी प्रार्थनाओं का जवाब पाने का एक शानदार अवसर है।

चौथा, संकट के समय हम परमेश्वर की जो भलाई देखते हैं, वह असल में उनकी मदद ही है।

भजन संहिता 27:9 पर विचार करें: “मुझसे अपना मुँह न छिपा, गुस्से में अपने सेवक को दूर न कर; तू ही मेरी मदद करता रहा है। हे मेरे उद्धार के परमेश्वर, मुझे न छोड़ और न ही त्याग।” संकट के समय परमेश्वर को पुकारते हुए, दाऊद ने उस मदद को याद किया जो परमेश्वर ने अतीत से लेकर वर्तमान तक उसे दी थी (पद 9)। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसे भरोसा था कि जिस परमेश्वर ने अतीत में उसकी मदद की थी, वह वर्तमान में भी उसकी मदद करेगा। उसे विश्वास था कि "मेरे उद्धार के परमेश्वर"—जो "मेरा सहायक" था—उसे न तो छोड़ेगा और न ही त्यागेगा, बल्कि उसकी मदद के लिए आएगा और उसे बचाएगा (पद 9)।

मुसीबत हमारे दिलों में अनिश्चितता पैदा करती है। ऐसी अनिश्चित स्थितियाँ हमें हिला देती हैं—कभी-कभी तो हमारी जड़ों तक को। फिर भी, प्रभु, जो हमें एक मज़बूत चट्टान पर खड़ा करते हैं, इन मुश्किलों का इस्तेमाल हमारे अंदर गहरा भरोसा जगाने के लिए करते हैं। यह भरोसा इस बात का यकीन है कि "मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर" निश्चित रूप से मेरी मदद करेंगे और मुझे बचाएँगे। मुश्किलों के ज़रिए, हम परमेश्वर को अपने मददगार के रूप में जान सकते हैं। सच तो यह है कि मुश्किल समय परमेश्वर की मदद को गहराई से महसूस करने का एक बेहतरीन मौका है।

पाँचवीं बात, मुश्किल समय में हम परमेश्वर की जो भलाई देखते हैं, वह हमें अपनाना और हमारा स्वागत करना है।

भजन संहिता 27:10 पर गौर करें: "भले ही मेरे माता-पिता मुझे छोड़ दें, प्रभु मुझे अपना लेंगे।" जब दाऊद चारों तरफ़ से दुश्मनों और विरोधियों से घिरे हुए थे, तब भी उन्हें पक्का यकीन था कि प्रभु उन्हें अपना लेंगे। उन्हें भरोसा था कि भले ही कोई और उनका स्वागत न करे, लेकिन प्रभु ज़रूर करेंगे।

जब हम बहुत ज़्यादा दुख और मुश्किलों का सामना करते हैं—जैसे अय्यूब ने किया, जिनके "भाई" (अय्यूब 19:13), "रिश्तेदार" (आयत 14), "नौकर" (आयत 16), और "करीबी दोस्त" (आयत 19) उनके खिलाफ़ हो गए थे, और जिनकी अपनी पत्नी को उनकी साँस से भी नफ़रत हो गई थी जबकि उनके अपने बच्चे उन्हें तरस भरी नज़रों से देखते थे (आयत 17)—तब भी हमें दाऊद जैसा ही अटूट विश्वास रखना चाहिए: कि प्रभु हमें अपनाते हैं (भजन संहिता 27:10)। प्रभु हमें कभी नहीं छोड़ेंगे। प्रभु हमें कभी अकेला नहीं छोड़ेंगे। असल में, हमारे प्रभु न केवल हमें अकेला नहीं छोड़ सकते, बल्कि वे हमें छोड़ भी नहीं सकते। हम मुश्किल समय में इस सच्चाई को पक्के तौर पर सीखते हैं। इसलिए, मुश्किल समय परमेश्वर द्वारा अपनाए जाने और स्वागत किए जाने का अनुभव करने का एक शानदार मौका है।

छठी और आखिरी बात, मुश्किल समय में हम परमेश्वर की जो भलाई देखते हैं, वह उनका मार्गदर्शन है।

भजन संहिता 27:11 पर गौर करें: "हे प्रभु, मुझे अपना रास्ता सिखा और मेरे दुश्मनों की वजह से मुझे सीधे रास्ते पर ले चल।" दुश्मनों की वजह से ज़िंदगी और मौत की स्थिति का सामना करते हुए, दाऊद ने उस परमेश्वर से विनती की जिन्होंने उनका स्वागत किया था और उनकी प्रार्थनाओं का जवाब दिया था, कि वे उन्हें "सीधे रास्ते" पर ले जाएँ (आयत 11)। दूसरे शब्दों में, ज़िंदगी और मौत के इस अहम मोड़ पर भी, दाऊद ने परमेश्वर से सही रास्ते पर मार्गदर्शन करने के लिए कहा। उन्होंने प्रभु से यह भी कहा कि वे उन्हें "अपना मार्ग" सिखाएं (पद 11)।

क्या यह अद्भुत नहीं है? इतने बड़े संकट के बीच भी, उन्होंने प्रार्थना की कि प्रभु उन्हें अपना मार्ग सिखाएं और सही रास्ते पर ले जाएं। जहाँ हम आम तौर पर ऐसी जानलेवा स्थिति से बचने या निकलने का रास्ता मांगते हैं, वहीं दाऊद ने परमेश्वर से प्रभु के मार्ग और सही रास्ते पर मार्गदर्शन करने को कहा। शायद हमारे जीवन के संकट ही प्रभु का मार्ग सीखने के सबसे अच्छे अवसर होते हैं। शायद जब समस्याएं हमें हर तरफ से घेर लेती हैं, तो वे पल उस रास्ते की चाहत रखने के लिए सबसे अच्छे होते हैं जो हमें ऊंचाइयों तक ले जाता है। विश्वास की

यात्रा में—प्रभु की ओर देखते हुए और उनके पीछे चलते हुए—संकट एक अद्भुत अवसर हो सकता है जिससे हम प्रभु के मार्गदर्शन का अनुभव कर सकें, जो स्वयं 'जीवन का मार्ग' हैं। संकट हमारे चरवाहे प्रभु का अनुभव करने का एक अद्भुत अवसर है, जो हमें हरे-भरे चरागाहों, शांत जल और धार्मिकता के मार्गों पर ले जाते हैं (भजन संहिता 23:2-3)।

हम ईसाइयों के लिए, संकट एक अवसर है। जो लोग दृढ़ता से विश्वास करते हैं कि वे संकट के बीच भी परमेश्वर की भलाई देखेंगे, उनके लिए ऐसा समय परमेश्वर की सुरक्षा, महिमा, प्रार्थनाओं के उत्तर, मदद, स्वीकृति और मार्गदर्शन को देखने का एक अनमोल मौका बन जाता है। इस अवसर का लाभ उठाते हुए, हम संकट के समय परमेश्वर से सच्ची प्रार्थना करते हैं और उनके उत्तर की प्रतीक्षा करते हैं। ऐसी स्थितियों में भी जो आसानी से डर पैदा कर सकती हैं, हम अपने दिलों को मजबूत करते हैं और साहस के साथ प्रतीक्षा करते हैं। हम परमेश्वर में अटूट विश्वास के साथ शांति और धैर्य से प्रतीक्षा करते हैं। वास्तव में, जो लोग दृढ़ता से विश्वास करते हैं कि वे परमेश्वर की भलाई देखेंगे, वे संकट के बीच भी शांत और स्थिर रहते हैं।

"शांत हो जाओ, और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ..." (भजन संहिता 46:10)।

वह कलीसिया जिसे प्रभु नहीं बनाते

[भजन संहिता 28]

विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च—जिस कलीसिया की मैं सेवा करता हूँ—के लिए प्रभु का वादा मत्ती 16:18 में मिलता है: "...मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा..."। मेरी इच्छा है कि मैं कलीसिया—मसीह की देह—की सेवा न केवल इस वादे पर विश्वास करते हुए करूँ, बल्कि पूरे भरोसे के साथ करूँ। इसके अलावा, मैं आत्मिक आँखों से यह देखना चाहता हूँ कि प्रभु सचमुच अपनी कलीसिया बना रहे हैं।

आज के वचन में, भजन संहिता 28:5 के दूसरे भाग में, भजनकार दाऊद कहते हैं: "...प्रभु उन्हें नष्ट कर देंगे, और उन्हें बनाएँगे नहीं।" भजन संहिता 28 पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उस कलीसिया की तीन विशेषताओं पर विचार करना चाहता हूँ जिसे प्रभु नहीं बनाते। ऐसे समय में जब कलीसिया के विकास पर बहुत सी किताबें छप रही हैं और कई पादरी और आम अगुवे इस विषय में गहरी रुचि रखते हैं, मैं एक अलग दृष्टिकोण अपनाना चाहता हूँ और उन स्थितियों पर विचार करना चाहता हूँ जिनमें प्रभु कलीसिया *नहीं* बनाते। नतीजतन, मुझे उम्मीद है कि आज के वचन से मैं तीन सबक सीख पाऊँगा कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च प्रभु द्वारा बनाई गई कलीसिया बने, इसके लिए हमारी क्या ज़िम्मेदारियाँ हैं।

पहला, वह कलीसिया जिसे प्रभु नहीं बनाते, वह कलीसिया है जो प्रभु को अपनी चट्टान नहीं बनाती।

भजन संहिता 28:1 को देखें: "हे प्रभु, मेरी चट्टान, मैं तुझसे पुकारूँगा: मेरे प्रति चुप न रह, कहीं ऐसा न हो कि यदि तू मेरे प्रति चुप रहे, तो मैं उन लोगों जैसा हो जाऊँ जो गड्ढे में उतर जाते हैं।" यहाँ हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि जो कलीसिया प्रभु को अपनी चट्टान नहीं बनाती, वह प्रार्थना नहीं करती। चूँकि दाऊद ने प्रभु को अपनी चट्टान बनाया था, इसलिए उन्होंने परमेश्वर से तब भी पुकार की जब वे अपने दुष्ट शत्रुओं के कारण घोर

दुःख की स्थिति में थे (पार्क युन-सन)। जिस तरह से उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की, उससे पता चलता है कि उनका हृदय परमेश्वर पर निर्भर था। आज के वचन में आयत 7 के पहले भाग को देखें: "प्रभु मेरा बल और मेरी ढाल है; मेरे हृदय ने उस पर भरोसा किया और मुझे सहायता मिली..." डेविड ने अपनी मुश्किल परिस्थितियों में परमेश्वर से मदद पाने के लिए इतनी सच्ची प्रार्थना इसलिए की क्योंकि उन्हें डर था कि परमेश्वर के उद्धार (वचन 8-9) के बिना, वे "गड्ढे में उतरने वालों" (वचन 1) जैसे हो जाएंगे। वे प्रार्थना का जवाब न मिलने को मौत के बराबर मानते थे; दूसरे शब्दों में, डेविड प्रार्थना के जवाब को जीवन के लिए ज़रूरी मानते थे (पार्क युन-सन)। इससे हमें यह कीमती सीख मिलती है कि जो कलीसिया प्रभु को अपनी चट्टान बनाती है, वह प्रार्थना करने वाली कलीसिया होती है—ऐसी कलीसिया जो प्रार्थना को अपने जीवन का आधार मानती है।

डेविड की तरह, हमें भी प्रभु को "अपनी चट्टान" बनाना चाहिए और उनसे सच्ची विनती करनी चाहिए। डेविड के शब्द देखिए: "जब मैं तुझसे पुकारूँ, जब मैं तेरे पवित्र स्थान की ओर अपने हाथ उठाऊँ, तो मेरी विनती की आवाज़ सुन" (वचन 2)। जब डेविड ने प्रभु के पवित्र स्थान की ओर विनती की, तो उन्होंने इस भरोसे के साथ परमेश्वर की स्तुति की कि उनकी प्रार्थना का जवाब मिलेगा। वचन 6 देखिए: "प्रभु धन्य हो, क्योंकि उसने मेरी विनती की आवाज़ सुनी है!" जो कलीसिया प्रभु द्वारा स्थापित नहीं है, वह न तो प्रार्थना करती है और न ही प्रार्थना का जवाब पाती है, और इसलिए, परमेश्वर की स्तुति भी नहीं करती; संक्षेप में, जो कलीसिया प्रभु द्वारा नहीं बनाई गई है, उसमें न तो प्रार्थना होती है और न ही स्तुति। हालाँकि, हमारी कलीसिया प्रभु द्वारा स्थापित कलीसिया है। हम एक ऐसी कलीसिया हैं जिसने यीशु और उनके वादे वाले वचन को अपनी चट्टान बनाया है और उनसे पुकार की है। हमें प्रभु पर भरोसा करते रहना चाहिए, अपनी विनतियाँ उन्हें बतानी चाहिए और उनकी मदद प्राप्त करनी चाहिए।

दूसरी बात, जो कलीसिया प्रभु द्वारा नहीं बनाई गई है, वहाँ शब्द और दिल एक-दूसरे से मेल नहीं खाते।

भजन संहिता 28:3 देखिए: "मुझे दुष्टों और बुराई करने वालों के साथ न घसीट, जो अपने पड़ोसियों से शांति की बात करते हैं..." ...बोलते तो हैं, लेकिन उनके दिल में बुराई होती है। यहाँ जिन "दुष्टों और बुराई करने वालों" की बात की गई है, वे कोई आम बुरे लोग नहीं हैं; वे ऐसे भयानक लोग हैं जिनके काम इतने बुरे हैं कि परमेश्वर का धैर्य भी उन्हें बर्दाश्त नहीं कर सकता (पार्क युन-सुन)। ऐसे दुष्ट लोगों के हाथों दुख सहते हुए, दाऊद ने

परमेश्वर—अपनी चट्टान—को पुकारा और विनती की कि उसका अंत उनके जैसा न हो (पद 3–5) (पार्क युन-सुन)। इन दुष्ट लोगों की क्या पहचान है? वे अपने पड़ोसियों से शांति की बात तो करते हैं, लेकिन उनके दिलों में बैर भरा होता है। संक्षेप में, दुष्ट और बुराई करने वाले पाखंडी होते हैं। वे ऐसे लोग हैं जो मुँह से तो शांति की बात करते हैं, लेकिन मन में बुराई रखते हैं। परमेश्वर के न्याय की मांग करते हुए, दाऊद ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उन्हें उनके कामों और उनकी बुराई के अनुसार फल दे। उसने धर्मी परमेश्वर से विनती की कि वह दुष्टों और बुराई करने वालों को दंड दे (पद 4)। ये दुष्ट लोग—ये पाखंडी—परमेश्वर के कामों या उसके हाथों के कार्यों पर ध्यान नहीं देते (पद 5)। क्योंकि पाखंडी परमेश्वर के कामों और उसके हाथों के कार्यों पर ध्यान नहीं देते, इसलिए वे न तो परमेश्वर का काम करते हैं और न ही उसे करने में सक्षम होते हैं।

हमें अपने शब्दों और अपने दिलों में तालमेल बिठाने की कोशिश करनी चाहिए। हमें अपने आस-पास के पाखंडियों की तरह, पड़ोसियों से शांति की बात करते हुए मन में बैर रखने का पाप नहीं करना चाहिए। इससे बचने के लिए, हमारे दिलों को परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए, जो हमारी "शक्ति और ढाल" है (पद 7)। यदि हमारे दिल दाऊद की तरह परमेश्वर पर भरोसा रखेंगे, तो हम दुष्टों और बुराई करने वालों की तरह बैर नहीं रखेंगे। इसके अलावा, हमारे होंठ झूठ के आधार पर "शांति" की बात नहीं करेंगे; इसके बजाय, दाऊद की तरह, हम परमेश्वर की स्तुति करेंगे (पद 6)। इसका कारण क्या है? हमारा... ...क्योंकि दिल बहुत आनंदित होगा, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद का दिल हुआ था (पद 7)। हमारी कलीसिया को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे शब्द और काम एक जैसे हों, और हमारे दिल लगातार प्रेम से भरे रहें। हमें कभी भी मन में बैर रखते हुए "शांति" और "प्रेम" की बात नहीं करनी चाहिए। सबसे बढ़कर, हमें अपने दिलों में आत्मा का फल—प्रेम—धारण करना चाहिए, और ऐसी कलीसिया बनना चाहिए जो केवल शब्दों से नहीं, बल्कि कामों से प्रेम दिखाए।

तीसरी बात, जिस कलीसिया को प्रभु नहीं बनाता, वह ऐसी कलीसिया है जो प्रभु को अपना... चरवाहा।

भजन संहिता 28:9 को देखिए: "अपने लोगों को बचा और अपनी विरासत पर आशीष दे; उनका चरवाहा बन और उन्हें हमेशा संभाले रख।" दुष्टों और बुरे काम करने वालों के सताए जाने के बीच दाऊद ने पूरे दिल से परमेश्वर से पुकार की। ऐसे हालात में भी, उसे भरोसा था कि उसकी प्रार्थना सुनी जाएगी; उसे विश्वास था कि परमेश्वर उसकी मदद करेगा। इसी भरोसे के साथ, उसने इस्राएल के लोगों के लिए प्रार्थना की (पद 9)। उस

प्रार्थना का एक हिस्सा था, "उनका चरवाहा बन और उन्हें हमेशा संभाले रख।" दाऊद ने विनती की कि प्रभु इस्राएल का चरवाहा बने—उन्हें ऊपर उठाए और संभाले, ठीक वैसे ही जैसे एक चरवाहा अपनी भेड़ों को संभालता है। इसके उलट, दुष्ट और बुरे काम करने वाले प्रभु को अपना चरवाहा नहीं बनाते। क्योंकि वे परमेश्वर के कामों पर ध्यान नहीं देते, इसलिए वे चरवाहे की अगुवाई या सुरक्षा नहीं चाहते।

जो विश्वासी प्रभु को अपना चरवाहा नहीं मानता, उसे प्रभु स्थापित नहीं कर सकते। यही बात कलीसिया पर भी लागू होती है; प्रभु ऐसी कलीसिया नहीं बनाते जो उन्हें अपना चरवाहा न माने। जैसे किसी बिल्डर की मदद के बिना घर बनाने की कोशिश करना बेतुका है, वैसे ही प्रभु को—जो कलीसिया के मुखिया और उसकी नींव का मुख्य पत्थर हैं—अपना चरवाहा बनाए बिना कलीसिया को स्थापित करने की कोशिश करना भी बेमानी है। बुरे और दुष्ट लोग, जो चरवाहे के रूप में प्रभु की भूमिका को नकारते हैं, वे उनके मार्गदर्शन को भी ठुकरा देते हैं। लेकिन हमारी कलीसिया को प्रभु को, जो कलीसिया के मुखिया हैं, अपने चरवाहे के रूप में अपनाना चाहिए। हमें प्रभु के वादों को मजबूती से थामे रखना चाहिए, उनके वचन का पालन करना चाहिए और खुद को अगुवों और सेवकों को नियुक्त करने के काम में लगाना चाहिए। ऐसा करते हुए, हमें भजन संहिता 23:1 में कही गई बात को स्वीकार करना चाहिए: "प्रभु मेरा चरवाहा है; मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं होगी," और अपने विश्वास के जीवन में उस बात को सच कर दिखाना चाहिए।

जब मैं देखता हूँ कि मेरा मन इस बात को लेकर शक से डगमगा रहा है कि क्या प्रभु सचमुच हमारी कलीसिया बना रहे हैं, तो मुझे एहसास होता है कि मैं प्रभु को अपनी "चट्टान" बनाने में नाकाम रहा हूँ, जैसा दाऊद ने किया था। मैं खुद को प्रभु पर पूरी तरह भरोसा करने में नाकाम पाता हूँ; विश्वास के साथ प्रार्थना करने के बजाय, मैं शक के साथ प्रार्थना करता हूँ, बिना इस यकीन के कि जवाब मिलेगा, और नतीजतन, मेरे दिल से जो प्रशंसा निकलनी चाहिए, वह नहीं निकलती। इसके अलावा, मैं खुद को सेवकाई में लगा हुआ तो देखता हूँ, लेकिन मेरे शब्द और काम मेल नहीं खाते—बाहर से कुछ भी कहने के बावजूद, मैं मन में पापपूर्ण विचार रखता हूँ और परमेश्वर के खिलाफ पाप करता हूँ। मैं यह भी देखता हूँ कि मैं प्रभु को अपना चरवाहा मानने का दावा तो करता हूँ, लेकिन उनकी आवाज़ पहचानने में नाकाम रहता हूँ, आवाज़ सुनने पर भी उन पर पूरा भरोसा नहीं कर पाता, और जो मैंने सीखा और माना है, उस पर अडिग नहीं रह पाता। फिर भी, प्रभु विश्वासयोग्य हैं; वे मत्ती 16:18 में किए गए वादे के अनुसार हमारी कलीसिया को मजबूती से बना रहे हैं। हम अपनी कलीसिया की अगुवाई को

देखकर इसका सबूत पा सकते हैं। मुझे पक्का एहसास हुआ है कि जब शैतान अगुवाई पर हमला कर रहा था, तब परमेश्वर असल में उन्हें और मज़बूत और स्थिर कर रहे थे। प्रभु, जो मुझे परमेश्वर के इस महान काम को आत्मिक आँखों से देखने और भरोसे के साथ जीने की शक्ति देते हैं, वे मुझे इस ओर ले जा रहे हैं कि मैं उन्हें और उनके वादे वाले वचन को अपनी चट्टान बनाऊँ। वह मुझे अपने चरवाहे के तौर पर उनके पीछे चलने के लिए भी गाइड कर रहे हैं। प्रभु ही हमें संभालते और सहारा देते हैं। मेरी प्रार्थना है कि जब भी हमारे चर्च को किसी मुश्किल या परेशानी का सामना करना पड़े, तो हम प्रभु—जो हमारी चट्टान हैं—पर भरोसा रखें और प्रार्थना में उनकी शरण लें, ताकि वह हमें जवाब दें और हमें उनकी स्तुति करने के लिए प्रेरित करें। हमारा चर्च ऐसा होना चाहिए जो यीशु और उनके वचन रूपी चट्टान पर टिका हो। यह ऐसा चर्च होना चाहिए जहाँ हमारे दिल, शब्द और काम एक-दूसरे के साथ मेल खाते हों। साथ ही, यह ऐसा चर्च होना चाहिए जो प्रभु को अपना चरवाहा माने। इस तरह, मैं पूरे दिल से प्रार्थना करता हूँ कि हमारा चर्च प्रभु के द्वारा बनता और बढ़ता रहे।

वह कलीसिया जिसे प्रभु नहीं बनाते

"क्योंकि वे प्रभु के कामों और उनके हाथों के कामों पर ध्यान नहीं देते, इसलिए वह उन्हें नष्ट कर देंगे और उन्हें बनाएँगे नहीं" (भजन संहिता 28:5)।

अक्सर हम देखते हैं कि कलीसिया के झगड़े सांसारिक अदालतों तक पहुँच जाते हैं। संतों द्वारा परमेश्वर को समर्पित की गई कीमती भेंटें अक्सर कानूनी लड़ाइयों में खर्च हो जाती हैं—वकीलों की फीस, अखबारों में विज्ञापन और ऐसी ही चीज़ों में। इन भेंटों का इस तरह से गलत इस्तेमाल होते देखना सचमुच दुखद है। मैं अक्सर सोचता हूँ कि प्रभु क्या सोचते होंगे जब वे ऐसी गंभीर समस्याओं को देखते हैं जो उस कलीसिया को परेशान कर रही हैं जिसे उन्होंने अपने ही लहू से खरीदा है। यह सोचना भी डरावना है कि क्या प्रभु सचमुच ऐसी कलीसियाओं का निर्माण करेंगे।

भजन संहिता 28:5 में, बाइबल उन कलीसियाओं के बारे में बात करती है जिन्हें परमेश्वर "बनाने" के बजाय "नष्ट" कर देंगे। आइए भजन संहिता 28 की आयत 3 और 5 के आधार पर ऐसी कलीसियाओं की दो विशेषताओं पर विचार करें।

पहली बात, वह कलीसिया जिसे प्रभु नहीं बनाते, वह है जो अपने पड़ोसियों से सच्चा प्रेम करने में विफल रहती है।

भजन संहिता 28:3 के बाद वाले हिस्से को देखें: "...वे अपने पड़ोसियों से शांति की बात तो करते हैं, लेकिन उनके दिलों में बुराई होती है।" जिस कलीसिया को प्रभु नहीं बनाते, वहाँ होंठ तो प्रभु जैसे लग सकते हैं, फिर भी दिल नफ़रत, ईर्ष्या और जलन से भरा होता है। अगर हम अपने होंठों से "शांति" की बात करते हैं जबकि हमारे दिलों में द्वेष होता है, तो प्रभु उस कलीसिया का निर्माण नहीं करेंगे। इसके विपरीत, बाइबल कहती है कि

प्रभु ऐसी कलीसिया को "नष्ट" कर देंगे। नीतिवचन का लेखक कहता है: "जो नफ़रत छिपाता है, उसके होंठ झूठ बोलते हैं..." (नीतिवचन 10:18)। हमें इन बातों पर आदरपूर्ण हृदय से ध्यान देना चाहिए। यदि हम अपने पड़ोसियों से सच्चे मन से नहीं, बल्कि केवल होंठों से प्रेम करते हैं, तो प्रभु हमारी कलीसिया का निर्माण नहीं करेंगे। यदि—हमारे कोरियाई-भाषा मंत्रालय परिवार के दायरे में—हम होंठों से शांति की बात तो करते हैं, लेकिन शांति फैलाने वालों के बजाय शांति भंग करने वालों की तरह रहते हैं, तो प्रभु हमारी कलीसिया का निर्माण नहीं करेंगे। इसे और व्यापक रूप से देखें तो, अगर हम कोरियाई मिनिस्ट्री में हिस्पैनिक मिनिस्ट्री के सदस्यों को एक चर्च और एक परिवार तो कहते हैं, लेकिन दुनिया के लोगों की तरह हमारे दिलों में उनके प्रति पूर्वाग्रह हैं—यानी हम उन्हें नज़रअंदाज़ करते हैं और उनके साथ भेदभाव करते हैं—तो प्रभु हमारे चर्च का निर्माण नहीं करेंगे (ध्यान दें: हमारे विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च में कोरियाई, अंग्रेज़ी और हिस्पैनिक मिनिस्ट्रीज़ शामिल हैं)। अगर होंठ मीठे हों लेकिन दिल कड़वा हो, तो वह झूठा प्यार है; वह सच्चा प्यार नहीं है। झूठा प्यार दूसरों को आगे नहीं बढ़ा सकता; इसके विपरीत, यह उन्हें गिरा देता है। नीतिवचन (Proverbs) का लेखक कहता है, "बुरे दिल के साथ जोशीले होंठ मिट्टी के बर्तन पर चांदी की परत चढ़ाने जैसे हैं" (नीतिवचन 26:23)। हमें 1 यूहन्ना 3:18 के शब्दों पर ध्यान देना चाहिए और उनका पालन करना चाहिए: "प्यारे बच्चों, आओ हम केवल शब्दों या बातों से नहीं, बल्कि कामों और सच्चाई से प्यार करें।" हमारी कोरियाई मिनिस्ट्री को एक "मातृ-मिनिस्ट्री" (mother ministry) बनना चाहिए। इसका मतलब है कि हमें एक माँ की भूमिका निभानी चाहिए। इसलिए, हमें अंग्रेज़ी और हिस्पैनिक मिनिस्ट्रीज़ के सदस्यों को अपनाना चाहिए और अपने कामों और सच्चाई के ज़रिए उनसे प्यार करना चाहिए। जैसे एक माँ बिना किसी शर्त के अपने बच्चों को अपनाती है और उनसे प्यार करती है, चाहे वे कैसा भी व्यवहार करें, वैसे ही हमें कोरियाई मिनिस्ट्री में अंग्रेज़ी और हिस्पैनिक मिनिस्ट्रीज़ के सदस्यों को अपनाना चाहिए और उनसे प्यार करना चाहिए। इसके अलावा, हमें केवल शब्दों में "शांति" की बात नहीं करनी चाहिए; हमें सचमुच शांति स्थापित करने वाले (peacemakers) बनना चाहिए जो मसीह के सुसमाचार के ज़रिए हमारे बीच की हर दीवार को गिरा दें और दुनिया को दिखाएं कि हम सचमुच मसीह में एक शरीर हैं।

दूसरी और आखिरी बात, जो चर्च परमेश्वर द्वारा नहीं बनाया जाता, वह चर्च परमेश्वर के कामों पर ध्यान नहीं देता।

भजन संहिता 28:5 पर विचार करें: "क्योंकि वे प्रभु के कामों या उसके हाथों के कार्यों पर ध्यान नहीं देते, इसलिए वह उन्हें नष्ट कर देगा और उनका निर्माण नहीं करेगा।" इसे अपनी कलीसिया पर लागू करें: अगर हम यह मानने में विफल रहते हैं कि प्रभु अभी भी अपने चर्च—अपने ही शरीर—का निर्माण कर रहे हैं, जैसा कि उन्होंने मत्ती 16:18 में वादा किया था, तो वह हमारा निर्माण नहीं करेंगे। इसके बजाय, वह हमें गिरा देंगे। इसलिए, हमें प्रभु से विनती करनी चाहिए कि वह हमारे दिलों की आँखें खोलें ताकि हम उनके चर्च बनाने के काम को देख सकें। तभी हम सच्चे दिल से परमेश्वर और दूसरों के सामने यह मान पाएँगे कि "यह काम हमारे परमेश्वर ने किया है" (नहेमायाह 6:16)।

प्रभु की मदद के बिना हमारा कलीसिया नहीं बन सकता; सिर्फ़ अपनी ताकत से प्रभु का कलीसिया बनाना नामुमकिन है। कलीसिया—जो उसका शरीर है—तभी बन सकता है जब विश्वासयोग्य प्रभु अपने वादों को पूरा करे। हैरानी की बात यह है कि प्रभु अभी भी इस काम को सक्रिय रूप से कर रहे हैं। मैंने खुद इस निर्माण कार्य का अनुभव किया है—जहाँ प्रभु मेरे जीवन की कमियों को दिखाते हैं, जो चीज़ें हटानी ज़रूरी हैं उन्हें हटाते हैं, और फिर मुझे मज़बूती से दोबारा बनाते हैं—और मैं उन्हें हमारे कलीसिया के नेताओं के व्यक्तिगत जीवन को बनाने के काम में भी देखता हूँ। हमारा कलीसिया प्रभु का है, और यह एक ऐसा कलीसिया है जिसे वे खुद बना रहे हैं (मत्ती 16:18)। सचमुच प्रभु द्वारा बनाया गया कलीसिया बनने के लिए, हम सभी को अपने पड़ोसियों से सच्चे दिल से प्यार करना चाहिए और अपना ध्यान उन कामों पर लगाना चाहिए जो प्रभु कर रहे हैं। हालाँकि, अगर हम सिर्फ़ ज़ुबान से अपने पड़ोसियों से प्यार करते हैं और शांति लाने वाली प्रेम की सेवा नहीं करते हैं, तो प्रभु कभी भी हमारे कलीसिया का निर्माण नहीं करेंगे। इसके अलावा, अगर हम यह नहीं मानते कि प्रभु सक्रिय रूप से अपने कलीसिया का निर्माण कर रहे हैं, तो वे इसका निर्माण नहीं करेंगे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम विनम्रता से इस सीख को स्वीकार करें और कलीसिया—जो उसका शरीर है—को बनाने के प्रभु के काम में एक साथ शामिल हों। विजय!

यहोवा के नाम की महिमा करो!

[भजन संहिता 29]

पुराना नियम यहोवा के सात खास पवित्र नाम बताता है: (1) यहोवा यिरे (उत्पत्ति 22:14)—यह नाम तब इस्तेमाल हुआ जब परमेश्वर ने इसहाक की जगह एक मेढ़ा दिया—इसका मतलब है "परमेश्वर ने इंतज़ाम किया है"; (2) यहोवा राफा (निर्गमन 15:26)—यह नाम तब इस्तेमाल हुआ जब मिस्र से निकलने के दौरान उसने मारा के कड़वे पानी को मीठे पानी में बदल दिया—इसका मतलब है "यहोवा जो चंगा करता है" (भजन संहिता 103:3); (3) यहोवा निस्सी (निर्गमन 17:15)—अमालेक के खिलाफ लड़ाई में जीत मिलने पर यह नाम इस्तेमाल हुआ—इसका मतलब है "यहोवा मेरा झंडा है"; (4) यहोवा शालोम (न्यायियों 6:24)—यह नाम तब इस्तेमाल हुआ जब गिदोन ने परमेश्वर का बुलावा मिलने के बाद एक वेदी बनाई—इसका मतलब है "यहोवा मेरी शांति है"; (5) यहोवा राआह (भजन संहिता 23:1) का मतलब है "यहोवा मेरा चरवाहा है" (यूहन्ना 10:19); (6) यहोवा सिदकेनु (यिर्मयाह 23:6) का मतलब है "यहोवा मेरी धार्मिकता है" (1 कुरिन्थियों 1:30); और (7) यहोवा शम्माह (यहेजकेल 48:35) का मतलब है "यहोवा वहाँ है" (प्रकाशितवाक्य 21:3)। बाइबल परमेश्वर के पवित्र नाम के बारे में कहती है: "अपने परमेश्वर के नाम का अनादर न करना; मैं यहोवा हूँ" (लैव्यव्यवस्था 18:21)। दुनिया के लोग हम मसीहियों के ज़रिए परमेश्वर को देखते हैं। इसलिए, अगर हम उन लोगों को, जो विश्वास नहीं करते, हममें कमी निकालने का मौका देते हैं, तो वे सिर्फ़ हमारी निजी गलतियों के बारे में ही बात नहीं करते बल्कि खुद परमेश्वर की भी बुराई करते हैं। लैव्यव्यवस्था 21:6 हमें सिखाती है कि हम उस परमेश्वर के सामने पवित्र रहें और उसके नाम का अनादर न करें। अगर हमारे विचार और जीवन परमेश्वर के सामने पवित्र नहीं हैं, तो हम उसके नाम का अपमान करते हैं।

भजन संहिता 29:2 इन शब्दों से शुरू होती है, "यहोवा को उसके नाम के योग्य महिमा दो..." मैं दो बातें बताना चाहता हूँ कि हम कैसे सच में परमेश्वर को उसके नाम के योग्य महिमा दे सकते हैं। जब हम उन आशीषों पर विचार करते हैं जिनका वादा उन्हें महिमा देने वालों से किया गया है—और इन शिक्षाओं के अनुसार जीने का प्रयास करते हैं—तो परमेश्वर की कृपा हम सब पर बनी रहे।

सबसे पहले, जो लोग प्रभु के नाम के योग्य महिमा देते हैं, वे "पवित्र वस्त्र पहनकर" उनकी आराधना करते हैं।

भजन संहिता 29:2 को देखें: "प्रभु को उसके नाम के योग्य महिमा दो; पवित्र वस्त्र पहनकर प्रभु की आराधना करो।" "पवित्र वस्त्र पहनकर" वाक्यांश का अर्थ है पवित्र चरित्र का होना (पार्क युन-सन)। परमेश्वर की उचित आराधना करने के लिए उचित चरित्र की आवश्यकता होती है—विशेष रूप से, एक पवित्र चरित्र। पवित्र चरित्र वाला आराधक किस तरह का जीवन जीता है? परमेश्वर के पवित्र नाम को धारण करने वाले के रूप में, वे एक शुद्ध जीवन जीते हैं (पार्क युन-सन)।

हमें पवित्र जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए। दुनिया के अनुसार चलने के बजाय, हमें एक अलग जीवन जीना चाहिए, और अपने भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा को हमें पवित्र करने देना चाहिए ताकि हम परमेश्वर की दृष्टि में शुद्ध जीवन जी सकें। फिर भी, हममें से कौन वास्तव में यह दावा कर सकता है कि वह केवल बुरी आदतों को सुधारकर और पापपूर्ण विचारों को त्यागकर प्रभु के सामने शुद्ध है (भजन 332, पद 4)? अंततः, हमारे पास यीशु मसीह द्वारा क्रूस पर बहाए गए बहुमूल्य लहू पर निर्भर रहने के अलावा कोई अन्य उपाय नहीं है। उस बहुमूल्य लहू के द्वारा अपने पापों से शुद्ध होने के बाद, हमें परमेश्वर की कृपा के सिंहासन के पास जाना चाहिए और उनके बलिदान की योग्यता पर भरोसा करते हुए उनकी आराधना करनी चाहिए (इब्रानियों 4:16)। जो लोग परमेश्वर को उनके योग्य महिमा देना चाहते हैं, उन्हें पवित्र जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए ताकि वे उन्हें ऐसी आराधना अर्पित कर सकें जो उनके योग्य हो।

पुराना नियम हमें ऐसे लोगों से परिचित कराता है जिन्होंने खुद को अलग किया और अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित किया; इन लोगों को "नाज़िरी" (Nazirites) के रूप में जाना जाता है। "नाज़िरी" शब्द हिब्रू क्रिया *नज़ार* (nazar) से लिया गया है, जिसका अर्थ है पवित्रता या पवित्रीकरण। *नज़ार* का अर्थ है अलग किया

जाना, विशिष्ट होना और पवित्र ठहराया जाना—दूसरे शब्दों में, किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए समर्पित व्यक्ति। इस प्रकार, नाज़िरी वे लोग थे जिन्होंने खुद को पवित्र ठहराया और परमेश्वर के सामने पवित्र जीवन जीने का संकल्प लिया। हमें भी नाज़िरी-जैसे आराधक बनने के लिए बुलाया गया है। जिस तरह नाज़ीरियों ने खुद को पवित्रता के लिए समर्पित किया था, उसी तरह हम भी इस पापी दुनिया में रहते हुए खुद को अलग करके अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित करते हैं। इसलिए, हमें विश्वास के इस मानक—"पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ"—को अपना लक्ष्य बनाना चाहिए और ऐसे उपासक बनना चाहिए जो पवित्र परमेश्वर का अनुकरण करते हुए जीवन बिताएँ। हमें परमेश्वर के नाम को वह महिमा भी देनी चाहिए जिसके वे हकदार हैं। मेरी प्रार्थना है कि आप और मैं एक पवित्र जीवन जीने का संकल्प लें—एक नाज़ीरी की तरह—और अपनी आज्ञाकारिता और समर्पण के माध्यम से परमेश्वर की उपासना करें। हम ऐसे लोग बनें जो परमेश्वर को उनके नाम के योग्य महिमा दें।

दूसरी बात, जो लोग प्रभु के नाम के योग्य महिमा देते हैं, वे परमेश्वर की आवाज़ सुनते हैं।

भजन संहिता 29:3–9 में, दाऊद "प्रभु की आवाज़" वाक्यांश का सात बार उपयोग करते हैं। यह अर्थहीन दोहराव नहीं है; बल्कि, यह गरज—एक प्राकृतिक घटना—की आध्यात्मिक व्याख्या को परमेश्वर की ही आवाज़ के रूप में दर्शाता है (पार्क युन-सन)। परमेश्वर की आवाज़ को तूफ़ान की गरज के रूप में वर्णित करके, दाऊद हमें परमेश्वर के वचन के भव्य स्वरूप को दिखाते हैं। जो लोग परमेश्वर को उनके नाम के योग्य महिमा देते हैं, वे पवित्र वस्त्र पहनकर उनकी उपासना करते हुए उनके भव्य वचन को सुनते हैं। उस भव्य वचन में ऐसी शक्ति (पद 4) है जो लेबनान के देवदार के पेड़ों को भी तोड़ सकती है (पद 5)। परमेश्वर की इस आवाज़ को सुनकर, दाऊद घोषणा करते हैं, "और उनके मंदिर में हर कोई कहता है, 'महिमा!'" (पद 9)। यह सभी संतों की स्तुति की ओर संकेत करता है (कैल्विन)। जो सभी विश्वासी प्राकृतिक दुनिया में परमेश्वर की महिमा को पहचानते हैं, वे उनकी स्तुति किए बिना नहीं रह सकते (पार्क युन-सन)।

हमें परमेश्वर को वह महिमा देनी चाहिए जो सही मायने में उनकी है। ऐसा करने के लिए, हमें उनकी उचित उपासना करनी चाहिए और उनके भव्य वचन को सुनना चाहिए। आज के अंश में जिस परमेश्वर की बात की गई है... जब हम यह पहचानते हैं कि ये भव्य वचन न्याय के संदर्भ में घोषित किए गए हैं, तो हमें खुद से पूछना

चाहिए कि जो परमेश्वर का वचन हम सुन रहे हैं, उस पर हमें कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए। हम चार बिंदुओं पर विचार कर सकते हैं:

(1) जब हम परमेश्वर का भव्य वचन सुनते हैं, तो हमें उसका आदर करना चाहिए।

हमें उस वचन को कभी भी हल्के में नहीं लेना चाहिए। इसलिए, हमें ऐसी किसी भी हरकत से बचना चाहिए जो परमेश्वर के वचन का अनादर करती हो—चाहे वह हमारे मन में ही क्यों न हो—जैसे कि परमेश्वर के वचन में अपनी मर्ज़ी से कुछ जोड़ना या घटाना।

(2) जब हम परमेश्वर का शक्तिशाली वचन सुनते हैं, तो हमारे दिलों को—भले ही वे देवदार के पेड़ों की तरह मज़बूत और कठोर क्यों न हों—टूटकर बिखर जाना चाहिए।

परमेश्वर के शानदार वचन के ज़रिए, हमारे कठोर दिलों को टूट जाना चाहिए और हमारी ज़िद खत्म हो जानी चाहिए। हमें प्रभु के शक्तिशाली वचन को अपने दिलों की बंजर ज़मीन को जोतने देना चाहिए।

(3) परमेश्वर के वचन की वजह से, हमारे दिलों को—जो रेगिस्तान की तरह सूखे हैं—हिल जाना चाहिए और उनमें हलचल मचनी चाहिए (आयत 8)।

जब हम परमेश्वर का जीवित और असरदार वचन सुनते हैं, तो हमारे सूखे दिलों में पवित्र जोश भर जाना चाहिए (हाग्गै 1:14)।

(4) जब हम परमेश्वर का पवित्र वचन सुनते हैं, तो हमें आध्यात्मिक रूप से पूरी तरह खुला और बेपर्दा होकर खड़ा होना चाहिए।

भजन संहिता 29:9 को देखिए: "प्रभु की आवाज़... जंगलों को नंगा कर देती है..." हमें परमेश्वर की आराधना करने के लिए दिखावटी रूप-रंग बनाकर नहीं आना चाहिए। हमें सिर्फ़ धार्मिकता का दिखावा करते हुए उनकी

आराधना नहीं करनी चाहिए। इसके बजाय, हमें नम्रता से परमेश्वर के पास वैसे ही आना चाहिए जैसे हम हैं, और उनके पवित्र वचन को अपने दिलों की गहराइयों में छिपी बातों को भी उजागर करने देना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें उनके सामने आध्यात्मिक रूप से नंगे होकर आना चाहिए, यानी परमेश्वर के वचन के सामने पूरी तरह खुले हुए। सच्चा आराधक वह है जो परमेश्वर को वह महिमा देता है जिसके वे हक़दार हैं। ऐसा व्यक्ति सुनने वाला भी होता है—जो परमेश्वर की शानदार आवाज़ को सुनता है।

तो, जो लोग प्रभु के नाम के योग्य महिमा देते हैं, उन्हें क्या आशीष मिलती है? बाइबल हमें बताती है कि जब हम परमेश्वर के नाम को वह महिमा देते हैं जिसके वे हक़दार हैं, तो हमें उनसे शक्ति और शांति की आशीष मिलती है। आज के वचन, भजन संहिता 29:11 को देखिए: "प्रभु अपने लोगों को शक्ति देता है; प्रभु अपने लोगों को शांति की आशीष देता है।" जो लोग परमेश्वर के नाम के योग्य महिमा देते हैं, वे सच्चे आराधक और सुनने वाले होते हैं। ऐसे लोगों पर परमेश्वर जो आशीष देते हैं, वे हैं "शक्ति" और "शांति"। संतों को असल में किस तरह की शक्ति की ज़रूरत होती है? आइए दो पहलुओं पर विचार करें: (1) आराधना के दौरान मिलने वाली शक्ति, जो "प्रभु का आनंद" है (नहेमायाह 8:10)। (2) परमेश्वर के वचन को सुनने और आज्ञाकारी जीवन जीने से मिलने वाली शक्ति—स्वयं वचन की सामर्थ्य। अंततः, यह शक्ति उन संतों को साहस और सांत्वना देती है जो धार्मिकता के पक्ष में खड़े रहते हैं, यहाँ तक कि परमेश्वर के न्याय के समय भी (पार्क युन-सन)। आराधना के जीवन और परमेश्वर के वचन को सुनने व मानने के जीवन के माध्यम से परमेश्वर हमें जो आशीष देते हैं, वह वास्तव में "शांति" है।

परमेश्वर कहते हैं, "मुझे अपने पवित्र नाम की चिंता थी, जिसे इस्राएल के घराने ने उन देशों में अपवित्र किया जहाँ वे गए थे" (यहेजकेल 36:21)। परमेश्वर वह हैं जो अपने महान और पवित्र नाम को बहुत महत्व देते हैं। भले ही—इस्राएल के लोगों की तरह—हम दुनिया में परमेश्वर के पवित्र नाम को अपवित्र करें, फिर भी उन्होंने हमारे माध्यम से अपनी पवित्रता प्रकट करने का वादा किया है क्योंकि वे उस पवित्र नाम को बहुत महत्व देते हैं (पद 23)। भले ही हम मसीही इस दुनिया में रहते हुए यीशु के बहुमूल्य नाम को कलंकित करें, फिर भी परमेश्वर हमारे माध्यम से अपनी पवित्रता प्रकट करते हैं क्योंकि वे अपने महान और पवित्र नाम का सम्मान करते हैं। परमेश्वर की इस कृपा को पहचानते हुए, हम उनके पवित्र नाम के योग्य महिमा देना चाहते हैं; इसलिए, हम "पवित्रता के साथ" उनकी आराधना करते हैं और विनम्रतापूर्वक उनकी महिमामयी आवाज़ को सुनते हैं।

परिणामस्वरूप, हम परमेश्वर द्वारा प्रदान की गई शक्ति और शांति की आशीषों का आनंद लेते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप पर और मुझ पर आशीष बनी रहे।

हे परमेश्वर, मेरे सहायक बन!

[भजन संहिता 30]

हाल ही में, मैंने अपने चर्च के एक बुजुर्ग को पीठ की चोट से जूझते हुए देखा। मुझे उनके दर्द का कुछ हद तक एहसास हुआ, क्योंकि मैं खुद भी पीठ की गंभीर चोट का अनुभव कर चुका हूँ। उन्हें संघर्ष करते हुए देखकर—यहाँ तक कि बिना मदद के मोज़े भी न पहन पाना—मैंने इंसानी ज़िंदगी की सच्चाई पर विचार किया: हमारी शुरुआत माता-पिता की देखभाल से होती है, और बुढ़ापे में, जब हम आसानी से चल-फिर नहीं पाते, तो हमें फिर से दूसरों की मदद की ज़रूरत पड़ती है। असल में, हम ऐसे इंसान हैं जो दूसरों की मदद पर निर्भर रहते हैं। लेकिन जब हमारी मदद करने वाला कोई न हो, तो हमें क्या करना चाहिए?

भजन संहिता 22:11 में, भजनकार दाऊद लिखते हैं: "मुझसे दूर न हो, क्योंकि मुसीबत पास है और मदद करने वाला कोई नहीं है।" भारी परेशानी का सामना करते हुए और यह मानते हुए कि कोई इंसान उसकी मदद के लिए नहीं आ सकता, दाऊद ने प्रभु पर भरोसा किया। दाऊद की तरह, हमें भी प्रभु पर निर्भर रहना चाहिए जब हमारी मदद करने वाला कोई और न हो। हमें उनसे पुकारना चाहिए। भले ही ऐसा लगे कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का जवाब नहीं दे रहे हैं, हमें हार नहीं माननी चाहिए; बल्कि, हमें उनसे पुकारते रहना चाहिए (पद 1-2)। हमें अतीत को भी याद करना चाहिए और परमेश्वर की बचाने वाली कृपा पर विचार करना चाहिए (पद 4-5)। अंत में, हमें सब कुछ प्रभु को सौंप देना चाहिए (पद 9-10)।

भजन संहिता 30:10 कहता है, "...हे प्रभु, मेरे सहायक बन..." भजनकार दाऊद मानते हैं कि प्रभु ही एकमात्र ऐसे हैं जो उनकी मदद कर सकते हैं, और इसलिए वे मदद के लिए प्रभु की ओर देखते हैं। आज, इस शास्त्र-

पाठ पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन पाँच तरीकों पर विचार करना चाहता हूँ जिनसे प्रभु—हमारे सहायक—हमारी मदद करते हैं, और उनकी दी हुई कृपा को प्राप्त करना चाहता हूँ।

पहला, प्रभु, जो हमारे सहायक हैं, हमें ऊपर उठाते हैं और बाहर निकालते हैं।

भजन संहिता 30:1 को देखें: "हे प्रभु, मैं तेरी बड़ाई करूँगा, क्योंकि तूने मुझे ऊपर उठाया है और मेरे दुश्मनों को मुझ पर खुश नहीं होने दिया है।" दाऊद प्रभु की बड़ाई करने का संकल्प लेते हैं। वे ऐसा कैसे करना चाहते हैं? प्रभु की स्तुति करके, उनकी सेवा करके और पूरे मन-प्राण से उनसे प्रेम करके (पार्क युन-सन)। दाऊद ने प्रभु की महिमा करने का फ़ैसला क्यों किया? इसलिए क्योंकि प्रभु ने उसे उसके दुश्मनों के हाथों से बचाया (पद 3)। यहाँ "ऊपर उठाने" के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द अरबी शब्द *talla* से मेल खाता है, जिसका मतलब है रस्सी से बंधी बाल्टी को ऊपर खींचना। यह शब्द परमेश्वर के बचाने के काम को बताता है—एक ऐसी ज़िंदगी को ऊपर उठाना जो बहुत मुश्किल हालात में फँस गई हो, ठीक वैसे ही जैसे कुएँ से पानी निकाला जाता है (पार्क युन-सन)। मैं इसे ऐसे सोचता हूँ: जब हम कुएँ में गहरे डूब रहे होते हैं—पूरी तरह बेबस और खुद कुछ भी करने में असमर्थ—और हम पतरस की तरह अपने उद्धारकर्ता की ओर हाथ बढ़ाते हुए चिल्लाते हैं, "हे प्रभु, मेरी मदद कर!", तो प्रभु आकर हमें बचाते हैं, और हमें वैसे ही ऊपर खींचते हैं जैसे बाल्टी से पानी निकाला जाता है। तो, परमेश्वर ने दाऊद को कहाँ से उठाया और बचाया? उन्होंने दाऊद को कब्र (शियोल) के दायरे से बाहर निकाला और उसे फिर से ज़िंदगी दी (पद 3)। परमेश्वर ने दाऊद को कब्र में जाने से रोका। उन्होंने दाऊद को एक बहुत मुश्किल हालात से बचाया—एक ऐसा पल जब वह मौत के कगार पर था और ऐसा लग रहा था कि वह कब्र में ही जाएगा (पार्क युन-सन)। नतीजतन, परमेश्वर ने दाऊद के दुश्मनों को उस पर खुश होने से रोका। शैतान और उसके मानने वाले हमें—परमेश्वर के बच्चों को—गुनाह में फँसाकर हमारा विरोध करने की कोशिश करते हैं, और हमारी गलतियों से बुरा मज़ा लेना चाहते हैं (पद 1)। फिर भी, दाऊद के पास अनुभव और पक्का भरोसा दोनों थे: यह यकीन कि प्रभु उसे उसके दुश्मनों के हाथों से छुड़ाएँगे, और यह पक्का करेंगे कि उसके दुश्मनों को खुश होने का कोई मौका न मिले। यह सच्चाई हमें बहुत दिलासा देती है। जो परमेश्वर हमारे दुश्मनों को खुश होने से रोकते हैं, वही

उद्धारकर्ता हमें बचाते हैं। जब हम मौत के मुँह में गिरते हैं, तो वही परमेश्वर हमें बाहर निकालते हैं—ठीक वैसे ही जैसे बाल्टी से पानी निकाला जाता है। इस बचाने वाली कृपा का अनुभव करने के बाद, हमें भी दाऊद की तरह परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए। हमें प्रभु की स्तुति और सेवा करनी चाहिए, और पूरे दिल से उनसे प्यार करना चाहिए। कहा जाता है कि संत कैथरीन ने प्रभु की आज्ञा मानकर और उनकी मौजूदगी में अपनी मर्ज़ी को जैसे कोई चीज़ ही न हो, ऐसा मानकर प्रभु की महिमा करते हुए ज़िंदगी बिताई (पार्क युन-सन)। संत कैथरीन की तरह, हमें भी ऐसी ज़िंदगी जीनी चाहिए जो प्रभु की महिमा करे, और उनकी बचाने वाली कृपा से ताकत पाए। दूसरी बात, प्रभु, जो हमारे सहायक हैं, हमें चंगा करते हैं। भजन संहिता 30:2 को देखिए: "हे प्रभु मेरे परमेश्वर, मैंने तुझसे पुकार की, और तूने मुझे चंगा किया।" जब दाऊद को उसके दुश्मनों ने सताया, तो उसने मदद के लिए रोते हुए परमेश्वर को पुकारा। जवाब में, प्रभु ने दाऊद की प्रार्थना सुनी और उसे चंगा किया। यहाँ, "चंगा किया" शब्द का अर्थ है परमेश्वर की मदद से किसी अस्थायी असफलता से उबरना (पार्क युन-सन)। अगर ऐसा है, तो दाऊद की वह "अस्थायी असफलता" क्या थी? यह वह अहंकार था जो उसने तब दिखाया जब सब कुछ अच्छा चल रहा था—ऐसा गर्व जिसने उसे खुद से यह कहने पर मजबूर किया, "मैं कभी नहीं डगमगाऊंगा" (पद 6-7)। नतीजतन, इस पाप के कारण, प्रभु ने दाऊद से अपना मुँह मोड़ लिया, जिससे उसे बहुत परेशानी हुई (पद 7)। यह कितनी कीमती परेशानी है! यह दुनिया का दुख नहीं है, बल्कि परमेश्वर की ओर ले जाने वाला दुख है जो पश्चाताप की ओर ले जाता है। इस परेशानी के बीच, दाऊद ने प्रभु को पुकारा (पद 2, 8)। उसकी प्रार्थना थी: "हे प्रभु, सुन और मुझ पर दया कर; हे प्रभु, मेरा सहायक बन" (पद 10)। "मुझ पर दया कर" वाली विनती एक ऐसी प्रार्थना है जो हमें, पापियों के रूप में, परमेश्वर से करनी चाहिए। इस प्रार्थना के परिणामस्वरूप, दाऊद को परमेश्वर की दया और मदद मिली, और वह बहाल हो गया। हम भी वैसे ही असफल होते हैं जैसे दाऊद हुआ था—या शायद उससे भी ज़्यादा बार। जब हम सोचते हैं कि हमें क्या करना चाहिए, तो हमें—इस भाग में दाऊद की तरह—सबसे पहले परमेश्वर की दया मांगनी चाहिए। हमें अपनी असफलताओं का इस्तेमाल परमेश्वर को पुकारने और उसकी दया का अनुभव करने के अवसर के रूप में करना चाहिए। उसकी दया के माध्यम से, परमेश्वर के साथ हमारा रिश्ता बहाल होना चाहिए। हालाँकि, हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि सच्चे पश्चाताप के बिना सच्चा मेल-मिलाप नहीं हो सकता। हमें उसके सामने सच्चे दिल से पश्चाताप करके परमेश्वर के बहाल करने वाले प्रेम का अनुभव करना चाहिए। हमें उस बहाल करने वाले प्रेम का अनुभव तब करना चाहिए जब हम उसके पवित्र प्रेम से दिए गए अनुशासन के दंड को पाने के बाद पश्चाताप करते हैं।

तीसरी बात, प्रभु, जो हमारे सहायक हैं, हमें खुशी देते हैं।

भजन संहिता 30:5 को देखिए: "उसका क्रोध केवल एक पल के लिए रहता है, लेकिन उसकी कृपा जीवन भर रहती है; रोना रात भर रह सकता है, लेकिन सुबह खुशी आती है।" परमेश्वर की मदद से छुटकारा और चंगाई पाने के बाद डेविड को यह सच समझ आया कि असल में, दुख भरे पलों से ज़्यादा खुशी के पल होते हैं। दूसरे शब्दों में, मुश्किल हालात में जो दुख उसने सहा, उसके मुकाबले बचाए जाने के बाद मिली खुशी कहीं ज़्यादा बड़ी थी (पार्क युन-सन)। आप क्या सोचते हैं? क्या आप सच में मानते हैं कि दुख भरे पलों से ज़्यादा खुशी के पल होते हैं? फिर भी, इंसानी फितरत खुशी के बजाय दुख को ज़्यादा याद रखती है। यह कुछ वैसा ही है जैसे कोई गुलाब की खुशबू तो भूल सकता है, लेकिन उसके कांटे की चुभन उसे लंबे समय तक याद रहती है (पार्क युन-सन)। हालाँकि, क्योंकि परमेश्वर का गुस्सा कुछ ही समय के लिए होता है, इसलिए उनके गुस्से की वजह से होने वाला दुख भी थोड़े समय के लिए ही होता है, जबकि उनकी मेहरबानी "जीवन भर" बनी रहती है (वचन 5)। इसलिए, भले ही परमेश्वर के गुस्से के कारण सहने पड़ रहे दुख के बीच शाम को रोना-धोना हो, फिर भी हम उनकी कृपा की वजह से नए दिन और नई सुबह में खुशी मनाते हैं।

पिछले सोमवार, J.I. पैकर की किताब *God's Plan* पढ़ते समय, परमेश्वर ने मेरे दिल में यह बात डाली: "... मैं आनंद करूँगा, हाँ, और मैं आनंद करूँगा" (फिलिप्पियों 1:18)। चाहे हालात कैसे भी हों, पवित्र आत्मा ने मुझे अपनी आत्मा से बात करने और यह तय करने के लिए प्रेरित किया: "आओ हम आनंद करें और खुश हों!" दुख के कारण हम अक्सर आँसू और गम के पलों का अनुभव करते हैं। फिर भी, यही आँसू और गम हमें और भी बड़ी खुशी का अनुभव कराते हैं। डॉ. पार्क युन-सन ने एक बार कहा था: "... जब हम खुशी-खुशी परमेश्वर के क्रोध से आने वाले दुख को स्वीकार करते हैं, तो उस दुख का स्वरूप ही बदल जाता है और वह हमारे लिए एक आशीष बन जाता है।" जड़ी-बूटी वाली दवा की तरह, परमेश्वर के क्रोध से पैदा हुआ दुख भले ही स्वाद में कड़वा लगे, लेकिन यह हमारी आत्मा को बहुत फायदा पहुँचाता है। आखिरकार, हम भी दाऊद की तरह यही कहना चाहते हैं: "तूने मेरे शोक को नाच में बदल दिया है; तूने मेरे शोक के वस्त्र उतार दिए हैं और मुझे खुशी के वस्त्र पहनाए हैं" (भजन संहिता 30:11)।

चौथा, प्रभु, जो हमारा सहायक है, हमें डगमगाने नहीं देता।

भजन संहिता 30:6–7 पर विचार करें: "जब मैं खुशहाल था, तो मैंने कहा था, 'मैं कभी नहीं डगमगाऊँगा।' हे प्रभु, अपनी कृपा से तूने मेरे पहाड़ को मज़बूती से खड़ा किया है; तूने अपना मुँह छिपा लिया, और मैं घबरा गया।" परमेश्वर ने दाऊद की प्रार्थना का उत्तर दिया, उसकी मदद की और उसके राज्य को मज़बूती से स्थापित किया। "तूने पहाड़ों को मज़बूती से स्थापित किया" वाक्यांश का यही अर्थ है (पार्क युन-सन)। जिस तरह परमेश्वर ने दाऊद के राज्य को मज़बूती से स्थापित किया, उसी तरह हमारा प्रभु हममें से हर एक को, हमारे परिवारों को और कलीसिया को—जिसे उसने अपने लहू से खरीदा है—मज़बूती से स्थापित करता है, ताकि हम डगमगाएँ नहीं। हालाँकि, हमें अहंकार और घमंड से बचना चाहिए। भले ही परमेश्वर ने दाऊद के राज्य को मज़बूती से स्थापित किया था, दाऊद अहंकार का शिकार हो गया और घोषणा की, "मैं कभी नहीं डगमगाऊँगा" (पद 6; पार्क युन-सन)। आखिरकार, घमंडी दाऊद पर परमेश्वर का क्रोध भड़क उठा, जिससे उसे गहरे दुख के साथ पश्चाताप करना पड़ा। जब कोई परमेश्वर के अनुशासन के अधीन होता है, तो पश्चाताप करना आसान नहीं होता (पार्क युन-सन)। फिर भी, उसी समय डेविड ने सच्चे मन से पश्चाताप किया (भजन संहिता 51:4 देखें)। हमें "आपकी कृपा से" (30:7) वाक्यांश को याद रखना चाहिए। दूसरे शब्दों में, प्रभु हमें मज़बूती से स्थापित करते हैं और अडिग रखते हैं, यह हमारी विनम्रता या अच्छे कामों के कारण नहीं, बल्कि पूरी तरह से प्रभु की कृपा के कारण है। हमें इस सच्चाई को नहीं भूलना चाहिए।

अंत में, पाँचवीं बात यह है कि प्रभु, जो हमारे सहायक हैं, हमें उनकी स्तुति करने में समर्थ बनाते हैं।

भजन संहिता 30:12 देखें: "ताकि मेरी महिमा आपकी स्तुति गाए और चुप न रहे। हे प्रभु मेरे परमेश्वर, मैं हमेशा आपका धन्यवाद करूँगा।" आखिरकार, जो परमेश्वर हमारी मदद करते हैं, वही हमें प्रभु की स्तुति करने के लिए प्रेरित करते हैं। उद्धार के परमेश्वर, जो हमें मुसीबत से बचाते हैं, हमें चंगा करते हैं और बहाल करते हैं, हमें खुशी से भर देते हैं, और हमें स्थिर करते हैं ताकि हम किसी भी परिस्थिति में अडिग रहें। और प्रभु की कृपा पाने वाले के रूप में, हम उनकी स्तुति किए बिना नहीं रह सकते। इस प्रकार, आज के पाठ के चौथे पद में, डेविड घोषणा करते हैं: "हे प्रभु के संतों, प्रभु के गीत गाओ; उसके पवित्र नाम की स्तुति करो।" परमेश्वर की कृपा पर विचार करते हुए, डेविड चुप नहीं रह सके। अपनी मुसीबत में परमेश्वर को पुकारने और अपनी प्रार्थना का उत्तर पाने के बाद, वे अत्यधिक खुशी से भर गए और हमेशा परमेश्वर की स्तुति करने का संकल्प लिया। डेविड, जिन्होंने परमेश्वर से पूछा था कि मरे हुए लोग उनकी स्तुति कैसे कर सकते हैं या सुसमाचार (सत्य) का प्रचार

कैसे कर सकते हैं (पद 9), उन्होंने अंततः परमेश्वर की अनंत कृपा का अनुभव किया; उन्हें दया मिली और वे अपने दुश्मनों, दुख और परमेश्वर के क्रोध से बचाए गए (पद 5)। इस प्रकार, उन्होंने हमेशा परमेश्वर की स्तुति करने का संकल्प लिया। हमें उस कृपा को नहीं भूलना चाहिए जो परमेश्वर हम पर बरसाते हैं। इसलिए, हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। उनकी मदद पाने वाले और उनकी कृपा का आनंद लेने वाले लोगों के रूप में, हमें प्रभु का धन्यवाद करना चाहिए और अपनी स्तुति के माध्यम से उनकी महिमा करनी चाहिए।

जब हम क्रूस को देखते हैं, तो हमें एक आश्चर्यजनक तथ्य का पता चलता है: परमेश्वर—जो मेरे सहायक हैं—उन्होंने अपने एकलौते पुत्र यीशु की प्रार्थना का उत्तर नहीं दिया, न ही वे उनकी मदद के लिए आए, तब भी जब यीशु ने क्रूस पर परमेश्वर का क्रोध सहते हुए और मरते हुए पुकारा, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया?" पिता परमेश्वर ने मदद के लिए कोई कदम नहीं उठाया, जबकि उन्होंने अपने एकलौते बेटे को मृतकों के लोक में जाते हुए देखा। पिता परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया? ऐसा इसलिए किया गया ताकि आपको और मुझे हमेशा की मौत से बचाया जा सके। पिता परमेश्वर ने यीशु को क्रूस पर मरने दिया ताकि हमारे साथ उनका रिश्ता फिर से जुड़ सके। उन्होंने अपने एकलौते बेटे, यीशु मसीह की मदद नहीं की, ताकि वे हमें ईश्वरीय आनंद दे सकें और हमें मज़बूती से स्थापित कर सकें। आखिरकार, परमेश्वर... वे उनसे अपनी स्तुति करवाते हैं। इसलिए, हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जो प्रभु की महिमा करे, जो हमारे सहायक हैं।

परमेश्वर पर भरोसा रखें!

[भजन संहिता 31:1-8]

आइए हम सब खुद से यह सवाल पूछें: "क्या मैं सचमुच हर समय प्रभु पर भरोसा करता हूँ, या शायद मैं झूठे देवताओं या बेकार चीज़ों पर भरोसा कर रहा हूँ?" इसका जवाब पाने के लिए, हमें पहले यह सोचना होगा कि हम किस चीज़ पर भरोसा करते हैं। "भरोसा करने का मतलब है विश्वास करना" (To Rely Is to Believe) नाम के एक लेख में, हमें कैनन बैटर्सबी—जो चर्च ऑफ़ इंग्लैंड के एक इवेंजेलिकल पादरी थे—से मिली एक सीख के बारे में पता चलता है। उन्होंने यह सीख तब पाई जब वे उस शाही अधिकारी के बारे में एक उपदेश सुन रहे थे, जो अपने बीमार बेटे को ठीक करने के लिए यीशु से विनती करने कफरनहूम से काना गया था। सीख यह थी: अधिकारी ने यीशु के शब्दों पर—"जा, तेरा बेटा जी उठेगा" (यूहन्ना 4:50)—ठीक वैसे ही विश्वास किया जैसे वे कहे गए थे, और उसका बेटा पूरी तरह ठीक हो गया। यह दिखाता है कि विश्वास का मतलब है यह पक्का यकीन रखना और कहना कि "प्रभु का वचन ही काफ़ी है," तब भी जब दुनिया में सहारा लेने के लिए कुछ न हो, और परमेश्वर के सुरक्षा के वादे पर भरोसा हो। विश्वास और भरोसे का असल मतलब यही है। मैंने खुद से पूछा: "क्या मत्ती 16:18 में प्रभु ने हमारी कलीसिया से जो वादा किया था—'मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा'—क्या वह सचमुच मेरे लिए काफ़ी है?" या, "क्या मैं अक्सर इस वादे के बजाय खुद पर और/या दूसरों पर भरोसा करता हूँ?" अगर मैं प्रभु के वादे पर पूरे विश्वास के साथ अपनी सेवा करता, तो मैं निश्चित रूप से किसी व्यक्ति या स्थिति से नहीं डरता, और न ही किसी चीज़ से परेशान या निराश होता। जो आत्मा विश्वास करती है और जिसे पक्का यकीन है कि प्रभु का वादा काफ़ी है, वह पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा करती है। जैसा कि भजन 342 ("जब आप मुश्किलों का सामना करते हैं") के बोल बताते हैं, जैसे-जैसे साल बीतते हैं, हमें विश्वास का जीवन जीना चाहिए और यह मानना चाहिए—चाहे हमें किसी भी चीज़ का सामना करना पड़े—कि प्रभु ही एकमात्र ऐसे हैं जिन पर हम भरोसा कर सकते हैं।

आज के बाइबल पाठ, भजन संहिता 31:6 में, हम भजनकार दाऊद को यह संकल्प लेते हुए देखते हैं: "मैं उनसे नफ़रत करता हूँ जो बेकार के झूठ को मानते हैं; मैं प्रभु पर भरोसा करता हूँ।" इस आयत और "परमेश्वर पर भरोसा रखें!" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन दो बातों पर विचार करना चाहता हूँ जो परमेश्वर पर भरोसा करने वाले लोग करते हैं; मेरी प्रार्थना है कि हम भी ऐसे विश्वासी बनें जो पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा करें, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया था। सबसे पहले, जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वे प्रभु की शरण लेते हैं।

भजन संहिता 31:1 को देखें: "हे प्रभु, मैंने तुझमें शरण ली है; मुझे कभी शर्मिंदा न होने दे..." जब दाऊद पर मुसीबत आई, तो वह परमेश्वर की शरण में गया। परमेश्वर की शरण लेने का मतलब था कि दाऊद ने परमेश्वर को अपना आश्रय बनाया और उन्हें पुकारा। परमेश्वर की शरण में जाकर, दाऊद ने उनसे प्रार्थना की। तो, दाऊद की विनती क्या थी—एक ऐसी आत्मा की विनती जिसने प्रभु की शरण ली थी? हम तीन बातों पर विचार कर सकते हैं:

(1) दाऊद की पहली विनती थी, "मुझे छुड़ा।"

भजन संहिता 31:1 के बाद वाले हिस्से को फिर से देखें: "...अपनी धार्मिकता में मुझे छुड़ा।" दाऊद ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसे उस संकट से बचाएं जिसका वह सामना कर रहा था। उस संकट में शक्तिशाली और चालाक दुश्मन शामिल थे जो दाऊद को फंसाने की कोशिश कर रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे शिकारी किसी जानवर को पकड़ने के लिए जाल बिछाते हैं (पद 4)। इस संकट में, दाऊद ने परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखा और छुटकारे के लिए विनती की—अपने आश्रयदाता प्रभु से कहा कि वे उसे उस जाल से बचाएं जो दुश्मनों ने चुपके से बिछाया था और उसे छुटकारा दिलाएं (पद 4)। दिलचस्प बात यह है कि दाऊद ने अपनी धार्मिकता के आधार पर छुटकारे की मांग नहीं की, बल्कि "प्रभु की धार्मिकता" के आधार पर की (पद 1)। उसे प्रभु के उस धार्मिक कार्य से छुटकारे की उम्मीद थी जिसके द्वारा वे वफादारी से अपने चुने हुए व्यक्ति की रक्षा करते हैं (कैल्विन)। यहाँ कीमती सीख यह है कि हमें अपनी धार्मिकता के आधार पर छुटकारे के लिए प्रार्थना नहीं करनी चाहिए; इसके बजाय, हमें केवल यीशु मसीह की धार्मिकता पर भरोसा करके परमेश्वर पिता से बचाव के लिए विनती करनी चाहिए।

(2) दाऊद की दूसरी विनती थी, "मेरे लिए एक मजबूत चट्टान और बचाने वाला गढ़ बन।"

भजन संहिता 31:2 पर विचार करें: "मेरी ओर कान लगा, मुझे जल्दी से बचा; मेरे लिए एक मजबूत चट्टान और बचाने वाला गढ़ बन।" यह परमेश्वर की सुरक्षा पाने की प्रार्थना है। यह प्रार्थना परमेश्वर की सर्वशक्तिमानता और उनकी अटूट शक्ति पर भरोसा करके की गई है। यहाँ पद 2 में उल्लिखित "मजबूत चट्टान" का अर्थ है एक ऐसी चट्टान पर बना किला जो शरण की जगह देता है, जबकि "गढ़" का अर्थ है पहाड़ के ऊपर बना आश्रय। ये शब्द परमेश्वर के लिए रूपक के रूप में काम करते हैं, जो रक्षा करने में समर्थ हैं (पार्क युन-सन)। बहुत ज़्यादा तकलीफ़ के बीच, दाऊद ने परमेश्वर की शरण ली और यीशु की धार्मिकता के आधार पर छुटकारा पाने और परमेश्वर की सुरक्षा के लिए प्रार्थना की। प्रभु ही हमारी शरण की चट्टान हैं; वही हमें किसी भी मुश्किल या मुसीबत से बचा सकते हैं।

(3) दाऊद की तीसरी विनती थी, "मेरी अगुवाई और मार्गदर्शन करें।"

भजन संहिता 31:3 पर विचार करें: "क्योंकि तू मेरी चट्टान और मेरा गढ़ है; इसलिए, अपने नाम की खातिर, मेरी अगुवाई और मार्गदर्शन कर।" दाऊद ने प्रभु से—जो उसकी चट्टान और गढ़ थे—अपनी अगुवाई और मार्गदर्शन करने की विनती की। दाऊद ने किसकी खातिर ऐसी प्रार्थना की? उसने "परमेश्वर के नाम की खातिर" उनकी अगुवाई और मार्गदर्शन माँगा। प्रभु की धार्मिकता पर भरोसा करते हुए और उद्धार की कृपा माँगते हुए, दाऊद ने इस मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना की क्योंकि वाचा निभाने वाले परमेश्वर को अपने वादे पूरे करने और अपनी वफ़ादारी दिखानी थी (पद 3)। हमें भी प्रभु की अगुवाई और मार्गदर्शन माँगना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया था। क्यों? क्योंकि प्रभु की अगुवाई के बिना, हम खोई हुई भेड़ों की तरह भटक जाएँगे और निश्चित रूप से अपने दुश्मनों के मज़ाक का पात्र बन जाएँगे (भजन 82)।

दाऊद, जिसने परमेश्वर पर भरोसा किया और उन्हें अपनी शरण बनाया; ऊपर बताई गई तीन प्रार्थनाओं को करते समय, उसने परमेश्वर से यह भी विनती की कि उसे हमेशा की शर्मिंदगी न उठानी पड़े (पद 1)। दूसरे शब्दों में, दाऊद ने प्रार्थना की कि उसे विफलता के कारण बदनामी का सामना न करना पड़े (पार्क युन-सन)। यह दाऊद का भरोसा दिखाता है कि जब वह परमेश्वर की शरण लेगा तो प्रभु उसकी मदद करेंगे। परमेश्वर की

मदद के बिना, विफलता निश्चित होगी, और उसे देखने वाले उसका मज़ाक उड़ाएँगे (पार्क युन-सन)। इसीलिए दाऊद ने परमेश्वर से यह प्रार्थना की।

आखिर में, दूसरी बात यह है कि जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वे अपनी आत्मा को प्रभु को सौंप देते हैं।

भजन संहिता 31:5 देखें: "मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ; हे प्रभु, सत्य के परमेश्वर, तूने मुझे छुड़ाया है।" इन शब्दों का मतलब है कि दाऊद ने अपने जीवन और मृत्यु का मामला पूरी तरह से परमेश्वर को सौंप दिया। दाऊद ने अपनी आत्मा प्रभु को क्यों सौंपी? इसके दो कारण हैं:

(1) क्योंकि प्रभु सत्य के परमेश्वर हैं। बहुत ज़्यादा तकलीफ़ के बीच भी, दाऊद ने अपनी आत्मा—और इस तरह अपने जीवन और मृत्यु के मामले—को उस परमेश्वर को सौंप दिया जिसने पहले भी दया करके उसे बचाया था, क्योंकि उसे विश्वास था कि प्रभु ही सत्य का परमेश्वर है। दूसरे शब्दों में, दाऊद अपना जीवन और मृत्यु पूरी तरह से प्रभु को इसलिए सौंप पाया क्योंकि वह जानता था कि प्रभु ही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है। उस सच्चे परमेश्वर को जानने और उसका अनुभव करने के बाद—जो खुद को प्रकट करता है और अपने वादों को वफ़ादारी से पूरा करता है—दाऊद ने घोर संकट के समय अपना जीवन और मृत्यु सत्य के इसी परमेश्वर को सौंप दिया। अतीत में सत्य के इस परमेश्वर की बचाने वाली कृपा का अनुभव कर लेने के कारण, उसने अपनी वर्तमान तकलीफ़ के बीच यह संकल्प किया: "मैं उनसे नफ़रत करता हूँ जो बेकार मूर्तियों की पूजा करते हैं; मैं प्रभु पर भरोसा रखता हूँ" (पद 6)। दाऊद मूर्ति-पूजकों के पापपूर्ण कामों से घृणा करता था।

(2) डेविड ने अपनी आत्मा प्रभु को इसलिए सौंपी क्योंकि वह प्रभु की दया और प्रेम में खुश होता था और आनंद मनाता था।

भजन संहिता 31:7 को देखें: "मैं तेरी दया में खुश होऊँगा और आनंद मनाऊँगा, क्योंकि तूने मेरे दुख को देखा है; तूने मेरी आत्मा की परेशानियों को जाना है।" अपनी मौजूदा तकलीफों के बीच भी, डेविड ने अतीत में सच्चे परमेश्वर की वफादार और बचाने वाली कृपा को याद करके और प्रभु की दया का फिर से अनुभव करके खुशी और आनंद मनाया। क्या यह सचमुच अद्भुत नहीं है? यह बात कि कोई व्यक्ति बहुत ज़्यादा तकलीफ सहते

हुए भी प्रभु की दया में खुश हो सकता है और आनंद मना सकता है... असल में यही तो विश्वास है। खास तौर पर, उसके प्रभु की दया में खुश होने और आनंद मनाने का कारण यह था कि प्रभु ने उसके दुख को देखा था और मुसीबत के समय उसे संभाला था (पद 7b), और उसे उसके दुश्मनों के हाथों में नहीं छोड़ा था, बल्कि उसे एक खुली जगह—आज़ादी वाली जगह—में पहुँचाया था (पद 8)।

भजन संहिता 31:5 का पहला हिस्सा देखें: "मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ..." यह हिस्सा यीशु के उन शब्दों की याद दिलाता है जो उन्होंने क्रूस पर कहे थे, और जो लूका 23:46 में लिखे हैं: "...हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ..." जब इन दोनों पदों की तुलना की जाती है, तो एक खास बात सामने आती है: जब यीशु, जो परमेश्वर के इकलौते बेटे थे, ने जीवन और मृत्यु का मामला पूरी तरह से परमेश्वर को सौंपा, तो परमेश्वर ने उन्हें क्रूस पर मौत से नहीं बचाया। जबकि परमेश्वर ने डेविड की प्रार्थना सुनी और उसे बचाया जब उसने अपना जीवन और मृत्यु उन्हें सौंपी, उन्होंने अपने बेटे यीशु को क्रूस पर मौत से नहीं बचाया। इसका क्या कारण है? इसका कारण यही है कि आपको और मुझे अनंत जीवन दिया जा सके। जो लोग इस उद्धार की कृपा को याद रखते हैं और भूलते नहीं हैं—और साथ ही सच्चे परमेश्वर पर पूरी तरह भरोसा करते हैं—उन्हें उनकी बचाने वाली कृपा, सुरक्षा और मार्गदर्शन मिलता है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि ऐसी आशीषें हमें भी मिलें।

“भले ही न हो” वाला विश्वास

[भजन संहिता 31:9-14]

दानिय्येल की किताब में हमें दानिय्येल के तीन दोस्तों—शद्रक, मेशक और अबेद्रगो—की कहानी मिलती है। जब राजा नबूकदनेस्सर ने उन्हें अपनी बनाई सोने की मूर्ति के सामने झुकने से इनकार करने पर आग की भट्टी में फेंकने की धमकी दी, तो उन्होंने जवाब दिया: “... हे नबूकदनेस्सर, हमें इस मामले में अपना बचाव करने की ज़रूरत नहीं है। अगर हमें आग की भट्टी में फेंक दिया जाता है, तो जिस परमेश्वर की हम सेवा करते हैं, वह हमें उससे बचा सकता है, और वह हमें आपके हाथों से बचाएगा। लेकिन अगर वह ऐसा नहीं भी करता है, तो भी हम चाहते हैं कि आप जानें, हे महाराज, कि हम आपके देवताओं की सेवा नहीं करेंगे और न ही उस सोने की मूर्ति की पूजा करेंगे जिसे आपने स्थापित किया है” (दानिय्येल 3:16-18)। इस जवाब पर विचार करते हुए, मैं दानिय्येल के तीन दोस्तों के विश्वास को “भले ही न हो” वाला विश्वास कहना चाहूँगा। तो फिर, “भले ही न हो” वाला विश्वास क्या है? हम इसे तीन तरह से समझ सकते हैं: (1) “भले ही न हो” वाला विश्वास वह विश्वास है जो परमेश्वर पर निर्भर करता है (3:28)। (2) “भले ही न हो” वाला विश्वास वह विश्वास है जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता है; दानिय्येल के तीन दोस्तों ने दस आज्ञाओं में से पहली और दूसरी आज्ञा का पालन किया। (3) “भले ही न हो” वाला विश्वास वह विश्वास है जो परमेश्वर की महिमा के लिए बलिदान देता है। हालाँकि दानिय्येल के तीन दोस्तों को उद्धार का भरोसा था, फिर भी उन्होंने ठान लिया कि वे “[राजा के] देवताओं की सेवा नहीं करेंगे और न ही [राजा द्वारा] स्थापित सोने की मूर्ति की पूजा करेंगे,” भले ही परमेश्वर उन्हें न बचाए। वे प्रभु के वचन का पालन करते हुए अपनी जान देने को तैयार थे, भले ही उनकी मर्ज़ी में उनका बचाव शामिल न हो।

भजन संहिता 31:14 में, हमें एक ऐसा विश्वास मिलता है जो “फिर भी” कहता है: “लेकिन हे प्रभु, मैं आप पर भरोसा करता हूँ; मैं कहता हूँ, ‘आप मेरे परमेश्वर हैं।’” भजनकार दाऊद का विश्वास ऐसा था जो हालात की परवाह किए बिना पूरी तरह से प्रभु पर निर्भर था। आज जब मैं दाऊद के “फिर भी” वाले विश्वास पर विचार करता हूँ, तो मेरी इच्छा है कि मैं उसका अनुकरण करूँ। मैं उन पाँच खास स्थितियों पर विचार करना चाहता हूँ जिनमें डेविड ने प्रभु पर भरोसा किया और उन सीखों को अपने जीवन में लागू करना चाहता हूँ।

पहला, "फिर भी" वाला विश्वास तब भी प्रभु पर भरोसा करता है जब हम दुख और परेशानी में होते हैं।

भजन संहिता 31:9 को देखें: "हे प्रभु, मुझ पर दया कर, क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ; दुख के कारण मेरी आँखें कमज़ोर हो गई हैं, और शोक के कारण मेरी आत्मा और शरीर भी।" आयत 9 से शुरू करते हुए, डेविड उस बहुत दर्दनाक स्थिति का वर्णन करता है जिसका वह सामना कर रहा है, और वह "अपनी मुसीबत" और "दुख" की बात करके शुरुआत करता है। दूसरे शब्दों में, डेविड एक ऐसे व्यक्तिगत दुख और पीड़ा से जूझ रहा था जिसे केवल वही महसूस कर रहा था। इसका कारण क्या था? उसके "बहुत से दुश्मन" (आयत 11)। फिर भी, यह केवल बाहरी कारण था; गहरे, आंतरिक स्तर पर, डेविड अपने ही पाप के परिणामस्वरूप पीड़ित हो रहा था (आयत 10)। जैसे एक धर्मी और प्रेम करने वाला परमेश्वर अपने लोगों को तब अनुशासित करता है जब वे पाप करने के बाद पश्चाताप नहीं करते, वैसे ही डेविड अपने पाप के कारण परेशान था और परमेश्वर के अनुशासन के परिणामस्वरूप अपने दुश्मनों के हाथों पीड़ित हो रहा था। क्या हमें एहसास होता है, जब हम मुसीबत और दर्द में होते हैं, कि क्या यह हमारी अपनी गलतियों से उपजा है? या क्या हम, अपनी अज्ञानता में, दूसरों और अपनी परिस्थितियों को दोष देकर परमेश्वर के विरुद्ध और भी बड़ा पाप करते हैं? डेविड अपने पाप से परेशान था, और इस परेशानी के कारण उसकी आँखें, उसकी आत्मा और उसका शरीर कमज़ोर हो रहे थे (आयत 9)। दूसरे शब्दों में, वह अपनी पीड़ा के कारण शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से कमज़ोर हो रहा था। फिर भी, इस पीड़ा और परेशानी के बीच, डेविड ने प्रभु पर भरोसा किया और परमेश्वर की दया माँगी: "मुझ पर दया कर" (आयत 9)।

ऐसे दर्द हैं जिन्हें हममें से हर कोई व्यक्तिगत रूप से महसूस करता है और अनुभव करता है—यह "मेरा दर्द" है, "हमारा दर्द" नहीं। यह "मेरा दर्द" हमें परेशानी में डालता है, और वह परेशानी अंततः हमारे शारीरिक और

आध्यात्मिक पतन का कारण बन सकती है। तो फिर, जब हम खुद को ऐसी स्थिति में पाते हैं तो हमें प्रभु पर और अधिक गहराई से कैसे भरोसा करना चाहिए? यशायाह 38:17 के शब्द—"देखो, मेरी अपनी शांति के लिए ही मुझे बहुत कड़वाहट का सामना करना पड़ा..."—हमें दुख के मुद्दे पर एक सुसंगत बाइबिल-संबंधी दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। वह दृष्टिकोण बस इतना है: दुख हमारे लिए फायदेमंद है। राजा हिजकिय्याह के लिए, दुख सहने का फ़ायदा यह था कि इससे उन्हें परमेश्वर के प्यार को महसूस करने का मौका मिला; यह परमेश्वर से छुटकारा पाने की कृपा और "उनके सभी पापों" की माफ़ी पाने का एक अवसर बन गया (38:17)। "दुख" के बारे में बाइबल का नज़रिया 2 कुरिन्थियों 7:10 में बताया गया है: "क्योंकि परमेश्वर के अनुसार दुख उठाने से मन-फिराव होता है जो उद्धार की ओर ले जाता है, और इसका कोई पछतावा नहीं होता; लेकिन दुनिया का दुख मौत लाता है।" जब हम कई मुश्किल हालात का सामना करते हैं, तो हमारा दुख परमेश्वर के अनुसार होना चाहिए, न कि दुनिया जैसा दुख। दूसरे शब्दों में, अपने दुख के बीच हमें मन-फिराना चाहिए। अपनी कमज़ोरी में भी—चाहे वह आध्यात्मिक हो या शारीरिक—हमें परमेश्वर के सामने मन-फिराना चाहिए।

दूसरी बात, "फिर भी" वाला विश्वास प्रभु पर तब भी भरोसा रखता है जब हम दुख और कराहट के बीच होते हैं।

भजन संहिता 31:10 पर गौर करें: "क्योंकि मेरा जीवन दुख में बीतता है, और मेरे साल आहें भरने में; मेरे पापों के कारण मेरी ताकत खत्म हो जाती है, और मेरी हड्डियाँ गल जाती हैं।" यहाँ दाऊद के जिस "दुख" और "आह" का ज़िक्र है, वह फ़ायदेमंद था। क्योंकि दाऊद ने अपने पापों (खासकर, दुश्मनों द्वारा सताए जाने) की वजह से पैदा हुए दर्दनाक हालात में परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख और शोक मनाया, इसलिए यह दुख उनके लिए फ़ायदेमंद साबित हुआ (पद 10)। आखिरकार, इस दुख का नतीजा यह हुआ कि दाऊद ने कराहते हुए अपने पापों को कबूल किया (32:3)। जब हम मन-फिराने में नाकाम रहते हैं, तो प्रभु का हाथ दिन-रात हम पर भारी पड़ता है (पद 4)। इसलिए, जब हम दर्द और परेशानी में दुख और आहें भरते हैं, तब भी हमें प्रभु की दया पर भरोसा करना चाहिए और अपने सभी पाप उन्हें सौंप देने चाहिए।

हमें भजन संहिता 30:11 के उन शब्दों को भी याद रखना चाहिए, जिन पर हमने "दुख" के बारे में पहले ही मनन किया है: "तूने मेरे शोक को नाच में बदल दिया है..."। जब हम दुख में कराह रहे हों, तब भी हमें प्रभु पर भरोसा रखना चाहिए, जो हमारे दुख को नाच (खुशी) में बदल देंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रभु का "क्रोध कुछ ही पल

के लिए होता है, लेकिन उनकी कृपा जीवन भर रहती है" (पद 5)। सचमुच, जो लोग प्रभु पर भरोसा रखते हैं, उनके लिए भले ही रात भर रोना रहे, लेकिन सुबह खुशी आती है (पद 5)। तीसरी बात, "फिर भी" वाला विश्वास तब भी प्रभु पर भरोसा रखता है जब हमें अपमान या बुरा-भला सुनना पड़ता है।

भजन संहिता 31:11 को देखिए: "मेरे सभी दुश्मनों के कारण, मैं अपने पड़ोसियों की नज़रों में पूरी तरह घृणित हो गया हूँ और अपने सबसे करीबी दोस्तों के लिए डर का कारण बन गया हूँ—जो लोग मुझे सड़क पर देखते हैं, वे मुझसे दूर भागते हैं।" दाऊद से उसके दुश्मन नफ़रत करते थे और उसका विरोध करते थे, और इसकी वजह उसकी धार्मिकता थी (पार्क युन-सन)। इस बीच, दाऊद अपने पड़ोसियों और दोस्तों से भी अलग-थलग पड़ गया था; न केवल उसके दुश्मन, बल्कि उसके पड़ोसी—और यहाँ तक कि उसके दोस्त भी—उससे मुँह मोड़ चुके थे। सड़क पर आने-जाने वाले लोग भी उससे बचकर निकलते थे। दाऊद पूरी तरह अकेला रह गया था। ऐसी स्थिति में, उसने केवल प्रभु पर भरोसा किया। जब समाज ने उसे लगभग बहिष्कृत कर दिया था, तब भी दाऊद केवल प्रभु पर निर्भर था (भजन संहिता 25:16)।

अकेले होने से डरना हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। दूसरे शब्दों में कहें तो, हमारी यह स्वाभाविक इच्छा होती है कि दूसरे हमें पहचानें और हमारी तारीफ़ करें। आख़िरकार, कोई भी लोगों से अलग-थलग नहीं होना चाहता। कौन चाहेगा कि आस-पास के लोग उससे किनारा कर लें? फिर भी, जब हम आज के अंश में दाऊद को देखते हैं—जो पूरी तरह अलग-थलग पड़ गया था—तो मेरा मानना है कि कभी-कभी हमें भी कुछ हद तक अकेलेपन या अलगाव का अनुभव करने की ज़रूरत होती है। इसका कारण यह है कि हमें अपने विश्वास को परखने की ज़रूरत है कि क्या हम भी दाऊद की तरह, अकेलेपन या अलगाव वाली स्थितियों का सामना करते समय केवल प्रभु पर भरोसा करते हैं। हम अक्सर दूसरों की नज़र में रखकर अपना विश्वास जीते हैं; हमारा आध्यात्मिक जीवन परमेश्वर के बजाय लोगों पर केंद्रित होता है। हमें डॉ. पार्क युन-सन की बातों पर ध्यान देना चाहिए: "... विश्वासियों को इस दुनिया के लोगों की तारीफ़ या बुराई को बहुत ज़्यादा महत्व देने की ज़रूरत नहीं है। विश्वासियों को केवल परमेश्वर की तारीफ़ और फ़ैसले को महत्व देना चाहिए और उसी मानक के अनुसार जीना चाहिए।"

चौथा, "फिर भी" वाला विश्वास तब भी प्रभु पर भरोसा करता है जब हमें भुला दिया गया हो।

भजन संहिता 31:12 को देखें: "मैं मरे हुए व्यक्ति की तरह भुला दिया गया हूँ; मैं टूटे हुए बर्तन जैसा हो गया हूँ।" दाऊद को इंसानी समाज ने अलग-थलग कर दिया था; उसे "टूटे हुए बर्तन" की तरह फेंक दिया गया था। यहाँ, "टूटा हुआ बर्तन" मिट्टी के टूटे हुए टुकड़े को दर्शाता है; दूसरे शब्दों में, दाऊद को खुद के बेकार होने का एहसास होता था—जैसे कोई टूटा हुआ घड़ा हो। वह सामाजिक रूप से पूरी तरह बेकार हो गया था। ऐसे व्यक्ति का वर्णन भजन संहिता 31:12 में एक ऐसे व्यक्ति के रूप में किया गया है जिसे "भुला दिया गया" हो। फिर भी, उन पलों में भी, दाऊद ने केवल प्रभु पर भरोसा किया। जब सबने उससे मुँह मोड़ लिया और वह एक भुला दिया गया इंसान बन गया, तब भी दाऊद केवल प्रभु पर निर्भर रहा।

हम कितनी बार यह कहने के लिए अलग-अलग कारण गिनाते हैं कि "मैं बेकार हूँ—घर पर, समाज में, चर्च में, वगैरह"? हम कितनी बार सोचते और कहते हैं, "लोगों ने अब मुझे भुला दिया है। मेरा अच्छा समय बीत चुका है, इसलिए मुझे बस जल्द ही मर जाना चाहिए"? व्यक्तिगत रूप से, जब मैं हमारे चर्च की एक खास सेविका (डीकनेस) के बारे में सोचता हूँ जो मरने से पहले डिमेंशिया से पीड़ित थीं—जिन्होंने अपनी याददाश्त खो दी थी और एक तरह से समाज और हमसे भी दूर हो गई थीं—तो मुझे यकीन हो जाता है कि परमेश्वर ने उन्हें नहीं भुलाया था, बल्कि उन्हें अच्छी तरह याद रखा था। हमें इस पक्के विश्वास को मजबूती से थामे रखना चाहिए। हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि भले ही सब हमसे मुँह मोड़ लें, हमें अलग-थलग कर दें और समाज हमें भुला दे, लेकिन हमारा प्रभु निश्चित रूप से हमें नहीं भुलाता। आइए हम यशायाह 49:15 के शब्दों को मजबूती से थामे रखें: "क्या कोई स्त्री अपने दूध पीते बच्चे को भुला सकती है, और अपनी कोख से जन्मे बेटे पर दया नहीं कर सकती? भले ही वे भुला दें, मैं तुम्हें नहीं भुलाऊँगा" (भजन संहिता 27:10 भी देखें)।

पाँचवाँ और आखिरी, "फिर भी" वाला विश्वास तब भी प्रभु पर भरोसा करता है जब हम डर की चपेट में हों।

भजन संहिता 31:13 को देखें: "क्योंकि मैं बहुतों की बदनामी सुनता हूँ; चारों ओर डर का माहौल है; जब वे मेरे खिलाफ सलाह करते हैं, तो वे मेरी जान लेने की साजिश रचते हैं।" दाऊद जिस सताहट का सामना कर रहा था, उसमें उसके दुश्मन बदनामी के ज़रिए उसकी इज़्ज़त खराब करने, धमकियों से उसे डराने और उसे मारने

की साजिश रचने की कोशिश कर रहे थे (पार्क युन-सन)। फिर भी, इतने डरावने हालात में भी, दाऊद ने सिर्फ़ प्रभु पर भरोसा किया।

दाऊद की तरह, जब हम डर से घिरे हों तो हमें भी सिर्फ़ प्रभु पर भरोसा करना चाहिए। ऐसे समय में, आइए हम सब यशायाह 41:10 की बातों को मज़बूती से थामे रहें! "डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ; घबराओ मत, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मैं तुम्हें मज़बूत करूँगा, हाँ, मैं तुम्हारी मदद करूँगा, मैं अपने धर्मी दाहिने हाथ से तुम्हें थामे रहूँगा।"

इस "फिर भी" वाले विश्वास के साथ—यानी हालात चाहे कैसे भी हों, सिर्फ़ प्रभु पर भरोसा करने का पक्का इरादा—दाऊद आखिर में यह कहता है: "तू मेरा परमेश्वर है" (भजन संहिता 31:14)। दर्द और चिंता, दुख और मातम के बीच भी—यहाँ तक कि जब हमें अपमान सहना पड़े, भुला दिया जाए, या हम डर में जी रहे हों—तब भी परमेश्वर परमेश्वर ही रहता है। परमेश्वर की सर्वोच्चता को मानते हुए, और यह भरोसा रखते हुए कि हम उसकी इच्छा के दायरे में हैं (भले ही हम उसे पूरी तरह न समझें), हमें विश्वास के साथ यह कहना चाहिए, "प्रभु मेरा परमेश्वर है।" यही "फिर भी" वाले विश्वास का सार है। मेरी प्रार्थना है कि आप और मैं ऐसे लोग बनें जिनमें यह "फिर भी" वाला विश्वास हो।

जो परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं

[भजन संहिता 31:15-24]

क्या आप परमेश्वर पर भरोसा करते हैं? भरोसे का रास्ता कैसा होता है? ब्रेनन मैनिंग इसे इस तरह बताते हैं: “भरोसे का रास्ता किसी ऐसे भविष्य में कदम रखना नहीं है जो पूरी तरह से योजनाबद्ध, तय और स्पष्ट रूप से नक्शे की तरह बना हो; बल्कि, यह एक अस्पष्ट, अनिश्चित और अनजान दुनिया में कदम रखने जैसा है। अगला कदम तभी पता चलता है जब हम वर्तमान पल की मुश्किलों या सुनसान हालात में परमेश्वर के काम को पहचानते हैं। यह एक तीर्थयात्री का जीवन है जो एक स्पष्ट, निश्चित और सुरक्षित दुनिया को छोड़कर अनजान दुनिया में जाता है—बिना किसी तार्किक स्पष्टीकरण के जो फैसलों को सही ठहरा सके या भविष्य की गारंटी दे सके। यही भरोसे की असली सच्चाई है। हम ऐसा क्यों करते हैं? क्योंकि परमेश्वर ने आगे बढ़ने का संकेत दिया है और अपनी उपस्थिति और अपने वादे दिए हैं” (इंटरनेट)। बेशक, ऐसे दिन भी रहे होंगे जब अनजान दुनिया की यात्रा में तीर्थयात्री के मन में चिंता और अनिश्चितता हावी रही होगी। फिर भी, ऐसे समय भी आए जब एक कोमल आवाज़ ने हमें भरोसा दिलाया: “डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ...” (यशायाह 41:10)। इस बात से ज़्यादा भरोसा दिलाने वाली और क्या बात हो सकती है कि परमेश्वर हमारे साथ है? जीवन और मृत्यु के दोराहे पर भी, अय्यूब ने कहा, “भले ही वह मुझे मार डाले, फिर भी मैं उस पर भरोसा रखूँगा” (अय्यूब 13:15, KJV)। भरोसे का कितना अद्भुत स्तर! अय्यूब को देखकर, जिसने अपनी जान से भी ज़्यादा परमेश्वर पर भरोसा किया, हमें खुद से पूछना चाहिए कि क्या हम सचमुच परमेश्वर पर वैसा ही भरोसा करते हैं जैसा अय्यूब ने किया था।

क्या आप अय्यूब की तरह स्वीकारोक्ति कर रहे हैं? क्या आप मानते हैं, जैसा कि ब्रेनन मैनिंग ने कहा, कि हमारे साथ परमेश्वर की उपस्थिति की सच्चाई से ज़्यादा कोई चीज़ भरोसा नहीं जगाती? आज, भजन संहिता 31:15–

24 पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं "जो परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं" शीर्षक पर विचार करना चाहूँगा—खासकर, ऐसे लोग कैसा व्यवहार करते हैं—तीन बिंदुओं पर विचार करके और उन्हें अपने जीवन में लागू करके।

पहला, जो लोग परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, वे जानते हैं कि उनके जीवन में होने वाली हर घटना प्रभु के हाथों में है।

भजन संहिता 31:15 को देखें: "मेरा समय तेरे हाथ में है; मुझे मेरे दुश्मनों के हाथ से और उन लोगों से बचा जो मुझे सताते हैं।" यहाँ, "मेरे समय" वाक्यांश का अर्थ है किसी व्यक्ति के पूरे जीवन की घटनाएँ और परिस्थितियाँ (पार्क युन-सुन)। इसका मतलब है कि भजनकार दाऊद के जीवन की हर घटना, परिस्थिति और बदलाव प्रभु के हाथों में था। दाऊद इस बात को जानता था और उस पर विश्वास करता था। "फिर भी" कहने वाले विश्वास के साथ, दाऊद हर स्थिति में पूरी तरह से प्रभु पर निर्भर था। उसे पक्का यकीन था कि सब कुछ प्रभु के नियंत्रण में है। इसलिए, क्योंकि उसे परमेश्वर पर भरोसा था, दाऊद अपने जीवन में कुछ भी होने पर भी प्रभु की दया और प्रेम पर निर्भर रहा। भजन संहिता 31:16 को देखें: "अपने सेवक पर अपना मुख चमका; अपनी दया के कारण मुझे बचा।" दाऊद अपने दुश्मनों के सताए जाने का सामना कर रहा था (पद 15)। ये दुश्मन बुरे थे (पद 17); अपने घमंड में, उन्होंने बदतमीज़ी से कठोर शब्दों के साथ दाऊद पर हमला किया और झूठ बोला (पद 18)। ऐसी स्थिति में भी, दाऊद—जिसे परमेश्वर पर भरोसा था—प्रभु का मुख देखने के लिए तरसता था। उसने प्रार्थना की कि प्रभु इस दुख के समय में उस पर अपना मुख चमकाएँ क्योंकि, मुश्किल के पलों में, किसी को ऐसा लग सकता है कि प्रभु ने अपना मुख छिपा लिया है (पद 16)। ऐसा करते हुए, वह प्रभु की दया और प्रेम पर निर्भर था। क्या यह अद्भुत नहीं है? उसे दुश्मनों के सताए जाने के बीच भी परमेश्वर की दया और प्रेम पर निर्भर देखना? जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वे प्रभु की दया और प्रेम पर निर्भर रहते हैं। और क्योंकि जो लोग प्रभु की दया और प्रेम पर निर्भर रहते हैं, वे जानते हैं कि प्रभु का हाथ "दुश्मन और सताने वाले के हाथ" से कहीं बढ़कर है, इसलिए उन्हें यह भरोसा होता है कि प्रभु निश्चित रूप से उन्हें छुड़ाएँगे और बचाएँगे (पद 15)। इस भरोसे के साथ प्रार्थना करते हुए, दाऊद को यह भी यकीन था कि प्रभु उसे शर्मिंदा नहीं करेंगे बल्कि बुरे लोगों को शर्मिंदा करेंगे (पद 17)। परमेश्वर कभी भी उस विश्वासी को शर्मिंदा कैसे कर सकते हैं जो उन पर भरोसा करता है? बल्कि, प्रभु संतों के दुश्मनों को शर्मिंदा करते हैं; वह उनकी उम्मीदों को नाकाम कर देते हैं, जिससे वे निराश और अपमानित महसूस करते हैं (पार्क युन-सुन)। दाऊद को इस बात का पक्का यकीन था।

हमें भी ऐसे ही भरोसे के साथ जीना चाहिए। किस तरह का भरोसा? हमें यह पक्का भरोसा होना चाहिए कि हमारी ज़िंदगी में जो कुछ भी होता है, वह सब प्रभु के हाथों में है। भले ही मुश्किलों, परेशानियों या दुखद घटनाओं के समय हमें प्रभु की मर्ज़ी समझ न आए, फिर भी हमें विश्वास और भरोसा रखना चाहिए कि हम उनकी मर्ज़ी के दायरे में ही हैं। इस भरोसे को मज़बूती से थामे हुए, हमें परमेश्वर की दया और प्रेम पर निर्भर रहना चाहिए और सच्चे दिल से उनकी बचाने वाली कृपा को पाना चाहिए।

दूसरी बात, जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वे उस कृपा की महानता को पहचानते हैं जो प्रभु ने उन पर की है।

भजन संहिता 31:19 को देखिए: "तेरी भलाई कितनी महान है, जिसे तूने उन लोगों के लिए जमा करके रखा है जो तेरा भय मानते हैं, और जो तेरी शरण में आते हैं, उन पर तूने इसे मनुष्यों के सामने प्रकट किया है!" अहंकारी और दुष्ट दुश्मनों के सताए जाने के बावजूद, दाऊद ने अपने अतीत को याद किया और उस महान कृपा पर मनन किया जो प्रभु ने उस पर की थी। यह ध्यान देने वाली बात है कि हमारा परमेश्वर उन लोगों के लिए कृपा जमा करके रखता है जो उसका भय मानते हैं—यानी उसका आदर करते हैं; दूसरे शब्दों में, वह ऐसा परमेश्वर है जो भविष्य के लिए कृपा जमा करके रखता है। आखिर में, अपनी मौजूदा गंभीर पीड़ा के समय अतीत में परमेश्वर द्वारा दिखाई गई महान कृपा पर विचार करते हुए, दाऊद को एहसास हुआ कि जो कृपा उसे मिली थी, वह परमेश्वर ने उसके लिए पहले से ही जमा करके रखी थी। उसे पक्का यकीन था कि उसकी मौजूदा पीड़ा के बीच भी परमेश्वर ने उसके लिए महान कृपा पहले से ही जमा करके रखी थी। क्या हम भी, दर्दनाक हालात का सामना करते समय, पूरे भरोसे के साथ यह उम्मीद करते हैं कि प्रभु ने इसी पल हमारे लिए महान कृपा जमा करके—या तैयार करके—रखी है? परमेश्वर ने दाऊद पर कौन सी कृपा की थी? अतीत की किस खास महान कृपा पर दाऊद ने मनन किया था? वह परमेश्वर की सुरक्षा थी। भजन संहिता 31:20 को देखिए: "तू उन्हें मनुष्यों की चालों से अपनी उपस्थिति की गुप्त जगह में छिपा लेता है; तू उन्हें ज़ुबान के झगड़ों से एक मंडप में गुप्त रूप से सुरक्षित रखता है।" दाऊद को याद था कि कैसे परमेश्वर ने उसकी रक्षा की थी जब उसके दुश्मनों ने उसे नुकसान पहुँचाने की साज़िश रची थी और "ज़ुबान के झगड़ों"—यानी अपनी बातों से उसे बदनाम करके—सताया था (पद 20)। दाऊद ने इस सुरक्षा का वर्णन "छिपाना" और "सुरक्षित रखना" जैसी क्रियाओं और "तेरी उपस्थिति की गुप्त जगह" और "एक मंडप" जैसे वाक्यांशों का इस्तेमाल करके किया है (पद 20)। दाऊद ने

भजन संहिता 27:5 में पहले ही पूरे भरोसे के साथ प्रार्थना की थी: "क्योंकि मुसीबत के दिनों में वह मुझे अपने घर में सुरक्षित रखेगा; वह मुझे अपने पवित्र तंबू की आड़ में छिपा लेगा और मुझे एक चट्टान पर ऊँचाई पर खड़ा करेगा।" दाऊद परमेश्वर की पिछली बचाने वाली कृपा पर सोच-विचार कर रहा था—कि कैसे परमेश्वर ने खतरे के समय उसे छिपाकर और सुरक्षित रखकर उसकी रक्षा की थी ताकि कोई उसे नुकसान न पहुँचा सके। इस भरोसे के साथ कि सब कुछ प्रभु के हाथों में है, दाऊद ने अपनी तकलीफों और सतावट के बीच परमेश्वर की पिछली कृपा पर मनन किया, और उसे यकीन था कि प्रभु एक बार फिर उसकी रक्षा करेंगे।

आज की हमारी दर्दनाक परिस्थितियों के बीच, हमें भी उस कृपा पर सोचना चाहिए जो परमेश्वर ने अतीत में हम पर दिखाई है, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया था। हमें उस भलाई को याद रखना चाहिए जो परमेश्वर ने हमारी रक्षा और देखभाल करने में दिखाई है। हमें विश्वास करना चाहिए—इस बात पर विश्वास करना चाहिए कि प्रभु ने हमारे लिए बड़ी कृपा जमा करके रखी है, जिसे वह हमारी वर्तमान पीड़ा के बीच भी हम पर बरसाएगा। और हमें पूरा भरोसा होना चाहिए कि जब हम मुश्किलों, कठिनाइयों और दर्द का सामना कर रहे होंगे, तो वह उस बड़ी कृपा को हम पर बरसाएगा।

आखिर में, तीसरी बात: जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वे प्रभु की आज्ञाओं का पालन करते हैं।

आज के भाग, भजन संहिता 31:21–24 में, दाऊद कहता है कि जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वे प्रभु की तीन आज्ञाओं का पालन करते हैं:

(1) पहली आज्ञा है: "प्रभु की स्तुति करो।"

"प्रभु की स्तुति करो, क्योंकि जब मैं घेरे हुए शहर में था, तब उसने मुझे अपने प्रेम के चमत्कार दिखाए" (पद 21)। जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं—यह मानते हुए कि सब कुछ प्रभु के हाथों में है और उसकी पिछली बड़ी कृपा पर मनन करते हुए—वे वर्तमान में दर्दनाक परिस्थितियों का सामना करते हुए भी परमेश्वर की स्तुति करते हैं। खास तौर पर, दाऊद ने परमेश्वर की स्तुति की, उस महान कृपा पर सोचते हुए जिसने "घेरे हुए शहर में मुझ पर अपना अद्भुत प्रेमपूर्ण दया दिखाई" (पद 21)। उसने खतरे से बचाकर और सुरक्षित शरण में रखकर

दिखाई गई कृपा और प्रेम के लिए परमेश्वर की स्तुति की। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? परमेश्वर पर भरोसा रखने वालों के तौर पर, भले ही हम अभी दुख का सामना कर रहे हों, हमें भी परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए—ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया था—और उस अद्भुत प्रेम पर मनन करना चाहिए जो उसने पहले हमें दिखाया है।

(2) दूसरा हुक्म है, "प्रभु से प्रेम करो।"

भजन संहिता 31:23 को देखें: "हे प्रभु के सब पवित्र लोगों, उससे प्रेम करो! प्रभु वफादारों की रक्षा करता है, लेकिन जो घमंड से काम करते हैं, उन्हें भरपूर सज़ा देता है।" दाऊद, जिसने परमेश्वर पर भरोसा किया, उसने अपने दुश्मनों के सताए जाने के बीच "प्रभु के अटूट प्रेम" का अनुभव किया (पद 16)। उसने प्रभु की बचाने वाली दया और सुरक्षा पाने की महान कृपा का अनुभव किया। प्रभु का वह प्रेम एक "अद्भुत अटूट प्रेम" है (पद 21)। इस प्रेम का अनुभव करने के बाद, दाऊद कहता है, "हे प्रभु के सब पवित्र लोगों, उससे प्रेम करो..." (पद 23)। हमें परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए। यह यीशु का हुक्म है। परमेश्वर से प्रेम करने वाला कौन है? जो परमेश्वर से प्रेम करता है, वह "वफादार" है (पद 23)। परमेश्वर उनकी रक्षा करता है जो उस पर वफादारी से भरोसा करते हैं और विश्वास का जीवन जीते हैं। हालाँकि, परमेश्वर उनके प्रति अपना न्याय दिखाता है जो घमंड से काम करते हैं।

(3) तीसरा हुक्म है, "मजबूत और साहसी बनो।"

भजन संहिता 31:24 को देखें: "मजबूत बनो, और तुम्हारा दिल हिम्मत रखे, तुम सब जो प्रभु की प्रतीक्षा करते हो।" हाल ही में, यहोशू 1:6–9 पर मनन करते हुए, मैंने विशेष रूप से "मजबूत और साहसी बनने" के निर्देश पर ध्यान केंद्रित किया है (पद 6, 7, और 9)। मुझे मजबूत और साहसी बनने की चुनौती मिली है क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ है। मैं मजबूत और साहसी होने की आवश्यकता पर भी विचार कर रहा हूँ क्योंकि जो परमेश्वर हमारे साथ है, उसने हमें अपने वादे दिए हैं और निश्चित रूप से उन्हें पूरा करेगा। जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वे मजबूत और साहसी होते हैं।

हम वे लोग हैं जो परमेश्वर पर भरोसा करते हैं। हम वे लोग हैं जो अनजान रास्तों पर चलने वाले तीर्थयात्रियों का जीवन जीते हैं। हमने यह तीर्थयात्रा परमेश्वर की उपस्थिति और उसके द्वारा दिए गए वादों के कारण शुरू की है। जैसे-जैसे हम विश्वास के रास्ते पर 'प्रतिज्ञा की हुई भूमि'—स्वर्ग—की ओर बढ़ते हैं, हमें यह भरोसा होना चाहिए कि यात्रा के दौरान होने वाली हर चीज़ परमेश्वर के सर्वोच्च हाथों में है। इसके अलावा, जिन मुश्किलों और दुखों का हम अभी सामना कर रहे हैं, उनके बीच हमें उस महान कृपा को याद रखना चाहिए जो परमेश्वर ने अतीत में दी है; ऐसा करते हुए, हमें उस भरपूर कृपा के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, उसकी उम्मीद करनी चाहिए और उसका इंतज़ार करना चाहिए जो उसने हमारी वर्तमान मुश्किलों में भी हमारे लिए तैयार की है। इस प्रक्रिया में, हमें प्रभु की स्तुति करनी चाहिए और परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए, और उनकी कृपा से सामर्थ्य पाना चाहिए। साथ ही, जो लोग वर्तमान परीक्षाओं और कष्टों के बीच परमेश्वर की ओर देखते हैं, उन्हें पूरी शक्ति और साहस के साथ उस स्वर्गीय घर की ओर आगे बढ़ना चाहिए।

आशीषित व्यक्ति

[भजन संहिता 32]

अगर हम यिर्मयाह 17:7–8 को देखें, तो हमें भजन संहिता 1 के संदेश से समानताएँ दिखाई देंगी। इन अंशों का एक ही मुख्य विषय है: यह पहचानना कि आशीष पाने वाला व्यक्ति कौन है। भविष्यवक्ता यिर्मयाह कहते हैं कि आशीष पाने वाला व्यक्ति वह है जो "परमेश्वर पर भरोसा रखता है।" वे ऐसे व्यक्ति का वर्णन इस प्रकार करते हैं: "वह पानी के किनारे लगाए गए उस पेड़ के समान होगा जो अपनी जड़ें जल-धारा की ओर फैलाता है। उसे गर्मी आने का डर नहीं होता; उसके पत्ते हमेशा हरे-भरे रहते हैं। सूखे के साल में भी उसे कोई चिंता नहीं होती और वह फल देने में कभी नहीं चूकता" (यिर्मयाह 17:8)। भजन संहिता 1 और यिर्मयाह 17:7–8 दोनों पर एक साथ मनन करने से हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं: "आशीष पाने वाला व्यक्ति वह है जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है और दिन-रात उसके वचन पर मनन करता है।" एक तरह से, परमेश्वर पर भरोसा करने का अर्थ है उसके वचन पर भरोसा करना; परमेश्वर के वादों पर विश्वास करना स्वयं परमेश्वर पर भरोसा करने के समान है।

आज के अंश, भजन संहिता 32:1–2 में, "धन्य है वह व्यक्ति" वाक्यांश को दो बार दोहराया गया है। भजनकार दाऊद एक बार फिर आशीष पाने वाले व्यक्ति की पहचान बताते हैं। इस पाठ पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं आशीष पाने वाले व्यक्ति की तीन विशेषताओं पर विचार करना चाहता हूँ और परमेश्वर द्वारा हमें दी जाने वाली कृपा को विनम्रतापूर्वक स्वीकार करना चाहता हूँ।

पहला, आशीष पाने वाला व्यक्ति वह है जिसे पापों की क्षमा मिली है (पद 1–5)।

भजन संहिता 32:1 को देखें: "धन्य है वह व्यक्ति जिसके अपराध क्षमा कर दिए गए हैं, जिसके पाप ढक दिए गए हैं।" यहाँ, "क्षमा" (forgiven) वाक्यांश का अर्थ है "दूर कर दिया जाना" या "मिटा दिया जाना," जबकि "ढका

हुआ" (covered) का अर्थ है "परमेश्वर की दृष्टि से भी अदृश्य हो जाना" (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, आशीष पाने वाला व्यक्ति वह है जिसके पाप परमेश्वर की दृष्टि में पूरी तरह से मिटा दिए गए हैं। हमारे घर में तीन बच्चे हैं, इसलिए घर अक्सर अस्त-व्यस्त रहता है। हालाँकि, पिछले हफ़्ते मेरी सास और ननद आईं और घर को व्यवस्थित किया; मैं यह देखकर हैरान रह गया कि जगह कितनी साफ़ हो गई थी। फिर भी, एक चीज़ ऐसी थी जिसे छुआ तक नहीं गया था: बाहर रखा कूड़ेदान। तो, पिछले सोमवार की सुबह, जब कचरा उठाने वाली गाड़ी कचरा ले गई, तो मैंने कूड़ेदान को पानी से अच्छी तरह धोया, उसे उल्टा कर दिया और सूखने के लिए छोड़ दिया। इससे बदबू चली गई और कूड़ेदान सचमुच साफ़ हो गया। मेरा मानना है कि हमारे विश्वास के जीवन में भी, हमारे अंदर कुछ चीज़ें सड़ रही होती हैं—बदबूदार पाप जो कूड़ेदान की दुर्गंध जैसे होते हैं। हम जानते हैं कि हमें मसीह की सुगंध फैलानी चाहिए, फिर भी हम अक्सर अपने निजी पापों—ऐसे पाप जिनके लिए हमने पछतावा नहीं किया—से जूझते रहते हैं, जो हमें ऐसा करने से रोकते हैं। हमें निराशा हो सकती है जब, यह जानते हुए भी कि हमें अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए और उनके लिए पछतावा करना चाहिए, हम असल में पछतावा नहीं कर पाते। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमें एहसास होता है कि परमेश्वर की कृपा के बिना पछतावा करना भी असंभव है। तो फिर, हमें अपने पाप की समस्या से कैसे निपटना चाहिए? हम कुछ बातों पर विचार कर सकते हैं:

(1) हमें परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, हमें पवित्र परमेश्वर के सामने अपने पापों को पाप के रूप में मानना चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं, तो हो सकता है कि हम भी दाऊद की तरह दिन भर कराहते रहें (पद 3)। जब दाऊद ने अपने पाप को स्वीकार नहीं किया था, तो दिन भर कराहना—यहाँ तक कि उसकी हड्डियाँ तक सूख गई थीं—कितना कष्टदायक रहा होगा? हम इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। डॉ. पार्क युन-सन ने एक बार बिना स्वीकार किए गए पाप के बारे में कहा था: "पाप एक खतरनाक चीज़ है। यदि हम इसे अपने अंदर दबाकर रखते हैं, तो यह हमारे अंदर के जीवन को खत्म कर देता है।"

(2) हमें प्रभु का हाथ हमारे ऊपर पड़ने की चाहत रखनी चाहिए।

भजन संहिता 32:4 को देखें: "क्योंकि दिन-रात तेरा हाथ मुझ पर भारी था; मेरी जीवन-शक्ति गर्मी के सूखेपन में बदल गई (सेलाह)।" यहाँ "दबाव" या "वज़न" के रूप में अनुवादित शब्द का शाब्दिक हिब्रू अर्थ "भारी" है (पार्क युन-सन)। यह बताता है कि जब हम अपने पापों को स्वीकार नहीं करते हैं, तो प्रभु हमारे दिलों पर कितना भारी बोझ डालते हैं। पाप करने के बाद हमें अपने दिलों में उस भारीपन को महसूस करने की ज़रूरत है। व्यक्तिगत रूप से, जब मैं खुद की जाँच करता हूँ, तो पाता हूँ कि मैं अक्सर पाप को बहुत हल्के में लेता हूँ; नतीजतन, मुझे अपने दिल में बहुत कम भारीपन महसूस होता है और मानसिक परेशानी भी कम होती है। फिर भी, खुद में यह बात पहचानते हुए, मैं मानता हूँ कि मुझे प्रभु के हाथ की उस कृपा की चाहत रखनी चाहिए जो मुझ पर "दिन-रात" बनी रहे—ठीक वैसे ही जैसे दाऊद के मामले में हुआ था—जब मैं अपने पापों को स्वीकार करने में नाकाम रहता हूँ। आखिरकार, जब प्रभु का हाथ दाऊद पर भारी पड़ा, तो उसने अपना पाप छिपाना छोड़ दिया और परमेश्वर के सामने उसे स्वीकार कर लिया: "मैंने कहा, 'मैं प्रभु के सामने अपने अपराध स्वीकार करूँगा,' और आपने मेरे पाप की बुराई को क्षमा कर दिया (सेलाह)" (पद 5)। यहाँ, हम परमेश्वर की कृपा और प्रेम को देखते हैं, जो आखिरकार हमारे पापों को सामने लाते हैं और हमें उन्हें स्वीकार करने और पश्चाताप करने की ओर ले जाते हैं। परमेश्वर की ओर से यह कितना अद्‌भुत आशीर्वाद है!

तो फिर, अपने पापों को स्वीकार करने का क्या अर्थ है? हम इस पर दो तरह से विचार कर सकते हैं (पार्क युन-सन):

(1) यह परमेश्वर के सामने अपनी गलतियों को मानना है।

यह केवल दिखावे का काम नहीं है जिसका मकसद अपनी इज़्ज़त बचाना या दूसरों को धोखा देना हो। जब कोई पापी सच्चे दिल से इस तरह अपने पाप को मानता है, तो परमेश्वर उस रवैये से खुश होते हैं।

(2) पाप स्वीकार करना परमेश्वर के प्रेम में विश्वास को ज़ाहिर करना है।

इसलिए, विश्वासयोग्य परमेश्वर यह पक्का करते हैं कि ऐसा विश्वास कभी न टूटे और बेकार न जाए। इस तरह, हमें पवित्र परमेश्वर के सामने अपने पाप स्वीकार करने चाहिए। हमारे दिलों में कोई छल-कपट नहीं होना चाहिए (पद 2)। जिसके दिल में कोई छल-कपट नहीं होता, वही बिना अपना पाप छिपाए पश्चाताप करता है। नतीजतन,

परमेश्वर उसे दोषी नहीं ठहराते; दूसरे शब्दों में, उसके पाप का हिसाब उसके खिलाफ नहीं लगाया जाता (पार्क युन-सन)। और जिस व्यक्ति को क्षमा मिलती है—जिसके पाप का हिसाब उसके खिलाफ नहीं लगाया जाता—वह न केवल धन्य होता है बल्कि सचमुच खुश भी होता है (रोमियों 4:6)।

दूसरी बात, धन्य व्यक्ति वह है जो परमेश्वर का भक्त है (भजन संहिता 32:6–9)।

भजन संहिता 32:6 को देखें: "इसलिए हर भक्त व्यक्ति आपसे प्रार्थना करे जब तक आप मिल सकते हैं; निश्चित रूप से जब पानी का बड़ा सैलाब आएगा, तो वह उस तक नहीं पहुँचेगा।" परमेश्वर की नज़र में, धन्य व्यक्ति वही है जो उनका भक्त है। तो फिर, भक्त व्यक्ति कौन है? क्या इसका मतलब ऐसे व्यक्ति से है जिसने कभी कोई पाप नहीं किया? नहीं, ऐसा नहीं है। धर्मी व्यक्ति वह है जो परमेश्वर के सामने अपने पापों को मानकर उनकी क्षमा प्राप्त करता है। धर्म-शास्त्र की दृष्टि से कहें तो, धर्मी व्यक्ति वह है जिसे परमेश्वर ने धर्मी ठहराया है—यानी, एक "धर्मी जन"। ऐसा धर्मी व्यक्ति परमेश्वर द्वारा दिए गए प्रार्थना के अवसर का लाभ उठाता है और प्रभु से प्रार्थना करता है (पद 6)। दाऊद के लिए, प्रार्थना में प्रभु से मिलने का अवसर उस समय आया जब उसने अभी तक पश्चाताप नहीं किया था (पद 3-4)। दूसरे शब्दों में, जिस क्षण प्रभु का हाथ उस पर भारी पड़ रहा था—जब उसने पश्चाताप नहीं किया था—वही प्रभु से मिलने का अवसर था। ऐसे समय में, हमें भी दाऊद के उदाहरण का पालन करते हुए अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए और परमेश्वर से पश्चाताप की प्रार्थना करनी चाहिए। जब दाऊद ने अपने पापों को स्वीकार किया और पश्चाताप किया, तो उसका परिणाम क्या हुआ? दूसरे शब्दों में, उसकी प्रार्थना का उत्तर कैसे मिला?

(1) उसकी प्रार्थना का पहला उत्तर पापों की क्षमा थी (पद 1-2)।

(2) दूसरी बात, दाऊद को जो उत्तर मिला, वह था संकट से छुटकारा (पद 6 का अंतिम भाग)।

दूसरे शब्दों में, परमेश्वर हमें हमारे संकटों के बीच भी उद्धार का अनुग्रह प्रदान करते हैं (पार्क युन-सन)।

(3) तीसरी बात, दाऊद को अपनी प्रार्थना के उत्तर के रूप में परमेश्वर की सुरक्षा प्राप्त हुई (पद 7)।

दाऊद अब परमेश्वर के क्रोध के अधीन नहीं था (पद 4); इसके बजाय, उसे विश्वास हो गया कि वह परमेश्वर की स्तुति करेगा, क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर उसकी शरणस्थान बन गए हैं और संकट के दिन सहायता प्रदान करेंगे (पद 7; पार्क युन-सन)। इसलिए, हमें भी प्रभु से मिलने और उनसे प्रार्थना करने के अवसर का लाभ उठाना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया था। जिस क्षण प्रभु का हाथ हम पर भारी पड़ता है क्योंकि हमने अभी तक अपने पापों को स्वीकार नहीं किया है, वही प्रभु से मिलने का अवसर होता है। उस क्षण, हमें सच्चे मन से उन्हें पुकारना चाहिए। इसके अलावा, हमें प्रभु से अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर प्राप्त करना चाहिए। हमें अपने पापों की क्षमा पाने और आने वाले संकटों के बीच उद्धार पाने की आवश्यकता है, ताकि हम उस प्रभु की सुरक्षा प्राप्त कर सकें जो हमारी शरणस्थान है।

आखिर में, तीसरी बात यह है कि धन्य व्यक्ति वह है जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है (पद 10–11)।

भजन संहिता 32:10 को देखें: "दुष्टों के दुख बहुत होते हैं, लेकिन जो प्रभु पर भरोसा रखता है, वह उसकी अटूट प्रेम से घिरा रहता है।" दूसरे शब्दों में, जहाँ बिना पछतावा करने वाले दुष्टों को कई दुखों का सामना करना पड़ता है, वहीं जो लोग परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं—और इस तरह अपने पापों के लिए पछतावा करते हैं—वे परमेश्वर के अटूट प्रेम से घिरे रहते हैं। परमेश्वर के अटूट प्रेम का अनुभव करने के बाद, दाऊद दूसरों को सिखाने का संकल्प लेता है (पद 8)। वह क्या सिखाने का संकल्प लेता है? वह है पछतावा। दाऊद को दूसरों को पछतावा करने के लिए प्रेरित करने का साहस तभी मिला जब उसने खुद पछतावा करके माफ़ी की खुशी का अनुभव किया (भजन संहिता 51:13) (पार्क युन-सन)। पछतावे के बारे में दाऊद की सीख क्या थी? भजन संहिता 32:9 को देखें: "समझ-बूझ न रखने वाले घोड़े या खच्चर की तरह न बनो, जिन्हें लगाम और रास से काबू में रखना पड़ता है, वरना वे तुम्हारे पास नहीं रहेंगे।" "समझ-बूझ न रखने वाले घोड़े या खच्चर की तरह" न बनने की सीख का मतलब है कि हमें ऐसे व्यक्ति नहीं बनना चाहिए जो तब तक बात नहीं मानते जब तक उन्हें मजबूर न किया जाए (पार्क युन-सन)। हमें अपने दिल कठोर नहीं करने चाहिए। जब हमें अपने पापों के लिए पछतावा करना हो, तो हमें प्रभु के सामने पछतावा करना चाहिए। हमें "समझ-बूझ न रखने वाले घोड़े या खच्चर" की तरह नहीं बनना चाहिए—जो तब तक पछतावा करने से इनकार करते हैं जब तक परमेश्वर को दखल देने के लिए मजबूर न होना पड़े।

अपने पापों को मान लेने और उनके लिए पछतावा करने के बाद, दाऊद कहता है: “हे धर्मी लोगों, प्रभु में आनंदित और खुश हो जाओ, और हे सच्चे दिल वालों, खुशी से जय-जयकार करो!” (पद 11)। यहाँ, “धर्मी” और “सच्चे दिल वालों” का मतलब उन लोगों से है जिन्होंने पछतावा किया है (पार्क युन-सन)। दाऊद उन लोगों को परमेश्वर में खुश होने और आनंद मनाने के लिए प्रेरित करता है जिन्होंने पछतावा किया है, और वह उन्हें खुशी के साथ परमेश्वर की स्तुति करने के लिए प्रोत्साहित करता है। पापों की माफ़ी पाने और धर्मी ठहराए जाने के लिए हमें परमेश्वर के सामने सचमुच पछतावा करना चाहिए। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप और मैं ऐसे लोग बनें जो पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा रखें और उसमें आनंद मनाएँ।

नेक लोगों का कर्तव्य

[भजन संहिता 33]

यिर्मयाह 1:4–10 पर मनन करते समय, मुझे उन लोगों के सही कर्तव्य के बारे में समझ मिली जो परमेश्वर के वचन का प्रचार या शिक्षा देते हैं। आयत 7 इस सबक को अच्छी तरह बताती है: "लेकिन प्रभु ने मुझसे कहा, 'यह मत कहो कि मैं बहुत छोटा हूँ। तुम्हें उन सभी के पास जाना होगा जिनके पास मैं तुम्हें भेजूँगा और वही कहना होगा जो मैं तुम्हें आज्ञा दूँगा।'" इससे मैंने तीन सबक सीखे: (1) मुझे यह नहीं कहना चाहिए कि "मैं बहुत छोटा हूँ।" मुझे ऐसे बहाने नहीं बनाने चाहिए जैसे, "मैं इसके काबिल नहीं हूँ और यह नहीं कर सकता," या "मैं अभी बहुत छोटा हूँ।" (2) जब प्रभु आज्ञा दें तो मुझे जाना चाहिए। चाहे हमें यह पसंद हो या न हो, अगर प्रभु हमें जाने की आज्ञा देते हैं, तो हमें जाना ही होगा। (3) जब प्रभु आज्ञा दें तो मुझे बोलना चाहिए। वचन के प्रचारक और शिक्षक के तौर पर, हमें लोगों की प्रतिक्रियाओं से डरना नहीं चाहिए; बल्कि, यह जानते हुए कि प्रभु हमारे साथ हैं, हमें हिम्मत के साथ वचन का प्रचार और शिक्षा देनी चाहिए। यह सचमुच एक चुनौतीपूर्ण काम है, क्योंकि परमेश्वर का वचन सुनने वालों को बना भी सकता है और गिरा भी सकता है (आयत 10)। मैं खुद से पूछता हूँ कि क्या हम, जिन्हें वचन की जिम्मेदारी सौंपी गई है, अभी इस कर्तव्य को ईमानदारी और निष्ठा से पूरा कर रहे हैं?

क्या हम ईसाई, जो इस दुनिया में परमेश्वर की पवित्र संतान के रूप में जी रहे हैं, अपने कर्तव्यों को सही ढंग से पूरा कर रहे हैं? फिर भी, यह सवाल पूछने से पहले, हमें पहले यह जवाब देना होगा: हमारा असल कर्तव्य क्या है? भजन संहिता 33:1 में, भजनकार कहता है: "हे नेक लोगों, प्रभु में आनंद मनाओ! क्योंकि नेक लोगों की स्तुति सुंदर होती है।" इस आयत पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं तीन बातों पर विचार करना चाहता हूँ जो हम ईसाइयों को—नेक लोगों के रूप में जिन्हें धर्मी ठहराया गया है—करनी चाहिए, और यह सोचना चाहिए कि उन्हें अपने जीवन में कैसे लागू किया जाए।

पहला, नेक लोगों का उचित कर्तव्य स्तुति करना है।

भजन संहिता 33:1 को देखें: "हे नेक लोगों, प्रभु में आनंद मनाओ! क्योंकि नेक लोगों की स्तुति सुंदर होती है।" नेक लोग ही सच्ची स्तुति क्यों कर सकते हैं, इसका कारण यह है कि वे ही परमेश्वर की स्तुति करते समय खुद की महिमा नहीं चाहते (पार्क युन-सन)। बाइबल क्यों कहती है कि नेक लोगों को परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए? ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ही हमारे सृष्टिकर्ता हैं (पद 6–7)। वे कैसे सृष्टिकर्ता हैं? वे ऐसे सृष्टिकर्ता परमेश्वर हैं जिन्होंने अपने वचन से आकाश की रचना की (पद 6)। हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए क्योंकि वे ही नई रचना का काम करते हैं; वे अपने शक्तिशाली वचन के द्वारा हमारे दिलों में काम करके हमें बदलते हैं और हमें नया हृदय देते हैं। तो फिर, हमें परमेश्वर की स्तुति कैसे करनी चाहिए? हमें संगीत के वाद्ययंत्रों और धन्यवाद के साथ उनकी स्तुति करनी चाहिए (पद 2), और खुशी-खुशी उनके लिए एक नया गीत गाना चाहिए (पद 3)। हमें नए गीत के साथ परमेश्वर की स्तुति क्यों करनी चाहिए? ऐसा इसलिए है क्योंकि विश्वास करने वाले परमेश्वर के उद्धार के महान कार्य से एक नई खुशी और गहरी भावना का अनुभव करते हैं (पार्क युन-सन)। हम, जो धर्मी और सीधे मार्ग पर चलने वाले हैं, हमें हर दिन इस नई खुशी और भावना का अनुभव करना चाहिए। जब हम यह अनुभव और महसूस करते हैं कि पवित्र आत्मा—जो नई रचना का काम पूरा करते हैं—परमेश्वर के वचन के द्वारा हमारे दिलों को और अधिक यीशु के हृदय जैसा बना रहे हैं, तो हमें हर दिन अपने दिलों में नई खुशी और गहरी भावना महसूस करनी चाहिए। इसलिए, हमें खुशी-खुशी नए गीत के साथ परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए और वाद्ययंत्रों तथा धन्यवाद के साथ उनकी प्रशंसा करनी चाहिए।

दूसरी बात, सीधे मार्ग पर चलने वालों के लिए सही काम यह है कि वे सच्चाई से काम करें।

भजन संहिता 33:4 को देखें: "क्योंकि प्रभु का वचन सही और सच्चा है; वह जो कुछ भी करता है, उसमें वह विश्वसनीय है।" यहाँ सच्चाई से काम करने का क्या अर्थ है? हम इस पर दो तरह से विचार कर सकते हैं, जो एक ही सिक्के के दो पहलुओं की तरह हैं।

(1) सच्चाई से काम करने का अर्थ है परमेश्वर के सही वचन का पालन करना।

परमेश्वर के वचन का पालन करने के लिए, हमें ऐसे हृदय की आवश्यकता है जो परमेश्वर का भय मानता हो (पद 8)। जब हम परमेश्वर का भय मानते हैं और उनके वचन का पालन करते हैं, तो प्रभु की इच्छा पूरी होती है (पद 9)। दूसरे शब्दों में, जब हम परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं, तो हम प्रभु की इच्छा को पूरा करते हैं और उनके उद्देश्यों को मजबूती से स्थापित करते हैं। हालाँकि, यदि हम परमेश्वर के वचन की अवज्ञा करते हैं, तो वे हमारी योजनाओं को विफल कर देते हैं और हमारे विचारों और योजनाओं को व्यर्थ कर देते हैं (पद 10)। अविश्वास अवज्ञा की ओर ले जाता है, और अवज्ञा का परिणाम यह होता है कि हमारी योजनाएँ विफल हो जाती हैं और हमारे विचार—हमारी योजनाएँ—व्यर्थ हो जाती हैं।

(2) सच्चाई से काम करने का अर्थ है उससे प्रेम करना जिससे परमेश्वर प्रेम करते हैं।

परमेश्वर किससे प्रेम करते हैं? भजन संहिता 33:5 को देखिए: "प्रभु धार्मिकता और न्याय से प्रेम करते हैं; पृथ्वी उनके अटूट प्रेम से भरी हुई है।" यहाँ, हम परमेश्वर की पवित्रता के दो गुण देखते हैं: "न्याय" और "प्रेम"। दिलचस्प बात यह है कि हालाँकि परमेश्वर में ये दोनों गुण एक साथ मौजूद हैं, फिर भी उनके न्याय की तुलना में उनके प्रेम का माप कहीं अधिक है, जो पूरी दुनिया को भर देता है (पद 5) (पार्क युन-सन)। नतीजतन, हमें परमेश्वर के न्याय के परिणामस्वरूप आने वाली विपत्तियों की तुलना में उनके प्रेम से मिलने वाले आशीर्वाद कहीं अधिक मिलते हैं। इसलिए, जो लोग न्याय और प्रेम करने वाले परमेश्वर से प्रेम करते हैं—और जो स्वयं उस न्याय और प्रेम से प्रेम करते हैं—वे उनका आदर करते हैं और उनके अटूट प्रेम पर आशा रखते हैं (पद 18)। ऐसे लोगों के बारे में बाइबल कहती है: "प्रभु उन लोगों पर नज़र रखते हैं जो उनसे डरते हैं, जो उनके अटूट प्रेम पर आशा रखते हैं, ताकि उनकी आत्माओं को मृत्यु से बचाया जा सके और अकाल के समय में उन्हें जीवित रखा जा सके" (पद 18-19)।

तीसरी और अंतिम बात, नेक लोगों के लिए सही काम यह है कि वे प्रभु को अपना परमेश्वर बनाएँ।

भजन संहिता 33:12 पर विचार करें: "धन्य है वह राष्ट्र जिसका परमेश्वर प्रभु है, वे लोग जिन्हें उसने अपनी विरासत के लिए चुना है।" भजनकार ऐसे ही एक धन्य व्यक्ति हैं जिन्होंने प्रभु को अपना परमेश्वर बनाया है। वे हमें सिखाते हैं कि नेक लोग प्रभु को अपना परमेश्वर बनाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने दुनिया की

नींव रखे जाने से पहले ही हमें अपने लोग और अपनी संतान बनने के लिए चुना था। इस प्रकार, हम "परमेश्वर की विरासत" हैं—यानी, हम परमेश्वर की अपनी संपत्ति हैं (पार्क युन-सन)। परमेश्वर की संपत्ति होने के नाते, नेक लोग परमेश्वर में आनंदित होते हैं और पूरी तरह से उन पर निर्भर रहते हैं (पद 21)। संदेह दुख लाता है, जबकि विश्वास आनंद पैदा करता है (स्पर्जन)। तो फिर, नेक लोग परमेश्वर में आनंदित क्यों होते हैं और उन पर निर्भर क्यों रहते हैं? कारण यह है कि परमेश्वर नेक लोगों की सहायता और ढाल हैं (पद 20)। ऐसे नेक लोग धन्य होते हैं। उन्हें किस तरह के आशीर्वाद मिलते हैं? हम इस संबंध में दो बिंदुओं पर विचार कर सकते हैं।

(1) नेक लोग—यानी, धन्य लोग—भगवान के प्रोविडेंस में रहते हैं (आयत 13–14)।

हमारा भगवान ही है जो अपने प्रोविडेंस से धरती पर सभी मामलों को चलाता है। पूरी तरह से राज करने के साथ, वह लोगों के दिलों को पहचानता है और उन पर राज करता है (पार्क युन-सन)। नेक लोग धन्य हैं क्योंकि वे उसके प्रोविडेंस के राज में रहते हैं। यह सच में एक बहुत बड़ा आशीर्वाद है।

(2) नेक लोग—यानी, धन्य लोग—भगवान की बचाने वाली कृपा पाते हैं।

भजन 33:18–19 पर गौर करें: “यहोवा उन पर नज़र रखता है जो उससे डरते हैं, जो उसके पक्के प्यार पर उम्मीद रखते हैं, ताकि उन्हें मौत से बचाए और अकाल के समय ज़िंदा रखे।” इस हिस्से का मतलब है कि नेक लोग ज़िंदगी-मौत के हालात या तंगी के समय का सामना कर सकते हैं। धर्मग्रंथ एक धन्य व्यक्ति को ऐसा नहीं बताता जो ऐसी मुश्किलों से आज़ाद हो। बल्कि, नेक लोग धन्य हैं क्योंकि भगवान उन पर नज़र रखता है, मुश्किलों में उन्हें बचाता है, और ज़रूरत के समय उन्हें सहारा देता है। हम भी अपनी ज़िंदगी में इस आशीर्वाद का अनुभव कर रहे हैं।

कल, मैं अपनी प्यारी सास से हॉस्पिटल में मिलने गया; वह एक ऐसी औरत हैं जिन्होंने भगवान को अपना भगवान माना है, उनकी तारीफ़ करती हैं, और सच्चाई पर चलती हैं। मेरे ससुर ने भगवान की तारीफ़ की जब उन्होंने देखा कि कैसे उन्होंने उनकी जान बचाई थी जब वह एक कार एक्सीडेंट के बाद मौत के कगार पर थीं, और कैसे वह काम करते रहते हैं, जिससे वह बहुत अच्छी तरह ठीक हो गईं। बाद में, मेरे ससुर ने उनसे प्यार भरी नज़रों

से बात की और उनके माथे पर किस किया। वह सीन देखकर, मैंने भगवान की दया का अनुभव किया। एक खूबसूरत जोड़े को क्राइस्ट के प्यार से एक-दूसरे से प्यार करते हुए देखकर, मुझे उन आशीर्वादों की एक झलक मिली जो भगवान नेक लोगों को देते हैं। मैंने एक कार एक्सीडेंट में सिर में लगी चोट के बाद बहुत तेज़ी से ठीक होने का भगवान का आशीर्वाद भी देखा - जो उनके प्रोविडेंस का सबूत है। अपने ससुर और सास को - जिन्होंने भगवान को अपना भगवान माना है - इंटेंसिव केयर यूनिट में देखकर, मैं उनकी तारीफ़ किए बिना नहीं रह सका।

[भजन 424: प्रभु, मेरा जीवन]

1. प्रभु, जो मेरा जीवन है, मैं आपके सामने आता हूँ; अपने कीमती बहाए गए खून से मुझे शुद्ध करें और मुझे स्वीकार करें।

2. जब मैं इस परेशान दुनिया से गुज़रता हूँ, तो कृपया मेरा मार्गदर्शन करें; अगर मैं आप पर विश्वास करके चलता हूँ, तो मैं अपना रास्ता नहीं खोऊँगा।

3. जब मैं इस दुनिया में रहता हूँ, तो मैं आपसे और भी ज़्यादा प्यार करता हूँ; मेरी आत्मा स्वर्ग के उज्ज्वल और चमकते हुए राज्य में प्रवेश करेगी।

{कोरस} दिन-ब-दिन, मैं प्रभु की प्रशंसा करूँगा; मुझे अपने प्यार की डोरियों से मज़बूती से बाँधें। आमीन।

जब चीज़ें मेरी योजना के अनुसार न हों, तब भी

“प्रभु की योजनाएँ हमेशा अटल रहती हैं, उसके मन के उद्देश्य पीढ़ियों तक बने रहते हैं” (भजन संहिता 33:11)।

हाल ही में, मेरे भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा मुझे एक खास भजन गाने के लिए प्रेरित कर रही है: “धन्यवाद प्रभु, मुझे बचाने के लिए।” हालाँकि मुझे इसके बोल पूरी तरह याद नहीं हैं, फिर भी इसकी शुरुआती पंक्ति—"धन्यवाद प्रभु, मुझे बचाने के लिए"—को गाने और उस पर मनन करने से मुझे खुशी और ताकत मिलती है। मैं जितना ज़्यादा यह भजन गाता हूँ, मेरा मन उतना ही कृतज्ञता से भर जाता है। यह एक ऐसी कृतज्ञता है जो इन बोलों में छिपी भावनाओं को अपनाती है: गुलाब और उसके कांटों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना, और उन प्रार्थनाओं के लिए भी धन्यवाद करना जिनका उत्तर मिला और उनके लिए भी जिन्हें उन्होंने अस्वीकार कर दिया। बेशक, मेरे मन में, अगर प्रार्थना का उत्तर मिल जाता या बिना कांटों वाला गुलाब मिलता, तो मैं ज़्यादा कृतज्ञ महसूस करता; फिर भी, मेरे भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा मुझे परमेश्वर के नज़रिए से चीज़ों को देखने में मदद करती है। वह मुझे तब भी धन्यवाद देने के लिए प्रेरित करती है जब प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं मिलता और विश्वास की मेरी यात्रा में आने वाली कांटों जैसी मुश्किलों के लिए भी आभारी रहने को कहती है। खासकर, जब हालात मेरे विचारों और योजनाओं के अनुसार नहीं होते, तो पवित्र आत्मा मुझे परमेश्वर के विचारों और योजनाओं पर विश्वास करने में मदद करती है। वह मुझे उस सच्चाई को स्वीकार करने में सक्षम बनाती है जो मेरी उम्मीदों से अलग है और मुझे यह प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करती है कि परमेश्वर की इच्छा और योजना पूरी हो: "मेरी नहीं, बल्कि आपकी इच्छा पूरी हो," और "मेरी योजना के अनुसार नहीं, बल्कि आपकी योजना के अनुसार।"

नीतिवचन 19:21 कहता है: "मनुष्य के मन में बहुत सी योजनाएँ होती हैं, लेकिन प्रभु का उद्देश्य ही सफल होता है।" इसका क्या अर्थ है? सबसे पहले, यह हमें बताता है कि मनुष्य के मन में सचमुच बहुत सी योजनाएँ होती हैं। इसका मतलब है कि जब हम इस धरती पर रहते हैं, तो हमारे लिए तरह-तरह की योजनाएँ बनाना ज़रूरी है। बिना किसी योजना के लक्ष्यहीन जीना—बस यह कहना कि "जब तक परमेश्वर की इच्छा पूरी होती है, उतना ही काफी है"—एक असंतुलित सोच और विश्वास के प्रति गैर-ज़िम्मेदाराना रवैये को दर्शाता है। फिर भी, भले ही हम अपने मन में अपने रास्तों की योजना बनाते हैं, हमें यह पहचानना चाहिए कि परमेश्वर ही हमारे कदमों का मार्गदर्शन करता है (16:9)। हमें सच्चे दिल से यह चाहना चाहिए कि केवल परमेश्वर की इच्छा ही अटल रहे। चाहे हमारी योजनाओं के ज़रिए हो या किसी और तरह से, हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि धरती पर भी परमेश्वर की सर्वोच्च इच्छा पूरी हो, ठीक वैसे ही जैसे स्वर्ग में होती है।

भजन संहिता 33:11 हमें बताती है कि परमेश्वर की योजनाएँ हमेशा कायम रहती हैं और उनके मकसद सभी पीढ़ियों तक बने रहते हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर की योजनाएँ और उनके दिल की इच्छाएँ हमेशा के लिए हैं। जो योजनाएँ वे अपनी सर्वोच्च इच्छा से बनाते हैं—जो ऐसे दिल पर आधारित हैं जो नेकी और न्याय से प्यार करता है (वचन 5) और जो सीधा और सच्चा है (वचन 4)—वे हमेशा कायम रहती हैं। क्योंकि वे भरोसेमंद हैं (वचन 4), इसलिए उनके सारे काम भी भरोसेमंद हैं (वचन 4)। इसलिए, जो वे कहते हैं, वह ज़रूर पूरा होता है (वचन 9)। गिनती 23:19 पर गौर करें: "परमेश्वर इंसान नहीं है कि झूठ बोले, न ही वह कोई इंसान है कि अपना मन बदल ले। क्या वह कुछ कहता है और फिर करता नहीं? क्या वह वादा करता है और उसे पूरा नहीं करता?" हमारा परमेश्वर भरोसेमंद है और जो कुछ वह कहता है, उसे ज़रूर पूरा करता है। यशायाह 55:11 को भी देखें: "वैसे ही मेरा वचन है जो मेरे मुँह से निकलता है: वह मेरे पास खाली नहीं लौटेगा, बल्कि मेरी इच्छा पूरी करेगा और उस मकसद को हासिल करेगा जिसके लिए मैंने उसे भेजा था।" परमेश्वर के मुँह से निकला वचन कभी भी उनके पास खाली नहीं लौटता; वह हमेशा उनकी भली इच्छा को पूरा करता है और उनके काम को सफल बनाता है। इससे हमें कितना बड़ा दिलासा मिलता है! हम उम्मीद रख सकते हैं क्योंकि परमेश्वर भरोसेमंद है (भजन संहिता 33:4) और जो वचन उसने कहे हैं, उन्हें ज़रूर पूरा करता है (वचन 9)। यह कैसी उम्मीद है? यह उम्मीद है कि परमेश्वर का वादा किया हुआ वचन ज़रूर पूरा होगा। इसी उम्मीद की वजह से हम डटे रह सकते हैं और सह सकते हैं। इसी उम्मीद की वजह से हम मुश्किलों में भी खुश होते हैं और मज़बूती से अपना मिशन पूरा करते हैं। इसी उम्मीद की वजह से हम अपने शरीर पर यीशु के निशान उठाने से पीछे नहीं हटते; बल्कि, हम उन्हें

महिमा का ज़रिया मानते हैं (देखें गलातियों 6:17)। इसलिए, भले ही हमारी अपनी योजनाएँ पूरी न हों, फिर भी हम परमेश्वर का धन्यवाद किए बिना नहीं रह सकते (देखें भजन संहिता 33:10)। भले ही चीज़ें हमारी उम्मीद के मुताबिक न हों, फिर भी हम परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिए मजबूर होते हैं। क्योंकि परमेश्वर ने यीशु मसीह में हमें जो उद्धार का वादा किया था, उसे उन्होंने पहले ही पूरा कर दिया है, अभी भी पूरा कर रहे हैं और आखिर में पूरा करेंगे, इसलिए हम पर यह फर्ज़ है कि हम जीवन भर और हर हालात में उनका धन्यवाद करें।

बाइबल में अय्यूब 42:2 कहता है: "मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरा कोई भी मकसद पूरा होने से नहीं रुक सकता।" हमारे सर्वशक्तिमान परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है और कोई भी योजना पूरी होने से नहीं रुक सकती। विश्वासयोग्य परमेश्वर पवित्र आत्मा के ज़रिए यीशु मसीह में अपनी उद्धार की महान योजना को ज़रूर पूरा करेंगे। भले ही चीज़ें हमारी योजनाओं के मुताबिक न हों, लेकिन परमेश्वर की योजना ज़रूर और हमेशा के लिए पूरी होगी।

तेज से ओत-प्रोत हो जाएँ!

[भजन संहिता 34:1-7]

इफिसियों 5:27 में कहा गया है कि पत्नी के प्रति पति के प्रेम का उद्देश्य उसे यीशु के सामने एक "महिमामयी कलीसिया" के रूप में प्रस्तुत करना है। प्रभु की दृष्टि में "महिमामयी कलीसिया" का अर्थ है ऐसी कलीसिया जो "पवित्र और निष्कलंक" हो, और जिसमें कोई "दाग या झुर्री या ऐसी कोई बात न हो" (पद 27)। ठीक इसी उद्देश्य के लिए प्रभु—जो कलीसिया के सिर हैं—हमारी कलीसिया से प्रेम करते हैं। हमारे प्रभु हमसे अंत तक प्रेम करते हैं क्योंकि वे हमें अपनी महिमामयी कलीसिया के रूप में स्थापित करना चाहते हैं। तो फिर, अपनी पत्नियों को महिमामयी पत्नी के रूप में स्थापित करने के लिए पतियों को क्या करना चाहिए? इफिसियों 5:25-26 में पौलुस उत्तर देते हैं: "हे पतियों, अपनी पत्नियों से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम किया और उसके लिए अपने आप को दे दिया, ताकि वह उसे वचन के द्वारा जल से धोकर पवित्र और शुद्ध करे।" दूसरे शब्दों में, बाइबल सिखाती है कि अपनी पत्नी को शुद्ध करना—विशेष रूप से परमेश्वर के वचन के माध्यम से—और इस प्रकार उसे एक महिमामयी पत्नी के रूप में स्थापित करना पति की जिम्मेदारी है।

भजन संहिता 34:5 में कहा गया है, "उन्होंने उसकी ओर देखा और वे तेज से चमक उठे, और उनके चेहरे शर्मिंदा नहीं हुए।" यहाँ, "तेज से चमक उठे" (शाब्दिक अर्थ "तेज से ओत-प्रोत होना") वाक्यांश का अर्थ है प्रकाश बनना या दीपक की तरह तेजी से चमकना (पार्क युन-सन)। पद 5 का अर्थ यह है कि दाऊद—जिसे अबीमेलेक के सामने पागलपन का नाटक करने के बाद निकाल दिया गया था—और उसके जैसे अन्य लोग जो "दुखी" हैं (पद 2), प्रभु की प्रतीक्षा करते हुए और भविष्य की आशीषपूर्ण आशा की ओर निश्चितता से देखते हुए अपनी कठिनाइयों के बीच आत्मिक अनुग्रह प्राप्त करते हैं (पार्क युन-सन)। आज, भजन संहिता

34:1–7 और "तेज से ओत-प्रोत हो जाएँ" विषय पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन दो बातों पर विचार करना चाहता हूँ जो तेज से ओत-प्रोत लोग करते हैं; मुझे आशा है कि हम इन शिक्षाओं से सीखेंगे, उनका पालन करेंगे और ऐसा जीवन जिएँगे जो तेज से चमकता हो।

पहला, तेज से ओत-प्रोत लोग परमेश्वर की स्तुति करते हैं (भजन संहिता 34:1–3)।

भजन संहिता 34:1–3 में, भजनकार दाऊद तीन अलग-अलग शब्दों का उपयोग करके परमेश्वर की स्तुति करने का आह्वान करता है। इन तीन शब्दों का इस्तेमाल करके, डेविड हमें परमेश्वर की स्तुति करने का एक ज़्यादा व्यापक अर्थ सिखाते हैं:

(1) "आशीर्वाद देना" (Bless)

भजन संहिता 34:1 को देखिए: "मैं हर समय प्रभु को आशीर्वाद दूँगा; उसकी स्तुति हमेशा मेरे मुँह में रहेगी।" यहाँ, "आशीर्वाद देने" के लिए इस्तेमाल हुए हिब्रू शब्द का अर्थ है "घुटने टेकना।" यह आराधना या विनम्रता के भाव को दर्शाता है। यह हमें सिखाता है कि हमें विनम्र हृदय से परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। इस विनम्र तरीके से परमेश्वर के जिन खास गुणों की स्तुति की गई, उनमें डेविड ने परमेश्वर की प्रेमपूर्ण दया और विश्वासयोग्यता की प्रशंसा की (31:21)। इसलिए, परमेश्वर को आशीर्वाद देना हमें न केवल आराधना के दौरान उनकी प्रेमपूर्ण दया और विश्वासयोग्यता की स्तुति करने की चुनौती देता है, बल्कि उन्हें हमारे आराधना-भरे जीवन में प्रकट करने की भी चुनौती देता है।

(2) "बड़ाई करना" (Boast)

आज के वचन, भजन संहिता 34:2 को देखिए: "मेरी आत्मा प्रभु में बड़ाई करेगी; पीड़ित लोग इसे सुनेंगे और आनंदित होंगे।" यहाँ, "प्रभु में बड़ाई करने" का अर्थ है ऐसी बड़ाई करना जो यह स्वीकार करती है कि सभी अच्छी चीज़ें परमेश्वर से आती हैं और उन्हें महिमा देती है (पार्क युन-सन)। ठीक इसी तरह की बड़ाई "पीड़ितों"—यानी वे लोग जो दुख और मुसीबत के कारण प्रभु के सामने विनम्र हो गए हैं—के लिए खुशी लाती है जब वे इसे सुनते हैं (पार्क युन-सन)।

(3) "ऊँचा उठाना" (Exalt)

आज के वचन की आयत 3 को देखिए: "मेरे साथ प्रभु की महिमा करो, और आओ हम सब मिलकर उसके नाम को ऊँचा उठाएँ।" इस संदर्भ में, "ऊँचा उठाने" (exalt) शब्द का अर्थ "महिमा करना" (magnify) या "महान बनाना" (make great) जैसा ही है। चूँकि परमेश्वर पहले से ही अनंत रूप से महान हैं, तो हम इंसान उन्हें और अधिक महान कैसे बना सकते हैं? हमें बस यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारी अपनी कमज़ोरी और विनम्रता के माध्यम से परमेश्वर की महानता और महिमा प्रकट हो।

तो फिर, हमें परमेश्वर की स्तुति कैसे करनी चाहिए? बाइबल हमें तीन मुख्य बातें सिखाती है:

(1) हमें "हर समय" परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए (भजन संहिता 34:1)।

1 थिस्सलुनीकियों 5:16 में, प्रेरित पौलुस हमसे "हमेशा आनंदित रहने" के लिए कहते हैं, और आज के अंश—भजन संहिता 34:1—में डेविड हमें हर समय परमेश्वर को आशीर्वाद देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ऐसा करने के लिए, हमें उन कामों पर मनन करना और उन्हें अनुभव करना होगा जो परमेश्वर हमारे जीवन में करते हैं; उनके कामों के ज़रिए, हम प्रभु की महिमा कर सकते हैं। क्या इसका मतलब यह है कि अगर हम परमेश्वर के कामों को महसूस नहीं कर पाते, तो हम "हर समय" उनकी स्तुति नहीं कर सकते? नहीं। एक सदा रहने वाला कारण है कि हमें परमेश्वर की स्तुति "हर समय" क्यों करनी चाहिए: वह काम जो परमेश्वर ने क्रूस पर पूरा किया। जब भी हम परमेश्वर के इस कभी न बदलने वाले और एक बार हमेशा के लिए किए गए काम पर विचार करते हैं, तो हम उनके द्वारा किए गए उद्धार के लिए लगातार उनकी स्तुति करने के लिए प्रेरित होते हैं।

(2) हमें अपनी "आत्मा" से परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए (भजन संहिता 34:2)।

दाऊद ने केवल अपने होंठों से परमेश्वर की स्तुति नहीं की; उसने अपनी आत्मा से उनकी स्तुति की। यहाँ "आत्मा" से स्तुति करने का अर्थ है अपनी पूरी सत्ता को स्तुति में अर्पित करना (पार्क युन-सन)। केवल होंठों

से प्रभु की स्तुति करना ही काफी नहीं है... बल्कि हमें अपनी पूरी सत्ता—यानी अपनी बुद्धि, भावनाओं और इच्छाशक्ति—के साथ परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए।

(3) हमें "मिलकर" परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए (भजन संहिता 34:3)।

इसका अर्थ है "सामूहिक स्तुति"। दाऊद ने दूसरों को—खासकर उन्हें जो वैसी ही तकलीफ का सामना कर रहे थे जैसी वह कर रहा था—परमेश्वर की स्तुति में शामिल होने के लिए बुलाया, न कि अकेले ऐसा करने के लिए। उसने यह अनुरोध क्यों किया? पहला, क्योंकि उसकी अपनी आत्मा को पूरी तरह जागने और अधिक जोश के साथ परमेश्वर की स्तुति करने के लिए दूसरों के सहयोग की आवश्यकता थी; दूसरा, क्योंकि उसे मिली कृपा इतनी गहरी थी कि वह दिल से चाहता था कि दूसरे भी धन्यवाद देने में शामिल हों; तीसरा, क्योंकि उसे मिली कृपा दूसरे विश्वासियों के लिए भी फायदेमंद थी; और चौथा, क्योंकि दूसरे विश्वासियों को भी वैसी ही कृपा पाने की उम्मीद थी (पार्क युन-सन)।

यहाँ तक कि जब हम ऐसी परिस्थितियों में होते हैं जहाँ परमेश्वर की स्तुति करना मुश्किल लगता है, तब भी यीशु मसीह के ज़रिए परमेश्वर द्वारा दी गई उद्धार की कृपा का विचार ही हमें अपनी आत्मा से उनकी स्तुति करने में सक्षम बनाना चाहिए। खासकर, प्रभु की प्रेमपूर्ण दया और सच्चाई पर भरोसा करते हुए, और इस बात का यकीन रखते हुए कि हर स्थिति में परमेश्वर की भलाई की इच्छा पूरी हो रही है (रोमियों 8:28), हमें अपनी स्तुति के ज़रिए महान प्रभु को महिमा देनी चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो तेज से ढके हुए लोगों के रूप में, हम इस अंधेरी दुनिया में यीशु मसीह की ज्योति को चमका सकते हैं।

दूसरा, तेज से ढके हुए लोग परमेश्वर से विनती करते हैं (भजन संहिता 34:4-6)। भजन संहिता 34:4-6 में, दाऊद ने परमेश्वर से अपनी प्रार्थना का वर्णन तीन अलग-अलग शब्दों का इस्तेमाल करके किया है:

(1) “खोजा” (या “मांगा”)

आज के वचन, भजन संहिता... भजन संहिता 34:4 को देखें: "मैंने यहोवा को खोजा, और उसने मुझे उत्तर दिया और मुझे मेरे सभी डरों से छुटकारा दिलाया।" यहाँ, "खोजा" शब्द का अर्थ है परमेश्वर को पाने के लिए सच्चे मन से कोशिश करना (पार्क युन-सन)। यह लगातार और पूरे जोश के साथ परमेश्वर से प्रार्थना करने की क्रिया को दर्शाता है (पार्क युन-सन)।

(2) "उसकी ओर देखा"

आज के वचन, भजन संहिता 34:5 को देखें: "उन्होंने उसकी ओर देखा और उनके चेहरे चमक उठे, और उनके चेहरे कभी शर्मिंदा नहीं होंगे।" यहाँ, "उसकी ओर देखा" वाक्यांश का अर्थ है परमेश्वर की ओर देखना और साथ ही पूरे जोश के साथ उसके उद्धार को खोजना। अगर हम इस जटिल और धोखे से भरी दुनिया में अपनी नज़रें सिर्फ़ प्रभु पर नहीं टिकाते हैं, तो हम निश्चित रूप से उन सभी प्रलोभनों और भ्रमों का शिकार हो जाएँगे (पार्क युन-सन)। जो लोग प्रभु की ओर देखते हैं—यानी, जो सच्चे मन से उसके उद्धार को खोजते हुए उसकी ओर देखते हैं—वे शर्मिंदा नहीं होंगे।

(3) "पुकारा"

आज के वचन, भजन संहिता 34:6 को देखें: "इस गरीब आदमी ने पुकारा, और यहोवा ने उसकी सुनी और उसे उसकी सभी परेशानियों से बचाया।" यहाँ "पुकारने" शब्द का अर्थ है ज़ोर से आवाज़ उठाकर परमेश्वर से सच्ची विनती करना। ऐसी प्रार्थना इसलिए मूल्यवान नहीं है कि आवाज़ कितनी तेज़ है, बल्कि इसलिए कि दिल कितना सच्चा है (पार्क युन-सन)।

जब दाऊद ने सच्चे मन से परमेश्वर को खोजा, पूरे जोश के साथ उसके उद्धार की तलाश की, और प्रभु पर अपनी नज़रें टिकाकर उसे पुकारा, तो उसे प्रार्थना का क्या उत्तर मिला? वह यह था कि परमेश्वर ने दाऊद को "सभी डरों" (वचन 4) और "सभी परेशानियों" (वचन 6) से छुटकारा दिलाया। यह हमें सिखाता है कि प्रार्थना बहुत शक्तिशाली है। जब हम प्रार्थना करते हैं, तो परमेश्वर हमें हर डर से अंदरूनी तौर पर छुटकारा

दिलाता है। नतीजतन, वह हमें दुश्मनों या हालात से डरने नहीं देता, बल्कि हमें ऐसे लोगों के रूप में स्थापित करता है जो परमेश्वर का भय मानते हैं (वचन 7)। इसके अलावा, जब हम प्रार्थना करते हैं, तो परमेश्वर हमें बाहरी तौर पर सभी परेशानियों से छुटकारा दिलाता है। हमारा परमेश्वर उद्धार देने वाला परमेश्वर है। जो लोग परमेश्वर की महिमा करते हैं और उन्हें पुकारते हैं, वे ही तेजस्वी होते हैं। ऐसे लोगों को परमेश्वर से छुटकारा मिलता है। वे हर तरह के डर और मुश्किलों के बीच परमेश्वर के उद्धार की कृपा का अनुभव करते हैं। इसलिए, इस अंधेरी दुनिया में रहते हुए, हमें तेजस्वी लोगों की तरह नम्रता से परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। इस विश्वास के साथ कि सभी अच्छी चीज़ें परमेश्वर से ही मिलती हैं, हमें उनके महान और पवित्र नाम की महिमा करनी चाहिए। हमें हमेशा परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए—और पूरे मन से उनकी स्तुति करनी चाहिए—और साथ ही यीशु मसीह के क्रूस की कृपा पर मनन करना चाहिए। हमें अपने भाई-बहनों के साथ मिलकर भी परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। हमें प्रार्थना करनी चाहिए; हमें सच्चे मन से परमेश्वर को खोजना चाहिए और उद्धार की चाहत के साथ उन्हें पुकारना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर उन लोगों की विनती सुनते हैं जो उनसे डरते हैं और हमें हर तरह के डर और मुसीबत से छुटकारा दिलाते हैं।

"हे मेरे मन, परमेश्वर की स्तुति कर। हे मेरे मन, परमेश्वर से प्रार्थना कर।"

“प्रभु का भय मानो”

[भजन संहिता 34:8-14]

सच में खुश मसीही कौन है? व्यवस्थाविवरण 10:12-13 हमें बताता है कि परमेश्वर हमें अपनी खुशी के लिए अपने नियमों का पालन करने का आदेश देते हैं। इन्हीं आदेशों में से एक आमोस 5:14-15 में मिलता है: बुराई से नफ़रत करना और भलाई से प्यार करना। फिर भी, हम अक्सर बुराई को बुराई के रूप में पहचान नहीं पाते। नतीजतन, बुराई से नफ़रत करने के बजाय, हम कभी-कभी ऐसे जीते हैं जो हमारी पापी इच्छाओं को संतुष्ट करते हैं—ऐसी इच्छाएँ जो असल में बुराई चाहती हैं। बाइबल क्या कहती है? यह कहती है, “प्रभु का भय मानना बुराई से नफ़रत करना है...” (नीतिवचन 8:13)। हमें परमेश्वर के भय में जीना चाहिए।

आज, मुझे एक ऑनलाइन लेख मिला जो *A Heart That Fears God* (परमेश्वर का भय मानने वाला हृदय) नामक किताब पढ़ने के बाद लेखक द्वारा लिखा गया था। लेख की एक खास बात ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया। संक्षेप में, लेखक को एहसास हुआ कि परमेश्वर का भय मानने का मतलब है पाप से नफ़रत करने के उनके नज़रिए को अपनाना; इसके अलावा, परमेश्वर सिर्फ़ एक ऐसे न्यायकर्ता नहीं हैं जो हमारे पापों के लिए हमें सज़ा देते हैं और अनुशासित करते हैं, बल्कि वे ऐसे हैं जो हमारे पाप करने पर किसी और से ज़्यादा दुख सहते हैं। यहाँ लेख के कुछ वाक्य दिए गए हैं: “इस तरह परमेश्वर के हृदय को समझने पर, मेरी तुरंत प्रतिक्रिया पाप के प्रति सच्ची नफ़रत और घृणा थी। यह पाप के परिणामस्वरूप मिलने वाली सज़ा का डर नहीं था, बल्कि मेरे अंदर पाप के प्रति ही गहरी नफ़रत पैदा हुई थी” (इंटरनेट)। क्या हम पाप के प्रति ऐसी नफ़रत विकसित कर रहे हैं? अगर हम “हाँ” में जवाब देते हैं, तो हमें खुद से पूछना चाहिए कि क्या यह

भावना इस एहसास से पैदा होती है कि हमारे स्वर्गीय पिता हमारे किए गए पापों से दुखी होते हैं, न कि सिर्फ़ इस बात से कि परमेश्वर ने हमें अनुशासित किया है।

आज, भजन संहिता 34:8–14 और "प्रभु का भय मानो" विषय पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन लोगों की चार विशेषताओं पर विचार करना और उनसे सीखना चाहूँगा जो सच में परमेश्वर का भय मानते हैं।

पहला, जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, वे उसमें शरण लेते हैं।

भजन संहिता 34:8 को देखें: "चखकर देखो कि प्रभु भला है; धन्य है वह जो उसमें शरण लेता है।" यहाँ, "परमेश्वर की शरण लेने" का मतलब है परमेश्वर पर भरोसा करना, अपनी उम्मीदें सिर्फ़ उन्हीं पर टिकाना और उनकी आज्ञा मानना (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, जो व्यक्ति परमेश्वर से डरता है, वह उन पर भरोसा करता है, अपनी उम्मीदें सिर्फ़ प्रभु पर टिकाता है और उनकी आज्ञाओं का पालन करता है। ऐसा व्यक्ति परमेश्वर की भलाई का अनुभव करता है; यानी, जो लोग परमेश्वर की शरण लेते हैं, वे उनकी भलाई को महसूस करते हैं। दाऊद ने भजन संहिता 31:19 में उन लोगों के बारे में ऐसी ही बात कही थी जो प्रभु से डरते हैं और उनकी शरण लेते हैं: "तेरी भलाई कितनी महान है, जो तूने उन लोगों के लिए रखी है जो तुझसे डरते हैं, और जो तूने उन लोगों को सबके सामने दी है जो तेरी शरण लेते हैं!" उनकी सुरक्षा (5:11) के अलावा, जो लोग परमेश्वर की शरण लेते हैं, उन पर परमेश्वर की महान कृपा यह भी है कि वे उनके उद्धार और उनके "अद्भुत अटूट प्रेम" (17:7) का अनुभव करते हैं। दाऊद ने न केवल परमेश्वर के अटूट प्रेम का, बल्कि उनकी भलाई का भी अनुभव किया।

क्या आपने कभी परमेश्वर की भलाई का अनुभव किया है? मैंने अपनी शादी के दौरान परमेश्वर की भलाई का अनुभव किया। परमेश्वर की अगुवाई से ही मैं अपनी पत्नी से मिला, और जब हमने अपनी शादी की रस्म उन्हें समर्पित की—उनके महान प्रेम और कृपा के सहारे—तो उन्होंने मुझे आज के पाठ से भजन संहिता 34:8 का वचन दिया। मैंने सचमुच अनुभव किया कि हमारा परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो सब कुछ हमारी भलाई के लिए करता है (रोमियों 8:28)। हमारा परमेश्वर सचमुच एक भला परमेश्वर है; वह दया और भलाई करने वाला परमेश्वर है। इसलिए, हमें उन पर भरोसा करना चाहिए। अपनी उम्मीदें सिर्फ़ उन पर

टिकाने और उनके वचन का पालन करने से हमें सच्चा आशीष मिलता है। परमेश्वर के वचन का पालन करना हमारे लिए आशीष कैसे बनता है? जो लोग परमेश्वर से डरते हैं वे उनकी शरण लेते हैं, और जो उनकी शरण लेते हैं वे उनकी भलाई का अनुभव करते हैं। उस दिव्य भलाई का अनुभव करने के लिए, हमें परमेश्वर पर भरोसा करना होगा, अपनी उम्मीदें सिर्फ़ उन पर टिकानी होंगी और उनके वचन का पालन करना होगा। ऐसा जीवन हमारे लिए एक आशीषपूर्ण जीवन है।

दूसरी बात, जो लोग परमेश्वर से डरते हैं, उन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं होती। भजन संहिता 34:9–10 को देखिए: "हे प्रभु के पवित्र लोगों, उसका भय मानो, क्योंकि जो उसका भय मानते हैं, उन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं होती। शेर कमज़ोर और भूखे हो सकते हैं, लेकिन जो प्रभु की खोज करते हैं, उन्हें किसी अच्छी चीज़ की कमी नहीं होती।" जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, वे न केवल उसकी शरण लेते हैं बल्कि उसकी खोज भी करते हैं। खतरे के समय, जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, वे पहले उसकी शरण लेते हैं और फिर उसकी खोज करते हैं। और जो प्रभु की खोज करते हैं, उन्हें "किसी अच्छी चीज़ की कमी नहीं होती" (पद 9)। शेर हिंसक जीव होते हैं जो दूसरों को नुकसान पहुँचाते हैं और लूटते हैं, इसलिए उन्हें कमी या तंगी की चिंता करने की ज़रूरत नहीं होती। कोई सोच सकता है, "एक विश्वासी जो ईमानदारी से रहता है और किसी को नुकसान नहीं पहुँचाता, उसके भूख से मरने की संभावना लगती है" (पार्क युन-सन)। फिर भी, बाइबल कहती है कि भले ही शेर भूखे रह जाएँ, लेकिन विश्वासी भूखे नहीं रहेंगे: "मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया हूँ, फिर भी मैंने कभी धर्मी को त्यागा हुआ या उनके बच्चों को रोटी के लिए भीख माँगते हुए नहीं देखा" (37:25)। जवान शेर शारीरिक भरण-पोषण (जमा किए गए राशन) के मामले में "आत्म-निर्भरता" का प्रतीक है। इसके विपरीत, जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, वे आत्म-निर्भर नहीं होते; वे अपनी बुनियादी रोज़मर्रा की ज़रूरतों के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहते हैं। प्रभु उनके साथ हैं जो उसका भय मानते हैं। उनके साथ कैसा प्रभु है? प्रभु, जो उनका चरवाहा है, उन लोगों के साथ है जो परमेश्वर का भय मानते हैं। नतीजतन, वे दाऊद की तरह ही यह कह सकते हैं: "प्रभु मेरा चरवाहा है; मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं होगी" (23:1)। क्योंकि जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, वे उसकी शरण लेते हैं और प्रभु को अपने चरवाहे के रूप में खोजते हैं—और इस तरह उसकी भरपूर आपूर्ति का अनुभव करते हैं—इसलिए उन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं होती। परमेश्वर उन लोगों के लिए अपनी भरपूर कृपा जमा करके रखता है जो उसका भय मानते हैं और

जो उसकी खोज करते हैं, उन पर वह इसे उदारतापूर्वक बरसाता है (31:19)। इसलिए, जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं और उसकी खोज करते हैं, उन्हें किसी कमी का अनुभव नहीं होता।

तीसरी बात, जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, वे धन्य हैं।

भजन संहिता 34:12 को देखिए: "वह कौन मनुष्य है जो जीवन की इच्छा रखता है और बहुत से दिन जीना चाहता है, ताकि वह भलाई देख सके?" यहाँ किस आशीष की बात की गई है? यह जीवन की इच्छा के अलावा और कुछ नहीं है—खासकर, लंबी उम्र की आशीष। यहाँ इस्तेमाल किए गए शब्द "जीवन" और "लंबा जीवन" का वही मतलब है जो "अनंत जीवन" का है—एक ऐसा विचार जिसे नए नियम (New Testament) में साफ़ तौर पर बताया गया है (जे. रिडरबोस, पार्क युन-सन)। दाऊद ने खतरों के बीच और बिना किसी कमी के परमेश्वर में शरण लेते हुए अपने शिष्यों ("छोटे बच्चों") को परमेश्वर का भय मानना सिखाया (पद 11)। एक शिक्षक के तौर पर दाऊद जो सबक सिखाना चाहते थे, वह सभी चीज़ों के सबसे बुनियादी पहलू से जुड़ा था: जीवन का अर्थ। वह अर्थ जीवन और लंबी उम्र की चाहत में है—दूसरे शब्दों में, आशीष पाने की चाहत में (पद 12)। खुद इस संतुष्टि का पूरा अनुभव करने के बाद, दाऊद ने अपने शिष्यों को सिखाया ताकि वे भी अपने जीवन में ऐसी संतुष्टि का आनंद ले सकें। उनकी शिक्षा बताती है कि परमेश्वर के मकसद को समझकर और उसके अनुसार सही और उचित ढंग से जीकर इस आशीष—जीवन के सच्चे अर्थ—को कैसे पाया जाए। परमेश्वर के मकसद के अनुसार सही ढंग से जिया गया जीवन वह है जो परमेश्वर का भय मानकर उसकी महिमा करता है; यह भय उसकी स्तुति करने और उससे विनती करने से ज़ाहिर होता है (पद 1–7)। इसके अलावा, दाऊद परमेश्वर के मकसद के अनुसार सही ढंग से जीने के लिए दो खास निर्देश देते हैं (पद 13–14): (1) हमें अपनी ज़बान पर काबू रखना चाहिए और अपने होंठों को झूठ बोलने से रोकना चाहिए (पद 13); और (2) हमें बुराई से दूर रहना चाहिए, भलाई करनी चाहिए, और शांति की खोज करके उसे अपनाना चाहिए (पद 14)। हमें ऐसा जीवन जीकर परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए जिसमें उसका भय हो, उसकी स्तुति हो और उससे विनती की जाए। अपनी बोली पर काबू रखकर, बुराई से दूर रहकर और भलाई करके, हमें उस अनंत जीवन की आशीष का आनंद लेने के लिए जीना चाहिए जो परमेश्वर देता है। चौथी बात, जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, वे बुराई से दूर रहते हैं और भलाई करते हैं।

भजन संहिता 34:14 को देखें: "बुराई से दूर रहो और भलाई करो; शांति की खोज करो और उसे अपनाओ।" यह पद पद 12 में पूछे गए सवाल का एक जवाब देता है: "वह कौन सा मनुष्य है जो जीवन चाहता है और लंबे दिनों तक जीना चाहता है, ताकि वह भलाई देख सके?" दूसरे शब्दों में, जो कोई भी आशीषों से भरा जीवन—लंबा और खुशहाल—चाहता है, उसे परमेश्वर का भय मानना चाहिए, और इस तरह बुराई से दूर रहकर भलाई करनी चाहिए। नीतिवचन 8:13 के पहले हिस्से पर गौर करें: "यहोवा का भय मानना बुराई से नफ़रत करना है..." जो लोग परमेश्वर का डर मानकर बुराई से दूर रहते हैं, वे बुद्धिमान हैं (नीतिवचन 14:16)। दाऊद कहते हैं कि जो व्यक्ति परमेश्वर का डर मानता है, वह बुराई से मुड़ जाता है (एक निष्क्रिय काम) और सक्रिय रूप से भलाई करता है (भजन संहिता 34:14)। यहाँ, "भलाई करने" का अर्थ है "शांति की खोज करना और उसे बनाए रखना।" तो, हम शांति की खोज और उसे बनाए रखने का काम कैसे करें? इसका जवाब हमें आज के वचन, भजन संहिता 34:13 में मिलता है: "अपनी जीभ को बुराई से और अपने होंठों को छल-कपट वाली बातें बोलने से रोके रखो।" इसका मतलब है कि हमें होंठों से किए जाने वाले पापों से बचना चाहिए—जैसे बुरी बातें कहना, बददुआ देना, चापलूसी करना, चुगली करना, राज़ खोलना और झूठ बोलना (पार्क युन-सन)। कलीसियाई समुदाय में शांति की खोज करने और उसे बनाए रखने के लिए, हमें अपनी ज़बान पर काबू रखना होगा। खुद पर काबू न रखने से कलीसिया की शांति भंग होती है। इसका कारण यह है कि अगर जीभ का गलत इस्तेमाल किया जाए, तो वह "एक बेकाबू बुराई बन जाती है, जो जानलेवा ज़हर से भरी होती है" (याकूब 3:8)।

जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, वे सचमुच खुश रहते हैं। परमेश्वर की शरण में जाकर, वे उसकी भलाई का अनुभव करते हैं और उसकी उस भरपूर कृपा का आनंद लेते हैं जो उसने उनके लिए रखी है। उन्हें न केवल परमेश्वर की सुरक्षा और उद्धार मिलता है, बल्कि वे उसके अद्‌भुत प्रेम का अनुभव भी करते हैं। परमेश्वर पर भरोसा रखकर और उम्मीद के साथ उसकी आज्ञाओं का पालन करके, उन्हें ताकत मिलती है। क्योंकि प्रभु—जो उनका चरवाहा है—उनके साथ है, इसलिए जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, उन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं होती। वे बुराई से दूर रहते हैं, भलाई करते हैं, और शांति की खोज करते हैं; इस तरह, वे अपनी ज़बान को बुराई बोलने से रोकते हैं। सचमुच, जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, वे सचमुच खुश रहते हैं।

“नेक लोगों को कई मुसीबतों का सामना करना पड़ता है”

[भजन संहिता 34:15–22]

क्या आपको लगता है कि दुख हल्का हो सकता है? अगर आप इस सवाल का जवाब “हाँ” में देते हैं, तो आपको क्या लगता है कि यह कैसे मुमकिन है? पादरी किम नाम-जुंग के इन शब्दों को पढ़कर मुझे इसका जवाब मिला कि दुख कैसे हल्का हो सकता है:

“नेक लोगों के दुख से दुनिया के पाप की गहराई और भी साफ़ हो जाती है। ... नेक लोगों का सहा हुआ दुख दुनिया के पापों के प्रायश्चित का अर्थ रखता है। यह इंसानी भावना, अंतर्ज्ञान और पक्का विश्वास है कि बुराई की सज़ा ज़रूर मिलनी चाहिए। फिर भी, पूरी दुनिया बुराई से भरी हुई है। अगर ऐसा है, तो क्या इस दुनिया को खत्म नहीं हो जाना चाहिए? दुनिया अपनी बुराई के बावजूद खत्म नहीं होती, क्योंकि कोई उसकी तरफ़ से पाप की कीमत चुकाता है। नेक लोगों के दुख का यही मतलब है। नेक लोगों के दुख में दुनिया के पापों को सहना और उनकी कीमत चुकाना शामिल है। चाहे नेक इंसान ने ऐसा जान-बूझकर किया हो या नहीं, वे प्रायश्चित के बलिदान की भूमिका निभाते हैं। इस तरह, नेक लोग दुनिया को बचाते हैं। नेक लोगों को कई मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। फिर भी, जो दुख वे नहीं चाहते थे, वही दुनिया को बचाने का ज़रिया बन जाता है” (किम नाम-जुंग)।

हमारा दुख तब हल्का हो सकता है जब हम यीशु पर ध्यान दें और उनके बारे में सोचें—परमेश्वर का मेमना, जिसने अपने दुख के बीच दुनिया के पाप उठाए। दूसरे शब्दों में, हमारा दुख तब हल्का हो सकता है जब हम अपनी मुश्किलों के बीच यीशु के बारे में सोचें—जिन्होंने हमारे लिए कीमत चुकाने के लिए दुख सहा और अपनी जान भी दी—और जब हम भी किसी और के पाप की कीमत चुकाएँ, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने किया

था। मेरा मानना है कि दुख दो तरह के होते हैं। दुख के दो प्रकार हैं: पहला अपने ही पाप का नतीजा है, और दूसरा अपने पाप की वजह से नहीं, बल्कि प्रभु के दुख में हिस्सेदारी है। यह दुख—प्रभु के दुख में शामिल होना—परमेश्वर की ओर से एक अनुग्रह है (फिलिप्पियों 1:29)। जो लोग इस अनुग्रह का आनंद लेना जानते हैं, उनके लिए दुख हल्का हो जाता है; ऐसा इसलिए है क्योंकि वे उस दुख में छिपे अनुग्रह का अनुभव कर रहे होते हैं। असल में, वह अनुग्रह परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव है। भजन संहिता 34:15–22 के आज के अंश में, हम देखते हैं कि भजनकार दाऊद अपनी तकलीफों के बीच परमेश्वर की इस कृपा का अनुभव कर रहा है। वह कहता है, "धर्मी पर बहुत सी विपत्तियाँ आती हैं..." (पद 19)। इस पद और "धर्मी पर बहुत सी विपत्तियाँ आती हैं" विषय पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उस परमेश्वर के तीन पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ जिनसे धर्मी लोग अपनी तकलीफों में मिलते हैं। मेरी प्रार्थना है कि हम भी अपनी मुश्किलों के बीच परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करने की कृपा पाएँ।

पहला, तकलीफ में धर्मी लोग जिस परमेश्वर से मिलते हैं, वह टूटे हुए मन वालों के करीब आने वाला परमेश्वर है।

भजन संहिता 34:18 को देखें: "यहोवा टूटे हुए मन वालों के पास रहता है और जिनका मन कुचला हुआ है, उन्हें बचाता है।" दाऊद अपनी तकलीफ में जिस परमेश्वर से मिला, वह टूटे हुए मन वालों के करीब आने वाला परमेश्वर था। दाऊद का मन क्यों टूटा हुआ था? उसका मन क्यों कुचला हुआ था? ऐसा लगता है कि इसका कारण यह था कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था। बेशक, यह पाठ ठीक-ठीक नहीं बताता कि दाऊद ने कौन सा पाप किया था। मुझे नहीं पता कि तकलीफ के समय "पागलपन का नाटक करना"—यानी झूठ बोलना या बुराई को दूर करने के बजाय अपने होंठों से पाप करना (पद 13–14)—उसके लिए पाप था या नहीं। फिर भी, एक बात निश्चित है: दाऊद, जो एक धर्मी व्यक्ति था, अपनी कई विपत्तियों के बीच मन से बहुत दुखी था (पद 18)। अपनी तकलीफ के बीच, उसका मन सचमुच पछतावे से भरा था। परमेश्वर इसी बलिदान को चाहता है। भजन संहिता 51:17 को देखें: "परमेश्वर को जो बलिदान चाहिए, वह है टूटा हुआ मन; हे परमेश्वर, तू टूटे और पछतावे से भरे मन को तुच्छ नहीं जानेगा।" हमारे दिलों का टूटना ज़रूरी है—या दूसरे शब्दों में कहें तो, चकनाचूर होना ज़रूरी है। जैसे खेती के लिए परती ज़मीन को जोतना या तोड़ना पड़ता है, वैसे ही हमारे कठोर, न झुकने वाले दिलों को तोड़ने की ज़रूरत है। चाहे परमेश्वर की डांट

के ज़रिए हो या उसकी ताड़ना के ज़रिए—जैसे तकलीफ और दर्द के माध्यम से—हमारे दिलों को इस टूटने की प्रक्रिया से गुज़रना होगा। फिर भी, हम अक्सर इस ज़रूरत को नहीं समझ पाते क्योंकि हम पाप को पाप नहीं मानते, या हम अपने पापों को स्वीकार करने के बजाय परमेश्वर से छिपाते हैं। हमें अपने पापों को छिपाना बंद करना चाहिए और उन्हें परमेश्वर के सामने स्वीकार करना चाहिए। जब हमारा मन हमें दोषी ठहराए और हमारा दिल टूट जाए, तो हमें परमेश्वर की दया और करुणा की तलाश करनी चाहिए।

यशायाह 57:15 में पछतावा करने वाले दिल और नम्र आत्मा को एक समान बताया गया है; दूसरे शब्दों में, नम्र लोग ही पछतावा करने वाले होते हैं। हमारे प्रभु नम्र लोगों के—यानी टूटे हुए दिल या पछतावे से भरी आत्मा वाले लोगों के—पास आते हैं और उनके दिलों में नई जान डालते हैं। वे न केवल हमारे पछतावे से भरे दिलों को जीवित करते हैं, बल्कि वे ऐसे परमेश्वर हैं जो "टूटे हुए दिलों को चंगा करते हैं और उनके घावों पर पट्टी बांधते हैं" (भजन संहिता 147:3)। गॉस्पेल गीत "टू द ब्रोकनहार्टेड" (टूटे हुए दिलों के लिए) बताता है कि परमेश्वर मुश्किलों में घिरे लोगों के पास आते हैं और हमें एक सीख देते हैं: "वे टूटे हुए दिलों के पास आते हैं और सच में पछतावा करने वालों को बचाते हैं; धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि प्रभु उन्हें सांत्वना देंगे; प्रेम के परमेश्वर घमंडी लोगों से दूर रहते हैं और शोक मनाने वालों को सांत्वना देते हैं..." "वे तलाश कर रहे हैं: कौन प्रभु और अपने पड़ोसी के लिए दुख का प्याला साझा करेगा? ऐसी कौन सी चीज़ है जो आपको इतनी खुशी देती है कि आप मुस्कुरा रहे हैं, जबकि प्रभु खोए हुए लोगों के लिए रो रहे हैं?"

दूसरी बात, जिस परमेश्वर से नेक लोग दुख के समय में मिलते हैं, वे उनकी पुकार सुनते हैं।

भजन संहिता 34:15 और 17 को देखें: "प्रभु की नज़र नेक लोगों पर होती है, और उनके कान उनकी पुकार सुनते हैं... नेक लोग पुकारते हैं, और प्रभु सुनते हैं और उन्हें उनकी सभी मुश्किलों से बचाते हैं।" निर्गमन 3:7 में, मूसा ने इस्राएल के परमेश्वर का वर्णन इस प्रकार किया है: "प्रभु ने कहा, 'मैंने निश्चित रूप से मिस्र में अपने लोगों की पीड़ा देखी है, और काम करवाने वालों के कारण उनकी पुकार सुनी है, क्योंकि मैं उनके दुखों को जानता हूँ।'" साफ़ है कि इस्राएल के परमेश्वर—हमारे परमेश्वर—ऐसे परमेश्वर हैं जो नेक लोगों के दुख को देखते हैं और उनके पुकारने पर उनकी प्रार्थनाएँ सुनते हैं। दाऊद ने पहले ही भजन संहिता 34:4

और 6 में स्वीकार किया था कि हमारे परमेश्वर हमारी प्रार्थना का उत्तर देने वाले परमेश्वर हैं—वे हमारी पुकार सुनते हैं जब हम मुसीबत में होते हैं और उन्हें बुलाते हैं। आज हम भजन संहिता 34 के जिस हिस्से पर बात कर रहे हैं, उसमें दाऊद बार-बार—चार बार (पद 4, 6, 15 और 17)—प्रार्थना के बारे में बताते हैं। इससे पता चलता है कि बहुत ज़्यादा तकलीफ़ के समय में भी वे लगातार या पूरे दिल से प्रार्थना कर रहे हैं। जब हम बहुत ज़्यादा तकलीफ़ में होते हैं, तो हम परमेश्वर से कई बार या और भी ज़्यादा लगन से प्रार्थना करते हैं। तकलीफ़ का सामना करते समय जीत का यही राज़ है: परमेश्वर से पुकारना। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हमारी पुकार पर कान लगाते हैं (भजन संहिता 34:15)।

अगर परमेश्वर हमारी पुकार सुनते हैं, तो कोई सोच सकता है कि क्या ऐसी भी कोई प्रार्थना है जिसे वे नहीं सुनते? फिर भी, कुछ ऐसी प्रार्थनाएँ हैं जिन्हें परमेश्वर सुनते तो हैं, लेकिन उनका जवाब नहीं देते। ये वे प्रार्थनाएँ हैं जो सच्चे पछतावे और पश्चाताप वाले दिल से नहीं की जातीं: "देखो, यहोवा का हाथ इतना छोटा नहीं हो गया है कि वह बचा न सके; और न ही उसका कान इतना भारी हो गया है कि वह सुन न सके। लेकिन तुम्हारे पापों ने तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है; और तुम्हारे पापों ने उससे तुम्हारा मुँह छिपा लिया है, इसलिए वह नहीं सुनेगा।" "...तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है" (यशायाह 59:1-2)। इस सच्चाई से हमें यह सीख मिलती है कि चाहे हम कितनी भी लगन से परमेश्वर को पुकारें, अगर हमारा दिल विनम्र नहीं है और उसमें सच्चा पछतावा नहीं है, तो वह हमारी प्रार्थनाएँ नहीं सुनेंगे। इसीलिए पश्चाताप की प्रार्थना बहुत ज़रूरी है। इसलिए, हमें पवित्र परमेश्वर के पास जाना चाहिए, सच्चे पछतावे वाले दिल से अपने पापों के लिए माफ़ी माँगनी चाहिए, और फिर उसकी बचाने वाली कृपा पर भरोसा रखते हुए अपनी विनती करनी चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारा परमेश्वर हमारी विनती ज़रूर सुनता है।

तीसरी बात, दुख के समय नेक लोगों को जिस परमेश्वर का अनुभव होता है, वही उन्हें उनकी सभी तकलीफों से बचाता है।

भजन संहिता 34:17, 19 और 22 पर ध्यान दें: “नेक लोग पुकारते हैं, और प्रभु उनकी सुनता है; वह उन्हें उनकी सभी मुसीबतों से बचाता है... नेक इंसान पर कई मुसीबतें आ सकती हैं, लेकिन प्रभु उसे उन सबसे बचाता है... प्रभु अपने सेवकों को बचाएगा; जो कोई उसकी शरण में आता है, उसे दोषी नहीं ठहराया जाएगा।”

हमारा परमेश्वर वह है जो हमारी पुकार सुनता है और हमें हर मुश्किल से बचाता है, जब हम सच्चे मन से पछतावा करके उद्धार की कृपा और छुटकारा पाने की विनती करते हैं। अद्भुत सच्चाई यह है कि परमेश्वर का उद्धार निश्चित और स्पष्ट है। पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि जब हम उसे पुकारते हैं, तो हमारा परमेश्वर हमें हमारे "सभी डरों" से बचाता है (पद 4)। वह वह परमेश्वर है जो हमें हमारी "सभी मुसीबतों" से बचाता है (पद 6)। वह वह परमेश्वर है जो हमें हमारी "सभी मुसीबतों" से बचाता है (पद 17); भले ही नेक लोगों को कई तकलीफों का सामना करना पड़े, परमेश्वर हमें "उन सबसे" बचाता है (पद 19)। संक्षेप में, हमारा परमेश्वर यह पक्का करता है कि जो लोग उसे खोजते हैं—जो उसे पुकारते हैं—उन्हें किसी भी अच्छी चीज़ की कमी नहीं होती (पद 10)।

परमेश्वर हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है और टूटे हुए दिल वालों को बचाता है; ऐसा करते हुए, वह दुष्टों का विनाश करता है। दूसरे शब्दों में, वह दुष्टों का विनाश करके नेक लोगों को बचाता है (पद 16)। परमेश्वर नेक लोगों के उद्धार के द्वारा अपनी पवित्रता प्रकट करता है। इसलिए, दुष्ट लोग उसकी पवित्र उपस्थिति में खड़े नहीं हो सकते। परमेश्वर इस दुनिया से बुरे काम करने वालों का नामो-निशान मिटा देता है। आखिरकार, दुष्ट लोग अपनी ही बुराई से नष्ट हो जाते हैं: "बुराई दुष्टों को मार डालेगी; नेक लोगों के दुश्मनों को दोषी ठहराया जाएगा" (पद 21)। फिर भी, हमारा परमेश्वर निश्चित रूप से नेक लोगों की रक्षा करता है: "वह उसकी सभी हड्डियों की रक्षा करता है; उनमें से एक भी नहीं टूटेगी" (पद 20)। परमेश्वर हमारी तकलीफ के समय हमारी देखभाल करता है और आखिरकार हमें बचाता है।

नेक लोगों को कई मुसीबतों का सामना करना पड़ता है, लेकिन उस दुख के बीच मिलने वाला आशीर्वाद परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव है। वह ऐसे परमेश्वर हैं जो टूटे हुए दिल वालों के करीब आते हैं, पुकारने वालों की प्रार्थना सुनते हैं और उन्हें उनकी सभी तकलीफों से छुटकारा दिलाते हैं। जो नेक लोग इस परमेश्वर का अनुभव करते हैं, उनके लिए दुख हल्का हो जाता है, क्योंकि यीशु उनका बोझ उठा लेते हैं। जब हम यीशु को देखते हैं, जिन्होंने हमारी जगह दुख सहा, तो हम परमेश्वर पिता के बारे में सोचे बिना नहीं रह सकते—जिन्होंने टूटे हुए दिल वाले यीशु से मुँह मोड़ लिया और उन्हें अकेला छोड़ दिया। सच तो यह है कि परमेश्वर पिता ने क्रूस पर यीशु की पुकार का जवाब नहीं दिया, और न ही उन्हें बचाया। परमेश्वर पिता ने टूटे हुए दिल

वाले यीशु को क्यों अकेला छोड़ दिया और क्रूस पर उनकी प्रार्थना का जवाब देकर उन्हें बचाने से क्यों इनकार किया? यह सब हमारे पापों के कारण हुआ। यीशु ने हमारे पाप अपने ऊपर लिए, क्रूस पर मरे और उन सभी पापों को धो डाला। इसलिए, हमें हमारी सभी मुश्किलों, परेशानियों और डरों से छुटकारा दिलाकर, वह हमें हर अच्छी चीज़ से नवाज़ रहे हैं (भजन संहिता 34:10; इफिसियों 1:4)। इस तरह, हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए (भजन संहिता 34:1–3)।

उन्हें हवा में उड़ते भूसे जैसा बना दें!

[भजन संहिता 35:1-8]

कल, हमारी चर्च जिस प्रेस्बिटरी (धार्मिक परिषद) का हिस्सा है, उसकी एक बैठक में कई पादरियों—जिनमें मैं भी शामिल था—ने उन दो प्रचारकों में से एक के उपदेश पर चर्चा की जो पादरी बनने के लिए लाइसेंस पाना चाहते थे। उस प्रचारक ने आध्यात्मिक युद्ध के बारे में बात की, और बाइबल की एक खास आयत—इफिसियों 6:12—जिसका उन्होंने ज़िक्र किया, उसने मुझे गहराई से सोचने पर मजबूर कर दिया। मेरे मन में यह सवाल उठा: क्या मेरी लड़ाई (या "संघर्ष") "मांस और लहू" (इंसानों) के खिलाफ है, या यह "अधिकारों, शक्तियों, इस दुनिया के अंधकार के शासकों और स्वर्गीय स्थानों में दुष्टता की आत्मिक सेनाओं" के खिलाफ है? दूसरे शब्दों में, मैं यह सोचने लगा कि क्या मेरी लड़ाई शारीरिक है या आध्यात्मिक। फिर भी, मुझे एहसास हुआ कि मैं आध्यात्मिक युद्ध के बजाय शारीरिक लड़ाइयों पर ज़्यादा ध्यान दे रहा हूँ और अपनी ज़्यादा ऊर्जा उन्हीं में लगा रहा हूँ। यह इस बात का सबूत है कि मैं आध्यात्मिक रूप से जागृत नहीं हूँ। "द क्रिश्चियन लाइफ़ एज़ स्पिरिचुअल वॉरफेयर" (आध्यात्मिक युद्ध के रूप में मसीही जीवन) नाम के एक लेख में, पादरी किम नाम-जून उन मसीहियों के बारे में बताते हैं जो आध्यात्मिक 'रतौंधी' (night blindness) से पीड़ित हैं: "रतौंधी—यानी अंधेरे में चीज़ों को न देख पाना—एक ऐसी स्थिति है जिसमें इंसान अंधेरे में रास्ता नहीं खोज पाता। ... मुझे दुख होता है कि आध्यात्मिक युद्ध में लगे मसीह के योद्धाओं में भी कुछ ऐसे लोग हैं जिनमें इस आध्यात्मिक रतौंधी के लक्षण दिखाई देते हैं। हमारे दुश्मन इस दुनिया के अंधकार के शासक हैं। अगर हम रतौंधी के मरीज़ों की तरह अंधेरे में फँसे रहते हैं—एक भी कदम नहीं उठा पाते और दुनियादारी के तौर-तरीकों के हिसाब से जीते हैं—तो हमारे जीतने का कोई मौका नहीं है। ऐसे अंधेरे में जहाँ हम दोस्त और दुश्मन में फ़र्क भी नहीं कर सकते, वहाँ समय को पहचानना या परमेश्वर की इच्छा को समझना नामुमकिन

है" (इंटरनेट)। यह मुझे सोचने पर मजबूर करता है कि हममें से कितने मसीही बेपरवाही से ऐसी लड़ाइयाँ लड़ रहे हैं जिन्हें हम कभी जीत ही नहीं सकते। आखिरकार, हम अक्सर लड़खड़ाकर गिर जाते हैं, हार की भावना के कारण निष्क्रिय हो जाते हैं और अंत में निराशा में हार मान लेते हैं। फिर भी, हमारे लिए उम्मीद है। वजह यह है कि प्रभु—इम्मानुएल—हमारे साथ हैं और हमारी आध्यात्मिक लड़ाइयों में सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। आज, भजन संहिता 35:1–8 पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उस परमेश्वर के दो पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ जो हमारे आध्यात्मिक युद्ध में काम करते हैं; मैं प्रार्थना करता हूँ कि मिली हुई कृपा से हमारी आध्यात्मिक आँखें खुलें और हम सभी अपनी आध्यात्मिक लड़ाइयों में विजयी हों।

सबसे पहले, जो परमेश्वर हमारी आध्यात्मिक लड़ाई में काम करता है, वही हमारी ओर से लड़ता है। भजन संहिता 35:1 देखें: "हे प्रभु, जो मुझसे लड़ते हैं, उनसे तू लड़; जो मेरे विरुद्ध लड़ते हैं, उनके विरुद्ध तू लड़।" बेरहम दुश्मनों के हाथों दुख सहते हुए, भजनकार दाऊद ने परमेश्वर से अपनी ओर से लड़ने की विनती की (पार्क युन-सन)। तो फिर, दाऊद के दुश्मन कौन थे? बाइबल उन्हें इस तरह बताती है: "जो मेरी जान लेना चाहते हैं" (वचन 4), "जो लूटते हैं" (वचन 10), "झूठे गवाह" (वचन 11), "मज़ाक उड़ाने वाले" (वचन 16), "मेरे दुश्मन" (वचन 19), "जो मुझसे नफ़रत करते हैं" (वचन 19), और "जो मेरे नुकसान पर खुश होते हैं" (वचन 26)। ऐसे बेरहम दुश्मनों से अकेले लड़ना दाऊद के लिए नादानी होती। यह समझते हुए, उसने परमेश्वर पर भरोसा किया और उनसे विनती की कि वे उसकी जगह उसके दुश्मनों से लड़ें। प्रेरित पौलुस ने भी विश्वासियों को बदला न लेने, बल्कि इसे परमेश्वर के क्रोध पर छोड़ने का आदेश दिया (रोमियों 12:19), क्योंकि बदला लेना परमेश्वर का काम है। दाऊद ने परमेश्वर पर पूरा भरोसा क्यों किया और उनसे अपनी ओर से लड़ने के लिए क्यों कहा? बाइबल कुछ कारण बताती है:

(1) क्योंकि परमेश्वर दाऊद के लिए एक पक्की ढाल है।

भजन संहिता 35:2 देखें: "ढाल और छोटी ढाल उठा; उठ और मेरी मदद के लिए आ।" यहाँ, "ढाल" का मतलब है पूरे शरीर की रक्षा के लिए बनी बड़ी ढाल, जबकि "छोटी ढाल" का मतलब है सिर की रक्षा के लिए इस्तेमाल होने वाली छोटी ढाल (पार्क युन-सन)। एक अजेय योद्धा के रूप में, परमेश्वर ने अपने प्रिय सेवक

दाऊद को पक्की सुरक्षा और बचाव दिया, जिससे दाऊद सुरक्षित महसूस कर सका। यही बात हम पर भी लागू होती है। हम भी सुरक्षा का एहसास पा सकते हैं जब—दाऊद की तरह—हम पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और उनसे अपने दुश्मनों से हमारी ओर से लड़ने की विनती करते हैं। (2) डेविड ने परमेश्वर पर पूरा भरोसा किया और उनसे अपनी जगह लड़ने को कहा, क्योंकि परमेश्वर एक "हमलावर" हैं जो उन्हें पक्की जीत दिला सकते हैं।

आज के वचन, भजन संहिता 35:3 पर ध्यान दें: "भाला निकालो और मेरा पीछा करने वालों का रास्ता रोको; मेरी आत्मा से कहो, 'मैं ही तुम्हारा उद्धार हूँ।'" आयत 2 में, डेविड "ढाल" और "बकलर" (सुरक्षा के हथियार) की बात करते हैं, लेकिन आयत 3 में वे "भाले" का ज़िक्र करते हैं, जो लड़ाई में इस्तेमाल होने वाला हमला करने का हथियार है। जब परमेश्वर अपने लोगों की ओर से लड़ते हैं, तो वे हमला करने वाले इस हथियार—भाले—को निकालते हैं ताकि डेविड का पीछा करने वालों का रास्ता रोका जा सके। यहाँ डेविड के परमेश्वर—और हमारे परमेश्वर—को एक पूरी तरह से हथियारों से लैस सैनिक के रूप में दिखाया गया है, जो ढाल और भाले दोनों के साथ तैयार है। एक बात पक्की है: क्योंकि जब परमेश्वर डेविड के लिए लड़ते हैं तो वे पूरी तरह से हथियारों से लैस होते हैं, इसलिए गलती की कोई गुंजाइश नहीं होती (पार्क युन-सन)। आखिरकार, डेविड को बचाकर, परमेश्वर चाहते थे कि बचाए गए डेविड यह स्वीकार करें, "परमेश्वर ही मेरा उद्धार हैं।" डेविड की तरह, हमें भी उस परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए जो हमारी पक्की ढाल हैं और हमें पक्की जीत दिलाते हैं, और प्रार्थना करनी चाहिए, "जो मुझसे लड़ते हैं, उनसे तू लड़; जो मेरे विरुद्ध युद्ध करते हैं, उनके विरुद्ध तू युद्ध कर" (आयत 1)। दूसरी बात, जो परमेश्वर हमारी आध्यात्मिक लड़ाई में काम करते हैं, वही हमारे दुश्मनों का विनाश भी करते हैं।

भजन संहिता 35:8 को देखें: "उन पर अचानक बर्बादी आए—जो जाल उन्होंने छिपाया था, उसी में वे फँस जाएँ; वे विनाश के गड्ढे में गिरें।" हमारे परमेश्वर हमारी ओर से लड़ते हैं और हमें हमारे दुश्मनों के हाथों से छुड़ाते (बचाते) हैं। ऐसा करते समय, हमें एक बात नहीं भूलनी चाहिए: हमारे उद्धार का मतलब है हमारे दुश्मनों का विनाश। दूसरे शब्दों में, जब परमेश्वर हमें उद्धार की कृपा देते हैं, तो वे साथ ही अपनी धार्मिकता (पवित्रता) भी प्रकट करते हैं। यह हमारे उद्धार और हमारे दुश्मनों के विनाश का मामला है। तो फिर, हमारे

दुश्मनों के प्रति परमेश्वर की धार्मिकता (पवित्रता) कैसे प्रकट होती है? हम चार बातों पर विचार कर सकते हैं:

(1) हमारे धर्मी परमेश्वर हमारे दुश्मनों को असफल करते हैं। आज के वचन, भजन 35:4 को देखें: "जो मेरी जान लेना चाहते हैं, वे शर्मिंदा और अपमानित हों; जो मेरी बर्बादी की साजिश रचते हैं, वे निराशा में पीछे हट जाएं।" यह वचन हमें सिखाता है कि हमारे दुश्मन वे हैं जो हमारी जान लेना चाहते हैं और हमें नुकसान पहुँचाने की साजिश रचते हैं। हालाँकि, हमारा परमेश्वर हमारी रक्षा करता है और हमारी ओर से हमारे दुश्मनों से लड़ता है। इसलिए, परमेश्वर उन लोगों को शर्मिंदा और अपमानित करता है जो हमारी जान लेना चाहते हैं और हमें नुकसान पहुँचाने की साजिश रचते हैं, और उन्हें निराशा में पीछे हटने पर मजबूर करता है।
(2) हमारा धर्मी परमेश्वर हमारे दुश्मनों को "हवा के सामने भूसे" जैसा बना देता है। आज के वचन, भजन 35:5 को देखें: "वे हवा के सामने भूसे की तरह हों, और प्रभु का स्वर्गदूत उन्हें दूर भगा दे।" हवा के सामने भूसा कैसा होता है? क्योंकि वह हल्का होता है, इसलिए वह निश्चित रूप से उड़ जाता है। यह आयत हमें भजन 1:4 की याद दिलाती है: "दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते, बल्कि वे उस भूसे की तरह होते हैं जिसे हवा उड़ा ले जाती है।" दुष्ट लोग न्याय और मुसीबत का सामना नहीं कर सकते (वचन 5) (पार्क युन-सन)।

(3) हमारा धर्मी परमेश्वर हमारे दुश्मनों को फिसलने पर मजबूर करता है।

आज के वचन, भजन 35:6 को देखें: "उनका रास्ता अंधेरा और फिसलन भरा हो, और प्रभु का स्वर्गदूत उनका पीछा करे।" भजन 73 में, भजनकार आसाफ कहता है कि जब उसने दुष्टों की समृद्धि देखी तो उसे घमंडी लोगों से जलन हुई (वचन 3)। नतीजतन, वह लगभग लड़खड़ा गया और फिसल गया (वचन 2)। हालाँकि, परमेश्वर के पवित्र स्थान में प्रवेश करने के बाद (वचन 17), वह उस सच्चाई को स्वीकार करता है जिसे उसने समझा था: "निश्चित रूप से तूने उन्हें फिसलन भरी जगहों पर रखा है; तूने उन्हें विनाश में गिरा दिया है" (वचन 18)।

(4) आखिरकार, हमारा धर्मी परमेश्वर हमारे दुश्मनों को नष्ट कर देता है।

आज के वचन, भजन 35:8 को देखें: “उन पर अचानक विनाश आए, वे उसी जाल में फंस जाएं जिसे उन्होंने छिपाया था, और वे उसी विनाश में गिर जाएं।” आखिरकार, परमेश्वर हमारे दुश्मनों को फिसलने पर मजबूर करता है और अचानक उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर देता है (73:19)। हम ईसाई अक्सर एक तरह की आध्यात्मिक 'रतौंधी' (कम रोशनी में न देख पाने की बीमारी) से जूझते हैं। हम अपनी तरफ़ से लड़ने के लिए पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर रहने वाले दाऊद के उदाहरण का पालन करने के बजाय, अक्सर बिना सोचे-समझे आध्यात्मिक लड़ाइयों में कूद पड़ते हैं—और अपने ही जोश, भावनाओं और ताकत पर भरोसा करते हैं। इसके अलावा, हम यह समझ नहीं पाते कि कैसे परमेश्वर की बचाने वाली कृपा और बुरे लोगों का विनाश करने वाला उनका न्याय आपस में जुड़े हुए हैं। नतीजतन, हम अंधेरे के गुलाम बन जाते हैं और ऐसी लड़ाइयों में उलझे रहते हैं जिन्हें हम कभी जीत ही नहीं सकते। इसके विपरीत, दाऊद जैसे विश्वासी—जिनकी आध्यात्मिक आँखें सचमुच खुली हैं—पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और प्रभु से उनके लिए लड़ने की विनती करते हैं। वे उस परमेश्वर पर भरोसा करके सुरक्षित महसूस करते हैं जो उनकी ढाल और रक्षक है। हमें भी ऐसे ही विश्वासी बनना चाहिए; जब परमेश्वर हमारे दुश्मनों का विनाश करे, तो हमें उसके द्वारा दिए गए उद्धार का अनुभव करना चाहिए।

वह परमेश्वर जो मुझे बचाता है

[भजन संहिता 35:9-16]

पास्टर स्पर्जन ने एक बार कहा था, "जब दुनिया के लोग चोट करने के लिए लोहे के हथौड़े उठाते हैं, तो मसीहियों को वह निहाई (anvil) बनना चाहिए जो उन चोटों को सह सके।" यहाँ जिन "लोहे के हथौड़ों" की बात की गई है, वे कई रूपों में आते हैं—अपमान, सतावट, मुसीबत, बदनामी और बुरी बातें। शैतान अपने लोगों को हम पर—यानी पवित्र लोगों पर—लगातार हमला करने के लिए उकसाता है और इन अलग-अलग "लोहे के हथौड़ों" से चोट पहुँचाता है। तो फिर, हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए?

आज के भाग, भजन संहिता 35:9-16 में, हम देखते हैं कि दाऊद पर शैतान के लोगों द्वारा चलाए गए "लोहे के हथौड़ों" से चोट की जा रही है। फिर भी, ऐसी स्थिति में भी दाऊद कहता है, "मेरा प्राण यहोवा में आनन्दित होगा; वह उसके उद्धार में मगन होगा" (पद 9)। खास बात यह है कि वह यह बात अपने छुटकारे के बाद नहीं, बल्कि तब कहता है जब वह अभी भी अपने दुश्मनों के हाथों मुसीबत और सतावट सह रहा है। यह कैसे संभव है? यह केवल विश्वास के द्वारा ही संभव है। इसके अलावा, पद 10 में, दाऊद उसी विश्वास पर आधारित एक पक्का बयान देता है: "मेरी सारी हड्डियाँ कहेंगी, 'हे यहोवा, तेरे समान कौन है, जो कंगाल को उससे बचाता है जो उससे बहुत बलवान है, हाँ, कंगाल और दीन को उससे बचाता है जो उसे लूटता है?'" यहाँ, दाऊद उद्धार देने वाले परमेश्वर—वह परमेश्वर जो हमें बचाता है—को मानता है और स्वीकार करता है, और यह घोषणा करता है कि हमारे परमेश्वर के समान कोई नहीं है। आज, भजन संहिता 35:9–16 के भाग और "वह परमेश्वर जो मुझे बचाता है" विषय पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन चार पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ जिनसे परमेश्वर हमें बचाता है और इन सच्चाइयों को अपने जीवन में लागू करना चाहता हूँ।

मेरी प्रार्थना है कि हम भी दाऊद की तरह कह सकें: "मेरा प्राण यहोवा में आनन्दित होगा और उसके उद्धार में मगन होगा" (पद 9)।

पहला, "वह परमेश्वर जो मुझे बचाता है" वह है जो हमें उन लोगों से बचाता है जो हम पर झूठे आरोप लगाते हैं और हमसे सवाल-जवाब करते हैं।

भजन संहिता 35:11 को देखें: "बुरे गवाह उठ खड़े होते हैं; वे मुझसे ऐसी बातें पूछते हैं जिनके बारे में मैं कुछ नहीं जानता।" यहाँ जिन "बुरे इरादे वाले गवाहों" का ज़िक्र है, वे झूठे गवाह हैं जिन्होंने बेगुनाह दाऊद पर दोष मढ़ने की कोशिश की। इन झूठे गवाहों ने बेगुनाह दाऊद का सामना किया और उस पर ऐसी बातों का आरोप लगाया जिनके बारे में उसे कुछ पता ही नहीं था, ताकि उसे दोषी ठहराया जा सके (पार्क युन-सन)। इन बुरे इरादे वाले गवाहों ने दाऊद पर इस तरह आरोप क्यों लगाया? इसलिए क्योंकि वे "बिना किसी वजह" के उसकी जान लेना चाहते थे (वचन 7)।

शैतान की संतानें हमें—यानी परमेश्वर की संतानों को—बिना किसी वजह के नुकसान पहुँचाना चाहती हैं। ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने दाऊद के साथ किया, वे हमारे पास आते हैं और हम पर ऐसी बातों का आरोप लगाते हैं जिनके बारे में हमें पता भी नहीं होता, और हम पर दोष मढ़ने की कोशिश करते हैं। वे हर तरह से हमें पाप से भरी ज़िंदगी जीने के लिए उकसाते हैं और हमें अपराध-बोध की भावना में फँसाने की कोशिश करते हैं। हमें इससे सावधान रहना चाहिए। हमें खुद को अन्यायपूर्ण गवाहों के तीखे सवालों में नहीं फँसने देना चाहिए। खासकर, हमें अपने मन पर ऐसे विचारों का कब्ज़ा नहीं होने देना चाहिए जो ऐसे अन्यायपूर्ण गवाहों के आरोपों जैसे हों। ये अन्यायपूर्ण गवाह हमें यीशु के क्रूस की योग्यता पर भरोसा करने से रोकते हैं और इसके बजाय हमारा ध्यान हमारी अपनी इंसानी खूबियों की ओर खींचते हैं। नतीजतन, हम यीशु पर भरोसा करने के बजाय अपने ही कामों पर ध्यान देने लगते हैं। हम खुद के बनाए अपराध-बोध से परेशान हो जाते हैं, जो हमें सच्चे विश्वास की ज़िंदगी जीने से रोकता है। इस संदर्भ में जब मैं "तीखे सवालों" या "आरोप" शब्द के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे प्रेरितों के काम 4:14 का वचन याद आता है। जब पतरस और यूहन्ना उस आदमी के साथ खड़े थे जो ठीक हो गया था, तो उनके विरोधी "उसके खिलाफ कुछ नहीं कह पाए।" उनके खिलाफ कहने के लिए कुछ क्यों नहीं था? इसलिए क्योंकि वहाँ पक्का सबूत था। वही आदमी

जो अपाहिज था लेकिन अब चल-फिर रहा था—यीशु के नाम से ठीक हो गया था—पतरस और यूहन्ना के साथ वहीं खड़ा था; इसीलिए उनके विरोधियों के पास आरोप लगाने का कोई आधार नहीं था। ठीक यहीं हमारी ज़िम्मेदारी बनती है। हम अक्सर अपने विश्वास की ज़िंदगी एक अस्पष्ट "ग्रे एरिया" (बीच की स्थिति) में जीते हैं—न पूरी तरह एक चीज़ और न ही दूसरी। ऐसा करके, हम शैतान के अन्यायपूर्ण गवाहों को अपने आरोपों के लिए हथियार देते हैं। अगर हमारे जीवन में पक्का सबूत साफ-साफ दिखाई देता, तो अन्यायपूर्ण गवाह हम पर आरोप लगाने का आधार कैसे ढूँढ पाते? फिर भी, जब हम अपनी कमज़ोरी के कारण ऐसे हालात पैदा कर देते हैं जिन पर लोग हमें दोषी ठहरा सकें—जैसा कि दाऊद ने किया था—तो हमें निराश नहीं होना चाहिए। इसके बजाय, दाऊद की तरह हमें पूरे दिल से परमेश्वर की बचाने वाली कृपा की तलाश करनी चाहिए। हमें परमेश्वर से विनती करनी चाहिए कि वह हमें हमारे अपराधबोध से छुटकारा दिलाए। परमेश्वर हमें यीशु की ओर देखने के लिए प्रेरित करके बचाता है, जिसने क्रूस पर बेगुनाह होते हुए भी दुख सहा और मृत्यु को गले लगाया। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर हमें अपराधबोध की भावना से उस सच्चाई के ज़रिए आज़ाद करता है—कि क्रूस पर बहाए गए यीशु के कीमती लहू के कारण हमें धर्मी ठहराया गया है।

दूसरी बात, "परमेश्वर जो मुझे छुटकारा दिलाता है" वही है जो हमें उन लोगों से बचाता है जिनकी वजह से हमारी आत्मा अकेलापन महसूस करती है।

भजन संहिता 35:12 को देखिए: "वे मेरे भले के बदले बुराई करते हैं और मेरी आत्मा को सूना कर देते हैं।" खास बात यह है कि भजनकार दाऊद अपने दुश्मनों से प्यार करता था और उनके साथ दया का व्यवहार करता था। फिर भी, उन दुश्मनों ने दाऊद की दया का बदला बुराई से दिया। ऐसे पलों में, दाऊद ने अकेलापन महसूस किया। दाऊद ने अपने दुश्मनों के साथ किस तरह की दया दिखाई?

(1) दाऊद ने अपने दुश्मनों के लिए प्रार्थना की।

आज के वचन, भजन संहिता 35:13 को देखिए: "फिर भी जब वे बीमार थे, तो मैंने शोक के वस्त्र पहने और उपवास रखकर खुद को दीन किया। जब मेरी प्रार्थनाएँ बिना उत्तर के मेरे पास लौट आईं..." दाऊद ने तब भी उपवास रखा और प्रार्थना की जब उसके दुश्मन बीमार थे; हालाँकि, उसके दुश्मन इतने बुरे थे कि उन्होंने

दाऊद को ठुकरा दिया—उस दाऊद को जो उनका भला चाहने वाला था और उनके लिए दुखी होकर प्रार्थना करता था (पार्क युन-सन)।

(2) दाऊद अपने दुश्मनों की बहुत परवाह करता था।

आज के वचन, भजन संहिता 35:14 को देखिए: "मैं ऐसे शोक मनाता रहा जैसे किसी दोस्त या भाई के लिए; मैं दुख में ऐसे झुका जैसे कोई अपनी माँ के लिए शोक मनाता है।" यहाँ, "दुख में झुकना" गहरे शोक को दर्शाता है। दूसरे शब्दों में, दाऊद को अपने दुश्मनों की बीमारी की चिंता थी (पार्क युन-सन)।

बाइबल कहती है कि हम "मसीह यीशु में भले कामों के लिए रचे गए हैं" (इफिसियों 2:10)। संक्षेप में, एक विश्वासी की ज़िम्मेदारी है कि वह भलाई करे—तब भी जब भलाई पाने वाले हमारे दुश्मन हों, जैसे दाऊद के दुश्मन थे। हालाँकि, जिन दुश्मनों ने दाऊद की भलाई का बदला बुराई से दिया, वे कोई मामूली बुरे लोग नहीं थे। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: “जो व्यक्ति किसी ऐसे इंसान को नुकसान पहुँचाता है जिसने उस पर दया दिखाई हो, वह ज़मीर और इंसानियत से खाली होता है; वे सुधरने लायक नहीं होते, भगवान के दुश्मन और आस्तिक के दुश्मन होते हैं।” हमें भलाई करनी चाहिए, और यह भलाई अपने दुश्मनों के साथ भी करनी चाहिए। हमें उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए और जब वे बीमारी या मुसीबत में हों तो उनके लिए चिंता करनी चाहिए। फिर भी, हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि ऐसी भलाई करते समय हम निराश हो सकते हैं। हम हिम्मत हार सकते हैं, खासकर तब जब हम दया दिखाएँ और बदले में बुराई मिले। ऐसे पलों में, निराशा के बीच, हमारे मन में यह ख्याल आ सकता है: “मुझे ऐसा क्यों करना चाहिए?” हम यह सवाल कर सकते हैं कि हमसे कब तक सहने और दया दिखाते रहने की उम्मीद की जाती है। ऐसे विचारों से आध्यात्मिक अकेलेपन का एहसास हो सकता है, क्योंकि हम एक ऐसा काम कर रहे हैं जिसे दूसरे नहीं पहचानते—एक ऐसा काम जिसे सिर्फ़ भगवान ही पहचानते हैं। जब हम इस आध्यात्मिक अकेलेपन में पड़ जाते हैं, तो हमें छुटकारा पाने के लिए भगवान की ओर देखना चाहिए: “मेरी ओर मुड़ो और मुझ पर दया करो, क्योंकि मैं अकेला और मुसीबत में हूँ” (भजन संहिता 25:16)। तीसरी बात, “भगवान जो मुझे छुटकारा दिलाते हैं” वही हैं जो हमें उन लोगों से बचाते हैं जो हमारी मुसीबत में खुश होते हैं।

भजन संहिता 35:15 पर विचार करें: “लेकिन मेरे लड़खड़ाने पर वे खुश हुए और इकट्ठा हो गए; बुरे लोग मेरे खिलाफ़ इकट्ठा हुए जिन्हें मैं नहीं जानता था; उन्होंने मुझ पर हमला किया और रुके नहीं।” जब दाऊद के दुश्मनों ने उसकी तकलीफ़ देखी, तो वे जश्न मनाने के लिए इकट्ठा हुए और उसे और नुकसान पहुँचाने की साज़िश रची। यह उनकी घोर दुष्टता का सबूत है (पार्क युन-सन)। दाऊद इन सभाओं के बारे में जानता था—लोगों के ऐसे समूह जो सांत्वना या मदद देने के बजाय, उसकी बदकिस्मती पर खुश होते थे, आपस में फुसफुसाते थे और मज़ा लेते थे। यहाँ तक कि “बुरे लोग”—समाज के सबसे निचले स्तर के लोग—भी दाऊद की तकलीफ़ का मज़ा लेने के लिए इन सभाओं में शामिल हो जाते थे (अय्यूब 19:18; 30:1 देखें) (पार्क युन-सन)।

यह सचमुच एक दिलचस्प बात है। जब परमेश्वर के बच्चों का विरोध करने की बात आती है, तो शैतान के बच्चे—जो शायद आपस में दुश्मन हों—दोस्त बन जाते हैं (जैसे हेरोदेस और पिलातुस), और चाहे वे ऊँचे या नीचे दर्जे के हों, एक हो जाते हैं। भजन संहिता 35:15 में ऐसी बातों का ज़िक्र है जो "मेरी जानकारी के बिना" हुईं; इसका मतलब है कि सबसे निचले दर्जे के लोग भी—ऐसे बदमाश जिन्हें दाऊद जानता भी नहीं था—उसके दुश्मनों से मिले, उनके साथ हो गए, और दाऊद की मुसीबत पर खुश हुए। हमने इस हिस्से की 11वीं आयत में पहले ही "ऐसी बातें जिनके बारे में मुझे पता नहीं था" वाक्यांश देखा है। ऐसा लगता है कि दाऊद के दुश्मन—और हम विश्वासियों के दुश्मन—अक्सर ऐसी बातों पर हमारा विरोध करते हैं जिनके बारे में हमें पता भी नहीं होता और उनमें ऐसे लोग शामिल होते हैं जिन्हें हम पहचानते भी नहीं। दूसरे शब्दों में, अजनबी हमारा विरोध करते हैं और हमसे ऐसी बातें पूछकर हमें परेशान करते हैं जिनके बारे में हमें कोई जानकारी नहीं होती। फिर भी, एक बात पक्की है: जब हम मुसीबत में होते हैं तो वे खुश होते हैं। यहाँ सीख यह है कि जहाँ हमारी आत्माएँ प्रभु में आनंद लेती हैं और उनके उद्धार में खुश होती हैं (आयत 9), वहीं हमारे दुश्मन हमारी तकलीफ में खुश होते हैं (आयत 15)। हमारी खुशियों के कारण बहुत अलग-अलग हैं। भले ही हमारे दुश्मन हमारी मुसीबत पर खुश होने के लिए इकट्ठा हों—हमारा मज़ाक उड़ाएँ और बदनामी और बुरी बातों से हमारे चरित्र को खराब करने की कोशिश करें—हमें फिर भी परमेश्वर में आनंद लेते रहना चाहिए और उनके उद्धार में खुश होना चाहिए (आयत 9)।

आखिर में, चौथी बात यह है कि "परमेश्वर जो मुझे बचाता है" वही हमें उन लोगों से बचाता है जो हमारे खिलाफ़ गुस्से में दाँत पीसते हैं। भजन संहिता 35:16 पर विचार करें: "दावत में अधर्मी मसखरों की तरह, उन्होंने मुझ पर अपने दाँत पीसे।" यह आयत बताती है कि दाऊद के दुश्मनों ने उसके साथ—जो उनका भला करने वाला था—दावतों में भी मज़ाक का पात्र जैसा व्यवहार किया, और उसे नुकसान पहुँचाने के लिए गुस्से में दाँत पीसे। दावत आम तौर पर एक ऐसा मौका होता है जहाँ दुश्मनी भी खत्म हो जाती है; फिर भी, ऐसी जगह पर किसी का भला करने वाले के प्रति ऐसी जलन और नुकसान पहुँचाने की मंशा रखना एक बहुत कठोर, अधर्मी दिल को दिखाता है (पार्क युन-सन)।

ऐसे दिल अक्सर हमारे आस-पास इकट्ठा हो जाते हैं—हमें पता भी नहीं चलता—और हम पर हमला करने और नुकसान पहुँचाने की ताक में रहते हैं। यह शैतान की एक चाल है। प्रेरितों के काम 7:54 को देखिए: "जब उन्होंने यह सुना, तो वे दिल से तिलमिला उठे और उस पर अपने दाँत पीसने लगे।" जो लोग स्तिफनुस का विरोध कर रहे थे—जो पवित्र आत्मा से भरकर प्रचार कर रहा था—वे उसकी बातों से "दिल से तिलमिला उठे"; फिर भी, पछतावा करने के बजाय, वे उस पर दाँत पीसने लगे। आखिरकार, उन्होंने उसे पत्थर मार-मारकर मार डाला (पद 59–60)। यहाँ तक कि जब उसके दुश्मन उस पर दाँत पीसते थे, तब भी दाऊद को भरोसा था कि परमेश्वर उसे उनसे बचाएगा; वह परमेश्वर में खुश होता था और उसके उद्धार में आनंद लेता था।

व्यक्तिगत रूप से, मुझे एहसास हुआ है कि मेरी प्रार्थनाओं में बदलाव की ज़रूरत है। हालाँकि साथी विश्वासियों के लिए प्रार्थना करना—उनके दुख में शामिल होना, रोना और दिल से प्रार्थना करना—महत्वपूर्ण है, लेकिन मैं यह भी सीख रहा हूँ कि मुझे इससे आगे बढ़कर विश्वास के साथ प्रार्थना करनी चाहिए और उद्धार के भरोसे को मज़बूती से थामे रखना चाहिए। अतीत में हमें मिली उद्धार की कृपा पर विचार करते हुए, मेरी इच्छा है कि हम परमेश्वर की ओर देखने का संकल्प लें—यहाँ तक कि अभी भी, जब हमारे दुश्मन हम पर "लोहे के हथौड़ों" से वार करते हैं—और उसमें खुश हों तथा उसके उद्धार में आनंद लें। आखिरकार, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम परमेश्वर की उद्धार करने वाली कृपा की सच्चाई का अनुभव कर सकें।

वह परमेश्वर जो मेरी समृद्धि में खुशी पाता है

[भजन संहिता 35:17-28]

"समृद्धि" क्या है? हिब्रू भाषा में, समृद्धि को आमतौर पर *सकल* (sakal) और *सलाच* (tsalach) शब्दों से बताया जाता है। *सकल* का अर्थ है समृद्ध होना और सफल होना, जबकि *सलाच* का अर्थ है फलना-फूलना और भरपूर होना। एक और शब्द जो अक्सर इस्तेमाल होता है, वह है *शालाह* (shalah), जिसका अर्थ है सुरक्षित, समृद्ध और खुश रहना। इसी मूल शब्द से *शालोम* (Shalom) शब्द बना है—जिसका अर्थ है भलाई, शांति और खुशी—और हिब्रू लोग इसे अभिवादन के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। इस तरह, हम देख सकते हैं कि समृद्धि में न केवल बाहरी और भौतिक पहलू शामिल हैं, बल्कि आंतरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलू भी शामिल हैं। हालाँकि, ऐसा लगता है कि आज बहुत से ईसाई समृद्धि का मतलब सिर्फ़ मुश्किलों और परेशानियों से मुक्त जीवन समझते हैं—एक ऐसी स्थिति जहाँ सब कुछ बिल्कुल आसानी से और बिना किसी रुकावट के चलता रहे। वे समृद्धि को बिना किसी दुख या बाधा के फलने-फूलने और सफल होने के रूप में देखते हैं। फिर भी, हमें ऐसे "परफेक्ट और परेशानी-मुक्त" जीवन की इच्छा नहीं करनी चाहिए। असल में, मेरा मानना है कि ऐसी सोच गलत है जो ऐसे जीवन को ही आशीष मानती है; सच तो यह है कि इस धरती पर ऐसा कोई जीवन नहीं है जो पूरी तरह से परेशानियों से मुक्त हो। मैंने एक बार ऑनलाइन एक बात पढ़ी थी: "हमारी आत्माओं की रक्षा के लिए, परमेश्वर हमें सीधी रेखाओं के बजाय उतार-चढ़ाव वाले रास्तों पर ले जाते हैं। इसी में परमेश्वर का गहरा मकसद छिपा है।" यह सच है। हमारा जीवन उतार-चढ़ाव से भरा होता है, ठीक वैसे ही जैसे डिज़्नीलैंड में रोलर कोस्टर की सवारी। खास बात यह है कि जिस तरह रोलर कोस्टर के रोमांच के बिना ट्रेन की सवारी बच्चे को उत्साहित नहीं करती, उसी तरह हमारे जीवन के सफ़र में भी उतार-चढ़ाव ज़रूरी हैं; इन्हीं उतार-चढ़ाव के ज़रिए हम परमेश्वर की गहरी इच्छा को समझते हैं और सच्ची खुशी का अनुभव करते हैं।

मैं बाइबल के दो ऐसे लोगों के बारे में बात करना चाहूँगा जिन्होंने अपने जीवन में ऐसे उतार-चढ़ाव का अनुभव किया। पहला उदाहरण पुराने नियम की उत्पत्ति (Genesis) की किताब से यूसुफ का है। यूसुफ के ज़रिए हम समृद्धि के बारे में बाइबल का सही नज़रिया सीखते हैं। हमें पता चलता है कि समृद्धि का मतलब सिर्फ़ यह नहीं है कि सब कुछ बिना किसी मुश्किल के आसानी से चलता रहे; बल्कि, इसका मतलब है दुख और मुश्किलों के बीच भी हमारे साथ परमेश्वर की मौजूदगी का एहसास होना (उत्पत्ति 39:2, 3, 23)। असली समृद्धि का मतलब मुश्किलों का होना या न होना, या बहुत कुछ होना या कमी होना नहीं है, बल्कि परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना है, क्योंकि वे हमारे साथ-साथ चलते हैं। दूसरा उदाहरण पौलुस का है, जिसका ज़िक्र नए नियम (New Testament) की प्रेरितों के काम (Acts) की किताब के 16वें अध्याय में मिलता है। सब्त के दिन, पौलुस और सीलास शहर के दरवाज़ों के बाहर नदी के किनारे प्रार्थना करने की जगह ढूँढ़ने गए (वचन 13); वहाँ उनकी मुलाक़ात लूदिया नाम की एक औरत से हुई, और आख़िरकार, वह और उसका पूरा परिवार यीशु पर विश्वास करने लगे और उन्होंने बपतिस्मा लिया (वचन 15)। बाद में, जब वे प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे (वचन 16), तो उन्हें एक ऐसी नौकरानी मिली जिस पर दुष्टात्मा का साया था; उसके ठीक होने के बाद, पौलुस को सताया गया और जेल में डाल दिया गया, फिर भी जेल में रहते हुए भी वे प्रार्थना करते रहे (वचन 25)। उनकी प्रार्थनाओं के जवाब में, परमेश्वर की उपस्थिति ने जेल के दरवाज़े खोल दिए, जिससे जेलर और उसका पूरा परिवार परमेश्वर पर विश्वास करने लगा (वचन 34)। हालाँकि पौलुस की ज़िंदगी में ऐसे कई उतार-चढ़ाव आए, लेकिन आख़िरकार परमेश्वर की बचाने वाली इच्छा पूरी हुई, और फिलिप्पी में कलीसिया की स्थापना हुई। इन दो उदाहरणों पर विचार करते हुए, मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि समृद्धि असल में प्रभु की इच्छा को पूरा करना है। भजन संहिता 35:27 में बाइबल कहती है, "जो लोग मेरे सही साबित होने से खुश होते हैं, वे खुशी और आनंद से चिल्लाएँ; वे हमेशा कहें, 'प्रभु की महिमा हो, जो अपने सेवक की भलाई में खुश होता है।'" इस वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं "वह परमेश्वर जो मेरी समृद्धि में खुश होता है" विषय पर विचार करना चाहता हूँ। मैं दो चरणों में यह समझना चाहता हूँ कि परमेश्वर हमारी समृद्धि कैसे लाता है और इस चिंतन के ज़रिए अनुग्रह कैसे प्राप्त किया जाए।

परमेश्वर द्वारा हमें समृद्धि देने का पहला चरण "देखते रहने का चरण" है।

भजन संहिता 35:17 को देखिए: "हे प्रभु, तू कब तक देखता रहेगा? मेरी आत्मा को उनके हमलों से बचा, मेरी अनमोल ज़िंदगी को इन शेरों से बचा।" दाऊद, जो भजन रचने वाला था, ने अपने दुश्मनों के हाथों दुख

सहते हुए प्रभु से पुकार की और पूछा, "हे प्रभु, तू कब तक देखता रहेगा?" जब हम भी लंबे समय तक दुख सहते हैं, तो अक्सर हमारा सब्र जवाब दे जाता है और हम दुखी होकर पूछते हैं, "मुझे और कब तक ऐसे दुख सहना होगा?" ऐसे दुख के समय में, दाऊद की तरह, हम भी कभी-कभी भारी मन से परमेश्वर की ओर देखते हैं और सोचते हैं कि वह कब तक बस खड़े होकर देखते रहेंगे। दाऊद ने भजन संहिता 13:1–2 में पहले ही यह बात कही थी: "हे प्रभु, कब तक? क्या तू मुझे हमेशा के लिए भूल जाएगा? तू कब तक मुझसे अपना मुँह छिपाए रखेगा? मुझे कब तक अपने विचारों से जूझना होगा और दिन-रात मन में दुख सहना होगा? मेरा दुश्मन कब तक मुझ पर जीत हासिल करता रहेगा?" "कब तक?" वाली यह दुख भरी प्रार्थना दाऊद के उस अनुभव को दिखाती है जब दुख सहते-सहते उसका सब्र खत्म हो गया था; वह सवाल करता है कि परमेश्वर क्यों बस दूर से तमाशा देख रहे हैं। "देखते रहने" के इस दौर को "खामोशी का दौर" भी कहा जा सकता है। आज के वचन, भजन संहिता 35:22 पर गौर करें: "हे प्रभु, तूने यह सब देखा है; चुप न रह। हे प्रभु, मुझसे दूर न रह।" हालाँकि दाऊद यह समझ नहीं पा रहा था कि प्रभु क्यों चुप हैं या दूर हैं—खासकर तब जब वह साफ-साफ दाऊद का दुख देख रहे थे—फिर भी उसने सच्चे मन से परमेश्वर की मदद मांगी।

जब हम दुख सहते हैं, तो परमेश्वर क्यों बस देखते हुए और चुपचाप रहते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि ऐसा करने में हमारा आध्यात्मिक फ़ायदा होता है (पार्क युन-सुन)। दूसरे शब्दों में, हमारे दुख के समय परमेश्वर की खामोशी हमारी आध्यात्मिक भलाई के लिए होती है। तो फिर, यह आध्यात्मिक फ़ायदा क्या है? यह "प्रार्थना का प्रशिक्षण" और साथ ही "सब्र और निखार" है (पार्क युन-सुन)। परमेश्वर हमारे दुख के समय चुप रहते हैं ताकि हम उन्हें और ज़्यादा जोश के साथ पुकारें और उन पर भरोसा करें (भजन संहिता 28:1, 7)। जैसा कि यशायाह 30:15 में कहा गया है, "...शांति और भरोसे में ही तुम्हारी ताकत है..." ...धर्मग्रंथ कहता है। जब परमेश्वर चुप रहते हैं, तो हमें चुपचाप उन पर भरोसा करना चाहिए और उन पर निर्भर रहना चाहिए। इसलिए, हमें परमेश्वर को पुकारना चाहिए। आज के वचन, भजन संहिता 35 में दाऊद की प्रार्थना का विषय क्या था? पद 19–21 देखिए: “जो लोग बिना वजह मेरे दुश्मन बन गए हैं, उन्हें मुझ पर खुश न होने दें; जो लोग बिना किसी कारण मुझसे नफ़रत करते हैं, उन्हें बुरी नीयत से आँख न मारने दें। क्योंकि वे शांति की बात नहीं करते, बल्कि जो लोग देश में शांति से रहते हैं, उनके खिलाफ़ धोखे की योजनाएँ बनाते हैं। वे मेरे खिलाफ़ अपना मुँह खोलकर कहते हैं, ‘अहा! अहा! हमने इसे अपनी आँखों से देखा है।’” दाऊद ने प्रार्थना की कि उसके दुश्मन—जो उससे नफ़रत करते थे—उसकी बदकिस्मती और तकलीफ़ पर खुश न हो सकें,

या इस बात पर मज़ाक न उड़ा सकें कि ऐसा लग रहा था कि परमेश्वर उसकी मदद नहीं कर रहा है। एक और आध्यात्मिक फ़ायदा यह है कि तकलीफ़ के दौर से गुज़रकर हम सब्र करना सीखते हैं; सब्र के ज़रिए हम निखरते हैं—यानी हमारा चरित्र ऐसा बनता है जो धीरे-धीरे यीशु जैसा हो जाता है। तकलीफ़ के ज़रिए हमारा चरित्र बनता है। भजन संहिता 119:71 देखिए: "मेरे लिए अच्छा हुआ कि मैं मुसीबत में पड़ा, ताकि मैं तेरे नियमों को सीख सकूँ।" तकलीफ़ के ज़रिए परमेश्वर की आज्ञाओं को सीखने और उनका पालन करने से, हमारा चरित्र यीशु जैसा बनने लगता है।

"द साइलेंट गॉड" (शांत परमेश्वर) नाम के एक लेख में, सोंग वॉन-जून खामोशी के बारे में यह लिखते हैं: "हो सकता है कि परमेश्वर खामोश रहें। परमेश्वर तब तक खामोश रहे जब तक उन्होंने मूसा को मिस्र के दरबार से बाहर निकालकर मिद्यान के रेगिस्तान में रहने के लिए भेजा—यह दौर चालीस साल का था।" सत्रह साल के दाऊद को राजा के तौर पर चुने जाने के बाद, परमेश्वर तब तक खामोश रहे जब तक वह सच में गद्दी पर नहीं बैठ गया। पौलुस—जिसने दुनिया को अपना मिशन क्षेत्र बनाया था—की रोते हुए और गिड़गिड़ाते हुए की गई प्रार्थनाओं का जवाब देने में भी परमेश्वर खामोश रहे; पौलुस उस बीमारी से ठीक होने की प्रार्थना कर रहा था जो उसके लिए "शरीर में चुभने वाले कांटे" जैसी थी। आखिरकार, परमेश्वर ने यह कहते हुए प्रार्थना ठुकरा दी, "मेरा अनुग्रह तुम्हारे लिए काफ़ी है।" इसके अलावा, जब एक व्यक्ति ने पूरे जोश के साथ प्रार्थना की, "इस प्याले को मुझसे दूर कर दे," तो क्रूस पर भी परमेश्वर खामोश रहे। ... हेनरी नूवेन ने कहा कि परमेश्वर की अनुपस्थिति, परमेश्वर की सक्रिय उपस्थिति के बराबर है। ... क्योंकि भजन रचने वाले को इस सच्चाई का एहसास नहीं था, इसलिए वह परमेश्वर की खामोशी से दुखी महसूस करता था। फिर भी, उस खामोशी में भी परमेश्वर सक्रिय रूप से काम कर रहे होते हैं! सच तो यह है कि खामोशी में ही परमेश्वर मेरे दिल को निखारते हैं। ... खामोशी में ही परमेश्वर मुझे प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करते हैं। इसे पढ़कर मुझे व्यक्तिगत रूप से ज़्यादा शांत रवैया अपनाने की प्रेरणा मिली—या दूसरे शब्दों में, मैंने एक बार फिर सक्रिय मार्था के बजाय मैरी जैसा बनने का फ़ैसला किया। ऐसा इसलिए है क्योंकि मेरा मानना है कि जब मैं शांत रहती हूँ, तो परमेश्वर और भी ज़्यादा सक्रिय रूप से काम करते हैं। मैं प्रार्थना करती हूँ कि परमेश्वर पर और

भी गहरे भरोसे के साथ, मैं उनके महान और सक्रिय काम की उम्मीद करते हुए शांत प्रार्थना में प्रतीक्षा कर सकूँ।

हमें समृद्धि की ओर ले जाने में परमेश्वर का दूसरा कदम है उनका "खुद को जगाना और उठ खड़ा होना।"

भजन संहिता 35:23 पर विचार करें: "हे मेरे परमेश्वर और प्रभु, जाग और मेरे बचाव के लिए उठ खड़ा हो, और मेरा पक्ष ले।" हालाँकि "मेरी समृद्धि में खुशी मनाने वाले परमेश्वर" ने दाऊद की बुरी हालत देखी थी, फिर भी वे चुप रहे (पद 22); इसलिए, दाऊद ने परमेश्वर से न्याय करने के लिए "खुद को जगाने और उठ खड़े होने" की विनती की (पद 23)। यहाँ, "rouse" (जगाने) शब्द का अर्थ है "हिम्मत जुटाना," जबकि "wake up" (जागने) का अर्थ है परमेश्वर की उस इच्छा से है कि वे "न्याय करने के लिए नींद जैसी अवस्था से उठें" (पार्क युन-सन)। क्या परमेश्वर सचमुच सोते हैं? क्या उन्हें सचमुच जागने की ज़रूरत है? भजन संहिता 121:3–4 में कहा गया है: "...जो तुम्हारी रक्षा करता है, वह ऊँघेगा नहीं। सचमुच, जो इस्राएल की रक्षा करता है, वह न तो ऊँघेगा और न ही सोएगा।" दाऊद ने परमेश्वर से विनती की कि वे इस ऊपरी तौर पर दिख रही नींद की अवस्था से उठें और दैवीय न्याय के साथ उसके दुश्मनों का न्याय करें। वह नहीं चाहता था कि उसके दुश्मन उसकी बर्बादी पर खुश हों या यह दावा करें कि उन्हें "अपनी मनचाही चीज़ मिल गई है" (पद 24–25)। इसके अलावा, उसने अपने दुश्मनों की विफलता के लिए प्रार्थना की। दूसरे शब्दों में, दाऊद ने परमेश्वर से केवल देखते रहने के बजाय खुद को जगाने और उठ खड़े होने के लिए कहा ताकि उसके दुश्मनों को शर्मिंदगी और हार का सामना करना पड़े: "जो मेरी मुसीबत में खुश होते हैं, वे शर्मिंदा और परेशान हों; जो मेरे खिलाफ खुद को ऊँचा समझते हैं, वे शर्म और बदनामी से ढँक जाएँ" (पद 26)। इसके अलावा, दाऊद की प्रार्थना एक विनती थी कि परमेश्वर साथी विश्वासियों को उसके साथ स्तुति में शामिल होने के योग्य बनाएँ: "जो मेरी धार्मिकता में खुशी मनाते हैं, वे खुशी से चिल्लाएँ और आनंदित हों; वे हमेशा कहें, 'प्रभु महान है, जो अपने सेवक की भलाई में खुशी मनाता है'" (पद 27)। यह विनती इसलिए संभव हो पाती है क्योंकि परमेश्वर दाऊद को उसके दुश्मनों पर जीत दिलाकर जवाब देते हैं। ऐसा करके, दाऊद उन साथी विश्वासियों के साथ मिलकर परमेश्वर की स्तुति कर सकता है—खासकर उनके साथ जो उसे धर्मी मानते हैं ("जो मेरी धार्मिकता में खुशी मनाते हैं," पद 27)।

प्रभु हमें सीधे रास्तों के बजाय घुमावदार रास्तों पर ले जाते हैं, और इस प्रक्रिया में अपने गहरे उद्देश्यों को प्रकट करते हैं। जो परमेश्वर "मेरी भलाई में खुशी पाता है," वह हमारे दुख को बस खड़े होकर क्यों देखता रहता है? क्या हम सच में—विश्वास की नज़रों से—यह देख पाते हैं कि जब परमेश्वर हमें दिखाई नहीं देते और चुप रहते हैं, तब भी वे पूरी लगन और सक्रियता से काम कर रहे होते हैं? क्या हम परमेश्वर पर चुपचाप भरोसा करके प्रार्थना के ज़रिए खुद को अनुशासित कर रहे हैं? क्या हम सब्र की आशीषों और अपने चरित्र के बनने का अनुभव कर रहे हैं? आखिरकार, परमेश्वर उठते हैं और सही न्याय करने के लिए जागते हैं, जिससे हमारे दुश्मन नाकाम होकर नष्ट हो जाते हैं। नतीजतन, वे हमें धन्यवाद देने और उनकी स्तुति करने के लिए प्रेरित करते हैं: "मैं बड़ी सभा में तेरा धन्यवाद करूँगा; मैं बहुत से लोगों के बीच तेरी स्तुति करूँगा" (पद 18)।

“आपकी रोशनी में हम रोशनी देखते हैं”

[भजन संहिता 36]

क्या हमारा चर्च सचमुच इस अंधेरी दुनिया में अपनी रोशनी फैला रहा है? *While the Church Slept* (जब चर्च सो रहा था) नाम के एक लेख में, लेखक जियोंग मिन-यंग कहते हैं, “चुनाव हमारा है: जागकर रोशनी फैलाना, या सोते रहना और खत्म हो जाना” (इंटरनेट)। फिर भी, ऐसा लगता है कि चर्च—जिसे अंधेरे को दूर करना चाहिए और सोई हुई दुनिया को जगाना चाहिए—खुद ही गहरी नींद में सो गया है। ठीक वैसे ही जैसे गैर-यहूदी नाविकों ने, सोते हुए योना की वजह से मौत का सामना करते हुए, आखिरकार उसे जगाया था, ऐसा लगता है कि आज दुनिया चर्च को जगा रही है। हम ठीक यही होते हुए देख रहे हैं क्योंकि गैर-धार्मिक लोग और मीडिया खुलेआम चर्च की आलोचना करते हैं।

भजन संहिता 36 में, हम देखते हैं कि भजनकार दाऊद अधर्मियों की बुराई पर दुख जताते हैं, और फिर परमेश्वर की दया और धार्मिकता की ओर देखकर उन्हें सुकून मिलता है (पार्क युन-सन)। आज के हिस्से पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं “बुरे लोगों के अंधेरे” और “धर्मी लोगों की रोशनी” पर मनन करना चाहता हूँ। मेरी प्रार्थना है कि, जो बुराई हम देखते और सुनते हैं उससे निराश होने के बजाय, हम परमेश्वर की दया और धार्मिकता पर अपनी नज़र टिकाकर सुकून पाएँ।

सबसे पहले, आइए बुरे लोगों के अंधेरे पर मनन करें।

डी. एल. मूडी ने बताया कि भजन संहिता 36 की आयत 1 से 4 तक पाप में और गहरे उतरने के सात चरणों का वर्णन है। सचमुच, यह हिस्सा बुरे लोगों में पाए जाने वाले अंधेरे के सात पहलुओं को उजागर करता है:

(1) परमेश्वर का कोई डर नहीं है।

भजन संहिता 36:1 को देखें: “बुरे लोगों के अपराध के बारे में मेरे दिल में एक बात है: उनकी आँखों के सामने परमेश्वर का कोई डर नहीं है।” जब दाऊद ने अधर्मियों की बुराई को देखा, तो उन्हें एक गहरी समझ मिली। दूसरे शब्दों में, जहाँ बुरे लोग बिना किसी डर के पाप की ओर तेज़ी से बढ़ते हैं, वहीं दाऊद ने—उनके व्यवहार को देखकर—परमेश्वर का और भी गहरा आदर करने का संकल्प लिया। जॉन केल्विन ने कहा: "बुरा आदमी झूठी सुरक्षा की भावना के साथ पाप की ओर भागता है, जबकि संत का जीवन उस दिल से चलता है जो परमेश्वर का आदर करता है।" इस फ़र्क की वजह यह है कि पाप बुरे लोगों के दिल से बात करता है, जबकि परमेश्वर नेक लोगों के दिल से बात करते हैं (होशे 2:14)।

(2) अपने किए गए पाप से नफ़रत करने के बजाय, वे अपने ही दिल को बहलाते हैं, उसे सही मानते हैं और उसे नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

आज के वचन, भजन संहिता 36:2 पर गौर करें: "क्योंकि वह अपनी नज़र में खुद को इतना ज़्यादा खुशफहमी में रखता है कि अपने पाप को पहचान नहीं पाता या उससे नफ़रत नहीं कर पाता।" यहाँ "खुशफहमी" (या "खुद पर घमंड करना") के तौर पर अनुवादित शब्द का असल मतलब है "चीज़ों को आसान बनाना"; यह चापलूसी या खुद को बहलाने को दिखाता है। जब कोई बुराई करता है और फिर भी खुद से कहता है, "सब ठीक है, सब ठीक है," तो वह खुद को बहला रहा होता है; साथ ही, वह खुद को धोखा दे रहा होता है और सीधे बर्बादी के रास्ते पर भाग रहा होता है (पार्क युन-सन)। यह कितनी बेवकूफ़ी है! देखें कि वे अपने पाप करने के बाद भी उन्हें कितनी आसानी से लेते हैं। अपनी बुराई के सामने आने और उससे होने वाली नफ़रत के बारे में सोचने के बजाय, वे अपने दिल को बहलाते हैं और ज़ोर देकर कहते हैं कि "सब ठीक है।" जॉन कैल्विन ने कहा: "बुरा आदमी अपने दिल को बहलाता है, जबकि नेक इंसान सख्ती से खुद की जाँच करता है और खुद पर काबू रखता है।" जो नेक इंसान परमेश्वर का आदर करता है, वह बुराई से नफ़रत करता है—और पूरी तरह से नफ़रत करता है—लेकिन बुरे लोग, जो अंधेरे में रहते हैं और जिनमें परमेश्वर का डर नहीं होता, पाप को हल्के में लेते हैं और बुराई की ओर भागते हैं। (3) उनके मुँह से झूठ निकलता है।

आज के वचन में भजन संहिता 36:3 के पहले हिस्से को देखें: "उसके मुँह की बातें बुराई और धोखे से भरी हैं..." क्योंकि बुरे लोग पाप को हल्के में लेते हैं, इसलिए वे बिना सोचे-समझे बोलकर पाप करते हैं। हमारे होंठ दूसरों पर दया करने और सच बोलने के लिए बने हैं; लेकिन बुरे लोग इसके उलट काम करते हैं, वे अपनी ज़बान का इस्तेमाल दूसरों को नुकसान पहुँचाने और झूठ बोलने के लिए करते हैं (पार्क युन-सन)। प्रेरित पौलुस ने कहा: "उनका गला खुली कब्र जैसा है; उन्होंने अपनी ज़बान से धोखा दिया है; उनके होंठों के नीचे ज़हरीले साँप का ज़हर है; उनका मुँह श्राप और कड़वाहट से भरा है" (रोमियों 3:13–14)। बुरे लोगों के मुँह से झूठ निकलता है।

(4) वे समझदारी और अच्छाई से मुँह मोड़ लेते हैं।

आज के वचन में भजन संहिता 36:3 के दूसरे हिस्से को देखें: "...उसने समझदारी से काम लेना और भलाई करना छोड़ दिया है।" अंधेरे में रहने वाले बुरे लोग पूरी तरह से भ्रष्ट हो गए हैं; समझ की कमी के कारण, उन्होंने अच्छा करने की क्षमता खो दी है। उनके लिए समझ की कोई ज़रूरत नहीं रह गई है। चूँकि अच्छा करने के लिए ज़रूरी समझ की अब उन्हें चाहत नहीं है, इसलिए बुरे लोग समझ और अच्छाई से मुँह मोड़ लेते हैं और बुरे काम करते रहते हैं। समझ की कमी के कारण, बुरे लोग ऐसे अच्छे काम नहीं कर पाते जो उन्हें सही साबित कर सकें (मत्ती 11:19)।

(5) वे बिस्तर पर लेटे-लेटे बुराई की योजना बनाते हैं।

आज के पाठ में भजन 36:4 का पहला हिस्सा देखें: "वह अपने बिस्तर पर बुराई की योजना बनाता है..."। विश्वास करने वाले के लिए, "बिस्तर" आत्म-चिंतन और पश्चाताप की जगह है (4:4), लेकिन बुरे लोग उसी जगह का इस्तेमाल बुराई की योजना बनाने के लिए करते हैं (पार्क युन-सन)। इसे देखकर, हम एक ऐसे व्यक्ति को देखते हैं जिसकी आत्मा पूरी तरह से बुराई से भरी हुई है—कोई ऐसा व्यक्ति जो अच्छे कामों के मौकों का भी इस्तेमाल बुरे काम करने के लिए करता है; वह ऐसा व्यक्ति नहीं है जो अचानक गलत काम करने की इच्छा के आगे झुक जाता है, बल्कि वह जान-बूझकर और योजना बनाकर बुराई करता है।

(6) वह जान-बूझकर ऐसे रास्ते पर चलता है जो अच्छा नहीं है।

आज के पाठ में भजन 36:4 का बीच का हिस्सा देखें: "...वह खुद को ऐसे रास्ते पर ले जाता है जो अच्छा नहीं है..."। यह दिखाता है कि बुरा व्यक्ति बाहरी दबाव या लालच के कारण अनचाहे ही पाप में नहीं पड़ता; बल्कि, वह जान-बूझकर और बिना किसी हिचकिचाहट के पाप करता है और उसमें मज़ा लेता है (पार्क युन-सन)। मेरा मानना है कि पाप में मज़ा लेने की इस स्थिति तक पहुँचने की एक प्रक्रिया होती है। हम भजन 1:1 में इस प्रक्रिया को देख सकते हैं: पहला, बुरे लोगों की सलाह मानना; दूसरा, पापियों के रास्ते पर खड़ा होना; और तीसरा, अहंकारी लोगों की जगह पर बैठना।

(7) वह बुराई से नफ़रत नहीं करता।

भजन 36:4 का आखिरी हिस्सा देखें: "...वह बुराई से नफ़रत नहीं करता।" जहाँ परमेश्वर का डर रखने वाले लोग बुराई से नफ़रत करते हैं, वहीं बुरे लोग—जिनमें ऐसा डर नहीं होता—बुराई से नफ़रत नहीं करते बल्कि उसमें मज़ा लेते हैं।

फिर भी, बुरे लोगों के इस अंधेरे के बीच, धर्मी लोग कहते हैं: "क्योंकि तेरे ही पास जीवन का स्रोत है; तेरे ही प्रकाश में हम प्रकाश देखते हैं" (पद 9)। दूसरी बात, आइए हम धर्मी लोगों की ज्योति (रोशनी) पर मनन करें।

प्रभु में—जो जीवन का स्रोत हैं—और उनकी चमक या ज्योति में, हम ज्योति देखते हैं। दूसरे शब्दों में, दुष्टों के अंधेरे के बीच, दाऊद ने प्रभु की ज्योति की ओर देखा। वह ज्योति क्या है? यह परमेश्वर के दिव्य स्वभाव को दर्शाती है। मैं इस अंश में बताए गए परमेश्वर के दिव्य स्वभाव के दो पहलुओं पर विचार करना चाहूँगा:

(1) परमेश्वर की प्रेमपूर्ण दया और उनकी सच्चाई (वफ़ादारी)।

आज के वचन, भजन संहिता 36:5 को देखें: "हे यहोवा, तेरी प्रेमपूर्ण दया आकाश तक फैली है, तेरी सच्चाई बादलों तक पहुँचती है।" यह बात कि उनकी प्रेमपूर्ण दया और सच्चाई—जो परमेश्वर की चमक हैं—आकाश तक फैली हैं और बादलों तक पहुँचती हैं, इसका मतलब है कि वे ऊपर से तेज़ी से चमकती हैं। इस प्रकार,

प्रभु की सुरक्षा का अनुभव करने के बाद, दाऊद ने स्वीकार किया: "हे परमेश्वर, तेरी प्रेमपूर्ण दया कितनी अनमोल है! इसलिए मनुष्य तेरे पंखों की छाया में भरोसा रखते हैं" (पद 7)। इसके अलावा, दाऊद की आत्मा को परमेश्वर की भरपूर कृपा से संतुष्टि मिली। पद 8 को देखें: "वे तेरे भवन की भरपूरता से तृप्त होते हैं, और तू उन्हें अपनी प्रसन्नता की नदी से पिलाता है।" यहाँ, "प्रसन्नता की नदी" का अर्थ है "उनकी खुशी की नदी" (पार्क युन-सन)। यह उस भरपूर कृपा को दर्शाता है जो मानवीय जीवन को आत्मिक रूप से संतुष्ट करती है (पार्क युन-सन)। यूहन्ना 1:14 कहता है कि यीशु "कृपा और सच्चाई से भरपूर" थे। परमेश्वर की प्रेमपूर्ण दया और सच्चाई की ज्योति पर मनन करने से हम यीशु की कृपा की भरपूरता पर विचार करने के लिए प्रेरित होते हैं। जब हम खुद को दुष्टों के अंधेरे के बीच पाते हैं, तब भी हम प्रभु की चमक—उनकी प्रेमपूर्ण दया और सच्चाई की ज्योति—की ओर देखकर आगे बढ़ते हैं।

(2) परमेश्वर की धार्मिकता और उनका न्याय। आज के अंश, भजन संहिता 36:6 को देखें: "तेरी धार्मिकता ऊँचे पहाड़ों जैसी है, तेरे न्याय गहरे सागर जैसे हैं; हे यहोवा, तू मनुष्य और पशु दोनों की रक्षा करता है।" इस पद का अर्थ है कि परमेश्वर ऊँचे पहाड़ों की तरह ही अटल रहते हैं; वे अपने चुने हुए लोगों के साथ होने वाले सभी अन्याय को देखते हैं और अपनी धार्मिकता प्रकट करते हैं। उनकी धार्मिकता के दायरे में किया गया उनका न्याय "महान सागर" जैसा है—यानी "अथाह सागर"। इसका मतलब है कि परमेश्वर के रहस्यमयी काम और न्याय इंसानी समझ से परे हैं (पार्क युन-सन)।

जब मैं भजन संहिता 36 पर गहराई से सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि यहाँ जिस दाऊद का ज़िक्र है, वह यीशु की ओर इशारा करता है। जब हम यीशु—जो बुरे लोगों के अंधेरे से घिरे हुए थे—और उनके क्रूस के बारे में सोचते हैं, तो हमें परमेश्वर की दया, सच्चाई, धार्मिकता और न्याय की झलक मिलती है। आखिरकार, क्रूस पर अपनी मौत के ज़रिए, यीशु ने परमेश्वर की धार्मिकता और न्याय को पूरा किया, और इस तरह हमें प्रभु की खुशियों की नदी से पीने का मौका दिया। इसके अलावा, जैसे-जैसे प्रभु हमें लगातार अपनी दया का अनुभव कराते हैं (पद 10), वे हमें अपनी खुशी की नदी से पीने के काबिल बनाते हैं। परमेश्वर, जो हमारी आत्माओं को भरपूर तृप्ति देते हैं, हमारे जीवन के ज़रिए अपनी दया और सच्चाई को ज़ाहिर करते रहेंगे और हम पर हमला करने वाले बुरे लोगों को हम तक पहुँचने से रोकेंगे (पद 11)। आखिर में, अपने बुद्धिमान न्याय के ज़रिए, प्रभु यह पक्का करेंगे कि बुरे लोग कभी दोबारा उठ न पाएँ (पद 12)।

जो प्रभु की ओर देखते हैं

[भजन संहिता 37]

पास्टर जॉन मैक्सवेल की किताब *फ्लाइट ऑफ़ द बफ़ेलो* (जो कोरियाई भाषा में *द लॉ ऑफ़ ट्रस्ट फ़ॉर विनिंग टुगेदर* के नाम से छपी है) में जॉनसनविले फ़ूड्स के मालिक और CEO राल्फ स्टेयर का एक बहुत अच्छा विचार है: "एक बात जो मुझे शुरू में ही समझ आ गई थी और जिस पर मैं अक्सर सोचता हूँ, वह यह है कि ज़्यादातर समस्याएँ मेरे अपने अंदर से ही पैदा होती हैं। मैंने पाया कि सफलता में सबसे बड़ी रुकावट मेरी अपनी सोच—मेरी अपनी उम्मीदें—ही हैं" (इंटरनेट)। मैं इस बात पर सोचता हूँ कि "मेरी अपनी उम्मीदें" असल में सफलता में सबसे बड़ी रुकावट बन सकती हैं। हर कोई अपने लिए कुछ उम्मीदें रखता है। ये उम्मीदें जितनी ज़्यादा होती हैं, खुद से निराश होने का खतरा भी उतना ही ज़्यादा होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमें अपनी कमज़ोरियों का सामना करना पड़ता है—ऐसी चीज़ें जिन्हें हम मानना नहीं चाहते। फिर भी, कौन अपनी अक्षमता को खुशी-खुशी मानेगा? हमें खुद से पूरी तरह निराश होने की ज़रूरत है। इसके ज़रिए, हमें अपनी कमज़ोरियों का गहरा एहसास होना चाहिए। कारण यह है कि तभी हम पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर होंगे और उनकी मदद माँगेंगे। नतीजतन, अपनी पूरी अक्षमता के बीच, हम परमेश्वर की शक्ति से प्रभावित होंगे। उस शक्ति की अगुवाई में, हम ऐसा जीवन जी पाएँगे जो उनकी महानता को ज़ाहिर करता है।

आज के भाग, भजन संहिता 37 में, भजनकार दाऊद कहते हैं: "क्योंकि बुरे काम करने वाले मिटा दिए जाएँगे, लेकिन जो प्रभु की बाट जोहते हैं, वे धरती के वारिस होंगे" (पद 9)। यहाँ, "प्रभु की बाट जोहने" (या उम्मीद के साथ प्रभु की ओर देखने) का मतलब है ऐसा विश्वास जो परमेश्वर की मदद को ही एकमात्र सच्चा आशीर्वाद मानता है और बेसब्री से उसका इंतज़ार करता है (पार्क युन-सन)। दाऊद, जो यह समझते थे कि परमेश्वर

की मदद ही सच्चा आशीर्वाद है, एक कदम और आगे बढ़े: उन्होंने सिर्फ़ परमेश्वर की मदद पाने के बजाय, खुद परमेश्वर से मिलने को ही सबसे बड़ा आशीर्वाद माना (पार्क युन-सन)। दाऊद की सोच पर विचार करते हुए, मैं चार मुख्य बिंदुओं के ज़रिए यह बताना चाहूँगा कि जो लोग परमेश्वर की ओर देखते हैं, वे अपना विश्वास का जीवन कैसे जीते हैं।

पहला, जो लोग प्रभु की ओर देखते हैं, वे शिकायत नहीं करते। भजन संहिता 37:1 और आयत 7 के बाद वाले हिस्से को देखिए: "बुरे काम करने वालों के कारण कुढ़ो मत, और न ही अधर्म करने वालों से ईर्ष्या करो" (आयत 1); "उस व्यक्ति के कारण परेशान न हो जो अपने रास्ते में सफल होता है, या जो बुरी योजनाओं को पूरा करता है" (आयत 7b)। इसका मतलब है कि विश्वासियों को अपने दिलों में उन लोगों के बारे में शिकायत नहीं रखनी चाहिए जो बुराई करने के बावजूद फल-फूल रहे हैं (पार्क युन-सन)। आयत 1 के बाद वाले हिस्से में दी गई सलाह—"ईर्ष्या न करो"—भी यही संदेश देती है। "ईर्ष्या" का अर्थ है दूसरों की समृद्धि देखकर होने वाली नाराजगी की भावना; ऐसी सोच एक विश्वासी के लिए शोभा नहीं देती (पार्क युन-सन)। शिकायत करना एक बुरी आदत है। जॉन मैक्सवेल ने अपनी किताब *द लॉ ऑफ़ ट्रस्ट* में इसके बारे में एक कहानी बताई है: एक बुजुर्ग व्यक्ति सो रहा था, तभी उसके शरारती पोते-पोतियों ने सड़े हुए पनीर का एक टुकड़ा काटा और उसे उसकी नाक के नीचे, ठीक जहाँ मूंछें होती हैं, चिपका दिया। जब दादाजी जागे, तो उन्हें कुछ सड़ी-गली चीज़ की गंध आई। यह सोचकर कि गंध शायद रसोई से आ रही है, वे जाँच करने गए और सचमुच उन्हें बदबू आई। इसलिए, उन्होंने खिड़की खोली और ताज़ी हवा में गहरी साँस ली, लेकिन फिर से वही सड़न की गंध आई... बदबू आ रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे पूरी दुनिया में सड़न की बदबू फैली हो... लेकिन असल में, गंध उस व्यक्ति की नाक के ठीक नीचे रखे सड़े हुए पनीर के टुकड़े से आ रही थी (इंटरनेट)। इस उदाहरण से यह सीख मिलती है कि अगर किसी का दिल सड़ा हुआ हो, तो सब कुछ सड़ा हुआ ही लगता है। उदाहरण के लिए, अगर हमारे दिलों में शिकायतें हों, तो हर चीज़ शिकायत करने लायक लगती है; नतीजतन, हम शिकायत करने के लिए बातें ढूंढते रहते हैं। हम शिकायत और ईर्ष्या क्यों करते हैं—ऐसी सोच जो एक विश्वासी के लिए सही नहीं है? इसकी मूल वजह "क्रोध" है। आज के पाठ की आयत 8 में, दाऊद कहते हैं: "क्रोध से बचो और गुस्से से दूर रहो; परेशान न हो—इससे केवल बुराई ही होती है।" इसी तरह, नीतिवचन 24:19 में कहा गया है: "बुरे काम करने वालों के कारण परेशान न हो और न ही दुष्टों से ईर्ष्या करो।" दाऊद भजन संहिता 37:8 में हमें बुरे काम करने वालों के बारे में शिकायत न करने के लिए

क्यों कहते हैं? वे अन्याय करने वालों से ईर्ष्या न करने की चेतावनी क्यों देते हैं? (1) दाऊद पहला कारण बताते हैं: "क्योंकि वे घास की तरह जल्द ही मुरझा जाएँगे, हरे-भरे पौधों की तरह जल्द ही खत्म हो जाएँगे" (पद 2)। हमें बुरे काम करने वालों के बारे में शिकायत क्यों नहीं करनी चाहिए, इसका कारण यह है कि जैसे "घास" या "हरे-भरे पौधे" जल्दी गायब हो जाते हैं, वैसे ही बुरे लोगों की समृद्धि भी थोड़े समय के लिए होती है (पार्क युन-सन) (देखें यशायाह 40:6-8)। (2) दूसरा कारण भजन संहिता 37:8 के दूसरे हिस्से में मिलता है: "...इससे केवल बुराई ही पैदा होती है।" डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "चूंकि गुस्सा शरीर की इच्छाओं से पैदा होता है, इसलिए यह बाहरी दुनिया में अन्यायपूर्ण स्थितियों को ठीक नहीं कर पाता; इसके बजाय, यह इंसान की अपनी आत्मा में अव्यवस्था पैदा करता है। यह केवल बुराई को बढ़ाता है। एक संत को हमेशा शांत मन रखना चाहिए और ईर्ष्या या जलन रखने के बजाय दूसरों की भलाई की कामना करनी चाहिए" (पार्क युन-सन)। तो, जब हम बुरे लोगों को फलते-फूलते देखते हैं, तो हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए? हमें बुद्धिमानों की सलाह माननी चाहिए: (1) हमें हमेशा प्रभु का भय मानना चाहिए: "अपने मन में पापियों से ईर्ष्या न करो, बल्कि हमेशा प्रभु का भय मानो" (नीतिवचन 23:17)। (2) हमें बुरे लोगों की संगति में रहने की इच्छा भी नहीं करनी चाहिए: "बुरे लोगों से ईर्ष्या न करो, और न ही उनके साथ रहने की इच्छा करो" (24:1)।

दूसरी बात, जो लोग प्रभु की ओर देखते हैं, वे परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं।

भजन संहिता 37:3 देखें: "प्रभु पर भरोसा रखो और भलाई करो; देश में रहो और उसकी सच्चाई का आनंद लो।" भले ही हम विश्वासियों को भौतिक समृद्धि न मिले, फिर भी हमारे पास शिकायत करने का कोई कारण नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रभु परमेश्वर पर भरोसा करना भौतिक समृद्धि से कहीं बड़ा आशीर्वाद है (पार्क युन-सन)। क्या हम सचमुच समझते हैं कि परमेश्वर पर भरोसा करना भौतिक सफलता से बड़ा आशीर्वाद है? बुरे लोगों की समृद्धि अंततः उनके लिए श्राप बन जाती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ऐसी समृद्धि उन्हें खुद पर अधिक भरोसा करने के लिए प्रेरित करती है; उन्हें लगता है कि वे अपनी काबिलियत के कारण सफल हो रहे हैं। केवल अपने लिए जीने वाले ये बुरे लोग अपने पड़ोसियों का भला नहीं कर पाते। और जो जीवन दूसरों का भला करना नहीं जानता, उसे कभी भी धन्य जीवन नहीं कहा जा सकता। पार्क युन-सन ने कहा: "परमेश्वर पर भरोसा किए बिना कौन सच में भलाई कर सकता है? भलाई करने में विश्वास करने वाले की उम्मीद परमेश्वर से मिलने वाले इनाम पर टिकी होती है, और भलाई करने की शक्ति भी परमेश्वर पर

निर्भर रहने से ही मिलती है" (पार्क युन-सन)। तो फिर, हम—जो परमेश्वर की ओर देखते हैं—खास तौर पर उस पर अपना भरोसा कैसे रखें?

(1) हमें परमेश्वर की वफ़ादारी पर भरोसा करना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, बुरे लोगों की कामयाबी से जलने या शिकायत करने के बजाय, हमें परमेश्वर की वफ़ादारी पर भरोसा करना चाहिए और उसके "वफ़ादारी भरे इनाम" का इंतज़ार करना चाहिए।

(2) हमें अपना रास्ता परमेश्वर को सौंप देना चाहिए।

आज के वचन, भजन संहिता 37:5 को देखें: "अपना रास्ता यहोवा को सौंप दे; उस पर भरोसा रख, और वह काम करेगा।" यहाँ, "रास्ता" का मतलब विश्वास करने वाले की सभी चिंताओं और उनके अनजान भविष्य के रास्ते से है। "सौंपने" के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द हिब्रू शब्द *गोल* से आया है, जिसका मतलब है "लुढ़काना" (पार्क युन-सन)। "भारी पत्थर उठाकर पहाड़ पर चढ़ना मुश्किल है, फिर भी उसी पत्थर को चोटी से नीचे लुढ़काना आसान और सुखद है। चिंता और पाप का बोझ उठाकर स्वर्ग जाना नामुमकिन है, लेकिन अपने सारे बोझ यीशु को सौंपना आसान और सुखद है, जो मेरे लिए उन्हें उठाने के लिए स्वर्ग से धरती पर आए थे। यही वह आराम है जो विश्वास से मिलता है" (पार्क युन-सन)।

अपना रास्ता परमेश्वर को सौंपने का क्या नतीजा होता है? आज के हिस्से के वचन 6 को देखें: "वह तेरी धार्मिकता को भोर की तरह और तेरे मामले के न्याय को दोपहर के सूरज की तरह चमकाएगा।" दूसरे शब्दों में, जब हम—विश्वास करने वालों के तौर पर—बुरे लोगों के हाथों अन्याय सहते हैं और उस शिकायत को प्रभु को सौंप देते हैं, तो धर्मी परमेश्वर हमें छोड़ता नहीं है; बल्कि, वह अद्भुत तरीके से हमें सही साबित करता है और ऊँचा उठाता है, जिससे हम रोशनी की तरह चमकते हैं।

तीसरी बात, जो लोग यहोवा की ओर देखते हैं, उन्हें परमेश्वर में खुशी मिलती है।

भजन संहिता 37:4 को देखें: "यहोवा में खुशी मना और वह तुझे तेरे दिल की इच्छाएँ पूरी करके देगा।" जो विश्वास परमेश्वर में आनंद लेता है, वह उस विश्वास से कहीं अधिक परिपक्व होता है जो केवल परमेश्वर पर निर्भर रहता है (पद 3) (पार्क युन-सन)। यह विश्वास जीवन के उस स्तर तक पहुँच चुका होता है जहाँ व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा को ही अपनी इच्छा मानने लगता है। इसीलिए दाऊद की प्रार्थनाएँ और इच्छाएँ पूरी होती हैं। यह कितना अद्भुत विश्वास है! परमेश्वर पर निर्भर रहने वाले विश्वास से आगे बढ़कर परमेश्वर में आनंद लेने वाले विश्वास तक पहुँचना... तो फिर, परमेश्वर में आनंद लेने वाला विश्वास क्या है?

(1) यह वह विश्वास है जो "यहोवा की व्यवस्था में आनंद लेता है और दिन-रात उसकी व्यवस्था पर मनन करता है।"

भजन संहिता 1:2 को देखें: "...यहोवा की व्यवस्था में आनंद लेता है, और दिन-रात उसकी व्यवस्था पर मनन करता है।"

(2) यह वह विश्वास है जो परमेश्वर की स्तुति करता है।

भजन संहिता 43:4 को देखें: "तब मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊँगा, उस परमेश्वर के पास जो मेरा परम आनंद है; और वीणा बजाकर मैं तेरी स्तुति करूँगा, हे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर।"

(3) यह वह विश्वास है जो जानता है कि परमेश्वर मुझमें कितना आनंद लेते हैं।

सपन्याह 3:17 को देखें: "तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे बीच में है, वह एक शक्तिशाली उद्धारकर्ता है; वह तुम्हारे कारण खुशी से आनंदित होगा; वह अपने प्रेम से तुम्हें शांत करेगा; वह ऊँचे स्वर में गाकर तुम्हारे लिए खुशी मनाएगा।"

अंत में, चौथा बिंदु: जो लोग यहोवा की ओर देखते हैं, वे परमेश्वर के सामने शांत रहते हैं और धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते हैं।

भजन संहिता 37:7 को देखिए: "यहोवा के सामने चुपचाप रह और धीरज से उसकी प्रतीक्षा कर; जब लोग अपने कामों में सफल हों, जब वे अपनी बुरी योजनाएँ पूरी करें, तो परेशान न हो।" जब हम बुरे काम करने वालों और अधर्मी लोगों को फलते-फूलते देखते हैं और ईर्ष्या, जलन और गुस्से से भर जाते हैं, तो मन में जो उथल-पुथल मचती है, उसके कारण हम शांत नहीं रह पाते। दूसरे शब्दों में, हम प्रभु में शांति का अनुभव नहीं कर पाते। आखिरकार, हम बेचैन हो जाते हैं। भजन रचने वाले आसाफ के साथ भी ऐसा ही हुआ था, जैसा कि हम भजन संहिता 73 में देख सकते हैं। बुरे लोगों की समृद्धि देखकर उसे घमंडी लोगों से ईर्ष्या हुई (पद 3)। उसने माना कि वह लगभग लड़खड़ा गया था और उसके पैर फिसलने ही वाले थे (पद 2)। फिर भी, जब आसाफ "परमेश्वर के पवित्र स्थान में गया" (पद 17), तब उसे बुरे लोगों के अंतिम अंजाम का एहसास हुआ—कि वे अचानक विनाश का सामना करते हैं (पद 18–20)। यह एहसास होने पर, आसाफ ने माना: "जब मेरा मन दुखी था और मेरी आत्मा कड़वाहट से भरी थी, तो मैं नासमझ और अज्ञानी था; मैं तेरे सामने एक बेसमझ जानवर जैसा था" (पद 21–22)। हमें परमेश्वर के सामने शांत रहना चाहिए। हमें बुरे लोगों की समृद्धि या भले लोगों के दुख से अपने मन को परेशान नहीं होने देना चाहिए। बुरे लोगों से ईर्ष्या या जलन करने की कोई ज़रूरत नहीं है। इसके बजाय, हमें बस परमेश्वर के सामने शांत रहना चाहिए और उसके उद्धार और न्याय की प्रतीक्षा करनी चाहिए। हमारा प्रभु निश्चित रूप से बुरे लोगों का न्याय करेगा और हमें (हमारे दुख से) छुटकारा दिलाएगा। इस प्रभु पर भरोसा रखते हुए, हमें धैर्य और शांति से प्रतीक्षा करनी चाहिए। भजन संहिता 37:9–10 से आज का अंश देखिए: "क्योंकि बुरे काम करने वाले मिटा दिए जाएँगे, लेकिन जो यहोवा की प्रतीक्षा करते हैं, वे धरती के वारिस होंगे। क्योंकि बस थोड़ी देर और, और बुरे लोग नहीं रहेंगे; सचमुच, तुम उनकी जगह को ध्यान से ढूँढोगे, लेकिन वह नहीं मिलेगी।" बुरे लोग निश्चित रूप से मिट जाएँगे। हालाँकि वे अभी समृद्ध दिख सकते हैं, लेकिन वह समृद्धि कुछ समय के लिए ही होती है। इसके अलावा, उनकी समृद्धि उनके लिए श्राप बन जाएगी; इसके कारण, वे परमेश्वर के विरुद्ध और अधिक पाप करेंगे। नतीजतन, परमेश्वर का न्याय उन पर आएगा।

जो लोग यहोवा की प्रतीक्षा करते हैं, वे "नम्र" लोग हैं (पद 11)। दूसरे शब्दों में, जो लोग प्रभु की ओर देखते हैं, वे ही नम्र लोग हैं। जब नम्र लोग बुरे लोगों को फलते-फूलते देखते हैं, तो वे कोई शिकायत नहीं करते। क्योंकि वे परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, इसलिए नम्र लोग अपना पूरा जीवन-मार्ग उन्हीं को सौंप देते हैं। वे

परमेश्वर में आनंद लेते हैं और जानते हैं कि उनके सामने कैसे चुप रहना है और धैर्यपूर्वक कैसे प्रतीक्षा करनी है। इस प्रकार, अंततः वे पृथ्वी के अधिकारी बनते हैं (पद 11) और आने वाले संसार की विरासत प्राप्त करते हैं (पार्क युन-सन)। इसके अलावा, नम्र लोगों को भरपूर शांति मिलती है। क्योंकि दीन और नम्र लोग अपनी आशा केवल परमेश्वर पर रखते हैं और केवल उन्हीं में संतुष्टि पाते हैं, इसलिए उनकी आत्माएँ हमेशा आनंदित और शांत रहती हैं (पार्क युन-सन)। मेरी प्रार्थना है कि ऐसी आशीषें आप पर और मुझ पर बनी रहें।

शिकायत न करें!

“बुरे काम करने वालों के कारण कुढ़ो मत, और न ही उन लोगों से ईर्ष्या करो जो अधर्म करते हैं... प्रभु में विश्राम करो, और धैर्यपूर्वक उसकी प्रतीक्षा करो; उस व्यक्ति के कारण परेशान न हो जो अपने रास्ते में सफल होता है, या जो बुरी योजनाएँ पूरी करता है। क्रोध करना छोड़ दो, और गुस्से का त्याग करो; परेशान न हो—इससे केवल नुकसान ही होता है” (भजन संहिता 37:1, 7, 8)।

कल, शुक्रवार की सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, “जब चीजें मेरी योजना के अनुसार न हों” विषय के तहत भजन संहिता 33:11 पर विचार करते समय, मेरे मन में एक विचार आया: ‘मेरे दिल में असंतोष का कारण यह है कि मैं परमेश्वर पर पूरी तरह से भरोसा नहीं करता।’ जब चीजें बार-बार मेरी योजनाओं के अनुसार नहीं होती थीं, तो मैं निराश, क्रोधित और हतोत्साहित महसूस करता था; मुझे एहसास हुआ कि इसका कारण यह था कि मैं वास्तव में उस परमेश्वर पर निर्भर नहीं था जिस पर विश्वास करने और निर्भर रहने का मैं दावा करता था। उस विचार को ध्यान में रखते हुए, मैंने भजन संहिता 37 से 41 तक पढ़ना शुरू किया—जो आज की सुबह की प्रार्थना के लिए निर्धारित अंश था—और भजन संहिता 37 की आयतों 1, 7 और 8 में आने वाले वाक्यांश “परेशान न हों” (या “शिकायत न करें”) ने मेरा ध्यान खींचा। मैंने इस बात पर मनन किया कि क्यों दाऊद, जो भजनकार थे, ने अपनी आत्मा से “परेशान न होने” के लिए कहा और परमेश्वर से इस तरह प्रार्थना की—सिर्फ एक बार नहीं, बल्कि तीन बार। अब, आज शनिवार की सुबह की प्रार्थना सभा में भजन संहिता 37:1–11 पर आधारित परमेश्वर

के वचन को सुनाने के बाद, मैं अपने कार्यालय में बैठा हूँ, और इस पर आगे विचार करते हुए इसे लिख रहा हूँ। मैंने इस मनन के लिए “शिकायत न करें!” शीर्षक चुना है।

भजन संहिता 37 (आयतों 1, 7–8) के आज के अंश में, हमें बार-बार—तीन बार—कहा गया है कि शिकायत न करें। दूसरे शब्दों में, बाइबिल हमें बताती है कि अन्याय करने वाले बुरे लोगों से ईर्ष्या न करें, भले ही हम उन्हें समृद्ध होते हुए देखें (आयतें 1 और 7)। इस अंश पर विचार करने से मुझे भजन संहिता 73 की याद आ गई। ऐसा इसलिए है क्योंकि, वर्षों पहले, एक बुजुर्ग के निधन से पहले, उन्होंने पूछा था, "धर्मी लोग क्यों कष्ट उठाते हैं जबकि बुरे लोग समृद्ध होते हैं?" फिर परमेश्वर ने मुझे भजन संहिता 73 पर मनन करने के लिए प्रेरित किया, जहाँ मुझे उस सवाल का जवाब मिला। इसलिए, जब भी मैं "बुरे लोगों की समृद्धि" के विषय पर सोचता हूँ, तो मुझे भजन संहिता 73 याद आती है। उस भजन में, आसाफ ने भी बुरे लोगों की समृद्धि देखकर घमंडी लोगों से जलन महसूस की थी (भजन संहिता 73:1)। बुरे लोगों को देखकर—जिन्हें मरने पर कोई दर्द नहीं होता, जो मज़बूत और स्वस्थ रहते हैं (पद 4), और जो दुख-तकलीफों और आपदाओं से मुक्त रहते हैं (पद 5), जिनका शरीर हष्ट-पुष्ट होता है और जिनकी कमाई उनकी इच्छाओं से भी ज़्यादा होती है (पद 7)—आसाफ को इतनी जलन हुई कि वह लगभग लड़खड़ा ही गया था (पद 2)। खासकर जब उसने उन्हें लगातार शांति से रहते और उनकी दौलत को बढ़ते देखा (पद 12), तो आसाफ यहाँ तक कह बैठा, "सचमुच मैंने व्यर्थ ही अपने दिल को शुद्ध रखा और निर्दोषता में अपने हाथ धोए" (पद 13)। जब हम नेक लोगों को दुख सहते और बुरे लोगों को फलते-फूलते देखते हैं, तो हम ईसाई भी आसानी से उनसे जलन करने लग सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे आसाफ या दाऊद ने किया था। हम न केवल उनसे जलन कर सकते हैं, बल्कि उनकी समृद्धि पर गुस्सा भी महसूस कर सकते हैं (37:8)। इसके अलावा, हम असंतोष के कारण लगातार शिकायतें भी कर सकते हैं (पद 1, 7 और 8)। हालाँकि, आज के अंश—भजन संहिता 37:1, 7 और 8—में बाइबल हमें साफ़ तौर पर बताती है, न सिर्फ़ एक बार बल्कि तीन बार, कि शिकायत न करें। इसका कारण क्या है? इसका कारण यह है कि शिकायत करने से केवल बुराई ही होती है (पद 8)। दूसरे शब्दों में, हमें शिकायत नहीं करनी चाहिए, क्योंकि अगर हम बुरे लोगों की समृद्धि से जलन करते हैं और असंतोष के कारण बड़बड़ाते हैं, तो हम अंततः पाप कर बैठेंगे। बुरे लोगों की समृद्धि देखकर शिकायत न करने का एक और कारण यह है कि वे जल्द ही मिटा दिए जाएँगे (पद 9, 22, 28, 34, 38; तुलना करें 37:2, 36)। वे उतनी ही तेज़ी से मिटा दिए जाएँगे जितनी तेज़ी से हरी-भरी वनस्पति मुरझाकर सूख जाती है (पद 2)। भजन संहिता 73 में, भजनकार आसाफ को इस सच्चाई का एहसास तब हुआ

जब वह परमेश्वर के पवित्र स्थान में गया (पद 17)। उसे क्या एहसास हुआ? उसे बुरे लोगों के अंत का पता चला (पद 17)। बुरे लोगों का अंत क्या है? यह विनाश है (पद 18)। यह विनाश अचानक आता है—वे एक पल में बर्बाद हो जाते हैं (पद 19)। जैसे जागने पर कोई सपने को नज़रअंदाज़ कर देता है, वैसे ही जब प्रभु उठेंगे तो वे बुरे लोगों को तुच्छ समझेंगे (पद 20)।

प्यारे लोगों, जो बुराई करते हैं, वे निश्चित रूप से मिटा दिए जाएँगे (भजन संहिता 37:9)। न केवल वे लोग जिन्हें प्रभु ने श्राप दिया है, मिटा दिए जाएँगे (पद 22), बल्कि उनकी संतानें भी मिटा दी जाएँगी (पद 28)। इसके अलावा, इन पापियों का भविष्य भी खत्म हो जाएगा (पद 38)। हम बुरे लोगों को मिटते हुए साफ़ देखेंगे (पद 34)। इसलिए, हमें बुरे लोगों की समृद्धि से जलन नहीं करनी चाहिए और न ही इसके बारे में शिकायत करनी चाहिए। शिकायत करने के बजाय, हमें क्या करना चाहिए? सबसे पहले, हमें परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए (पद 3)। हमें परमेश्वर की सच्चाई को अपना सहारा बनाना चाहिए (पद 3)। इसके अलावा, हमें परमेश्वर में आनंद लेना चाहिए (पद 4)। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हमारे दिल की इच्छाएँ पूरी करेंगे (पद 4)। हमें अपना रास्ता परमेश्वर को सौंप देना चाहिए (पद 5)। यदि हम परमेश्वर पर निर्भर रहते हैं, तो वे उसे पूरा करेंगे (पद 5)। हमें परमेश्वर के सामने शांत रहना चाहिए और धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी चाहिए (पद 7)। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम वे लोग हैं जो परमेश्वर पर आशा रखते हैं (पद 9)। हमें नम्र (पद 11) और निर्दोष (पद 37) भी होना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम परमेश्वर के अनंत राज्य के वारिस बनेंगे और भरपूर शांति का आनंद लेंगे (पद 11; पद 37 देखें)।

धैर्य से इंतज़ार करें!

"प्रभु के सामने शांत रहें और धैर्यपूर्वक उसकी प्रतीक्षा करें; जब लोग अपने कामों में सफल हों या अपनी बुरी योजनाओं को पूरा करें, तो परेशान न हों" (भजन संहिता 37:7)।

एक ईसाई को अपना काम-काज या नौकरी कैसे करनी चाहिए? इन मामलों में या तो लोगों पर ध्यान दिया जा सकता है या फिर परमेश्वर पर। भजन संहिता 37 बताती है कि जो व्यापारी या कर्मचारी परमेश्वर के बजाय लोगों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, उनमें दो तरह की प्रतिक्रियाएँ हो सकती हैं:

पहली, वे बुरे काम करने वालों की शिकायत करते हैं और अन्याय करने वालों से ईर्ष्या करते हैं।

भजन संहिता 37:1 देखें: "बुरे लोगों के कारण परेशान न हों और न ही गलत काम करने वालों से ईर्ष्या करें।" जो व्यापारी या कर्मचारी लोगों पर ज़्यादा ध्यान देते हैं, वे बुरे लोगों की शिकायत और अन्याय करने वालों से ईर्ष्या इसलिए कर सकते हैं क्योंकि बुरे लोग अक्सर सफल होते हैं (पद 7)। चूँकि बुरे लोग "बुरी योजनाओं" से दुनियावी सफलता पाते हैं, इसलिए नेक लोगों के मन में शिकायत और ईर्ष्या जैसे पाप करने का लालच आसानी से आ सकता है (पद 7)। प्रतिस्पर्धी समाज में, दूसरों से अपनी तुलना करने की इच्छा को न रोक पाने के कारण, वे नेक लोगों के दुख और बुरे लोगों की सफलता के बीच के अंतर से जूझते हुए परमेश्वर के बजाय लोगों को देखते हैं; नतीजतन, वे परमेश्वर से शिकायत कर सकते हैं और बुरे लोगों की सफलता को लेकर ईर्ष्या पाल सकते हैं।

दूसरी, वे परमेश्वर से नाराज़ हो जाते हैं (पद 8)। बुरे लोगों की सफलता के बारे में शिकायत करने और ईर्ष्या करने से आखिरकार परमेश्वर के प्रति गुस्सा पैदा हो सकता है।

इससे केवल "बुराई" ही होती है (पद 8)। बुरे लोगों के प्रति शुरू की गई शिकायत और ईर्ष्या वहीं नहीं रुकती; वे आसानी से परमेश्वर के खिलाफ गुस्से में बदल जाती हैं। अगर ईसाई व्यापारियों या कर्मचारियों के गुस्से की गहराई से जाँच की जाए, तो यह कहना मुश्किल है कि उसमें से कितना गुस्सा असल में परमेश्वर के खिलाफ *नहीं* था। तो, परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करने वाले उद्यमी और कर्मचारी कैसा जीवन जीते हैं? हम दो मुख्य पहलुओं पर विचार कर सकते हैं:

(1) वे शांत उम्मीद के साथ धैर्यपूर्वक परमेश्वर का इंतज़ार करते हैं (पद 7, 9)।

यह जानते हुए कि बुरे लोगों की सफलता का अंत विनाश है (भजन संहिता 74), वे परमेश्वर की ओर देखते हुए धैर्य और शांति से इंतज़ार करते हैं। वे इसलिए सहन कर पाते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि परमेश्वर बुरे लोगों की बुरी योजनाओं को नाकाम कर देंगे और उनकी कुछ समय की "सफलता" का जल्द ही अंत कर देंगे। दुनिया की कामयाबी पर खुश होने के बजाय, वे परमेश्वर में खुशी पाते हैं (पद 4), अपना रास्ता उन्हें सौंपते हैं (पद 5), और नेकी और न्याय का काम करते हैं (पद 6)।

(2) वे ईमानदारी से भलाई करते हैं (भजन संहिता 37:3)।

परमेश्वर पर भरोसा रखने वाला उद्यमी या कर्मचारी वह है जो मुश्किल और कठिन हालात में भी परमेश्वर पर भरोसा रखता है और ईमानदारी से भलाई करता है। जो "वफ़ादारी से जीता है" (पद 3) और जिसे पूरा भरोसा है कि परमेश्वर उसके दिल की इच्छाएँ पूरी करेगा (पद 4), वह हालात चाहे कैसे भी हों, भलाई करना कभी नहीं छोड़ता।

क्या हम मसीही उद्यमी या कर्मचारी के तौर पर सच में परमेश्वर पर केंद्रित जीवन जी रहे हैं? या क्या हम शिकायत, जलन और गुस्से से भरा जीवन जी रहे हैं—जिसमें हम परमेश्वर पर भरोसा नहीं करते, उसमें खुशी नहीं मनाते, या अपना रास्ता उसे नहीं सौंपते? जो लोग परमेश्वर में खुशी पाते हैं, उस पर भरोसा करते हैं और अपना रास्ता उसे सौंपते हैं, वे ही सब्र से इंतज़ार करते हैं और ईमानदारी से भलाई करते हैं। मेरी प्रार्थना है कि हम सब ऐसे लोग बनें जो इस तरह सब्र से इंतज़ार करें।

बुरे लोग बनाम नेक लोग

[भजन संहिता 37:12–22]

एक मनोवैज्ञानिक के अनुसार, छह तरह की जेलें होती हैं जिनमें लोग रहते हैं। पहली है खुद को बहुत खास समझने की जेल (narcissism); जब कोई खुद को बहुत अहम समझने लगता है—जैसे कोई "राजकुमारी" या "राजकुमार" हो—तो उसे सुधारना मुश्किल हो जाता है। दूसरी है आलोचना की जेल; जो लोग इसमें फँसे होते हैं, वे हमेशा दूसरों की कमियाँ निकालते हैं और बुराई करना पसंद करते हैं। तीसरी है निराशा की जेल; ऐसे लोग दुनिया को नकारात्मक नज़रिए से देखते हैं, हमेशा शिकायत करते हैं और उम्मीद खो बैठते हैं। चौथी है अतीत में जीने की जेल; वे "पुराने अच्छे दिनों" के बारे में सोचकर अपना वर्तमान बर्बाद कर देते हैं। पाँचवीं है लालच की जेल; जो उनके पास है उसकी कद्र करने के बजाय, वे दूसरों की चीज़ों पर नज़र रखते हैं और उन्हें ज़्यादा बेहतर समझते हैं। छठी है जलन की जेल; दूसरों को सफल होते देखकर उन्हें बिना वजह परेशानी होती है और वे दूसरों को नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। इन छह जेलों में से, मेरा मानना है कि कई विश्वासी अक्सर छठी जेल—"जलन की जेल"—में फँसे रहते हैं। खासकर, जैसा कि भजन रचने वाले आसाफ ने भजन संहिता 73 में बताया है, कई विश्वासी बुरे लोगों की कामयाबी देखकर उनसे जलन महसूस करते हैं (पद 3)। इसीलिए आज के पाठ (भजन संहिता 37) के लेखक दाऊद ने पद 1 में लिखा है: "बुरे लोगों को देखकर परेशान न हो, और न ही गलत काम करने वालों से जलन करो।" फिर भी, शैतान किसी भी तरह हमें विश्वासियों को जलन की इस जेल में फँसाने की कोशिश करता है। इसके अलावा, जैसे दहाड़ता हुआ शेर हमें विश्वासियों को निगलने की कोशिश करता है, वैसे ही शैतान बुरे लोगों—अपने सेवकों—का इस्तेमाल हमें परेशान करने, सताने, पाप में फँसाने और विश्वास से दूर करने के लिए करता है। आज के पाठ, भजन संहिता 37:12–22 में, हम देखते हैं कि शैतान अपने सेवकों (बुरे लोगों) के ज़रिए दाऊद, जो एक नेक इंसान

था, को नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर रहा है। इस पाठ पर ध्यान देते हुए, मैं बुरे और नेक लोगों के स्वभाव पर विचार करना चाहता हूँ और परमेश्वर की कृपा पाना चाहता हूँ।

बुरे लोग वे हैं जिन पर प्रभु का श्राप है।

भजन संहिता 37:22 का आखिरी हिस्सा देखें: "...जिन पर उसका श्राप है, वे मिटा दिए जाएँगे।" जो बुरे लोग परमेश्वर के श्राप के नीचे हैं, वे नेक लोगों को नुकसान पहुँचाना चाहते हैं। वे ऐसा करने की कोशिश कैसे करते हैं? हम दो तरीकों पर विचार कर सकते हैं।

(1) बुरे लोग गुस्से में नेक लोगों पर हमला करने की साजिश रचते हैं।

भजन संहिता 37:12 को देखिए: "दुष्ट लोग धर्मी के विरुद्ध साजिश रचते हैं और उन पर अपने दाँत पीसते हैं।" भजनकार दाऊद ने इन बुरे लोगों का वर्णन ऐसे लोगों के रूप में किया है जो "बुरी योजनाएँ बनाते हैं" (पद 7)। उनकी योजनाओं में से एक है "उधार लेना और वापस न करना" (पद 21)। लालच और लोभ से प्रेरित होकर—अपनी संपत्ति से कभी संतुष्ट न होने वाले—बुरे लोग दूसरों से उधार लेकर और ली हुई चीज़ों को वापस न करके भौतिक रूप से समृद्ध हो सकते हैं (पद 16)। वे ऐसे लोग हैं जो अपनी संपत्ति बढ़ाने के लिए नेक लोगों (संतों) को गिराने या खत्म करने को तैयार रहते हैं। हम बुरे लोगों को—जो अपनी बुरी योजनाओं को अंजाम देते समय दाँत पीसते हैं (पद 7, 12)—प्रेरितों के काम अध्याय 7 में स्तिफनुस के प्रति यहूदियों के रवैये में देख सकते हैं: "जब उन्होंने यह सुना, तो वे दिल में बहुत आहत हुए और उस पर दाँत पीसने लगे" (प्रेरितों के काम 7:54)। बुरे लोग नेक लोगों का उपदेश सुनते हैं, अपने दिल (अंतरात्मा) में चुभन महसूस करते हैं, और अपना गुस्सा नेक लोगों पर निकालते हैं। फिर भी, ऐसा गुस्सा आखिरकार केवल बुराई की ओर ले जाता है (भजन संहिता 37:8)।

(2) बुरे लोग नेक लोगों को मार डालना चाहते हैं।

भजन संहिता 37 के पद 14 को देखिए, जो आज हमारा मुख्य विषय है: "दुष्ट लोग तलवार निकालते हैं और धनुष चढ़ाते हैं ताकि गरीब और ज़रूरतमंद को गिरा सकें, और उन्हें मार सकें जिनके रास्ते सीधे हैं।" यहाँ, हम देखते हैं कि बुरे लोग नेक लोगों के खिलाफ अपनी साजिशों को अमल में लाते हैं, और "तलवार" या "धनुष" जैसे हथियारों का इस्तेमाल करके उन्हें मारने की एक हताश, आखिरी कोशिश करते हैं। इन हत्यारे बुरे लोगों के बिल्कुल विपरीत, बाइबल नेक लोगों को "गरीब और ज़रूरतमंद" बताती है (पद 14)। यह वर्णन उन विश्वासियों के लिए है जिनके पास मदद का कोई मानवीय स्रोत नहीं है (पार्क युन-सन)। बुरे लोगों के साथ यह कितना बड़ा अंतर है! नेक लोग कमज़ोर, शक्तिहीन और बिना मदद के दिखाई देते हैं—जिससे वे हत्यारे बुरे लोगों के लिए आसान शिकार बन जाते हैं। प्रेरितों के काम अध्याय 9 में हम बुरे और नेक लोगों के बीच ऐसा ही फ़र्क देखते हैं: शाऊल, जो "जान से मारने की धमकियाँ दे रहा था" (पद 1), दमिश्क के आराधनालयों के लिए चिट्ठियाँ लेने महायाजक के पास गया। उसका मकसद यीशु के किसी भी अनुयायी—चाहे पुरुष हो या स्त्री—को गिरफ़्तार करके उन्हें जंजीरों में जकड़कर यरूशलेम लाना था (पद 2)। जब हमारा सामना ऐसे बुरे लोगों से होता है जो हमें—यानी पवित्र लोगों को—नुकसान पहुँचाते हैं, तो हमें कैसा रवैया अपनाना चाहिए? दुखी होने के बजाय, हमें विश्वास के साथ परमेश्वर की ओर देखना चाहिए जो हँस रहा है। आज के वचन, भजन संहिता 37:13 पर गौर करें: "प्रभु बुरे लोगों पर हँसता है, क्योंकि वह देखता है कि उनका दिन आने वाला है।" प्रभु के हँसने का ज़िक्र भजन संहिता 2:4 में भी मिलता है। जब धरती के राजा उठ खड़े होते हैं और शासक मसीह के ख़िलाफ़ साजिश रचते हैं (पद 2), तो परमेश्वर उन पर हँसता है और उनका मज़ाक उड़ाता है (पद 4)। इसलिए, जब बुरे लोग हमें चोट पहुँचाने की साजिश रचें, तब भी हमें दुखी नहीं होना चाहिए, बल्कि परमेश्वर की खुशी में शामिल होना चाहिए। इसकी वजह यह है कि प्रभु के न्याय का समय—यानी उनका विनाश—नज़दीक आ रहा है। जब परमेश्वर हँस रहा हो, तो किसी पवित्र व्यक्ति को रोने की ज़रूरत नहीं है। अगर कोई पवित्र व्यक्ति परमेश्वर की हँसी के बावजूद रोता है, तो इसका कारण यह है कि उसकी अपनी आध्यात्मिक दृष्टि धुंधली हो गई है (पार्क युन-सन)। इसलिए, हमें प्रार्थना करनी चाहिए। प्रार्थना के ज़रिए, हमारी आध्यात्मिक आँखें परमेश्वर की हँसी को देखने के लिए खुलती हैं, जिससे हम दुख के बीच भी उसकी खुशी में शामिल हो पाते हैं (कैल्विन)। हमें बुरे लोगों से डरना क्यों नहीं चाहिए, बल्कि परमेश्वर की खुशी में क्यों शामिल होना चाहिए? दाऊद इसका कारण बताता है: "उनकी तलवारें उनके अपने ही दिलों को छेद देंगी, और उनके धनुष टूट जाएँगे" (37:15)। जिस पल बुरे लोग, जान

लेने के गुस्से से भरे हुए, चोट पहुँचाने की अपनी आखिरी और हताश कोशिश करते हैं, वही पल उनके विनाश का पल होता है (पार्क युन-सन)। आज के वचन, भजन संहिता 37:20 में दाऊद कहता है: "बुरे लोग नष्ट हो जाएँगे; प्रभु के दुश्मन मेमनों की चर्बी की तरह होंगे—वे धुएँ की तरह गायब हो जाएँगे।" ज़रा सोचिए कि चर्बी जलकर धुआँ बन रही है। ठीक उसी तरह, बुरे लोगों का विनाश पूरी तरह से और एक पल में हो जाएगा। आखिरकार, बुरे लोग, जो प्रभु के श्राप के अधीन हैं, मिटा दिए जाएँगे (पद 22; पद 9–10 देखें)।

धर्मी वे हैं जिन्हें प्रभु का आशीर्वाद मिला है।

भजन संहिता 37:22 का पहला भाग देखें: "प्रभु द्वारा आशीर्वाद पाए लोग धरती के वारिस होंगे..." धर्मी लोगों को प्रभु से कौन सा आशीर्वाद मिलता है? हमारे सामने मौजूद पाठ इसके दो पहलुओं पर प्रकाश डालता है।

(1) धर्मी लोगों को मिलने वाला आशीर्वाद यह है कि परमेश्वर उन्हें संभालता है।

भजन संहिता 37:17 देखें: "बुरे लोगों की भुजाएँ तोड़ दी जाएँगी, लेकिन प्रभु धर्मी लोगों को संभालता है।" यह पद पद 16 में कही गई बात का कारण बताता है: "धर्मी व्यक्ति के पास जो थोड़ा-सा है, वह बहुत से बुरे लोगों की बहुतायत से बेहतर है" (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर "बुरे लोगों की भुजाओं" को तोड़ देता है—यानी, वह शक्ति जिस पर वे निर्भर थे, खासकर उनकी भौतिक समृद्धि। हालाँकि, भले ही धर्मी लोगों के पास कम हो, फिर भी यह उनके लिए एक आशीर्वाद बन जाता है क्योंकि परमेश्वर उन्हें बनाए रखता है। धर्मी व्यक्ति की थोड़ी-सी संपत्ति वास्तव में आशीर्वाद कैसे बन जाती है? इसके दो कारण हैं (पार्क युन-सन): (a) पहला, थोड़ी-सी संपत्ति भी एक आशीर्वाद है क्योंकि यह सर्वशक्तिमान परमेश्वर द्वारा दी गई है; यदि यह कम पड़ जाए, तो वह फिर से प्रदान करता है। (b) दूसरा, क्योंकि धर्मी व्यक्ति की थोड़ी-सी संपत्ति अनुचित तरीके से प्राप्त नहीं की गई है, इसलिए यह एक सुखद और खुशहाल जीवन की ओर ले जाती है, और इस प्रकार एक आशीर्वाद बन जाती है। एक और आशीर्वाद यह है कि कम होने से हम अहंकारी नहीं बनते। जहाँ बहुत अधिक भौतिक धन कभी-कभी कम आध्यात्मिक आशीर्वाद का कारण बन सकता है, वहीं भौतिक रूप से कम होने से महान आध्यात्मिक आशीर्वाद मिल सकते हैं। हमें डॉ. पार्क युन-सन के शब्दों पर ध्यान देना चाहिए: "सच्चा जीवन संपत्ति की बहुतायत में नहीं (लूका 12:15), बल्कि धार्मिकता रखने में है।" क्या

हमें, विश्वासियों के रूप में, यीशु के क्रूस की योग्यता के माध्यम से धर्मी नहीं ठहराया गया है? परमेश्वर ने वास्तव में हमें धर्मी ठहराया है। यह कितना अद्भुत आशीर्वाद है! इस धार्मिकता का होना भौतिक समृद्धि से अतुलनीय है।

(2) धर्मी लोगों पर प्रभु का आशीर्वाद परमेश्वर का वह वादा है कि हमारी विरासत हमेशा बनी रहेगी। आज के वचन, भजन संहिता 37:18 को देखिए: "यहोवा खरे लोगों के दिनों को जानता है, और उनकी विरासत हमेशा बनी रहेगी।" यहाँ, "खरे" (blameless) शब्द का मतलब ऐसे व्यक्ति से नहीं है जिसमें कोई पाप न हो, बल्कि ऐसे व्यक्ति से है जो सच्चा है—जो परमेश्वर के सामने ईमानदार अंतरात्मा के साथ काम करता है। परमेश्वर ऐसे नेक इंसान के "दिनों"—यानी पूरी ज़िंदगी—को जानता है जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की कोशिश करता है (पार्क युन-सन)। इसलिए, जिसे परमेश्वर अपना मानता है, उसकी विरासत—यानी ज़िंदगी भर उसे मिलने वाली चीज़ें—कभी खत्म नहीं होंगी। चूँकि परमेश्वर ही उसका उद्धारकर्ता और रक्षक है, इसलिए उसकी विरासत कभी खो नहीं सकती (पार्क युन-सन)। सच तो यह है कि परमेश्वर नेक लोगों को भरपूर अनुग्रह देता है, ताकि मुश्किल समय में भी उनकी विरासत बनी रहे (वचन 19)। नतीजतन, अकाल के समय भी, नेक लोग परमेश्वर के भरपूर अनुग्रह से दूसरों पर "दया" कर पाते हैं (वचन 21 का आखिरी हिस्सा)। चूँकि नेक लोग कम साधनों में भी किफायत से रहते हैं, इसलिए उनके पास कुछ बच जाता है; वे ज़रूरतमंदों की मदद कर पाते हैं। वे ऐसे लोग हैं जो गरीब होने के बावजूद भरपूर ज़िंदगी जीते हैं। आखिर में, जहाँ बुरे लोग—अपनी दौलत के बावजूद—बर्बादी की ओर बढ़ते हैं, वहीं नेक लोग—जो उदारता से बाँटते और देते हैं—धरती के वारिस बनते हैं, और उनकी आने वाली पीढ़ियाँ फलती-फूलती हैं (पार्क युन-सन)।

जो बुरे लोग प्रभु के श्राप के अधीन हैं, वे हमारे खिलाफ साजिशें रचते हैं और आखिरी, बेताब गुस्से में हमें मार डालने की कोशिश भी करते हैं। फिर भी, विश्वास के साथ, हमें परमेश्वर को देखना चाहिए जब वह उन पर हंसता है। बुरे लोग निश्चित रूप से एक पल में नष्ट हो जाएंगे; वे निश्चित रूप से खत्म कर दिए जाएंगे। इसलिए, दुख के बीच भी, हम परमेश्वर की खुशी में शामिल हो सकते हैं। आइए हम इसे याद रखें। आइए हम अपनी आत्माओं से यह कहें: आइए विश्वास के साथ घोषणा करें, "मैं वह हूँ जिसे प्रभु ने आशीष दी है।"

सच्ची आशीष परमेश्वर द्वारा संभाले जाने में है। अगर बुरे लोगों की प्रचुरता की तुलना में हमारी संपत्ति कम लगती है तो हमें निराश नहीं होना चाहिए। परमेश्वर ही वह है जो उस भौतिक धन को नष्ट कर देता है जिस पर बुरे लोग भरोसा करते हैं। भले ही धर्मी लोगों के पास कम हो, लेकिन यह तथ्य कि परमेश्वर उन्हें संभालता है, अपने आप में एक आशीष है। जो परमेश्वर हमें संभालता है, वह हमारी अनंत विरासत बन जाता है। हमारे प्रभु, जो आशीष का स्रोत हैं, स्वयं हमारी आशीष बन जाते हैं। इस प्रकार, चाहे मुसीबत का समय हो या अकाल का, हम परमेश्वर द्वारा दी गई पर्याप्त कृपा के माध्यम से दूसरों पर कृपा कर सकते हैं। मैं प्रार्थना करता हूं कि आप और मैं ऐसी आशीषपूर्ण जीवन जी सकें।

वह परमेश्वर जो हमारे रास्ते को तय करता है

[भजन संहिता 37:23–40]

क्या आप ऐसी स्थितियों में भी परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हैं जब ऐसा करना असंभव लगता है? आभार व्यक्त करने के इस मौसम में, एक धन्यवाद-पत्र लिखते समय मुझे एक खबर मिली। मैंने सुना कि एक पादरी—जो सेमिनरी में मेरे सहपाठी थे—की पत्नी को पेट का लाइलाज कैंसर (terminal stomach cancer) हो गया है। उनके दुख में शामिल होने और भारी मन से प्रार्थना करने के लिए, मैंने जानबूझकर अपने पहले बच्चे, जू-यंग के बारे में सोचा, जो अब स्वर्ग जा चुका है। जू-यंग की बीमारी का पता भी नवंबर में ही चला था—जो धन्यवाद देने का महीना है—और मुझे याद है कि तब मैं सोचता था कि ऐसी स्थिति में कोई कैसे धन्यवाद दे सकता है; अब, मैं उस दर्द को महसूस कर पा रहा हूँ जो पादरी किम और उनकी पत्नी उसी महीने में इस मुश्किल का सामना करते हुए महसूस कर रहे हैं। मैंने सुना है कि जिस चर्च में पादरी किम सेवा करते हैं, वहाँ इस रविवार को एक सभा की योजना बनाई जा रही है, जिसमें सदस्य धन्यवाद देने के अपने कारणों पर गवाही देंगे; जब पादरी किम सोमवार को अस्पताल गए, तो शुरू में उन्होंने सोचा था कि उनके धन्यवाद का कारण यह उम्मीद होगी कि परमेश्वर सर्जरी होने देंगे। हालाँकि, अब वह अंतिम संस्कार की तैयारी कर रहे हैं और आज से उन्होंने उपवास शुरू कर दिया है।

ऐसे समय में, बाइबल की जिन आयतों पर हम अक्सर विचार करते हैं और दूसरों के साथ साझा करते हैं, उनमें से एक है अय्यूब 23:10: "परन्तु वह मेरे मार्ग को जानता है; जब वह मुझे परखेगा, तो मैं सोने की तरह निखरकर बाहर आऊँगा।" इस आयत पर मनन करते समय, मेरा ध्यान मुख्य रूप से दूसरे हिस्से पर होता था—"जब वह मुझे परखेगा, तो मैं सोने की तरह निखरकर बाहर आऊँगा।" ऐसा लगता है कि मैंने शायद ही कभी पहले हिस्से पर गहराई से मनन किया हो: "परन्तु वह मेरे मार्ग को जानता है।" जब हम इस सच्चाई पर मनन करते हैं कि

सब कुछ जानने वाला परमेश्वर हममें से प्रत्येक के रास्ते को जानता है, तो हमें भजन संहिता 37:23 में यह घोषणा मिलती है कि "प्रभु उस व्यक्ति के कदमों को स्थिर करता है।" दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने हमारे रास्ते को पहले से ही तय कर रखा है। इसके अलावा, बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर उस रास्ते से प्रसन्न होता है जिसे उसने तय किया है (आयत 23)। वह परमेश्वर जो हमारे रास्ते को जानता है—जो हमारे कदमों को पहले से तय करता है और उस रास्ते पर हमारा मार्गदर्शन करता है—वही परमेश्वर हमारे रास्ते को सुरक्षित बनाता है। और यह परमेश्वर, जो हमारे रास्ते को तय करता है, हमारी यात्रा में खुशी महसूस करता है। आज, भजन संहिता 37:23–40 पर ध्यान देते हुए, मैं उस परमेश्वर के तीन पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ जो हमारे रास्ते को सुरक्षित बनाता है और उसकी दी हुई कृपा को पाना चाहता हूँ।

पहला, जो परमेश्वर हमारे रास्ते को सुरक्षित बनाता है, वही हमें तब संभालता है जब हम लड़खड़ाते हैं।

भजन संहिता 37:24 को देखें: "भले ही वह लड़खड़ाए, पर गिरेगा नहीं, क्योंकि प्रभु उसे अपने हाथ से थामे रहता है।" "भले ही वह लड़खड़ाए" वाक्यांश हमें याद दिलाता है कि—चाहे दाऊद हो या हम खुद—हम कमज़ोर इंसान हैं और हमसे लड़खड़ाना तय है। ऐसा क्यों है? हम ऐसे लोग क्यों हैं जिनसे लड़खड़ाना तय है? आज के वचन में हम तीन संबंधित कारण देख सकते हैं:

(1) पहला कारण यह है कि हम ज़रूर लड़खड़ाते हैं क्योंकि शैतान, हमारी कमज़ोरियों को जानते हुए, घात लगाए बैठा रहता है और हम पर हमला करता है, ताकि हमें गिरा सके।

वचन से दाऊद के शब्दों को लें तो: "दुष्ट धर्मी की घात में रहता है, और उसे मार डालना चाहता है" (पद 32)। मुझे एक नेचर डॉक्यूमेंट्री याद है जिसमें एक शेर ने अपना शिकार देखा, अपना शरीर नीचे किया, और चुपचाप उसकी ओर बढ़ा; फिर, अचानक तेज़ी से उछलकर उसने शिकार को पकड़ने और खाने के लिए हमला किया। ऐसा लगता है कि शैतान भी ठीक वैसे ही काम करता है। एक दहाड़ते हुए शेर की तरह, वह घात लगाए बैठा रहता है, विश्वासियों को निगलने का कोई भी मौका ढूँढ़ता रहता है, और लगातार हमें "मार डालने का मौका" तलाशता रहता है। इसलिए, जब तक हम सतर्क, संयमित और सावधान नहीं रहते, शैतान हम पर तब तक

लगातार हमला करेगा जब तक हम अपनी कमज़ोरियों के कारण ज़रा सा भी "मौका" नहीं देते। तो फिर, दाऊद—या हममें से कोई भी—बिना गिरे मज़बूती से खड़े रहने की उम्मीद कैसे कर सकता है?

(2) दूसरा कारण यह है कि हमारा गिरना तय है क्योंकि दुष्टों की शक्ति—शैतान के सेवक जो हम पर हमला करते हैं—बहुत ज़्यादा है।

आज के वचन, भजन संहिता 37:35 को देखें: "मैंने दुष्ट को बड़ी शक्ति में देखा है, जो अपने ही देश के हरे-भरे पेड़ की तरह फैल रहा है।" यहाँ, दाऊद दुष्ट की बड़ी शक्ति की तुलना अपने ही देश के हरे-भरे पेड़ की हरियाली से करता है। सेप्टुआजेंट (Septuagint) इसका अनुवाद "लेबनान के देवदार" (cedar of Lebanon) के रूप में करता है, जो एक मज़बूत और फलते-फूलते पेड़ की छवि बनाता है। इसका मतलब है कि बुरे लोगों की शक्ति बहुत ज़्यादा होती है, ठीक वैसे ही जैसे घनी शाखाओं वाले एक विशाल पेड़ की होती है (पार्क युन-सन)।

(3) तीसरा कारण यह है कि हम अक्सर मुश्किलों या परेशानियों के कारण गिर जाते हैं।

आज के वचन, भजन संहिता 37:39 को देखें: "धर्मी लोगों का उद्धार प्रभु की ओर से होता है; मुसीबत के समय वह उनका मज़बूत गढ़ होता है।" असल में, क्योंकि बुरे लोग—शैतान के सेवक—बहुत शक्तिशाली होते हैं और हम पर हमला करने और हमें गिराने की ताक में रहते हैं, इसलिए मुश्किलों के बीच हम ज़रूर लड़खड़ाते और गिरते हैं। हालाँकि, भले ही हम कुछ पल के लिए लड़खड़ा जाएँ, हम उस रास्ते से पूरी तरह नहीं भटकते जिस पर हम चल रहे हैं; हम फिर से उठते हैं और अपनी यात्रा जारी रखते हैं (वचन 24)। भले ही शैतान के हमलों और प्रलोभनों या बुरे लोगों के सताने के कारण हम थोड़ी देर के लिए लड़खड़ा जाएँ, परमेश्वर पिता हमें अपने हाथ से थामे रहते हैं, जिससे हम फिर से उठ सकें और उस रास्ते पर चल सकें जो उन्होंने हमारे लिए तय किया है।

तो, परमेश्वर द्वारा तय किए गए इस रास्ते पर चलते हुए विश्वासियों की क्या ज़िम्मेदारी है? वह यह है कि बुराई से मुड़ें और भलाई करें (वचन 27)। बुरे लोगों से घिरे होने पर—जो अपनी भारी शक्ति के साथ किसी भी पल हमला

करने को तैयार दिखते हैं—हमारे सामने एक चुनाव होता है: या तो बुराई से मुड़कर भलाई करें, या भलाई से मुड़कर बुराई करें। अगर हम भलाई छोड़कर बुराई को अपनाते हैं, तो शुरू में हमें ज़मीर की कचोट या अपराध-बोध महसूस हो सकता है; लेकिन, जैसे-जैसे हम धीरे-धीरे बुरे काम करते जाते हैं, वे भावनाएँ खत्म हो जाती हैं, और बाहर से जीवन शांत लग सकता है। हो सकता है कि हम बहुत धन-दौलत भी जमा कर लें (वचन 16)। हालाँकि, यह सब कुछ समय के लिए ही होता है; अगर हम बुरे लोगों के साथ समझौता करते हैं और भलाई छोड़कर बुराई को चुनते हैं, तो हमारा विनाश निश्चित है। इसके विपरीत, अगर हम बुराई से मुड़कर भलाई करते हैं, तो परमेश्वर हमें आशीष देते हैं: हमारी आने वाली पीढ़ियों को आशीष मिलती है (वचन 26)। भजन संहिता 37:25–26 का यह अंश दाऊद के अपने अनुभव को दर्शाता है। वह अनुभव यह देखना था—जवानी से लेकर बुढ़ापे तक—कि नेक लोगों को कभी नहीं छोड़ा जाता और न ही उनके बच्चे रोटी के लिए भीख मांगते हैं (पद 25), और नेक लोग दया दिखाते हुए और पूरे दिन दूसरों को उधार देते हुए जीवन जीते हैं (पद 26)। इस तरह, दाऊद को यकीन हो गया था कि नेक लोगों की संतानों को निश्चित रूप से आशीष मिलेगी। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "लोग अपनी संतानों की भविष्य की आजीविका के बारे में बहुत चिंता करते हैं। ऐसी चिंता बेकार है। चिंता करने के बजाय, उन्हें बस नेक जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, उन्हें सांसारिक मामलों में नेक इंसान बनने की कोशिश करनी चाहिए।"

दूसरी बात, जो परमेश्वर हमारे रास्ते को तय करता है, वही मुसीबत के समय हमारी रक्षा भी करता है।

भजन संहिता 37:28 को देखें: "क्योंकि प्रभु न्याय से प्रेम करता है और अपने पवित्र लोगों को नहीं छोड़ता। वे हमेशा सुरक्षित रहते हैं, लेकिन दुष्टों की संतानें मिटा दी जाएंगी।" परमेश्वर किन पवित्र लोगों की रक्षा करता है? वे वे लोग हैं जो न्याय से प्रेम करते हैं और वफादार हैं (पद 28)। क्योंकि नेक परमेश्वर न्याय से प्रेम करता है, इसलिए वह उन लोगों की रक्षा करने में खुशी महसूस करता है जो न्याय से प्रेम करते हैं और उसका पालन करते हैं। इसके अलावा, परमेश्वर अपने वफादार पवित्र लोगों को नहीं छोड़ता। संक्षेप में, परमेश्वर उन पवित्र लोगों की रक्षा करता है जो ईमानदारी से न्याय का पालन करते हैं। तो, ईमानदारी से न्याय का पालन करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? हमारे दिलों में परमेश्वर का नियम होना चाहिए (पद 31)। यही ईमानदारी से न्याय का पालन

करने का रहस्य है। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारे मुँह से बुद्धिमानी और न्याय की बातें निकल सकती हैं (पद 30)।

तो, जब हम ईमानदारी से न्याय का पालन करते हैं, तो हमारा परमेश्वर हमारी रक्षा कैसे करता है?

(1) परमेश्वर हमारे कदमों को लड़खड़ाने से बचाता है।

भजन संहिता 37:31 का आखिरी हिस्सा देखें: "...उसके कदम नहीं डगमगाएंगे।" परमेश्वर हमारे पैरों को फिसलने से बचाता है। इसलिए, हम मजबूती से खड़े रह सकते हैं और अपने रास्ते पर आगे बढ़ सकते हैं।

(2) परमेश्वर हमें दुष्टों के हाथों में नहीं छोड़ता।

आज का वचन, भजन संहिता 37:33 देखें: "प्रभु उसे उनके वश में नहीं छोड़ेगा और न ही अदालत में दोषी ठहराए जाने देगा।" भले ही दुष्ट लोग नेक लोगों को बर्बाद करने की कोशिश में अदालत में ले जाएं, लेकिन परमेश्वर चुपचाप खड़ा नहीं रहता और उन्हें नेक लोगों को दोषी ठहराने नहीं देता। चाहे बुरे लोगों के हाथ कितने भी ताकतवर या प्रभावशाली क्यों न हों, परमेश्वर—जिनका हाथ सर्वशक्तिमान है—हमें उनके हवाले करके यूँ ही नहीं छोड़ देंगे।

तीसरी बात, जो परमेश्वर हमारे रास्ते को तय करता है, वही हमें शांति भी देता है।

भजन संहिता 37:37 को देखिए: "निर्दोष व्यक्ति पर ध्यान दो, सीधे-सादे व्यक्ति को देखो; शांति चाहने वालों का भविष्य उज्ज्वल होता है।" परमेश्वर हमें शांति कैसे देता है?

(1) परमेश्वर हमें बचाकर शांति देता है (पद 39)।

हमारा परमेश्वर ही धर्मी लोगों की मदद करता है और उन्हें बुरे लोगों से बचाता है (पद 40)।

(2) परमेश्वर मुसीबत के समय हमारा मज़बूत गढ़ बनकर हमें शांति देता है (पद 39)।

मुसीबत के समय हमारा परमेश्वर ही हमारी शरण-स्थान बनता है। जब हम उसकी शरण में जाते हैं, तो वह हमारी रक्षा करता है और हमें शांति देता है। मुसीबत के समय प्रभु के अलावा हमें और कहाँ शांति मिल सकती है?

तो, इस शांति को पाने के लिए विश्वास करने वाले की क्या ज़िम्मेदारी है? आज के वचन से हम दो बातें सीख सकते हैं:

(1) हमें "निर्दोष" और "सीधे-सादे" (ईमानदार) लोग बनना चाहिए।

भजन संहिता 37:37 को फिर से देखिए: "निर्दोष व्यक्ति पर ध्यान दो, सीधे-सादे व्यक्ति को देखो; शांति चाहने वालों का भविष्य उज्ज्वल होता है।" यहाँ, "निर्दोष व्यक्ति" का मतलब है ऐसा व्यक्ति जो सच्चा हो और जिसमें कोई छल-कपट न हो, जबकि "सीधे-सादे व्यक्ति" का मतलब है ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर के सामने सही जीवन जीता हो और कुछ भी छिपाता न हो (पार्क युन-सन)। परमेश्वर द्वारा दी गई शांति का आनंद लेने के लिए—मुसीबत के समय भी—हमें सच्चाई और बिना किसी छल-कपट के जीना चाहिए, और परमेश्वर के सामने ईमानदारी से चलना चाहिए, बिना कुछ छिपाए। (2) हमें परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए।

आज के वचन, भजन संहिता 37:40 को देखिए: "प्रभु उनकी मदद करता है और उन्हें बचाता है; वह उन्हें बुरे लोगों से छुड़ाता है और बचाता है, क्योंकि वे उसकी शरण लेते हैं।" हमें परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए और आँखों से दिखाई देने वाली चीज़ों के बजाय विश्वास से चलना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम परमेश्वर द्वारा दी गई शांति का आनंद ले पाएँगे—ऐसी शांति जिसे दुनिया समझ नहीं सकती।

परमेश्वर, जिसने हमारे चलने का रास्ता पहले ही तय कर दिया है, हमारी अगुवाई करता है और हमारी रक्षा करता है। जब हम लड़खड़ाते हैं, तो वह हमें थामे रखता है, हमें वापस उठाता है, और हमें उस रास्ते पर आगे बढ़ने के काबिल बनाता है। इसके अलावा, परमेश्वर उस रास्ते से खुश होता है। इससे मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ता है कि कैसे परमेश्वर पिता ने अपने एकलौते पुत्र यीशु के लिए रास्ता तय किया, और क्या यीशु खुद क्रूस के रास्ते पर चलने में खुश थे? कौन सा माता-पिता खुश होगा अगर उनके प्यारे बच्चे के लिए प्रभु का तय किया हुआ रास्ता शहादत का रास्ता निकले? ऐसे माता-पिता भी हैं जो तब भी खुश नहीं हो पाते जब उनका बच्चा प्रभु के सेवक का रास्ता चुनता है; यह समझना मुश्किल है कि कोई अपने प्यारे बच्चे को क्रूस के रास्ते पर—या खास तौर पर प्रभु के तय किए शहादत के रास्ते पर—चलते देख कैसे खुश हो सकता है। फिर भी, अगर परमेश्वर पिता ने साफ तौर पर अपने एकलौते पुत्र के लिए रास्ता तय किया—बेथलहम की चरनी से लेकर कलवरी के क्रूस तक के सफर में खुशी मनाई—तो मुझे सोचना चाहिए कि यीशु के शिष्यों का नज़रिया क्या होना चाहिए। जब हम यीशु के नक्शेकदम पर चलते हैं और परमेश्वर द्वारा हममें से हर एक के लिए तय किए गए क्रूस के रास्ते पर आगे बढ़ते हैं, तो हमें उस सफर में खुशी मनानी चाहिए। भले ही हम शैतान और ताकतवर बुरे लोगों के प्रलोभनों और हमलों की वजह से मुश्किलों में लड़खड़ा जाएं, परमेश्वर अपने शक्तिशाली हाथ से हमें थामे रखते हैं, हमें फिर से उठाते हैं, और हमें उस क्रूस के रास्ते पर चलने के काबिल बनाते हैं जो हमारे लिए तय किया गया है। इसके अलावा, परमेश्वर मुश्किल समय में हमारी रक्षा करते हैं ताकि हम वफादारी से उस रास्ते पर चल सकें—वह ऐसे परमेश्वर हैं जो हमें हमेशा की सुरक्षा देते हैं। आखिर में, हमारे परमेश्वर हमें ऐसी शांति देते हैं जिसे न तो दुनिया समझ सकती है और न ही दे सकती है। यही परमेश्वर हमारे रास्ते को और भी मज़बूत बनाएंगे।

वो बातें जिनसे हम लड़खड़ा सकते हैं

"उसके परमेश्वर की व्यवस्था उसके हृदय में है; उसके पैर नहीं फिसलते" (भजन संहिता 37:31)।

पिछले रविवार की शाम, गाड़ी चलाते समय मेरी गाड़ी लगभग टकराने ही वाली थी। मैं अपनी पत्नी की गाड़ी के पीछे चल रहा था, तभी उसके आगे चल रही एक गाड़ी ने अचानक दाईं ओर मुड़ने के लिए मोड़ लिया, जिससे उसे ज़ोर से ब्रेक लगाना पड़ा; ज़ाहिर है, मुझे भी अपनी गाड़ी में ज़ोर से ब्रेक लगाना पड़ा। हमारी गाड़ियों के बीच की दूरी एक मीटर से भी कम थी। मैंने यह भी देखा कि मेरे पीछे आ रही एक बड़ी SUV तेज़ी से एक तरफ़ मुड़ गई। बाद में मुझे पता चला कि गीली सड़क पर ज़ोर से ब्रेक लगाने के बावजूद मेरी गाड़ी ज़्यादा नहीं फिसली, क्योंकि उसमें एक खास ब्रेकिंग सिस्टम लगा हुआ था।

हमारे विश्वास का रास्ता भी अक्सर गीली सड़क की तरह ही फिसलन भरा हो सकता है। दूसरे शब्दों में, ऐसे कई खतरे हैं जो विश्वास की हमारी यात्रा में हमें लड़खड़ाने पर मजबूर कर सकते हैं। मैंने भजन संहिता 37 में ऐसी तीन वजहों की पहचान की है।

पहली बात, जो हमें लड़खड़ाने पर मजबूर करती है, वह है "ईर्ष्या" (या जलन)।

भजन संहिता 37:1 का दूसरा हिस्सा देखिए: "...बुराई करने वालों से ईर्ष्या न कर।" दिल में जलन या ईर्ष्या रखने से हम लड़खड़ा सकते हैं। एक छोटे चर्च का पादरी बड़े चर्च के पादरी से ईर्ष्या कर सकता है। एक गरीब विश्वासी अमीर विश्वासी से ईर्ष्या कर सकता है। भजन संहिता 73 में, भजनकार आसाफ लगभग फिसलकर गिर ही गया था क्योंकि उसने बुरे लोगों की समृद्धि को देखकर ईर्ष्या की थी, जबकि नेक लोग दुख उठा रहे थे। इसलिए, हमें अक्सर अपने दिल में ईर्ष्या की जाँच करनी चाहिए।

दूसरी बात, जो हमें लड़खड़ाने पर मजबूर करती है, वह है "शिकायत करना।" भजन संहिता 37:1 का पहला हिस्सा देखिए: "बुराई करने वालों के कारण कुढ़ न..." दाऊद हमें बताता है कि जो लोग अपने कामों में सफल होते हैं और अपनी बुरी योजनाओं को पूरा करने में कामयाब हो जाते हैं, उनके कारण कुढ़ना या परेशान नहीं होना चाहिए (पद 7)। ऐसा क्यों है? इसलिए क्योंकि कुढ़ने या परेशान होने से केवल बुराई ही होती है (पद 8)। दिल में शिकायतें रखना इस बात का सबूत है कि हम असंतोष भरी ज़िंदगी जी रहे हैं। अगर हम ईसाई अपनी परिस्थितियों, दूसरे लोगों, दुनिया और कई अन्य मामलों के बारे में शिकायत करते हुए ज़िंदगी गुज़ारते हैं, तो हम निश्चित रूप से लड़खड़ाएँगे।

तीसरी बात, जो हमें लड़खड़ाने पर मजबूर करती है, वह है "क्रोध" (गुस्सा)। भजन संहिता 37:8 के पहले हिस्से को देखिए: "क्रोध से बचो और गुस्से से दूर रहो..." हमें क्रोध से क्यों बचना चाहिए और गुस्से से क्यों दूर रहना चाहिए? इसलिए क्योंकि आखिर में क्रोध हमें बुराई करने की ओर ले जाता है। मेरा मानना है कि गुस्से की भावनाओं पर काबू पाना सचमुच मुश्किल है। हम ऐसी दुनिया में रहते हैं जहाँ गुस्सा दिलाने वाली चीज़ें बढ़ती जा रही हैं। लोग पहले के मुकाबले ज़्यादा आसानी से गुस्सा हो जाते हैं; यह इस बात का सबूत है कि वे अपना आत्म-नियंत्रण खो रहे हैं। अगर हम अपने दिलों में गुस्सा पालते हैं, तो हम ठोकर खाएँगे।

तो फिर, हम उन वजहों पर कैसे काबू पा सकते हैं जिनकी वजह से हम ठोकर खाते हैं? आज के वचन में, बाइबल हमें सिखाती है कि "परमेश्वर के नियम को अपने दिलों में रखें।" भजन संहिता 37:31 को देखिए: "उसके परमेश्वर का नियम उसके दिल में है; उसके कदम नहीं डगमगाते।" जब परमेश्वर का वचन हमारे दिलों में बसता है, तो हम ठोकर नहीं खाते। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे अंदर परमेश्वर का वचन होने से हमें प्रभु की इच्छा पूरी करने में खुशी मिलती है (40:8)। और प्रभु की इच्छा क्या है? वह है बुद्धिमानी और न्याय का पालन करना (37:30)। जो लोग परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में रखते हैं, वे बुरे काम करने वालों को परमेश्वर के न्याय की नज़र से देखते हैं; वे जानते हैं कि उनका विनाश निश्चित है और उन्हें भरोसा होता है कि बदला लेना परमेश्वर का काम है, इसलिए वे उन बुरे लोगों को पूरी तरह से परमेश्वर पर छोड़ देते हैं। बुरे लोगों के प्रति जलन, शिकायत या गुस्से में बहने के बजाय, जो लोग परमेश्वर के वचन को महत्व देते हैं, वे बुद्धिमानी से प्रतिक्रिया देते हैं। दूसरे शब्दों में, जो बुद्धिमान व्यक्ति परमेश्वर के वचन को अपने दिल में रखता है, वह परमेश्वर पर भरोसा करता है और भलाई करता है (पद 3), परमेश्वर में खुशी पाता है (पद 4), अपना रास्ता परमेश्वर को सौंपता है (पद 5), चुप रहता है और परमेश्वर के सामने सब्र से इंतज़ार करता है (पद 7), और परमेश्वर पर अपनी उम्मीद रखता है (पद

9)। नतीजतन, जो लोग परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में रखते हैं, वे जलन, शिकायत और गुस्से जैसी रुकावटों पर सफलतापूर्वक काबू पा लेते हैं और वफ़ादारी से प्रभु के रास्ते पर चलते हैं। मेरी प्रार्थना है कि हम सब वफ़ादारी से प्रभु के इस रास्ते पर चलें।

“मेरे पाप के कारण”

[भजन संहिता 38:1-12]

पास्टर किम जून-सू की किताब *हीलिंग ऑफ़ द हार्ट* (दिल की चंगाई) पढ़ते समय, मुझे एक बात मिली जो मेरे दिल को छू गई और मैं उसे साझा करना चाहता हूँ: “हम बाहर से जो दिखाते हैं, वह असल में हमारे असली रूप को छिपाने का एक मुखौटा है—एक ऐसा खोल जो हमारे अंदर के घावों या हीन भावना को छिपाता है। लोगों को लगता है कि अगर वे बाहर से खुद को अच्छा दिखाएँ और दूसरों की मंज़ूरी पाएँ, तो उनके अंदर के घाव या असुरक्षा की भावना किसी तरह ठीक हो जाएगी।” इससे प्रेरित होकर, मैंने “मुखौटा पहनना” शीर्षक से एक विचार लिखा:

“अगर प्रभु में कोई एक भी दोस्त न हो—ऐसा कोई जिसके साथ इंसान अपने असली रूप के बारे में ईमानदारी और खुलेपन से बात कर सके, और उसे भरोसा हो कि उसे वैसा ही स्वीकार किया जाएगा जैसा वह है—तो क्या यह सच में एक दुखद जीवन नहीं है? लगातार मुखौटा पहनकर जीना कितना दुखद है; आखिर में इंसान अपना असली रूप भूल जाता है और मुखौटे वाले व्यक्तित्व का इतना आदी हो जाता है कि उसे ही असलियत समझने लगता है। मेरे विचार से, और भी ज़्यादा दुखद वह व्यक्ति है जो मुखौटा पहने हुए ही परमेश्वर पिता के पास जाता है। परमेश्वर की नज़र में यह कितना दुखद होता होगा जब कोई सिर्फ़ धार्मिकता का दिखावा करके—सिर्फ़ बाहरी रूप-रंग की चिंता करते हुए, पवित्र और वफ़ादार होने का नाटक करते हुए, और अपनी असली हालत को छिपाते हुए—उनकी आराधना करने आता है।”

समस्या क्या है? समस्या यह है कि हम खुद के प्रति ईमानदार नहीं हैं। समस्या यह है कि हममें अपनी समस्याओं का डटकर सामना करने की हिम्मत नहीं है। जब हम खुद को ध्यान से देखते हैं, तो हमें अपनी अंदरूनी सच्चाई को जानने के लिए परतों को हटाना पड़ता है—ठीक वैसे ही जैसे प्याज़ की परतें हटाई जाती हैं। ऐसा करते समय, हमें खुद को परमेश्वर के नज़रिए से देखने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। यह बिल्कुल भी आसान नहीं है। हमें अपनी समस्याओं और अपने अंदर गहराई में छिपे पापों का सामना करना होगा। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम अपने पापों के कारण जीवन में होने वाली घटनाओं को विनम्रता से स्वीकार करने के काबिल बन जाते हैं। इसके अलावा, हम परमेश्वर के प्यार भरे अनुशासन का अनुभव करते हैं।

हमें अपने पापों के कारण परमेश्वर से अनुशासन मिलता है। भजन संहिता 38:3 में, भजनकार दाऊद मानता है कि परमेश्वर उसे “मेरे पाप के कारण” अनुशासित कर रहे हैं, और इसलिए वह विनती करता है: “हे यहोवा, अपने क्रोध में मुझे न डाँट, और न ही अपने कोप में मुझे ताड़ना दे” (पद 1)। तो, अपने पाप के कारण दाऊद को परमेश्वर से क्या सज़ा मिली? मैं इसके छह पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ, ताकि हम अपने जीवन पर सोच सकें और समझ सकें कि पाप के नतीजे कितने भयानक हो सकते हैं।

पहला, परमेश्वर की सज़ा में हम पर "भारी दबाव" पड़ना शामिल है।

भजन संहिता 38:2 को देखें: "तेरे तीर मुझे चुभते हैं, और तेरा हाथ मुझ पर भारी दबाव डालता है।" यहाँ इस्तेमाल किया गया "दबाव" शब्द भजन संहिता 32:4 में भी आता है, जिस पर हमने पहले भी मनन किया है: "दिन-रात तेरा हाथ मुझ पर भारी था; मेरी जीवन-शक्ति गर्मी के सूखेपन में बदल गई थी।" हालाँकि मुझे "मुझ पर भारी दबाव डाला" वाक्यांश का खास मतलब नहीं पता, लेकिन एक बात पक्की है: परमेश्वर हमें अपने पापों को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करते हैं, यहाँ तक कि तकलीफों के ज़रिए भी (पद 3)। "तेरे तीर मुझे चुभे हैं" (38:2) वाली बात शायद परमेश्वर द्वारा हमारे अंतर्मन को चुभाने या झकझोरने के काम की ओर इशारा करती है—वे अपने वचन को तीर की तरह इस्तेमाल करते हैं ताकि हम अपने पापों को स्वीकार करें।

दूसरा, परमेश्वर की सज़ा शारीरिक तकलीफ के रूप में सामने आती है।

भजन संहिता 38:3 और 7 पर विचार करें: "तेरे क्रोध के कारण मेरे शरीर में कोई तंदुरुस्ती नहीं है, और मेरे पाप के कारण मेरी हड्डियों में कोई स्वास्थ्य नहीं है... मेरी कमर में जलन भरा दर्द है, और मेरे शरीर में कोई तंदुरुस्ती नहीं है।" इन दो पदों में, दाऊद बार-बार कहता है, "मेरे शरीर में कोई तंदुरुस्ती नहीं है।" ऐसा इसलिए था क्योंकि उसके पाप के कारण प्रभु का क्रोध उस पर आ पड़ा था (पद 1, 3)। उस क्रोध के नतीजे के तौर पर, दाऊद को शारीरिक दर्द सहना पड़ा, जिससे उसकी हड्डियों को न तो शांति मिली और न ही स्वास्थ्य (पद 3)। "मेरी हड्डियों में कोई स्वास्थ्य नहीं है" वाक्यांश बहुत ज़्यादा तकलीफ को दर्शाता है (पार्क युन-सन)। हम कभी-कभी इतना असहनीय दर्द क्यों सहते हैं, जैसा दाऊद ने सहा? दाऊद पद 4 में इसका कारण बताता है: "मेरे पाप मेरे सिर के ऊपर से निकल गए हैं; एक भारी बोझ की तरह, वे मेरे लिए बहुत भारी हैं।" हमारे बहुत से पापों के कारण, हमें परमेश्वर के क्रोध के बीच शारीरिक तकलीफ की सज़ा मिलती है। वह सज़ा सचमुच एक "भारी बोझ" जैसी लगती है (पद 4)। डेविड शारीरिक पीड़ा—जो हमारे पाप के कारण परमेश्वर की अनुशासनात्मक कार्रवाई का नतीजा है—का वर्णन इस तरह करते हैं: "मेरा दिल ज़ोरों से धड़क रहा है, मेरी ताकत खत्म हो गई है; यहाँ तक कि मेरी आँखों की रोशनी भी चली गई है" (पद 10)। यहाँ, "मेरा दिल ज़ोरों से धड़क रहा है" वाक्यांश का मतलब विश्वास से भरे आनंदित दिल से नहीं है, बल्कि एक ऐसे दिल से है जो बेचैन और परेशान है (पार्क युन-सन)। जिस दिल ने पाप किया हो, वह भला आनंदित कैसे हो सकता है? ऐसा दिल बेचैन और दुखी ही होगा। आखिरकार, पाप से परेशान दिल का हिल जाना या विचलित हो जाना स्वाभाविक है। इसके अलावा, "मेरी ताकत खत्म हो गई है; यहाँ तक कि मेरी आँखों की रोशनी भी चली गई है" (पद 10) शब्द यह बताते हैं कि परमेश्वर की अनुशासनात्मक कार्रवाई के तहत डेविड को जो गंभीर शारीरिक पीड़ा सहनी पड़ी, उसके कारण उनकी आँखों की रोशनी कम हो गई थी (पार्क युन-सन)।

तीसरी बात, परमेश्वर की अनुशासनात्मक कार्रवाई "घावों" और "दुख" के रूप में सामने आती है।

भजन संहिता 38:5–6 को देखें: "मेरे पापपूर्ण मूर्खतापूर्ण कामों के कारण मेरे घाव सड़ रहे हैं और घिनौने हो गए हैं। मैं झुक गया हूँ और बहुत नीचे गिर गया हूँ; मैं दिन भर शोक मनाता रहता हूँ।" हाल ही में अपनी पत्नी के साथ बातचीत में, मैंने महसूस किया कि हालाँकि "आनंद" परमेश्वर द्वारा दिया गया एक वरदान है, लेकिन हमारे पापपूर्ण फैसले अक्सर हमें आनंद मनाने से रोकते हैं, तब भी जब हमें आनंद मनाना चाहिए; इसके बजाय, हम खुद को दुख से भरा हुआ पाते हैं। यह कितनी दर्दनाक स्थिति है! आखिरकार, परमेश्वर के वचन की अवज्ञा

करके, हम अपने दिलों पर घाव पहुँचाते हैं और खुद पर दुख लाते हैं। बेशक, पद 5 में बताए गए "घाव" भावनात्मक घावों के बजाय शारीरिक चोटों की ओर इशारा कर सकते हैं। फिर भी, चाहे घाव शारीरिक हो, भावनात्मक हो, या दोनों हों, मुख्य बात यह है कि यह "सड़ने और बदबू छोड़ने" के चरण तक पहुँच गया है। इसका अर्थ यह निकाला जा सकता है कि कोई व्यक्ति लंबे समय से परमेश्वर की अनुशासनात्मक कार्रवाई के अधीन रहा है (पार्क युन-सन)। जब हम इतने लंबे समय तक घावों की पीड़ा के दुख की कल्पना करते हैं, तो हमें यह महसूस करना चाहिए कि पाप के परिणाम कितने भयानक होते हैं। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "उनका दुख किसी दुर्भाग्यपूर्ण सांसारिक परिस्थिति से नहीं उपजा है, बल्कि यह पूरी तरह से उनके अपने पापों के परिणामस्वरूप खुद को दी गई सज़ा का दुख है।" हालांकि "खुद को दी गई सज़ा के दुख" को परमेश्वर की अनुशासन-प्रक्रिया कहा जा सकता है, लेकिन असल में यह हमारे लिए फायदेमंद दुख है; यह एक ऐसा दुख है जो हमें पछतावे की ओर ले जाता है।

चौथा, परमेश्वर का अनुशासन मन की बेचैनी के रूप में सामने आता है।

भजन संहिता 37:8 पर गौर करें: "मैं कमज़ोर और बुरी तरह टूटा हुआ हूँ; मैं अपने दिल की बेचैनी के कारण कराहता हूँ।" पाप करने के बाद, हम अपनी आत्मा में गहरी बेचैनी महसूस करते हैं। जो लोग विश्वास नहीं करते, वे इस तरह की आध्यात्मिक बेचैनी महसूस नहीं करते; क्योंकि वे पाप को पाप नहीं मानते, इसलिए वे इसे लेकर दिल का दर्द महसूस नहीं कर सकते। हालाँकि, हम विश्वास करने वाले अपने पापों को लेकर दर्द महसूस करते हैं, जिससे थकान और आध्यात्मिक चोट लगती है; आखिरकार, मन की यह बेचैनी हमें कराहने पर मजबूर कर देती है। "मेरे दिल की बेचैनी" वाक्यांश को "आत्मा का ज़ोरों से काँपना" भी समझा जा सकता है, खासकर जब इसकी तुलना भजन संहिता 6:3 से की जाए। यह परमेश्वर के अनुशासन के तहत लंबे समय तक दुख सहने का नतीजा है। यह मन की एक ऐसी स्थिति है जो तब पैदा होती है जब कोई इंसान अपनी सहनशक्ति की हद तक पहुँच जाता है और सोचता है कि उसे और कितना दुख सहना होगा। ऐसी बेचैनी और घबराहट के बीच, हमारे पास कराहने या विलाप करने के अलावा कोई चारा नहीं होता। यहेजकेल 21:6 में, परमेश्वर भविष्यद्वक्ता यहेजकेल को आज्ञा देते हैं: "हे मनुष्य के पुत्र, कराह! टूटे हुए दिल और गहरे दुख के साथ उनके सामने कराह।" इसका कारण क्या है? इसका कारण है "वह खबर" (वचन 7)। वह खबर एक बड़ी मुसीबत के बारे में है। उस मुसीबत का नतीजा क्या होगा? "हर दिल पिघल जाएगा, हर हाथ कमज़ोर पड़ जाएगा, हर आत्मा हिम्मत हार

जाएगी, और हर घुटना पानी की तरह कमज़ोर हो जाएगा" (वचन 7)। हम इसलिए कराहते और आहें भरते हैं क्योंकि अपने पापों के कारण हम थक चुके हैं, गहरे दुख में हैं और दिल में बेचैन हैं (भजन संहिता 38:8)।

पांचवीं बात, परमेश्वर की ताड़ना में हालात ऐसे बन जाते हैं कि इंसान अकेला पड़ जाता है।

भजन संहिता 38:11 को देखिए: "मेरे प्रियजन और मित्र मेरी बीमारी के कारण मुझसे दूर खड़े हैं, और मेरे रिश्तेदार भी दूर खड़े हैं।" सचमुच, यह परमेश्वर की ताड़ना का एक डरावना रूप है। हालाँकि शारीरिक दर्द, घाव, दुख और मन की बेचैनी बहुत कष्टदायक होती है, लेकिन जब हमारे पापों के कारण दूसरे लोग भी हमसे मुँह मोड़ लेते हैं और दूर हो जाते हैं, तो हम बहुत अकेलापन महसूस करते हैं। इससे अय्यूब की याद आती है। उसका शारीरिक दुख अकल्पनीय रूप से भयानक रहा होगा, लेकिन मैं यह भी सोचता हूँ कि वह कितना अकेला महसूस कर रहा होगा जब उसकी अपनी पत्नी ने उससे कहा, "क्या तुम अब भी अपनी सच्चाई पर कायम हो? परमेश्वर को कोसकर मर जाओ!" (अय्यूब 2:9)। जब अपनी पत्नी ही—जिसके साथ "एक शरीर" होने की बात कही गई है—समझ नहीं पाती और मूर्खतापूर्ण बातें करती है... तो अकेलापन लाज़मी है। पाप एक भयानक चीज़ है; यह इंसान को पूरी तरह अकेला कर देता है। परमेश्वर हमें ताड़ना देता है क्योंकि वह हमसे प्यार करता है; ऐसा करते हुए, वह उन दोस्तों और रिश्तेदारों से भी हमारे रिश्ते तोड़ देता है जिन पर हम भरोसा करते हैं—और साथ ही उस शारीरिक ताकत से भी जिस पर हम निर्भर रहते हैं।

आखिर में, छठी बात यह है कि परमेश्वर की ताड़ना में दुश्मनों को हम पर हमला करने दिया जाता है।

भजन संहिता 38:12 को देखिए: "जो मेरी जान लेना चाहते हैं, वे मेरे लिए जाल बिछाते हैं; जो मुझे नुकसान पहुँचाना चाहते हैं, वे बर्बादी की बातें करते हैं और दिन भर धोखे की योजनाएँ बनाते हैं।" ये दाऊद के दुश्मनों के काम हैं। दाऊद के दुश्मन जाल बिछाकर, बुरी बातें कहकर और धोखे की चालें चलकर उसे नुकसान पहुँचाना चाहते थे। यहाँ, "जाल" का मतलब है दाऊद को नुकसान पहुँचाने के लिए बनाई गई चालाक योजना; "बुरी बातें" का मतलब है उसे बर्बाद करने के इरादे से कही गई बातें; और "धोखे की योजनाएँ" का मतलब है उसे धोखा देने का कपटपूर्ण इरादा (पार्क युन-सन)। रोमियों 1:24, 26 और 28 में एक वाक्यांश बार-बार आता है: "उन्हें सौंप दिया।" "इसलिए परमेश्वर ने उन्हें उनके दिलों की पापी इच्छाओं के अनुसार यौन अशुद्धता के

हवाले कर दिया..." (1:24); "इस वजह से, परमेश्वर ने उन्हें शर्मनाक वासनाओं के हवाले कर दिया..." (1:26); “और जैसे उन्होंने परमेश्वर को पहचानने में कोई भलाई नहीं समझी, वैसे ही परमेश्वर ने उन्हें भ्रष्ट सोच-विचार के हवाले कर दिया...” (1:28)। जब हम पाप भरे फैसले लेते हैं, तो परमेश्वर हमें बस उन फैसलों के नतीजों पर छोड़ देते हैं। इस तरह छोड़ दिए जाने का एक पहलू यह है कि जब दुश्मन हमला करते हैं तो वे हमारी रक्षा नहीं करते, बल्कि हमें उनके सामने खुला छोड़ देते हैं।

जब हमें अपने पापों की वजह से परमेश्वर से ऐसी ताड़ना मिलती है, तो हमें क्या करना चाहिए? हमें पूरे दिल से परमेश्वर को पुकारना चाहिए। हमें पछतावे की प्रार्थना करनी चाहिए। आज के वचन, भजन संहिता 38:9 को देखिए: “हे प्रभु, मेरी सारी इच्छा तेरे सामने है; मेरी आह तुझसे छिपी नहीं है।” जब हम परमेश्वर से पछतावे की प्रार्थना करते हैं, तो हमें यीशु की ओर देखना चाहिए, जिन्हें हमारे पापों के कारण क्रूस पर चढ़ाया गया और जिनकी मृत्यु हुई। यीशु, जो पाप-रहित थे, उन्हें हमारे सभी पापों के लिए क्रूस पर चढ़ाया गया और उनके शरीर में भाला मारा गया। उन्होंने न केवल असहनीय शारीरिक पीड़ा सही, बल्कि गहरे आंतरिक दुख को भी सहा—परमेश्वर पिता द्वारा त्याग दिए जाने का दर्द। उन्होंने ऐसा क्यों किया? उन्होंने ऐसा हमारे पापों को क्षमा करने और हमें बचाने के लिए किया। परमेश्वर पिता ने अपना सारा क्रोध अपने एकलौते पुत्र, यीशु पर उंडेल दिया। इसके द्वारा, हमें पापों की क्षमा मिली है। अब हम अकेले नहीं हैं, क्योंकि यीशु हमेशा हमारे साथ हैं। हमें अब डरने की ज़रूरत नहीं है; क्योंकि परमेश्वर हमारी रक्षा करते हैं, तो भला कौन हम पर हमला कर सकता है या हमें नुकसान पहुँचा सकता है? इसलिए, आज हम यीशु पर अपनी नज़रें टिकाकर आगे बढ़ते हैं, जो क्रूस पर मरे थे।

इंसानी रिश्ते

"मेरे प्रियजन और मित्र मेरे घावों से दूर हैं; मेरे रिश्तेदार दूर खड़े हैं" (भजन संहिता 38:11)।

जिन लोगों से हम प्यार करते हैं, वे हमसे दूर क्यों हो रहे हैं? इसका कारण यह है कि हम परमेश्वर से दूर हो गए हैं। इन दिनों मैं जो किताबें पढ़ रहा हूँ, उनमें से एक है यूजीन पीटरसन की *डेविड: ए स्पिरिचुअलिटी रूटेड इन रियलिटी* (David: A Spirituality Rooted in Reality)। उस किताब में "डेविड और अबशालोम" नाम का एक अध्याय है, और जब मैंने वह हिस्सा पढ़ा, तो प्रभु ने मुझे बहुत अच्छी बातें समझाईं। उनमें से एक बात यह है कि जब डेविड ने अपने बेटे अबशालोम को सच में माफ नहीं किया था, तो उसने उससे मिलने से इनकार कर दिया, भले ही अबशालोम को शाही महल में लाया गया था (2 शमूएल 14:24, 28)। दूसरे शब्दों में, क्योंकि डेविड ने अम्नोन की हत्या के लिए अबशालोम को सच में माफ नहीं किया था, इसलिए उसे अपने शहर लौटने की इजाज़त देने के बाद भी, न तो उसने उससे मिलने की कोशिश की और न ही उसे अपने पास आने दिया। संक्षेप में, डेविड ने अबशालोम से दूरी बनाए रखी। अबशालोम, वह बेटा जो अपनाया जाना चाहता था; अबशालोम, जो व्यक्तिगत रूप से माफी चाहता था; अबशालोम, जो अपने पिता का प्यार और गले लगना चाहता था—फिर भी डेविड ने उसे सच में अपनाने से इनकार कर दिया; उसने उसे बिना किसी व्यक्तिगत जुड़ाव के माफ किया और गले लगाने के बजाय उसे ठुकरा दिया। पिता-पुत्र का रिश्ता कितना दुखद है यह!

हालाँकि, यह केवल बाइबल में बताए गए डेविड और अबशालोम के पिता-पुत्र के रिश्ते की समस्या नहीं है। हमारे वैवाहिक रिश्तों को देखें। हमारे पिता-पुत्र या माँ-बेटी के रिश्तों को देखें। इन रिश्तों को ही देखें तो कितने ही पारिवारिक रिश्ते और दूर होते जा रहे हैं, ठीक वैसे ही जैसे डेविड ने अबशालोम से दूरी बना ली थी? समस्या क्या है? बाइबल कहती है कि यह पाप है। हमारे इंसानी रिश्तों की समस्या यह है कि माफ न करने का पाप,

माफ किए जाने से इनकार करने का पाप—यानी परमेश्वर से दूरी बनाने का पाप—ही हमारे दूर होने का कारण है। उस पाप के कारण, हमारे दिलों में शांति नहीं है (भजन संहिता 38:3), और हम हर समय अपने दिलों पर एक भारी बोझ ढोने को मजबूर हैं (पद 4)। इसके अलावा, उस पाप की "बुरी दुर्गंध" (पद 5) आखिरकार वह कारण बन जाती है जो "मेरे प्रियजनों और मित्रों" को मुझसे दूर कर देती है (पद 11)। तो फिर, हम पति-पत्नी, माता-पिता और बच्चों, या माँ और बेटी जैसे मानवीय रिश्तों में तालमेल कैसे वापस ला सकते हैं? हमें भजनकार दाऊद की तरह परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए: "हे प्रभु, मुझे छोड़ न दे; हे मेरे परमेश्वर, मुझसे दूर न हो" (पद 21)। आखिर में, अबशालोम ने दाऊद को छोड़ दिया। हालात इतने बिगड़ गए कि अबशालोम ने अपने पिता दाऊद को मारने की कोशिश की। इस दौरान, जब दाऊद जंगल में भाग रहा था, तो उसने तीन चीज़ें फिर से पाईं: विनम्रता, प्रार्थना और प्यार (पीटरसन)। संक्षेप में, जंगल में दुख सहते हुए दाऊद ने अपना असली रूप ("दाऊद जैसा स्वभाव") फिर से पा लिया। जब उसने विनम्रता से प्रभु से प्रार्थना की, तो प्रभु जंगल में दाऊद के करीब आए और उसके दिल में अबशालोम के लिए प्यार फिर से जगाया। नतीजतन, दाऊद ने अपनी सेना के कमांडरों को अबशालोम को न मारने का निर्देश दिया (2 शमूएल 18:5)। हालाँकि, जब योआब ने अबशालोम को मार डाला, तो दाऊद ने यह खबर सुनी और फूट-फूटकर रोया, दुख में चिल्लाया: "मेरे बेटे अबशालोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे अबशालोम! तुम्हारी जगह मुझे मरना चाहिए था! अबशालोम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!" (पद 33)

बहुत देर होने से पहले, हमें अपने बिगड़े हुए वैवाहिक रिश्तों, पिता-बेटे/माँ-बेटी के रिश्तों, और रिश्तेदारों व दोस्तों के साथ रिश्तों को ठीक करना चाहिए। ऐसा करने के लिए, मुझे उम्मीद है कि आप और मैं ऐसे लोग बनेंगे जो प्रभु की नज़र में सुंदर मानवीय रिश्तों को बनाए रखेंगे—इसके लिए हम अपने उस पापी स्वभाव को मानेंगे जिसने हमें उससे दूर कर दिया है, विनम्रता से उससे पश्चाताप की प्रार्थना करेंगे, और उसके दिए प्यार भरे दिल से सच्चा माफ़ करेंगे।

“हे प्रभु, मेरे उद्धारकर्ता”

[भजन संहिता 38:12–22]

आपकी नज़र में सबसे अच्छी ज़िंदगी क्या है? एक पादरी ने अपनी किताब में लिखा था: “सबसे अच्छी ज़िंदगी जीने का मतलब है अपने मकसद को पहचानना और ऐसा जीवन जीना जो उस मकसद को पूरा करे।” उन्होंने आगे बताया:

“युवा अक्सर खुद के बारे में ही सोचते हैं। उन्हें लगता है कि दुनिया तभी कुछ समझती है जब *वे* उसे समझते हैं, और अगर *वे* हार मान लें तो दुनिया खत्म हो जाएगी। लेकिन, दुनिया तो परमेश्वर के उद्धार की महान धारा के साथ आगे बढ़ती रहती है। हम तो बस कुछ समय के लिए उस प्रक्रिया का हिस्सा बनते हैं। इसलिए, जब हम परमेश्वर द्वारा हमें सौंपे गए मकसद को पूरा कर लें, तो हमें चुपचाप विदा ले लेनी चाहिए। तब भी, परमेश्वर के उद्धार का इतिहास शानदार और लगातार आगे बढ़ता रहता है। फिर भी, कुछ लोग ऐसे होते हैं जो चुपचाप विदा नहीं ले पाते या आगे नहीं बढ़ पाते। जो कोई कहता है, ‘लेकिन मुझे तो यह पूरा करना है...’ उससे मैं तुरंत कहूँगा, ‘आप निश्चिंत होकर आगे बढ़ सकते हैं।’ क्योंकि परमेश्वर दूसरों के ज़रिए भी काम करते हैं।”

हमारा अपना ऐतिहासिक मकसद यह समझने में है कि हमें क्या करना है—और उस संदर्भ को समझना जिसमें परमेश्वर ने हमें बुलाया है—परमेश्वर के उद्धार के काम की विशाल और व्यापक धारा के भीतर। हममें से हर एक को गंभीरता से सोचना चाहिए कि परमेश्वर के उद्धार के इतिहास की धारा में हमारा मकसद क्या है। हमें

खुद से पूछना चाहिए कि उस मकसद के अनुरूप जीवन जीने का क्या मतलब है, और फिर हमें पूरे दिल और ताकत से उस अनोखे मकसद को पूरा करने में लग जाना चाहिए जो हमें सौंपा गया है। इस दौरान, हमें अपने-अपने मकसद को पूरा करते समय आने वाली मुश्किलों और चुनौतियों का सामना करना होगा और उन पर जीत हासिल करनी होगी, साथ ही शैतान की चालों से पैदा होने वाले प्रलोभनों और सताहटों का भी सामना करना होगा। ऐसा करने के लिए, हमें अपने निजी जीवन में परमेश्वर के उद्धार के काम का अनुभव करना होगा। दूसरे शब्दों में, हमें अपने निजी जीवन में परमेश्वर के उद्धार के काम की धारा को पहचानना और समझना होगा। आखिरकार, हमारे मकसद को पूरा करने में एक ज़रूरी बात यह है कि हम प्रभु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में जानें, उन पर विश्वास करें और उनका अनुभव करें।

आज के पाठ (भजन संहिता 38) में भजनकार दाऊद ऐसे व्यक्ति थे जो प्रभु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में जानते थे, उन पर विश्वास करते थे और उनका अनुभव करते थे। अपने ही पाप की वजह से हुई तकलीफ़ और सतावट के बीच, उसने परमेश्वर से विनती की: "हे मेरे उद्धारकर्ता प्रभु, मेरी मदद के लिए जल्दी आ" (पद 22)। मैं उस व्यक्ति के जीवन के तीन पहलुओं पर सोच-विचार करके परमेश्वर की कृपा पाना चाहता हूँ जो प्रभु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में जानता है, उस पर विश्वास करता है और उसे अनुभव करता है।

पहला, जो लोग प्रभु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में जानते हैं, उस पर विश्वास करते हैं और उसे अनुभव करते हैं, वे चुप रहकर प्रभु की ओर देखते हैं।

भजन संहिता 38:15 को देखें: "हे प्रभु, मैं तेरी प्रतीक्षा करता हूँ; तू उत्तर देगा, हे मेरे परमेश्वर प्रभु।" जब उसकी जान लेने की चाह रखने वालों ने जाल बिछाए, उसे नुकसान पहुँचाने के लिए बुरी बातें कहीं और दिन भर धोखे की साज़िशें रचीं (पद 12), तो दाऊद बहरे और गूंगे व्यक्ति की तरह हो गया (पद 13)। दूसरे शब्दों में, जब उसके दुश्मनों ने चालाक चालों से उसे नुकसान पहुँचाने की कोशिश की, तो दाऊद ने अपने कान और मुँह बंद कर लिए और चुपचाप अपना ध्यान पूरी तरह से प्रभु पर टिकाए रखा। दाऊद की तरह, हमें भी ऐसे व्यवहार करना चाहिए जैसे हम बहरे हों—ऐसी बातें सुनने से इनकार करना चाहिए जिन्हें नहीं सुना जाना चाहिए। जब दाऊद को घेरे हुए दुश्मन "बुरी बातें" कह रहे थे (पद 12)—यानी उसके विनाश की साज़िश रच रहे थे—तो उसने ऐसा व्यवहार किया जैसे वह बहरा हो और उनकी बातें नहीं सुनीं। अगर हम उन लोगों की हर बात सुनें

जो हमसे नफ़रत करते हैं, हमें नापसंद करते हैं और हमारा विरोध करते हैं, तो हम कैसे जी पाएँगे? ऐसे समय होते हैं जब हमें अपने कान बंद करने की ज़रूरत होती है। खासकर, हमें दुनिया की आवाज़ों को बंद कर देना चाहिए और प्रभु की आवाज़ को ध्यान से सुनना चाहिए। दाऊद की तरह, हमें भी अपना मुँह बंद रखने और गूंगे की तरह व्यवहार करने की ज़रूरत है; ऐसे समय होते हैं जब चुप्पी ज़रूरी होती है। यहाँ तक कि जब उसके दुश्मन उसे नुकसान पहुँचाने के लिए चालाकी से साज़िशें रच रहे थे और उसे बर्बाद करने के लिए गलत तरीके अपना रहे थे, तब भी दाऊद ने अपना बचाव करने या खुद को बचाने के लिए अपना मुँह नहीं खोला (पद 14)।

शायद हम सभी ने ऐसी स्थितियों का अनुभव किया है जहाँ खुद का बचाव करने के लिए बोलने से समस्या और बिगड़ गई। कभी-कभी, बहाने बनाने से मामला और बढ़ जाता है। कहा जाता है कि मशहूर दार्शनिक प्लेटो को एक बार अपने आस-पास के लोगों के बीच एक गंभीर गलतफहमी का सामना करना पड़ा था। इस बात के बावजूद कि कई लोग उसकी बुराई कर रहे थे, उसने अपने कामों को सही ठहराने या अपनी स्थिति को समझाने की कोई कोशिश नहीं की। जब एक शिष्य ने पूछा, "गुरुजी, आप अपना बचाव क्यों नहीं करते?" तो प्लेटो ने जवाब दिया, "मेरे बचाव से उनकी आलोचना खत्म नहीं होगी; उनके आरोपों को चुप कराने का एकमात्र तरीका मेरा सही आचरण है।" जीवन में आगे बढ़ते हुए, हमें अक्सर गलतफहमियों के कारण आलोचना का सामना करना पड़ता है। हमने शायद गलतफहमियों को दूर करने के कई तरीके अपनाए होंगे। फिर भी, हम अक्सर पाते हैं कि स्थिति आसानी से सुलझने के बजाय और उलझ जाती है—जैसे उलझा हुआ धागा—और गलतफहमी और गहरी हो जाती है। विश्वासियों के रूप में, हमें चुपचाप परमेश्वर के मार्गदर्शन और उनके सही समय का इंतज़ार करना सीखना चाहिए। हमारे सामने आने वाली समस्याओं को सुलझाने की कोशिश में परमेश्वर से आगे निकलना मूर्खता है। पृथ्वी पर रहते हुए यीशु को अनगिनत गलतफहमियों और आरोपों का सामना करना पड़ा; फिर भी, उन्होंने उन सभी को सहा और पिता के सही समय का इंतज़ार किया। यह परमेश्वर की इच्छा के प्रति पूरी तरह से आज्ञाकारी जीवन की एक सुंदर तस्वीर है।

जब हम परेशान हों और अनुचित आरोपों के बोझ तले संघर्ष कर रहे हों, तो हमें चुप रहना चाहिए और अपनी नज़रें केवल प्रभु पर टिकानी चाहिए। हमें दूसरों की बातों पर बहुत ज़्यादा संवेदनशील नहीं होना चाहिए। सिर्फ़ सफ़ाई देने के लिए मुँह खोलने से गलतफहमियाँ दूर नहीं होतीं। दाऊद की तरह, हमें—एक तरह से—अपने कान ऐसे बंद कर लेने चाहिए जैसे हम बहरे हों और कुछ न बोलने का संकल्प लेना चाहिए जैसे हम गूंगे हों; इस

खामोशी के बीच, हमें चुपचाप प्रभु के पास जाना चाहिए और अपनी प्रार्थनाएँ करनी चाहिए। इसके अलावा, जब हम प्रार्थना में प्रभु के पास जाते हैं, तो हमें उनके जवाब पर उसी भरोसे के साथ जाना चाहिए जैसा दाऊद को था। आज के वचन, भजन संहिता 38:15 को देखें: "क्योंकि हे प्रभु, मुझे तुझसे ही आशा है; हे मेरे परमेश्वर प्रभु, तू ही जवाब देगा।" इसका शाब्दिक अनुवाद है: "तू—तू स्वयं—जवाब देगा, हे मेरे प्रभु, मेरे परमेश्वर।" दाऊद की तरह, जिसने केवल परमेश्वर की ओर देखा और इस भरोसे के साथ प्रार्थना की कि वह जवाब देगा, हमें भी चुप रहते हुए केवल परमेश्वर की ओर देखना चाहिए। दूसरी बात, जो लोग प्रभु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में जानते हैं, उन पर विश्वास करते हैं और उनका अनुभव करते हैं, वे उनके सामने अपने पापों को स्वीकार करने के लिए अपना मुँह खोलते हैं।

भजन संहिता 38:18 पर विचार करें: "मैं अपने पाप को स्वीकार करता हूँ; मैं अपने पाप के कारण परेशान हूँ।" यह वास्तव में दिलचस्प है। यह अद्भुत है कि दाऊद किस तरह अपने पाप को स्वीकार करता है। हालांकि उन्होंने निश्चित रूप से अपने दुश्मनों की बुराई देखी थी, फिर भी उन्होंने दुश्मनों की बुराई पर ध्यान देने के बजाय अपनी खुद की गलतियों पर ध्यान दिया और परमेश्वर के सामने उन्हें स्वीकार किया; दाऊद के चरित्र का यह पहलू हमें विश्वास के प्रति अपने नज़रिए पर नए सिरे से सोचने के लिए प्रेरित करता है। दूसरे शब्दों में, दुश्मनों द्वारा किए गए उत्पीड़न, मुश्किलों, दुख और दर्द के बीच—और उनकी बदनामी और आलोचना का सामना करते हुए—उनकी बातें सुनकर तनावग्रस्त या आहत होने की ज़रूरत नहीं है, और न ही बहाने बनाने के लिए मुँह खोलने की ज़रूरत है। इसके बजाय, इंसान को बस चुपचाप प्रभु की ओर देखना चाहिए, और परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में, अपने पाप को महसूस करना चाहिए और उसे उनके सामने स्वीकार करना चाहिए। दुश्मनों की दुश्मनी और उत्पीड़न को नाराज़गी या शिकायत का मौका बनाने के बजाय, दाऊद ने उन्हें खुद को परखने और परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार करने के अवसर के रूप में इस्तेमाल किया; वह हमें सिखाते हैं कि परमेश्वर के पास कैसे जाएँ—दुनिया के लिए बहरे और गूंगे बनकर—और अपने दिल की बात कहें, जिसमें अपने पापों को स्वीकार करना भी शामिल है।

भजन संहिता 38:16–18 में, हम देखते हैं कि दाऊद अपनी नज़रें पूरी तरह से प्रभु पर टिकाकर परमेश्वर से विनती कर रहे हैं। उस प्रार्थना की बातों को एक या दो बिंदुओं में संक्षेप में बताया जा सकता है। (1) प्रार्थना का

पहला हिस्सा आज के पाठ की आयत 16 में मिलता है: "क्योंकि मैंने कहा, 'कहीं वे मुझ पर खुश न हों, कहीं ऐसा न हो कि जब मेरा पैर फिसले, तो वे मेरे खिलाफ़ खुद को बड़ा समझें।'"

दाऊद की प्रार्थना में दो विनतियाँ थीं: (a) पहली, उन्होंने प्रार्थना की कि उनके दुश्मन उनकी विफलता पर खुश न हों; और (b) दूसरी, उन्होंने प्रार्थना की कि वे—उन्हें विफल होते देखकर—परमेश्वर की और भी अनदेखी न करें और अहंकार में खुद को बड़ा न समझें (पार्क युन-सन)। असल में, यह एक ऐसी प्रार्थना है जो परमेश्वर की महिमा चाहती है। कारण यह है कि दाऊद पूरी तरह से परमेश्वर की ओर देख रहे थे और दुश्मनों के उत्पीड़न के बीच मदद के लिए विनती कर रहे थे; अगर परमेश्वर प्रार्थना का जवाब नहीं देते, जिससे उनके दुश्मन "उनके खिलाफ़ खुद को बड़ा समझते"—यानी, अहंकारी हो जाते और खुद को श्रेष्ठ समझते—तो परमेश्वर पर उनका भरोसा बेकार लगता। इसका नतीजा महिमा के बजाय परमेश्वर का अपमान होता। इसलिए, दाऊद ने परमेश्वर से अपनी विनती पूरी करने का आग्रह किया, भले ही वह केवल उनकी अपनी महिमा के लिए ही क्यों न हो।

(2) प्रार्थना का दूसरा पहलू अपने पापों को स्वीकार करना है, जैसा कि आयत 18 में देखा गया है, जिसे हम पहले ही पढ़ चुके हैं। अपने पाप के कारण, दाऊद लड़खड़ाने की कगार पर था, और उसका दुख लगातार उसके सामने था (आयत 17)।

आयत 3 के संदर्भ में कहें तो, दाऊद अपने पाप के कारण इतनी गहरी पीड़ा में था कि उसकी "हड्डियों में कोई तंदुरुस्ती नहीं" बची थी। फिर भी, हम देखते हैं कि अंततः वह अपने पाप पर दुखी होता है और परमेश्वर के सामने उसे स्वीकार करता है। जब प्रभु का हाथ उस पर भारी पड़ा—दिन-रात—तो दाऊद आखिरकार अपने पाप को स्वीकार करने के लिए मजबूर हो गया (32:4; 38:2)। यह परमेश्वर का कितना अद्भुत काम है! वह अपना बचाव करने या बहाने बनाने के लिए अपना मुँह खोल सकता था, लेकिन इसके बजाय, परमेश्वर ने दुख और पीड़ा के बीच दाऊद को अपना पाप स्वीकार करने की ओर ले जाने के लिए तकलीफ का इस्तेमाल किया। हमें लोगों के सामने चुप रहना चाहिए, जबकि अपने पापों को स्वीकार करने के लिए परमेश्वर के सामने अपना मुँह खोलना चाहिए।

अंत में, तीसरी बात यह है कि जो लोग प्रभु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में जानते हैं, उन पर विश्वास करते हैं और उनका अनुभव करते हैं, वे भलाई के मार्ग पर चलते हैं।

भजन संहिता 38:20 को देखें: "जो भलाई के बदले बुराई करते हैं, वे मेरा विरोध करते हैं क्योंकि मैं भलाई के मार्ग पर चलता हूँ।" अपने दुश्मनों के सताए जाने के बावजूद, दाऊद ने भलाई का जीवन जीना जारी रखा, जबकि उसने परमेश्वर से विनती की और अपने पापों को स्वीकार किया। उसने अपने दुश्मनों के प्रति दया दिखाई, फिर भी उन्होंने उसकी भलाई का बदला बुराई से दिया; दूसरे शब्दों में, वे उसके खिलाफ हो गए। सचमुच, यह एक अद्भुत विश्वास है। दुश्मनों के विरोध के बीच भी भलाई के मार्ग पर चलने वाला दाऊद का जीवन... एक दिलचस्प बात यह है कि हम जितना अधिक अच्छा काम करते हैं, शैतान का विरोध उतना ही तीव्र और उग्र हो जाता है। दाऊद के दुश्मनों के कामों पर गौर करें जब उसने उनके सताने के बावजूद भलाई की: "जो बिना कारण मेरे दुश्मन हैं, वे ताकतवर हैं, और जो गलत तरीके से मुझसे नफरत करते हैं, वे बहुत हैं" (आयत 19)। अगर अपने दुश्मनों के साथ भलाई करने से वे हमसे और भी बुरी तरह नफरत करने लगें और हमें सताने लगें, तो क्या हम फिर भी भलाई के मार्ग पर चलना चुनेंगे?

यह उस विश्वासी का जीवन है जो केवल प्रभु की ओर देखकर आगे बढ़ता है, जो हमारा उद्धार है। अच्छाई की राह पर चलने का राज़—यानी दुश्मनों की बातों को अनसुना करना और उनके सामने चुप रहना, लेकिन प्रभु की आवाज़ सुनने, अपनी प्रार्थनाएँ करने और अपने पापों को स्वीकार करने के लिए उनके प्रति कान और मुँह खोलना—इसी में है कि हम अपनी नज़रें प्रभु पर टिकाएँ और पूरी तरह से उन पर भरोसा रखें, जो हमारे उद्धारकर्ता हैं। इसलिए, दुश्मनों के बीच अच्छाई की राह पर चलते हुए दाऊद ने परमेश्वर से विनती की: "हे प्रभु, मुझे छोड़ न दे; हे मेरे परमेश्वर, मुझसे दूर न रह! हे प्रभु, मेरे उद्धारकर्ता, मेरी मदद करने के लिए जल्दी कर!" (पद 21–22)।

परमेश्वर के उद्धार के महान कार्य में अपने मकसद को समझने और उसे पूरा करने के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित करने के लिए, हमें हर दिन प्रभु—अपने उद्धारकर्ता—को जानना, उनसे मिलना और उनका अनुभव करना होगा। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के उद्धार के कार्य की धारा हमारे अपने जीवन से भी बहनी चाहिए। जैसे-जैसे हम उद्धार के इस इतिहास की धारा का अनुभव करते हैं, हमें आज ज़पन्याह 3:17 के वचनों को मज़बूती

से थामे रखना चाहिए और प्रभु के उद्धार का गुणगान करते हुए अपने स्वर्गीय घर की ओर बढ़ना चाहिए: "तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे बीच है, वह एक शक्तिशाली उद्धारकर्ता है; वह तुम्हारे कारण खुशी से झूम उठेगा; वह अपने प्रेम से तुम्हें शांत करेगा; वह ऊँचे स्वर में गाकर तुम्हारे लिए खुशी मनाएगा।"

“हे मेरे परमेश्वर, मुझसे दूर न हो”

[भजन संहिता 38:21–22]

अपनी किताब *द प्रॉब्लम ऑफ़ पेन* (The Problem of Pain) में, 20वीं सदी के महान विचारक सी. एस. लुईस—जिन्होंने अपनी तेज़ बुद्धि और दयालु हृदय से ईसाई प्रेम और विश्वास को फैलाने का प्रयास किया—यह सवाल उठाते हैं: “अगर परमेश्वर अच्छे और सर्वशक्तिमान हैं, तो वे अपनी रचनाओं को दुख क्यों सहने देते हैं?” दूसरे शब्दों में, “अगर परमेश्वर सर्वशक्तिमान और अच्छे हैं, तो दुनिया में बुराई और दुख क्यों हैं?” क्या आपमें से किसी ने कभी यह सवाल पूछा है जो सी. एस. लुईस ने उठाया था? खासकर जब आप दुख में थे, तो क्या आपने यह नहीं पूछा, “अगर परमेश्वर अच्छे हैं, तो उन्होंने मुझे यह दर्द क्यों दिया और वे मुझे बस दुख सहने के लिए क्यों छोड़ देते हैं?” सी. एस. लुईस ने दुख की इस समस्या पर—जो अक्सर मानवता के लिए एक अनसुलझी पहेली लगती है—धार्मिक नज़रिए से बात की: “दर्द बहरी दुनिया को जगाने के लिए परमेश्वर का मेगाफ़ोन है।” उनका कहना है कि दर्द हमें जगाने और हमारा ध्यान खींचने का परमेश्वर का एक तरीका है। संक्षेप में, दर्द सुधार और पश्चाताप का एक अनोखा अवसर देता है, और दुख के माध्यम से हम पूर्णता की ओर बढ़ते हैं।

व्यक्तिगत रूप से, जब मैं “दुख” के बारे में सोचता हूँ, तो मैं इसे दो प्रकारों में बाँटता हूँ: अनुशासन का दुख और सुधार का दुख।

(1) अनुशासन का दुख

अनुशासन का दुख वह दर्द है जिसे परमेश्वर अपनी सर्वोच्च इच्छा के तहत होने देते हैं; वे इसे हमारे विश्वास के विकास और परिपक्वता को बढ़ावा देने के लिए अनुमति देते हैं। इसका एक मुख्य उदाहरण बाइबिल की 'अय्यूब की पुस्तक' (Book of Job) में अय्यूब का चरित्र है। अय्यूब 1:1 के अनुसार, अय्यूब का वर्णन एक ऐसे व्यक्ति के रूप में किया गया है जो "निर्दोष और सीधा था, जो परमेश्वर का भय मानता था और बुराई से दूर रहता था।" स्वयं परमेश्वर ने शैतान के सामने अय्यूब की प्रशंसा इन शब्दों में की: "पृथ्वी पर उसके जैसा कोई नहीं है, एक निर्दोष और सीधा व्यक्ति, जो परमेश्वर का भय मानता है और बुराई से दूर रहता है" (1:8; 2:3)। फिर भी, जैसा कि हम जानते हैं, यीशु के अलावा, बाइबिल में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं दिखता जिसने अय्यूब जैसी अत्यधिक पीड़ा सही हो। उसने न केवल अपनी सारी संपत्ति (1:13–17) बल्कि अपने सभी बच्चों (पद 19) को भी खो दिया। पैरों के तलवों से लेकर सिर के ऊपरी हिस्से तक दर्दनाक फोड़ों से पीड़ित (2:7), वह राख के बीच बैठा था और टूटे हुए मिट्टी के बर्तन के टुकड़े से अपने शरीर को खुरच रहा था (वचन 8)। परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब पर प्रहार करने की अनुमति क्यों दी—एक ऐसा व्यक्ति जो निर्दोष, ईमानदार और परमेश्वर का भय मानने वाला था—और उसे इतनी पीड़ा क्यों सहने दी? इसका कारण अय्यूब 42:5 में मिलता है: "मैंने तेरे बारे में केवल कानों से सुना था, लेकिन अब मेरी आँखें तुझे देख रही हैं।" परमेश्वर ने अय्यूब को इतनी गहरी पीड़ा सहने की अनुमति इसलिए दी ताकि उसे ऐसे विश्वास का आशीर्वाद मिल सके जो केवल परमेश्वर के बारे में सुनने से आगे बढ़कर उन्हें वास्तव में देखने—यानी परमेश्वर का गहरा अनुभव करने—तक ले जाए।

(2) अनुशासन का दर्द

अनुशासन के दर्द का अर्थ है वह पीड़ा जो पवित्र परमेश्वर हमारे पाप के परिणामस्वरूप देते हैं; यह एक ऐसा दर्द है जिसका उद्देश्य हमें अपने पापों को स्वीकार करने और उनसे पश्चाताप करने के लिए प्रेरित करना है, ताकि अंततः हमें उनसे छुटकारा मिल सके। इस प्रकार के अनुशासनात्मक कष्ट का एक मुख्य उदाहरण दाऊद के जीवन में मिलता है, जो आज के पाठ, भजन संहिता 38 का विषय है। आज, भजन संहिता 38 के वचनों 21 और 22 पर ध्यान केंद्रित करते हुए और पूरे भजन पर मनन करते हुए, मैं उस संदेश को प्राप्त करना चाहता हूँ जो परमेश्वर हमें देना चाहते हैं—निर्देश का एक संदेश जो वे हम पर अपनी नज़र रखते हुए देते हैं (भजन संहिता 32:8)—दाऊद के अनुभव के माध्यम से, जिसने ईश्वरीय अनुशासन की पीड़ा को सहा।

जब मैं आज भजन संहिता 38 पर मनन करता हूँ, तो मैं दो सवाल पूछना चाहता हूँ ताकि हम उस संदेश को सुन सकें जो परमेश्वर हमें देना चाहते हैं: (1) पहला, उन मसीहियों को किस तरह की पीड़ा का अनुभव होता है जिन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है? और (2) दूसरा, जब हम ऐसी पीड़ा से गुज़रते हैं तो हमें कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए?

पहला, उन मसीहियों को किस तरह की पीड़ा का अनुभव होता है जिन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है?

दाऊद भजन संहिता 38:2 में पाप करने के बाद सहने वाली पीड़ा का वर्णन करता है: "तेरे तीर मुझे चुभ गए हैं, और तेरा हाथ मुझ पर भारी पड़ गया है।" जब हम पाप करते हैं और उसे स्वीकार नहीं करते हैं, तो परमेश्वर न केवल प्रभु के वचन—पवित्र आत्मा की तलवार—से हमारे अंतःकरण को भेदते हैं, बल्कि अपने हाथ से हम पर दबाव भी डालते हैं। "दबाव डालने" या "भारीपन" की यह बात भजन संहिता 32:4 में भी मिलती है: "दिन-रात तेरा हाथ मुझ पर भारी था; मेरी ताकत गर्मी के मौसम की तरह खत्म हो गई थी।" भले ही हमें ठीक-ठीक न पता हो कि प्रभु का हाथ हम पर दिन-रात भारी होने का क्या मतलब है, लेकिन एक बात पक्की है: परमेश्वर हमें अपने पापों को स्वीकार करने के लिए मजबूर करते हैं, भले ही इसके लिए हमें दुख सहना पड़े (पद 3)।

क्योंकि प्रभु के तीर उसे चुभे थे और उसका हाथ उस पर भारी था, इसलिए दाऊद ने तीन तरह के खास दुख सहे।

(1) पहला है शारीरिक दुख। आज के वचन, भजन संहिता 38:3 और 7 को देखें: "तेरे क्रोध के कारण मेरे शरीर में कोई तंदुरुस्ती नहीं है; मेरे पाप के कारण मेरी हड्डियों में कोई स्वास्थ्य नहीं है... क्योंकि मेरी कमर में जलन वाला दर्द है, और मेरे शरीर में कोई तंदुरुस्ती नहीं है।" दाऊद ने दो बार माना कि "मेरे शरीर में कोई तंदुरुस्ती नहीं है" क्योंकि प्रभु के तीर उसे चुभे थे और उसका हाथ उस पर भारी था। दूसरे शब्दों में, दाऊद की सेहत खराब हो गई थी। न केवल उसकी ताकत खत्म हो गई थी, बल्कि उसे इतनी गंभीर तकलीफ भी हुई कि उसकी आँखों की रोशनी भी कमज़ोर हो गई (पद 10)। संक्षेप में, दाऊद शारीरिक दुख सह रहा था। जब हम अपनी सेहत खो देते हैं और शारीरिक दर्द सहते हैं, तो हमें उस दुख का इस्तेमाल अपने पापों को समझने के मौके के तौर पर करना चाहिए। सी. एस. लुईस ने मशहूर बात कही थी, "दर्द बहरी दुनिया को जगाने के लिए परमेश्वर

का मेगाफोन है।" शारीरिक दुख के ज़रिए, हमें आध्यात्मिक रूप से जागना चाहिए और परमेश्वर की डांट भरी आवाज़ सुननी चाहिए—क्योंकि वे परमेश्वर के वचन, यानी आत्मा की तलवार का इस्तेमाल करके हमारे पापों की ओर इशारा करते हैं। मुझे यूहन्ना 5:14 याद आता है। यरूशलेम में बेथेस्डा के तालाब के पास, यीशु ने एक ऐसे आदमी को ठीक किया जो अड़तीस साल से बीमार था; बाद में वे उससे मंदिर में मिले और कहा, "देखो, तुम ठीक हो गए हो। अब और पाप मत करना, कहीं ऐसा न हो कि तुम पर इससे भी बुरा कुछ आ पड़े।" यीशु के ये शब्द आपको कैसे लगते हैं? अगर परमेश्वर चाहते हैं कि हम अपने पापों को स्वीकार करें और उनसे तौबा करें—भले ही शारीरिक बीमारी के ज़रिए—तो हमारा क्या होगा अगर ठीक होने के बाद भी हम वही पाप करते रहें? क्या यह डरावना विचार नहीं है? (2) वह दुख असल में दिल की तड़प है। भारी बोझ (वचन 4) के कारण, न केवल उसने अपनी अंदर की शांति खो दी (वचन 3), बल्कि परेशान दिल की वजह से वह तड़पकर कराहने भी लगा (वचन 8)। नतीजतन, उसे शरीर और आत्मा दोनों में चोटें आईं (वचन 5) और उसे दुख में चलने के लिए मजबूर होना पड़ा (वचन 6)। पाप का यह कितना दर्दनाक नतीजा है। ईसाई होने के नाते, जब हम पाप करते हैं तो हम अंदरूनी उथल-पुथल महसूस करते हैं—आत्मा की ऐसी तड़प जिसे वे लोग महसूस नहीं करते जो विश्वास नहीं करते। क्योंकि वे पाप को पाप नहीं मानते, इसलिए वे उसके साथ होने वाले दिल के दर्द को महसूस नहीं कर सकते। हालाँकि, विश्वास करने वाले अपने पापों के कारण दुख सहते हैं; यह दुख उन्हें थका देता है और उनकी आत्मा को घायल कर देता है, जिससे आखिरकार वे परेशानी में कराहने लगते हैं। भजन 38:8 में "परेशान दिल" वाक्यांश को—भजन 6:3 से तुलना करने पर—एक ऐसी स्थिति के रूप में समझा जा सकता है जहाँ आत्मा बुरी तरह कांप रही होती है। यह परमेश्वर के अनुशासन के तहत लंबे समय तक दुख सहने का नतीजा है। यह मन की एक ऐसी स्थिति है जो तब पैदा होती है जब कोई इंसान अपनी सहनशक्ति की सीमा तक पहुँच जाता है और सोचता है कि ऐसा दुख कब तक चलेगा। ऐसी चिंता के बीच, हम कराहने या विलाप करने से खुद को रोक नहीं पाते। इसके बीच, दाऊद ने जो खास भावनात्मक दर्द सहा, वह अकेलापन था—अलग-थलग होने का गहरा एहसास। भजन 38:11 को देखें: "मेरे प्रियजन और मेरे दोस्त मेरी बीमारी से दूर खड़े हैं, और मेरे रिश्तेदार भी दूर खड़े हैं।" जबकि शारीरिक दर्द, घाव, दुख और अंदरूनी उथल-पुथल वाकई बहुत कष्टदायक होते हैं, हम अकेलापन भी बहुत गहराई से महसूस करते हैं जब दूसरे हमारे पाप के कारण हमसे मुँह मोड़ लेते हैं और दूर हो जाते हैं। किसी तरह, इससे अय्यूब की याद आती है। शारीरिक पीड़ा बहुत भयानक रही होगी—हमारी कल्पना से भी परे—लेकिन उस गहरे अकेलेपन के बारे में सोचें जो अय्यूब ने महसूस किया होगा जब

उसकी अपनी पत्नी, जो उसके सबसे करीब थी और जिसके साथ वह "एक शरीर" था, उसे समझ नहीं पाई और इसके बजाय मूर्खतापूर्ण बातें कीं, यह कहते हुए, "क्या तुम अभी भी अपनी सच्चाई पर कायम हो? परमेश्वर को कोसकर मर जाओ!" (अय्यूब 2:9)। जब कोई सबसे करीबी साथी भी समझदारी दिखाने के बजाय सिर्फ मूर्खतापूर्ण बातें करता है, तो अकेलापन होना तय है। पाप का स्वरूप इतना भयानक होता है; यह इंसान को पूरी तरह अकेला कर देता है। परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं, और जब वे हमें अनुशासित करते हैं, तो कई बार वे हमारे उन दोस्तों और रिश्तेदारों से भी हमारे संबंध तोड़ देते हैं जिन पर हम निर्भर होते हैं—ठीक वैसे ही जैसे वे हमारी अपनी शारीरिक शक्ति पर हमारी निर्भरता को हटा देते हैं।

(3) वह पीड़ा, वास्तव में, आत्मा की पीड़ा है।

आज के वचन, भजन संहिता 38:12 को देखिए: "जो मेरे प्राण के खोजी हैं, वे फंदे लगाते हैं; जो मेरी हानि चाहते हैं, वे बर्बादी की बातें करते हैं; वे दिन भर धोखे की योजनाएँ बनाते हैं।" यह दाऊद के दुश्मनों के कामों को बताता है। वे फंदे लगाकर, बुरी बातें कहकर और धोखे भरी चालें चलकर उसे नुकसान पहुँचाना चाहते थे। दूसरे शब्दों में, उन्होंने न केवल उसके खिलाफ साजिश रची, बल्कि किसी भी तरह से—यहाँ तक कि धोखे से भी—उसे खत्म करने की कोशिश की। क्या यह हैरान करने वाली बात नहीं है? जब दाऊद ने पाप किया, तो उसके अपने लोग, दोस्त और रिश्तेदार भी उससे दूर हो गए; फिर भी, उसी समय उसके दुश्मन उसके करीब आ गए और उसकी जान लेने पर उतारू हो गए। यह एक तरह की आध्यात्मिक लड़ाई थी। हमारा दुश्मन, शैतान, न केवल हमें पाप करने के लिए उकसाता है, बल्कि पाप करने के बाद भी लगातार हम पर हमला करता है, हमारे पछतावे में बाधा डालता है और आखिरकार हमें प्रभु से विश्वासघात करने, धर्म छोड़ने, विश्वास से गिरने और हमेशा के विनाश का सामना करने के लिए मजबूर करना चाहता है। ऐसे में, दाऊद के लिए सबसे बड़ी तकलीफ यह एहसास था कि परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया है और उससे दूरी बना ली है। आयत 21 को देखिए: "हे प्रभु, मुझे मत छोड़; हे मेरे परमेश्वर, मुझसे दूर मत हो।" दाऊद को डर था कि अपने पाप के कारण परमेश्वर उससे दूर हो जाएँगे या उसे छोड़ देंगे। बेशक, यह सिर्फ़ दाऊद का एहसास था; असलियत यह नहीं थी। परमेश्वर ने न तो दाऊद को कभी छोड़ा और न ही उससे दूरी बनाई। बल्कि, परमेश्वर दाऊद के करीब आए और अपने हाथ से उस पर भारी दबाव डाला, और अपने तीरों से उसे बेध दिया (आयत 2)। परमेश्वर दाऊद के करीब थे

क्योंकि वे चाहते थे कि वह अपने पापों को स्वीकार करे और पछतावा करे। संक्षेप में, परमेश्वर दाऊद को उसके पाप से बचाना चाहते थे।

दूसरी बात, जब हम दुख सहते हैं तो हमें क्या करना चाहिए? भजन संहिता 38 हमें तीन मुख्य बातें सिखाती है:

(1) हमें चुप रहकर अपने उद्धारकर्ता, प्रभु की ओर देखना चाहिए।

आज के पाठ में भजन संहिता 38:15 को देखिए: "क्योंकि हे प्रभु, मुझे तुझ पर भरोसा है; तू जवाब देगा, हे प्रभु मेरे परमेश्वर।" जब उसकी जान लेने की चाह रखने वालों ने जाल बिछाए, उसे नुकसान पहुँचाने के लिए बुरी बातें कहीं और दिन भर धोखे की साज़िशें रचीं, तो दाऊद बहरे और गूंगे व्यक्ति की तरह हो गया (पद 12–13)। दूसरे शब्दों में, जब उसके दुश्मन चालाकी से उसे नुकसान पहुँचाने और बर्बाद करने के लिए धोखे भरी योजनाएँ बना रहे थे, तब दाऊद ने अपना बचाव करने या खुद को बचाने के लिए मुँह नहीं खोला (पद 14)। इसके बजाय, उसने अपने कान और मुँह दोनों बंद कर लिए और चुपचाप अपना ध्यान पूरी तरह से प्रभु पर टिकाए रखा। दाऊद की तरह, हमें भी उन बातों को न सुनने का फैसला करना चाहिए जिन्हें नहीं सुना जाना चाहिए—एक तरह से ऐसा व्यवहार करना चाहिए जैसे हम बहरे हों। जब दाऊद को घेरे हुए दुश्मनों ने "बुरी बातें" कहीं (पद 12)—यानी ऐसी बातें जिनका मकसद उसे बर्बाद करना था—तो उसने उन्हें ऐसे नज़रअंदाज़ किया जैसे वह बहरा हो। अगर हम उन लोगों की हर बात सुनें जो हमसे नफ़रत करते हैं, हमें नापसंद करते हैं और हमारा विरोध करते हैं, तो हम कैसे जी पाएँगे? ऐसे समय आते हैं जब हमें अपने कान बंद करने की ज़रूरत होती है। खासकर, हमें दुनिया की आवाज़ों को बंद कर देना चाहिए और इसके बजाय प्रभु की आवाज़ सुननी चाहिए। मेरा यह भी मानना है कि दाऊद की तरह, हमें अपना मुँह बंद रखने की ज़रूरत है—चुप रहने की, जैसे कि हम गूंगे हों। दाऊद की तरह—बहरे और गूंगे की तरह व्यवहार करते हुए, बोलने से बचते हुए—हमें चुपचाप प्रभु के पास जाना चाहिए और अपनी विनती करनी चाहिए। इसके अलावा, जब हम अपनी अर्जियों के साथ प्रभु के पास जाते हैं, तो हमें उसी भरोसे के साथ ऐसा करना चाहिए जैसा दाऊद को था कि हमारी प्रार्थना का जवाब मिलेगा। आज के वचन, भजन संहिता 38:15 को देखें। दाऊद कहता है, "हे प्रभु मेरे परमेश्वर, तू जवाब देगा।" इसका शाब्दिक अनुवाद है: "तू—हाँ, तू—जवाब देगा; हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर" (पार्क युन-सन)। जिस तरह

दाऊद ने सिर्फ़ परमेश्वर की ओर देखा और इस यकीन के साथ प्रार्थना की कि वह जवाब देगा, वैसे ही हमें भी चुप रहते हुए अपनी नज़रें सिर्फ़ परमेश्वर पर टिकाए रखनी चाहिए।

(2) हमें अपना मुँह खोलना चाहिए और प्रभु के सामने अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए।

भजन संहिता 38:18 को देखें: "मैं अपने पाप को स्वीकार करता हूँ; मुझे अपने पाप का अफ़सोस है।" यह सचमुच अद्भुत है। यह देखना बहुत प्रभावशाली है कि दाऊद किस तरह अपने पाप को स्वीकार करता है। हालांकि उन्होंने निश्चित रूप से अपने दुश्मनों की बुराई देखी, लेकिन उन्होंने उनके पापों पर ध्यान देने के बजाय अपने पापों पर ध्यान दिया और उन्हें परमेश्वर के सामने स्वीकार किया। दाऊद का उदाहरण हमें विश्वास के सही नज़रिए पर फिर से सोचने के लिए प्रेरित करता है। दूसरे शब्दों में, दुश्मनों द्वारा किए गए उत्पीड़न, मुश्किलों, दुख और दर्द के बीच, दूसरों की बुराई और आलोचना से परेशान होने या दुखी होने की ज़रूरत नहीं है, और न ही सफाई देने के लिए मुँह खोलने की ज़रूरत है; इसके बजाय, बस चुप रहकर प्रभु पर नज़र टिकाए रखना और परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में रहकर अपने पापों को महसूस करना और उन्हें उनके सामने स्वीकार करना चाहिए। दुश्मनों की दुश्मनी और उत्पीड़न को बड़बड़ाने या शिकायत करने का मौका बनाने के बजाय, दाऊद ने उन्हें खुद को परखने और परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार करने का मौका माना; वह हमें सिखाते हैं कि परमेश्वर के पास जाएँ—दुनिया के लिए बहरे और गूंगे बनकर—और अपने दिल की बात कहें, जिसमें अपने पापों को स्वीकार करना भी शामिल है।

(3) हमें भलाई के रास्ते पर चलना चाहिए।

आज के वचन, भजन संहिता 38:20 को देखें: "जो लोग भलाई के बदले बुराई करते हैं, वे मेरे विरोधी हैं क्योंकि मैं भलाई के रास्ते पर चलता हूँ।" दुश्मनों के उत्पीड़न के बीच भी, दाऊद ने परमेश्वर से विनती करते हुए और अपने पापों को स्वीकार करते हुए भलाई का जीवन जीना नहीं छोड़ा। उन्होंने अपने दुश्मनों के साथ भी दया का व्यवहार किया, फिर भी उन्होंने उनकी भलाई का बदला बुराई से दिया; संक्षेप में, वे उनके विरोधी बन गए। उनका विश्वास सचमुच अद्भुत है—एक ऐसा जीवन जो दुश्मनों के विरोध के बावजूद भलाई के रास्ते पर चलता है। एक दिलचस्प बात यह है कि हम जितना ज़्यादा अच्छा काम करते हैं, शैतान का विरोध उतना ही ज़्यादा

और तीव्र हो जाता है। हम आयत 19 में दाऊद के दुश्मनों के कामों को देख सकते हैं, जो उस स्थिति का वर्णन करती है जब उन्होंने उनके उत्पीड़न के बावजूद अच्छा काम करना जारी रखा: "मेरे दुश्मन ताकतवर और मज़बूत हैं, और बिना किसी कारण के मुझसे नफ़रत करने वाले बहुत से लोग हैं।" अगर हम अपने दुश्मनों के साथ जितना ज़्यादा अच्छा करते हैं, वे हमसे उतनी ही ज़्यादा नफ़रत करते हैं और हमें सताते हैं, तो क्या हम फिर भी भलाई के रास्ते पर चलना चुनेंगे? यह एक विश्वासी का जीवन है जो अपनी नज़रें पूरी तरह से प्रभु, हमारे उद्धारकर्ता पर टिकाकर आगे बढ़ता रहता है। अच्छाई की राह पर चलने का राज़—यानी दुश्मनों की बातों के लिए अपने कान और मुँह बंद रखना और सिर्फ़ प्रभु की आवाज़ सुनने, अपनी प्रार्थनाएँ करने और अपने पापों को स्वीकार करने के लिए उन्हें खोलना—सिर्फ़ प्रभु पर, जो हमारा उद्धारकर्ता है, भरोसा करने और उसी की ओर देखने में है। इसलिए, विरोधियों के बीच अच्छाई की राह पर चलते हुए, दाऊद ने परमेश्वर से विनती की: "हे प्रभु, मुझे छोड़ न दे; हे मेरे परमेश्वर, मुझसे दूर न हो! हे प्रभु, मेरे उद्धारकर्ता, मेरी मदद के लिए जल्दी आ!" (पद 21–22)।

हमें सबसे ज़्यादा तकलीफ़ तब होती है जब हमें लगता है कि परमेश्वर हमसे दूर हैं या उन्होंने हमें छोड़ दिया है। ऐसे पलों में, हमें चुपचाप यीशु की ओर देखना चाहिए, जिन्हें परमेश्वर पिता ने छोड़ दिया था और जिन्हें सलीब पर चढ़ाया गया और जिनकी मृत्यु हुई। क्योंकि यीशु को छोड़ दिया गया था, इसलिए हमें माफ़ी मिली है। इसलिए, परमेश्वर की अनुशासनात्मक पीड़ा के ज़रिए, हमें अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए और पश्चाताप करना चाहिए। मेरी प्रार्थना है कि आप और मैं परमेश्वर की अनुशासनात्मक पीड़ा के ज़रिए पूरी तरह से ठीक होने और आशीष पाने का अनुभव कर सकें।

"मुझे अपनी कमज़ोरी का एहसास कराओ"

[भजन संहिता 39]

एक साथी पादरी ने मेरे साइवर्ल्ड (Cyworld) होमपेज की गेस्टबुक में "मिस्टर जेम्स किम" के लिए शोक संदेश लिखा। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मेरा नाम भी जेम्स किम है, और जो व्यक्ति गुज़र गया था, उसका नाम भी जेम्स किम ही था। जब मैंने उस पादरी द्वारा शेयर की गई हेडलाइन पढ़ी—"भारी बर्फ़बारी के बीच मिस्टर जेम्स किम मृत पाए गए"—तो मुझे बहुत दुख हुआ। जेम्स किम एक कोरियाई व्यक्ति थे जो अपने परिवार के साथ यात्रा करते समय गलत रास्ते पर चले गए और भारी बर्फ़बारी में फंसकर लापता हो गए थे; घटना के बारह दिन बाद वे मृत पाए गए। उनकी मौत की खबर ने दुनिया भर के कई लोगों को दुखी कर दिया—वे एक पति और पिता थे जिन्होंने अपनी पत्नी और दो बच्चों (उम्र चार साल और सात महीने) को बचाने की हताश कोशिश में मदद के लिए परिवार को कार में ही छोड़ दिया था। यह खबर सुनकर, मैं अपनी खुद की मौत के बारे में सोचने लगा—या दूसरे शब्दों में, अपने अंत के बारे में विचार करने लगा। मैं यह सोचने लगा कि अगर मुझे सच में पता होता कि मेरा अंत कब होगा और मेरे पास कितना समय बचा है, तो मैं अपनी बाकी ज़िंदगी कैसे जीता।

आज के अंश, भजन संहिता 39:4 में, दाऊद को दुख की स्थिति में दिखाया गया है। हम इस लेख से उनके दुख के दो कारण पहचान सकते हैं: (1) पहला कारण "दुष्ट" या "मूर्ख" लोग थे (पद 1 और 8), और (2) दूसरा कारण बीमारी थी (पद 10, 11 और 13)। इस दुख के बीच, दाऊद ने परमेश्वर से विनती की और कहा, "हे प्रभु, मुझे मेरा अंत और मेरे दिनों की गिनती बता, ताकि मैं जान सकूँ कि मैं कितना कमज़ोर हूँ" (पद 4)। दूसरे शब्दों में, दाऊद अपने अंत की प्रकृति और अपनी ज़िंदगी के बचे हुए समय को समझकर अपनी कमज़ोरी को जानना चाहते थे। दुष्ट लोगों और अपनी बीमारी के कारण दुख सहते हुए, दाऊद ने प्रार्थना की

कि परमेश्वर उन्हें अपनी ज़िंदगी की क्षणभंगुरता (कम समय तक रहने की प्रकृति) को सच में समझने में मदद करें (पार्क युन-सन)। वे दर्द के बीच भी गहराई से यह महसूस करना चाहते थे कि ज़िंदगी कितनी तेज़ी से और क्षण भर में बीत जाती है। आज, भजन संहिता 39:4 और "मुझे मेरी कमज़ोरी का एहसास कराओ" विषय पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन विश्वासियों के लिए तीन बातें बताना चाहता हूँ जो दुख सह रहे हैं। जब हम जीवन की क्षणभंगुर प्रकृति—खासकर अपने दिनों की अल्पता—को समझते हैं, तो हमें हर दिन कैसे जीना चाहिए?

पहला, जब हम दुख सहते हैं और महसूस करते हैं कि जीवन तेज़ी से और क्षणभंगुर रूप से बीत रहा है—अपने जीवन की अल्पता को स्वीकार करते हुए—तो हमें अपने शब्दों और कार्यों के प्रति सावधान रहना चाहिए।

भजन संहिता 39:1 को देखें: "मैंने कहा, 'मैं अपनी चाल-चलन पर पहरा दूँगा, ताकि मैं अपनी जीभ से पाप न करूँ; जब दुष्ट मेरे सामने हों, तो मैं अपने मुँह पर लगाम लगाऊँगा।'" हम इंसान अक्सर बाद में पछताते हैं और सोचते हैं, "मैंने ऐसा क्यों किया? मैंने ऐसा क्यों कहा?" एक बार शब्द कहे जाने के बाद, उन्हें वापस नहीं लिया जा सकता; बाद में कितना भी पछतावा उन्हें बदल नहीं सकता। यही बात हमारे कार्यों पर भी लागू होती है। हम अक्सर बहुत जल्दबाजी में काम करते हैं, जिससे स्थितियाँ बिगड़ जाती हैं और बाद में पछतावा होता है। इसलिए, हमें बोलने या कोई काम करने से पहले रुकने और सोचने की कोशिश करनी चाहिए; दूसरे शब्दों में, हमें अपने शब्दों और कार्यों में समझदारी दिखानी चाहिए। इंटरनेट पर ब्राउज़ करते समय, मुझे "एक सुसमाचार प्रचारक का दृष्टिकोण" (The Attitude of an Evangelist) शीर्षक वाला एक लेख मिला, जिसमें कहा गया था: "एक सुसमाचार प्रचारक मिशन क्षेत्र में एक निजी व्यक्ति के रूप में नहीं जाता है, बल्कि चर्च का प्रतिनिधित्व करता है और प्रभु की ओर से कार्य करता है; इसलिए, उन्हें एक प्रतिनिधि के अनुरूप ज़िम्मेदारी की भावना के साथ अपना काम करना चाहिए। ... गैर-विश्वासियों से मिलते समय चर्च और प्रभु का प्रतिनिधित्व करने वाले एक राजदूत के रूप में, एक सुसमाचार प्रचारक को मिशन की भावना बनाए रखनी चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनका दृष्टिकोण और आचरण समझदारी भरा और प्रशंसा के योग्य हो।" जैसा कि यह लेख बताता है, हमें भी यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सुसमाचार प्रचारकों के रूप में हमारा दृष्टिकोण और कार्य समझदारी भरे और सराहनीय हों। तो फिर, दाऊद ने दुख के बीच अपने

शब्दों और कार्यों पर पहरा क्यों दिया? ऐसा इसलिए था क्योंकि वह असहनीय विपत्ति के दौरान परमेश्वर के प्रति नाराज़गी का पाप करने से बचना चाहता था (पार्क युन-सन)। भजन संहिता 38:12–22 पर मनन करने से हमें यह सीख मिलती है कि ऐसे समय भी आते हैं जब हमें बहरे और गूंगे लोगों की तरह रहने की ज़रूरत होती है (पद 13)। जब हम बुरे लोगों के हाथों दुख सहते हैं, तो हमें उनकी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए और न ही उनके सामने कोई सफाई या बचाव पेश करना चाहिए; इसके बजाय, हमें परमेश्वर की आवाज़ सुनने के लिए अपने कान और उनसे प्रार्थना करने के लिए अपना मुँह खोलना चाहिए। आज के हिस्से में, दाऊद भी बुरे लोगों के सामने चुप रहा। उसने उनके सामने चुप रहना क्यों चुना? ऐसा इसलिए था क्योंकि वह अपने होंठों से परमेश्वर के खिलाफ पाप करने से बचना चाहता था। दूसरे शब्दों में, वह दुख के समय में अपने होंठों से परमेश्वर के प्रति नाराज़गी या शिकायत का पाप करने से बचना चाहता था। यह कितना समझदारी भरा काम है। जब हम दुख के समय में अपने दिल में परमेश्वर के प्रति नाराज़गी या शिकायत रखते हैं, तो हमें कुछ समय के लिए चुप रहना चाहिए। इसी तरह, जब हमें कलीसिया—मसीह की देह—और उसके अगुवों के खिलाफ शिकायत या बड़बड़ाहट करने का मन करे, तो हमें भी चुप रहना चाहिए। नहीं तो, इस बात की बहुत संभावना है कि हमारे नासमझी भरे शब्द और काम हमें परमेश्वर के खिलाफ पाप करने की ओर ले जाएँगे। फिर भी, ऐसा लगता है कि इंसान का मुँह बस चुप नहीं रह सकता; अगर हम बात नहीं कर रहे होते हैं तो अक्सर हमें बोलने की इच्छा होती है, और जब तक हम अपने विचार ज़ाहिर नहीं करते, हमें असंतोष महसूस होता है। इसीलिए याकूब ने जीभ के बारे में याकूब 3:8–10 में इस तरह कहा: "कोई भी इंसान जीभ को काबू में नहीं कर सकता। यह एक बेचैन बुराई है, जो जानलेवा ज़हर से भरी है। जीभ से हम अपने प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं, और उसी से हम उन इंसानों को कोसते हैं, जिन्हें परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है। एक ही मुँह से स्तुति और कोसना दोनों निकलते हैं। मेरे भाइयों और बहनों, ऐसा नहीं होना चाहिए।" इस प्रकार, भजन संहिता 39:1 के दूसरे भाग में—जो आज हमारे सामने है—दाऊद कहता है, "मैं अपने मुँह पर लगाम लगाऊँगा।" उसके चुप रहने का कारण—यहाँ तक कि परमेश्वर की ताड़ना सहते हुए (पद 8–9) और बुरे लोगों की बुराई सुनते हुए भी—यह था कि वह समझता था कि भले ही बुरे लोग उसका मज़ाक उड़ा रहे थे, लेकिन कुछ हद तक वह इसका हकदार था (पार्क युन-सन)। हालाँकि दाऊद बुरे लोगों की वजह से दुख सह रहा था, लेकिन उसका ज़्यादा दुख उस बीमारी से था जिसे उसने अपने पाप के लिए परमेश्वर की ताड़ना के रूप में सहा था (पार्क युन-सन)। इसलिए, यह जानते हुए कि उसका दुख उसके पाप के लिए परमेश्वर की ओर से एक अनुशासन था, दाऊद परमेश्वर के सामने चुप रहा

ताकि वह उनके खिलाफ शिकायत करने का पाप न करे। तो फिर, हमें कैसे जीना चाहिए? हमें अपनी कमज़ोरी को पहचानना चाहिए और दर्द के समय अपने शब्दों और कामों पर ध्यान देना चाहिए। हमें जल्दबाज़ी में कोई काम नहीं करना चाहिए या लापरवाही से बात नहीं करनी चाहिए, जिससे परमेश्वर और दूसरों के खिलाफ बड़बड़ाने का पाप हो। हमें ज़्यादा समझदारी से काम लेने की ज़रूरत है। इसलिए, समय के तेज़ी से बीतने के बीच, हमें परमेश्वर के सामने सही ढंग से जीना चाहिए।

दूसरी बात, हमें इस बात पर गहराई से सोचना चाहिए कि जीवन कितनी तेज़ी से बीतता है—कि हममें से हर एक का जीवनकाल छोटा है।

भजन संहिता 39:3 पर विचार करें: "मेरे मन में आग सी लग गई, और जब मैंने मनन किया, तो वह आग भड़क उठी; तब मैंने अपनी ज़बान से बात की।" अगर हम सच में समझें कि समय कितनी तेज़ी से बीतता है, तो हमें अपनी व्यस्त ज़िंदगी के बीच रुककर सोचने-विचारने के लिए समय निकालना चाहिए। सिर्फ़ इसलिए कि समय तेज़ी से बीतता है, हमें ज़िंदगी में जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए। भले ही दूसरे हमें धीमा समझें, हमें रुककर जीवन के अर्थ पर विचार करने की ज़रूरत है। इस हफ़्ते, मैंने मध्य एशिया में हमारे चर्च द्वारा समर्थित एक मिशनरी का पत्र पढ़ा, और उसमें यह प्रार्थना की गुज़ारिश थी: "कृपया प्रार्थना करें कि मैं अपनी रफ़्तार धीमी कर सकूँ और अपनी पत्नी, अपने बच्चों और उन लोगों से प्यार कर सकूँ जिन्हें परमेश्वर मेरे रास्ते में लाता है।" यह गुज़ारिश जॉन ऑर्टबर्ग की एक किताब के एक हिस्से से प्रेरित थी जिसे वह मिशनरी पढ़ रहा था: "जल्दबाज़ी की बीमारी का सबसे गंभीर लक्षण प्यार करने की क्षमता का कम होना है..." प्यार और जल्दबाज़ी मूल रूप से एक-दूसरे के विपरीत हैं। प्यार में हमेशा समय लगता है, जबकि जो लोग जल्दबाज़ी करते हैं, उनके लिए समय का कोई वास्तविक महत्व नहीं होता। हमें इस दुनिया की तेज़ रफ़्तार के बीच धीमा होने की ज़रूरत है; हमें जल्दबाज़ी करने के बजाय धीरे-धीरे चलना चाहिए। जैसे समय नदी की तरह तेज़ी से बहता है, हमें रुकना चाहिए—जल्दबाज़ी से बचते हुए—ताकि हम परमेश्वर के सामने अपने जीवन पर विचार कर सकें और चिंतन में समय बिता सकें।

अपनी तकलीफ़ों के बीच, डेविड ने परमेश्वर के सामने जीवन के स्वभाव पर विचार करते हुए अपने शब्दों और कामों पर बहुत सावधानी बरती। इस चिंतन के ज़रिए, वह आज के हिस्से में चार नतीजे बताते हैं:

(1) पहला नतीजा यह है कि जीवन छोटा है।

डेविड आयत 5 के पहले हिस्से में इस बात को कविता के अंदाज़ में कहते हैं: "तूने मेरे दिनों को बस एक हाथ की चौड़ाई जितना बनाया है; तेरे सामने मेरे सालों की लंबाई कुछ भी नहीं है..." इंसानी नज़रिए से जीवन को "एक हाथ की चौड़ाई" और परमेश्वर के नज़रिए से "कुछ नहीं" बताना, इंसानी ज़िंदगी के छोटेपन को दिखाने का एक काव्यात्मक तरीका है (पार्क युन-सन)।

(2) दूसरा नतीजा यह है कि जीवन क्षणभंगुर है—यानी कुछ भी नहीं।

हमारी ज़िंदगी छोटी है; हम आते हैं और जल्दी ही चले जाते हैं। भजन संहिता 39:5 का दूसरा हिस्सा देखिए: "...सचमुच सारे इंसान बस एक सांस के समान हैं।" यहाँ "सांस" (या "व्यर्थता/बेकार") के तौर पर अनुवादित हिब्रू शब्द का असल मतलब है "हवा का झोंका" या "भाप" (पार्क युन-सन)। आयत 11 में, डेविड फिर से मानते हैं, "सचमुच सारे इंसान बस एक सांस हैं।" प्रेरित याकूब भी याकूब 4:14 में इसी नतीजे पर पहुँचते हैं: "तुम यह भी नहीं जानते कि कल क्या होगा। तुम्हारा जीवन क्या है? तुम एक ऐसी धुंध हो जो थोड़ी देर के लिए दिखाई देती है और फिर गायब हो जाती है।" डेविड हमारी ज़िंदगी को परछाई की तरह इधर-उधर घूमने वाला बताते हैं (भजन संहिता 39:6)।

(3) तीसरा नतीजा यह है कि लोग बेकार के कामों में खुद को व्यस्त रखते हैं।

भजन संहिता 39:6 का दूसरा हिस्सा देखिए: "...वे बेकार की भाग-दौड़ करते हैं, धन इकट्ठा करते हैं, यह जाने बिना कि उसे कौन बटोरेगा।" याकूब की किताब में, हमें पत्र पाने वालों में ऐसे लोग मिलते हैं जो बिल्कुल ऐसा ही सोचते थे: "...आज या कल हम फलां शहर जाएँगे, वहाँ एक साल बिताएँगे, खरीद-बिक्री करेंगे और मुनाफ़ा कमाएँगे..." (याकूब 4:13)।

(4) आखिर में, चौथा बिंदु यह है कि डेविड के चिंतन का नतीजा यह है: "मेरी उम्मीद तुझ पर है।" आज के वचन, भजन संहिता 39:7 को देखिए: "और अब, हे प्रभु, मैं किसकी प्रतीक्षा करूँ? मेरी आशा तुझमें है।" हम

दाऊद को देखते हैं, जो अपने दुख के बीच चुपचाप मनन करता है, जीवन की व्यर्थता को गहराई से महसूस करता है और विलाप करता है, लेकिन अंत में अपनी आशा परमेश्वर पर रखता है। दाऊद की तरह, हमें भी अपने मनन के द्वारा इस संसार की पूरी व्यर्थता को गहराई से समझने की आवश्यकता है। इसके अलावा, जब हम देखते हैं कि कैसे हम—जिनका जीवन छोटा और क्षणभंगुर है—व्यर्थ चीजों के पीछे भागते हैं, तो हमें अपने अस्तित्व की व्यर्थता को गहराई से समझना चाहिए। तभी हम ईमानदारी से स्वीकार कर पाएंगे, जैसा दाऊद ने किया, "मेरी आशा तुझमें है।"

अंत में, अपने दुख के बीच, हमें इस बात को पूरी तरह से समझते हुए प्रार्थना करनी चाहिए कि जीवन तेजी से और क्षणभंगुर रूप से बीत जाता है—यानी, हममें से प्रत्येक के जीवन की अवधि छोटी है।

भजन संहिता 39:12 को देखिए: "हे प्रभु, मेरी प्रार्थना सुन और मेरी पुकार पर ध्यान दे; मेरे आँसुओं पर चुप न रह; क्योंकि मैं तेरे साथ एक परदेशी हूँ, एक यात्री, अपने सभी पूर्वजों की तरह।" यह जानते हुए कि उसका दुख उसके अपने पाप से उत्पन्न हुआ था, दाऊद ने विनम्रतापूर्वक उस दुख को स्वीकार किया—चाहे वह दुष्टों के कारण हुआ हो या बीमारी के कारण। इसीलिए वह अपने शब्दों और कार्यों के प्रति सावधान था, क्योंकि वह परमेश्वर के विरुद्ध और भी बड़ा पाप करने से बचना चाहता था। दाऊद की तरह, जब हम दुख के बीच हों तो हमें परमेश्वर के विरुद्ध अपने पापों को पहचानने में सक्षम होना चाहिए। अन्यथा, जब हम इस बात पर विचार करते हैं कि हम इतना दर्द क्यों सह रहे हैं, तो हम अंततः परमेश्वर के विरुद्ध शिकायत कर सकते हैं और उनके प्रति नाराजगी पाल सकते हैं। यही कारण है कि दाऊद ने "अपने मुँह पर लगाम लगाने" का संकल्प लिया (पद 1)। फिर भी, जब दाऊद चुप रहा और कुछ नहीं बोला, तो उसका दुख और बढ़ गया (पद 2)। दाऊद का दुख क्यों बढ़ गया? चुप रहने पर वह और अधिक व्यथित क्यों हो गया? कारण यह है कि वह परमेश्वर के सामने अपनी दुखद शिकायत—अपनी "व्यथा"—को व्यक्त करना चाहता था (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, वह इसलिए पीड़ित था क्योंकि परमेश्वर से प्रार्थना में अपना मुँह न खोलने से उसका दुख और भी असहनीय हो गया था। व्यक्तिगत रूप से, मेरा मानना है कि भले ही उनका दिल इसलिए जल रहा था क्योंकि वे अपनी शिकायतों के बारे में भगवान से बात नहीं कर पा रहे थे, लेकिन इस अंदरूनी बेचैनी का एक और कारण शायद यह था कि वे अपने पापों को भगवान के सामने स्वीकार नहीं कर पाए थे। भजन संहिता 39:8–9 के शब्दों पर गौर करें: "मुझे मेरे सभी अपराधों से बचाओ; मुझे मूर्खों के लिए हंसी का पात्र

न बनाओ। मैं चुप रहा; मैंने अपना मुँह नहीं खोला, क्योंकि यह सब तुमने ही किया है।" यहाँ, दाऊद ने माना कि उनके दुख का कारण पूरी तरह से उनका अपना पाप था, और उन्हें यकीन था कि भगवान से माफ़ी पाना ही इस स्थिति को सुलझाने का एकमात्र तरीका था (पार्क युन-सन)। इसलिए, वे भगवान से अपने पापों की माफ़ी मांगते हैं: "मुझसे अपनी नज़र हटा लो, ताकि इससे पहले कि मैं चला जाऊँ और मेरा अस्तित्व न रहे, मैं फिर से मुस्कुरा सकूँ" (पद 13)। अपने पापों की माफ़ी के लिए प्रार्थना करने के बाद, दाऊद—जो अब भगवान के सामने चुप नहीं रहते—प्रभु से विनती करते हैं कि जब वे रोएँ तो प्रभु चुप न रहें: "हे प्रभु, मेरी प्रार्थना सुन, मेरी मदद की पुकार पर ध्यान दे; मेरे रोने को अनसुना न कर। क्योंकि मैं तेरे साथ एक परदेसी और अजनबी की तरह रहता हूँ, जैसा कि मेरे सभी पूर्वज रहते थे" (पद 12)।

समय बहते पानी की तरह तेज़ी से और लगातार बीतता रहता है। हमारी ज़िंदगी बहुत लंबी नहीं होती; असल में, बाइबिल हमें बताती है कि हमारी ज़िंदगी छोटी है। इस दुनिया में, जहाँ हम थोड़े समय के लिए आते हैं और फिर चले जाते हैं, हमें बेकार के कामों में खुद को नहीं उलझाना चाहिए। इसके बजाय, हमें अपनी उम्मीद सिर्फ़ प्रभु पर रखनी चाहिए और उनके वचन का पालन करते हुए जीवन जीना चाहिए। आज के इस अंश के ज़रिए, भगवान हमें सिखाते हैं कि जब हम दुख में हों, तो हमें अपने शब्दों और कामों पर ध्यान देना चाहिए, मनन करना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए। अपनी कमज़ोरी को मानते और स्वीकार करते हुए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप और मैं सोच-समझकर बोलने, मनन करने और प्रार्थना करने वाला जीवन जिएं, जब तक कि प्रभु हमें अपने पास न बुला लें: "मुझे मेरी कमज़ोरी का एहसास करा" (पद 4)।

हमारे प्रति प्रभु के अनगिनत विचार

[भजन संहिता 40:1–10]

आज सुबह की प्रार्थना सभा में परमेश्वर के वचन का प्रचार करते समय, परमेश्वर ने मेरे पाप को उजागर किया। वह पाप था—वचन सुनने के बावजूद उसका पालन न करना—खासकर भजन संहिता 39:1 में दी गई हिदायत "अपनी चाल-चलन पर पहरा रखना" (यानी अपने शब्दों और कामों पर ध्यान देना), जिसे मैंने पिछले हफ़्ते बुधवार की प्रार्थना सभा में सुनाया था। उस संदेश को देने के बाद से बीते हफ़्ते पर नज़र डालने पर, मुझे वे पल याद आते हैं जब मैं अपनी बोली पर काबू नहीं रख पाया और शब्द निकल जाने के बाद ही पछतावा हुआ। जैसे ये विचार: "मुझे उस समय ऐसा नहीं कहना चाहिए था..." "मैंने ऐसा क्यों कहा जिससे दूसरे व्यक्ति को कोई मदद नहीं मिली?" या "मुझे बस चुपचाप सुनना चाहिए था..."—ये पछतावे तब हुए जब मुझे एहसास हुआ कि मैं अपनी ज़बान पर लगाम लगाने में नाकाम रहा। अगर मैं "अपनी चाल-चलन पर पहरा रखने" की बाइबिल की हिदायत पर लगातार मनन करता रहता, तो मैं अपनी बोली में संयम बरतता—बातचीत से पहले और उसके दौरान भी—और दूसरों के बारे में बुरा-भला कहने से बचता। इसलिए, आज मैं अपने विश्वास के जीवन में और भी ज़्यादा कोशिश करने का संकल्प लेता हूँ कि परमेश्वर के वचन को हमेशा अपने विचारों में रखूँ।

ऐसा जीवन जो परमेश्वर के वचन पर मनन करता है—और उससे भी बढ़कर, ऐसा जीवन जो परमेश्वर को ध्यान में रखकर जिया जाता है—हमें ऐसे विश्वासी के रूप में स्थापित करने में मदद करता है जो उनकी नज़रों में भाते हैं। फिर भी, उससे भी ज़्यादा ज़रूरी बात यह है कि परमेश्वर हमारे बारे में कितना सोचते हैं। दूसरे शब्दों में, यह बात कम मायने रखती है कि हम परमेश्वर के बारे में कितना सोचते हैं, बल्कि यह ज़्यादा मायने रखता है कि परमेश्वर हमारे बारे में कितना सोचते हैं।

आज के वचन, भजन संहिता 40:5 पर गौर करें: "हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तूने बहुत से आश्चर्यकर्म किए हैं और हमारे प्रति तेरे विचार बहुत हैं; कोई भी तेरी बराबरी नहीं कर सकता! यदि मैं उनका वर्णन करूँ और उनके बारे में बताऊँ, तो वे इतने अधिक हैं कि गिने नहीं जा सकते।" परमेश्वर का प्रेम कितना महान है! यह सच्चाई कि हमारे प्रति परमेश्वर के विचार अनगिनत हैं, भजन संहिता 139:17–18 के शब्दों की याद दिलाती है: "हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे लिए कितने अनमोल हैं! उनकी गिनती कितनी बड़ी है! यदि मैं उन्हें गिनूँ, तो वे रेत के कणों से भी ज़्यादा होंगे—जब मैं जागता हूँ, तो भी मैं तेरे साथ होता हूँ।" हमारा परमेश्वर हमसे बहुत प्रेम करता है। यह बात कि हमारे बारे में प्रभु के विचार अनगिनत हैं, उनके उस प्रेम को दिखाती है जिसे मापा नहीं जा सकता। आज, भजन संहिता 40:5 पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं चाहता हूँ कि हम प्रभु के उन चार पहलुओं पर मनन करके परमेश्वर के इस प्रेम का अनुभव करें, जो हमारे बारे में इतने सारे विचार रखते हैं।

पहला, जो प्रभु हमारे बारे में अनगिनत विचार रखते हैं, वही हमारी पुकार सुनते हैं।

भजन संहिता 40:1 को देखिए: "मैंने धीरज से प्रभु की प्रतीक्षा की; उन्होंने मेरी ओर ध्यान दिया और मेरी पुकार सुनी।" मैं इसे "नवजात" अवस्था—यानी किसी बच्चे के रोने-बिलखने की अवस्था—के रूप में देखता हूँ। जैसे कोई नवजात शिशु भूख लगने पर अपनी माँ के लिए ज़ोर-ज़ोर से रोता है, वैसे ही जब हम मुश्किलों का सामना करते हैं और हमें परमेश्वर की मदद की ज़रूरत होती है, तो हम भी पूरी लगन से प्रभु को खोजते हैं। फिर भी, उस नवजात शिशु के विपरीत जो लगातार रोता रहता है, हम अक्सर पुकारना बंद कर देते हैं। हम जवाब मिलने से पहले ही प्रार्थना करना छोड़ देते हैं क्योंकि हम इस सोच के प्रलोभन में पड़ जाते हैं कि क्या परमेश्वर सच में है भी या नहीं। हम कितनी बार परमेश्वर की उपस्थिति पर शक करने के प्रलोभन का शिकार हो जाते हैं? जब ऐसा लगता है कि परमेश्वर से की गई हमारी ज़ोरदार पुकार का कोई जवाब नहीं मिल रहा है, तो हम अक्सर इतनी निराशा और हताशा महसूस करते हैं कि न केवल लोगों और अपनी परिस्थितियों से नाराज़ हो जाते हैं, बल्कि खुद परमेश्वर के प्रति भी नाराज़गी पाल लेते हैं। नतीजतन, हम परमेश्वर पर भरोसा करना छोड़ देते हैं और सही रास्ते से भटक जाते हैं। फिर भी, जो प्रार्थना करता है, वह आखिर तक परमेश्वर पर भरोसा बनाए रखता है। ऐसा व्यक्ति धन्य है: "धन्य है वह मनुष्य जो प्रभु पर भरोसा रखता है, जो अहंकारी लोगों या झूठ की ओर मुड़ने वालों की ओर नहीं देखता" (पद 4)। जब प्रार्थना का जवाब मिलने में देरी होती है, तो अक्सर हम परमेश्वर पर अपना भरोसा छोड़ने के प्रलोभन में पड़ जाते हैं।

इसलिए, हमें उनसे प्रार्थना करते रहने में दृढ़ रहना चाहिए (पार्क युन-सन)। दाऊद की तरह, हमें अपनी परीक्षाओं से छुटकारा पाने के लिए दृढ़ता के साथ प्रार्थना करनी चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हमारी प्रार्थनाएँ सुनेंगे, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने दाऊद की पुकार सुनी थी।

हमें लगातार प्रार्थना करने की ज़रूरत है, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया था। हमें हार नहीं माननी चाहिए। यीशु हमें यह सबक लूका 18:1–8 में दी गई प्रार्थना की दृष्टांत-कथा के ज़रिए सिखाते हैं। उन्होंने यह दृष्टांत-कथा यह दिखाने के लिए सुनाई थी कि "उन्हें हमेशा प्रार्थना करनी चाहिए और हार नहीं माननी चाहिए" (पद 1)। यह कहानी एक शहर के ऐसे जज के बारे में है जो न तो भगवान से डरता था और न ही लोगों की परवाह करता था; उसी शहर की एक विधवा अपनी शिकायत के लिए न्याय की मांग करते हुए उसे लगातार परेशान करती रही—इतना कि वह सिरदर्द बन गई। आखिरकार, उसके पास उसकी बात मानने और उसकी समस्या का समाधान करने के अलावा कोई चारा नहीं बचा। उस समय, प्रभु ने कहा: "और क्या भगवान अपने चुने हुए लोगों को न्याय नहीं दिलाएंगे, जो दिन-रात उनसे गुहार लगाते हैं? क्या वह उन्हें टालते रहेंगे? मैं तुमसे कहता हूँ, वह पक्का करेंगे कि उन्हें न्याय मिले, और जल्दी ही..." (पद 7–8)। हमारे भगवान धैर्यवान हैं, फिर भी वह ऐसे भगवान भी हैं जो इंतज़ार नहीं कर सकते। कहने का मतलब है, वह धैर्य रखते हैं क्योंकि वह हमारे पापों को मानने, पछतावा करने और उनकी ओर लौटने का इंतज़ार करते हैं। प्रेरित पौलुस इसका एक उदाहरण हैं। 1 तीमुथियुस 1:16 देखें: "लेकिन ठीक इसी वजह से मुझ पर दया की गई ताकि मुझमें—जो सबसे बड़ा पापी था—मसीह यीशु अपना अपार धैर्य दिखा सकें, उन लोगों के लिए एक उदाहरण के तौर पर जो उन पर विश्वास करेंगे और अनंत जीवन पाएंगे।" फिर भी, भगवान का एक और पहलू है; वह, जो हमारे बारे में अनगिनत विचार रखते हैं, हमसे इतना गहरा प्रेम करते हैं कि जब हम मुश्किलों के बीच सच्चे दिल से उन्हें खोजते हैं, तो वह हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देने के लिए इंतज़ार नहीं कर पाते। ठीक वैसे ही जैसे एक माँ—जो लगातार अपने प्यारे बच्चे के बारे में सोचती है और सोचती है कि अपने प्यार को सबसे अच्छे तरीके से कैसे ज़ाहिर करे—निश्चित रूप से बड़ी मुसीबत के समय मदद के लिए अपने बच्चे की बेताब गुहार को पूरा करने में जल्दबाजी करेगी, वैसे ही भगवान भी काम करते हैं। हमारे भगवान, जो हमारे बारे में अनगिनत बार सोचते हैं, ऐसे भगवान हैं जो हमारी पुकार सुनते हैं और हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देने के लिए इंतज़ार नहीं कर पाते।

दूसरी बात, प्रभु, जो हमारे बारे में अनगिनत विचार रखते हैं, वही हमारे कदमों को सही दिशा देते हैं। भजन संहिता 40:2 देखें: "उन्होंने मुझे निराशा के गड्ढे से, कीचड़ और दलदल से बाहर निकाला; उन्होंने मेरे पैरों को एक चट्टान पर टिकाया और मुझे खड़े होने के लिए एक मज़बूत जगह दी।" मैं इसे चलना सीखने के चरण के रूप में देखता हूँ—जो एक से तीन साल की उम्र के बच्चे के विकास जैसा है। आज सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, मैंने भजन संहिता 37:31 पर मनन किया: "उनके परमेश्वर की व्यवस्था उनके हृदय में है; उनके पैर नहीं डगमगाते।" इस वचन पर मनन करते हुए, मैंने उन तीन बातों पर विचार किया जिनके कारण हम अपने जीवन-मार्ग पर लड़खड़ा जाते हैं: ईर्ष्या, शिकायत और क्रोध। इनसे उबरने का तरीका यह है कि हम परमेश्वर की व्यवस्था—यानी उनके वचन—को अपने हृदय में बसाकर रखें। हम परमेश्वर के वचन को अपने हृदय की पट्टियों पर जितनी गहराई से अंकित करेंगे, हमारे जीवन-मार्ग पर लड़खड़ाने की संभावना उतनी ही कम होगी।

आज के पाठ, भजन संहिता 40 में, दाऊद उस अनुभव का वर्णन करते हैं जब परमेश्वर ने उनकी पुकार सुनी और उन्हें निराशा के गड्ढे और कीचड़ से बाहर निकाला (वचन 2)। दूसरे शब्दों में, दाऊद उद्धार की कृपा का अनुभव करने के बारे में बताते हैं। फिर भी, परमेश्वर की उद्धार करने वाली कृपा वहीं समाप्त नहीं हुई; परमेश्वर ने न केवल दाऊद को बचाया बल्कि उनके कदमों को भी सुरक्षित किया—उन्होंने दाऊद को एक चट्टान पर खड़ा किया (वचन 2)।

व्यक्तिगत रूप से, जब मैं "चट्टान" शब्द के बारे में सोचता हूँ, तो बाइबल का एक वचन जो मेरे मन में आता है, वह है भजन संहिता 61:2: "जब मेरा हृदय व्याकुल होता है, तो मैं पृथ्वी के छोर से आपकी दुहाई देता हूँ; मुझे उस चट्टान तक ले चलिए जो मुझसे ऊँची है।" "वह चट्टान जो मुझसे ऊँची है"... ऐसे समय आते हैं जब मैं अपनी असमर्थता को स्वीकार करते हुए प्रार्थना करता हूँ—ठीक दाऊद की तरह, जिन्होंने परमेश्वर से विनती की थी कि वे उन्हें ऐसी "चट्टान" तक ले जाएँ जिस पर केवल मानवीय शक्ति से चढ़ना असंभव था—और इसके बजाय मैं परमेश्वर की शक्ति और सर्वशक्तिमत्ता पर भरोसा करता हूँ। उन क्षणों में, मैं अनुभव करता हूँ कि वे मेरे हृदय को मज़बूत कर रहे हैं—एक ऐसा हृदय जो अन्यथा "अत्यधिक संकट से उत्पन्न निराशा और थकान" (पार्क युन-सन) के बोझ तले दबा होता—और मेरे कदमों को दृढ़ कर रहे हैं। आइए

हम इस बात को याद रखें: परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं, और हमारे प्रति उनके विचार अनगिनत हैं। आइए हम कभी न भूलें कि वे ही प्रभु हैं जो हमें अपने से ऊँची चट्टान तक ले जाते हैं और हमारे कदमों को दृढ़ता से स्थापित करते हैं।

तीसरी बात, प्रभु, जिनके मन में हमारे लिए अनगिनत विचार हैं, वही हमारे मुँह में एक नया गीत डालते हैं।

आज के वचन, भजन संहिता 40:3 को देखिए: "उन्होंने मेरे मुँह में एक नया गीत डाला, हमारे परमेश्वर की स्तुति का गीत। बहुत से लोग इसे देखेंगे और डरेंगे और प्रभु पर भरोसा करेंगे।" मैं इसे विकास का एक चरण मानता हूँ; परमेश्वर की स्तुति और आराधना करना आध्यात्मिक विकास का एक चरण है। आज के अंश में भजनकार दाऊद ने परमेश्वर की बचाने वाली कृपा के कारण उनकी स्तुति का एक "नया गीत" गाया। परमेश्वर ने दाऊद की प्रार्थनाओं का उत्तर दिया—जिन्होंने मुश्किलों के बीच पुकार लगाई थी और धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की थी (पद 1)—उन्हें "भयानक गड्ढे और दलदल" से निकालकर, उनके पैरों को चट्टान पर टिकाकर और उनके कदमों को स्थिर करके (पद 2)। इस प्रकार, दाऊद स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर ने उनके मुँह में एक नया गीत—स्तुति का गीत—डाला (पद 3)। यह "नया गीत" उद्धार पाए हुए लोगों द्वारा गाया जाता है, जो उद्धार के नए अनुभव से उत्पन्न होता है (पार्क युन-सन)। परमेश्वर के उद्धार के इस "नए अनुभव" के कारण, हम भी उन्हें स्तुति का नया गीत भेंट कर सकते हैं। यह हमारे अपने जीवन पर कितनी सशक्त रूप से लागू होता है! जब भी हम कठिनाइयों का सामना करते हैं, तो हमें परमेश्वर की बचाने वाली कृपा के लिए व्याकुल होकर पुकारना चाहिए; फिर, हर पल हमें जो उद्धार मिलता है, उसके माध्यम से हमें प्रभु परमेश्वर की स्तुति करने के लिए अपने हृदय और होंठ खोलने चाहिए। हमें विश्वास के साथ परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए, भले ही वह हमें उस तरह से न बचाएँ जैसा हम उम्मीद करते हैं—भले ही "वह ऐसा न करें" (दानिय्येल 3:18)। दूसरे शब्दों में, भले ही परमेश्वर हमें न बचाएँ, फिर भी हमें विश्वास के साथ उनकी स्तुति करनी चाहिए। कारण यह है कि परमेश्वर स्तुति के योग्य हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो जैसे पौलुस और सीलास जेल से छुड़ाए गए थे (प्रेरितों के काम 16:25 आदि), वैसे ही हम भी छुड़ाए जाएँगे।
हाल ही में, परमेश्वर ने खुद मेरे होठों पर भजन संख्या 404 रखा है: "परमेश्वर का प्रेम इतना महान है कि न तो ज़बान और न ही कलम उसे कभी बयां कर सकती है... अगर हम स्याही से समुद्र को भर दें, और आसमान चर्मपत्र का बना हो... तो भी परमेश्वर का प्रेम—इतना महान, इतना समृद्ध, इतना पवित्र—उसे कैसे लिखा जा

सकता है? भले ही उसे स्वर्ग जितना ऊंचा ढेर कर दिया जाए, फिर भी वह उसमें समा नहीं सकता। (कोरस) परमेश्वर का प्रेम असीम है; हे संतों, उस प्रेम की स्तुति करो जो कभी नहीं बदलता।" जब मैं परमेश्वर के इस असीम और कभी न बदलने वाले प्रेम की स्तुति करता हूँ, तो मुझे अपने प्रति उनके प्रेम का अनुभव होता है। और उनके प्रेम का अनुभव करके, मैं आगे बढ़ रहा हूँ।

चौथी और आखिरी बात, प्रभु—जो हमारे बारे में अनगिनत विचार रखते हैं—वही हमारे कान खोलते हैं।

भजन संहिता 40:6 को देखें: "आपने मुझे सुनाया है—आपने मेरे कान खोले हैं—उस सच्चाई के प्रति कि आप बलिदानों और चढ़ावों से प्रसन्न नहीं होते, और न ही आपको होम-बलिदान और पाप-बलिदान की आवश्यकता है।" परमेश्वर न केवल उनकी स्तुति में नया गीत गाने के लिए हमारे मुँह खोलते हैं, बल्कि वे हमारे कान भी खोलते हैं। उन्होंने अपनी इच्छा प्रकट करने के लिए दाऊद के कान खोले। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने दाऊद पर अनुग्रह किया और उसकी आध्यात्मिक समझ को खोला—मानो उसके कान छेद दिए हों—ताकि वह समझ सके कि परमेश्वर को क्या भाता है (कैल्विन)। वह इच्छा जिसमें परमेश्वर प्रसन्न होते हैं, वह है आज्ञाकारिता। इसे और विस्तार से समझने के लिए, इस कहावत का सहारा लिया जा सकता है: "बलिदान से बेहतर आज्ञा मानना है" (1 शमूएल 15:22)। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा स्थापित बलिदानों की पूरी व्यवस्था इसलिए नहीं बनाई गई थी कि उन्हें स्वयं उन चढ़ावों या होम-बलिदानों की इच्छा थी; बल्कि, मुख्य बात उस व्यक्ति की आज्ञाकारिता थी जो उन्हें अर्पित कर रहा था।" इस सच्चाई को समझने के बाद दाऊद ने कैसा व्यवहार किया? "तब मैंने कहा, 'मैं यहाँ हूँ, मैं आ गया हूँ—मेरे बारे में पुस्तक के स्क्रॉल में लिखा है'" (भजन संहिता 40:7)। दूसरे शब्दों में, जैसे कोई सेवक अपने स्वामी के सामने आज्ञा मानने के लिए तैयार खड़ा होता है, वैसे ही दाऊद परमेश्वर के सामने उनकी इच्छा पूरी करने के लिए तैयार खड़ा रहा। यह जानते हुए कि उस स्क्रॉल (धर्मग्रंथ) में परमेश्वर की इच्छा लिखी है, उसने परमेश्वर के नियम की बातों को मानने का पक्का इरादा किया (पार्क युन-सन)।

यह कितना सुंदर आध्यात्मिक नज़रिया है—परमेश्वर के सामने इंतज़ार करने और उनकी इच्छा को मानने के लिए तैयार रहने का नज़रिया। दाऊद के दिल की भावना पर ध्यान दें: "हे मेरे परमेश्वर, तेरी इच्छा पूरी

करने में मुझे खुशी मिलती है, और तेरा नियम मेरे दिल में बसा है" (पद 8)। जो व्यक्ति परमेश्वर के नियम को अपने दिल में रखता है, उसे प्रभु की इच्छा पूरी करने में ही खुशी मिलती है। दाऊद, जो परमेश्वर को प्रिय था, के पास ऐसी ही खुशी थी। मुश्किल और कठिन हालात में भी, उसकी एकमात्र इच्छा प्रभु की इच्छा को पूरा करने की थी। प्रभु हमारे बारे में अनगिनत विचार रखते हैं; जब कोई विश्वासी मुसीबत और मुश्किलों के बीच उन्हें पुकारता है और प्रार्थना का जवाब मिलने का इंतज़ार करते हुए उनके उद्धार की कृपा का अनुभव करता है, तो वह न केवल परमेश्वर की स्तुति करने के लिए अपने होंठ खोलता है, बल्कि उनके उद्धार की खुशी भरी खबर का भी ऐलान करता है: "मैंने बड़ी सभा में धार्मिकता की अच्छी खबर सुनाई है; हे प्रभु, तू जानता है कि मैं अपने होंठों को रोकता नहीं हूँ। मैंने तेरी धार्मिकता को अपने दिल में छिपाकर नहीं रखा है; मैंने तेरी सच्चाई और तेरे उद्धार का ऐलान किया है; मैंने तेरी दया और तेरी सच्चाई को बड़ी सभा से छिपाया नहीं है" (पद 9–10)। दाऊद की तरह, परमेश्वर के उद्धार की कृपा पाने के बाद, हमें भी पूरी मंडली के सामने उस उद्धार की खुशी भरी खबर की गवाही देनी चाहिए। हमें प्रभु की दया और सच्चाई—जो हमारे बारे में अनगिनत विचार रखते हैं—को सभा से छिपाना नहीं चाहिए; बल्कि, हमें उनकी सच्चाई और उद्धार का ऐलान करते हुए आगे बढ़ना चाहिए।

“हे प्रभु, मेरी जल्दी सहायता कर”

[भजन संहिता 40:11–17]

किम ह्यून-सेंग, जो एक सच्चे ईसाई कवि थे और 1975 में 63 साल की उम्र में गुज़र गए—जैसे पेड़ से गिरी कोई सुंदर पत्ती—उन्होंने *ऑटम प्रेयर* (पतझड़ की प्रार्थना) नाम की एक कविता लिखी थी। मैं उसकी आखिरी पंक्तियाँ बताना चाहूँगा: “पतझड़ में, मुझे अकेला रहने दो। मेरी आत्मा को एक ऐसे कौवे जैसा होने दो जिसने उफनते समुद्रों और लिली की घाटियों को पार किया हो, और आखिर में एक खाली पेड़ की टहनी पर आकर बैठा हो।” इस हिस्से के बारे में, पादरी ली जे-चुल ने कहा, “सिर्फ़ वे लोग जो यह महसूस करते हैं कि वे पूरी तरह अकेले हैं—ठीक उसी पल जब उनकी ज़िंदगी पतझड़ में गिरी पत्तियों की तरह नीचे आ रही होती है—वही परमेश्वर (जो सर्वोपरि है) के साथ सही रिश्ता बना सकते हैं” (इंटरनेट)। हालाँकि पतझड़ बीत चुका है और सर्दियाँ आ गई हैं, फिर भी मैं व्यक्तिगत रूप से इस विचार से सहमत हूँ—जो कवि के शब्दों और पादरी ली की टिप्पणी से मिला है—कि मुझे (और असल में, हम सभी को) दुनिया से पूरी तरह अलग होकर अपने अस्तित्व को फिर से समझने की ज़रूरत है। इसलिए, हमें परमेश्वर के सामने अकेले व्यक्ति के तौर पर झुकना चाहिए और विनती करनी चाहिए।

आज के बाइबल पाठ, भजन संहिता 40:11–17 में, हम देखते हैं कि भजनकार दाऊद परमेश्वर के सामने अकेले व्यक्ति के तौर पर झुककर विनती कर रहा है। उसकी प्रार्थना में, खासकर आयत 13 के दूसरे हिस्से में, ये शब्द मिलते हैं: “हे प्रभु, मेरी जल्दी सहायता कर।” इस विषय के तहत, मैं उन तीन खास स्थितियों पर

विचार करना चाहता हूँ जिनमें दाऊद ने पुकारा, “हे प्रभु, मेरी जल्दी सहायता कर,” और उस अनुग्रह को पाना चाहता हूँ जो ऐसे चिंतन से मिलता है।

पहली स्थिति जिसमें दाऊद ने प्रार्थना की, “हे प्रभु, मेरी जल्दी सहायता कर,” वह घोर निराशा की स्थिति थी। भजन संहिता 40:12 पर विचार करें: “क्योंकि अनगिनत बुराइयों ने मुझे घेर लिया है; मेरे पापों ने मुझे जकड़ लिया है, जिससे मैं ऊपर नहीं देख पा रहा हूँ; वे मेरे सिर के बालों से भी ज़्यादा हैं; इसलिए मेरा दिल हिम्मत हार रहा है।” “मेरा दिल हिम्मत हार रहा है” वाक्यांश बताता है कि दाऊद निराशा के कगार पर था। दाऊद को ऐसी निराशा का सामना क्यों करना पड़ा? मुख्य कारण उसके चारों ओर मौजूद “अनगिनत बुराइयाँ” थीं, और दूसरा कारण उसके अनगिनत पाप थे। "अनगिनत बुराइयों"—यानी, अपने आस-पास मौजूद बहुत सारे बुरे लोगों—और उनसे पैदा हुई मुश्किलों और तकलीफ़ों के बीच, दाऊद को अपने पापों की गंभीरता का एहसास हुआ। उसने माना कि ये पाप "मेरे सिर के बालों से भी ज़्यादा" थे (वचन 12)। यह ध्यान देने वाली बात है कि इन्हीं बहुत सारी मुसीबतों की वजह से दाऊद परमेश्वर के सामने अपने बहुत सारे पापों को पहचान पाया। नतीजतन, इन अनगिनत मुश्किलों के बीच, उसने प्रार्थना की: "हे प्रभु, अपनी दया मुझ पर से न हटा; तेरी करुणा और तेरी सच्चाई हमेशा मेरी रक्षा करे" (वचन 11)। लगातार आने वाली अनगिनत मुसीबतों का सामना करते हुए भी, दाऊद—जिसे अपने अनगिनत पापों का पूरा एहसास था—ने परमेश्वर से विनती की कि वह अपनी दया न हटाए। यह मानते हुए कि उद्धार पाने के लायक कोई खूबी उसमें नहीं थी, उसने परमेश्वर की करुणा और सच्चाई पर भरोसा किया। उसने परमेश्वर के कभी न बदलने वाले गुणों—खासकर उसकी वफ़ादारी—पर भरोसा किया, क्योंकि वह अपने पवित्र लोगों की देखभाल करता है (पार्क युन-सन)।

हमें निराशा का पूरी तरह से अनुभव करने की ज़रूरत है। कारण यह है कि निराशा के बीच, हमें अपने अनगिनत पापों को पहचानने का आशीर्वाद मिलता है और साथ ही, हमें यह गहरी समझ मिलती है कि हमारे पास अपनी कोई खूबी नहीं है। ऐसा करने से, हम पूरी तरह से यीशु के क्रूस की खूबी पर निर्भर हो जाते हैं। इसलिए, जब हम इतनी गहरी निराशा में हों कि हमारा दिल बैठने लगे, तब भी हमें परमेश्वर से पुकारकर कहना चाहिए, "हे प्रभु, जल्दी मेरी मदद कर": "हे प्रभु, मुझे बचाने की कृपा कर; हे प्रभु, जल्दी मेरी मदद के

लिए आ" (वचन 13)। उस पल में, हमारे दिल की निराशा उम्मीद में बदल जाती है। कैसी उम्मीद? यह उद्धार की उम्मीद है।

दूसरी बात, जिस स्थिति में दाऊद ने प्रार्थना की, "हे प्रभु, जल्दी मेरी मदद कर," वह ऐसी स्थिति थी जिसमें उसे नुकसान पहुँचने का खतरा था।

भजन संहिता 40:14 को देखें: "जो लोग मेरी जान लेना चाहते हैं, वे शर्मिंदा और परेशान हों; जो लोग मेरा विनाश चाहते हैं, वे अपमानित होकर पीछे हटें।" इस दुनिया में, जहाँ कुछ लोग हमारा भला चाहते हैं, वहीं कुछ ऐसे भी हैं जो चुपके से हमारे पतन की उम्मीद करते हैं। यह वचन बताता है कि ऐसे लोग थे जो दाऊद की तकलीफ़ में खुश होते थे। ये वे लोग थे जो उसकी आत्मा को ही नष्ट करना चाहते थे। उन्होंने उसे अनगिनत मुसीबतों से घेर लिया (पद 12) और उसे "शर्मिंदा और परेशान" करने की कोशिश की (पद 14)। वे ही लोग थे जो उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहते थे, "आहा! आहा!" (पद 15)। उस समय परमेश्वर से दाऊद की प्रार्थना यह थी कि जो लोग उसे नुकसान पहुँचाना चाहते थे, वे शर्मिंदा और परेशान हों, और उन्हें अपमानित होकर पीछे हटना पड़े (पद 14)। दाऊद ने परमेश्वर से विनती की कि जो लोग उसे नष्ट करना चाहते थे—जो उसका मज़ाक उड़ा रहे थे—वे "अपनी ही शर्म से घबरा जाएँ" (पद 15)। यहाँ एक दिलचस्प अंतर दिखाई देता है: जहाँ दाऊद के दुश्मन उसकी जान लेना चाहते थे (पद 14), वहीं दाऊद प्रभु की शरण में गया। उसने परमेश्वर से यह भी कहा कि जो कोई भी प्रभु को खोजता है, वह "उसमें आनंदित और खुश हो" (पद 16)। दाऊद ठीक उसी समय प्रभु की ओर मुड़ा जब उसके दुश्मन उसकी जान लेने की कोशिश कर रहे थे, और उसने प्रार्थना की कि जो कोई भी प्रभु को खोजता है, उसे उसमें आनंद और खुशी मिले। ज़रा सोचिए: दाऊद जैसी स्थिति में खुशी और आनंद का क्या कारण हो सकता है? अगर हम "अनगिनत मुसीबतों" से घिरे हों—ऐसी मुसीबतें जो हमें हमारे पापों की गंभीरता का एहसास कराती हैं—तो भला क्या खुशी या आनंद बाकी रह सकता है? जब हम ऐसे लोगों से घिरे हों जो हमारी आत्मा को नष्ट करना चाहते हैं, जो हमारा मज़ाक उड़ाते हैं और हमें शर्मिंदा और बर्बाद करना चाहते हैं, तो हम किसमें या किस व्यक्ति में खुशी और आनंद पा सकते हैं? केवल प्रभु ही हैं। मुसीबत के समय वही हमारे आनंद और खुशी का स्रोत बनते हैं। ऐसे समय में प्रभु ही हमारे आनंद और खुशी क्यों होते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि वही हमारे उद्धारकर्ता हैं, और वही हमें उस उद्धार का आनंद और खुशी देते हैं। इस प्रकार, दाऊद "प्रभु को खोजने

वालों" को "उसके उद्धार से प्रेम करने वाले" कहता है: "...जो लोग आपके उद्धार से प्रेम करते हैं, वे हमेशा कहें, 'प्रभु की महिमा हो'" (पद 16)। यहाँ, "प्रभु की महिमा हो" वाक्यांश का अर्थ है कि हमारा परमेश्वर कृपापूर्वक हमें, यानी अपने पवित्र लोगों को उद्धार प्रदान करता है (पार्क युन-सन)। परमेश्वर उन लोगों को कृपापूर्वक बचाता है जो उसे खोजते हैं—वे लोग जो अनगिनत विपत्तियों और कष्टों के बीच, जो उनकी आत्मा को नष्ट करने की धमकी देते हैं, प्रभु के उद्धार से प्रेम करते हैं, जो उनके लिए खुशी और आनंद का स्रोत है। उद्धार देने वाले इसी परमेश्वर से दाऊद ने विनती की, "हे प्रभु, मेरी सहायता करने में जल्दी कर!" (पद 13)।

जब हमें उन लोगों से कष्ट पहुँचता है जो हमें नुकसान पहुँचाना चाहते हैं, तो हमें प्रभु को खोजना चाहिए। हमें प्रभु के उद्धार की चाहत रखनी चाहिए और उससे प्रेम करना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो उद्धार देने वाला परमेश्वर—जो हमें खोजता है—हमें उद्धार का आनंद और खुशी प्रदान करेगा।

अंत में, तीसरी बात यह है कि दाऊद ने प्रार्थना की, "हे प्रभु, मेरी सहायता करने में जल्दी कर," जबकि वह गरीबी और अभाव की स्थिति में था।

भजन संहिता 40:17 को देखें: "पर मैं तो दीन और दरिद्र हूँ; फिर भी प्रभु मेरी सुधि लेता है। तू ही मेरी सहायता और मेरा उद्धारकर्ता है; हे मेरे परमेश्वर, देर न कर।" दाऊद "अनगिनत बुराइयों" (पद 12), अपने स्वयं के अनगिनत पापों (पद 12), और उन लोगों के कारण कष्ट और अभाव में था जो उसकी आत्मा को नष्ट करना चाहते थे (पद 14) या उसके नुकसान पर खुश होते थे (पद 14)। उस क्षण में, दाऊद ने प्रभु को खोजा, यह भरोसा रखते हुए कि प्रभु उसका ध्यान रखते हैं। इस विश्वास का आधार इस ज्ञान में निहित है कि परमेश्वर कौन है और अपने जीवन में उस ज्ञान का अनुभव करना है। दूसरे शब्दों में, दाऊद परमेश्वर को अपनी "सहायता" और "उद्धारकर्ता" के रूप में जानता था, क्योंकि उसने अपने अतीत में उसका अनुभव किया था। विश्वास की अपनी यात्रा में अनगिनत बार परमेश्वर की सहायता और उद्धार का अनुभव करने के बाद, दाऊद ने—भजन संहिता 40 लिखते समय—भरोसा किया कि परमेश्वर उसकी सहायता और उद्धार करना जारी रखेगा; इसलिए, उसने विनती की, "हे मेरे परमेश्वर, देर न कर" (पद 17) और "हे प्रभु, मेरी सहायता करने में जल्दी कर" (पद 13)।

जब हम कष्ट या अभाव का सामना करते हैं, तो हमें गहराई से मनन करना चाहिए कि हमारा परमेश्वर कौन है। हमारा परमेश्वर "मेरी सहायता" है और वह है जो मेरा "उद्धार" करता है (पद 17)। जब हम उस पर ध्यान करते हैं, तो हमें उसके साथ बिताए अपने पुराने अनुभवों और उसकी मदद व बचाव की कृपा को याद करना चाहिए। दुख और ज़रूरत के समय भी, हमें भरोसा रखना चाहिए और यकीन करना चाहिए कि हमारा परमेश्वर हमारी मदद करेगा और हमें बचाएगा। ऐसे पलों में, हमें पुकारना चाहिए, "हे मेरे परमेश्वर, देर न कर" और "मेरी मदद करने के लिए जल्दी कर।"

निराशा के बीच, हमें विनम्र होना चाहिए और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामने अकेले खड़े होकर उससे विनती करनी चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हमारी निराशा को उद्धार की आशा में बदल देता है। इसके अलावा, जब हम पर किसी नुकसान का खतरा हो, तो हमें परमेश्वर की शरण लेनी चाहिए—ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया था—और उद्धार की खुशी और आनंद का अनुभव करना चाहिए। दुख और ज़रूरत के समय प्रार्थना के ज़रिए, हमें परमेश्वर की मदद और बचाव का अनुभव करना चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि निराशा, नुकसान, दुख और तंगी के बीच भी, हमारी प्रार्थना का जीवन उद्धार की आशा, खुशी और भरोसे के आशीर्वाद से भरा रहे।

आइए हम ज़रूरतमंदों का ख्याल रखें।

[भजन संहिता 41]

नए साल की शुरुआत हुए भले ही अभी तीन दिन ही हुए हैं, लेकिन मैं पहले से ही परमेश्वर की कृपा और प्रेम का अनुभव करने का आनंद ले रहा हूँ। नए साल के दिन, मैंने परिवार के साथ मिलकर परमेश्वर के प्रेम को महसूस किया; उस प्रेम ने मुझे एहसास कराया कि दूसरों से प्रेम न कर पाना मेरा अपना पाप है, और उस पाप को स्वीकार करके और क्षमा पाकर, मैं आज़ादी की खुशी का आनंद ले पाया। इसके अलावा, मंगलवार और बुधवार की सुबह की प्रार्थना सभाओं के दौरान, परमेश्वर ने उत्पत्ति (Genesis) के अध्याय 4-9 के माध्यम से मुझसे बात की। उन्होंने मुझे कैन (Cain) के बारे में दिखाया, जो अपने पाप पर काबू पाने में नाकाम रहा (अध्याय 4); पाप से भरे दौर में "लेकिन नूह को प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह मिला" वाली बात (उत्पत्ति 6:8); नूह एक धर्मी व्यक्ति के रूप में, जो अपनी पीढ़ी में बेदाग था और प्रभु के साथ चलता था (उत्पत्ति 6:9); नूह का जहाज़ से उतरते ही परमेश्वर की आराधना के लिए वेदी बनाना (उत्पत्ति 8:20); और अंत में, नूह का नशे और नग्नता के पाप में पड़ना (उत्पत्ति 9:21)। नूह के जीवन के इन अलग-अलग पहलुओं के माध्यम से, परमेश्वर ने मुझे हाबिल और कैन, दोनों की झलक दिखाई। नूह के भीतर कैन की छवि देखने के बाद—जो आखिरकार अपने पाप पर काबू पाने में नाकाम रहा—मैंने नए साल के ये शुरुआती तीन दिन अपनों और करीबी परिचितों के पाप के कारण पीड़ित होने की खबरें सुनते हुए बिताए। इन सबके बीच, पाप की भयानक शक्ति ने मुझे झकझोर दिया। जब हम किसी एक व्यक्ति के पापपूर्ण फैसले से बहुत से लोगों—चाहे वे परिवार के सदस्य हों या साथी विश्वासी—को होने वाली भारी पीड़ा, दर्द, आँसू और तड़प को देखते या सुनते हैं, तो स्वाभाविक रूप से हम सोचते हैं कि सीधे तौर पर प्रभावित लोगों और उनके आस-पास के लोगों को कैसे सांत्वना दी जाए और उनकी मदद कैसे की जाए। आज, मैं इस मामले पर भजन संहिता 41 से मार्गदर्शन लेना चाहता हूँ।

भजन संहिता 41:1 में, भजनकार दाऊद कहते हैं, "धन्य है वह जो असहाय लोगों का ध्यान रखता है..." यहाँ "असहाय" (helpless) के रूप में अनुवादित शब्द उन लोगों के लिए है जो अपनी मदद करने में असमर्थ हैं। बाइबल के अन्य हिस्सों में, इस हिब्रू शब्द का अनुवाद "गरीब" या "कमज़ोर" के रूप में किया गया है। यह उन लोगों का वर्णन करता है जो आर्थिक गरीबी के कारण नीचे गिर गए हैं—निचले दर्जे के लोग जो उत्पीड़न का शिकार हो सकते हैं (जॉन मैकआर्थर)। "कमज़ोर" शब्द का मतलब बेसहारा (निर्गमन 30:15), बीमार (उत्पत्ति 41:19), या हिम्मत हार चुके लोग (1 थिस्सलुनीकियों 5:14) हो सकता है; लेकिन आज के वचन में, इसका मतलब उन सभी लोगों से है जो "परमेश्वर की ताड़ना (सुधारने वाली सज़ा) से गुज़र रहे हैं" (पार्क युन-सन)। बाइबल हमें ऐसे कमज़ोर लोगों का ध्यान रखने का निर्देश देती है। दूसरे शब्दों में, बाइबल हमसे कहती है कि हम कमज़ोरों के प्रति दया और लिहाज़ दिखाएँ (पार्क युन-सन)।

तो फिर, हमें कमज़ोरों का ध्यान कैसे रखना चाहिए? सबसे पहले, हमें उन पाँच बातों पर ध्यान देना चाहिए जो हमें उनके बारे में *नहीं* करनी चाहिए।

पहली बात, हमें कमज़ोरों को तुच्छ नहीं समझना चाहिए, उनकी आलोचना नहीं करनी चाहिए, या उन्हें नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए, यह सोचकर कि उनकी तकलीफ़ सिर्फ़ उनके अपने पापों के लिए परमेश्वर की ताड़ना का नतीजा है।

दूसरी बात, हमें कमज़ोरों के बारे में बुरा नहीं बोलना चाहिए।

आज के वचन में भजन संहिता 41:5 को देखें: "मेरे दुश्मन मेरे बारे में बुरा बोलते हैं और कहते हैं, 'वह कब मरेगा और उसका नाम कब मिट जाएगा?'" जब दाऊद कमज़ोरी और परेशानी की हालत में था, तब उसके दुश्मनों ने उसके बारे में बुरा कहा; उनकी बुरी बातों का सार यही था, "दाऊद कब मरेगा?" दूसरे शब्दों में, वे उसकी मौत चाहते थे—कि वह धरती से ही मिट जाए। बुरे दुश्मन उस विश्वासी की मौत चाहते हैं जो तकलीफ़ में है—जो अपने पापों के लिए परमेश्वर की प्यार भरी ताड़ना से गुज़र रहा है। इसका एक बड़ा उदाहरण यीशु हैं। जो यहूदी विश्वास नहीं करते थे, उनका मानना था कि लकड़ी के क्रूस पर लटके यीशु

परमेश्वर के श्राप के अधीन हैं, और वे उनकी मौत चाहते थे। इसीलिए उन्होंने पिलातुस से चिल्लाकर कहा, "उसे क्रूस पर चढ़ाओ!" (लूका 23:21)।

तीसरी बात, हमें कमज़ोरों के ख़िलाफ़ बुरी योजनाएँ नहीं बनानी चाहिए।

भजन संहिता 41:6 के शब्दों पर गौर करें: "जब कोई मुझसे मिलने आता है, तो वह झूठ बोलता है; उसका मन बुराई से भरा होता है; जब वह बाहर जाता है, तो वह उसे हर जगह फैलाता है।" जब दाऊद परेशानी में था, तो उसके दुश्मन उससे मिलने आते थे, प्यार का दिखावा करते थे और चापलूसी करते थे; लेकिन साथ ही, वे झूठ गढ़ने और अपने मन में बुरी योजनाएँ बनाने के लिए उसे परख रहे होते थे। उनकी बुरी योजना उसके खिलाफ़ बुरा प्रचार करने की थी। वे उसके सामने तो ऐसे दिखावा करते थे जैसे उन्हें उसकी परवाह हो, लेकिन उसके जाते ही वे लगातार झूठ बोलते और उसकी बुराई करते थे। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। हमें ज़रूरतमंदों के पास जाकर झूठे प्यार का दिखावा नहीं करना चाहिए, और फिर उनकी पीठ पीछे उनके बारे में बुरी बातें नहीं फैलानी चाहिए।

चौथा, हमें ज़रूरतमंदों से नफ़रत नहीं करनी चाहिए, न ही उनके खिलाफ़ कानाफूसी करनी चाहिए और न ही उन्हें नुकसान पहुँचाने की साज़िश रचनी चाहिए।

भजन संहिता 41:7 को देखिए: "जो लोग मुझसे नफ़रत करते हैं, वे मेरे खिलाफ़ कानाफूसी करते हैं; वे मेरे नुकसान की योजना बनाते हैं।" यह कितना बड़ा मौका लगता है! अगर कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे हम ज़्यादा पसंद नहीं करते थे—या शायद जिससे हम जलते थे—और अब वह अपने पापों के कारण परमेश्वर की सज़ा भुगत रहा है, तो यह उनकी पीठ पीछे कानाफूसी करने और बुराई करने का एक लुभावना मौका बन जाता है। फिर भी, मेरा मानना है कि ऐसी कानाफूसी उस कमज़ोर व्यक्ति को असल में दोबारा मार देती है। वे पहले से ही अपने पाप के कारण परमेश्वर की सज़ा से दुखी हैं; हमारे द्वारा उनके बारे में कानाफूसी करने से उनके मौजूदा दुख में और भी दुख जुड़ जाता है। यह एक ऐसा काम है जिससे किसी का भला नहीं होता।

पाँचवाँ और आखिरी, हमें कमज़ोर लोगों को धोखा नहीं देना चाहिए और न ही उनके खिलाफ़ होना चाहिए।

भजन संहिता 41:9 को देखिए: "यहाँ तक कि मेरा करीबी दोस्त, जिस पर मैंने भरोसा किया था, जिसने मेरे साथ रोटी खाई थी, उसने मेरे खिलाफ़ अपनी एड़ी उठाई है।" "एड़ी उठाना" वाक्यांश का मतलब है किसी को लात मारना। यह एहसान-फ़रामोशी के बुरे काम को दर्शाता है (पार्क युन-सन)। इसका एक बड़ा उदाहरण यहूदा इस्करियोती है, जिसने यीशु को धोखा दिया था।

तो फिर, हमें कमज़ोर लोगों को क्या सलाह देनी चाहिए? आइए आज के वचन से तीन बातें सीखें।

पहला, हमें कमज़ोर लोगों के प्रति दया दिखानी चाहिए।

भजन संहिता 41:4 और 41:10 के शुरुआती हिस्सों को देखिए: "मैंने कहा, 'हे प्रभु, मुझ पर दया कर...'" और "लेकिन हे प्रभु, तू मुझ पर दया कर..." जिस विश्वासी ने अपने पाप के कारण परमेश्वर की प्यार भरी सज़ा का अनुभव किया है, वह दूसरे विश्वासी को उसी सज़ा से गुज़रते हुए देखकर दया और करुणा महसूस करता है। खुद पाप के कारण दुख और दर्द सहने के बाद, वे दूसरों के दुख को समझ सकते हैं और उन पर दया कर सकते हैं। आज के हिस्से में भजनकार दाऊद ने प्रभु के सामने अपने पाप को माना; उसने परमेश्वर की दया मांगी और अपनी आत्मा के चंगे होने की विनती की (पद 4)। क्या परमेश्वर सचमुच ऐसे व्यक्ति से मुँह मोड़ लेंगे? कौन सा माता-पिता अपने उस प्यारे बच्चे से मुँह मोड़ेगा जो अपना पाप मानकर पछतावा करता है? हमें प्रभु के प्रेम के साथ कमज़ोर लोगों को अपनाना चाहिए।

दूसरा, हमें कमज़ोर लोगों पर भरोसा करना चाहिए।

यह कैसे संभव है? हम कमज़ोर लोगों पर भरोसा कर सकते हैं क्योंकि हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं। आज के हिस्से के पद 9 में, हम देखते हैं कि दाऊद को उसके एक करीबी दोस्त ने ही धोखा दिया, जिस पर उसने भरोसा किया था। यह कितनी दुखद स्थिति है! एक तरह से, यह कहा जा सकता है कि दाऊद ने पाप करके परमेश्वर को धोखा दिया। मेरा मानना है कि जब हम पाप करते हैं तो हमारे साथ भी ऐसा ही होता है। हम कितनी बार परमेश्वर के भरोसे को तोड़ते हैं और उन्हें धोखा देते हैं? फिर भी, हमारे परमेश्वर ऐसे हैं जो हमें स्वीकार करते हैं और हम पर फिर से भरोसा करते हैं जब हम पछतावा करते हैं, मन फिराते हैं और उनके पास लौटते हैं। यह कैसे संभव है? ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने अपने एकलौते पुत्र, यीशु के बहुमूल्य

लहू से हमारे पापों को धो दिया है। क्योंकि हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, इसलिए हमें एक-दूसरे पर भी भरोसा करना चाहिए।

तीसरा, हमें कमज़ोर लोगों को ऊपर उठाना चाहिए।

बाइबल... भजन संहिता 41:10 को देखिए: "परन्तु हे प्रभु, मुझ पर दया कर और मुझे उठा ले..." हमारे प्रभु जो प्रेमपूर्ण अनुशासन देते हैं, उसका मकसद हमें बस गिराना नहीं होता। प्रेम के इस अनुशासन के ज़रिए, परमेश्वर हमारे उन हिस्सों को पूरी तरह तोड़ देते हैं जिन्हें टूटने की ज़रूरत है, लेकिन उनका अंतिम लक्ष्य हमें बनाना है। ठीक इसीलिए हम परमेश्वर की दया की ओर देख सकते हैं। जैसा कि प्रभु अपनी कलीसिया को बनाने का वादा करते हैं और उस काम को पूरा करते हैं, हमें भी उनके बनाने के काम में हिस्सा लेना चाहिए (मत्ती 16:18)। इसके लिए, आज के हिस्से से हमें यह सीख मिलती है कि परमेश्वर की दया से शक्ति पाकर, हमें अपने कमज़ोर भाई-बहनों की देखभाल करने और उन्हें ऊपर उठाने की कोशिश करनी चाहिए। इसके लिए ज़रूरी है कि हम उन पर भरोसा करें—ठीक वैसे ही जैसे हम प्रभु पर भरोसा करते हैं—और यह पक्का करें कि हमारे शब्द और काम उन्हें आराम और हिम्मत दें। हमें ऐसे शब्दों या कामों से बचना चाहिए जो किसी ऐसे विश्वासी भाई या बहन पर और ज़्यादा अनुशासन डालें जो पहले से ही परमेश्वर के प्रेमपूर्ण अनुशासन के तहत दुख सह रहा हो। तो फिर, जो लोग कमज़ोरों का ध्यान रखते हैं, उन्हें क्या आशीष मिलती है?

पहला, यह छुटकारा पाने का आशीष है।

भजन संहिता 41:1 का दूसरा भाग देखिए: "...मुसीबत के दिन प्रभु उसे बचाएगा।" परमेश्वर ही वह है जो मुसीबत के समय उनकी रक्षा करता है और उन्हें बचाता है जो ज़रूरतमंदों का ध्यान रखते हैं। जो लोग ज़रूरतमंदों की मदद करते हैं, परमेश्वर उन्हें बचाता है; इसलिए जब हम गरीबों और कमज़ोरों की देखभाल करते हैं, तो हम उसकी बचाने वाली कृपा का अनुभव करते हैं।

दूसरा, जो लोग ज़रूरतमंदों का ध्यान रखते हैं, उन्हें परमेश्वर "सुरक्षा का आशीष" देता है।

भजन संहिता 41:2 का पहला हिस्सा देखिए: "प्रभु उसकी रक्षा करेगा और उसे जीवित रखेगा...।" बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर उनकी रक्षा और देखभाल करता है जो ज़रूरतमंदों का ध्यान रखते हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर उन लोगों का ध्यान रखता है जो गरीबों और कमज़ोरों की देखभाल करते हैं।

तीसरी बात, जो लोग ज़रूरतमंदों का ध्यान रखते हैं, उन्हें परमेश्वर यह आशीष देता है कि वे इस दुनिया में आशीष पाएंगे।

भजन संहिता 41:2 का बीच का हिस्सा देखिए: "...वह इस धरती पर आशीष पाएगा...।" इसका मतलब है कि जो लोग ज़रूरतमंदों का ध्यान रखते हैं, परमेश्वर उन्हें इसी धरती पर आशीषों का प्रतिफल देता है।

आखिर में, चौथी आशीष जो परमेश्वर ज़रूरतमंदों का ध्यान रखने वालों को देता है, वह है चंगाई की कृपा।

भजन संहिता 41:3 देखिए: "प्रभु बीमारी के बिस्तर पर उसे संभालता है और बीमारी से उसे ठीक करता है।" चंगाई देने वाला परमेश्वर उनकी सेहत ठीक करता है जो ज़रूरतमंदों का ध्यान रखते हैं; जब वे बीमार पड़ते हैं, तो वह उन्हें पूरी तरह ठीक कर देता है।

हमें उन लोगों के प्रति दया दिखानी चाहिए जो पाप करने के कारण परमेश्वर की ताड़ना सह रहे हैं—उन पर वैसे ही भरोसा करना चाहिए जैसे हम परमेश्वर पर करते हैं—और उन्हें उठाने में मदद करनी चाहिए। हमें कभी भी उनके बारे में बुरा बोलकर, बुरी योजनाएँ बनाकर, बदनामी फैलाकर या उनके खिलाफ़ कानाफूसी करके उन्हें और ज़्यादा बर्बाद करने का पाप नहीं करना चाहिए। हमें कभी भी उनके साथ विश्वासघात या विरोध नहीं करना चाहिए, और न ही उन्हें इतनी निराशा और हताशा में डालना चाहिए कि वे फिर कभी उठ न सकें। ऐसा करने के लिए, हमें यीशु की ओर देखना चाहिए, जो सचमुच दीन-हीन थे। क्योंकि यीशु—परमेश्वर के निष्पाप पुत्र—ने हमारे पापों के कारण परमेश्वर पिता की ओर से हर तरह का दुख और दैवीय ताड़ना सही। जब हम उन पर मनन करते हैं और उनके प्रेम, कृपा और दया से सशक्त होते हैं, तो हम भी दीन-हीनों तक पहुँच सकते हैं और प्रभु के प्रेम से उनकी सेवा कर सकते हैं। ऐसा करने से, हमें उद्धार,

सुरक्षा और चंगाई की परमेश्वर की आशीषें मिलेंगी, साथ ही वह कृपा भी मिलेगी जो हमें इस दुनिया में आशीष देती है।

परमेश्वर पर आशा रखें!

[भजन संहिता 42]

शैतान द्वारा आयोजित एक नीलामी की कहानी है। शैतान ने चिंता, डर, इच्छा, दुख और घमंड जैसी चीज़ें बेचने के लिए लोगों को इकट्ठा किया। डिस्प्ले के एक तरफ एक चीज़ रखी थी जिस पर एक फटा हुआ टैग लगा था और उस पर लिखा था "बिक्री के लिए नहीं।" जब पूछा गया कि यह खास चीज़ क्यों नहीं बेची जा रही है, तो शैतान ने जवाब दिया। शैतान ने कहा, "मेरे पास बेचने के लिए बहुत सी दूसरी चीज़ें हैं। लेकिन, यह खास चीज़ मेरे पास मौजूद सबसे कीमती और उपयोगी चीज़ है। इसके बिना, मैं अपना काम करने के लिए लोगों के दिलों की गहराई तक नहीं पहुँच सकता। वह चीज़ और कोई नहीं बल्कि 'निराशा' है" (इंटरनेट)। सचमुच, मेरा मानना है कि "निराशा"—शैतान का यह हथियार—हमारे विश्वास के जीवन के लिए घातक हो सकता है। निराशा क्या है? यह हिम्मत, आशा और आत्मविश्वास खो देने की स्थिति है (कांग जून-मिन)। दूसरे शब्दों में, यह वह स्थिति है जब किसी का हौसला टूट जाता है। निराशा को *नाकमांग* (आशा खोना) के रूप में भी व्यक्त किया जाता है; इसका शाब्दिक अर्थ है कि आशा खत्म हो गई है। एक और शब्द इस्तेमाल किया जाता है *नाकदाम* (हिम्मत/साहस खोना); यह उस स्थिति को दर्शाता है जब कोई अपना साहस या आत्मविश्वास खो देता है। निराशा उन लोगों की दुश्मन बन जाती है जो अपने सपनों को पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि यह हार मान लेने की सोच को बढ़ावा देती है।

जैसे ही हम नए साल का स्वागत करते हैं, मैं उन प्यारे साथी विश्वासियों के बारे में सोचता हूँ जो ऐसी स्थितियों का सामना कर रहे हैं जिनसे आसानी से निराशा, हिम्मत टूटना और मायूसी पैदा हो सकती है। वे नए साल के लिए कोई विज़न नहीं देख पा रहे हैं; आशा भरी शुरुआत के बजाय, वे कई तरह की मुश्किलों से गुज़र रहे हैं जो निराशा और मायूसी को जन्म देती हैं। तो, ऐसी मुश्किलों का सामना करते समय हमें क्या करना चाहिए? विश्वासियों के तौर पर, हमें मुश्किलों का सामना करते समय निराशा के आगे घुटने नहीं टेकने

चाहिए। कारण यह है कि हम उन मुश्किलों में छिपे आशीषों को पहचानते हैं और उनमें विश्वास करते हैं। तो, ऐसी मुश्किलों में कौन से आशीष मिलते हैं? डॉ. पार्क युन-सन उनमें से चार की पहचान करते हैं:

(1) मुश्किल का आशीष यह है कि इसके ज़रिए हमारे चरित्र का प्रशिक्षण होता है।

मुश्किल के ज़रिए, हम और ज़्यादा यीशु जैसे बनते जाते हैं... ...हम उनके चरित्र जैसे बनने लगते हैं। (2) मुश्किल समय में एक आशीर्वाद यह मिलता है कि हम मुश्किलों के बीच भी धन्यवाद देना सीखते हैं।

जब धन्यवाद देने की कोई वजह हो, तो कोई भी धन्यवाद दे सकता है—हालांकि, जो लोग हमेशा शिकायत करते हैं, वे तब भी शिकायत कर सकते हैं। लेकिन, मेरा मानना है कि हम, जो विश्वास करने वाले हैं, वे ही हैं जो सचमुच मुश्किल हालात में भी धन्यवाद दे सकते हैं, जब ऐसा करना नामुमकिन लगता हो। चाहे हालात में धन्यवाद देने की कोई वजह न दिखे, फिर भी हम हर चीज़ के लिए धन्यवाद दे सकते हैं जब हम उद्धार की कृपा पर विचार करते हैं—यह एक ऐसा तोहफ़ा है जो यीशु की क्रूस पर मौत और फिर से जी उठने से मिला है।

(3) मुश्किल समय में एक आशीर्वाद यह मिलता है कि मुश्किलें हमें परमेश्वर के वादों से और भी मज़बूती से जुड़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

हम शायद दूसरी चीज़ों को पकड़े रहें, लेकिन जैसे-जैसे मुश्किलों से होने वाला दर्द और तकलीफ़ बढ़ती है, हम आखिरकार बाकी सब कुछ छोड़ देते हैं और परमेश्वर के वादे वाले वचन को थाम लेते हैं। इस प्रक्रिया में, हमें पता चलता है कि हम सिर्फ़ परमेश्वर के वादों का पालन नहीं कर रहे हैं; बल्कि, वे वादे ही हमें आगे ले जा रहे हैं।

(4) मुश्किल समय में एक आशीर्वाद यह मिलता है कि हम परमेश्वर की सर्वशक्तिमानता पर और भी गहराई से भरोसा करने लगते हैं।

खासकर, जब हमने नया साल शुरू किया, तो सुबह की प्रार्थना के दौरान उत्पत्ति 18:14 का वचन—"क्या प्रभु के लिए कुछ भी मुश्किल है?"—हमें परमेश्वर की सर्वशक्तिमान शक्ति पर भरोसा करने, उसकी चाहत रखने और उसकी शक्ति की उम्मीद करने के लिए प्रेरित करता है।

आज, भजन संहिता 42 में, हम भजनकार को मुश्किलों का सामना करते हुए देखते हैं। हम देखते हैं कि कैसे उसने अपनी आत्मा से यह कहकर अपनी स्थिति पर जीत हासिल की: "हे मेरी आत्मा, तू क्यों उदास है? तू मेरे भीतर क्यों इतनी बेचैन है? परमेश्वर पर आशा रख, क्योंकि मैं फिर भी उसकी स्तुति करूँगा, जो मेरा उद्धारकर्ता और मेरा परमेश्वर है" (पद 5)। इस अंश के आधार पर, और "परमेश्वर की ओर देखो!" शीर्षक के तहत, मैं उन दो तरीकों पर विचार करना चाहता हूँ जिनसे परमेश्वर की ओर देखने वाले लोग व्यवहार करते हैं और यह सोचना चाहता हूँ कि इसे हम अपने जीवन में कैसे लागू करें।

पहला, जो लोग परमेश्वर की ओर देखते हैं, वे निराशा के आगे हार नहीं मानते; बल्कि, वे उसकी चाहत रखते हैं।

भजन संहिता 42 में, "निराशा" (या "उदास होना") शब्द तीन बार आता है (पद 5, 6 और 11)। भजनकार निराशा में क्यों डूबे? ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वे ऐसी मुश्किलों का सामना कर रहे थे जिनसे स्वाभाविक रूप से निराशा होती है (पार्क युन-सन)। ये मुश्किलें वे कठिनाइयाँ थीं जिनका सामना उन्हें अपने पापों के लिए परमेश्वर से अनुशासन (सुधार) पाते समय करना पड़ा। खास तौर पर, यह कठिनाई उनके दुश्मनों द्वारा सताए जाने के रूप में आई (पद 9)। यह उत्पीड़न लगातार बदनामी और ताने मारने के रूप में सामने आया, जिसमें पूछा जाता था, "तुम्हारा परमेश्वर कहाँ है?" (पद 3 और 9)। नतीजतन, भजनकार न केवल इस लगातार मज़ाक उड़ाए जाने के कारण दुख से भर गए (पद 3), बल्कि यहाँ तक सोचने लगे कि परमेश्वर उन्हें भूल गए हैं (पद 9)।

हम भी आसानी से निराशा में डूब सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे भजनकार डूबे थे। जब हम अपने पापों के लिए परमेश्वर से लंबे समय तक अनुशासन का सामना करते हैं, तो हम उनके बचाने वाले हाथ का इंतज़ार करते-करते थक सकते हैं और आखिरकार हिम्मत हार सकते हैं। हम निराशा के प्रति तब ज़्यादा संवेदनशील होते हैं जब उस छुटकारा मिलने में देरी होती है और हमें दुश्मनों के ताने सुनने पड़ते हैं, "तुम्हारा परमेश्वर

कहाँ है?" (पद 3)। ऐसी निराशा के बीच, हम परमेश्वर के अस्तित्व पर शक करने का पाप भी कर सकते हैं; यानी, हम परमेश्वर पर अविश्वास करने लगते हैं। यह सचमुच एक खतरनाक स्थिति है। इसलिए, हमें इस क्रम से सावधान रहना चाहिए: पाप — परमेश्वर का अनुशासन — दुख — निराशा — अविश्वास।

जब हम निराशा में डूब जाते हैं तो हमें क्या करना चाहिए? आज के भाग, भजन 42 में सिखाया गया सबक है "परमेश्वर के लिए तड़पना।" भजन 42 का पद 2 देखें: "मेरा प्राण परमेश्वर के लिए, जीवित परमेश्वर के लिए तड़पता है; मैं कब आकर परमेश्वर के सामने उपस्थित होऊँगा?" जब भजनकार निराशा में थे, तो वे परमेश्वर के लिए तड़प रहे थे, और यह तड़प आराधना में व्यक्त हुई। दूसरे शब्दों में, क्योंकि वे परमेश्वर की उपस्थिति के लिए तरस रहे थे, इसलिए वे आराधना के ज़रिए उनके करीब आए। वे परमेश्वर के लिए इस तड़प का वर्णन इस प्रकार करते हैं: "जैसे हिरण पानी की धाराओं के लिए हाँफता है, वैसे ही हे परमेश्वर, मेरा प्राण तेरे लिए हाँफता है" (पद 1)। यह प्यास तब पैदा होती है जब भजनकार—निराशा में हार मानने के बजाय और परमेश्वर पर नज़र टिकाए रखते हुए—अपनी पूरी लाचारी और अयोग्यता को गहराई से महसूस करते हैं, जिससे उनका प्राण परमेश्वर के लिए तड़प से भर जाता है। फिर भी, हमें यह याद रखना चाहिए कि परमेश्वर हमसे कहीं ज़्यादा हमारी चाहत रखते हैं (नाउवेन)। यह जानकर, हम—आज के पाठ में भजनकार की तरह—अपनी आत्मा से कह सकते हैं: "हे मेरी आत्मा, तू क्यों उदास है? और मेरे भीतर क्यों बेचैन है? परमेश्वर पर आशा रख" (पद 5, 11)।

दूसरी बात, जो लोग परमेश्वर की ओर देखते हैं, वे अतीत के बारे में सोचने के बजाय प्रभु को याद करते हैं।

अतीत को याद करते हुए भजनकार को बहुत दुख हुआ। भजन संहिता 42 का पद 4 देखिए: "जब मैं इन बातों को याद करता हूँ, तो मेरा मन भर आता है। क्योंकि मैं लोगों की भीड़ के साथ जाता था; मैं उनके साथ परमेश्वर के घर जाता था, खुशी और स्तुति की आवाज़ के साथ, उस भीड़ के साथ जो तीर्थयात्रा का पर्व मनाती थी।" भजनकार उस समय को याद करके बहुत दुखी था जब उसने एक धार्मिक नेता के रूप में सेवा की थी (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, जब वह खुद को ऐसी तकलीफ में पाता था जहाँ परमेश्वर दूर लगते थे, तो अतीत को याद करके उसका दिल और भी दुखता था—वह समय जब उसे परमेश्वर की कृपा मिली थी और

उसने दूसरों को प्रभु की ओर ले जाया था। इस तरह, मुश्किलों और निराशा के बीच, परमेश्वर की पिछली कृपा के बारे में सोचते हुए भजनकार का दिल और भारी हो गया। फिर भी, उस पल में, उसने प्रभु को याद किया। पद 6 देखिए: "हे मेरे परमेश्वर, मेरी आत्मा मेरे भीतर उदास है; इसलिए मैं तुझे यरदन की भूमि, हेर्मोन की ऊँचाइयों—मिसार पर्वत से याद करूँगा।" जब हम निराश होते हैं, तो समझदारी इसमें नहीं है कि हम उस निराशा को पाले रखें, बल्कि इसमें है कि हम तुरंत उसका सामना करने के उपाय करें (पार्क युन-सन)। वह उपाय प्रभु को याद करना है। हेनरी नूवेन की किताब *अ पर्सन हू रिमाइंड्स अस ऑफ़ जीसस* (A Person Who Reminds Us of Jesus) में एक हिस्सा है जिसमें लिखा है:

"हम सभी के अतीत में शायद कुछ दर्दनाक घटनाएँ रही होंगी जिन्हें हम याद नहीं करना चाहते—ऐसी दुखद यादें जिन्हें हम हर हाल में भूल जाना चाहते हैं। कुछ दर्दनाक यादें ऐसी होती हैं जिन्हें हम अपने मन की गहराइयों में दबाकर रखते हैं और उन्हें बाहर नहीं लाना चाहते। हालाँकि ये यादें—जिन्हें हम सबसे छिपाकर रखना चाहते हैं—समय बीतने के साथ हमें खुद भी भूली हुई लग सकती हैं, लेकिन एक पल ऐसा आता है जब कोई दूसरी दर्दनाक घटना उन्हें फिर से ताज़ा कर देती है। जब ऐसा होता है, तो हम उन्हें फिर से दबाने और भूलने की कोशिश करते हैं। फिर भी, हम जितनी ज़्यादा कोशिश करते हैं, घाव उतने ही गहरे होते जाते हैं। मेरा मानना है कि केवल वे लोग ही 'घायल मरहम लगाने वाले' (wounded healers) बन सकते हैं जिनमें अपने घावों और दर्दनाक यादों का सच में सामना करने का साहस हो। ऐसा करने के लिए, हमें अपना दिल बदलना होगा।" हमें ईश्वर के लिए अपने बंद दिल को खोलना होगा; यह केवल विश्वास के माध्यम से ही किया जा सकता है। यह हमारी पापी प्रवृत्ति है कि जब हम ईश्वर की चंगा करने की शक्ति पर विश्वास नहीं करते, तो हम उनके लिए अपने दिल का दरवाज़ा नहीं खोलते। "सच्ची चंगाई की प्रक्रिया में अपनी दर्दनाक यादों को यीशु की दर्दनाक यादों से लगातार जोड़ना शामिल है, जब हम उन्हें याद करते हैं" (नूवेन)।

दुख के समय में हमें प्रभु को याद रखना चाहिए, खासकर अपने अनुभव को प्रभु के अपने दुख से जोड़कर। ऐसा करने के लिए, हमें परमेश्वर के लिए गहरी तड़प के साथ प्रार्थना करनी चाहिए। आज के वचन, भजन संहिता 42:8 को देखें: "दिन में प्रभु अपना प्रेम दिखाते हैं, रात में उनका गीत मेरे साथ होता है—मेरे जीवन के परमेश्वर से एक प्रार्थना।" भजनकार ने अपने दुख के बीच जीवन के परमेश्वर से प्रार्थना की और उनके

लिए तड़प महसूस की, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि परमेश्वर भविष्य में अपनी दया दिखाएंगे। उन्हें यह भी भरोसा था कि परमेश्वर उन्हें स्तुति करने के योग्य बनाएंगे। इसीलिए उन्होंने परमेश्वर से विनती की। उन्होंने यीशु की इस शिक्षा का पालन किया कि "हमेशा प्रार्थना करो और हिम्मत न हारो" (लूका 18:1)। तो, उनकी प्रार्थना में क्या था? (1) भजनकार ने परमेश्वर के सामने अपना दुख व्यक्त किया—दुश्मनों के अत्याचार के कारण शोक मनाया—और परमेश्वर की दया मांगी [(भजन संहिता 42:9) "मैं परमेश्वर, अपनी चट्टान से कहता हूँ, 'आपने मुझे क्यों भुला दिया है? दुश्मन के अत्याचार से दुखी होकर मुझे क्यों शोक मनाना पड़ रहा है?'"]। (2) भजनकार ने दुश्मनों के ताने परमेश्वर के सामने रखे और परमेश्वर से न्याय मांगा (वचन 10)।

हमारे जीवन में कई बार ऐसा होता है जब हम अप्रत्याशित घटनाओं के कारण बहुत दुख सहते हैं। और जितना अधिक समय तक वह दर्द और पीड़ा बनी रहती है, उतनी ही अधिक संभावना होती है कि हम निराशा में डूब जाएं। फिर भी, आज के वचन में भजनकार की तरह, हमें अपनी आत्मा से यह कहते हुए आगे बढ़ना चाहिए: "हे मेरी आत्मा, तू क्यों उदास है? तू मेरे भीतर इतनी परेशान क्यों है? परमेश्वर पर आशा रख, क्योंकि मैं अभी भी उसकी स्तुति करूंगा, जो मेरा उद्धारकर्ता और मेरा परमेश्वर है" (वचन 5, 11)। निराशा के आगे झुकने के बजाय, हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए क्योंकि हम उनके लिए अपनी तड़प के माध्यम से प्रभु की सहायता प्राप्त करते हैं। हमें प्रभु के दुख में सहभागी होने से मिलने वाली परमेश्वर की कृपा को समझना और अपनाना चाहिए—अतीत के बजाय उन्हें याद रखना और लगातार अपने दर्द को उनके क्रूस की पीड़ा के साथ जोड़ना चाहिए (फिलिप्पियों 1:29)। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम निराशा या चिंता के आगे न झुकें, बल्कि अपनी आशा पूरी तरह से परमेश्वर पर रखें और उनकी सहायता के लिए उनकी स्तुति करें।

“तुम्हारा परमेश्वर कहाँ है?”

“हे मेरे मन, तू क्यों उदास है? तू मेरे भीतर क्यों इतना बेचैन है? परमेश्वर पर आशा रख, क्योंकि मैं अभी भी उसकी स्तुति करूँगा, जो मेरा उद्धारकर्ता और मेरा परमेश्वर है” (भजन संहिता 42:5)।

हम मसीही अक्सर यह सवाल पूछते हैं, “धर्मी लोगों को दुख क्यों सहना पड़ता है?” हम कभी-कभी सोचते हैं कि बुरे लोग क्यों फलते-फूलते हैं, जबकि हमें—जिन्हें यीशु पर विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया है—दुख सहना पड़ता है। ऐसे सवालों के बीच, एक सवाल ऐसा है जो हमारे दिलों को बेचैन कर देता है और हमें निराशा में डुबो देता है: “तुम्हारा परमेश्वर कहाँ है?” जब हमारे आस-पास के अविश्वासी—जो यीशु पर विश्वास नहीं करते—हमसे यह सवाल पूछते हैं, तो हम आसानी से निराश हो सकते हैं। हमें और भी अधिक चिंता और निराशा महसूस हो सकती है जब हमारे दुश्मन—जो हमें सताते हैं, हमारा मज़ाक उड़ाते हैं और हमें परेशान करते हैं—हमसे यही सवाल पूछते हैं।

आज के वचन, भजन संहिता 43 में भजनकार को ठीक इसी स्थिति का सामना करना पड़ा था। वह निराशा और चिंता से भरा हुआ था। ऐसा इसलिए था क्योंकि उसके विरोधी और दुश्मन उसे सता रहे थे (पद 9); वे उसकी बुराई करते थे (पद 10) और दिन भर उसका मज़ाक उड़ाते हुए पूछते थे, “तुम्हारा परमेश्वर कहाँ है?” (पद 3, 10)। फिर भी, अपनी निराशा की गहराई में भी, भजनकार परमेश्वर के लिए तड़पता रहा (पद 2)। वह परमेश्वर के लिए उतनी ही तीव्रता से प्यासा था जितनी तीव्रता से एक हिरण पानी की धारा की तलाश करता है (पद 1)। यह परमेश्वर का कितना अनमोल अनुग्रह है। यह सचमुच परमेश्वर के अनुग्रह का कार्य है कि उसने निराशा के बीच भी भजनकार के मन में अपने लिए तड़प पैदा की। परमेश्वर के अनुग्रह पर भरोसा

करते हुए, भजनकार ने प्रभु को याद किया (पद 6) और अपने जीवन के परमेश्वर से प्रार्थना की (पद 8)। ऐसा करते हुए, उसने परमेश्वर पर आशा रखी; उसने अपनी नज़र उसकी ओर घुमाई (पद 5, 11; भजन संहिता 43:5)। अंततः, परमेश्वर ने भजनकार की निराशा का उपयोग उसके प्रति तड़प जगाने के लिए किया, और उस तड़प के भीतर, उसने भजनकार को खुद पर आशा रखने के योग्य बनाया। इसके अलावा, परमेश्वर ने उम्मीद रखने वाले भजनकार को अपनी उपस्थिति में मिली मदद के लिए अपनी स्तुति करने के लिए प्रेरित किया (पद 5, 11; 43:5)। जीवित परमेश्वर की यह कृपा कितनी अद्‌भुत है!

हमारा परमेश्वर कोई मृत परमेश्वर नहीं है; वह जीवित परमेश्वर है। वह इम्मानुएल है—वह परमेश्वर जो हमारे साथ है। परमेश्वर उन दुखों को पूरी तरह से जानता और देखता है जिनका सामना हम उसकी संप्रभुता के दायरे में करते हैं। यहाँ तक कि जब हमें लगता है कि हमारा धैर्य जवाब दे रहा है क्योंकि हमारे दर्द का कोई समाधान नहीं दिख रहा, तब भी हमें अपने दुश्मनों के ताने से सावधान रहना चाहिए: "तुम्हारा परमेश्वर कहाँ है?" हमें कभी भी उन शब्दों को अपने दिल में जगह नहीं देनी चाहिए और यह सवाल नहीं करना चाहिए कि "आखिर मेरा परमेश्वर कहाँ है?" ऐसा करने से हम भी उसी चिंता और निराशा में पड़ सकते हैं जिसका अनुभव भजनकार ने किया था। फिर भी, जब हम निराशा में पड़ जाते हैं, तो हमें उस निराशा को परमेश्वर के लिए तड़पने के अवसर में बदल देना चाहिए। भजनकार की तरह, हमें अपनी निराशा के बीच प्रार्थना के ज़रिए सच्चे दिल से परमेश्वर को खोजना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हमारे दिलों में उम्मीद जगाता है। वह हमें अपनी मदद का भरोसा दिलाता है। नतीजतन, हम उम्मीद से भरे दिल के साथ परमेश्वर की स्तुति करेंगे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह अनमोल कृपा हम सब पर बनी रहे।

“हे परमेश्वर, मेरी अत्यधिक खुशी”

[भजन संहिता 43]

पास्टर चार्ल्स स्विंडोल के अनुसार, आज तीन मुख्य बातें हैं जो हमारी खुशी छीन लेती हैं: चिंता, तनाव और डर। हालाँकि ये एक जैसी लग सकती हैं, लेकिन इनमें साफ़ अंतर हैं। पहली बात, चिंता “उन चीज़ों के बारे में बेमतलब की घबराहट है जो हो सकती हैं।” जब हम घटनाओं के नतीजों का इंतज़ार करते हैं, तो चिंता हमारी खुशी को धीरे-धीरे खत्म कर देती है, ठीक वैसे ही जैसे एसिड किसी सतह को धीरे-धीरे गला देता है। दूसरी बात, तनाव चिंता से ज़्यादा गंभीर होता है; यह उन हालात के बारे में बहुत ज़्यादा तनाव को दिखाता है जिन्हें हम बदल या ठीक नहीं कर सकते—यानी वे चीज़ें जो हमारे बस में नहीं हैं। अपनी समस्याओं को परमेश्वर को सौंपने के बजाय, हम अपने दिल को बेचैन होने देते हैं, और यह लगातार बेचैनी तनाव को और बढ़ा देती है। आखिर में, डर चिंता या तनाव से भी ज़्यादा गंभीर होता है; यह खतरे, मुसीबत या दुख का सामना करते समय महसूस होने वाली अस्थिरता की डरावनी भावना है। चिंता और तनाव की तरह, डर भी हालात को असलियत से कहीं ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर दिखाता है। खुशी छीनने वाली इन ताकतों से खुद को आज़ाद करने की चाबी विश्वास है (स्विंडोल)।

हमारा क्या? क्या हम विश्वास के ज़रिए खुशी छीनने वाली इन तीन चीज़ों—चिंता, तनाव और डर—पर जीत पा रहे हैं? हमें परमेश्वर के वचन पर विश्वास रखकर उन पर जीत हासिल करनी चाहिए। खासकर, आइए हम सब सपन्याह 3:17 के शब्दों को मज़बूती से थामे रहें: “तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे बीच में है, वह एक शक्तिशाली बचाने वाला है; वह तुम्हारे कारण खुशी से झूम उठेगा; वह अपने प्यार से तुम्हें शांत करेगा; वह ऊँचे स्वर में गाकर तुम्हारे लिए खुशी मनाएगा।” हमें इस बात पर विश्वास करके चिंताओं, तनाव और डर पर

जीत हासिल करनी चाहिए कि परमेश्वर पिता हमारे कारण बहुत ज़्यादा खुशी मनाता है। उस परमेश्वर की ओर देखकर जो हमारे लिए खुशी और आनंद के साथ गाता है, हमें सारी चिंता, तनाव और डर को दूर कर देना चाहिए और परमेश्वर से मिलने वाली खुशी को अपनाना चाहिए—वह खुशी जो पवित्र आत्मा का फल है।

भजन संहिता 43:4 में, भजनकार मानता है कि परमेश्वर "मेरी अत्यधिक खुशी" है। इस वाक्यांश का शाब्दिक अनुवाद इस तरह किया जा सकता है: "वह परमेश्वर जिसकी खुशी में मुझे आनंद मिलता है।" भजनकार ने परमेश्वर को अपनी सबसे बड़ी खुशी क्यों माना? मैं आज के पाठ में बताए गए इसके तीन कारणों पर बात करना चाहूँगा। ऐसा करते हुए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम भी परमेश्वर को अपनी सबसे बड़ी खुशी बनाएँ।

भजनकार ने परमेश्वर को अपनी सबसे बड़ी खुशी इसलिए बनाया क्योंकि प्रभु ही उसका उद्धारकर्ता है।

भजन संहिता 43:1 को देखें: "हे परमेश्वर, मेरा न्याय कर और एक अधर्मी जाति के विरुद्ध मेरा पक्ष ले; मुझे कपटी और अन्यायी मनुष्य से बचा!" प्रेरितों के काम 12:1–19 में उस घटना का वर्णन है कि कैसे प्रभु ने प्रेरित पतरस को जेल से छुड़ाया। राजा हेरोदेस ने पतरस की सुरक्षा का चाहे कितना भी कड़ा इंतज़ाम क्यों न किया हो, प्रभु की बचाने वाली शक्ति के सामने सारी ज़ंजीरें, सैनिक, जेल की दीवारें और लोहे के दरवाज़े बेकार साबित हुए। प्रभु ने पतरस को राजा हेरोदेस और अविश्वासी यहूदियों की "सभी उम्मीदों" से बचाया (प्रेरितों के काम 12:11)। उसने कलीसिया की प्रार्थनाओं को सुना और उनका उत्तर दिया, और इस तरह पतरस को बचाया। भले ही कलीसिया की सच्ची, लगातार और एकजुट प्रार्थनाएँ पूरी तरह से परिपूर्ण विश्वास वाली प्रार्थनाएँ या उम्मीदें न रही हों, फिर भी प्रभु ने पतरस को बचाकर अपनी सर्वोच्च इच्छा पूरी की। तो फिर, परमेश्वर की बचाने वाली कृपा का अनुभव करने के बाद हम किस बात का घमंड कर सकते हैं? क्या हम सचमुच परमेश्वर के सामने अपनी प्रार्थनाओं का श्रेय ले सकते हैं? क्या उद्धार के परमेश्वर के सर्वोच्च कार्य के संबंध में हम कोई योग्यता बता सकते हैं? इसलिए, आज इस बचाने वाली कृपा का अनुभव करने वाले लोगों के रूप में, हम भजन 474 की इन पंक्तियों को दोहराते हैं: "यह प्रभु यीशु की बचाने वाली कृपा है; कितनी सच्ची खुशी और आनंद देने वाली! मैं हमेशा उस कृपा का आनंद लूँगा और शांति से रहूँगा।" सचमुच, जैसा कि गीत के बोल बताते हैं, यह दुनिया चिंताओं, कठिनाइयों और पाप से भरी है; इसके बीच

रहते हुए सच्ची शांति पाना आसान नहीं है, और अक्सर ऐसा लगता है कि कोई आराम नहीं है। फिर भी, जानलेवा खतरों से भरी दुनिया में रहते हुए भी, हम प्रभु यीशु की बचाने वाली कृपा के कारण शांति से रह सकते हैं। इसीलिए हम अपने उद्धार के परमेश्वर में आनंदित और खुश हो सकते हैं।

आज के भाग में भजनकार प्रार्थना के ज़रिए परमेश्वर के सामने अपनी शिकायत रख रहा है। आयत 1 में शिकायत के विषय को दो वाक्यांशों का उपयोग करके बताया गया है: पहला है "एक अधर्मी जाति।" इस शब्द का अर्थ है "निर्दयी जाति"; जॉन कैल्विन के अनुसार, ऐसा लगता है कि यह शाऊल और उसके शासन की ओर इशारा करता है, जिसने मूर्तिपूजकों जैसी अविश्वास की भावना के कारण दाऊद पर अत्याचार किया था (पार्क युन-सन)। दूसरा वाक्यांश है "धोखेबाज़ और अन्यायपूर्ण लोग।" भजनकार इन धोखेबाज़ और अन्यायपूर्ण लोगों—ऐसे बुरे लोग जो किसी भी तर्क से परे हैं—के बारे में धर्मी परमेश्वर के सामने शिकायत करता है और उनसे विनती करता है कि वे उसे इनसे बचाएँ।

हम प्रभु यीशु मसीह में इसलिए आनंदित होते हैं—और बार-बार आनंदित होते हैं—क्योंकि वे हमारे उद्धारकर्ता हैं। क्रूस पर अपनी मृत्यु और जी उठने के द्वारा, उन्होंने हम जैसे लोगों को बचाया—जो कभी अधर्मी, धोखेबाज़ और अन्यायपूर्ण थे। इस प्रकार, हमें इस उद्धार का आनंद प्राप्त है। हमारे उद्धार के प्रभु वे परमेश्वर हैं जो हमारी प्रार्थनाओं को सुनते हैं और उनका उत्तर देते हैं, और हमारे दैनिक जीवन की अप्रत्याशित मुश्किलों और कठिनाइयों के बीच भी हमें छुटकारा देने की कृपा करते हैं। परिणामस्वरूप, हम उद्धार के स्थायी आनंद का अनुभव करते हैं। जो परमेश्वर हमें छुटकारा दिलाते हैं, वे आज और कल भी अपनी धार्मिकता प्रकट करते रहते हैं और हमें इस बुरी दुनिया से बचाते हैं। इसलिए, हम अपने उद्धार के परमेश्वर में आनंदित हो सकते हैं, और बार-बार आनंदित हो सकते हैं।

दूसरा कारण जिसकी वजह से भजनकार ने परमेश्वर को अपना परम आनंद माना, वह यह है कि प्रभु ही उसकी शक्ति हैं। भजन संहिता 43:2 को देखें: "हे परमेश्वर, तू मेरा गढ़ है। तूने मुझे क्यों त्याग दिया है? शत्रु के अत्याचार के कारण मुझे क्यों शोक करते हुए घूमना पड़ता है?" भजनकार परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा है और अधर्मियों और अविश्वासियों के अत्याचार और उत्पीड़न से उत्पन्न पीड़ा और दुख के बीच खुद को अकेला महसूस करने की अपनी सच्ची भावनाओं को व्यक्त कर रहा है। "क्यों... क्यों..." की बार-बार की पुकार में

हम भजनकार की व्याकुलता और गंभीरता को महसूस कर सकते हैं। अत्यधिक पीड़ा का सामना करते समय परमेश्वर से "क्यों?" पूछना स्वाभाविक लगता है। हम भी "क्यों?" पूछ सकते हैं जब—शत्रु के अत्याचार के दर्द और दुख के बीच—हमें ऐसा महसूस होता है कि परमेश्वर ने हमें छोड़ दिया है। हालाँकि, आज के अंश में भजनकार की "क्यों" वाली प्रार्थना उस तरह की नाराज़गी से नहीं उपजी है जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं; बल्कि, यह उस विश्वास से उत्पन्न होती है मानो परमेश्वर का उत्तर पहले ही मिल चुका हो (पार्क युन-सन)। हम "शक्ति" के रूप में अनुवादित शब्द को देखकर इसे समझ सकते हैं। हालांकि कोरियाई बाइबिल में "ताकत" शब्द का इस्तेमाल किया गया है (और अंग्रेजी संस्करणों में भी ऐसा ही है), लेकिन मूल हिब्रू शब्द *माओज़* का असल मतलब "पनाहगाह" या "मजबूत गढ़" होता है (पार्क युन-सन)। प्रभु को अपनी पनाहगाह मानते हुए, भजनकार ने विनती की, "आपने मुझे क्यों ठुकरा दिया है? दुश्मन के ज़ुल्म की वजह से मुझे क्यों मातम मनाते हुए घूमना पड़ रहा है?" (पद 2)। भले ही वह बहुत दुखी और इतने दर्द में था कि उसे लगा जैसे परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया है, फिर भी वह जानता था कि परमेश्वर ही उसकी पनाहगाह है; इसलिए, उनकी ओर मुड़कर उसे वह ताकत मिली जिसकी उसे ज़रूरत थी।

भजनकार की तरह, कभी-कभी हम भी पूछते हैं, "ऐसा क्यों?"—या बस, "क्यों?" खासकर जब हम मुश्किलों से गुज़र रहे हों और दर्द असहनीय लगे, तो हम प्रभु की शरण में जा सकते हैं और प्रार्थना में पूछ सकते हैं, "क्यों?" जब भजनकार धोखेबाज़ और अन्याय करने वाले लोगों के कारण दुख झेल रहा था, तो उसका मन निराशा और बेचैनी से भर गया था (पद 5)। फिर भी, परमेश्वर की ओर देखकर, उसे परमेश्वर से मिली शक्ति से फिर से हिम्मत मिली। इससे भजन संहिता 18:1 के शब्द याद आते हैं, जिन पर हमने पहले भी मनन किया है: "हे प्रभु, मेरी शक्ति, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ।" विश्वास की अपनी यात्रा में—जब हमें अपनी पूरी लाचारी का एहसास होता है—तो हम प्रभु पर निर्भर होते हैं, जो हमारी चट्टान, हमारा किला, हमारी शरण और हमारा मज़बूत गढ़ हैं; ऐसा करने से, हमें नई शक्ति मिलती है और हम ऐसे विश्वासी बनकर उठते हैं जो बाज़ की तरह खुले आसमान में ऊँची उड़ान भरते हैं। इसीलिए भजनकार ने प्रभु में आनंद मनाया—बार-बार आनंद मनाया।

आखिरकार, तीसरा कारण जिसकी वजह से भजनकार ने परमेश्वर को अपना सबसे बड़ा आनंद माना, वह यह था कि प्रभु ही उसके मार्गदर्शक थे।

भजन संहिता 43:3 पर विचार करें: "हे परमेश्वर, अपना प्रकाश और अपना सत्य भेज! वे मेरा मार्गदर्शन करें; वे मुझे तेरे पवित्र पर्वत और तेरे निवास-स्थान तक ले जाएँ।" जब भजनकार अपने दुश्मनों के धोखे और अन्यायपूर्ण कामों के कारण निराशा और बेचैनी से भरा हुआ था, तब भी उसने अपने दिल के अंधेरे के बीच प्रभु के प्रकाश से मार्गदर्शन पाने की कोशिश की। क्या यह सचमुच संभव है? जब हम दुख की सुरंग से गुज़रते हैं, तो कभी-कभी हमें लगता है कि अंधेरे का कोई अंत नहीं है; निराशा और बेचैनी में, हमारा मन हार मान लेने का कर सकता है। डरावनी बात यह है कि जैसे-जैसे हमें अंधेरे की आदत हो जाती है, हम प्रकाश देखने की क्षमता खो देते हैं। परमेश्वर की कृपा के बिना, हम उस अंधेरे के बीच प्रकाश की तलाश करने की शक्ति—या विश्वास—भी खो देते हैं। केवल जब परमेश्वर अपनी कृपा देता है, तभी हम उस घने अंधेरे में प्रभु को—जो स्वयं प्रकाश हैं—देख सकते हैं, उनके मार्गदर्शन का पालन कर सकते हैं और उससे बाहर निकल सकते हैं। तो फिर, यहाँ बताए गए "तेरे सत्य" द्वारा मार्गदर्शन पाने का क्या अर्थ है? यह सच्चाई उस भरोसे के बारे में है जिसके साथ परमेश्वर अपने पवित्र लोगों की हमेशा रक्षा करने का अपना वादा पूरा करते हैं (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, भजनकार ने दुख की अंधेरी सुरंग से गुज़रते हुए प्रभु—जो ज्योति हैं—के मार्गदर्शन की इच्छा की; खास तौर पर, उन्होंने प्रभु की विश्वसनीयता पर भरोसा करते हुए उस मार्गदर्शन को चाहा। उन्होंने प्रभु से विनती की—जो ज्योति और सत्य दोनों हैं—कि वे उन्हें अपने पवित्र पर्वत और अपने निवास स्थान तक ले जाएं (पद 3)। इस प्रकार, वे प्रभु की उपस्थिति में रहना चाहते थे। योना 2:4 के शब्द याद आते हैं: "मैंने कहा, 'मैं तेरी दृष्टि से दूर कर दिया गया हूँ; फिर भी मैं तेरे पवित्र मंदिर की ओर फिर से देखूंगा।'" योना, जो परमेश्वर की आज्ञा न मानने के कारण "समुद्र की गहराइयों" (पद 3) में मछली के पेट में पहुँच गए थे, अंततः प्रभु के मंदिर की ओर फिर से देखने से उन्हें उद्धार मिला। नतीजतन, उन्होंने स्वीकार किया, "उद्धार प्रभु की ओर से है" (पद 9)। उद्धार देने वाले वे परमेश्वर हमारी शरणस्थान बनते हैं और हमें नई शक्ति देते हैं, और आज भी हमें 'प्रतिज्ञा की हुई भूमि'—उस ऊँचे स्थान—की ओर आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन करते हैं। परम आनंद देने वाले परमेश्वर जो हमारे लिए गाकर खुशी मनाते हैं—वे परमेश्वर जिनमें हमें बार-बार खुशी मनाने का कारण मिलता है—उनकी वजह से हम निराशा या चिंता को हावी नहीं

होने देते। इसके बजाय, हम परमेश्वर के लिए तरसते हैं। ऐसा करने से, हमारे पास आशा होती है—उद्धार की आशा। इसलिए, हमें परमेश्वर में आनंद मनाना चाहिए, और लगातार आनंद मनाना चाहिए, क्योंकि वे ही हमारा उद्धार, हमारी शक्ति (हमारी शरणस्थान) और हमारे मार्गदर्शक हैं।

निराशा और बेचैनी

“हे मेरे मन, तू क्यों उदास है? तू मेरे भीतर क्यों इतना बेचैन है? परमेश्वर पर भरोसा रख, क्योंकि मैं अब भी उसकी स्तुति करूँगा, जो मेरा उद्धारकर्ता और मेरा परमेश्वर है” (भजन संहिता 43:5)।

किसी व्यक्ति के निराश और बेचैन महसूस करने के कई कारण हो सकते हैं। एक कारण है किसी प्रियजन द्वारा छोड़ दिया जाना। उदाहरण के लिए, जब हमें लगता है कि हमारे प्यारे पति या पत्नी ने हमें छोड़ दिया है, तो हम निराश और बेचैन महसूस करते हैं। बच्चों के साथ भी ऐसा ही होता है; अगर उन्हें लगता है कि उनके प्यारे माता-पिता ने उन्हें छोड़ दिया है, तो वे निश्चित रूप से निराशा—या घोर निराशा—में डूब जाते हैं और गहरी बेचैनी महसूस करते हैं। लेकिन तब क्या होता है जब हम, मसीही होने के नाते, ऐसा महसूस करते हैं कि परमेश्वर पिता ने हमें छोड़ दिया है?

भजन संहिता 43 में, भजनकार के निराश और बेचैन महसूस करने का कारण ठीक यही था कि उसे लगा कि परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया है। इसीलिए उसने पुकारा, “तू ही मेरा गढ़ है, हे परमेश्वर। तूने मुझे क्यों त्याग दिया है?” (पद 2)। भजनकार “धोखेबाज़ और दुष्ट” लोगों के हाथों पीड़ित था (पद 1) और अपने दुश्मनों के अत्याचार के कारण दुख से घिरा हुआ था (पद 2)। ऐसे दुख और पीड़ा के बीच, वह निराश और बेचैन महसूस कर रहा था क्योंकि उसे विश्वास था कि प्रभु—जो उसकी शक्ति का स्रोत हैं—उसे बचा नहीं रहे हैं। उसे लगा कि परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया है क्योंकि परमेश्वर की ओर से छुटकारा मिलने में देरी हो रही थी। नतीजतन, भजनकार ने अपनी निराशा और बेचैनी में परमेश्वर से विनती की: “अपनी ज्योति और अपनी सच्चाई भेज, वे मेरी अगुवाई करें; वे मुझे तेरे पवित्र पर्वत तक, उस स्थान तक ले जाएँ जहाँ तू निवास करता है” (पद 3)।

अपने दुश्मनों के धोखेपूर्ण और अन्यायपूर्ण कार्यों के कारण निराश और बेचैन महसूस करते हुए भी—और अपने दिल के अंधेरे के बीच—भजनकार ने मार्गदर्शन के लिए प्रभु की ज्योति की ओर देखा। वह चाहता था कि प्रभु उसे उस परमेश्वर के पास ले जाएँ जो उसकी अत्यधिक खुशी का स्रोत है (पद 4), और वह उस अत्यधिक खुशी देने वाले परमेश्वर की स्तुति करने के लिए लालायित था।

जब हमें लगता है कि परमेश्वर ने हमें छोड़ दिया है, तो हम निराश और बेचैन महसूस करते हैं। जब दुख और विपत्ति के बीच परमेश्वर की ओर से छुटकारा मिलने में देरी होती है, तो हम निराश और बेचैन महसूस करते हैं। जब हमें ऐसा लगता है कि जो परमेश्वर "मेरी शक्ति" (पद 2) है, वह हमें उन दुश्मनों के ज़ुल्म (पद 2) से बचाने में नाकाम हो रहा है जो अधर्मी, धोखेबाज़ और अन्याय करने वाले हैं (पद 1), तो हम अक्सर निराशा और अंदरूनी बेचैनी का शिकार हो जाते हैं। ऐसे समय में, हमें अपनी आत्मा से वैसे ही बात करनी चाहिए जैसे भजनकार ने की थी: "हे मेरी आत्मा, तू क्यों उदास है? तू मेरे अंदर क्यों इतनी बेचैन है? परमेश्वर पर भरोसा रख..." (पद 5)। हमें अपनी निराश और बेचैन आत्मा से कहना चाहिए कि वह "परमेश्वर पर भरोसा रखे।" हमें पुकारना चाहिए। हमें अपनी आत्मा से कहना चाहिए कि वह निराश और बेचैन होना बंद करे और इसके बजाय परमेश्वर की ओर देखे। हमें अपनी नज़रें उस परमेश्वर पर टिकानी चाहिए जो हमारी मदद करता है। जब हम ऐसा करते हैं, तो निराशा और बेचैनी में डूबने के बजाय, हम परमेश्वर की स्तुति करते हुए पाए जाएँगे।

प्रभु ने पुराने समय में क्या किया

[भजन संहिता 44:1–8]

कहा जाता है कि तेल अवीव (जो इज़राइल की प्रशासनिक राजधानी है) में स्थित इज़राइल संग्रहालय की सफ़ेद इमारत के अंदर दीवार पर तीन पंक्तियाँ लिखी हुई हैं। इन तीन पंक्तियों में लिखा है: "बीते समय को याद करो, वर्तमान में जियो और भविष्य के प्रति आश्वस्त रहो।" ये शब्द भजनकार की याद दिलाते हैं। जब मैं भजन संहिता पर मनन करता हूँ, तो अक्सर देखता हूँ कि भजनकार वर्तमान के दुखों और मुश्किलों के बीच भी बीते समय को याद करता है और साथ ही भविष्य में परमेश्वर की स्तुति करने का भरोसा भी जताता है।

आज के अंश में, विशेष रूप से भजन संहिता 44:1 में, हम भजनकार को बीते समय को याद करते हुए देखते हैं: "हे परमेश्वर, हमने अपने कानों से सुना है—हमारे पूर्वजों ने हमें बताया है—कि आपने उनके दिनों में, यानी पुराने समय में क्या किया था।" वह उन कामों को याद करता है जो प्रभु ने अतीत में उसके पूर्वजों के लिए किए थे, और मानता है कि उसने उनके बारे में प्रत्यक्ष रूप से सुना है। प्रभु ने उन "पुराने दिनों" में जो काम किए, वे वास्तव में चमत्कारिक रूप से छुटकारा दिलाने वाले कार्य थे। व्यवस्थाविवरण 5:15 में भी यही बात दोहराई गई है: "याद रखो कि तुम मिस्र देश में गुलाम थे और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें वहाँ से अपनी सामर्थी भुजा और फैले हुए हाथ से बाहर निकाला..." भजन संहिता 44 में, भजनकार—व्यवस्थाविवरण के उस अंश की तरह ही—अपने पूर्वजों के समय में हुई छुटकारे की घटना को याद करता है; विशेष रूप से, वह केवल मिस्र से बाहर निकलने (निर्गमन) की ही नहीं, बल्कि कनान की प्रतिज्ञा की हुई भूमि में प्रवेश करने की घटना का भी ज़िक्र करता है। आज, भजन संहिता 44:1–8 के अंश और "प्रभु ने पुराने समय में क्या किया" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं प्रभु द्वारा अतीत में किए गए अद्‌भुत उद्धार

के तीन पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि इसके माध्यम से हमें वह अनुग्रह प्राप्त हो जो परमेश्वर हमें देना चाहता है।

पहला बिंदु जिस पर मैं विचार करना चाहता हूँ, वह यह है: "प्रभु ने उद्धार का यह अद्भुत कार्य कैसे पूरा किया?"

निर्गमन के समय इज़राइल के लोगों को बचाते हुए, परमेश्वर ने कनानी जातियों को खदेड़कर, इज़राइलियों को कनान देश में बसाकर और उन्हें फलने-फूलने का अवसर देकर अपने उद्धार का कार्य पूरा किया। आज के पाठ में भजन संहिता 44:2 को देखें: "आपने अपने हाथ से अन्य जातियों को बाहर निकाला और हमारे पूर्वजों को बसाया; आपने उन लोगों को कष्ट दिया और हमारे पूर्वजों को फलने-फूलने का मौका दिया।" यह हिस्सा इस बात की ओर इशारा करता है कि यहोशू की अगुवाई में, प्रभु ने इस्राएलियों को कनान की जातियों पर जीत हासिल करने और कनान की ज़मीन पर कब्ज़ा करने में मदद की। यहाँ एक दिलचस्प बात यह है कि इस्राएली राष्ट्र के बसने की तुलना पेड़ लगाने से की गई है। भजनकार प्रभु की तुलना पेड़ लगाने वाले से और इस्राएलियों की तुलना लगाए गए पेड़ से करता है; जैसे पेड़ को फलने-फूलने के लिए ध्यान से पाला-पोसा जाता है, वैसे ही परमेश्वर ने खुद इस्राएल के लोगों की देखभाल की और उन्हें फलने-फूलने में मदद की। इस्राएल का पेड़ लगाने के लिए, परमेश्वर ने "खरपतवार" यानी कनान की उन जातियों को उखाड़ फेंका जो दूध और शहद की धारा बहाने वाली उस अच्छी ज़मीन पर उग रही थीं, और उनकी जगह इस्राएल का पेड़ लगाया। इस प्रक्रिया के दौरान, उन्होंने पेड़ की देखभाल की ताकि वह खूब फले-फूले और उसमें बहुत सारे फल लगें। यह 2 शमूएल 7:10 के शब्दों का पूरा होना है: "मैं अपने लोगों इस्राएल के लिए एक जगह तय करूँगा और उन्हें बसाऊँगा, ताकि वे अपनी जगह पर रह सकें और उन्हें कभी हटना न पड़े; और न ही दुष्ट लोग उन्हें पहले की तरह सताएँगे।" यह तस्वीर हमें यूहन्ना 15 में यीशु की अंगूर की बेल वाली कहानी की याद दिलाती है। यीशु असली अंगूर की बेल हैं, और परमेश्वर पिता "बाग़बान" हैं (पद 1); जैसे हम, यानी शाखाएँ, प्रभु के बिना कुछ नहीं कर सकते (पद 5), वैसे ही मिस्र से निकलने के समय इस्राएल के लोग भी उस प्रभु के बिना कुछ नहीं कर सकते थे जिन्होंने उन्हें बसाया और फलने-फूलने में मदद की।

हमारे उद्धार को पूरा करने में, परमेश्वर ही हमें उखाड़ते और लगाते हैं। खासकर, वे ही परमेश्वर हैं जो हमारे अंदर की "कड़वाहट की जड़" को उखाड़ते हैं। इब्रानियों 12:15 पर विचार करें: "ध्यान से देखो कि कोई

परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित न रह जाए; कहीं ऐसा न हो कि कड़वाहट की कोई जड़ उग आए और परेशानी पैदा करे, और इससे बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएँ।" कड़वाहट की जड़—जिसे एक "ज़हरीले पौधे" (व्यवस्थाविवरण 29:18) जैसा बताया गया है और जो अभी भी हमारे अंदर मौजूद है—हमें परमेश्वर से दूर ले जाकर मूर्ति-पूजा जैसे पापों में फँसाकर हमारी आत्मा को नष्ट करने की कोशिश करती है। यशायाह 5:2 बताता है कि हम अक्सर परमेश्वर की उम्मीदों पर खरे क्यों नहीं उतर पाते: "उसने ज़मीन खोदी, पत्थर हटाए और सबसे अच्छी अंगूर की बेलें लगाईं। उसने उसमें एक पहरेदारी का बुर्ज बनाया और अंगूर का रस निकालने का कुंड भी खोदा। फिर उसने अच्छे अंगूरों की उम्मीद की, लेकिन उसमें सिर्फ़ खराब फल लगे।" परमेश्वर, जो इस कड़वी जड़ को उखाड़ फेंकते हैं, चाहते हैं कि हम यीशु मसीह में जड़ पकड़ें और उनमें आगे बढ़ें। कुलुस्सियों 2:6–7 पर विचार करें: "इसलिए, जैसे तुमने मसीह यीशु को प्रभु के रूप में अपनाया है, वैसे ही अपना जीवन उनमें जीते रहो, उनमें जड़ पकड़ो और आगे बढ़ो, विश्वास में मज़बूत बनो जैसा तुम्हें सिखाया गया था, और धन्यवाद से भरे रहो।"

सोचने के लिए दूसरी बात यह है: "प्रभु ने उद्धार का इतना अद्भुत काम क्यों किया?"

प्रभु ने इस्राएल के लोगों के लिए उद्धार का यह अद्भुत काम इसलिए किया क्योंकि उन्हें उनसे बहुत लगाव था। आज के वचन, भजन संहिता 44:3 को देखें: "उन्होंने अपनी तलवार से ज़मीन नहीं जीती, न ही उनकी अपनी भुजा उन्हें जीत दिला पाई; यह तो आपका दाहिना हाथ, आपकी भुजा और आपके चेहरे का प्रकाश था, क्योंकि आप उनसे प्रेम करते थे।" जब प्रभु ने इस्राएलियों को कनान देश जीतने में मदद की, तो यह साफ़ है कि उनकी जीत उनकी अपनी ताकत ("भुजा") या उनके हथियारों और सेनाओं ("तलवार") से नहीं मिली थी। कनान को जीतने की उनकी क्षमता पूरी तरह से परमेश्वर की शक्ति के कारण थी (वचन 3)। परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों की ओर से लड़ने, कनानियों को नष्ट करने, इस्राएल को जीत दिलाने और उन्हें कनान देश जीतने में मदद करने के लिए अपनी शक्ति का इस्तेमाल क्यों किया? इसका कारण यह है कि प्रभु को इस्राएल के लोगों से बहुत लगाव था।

यशायाह 5:7 में इस्राएल के लोगों को "उनकी खुशी का पौधा" कहा गया है। परमेश्वर ने उन्हें बचाया क्योंकि उन्हें उनसे लगाव था। परमेश्वर ने इस्राएल पर इतनी खास कृपा इसलिए नहीं की कि वे धर्मी थे; बल्कि, ऐसा

सिर्फ़ इसलिए हुआ क्योंकि उनकी अपनी मर्ज़ी से, उन्होंने उन पर बिना किसी शर्त के कृपा की (पार्क युन-सन)। व्यवस्थाविवरण 7:7–8 देखिए: "यहोवा ने तुमसे इसलिए प्रेम करके तुम्हें नहीं चुना कि तुम गिनती में अन्य लोगों से अधिक थे, क्योंकि तुम तो सब लोगों में सबसे कम थे। बल्कि यहोवा ने तुमसे प्रेम किया और तुम्हारे पूर्वजों से खाई हुई शपथ को पूरा किया, इसलिए वह तुम्हें अपने बलवान हाथ से बाहर ले आया और तुम्हें गुलामी के देश से, मिस्र के राजा फ़िरौन की शक्ति से छुड़ाया।"

सोचने के लिए तीसरी और आखिरी बात यह है: "जो व्यक्ति अतीत में मिली अद्भुत मुक्ति के इतिहास को याद रखता है, वह कैसा व्यवहार करता है?"

जो व्यक्ति अतीत में मिली अद्भुत मुक्ति के इतिहास को याद रखता है—जैसे भजनकार—वह तीन तरह से प्रतिक्रिया करता है:

(1) उसने प्रभु से प्रार्थना की। आज का वचन, भजन संहिता 44:4 देखिए: "हे परमेश्वर, तू मेरा राजा है; याकूब के लिए उद्धार ठहरा।" यह मानते हुए कि प्रभु ही उसका राजा है, भजनकार ने उससे इसराइल को उद्धार देने की विनती की। उसने इसराइल की मुक्ति के लिए प्रार्थना की और साथ ही यह भी याद किया कि कैसे परमेश्वर ने अतीत में मिस्र से बाहर निकलने (निर्गमन) के समय उद्धार की कृपा की थी। भजनकार की तरह, हमें भी विश्वास के साथ उद्धार की कृपा मांगनी चाहिए, इस भरोसे के साथ कि जिस परमेश्वर ने हमें अतीत में बचाया था, वह आज भी हमें बचाने में समर्थ है।

(2) उसने प्रभु पर भरोसा किया।

आज का वचन, भजन संहिता 44:5 देखिए: "तेरे द्वारा हम अपने शत्रुओं को गिरा देंगे; तेरे नाम से हम उन्हें कुचल देंगे जो हमारे विरुद्ध उठते हैं।" प्रभु पर भरोसा करके इसराइल को मिली मुक्ति के इतिहास पर विचार करते हुए, भजनकार ने वर्तमान कठिनाइयों और दुखों के बीच भी परमेश्वर पर भरोसा रखा। उसने परमेश्वर पर भरोसा किया क्योंकि उसे पक्का यकीन था कि केवल प्रभु ही इसराइल के लोगों को बचा सकते हैं। इसलिए, उसने खुद पर भरोसा नहीं किया (वचन 6)। यह कितना अनमोल विश्वास है! ऐसा विश्वास जो खुद पर निर्भर नहीं रहता; ऐसा विश्वास जो यह मानता है कि न तो अपना धनुष और न ही तलवार उद्धार

दिला सकती है... उसने अपनी ताकत पर भरोसा नहीं किया। क्यों? भजन संहिता 44:7 के शब्द इसका उत्तर देते हैं: "परन्तु तूने हमें हमारे शत्रुओं से बचाया है और जो हमसे घृणा करते थे, उन्हें लज्जित किया है।" (3) वह दिन भर प्रभु पर गर्व करता है। आज का वचन देखिए, भजन संहिता 44:8: "परमेश्वर में हमने दिन भर गर्व किया है, और हम सदा तेरे नाम का धन्यवाद करेंगे।" यह समझते हुए कि एक इंसान के तौर पर वह खुद पर भरोसा नहीं कर सकता (वचन 6), भजनकार ने परमेश्वर की स्तुति की और उन्हें धन्यवाद दिया। उसने ऐसा विश्वास बनाए रखा जिसमें परमेश्वर को सबसे ऊपर माना गया (पार्क युन-सन)।

जब मैं "प्रभु के बहुत पहले किए गए कामों" पर मनन कर रहा था, तो मुझे गॉस्पेल गीत "लॉन्ग, लॉन्ग अगो" (बहुत, बहुत पहले) याद आया: "बहुत, बहुत पहले स्वर्ग में, तुम्हारे लिए एक योजना थी। परमेश्वर ने तुम्हें देखा और कहा, 'यह अच्छा है।' इस दुनिया की किसी भी चीज़ से ज़्यादा कीमती, मैंने तुम्हें अपने हाथों से बनाया है। मैं तुम्हें देखकर खुश होता हूँ; मैं तुमसे प्यार करता हूँ। मैं तुमसे प्यार करता हूँ; मैं तुम्हें आशीष देता हूँ। हम तुम्हारे दिल को अपना प्यार देते हैं।" फिर मुझे अपने प्यारे भाई यू हो-सुंग, बहन सियोंग नाम-सिन और परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए उपहार—बच्चे जी-सियोंग—की याद आई। मैंने बच्चे जी-सियोंग को देखा, जो अभी एक्यूट मायलोइड ल्यूकेमिया से पीड़ित है, और साथ ही अपने पहले बच्चे, जू-यंग को याद किया। उस परमेश्वर के बारे में सोचते हुए जिन्होंने मेरे अतीत में उद्धार का काम पूरा किया—उन पलों को याद करते हुए जब प्रभु को जू-यंग के माध्यम से महिमा मिली, जिसका अर्थ है "प्रभु की महिमा"—मैंने प्यारे बच्चे जी-सियोंग के बारे में सोचा। ऐसा करते हुए, मैंने उस गीत के बोल जी-सियोंग पर लागू किए:

"बहुत, बहुत पहले—जी-सियोंग के जन्म से भी पहले—परमेश्वर के पास उसके लिए एक योजना थी। परमेश्वर ने जी-सियोंग को देखा और कहा, 'यह अच्छा है।' इस दुनिया की किसी भी चीज़ से ज़्यादा कीमती, परमेश्वर ने जी-सियोंग को अपने हाथों से बनाया। और परमेश्वर जी-सियोंग को देखकर खुश होते हैं। परमेश्वर जी-सियोंग से प्यार करते हैं। इसलिए, मैं जी-सियोंग से कहता हूँ: मैं तुमसे प्यार करता हूँ, जी-सियोंग। मैं तुम्हें आशीष देता हूँ, जी-सियोंग।" "हम तुम्हारे दिल को अपना प्यार देते हैं।"

जिस तरह परमेश्वर ने अतीत में मेरे पहले बच्चे, जू-यंग के लिए उद्धार का काम पूरा किया, मैं पूरे दिल से प्रार्थना करता हूँ कि वह अपनी इच्छा के अनुसार मेरे प्यारे जी-सियोंग के लिए भी उद्धार का काम पूरा करें और सारी महिमा स्वयं प्राप्त करें।

“भले ही हम पर ये सब गुज़रा है”

[भजन संहिता 44:9-26]

हमारे आस-पास ऐसे लोग हैं जो नए लक्ष्य तय करने और नई शुरुआत की भावना के साथ उनकी ओर बढ़ने के बाद, खुद को अप्रत्याशित मुश्किलों से जूझते हुए पाते हैं। ऐसे समय में हमें क्या करना चाहिए? शायद हम मूल अमेरिकी परंपराओं से सीख सकते हैं। कहा जाता है कि मूल अमेरिकी जनवरी को “अपने भीतर गहराई से उतरने का महीना” कहते हैं। वे जनवरी को केवल नई शुरुआत के समय के रूप में नहीं, बल्कि दिल को शांत करने के महीने के रूप में देखते हैं। अप्रत्याशित मुश्किलों और कठिनाइयों के बीच, हमें परमेश्वर के सामने शांत रहने की ज़रूरत है। ऑस्ट्रिया में, डेन्यूब नदी को तैरकर पार करने की एक प्रतियोगिता होती है। दौड़ का सबसे खतरनाक हिस्सा नदी के बीच में भंवर वाला इलाका होता है; कई तैराक इसी जगह पर दौड़ छोड़ देते हैं। कहा जाता है कि सबसे कुशल तैराक भी भंवर में बेबस हो जाते हैं; वे जितना ज़्यादा संघर्ष करते हैं और अपने शरीर को हिलाते हैं, उतने ही गहरे खिंचे चले जाते हैं, और आखिरकार थककर हार मान लेते हैं। हालाँकि, अनुभवी तैराक सफलतापूर्वक भंवर से पार पा लेते हैं। इसका राज़ सरल है: पेशेवर तैराक कुछ समय के लिए अपने शरीर को भंवर की धारा के हवाले कर देते हैं। फिर शक्तिशाली पानी तैराक को पूरी तरह नीचे खींचता है और वापस सतह पर ले आता है। एक पल के लिए शांत रहना ही भंवर से पार पाने का तरीका है। हमें भी इस साल ज़िंदगी के भंवर का सामना करना पड़ेगा—और हो सकता है कि आपमें से कुछ ने पहले ही इनका सामना किया हो। ऐसे समय में, आइए हम खुद को पूरी तरह से परमेश्वर को सौंप दें; वह हमें ज़िंदगी में हमारी सही जगह पर वापस लाएगा। पुराने नियम की दानिय्येल की किताब में, हम दानिय्येल के तीन दोस्तों—शद्रक, मेशक और अबेद्नगो—से मिलते हैं, जब वे अपनी ज़िंदगी में एक बड़े संकट का सामना करते हैं। बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर द्वारा बनाई गई सोने की मूर्ति के सामने झुकने से इनकार करने पर, उन्हें जलती हुई भट्टी में डाल दिया गया। इस मुश्किल घड़ी

का सामना करते हुए भी, उन्हें भरोसा था कि परमेश्वर उन्हें बचा सकता है। फिर भी, उन्होंने राजा से निडर होकर कहा, "लेकिन अगर वह ऐसा न भी करे... तो भी हम आपके देवताओं की सेवा नहीं करेंगे और न ही आपके द्वारा बनाई गई सोने की मूर्ति की पूजा करेंगे" (दानिय्येल 3:18)। विश्वास की कितनी सुंदर अभिव्यक्ति! शद्रक, मेशक और अबेद्नगो ने अपना जीवन पूरी तरह से उस परमेश्वर को सौंप दिया था जो जीवन, मृत्यु और भाग्य को नियंत्रित करता है; और सचमुच, वे अपने जीवन के तूफ़ान से बच निकले।

भजन संहिता 44:9–26 में, हम देखते हैं कि भजनकार भी डैनियल के तीन दोस्तों की तरह ही जीवन बदलने वाले संकट का सामना कर रहा है। इस उथल-पुथल के बीच, हम पाते हैं कि भजनकार का विश्वास भी उन्हीं की तरह बहुत कीमती था: "ये सब बातें हम पर बीती हैं, फिर भी हम न तो तुझे भूले हैं और न ही तेरे वाचा के प्रति बेईमान हुए हैं" (भजन संहिता 44:17)। आज इस वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं दिल से प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर की उस कृपा को पाकर जो वह हममें से हर एक के लिए चाहता है, हम ऐसे लोग बनें जो—जीवन के तूफ़ानों का सामना करते समय भी—प्रभु को न भूलें और उसकी वाचा के प्रति वफ़ादार बने रहें। पहली बात जिस पर मैं विचार करना चाहता हूँ, वह है "ये सब बातें"।

कृपया भजन संहिता 44:17 देखें: "ये सब बातें हम पर बीती हैं, फिर भी हम न तो तुझे भूले हैं और न ही तेरे वाचा के प्रति बेईमान हुए हैं।" आखिर वे "सब बातें" क्या थीं जो भजनकार और उसके लोगों, यानी इस्राएल पर गुज़रीं? एक शब्द में कहें तो, वह "दुःख-तकलीफ" थी। और बाइबल कहती है कि इस मुसीबत का कारण यह था कि प्रभु ने भजनकार और उसके लोगों, यानी इस्राएलियों को छोड़ दिया था: "लेकिन अब तूने हमें ठुकरा दिया है और शर्मिंदा किया है..." (पद 9)। यहाँ, "ठुकरा देने" (cast off) शब्द का मतलब नफ़रत के कारण अस्वीकार किया जाना है (कैल्विन)। दूसरे शब्दों में, भजनकार का मानना था कि वह और इस्राएल के लोग इसलिए दुख झेल रहे थे क्योंकि प्रभु उनसे नफ़रत करते थे और उन्हें दूर कर दिया था। लेकिन क्या यह सच है? क्या परमेश्वर सचमुच ऐसे परमेश्वर हैं जो इस्राएल के लोगों से नफ़रत करते हैं? परमेश्वर ने मिस्र से निकलने के बाद कनान देश को जीतने के दौरान इस्राएलियों पर उद्धार की कृपा इसलिए की थी क्योंकि "तू उनसे खुश था" (पद 3)। तो फिर, वही परमेश्वर अब भजनकार और इस्राएल के लोगों से नफ़रत क्यों करेंगे? और परमेश्वर उन्हें कैसे अस्वीकार कर सकते हैं या ठुकरा सकते हैं? ये शब्द केवल घोर दुख के बीच भजनकार की अपनी भावनाओं को दर्शाते हैं।

भजन संहिता 44 के पद 9 से शुरू करते हुए, भजनकार उस व्यक्तिगत दुख और राष्ट्रीय मुसीबत पर शोक व्यक्त करता है जिसका वे अभी सामना कर रहे हैं। खास तौर पर, वह यह न समझ पाने पर दुख जताता है कि परमेश्वर ने इस्राएलियों को क्यों ठुकरा दिया है, और इस मुसीबत का कारण प्रभु की नफ़रत और उन्हें अस्वीकार करने को मानता है (पार्क युन-सन)। उसे इस बात का दुख है कि, जबकि परमेश्वर कभी इस्राएलियों से खुश थे और उन्होंने अपनी शक्ति से उन्हें बचाया था, अब उन्होंने उन्हें छोड़ दिया है। भजनकार के यह मानने के खास तौर पर दो कारण थे कि परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को ठुकरा दिया है:

(1) युद्ध में हार।

भजन संहिता 44 का पद 10 देखें: "तू हमें दुश्मन के सामने पीछे हटने पर मजबूर करता है, और जो हमसे नफ़रत करते हैं..." "...उन्होंने हमारे लिए लूटपाट की।" इस्राएल के लोग अपने दुश्मनों से लड़ने के बाद हारकर पीछे हट गए, और नतीजतन, उन्हें लूट लिया गया। इसका कारण क्या था? पद 9 का बाद वाला हिस्सा देखें: "...तू हमारी सेनाओं के साथ नहीं जाता है।" दूसरे शब्दों में, युद्ध में जीत भगवान की मौजूदगी पर निर्भर करती है; क्योंकि भगवान इज़राइल के लोगों के साथ नहीं गए, इसलिए हार निश्चित थी।

(2) यह हारने वाले देश इज़राइल द्वारा सहे गए अत्याचार के कारण है।

आज के अंश, भजन संहिता 44:11–16 को देखें तो हम इज़राइल के लोगों द्वारा सहे गए अत्याचार के तीन पहलुओं की पहचान कर सकते हैं: (a) कुछ लोगों को कसाई के लिए तय भेड़ों की तरह मार डाला गया (पद 11) (पार्क युन-सन); (b) युद्ध हारने के बाद, लोगों को उनके दुश्मनों ने बंदी बना लिया—बेकार समझा—और विदेशी ज़मीन पर ले गए (पद 11 का बाद का हिस्सा और पद 12) (पार्क युन-सन); और (c) कैद के दौरान, इज़राइल के लोगों को उनके दुश्मनों द्वारा बदनामी और अपमान का सामना करना पड़ा। भजन संहिता 44:13–16 देखें: "तूने हमें हमारे पड़ोसियों के लिए शर्म की बात, और हमारे आस-पास के लोगों के लिए मज़ाक और हंसी का पात्र बना दिया है। तूने हमें देशों के बीच एक कहावत और लोगों के बीच हंसी का पात्र बना दिया है। मेरी बदनामी दिन भर मेरे सामने रहती है, और शर्म मेरे चेहरे पर छाई रहती है, क्योंकि निंदा और बुराई करने वाले की आवाज़, दुश्मन और बदला लेने वाले के कारण।" यह निश्चित है; हारने वाले

देश को जीतने वाले से बुरा बर्ताव और तिरस्कार सहना ही पड़ता है (पार्क युन-सन)। इज़राइल के लोग युद्ध हार गए, उन्हें विदेशी ज़मीन पर बंदी बना लिया गया, और उन्होंने हर तरह की बदनामी और अपमान सहा।

दूसरी बात जिस पर मैं विचार करना चाहता हूँ, वह यह है: जब इज़राइल के लोगों पर ये सभी घटनाएँ गुज़रीं, तो उन्होंने कैसी प्रतिक्रिया दी?

भजन संहिता 44:17 में, भजनकार कहता है कि इज़राइल के लोगों ने प्रभु को नहीं भुलाया। वह आगे गवाही देता है कि न तो उसने और न ही इज़राइल के लोगों ने प्रभु के साथ किए गए वाचा (समझौते) को तोड़ा। यह कितना अनमोल विश्वास है! हर तरह की बदनामी, अपमान और दुख का सामना करने के बावजूद, भजनकार और इज़राइल के लोगों ने प्रभु को नहीं भुलाया; न ही उन्होंने उस वादे—उस वाचा—को तोड़ा जो उन्होंने उससे किया था। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "वह विश्वास अनमोल है जो सभी दुखों के बावजूद अडिग रहता है। कमज़ोर विश्वासी, जब सतावट का सामना करते हैं, तो दुख से बचने की कोशिश में अधर्म से समझौता कर सकते हैं और पाप कर सकते हैं। हालाँकि, विश्वासी लोग ऐसे समय में भी मज़बूती और बिना डगमगाए खड़े रहते हैं" (पार्क युन-सन)।

खास तौर पर, यह कैसे पता चलता है कि भजनकार और इज़राइल के लोगों ने अपनी सभी मुसीबतों के बीच प्रभु को नहीं भुलाया या उसकी वाचा को नहीं तोड़ा? हम तीन पहलुओं की पहचान कर सकते हैं:

(1) भजनकार और इज़राइल के लोग प्रभु के सत्य से नहीं भटके।

भजन संहिता 44:18 को देखें, जो आज का पाठ है: "हमारा मन पीछे नहीं हटा, और न ही हमारे कदम तेरे मार्ग से भटके।" भजनकार और इज़राइल के लोग प्रभु के मार्ग से इसलिए नहीं भटके—सभी दुखों और मुसीबतों के बीच भी—क्योंकि उनके मन प्रभु से दूर नहीं हुए थे। इसके विपरीत, उन्होंने अपनी मुसीबतों के बीच भी एक समृद्ध आध्यात्मिक जीवन का आनंद लिया। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा, "जबकि आरामदायक परिस्थितियों में रहने वाले लोग खुश दिख सकते हैं, उनका आध्यात्मिक जीवन अक्सर ढीला पड़ जाता है" (पार्क युन-सन)। फिर भी, भजनकार और इज़राइल के लोगों ने दुख के बीच भी आध्यात्मिक रूप से समृद्ध

जीवन बनाए रखा। वह परमेश्वर के सामने अपनी भक्ति की पवित्रता और अपने विश्वास की सच्चाई के बारे में बात करता है और पूछता है: "यदि हम अपने परमेश्वर का नाम भूल गए होते या किसी विदेशी देवता के सामने अपने हाथ फैलाए होते, तो क्या परमेश्वर को यह पता न चलता? क्योंकि वह मन के रहस्यों को जानता है" (पद 20-21)। उसने उस परमेश्वर के सामने अपनी धार्मिकता की पवित्रता को स्वीकार किया जो मन की गहराइयों को जानता है। (2) भजनकार और इज़राइल के लोगों ने प्रभु के दुख में हिस्सा लिया।

आज के वचन, भजन संहिता 44:22 को देखें: "तेरे कारण हम दिन भर मारे जाते हैं; हमें वध के लिए भेड़ों के समान समझा जाता है।" भजनकार और इज़राइल के लोग सताने वालों के हाथों अन्यायपूर्ण तरीके से दुख सह रहे थे—और ऐसा वे "प्रभु के कारण" कर रहे थे। यदि वे परमेश्वर को भूल गए होते, तो उन्होंने वाचा तोड़ दी होती, प्रभु के सत्य से भटक गए होते, और उनके लिए दुख सहने से बच गए होते। इसके बजाय, प्रभु के कारण उनके साथ वध के लिए ले जाई जाने वाली भेड़ों जैसा व्यवहार किया गया। फिलिप्पियों 3:10 में, प्रेरित पौलुस भी यीशु की मृत्यु के अनुरूप होने की बात करते हैं ताकि "उनके दुखों की सहभागिता" को जान सकें। इसका कारण क्या है? ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रेरित पौलुस समझते थे कि प्रभु के दुख में हिस्सा लेना परमेश्वर की ओर से एक अनुग्रह था (1:29)। इसी तरह, आज के अंश—भजन संहिता 44—में भजनकार और इज़राइल के लोगों ने उन पर आए दुख के बावजूद प्रभु को नहीं भुलाया; इसके बजाय, उन्होंने प्रभु के दुख में हिस्सा लिया।

(3) भजनकार और इज़राइल के लोगों ने प्रभु को नहीं भुलाया; इसके बजाय, उन्होंने उनसे पुकार की।

भजन संहिता 44 के आयत 23–24 को देखें: "हे प्रभु, जाग! तू क्यों सोता है? उठ! हमें सदा के लिए त्याग न दे। तू अपना मुँह क्यों छिपाता है और हमारे कष्ट और उत्पीड़न को क्यों भूल जाता है?" पहली नज़र में, यह प्रार्थना ऐसा आभास दे सकती है कि प्रभु सो रहे हैं या भजनकार परमेश्वर से शिकायत कर रहा है। हालाँकि, यह वास्तव में धैर्यपूर्वक दुख सहते हुए की गई एक सच्ची और आकुल प्रार्थना है। विशेष रूप से, भजनकार यह घोषित करता है कि इस दुख के बीच भी वह प्रभु को नहीं भूला है, और वह परमेश्वर से गंभीरता से विनती करता है कि वे उस कष्ट और उत्पीड़न को न भूलें जिसका सामना वह और इज़राइल के लोग कर रहे हैं। वे उनकी बुरी हालत का ज़िक्र करते हुए कहते हैं, "हमारी आत्मा धूल में मिल गई है; हमारा शरीर ज़मीन से

चिपक गया है" (पद 25), फिर भी इस हालत में वे परमेश्वर से पुकारते हैं: "हमारी मदद के लिए उठ खड़े हो, और अपनी दया के कारण हमें छुड़ा ले" (पद 26)।

हमारे आस-पास ऐसे भाई-बहन हैं जो ज़िंदगी के अचानक आए उतार-चढ़ाव के बीच संघर्ष और तकलीफ़ों से गुज़र रहे हैं। मेरी उम्मीद है कि, जैसा कि आज परमेश्वर का वचन हमें सिखाता है, चाहे हम किसी भी तरह की तकलीफ़ या मुश्किल का सामना करें, हम प्रभु को न भूलें—ठीक वैसे ही जैसे भजनकार और इस्राएल के लोग नहीं भूले थे। हमें प्रभु के साथ किए गए वादे (नियम) को नहीं तोड़ना चाहिए। हमें प्रभु की सच्चाई—यानी उनके वचन—से भटकना नहीं चाहिए, बल्कि हमें प्रभु की तकलीफ़ों में हिस्सेदार बनने की कृपा को अपनाना चाहिए। ऐसा करते हुए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब प्रभु की दया और प्रेम पर भरोसा रखें और सच्चे दिल से उनसे उद्धार पाएँ।

एक कुशल लेखक की कलम जैसी जीभ

[भजन संहिता 45]

"इंसानी शरीर का कौन सा हिस्सा काबू करना सबसे मुश्किल है? वह है जीभ—महज तीन इंच का छोटा सा अंग। परमेश्वर ने जीभ पर काबू पाने में हमारी मदद के लिए दो प्राकृतिक सुरक्षा-कवच दिए हैं: दाँत और होंठ। जब नुकसान पहुँचाने वाले या बुरे शब्द मुँह से निकलने वाले हों, तो इंसान को दाँतों से जीभ दबा लेनी चाहिए। इसके अलावा, अगर जीभ दाँतों से बाहर निकल आए, तो होंठों को कसकर बंद कर लेना चाहिए ताकि शब्द बाहर न आ सकें। इन सुरक्षा-कवचों के बावजूद, इंसान इस छोटी सी जीभ से आसानी से पाप कर बैठता है। मसीहियों को अपने होंठों का इस्तेमाल दूसरों का हौसला बढ़ाने और उम्मीद जगाने के लिए करना चाहिए। अगर कोई मसीही ज़हरीले शब्द बोलता है, तो इससे सुसमाचार सुनाने का रास्ता बंद हो जाता है। हमें परमेश्वर के वचन के आधार पर खुद को परखना चाहिए और लगातार प्रार्थना के ज़रिए अपनी जीभ में छिपी बुराई को दूर करना चाहिए। यही वह गुण है जिसे एक विश्वासी को अपनाना चाहिए" (इंटरनेट)। इसी तरह, भविष्यद्वक्ता यशायाह ने कहा: "प्रभु परमेश्वर ने मुझे विद्वानों जैसी जीभ दी है, ताकि मैं थके हुए व्यक्ति से सही समय पर सही बात कह सकूँ। वह हर सुबह मुझे जगाता है, वह मेरे कान को विद्वानों की तरह सुनने के लिए तैयार करता है" (यशायाह 50:4)।

आज के अंश में, भजन संहिता 45 का रचयिता अपनी जीभ को "एक कुशल लेखक की कलम" जैसा बताता है और कहता है कि उसने राजा के बारे में एक कविता रची, जो उसके दिल से उमड़ रहे "अच्छे विषय" से प्रेरित थी (पद 1)। दूसरे शब्दों में, राजा की शानदार मौजूदगी से प्रभावित होकर, भजनकार राजा के बारे में अपनी बात कहने के लिए अपने तैयार होंठों का अद्भुत ढंग से इस्तेमाल करता है। जब मैं तीन मुख्य बिंदुओं

के ज़रिए इस पर विचार करता हूँ, तो मैं यह भी सोचना चाहता हूँ कि राजा के प्रति हमारा अपना नज़रिया कैसा होना चाहिए।

भजनकार की पहली बात यह है: "राजा इंसानों के बेटों से कहीं ज़्यादा सुंदर है।"

भजन संहिता 45:2 को देखें: "तू इंसानों के बेटों से कहीं ज़्यादा सुंदर है; तेरे होंठों पर अनुग्रह बरसा है; इसलिए परमेश्वर ने तुझे हमेशा के लिए आशीष दी है।" यहाँ, भजनकार—एक कुशल लेखक की कलम की तरह काम करने वाली जीभ का इस्तेमाल करते हुए—राजा की तारीफ़ करता है और उसे इंसानों के बेटों से ज़्यादा सुंदर बताता है। यह अंश बताता है कि उसके गुण उसके बाहरी रूप-रंग से कहीं बढ़कर हैं (पार्क युन-सन)। भजनकार बताते हैं कि यह राजा, जिसके गुण उसके रूप से कहीं बेहतर हैं, उसके "होंठों पर कृपा बसी है" (पद 2)। यह राजा के बुद्धिमान और शासन करने वाले शब्दों की ओर इशारा करता है, जो यह बताते हैं कि वह अपनी बुद्धि और समझ से अपनी प्रजा पर सही ढंग से शासन करता है (पार्क युन-सन)।

मुझे भजन 87 का पहला पद और कोरस याद आता है: "मेरे प्रभु का पहना हुआ वस्त्र सचमुच सुंदर है; उसकी सुगंध मेरे दिल में बस जाती है और मेरी खुशी बन जाती है। उस स्वर्गीय शहर को छोड़कर—जो सिय्योन से भी अधिक तेजस्वी है—वह इस साधारण दुनिया में आए; सचमुच, वह मेरे उद्धारकर्ता हैं।" जब मैं यह भजन गाता हूँ, तो मैं खुद से पूछता हूँ: "मुझे अपने होंठों से यीशु की सुंदरता को कैसे प्रकट करना चाहिए?" ऐसा करते समय, मुझे हेनरी नूवेन की किताब *कम्पैशन* (Compassion) में बताए गए "डाउनवर्डली मोबाइल लाइफ" (साधारण या विनम्र जीवन) के विचार की याद आती है। हमारी सहज प्रवृत्ति हमें "अपवर्ड मोबिलिटी" (ऊपर की ओर बढ़ने या तरक्की करने) वाले जीवन की ओर ले जाती है, इसलिए "डाउनवर्ड मोबिलिटी" वाला जीवन जीने का विचार—जैसा यीशु ने किया था—हमें बहुत असहज कर देता है। जबकि बाकी सभी लोग बेहतर जीवन, ज़्यादा सैलरी या प्रतिष्ठित पद पाने के लिए संघर्ष करते हैं, हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम धरती पर यीशु के "डाउनवर्ड मोबिलिटी" वाले जीवन को अपनाएँ। हमारा कर्तव्य है कि हम उन जगहों पर यीशु की सुंदरता को प्रकट करें जो साधारण और बदसूरत हैं। हेनरी नूवेन ने परमेश्वर की करुणा के बारे में इस तरह कहा है:

“करुणा का मतलब सिर्फ़ उन लोगों के लिए दया महसूस करना नहीं है जो 'अपवर्ड मोबिलिटी' वाला जीवन पाने में असफल रहे हैं। इसके विपरीत, करुणा का अर्थ है सीधे उन लोगों की ओर बढ़ना, उन जगहों पर जाना जहाँ दुख सबसे ज़्यादा है, और वहीं रहना। ... (परमेश्वर की) ... करुणा
उसकी करुणा है जो लगातार दुनिया की सबसे उपेक्षित जगहों की ओर बढ़ता है, और जो यह जानकर चैन से नहीं बैठ सकता कि अभी भी कोई ऐसा है जिसकी आँखों में आँसू हैं” (नूवेन)।

हमें यशायाह 53:2 के शब्दों को याद रखना चाहिए: “वह उसके सामने एक कोमल अंकुर की तरह, और सूखी ज़मीन से निकली जड़ की तरह बढ़ा। उसमें ऐसी कोई सुंदरता या महिमा नहीं थी जो हमें उसकी ओर आकर्षित करे, उसके रूप-रंग में ऐसा कुछ नहीं था कि हम उसे चाहें।” यीशु की सुंदरता को दुनिया की आँखों से नहीं देखा जा सकता; दुनिया की नज़र में, उनमें ऐसी कोई सुंदरता नहीं है जो प्रशंसा की माँग करे। नतीजतन, यीशु की तरह हम भी दुनिया की नज़र में शायद ऐसे दिखें जिनमें तारीफ़ करने लायक कोई सुंदरता न हो—या यूँ कहें कि हमें ऐसा दिखना भी *नहीं* चाहिए। हमें कभी भी दुनियावी सुंदरता के पीछे नहीं भागना चाहिए। इसका कारण क्या है? इसका कारण यह है कि जहाँ दुनियावी सुंदरता "ऊपर की ओर बढ़ने वाले जीवन" की पहचान हो सकती है, वहीं यीशु का जीवन "नीचे की ओर बढ़ने वाला जीवन" था (नाउवेन)। हमें यह याद रखना चाहिए कि यीशु की सुंदरता ठीक हमारे अपने नीचे की ओर बढ़ने वाले जीवन में ही प्रकट होती है। इसके अलावा, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर उस जीवन को आशीष देता है जो इस तरह यीशु की सुंदरता को प्रकट करता है: "...इसलिए परमेश्वर ने तुम्हें हमेशा के लिए आशीष दी है" (भजन संहिता 45:2)।

भजनकार की दूसरी बात यह है कि "राजा विजेता है।"

भजन संहिता 45:4 पर विचार करें: "अपनी महिमा में सच्चाई, विनम्रता और धार्मिकता के लिए विजयी होकर आगे बढ़ो; तुम्हारा दाहिना हाथ अद्भुत काम करे।" यहाँ, हम राजा को युद्ध करते हुए देखते हैं। इस युद्ध का उद्देश्य "सच्चाई, विनम्रता और धार्मिकता" है (पद 4)। इसके लिए, भजनकार आशीष देता है: "महिमा के साथ विजयी होकर आगे बढ़ो" (पद 4)। यह आशीष बताती है कि वह राजा को एक विजेता के रूप में देखता है। परमेश्वर द्वारा सदा के लिए आशीष प्राप्त राजा, युद्ध के घोड़े पर सवार होकर लड़ाई के लिए

निकलता है और जीत हासिल करता है। यह उसकी शक्ति का दाहिना हाथ ही है जो ये सभी अद्भुत काम करता है (पार्क युन-सन)। इस प्रकार, भजनकार घोषणा करता है: "तुम्हारे तेज़ तीर राजा के शत्रुओं के दिलों को भेद दें; राष्ट्र तुम्हारे चरणों में गिर जाएँ" (पद 5)। एक अजेय सेनापति के रूप में चित्रित, राजा युद्ध में जाता है और अपने शत्रुओं के दिलों को भेदता है। यह विजयी राजा सीधे यीशु मसीह, सेनाओं के राजा की ओर इशारा करता है। वह आध्यात्मिक रूप से विजयी है (प्रकाशितवाक्य 19:11-21) (पार्क युन-सन)।

व्यवस्थाविवरण 20:4 कहता है, "क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ही वह है जो तुम्हें जीत दिलाने के लिए तुम्हारे शत्रुओं के विरुद्ध लड़ने के लिए तुम्हारे साथ चलता है।" जीत का परमेश्वर ही वह है जो हमारी ओर से लड़ता है और हमें जीत हासिल करने में सक्षम बनाता है। इसलिए, प्रेरित पौलुस कहते हैं, "परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जीत दिलाता है" (1 कुरिन्थियों 15:57)। उस परमेश्वर के द्वारा जो हमें जीत देता है, हम खुद से, पाप से, दुनिया से और शैतान से लड़कर जीत सकते हैं। हालाँकि, यहाँ एक सवाल पूछना ज़रूरी है: यीशु ने जीत कैसे हासिल की? हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि यीशु ने शैतान का सामना कैसे किया और जीत कैसे पाई। इसका जवाब यह है कि यीशु ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा जीत हासिल की। जैसा कि प्रेरित पौलुस लिखते हैं, "हे मृत्यु, तेरी जीत कहाँ है? हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ है? मृत्यु का डंक पाप है, और पाप की शक्ति व्यवस्था है" (पद 55-56)। क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा, यीशु ने पाप—मृत्यु के डंक—पर जीत हासिल की और हमारे सभी पापों को पूरी तरह से धो दिया। इसके अलावा, परमेश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया है। इसलिए, विजयी जीवन का रहस्य है "हर दिन मरना" (पद 31)। हमें रोज़ाना "अपने शरीर को अनुशासित करना और उसे वश में करना" चाहिए (9:27)। भजनकार की तीसरी बात यह है: "राजा धार्मिकता से प्रेम करता है और दुष्टता से घृणा करता है।"

भजन संहिता 45:7 को देखें: "तू धार्मिकता से प्रेम करता है और दुष्टता से घृणा करता है; इसलिए परमेश्वर, तेरे परमेश्वर ने तुझे आनंद के तेल से अभिषेक करके तेरे साथियों से ऊँचा स्थान दिया है।" विजयी प्रभु का राज्य—जिसे वह स्थापित करता है—हमेशा बना रहता है क्योंकि उसका शाही अधिकार "न्याय" पर आधारित है (पद 6)। परमेश्वर का राज्य न्यायपूर्ण है क्योंकि प्रभु, जो राजा है, "धार्मिकता से प्रेम करता है और दुष्टता से घृणा करता है" (पद 7)। इसीलिए उसके राज्य में आनंद है।

यशायाह 11:1–5 में मसीहा के बारे में एक भविष्यवाणी है। पद 3–5 को देखें: "वह प्रभु के भय में प्रसन्न होगा। वह अपनी आँखों से जो देखता है उसके आधार पर न्याय नहीं करेगा, या अपने कानों से जो सुनता है उसके आधार पर फैसला नहीं करेगा; बल्कि वह धार्मिकता के साथ ज़रूरतमंदों का न्याय करेगा, और न्याय के साथ पृथ्वी के गरीबों के लिए फैसले करेगा। वह अपने मुँह की छड़ी से पृथ्वी पर प्रहार करेगा; अपने होंठों की साँस से वह दुष्टों का नाश करेगा। धार्मिकता उसकी कमरबंद होगी और सच्चाई उसकी कमर के चारों ओर का पटका होगी।" जब हम मसीह पर केंद्रित सेवकों को तैयार करके और उन्हें भेजकर परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने के विज़न के साथ आगे बढ़ते हैं, तो हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जो न्याय का पालन करे, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु करते हैं। हमें मीका 6:8 के इन शब्दों को याद रखना चाहिए: "हे मनुष्य, उसने तुझे बता दिया है कि क्या अच्छा है। और प्रभु तुझसे क्या चाहता है? यही कि तू न्याय का काम करे, दया से प्रेम रखे और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले।" परमेश्वर हमसे जो बातें चाहता है, उनमें से एक है "न्याय का काम करना।" ऐसा करने के लिए, हमें—आज के वचन (भजन संहिता 45) में बताए गए राजा की तरह—धार्मिकता से प्रेम करना चाहिए और बुराई से नफरत करनी चाहिए।

आज के वचन में जिस "राजा" का ज़िक्र है, वह यीशु मसीह, यानी मसीहा हैं। राजाओं के राजा यीशु एक सुंदर और विजयी प्रभु हैं जो धार्मिकता से प्रेम करते हैं और बुराई से नफरत करते हैं। तो फिर, यीशु के प्रति हम विश्वासियों का रवैया कैसा होना चाहिए? हम इन तीन बातों पर विचार कर सकते हैं:

(1) हमें इस दुनिया से अपने नाते-रिश्ते तोड़ लेने चाहिए और केवल प्रभु की चाहत रखनी चाहिए।

आज के वचन, भजन संहिता 45:10 को देखें: "हे बेटी, सुन, ध्यान दे और कान लगा; अपने लोगों और अपने पिता के घर को भूल जा।" यहाँ, भजनकार रानी के बारे में बात कर रहा है। यह रानी उस विश्वासी का प्रतिनिधित्व करती है, जिसकी तुलना मसीह की दुल्हन से की जा सकती है (पार्क युन-सन)। इसलिए, राजा यीशु के प्रति एक विश्वासी का रवैया ऐसा होना चाहिए कि वह अपने लोगों और पिता के घर को भूल जाए। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति को इस दुनिया से नाते-रिश्ते तोड़ने होंगे और केवल प्रभु की चाहत रखनी होगी (पार्क युन-सन)।

(2) हमें प्रभु की आराधना करनी चाहिए।

आज के वचन, भजन संहिता 45:11 को देखें: "तब राजा तेरी सुंदरता की बहुत चाह करेगा; क्योंकि वह तेरा प्रभु है, उसकी आराधना कर।" यहाँ, भजनकार हमें सिखाता है कि परमेश्वर किस तरह के विश्वासी को सुंदर मानते हैं। वह विश्वासी वही है जो प्रभु की आराधना करता है। परमेश्वर उन्हें सुंदर मानते हैं जो उनकी आराधना करते हैं। एक विश्वासी की सुंदरता परमेश्वर की विनम्र आराधना में निहित है। जो लोग विनम्रता से परमेश्वर की आराधना करते हैं, वे उनकी आज्ञा मानते हैं। वे आराधना का जीवन जीते हैं। आराधना के जीवन के माध्यम से, वे सुसमाचार का प्रचार करते हैं। परिणामस्वरूप, वे आत्मिक संतान देखते हैं। आयत 16 को देखें: "तेरे पूर्वजों के स्थान पर तेरे पुत्र होंगे; तू उन्हें सारी पृथ्वी पर राजकुमार बनाएगा।" "तेरे पूर्वजों के स्थान पर तेरे पुत्र होंगे" यह कथन लाक्षणिक है; इसका अर्थ है कि "विश्वासी सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से आत्मिक संतान देखते हैं" (पार्क युन-सन)। हम विश्वासियों की जिम्मेदारी है कि हम राजा यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करके परमेश्वर के राज्य का विस्तार करें। इस अर्थ में, सुसमाचार फैलाने की प्रभु की आज्ञा का पालन करना हमारा कर्तव्य है। इस प्रक्रिया के माध्यम से, और राजा यीशु के कारण, हम भी राजा बनेंगे (प्रकाशितवाक्य 5:10) (पार्क युन-सन)।

(3) हमें प्रभु में आशा को दृढ़ता से थामे रखना चाहिए।

आज के वचन, भजन संहिता 45:15 को देखें: "वे आनंद और खुशी के साथ लाए जाते हैं; वे राजा के महल में प्रवेश करते हैं।" हमारी आशा प्रभु के शाही महल में प्रवेश करने और हमेशा उनकी आराधना करते हुए जीने की है। पद 13 पर ध्यान दें: "राजा की बेटी महल के भीतर बहुत शानदार है; उसके कपड़े सोने के धागों से बुने हुए हैं।" यहाँ, "राजा की बेटी" का मतलब हम विश्वासियों से है; भजनकार बताता है कि कैसे हमें खुशी और आनंद के साथ शाही महल में ले जाया जाएगा और हम वहाँ "पूरी महिमा" का आनंद लेंगे (पद 13–15)।

एक कुशल लेखक की कलम जैसी ज़बान

"मेरा मन एक अच्छे विषय से भरा हुआ है; मैं राजा के लिए अपनी कविताएँ सुनाता हूँ; मेरी ज़बान एक कुशल लेखक की कलम जैसी है" (भजन संहिता 45:1)।

हमारे लिविंग रूम की दीवार पर कैलीग्राफी (सुलेख) का एक बड़ा फ्रेम लगा है। इसमें चार चीनी अक्षर बने हैं जिनका अर्थ है *Gido-manneung* (प्रार्थना सब कुछ कर सकती है)। बेशक, मुझे और मेरे जीवनसाथी को चीनी अक्षर पढ़ने नहीं आते; हमने इस वाक्यांश का अर्थ एक बड़े-बुज़ुर्ग से सीखा था। हमें यह कैलीग्राफी शादी के तोहफ़े के तौर पर एक पादरी से मिली थी, जो मेरे पिता के दोस्त थे। यह पादरी कनाडा में समुद्री यात्रियों के बीच मिशनरी के तौर पर सेवा करते हैं। मुझे आज भी वह समय याद है जब वे उपदेश देने हमारे चर्च आए थे और उन्होंने परमेश्वर के वचन का पालन करने का महत्व समझाने के लिए एक उदाहरण दिया था। उन्होंने इसकी तुलना कार चलाने से की थी: "D" पर गियर डालने से कार आगे बढ़ती है, "R" से पीछे जाती है, और "P" से पार्क होती है। इसी तरह, उन्होंने समझाया कि जब परमेश्वर हमसे आगे बढ़ने को कहते हैं, तो हमें आगे बढ़ना चाहिए; जब वे पीछे जाने को कहते हैं, तो हमें पीछे जाना चाहिए; और जब वे रुकने को कहते हैं, तो हमें वहीं रुक जाना चाहिए। मेरा मानना है कि यह सचमुच एक अनमोल संदेश है। जब परमेश्वर हमें आगे बढ़ने का आदेश देते हैं, तो हम विश्वास में आगे बढ़ते हैं; जब वे हमें पीछे मुड़कर देखने को कहते हैं, तो हम उस कृपा पर विचार करते हैं जो उन्होंने हम पर की है; और जब वे हमें रुकने और यह जानने को कहते हैं कि वही परमेश्वर हैं, तो हम रुक जाते हैं और चुपचाप उनकी सर्वोच्चता का अनुभव करते हैं। आज सुबह उस कैलीग्राफी पर विचार करते हुए—जिस पर लिखा था "प्रार्थना सब कुछ जीत लेती है" और जिसे उस मिशनरी ने इतनी सच्चाई से लिखा था जिन्होंने हमारे साथ इतनी अनमोल बातें साझा की थीं—मुझे यकीन है कि उन्होंने मुझे और मेरे जीवनसाथी को यह तोहफ़ा इसलिए दिया क्योंकि वे सचमुच प्रार्थना की सर्वशक्तिमान शक्ति में विश्वास करते हैं और खुद प्रार्थना का जीवन जीते हैं।

भजन संहिता 45:1 के दूसरे हिस्से को देखिए: "...मेरी ज़बान एक कुशल लेखक की कलम जैसी है।" इस आयत पर विचार करते समय, मुझे उस मिशनरी की कैलीग्राफी याद आई; मुझे एहसास हुआ कि हालाँकि शब्द अपने आप में महत्वपूर्ण हैं, लेकिन प्रार्थना की शक्ति के बारे में लेखक का दृढ़ विश्वास और उनका प्रार्थना का जीवन और भी महत्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में, कैलीग्राफी लिखने वाले व्यक्ति का दिल, खुद कैलीग्राफी से कहीं ज़्यादा मायने रखता है। इसी तरह, हालाँकि हमारी ज़बान—जिसे एक कुशल लेखक की कलम जैसा बताया गया है—महत्वपूर्ण है, लेकिन ज़बान को दिशा देने वाला दिल कहीं ज़्यादा ज़रूरी है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे दिल में जो होता है, वह हमारी ज़बान से बाहर आता ही है। अगर हमारा दिल प्यार से भरा हो, तो प्यार भरी बातें ही निकलेंगी; इसके उलट, अगर हमारे दिल में नफ़रत घर कर गई हो और पनप गई हो, तो नफ़रत भरे शब्द ही निकलेंगे। बेशक, कोई व्यक्ति दिल में नफ़रत रखते हुए भी झूठा कह सकता है, "मैं तुमसे प्यार करता हूँ"; लेकिन आम तौर पर, नफ़रत से भरा दिल नफ़रत भरे शब्दों को ही जन्म देता है। इसलिए, जब हम भजनकार द्वारा बताई गई "कुशल लेखक की कलम जैसी ज़बान" के बारे में सोचते हैं, तो हमें उस व्यक्ति के दिल पर भी ध्यान देना चाहिए जिसकी वह ज़बान है। मैंने ऐसे दिल की दो मुख्य विशेषताएँ पहचानी हैं।

पहली बात, जिस व्यक्ति की ज़बान कुशल लेखक की कलम जैसी होती है, उसका दिल एक "अच्छा दिल" होता है।

भजन संहिता 45:1 को देखिए: "मेरा मन एक अच्छी बात से उमड़ रहा है; मैं राजा के बारे में अपनी रचना सुनाता हूँ; मेरी ज़बान एक कुशल लेखक की कलम है।" यहाँ, भजनकार स्वीकार करता है कि उसका दिल अच्छे शब्दों से भरा हुआ है। अगर हमारा दिल अच्छा है, तो हम अच्छे शब्द ही बोलेंगे। तो, "अच्छा दिल" क्या है? जब मैं "अच्छा" शब्द के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे नीतिवचन 31:10 और उसके बाद की आयतों में बताई गई "नेक चरित्र वाली पत्नी" की याद आती है। बाइबल कहती है कि यह नेक औरत "बुद्धिमानी से बात करती है, और उसकी ज़बान पर भरोसेमंद शिक्षा होती है" (आयत 26)—या, जैसा कि दूसरे अनुवादों में कहा गया है, वह "दया का नियम" बोलती है। दूसरे शब्दों में, क्योंकि वह अपने दिल में परमेश्वर की प्रेमपूर्ण दया (प्यार) को महसूस करती है और उसका अनुभव करती है, इसलिए वह अपनी ज़बान से दया का नियम

बोलती है। इसी तरह, अगर हमने परमेश्वर के प्यार और भलाई का अनुभव किया है (भजन संहिता 34:8), तो हम अच्छे शब्द ही बोलेंगे।

यीशु में विश्वास रखने वालों के तौर पर, हमें विश्वास के साथ यह स्वीकार करना चाहिए कि "परमेश्वर भला है," चाहे हमारे हालात कितने भी मुश्किल या चुनौतीपूर्ण क्यों न हों। अगर हम "गुड, गुड फादर" (या "गॉड इज़ गुड") जैसा गॉस्पेल गीत तभी गाते हैं जब ज़िंदगी शांत हो और सब कुछ ठीक चल रहा हो, लेकिन मुश्किलों और आज़माइशों के समय इसे गाना बंद कर देते हैं, तो मेरा मानना है कि यह इस बात का सबूत है कि हम अपने दिल में परमेश्वर की भलाई और दया को महसूस या समझ नहीं पा रहे हैं। अगर हम अपनी परिस्थितियों से ऊपर उठ सकें और—हालात चाहे जैसे भी हों—भजनकार की तरह पूरे भरोसे के साथ कह सकें, "निश्चय ही भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ रहेंगी" (भजन संहिता 23:6), तो हम अपनी मौजूदा परिस्थितियों से परे जाकर विश्वास के साथ परमेश्वर की ओर देखेंगे। हम उस भले परमेश्वर की स्तुति करेंगे, यह भरोसा रखते हुए कि "सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं" (रोमियों 8:28)। ऐसा भला दिल सिर्फ़ अच्छी बातें ही कह सकता है।

दूसरी बात, जिस व्यक्ति की ज़बान किसी कुशल लेखक की कलम की तरह चलती है, उसका दिल अनुग्रह से भरा होता है।

भजन संहिता 45:2 पर गौर करें: "आप मनुष्यों की संतानों में सबसे सुंदर हैं; आपके होंठों पर अनुग्रह बरसा है; इसलिए परमेश्वर ने आपको हमेशा के लिए आशीष दी है।" परमेश्वर से आशीष पाए राजा के होंठ—या सच कहें तो, हम विश्वासियों के होंठ—अनुग्रह से भरे होने चाहिए। दूसरे शब्दों में, अपने होंठों से परमेश्वर की महिमा करने के लिए, हमें ऐसी बातें कहनी चाहिए जिनसे दूसरों को अनुग्रह मिले। ऐसा करने के लिए, हमारे दिल परमेश्वर के अनुग्रह से भरे होने चाहिए। अगर हम प्रेरित पौलुस की तरह यह समझें कि "परमेश्वर के अनुग्रह से ही मैं वह हूँ जो हूँ" (1 कुरिन्थियों 15:10) और उस अनुग्रह से भरे विश्वास का जीवन जिएं, तो हमारी बातचीत स्वाभाविक रूप से "हमेशा अनुग्रह भरी और नमक से स्वादिष्ट" होगी (कुलुस्सियों 4:6)। नतीजतन, हम दूसरों तक अनुग्रह पहुँचाते हुए अपने होंठों से परमेश्वर की महिमा करेंगे।

यीशु ने कहा, "जो चीज़ मुँह में जाती है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करती; बल्कि जो चीज़ मुँह से निकलती है, वही मनुष्य को अशुद्ध करती है" (मत्ती 15:11), और आगे कहा कि "जो बातें मुँह से निकलती हैं, वे दिल से निकलती हैं" (वचन 18)। अगर हमारे दिल शुद्ध नहीं हैं, तो हमारे मुँह से निकलने वाली बातें भी शुद्ध नहीं हो सकतीं। हालाँकि, हमारे दिल पहले ही यीशु के उस कीमती लहू से शुद्ध हो चुके हैं जो उन्होंने क्रूस पर बहाया था; हम परमेश्वर की संतान हैं, जो उसके अनुग्रह से बचाए गए हैं। इसलिए, जो लोग इस कृपा को और भी गहराई और विस्तार से जान रहे हैं, उनके होंठों से कृपा-भरे शब्द निकलने चाहिए, जो कृपा से भरे दिल से उपजे हों। इसके अलावा, परमेश्वर की भलाई का अनुभव करने के बाद, हमें अच्छे दिल से अच्छी बातें कहनी चाहिए। मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर की भलाई और कृपा हमारी ज़बान से ज़ाहिर हो, और हमारी ज़बान एक कुशल लेखक की कलम की तरह काम करे।

“शांत हो जाओ, और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ।”

[भजन संहिता 46]

“उम्मीद और सब्र के साथ इंतज़ार करना ही आध्यात्मिक जीवन की नींव है” (सिमोन वेल)। अपनी किताब *द स्पिरिचुअलिटी ऑफ़ सॉलिट्यूड* में हेनरी नूवेन कहते हैं कि “सब्र उम्मीद की माँ है,” और सब्र के साथ इंतज़ार करने के बारे में वे कहते हैं: “सब्र के साथ इंतज़ार करने का मतलब है अपने रोने और दुख को शुद्धि की तैयारी बनने देना। इसके ज़रिए, हम आखिरकार उस खुशी का आनंद ले पाएँगे जिसका वादा हमसे किया गया है। ... जब हम मानते हैं कि सब्र हमारी उम्मीदों को बढ़ा सकता है, तभी किस्मत को बुलावे में, ज़ख्मों को गहरी समझ के बुलाव में, और दुख को खुशी के जन्मस्थान में बदला जा सकता है।” इस बारे में आपके क्या विचार हैं? मुझे अय्यूब 23:10 के शब्द याद आते हैं: “वह मेरा रास्ता जानता है; जब वह मुझे परख लेगा, तो मैं सोने की तरह निखरकर बाहर आऊँगा।” ज़िंदगी में आने वाले मुश्किल, कठिन और डरावने हालात हमें निखारने के लिए एक भट्टी की तरह काम करते हैं। उस भट्टी से गुज़रते हुए हममें जो गुण पैदा होते हैं, उनमें से एक है “सब्र।” मिगुएल डी मोलिनोस इसे इस तरह कहते हैं: “दुख के ज़रिए आत्मा की शुद्धि से सब्र पैदा होता है। दुख के बीच, हम प्यार और दया जैसे सबसे ऊँचे गुण विकसित कर सकते हैं। दुख अहंकार को खत्म करता है और शुद्ध करता है। यह दुनिया की चीज़ों को लेकर उन्हें स्वर्ग की चीज़ों में बदल देता है। कोई भी समय हमें परमेश्वर के उतना करीब नहीं लाता जितना तब, जब वह हमें दुख के बीच छोड़ देता है।” मुश्किलों का सामना करते समय हमें क्या करना चाहिए? जब समुद्र में तूफ़ान जैसी अचानक घटनाएँ हम पर, हमारे परिवारों, हमारे कारोबारों और हमारे चर्चों पर टूट पड़ती हैं, तो हमें क्या करना चाहिए? आज, मैं भजन संहिता 46 के आधार पर कुछ बातों पर विचार करना चाहता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि

परमेश्वर की कृपा से, हम अपनी ज़िंदगी की उथल-पुथल भरी लहरों के बीच उनके साथ एक गहरा अनुभव कर सकें।

पहली बात, हमें डरना नहीं चाहिए।

भजन संहिता 46:2–3 देखें: "इसलिए हम नहीं डरेंगे, भले ही धरती हिल जाए और पहाड़ समुद्र के बीच गिर जाएँ, भले ही उसका पानी गरजने और झाग बनाने लगे और पहाड़ उसकी लहरों से काँपने लगें (सेलाह)।" यह अंश सबसे डरावनी घटनाओं का वर्णन करता है—ऐसी घटनाएँ जो दुनिया की नींव को हिला देती हैं (पार्क युन-सन)। मैं सोचता हूँ कि क्या हमारे अपने जीवन में भी ऐसी डरावनी घटनाएँ होती हैं जो हमें अंदर तक हिला देती हैं? वे कौन सी सबसे डरावनी चीज़ें हैं जो हमारे विश्वास की नींव को भी हिलाने का खतरा पैदा करती हैं? मनोवैज्ञानिक हमें बताते हैं कि जब इंसान शक्तिशाली बाहरी चुनौतियों का सामना करता है—यानी जब उसका सामना खुद से ज़्यादा ताकतवर किसी शक्ति से होता है—तो वह बहुत ज़्यादा डर महसूस करता है। फिर भी, इससे भी बड़ा एक डर है: एक ऐसी चुनौती जो बाहर से नहीं, बल्कि अंदर से आती है। वह चुनौती और कुछ नहीं बल्कि अकेलापन है—अकेले होने का एहसास। यह सबसे कट जाने का एहसास है, जब बात करने के लिए कोई न हो, ऐसा लगे कि आपके लिए न तो स्वर्ग है और न ही धरती, और आप पूरी तरह अकेले और बेसहारा छोड़ दिए गए हों। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि अकेलापन—पूरी तरह अकेले रह जाने की सच्चाई—सबसे डरावनी चीज़ है, डर की चरम सीमा है। मेरा मानना है कि इसमें सच्चाई है। बिल्कुल अकेले होने का एहसास... यह सचमुच एक डरावनी चीज़ है। कहा जाता है कि हमारे अंदर छिपा यह अनजाना डर हमारे जीवन को चार मुख्य तरीकों से बर्बाद कर सकता है (ऑनलाइन स्रोतों के अनुसार): (1) डर हमारी क्षमता को पंगु बना देता है। यह हमें जकड़ लेता है, हमें अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल करने से रोकता है और हमें हिचकिचाने पर मजबूर करता है, जिससे आखिरकार हम मौके गंवा देते हैं। (2) डर हमारे रिश्तों को खत्म कर देता है। यह हमें दूसरों के साथ ईमानदार होने से रोकता है। ठुकराए जाने के डर से, हम मुखौटे पहनते हैं, ऐसे बनने का दिखावा करते हैं जो हम असल में नहीं हैं और अपनी सच्ची भावनाओं को नकारते हैं। (3) डर हमारी खुशी में बाधा डालता है। कोई व्यक्ति एक ही समय में खुश और डरा हुआ नहीं रह सकता। (4) डर हमारी सफलता में बाधा डालता है। हम अक्सर उन चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करके

खुद को विफलता की ओर धकेल देते हैं जिनके होने का हमें डर होता है, बजाय उन चीज़ों के जिनकी हमें उम्मीद होती है। डर उन्हीं चीज़ों को सच कर देता है जिनसे हम सबसे ज़्यादा डरते हैं।

व्यवस्थाविवरण 1:29 में, मूसा इस्राएलियों से—और हमसे—कहते हैं: "डरो मत; उनसे भयभीत न हो।" हमें क्यों नहीं डरना चाहिए? व्यवस्थाविवरण 1:30–31 में इसके कुछ कारण बताए गए हैं:

(1) क्योंकि परमेश्वर हमारी ओर से लड़ेंगे। व्यवस्थाविवरण 1:30 देखिए: "तुम्हारा परमेश्वर यहोवा, जो तुम्हारे आगे-आगे चलता है, वह तुम्हारे लिए लड़ेगा, ठीक वैसे ही जैसे उसने मिस्र में तुम्हारी आँखों के सामने तुम्हारे लिए लड़ाई की थी।"

(2) क्योंकि परमेश्वर हमें संभालेगा और हमारी अगुवाई करेगा। व्यवस्थाविवरण 1:31 देखिए: "और जंगल में तुमने देखा कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें वैसे ही उठाए रहा, जैसे कोई पिता अपने बेटे को उठाता है; उसने तुम्हें तब तक संभाले रखा जब तक तुम इस जगह तक नहीं पहुँच गए।"

भजन 27:1–6 में भजनकार दाऊद ने जिन तीन तरीकों से डरावनी स्थितियों का सामना किया और उन पर जीत हासिल की, उन पर हम पहले ही मनन कर चुके हैं। हमें चुनौती दी गई थी कि जब हम अपनी ज़िंदगी में डरावनी स्थितियों का सामना करें, तो इन्हीं तीन सिद्धांतों को अपनाएँ:

(1) हमें पूरे भरोसे (निडरता) के साथ बने रहना चाहिए।

डरावनी स्थितियों के बीच, हमें प्रभु की ओर देखकर निडर बने रहना चाहिए—वही हमारी ज्योति, हमारा उद्धार और हमारे जीवन की शक्ति है। हमें अतीत में मिली जीतों (छुटकारे) की कृपा पर मनन करके निडर बने रहना चाहिए। हमें परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखते हुए अपना भविष्य उनके हाथों में सौंप देना चाहिए।

(2) डरावनी स्थितियों में हमें प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए।

आइए हम एक ही चीज़ की चाह रखें: प्रभु के घर में रहना और उनकी सुंदरता को निहारना। उनके चेहरे को देखकर, आइए हम दिल का सुकून, उनकी सुरक्षा और जीत की उम्मीद पाएँ।

(3) डरावनी स्थितियों में भी हमें अपने परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए।

जीतने वालों के तौर पर, हमें धन्यवाद का बलिदान चढ़ाना चाहिए। पौलुस और सीलास की तरह, हमें जेल के अंदर से भी परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए और उनकी स्तुति करनी चाहिए।

आखिरकार, हमें शांत रहना चाहिए और परमेश्वर को परमेश्वर मानना चाहिए।

भजन 46:10 देखिए: "वह कहता है, 'शांत हो जाओ, और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ; मैं सभी देशों के बीच ऊँचा किया जाऊँगा, मैं धरती पर ऊँचा किया जाऊँगा।'" यहाँ तक कि जब हम सबसे डरावनी स्थितियों का सामना करते हैं—ऐसे हालात जो हमारे विश्वास की नींव को हिला देते हैं—तब भी हमें शांत रहने की ज़रूरत है, जैसा कि भजनकार आज हमें सिखाते हैं। भले ही पहाड़ हिलने और काँपने लगें, हमें चुपचाप परमेश्वर की उपस्थिति में बने रहना चाहिए। हमें परमेश्वर के सामने चुप रहना चाहिए। उस खामोशी में परमेश्वर की आवाज़ को सुनना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें अपने दिलों को बेचैन या विचलित होने से बचाना होगा। आखिरकार, होंठों की खामोशी से कहीं ज़्यादा ज़रूरी है दिल की खामोशी। अब्बा पोमेन ने एक बार कहा था: “हो सकता है कि कोई व्यक्ति चुप दिखे क्योंकि वह बोल नहीं रहा है। फिर भी, अगर उसका दिल किसी दूसरे की बुराई कर रहा है, तो वह असल में लगातार बक-बक कर रहा है। इसके उलट, कोई दूसरा व्यक्ति सुबह से शाम तक बोल सकता है, फिर भी वह सचमुच शांत हो सकता है” (इंटरनेट)।

वह कौन-सी ईश्वरीय आवाज़ है जिसे हमें खामोशी में सुनना चाहिए? आज के वचन—भजन संहिता 46:10—में हमसे जो आवाज़ बात कर रही है, वह हमें यह जानने के लिए बुलाती है कि “वही परमेश्वर है।” इस वचन में परमेश्वर का कैसा रूप सामने आता है? हम चार पहलुओं पर विचार कर सकते हैं:

(1) परमेश्वर हमारी "शरण" है।

आज के वचन को देखें—भजन संहिता 46:1, 7, और 11: "परमेश्वर हमारी शरण है..." (वचन 1), "सेनाओं का यहोवा हमारे साथ है; याकूब का परमेश्वर हमारी शरण है" (वचन 7), "सेनाओं का यहोवा हमारे साथ है; याकूब का परमेश्वर हमारी शरण है" (वचन 11)। उथल-पुथल और संकट से भरी दुनिया में, भजनकार डर के आगे नहीं झुका; इसके बजाय, उसने परमेश्वर में शरण ली। भजनकार ने परमेश्वर की शरण क्यों ली? ऐसा इसलिए था क्योंकि वह उद्धार की कृपा पाना चाहता था। वचन 4 को देखें: "एक नदी है जिसकी धाराएँ परमेश्वर के नगर, यानी परमप्रधान के पवित्र निवास स्थान को आनंदित करती हैं।" यहाँ, "नदी" का अर्थ है "परमेश्वर का प्रकाशन, जो उद्धार का स्रोत है।" इसके अलावा, "परमप्रधान के पवित्र निवास स्थान को आनंदित करना" वाक्यांश का अर्थ है कि वह स्थान जहाँ उद्धार की कृपा वास करती है, आनंद का स्थान बन जाता है (पार्क युन-सन)। संक्षेप में, भजनकार ने परमेश्वर के पवित्र स्थान में शरण ली क्योंकि यही वह आनंद का स्थान है जहाँ उद्धार की कृपा मिलती है।

(2) परमेश्वर इम्मानुएल है—यानी परमेश्वर हमारे साथ है।

आज के वचन को देखें—भजन संहिता 46:7 और 11: "सेनाओं का यहोवा हमारे साथ है; याकूब का परमेश्वर हमारी शरण है" (वचन 7), "सेनाओं का यहोवा हमारे साथ है; याकूब का परमेश्वर हमारी शरण है" (वचन 11)। व्यवस्थाविवरण 1:42 में कहा गया है: "और यहोवा ने मुझसे कहा, 'उनसे कहो, "ऊपर जाकर युद्ध मत करो, क्योंकि मैं तुम्हारे बीच नहीं हूँ, कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने शत्रुओं के सामने हार जाओ।"'" यह वचन यह सच्चाई बताता है कि युद्ध में जीत इस्राएल के लोगों के साथ परमेश्वर की उपस्थिति पर निर्भर करती है; उनकी उपस्थिति के बिना, उन्हें हार का सामना करना पड़ता है। जीत का रहस्य वास्तव में परमेश्वर की उपस्थिति ही है।

(3) परमेश्वर ही हमारी शक्ति है।

आज के वचन, भजन संहिता 46:1 को देखें: "परमेश्वर हमारी शरण और शक्ति है..." क्या आपको भजन संहिता 18:1 के वे शब्द याद हैं, जिन पर हमने पहले ही मनन किया है? "हे यहोवा, मेरी शक्ति, मैं तुझसे प्रेम

करता हूँ।" डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "जिसने गोल्याथ पर केवल एक पत्थर से जीत दिलाई, वह वास्तव में स्वयं शक्ति है। यद्यपि पाप की शक्ति बहुत बड़ी है, परमेश्वर की शक्ति उससे भी कहीं अधिक है।" जब हम गोल्याथ जैसी बड़ी समस्याओं या कठिनाइयों का सामना करते हैं, तो हमें अपनी कमजोरी या अपर्याप्तता का एहसास होता है। ऐसे क्षणों में, हम परमेश्वर की सर्वशक्तिमानता की ओर देखते हैं और उन पर अपना भरोसा रखते हैं।

(4) मुसीबत के समय परमेश्वर हमारे लिए बहुत बड़ी सहायता हैं।

आज के वचन, भजन संहिता 46:1 और 5 को देखें: "परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में बहुत आसानी से मिलने वाली सहायता है" (वचन 1); "परमेश्वर उसके बीच में है; वह कभी नहीं डगमगाएगी; परमेश्वर भोर होते ही उसकी सहायता करेगा" (वचन 5)। परमेश्वर को "संकट में बहुत आसानी से मिलने वाली सहायता" बताने वाले वाक्यांश का मूल हिब्रू अर्थ है "वह जो संकट के समय सहायता के रूप में पूरी तरह से सिद्ध हो चुका है" (पार्क युन-सन)। क्या हमने वास्तव में—मुसीबत और कठिनाई के बीच मिली सहायता के माध्यम से—यह अनुभव किया है कि परमेश्वर ही वह है जो संकट के समय हमारी सहायता करता है? क्या वह सिद्ध परमेश्वर नहीं है—जो संकट के समय सहायता करता है? हमें यह याद रखना चाहिए। हमारा परमेश्वर वह "बड़ी सहायता" है जो हमें मुसीबत के समय मिलती है। इसलिए, चाहे मुसीबत कितनी भी बड़ी क्यों न हो, हमारा परमेश्वर वही रहता है जो हमारी "बड़ी सहायता" है। वह वही परमेश्वर है जो "भोर होते ही" (वचन 5) हमारी सहायता करता है। रात के अंधेरे के विपरीत, भोर उद्धार और आनंद का प्रतीक है (पार्क युन-सन); यह दर्शाता है कि जब हम मुसीबत में होते हैं तो परमेश्वर हमारी सहायता करता है और हमें बचाता है, और हमें उद्धार के आनंद का उपहार देता है। भोर में सहायता करने का अर्थ है "शीघ्र सहायता" (पार्क युन-सन)। इसका एक उदाहरण 2 राजा 19:35 में मिलता है, जहाँ असीरियाई सेना का विनाश—जो एक दैवीय चमत्कार से हुआ था—सुबह-सुबह पता चला। परमेश्वर हमारी समस्याओं का समाधान ऐसे तरीकों से करता है जिनकी हम न तो उम्मीद करते हैं और न ही कल्पना कर पाते हैं। इससे पहले कि हम खुद किसी समस्या को सुलझाने के लिए आगे बढ़ें, वे हमें उसका समाधान खोजने का मौका देते हैं—इसे लाक्षणिक रूप से "सुबह-सुबह" कहा जा सकता है (पार्क युन-सन)।

कहा जाता है कि जब सही समय आता है, तो ईगल (बाज) अपने बच्चों को ऊँचाई पर बने घोंसले की सुरक्षा से बाहर निकालकर ट्रेनिंग देना शुरू करता है। ईगल सबसे पहले घोंसले में कांटे लाता है और उन पर अपने पंख फड़फड़ाता है। जब कांटों की चुभन होती है, तो बच्चे घबराकर घोंसले से बाहर निकल आते हैं। वे अपने पिता ईगल की नकल करते हुए पंख फड़फड़ाकर उड़ने की कोशिश करते हैं; लेकिन ज़रूरी ताकत न होने के कारण, वे निश्चित रूप से ऊँचाई से नीचे गिरते हैं। कहते हैं कि तब पिता ईगल उन्हें पकड़ने और अपने पंखों पर संभालने के लिए अपने पंख फैला देता है। गिरते समय वे बच्चे कितना डर जाते होंगे! फिर भी, अगर उन्हें पता हो कि उनके पिता उन्हें पकड़ने और संभालने के लिए अपने पंख फैला देंगे, तो क्या उन्हें शांति और भरोसे का एहसास नहीं होगा? आइए इस बात को याद रखें: जब बच्चा घोंसला छोड़ता है और ऊँचाई से गिरता है, तभी वह असल में पिता ईगल द्वारा बचाए जाने का अनुभव करता है। इसलिए, आइए हम डरें नहीं। अगर एक ईगल ऐसा करता है, तो हमारे स्वर्गीय पिता हमारे लिए और कितना कुछ करेंगे? वे हमारी शरण हैं, इम्मानुएल परमेश्वर जो हमेशा हमारे साथ रहते हैं, हमारी ताकत हैं, और मुसीबत के समय में तुरंत मदद करने वाले हैं।

हमें परमेश्वर की स्तुति क्यों करनी चाहिए?

[भजन संहिता 47]

अक्सर कहा जाता है कि स्तुति में तीन तरह की शक्ति होती है (ऑनलाइन स्रोतों के अनुसार): पहली, स्तुति में "ऊपर ले जाने की शक्ति" होती है। जो स्तुति हमें प्रभु के करीब लाती है, वह ऊपर की ओर ले जाने वाली शक्ति का काम करती है। ऊपर ले जाने की इस शक्ति को "विश्वास के लिए मार्गदर्शक" कहा जा सकता है। दूसरी, स्तुति में "दिल को छूने की शक्ति" होती है। जो स्तुति हमारे अंदर सुकून, शांति, पश्चाताप, खुशी, संकल्प और हिम्मत जगाती है, वह हमारे दिल की गहराई तक पहुँचती है। जो स्तुति हमारे अंदर जाकर खुशी और हिम्मत भरती है, वह उम्मीद की ओर ले जाने वाले मार्गदर्शक का काम करती है। आखिर में, तीसरी, स्तुति में "बाहर तक पहुँचने की शक्ति" होती है। जो स्तुति विश्वास और उम्मीद जगाती है, वह एक और अहम भूमिका निभाती है: यह "प्यार के लिए मार्गदर्शक" का काम करती है और बाहर तक पहुँचने वाली इस शक्ति को दिखाती है। स्तुति दुखी दिल को सुकून देती है, उदासी के समय मन को उठाती है, शुक्रगुजार होने का भाव पैदा करती है और उलझे हुए विचारों को साफ करती है। जो लोग आराधना के दौरान पूरे जोश के साथ भजन गाते हैं, उनका दिल परमेश्वर पर टिका होता है और वे सच में आराधना के भाव को महसूस करते हैं। इसलिए, अगर हम भरपूर अनुग्रह पाना चाहते हैं, तो हमें पूरे दिल से स्तुति करनी चाहिए।

हमें परमेश्वर की ऐसी "शक्तिशाली" स्तुति करनी चाहिए। इसका क्या कारण है? हमें परमेश्वर की स्तुति क्यों करनी चाहिए? आज, मैं भजन संहिता 47 में बताए गए तीन कारणों पर बात करना चाहता हूँ। मेरी प्रार्थना है कि इसके ज़रिए हम सब ऐसे लोग बन सकें जो परमेश्वर की सच्ची और सही स्तुति करते हैं। पहला कारण यह है कि हमें परमेश्वर की स्तुति इसलिए करनी चाहिए क्योंकि वह सबसे ऊँचे परमेश्वर हैं।

भजन संहिता 47:2 और आयत 9 का आखिरी हिस्सा देखिए: "क्योंकि प्रभु सबसे ऊँचे और अद्भुत हैं, वे पूरी धरती के महान राजा हैं" (आयत 2); "...धरती की ढालें प्रभु की हैं; वे बहुत ऊँचे स्थान पर हैं" (आयत 9b)। इसका क्या मतलब है कि वह सबसे ऊँचे परमेश्वर हैं? इसका मतलब है कि वह सबसे ऊँचे स्थान पर हैं—सबसे महान हैं। इसका मतलब है कि वह बेमिसाल महिमा और सम्मान वाले परमेश्वर हैं। जब हम सबसे ऊँचे परमेश्वर की स्तुति करते हैं, तो हमें उनकी महानता को नहीं भूलना चाहिए। इसका मतलब है कि हमें यह याद रखना चाहिए कि परमेश्वर ही आदर और श्रद्धा के योग्य हैं। दूसरे शब्दों में, जब हम सबसे ऊँचे परमेश्वर की स्तुति करते हैं, तो हमारा मन आदर और श्रद्धा से भरा होना चाहिए। हालाँकि यह एक स्पष्ट सच है, फिर भी ऐसा लगता है कि जब हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं, तो अक्सर हम आदर के बजाय बहुत ज़्यादा अनौपचारिक या बेपरवाह व्यवहार करते हैं। दूसरे शब्दों में, सबसे ऊँचे परमेश्वर की स्तुति करते समय अपनी तुच्छ स्थिति को भूलकर, हम अपनी मर्ज़ी और आराम के अनुसार स्तुति करते हैं। आइए इस पर विचार करें: क्या यह स्वाभाविक नहीं है कि हम—जो सबसे तुच्छ हैं—जब सबसे ऊँचे परमेश्वर की स्तुति करें, तो हमारे मन में उनके प्रति आदर और श्रद्धा का भाव हो?

क्या सबसे ऊँचे परमेश्वर की की गई स्तुति सचमुच उनकी महिमा बढ़ाती है—जो पहले से ही सर्वोच्च हैं—या यह हमारी अपनी महिमा बढ़ाती है (या हमारा ध्यान अपनी ओर खींचती है)? इससे निर्गमन (Exodus) की घटना याद आती है: जब मूसा सीनै पर्वत पर थे, तो इस्राएलियों ने सोने का बछड़ा बनाया और—जैसा कि बाइबल में लिखा है—"खाया-पिया" (निर्गमन 32:6), गाया और नाचा (पद 19), और "मौज-मस्ती में डूब गए" (पद 6)। मुझे चिंता है कि सबसे ऊँचे परमेश्वर की स्तुति करने का दावा करते हुए, कहीं हम भी इस्राएलियों की तरह ही तो नहीं कर रहे हैं—बस खाना-पीना, गाना और नाचना। जब हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर की स्तुति करते हैं, तो हमें यूहन्ना 3:30 के शब्दों को अपनाना चाहिए: "उसे बढ़ना है, और मुझे घटना है..." दूसरे शब्दों में, जैसे-जैसे हम सबसे ऊँचे परमेश्वर की स्तुति करते हैं और परमेश्वर के रूप में उनके स्वभाव की महिमा करते हैं, हमें खुद को कम करना चाहिए। हमें विनम्र बनना चाहिए और खुद को छोटा समझना चाहिए।

हमें विनम्रतापूर्वक सर्वशक्तिमान परमेश्वर—सबसे ऊँचे परमेश्वर—की स्तुति करनी चाहिए। मुझे भजन 40, "हाउ ग्रेट दाऊ आर्ट" (कोरियाई शीर्षक: "प्रभु परमेश्वर द्वारा रची गई सारी दुनिया") याद आता है। खासकर इसका कोरस याद आता है: "मेरी आत्मा प्रभु की महानता और महिमा की स्तुति करती है; मेरी आत्मा प्रभु की महानता और महिमा की स्तुति करती है।"

दूसरी बात, हमें परमेश्वर की स्तुति इसलिए करनी चाहिए क्योंकि वह ऐसे प्रभु हैं जो हमसे बहुत प्रेम करते हैं।

भजन संहिता 47:4 पर विचार करें: "उसने हमारे लिए हमारी विरासत चुनी—याकूब की महिमा, जिससे वह प्रेम करता था (सेला)।" परमेश्वर का प्रेम तब दिखाई दिया जब उन्होंने इस्राएल के लोगों को चुना और उन्हें एक विरासत दी—कनान देश (वादा किया हुआ देश), जिसे "याकूब की महिमा" कहा गया है। जो लोग चुने गए हैं, उनके लिए यह एक गहरा और सबसे बड़ा प्रेम है (पार्क युन-सन)। इसीलिए प्रेरित पौलुस कहते हैं: "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता की स्तुति हो, जिसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में हर तरह की आत्मिक आशीष दी है, ठीक वैसे ही जैसे उसने दुनिया की नींव रखने से पहले हमें उसमें चुना था, ताकि हम उसके सामने पवित्र और निर्दोष बनें" (इफिसियों 1:3-4)। परमेश्वर द्वारा चुने गए और उनके असीम प्रेम को पाने वाले लोगों के तौर पर, हमें उनकी स्तुति करनी चाहिए। असल में, जिस मकसद से परमेश्वर ने हमें मसीह में चुना, वह हमें "उनकी महिमा की स्तुति" बनाना था (पद 12)। इसका सीधा मतलब यह है कि हम, चुने हुए संत, परमेश्वर की महिमा की स्तुति के लिए ही हैं (पार्क युन-सन)। हमारे उद्धार का सबसे बड़ा मकसद परमेश्वर की महिमा की स्तुति करना है।

इसलिए, हमें परमेश्वर के उद्धार के अनुग्रह के लिए उनकी स्तुति करनी चाहिए। हमें यह स्तुति खुशी-खुशी, संगीत वाद्ययंत्रों के साथ करनी चाहिए (पद 5)। एक भजन जो मन में आता है वह है "परमेश्वर का प्रेम बहुत महान है" (भजन 404, पद 1): "परमेश्वर का प्रेम बहुत महान है / जिसे जीभ या कलम कभी बता नहीं सकती; / यह सबसे ऊँचे तारे से भी परे है, / और सबसे गहरे नर्क तक पहुँचता है; / दोषी जोड़े को, जो चिंताओं से दबा था, / परमेश्वर ने अपने बेटे को उन्हें बचाने के लिए दिया; / उसने अपने भटकते बच्चे का मेल-मिलाप

कराया, / और उसके पापों को क्षमा किया।" (कोरस) "हे परमेश्वर का प्रेम, कितना समृद्ध और शुद्ध! / कितना असीम और मजबूत! / यह हमेशा बना रहेगा— / संतों और स्वर्गदूतों का गीत।"

आखिर में, तीसरा कारण जिसकी वजह से हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए, वह यह है कि वह राजा हैं जो हम पर शासन करते हैं।

भजन संहिता 47:8 को देखें: "परमेश्वर जातियों पर शासन करते हैं; परमेश्वर अपने पवित्र सिंहासन पर विराजमान हैं।" हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए—वह जो पवित्र सिंहासन पर विराजमान है, जो "महान राजा" (पद 2), "पूरी पृथ्वी का राजा" (पद 7) और राष्ट्रों का शासक (पद 8) है। इसलिए, भजनकार हमें प्रोत्साहित करता है: "परमेश्वर की स्तुति गाओ, स्तुति गाओ! हमारे राजा की स्तुति गाओ, स्तुति गाओ!" (पद 6)। इसके अलावा, अब्राहम के परमेश्वर के लोगों के रूप में राजा के तौर पर उनकी स्तुति करने के लिए हमारे इकट्ठा होने का कारण यह है कि यह राजा—हमारा प्रभु—हमारी रक्षा करता है (पद 9)।

हमें "बुद्धि के भजन" (पद 7) के साथ अपने राजा परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। इसका अर्थ है ऐसे बुद्धिमान हृदय से उनकी स्तुति करना जो वास्तव में उन्हें जानता हो। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि सच्चे ज्ञान की नींव के बिना परमेश्वर की स्तुति करने का खतरा हो सकता है। ऐसी भावनात्मक स्तुति जिसमें यह नींव न हो, उसके परमेश्वर के बजाय स्वयं को प्रसन्न करने वाला कार्य बन जाने का जोखिम रहता है। हमें अपने राजा परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। सुसमाचार का गीत "माई गॉड, माई किंग" (मेरे परमेश्वर, मेरे राजा) याद आता है: "मेरे परमेश्वर, मेरे राजा, मैं तेरी महिमा करूँगा और सदा तेरे नाम को धन्य कहूँगा।"

आज भजन संहिता 47 पर अपने चिंतन को समाप्त करते हुए, जो भजन मन में आता है, वह है भजन 403, "फॉर मी, अपॉन द क्रॉस" (मेरे लिए, क्रूस पर)। कहा जाता है कि रॉबर्ट लोरी (1826–1899) ने ही इस भजन के बोल लिखे थे और इसका संगीत तैयार किया था। कहा जाता है कि मूल बोल इस प्रकार हैं: (पद 1) "मेरा जीवन एक अंतहीन गीत के रूप में बहता है; मैं उस कोमल, गूंजते हुए भजन को सुनता हूँ—जो दूर से सुनाई देता है—और जो इस पृथ्वी के दुखों के बीच एक नई रचना का स्वागत करता है। वह ध्वनि मेरी आत्मा के

भीतर गूंजती है; मैं स्तुति कैसे न करूँ?" (पद 2) "भले ही मेरी खुशी और आराम फीके पड़ जाएं, इससे क्या फर्क पड़ता है जब मेरा उद्धारकर्ता जीवित है? वह रात के अंधेरे में एक गीत देता है; इससे क्या फर्क पड़ता है कि अंधेरा मुझे घेरे हुए है? प्रभु की शरण में सुरक्षित, तूफान भी मेरी आत्मा की गहराई में बसी शांति को नहीं हिला सकता। मसीह स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु हैं; मैं स्तुति कैसे न करूँ?" इन मूल बोलों को पढ़ते हुए, "मेरी ज़िंदगी एक कभी न खत्म होने वाले गीत की तरह बहती रहती है" वाली लाइन मुझे याद दिलाती है कि हमारी ज़िंदगी और हमारी स्तुति एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकतीं। जब तक हमारे शरीर में साँस है, हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए—जो सबसे ऊँचे हैं, जो प्रेम के परमेश्वर हैं और हमसे बहुत प्यार करते हैं, और जो हमारे राजा हैं और हम पर राज करते हैं।

वह परमेश्वर जो मृत्यु तक हमारी अगुवाई करता है

[भजन संहिता 48]

जब आप अपने अतीत को देखते हैं, तो आपको किन मुश्किलों का सामना करना पड़ा था? क्या आपको वे खास पल याद हैं जो आपके दिल में गहराई से बसे हुए हैं—और क्या आपको उन मुश्किलों के बीच परमेश्वर की अगुवाई और बचाने वाली कृपा का अनुभव भी याद है? आज, मैं एक नर्सिंग होम गया और हमारी चर्च की सदस्य श्रीमती जांग यूल-सू के साथ समय बिताया। उनसे बात करते हुए, मैंने अपने पहले बच्चे, जू-यंग की कहानी संक्षेप में बताई। मैंने यह बात इसलिए कही क्योंकि पीछे मुड़कर देखने पर, मुझे लगा कि—बच्चे के नज़रिए को समझने के बजाय माता-पिता की इच्छा से प्रेरित होकर—क्या मैंने बीमारी के दौरान बच्चे को बेवजह तकलीफ दी थी? श्रीमती जांग के साथ इस पर चर्चा करते हुए, हमने इस बात पर विचार किया कि जीवन में, शुरुआत से ज़्यादा ज़रूरी प्रक्रिया और सबसे बढ़कर, अंत होता है। जब हम अतीत की मुश्किलों के दौरान परमेश्वर की कृपा को याद करते हैं, तो प्रभु की दी हुई कृपा से हम वर्तमान की मुश्किलों पर भी काबू पा सकते हैं।

हम अक्सर जो भजन गाते हैं, उनमें से एक है "तेरी इच्छा पूरी हो" (भजन 431)। इस भजन की पृष्ठभूमि इस प्रकार है: एक पादरी थे जिन्होंने तब आँसुओं के साथ प्रार्थना की थी जब तीस साल के धार्मिक युद्ध के कारण पूरा जर्मनी बर्बाद हो गया था। वे सताए हुए विश्वासियों के घरों में जाकर उन्हें सांत्वना का संदेश देते थे। हालात और भी खराब हो गए जब जर्मनी में 'ब्लैक डेथ' (महामारी) फैल गई, जिसमें एक करोड़ से ज़्यादा लोगों की जान चली गई; कहा जाता था कि देश एक "विशाल कब्रिस्तान" जैसा हो गया था। एक दिन, एक गंभीर रूप से बीमार विश्वासी के घर जाने के बाद, जब पादरी और उनकी पत्नी घर लौटे तो उन्होंने एक भयानक दृश्य देखा: उनका चर्च और उनका अपना घर जलकर राख हो गए थे। उनके दो प्यारे बेटे एक-

दूसरे को गले लगाए हुए मृत पड़े थे। कहा जाता है कि उस जोड़े ने, रोते हुए और अपने बेटों के शवों को थामे हुए, एक शांत प्रार्थना की: "हे प्रभु, तेरी इच्छा पूरी हो; मैं अपना तन-मन तुझे सौंपता हूँ; मुझे इस दुनिया के सुख-दुख से होकर ले चल; मुझ पर शासन कर और तेरी इच्छा पूरी हो।" ये व्यक्ति पादरी बेंजामिन श्मोलक थे। उस पल की गई प्रार्थना को बाद में संगीतबद्ध किया गया, जो भजन संख्या 431, "हे प्रभु, तेरी इच्छा पूरी हो" बना। सच्चा विश्वास दुख और मुश्किलों के बीच भी परमेश्वर की आज्ञा मानने में है।

आज जब मैं भजन संहिता 48 पर मनन कर रहा था, तो मेरा ध्यान खास तौर पर 14वीं आयत पर गया: "क्योंकि यह परमेश्वर सदा-सर्वदा हमारा परमेश्वर है; वह मृत्यु तक हमारा मार्गदर्शन करेगा।" इसी आयत पर केंद्रित—"वह परमेश्वर जो मृत्यु तक हमारा मार्गदर्शन करता है" शीर्षक के तहत—मैं "इस परमेश्वर" के चार पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ और अपनी ज़िम्मेदारियों के बारे में चार सबक सीखना चाहता हूँ।

पहला, जो परमेश्वर मृत्यु तक हमारा मार्गदर्शन करता है, वह महान और महिमावान परमेश्वर है।

भजन संहिता 48:1 को देखिए: "प्रभु महान है, और हमारे परमेश्वर के नगर में, उसके पवित्र पर्वत पर उसकी बहुत स्तुति की जानी चाहिए।" जो परमेश्वर मृत्यु तक हमारा मार्गदर्शन करता है, वह सामर्थी परमेश्वर है। इसके अलावा, यह सामर्थी परमेश्वर "महान राजा" है (आयत 2)। क्योंकि वह इतना महान है, इसलिए जिस तरह से हमारा महिमावान परमेश्वर हमें बचाता है, वह भी अद्‌भुत है। फिर भी, हम अक्सर परमेश्वर के उद्धार के तरीके की महानता को कम करके आंकते हैं। दूसरे शब्दों में, क्योंकि हम पूरी तस्वीर नहीं देख पाते, इसलिए हमारे दिल परमेश्वर के उद्धार के तरीके के बारे में अपने ही विचारों और उम्मीदों से भरे होते हैं। जब परमेश्वर उस तरह से उद्धार नहीं करता जैसा हम सोचते हैं, तो हम शिकायत कर सकते हैं या निराश होकर हार मान सकते हैं। मिस्र से निकलने के दौरान इस्राएलियों के साथ ठीक यही हुआ था; उन्होंने परमेश्वर और मूसा के खिलाफ बड़बड़ाहट की। फिर भी, वे प्रभु की इच्छा—या उद्धार के उसके तरीके—को नहीं समझ पाए कि उसने उन्हें चालीस साल तक जंगल में क्यों भटकने दिया। प्रभु का मकसद यह था: "तुम्हें नम्र बनाना और तुम्हारी परीक्षा लेना ताकि अंत में तुम्हारा भला हो" (व्यवस्थाविवरण 8:16)।

मुझे एक समय याद है जब मैं यूसुफ के जीवन पर मनन कर रहा था और परमेश्वर के उद्धार के तरीके को देखकर हैरान रह गया था। मैंने सोचा कि परमेश्वर ने यूसुफ को कैसे बचाया—उसे तुरंत मुसीबत से निकालकर नहीं, बल्कि एक मुश्किल हालात से दूसरे हालात में ले जाकर—जब तक कि तेरह साल बाद, वह तीस साल का नहीं हो गया और मिस्र का प्रधानमंत्री नहीं बन गया। उसे बचाने के परमेश्वर के तरीके में कई परीक्षाएं शामिल थीं: उसने यूसुफ को मौत से तो बचाया, लेकिन उसे मिस्र में पोतीफर के हाथों गुलाम के तौर पर बिकने दिया; बाद में, पोतीफ़र की पत्नी के बहकावे में आने के कारण यूसुफ को जेल में डाल दिया गया... यह छुटकारा पाने का एक ऐसा सफ़र था जो एक मुश्किल से दूसरी मुश्किल की ओर बढ़ता गया। फिर भी, आखिरकार परमेश्वर ने यूसुफ को मिस्र का प्रधानमंत्री बनाया और इसराइल देश को बचाने के लिए उसका इस्तेमाल किया। अपनी महान योजना में, परमेश्वर का मकसद सिर्फ़ यूसुफ को बचाना नहीं था; उसे लगातार आज़माइशों से गुज़ारकर और छुटकारा दिलाकर, उन्होंने आखिरकार पूरे इसराइल देश को बचाया। परमेश्वर के बचाने का तरीका कितना शानदार है!

आइए हम यह याद रखें: हमारा महान परमेश्वर ही वह है जो हमें बचाता है और अपनी महान उद्धार की योजना के अनुसार हमारी अगुवाई करता है। चाहे वह हमें जंगल में ले जाए या अकोर की घाटी से गुज़ारे, हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि आखिरकार वह हमें "आशीष" देना चाहता है।

दूसरी बात, जो परमेश्वर हमारी ज़िंदगी के आखिर तक हमारी अगुवाई करता है, वही हमारी पनाहगाह है।

भजन संहिता 48 की आयत 3 देखें: "परमेश्वर ने उसके महलों में खुद को एक पनाहगाह के तौर पर ज़ाहिर किया है।" जो परमेश्वर हमारी मौत के दिन तक हमारी अगुवाई करता है, वही हमारी पनाहगाह बनता है। जैसे परमेश्वर का पवित्र शहर "ऊंचाई में सुंदर" है (आयत 2), वैसे ही परमेश्वर—हमारी पनाहगाह—हमारा मज़बूत किला बन जाता है (आयत 3)। हमारे मज़बूत किले और पनाहगाह के तौर पर, वह हमारी रक्षा करता है। इसीलिए दाऊद ने कहा: "भले ही मैं मौत की छाया की घाटी से गुज़रूँ, मैं किसी बुराई से नहीं डरूँगा, क्योंकि तू मेरे साथ है; तेरी लाठी और तेरी छड़ी मुझे दिलासा देती हैं" (23:4)। हमें मौत की छाया की घाटी से गुज़रते समय भी डरने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि परमेश्वर, जो हमारी पनाहगाह है, हमारी रक्षा करता है और हमें दिलासा देता है।

इस परमेश्वर ने खुद को एक "पनाहगाह" के तौर पर ज़ाहिर किया है (48:3)। हमारा परमेश्वर वह है जो बार-बार अपने लोगों को बचाने के लिए उद्धारकर्ता के रूप में सामने आता है। पुराने नियम में इसराइल के लोगों के उद्धार के इतिहास पर गौर करें; क्या परमेश्वर ने उन्हें सिर्फ़ एक या दो बार बचाया? जब हम "यीशु" नाम पर सोचते हैं—जिसका मतलब है "परमेश्वर उद्धार है"—तो हम देखते हैं कि हमारे प्रभु को हमें बचाने में खुशी मिलती है। यही परमेश्वर हमारी पनाहगाह है। इसलिए, हमें उस परमेश्वर के पास जाना चाहिए जो खुद को हमारी पनाहगाह बताता है। इसलिए, दाऊद ने प्रार्थना की: "मेरी ओर कान लगा, मुझे जल्दी से बचा ले; मेरे लिए शरण की चट्टान और उद्धार का गढ़ बन जा। क्योंकि तू ही मेरी चट्टान और मेरा गढ़ है; इसलिए, अपने नाम की खातिर, मेरी अगुवाई कर और मुझे राह दिखा" (31:2-3)।

तीसरी बात, जो परमेश्वर हमारी मृत्यु के दिन तक हमारी अगुवाई करता है, वही हमें जीत दिलाता है... वही परमेश्वर है।

भजन संहिता 48:4–5 को देखें: "देखो, राजा इकट्ठे हुए; वे सब मिलकर आगे बढ़े। उन्होंने उसे देखा और हैरान रह गए; वे घबरा गए और जल्दी से भाग गए।" यह अंश बताता है कि कैसे विदेशी राजा यरूशलेम पर हमला करने और उसे जीतने के लिए इकट्ठे हुए थे, लेकिन कोहरे की तरह गायब हो गए। परमेश्वर की शक्ति को देखकर, हमलावर डर गए और भाग गए (पार्क युन-सन)। आखिरकार, जैसे उसने पूर्वी हवा से तर्शीश के जहाजों को तोड़ दिया था, वैसे ही प्रभु ने राष्ट्रों की ताकत को नष्ट कर दिया और इस तरह इज़राइल को जीत दिलाई। हमारा परमेश्वर वह है जो हमारी ओर से हमारे दुश्मनों को हराता है और हमें जीत देता है। व्यवस्थाविवरण 20:4 पर विचार करें: "क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साथ चलता है, ताकि वह तुम्हारे दुश्मनों के खिलाफ तुम्हारे लिए लड़े और तुम्हें बचाए।" इसलिए, भजनकार ने भी अपने धनुष या तलवार पर भरोसा नहीं किया, बल्कि पूरी तरह से प्रभु पर भरोसा किया, जो उसे दुश्मनों से बचाता है और जीत दिलाता है (भजन संहिता 44:6–7)।

व्यक्तिगत रूप से, जब मैं हमारे चर्च के सीनियर पादरी द्वारा चीन में किए गए मिशनरी काम के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे 1 कुरिन्थियों 10:13 याद आता है: "तुम पर कोई ऐसी परीक्षा नहीं आई जो इंसानों के लिए आम न हो; लेकिन परमेश्वर सच्चा है, वह तुम्हें तुम्हारी क्षमता से ज़्यादा परीक्षा में नहीं पड़ने देगा, बल्कि

परीक्षा के साथ-साथ उससे बचने का रास्ता भी निकालेगा, ताकि तुम उसे सह सको।" जब हम सुनते हैं कि कैसे परमेश्वर सीनियर पादरी को खतरे के पलों से बचाता है, तो हम सचमुच देखते हैं कि वह उद्धार का परमेश्वर है और वही हमें जीत दिलाता है।

आइए हम इसे याद रखें: हमारा परमेश्वर ही हमें अंततः जीत की ओर ले जाता है। इसलिए, हमें उस जीत पर भरोसा रखते हुए विश्वास के साथ जीना चाहिए।
आखिर में, चौथा पॉइंट यह है कि जो परमेश्वर आखिर तक हमारी अगुवाई करता है, वह धार्मिकता से भरा हुआ परमेश्वर है।

भजन संहिता 48:10 को देखिए: "हे परमेश्वर, जैसे तेरा नाम है, वैसे ही तेरी स्तुति पृथ्वी के छोर तक पहुँचती है; तेरा दाहिना हाथ धार्मिकता से भरा है।" "तेरा दाहिना हाथ धार्मिकता से भरा है" इस बात का मतलब है कि परमेश्वर हमेशा अपना न्याय करता है—अच्छे लोगों को इनाम देता है और बुरे लोगों को सज़ा देता है—और आखिर में उस सच्चे विश्वास करने वाले को सही ठहराता है जिसके साथ अन्याय हुआ है (पार्क युन-सन)। जब हम अपनी शिकायतें उसके सामने रखते हैं, तो वह धार्मिकता से भरा परमेश्वर हमारे साथ हुई गलतियों को ठीक करता है।

इसका एक असल उदाहरण पास्टर गोमेज़ के बेटे के मामले में देखा जा सकता है, जो हमारे चर्च में हिस्पैनिक मिनिस्ट्री (Hispanic ministry) चलाते हैं। लगभग दो हफ़्ते पहले, मुझे उनके बेटे, विक्टर जूनियर से जुड़े एक मुक़दमे के बारे में पता चला। ऐसा लगता है कि एक कार एक्सीडेंट हुआ था जिसमें गलती दूसरी पार्टी की थी, फिर भी उस व्यक्ति ने पास्टर गोमेज़ के बेटे पर ही मुक़दमा कर दिया। दूसरी पार्टी का व्यक्ति एक प्रभावशाली राजनेता लग रहा था; नतीजतन, जिस पुलिस अधिकारी ने एक्सीडेंट की रिपोर्ट दर्ज की थी, उसने कथित तौर पर राजनेता का पक्ष लेने के लिए अदालत में झूठ बोला। इसके अलावा, जिस कंपनी में पास्टर गोमेज़ का बेटा काम करता था, उसने भी उसके खिलाफ़ गवाही दी। पास्टर गोमेज़ और उनकी पत्नी बहुत मुश्किल दौर से गुज़रे और सच्चे दिल से परमेश्वर की मदद मांगी। इसी बीच, पास्टर गोमेज़ को एक दिलचस्प सपना आया जिसमें आसमान से उस राजनेता, झूठी रिपोर्ट दर्ज करने वाले पुलिस अधिकारी और कंपनी के लोगों पर आग गिरी। आखिरकार, लगभग दो हफ़्ते पहले, जज ने पास्टर गोमेज़ के बेटे के पक्ष में फ़ैसला

सुनाया। केस जीतने के बाद, उनके बेटे के वकील ने दो सुझाव दिए: एक तो यह कि दूसरी पार्टी उसे उस कमाई का मुआवज़ा दे जो कानूनी कार्यवाही के दौरान काम न कर पाने की वजह से उसे नहीं मिल पाई, और दूसरा यह कि वह भी पलटकर मुक़दमा करे और अदालत उनके झूठ और गलत व्यवहार पर आधिकारिक फ़ैसला सुनाए। हालाँकि, पास्टर गोमेज़ के अनुसार, उन्होंने इस मामले को आगे न बढ़ाने का फ़ैसला किया। इसमें मुझे सचमुच अद्‌भुत विश्वास दिखाई देता है। बेशक, जैसा कि आज का बाइबिल का वचन हमें बताता है, मैंने भी—कम से कम अप्रत्यक्ष रूप से—यह सच अनुभव किया है कि परमेश्वर, जो न्याय से भरपूर हैं, हम विश्वासियों की शिकायतों का न्याय करते हैं। फिर भी, इससे भी ज़्यादा अद्‌भुत बात यह है कि दूसरी पार्टी के राजनेता और झूठ बोलने वाले पुलिस अधिकारी के खिलाफ़ आरोप लगाने का विकल्प होने के बावजूद, उन्होंने रुकने का फ़ैसला किया। इससे मुझे यह एहसास हुआ कि बदला लेना परमेश्वर का काम है; दूसरे शब्दों में, हमें पता होना चाहिए कि कब रुकना है और कब पीछे हटना है। ऐसा क्यों है? इसलिए क्योंकि हमें बदला लेने का काम न्याय करने वाले परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए। परमेश्वर, जो न्याय से भरपूर हैं, इस मामले को संभाल लेंगे। वह हमारे विरोधियों को हरा देंगे। हमें इस परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए और उनके मार्गदर्शन का पालन करना चाहिए।

जो परमेश्वर हमारी मृत्यु के दिन तक हमारा मार्गदर्शन करते हैं, वे महान और महिमामय परमेश्वर हैं; वे हमारी शरण हैं, हमें जीत दिलाने वाले हैं, और न्याय से भरपूर परमेश्वर हैं। तो फिर, जो परमेश्वर हमारी अगुवाई करता है, उसके प्रति हमें कैसा रवैया अपनाना चाहिए? हम चार बातों पर विचार कर सकते हैं:

(1) हमें पूरे दिल से अपने परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए।

आज के हमारे वचन, भजन संहिता 48:1 को देखिए: "प्रभु महान है, और हमारे परमेश्वर के नगर में, उसके पवित्र पर्वत पर, स्तुति के योग्य है।" आइए हम सबसे ऊँचे परमेश्वर की स्तुति करें—वह परमेश्वर जो हमसे प्रेम करता है और हमारे राजा के रूप में राज्य करता है: "परमेश्वर का भजन गाओ, भजन गाओ; हमारे राजा का भजन गाओ, भजन गाओ" (47:6)। पौलुस और सीलास की तरह, जेल की कैद में भी, हमें विश्वास के साथ प्रार्थना करके और स्तुति के गीत गाकर अपने महान परमेश्वर के अद्‌भुत उद्धार का अनुभव करना चाहिए।

इसलिए, हमें परमेश्वर के पवित्र मंदिर में आना चाहिए और इस महान और अद्भुत परमेश्वर की भरपूर स्तुति करनी चाहिए।

(2) हमें परमेश्वर के मंदिर में उसकी दयालुता पर मनन करना चाहिए। आज के वचन, भजन संहिता 48:9 को देखिए: "हे परमेश्वर, हमने तेरे मंदिर के बीच तेरी दयालुता पर विचार किया है।" यहाँ, मूल हिब्रू शब्द जिसका अनुवाद "विचार किया" (*damam*) के रूप में किया गया है, उसका अर्थ है बेसब्री से प्रतीक्षा करना या उम्मीद करना। भजनकार ने मुसीबत के समय हिम्मत नहीं हारी; इसके बजाय, उसने परमेश्वर—अपनी शरण—में आश्रय लिया और प्रभु की कृपा की बेसब्री से प्रतीक्षा की। नतीजतन, भजनकार को प्रभु की महानता का एहसास हुआ (पार्क युन-सन)। हमें भी मुसीबत के समय हिम्मत नहीं हारनी चाहिए, बल्कि परमेश्वर के मंदिर में प्रभु की कृपा की बेसब्री से प्रतीक्षा करनी चाहिए। उसकी दयालुता की प्रतीक्षा करते हुए, हमें परमेश्वर की महानता को समझना चाहिए।

(3) हमें आनंदित और खुश होना चाहिए।

आज के वचन, भजन संहिता 48:11 को देखिए: "सिय्योन पर्वत आनंदित हो, यहूदा की बेटियाँ खुश हों, तेरे न्याय के कारण।" हम न्याय से भरपूर परमेश्वर के सही फैसलों के कारण आनंदित और खुश हो सकते हैं। हम आनंदित और खुश हो सकते हैं क्योंकि वह ऐसा परमेश्वर है जो हमें जीत दिलाता है। इसके अलावा, क्योंकि हम प्रभु के सही फैसलों के माध्यम से उसके उद्धार का अनुभव करते हैं, इसलिए हम उस उद्धार में आनंदित और खुश हो सकते हैं।

(4) हमें इसे आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाना चाहिए। आज के वचन, भजन संहिता 48:13 को देखिए: "उसकी शहरपनाह (दीवारों) पर ध्यान दो; उसके महलों को देखो; ताकि तुम आने वाली पीढ़ी को इसके बारे में बता सको।" भजनकार हमें ज़ियोन (यरूशलेम) की सुरक्षा और सुंदरता को ध्यान से देखने के लिए कहता है—जो वहाँ परमेश्वर की उपस्थिति से सुरक्षित है—और इस जानकारी को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए कहता है। मिस्र से निकलने के समय इज़राइल की पहली पीढ़ी ने जो गलतियाँ की थीं, उनमें से एक यह थी कि वे आने वाली पीढ़ियों को परमेश्वर के बचाने वाले कामों का इतिहास नहीं सिखा पाए। नतीजतन, बाद

की पीढ़ियों ने भी कनान देश में प्रवेश करने के बाद मूर्तिपूजा करके परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया। इसलिए, हमें व्यवस्थाविवरण 6:6–7 के शब्दों को याद रखना चाहिए: "ये आज्ञाएँ जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ, वे तुम्हारे दिलों में होनी चाहिए। इन्हें अपने बच्चों के मन में बिठाओ। जब तुम घर पर बैठो और जब तुम रास्ते पर चलो, जब तुम लेटो और जब तुम उठो, तो इनके बारे में बात करो।"

जो परमेश्वर हमारी मृत्यु के दिन तक हमारा मार्गदर्शन करता है, वह एक महान परमेश्वर और हमारी शरणस्थान है। वह वही परमेश्वर है जो हमारे दुश्मनों का विरोध करता है और हमें जीत दिलाता है। वह एक धर्मी परमेश्वर है, जो न्याय से भरा है। इसलिए, हमें पूरे दिल से उसकी स्तुति करनी चाहिए और उसके घर में उसकी प्रेमपूर्ण दया की प्रतीक्षा करनी चाहिए। हमें खुशी और आनंद भी मनाना चाहिए, यह भरोसा रखते हुए कि वह हमें जीत दिलाएगा। ऐसा करते हुए, हमें इस परमेश्वर का ज्ञान—जो हमारे जीवन के अंत तक हमारी अगुवाई करता है—आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाना चाहिए।

“परमेश्वर मुझे अपनाएगा”

[भजन संहिता 49]

कहा जाता है कि जानवर कई मामलों में इंसानों से बेहतर होते हैं। उदाहरण के लिए, चीते इंसानों से तेज़ दौड़ते हैं और जिराफ़ ज़्यादा ऊँचे होते हैं; वज़न की बात करें तो सात लोग मिलकर भी एक हाथी का मुक़ाबला नहीं कर सकते। बाज़ और चील की नज़र इंसानों से ज़्यादा तेज़ होती है, और कहा जाता है कि कुत्ते की सूंघने की शक्ति हमारी तुलना में 10,000 गुना ज़्यादा विकसित होती है। सुनने की क्षमता के मामले में, इंसानी कान खरगोश के कानों का मुक़ाबला नहीं कर सकते। तैरने की बात करें तो इंसान सील (seal) की बराबरी नहीं कर सकते। इन तरीकों से, कई पहलू ऐसे हैं जिनमें इंसान जानवरों से पीछे रह जाते हैं। फिर भी, एक कारण है जिसकी वजह से इंसान जानवरों से श्रेष्ठ हैं: सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने केवल इंसानों को ही अपना स्वरूप दिया है। इस ईश्वरीय स्वरूप का पहला पहलू है इंसान के दिल में अनंत जीवन की चाहत और सृष्टिकर्ता परमेश्वर का आदर करने का विश्वास। दूसरा पहलू है अच्छी अंतरात्मा का उपहार। अंतरात्मा नैतिकता और सदाचार की नींव का काम करती है। हालाँकि यह हमारे भीतर रहती है, लेकिन अंतरात्मा हमेशा परमेश्वर के साथ जुड़ी रहती है; यही कारण है कि जब हम कोई पाप करते हैं, तो हमारी अंतरात्मा अपराध-बोध महसूस करती है और बेचैन हो जाती है। इसलिए, जो व्यक्ति सचमुच इंसान है—यानी जानवरों से श्रेष्ठ है—वह वही है जिसके पास अच्छी अंतरात्मा है और जो मसीह में विश्वास का रहस्य रखता है।

तो फिर, किस तरह के व्यक्ति को जानवर से भी गया-बीता माना जाता है? वह व्यक्ति जिसके दिल में अनंत जीवन की कोई चाहत नहीं है और जिसमें सृष्टिकर्ता परमेश्वर के प्रति विश्वास की कमी है। इसके अलावा, जानवरों से भी गए-बीते लोगों को ऐसे व्यक्तियों के रूप में वर्णित किया जा सकता है जिनकी अंतरात्मा सुन्न हो चुकी है—यानी वे लोग जिनमें अच्छी अंतरात्मा का अभाव है। भजन संहिता 49 (पद 12 और 20) के आज

के अंश में, हमें यह कथन मिलता है कि मनुष्य “जानवरों के समान” है। आज के अंश में, हम एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं जो जानवर की तरह नष्ट हो जाता है। मैं इस बात पर विचार करना चाहता हूँ कि यह व्यक्ति कौन है और उसे मूर्ख क्यों माना जाता है। साथ ही, मैं दूसरे प्रकार के व्यक्ति पर भी विचार करना चाहता हूँ—वह व्यक्ति जो भजनकार की तरह इस बात का भरोसा रखता है कि "परमेश्वर मुझे अपनाएगा" (पद 15)—और ऐसे व्यक्ति के स्वभाव और ज़िम्मेदारियों की जाँच करना चाहता हूँ। इस हिस्से के ज़रिए, हम यह जानना चाहते हैं कि हमें किस तरह का इंसान बनना चाहिए और अपनी ज़िंदगी कैसे जीनी चाहिए।

पहला, वह व्यक्ति जो जानवर की तरह नष्ट हो जाता है

बाइबल किस तरह के व्यक्ति को जानवर की तरह नष्ट होने वाला बताती है? यह उन लोगों के बारे में है जो दुनिया की दौलत और शान-शौकत का मज़ा तो लेते हैं, लेकिन परमेश्वर को नहीं जानते (पद 12, 20)। क्योंकि ये लोग—जिन्हें जानवरों के समान बताया गया है—दुनिया की खुशहाली का मज़ा लेते हुए भी परमेश्वर को नहीं जानते, इसलिए वे परमेश्वर के बजाय अपनी दौलत पर भरोसा करते हैं और अपनी अमीरी पर घमंड करते हैं (पद 6)। नतीजतन, वे ऐसे सपने देखते हैं मानो वे इस दुनिया में हमेशा जीवित रहेंगे और ज़मीन पर अपना मालिकाना हक जताते हैं (पद 11)। दूसरे शब्दों में, वे धरती पर अपना नाम कमाने की कोशिश करते हैं (पार्क युन-सन)। ऐसा व्यवहार—जो सिर्फ़ दुनिया की खुशहाली पर ध्यान देता है—मूर्खतापूर्ण है। इसके क्या कारण हैं? हमें आज के हिस्से में ऐसे तीन कारण मिलते हैं।

(1) पहला कारण भजन संहिता 49 के पद 17 में मिलता है: "क्योंकि जब वह मरता है, तो वह अपने साथ कुछ नहीं ले जाता; उसकी शान-शौकत उसके बाद नीचे नहीं जाती।" हम इस दुनिया में खाली हाथ आते हैं और खाली हाथ जाते हैं; चाहे किसी के पास कितनी भी दौलत क्यों न हो, मरने पर वह उसे साथ नहीं ले जा सकता। तो फिर, ऐसी दौलत पर भरोसा करके और उस पर घमंड करके बिताई गई ज़िंदगी कितनी मूर्खतापूर्ण है? कई मामलों में, अनगिनत लोग दौलत (पैसे) को ही अपना भगवान मान लेते हैं और एक बेकार ज़िंदगी जीते हैं, जिसका अंत भी बेकार होता है और वे वापस मिट्टी में मिल जाते हैं।

(2) दूसरा कारण कि जानवर जैसा व्यवहार करने वाले लोग मूर्ख क्यों होते हैं, यह है कि उनकी दौलत आखिरकार दूसरों के पास चली जाएगी।

आज का हिस्सा, भजन संहिता 49:10 देखें: "क्योंकि वह देखता है कि बुद्धिमान भी मरते हैं; मूर्ख और नासमझ दोनों ही नष्ट हो जाते हैं और अपनी दौलत दूसरों के लिए छोड़ जाते हैं।" हमने भजन संहिता 39:6 में भी ऐसी ही बात देखी थी, जिस पर हमने पहले मनन किया था: "सचमुच हर कोई एक परछाईं की तरह घूमता है; वे बेकार में भाग-दौड़ करते हैं और दौलत जमा करते हैं, यह जाने बिना कि आखिरकार यह किसे मिलेगी।" आखिरकार, जैसा कि पवित्र शास्त्र कहता है, बुरे लोगों की दौलत नेक लोगों को मिल जाती है। तो फिर, ऐसी ज़िंदगी कितनी बेकार है जो सिर्फ़ दौलत जमा करने में गुज़री हो—बिना यह जाने कि मरने के बाद उस दौलत का मालिक कौन बनेगा? यह सचमुच एक बेवकूफ़ी भरी ज़िंदगी है।

(3) एक और वजह आयतों 7-9 में मिलती है: "कोई भी किसी दूसरे की जान नहीं बचा सकता और न ही परमेश्वर को उसके लिए कोई कीमत चुका सकता है—जान की कीमत बहुत ज़्यादा है, कोई भी कीमत काफ़ी नहीं है—ताकि वे हमेशा जीवित रहें और कभी नष्ट न हों।" किसी के पास चाहे कितनी भी दौलत क्यों न हो, वह उसे मौत से नहीं बचा सकती। हमारी जान की कीमत बहुत ज़्यादा है; इसे पैसे से नहीं खरीदा जा सकता। बहुत सारी दौलत हमें स्वर्ग में हमेशा जीवित रहने और कभी नष्ट न होने की काबिलियत नहीं दिला सकती। कहा जाता है कि इंग्लैंड की रानी एलिज़ाबेथ ने मरते समय ये शब्द कहे थे: "मैं किसी भी ऐसे व्यक्ति को सोने के दस लाख सिक्के दे दूँगी जो मुझे ज़िंदगी का बस एक पल और दे सके" (पार्क युन-सन)।

हमें ऐसे लोगों से जलन नहीं करनी चाहिए, जो जानवरों की तरह विनाश के लिए बने हैं। भजनकार आसाफ़ भजन 73:22-23 में कबूल करता है: "मैं कितना बेवकूफ़ और नासमझ था; मैं तेरे सामने एक जानवर जैसा था। फिर भी मैं हमेशा तेरे साथ हूँ; तूने मेरा दाहिना हाथ थाम रखा है।" आसाफ़ ने एक बार बुरे लोगों की खुशहाली देखकर घमंडी लोगों से "जलन" की थी (आयत 3); लेकिन, परमेश्वर के पवित्र स्थान में जाने और बुरे लोगों के अंत को समझने के बाद (आयत 17), उसने अपनी बेवकूफ़ी और नासमझी को कबूल किया और माना कि वह प्रभु के सामने एक जानवर जैसा था (आयत 22)। फिर भी, क्योंकि वह लगातार प्रभु के साथ रहा, प्रभु ने उसका दाहिना हाथ थामे रखा (आयत 23); इसलिए, हालाँकि वह लगभग फिसल गया था,

पर वह गिरा नहीं। हमें बुरे लोगों की खुशहाली से जलन करने की कोई ज़रूरत नहीं है, क्योंकि वे विनाश के लिए बने हैं।

दूसरी बात, नेक लोग जिन्हें छुटकारा मिला है

जबकि जो लोग जानवरों की तरह हैं वे नष्ट हो जाते हैं, परमेश्वर उन नेक लोगों को अपनाता है जिन्हें छुटकारा मिला है। आज के वचन, भजन 49:15 को देखिए: "परमेश्वर मुझे अपनाएगा; वह मेरी आत्मा को कब्र की ताकत से छुड़ाएगा (सेलाह)।" यहाँ, इस बात का कि परमेश्वर उन नेक लोगों को "अपनाते" हैं जिन्हें छुटकारा मिला है, मतलब है कि मरने के बाद परमेश्वर उनकी आत्माओं को अपने राज्य में ले जाते हैं (पार्क युन-सन)। जबकि जो लोग नाश हो जाते हैं—जिनकी तुलना जानवरों से की गई है—वे अपनी उम्मीद सिर्फ़ इस दुनिया की ज़िंदगी और दौलत पर रखते हैं, हम विश्वास करने वाले अपनी उम्मीद आने वाली दुनिया, यानी स्वर्ग पर रखते हैं।

(1) इसलिए, सबसे पहले, हमें उन लोगों से डरने की ज़रूरत नहीं है जो जानवरों जैसे हैं।

आज का वचन देखें, भजन संहिता 49:5: "मुसीबत के दिनों में मैं क्यों डरूँ, जब मेरे दुश्मनों की बुराई मुझे घेरे रहती है?" यहाँ, "बुराई" का मतलब विश्वास करने वाले के अपने पाप से नहीं, बल्कि उन लोगों के बुरे कामों और ज़ुल्म से है जो उन्हें सताते हैं (पार्क युन-सन)। भजनकार उन बुरे लोगों से नहीं डरा जो उसे सताते थे, भले ही उनके काम बुरे थे और वे ज़ुल्म करते थे। वजह यह है कि, जहाँ बुरे लोग उस दौलत या अमीरी के भरोसे मौत से खुद को नहीं बचा सकते जिस पर वे भरोसा करते हैं, वहीं विश्वास करने वालों को परमेश्वर से छुटकारा मिला है और उन्होंने हमेशा की ज़िंदगी पाई है (पार्क युन-सन)।

(2) हमें सही रास्ते पर चलना चाहिए।

हमें नेकी के रास्ते पर चलना चाहिए। हमें कभी भी बुराई के रास्ते पर नहीं चलना चाहिए। आज का वचन देखें, भजन संहिता 49:14: "भेड़ों की तरह वे शेओल (मृत्युलोक) के लिए तय किए गए हैं; मौत उनका चरवाहा होगी; और सुबह नेक लोग उन पर राज करेंगे; शेओल में उनका रूप मिट जाएगा, और उनके रहने की कोई

जगह नहीं होगी।" यहाँ, "नेक लोग" का मतलब "धर्मी लोग" है—यानी हम विश्वास करने वाले। इसलिए, विश्वास करने वालों के तौर पर, हमें बुराई के रास्ते पर नहीं चलना चाहिए—दुनिया की दौलत और अमीरी पर घमंड करना और परमेश्वर से अनजान रहना, ठीक वैसे ही जैसे वे लोग करते हैं जो जानवरों की तरह नाश हो जाते हैं। इसके बजाय, आने वाली ज़िंदगी पर नज़र रखते हुए, हमें वफ़ादारी से उस नेकी के रास्ते पर चलना चाहिए जिस पर प्रभु खुद चले थे।

(3) हमें इस भरोसे के साथ जीना चाहिए कि मरने के बाद परमेश्वर हमें अपने हमेशा के राज्य में ले जाएँगे।

आज का वचन देखें, भजन संहिता 49:15: "लेकिन परमेश्वर मेरी आत्मा को कब्र की ताकत से छुड़ाएँगे, क्योंकि वे मुझे अपनाएँगे (सेलाह)।" हमारे परमेश्वर ही हमें मृत्यु के अंतिम क्षण तक मार्गदर्शन देते हैं (48:14)। अभी भी, वे हमें परमेश्वर के अनंत राज्य की ओर ले जा रहे हैं। इसलिए, हम यह स्वीकार कर सकते हैं: "निश्चय ही मेरे जीवन भर भलाई और करुणा मेरे साथ रहेगी; और मैं सदा प्रभु के भवन में वास करूँगा" (23:6)।

जब मैं पिछले मंगलवार को नर्सिंग होम में श्रीमती जांग सू-सू—जो विश्वास रखने वाली एक प्रिय महिला हैं—से मिलने गया, तो मैंने देखा कि भले ही उनका शरीर कमजोर हो गया था, फिर भी उन्हें मृत्यु का कोई भय नहीं था; इसके बजाय, वे यीशु को देखने के लिए और भी अधिक लालायित थीं। इस बात के लिए अत्यंत आभारी कि यीशु के क्रूस के बहुमूल्य लहू ने उनके सभी पापों को धो दिया था, श्रीमती जांग—जो अब विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराई गई परमेश्वर की एक अनमोल बेटी हैं—आज भी उस स्वर्गीय घर की ओर अपनी यात्रा जारी रखे हुए हैं। दादी जांग, जिन्होंने मेरे साथ भजन 495 ("मेरी आत्मा ने अनुग्रह पाया है") का पहला पद और कोरस गाया था—*"मेरी आत्मा ने अनुग्रह पाया है, और पाप का भारी बोझ उतार फेंकने के बाद, मैं पाती हूँ कि यह दुखों से भरा संसार स्वर्ग में बदल गया है; (कोरस) हालेलुयाह, आइए हम स्तुति करें! अपने सभी पापों की क्षमा पाकर और प्रभु यीशु के साथ चलकर, मैं जहाँ भी हूँ, वह स्थान स्वर्ग बन जाता है"*—जान लें कि परमेश्वर अपनी उपस्थिति में आपका स्वागत करेंगे।

आइए हम धन पर निर्भर न रहें।

“जो लोग अपने धन पर भरोसा करते हैं और अपनी बड़ी दौलत पर घमंड करते हैं, वे खुद को छुड़ा नहीं सकते और न ही परमेश्वर को अपनी जान की कीमत चुका सकते हैं—क्योंकि एक जीवन की कीमत इतनी ज़्यादा है कि उसे कभी चुकाया नहीं जा सकता” (भजन संहिता 49:6-8)।

कल मैंने रेवरेंड जेम्स कैनेडी की किताब *फ्रीडम फ्रॉम फाइनेंशियल फियर* (आर्थिक डर से आज़ादी) पढ़ना खत्म किया। मैंने यह किताब इसलिए खरीदी क्योंकि न सिर्फ़ इसका शीर्षक मुझे अच्छा लगा, बल्कि इसे रेवरेंड कैनेडी ने लिखा था। इसे पढ़ने के बाद, मैंने कुछ अहम बातों का सारांश तैयार किया। उनमें से एक बात यह है कि परमेश्वर को दसवां अंश (tithe) देना पैसे का मामला नहीं, बल्कि विश्वास का मामला है। विश्वास का सवाल इसलिए उठता है क्योंकि हम मलाकी 3:10 में परमेश्वर के किए गए वादे पर विश्वास नहीं कर पाते: “पूरा दसवां अंश भंडार-घर में ले आओ, ताकि मेरे घर में भोजन हो। मुझे इस बात में परखकर देखो,” सर्वशक्तिमान प्रभु कहते हैं, “और देखो कि क्या मैं स्वर्ग के झरोखे नहीं खोलता और इतनी आशीष नहीं बरसाता कि उसे रखने के लिए जगह भी कम पड़ जाए।” नतीजतन, हम न केवल परमेश्वर की आशीषों से वंचित रह जाते हैं—जो अपने वादे पूरे करते हैं—बल्कि हम आर्थिक डर से आज़ादी का अनुभव करने में भी नाकाम रहते हैं। इसके बजाय, हम आर्थिक मामलों को लेकर चिंता और घबराहट में जीते हैं। फिर भी, एक और गंभीर समस्या तब पैदा होती है जब परमेश्वर के वादों पर विश्वास न करने या उन्हें पूरा दसवां अंश न देने के बावजूद हमारी दौलत बढ़ जाती है। यह एक ज़्यादा गंभीर समस्या है क्योंकि ऐसी स्थितियों में, हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति उस बहुत सारी दौलत पर निर्भर रहने की होती है। परमेश्वर को अपनी ताकत न बनाना एक बड़ी समस्या है (भजन संहिता 52:7)। भजन संहिता 49 में, भजनकार दुष्ट दुश्मनों से घिरे होने

का वर्णन करता है (पद 5)—ऐसे लोग जो अपनी दौलत पर निर्भर थे और अपनी संपत्ति पर घमंड करते थे (पद 6)। वे मूर्ख थे जिन्होंने परमेश्वर के बजाय खुद पर भरोसा किया (पद 13)। उनकी मूर्खता इस बात में थी कि वे यह नहीं समझ पाए कि कोई भी रकम किसी दूसरे व्यक्ति की जान नहीं बचा सकती या परमेश्वर को उसकी कीमत नहीं चुका सकती (पद 7)। वे यह नहीं समझ पाए कि एक इंसान की जान बचाने की कीमत इतनी ज़्यादा है कि उसे कभी चुकाया नहीं जा सकता (पद 8)। वे यह समझने में नाकाम रहे कि इतनी दौलत होने के बावजूद, कोई भी कीमत किसी इंसान को हमेशा ज़िंदा रखने या मौत से बचाने के लिए काफ़ी नहीं है (पद 8–9)। इसके अलावा, वे नासमझ थे क्योंकि उन्हें लगता था कि उनके घर हमेशा बने रहेंगे (पद 11)। उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि मरने के बाद वे अपने साथ कुछ भी कब्र में नहीं ले जा पाएँगे (पद 17)। वे यह नहीं देख पाए कि आखिर में उन्हें अपनी दौलत दूसरों के लिए छोड़नी ही पड़ेगी (पद 10)। वे यह नहीं समझ पाए कि चाहे उन्हें इस दुनिया में कितनी भी खुशी मिले या अपनी कामयाबी के लिए कितनी भी तारीफ़ मिले, आखिर में उन्हें भी अपने पूर्वजों की तरह मरना ही होगा और वे कभी ज़िंदगी की रोशनी नहीं देख पाएँगे (पद 18–19)। दुनिया की शान-ओ-शौकत में जीने का क्या फ़ायदा? (पद 20) क्योंकि लोग चाहे कितनी भी शान-ओ-शौकत का मज़ा लें, वे हमेशा ज़िंदा नहीं रह सकते (पद 12)। आखिर में, उन्हें मरना ही है (पद 14); वे सब खत्म हो जाएँगे और उनकी खूबसूरती मिट जाएगी (पद 14)। वे यह नहीं समझ पाते कि उनकी कब्रें ही उनका हमेशा का घर बन जाएँगी, जहाँ वे हमेशा रहेंगे (पद 11)। जिन लोगों में ऐसी समझ नहीं होती, वे जानवरों की तरह होते हैं जो खत्म हो जाते हैं (पद 12, 20)। लेकिन भजन रचने वाले को यह सब समझ में आता था, क्योंकि उसके पास समझदारी और परखने की शक्ति थी (पद 3)। वह यह भी जानता था कि परमेश्वर उसे अपनाएगा और उसकी आत्मा को मौत की ताकत से बचाएगा (पद 15)। इसलिए, वह हम सबसे ध्यान से सुनने के लिए कहता है (पद 1–2)। वह हमसे कहता है: "जब तुम दूसरों को दौलत जमा करते और उनके परिवार की इज़्ज़त बढ़ते हुए देखो, तो निराश मत होना" (पद 16)।

हमें ऐसे नासमझ नहीं बनना चाहिए जो दौलत पर भरोसा करते हैं। हमें ऐसे जानवरों की तरह नहीं बनना चाहिए जिनमें समझ नहीं होती। हमें सच्चाई समझनी चाहिए: परमेश्वर ने हमारी आत्माओं को मौत की ताकत से छुड़ाने के लिए बहुत बड़ी कीमत चुकाई। वह कीमत क्या थी? उसका एकलौता बेटा, यीशु, हमारे लिए श्राप बना ताकि हमें कानून के श्राप से छुड़ा सके (गलातियों 3:13)। परमेश्वर ने क्रूस पर अपने एकलौते बेटे की बलि के ज़रिए हमारे सभी पापों का प्रायश्चित किया (इब्रानियों 2:17; भजन 130:8)। हमें परमेश्वर के पुत्र में छुटकारा—यानी पापों की क्षमा—मिली है (कुलुस्सियों 1:14)। मसीह यीशु में मिले छुटकारे के ज़रिए,

परमेश्वर की कृपा से हमें बिना किसी कीमत के धर्मी ठहराया गया है (रोमियों 3:24) और हमें परमेश्वर की संतान होने का दर्जा मिला है (गलातियों 4:5)। इस तरह, हमें बिना पैसे के छुटकारा मिला है (यशायाह 52:3)। परमेश्वर ने क्रूस पर अपने एकलौते पुत्र यीशु की बलि वाली मृत्यु के ज़रिए हमें छुटकारा दिलाया और हमारी आत्माओं को मृत्यु की शक्ति से बचाया (भजन संहिता 49:15)। इसलिए, हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। हमें परमेश्वर को ही अपने उद्धार का बल बनाना चाहिए (52:7)।

पाखंड

[भजन संहिता 50]

एड्रियन गोस्टिक और डाना टेलफोर्ड की किताब *द इंटीग्रिटी एडवांटेज* में, ईमानदारी और सच्चाई वाले व्यक्ति की दस खूबियां बताई गई हैं। इनमें से तीसरी खूबी है "गलती होने पर ईमानदारी से उसे मान लेना।" इस खूबी के बारे में लेखक एक गहरी बात कहते हैं: "गलती करना कोई बहुत बड़ा अपराध नहीं है; असल में बड़ा अपराध उसे छिपाने की कोशिश करना है।" फिर भी, हमारी फितरत अपनी गलतियों को छिपाने की होती है। दूसरे शब्दों में, अपने पापों को छिपाना हमारा पापी स्वभाव है। शायद इसीलिए "पाखंड" का कॉन्सेप्ट है। पाखंड क्या है? हिब्रू भाषा में इसका मतलब है "खुद को छिपाने वाला" या "दिखावा करने वाला।" नए नियम (New Testament) में, ग्रीक शब्द *हाइपोक्रिटेस*—जो असल में स्टेज पर नकाब पहनने वाले एक्टर के लिए इस्तेमाल होता था—का मतलब पाखंडी या दिखावा करने वाला हो गया। यह शब्द एक झूठे रवैये को बताता है—जो अक्सर धार्मिक लोगों में पाया जाता है—जिसमें बाहर से तो धार्मिक होने का दिखावा होता है, लेकिन असल में उसमें कोई ताकत नहीं होती। पाखंड उस हालत को सही ढंग से बताता है जब कोई बाहर से तो सच्चा ईसाई दिखता है, लेकिन अंदर झूठ और पाखंड पाले रहता है। यीशु के समय में फरीसी सबसे बड़े पाखंडी थे। किसी तरह, पाखंड के बारे में सोचने पर दाऊद के पाप की याद आती है, जिस पर मैंने आज सुबह की प्रार्थना सभा में मनन किया था। दाऊद ने अपने पाप को छिपाने के लिए ऊरिय्याह को उसकी गर्भवती पत्नी बतशेबा के पास भेजने की कोशिश की; जब वफादार ऊरिय्याह घर जाने को तैयार नहीं हुआ, तो दाऊद ने जनरल योआब के साथ मिलकर उस वफादार सैनिक को एक गैर-यहूदी की तलवार से मरवा दिया। तब परमेश्वर ने नबी नाथन को दाऊद का पाप उजागर करने के लिए भेजा, जो उसे छिपाने की कोशिश कर रहा था। परमेश्वर ने उससे कहा: "तूने यह काम छिपकर किया, लेकिन मैं यह

काम सबके सामने, पूरे इस्राएल के सामने करूंगा" (2 शमूएल 12:12)। भले ही हम छिपकर पाप करें, पवित्र परमेश्वर ही हमारे पापों को सबके सामने उजागर करते हैं।

आज के वचन, भजन संहिता 50:5 में, परमेश्वर आज्ञा देते हैं: "मेरे पवित्र लोगों को मेरे पास इकट्ठा करो।" यहाँ, भजनकार आसाफ "पवित्र लोगों" को ऐसे लोगों के रूप में परिभाषित करते हैं जिन्होंने बलिदान के ज़रिए परमेश्वर के साथ वाचा (covenant) बांधी है। इसे अपनी ज़िंदगी में लागू करते हुए, हम उन ईसाइयों की पहचान कर सकते हैं—जो क्रूस पर यीशु के बलिदान के ज़रिए परमेश्वर के साथ एक नए समझौते (नियम) में आए हैं—उन्हें "मेरे संत," या परमेश्वर के संत कहा जा सकता है। परमेश्वर क्यों यह हुक्म देते हैं कि उनके संतों को उनके सामने इकट्ठा किया जाए? इसका कारण इज़राइल के लोगों का पाखंड था, जो परमेश्वर के संत थे (पार्क युन-सन)। मुझे पूरी उम्मीद है कि जब परमेश्वर इन पाखंडी संतों को इकट्ठा करेंगे, तो वे उनसे क्या कहना चाहते हैं, इस बारे में तीन बातों पर सोच-विचार करके हम उनकी फटकार पर ध्यान देंगे और इसे पछतावे के एक मौके के तौर पर इस्तेमाल करेंगे।

पहली बात, परमेश्वर घोषणा करते हैं कि वे हमारे पाखंड का न्याय करेंगे (भजन संहिता 50:1–6)।
भजन संहिता 50:6 को देखिए: "आकाश उसकी धार्मिकता की घोषणा करते हैं, क्योंकि वह न्याय का परमेश्वर है (सेलाह)।" भजनकार आसाफ घोषणा करते हैं कि परमेश्वर, जो न्याय करने वाले हैं, इज़राइल के पाखंडी लोगों का न्याय करते समय सबके सामने और हर जगह अपनी धार्मिकता की घोषणा करते हैं। आसाफ इन पाखंडी इज़राइलियों के किए गए पापों की गंभीरता को ज़ोरदार ढंग से इस तरह बताते हैं:

(1) वे धरती के सभी लोगों को पाखंडी इज़राइलियों के खिलाफ न्याय के दृश्य का गवाह बनने के लिए बुलाते हैं (पद 1)।

यह न्याय की एक डरावनी घोषणा है: भले ही पाखंडी इज़राइली छिपकर पाप करते हों, परमेश्वर उन्हें सबके सामने लाएंगे—और वे ऐसा सबके सामने करेंगे, और सबको यह देखने के लिए बुलाएंगे। यह संदेश हम पर भी लागू होता है। इसका मतलब है कि अगर हम, ज्योति की संतान होने के नाते, अंधकार के कामों को बुरा

नहीं कहते (उन्हें उजागर नहीं करते) और इसके बजाय उनमें हिस्सा लेते हैं, तो पवित्र परमेश्वर हमारे पापों को सबके सामने उजागर कर देंगे (इफिसियों 5:11)।

(2) जब परमेश्वर पाखंडी इज़राइलियों का न्याय करते हैं, तो वे मुख्य रूप से अपने बताए गए वचन के ज़रिए ऐसा करते हैं (पद 2)—एक ऐसा न्याय जिसे आग या ज़बरदस्त तूफ़ान की तरह डरावना बताया गया है (पद 3)।

इसका मतलब है कि वे परमेश्वर द्वारा स्थापित सच्ची कलीसिया की सच्चाई (ज्योति) के अनुसार न्याय करते हैं। यीशु ने भी कहा था कि आखिर में उनका वचन ही न्याय का आधार होगा (यूहन्ना 12:48)। भजन संहिता 119:130 कहती है, "तेरे वचनों का खुलना ज्योति देता है; यह साधारण लोगों को समझ देता है।" जब हम छिपकर पाप करते रहते हैं, तो हम मूर्ख बन जाते हैं। हमारे दिल भी कठोर हो जाते हैं। हम पाप को पाप मानना छोड़ देते हैं। ऐसे बेपरवाह लोगों के दिलों में परमेश्वर अपना वचन चमकाते हैं, जिससे हमें अपने पाप का एहसास होता है।

(3) कहा जाता है कि परमेश्वर सबसे पहले दिखावटी विश्वासियों का न्याय करते हैं (पद 4)।

डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "क्योंकि परमेश्वर की कलीसिया को खास आशीषें मिली हैं, इसलिए उस पर बड़ी ज़िम्मेदारी है। इसलिए, न्याय परमेश्वर के घर (कलीसिया) से शुरू होता है (1 पतरस 4:17)।"

दूसरी बात, परमेश्वर हमारे दिखावटी धार्मिक रीति-रिवाजों के खिलाफ चेतावनी देते हैं (भजन संहिता 50:7-15)।

भजन संहिता 50:7 को देखें: "हे मेरे लोगों, सुनो, मैं बोलूंगा; हे इस्राएल, मैं तुम्हारे खिलाफ गवाही दूंगा; मैं परमेश्वर हूं, तुम्हारा परमेश्वर!" यहां, परमेश्वर कहते हैं कि वह दिखावटी इस्राएल के खिलाफ "गवाही देंगे"; ऐसा करके, वह इस्राएलियों के पाखंड—यानी दिखावटी रीति-रिवाजों—के खिलाफ चेतावनी दे रहे हैं। उस दिखावे में उस समय के यहूदियों का यह मानना शामिल था कि वे केवल मंदिर जाकर और बलिदान चढ़ाकर

परमेश्वर को खुश कर सकते हैं (पार्क युन-सन)। जो इस्राएली आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करने के बजाय बाहरी रीति-रिवाजों को निभाने में लगे हुए थे, उनके लिए भजनकार आसाफ आराधना के बारे में तीन सबक देते हैं:

(1) वह हमें धन्यवाद के साथ बलिदान (आराधना) चढ़ाने का निर्देश देते हैं (पद 14)।

हमें परमेश्वर को धन्यवाद के साथ बलिदान (आराधना) क्यों चढ़ाना चाहिए? कारण यह है कि ऐसा करने से परमेश्वर की महिमा होती है (पद 23)। इसके अलावा, जो व्यक्ति धन्यवाद का बलिदान चढ़ाता है, वह कृतज्ञता का जीवन जीता है, न कि केवल होंठों से धन्यवाद करता है। वे केवल धन्यवाद के साथ परमेश्वर की आराधना नहीं करते; वे आराधना का जीवन जीते हैं।

(2) हमें परमेश्वर से की गई अपनी मन्नतों को पूरा करने के लिए कहा गया है (पद 14b)।

एक वफादार व्यक्ति की एक विशेषता यह है कि वह हमेशा अपने वादे निभाता है। फिर भी, आजकल हम अपने आस-पास ऐसे कितने वफादार लोगों को देखते हैं जो अपने वादे निभाते हैं? हम ऐसी दुनिया में रहते हैं जहां भरोसेमंद लोग मिलना वाकई मुश्किल है। नतीजतन, कोई सोच सकता है: "अगर कोई व्यक्ति दूसरों से किए गए वादे पूरे करने में नाकाम रहता है, तो वह परमेश्वर से किया गया वादा कैसे पूरा कर सकता है?" डॉ. पार्क युन-सन ने कहा, "ईश्वर से किए गए वादे को निभाना एक ऐसा काम है जो ईश्वर की कृपा में रुकावट नहीं आने देता।" इसलिए, जो लोग सच में ईश्वर की आराधना करते हैं, उन्हें ईश्वर से किए गए वादों को पूरा करना चाहिए ताकि उनकी कृपा का प्रवाह न रुके।

(3) हमें मुसीबत के समय ईश्वर को पुकारने के लिए कहा गया है (पद 15)।

ईश्वर केवल रस्मी बलिदान चढ़ाने के बजाय प्रार्थना—जो विश्वास का इज़हार है—को ज़्यादा पसंद करते हैं।

आखिर में, तीसरी बात यह है कि ईश्वर हमारे पाखंड के पापों की ओर इशारा करते हैं (भजन संहिता 50:16–22)।

इज़राइल के पाखंडी लोगों का पाप क्या था? संक्षेप में, वे बातों से तो धार्मिकता का दिखावा करते थे, लेकिन ईश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करते थे (पार्क युन-सन)। भजन संहिता 50 का पद 16 देखिए: "लेकिन दुष्टों से ईश्वर कहते हैं: 'तुम्हें मेरे नियमों को बताने या मेरे वाचा (करार) को अपने मुँह में लेने का क्या अधिकार है?'" यह अंश इज़राइल के उन पाखंडी लोगों को फटकारता है जो केवल बातों से ईश्वर के धर्म का दिखावा करते थे (पार्क युन-सन)। पद 17 देखिए: "तुम शिक्षा से नफ़रत करते हो और मेरे वचनों को अपने पीछे फेंक देते हो।" इसका क्या मतलब है? पाखंडी इज़राइली ईश्वर की शिक्षा से नफ़रत करते थे और उनके वचनों को अपनी पीठ के पीछे फेंक देते थे। क्या यह हमारा पाखंड और पाप नहीं है? क्या हम ऐसे लोग नहीं हैं जो ईश्वर का वचन सुनने और प्रभु के दिन पवित्र स्थान से निकलने के बाद, दुनिया में कदम रखते ही उस वचन को पीछे छोड़ देते हैं और फिर से ईश्वर के विरुद्ध पाप करते हैं? हम ईश्वर के वचन को नज़रअंदाज़ करके और उसका अनादर करके क्यों जीते हैं? कैल्विन इसका कारण इस प्रकार बताते हैं: "पाखंडी धार्मिक व्यक्ति की पहचान ईश्वर के वचन के प्रति आदर की कमी है।" ईश्वर के प्रति आदर की यही कमी हमें ईश्वर के वचन से नफ़रत करने और उसे पीछे फेंकने का पाप करने की ओर ले जाती है।

आज के हिस्से में, इज़राइल के लोगों ने—जिन्होंने परमेश्वर का डर नहीं माना और पाखंडपूर्ण व्यवहार किया—परमेश्वर की किन खास आज्ञाओं को तोड़ा?

(1) इज़राइल के लोगों ने दस आज्ञाओं में से सातवीं और आठवीं आज्ञा का उल्लंघन किया।

पद 18 को देखें: "जब तुमने किसी चोर को देखा, तो तुम उसके साथ हो लिए; तुमने व्यभिचारियों का साथ दिया।" "जब तुमने किसी चोर को देखा, तो तुम उसके साथ हो लिए" वाक्यांश आठवीं आज्ञा, "तू चोरी न करना," के उल्लंघन की ओर इशारा करता है, जबकि "तुमने व्यभिचारियों का साथ दिया" सातवीं आज्ञा, "तू व्यभिचार न करना," के उल्लंघन की ओर इशारा करता है।

(2) उन्होंने दस आज्ञाओं में से नौवीं आज्ञा का उल्लंघन किया।

पद 19 को देखें: "तुम अपने मुँह का इस्तेमाल बुराई के लिए करते हो और अपनी जीभ का इस्तेमाल धोखे के लिए करते हो।" यह नौवीं आज्ञा का उल्लंघन है: "तू अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना।"

(3) यह अपने भाई से प्रेम न करने का पाप था।

पद 20 को देखें: "तुम बैठकर अपने भाई के विरुद्ध बातें करते हो; तुम अपनी ही माँ के बेटे की बुराई करते हो।" यह एक ऐसा पाप है जो छठी आज्ञा, "तू हत्या न करना," का उल्लंघन करता है। इसका कारण यह है कि "जो कोई अपने भाई से घृणा करता है, वह हत्यारा है" (1 यूहन्ना 3:15)। परमेश्वर ने इज़राइल के पाखंडी लोगों को चेतावनी दी और उनसे पश्चाताप करने का आग्रह किया, फिर भी उन्होंने गलतफहमी में यह मान लिया कि परमेश्वर भी पाप के प्रति उतने ही उदासीन हैं जितने वे खुद थे (भजन संहिता 50:21)। दूसरे शब्दों में, उन्हें लगा कि वह पाप का न्याय नहीं करेंगे। नतीजतन, वे अपने पापपूर्ण तरीकों पर चलते रहे। चूँकि परमेश्वर चुप रहे जबकि वे पाप करते रहे, इसलिए उन्होंने मान लिया कि वह भी उन्हीं की तरह हैं—पाप के प्रति उदासीन। फिर भी, परमेश्वर ने उन्हें फटकारा और घोषणा की कि वह उनके पापों का एक-एक करके न्याय करेंगे और उन्हें दंड देंगे। आज के हिस्से, भजन संहिता 50:22 में, वह यह चेतावनी देते हैं: "हे परमेश्वर को भूलने वालों, इस बात पर ध्यान दो, नहीं तो मैं तुम्हें टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा, और तुम्हें बचाने वाला कोई न होगा।" इज़राइल के लोग, जिन्होंने पाप किया था और परमेश्वर के वचन का अनादर किया था, न केवल उनके वचन को बल्कि स्वयं परमेश्वर को भी भूल गए थे। इसीलिए उन्होंने उनसे "इस बात पर गौर करने" को कहा—यानी इस बात पर सोचने को कहा कि वे उनके पापों को उजागर करेंगे, उनके दिखावटी धार्मिक रीति-रिवाजों के खिलाफ चेतावनी देंगे और आखिर में उनका न्याय करेंगे। ऐसा न करने पर उन्हें परमेश्वर के क्रोध और अनुशासन का सामना करना पड़ेगा, और उन्हें बचाने वाला कोई नहीं होगा।

क्या भजन संहिता 50 का संदेश—जो मूल रूप से पाखंडी इस्राएलियों के लिए था—आज हम पर लागू नहीं होता? परमेश्वर ने हमें अपने घर में इकट्ठा किया है और वे हमसे यही बातें कह रहे हैं। परमेश्वर हमारे पाखंड के खिलाफ चेतावनी देते हैं और हमारे पापों को विस्तार से बताते हैं; वे कहते हैं कि वे हमारे पाखंड का न्याय करेंगे। परमेश्वर की यह बात सुनकर, हमें पाखंड के पाप के लिए पश्चाताप करना चाहिए। हमें कृतज्ञ हृदय से परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए, अपनी मन्नतों को पूरा करना चाहिए और परमेश्वर की आज्ञाओं का

पालन करते हुए जीवन जीना चाहिए। हमें सच्ची आराधना करनी चाहिए और ऐसा जीवन जीना चाहिए जो अपने आप में एक आराधना हो।

परमेश्वर को प्रसन्न करने वाली सच्ची आराधना

[भजन संहिता 51]

अपनी किताब *Sin and Temptation* (पाप और प्रलोभन) में, रेवरेंड जॉन ओवेन कहते हैं कि पाप चार तरह से परमेश्वर का विरोध करता है: (1) पाप शरीर की इच्छाओं को भड़काकर परमेश्वर का विरोध करता है (गलातियों 5:17)। हमारे दिलों में बुराई करने की एक छिपी हुई इच्छा होती है; उनमें गलत काम करने की आदत होती है। शैतान शरीर की इच्छाओं का इस्तेमाल पाप के साथ जुड़ने और बुराई की आग को भड़काने के लिए करता है। (2) पाप झगड़े और कलह को भड़काकर परमेश्वर का विरोध करता है (रोमियों 7:23; याकूब 4:1; 1 पतरस 2:11)। इस संघर्ष में तीन बातें शामिल हैं: पहली, अनुग्रह को ठुकराना; दूसरी, आत्मा पर कब्ज़ा करने के लिए उस पर हमला; और तीसरी, भावनाओं में गड़बड़ी। (3) पाप आत्मा को गुलाम बनाकर परमेश्वर का विरोध करता है (रोमियों 7:23)। पाप की गुलामी के विचार का मतलब चार बातें हैं: पहली, पाप की ताकत इतनी ज़्यादा है कि यह हमें गुलामों की तरह जकड़ लेती है; दूसरी, पाप बार-बार कोशिश करके और सफल होकर हमें अपने कब्ज़े में ले लेता है; तीसरी, गुलामी की यह हालत बहुत बुरी होती है; और चौथी, गुलामी का यह विचार खास तौर पर विश्वासियों पर लागू होता है। जो लोग नए सिरे से पैदा नहीं हुए हैं, वे कभी भी पाप के नियम की गुलामी में नहीं बंधते। (4) पाप धीरे-धीरे इंसान को पागलपन की ओर धकेलकर परमेश्वर का विरोध करता है (सभोपदेशक 9:3)। शैतान एक छोटी सी चिंगारी को भड़काकर बड़ी आग बना देता है। शैतान हमारे अतीत के पापों का फायदा उठाकर हमें और भी—और उससे भी बड़े—पाप करने के लिए उकसाता है।

ऐसा क्यों होता है कि पाप करने और परमेश्वर के वचन के ज़रिए उस पाप के उजागर होने के बाद भी, हम अपनी गलती का दर्द महसूस नहीं कर पाते? हमें पाप की गंभीरता का गहरा एहसास क्यों नहीं होता? इसके

दो कारण हैं: पहला, हमारी आत्मा सुन्न हो गई है क्योंकि हम परमेश्वर से ज़्यादा दुनिया से प्यार करते हैं और उसे अहमियत देते हैं। दूसरा, हममें खुद को सही समझने की सोच होती है। खुद को सही समझने का यह नज़रिया (1) गलत है, (2) परमेश्वर से ज़्यादा बुद्धिमान होने का घमंड है, (3) परमेश्वर के वचन के अधिकार को पापपूर्ण तरीके से नकारना है, और (4) एक ऐसा पाप है जो मसीह के कीमती लहू का अपमान करता है। भजन संहिता 51:19 में, भजनकार दाऊद स्वीकार करता है: "तब तू धर्म के बलिदानों, होमबलियों और पूरी तरह से जलाए जाने वाले बलिदानों से प्रसन्न होगा; तब तेरी वेदी पर बैल चढ़ाए जाएँगे।" "तू पूरी तरह से जलाए जाने वाले बलिदानों से प्रसन्न होगा" - यह वाक्यांश हमें सिखाता है कि हमें ऐसी पूरी और सच्चे दिल से की जाने वाली आराधना करनी चाहिए जो परमेश्वर को प्रसन्न करे। हम ऐसा कैसे कर सकते हैं? आराधना करते समय हमें यह समझना होगा कि परमेश्वर हमसे क्या चाहता है। इसलिए, आज के वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन एक-दो बातों पर विचार करना चाहता हूँ जिनकी परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है, ताकि हम ऐसी आराधना कर सकें जो वास्तव में उसे प्रसन्न करे। मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि इस प्रक्रिया के द्वारा, हम सभी ऐसे सच्चे आराधक बन सकें जो ऐसी पूर्ण आराधना करें जिससे परमेश्वर को आनंद मिले। पहली बात, परमेश्वर हमसे "मन की सच्चाई" चाहता है।

भजन संहिता 51:6 को देखिए: "देख, तू मन की सच्चाई चाहता है, और गुप्त बातों में तू मुझे ज्ञान सिखाएगा।" पिछले बुधवार को, भजन संहिता 50 पर मनन करते समय, हमने पाखंड के विषय पर विचार किया था। ऐसा करते हुए, हमने दाऊद के पाखंड पर भी संक्षेप में चर्चा की थी। दाऊद ने उरिय्याह को बतशेबा (जिसके साथ उसने व्यभिचार किया था) के पास भेजकर अपने पाप को छिपाने की कोशिश की; जब वफादार उरिय्याह घर जाने से मना कर दिया, तो दाऊद ने सेनापति योआब के साथ मिलकर उस वफादार सैनिक को गैर-यहूदियों की तलवार से मरवा डालने की साजिश रची। परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता नातान को दाऊद के उस पाप को उजागर करने के लिए भेजा, जिसे वह छिपाने की कोशिश कर रहा था। परमेश्वर ने उससे कहा, "क्योंकि तूने यह काम गुप्त रूप से किया, लेकिन मैं यह काम सारे इस्राएल के सामने, सूर्य के सामने करूँगा" (2 शमूएल 12:12)। हम भले ही गुप्त रूप से पाप करें, लेकिन पवित्र परमेश्वर ही हमारे पापों को सबके सामने उजागर करता है।

तो फिर, जब परमेश्वर गुप्त रूप से किए गए पापों को उजागर करता है, तो हमें क्या करना चाहिए? हमें सच्चे दिल से अपने पापों का पश्चाताप करना चाहिए।

(1) हमें अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए। आज के वचन, भजन संहिता 51:3–4 को देखें: "क्योंकि मैं अपने अपराधों को मानता हूँ, और मेरा पाप हमेशा मेरे सामने रहता है। मैंने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया है, और तेरी दृष्टि में यह बुरा काम किया है..." 2 शमूएल 12:13 पर भी विचार करें: "दाऊद ने नातान से कहा, 'मैंने प्रभु के विरुद्ध पाप किया है'...." दाऊद ने नबी नातान के सामने अपने पाप को माना और स्वीकार किया, जिन्होंने उसे उस पाप के बारे में बताया था। वह अपने पाप को परमेश्वर के नज़रिए से देखने लगा। नतीजतन, उसने यह स्वीकार किया: "मैंने तेरी दृष्टि में बुरा काम किया है।" दूसरे शब्दों में, दाऊद ने माना, "प्रभु, मैंने तेरी नज़रों में बुरा काम किया है।" क्या ऐसा करना आसान था? मेरा मानना है कि यह बिल्कुल भी आसान नहीं था। कारण यह है कि जब परमेश्वर हमारे किए गए किसी पाप को उजागर करते हैं, तो अक्सर किसी दूसरे व्यक्ति की तुलना में उनके सामने उसे स्वीकार करना ज़्यादा मुश्किल लगता है। दाऊद ने कौन सा पाप किया था? हम दस आज्ञाओं के उल्लंघन के बारे में सोच सकते हैं: हत्या (छठी आज्ञा), व्यभिचार (सातवीं), चोरी (आठवीं), झूठी गवाही देना (नौवीं), या लालच (दसवीं)। इस बारे में, नबी नातान ने दाऊद के पाप की ओर इस प्रकार इशारा किया: "तूने प्रभु के वचन का अनादर क्यों किया और मेरी दृष्टि में बुरा काम क्यों किया?" (2 शमूएल 12:9)। संक्षेप में, दाऊद के पाप को "परमेश्वर का अनादर करना" कहा जा सकता है (पद 10)। फिर भी, दाऊद वहीं नहीं रुका; वह अपने अधर्म के असली स्वरूप को समझने लगा। इस प्रकार, आज के वचन—भजन संहिता 51:5—में दाऊद स्वीकार करता है: "मैं अधर्म में जन्मा, और पाप में मेरी माँ ने मुझे गर्भ में धारण किया।" दाऊद को एहसास हुआ कि उसका अस्तित्व ही शुरू से पाप से दूषित था। वह अपने पाप की गहरी जड़ को समझने लगा। यह भी परमेश्वर की कृपा है। परमेश्वर ने दाऊद को वह समझ (पद 6) दी जिससे वह अपनी आत्मा की गहराइयों की असली स्थिति को जान सके (पार्क युन-सन)।

(2) हमें परमेश्वर की दया और करुणा की खोज करनी चाहिए। आज के लिए भजन संहिता 51:1 देखें: "हे परमेश्वर, अपनी अटूट दया के अनुसार मुझ पर दया कर; अपनी महान करुणा के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे।" पाप करने के बाद जब हम उसे स्वीकार करते हैं, तो हम केवल प्रभु के अटूट प्रेम और उनकी दया पर ही भरोसा कर सकते हैं। इसका कारण यह है कि परमेश्वर के अटूट प्रेम और दया के बिना पापों की क्षमा पाना असंभव है। इसलिए, दाऊद की तरह, हमारे पास विनती करने के अलावा कोई चारा नहीं है, "हे परमेश्वर, मुझ पर दया कर।"

(3) हमें परमेश्वर से अपने पापों को धो डालने की विनती करनी चाहिए।

आज के लिए भजन संहिता 51:2 और 7 देखें: "मेरे सारे अधर्म को धो डाल और मुझे मेरे पाप से शुद्ध कर" (पद 2); "मुझे हिसोप से शुद्ध कर, और मैं शुद्ध हो जाऊँगा; मुझे धो, और मैं बर्फ से भी अधिक सफेद हो जाऊँगा" (पद 7)। पश्चाताप दो प्रकार के होते हैं: कानूनी पश्चाताप और सुसमाचार-आधारित पश्चाताप (पार्क युन-सन)। कानूनी पश्चाताप वह प्रार्थना है जो पाप के प्रति चिंता के बजाय पाप की सजा के डर से परमेश्वर से की जाती है। इसके विपरीत, सुसमाचार-आधारित पश्चाताप सजा की चिंता से उत्पन्न प्रार्थना नहीं है; बल्कि, यह अपराध के परिणामों के प्रति चिंता से उत्पन्न होता है—अर्थात, किसी ने परमेश्वर की महिमा को धूमिल किया है, प्रभु के शत्रुओं को निंदा करने का अवसर दिया है (2 शमूएल 12:14), और परमेश्वर से अलग हो गया है। दाऊद ने परमेश्वर के सामने सुसमाचार पर आधारित पश्चाताप व्यक्त किया। उसने जिन शब्दों का प्रयोग किया—जैसे "मेरे अपराधों को मिटा दे," "मुझे मेरे अधर्म से पूरी तरह धो डाल," और "मुझे मेरे पाप से शुद्ध कर"—वे बताते हैं कि वह नबी नाथन द्वारा घोषित सजा से छूट पाने के लिए प्रार्थना नहीं कर रहा था (2 शमूएल 12:11–14); बल्कि, वह उस अशुद्धता को दूर करने के लिए परमेश्वर से विनती कर रहा था जिसने उसके साथ उसकी संगति को तोड़ दिया था (पार्क यून-सन)।

हमें सच्चे दिल से परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए और सच्चा पश्चाताप करना चाहिए। खबर है कि हाल ही में एक बड़े चर्च के पादरी ने अपनी मंडली के सामने यह बात मानी: "मैंने व्यभिचार किया और इस तरह परमेश्वर के सातवें हुक्म को तोड़ा... मैंने पिछले दो महीने मौत जैसी हालत में बिताए हैं," उन्होंने रोते हुए कहा। उन्होंने आगे कहा, "हमारे प्रभु ने दाऊद को उसके व्यभिचार के लिए और व्यभिचार करते हुए पकड़ी गई महिला को माफ़ कर दिया था, और उन्होंने मेरे पाप को भी माफ़ कर दिया है। फिर भी, भले ही मुझे परमेश्वर से माफ़ी मिल गई है, लेकिन जब मैं उस धोखे और मंडली पर पड़े बोझ के बारे में सोचता हूँ, तो यह मेरे लिए असहनीय होता है।"

दूसरी बात, परमेश्वर हमसे एक "टूटी हुई आत्मा" की अपेक्षा करते हैं।

भजन संहिता 51:17 को देखिए: "परमेश्वर को जो बलिदान चाहिए, वह है टूटी हुई आत्मा; टूटा और पछतावे से भरा हुआ मन—हे परमेश्वर, तू इनका तिरस्कार नहीं करेगा।" यहाँ जिस "टूटी हुई आत्मा" की बात की गई है, वह क्या है? यह एक "टूटा और पछतावे से भरा हुआ मन" है। यह मन की उस अवस्था को दर्शाता है जहाँ आत्मा का कठोरपन और अहंकार बदल जाता है, और व्यक्ति को यह एहसास होता है कि परमेश्वर के अलावा कोई और उद्धार नहीं दिला सकता (पार्क युन-सन)। इसलिए, दाऊद ने टूटी हुई आत्मा के साथ परमेश्वर से विनती की: "हे परमेश्वर, मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर, मुझे खून बहाने के अपराध से छुड़ा..." (पद 14)। टूटी हुई आत्मा उस विश्वासी की पहचान है जो पश्चाताप करते हुए अपने कामों को अत्यंत बुरा मानता है। ऐसे व्यक्ति में अब खुद को महत्वपूर्ण समझने की भावना नहीं रहती (पार्क युन-सन)। उस समय के बाद से, उसमें पाखंड नहीं रहा। इसीलिए दाऊद ने कहा: "क्योंकि तू बलिदान नहीं चाहता, वरना मैं वह देता; तू होमबलि से प्रसन्न नहीं होता" (पद 16)। उसे यह एहसास हो गया था कि परमेश्वर धार्मिक पाखंड के बीच की गई आराधना नहीं चाहते। वह सच स्वीकार करता है कि परमेश्वर ऐसी आराधना नहीं चाहते जो केवल आदत के तौर पर की जाए, जबकि व्यक्ति अपने पाप छिपा रहा हो और उसमें सच्चा पश्चाताप न हो। दाऊद ने अब खुद पर भरोसा नहीं किया; इसके बजाय, वह परमेश्वर के पास विनती लेकर गया, यह मानते हुए कि केवल परमेश्वर ही उसे बचा सकते हैं। तो फिर, दाऊद ने क्या प्रार्थना की जब उसने विनम्रतापूर्वक परमेश्वर से विनती की और पूरी तरह से उन पर भरोसा किया? (1) दाऊद ने सृष्टिकर्ता परमेश्वर से विनती की कि वह उसके भीतर एक शुद्ध मन और एक दृढ़ आत्मा का नया निर्माण करें।

आज के वचन, भजन संहिता 51:10 को देखिए: "हे परमेश्वर, मेरे भीतर एक शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर एक दृढ़ आत्मा का नया निर्माण कर।" दाऊद फिर से पाप करने से बचना चाहता था, और यह महसूस करते हुए कि ऐसा करने का एकमात्र तरीका उसके मन का नया निर्माण होना है, उसने परमेश्वर से विनती की। ऐसा करते हुए, उसने परमेश्वर से "एक दृढ़ आत्मा का नया निर्माण करने" के लिए कहा—यानी, उसने ऐसे मन के लिए प्रार्थना की जो प्रभु पर दृढ़ता से भरोसा करे (पार्क युन-सन)।

(2) दाऊद ने परमेश्वर की उपस्थिति के लिए विनती की। आज के वचन, भजन संहिता 51:11 को देखें: "मुझे अपनी उपस्थिति से दूर न करें और न ही अपनी पवित्र आत्मा को मुझसे अलग करें।" दाऊद ने प्रार्थना की कि वह परमेश्वर से अलग न हो (पार्क युन-सन)।

(3) दाऊद ने परमेश्वर से बहाली के लिए विनती की।

आज के वचन, भजन संहिता 51:12 को देखें: "मुझे अपने उद्धार का आनंद फिर से दें और मुझे एक तत्पर आत्मा दें जो मुझे संभाले रखे।" वह किस तरह की बहाली चाहता था?

(a) सबसे पहले, यह उद्धार के आनंद की बहाली थी (पद 12)।

पाप हमसे आनंद या खुशी छीन लेता है। दूसरे शब्दों में, जब हम परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं और पाप करते हैं, तो हम अपराध-बोध से घिर जाते हैं और उस सच्चे आनंद को खो देते हैं जो परमेश्वर देता है। इसलिए, पश्चाताप करने के बाद, दाऊद ने परमेश्वर से अपने उद्धार का आनंद बहाल करने के लिए कहा। (b) दूसरी बहाली जो दाऊद चाहता था, वह सेवा की बहाली थी।

भजन संहिता 51:13 को देखें: "तब मैं अपराधियों को तेरे मार्ग सिखाऊंगा, और पापी तेरी ओर मुड़ेंगे।" पश्चाताप के माध्यम से परमेश्वर की कृपा प्राप्त करने के बाद, दाऊद ने दूसरों को परमेश्वर की ओर ले जाने का संकल्प लिया (पार्क युन-सन)।

(c) अंत में, तीसरी बहाली जो दाऊद चाहता था, वह स्तुति (आराधना) की बहाली थी।

आज के अंश, भजन संहिता 51:14–15 को देखें: "...मेरी जीभ तेरी धार्मिकता का ऊंचे स्वर में गान करेगी। हे प्रभु, मेरे होंठ खोल, और मेरा मुँह तेरी स्तुति करेगा।" वास्तव में, सबसे महत्वपूर्ण बहालियों में से एक, निस्संदेह, आराधना और स्तुति की बहाली है।

मैंने हाल ही में एक लेख पढ़ा जिसमें एक घटना का ज़िक्र था जहाँ एक बड़े चर्च के पादरी ने सातवीं आज्ञा का उल्लंघन किया था; उसमें ये शब्द थे: "इस युग में परमेश्वर हमसे क्या चाहता है? निश्चित रूप से शानदार चर्च भवन, बेहतरीन प्रशिक्षण कार्यक्रम, बड़े आयोजन या प्रतिभाशाली व्यक्ति नहीं। परमेश्वर हमसे एक टूटा हुआ और पछतावे से भरा हृदय चाहता है। बिना सोए या झपकी लिए, परमेश्वर उन भटके हुए लोगों का

इंतज़ार करता है जिन्होंने पिता का साथ छोड़ दिया है, ताकि वे पश्चाताप करें और लौट आएं" (इंटरनेट)। परमेश्वर यही चाहता है कि हम टूटे हुए हृदय के साथ उसके सामने पश्चाताप करें।

परमेश्वर को प्रसन्न करने वाली पूर्ण आराधना करने के लिए, हमें यह समझना होगा कि वह हमसे क्या चाहता है। यह और कुछ नहीं, बल्कि "मन की सच्चाई" और "टूटा हुआ दिल" है। हमें सच्चे मन से अपने पापों के लिए पछतावा करना चाहिए। साथ ही, हमें सच्चे और पछतावे भरे मन से परमेश्वर को खोजना चाहिए। हमें अपने अंदर एक स्थिर मन के नएपन के लिए, और परमेश्वर की उपस्थिति और बहाली के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। हमें उद्धार की खुशी, सेवा की भावना और स्तुति-आराधना करने वाले दिल की बहाली के लिए भी प्रार्थना करनी चाहिए।

"मैं हमेशा-हमेशा के लिए परमेश्वर के कभी न बदलने वाले प्रेम पर भरोसा रखूँगा"

[भजन संहिता 52]

"मैं हमेशा-हमेशा के लिए परमेश्वर के कभी न बदलने वाले प्रेम पर भरोसा रखता हूँ।"

मनोवैज्ञानिक लैरी क्रैब ने एक बार कहा था, "हम रिश्तों की चाहत रखते हैं। और क्योंकि हम इसकी चाहत रखते हैं, इसलिए हमें चोट पहुँचती है।" हालाँकि रिश्तों की चाहत रखना एक मानवीय स्वभाव है, लेकिन जब हमें रिश्तों में चोट पहुँचती है, तो उनसे दूर रहना भी हमारा स्वभाव बन जाता है। कई बार ऐसा होता है कि हमें मिले दर्द के कारण गहरे जुड़ाव की हमारी स्वस्थ इच्छा भी खत्म हो जाती है। दूसरे शब्दों में, पिछले रिश्तों में मिले घावों के कारण, हम या तो करीबी रिश्ता बनाने की कोशिश करना पूरी ऐसा करना छोड़ देते हैं या फिर ऐसा करने में हिचकिचाते हैं।

इस 'पैशन वीक' (मसीह के दुख-भोग के सप्ताह) के दौरान आपका दिल कैसा महसूस कर रहा है? व्यक्तिगत रूप से, इस समय की शुरुआत करते हुए मुझे बेचैनी महसूस हो रही है। इस बेचैनी की जड़ मानवीय प्रेम की अपूर्ण प्रकृति में है—खासकर, मानवीय प्रेम से पैदा होने वाला भारीपन, दर्द और पीड़ा, जो बार-बार विफल होता रहता है। फिर भी, अजीब बात है कि इसी भारीपन और दर्द ने मुझे आज के बाइबल वचन पर मनन करने के लिए प्रेरित किया है, जिससे मैं परमेश्वर के प्रेम पर और अधिक भरोसा करने लगा हूँ—ऐसा प्रेम जो कभी विफल नहीं होता। मैं भजन संहिता 63:3 के उस वचन को मजबूती से थामे हुए हूँ जो परमेश्वर ने मुझे तब दिया था जब मेरा पहला बच्चा, जुयंग, पैदा हुआ था: "क्योंकि तेरा अटूट प्रेम जीवन से भी बेहतर है, इसलिए मेरे होंठ तेरी स्तुति करेंगे।" भजन संहिता 52 पर इस उपदेश की तैयारी करते समय, मैंने अपनी

बेटी, ये-उन को तस्वीरें दिखाने के लिए जुयंग का फोटो एल्बम खोला; ऐसा करते हुए, मैंने खुद को फिर से परमेश्वर के अनंत और कभी न बदलने वाले प्रेम पर मनन करते हुए पाया। भजन संहिता 52:8 में, दाऊद यह स्वीकारोक्ति और संकल्प करता है: "लेकिन मैं परमेश्वर के घर में एक हरे-भरे जैतून के पेड़ के समान हूँ; मैं हमेशा-हमेशा के लिए परमेश्वर के अटूट प्रेम पर भरोसा रखता हूँ।" इस वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उस विश्वासी के जीवन के तीन पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ जो हमेशा परमेश्वर के अटूट प्रेम पर भरोसा रखता है, और इस प्रकार उसकी दी हुई कृपा को प्राप्त करता है।

पहला, जो लोग परमेश्वर के अटूट प्रेम पर भरोसा रखते हैं, वे देखते हैं और डरते हैं।

भजन संहिता 52:6 के पहले भाग को देखें: "धर्मी लोग देखेंगे और डरेंगे..." हमें क्या देखना है, और हमें किससे डरना है? इसका मतलब है कि हमें यह देखना चाहिए कि परमेश्वर पापियों को ज़रूर सज़ा देते हैं और इसके जवाब में, परमेश्वर का डर मानना चाहिए। फिर भी, ऐसा लगता है कि हममें परमेश्वर के प्रति इस तरह का आदर और डर नहीं है। इसका क्या कारण है? मेरा मानना है कि ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम पाप की माफ़ी और पाप के नतीजों के बीच फ़र्क नहीं कर पाते। दूसरे शब्दों में, हालाँकि हम मानते हैं कि पाप करने के बाद पछतावा करने से माफ़ी मिलती है, लेकिन हम यह भी मान लेते हैं कि उस पाप के नतीजे सिर्फ़ इसलिए खत्म हो जाएँगे क्योंकि हमें माफ़ कर दिया गया है। जॉन ओवेन ने अपनी किताब *Sin and Temptation* में कहा है: "...यह सोचना गलत है कि कोई पाप कर सकता है और कभी भी कृपा से माफ़ किया जा सकता है।" हम कृपा का गलत इस्तेमाल कर रहे हैं। पाप को गंभीरता से न लेकर उसे करना विश्वास का सही नज़रिया नहीं माना जा सकता। हम परमेश्वर पर पाप माफ़ करने वाले के तौर पर ज़्यादा भरोसा और विश्वास करते हैं, न कि उस तौर पर जो पाप की सज़ा ज़रूर देते हैं। नतीजतन, हममें परमेश्वर का सही डर नहीं होता और पाप करते समय हम ज़रूरी डर महसूस नहीं करते।

मेरा मानना है कि पाप की माफ़ी और पाप के नतीजों के बीच फ़र्क किया जाना चाहिए। मुझे इसका एक उदाहरण दाऊद के जीवन में मिलता है। परमेश्वर के खिलाफ़ पाप करने और नबी नाथन द्वारा डांटे जाने के बाद, दाऊद ने अपना पाप कबूल किया और पछतावा किया; इस तरह, उन्हें माफ़ कर दिया गया। हालाँकि, उनके पाप के नतीजे के तौर पर, बतशेबा से पैदा हुआ उनका पहला बच्चा मर गया, और उनके परिवार को बलात्कार, हत्या और तख्तापलट जैसे भयानक नतीजों का सामना करना पड़ा। एक और उदाहरण दाऊद

और शिमी के रिश्ते में मिलता है। जब दाऊद अबशालोम से भाग रहे थे, तो शिमी ने उन्हें श्राप दिया और उन पर पत्थर फेंके; हालाँकि दाऊद के सेनापतियों में से एक शिमी को मारना चाहता था, लेकिन दाऊद ने ऐसा करने से मना कर दिया (2 शमूएल 16:5-6, 9-10)। बाद में, जब अबशालोम की मौत के बाद दाऊद यरूशलेम लौटे, तो शिमी उनका स्वागत करने के लिए बाहर आए, और दाऊद ने उन्हें माफ़ कर दिया। फिर भी, अपनी मौत से पहले, दाऊद ने अपने बेटे सुलैमान को हिदायत दी कि शिमी को बेगुनाह न मानें (1 राजा 2:8-9), जिससे यह बात और पक्की हो जाती है कि पाप की माफ़ी और पाप के नतीजे अलग-अलग बातें हैं।

आज के पाठ, भजन संहिता 52 में जिस पापी का ज़िक्र है, वह डोएग नाम का एक व्यक्ति है। इस व्यक्ति की पहचान इस तरह है: जब दाऊद राजा शाऊल से भाग रहा था, तो उसे अहीमेलेक नाम के एक पुजारी से मदद मिली थी। डोएग (जो एदोमी था) ने यह देखा और राजा शाऊल को इसकी सूचना दी; इसके बाद, शाऊल के आदेश पर, डोएग ने 85 पुजारियों की हत्या कर दी (1 शमूएल 22:9–18)। डोएग के पाप के तीन पहलुओं पर विचार करके, हमें यह सबक सीखना चाहिए कि हमें परमेश्वर का भय मानना चाहिए और उसी तरह का पाप करने से बचना चाहिए।

(1) डोएग का पाप खुद की डींगें मारने का पाप था।

दूसरे शब्दों में, डोएग का पाप घमंड था। आज के पाठ, भजन संहिता 52:1 को देखें: "हे बलवान पुरुष, तू बुराई पर क्यों घमंड करता है?..." अगर *अच्छे* कामों के बारे में भी घमंड के साथ डींगें मारना बुराई है, तो *बुराई* के बारे में डींगें मारना कितना बड़ा पाप होगा? (पार्क युन-सन) यह सच में एक गहरी समझ है—यह बात कि "अच्छे कामों के बारे में घमंड के साथ डींगें मारना बुराई है।" फिर भी, दुष्ट व्यक्ति अपनी बुराई (अपनी बुरी योजनाओं) पर घमंड करता है; यह कितना बुरा पाप है! हमें खुद की डींगें मारने वाले घमंडी पाप से सावधान रहना चाहिए। हमें घमंड से दूर रहना चाहिए। इसके अलावा, हमें यिर्मयाह 9:24 की बातों पर ध्यान देना चाहिए: "जो कोई घमंड करे, वह इस बात पर घमंड करे कि वह मुझे समझता और जानता है, कि मैं ही वह प्रभु हूँ जो पृथ्वी पर दया, न्याय और धार्मिकता करता हूँ। क्योंकि प्रभु कहता है कि मुझे इन्हीं बातों में खुशी मिलती है।" हमें परमेश्वर को जानने पर घमंड करना चाहिए। यह समझना कि परमेश्वर ही दया, न्याय और धार्मिकता करने वाला है—और उस परमेश्वर पर घमंड करना—एक तरह से यह मानना है कि

हम खुद ऐसी दया, न्याय और धार्मिकता का पालन करने में असफल रहते हैं। इसीलिए प्रेरित पौलुस कहते हैं, "जो कोई घमंड करे, वह प्रभु पर घमंड करे" (1 कुरिन्थियों 1:31)। प्रभु में हमारे पास घमंड करने के लिए क्या है? क्या यह हमारी मूर्खता और कमजोरी नहीं है? हमें अपनी मूर्खता और कमजोरी पर क्यों घमंड करना चाहिए? इसका कारण यह है कि "ताकि कोई भी मनुष्य परमेश्वर के सामने घमंड न कर सके" (पद 29)। (2) दोएग का पाप ज़बान से किया गया पाप था।

आज का वचन देखें, भजन संहिता 52:2–4: "तेरी ज़बान बर्बादी की साज़िश रचती है; हे धोखेबाज़, तू तेज़ उस्तरे जैसी है। तू भलाई से ज़्यादा बुराई और सही बात कहने से ज़्यादा झूठ बोलना पसंद करती है। हे धोखेबाज़ ज़बान, तुझे वे सभी बातें पसंद हैं जो दूसरों को बर्बाद कर देती हैं।" दाऊद ने पापी की धोखेबाज़ ज़बान की तुलना "तेज़ उस्तरे" से की है; उस्तरा क्या होता है? आम चाकू के उलट, क्या यह बहुत तेज़ औज़ार नहीं होता जो बाल जैसी बारीक चीज़ को भी काट सकता है? बात यह है कि बुरी ज़बान भी वैसी ही होती है। यह दूसरे व्यक्ति का दिल चीर देती है। पापी अपनी ज़बान का इस्तेमाल धोखा देने और ऐसे शब्द बोलने के लिए करता है जिनसे ज़ख्म लगते हैं। हमें अपनी ज़बान के मामले में सावधान रहना चाहिए। हमें याकूब 3:9–10 की बातों पर ध्यान देना चाहिए और उन्हें मानना चाहिए: "इसी [ज़बान] से हम अपने प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं, और इसी से हम उन लोगों को श्राप देते हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपने स्वरूप में बनाया है। एक ही मुँह से आशीष और श्राप दोनों निकलते हैं। मेरे भाइयों, ऐसा नहीं होना चाहिए।"

(3) दोएग का पाप हत्या का पाप था।

जैसा कि 1 शमूएल 22:18 में बताया गया है, दोएग ने 85 याजकों की हत्या कर दी। उसने बेरहमी से उन याजकों को मार डाला जो परमेश्वर के सेवक थे। हो सकता है कि हम दोएग की तरह हत्या न करें, लेकिन 1 यूहन्ना 3:15 बताता है कि हम सिर्फ़ किसी भाई से नफ़रत करके भी अनगिनत बार हत्या का पाप कर सकते हैं। हमें यह याद रखना चाहिए कि जब हम ऐसे पाप करते हैं, तो परमेश्वर निश्चित रूप से हमें अनुशासित करेगा। हमें इस गलतफ़हमी को छोड़ देना चाहिए कि हम अपने कामों को सही ठहराकर अनुशासन से बच सकते हैं—यह सोचकर कि पछतावा करने पर हमें माफ़ कर दिया जाएगा। जो लोग हमेशा परमेश्वर की दया पर निर्भर रहते हैं, उन्हें परमेश्वर का भय मानना चाहिए।

दूसरी बात, जो लोग हमेशा परमेश्वर की दया और प्रेम पर भरोसा रखते हैं, वे परमेश्वर को ही अपनी ताकत बनाते हैं।

भजन संहिता 52:7 को देखिए: "यह वह आदमी है जिसने परमेश्वर को अपनी ताकत नहीं बनाया, बल्कि अपनी बहुत-सी दौलत पर भरोसा किया और अपनी बुराई से ताकतवर बना।" हिंसक व्यक्ति—जो अच्छाई से ज़्यादा बुराई से प्यार करता है—परमेश्वर के बजाय अपनी दौलत पर भरोसा करता है और दूसरों को बर्बाद करके खुद को ताकतवर बनाता है। ऐसा क्यों है? इसलिए क्योंकि वे मानते हैं कि पैसा ही ताकत है। फिर भी, जो कोई पैसे को अपनी ताकत मानकर जीता है, वह सचमुच मूर्ख और तरस के काबिल है; कारण यह है कि आखिर में उसी पैसे से वे बर्बाद हो जाएँगे। जो लोग पैसे के पीछे भागते हैं, वे उसी से बर्बाद हो जाएँगे, जबकि जो लोग परमेश्वर के पीछे चलते हैं, वे उसी के कारण जीवित रहेंगे। भजन संहिता 73 में, भजनकार आसाफ—नेक लोगों के दुख और बुरे लोगों की खुशहाली के बीच के अंतर से जूझते हुए—बुरे लोगों से जलन करने के कारण लगभग लड़खड़ा गया था। हालाँकि, परमेश्वर के पवित्र स्थान में जाने और उनका अंत—अचानक बर्बादी, पूरी तरह विनाश और उजाड़ होना—देखने के बाद ही उसने अपनी मूर्खता और नासमझी को माना। हमें यह समझना चाहिए: पैसे पर भरोसा करना मकड़ी के जाले पर सहारा लेने जैसा है (अय्यूब 8:14–15)।

हमें गहराई से यह समझने की ज़रूरत है कि हम सचमुच कितने कमज़ोर, बेबस और अक्षम हैं। समस्या यह है कि हम अक्सर सोचते हैं कि हमारे पास बहुत ताकत है। नतीजतन, कई बार हम अपनी ही ताकत पर भरोसा करते हैं और अपनी मर्ज़ी के अनुसार बोलते और काम करते हैं। सब कुछ—हमारे मापदंड, विचार, ज़िद और दावे—बहुत ज़्यादा खुद पर केंद्रित होते हैं। इसलिए, हमें उस आत्म-निर्भरता को छोड़ने की ज़रूरत है, भले ही ऐसा करने के लिए मुश्किलों या दुख का सामना करना पड़े। ऐसा करने से, हम परमेश्वर की ताकत पर भरोसा करने लगते हैं। इसीलिए प्रेरित पौलुस ने अपनी कमज़ोरियों पर भी गर्व किया; वह चाहता था कि "मसीह की ताकत उस पर बनी रहे" (2 कुरिन्थियों 12:9)। परमेश्वर की ताकत कमज़ोरी में ही पूरी होती है (पद 9)।

सिर्फ परमेश्वर ही हमारा मज़बूत गढ़ और हमारी ताकत है। जो लोग हमेशा परमेश्वर की दया और प्रेम पर भरोसा रखते हैं—और जो परमेश्वर को जानने पर गर्व करते हैं—वे पहचानते हैं कि वही उनकी ताकत है और वे पूरी तरह से उसी पर भरोसा करते हैं। इसलिए, भजन 18:1–2 में, दाऊद ने माना और गाया: "हे यहोवा, मेरी शक्ति, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ। यहोवा मेरी चट्टान, मेरा गढ़ और मेरा छुड़ानेवाला है; मेरा परमेश्वर, मेरी चट्टान, जिसमें मैं शरण लेता हूँ; मेरी ढाल और मेरे उद्धार का सींग, मेरा मज़बूत गढ़।" हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारी शक्ति उस परमेश्वर पर "चुपचाप भरोसा करने" (यशायाह 30:15) में है जो "मेरी शक्ति" और "मेरा मज़बूत गढ़" है।

आखिर में, तीसरी बात: जो लोग परमेश्वर की दया पर भरोसा करते हैं, वे हमेशा प्रभु का धन्यवाद करते हैं।

भजन 52:9 पर विचार करें: "मैं हमेशा तेरा धन्यवाद करूँगा, क्योंकि तूने यह किया है; और मैं तेरे पवित्र लोगों के सामने तेरे नाम की प्रतीक्षा करूँगा, क्योंकि यह अच्छा है।" भजनकार दाऊद ने क्यों कहा कि वह हमेशा प्रभु का धन्यवाद करेगा? इसका कारण यह है कि "तूने यह किया है" (पद 9)। दूसरे शब्दों में, क्योंकि प्रभु ने उस हिंसक व्यक्ति को सज़ा दी—वह दुष्ट व्यक्ति जो बुराई पर घमंड करता था और तेज़ उस्तरे जैसी जीभ से धोखा देता था—इसलिए दाऊद ने परमेश्वर के पवित्र लोगों के सामने हमेशा प्रभु का धन्यवाद किया।

परमेश्वर एक धर्मी और पवित्र परमेश्वर है जो दुष्टों को सज़ा देता है। चाहे वह दोएग हो या शाऊल, जिन लोगों ने दाऊद का विरोध किया और उसे मारने की कोशिश की, उन्हें आखिरकार परमेश्वर के न्याय का सामना करना पड़ा। इसलिए, दाऊद ने घोषणा की: "परमेश्वर भी तुझे हमेशा के लिए नष्ट कर देगा; वह तुझे पकड़ लेगा, तुझे तेरे तंबू से उखाड़ फेंकेगा, और जीवितों की भूमि से उखाड़ देगा (सेला)" (पद 5)। दाऊद दुष्टों को परमेश्वर द्वारा सज़ा दिए जाने के बारे में दो तरह से बात करता है:

(1) "तुझे तेरे तंबू से उखाड़ फेंकना" वाक्यांश का अर्थ है कि परमेश्वर उस जगह को ही असुरक्षित बना देता है जहाँ दुष्ट व्यक्ति सुरक्षित महसूस करता था।

यहाँ सुरक्षा की जगह माने जाने वाले "तंबू" का अर्थ "धन-दौलत की बहुतायत" भी हो सकता है जिस पर दुष्ट भरोसा करते थे। हालाँकि, जब परमेश्वर पापी को सज़ा देता है, तो वह उस धन को छीन लेता है, जिससे वे असुरक्षित हो जाते हैं। हग्गै 1:6 पर विचार करें: "तुमने बहुत बोया, पर थोड़ा ही काटा; तुम खाते तो हो, पर तुम्हारा पेट नहीं भरता; तुम पीते तो हो, पर तुम्हारी प्यास नहीं बुझती; तुम कपड़े तो पहनते हो, पर किसी को गर्मी नहीं मिलती; और जो मज़दूरी कमाता है, वह ऐसी थैली में कमाता है जिसमें छेद हों।"

(2) वाक्यांश "तुम्हें जीवितों की धरती से उखाड़ फेंकना।"

यह उसकी घोर दुष्टता के दंड के रूप में पूरी तरह से विनाश को दर्शाता है (पार्क युन-सन)। इसके विपरीत, धर्मी लोग—जो हमेशा परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं—वे "परमेश्वर के घर में हरे-भरे जैतून के पेड़ के समान" हैं (पद 8)। जो विश्वासी हमारे परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, वे परमेश्वर के मज़बूत और अटूट घर में लगे हरे-भरे जैतून के पेड़—एक सदाबहार पेड़—के समान हैं। जिस तरह एक सदाबहार पेड़ कड़ाके की ठंड में भी अपनी हरी-भरी पत्तियों को बनाए रखता है, उसी तरह हम विश्वासी किसी भी मुसीबत या सताहट के बीच परमेश्वर की कभी न बदलने वाली भलाई और प्रेमपूर्ण दया का अनुभव करते हुए जीते हैं, और उनके घर में उन्हें धन्यवाद देते हैं।

हम घोर पीड़ा के बीच भी परमेश्वर की महान प्रेमपूर्ण दया का अनुभव करते हैं। दर्द जितना गहरा और गंभीर होता है, हम परमेश्वर के प्रेम का अनुभव उतना ही गहराई और शक्ति से करते हैं। जब हम घोर पीड़ा की बात करते हैं, तो हम यीशु के बारे में सोचे बिना नहीं रह सकते, जिन्होंने मनुष्य का रूप धारण किया और क्रूस पर प्राण दिए। जब हम क्रूस की भयानक पीड़ा सहने वाले यीशु पर विचार करते हैं, तो हमें परमेश्वर के उस पूर्ण प्रेम का एहसास होता है जो उनकी मृत्यु के द्वारा हम पर प्रकट हुआ। परमेश्वर पिता ने अपना क्रोध और दंड अपने विनम्र, कोमल और निष्पाप एकलौते पुत्र, यीशु पर डाला; पिता ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने और मरने की अनुमति क्यों दी? यह हमारी मुक्ति के लिए था। यीशु—जो स्वयं शक्ति हैं—कैसे शक्तिहीन हो गए और उस शापित पेड़ पर लटके? यह हमारे सभी पापों का प्रायश्चित करने के लिए था। अंततः, परमेश्वर

पिता ने क्रूस पर परमेश्वर पुत्र का न्याय करके हमें बचाया। तो फिर, हम परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करने में कैसे चूक सकते हैं? हमें सदा प्रभु को धन्यवाद और स्तुति देनी चाहिए।

मूर्ख लोग

[भजन संहिता 53]

"बुद्धिमानी" क्या है? केन गिरे के अनुसार, हिब्रू भाषा में बुद्धिमानी का मतलब है "जीने की कला"। उनका कहना है कि यह कला तब सीखी जाती है जब हम अपने दिलों में परमेश्वर की आवाज़ को ज़्यादा संवेदनशीलता से सुनने की आदत डालते हैं। सी. एस. लुईस ने एक बार कहा था, "इंसान होने के नाते, हमारी सबसे बड़ी गरिमा पहल करने में नहीं, बल्कि प्रतिक्रिया देने में है।" जब परमेश्वर बोलते हैं, तो हम सुनते हैं; जब वे बीज बोते हैं, तो हम उसे ग्रहण करते हैं। बीज बोना परमेश्वर की उस कोशिश को दिखाता है जिससे वे इंसानों के वीरान दिलों में अदन (स्वर्ग जैसा बगीचा) को फिर से बसाना चाहते हैं, जबकि बीज को ग्रहण करना उस काम में हमारी भागीदारी है। हमें उस चीज़ की ज़रूरत है जिसे चार्ल्स स्विंडोल "वीराने की बुद्धिमानी" कहते हैं। "वीराने" के लिए हिब्रू शब्द है *मिदबार*, जो *दाबार* से निकला है, जिसका अर्थ है "बोलना"। इस मूल शब्द को देखते हुए, वीराने को उस जगह के तौर पर समझा जा सकता है जहाँ परमेश्वर बोलते हैं—वह जगह जहाँ वे हमें अपने सबसे ज़रूरी संदेश देते हैं। इसलिए, हमें अपनी मर्ज़ी से वीराने में जाना चाहिए, कोई शांत जगह ढूँढ़नी चाहिए और परमेश्वर की आवाज़ सुननी चाहिए। फिर हमें उस आवाज़ को मानते हुए जीवन जीना चाहिए। यही बुद्धिमान लोगों का जीवन है। फिर भी, हाल ही में, परमेश्वर लगातार मेरी अपनी मूर्खता को उजागर कर रहे हैं। खासकर, डॉ. इमर्सन एगेरिच की किताब *लव एंड रिस्पेक्ट* (Love & Respect) के ज़रिए, वे मुझे दिखा रहे हैं कि बाइबल के सिद्धांतों के अनुसार शादी को निभाने में मैं कितना पीछे रह जाता हूँ। जब मैं खुद को देखता हूँ—अपनी शादी में परमेश्वर के वचन को लागू करने में नाकाम और इस तरह अपनी मूर्खता को उजागर करते हुए—तो मुझे ऐसा लगता है जैसे... "उस कुत्ते की तरह जो अपनी ही उल्टी को फिर से खा लेता है," मुझे एहसास होता है कि मैं भी अपनी मूर्खतापूर्ण हरकतों को दोहराता रहता हूँ।

भजन संहिता 53:1 में "मूर्खों" की बात की गई है। इन मूर्खों ने भजन रचने वाले दाऊद को घेर लिया था और उसे सताया था (पद 6)। हालाँकि इस हिस्से में "मूर्ख" उन दुष्ट लोगों के लिए इस्तेमाल हुआ है जो नेक दाऊद को सताना और मारना चाहते थे, लेकिन मैं इस हिस्से और भजन संहिता 14—दोनों से—मूर्ख के असली स्वभाव पर विचार करना चाहता हूँ ताकि हम अपने अंदर की मूर्खता को परख सकें। मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर के वचन के खुलासे से अपनी मूर्खता को पहचानकर, हम पश्चाताप करें और परमेश्वर के उद्धार की कृपा का अनुभव करें। आइए हम उस कृपा को पाएँ जिससे हम परमेश्वर से मिलने वाली खुशी और आनंद को फिर से पा सकें।

सबसे पहले, मूर्ख वे हैं जो अपने मन में कहते हैं, "कोई परमेश्वर नहीं है।"

भजन संहिता 53:1 के पहले हिस्से को देखें: "मूर्ख अपने मन में कहता है, 'कोई परमेश्वर नहीं है'..."। "मूर्ख" के लिए हिब्रू शब्द है *नाबाल*। यह अबीगैल के पति का नाम भी है, जो दाऊद की कहानी में आता है। 1 शमूएल 25 में, जब नाबाल ने दाऊद की भलाई का बदला बुराई से दिया (पद 21), तो उसकी पत्नी अबीगैल—जो समझदार और सुंदर महिला थी (पद 3)—दाऊद के पास गई, ज़मीन पर झुककर उसके पैरों पर गिर पड़ी, और कहा कि दोष उस पर—यानी उस पर खुद पर—डाला जाए (पद 24)। ऐसा करते हुए, उसने अपने पति के बारे में कहा: "...कृपया, मेरे स्वामी, इस दुष्ट व्यक्ति नाबाल पर ध्यान न दें; क्योंकि उसका नाम उस पर बिल्कुल सही बैठता है—उसका नाम नाबाल है, और वह एक मूर्ख है..." (पद 25)। जब हम नाबाल के बारे में सोचते हैं—वह मूर्ख जिसने दाऊद की दया का बदला बुराई से दिया—तो हमें एहसास होता है कि परमेश्वर की नज़र में हम भी "नाबाल" ही हैं। दूसरे शब्दों में, हालाँकि परमेश्वर हम पर भलाई करता है, हम उसकी भलाई का बदला पाप से देते हैं; इस तरह, हम उसकी नज़र में "नाबाल" के रूप में खड़े होते हैं।

अपनी टीका में, डॉ. पार्क युन-सन ने "मूर्ख" को "व्यावहारिक नास्तिक" बताया है। सैद्धांतिक नास्तिक के विपरीत, व्यावहारिक नास्तिक वह होता है जो बातों से तो परमेश्वर को मानता है लेकिन अपने कामों से उसे नकारता है। ये मूर्ख "परमेश्वर को जानते थे, फिर भी उन्होंने उसे परमेश्वर के रूप में महिमा नहीं दी, न ही धन्यवाद दिया, बल्कि उनके विचार व्यर्थ हो गए, और उनके मूर्ख मन अंधेरे से भर गए" (रोमियों 1:21)। मूर्ख

निश्चित रूप से परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में जानते हैं; हालाँकि, क्योंकि उनके विचार व्यर्थ हो गए हैं और उनके मूर्ख मन अंधेरे से भर गए हैं, वे ऐसा जीवन जीते हैं जो उसे नकारता है। वे होंठों से तो परमेश्वर को मानते हैं लेकिन अपने कामों से उसे नकारते हैं (तीतुस 1:16); तीतुस ऐसे लोगों को "आज्ञा न मानने वाले, व्यर्थ बातें करने वाले और धोखा देने वाले" बताता है (तीतुस 1:10)। उनके बारे में तीतुस की सलाह यह है कि "उनके मुँह बंद कर दिए जाने चाहिए।" कारण यह है कि जब कलीसिया के भीतर मूर्ख लोग केवल बातों से परमेश्वर को मानते हैं, लेकिन अपने कामों से उसका इनकार करते हैं, तो उनकी वजह से पूरी कलीसिया बर्बाद हो जाती है (वचन 11)।

दूसरी बात, मूर्ख वे हैं जो भलाई नहीं करते।

भजन संहिता 53:1 के दूसरे हिस्से और वचन 3 को देखें: "...वे बिगड़ गए हैं और घिनौनी बुराई की है; कोई भी भलाई करने वाला नहीं है" (वचन 1b); "...वे सब भटक गए हैं; सब के सब बिगड़ गए हैं; कोई भी भलाई करने वाला नहीं है, एक भी नहीं" (वचन 3)। मूर्ख लोग शायद अपने होंठों से परमेश्वर की तारीफ़ करते हुए कहें, "परमेश्वर भला है," फिर भी वे अपने जीवन में भलाई न करके परमेश्वर की भलाई का इनकार करते हैं। भले ही उन्होंने परमेश्वर की भलाई का अनुभव किया हो (भजन संहिता 34:8), लेकिन सभी अच्छे कामों को छोड़ देने के कारण, वे बुरे काम करने वाले बन गए हैं जो भलाई नहीं कर पाते। उनके बुरे कामों को "भ्रष्टाचार" और "घिनौनी बुराई" कहा गया है (वचन 1)। यहाँ, "भ्रष्टाचार" का अर्थ है "नैतिक भ्रष्टाचार"—यानी, इतनी ज़्यादा बुराई की हालत जिसे कोई अपनी ताकत से ठीक नहीं कर सकता (पार्क युन-सन)। आखिर में दाऊद ने उन्हें "भ्रष्ट" कहकर उनकी "घिनौनी बुराई" का वर्णन किया (वचन 3)।

क्योंकि मूर्ख अपने मन में कहते हैं कि कोई परमेश्वर नहीं है, इसलिए वे न केवल भलाई करने में नाकाम रहते हैं, बल्कि ऐसा करने में असमर्थ भी होते हैं। जो लोग एक भले परमेश्वर के अस्तित्व को ही नहीं मानते, वे भला अच्छे काम कैसे कर सकते हैं? प्रेरित पौलुस ने कहा: "शरीर के अनुसार सोचने वाला मन परमेश्वर का विरोधी होता है; वह परमेश्वर के नियम के अधीन नहीं होता, और न ही हो सकता है" (रोमियों 8:7)। मूर्ख न तो "भलाई करने" के परमेश्वर के आदेश को मानते हैं और न ही उनमें ऐसा करने की क्षमता होती है। नतीजतन, वे आदत के तौर पर भ्रष्टाचार और घिनौनी बुराई के काम करते हैं।

तीसरी बात, मूर्ख वे हैं जो परमेश्वर को जानने की कोई कोशिश नहीं करते। भजन संहिता 53:2 को देखें: "परमेश्वर स्वर्ग से मनुष्यों की संतानों पर दृष्टि डालता है, यह देखने के लिए कि क्या कोई समझदार है, जो परमेश्वर की खोज करता है।" यहाँ जिन "मूर्खों" की बात की गई है, वे ऐसे लोग हैं जो मुँह से तो कहते हैं कि वे परमेश्वर को जानते हैं, लेकिन असल में वे उसे नहीं जानते और न ही उसे जानने की कोशिश करते हैं; बल्कि, उन्हें ऐसा करने की ज़रूरत भी महसूस नहीं होती। परमेश्वर के उन्हें परखने के लिए "नीचे देखने" के बावजूद, उन मूर्खों में से कोई भी परमेश्वर को जानने की कोशिश नहीं करता। परमेश्वर को जानने की कोशिश न करने का मतलब है कि वे न तो उसे ढूँढ़ते हैं और न ही उसे पुकारते हैं (पद 4)। परमेश्वर के लोगों पर ज़ुल्म करने का पाप करने के बाद भी, वे पछतावे के साथ परमेश्वर को नहीं पुकारते।

भजन संहिता 14:3 में कहा गया है कि सभी मूर्ख भटक गए हैं। इसका मतलब है कि वे परमेश्वर को जानने के रास्ते से हट गए हैं (पार्क युन-सन)। [वे कई तरह से परमेश्वर को खोजने में नाकाम रहते हैं:] परमेश्वर को खोजने की कोई इच्छा न होना; अकेले परमेश्वर को खोजने के बजाय उसके साथ-साथ दूसरी चीज़ों को खोजना; परमेश्वर से पहले दुनिया की चीज़ों को खोजना; बिना जोश के परमेश्वर को खोजना; लगातार उसे न खोजना; उसके वचन के अनुसार उसे न खोजना (जैसा कि विधर्मी करते हैं); और सही समय पर उसे न खोजना (जैसे, जब पछतावा करना चाहिए तब न करना—पार्क युन-सन)। चौथी बात, मूर्ख वे हैं जो परमेश्वर के लोगों पर ज़ुल्म करते हैं।

भजन संहिता 54:4 को देखिए: "क्या बुराई करने वालों को कोई ज्ञान नहीं है, जो मेरे लोगों को ऐसे खा जाते हैं जैसे रोटी खाते हैं, और परमेश्वर को नहीं पुकारते?" दाऊद कहता है कि मूर्ख बुराई करने वाले होते हैं और असल में अज्ञानी होते हैं। वे ऐसे लोग हैं जिनके दिल पाप के कारण कठोर हो गए हैं, और वे कुछ भी सीखने या समझने में पूरी तरह असमर्थ हैं। इसके अलावा, जब दाऊद कहता है, "...जो मेरे लोगों को ऐसे खा जाते हैं जैसे रोटी खाते हैं...", तो उसका मतलब है कि मूर्ख बिना किसी हिचकिचाहट के परमेश्वर के लोगों पर ज़ुल्म करते हैं। क्योंकि वे ऐसे कामों को मामूली बात समझते हैं, इसलिए वह पूछता है, "क्या बुराई करने वालों को कोई ज्ञान नहीं है?" (पद 4)।

बाइबल ऐसे मूर्ख लोगों के अंजाम के बारे में क्या कहती है? परमेश्वर ने मूर्खों को ठुकरा दिया है। पद 5 का आखिरी हिस्सा देखिए: "...क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें ठुकरा दिया है, इसलिए तूने उन्हें शर्मिंदा किया है।" क्योंकि

परमेश्वर ने मूर्खों को ठुकरा दिया है, इसलिए उन्हें शर्मिंदगी उठानी पड़ती है। इसके अलावा, मूर्ख लोग वहाँ भी बहुत डरते हैं जहाँ डरने की कोई वजह नहीं होती (पद 5)। इसका कारण यह है कि परमेश्वर मूर्खों की हड्डियों को बिखेर देता है। मूर्ख... जो लोग परमेश्वर से नहीं डरते—जो बुरे और घिनौने काम करते हैं और परमेश्वर के लोगों पर ज़ुल्म ढाते हैं—वे आखिर में परमेश्वर से बहुत डरने लगेंगे, जब उन्हें परमेश्वर के सही न्याय और सज़ा का सामना करना पड़ेगा।

परमेश्वर मूर्खों को दूर कर देता है और अपने लोगों को बचाता है। आज के वचन, भजन संहिता 52:6 को देखिए: "काश, इस्राएल का उद्धार सिय्योन से होता! जब परमेश्वर अपने लोगों की भलाई को फिर से बहाल करेगा, तो याकूब खुशी मनाए और इस्राएल आनंदित हो!" दाऊद हमें खुशी मनाने और आनंदित होने के लिए कहता है क्योंकि परमेश्वर मूर्खों को दूर करके और अपने लोगों को गुलामी से आज़ाद करके उद्धार लाएगा। हमारा दुख तो बस कुछ पल के लिए है, जबकि हमारी खुशी हमेशा की है।

वह प्रभु जो मेरी आत्मा को संभालता है

[भजन संहिता 54]

हेनरी नूवेन की किताब *अ पर्सन हू रिमाइंड्स अस ऑफ़ जीसस* (A Person Who Reminds Us of Jesus) में, एक अध्याय है जिसका शीर्षक है "वह व्यक्ति जो हमें यीशु की संभालने वाली उपस्थिति की याद दिलाता है।" इस अध्याय में, नूवेन चर्चा करते हैं कि "क्या चीज़ संभालती है,
संभालने की क्रिया क्या है, और वह व्यक्ति कौन है जो संभालता है।" यहाँ मुख्य वचन यूहन्ना 16:7 और 13 हैं: "...तुम्हारे लिए मेरा जाना ही अच्छा है; क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो सहायक तुम्हारे पास नहीं आएगा... जब सच्चाई का आत्मा आएगा, तो वह तुम्हें सारी सच्चाई की ओर ले जाएगा..." यहाँ मुख्य बात यह है कि यीशु के जाने से, उनके शिष्यों के लिए प्रभु के साथ और भी घनिष्ठ अनुभव—या संगति—करना संभव हो गया (पवित्र आत्मा के माध्यम से)। दूसरे शब्दों में, यीशु की अनुपस्थिति ने वास्तव में शिष्यों को उनके साथ और गहरी घनिष्ठता साझा करने में सक्षम बनाया। इस घनिष्ठ संगति ने उन्हें दुख के समय संभाले रखा और उनमें यीशु को फिर से देखने की आशा जगाई। यह कैसे संभव हुआ? यह "याद करने की क्रिया" (नूवेन) के माध्यम से संभव हुआ। अतीत को वर्तमान वास्तविकता बनाकर, शिष्य अपनी कठिनाइयों को सहने और उन पर विजय पाने में सक्षम हुए, और यीशु में अपनी आशा के कारण वे संभले रहे। पवित्र आत्मा—वह सहायक जो यीशु के जाने के बाद आया—उत्पीड़न, विपरीत परिस्थितियों और दुख के बीच शिष्यों को संभालता है; वह उन्हें यीशु की सिखाई हुई बातें और उनके दिखाए गए प्रेम की याद दिलाता है।

यीशु के बारे में आपकी क्या यादें हैं? उनकी कौन सी यादें आपको आज की कठिनाइयों और विपरीत परिस्थितियों में संभाले रखती हैं? यादें न केवल हमें अतीत से जोड़ती हैं बल्कि हमें वर्तमान में जीते रहने की

शक्ति भी देती हैं (नूवेन)। अतीत के उद्धार की यादें हमें उन विपरीत परिस्थितियों से आगे बढ़ने की शक्ति देती हैं जिनका हम अभी सामना कर रहे हैं।

भजन संहिता 54:4 में, दाऊद स्वीकार करता है: "परमेश्वर मेरा सहायक है; प्रभु ही वह है जो मेरे जीवन को संभालता है।" "मेरे जीवन को संभालने वाला" वाक्यांश प्रभु को उस व्यक्ति के रूप में बताता है जो मेरी आत्मा को थामे रखता है—या वह जो... यह उस व्यक्ति के बारे में बताता है जो हमें थामे रखता है। आज, इस वचन और "वह प्रभु जो मेरी आत्मा को थामे रखता है" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं प्रभु द्वारा थामी गई आत्मा के जीवन के तीन पहलुओं पर विचार करना और उनसे सीखना चाहता हूँ। सबसे पहले, प्रभु का सहारा पाने वाली आत्मा परमेश्वर से विनती करती है।

भजन संहिता 54:2 को देखें: "हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन; मेरे मुँह की बातों पर कान लगा।" आज हमारे सामने जो अंश है, वह उस समय की पृष्ठभूमि में है जब दाऊद शाऊल के अत्याचार से भाग रहा था; ज़ीफ़ के लोगों ने राजा शाऊल को दाऊद के छिपने की जगह बताकर उसके साथ विश्वासघात किया था (इसकी और जानकारी 1 शमूएल 23:19 और अध्याय 26 में मिल सकती है)। इस भजन की पृष्ठभूमि भजन संहिता 52 जैसी ही है। भजन संहिता 52 में—जिस पर हम पहले ही मनन कर चुके हैं—संदर्भ भी राजा शाऊल के अत्याचार से दाऊद के भागने का था, खासकर तब जब एदोमी दोएग ने शाऊल को बताया कि दाऊद अहीमेलेक याजक के घर गया था। यह अंश और भजन संहिता 52, दोनों ही तब लिखे गए थे जब दाऊद पर राजा शाऊल अत्याचार कर रहा था—ये तब लिखे गए थे जब उसे विश्वासघात के कारण खतरे और संकट का सामना करना पड़ा था। ऐसे खतरे और संकट के बीच, दाऊद की पहली प्रतिक्रिया परमेश्वर की ओर देखना और उनसे विनती करना थी (पद 2)। उसकी प्रार्थना का एक मुख्य या अंतिम हिस्सा आज के अंश के पद 1 में मिलता है: "हे परमेश्वर, अपने नाम के द्वारा मुझे बचा, और अपनी सामर्थ्य से मेरा न्याय कर।" खतरे का सामना करते समय भी, खतरे के बारे में सोचने के बजाय, दाऊद ने सबसे पहले परमेश्वर की ओर देखा और उनसे उद्धार की विनती की। यहाँ हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि खतरनाक स्थिति में परमेश्वर से छुटकारा पाने के लिए पुकारते समय, दाऊद ने "आपके नाम" पर भरोसा किया। प्रभु का नाम एक "अच्छा नाम" है (पद 6)। उस अच्छे नाम पर भरोसा करते हुए परमेश्वर से उद्धार की विनती करने का अर्थ है इस विश्वास के साथ प्रार्थना करना कि परमेश्वर खतरनाक स्थिति को भी भलाई में बदल देंगे।

हेनरी नूवेन ने प्रार्थना के बारे में एक बार यह कहा था: "प्रार्थना परमेश्वर के सामने खाली दिल के साथ असहाय होकर खड़े होने का एक तरीका है, यह स्वीकार करते हुए कि सब कुछ अनुग्रह है और कुछ भी केवल हमारी अपनी कड़ी मेहनत का परिणाम नहीं है।" इसीलिए, आज के अंश में दाऊद की तरह, हम "आपकी सामर्थ्य" पर भरोसा करते हुए परमेश्वर से विनती करते हैं। हमें भी प्रभु के अच्छे नाम और उनकी सामर्थ्य पर भरोसा करते हुए परमेश्वर को पुकारना चाहिए। खतरनाक हालात और मुश्किलों के बीच, हमें परमेश्वर से उद्धार की चाहत रखनी चाहिए और उस परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए जो बचाता है। ऐसी प्रार्थना हमें संभाले रखेगी। परमेश्वर प्रार्थना करने वालों को सहारा देता है।

दूसरी बात, जिस आत्मा को प्रभु सहारा देते हैं, वह परमेश्वर को अपने सामने रखती है।

भजन संहिता 54:3 को देखें: "अजनबी मेरे खिलाफ उठ खड़े हुए हैं, और बेरहम लोग मेरी जान लेना चाहते हैं; उन्होंने परमेश्वर को अपने सामने नहीं रखा है (सेलाह)।" यहाँ, हम समझ सकते हैं कि दाऊद ने परमेश्वर से इतनी शिद्दत से विनती क्यों की। कारण यह था कि वह ऐसी स्थिति में था जहाँ "अजनबी" — यानी अधर्मी, दुष्ट लोग — उस पर हमला कर रहे थे और उसकी जान लेना चाहते थे। और साफ तौर पर कहें तो, यहाँ जिन "अजनबियों" का ज़िक्र है, वे ज़िफ़ी लोग हैं, जिन्होंने राजा शाऊल के सामने दाऊद के साथ विश्वासघात किया था। इसके अलावा, "बेरहम लोग मेरी जान लेना चाहते हैं" वाक्यांश राजा शाऊल की उन हरकतों की ओर इशारा करता है जिनमें उसने दाऊद को पकड़ने और उसे नुकसान पहुँचाने की कोशिश की थी। आखिर में, दाऊद इन दुष्ट लोगों का वर्णन ऐसे लोगों के तौर पर करता है जो परमेश्वर का डर माने बिना बुराई करते हैं। ज़िफ़ी लोगों ने, जिन्होंने राजा शाऊल को दाऊद के बारे में जानकारी दी थी, राजाओं के राजा प्रभु का आदर करने या उनकी ओर देखने के बजाय शाऊल से डरना चुना — जिसे वे अपनी आँखों से देख सकते थे। नतीजतन, उन्होंने दाऊद के ठिकाने का पता बताकर शाऊल की मदद की।

जो विश्वासी सचमुच परमेश्वर द्वारा संभाला जाता है, वह *कोराम देओ* (Coram Deo) का जीवन जीता है। *कोराम देओ* शब्द लैटिन के *कोराम* ("की उपस्थिति में") और *देओ* ("परमेश्वर") शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है "परमेश्वर की उपस्थिति में।" इस बात के प्रति जागरूक रहना कि परमेश्वर का चेहरा हमेशा हमारे सामने है — उनकी उपस्थिति का एहसास बनाए रखना — यही हमें सच्चा साहस और पवित्रता

देता है। यूसुफ बाइबिल के एक ऐसे व्यक्ति का बेहतरीन उदाहरण है जिसने इस *कोराम देओ* विश्वास के साथ जीवन जिया; अपने पूरे जीवन में, वह हर पल अपने सामने परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति जागरूक रहा। उत्पत्ति 39:9 को देखें: "इस घर में मुझसे बड़ा कोई नहीं है; मेरे मालिक ने तुम्हारे अलावा मुझसे कुछ भी नहीं छिपाया है, क्योंकि तुम उसकी पत्नी हो। तो फिर मैं ऐसा बुरा काम कैसे कर सकता हूँ और परमेश्वर के खिलाफ पाप कैसे कर सकता हूँ?" "तो फिर मैं ऐसा बुरा काम कैसे कर सकता हूँ और परमेश्वर के खिलाफ पाप कैसे कर सकता हूँ?" वहाँ कोई और नहीं था। किसी को पता नहीं था। किसी ने नहीं देखा। फिर भी, यूसुफ़ ने देखा कि परमेश्वर उसके सामने खड़े हैं। परमेश्वर देख रहे थे। परमेश्वर सुन रहे थे। परमेश्वर सब जानते थे। तो फिर, वह इतनी बड़ी बुराई कैसे कर सकता था? यह यूसुफ़ का "कोरम देओ" (Coram Deo) वाला विश्वास था। हमें भी "कोरम देओ" विश्वास के साथ जीना चाहिए। इस दुनिया के लगातार प्रलोभनों के बावजूद अडिग रहकर जीत हासिल करने के लिए, हमें "कोरम देओ" के पक्के विश्वास के साथ जीना होगा: यानी इस एहसास के साथ कि हम परमेश्वर की उपस्थिति में जी रहे हैं।

तीसरी बात, जिस आत्मा को प्रभु संभालते हैं, उसे परमेश्वर की मदद का भरोसा होता है।

भजन संहिता 54:4 को देखिए: "सचमुच परमेश्वर मेरी सहायता करनेवाला है; प्रभु ही मेरे जीवन को संभालनेवाला है।" दाऊद को परमेश्वर की मदद और संभालने की शक्ति का इतना पक्का भरोसा कैसे था? इसका जवाब हमें आयत 7 में मिलता है: "क्योंकि उसने मुझे मेरी सारी मुसीबतों से बचाया है, और मेरी आँखों ने मेरे दुश्मनों पर जीत देखी है।" मौजूदा खतरों और संकटों के बीच, दाऊद को परमेश्वर की मदद का भरोसा था क्योंकि उसे याद था कि परमेश्वर ने पहले भी उसे मुसीबत से बचाया था। इसके अलावा, जब उसने परमेश्वर को अपने दुश्मनों को सज़ा देते देखा था, तो उसे यकीन था कि परमेश्वर उन लोगों का न्याय करेगा और उनसे बदला लेगा जो अभी उसे सता रहे थे—चाहे वह शाऊल हो या ज़िफ़ के लोग। आयत 5 को देखिए: "जो मेरी बुराई करते हैं, उन पर ही उनकी बुराई लौट आए; अपनी सच्चाई से उन्हें नष्ट कर दे।" धर्मी परमेश्वर ही दाऊद के दुश्मनों को उनके कर्मों का फल देता है। इस भरोसे पर दाऊद की क्या प्रतिक्रिया थी? उसने परमेश्वर का धन्यवाद किया: "मैं अपनी खुशी से तुझे भेंट चढ़ाऊँगा; हे प्रभु, मैं तेरे नाम की स्तुति करूँगा..." (आयत 6)। अतीत में परमेश्वर की मदद का अनुभव करने और वर्तमान में भी उसके अनुभव का भरोसा होने के कारण, दाऊद ने अपनी मर्ज़ी से धन्यवाद की भेंट चढ़ाई।

हेनरी नूवेन ने याद करने के बारे में एक बार यह कहा था: "याद करने का मतलब सिर्फ़ अतीत की घटनाओं को पीछे मुड़कर देखना नहीं है। इससे भी ज़रूरी बात यह है कि उन पुरानी घटनाओं को वर्तमान में लाया जाए और उन्हें यहीं और अभी याद किया जाए।" जब हम उद्धार की पुरानी घटनाओं को अपने मौजूदा संकट में लाते हैं और उन्हें याद करते हैं, तो हमें परमेश्वर की मदद का भरोसा हो सकता है—खासकर, बुरे लोगों का न्याय करने और धर्मी लोगों को बचाने के उसके काम का। नतीजतन, ऐसे संकटों के बीच भी हम अपनी मर्ज़ी से परमेश्वर की धन्यवाद-पूजा कर सकते हैं।

हम पवित्र भोज (Holy Communion) के ज़रिए यीशु को याद करते हैं, जिन्हें लगभग 2,000 साल पहले कलवरी पर्वत पर क्रूस पर चढ़ाया गया था और जिनकी मृत्यु हुई थी। हम उन्हें तब याद करते हैं जब हम रोटी—जो क्रूस पर टूटे उनके शरीर का प्रतीक है—और दाख-रस—जो वहाँ बहाए गए उनके कीमती लहू का प्रतीक है—को ग्रहण करते हैं। इसके अलावा, हमारे अंदर रहने वाला पवित्र आत्मा यीशु के शब्दों और प्रेम की याद दिलाता है, और हमें अपने जीवन की किसी भी मुश्किल, दर्द या तकलीफ़ पर जीत पाने की शक्ति देता है। जब पवित्र आत्मा हमें हमारे भले प्रभु के नाम और शक्ति पर भरोसा करने और परमपिता परमेश्वर को पुकारने के लिए प्रेरित करता है, तो हमें यह भरोसा हो जाता है कि प्रभु सब कुछ भलाई के लिए ही करेंगे। इसलिए, हमें उनके उद्धार की कृपा के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए उनकी आराधना करनी चाहिए।

"अपना बोझ प्रभु पर डाल दें"

[भजन संहिता 55]

हम जिस दुनिया में रहते हैं, वह धीरे-धीरे हमारे दिलों पर भारी बोझ डाल देती है। यह दुनिया चिंता, परेशानी, दुख और दर्द के अलावा कुछ नहीं देती। फिर भी, विश्वासियों के तौर पर, हम ऐसी दुनिया में रहते हुए भी शांति का अनुभव करते हैं। हम लगातार दुनिया के सभी भारी बोझ प्रभु के सामने रख देते हैं, और उस शांति का अनुभव करते हैं जो वह हमें ऐसी दुनिया में देता है जहाँ शांति की कमी है। अगर हम इस शांति का आनंद नहीं ले पाते हैं, तो शायद इसलिए कि हम अपने बोझ को सही ढंग से क्रूस के चरणों में नहीं रख रहे हैं। अपनी किताब *सरेंडर* (या *लेइंग इट डाउन*) में पादरी ली योंग-क्यू लिखते हैं: "शैतान, जो इस दुनिया का मालिक बना हुआ है, लगातार हमें चीज़ें पाने और उन्हें कसकर पकड़े रहने के लिए उकसाता है।" मैं इस बात से सहमत हूँ। शैतान का काम हमें लगातार "कसकर पकड़े रहने" के लिए उकसाना है। जिन चीज़ों से शैतान हमें चिपके रहने के लिए कहता है, उनमें "हमारे अतीत का बोझ" और वे भावनात्मक बोझ शामिल हैं जो हमारे दिलों पर भारी पड़ते हैं—जैसे घाव, दर्द, पीड़ा, बेचैनी और चिंता। हालाँकि, प्रेरित पतरस हमसे कहते हैं: "अपनी सारी चिंता उस पर डाल दो, क्योंकि उसे तुम्हारी परवाह है" (1 पतरस 5:7)। हमारा परमेश्वर वह है जो हमारी परवाह करता है। क्योंकि वह हमसे प्यार करता है और हमारे बारे में उसके अनमोल विचार रेत के कणों से भी ज़्यादा हैं (भजन संहिता 139:17-18), इसलिए हमें—जैसा कि पतरस कहते हैं—अपनी सारी चिंताएँ उस प्रभु पर डाल देनी चाहिए जो हमसे प्यार करता है और हमारी परवाह करता है। इसके अलावा, हमें कल की चिंता नहीं करनी चाहिए। कारण यह है कि हमें कल की चिंता तभी करनी चाहिए जब वह आए, क्योंकि हर दिन की परेशानी उस दिन के लिए काफ़ी होती है (मत्ती 6:34)।

आज भजन संहिता 55:22 को देखते हुए, बाइबल हमें सलाह देती है: "अपना बोझ प्रभु पर डाल दे, और वह तुझे संभालेगा; वह धर्मी को कभी डगमगाने नहीं देगा।" इस वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमें वह अनुग्रह मिले जो परमेश्वर हमें "अपना बोझ प्रभु पर डाल दें" शीर्षक के तहत देना चाहता है।

सबसे पहले, दाऊद का बोझ क्या था?

हम इस पर दो तरह से विचार कर सकते हैं।

(1) दाऊद का बोझ चिंता थी। आज के पाठ, भजन संहिता 55 के दूसरे हिस्से को देखें: "...मैं अपनी शिकायत और कराह में बेचैन हूँ।" यहाँ "चिंता" के लिए इस्तेमाल किए गए हिब्रू शब्द का अर्थ "घनी झाड़ी" या "काँटेदार झाड़ियाँ" भी होता है। डॉ. पार्क युन-सन ने सुझाव दिया कि शायद यह शब्द इसलिए इस्तेमाल किया गया क्योंकि चिंता मन की एक उलझी हुई और भ्रमित अवस्था से पैदा होती है, ठीक वैसे ही जैसे काँटों की उलझी हुई झाड़ी। दाऊद की चिंता का कारण क्या था? इसका जवाब पद 3 में है: "दुश्मन की आवाज़ के कारण, बुरे लोगों के ज़ुल्म के कारण; क्योंकि वे मुझ पर मुसीबत लाते हैं, और गुस्से में मुझसे नफ़रत करते हैं।" दाऊद अपने दुश्मनों के ज़ुल्म और सताए जाने के कारण मन ही मन परेशान था। ऐसा कोई नहीं है जिसने कभी चिंता का अनुभव न किया हो। महान अंग्रेज़ी लेखक शेक्सपियर ने कहा था, "चिंता जीवन की दुश्मन है।" जब तक चिंता बनी रहती है, कोई भी खुश नहीं रह सकता या आनंद नहीं पा सकता। चिंता सेहत को नुकसान पहुँचाती है, जीवन को छोटा करती है, और लोगों को नए, रचनात्मक कामों में खुद को लगाने से रोकती है। खुशी का पैमाना दौलत में नहीं, बल्कि चिंता पर काबू पाने की ताकत में है। बिना चिंता के जिया गया एक गरीब जीवन, चिंता में डूबे अमीर जीवन से कहीं ज़्यादा कीमती है। अपनी कहानियों के लिए मशहूर ईसप ने भी कहा था, "शांति से खाया गया रोटी का एक टुकड़ा, चिंता में खाए गए दावत के खाने से बेहतर है।"

(2) दाऊद का बोझ बहुत ज़्यादा मानसिक तकलीफ़ थी।

आज के पाठ, भजन संहिता 55:4 को देखें: "मेरा दिल मेरे अंदर तड़प रहा है, और मौत का डर मुझ पर छा गया है।" दाऊद न केवल अपने दुश्मनों के ज़ुल्म और सताए जाने के कारण गहरे मानसिक तनाव में था, बल्कि उसे यह भी लग रहा था कि उसकी जान खतरे में है। इसीलिए उसने माना, "डर और कंपकंपी मुझ पर छा गई है; दहशत ने मुझे जकड़ लिया है" (पद 5)। वह चाहता था कि उसके पास कबूतर जैसे पंख हों ताकि वह दूर जंगल में उड़ सके और आराम पा सके (पद 6)। संक्षेप में, बोझ इतना भारी था कि दाऊद अपनी मौजूदा स्थिति से भागना चाहता था। उसे बहुत तकलीफ़ हुई क्योंकि उसने शहर के अंदर हिंसा और झगड़े, साथ ही बुराई, तबाही, नफ़रत, ज़ुल्म और धोखेबाज़ी देखी (पद 10–11)। इसके अलावा, उनके दुख का एक बड़ा कारण एक दोस्त का धोखा था। भजन संहिता 55:12–13 देखें: "अगर कोई दुश्मन मेरा अपमान कर रहा होता, तो मैं उसे सह लेता; अगर कोई विरोधी मेरे खिलाफ खड़ा होता, तो मैं छिप सकता था। लेकिन यह तुम हो—मेरे जैसा ही एक आदमी, मेरा साथी, मेरा करीबी दोस्त।" डेविड का दिल एक करीबी दोस्त के धोखे से बुरी तरह घायल हो गया था, जिसके साथ वह कभी परमेश्वर के घर में साथ-साथ चलते थे, अच्छी सलाह और संगति साझा करते थे (पद 14)। इस करीबी दोस्त ने डेविड पर हमला किया—जिसके साथ वह मिल-जुलकर रहते थे—और उसके साथ किए गए वादे को तोड़ दिया (पद 20)। हालाँकि उसकी बातें मक्खन से भी ज़्यादा चिकनी थीं, लेकिन उसके दिल में जंग थी; हालाँकि उसके शब्द तेल से भी ज़्यादा नरम थे, लेकिन वे असल में म्यान से निकली तलवारें थीं (पद 21)।

दूसरी बात, हम अपना बोझ परमेश्वर पर कैसे डाल सकते हैं?

डेविड ने प्रार्थना के ज़रिए अपना बोझ परमेश्वर पर डाला। आज का वचन देखें, भजन संहिता 55:1–2: "हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना पर ध्यान दे, और मेरी विनती से खुद को छिपा मत। मेरी ओर ध्यान दे, और मेरी सुन..." डेविड ने प्रार्थना के ज़रिए अपने सारे भारी बोझ परमेश्वर को सौंप दिए। उसने प्रार्थना के ज़रिए प्रभु को अपने दिल की उन चिंताओं और उस बुरे, पापपूर्ण हालात का दुख भी सौंपा जिसमें वह फँसा हुआ था। खासकर, उसने अपने करीबी दोस्त के धोखे से हुए दर्द को प्रभु को सौंपा। डेविड ने प्रार्थना के ज़रिए अपना सारा भारी बोझ परमेश्वर पर क्यों डाला? ऐसा इसलिए था क्योंकि उसे यकीन था कि सिर्फ़ परमेश्वर ही उसे बचा सकते हैं। पद 16–17 देखें: "जहाँ तक मेरी बात है, मैं परमेश्वर को पुकारूँगा, और प्रभु मुझे बचाएँगे। शाम, सुबह और दोपहर को मैं प्रार्थना करूँगा, और ज़ोर से पुकारूँगा, और वह मेरी आवाज़ सुनेगा।" डेविड ने अपनी

परेशानी में परमेश्वर को पुकारने के लिए खास समय तय किए—शाम, सुबह और दोपहर। उसने विनती के ज़रिए अपनी सारी चिंताएँ, भारी मुश्किलें और दर्द प्रभु के सामने रख दिए। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसे पक्का यकीन था कि सिर्फ़ प्रभु ही उसका उद्धारकर्ता है।

प्रार्थना परमेश्वर पर निर्भरता का इज़हार है। दूसरे शब्दों में, जो लोग परमेश्वर पर निर्भर होते हैं, वे प्रार्थना करते हैं। भजन के लेखक दाऊद ने प्रार्थना के ज़रिए अपने भारी बोझ, चिंताओं और गहरे भावनात्मक दुख को पूरी तरह से परमेश्वर पर सौंप दिया और उस पर भरोसा किया (पद 23)। हमें भी परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए और प्रार्थना के ज़रिए अपने सभी भारी बोझ उस पर डाल देने चाहिए।

"अगर आपके दिल में चिंता है, तो यह सब प्रभु यीशु को बताएँ; यहाँ तक कि जब आपका दिल उदास हो, तब भी प्रभु यीशु को बताएँ" (पद 1); "यह सब प्रभु यीशु को बताएँ, क्योंकि प्रभु हमारे मित्र हैं; किसी भी चीज़ की चिंता न करें, बल्कि प्रभु यीशु को बताएँ" (कोरस) (भजन 484, पद 1 और कोरस)।

तीसरी बात, जब हम अपने बोझ परमेश्वर पर डालते हैं तो क्या होता है?

जब हम प्रार्थना के ज़रिए अपने सभी बोझ परमेश्वर को सौंपते हैं, तो वह हमें दो आशीषें देता है:

(1) परमेश्वर हमें संभाले रखता है।

आज के वचन, भजन 55:22 को देखें: "अपना बोझ प्रभु पर डाल दे, और वह तुझे संभालेगा...।" भजन 54 में, जिस पर हमने पिछले बुधवार को मनन किया था, हमने दाऊद की यह बात जानी थी: "परमेश्वर मेरा सहायक है; प्रभु ही मेरे जीवन को संभालने वाला है" (पद 4)। मौजूदा खतरों और संकटों के बीच, दाऊद को परमेश्वर की मदद का भरोसा मिला; उसने याद किया कि कैसे परमेश्वर ने उसे पहले भी मुश्किलों से बचाया था। इसी तरह, आज के भाग—भजन 55—में दाऊद ने परमेश्वर की पिछली बचाने वाली कृपा को याद किया और उसे यकीन था कि अगर वह अपने सभी भारी बोझ परमेश्वर पर डाल दे, तो परमेश्वर उसे संभालेगा।

इसके अलावा, उसे उस शांति का अनुभव हुआ जो परमेश्वर देता है (पद 18)। जो लोग प्रार्थना के ज़रिए अपने सभी भारी बोझ परमेश्वर को सौंपते हैं, उन्हें दिल की शांति मिलती है क्योंकि परमेश्वर उन्हें संभाले रखता है।

(2) परमेश्वर हमें डगमगाने नहीं देता।

भजन 55:22 के दूसरे हिस्से को देखें: "...वह धर्मी को कभी डगमगाने नहीं देगा।" जब हम प्रार्थना के ज़रिए अपने सभी बोझ परमेश्वर को सौंपते हैं, तो वह हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है, हमें संभालता है और यह पक्का करता है कि हम डगमगाएँ नहीं। इसके विपरीत, परमेश्वर दुष्टों को सज़ा देता है—वे लोग जो उससे नहीं डरते और अपने बुरे कामों से नहीं मुड़ते (पद 19)—और उन्हें विनाश के गड्ढे में गिरा देता है (पद 23)। जो लोग परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, वे डगमगाएंगे नहीं (21:7)।

मेरे पसंदीदा भजनों में से एक है भजन नंबर 363, "मुझे यीशु को अपनी सारी मुश्किलें बतानी हैं।" इसके बोल कुछ इस तरह हैं: "मुझे यीशु को अपनी सारी मुश्किलें बतानी हैं; मैं इन बोझों को अकेले नहीं उठा सकता। मेरी परेशानी में वे दयालुता से मेरी मदद करेंगे; वे हमेशा अपनों से प्यार करते हैं और उनकी परवाह करते हैं..." यह भजन रेवरेंड एलीशा हॉफमैन ने लिखा था। एक दिन, एक विश्वासी, जो बहुत बड़ी मुश्किल का सामना कर रहा था, रेवरेंड हॉफमैन के पास आया और रोते हुए बोला, "मैं क्या करूँ? जब मैं चिंता से इतना घिरा हुआ हूँ तो मैं क्या कर सकता हूँ?" उस विश्वासी का दुख सुनने के बाद, रेवरेंड हॉफमैन ने शांति देने वाले प्रभु से उनके जीवन में काम करने के लिए दिल से प्रार्थना की। प्रार्थना के बाद, उस विश्वासी का चेहरा खिल उठा और उसने कहा, "सही कहा। मुझे यह भारी बोझ अकेले नहीं उठाना चाहिए; मुझे इसे यीशु को सौंप देना चाहिए।" उस विश्वासी के जाने के बाद, रेवरेंड हॉफमैन को अचानक एक प्रेरणा मिली; उन्होंने अपना पेन उठाया और ये बोल लिखने लगे: "...जब मैं अकेले भारी बोझ उठा रहा होता हूँ और टूटने वाला होता हूँ, तो एकमात्र वही है जो मुझ पर दया करता है और मुझे बचाता है - अनुग्रह का प्रभु, यीशु।" इस तरह भजन नंबर 363 बना। मुझे इस भजन से जुड़ा एक खास पल याद है: पिछले अक्टूबर में, जब मैं बीजिंग में अपने पिता से मिलने गया था, तो अचानक पब्लिक सिक्योरिटी अधिकारियों और पुलिस ने उस जगह पर छापा मारा। सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, जब मैं कमरे के अंदर था, मैंने अपने पिता को पूरे जोश के

साथ यह भजन गाते हुए सुना। उस दिन, परमेश्वर ने मेरे पिता के लिए बचने का रास्ता बनाया; मैं भी सुरक्षित रूप से कोरिया जा सका और आखिरकार बिना किसी नुकसान के संयुक्त राज्य अमेरिका लौट आया। सचमुच, हमारे परमेश्वर ही हैं जो हमारे सारे भारी बोझ उठाते हैं। जब हम बेचैनी, चिंता और गहरे भावनात्मक दुख के बोझ तले संघर्ष कर रहे होते हैं, और अगर हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और प्रार्थना के ज़रिए अपने सारे बोझ उन्हें सौंप देते हैं, तो वही परमेश्वर हमें छुटकारा दिलाते हैं और बचाते हैं। वही परमेश्वर हमें थामे रखते हैं, सहारा देते हैं और हमें अडिग बनाते हैं ताकि हम डगमगाएँ नहीं। आइए हम अपने सारे भारी बोझ इसी परमेश्वर को सौंप दें।

परमेश्वर पर भरोसा रखें!

[भजन संहिता 56]

पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? "यीशु के हृदय के करीब" (Closer to the Heart of Jesus) शीर्षक वाले एक लेख में इसे चार बिंदुओं में समझाया गया है: (1) अपनी कमज़ोरी पर विचार करें; (2) यह स्वीकार करें कि परमेश्वर की मदद के बिना, आप छोटे से छोटा काम भी पूरा नहीं कर सकते; (3) परमेश्वर से वह मांगें जो केवल वही दे सकते हैं; और (4) यह महसूस करें कि ये चीज़ें हमारे पास खुद नहीं हैं और इन्हें पाने के लिए हमारे पास जाने के लिए कोई और जगह नहीं है। प्रभु के चरणों में घुटने टेकें और उनसे हमारी प्रार्थनाओं को पूरा करने की विनती करें (इंटरनेट)।

भजन संहिता 31:14 में, जिस पर हमने पहले ही मनन किया है, हम देखते हैं कि दाऊद का विश्वास "फिर भी" (Yet) वाले नज़रिए पर आधारित था: "लेकिन मैं, हे प्रभु, आप पर भरोसा करता हूँ; मैं कहता हूँ, 'आप मेरे परमेश्वर हैं।'" दाऊद को पक्का यकीन था कि चाहे हालात कैसे भी हों, वह सिर्फ़ प्रभु पर ही भरोसा करेगा। उसने दर्द और परेशानी (पद 9), दुख और कराह (पद 10), निंदा (पद 11), भुला दिए जाने (पद 12), और डर (पद 13) के बीच भी प्रभु पर भरोसा किया। भजन संहिता 56 के आज के अंश में, "परमेश्वर पर भरोसा" वाक्यांश बार-बार आता है: "जब मैं डरता हूँ, तो मैं आप पर भरोसा करता हूँ" (पद 3); "परमेश्वर में, जिसके वचन की मैं प्रशंसा करता हूँ—परमेश्वर में मैं भरोसा करता हूँ और डरता नहीं हूँ। साधारण इंसान मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं?" (पद 4); "परमेश्वर में, जिसके वचन की मैं प्रशंसा करता हूँ—प्रभु में, जिसके वचन की मैं प्रशंसा करता हूँ—परमेश्वर में मैं भरोसा करता हूँ" (पद 10); "परमेश्वर में मैं भरोसा करता हूँ; मैं डरूँगा नहीं। इंसान मेरा क्या कर सकता है?" (पद 11)। आज, "परमेश्वर पर भरोसा!" शीर्षक के तहत, मैं चाहता हूँ कि हम वह सबक सीखें जो परमेश्वर हमें सिखाना चाहते हैं।

पहला, दाऊद ने परमेश्वर पर कब भरोसा किया?

दाऊद ने परमेश्वर पर तब भरोसा किया "जब [वह] डरता था।" आज के पाठ, भजन संहिता 56 के पद 3 को देखें: "जब मैं डरता हूँ, तो मैं आप पर भरोसा करता हूँ।" दाऊद को डर क्यों लगा? ऐसा इसलिए था क्योंकि फ़िलिस्तीनियों (भजन के शीर्षक को देखें)—जो उसके दुश्मन थे (पद 2)—ने उस पर ज़ुल्म किया (पद 1) और उसकी जान लेने की कोशिश की (पद 6)। दिलचस्प बात यह है कि दाऊद के दुश्मनों का ज़ुल्म और सताना कोई कभी-कभार होने वाली घटना नहीं थी; वे बिना रुके "दिन भर" ऐसा करते रहे (पद 1, 2, 5)। इससे हमें पता चलता है कि शैतान का काम कभी नहीं रुकता। शैतान लगातार हमें बहकाने, सताने और गिराने की कोशिश करता रहता है। शैतान के लगातार बहकाने का एक बड़ा उदाहरण उत्पत्ति 39 में यूसुफ़ की कहानी है। बाइबल हमें बताती है कि पोतीफ़र की पत्नी ने यूसुफ़ को—जो रूप-रंग में सुंदर था (उत्पत्ति 39:6)—"दिन-ब-दिन" (पद 10) अपने साथ सोने के लिए बहकाया। आज के हिस्से में, हम शैतान के काम को उसके सेवकों—दाऊद के दुश्मनों—के ज़रिए देखते हैं, जिन्होंने बिना रुके दाऊद पर ज़ुल्म किया, उसे सताया और मारने की कोशिश की। बुरे लोग, शैतान के सेवक के तौर पर, नेक लोगों पर लगातार हमला क्यों करते हैं, उन्हें क्यों सताते हैं और उन पर ज़ुल्म क्यों करते हैं? इसका कारण हमें पद 5 के दूसरे हिस्से में मिलता है: "उनके सारे विचार मेरे ख़िलाफ़ बुराई के हैं।" क्योंकि शैतान और उसके सेवकों के विचार हमारे प्रति हमेशा बुरे होते हैं, इसलिए वे लगातार हमें बहकाते और हम पर हमला करते हैं, और हमें गिराने की कोशिश करते हैं। इसलिए, हमें हर पल, हर दिन परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। यह बात कि शैतान का काम "दिन भर" लगातार हमें बहकाना और हम पर हमला करना है, हमें सिखाती है कि हमें भी "दिन भर"—बिना रुके—परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। जब शैतान लगातार हम पर हमला कर रहा हो और हमें गिराने की कोशिश कर रहा हो, तो हम प्रभु पर लगातार भरोसा रखने में कैसे चूक सकते हैं? आइए हम सब यशायाह 41:10 के शब्दों को मज़बूती से थामे रहें: "डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ; घबराओ मत, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ; मैं तुम्हें मज़बूत करूँगा, मैं तुम्हारी मदद करूँगा, मैं अपने नेक दाहिने हाथ से तुम्हें थामे रहूँगा।" बाइबल हमें बताती है कि हमारा प्रभु हमें अपने शक्तिशाली दाहिने हाथ से थामे रहता है। हमारा परमेश्वर हमें मज़बूत करेगा। इसलिए, चाहे हम किसी भी डरावनी स्थिति का सामना करें, आइए हम परमेश्वर पर भरोसा रखें। दूसरी बात, दाऊद ने परमेश्वर पर कैसे भरोसा किया?

(1) दाऊद ने प्रार्थना के ज़रिए परमेश्वर पर भरोसा किया।

उसकी प्रार्थनाओं को देखें तो सबसे पहले, दाऊद ने परमेश्वर की दया माँगी। आज का वचन देखें, भजन संहिता 56:1: "हे परमेश्वर, मुझ पर दया कर, क्योंकि लोग दिन भर मेरा पीछा करते हैं; वे मुझ पर ज़ुल्म करते हैं और मुझ पर हमला करते हैं।" हम सच में सिर्फ़ परमेश्वर की दया ही माँग सकते हैं, क्योंकि सब कुछ परमेश्वर की कृपा से होता है। प्रभु के लिए दुख सहना परमेश्वर की कृपा है, और संकट के समय छुटकारा मिलना भी परमेश्वर की कृपा है। इसलिए, दाऊद की तरह, हमारे पास परमेश्वर की दया माँगने के अलावा कोई चारा नहीं है। नहेमायाह 9:25–31 में, हम देखते हैं कि हमारा परमेश्वर दयालु और कृपा करने वाला परमेश्वर है (वचन 31)। यहाँ तक कि जब हम प्रभु की भरपूर आशीषों का आनंद लेते हैं (वचन 25), तब भी हम अक्सर उसकी आज्ञा नहीं मानते और उसके ख़िलाफ़ बगावत करते हैं, उसके वचन से मुँह मोड़ लेते हैं और उसके ख़िलाफ़ पाप करते हैं (वचन 26)। नतीजतन, प्रभु प्यार से हमें सुधारते हैं, हमें चोट पहुँचाते हैं और हमें मुसीबत का सामना करने देते हैं (वचन 27)। फिर, जब हम परमेश्वर को पुकारते हैं, तो वह हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है, बड़ी दया दिखाता है और हमें छुटकारा देता है (वचन 27)। फिर भी, शांति मिलने के बाद, हम फिर से प्रभु के सामने बुराई करते हैं (वचन 28)। फिर एक बार प्रभु का प्यार भरा अनुशासन आता है; हम पुकारते हैं, और प्रभु हमारी प्रार्थनाएँ सुनते हैं, हमें बचाने के लिए बार-बार दया दिखाते हैं (वचन 28)। हमारा परमेश्वर बार-बार दया करने वाला परमेश्वर है। वह ऐसा परमेश्वर है जो सालों-साल हमें माफ़ करता है (वचन 30)। दाऊद ने दया करने वाले इसी परमेश्वर से विनती की, और हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। दूसरी बात, दाऊद की प्रार्थना को देखें तो उसने परमेश्वर की मदद माँगी। आज का वचन देखें, भजन संहिता 56:9: "जब मैं तुझे पुकारूँगा, तो मेरे दुश्मन पीछे हट जाएँगे; मैं यह जानता हूँ, क्योंकि परमेश्वर मेरे साथ है।" जब दाऊद ने परमेश्वर से विनती की, तो उसे विश्वास था कि परमेश्वर उसकी प्रार्थना का जवाब देगा और उसके दुश्मनों को पीछे हटा देगा। दूसरे शब्दों में, दाऊद को भरोसा था कि परमेश्वर उसकी मदद करेगा। इस भरोसे के साथ, दाऊद ने रोते हुए परमेश्वर से दया और मदद की गुहार लगाई (पद 8)।

(2) दाऊद ने स्तुति के ज़रिए परमेश्वर पर भरोसा किया।

भजन संहिता 56:4 और 10 को देखिए: "परमेश्वर में, जिसके वचन की मैं स्तुति करता हूँ, मैंने अपना भरोसा रखा है" (पद 4); "परमेश्वर में, जिसके वचन की मैं स्तुति करता हूँ—प्रभु में, जिसके वचन की मैं स्तुति करता

हूँ—मैंने अपना भरोसा रखा है" (पद 10)। "परमेश्वर के वचन की स्तुति करने" का क्या मतलब है? इसका मतलब है इस पक्के विश्वास के साथ स्तुति करना कि परमेश्वर के किए गए वादे ज़रूर पूरे होंगे। यह केवल विश्वास से ही संभव है। केवल विश्वास से ही कोई व्यक्ति खतरनाक और दर्दनाक हालात में भी परमेश्वर की स्तुति कर सकता है और इस बात का भरोसा रख सकता है कि प्रार्थनाओं का जवाब मिलेगा। इसीलिए पौलुस और सिलास ने जेल में रहते हुए भी परमेश्वर से प्रार्थना की और उसकी स्तुति में गीत गाए (प्रेरितों के काम 16:25)।

हम आम तौर पर जानते हैं कि परमेश्वर पर भरोसा करने का मतलब है उससे प्रार्थना करना। इसीलिए हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं—जैसे भजन 363 के पहले पद और कोरस में कहा गया है: "जब मैं अपनी सारी मुश्किलें और भारी बोझ प्रभु यीशु के सामने रखता हूँ, तो वह मेरी मुसीबत में मुझे देखता है और मेरी सारी चिंताएँ खुद उठा लेता है; जब मैं अकेले भारी बोझ उठाता हूँ और सह न पाने के कारण गिर जाता हूँ, तो जो मुझ पर दया करता है और मुझे बचाता है, वह अनुग्रह का प्रभु, सिर्फ़ यीशु ही है।" हम प्रार्थना में अपनी सारी मुश्किलें और भारी बोझ परमेश्वर के पास लाते हैं। फिर भी, यह ध्यान देना दिलचस्प है कि दाऊद ने स्तुति के ज़रिए परमेश्वर पर भरोसा किया। जब हम इस बात पर गहराई से सोचते हैं, तो हमें एहसास होता है कि हालाँकि हम प्रार्थना में अपने डर परमेश्वर के सामने लाते हैं, लेकिन प्रार्थना करने की प्रक्रिया ही हमें स्तुति की ओर ले जाती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब हम प्रभु यीशु मसीह पर मनन करते हैं, तो हम स्तुति किए बिना नहीं रह सकते। सचमुच, भजन 455 का दूसरा पद इसी भावना को दोहराता है: "मेरा डर प्रार्थना में बदल गया, और कल की आहें मेरा गीत बन गईं।" दाऊद की तरह, हमें भी परमेश्वर से प्रार्थना करके और उसकी स्तुति करके उस पर भरोसा करना चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि डरावने हालात में भी हम सब प्रेरित पौलुस और सिलास की तरह बनें—जो प्रार्थना और स्तुति दोनों करते थे।

तीसरी बात, जब दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा किया, तो उसके दिल का रवैया कैसा था?

(1) दाऊद को उद्धार का भरोसा था।

आज के वचन, भजन संहिता 56:13 को देखिए: "क्योंकि तूने मेरे प्राण को मृत्यु से बचाया है। क्या तूने मेरे पैरों को गिरने से नहीं बचाया, ताकि मैं परमेश्वर के सामने जीवितों की ज्योति में चल सकूँ?" लगातार सताने वाले दुश्मनों के ज़ुल्म और उत्पीड़न के बीच—एक डरावनी स्थिति में जहाँ उसकी जान को खतरा था—दाऊद ने प्रार्थना और स्तुति के ज़रिए पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा किया। अतीत में परमेश्वर द्वारा बचाए जाने का अनुभव होने के कारण, उसे यकीन था कि परमेश्वर उसे मौजूदा संकट से भी बचाएगा। परमेश्वर ने न केवल दाऊद को बचाया, बल्कि उसे गिरने से भी बचाया ताकि वह जीवन की ज्योति में चल सके। हमारा परमेश्वर उद्धार का परमेश्वर है जो हमें गिरने से बचाता है; वह ऐसा परमेश्वर है जो हमें जीवन की ज्योति में चलने के काबिल बनाता है। हमें परमेश्वर के उद्धार के इस भरोसे को मज़बूती से थामे रखकर मुश्किलों और दुखों पर जीत हासिल करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए।

(2) दाऊद ने परमेश्वर से की गई मन्नतों को पूरा करने का संकल्प लिया।

आज के वचन, भजन संहिता 56:12 को देखिए: "हे परमेश्वर, तुझसे की गई मन्नतें मुझ पर लागू होती हैं; मैं तेरी स्तुति करूँगा।" दाऊद ने परमेश्वर के सामने अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने का संकल्प लिया। उसने ईमानदारी से उन मन्नतों को पूरा करने का फ़ैसला किया जो उसने परमेश्वर से की थीं। उसने धन्यवाद और स्तुति के साथ परमेश्वर से की गई मन्नतों का सम्मान करने का संकल्प लिया। जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करके जीते हैं, उन्हें भी परमेश्वर के सामने की गई मन्नतों की ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए और उन्हें पूरा करना चाहिए। हमें अपनी मन्नतों को पूरा करने को कभी भी हल्के में नहीं लेना चाहिए। हमारी मन्नतें सोच-समझकर की जानी चाहिए, और एक बार जब हम उन्हें पूरा करने का संकल्प ले लेते हैं, तो हमें उन्हें पूरा करना चाहिए।

चाहे हालात कितने भी मुश्किल क्यों न हों, आइए हम प्रार्थना और स्तुति के ज़रिए परमेश्वर पर भरोसा करें। आइए हम सब ऐसे उपासकों के तौर पर मज़बूती से खड़े रहें जिन्हें उद्धार का भरोसा हो और जो परमेश्वर के सामने अपनी विनती रखते हुए, आखिर में उसकी स्तुति और धन्यवाद करते हों। इसके अलावा, आइए हम उन मन्नतों को पूरा करने का संकल्प लें जो हमने की हैं और उस संकल्प को अमल में लाएँ। पिछले रविवार दोपहर को, शिक्षकों की बाइबल स्टडी खत्म होने के बाद, मैंने प्रभु में एक भाई से फ़ोन पर बात की। क्या कहूँ, यह न जानते हुए, मैंने फ़ोन उठाते समय चुपचाप पवित्र आत्मा से मार्गदर्शन माँगा। पवित्र आत्मा

ने मुझे उस रविवार की अंग्रेज़ी सर्विस में सुनाए गए संदेश की याद दिलाई, और मैंने उसे उस प्यारे भाई के साथ साझा किया: "आइए हम परमेश्वर के वचन पर आधारित और पवित्र आत्मा की अगुवाई में सही चुनाव करें। आइए हम पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर रहें और सही निर्णय लें।" तब उसने माना कि उसकी मुश्किल यह थी कि वह परमेश्वर पर निर्भर नहीं हो पा रहा था। इसलिए, मैंने वहीं फ़ोन पर उसके लिए प्रार्थना की। उसे रोते हुए सुनकर मेरा दिल भर आया। फिर भी, प्रार्थना के ज़रिए उसे परमेश्वर को सौंपने के बाद, मुझे विश्वास है कि परमेश्वर उसे संभालेगा और छुड़ाएगा। प्यारे भाइयों और बहनों, आइए हम पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर रहें। परमेश्वर हमें बचाएगा। विजय!

परमेश्वर के वचन की प्रशंसा

"परमेश्वर में, जिसके वचन की मैं प्रशंसा करता हूँ—परमेश्वर पर मैं भरोसा करता हूँ और डरता नहीं। साधारण इंसान मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं? ... परमेश्वर में, जिसके वचन की मैं प्रशंसा करता हूँ—प्रभु में, जिसके वचन की मैं प्रशंसा करता हूँ" (भजन संहिता 56:4, 10)।

पिछले हफ़्ते परमेश्वर के वचन पर मनन करते समय, मुझे दो बातें सीखने को मिलीं जिन्हें मैंने अमल में लाने का फ़ैसला किया: पहली, शिकायत न करना (भजन संहिता 37:1, 7, 8), और दूसरी, छोटी-छोटी चीज़ों के लिए भी शुक्रगुज़ार होना। इन बातों पर दोबारा सोचते हुए, मुझे एहसास हुआ कि जहाँ मैं अक्सर छोटी चीज़ों के लिए शुक्रगुज़ार नहीं हो पाता, वहीं छोटी-छोटी बातों पर शिकायत ज़रूर करता हूँ। मिसाल के तौर पर, आज सुबह जब मैं उठा, तो मैंने परमेश्वर का धन्यवाद नहीं किया। हालाँकि, कई बार ऐसा होता है कि उठने के बाद वॉशरूम जाते समय मैं मन ही मन नए दिन और सुबह के लिए उनका धन्यवाद करता हूँ, लेकिन आज मैंने सिर्फ़ जागने की क्रिया के लिए धन्यवाद नहीं दिया। ऐसा लगता है कि मैंने जागने को बहुत मामूली बात समझ लिया। फिर भी, जब मेरे परिवार के सदस्य साफ़-सफ़ाई वाली चीज़ों को ठीक से नहीं रखते, तो मैं अक्सर शिकायत करता हूँ। यहाँ तक कि पिछले हफ़्ते, शिकायत न करने का सबक सीखने के बाद भी, मैंने पूरी कोशिश की कि शिकायत न करूँ, लेकिन घर पहुँचते ही मैंने अपने बच्चों से शिकायत कर दी। इस तरह, मैं छोटी-छोटी बातों में भी वफ़ादार नहीं रह पा रहा हूँ। इसी बीच, आज सुबह की प्रार्थना सभा में भजन संहिता 56:4 और 10 पर मनन करते समय मेरे मन में एक विचार आया: "मुझे छोटी-छोटी चीज़ों से ही परमेश्वर पर भरोसा करना शुरू करना चाहिए।" मुझे एहसास हुआ कि मुझे सिर्फ़ तब परमेश्वर को याद नहीं करना चाहिए और प्रार्थना नहीं करनी चाहिए जब मैं अपने काबू से बाहर किसी बड़े संकट का सामना कर

रहा हूँ। इसके बजाय, यह याद करते हुए कि प्रभु ने उनकी प्रशंसा की जो छोटी-छोटी बातों में वफ़ादार थे (मत्ती 25:21), मैंने ऐसा व्यक्ति बनने का फ़ैसला किया जो छोटी-छोटी बातों में वफ़ादार हो और नतीजतन, बड़ी बातों में भी वफ़ादार रहने के काबिल हो। इस प्रकार, मैंने हर दिन—और सच कहूँ तो, हर पल—अपने दिल में प्रार्थना करते हुए जीने का संकल्प लिया, ताकि सबसे छोटे कामों में भी परमेश्वर पर अपना भरोसा ज़ाहिर कर सकूँ। मेरा मानना है कि जैसे-जैसे मैं इन छोटी-छोटी बातों में परमेश्वर पर भरोसा करते हुए जीऊँगा, वह आखिरकार मुझे अपनी प्रशंसा करने की ओर ले जाएँगे। आज भजन संहिता 56:4 और 10 के पाठ में, हम देखते हैं कि भजनकार दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा किया और उनके वचन की प्रशंसा की। जिस स्थिति में उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा किया, वह तब थी जब उन्हें पलिस्तियों ने पकड़ लिया था। पलिस्ती उन्हें "दिन भर" निगल जाना चाहते थे (पद 1-2), उन्होंने "दिन भर" उन पर हमला किया और उन्हें सताया (पद 1), और "दिन भर" उनकी बातों को गलत तरीके से पेश किया (पद 5)। इसके अलावा, उनके दुश्मन—घमंडी हमलावर (पद 2)—उनकी हर चाल पर नज़र रखने के लिए छिपकर इकट्ठा हुए (पद 6), क्योंकि वे उनकी जान लेना चाहते थे (पद 6)। ऐसी डरावनी स्थिति के बीच, दाऊद ने प्रभु पर "भरोसा" किया (पद 3)। उन्होंने आँसू बहाते हुए और परमेश्वर से विनती करते हुए उन पर भरोसा किया (पद 8)। उन्होंने न डरने का संकल्प लिया, ठीक इसलिए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर पर "भरोसा" किया था (पद 4, 11)। चूँकि उन्होंने परमेश्वर पर "भरोसा" किया था, इसलिए वे जानते थे कि साधारण इंसान उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते (पद 4, 11)। इसके अलावा, दाऊद को भरोसा था कि प्रभु उनकी जान को मौत से बचाएँगे (पद 13)। इसलिए, उन्होंने प्रभु को धन्यवाद के बलिदान चढ़ाए (पद 12) और परमेश्वर के वचन की प्रशंसा की (पद 4, 11)। मुझे भजन 543 की पहली पंक्ति याद आती है, "जब मैं मुश्किलों का सामना करता हूँ": "जब मैं मुश्किलों का सामना करता हूँ, भले ही मेरा विश्वास छोटा हो, मैं और भी ज़्यादा उस प्रभु पर निर्भर होता हूँ जिस पर मेरा भरोसा है।" मुझे ये बोल बहुत पसंद हैं क्योंकि, जब भी मैं अपनी मुश्किलों का सामना करता हूँ, मुझे एहसास होता है कि मेरा विश्वास कितना कमज़ोर है। नतीजतन, मैं पूरे दिल से इस भजन के शब्दों से सहमत होता हूँ। जो बात मेरे दिल को और भी गहराई से छूती है, वह यह भावना है कि, ठीक इसी कमज़ोरी के कारण, मैं प्रभु पर और भी ज़्यादा निर्भर हो जाता हूँ। इस प्रकार, मैं प्रभु को खोजने और उनके द्वारा दिए गए वादों को थामे रखने के लिए प्रेरित होता हूँ। मैं एक बार फिर उन वादों पर अपना भरोसा रखता हूँ जो मुझे व्यक्तिगत रूप से दिए गए हैं—जो यूहन्ना 6:1-15 में मिलते हैं—और जो हमारी कलीसिया को दिए गए हैं—जो मत्ती 16:18 में मिलते हैं—और मैं उन्हें विश्वासयोग्य, वाचा निभाने वाले परमेश्वर के सामने घोषित करता हूँ और

प्रार्थना में उन्हें याद करता हूँ। ऐसा करने में, परमेश्वर मुझे जो अनुग्रह देते हैं, वह है विश्वास के ज़रिए यह स्वीकार करने की क्षमता कि परमेश्वर सचमुच परमेश्वर हैं। दूसरे शब्दों में, वे मुझे विश्वास के साथ यह स्वीकार करने के लिए प्रेरित करते हैं कि वे एक सच्चे और भरोसेमंद परमेश्वर हैं। इस बीच, वे मुझे उन वादों पर भरोसा करने में सक्षम बनाते हैं जो उस भरोसेमंद प्रभु ने मुझे और उस कलीसिया को दिए हैं जिसकी मैं सेवा करता हूँ। इस प्रक्रिया के ज़रिए, मुझे वह शांति, सुकून और शक्ति मिलती है जो हमारे भीतर रहने वाली पवित्र आत्मा प्रदान करती है। अंततः, पवित्र आत्मा मुझे प्रभु की स्तुति करने के लिए प्रेरित करती है; वह मुझे प्रभु के वचन के लिए कृतज्ञता में स्तुति-गीत गाने के लिए प्रेरित करती है। <जब मैं व्यक्तिगत रूप से मुझे दिए गए "पाँच रोटियों और दो मछलियों" के वादे पर मनन करता हूँ, तो मैं यह भजन गाता हूँ:
"जो कुछ मैं हूँ, जो कुछ मेरे पास है">

1. जो कुछ मैं हूँ और जो कुछ मेरे पास है, मैं सब प्रभु को पूरी तरह सौंपता हूँ; मेरे सारे दुख, सारी खुशियाँ और मेरे बहाए हर आँसू को स्वीकार करें।

2. कल और आने वाला कल, मेरे सपने और उम्मीदें—मैं उन सबको सौंपता हूँ; मेरी सभी आकांक्षाओं, मेरी योजनाओं, मेरे हाथों और मेरे दिल को स्वीकार करें।

(कोरस) मैं अपना जीवन अर्पित करता हूँ; इसे अपनी महिमा के लिए इस्तेमाल करें। जब तक मैं जीवित हूँ, मैं प्रभु की स्तुति करूँगा और एक खुशी-खुशी दी गई भेंट बनूँगा; कृपया मुझे स्वीकार करें।

<जब हम अपनी कलीसिया को दिए गए वादे—"... मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा..."—पर मनन करते हैं, तो हम यह भजन गाते हैं: "हे प्रभु, मुझे तेरे राज्य से प्रेम है">

1. हे प्रभु, मुझे तेरे राज्य से प्रेम है, तेरे निवास-स्थान से, उस कलीसिया से जिसे हमारे धन्य उद्धारकर्ता ने अपने बहुमूल्य लहू से बचाया है।

2. तेरी कलीसिया! यह स्वर्गीय नगर जैसी है; तेरी आँखों की पुतली की तरह प्यारी, यह हमेशा तेरी सुरक्षा में रहती है।

3. इस कलीसिया के लिए, आँसुओं और प्रार्थनाओं के साथ, मैं जीवन के अंत तक निष्ठापूर्वक सेवा करूँगा।

4. मुझे संतों की संगति, कलीसिया का जीवन और उद्धारकर्ता के साथ किए गए वाचा से प्रेम है।

5. स्वर्गीय महिमा और दिए गए आशीष ज़ियोन में हमेशा सच्चाई के साथ उमड़ते रहेंगे।

“मेरे आँसुओं को अपनी बोतल में रख लें”

“आप मेरा दुख जानते हैं। मेरे आँसुओं को अपनी बोतल में रख लें...” (भजन संहिता 56:8a)।

मेरे दिल के पात्र में कुछ आँसू समाए हुए हैं—ऐसे आँसू जिन्हें मैं जीते-जी कभी नहीं भूल पाऊँगा। मुझे वह पल आज भी साफ़-साफ़ याद है जब वे गिरे थे; उनका मेरे लिए बहुत गहरा और अनमोल अर्थ है। मेरे दिल पर सबसे गहरे छपे आँसू मेरी पहली संतान, जू-यंग के हैं। जब जू-यंग—जिसे मैंने अपनी बाहों में सिर्फ़ एक बार, पहली और आखिरी बार पकड़ा था—मेरी गोद में शांति से सो गई, तो उसकी दाईं आँख के कोने पर एक आँसू ठहरा हुआ था। मैं जान-बूझकर उस बच्ची के बारे में सोचता हूँ—जिसके शरीर पर इंटेंसिव केयर यूनिट (ICU) में बिताए पचपन दिनों के दौरान अनगिनत सुइयों के निशान पड़ गए थे—जब भी मैं पवित्र भोज (Holy Communion) देता हूँ। हर बार, उसका वह एक आँसू मेरे दिल को गहराई से छू जाता है। मेरे दिल पर गहराई से अंकित आँसुओं का दूसरा समूह मेरी प्यारी पत्नी का है। मुझे उसका रोना याद है, जब वह थोड़ी दूर खड़ी होकर ICU में जू-यंग को देख रही थी और उसके चेहरे से आँसू बह रहे थे; हमारी बच्ची की हालत बहुत गंभीर थी, दिल की समस्याओं और खराब रक्त संचार के कारण उसका पूरा शरीर नीला पड़ रहा था। मेरी पत्नी मुझे उस पल में जितनी सुंदर लगी, उतनी पहले कभी नहीं लगी थी। मेरी पत्नी के आँसुओं का एक और अविस्मरणीय वाकया जू-यंग के अंतिम संस्कार के बाद हुआ। हम एक छोटी नाव में उसकी अस्थियों वाला छोटा डिब्बा लेकर जा रहे थे, तभी मेरी पत्नी ने अचानक पीछे मुड़कर मेरी ओर देखा—मैं नाव के पिछले हिस्से से उसे चला रहा था—और कहा, "टाइटेनिक," जबकि उसके चेहरे से आँसू बह रहे थे। इतने गहरे दुख के बीच ऐसा मज़ाक (?) करने वाली अपनी पत्नी को मैं कभी नहीं भूल पाऊँगा। "मेरे दिल की

बोतल" में जमा एक और आँसू वह है जो मेरे दादाजी की दाईं आँख के कोने से टपका था। यह एक रविवार की सुबह हुआ था—अस्पताल में उनके गुज़रने से एक दिन पहले—ठीक तब जब मैंने प्रार्थना खत्म की और अपनी आँखें खोलीं। हालाँकि वे बोल नहीं पा रहे थे क्योंकि वे वेंटिलेटर पर थे, लेकिन मैं उस आँसू को कभी नहीं भूल पाया हूँ। मैं अपनी दादी के आँसू भी नहीं भूल सकता। जब मेरी पत्नी और मैं उनसे अस्पताल में मिलने गए, तो वे अचानक रोने लगीं। मैंने पूछा, "दादी, क्या आप इसलिए रो रही हैं क्योंकि आपको मौत से डर लग रहा है?" उन्होंने जवाब दिया कि वह ईश्वर के प्रति बहुत ज़्यादा शुक्रगुज़ार होने के कारण रो रही थीं। जब मैंने पूछा कि वह किस बात के लिए इतनी शुक्रगुज़ार हैं, तो उन्होंने कहा कि वह इस बात के लिए बहुत आभारी हैं कि ईश्वर ने हमारे परिवार के सदस्यों में से प्रभु के कई सेवक तैयार किए हैं। शुक्रगुज़ारी के वे आँसू भी मेरे दिल की बोतल में जमा हैं।

अपनी आस्था की ज़िंदगी में, मैंने हमेशा अपने दिल की उस बोतल में जमा आँसुओं पर ही ध्यान दिया था। लेकिन, कल रात आज सुबह की प्रार्थना सभा के लिए बाइबल का हिस्सा पढ़ते समय, मेरी नज़र भजन संहिता 56:8 पर पड़ी। भजनकार दाऊद की ईश्वर से की गई विनती ने मुझे बहुत प्रभावित किया: "हे प्रभु, तू मेरे दुख को जानता है; मेरे आँसुओं को अपनी बोतल में रख ले।" मैंने शायद यह आयत पहले कई बार पढ़ी होगी, फिर भी ऐसा लगता है कि कल रात तक मैंने इस पर कभी ध्यान नहीं दिया था। फिर, आज सुबह की प्रार्थना सभा में भजन संहिता 56:4 पर आधारित संदेश देते समय, मेरी दिलचस्पी आयत 8 में और बढ़ गई; उसी नए ध्यान और चिंतन के साथ मैं अब ये शब्द लिख रहा हूँ। अब मैं अपना ध्यान अपने दिल के बर्तन में जमा आँसुओं से हटाकर प्रभु के बर्तन में रखे अपने प्रियजनों के आँसुओं पर लगाना चाहता हूँ। सचमुच, यह भरोसा रखते हुए कि मेरे प्रियजनों के आँसू—जो मेरे दिल में भी हैं—पहले से ही प्रभु के बर्तन में जमा हैं, मैं उन्हें पूरी तरह से प्रभु को सौंपना चाहता हूँ; क्योंकि वह मुझसे कहीं ज़्यादा उनसे प्यार करते हैं और उनके आँसुओं को किसी भी अन्य व्यक्ति से बेहतर समझते हैं। मैं भला कैसे समझ सकता हूँ कि मेरी पहली संतान जू-यंग, मेरी पत्नी या मेरे दादा-दादी के बहाए आँसुओं का पूरा मतलब क्या है? फिर भी, क्योंकि सब कुछ जानने वाले ईश्वर उन आँसुओं के महत्व को पूरी तरह से जानते और समझते हैं, इसलिए मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह उन सभी को अपने बर्तन में जमा कर लें। ऐसा करते हुए, मैं यह भी प्रार्थना करता हूँ कि वह उन तीन तरह के आँसुओं को भी जमा करें जो मैंने मई 1987 में स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च के यूनिवर्सिटी ग्रुप के साथ कॉलेज रिट्रीट के दौरान बहाए थे: पछतावे के आँसू, समर्पण के आँसू और शुक्रगुज़ारी के आँसू। मैं प्रार्थना

करता हूँ कि मैं अभी और भविष्य में भी इन तीन तरह के आँसुओं को बहाता रहूँ और इस तरह प्रभु के बर्तन को उनसे भरता रहूँ।

अपना मन पक्का करें!

[भजन संहिता 57]

पिछले सोमवार को, जब मैं अपनी सबसे छोटी बेटी ये-उन के साथ घर पर था, तो मैंने उसके साथ थोड़ी देर "कैयू" (Caillou) नाम का बच्चों का कार्टून देखा। उस एपिसोड में, मुख्य किरदार कैयू अपने पिता के साथ एक पेड़ लगाता है, लेकिन हवा चलने पर परेशान हो जाता है। उसके पिता मदद के लिए आते हैं; हवा में नए लगे पेड़ को हिलते हुए देखकर, वे उसे एक खंभे (stake) से बांध देते हैं ताकि वह स्थिर रहे और हिले-डुले नहीं। पेरेंट्स डे (8 तारीख) की सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान मुझे वह दृश्य याद आया। उस पल के बारे में सोचते हुए, मैंने उस खंभे जैसा बनने का संकल्प लिया—जो पेड़ों (मेरे बच्चों) के साथ बंधकर उन्हें सहारा देता है। दूसरे शब्दों में, मैंने ईश्वर से प्रार्थना की कि मैं अपने बच्चों के लिए उसी खंभे की तरह एक मज़बूत और भरोसेमंद सहारा बनूँ।

किम जोंग-यून की किताब *हू इज़ अ फ़ादर?* (Who Is a Father?) पढ़ने के बाद, मुझे पाठकों की ये समीक्षाएँ मिलीं: "पिता का महत्व—एक ऐसी बात जिसे हम जानते तो हैं, पर अक्सर नज़रअंदाज़ कर देते हैं; एक अनमोल व्यक्ति जिससे हम कभी-कभी नाराज़ हो सकते हैं, लेकिन जिसे हम अपने दिल की गहराई में सहारे के एक भरोसेमंद स्तंभ के रूप में भी मानते हैं... यह एक अद्भुत किताब थी जिसने मुझमें अपने पिता के प्रति उस महत्व और कृतज्ञता की भावना को जगाया जिसे मैंने पहले कभी गंभीरता से नहीं लिया था।" एक और समीक्षा, जिसका शीर्षक है "फ़ादर: द पिलर ऑफ़ लाइफ़" (Father: The Pillar of Life - जो गियोन-जोंग द्वारा), में लिखा है: "पिता वह व्यक्ति है जो जीवन भर हमारे लिए सहारे के एक महान स्तंभ की तरह हमारी देखभाल करता है, भले ही हम हमेशा उनके करीब महसूस न करें।" इस पाठक की समीक्षा को पढ़ते हुए, मुझे महसूस हुआ कि कई पिताओं और उनके बेटों (या बेटियों) के रिश्तों में—नाराज़गी या

भावनात्मक दूरी की भावनाओं के बावजूद—पिता एक अनमोल व्यक्ति बने रहते हैं जो सहारे के मज़बूत स्तंभ के रूप में काम करते हैं। जिस तरह हमारे विश्वास के पिता हमारे लिए एक भरोसेमंद स्तंभ का काम करते हैं, उसी तरह हमें भी अपने बच्चों के लिए मज़बूत स्तंभ बनना चाहिए। हम ऐसा कैसे कर सकते हैं? हमें अपने दिल में एक पक्का संकल्प करना होगा। आज के पाठ, भजन संहिता 57:7 में, हम दाऊद को ऐसा ही संकल्प करते हुए देखते हैं: "हे परमेश्वर, मेरा मन स्थिर है, मेरा मन स्थिर है; मैं गाऊंगा और भजन गाऊंगा।" यहाँ "steadfast" (अटल) शब्द का अर्थ है—अडिग, पक्का और न बदलने वाला—यानी एक मज़बूत निश्चय। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब सिर्फ़ कोई आम फ़ैसला नहीं, बल्कि एक पक्का इरादा है। इसका मतलब है यह पक्का विश्वास करके फ़ैसला करना कि कोई दूसरा रास्ता नहीं है; इसका मतलब है कि इसी रास्ते में उम्मीद है—और सिर्फ़ इसी रास्ते में। "जिस इंसान ने अपना मन पक्का कर लिया है, उसकी ज़िंदगी खुशहाल होती है। डगमगाती ज़िंदगी और पक्के इरादे वाली ज़िंदगी में उतना ही फ़र्क है जितना खुशी और दुख में होता है। डर उन्हें सताता है जिन्होंने अपना मन पक्का नहीं किया है। जो लोग दिल से पक्का इरादा कर चुके हैं, उन्हें कोई डर नहीं होता, क्योंकि उन्हें कोई पछतावा नहीं होता। पछतावे से आज़ाद दिल ही वह दिल है जो पक्के इरादे के साथ अडिग है। ... हमारे दिल एक ही जगह पर टिके और केंद्रित होने चाहिए। अगर किसी विश्वासी का दिल डगमगाता है, तो वह परमेश्वर को खुश नहीं कर सकता। विश्वासी का विश्वास परमेश्वर पर टिका होना चाहिए; अगर परमेश्वर पर भरोसा रखने वाला विश्वास डगमगाता है, तो इंसान कृपा से भरी ज़िंदगी नहीं जी सकता" (इंटरनेट)।

आज, "अपने दिल को स्थिर करो!" (Fix Your Heart!) संदेश पर ध्यान देते हुए, मैं तीन बातें सीखना चाहता हूँ कि कैसे एक अडिग दिल वाला विश्वासी संकट और मुश्किलों के समय में काम करता है।

पहली बात, अडिग दिल वाला विश्वासी संकट और मुश्किलों के समय में परमेश्वर की शरण लेता है।

भजन संहिता 57:1 को देखिए: "हे परमेश्वर, मुझ पर दया कर, मुझ पर दया कर, क्योंकि मेरी आत्मा तुझमें शरण लेती है। जब तक मुसीबत टल न जाए, मैं तेरे पंखों की छाया में शरण लूँगा।" भजन रचने वाले दाऊद ने प्रभु की शरण ली क्योंकि उस पर एक मुसीबत आ पड़ी थी। वह मुसीबत क्या थी? वह शाऊल द्वारा किया जा रहा ज़ुल्म था। जैसा कि इस पाठ की भूमिका (superscription) से पता चलता है, भजन संहिता 57 तब

लिखा गया था जब दाऊद शाऊल से बचने के लिए एक गुफ़ा में छिपा हुआ था। शाऊल के ज़ुल्म के कारण दाऊद भाग रहा था। दिलचस्प बात यह है कि भूमिका में इस्तेमाल शब्द "अल-ताशहेथ" (Al-tashheth) का अर्थ है "नष्ट मत करो।" आज के पाठ की चौथी आयत में, दाऊद अपनी स्थिति का वर्णन इस प्रकार करता है: "मैं शेरों के बीच हूँ; मैं भूखे जानवरों के बीच पड़ा हूँ—ऐसे लोग जिनके दाँत भाले और तीर हैं, जिनकी ज़बानें तेज़ तलवारें हैं।" दाऊद अपने दुश्मनों—शाऊल और उसके आदमियों—की तुलना "शेरों" से करता है क्योंकि उन्होंने उसे नुकसान पहुँचाने के लिए बेरहम और जंगली तरीका अपनाया था (पार्क युन-सन)। उन्होंने उसे फँसाने के लिए जाल बिछाया था (आयत 6)। नतीजतन, दाऊद ने परमेश्वर के सामने अपना दिल खोलकर कहा, "मेरी आत्मा मुसीबत में है" (आयत 6)। आखिरकार, जब उसे शाऊल के पीछा करने की वजह से जान-माल के संकट का सामना करना पड़ा, तो उसने प्रभु की शरण ली। दाऊद ने तब तक शरण माँगी जब तक कि मुसीबत टल न गई (आयत 1)।

तो फिर, दाऊद कहाँ भागा? उसने प्रभु के पंखों की छाया में शरण ली। यह अभिव्यक्ति एक रूपक है जो यह बताती है कि विश्वास करने वाले की परमेश्वर द्वारा सुरक्षा वैसी ही है जैसे एक माँ मुर्गी अपने चूजों को अपने पंखों के नीचे शरण देती है (पार्क युन-सन)। यह चित्रण बाइबल में कई जगहों पर मिलता है; खास तौर पर, व्यवस्थाविवरण 32:11–12 में, परमेश्वर मूसा से कहते हैं: "जैसे एक बाज़ अपने घोंसले को हिलाता है और अपने बच्चों के ऊपर मंडराता है, उन्हें पकड़ने के लिए अपने पंख फैलाता है और उन्हें ऊपर ले जाता है, वैसे ही केवल प्रभु ने उनकी अगुवाई की; कोई विदेशी देवता उनके साथ नहीं था।" जैसे एक बाज़ अपने घोंसले को हिलाता है, अपने बच्चों के ऊपर मंडराता है, उन्हें पकड़ने के लिए अपने पंख फैलाता है और उन्हें अपने पंखों पर उठाता है, वैसे ही परमेश्वर कभी-कभी हमारे घोंसलों को—जहाँ हम शायद अपने विश्वास को बहुत आराम से जी रहे हों—उथल-पुथल कर देते हैं और हमें गिरने पर मजबूर करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक माँ बाज़ अपने बच्चों को खड़ी चट्टान पर बने ऊँचे घोंसले से नीचे धकेलती है। उस पल में, ज़मीन से टकराने से बचने की सहज इच्छा से प्रेरित होकर, हम—जैसे बाज़ का बच्चा घबराहट में अपने पंख फड़फड़ाता है—संकट से बचने के लिए ज़ोरदार संघर्ष करते हैं। फिर भी, इतनी ज़ोरदार कोशिशों के बावजूद, कई बार हम खुद को बेबसी से ज़मीन की ओर गिरते हुए देखते हैं, ठीक वैसे ही जैसे बाज़ का बच्चा गिरता

है। ठीक उसी समय—टकराने से एक पल पहले—परमेश्वर हमें बचाते हैं और हमारी अगुवाई करते हैं; वह माँ बाज़ की तरह झपट्टा मारते हैं, हमें अपने पंखों पर पकड़ते हैं और वापस घोंसले तक ले जाते हैं।

दूसरी बात, जिस विश्वास करने वाले का दिल अडिग होता है, वह संकट और मुश्किलों के बीच प्रार्थना करता है।

भजन संहिता 57:2 को देखें: "मैं परमप्रधान परमेश्वर को पुकारता हूँ, उस परमेश्वर को जो मेरे लिए अपना मकसद पूरा करता है।" मुसीबत के समय, दाऊद ने परमेश्वर को अपनी शरण बनाया, उनसे पनाह माँगी और उन्हें पुकारा। दाऊद की प्रार्थना पर विचार करते हुए—जो उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा करके की थी—हमें उस परमेश्वर पर ध्यान देना चाहिए जिनसे उन्होंने प्रार्थना की थी:

(1) प्रार्थना में दाऊद ने जिस परमेश्वर पर भरोसा किया, वे "सर्वोपरि परमेश्वर" (वचन 2) थे।

एक तरह से, यह कहा जा सकता है कि दाऊद ने सर्वोपरि परमेश्वर की ओर देखा और उन्हें तब पुकारा जब वे सबसे निचली स्थिति में थे। यह एक छोटे चील के बच्चे जैसा है, जो अपने घोंसले से गिरकर ज़मीन की ओर तेज़ी से नीचे आ रहा हो और ज़मीन से टकराने से पहले अपनी माँ को बचाने के लिए पुकार रहा हो; हम मुसीबत के गड्ढे में जितना गहरे धंसते जाते हैं—यह महसूस करते हुए कि उम्मीद हमारे अंदर नहीं बल्कि सिर्फ़ प्रभु में है—उतना ही हम सर्वोपरि परमेश्वर की ओर देखते हैं और उन्हें पुकारते हैं। भविष्यद्वक्ता योना इसका एक उदाहरण हैं। योना की पुस्तक में, हम उन्हें तर्शीश जाते हुए, जहाज़ पर चढ़ते हुए और अंततः एक बड़ी मछली के पेट में समुद्र की गहराइयों में डूबते हुए देखते हैं; फिर भी, वहाँ भी, उन्होंने "[परमेश्वर] के पवित्र मंदिर की ओर फिर से देखने" के संकल्प के साथ प्रार्थना की (योना 2:4)।

(2) प्रार्थना में दाऊद ने जिस परमेश्वर पर भरोसा किया, वे ऐसे परमेश्वर थे "जो मेरे लिए सब कुछ पूरा करते हैं" (भजन संहिता 57:2)।

सर्वोपरि परमेश्वर ही वे हैं जो हमारी भलाई के लिए अपनी इच्छा पूरी करते हैं। दाऊद ने इसी परमेश्वर से विनती की थी। यशायाह 14:24 और 27 पर विचार करें: "सेनाओं के यहोवा ने शपथ खाकर कहा है, 'निश्चय ही, जैसा मैंने सोचा है, वैसा ही होगा, और जैसा मैंने इरादा किया है, वैसा ही कायम रहेगा'... क्योंकि सेनाओं के यहोवा ने इरादा किया है, और उसे कौन रद्द करेगा? उसका हाथ फैला हुआ है, और उसे कौन पीछे हटाएगा?" हमारे लिए प्रभु की इच्छा क्या है? उनके विचार क्या हैं? वह क्या पूरा करने का इरादा रखते हैं? वह और कुछ नहीं बल्कि हमारा "उद्धार" है।

(3) प्रार्थना में दाऊद ने जिस परमेश्वर पर भरोसा किया, वे अटूट प्रेम और सच्चाई के परमेश्वर थे। आज के वचन, भजन संहिता 57:3 को देखिए: “वह स्वर्ग से भेजेगा और मुझे उस व्यक्ति की निंदा से बचाएगा जो मुझे निगल जाना चाहता है (सेलाह); परमेश्वर अपना अटूट प्रेम और अपनी सच्चाई भेजेगा।” जब दाऊद ने सर्वोपरि परमेश्वर—वह प्रभु जो दाऊद के लिए अपनी इच्छा पूरी करता है—से प्रार्थना की, तो उसने उद्धार के भरोसे के साथ ऐसा किया। दाऊद को कैसे यकीन था कि प्रभु उसे बचाएगा? उसे भरोसा था कि प्रभु उसे उन लोगों की बदनामी से बचाने के लिए स्वर्ग से “अपना अटूट प्रेम और अपनी सच्चाई” भेजेगा जो उसे निगल जाना चाहते थे। इसका क्या मतलब है? यह एक काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो परमेश्वर के अटूट प्रेम और सच्चाई के उद्धारकारी कार्यों को एक व्यक्ति के रूप में दिखाती है (पार्क युन-सन)। क्योंकि हमारा प्रभु प्रेम और सच्चाई में अडिग है, वह वफादारी से हमारा उद्धार पूरा करता है—जो उसकी इच्छा है—सिर्फ अपने प्रेम के द्वारा। हमारी अपनी कोई योग्यता नहीं है; हम केवल उसके अटूट प्रेम और सच्चाई से बचाए जाते हैं।

तीसरी बात, मज़बूत दिल वाला विश्वासी संकट और मुश्किलों के बीच भी परमेश्वर की महिमा करता है।

भजन संहिता 57:5 और 11 को देखिए: "हे परमेश्वर, तू आकाश के ऊपर ऊँचा हो; तेरी महिमा सारी पृथ्वी पर छा जाए" (पद 5); "हे परमेश्वर, तू आकाश के ऊपर ऊँचा हो; तेरी महिमा सारी पृथ्वी पर छा जाए" (पद 11)। दाऊद ने परमेश्वर की महिमा कैसे की? उसने परमेश्वर की स्तुति करके उनकी महिमा की। पद 7 के बाद के हिस्से से लेकर पद 9 तक देखिए: "...मैं गाऊँगा और स्तुति करूँगा। जाग, मेरी महिमा! जाग, वीणा और सारंगी! मैं भोर को जगाऊँगा। हे प्रभु, मैं लोगों के बीच तेरा धन्यवाद करूँगा; मैं जातियों के बीच तेरी स्तुति के गीत गाऊँगा।" जीवन और मृत्यु के ऐसे दोराहे पर खड़े होकर भी दाऊद स्तुति के ज़रिए परमेश्वर

की महिमा कैसे कर पाया? ऐसा इसलिए था क्योंकि उसका दिल मज़बूत था (पद 7)। मज़बूत दिल की क्या पहचान है? डॉ. पार्क युन-सन ने तीन बातें बताई हैं: (1) मौत का सामना करने का पक्का इरादा। दाऊद ने मौत का सामना करने का पक्का इरादा कर लिया था और इसके लिए अपने दिल को तैयार कर लिया था। (2) अच्छा काम करने के लिए तैयार रहना। मूर्ख व्यक्ति की एक पहचान यह है कि वह मानसिक रूप से तैयार नहीं होता; बिना किसी साफ़ लक्ष्य के वह हमेशा डगमगाता रहता है। लेकिन विश्वासी तैयार दिल के साथ काम करते हैं। (3) प्रभु पर भरोसा रखना और शांति पाना। हमें हमेशा प्रभु की ओर देखना चाहिए, उनका इंतज़ार करना चाहिए, प्रार्थना करनी चाहिए और उन्हें अपने जीवन में जगह देनी चाहिए। प्रभु का स्वागत करने का क्या मतलब है? इसका मतलब बाइबल में किए गए उस वादे से है कि परमेश्वर विश्वासी के साथ-साथ चलते हैं। मज़बूत दिल वाले विश्वासी को हर स्थिति में परमेश्वर से उद्धार मिलने का भरोसा होता है और वह सच्चे दिल से चाहता है कि पूरी दुनिया में परमेश्वर की महिमा हो। जब हम मुश्किलों या दुख-तकलीफों से घिरे होते हैं, तब भी हम पूरे जोश के साथ प्रार्थना करते हैं कि ऊँचे परमेश्वर की महिमा पूरी पृथ्वी पर छा जाए, ठीक वैसे ही जैसे पानी समुद्र को ढँक लेता है। हालाँकि दाऊद पर मुसीबत आ पड़ी थी, फिर भी उसने धन्यवाद भरे दिल से प्रभु की स्तुति की (पद 8)। ऐसा क्यों था? ऐसा इसलिए था क्योंकि उसने प्रभु के महान, अटूट प्रेम और सच्चाई का अनुभव किया था, जिसे परमेश्वर ने भेजा था (पद 3)। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम भी दाऊद की तरह कह सकें: "क्योंकि तेरा अटूट प्रेम महान है, जो स्वर्ग तक पहुँचता है; तेरी सच्चाई आसमान तक पहुँचती है" (पद 10)।

एक रविवार की दोपहर, मैं श्रीमती जांग उल-सू से मिलने एक नर्सिंग होम गया। मैंने उनसे कहा, "आप सुंदर हैं।" मैंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि मुझे उनमें यीशु दिखाई दिए। जब मैंने उन्हें देखा—वे आभारी मन से स्तुति-गीत गा रही थीं (भजन 40 और 355), भजन संहिता 23 का पाठ कर रही थीं, और बार-बार 'प्रभु की प्रार्थना' और 'प्रेरितों का विश्वास-सार' (Apostles' Creed) दोहरा रही थीं—तो मैंने विश्वास का एक सच्चा उदाहरण देखा; वे अपनी आखिरी साँस तक प्रभु की स्तुति कर रही थीं; उनमें मुझे यीशु की छवि दिखाई दी। जब मैंने दादी जांग को देखा—जो जीवन और मृत्यु के मोड़ पर अपने उद्धारकर्ता और एकमात्र आशा, यीशु पर अपना मन लगाए हुए थीं, उनकी शरण में थीं, उनसे सच्चे मन से पुकार रही थीं, और स्तुति के द्वारा उनकी महिमा कर रही थीं—तो मुझे सचमुच महसूस हुआ कि परमेश्वर की नज़र में वे सुंदर थीं। उनके उदाहरण

का अनुसरण करते हुए, मैं भी अपनी आखिरी साँस तक अपना मन प्रभु पर लगाए रखने और उन्हें धन्यवाद और स्तुति अर्पित करने की इच्छा रखता हूँ।

जब मेरी आत्मा को अन्याय का अनुभव हो

“उन्होंने मेरे कदमों के लिए जाल बिछाया—मेरी आत्मा दुख से झुक गई। उन्होंने मेरे रास्ते में गड्ढा खोदा—लेकिन वे खुद ही उसमें गिर गए” (भजन संहिता 57:6)।

कभी-कभी हमें लगता है कि हमारे साथ बहुत अन्याय हुआ है। कोई मुझसे नफ़रत करता है और मुझे परेशान करता है, जबकि मैंने कुछ भी गलत नहीं किया है। मुझे नहीं पता कि वे मुझसे नफ़रत क्यों करते हैं या मुझे परेशान क्यों करते हैं। काश मुझे कम से कम कारण पता होता, लेकिन वे बिना किसी वजह के मुझसे नफ़रत करते हैं और मुझे तंग करते हैं। फिर भी, वे इतने से ही संतुष्ट नहीं होते। वे दूसरों को इकट्ठा करते हैं, मेरे बारे में झूठी कहानियाँ बनाते हैं, मेरी बदनामी करते हैं और यहाँ तक कि मेरे खिलाफ़ साज़िश भी रचते हैं। वे बुरी अफ़वाहें फैलाते हैं। वे मुझे गिराने के लिए एकजुट हो जाते हैं और मुझे मुसीबत में डालने की कोशिश भी करते हैं। मेरे पास खड़े होने के लिए कोई जगह नहीं बची है। मैं अब इसे और सहन नहीं कर सकता। मेरा दिल गहरे दुख और परेशानी में है। मुझे बहुत ज़्यादा अन्याय महसूस हो रहा है। जब मेरी आत्मा को ऐसा अन्याय महसूस हो, तो मुझे क्या करना चाहिए?

आज के वचन, भजन संहिता 57:6 में, भजनकार दाऊद कहते हैं, “मेरी आत्मा दुख से झुक गई” (या, “मेरी आत्मा को अन्याय का अनुभव हो रहा है”)। दाऊद ने ऐसा क्यों कहा? ऐसा इसलिए था क्योंकि, कुछ भी गलत न करने के बावजूद—और असल में, परमेश्वर के नाम पर फ़िलिस्तीनी दानव गोलियत को हराकर इज़राइल को जीत दिलाने के बावजूद—राजा शाऊल उन्हें जलन की नज़र से देखने लगे और उन्हें मार डालना चाहते थे। इस तरह, राजा शाऊल से बचने के लिए एक गुफ़ा में छिपते हुए, दाऊद ने भजन संहिता 57 की रचना की और परमेश्वर के सामने अपना दिल खोलकर रख दिया, और अपने साथ हो रहे अन्याय के

खिलाफ़ गुहार लगाई। आइए उन पाँच तरीकों पर विचार करें जिनसे दाऊद ने अपनी आत्मा पर हुए अन्याय का सामना किया, और उन सीखों पर गौर करें जो हम उनसे ले सकते हैं:

पहला, जब दाऊद की आत्मा ने अन्याय का सामना किया, तो उन्होंने परमेश्वर की शरण ली।

भजन संहिता 57:1 को देखें: "हे परमेश्वर, मुझ पर दया कर, मुझ पर दया कर! क्योंकि मेरी आत्मा तुझ पर भरोसा रखती है; और जब तक ये विपत्तियाँ टल न जाएँ, मैं तेरे पंखों की छाया में शरण लूँगा।" जब दाऊद की आत्मा ने अन्याय का सामना किया, तो उन्होंने परमेश्वर की कृपा पाने की इच्छा की। उन्होंने परमेश्वर से दया दिखाने की विनती की। साथ ही, उन्होंने प्रभु की शरण ली—खासकर उनके पंखों की छाया में—और तब तक वहीं इंतज़ार किया जब तक कि उन पर आई मुसीबतें टल न गईं (पद 1)। जब हमारी आत्मा के साथ अन्याय हो, तो हमें भी प्रभु की शरण में जाना चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर हमारी शरण और दुश्मन के खिलाफ एक मज़बूत गढ़ हैं (61:3)। जब ज़िंदगी में तूफ़ान और तेज़ हवाएँ चलें, तो हमें जल्दी से प्रभु—अपनी शरण—के पास जाना चाहिए और तब तक वहीं रहना चाहिए जब तक तूफ़ान गुज़र न जाए (55:8)। हमें उनके पंखों की छाया में शरण लेनी चाहिए (36:7)। हमेशा परमेश्वर पर अपनी शरण के रूप में भरोसा करते हुए (62:8), जब हमारी आत्मा के साथ अन्याय हो तो हमें प्रभु की शरण में जाना चाहिए। वह हमें अपने पंखों की छाया में छिपा लेंगे (17:8) और हमारी रक्षा करेंगे।

दूसरी बात, जब दाऊद की आत्मा के साथ अन्याय हुआ, तो उन्होंने परमेश्वर को पुकारा, जो उनके लिए सब कुछ पूरा करते हैं।

भजन संहिता 57:2 को देखिए: "मैं परमप्रधान परमेश्वर को पुकारूँगा, उस परमेश्वर को जो मेरे लिए सब कुछ पूरा करता है।" राजा शाऊल से बचने के लिए एक गुफ़ा में छिपते हुए, दाऊद ने परमप्रधान परमेश्वर को पुकारा, जो उनके लिए सब कुछ पूरा करते हैं। दाऊद ऐसी प्रार्थना कैसे कर पाए? अगर उन्होंने अपनी परिस्थितियों को सिर्फ़ अपनी शारीरिक आँखों से देखा होता, तो वे निश्चित रूप से उस परमेश्वर में अपना विश्वास नहीं जता पाते जो उनकी ओर से अपनी इच्छा पूरी करते हैं। अगर उस गुफ़ा में फँसे होने पर उन्होंने सिर्फ़ अपनी मुश्किल स्थिति पर ध्यान दिया होता, तो वे निराशा में इतने डूब जाते कि परमेश्वर की इच्छा

जानने की कोशिश भी न कर पाते। फिर भी, क्योंकि दाऊद ने गुफ़ा में रहते हुए विश्वास के साथ परमप्रधान परमेश्वर की ओर देखा, इसलिए उन्हें विश्वास था कि परमेश्वर उनके लिए अपनी इच्छा पूरी करेंगे—उनकी अपनी इच्छा नहीं। हममें भी ऐसा ही विश्वास होना चाहिए। मुझे प्रेरितों के काम अध्याय 16 में पौलुस और सीलास की याद आती है। जेल की चारदीवारी में फँसे होने के बावजूद, उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की और उनकी स्तुति की। हालाँकि परमेश्वर से उनकी प्रार्थनाएँ कुछ हद तक समझ में आती हैं, लेकिन कोई सोच सकता है कि ऐसी स्थिति में वे उनकी स्तुति कैसे कर सकते थे। मेरा मानना है कि जो विश्वासी परमेश्वर से विनती करता है और उनकी इच्छा पूरी होने पर भरोसा रखता है, वह विश्वास के साथ उनकी स्तुति कर सकता है, क्योंकि—नतीजा चाहे जो भी हो—वे परमेश्वर के परमेश्वर होने के स्वभाव पर विश्वास करते हैं और उस पर भरोसा रखते हैं। प्रशंसा की यही शक्ति है: यह प्रशंसा हालात पर नहीं, बल्कि इस सच्चाई पर आधारित है कि परमेश्वर कौन हैं। चाहे हम किसी भी स्थिति का सामना करें, हमारा परमेश्वर प्रशंसा के योग्य है। इसलिए, हालात चाहे कैसे भी हों, हमें प्रभु की महानता और महिमा के लिए उनकी प्रशंसा करनी चाहिए। हमें सबसे ऊँचे परमेश्वर को इस विश्वास के साथ पुकारना चाहिए कि, चाहे हम कितनी भी मुश्किलों का सामना क्यों न करें, वे हमारे लिए अपनी इच्छा पूरी करेंगे। तीसरी बात, दाऊद को भरोसा था कि जब उसकी आत्मा परेशानी में होगी, तो परमेश्वर उस तक अपनी दया और सच्चाई पहुँचाएँगे।

भजन संहिता 57:3 पर विचार करें: "वह स्वर्ग से मुझे बचाएगा; वह उसे शर्मिंदा करेगा जो मुझे कुचलता है। परमेश्वर अपनी दया और सच्चाई भेजेगा।" दाऊद को उद्धार का भरोसा था। भले ही वह राजा शाऊल से बचने के लिए गुफा में छिपा हुआ था, उसे विश्वास था कि परमेश्वर उसे बचाएँगे। इसके अलावा, दाऊद को भरोसा था कि परमेश्वर अपनी दया और सच्चाई भेजेंगे (पद 3)। परमेश्वर का अपनी दया और सच्चाई भेजने का क्या अर्थ है? मैंने व्यक्तिगत रूप से इसका अनुभव तब किया जब मेरा पहला बच्चा बीमार था। परमेश्वर ने जो सच्चाई का वचन मुझे भेजा, वह भजन संहिता 63:3 में मिला: "क्योंकि तेरी दया जीवन से भी बेहतर है, मेरे होंठ तेरी प्रशंसा करेंगे।" सोमवार की सुबह यह वचन मिलने पर, मैंने और मेरे जीवनसाथी ने अपने पहले बच्चे, जू-यंग को जाने देने का फैसला किया। हमारा परिवार अस्पताल के इंटेंसिव केयर यूनिट में जू-यंग के चारों ओर परमेश्वर की आराधना करने के लिए इकट्ठा हुआ; फिर, मशीनें बंद करने और ट्यूब हटाने के बाद, जू-यंग मेरी गोद में सो गया। बाद में, जब हम जू-यंग का अंतिम संस्कार करने और उसकी राख बिखेरने के बाद लौटे, तो परमेश्वर ने मुझे उनके शानदार और अद्भुत बचाने वाले प्रेम की प्रशंसा करने के लिए प्रेरित

किया। आखिरकार, हमारे जीवन के सबसे बड़े संकट के दौरान, परमेश्वर ने अपना प्रेम और सच्चाई भेजी, जिससे हम उनकी प्रशंसा कर सके। इसलिए, मेरा मानना है कि संकट परमेश्वर के प्रेम और सच्चाई का अनुभव करने का एक अद्भुत अवसर है। चौथी बात, जब दाऊद की आत्मा अन्याय के बोझ से दबी हुई थी, तो उसने एक स्थिर और दृढ़ मन से परमेश्वर के गीत गाए और उनकी प्रशंसा की। भजन संहिता 57:7 को देखिए: "हे परमेश्वर, मेरा मन स्थिर है, मेरा मन स्थिर है; मैं गाऊंगा और भजन गाऊंगा।" मुश्किलों के बीच परमेश्वर की शरण लेने के बाद, दाऊद को न केवल यह भरोसा था कि परमेश्वर उसके लिए अपनी इच्छा पूरी करेगा, बल्कि यह भी कि वह अपना अटूट प्रेम और सच्चाई भेजेगा (पद 1-3)। आखिर में, जब उसने इन मुश्किलों के बीच परमेश्वर की कृपा का अनुभव किया, तो दाऊद का मन भरोसे से भर गया (पद 7)। उसे न केवल अपनी मुक्ति का भरोसा था, बल्कि इस बात का भी कि परमेश्वर की इच्छा पूरी तरह से पूरी होगी और वह मुश्किलों के बीच भी परमेश्वर के प्रेम और सच्चाई का अनुभव करेगा। इस भरोसे के साथ, दाऊद ने परमेश्वर की स्तुति करने का संकल्प लिया (पद 7)। नतीजतन, उसकी आत्मा—जो कभी अन्याय के एहसास से दबी हुई थी—जाग उठी और सुबह को जगाया (पद 8)। हमारी आत्माओं को भी जागना चाहिए और सुबह को जगाना चाहिए। अन्याय के एहसास से दबे रहने के बजाय, हमें भरोसे से भरे दिलों के साथ प्रभु की महिमा और महानता की स्तुति करनी चाहिए।

आखिर में, पांचवां बिंदु: जब दाऊद की आत्मा अन्याय के एहसास से दबी हुई थी, तो उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर स्वर्ग से भी ऊँचा हो जाए और उसकी महिमा पूरी पृथ्वी पर ऊँची हो जाए।

भजन संहिता 57:5 और 11 को देखिए: "हे परमेश्वर, तू स्वर्ग से ऊँचा हो जा! तेरी महिमा पूरी पृथ्वी पर हो! ... हे परमेश्वर, तू स्वर्ग से ऊँचा हो जा! तेरी महिमा पूरी पृथ्वी पर हो!" यह बहुत खास बात है। यह अद्भुत है कि राजा शाऊल से बचने के लिए गुफा में छिपे होने के बावजूद, दाऊद ने प्रार्थना की कि परमेश्वर स्वर्ग से ऊँचा हो जाए और उसकी महिमा पूरी पृथ्वी पर ऊँची हो जाए। मुझे खास तौर पर इस बात से प्रेरणा मिलती है कि राजा शाऊल द्वारा अन्यायपूर्ण तरीके से पीछा किए जाने और मुश्किलों का सामना करने के बावजूद, दाऊद ने लोगों के बीच प्रभु का धन्यवाद किया और राष्ट्रों के बीच उसकी स्तुति की (पद 9), और प्रार्थना की कि परमेश्वर स्वर्ग से ऊँचा हो जाए और उसकी महिमा पूरी पृथ्वी पर हो। जब मैं सोचता हूँ कि दाऊद ऐसा कैसे कर पाया, तो मेरा मानना है कि यह इसलिए संभव हुआ क्योंकि उसने परमेश्वर द्वारा भेजे गए प्रेमपूर्ण

दया और सच्चाई का अनुभव किया था (पद 3)। पद 10 को देखिए: “क्योंकि तेरी करुणा महान है, जो स्वर्ग तक पहुँचती है; तेरी सच्चाई बादलों तक पहुँचती है।” जब दाऊद की आत्मा ने अन्याय और विपत्ति के बीच परमेश्वर में शरण ली, तो उसने उस अनुग्रह का अनुभव किया जिसके लिए उसने विनती की थी, परमेश्वर की उस इच्छा को जाना जिसके लिए उसने पुकार की थी, और उस करुणा और सच्चाई को पाया जिसकी उसने चाहत की थी; इसलिए उसने स्वीकार किया, “क्योंकि तेरी करुणा महान है, जो स्वर्ग तक पहुँचती है; तेरी सच्चाई बादलों तक पहुँचती है।” नतीजतन, वह परमेश्वर से प्रार्थना कर सका, “हे परमेश्वर, तू स्वर्ग से भी ऊँचा हो; तेरी महिमा सारी पृथ्वी पर छा जाए” (पद 11)।

मुझे वह बात आज भी अच्छी तरह याद है; यह मेरे दिल में बसी एक ऐसी याद है जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। मुझे अपने तीसरे चाचा—जो एक पादरी थे—के ताबूत बंद करने की रस्म के दौरान का वह पल याद है, जब परमेश्वर के वचन को सुनाने के बाद, मैं शोक मनाने वाले सभी लोगों के साथ मिलकर पूरे जोश के साथ भजन नंबर 40, "हाउ ग्रेट दाऊ आर्ट" ("हे प्रभु मेरे परमेश्वर, जब मैं अद्भुत आश्चर्य में..."), गा रहा था। खासकर, मैं उस अनुभव को नहीं भूल सकता जब मेरे अंदर मौजूद पवित्र आत्मा ने मेरी आत्मा को परमेश्वर की स्तुति करने के लिए प्रेरित किया, और मैंने कोरस गाया: "तब मेरी आत्मा गाती है... आप कितने महान हैं!" मुझे अपने चाचा की ज़िंदगी का वह दृश्य भी साफ़-साफ़ याद है, जब वे तिजुआना, मैक्सिको गए थे और विकलांग मैक्सिकन लोगों के एक समूह के सामने स्पेनिश भाषा में वही कोरस गाया था। इसके अलावा, मुझे याद है कि कैसे, उनके गुज़रने से पहले नए साल की पारिवारिक प्रार्थना सभा के दौरान—जब वे कैंसर से जूझ रहे थे—उन्होंने अपनी कमज़ोर हालत में भी उठने की हिम्मत जुटाई और प्रभु की महानता और महिमा की स्तुति की। कैंसर का मरीज़, इतनी शारीरिक पीड़ा सहते हुए भी, प्रभु की महानता की स्तुति कैसे कर सकता है? कोई व्यक्ति अंतिम संस्कार के समय, परिवार के किसी प्रिय सदस्य को विदाई देते हुए प्रभु की महानता की स्तुति कैसे कर सकता है? जब मैं राजा दाऊद के बारे में सोचता हूँ तो मुझे बहुत प्रेरणा मिलती है; राजा शाऊल से बचने के लिए गुफ़ा में छिपे होने पर भी, उन्होंने अपनी मुश्किल परिस्थितियों पर ध्यान नहीं दिया, बल्कि अपनी नज़रें उद्धार करने वाले परमेश्वर पर टिकाए रखीं। परमेश्वर के अटूट प्रेम और सच्चाई पर भरोसा करते हुए, उन्होंने प्रभु की महिमा की और प्रार्थना की कि उनकी महिमा पूरी पृथ्वी पर ऊँची हो। मैंने भी महसूस किया है कि मेरी प्रार्थनाएँ बहुत सीमित रही हैं, जो मुख्य रूप से मेरी अपनी मौजूदा

परिस्थितियों या मेरी सेवा पर केंद्रित थीं। अब, मेरी इच्छा है कि मैं ऐसी प्रार्थना करूँ कि परमेश्वर की महिमा की पहचान पूरी दुनिया में फैल जाए, ठीक वैसे ही जैसे पानी समुद्र को ढकता है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर मेरी प्रार्थनाओं का दायरा बढ़ाएँ, ताकि प्रभु की महानता और महिमा पूरी दुनिया में भर जाए।

मैं वचन पर आधारित इस चिंतन को यहीं समाप्त करना चाहता हूँ। हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जो अन्याय से भरी है; चर्च के भीतर भी ऐसा अनुचित व्यवहार होता है। मुझे समझ नहीं आता कि लोगों की ज़बान तलवार की तरह तेज़ क्यों होती है (भजन संहिता 57:4) या वे अपने भाई-बहनों की बुराई क्यों करते हैं (पद 3)। वे हर तरह के गड्ढे खोदते हैं—मानो किसी को गिराना चाहते हों—खासकर अपने भाई-बहनों को ठोकर खिलाकर गिराने के लिए (पद 6)। नतीजतन, कलीसिया के कुछ सदस्यों को गहरे घाव मिलते हैं। वे अन्याय सहते हैं, फिर भी अपनी शिकायतें कहने के लिए उनके पास कोई नहीं होता, जिससे कुछ लोग आखिरकार कलीसिया ही छोड़ देते हैं। इतना ही नहीं; कलीसिया में ऐसे कई लोग भी हैं जो तरह-तरह की मुसीबतों से जूझ रहे हैं और समझ नहीं पा रहे कि क्या करें। हमें सिर्फ़ प्रभु की ओर देखना चाहिए और उनसे पुकार करनी चाहिए। हमें परमेश्वर की शरण लेनी चाहिए, जो हमारी पनाहगाह हैं। परमेश्वर हमारे लिए अपनी इच्छा पूरी करेंगे। इसके अलावा, जब हम मुसीबत में होंगे, तो वे अपना अटूट प्रेम और सच्चाई भेजेंगे, जिससे हम उन्हें गहराई से महसूस कर पाएँगे। इस तरह, हमारा दिल स्थिर रहेगा और हम पूरे भरोसे के साथ परमेश्वर की स्तुति करेंगे: "हे परमेश्वर, तू आकाश के ऊपर ऊँचा हो; तेरी महिमा सारी पृथ्वी पर छा जाए" (पद 5)।

न्याय करने वाले परमेश्वर (1)

[भजन संहिता 58]

आज दोपहर एक नर्सिंग होम से चर्च लौटते समय, मैंने रेडियो चालू किया और लॉस एंजिल्स के एक बड़े कोरियाई चर्च के पादरी के बारे में एक खबर सुनी, जिसने अपनी पत्नी के साथ मारपीट की थी। मैंने रिपोर्टर को यह कहते हुए सुना, "यह बात सामने आई है कि चर्च के सदस्यों को इस बात पर विचार करने की ज़रूरत है कि वे किसी नेता को सिर्फ़ इसलिए आँख बंद करके क्यों मानते हैं क्योंकि उसका पद 'पादरी' है... तर्क यह है कि सदस्यों को खुद सही-गलत को समझने की समझ (विवेक) का इस्तेमाल करना चाहिए।" यह खबर सुनकर मुझे थोड़ा झटका लगा। मुझे यह चिंता भी हुई कि ऐसी घटना परमेश्वर की महिमा को धुंधला कर सकती है और सुसमाचार प्रचार में बाधा डाल सकती है। इन विचारों के बीच, मैं इस बात से सहमत था कि "चर्च के सदस्यों को सही-गलत को समझने की समझ का इस्तेमाल करना चाहिए।" इसका कारण यह है कि मेरा मानना है कि हम ईसाई सही-गलत को समझने की अपनी क्षमता खो रहे हैं। जब मैं इसके कारण पर विचार करता हूँ, तो मुझे लगता है कि यह परमेश्वर के वचन को सुनने के अकाल से उपजा है—एक ऐसा अकाल जो पहले ही आ चुका है (आमोस 8:11)। प्रसारण वाले उपदेशों की अंतहीन धारा और बाइबिल की प्रचुर उपलब्धता के बावजूद, हमारी समझ अनिवार्य रूप से धुंधली हो जाती है क्योंकि, भले ही हमारे कान हैं, हम परमेश्वर के वचन को वास्तव में सुनने में विफल रहते हैं। कई ईसाई बौद्धिक रूप से परमेश्वर के वचन को बहुत अच्छी तरह से जानते हैं, फिर भी वे इसे अपने दिलों में नहीं उतार पाते हैं। नतीजतन, हम परमेश्वर के वचन के बजाय परिस्थितियों या भावनाओं से निर्देशित होते हैं। अंततः, परमेश्वर के वचन के इस अकाल के कारण हमारी समझ धुंधली हो गई है। अपनी पुस्तक *लीडर, हैव द हार्ट ऑफ़ ए लायन* (Leader, Have the Heart of a Lion) में, पादरी हान होंग कहते हैं: "... केवल दिखाई देने वाली परिस्थितियों के आधार पर परमेश्वर की इच्छा की व्याख्या न करें; बल्कि, परमेश्वर की इच्छा के नज़रिए से अपनी परिस्थितियों की व्याख्या करें। परमेश्वर का न्याय न करें; परमेश्वर को अपना न्याय करने दें। परमेश्वर के सामने लगातार बोलने के

बजाय, चुपचाप सुनें कि वह आपसे क्या कहता है" (इंटरनेट)। हमें किसी भी समय हमारे सामने आने वाली स्थितियों की व्याख्या परमेश्वर की इच्छा के प्रकाश में करनी चाहिए। इसके अलावा, परमेश्वर को हमारा न्याय करने देने के लिए, हमें उनके सामने शांत रहना चाहिए और उनकी आवाज़ सुननी चाहिए। पिछले हफ़्ते, हमारी बुधवार की प्रार्थना सभा के दौरान, भजन संहिता 57 के माध्यम से परमेश्वर ने हमें जो संदेश दिया, वह था "अपने दिलों को स्थिर करना।" खासकर, आयत 7 पर मनन करने से—जहाँ दाऊद कहता है, "हे परमेश्वर, मेरा मन स्थिर है, मेरा मन स्थिर है! मैं गाऊँगा और स्तुति करूँगा"—हमने सीखा कि हमें भी अपने मन को स्थिर करना चाहिए। मुसीबत के समय भी (आयत 1), दाऊद ने अपने मन को स्थिर रखा और परमेश्वर की स्तुति की। फिर भी, स्तुति करने की उस स्थिति तक पहुँचना शायद आसान नहीं था; दूसरे शब्दों में, स्थिर होने से पहले उसका मन बेचैन था। हम इसे तब देख सकते हैं जब वह शाऊल से भागते हुए अपनी भावनाएँ ज़ाहिर करता है और बताता है कि उसकी आत्मा बहुत दुखी या आहत महसूस कर रही है (आयत 6)। अगर हम ऐसी अन्यायपूर्ण स्थिति में होते, तो हम क्या करते? जैसा कि भजन संहिता 58:11 हमें बताता है, अन्यायपूर्ण परिस्थितियों का सामना करते समय भी हमें परमेश्वर की ओर देखना चाहिए—जो न्याय करने वाला है। दूसरे शब्दों में, हमें धर्मी परमेश्वर के न्याय पर भरोसा करना चाहिए। आज, इस अंश और "न्याय करने वाले परमेश्वर" के विषय पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मुझे उम्मीद है कि हम न्याय करने वाले परमेश्वर के एक पहलू पर मनन करके प्रभु की आवाज़ सुनने का मौका ले सकते हैं—बाकी दो बिंदुओं को अगले हफ़्ते के लिए छोड़ते हुए।

पहला, "न्याय करने वाला परमेश्वर" वह है जो दुष्टों को फटकारता है।

भजन संहिता 58:1–5 में, हम देखते हैं कि धर्मी परमेश्वर, जो न्यायकर्ता के रूप में कार्य करता है, दुष्टों—यानी दाऊद के दुश्मनों—को फटकारता है। उसकी फटकार के चार पहलुओं की जाँच करके, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम इस समय का उपयोग आत्म-चिंतन के लिए करें और सोचें कि क्या परमेश्वर हमें भी फटकार रहा है।

(1) परमेश्वर हमें फटकारते हुए कहता है, "चुप मत रहो!"

आज के वचन, भजन संहिता 58:1 को देखें: "क्या तुम शासक सचमुच न्याय की बात करते हो? क्या तुम सही न्याय करते हो?" हालाँकि यह कहावत सच है कि "बोलना चाँदी है; चुप रहना सोना है," लेकिन कुछ तरह की चुप्पी कायरतापूर्ण—या यहाँ तक कि दुष्टतापूर्ण—भी होती है। "दुष्टतापूर्ण चुप्पी" क्या है? इसका मतलब है सही शब्द न बोलना जो बोले जाने चाहिए (पार्क युन-सुन)। अन्याय होते हुए देखकर चुप रहना, या सच्चाई के लिए आवाज़ उठाने के समय चुप रहना, दुष्टतापूर्ण चुप्पी है। यशायाह 56:10 में, भविष्यद्वक्ता यशायाह चरवाहों—यानी इस्राएल के रखवालों—को "गूंगे कुत्ते" बताते हैं जो भौंक नहीं सकते। कुत्ते का काम है कि जब "जंगली जानवर" (पद 9) पास आएं तो वह भौंके। लेकिन, इस्राएल के चरवाहे ऐसा करने में नाकाम रहे; उन्होंने रखवाले की भूमिका ठीक से नहीं निभाई। नतीजा यह हुआ कि परमेश्वर की भेड़ों को भेड़ियों ने खा लिया और वे खेतों और पहाड़ों पर भटकती रहीं (यहेजकेल 34)। इसकी असली वजह क्या थी? लालच। लालच में आकर, इस्राएल के चरवाहों ने सिर्फ़ अपना फ़ायदा देखा (यशायाह 56:11)। अपना पेट भरने के चक्कर में, वे भेड़ों को परमेश्वर के वचन से ठीक से नहीं खिला पाए। रखवाले का फ़र्ज़ न निभाकर और सिर्फ़ अपना फ़ायदा चाहकर, ये चरवाहे "गूंगे कुत्ते" बन गए। ऐसी खामोशी एक "बुरी खामोशी" है।

जब मैं परमेश्वर की इस फटकार को खुद पर लागू करता हूँ, तो यशायाह 56:10 में बताए गए "गूंगे कुत्ते" के वर्णन से मुझे अपनी गलती का एहसास होता है। मुझे सेमिनरी का एक समय याद है जब एक जाने-माने सीनियर पास्टर (जो एक प्रवासी चर्च से थे) आए और हमसे कहा कि हम "सांत्वना देने वाले उपदेश" दें। मुझे याद है कि दूसरे सीनियर पास्टरों से भी ऐसी ही सलाह मिली थी। आजकल, "चंगाई (हीलिंग) के उपदेश" का चलन है; साथी पास्टरों को लगातार "चंगाई" पर ज़ोर देते हुए देखकर यह बात और पक्की हो जाती है। फिर भी, मैं खुद से सवाल करता हूँ कि क्या मैं—और दूसरे प्रचारक—सच में और ईमानदारी से उस संदेश का प्रचार कर रहे हैं जो परमेश्वर ने हमें अपने प्रवक्ता के तौर पर दिया है? उदाहरण के लिए, सोचिए कि क्या हम प्रचारक—बाइबल में उन आयतों के होने के बावजूद जो परमेश्वर के लोगों को उनके पापों से बरी करती हैं—असल में ऐसे उपदेश देते हैं जो हमारे अपने पापों पर भी वही माफ़ी लागू करते हैं; जैसा कि हम सब जानते हैं, आजकल ऐसे उपदेश मंच से बहुत कम सुनने को मिलते हैं। अगर ऐसा है, तो हम पास्टर क्या हैं, अगर भविष्यद्वक्ता यशायाह द्वारा बताए गए "गूंगे कुत्ते" नहीं? भेड़ों की रखवाली करने वाले कुत्ते को भेड़ियों के आने पर भौंकना चाहिए; अगर वह सिर्फ़ अपना पेट भरता है और अपना फ़र्ज़ नहीं निभाता, तो वह एक

गूंगा, बेकार कुत्ता बन जाता है। इससे भी बुरा, वह ऐसा कुत्ता बन जाता है जो परमेश्वर की भेड़ों को बर्बाद कर देता है। इसलिए, हमें बुरी खामोशी नहीं बनाए रखनी चाहिए। हमें ईमानदारी से न्याय करना चाहिए और न्याय की बात करनी चाहिए (भजन संहिता 58:1)। (2) परमेश्वर हमें डांटते हुए कहते हैं, "अपने दिलों में बुराई मत करो!"

आज के वचन, भजन संहिता 58:2 को देखें: "नहीं, तुम अपने दिल में बुराई करते हो; तुम देश में अपने हाथों से हिंसा करते हो।" हालाँकि उनकी बातें मक्खन से भी ज़्यादा चिकनी और तेल से भी ज़्यादा नरम थीं (55:21)—वे निष्पक्षता से शासन करने का दावा करते थे—फिर भी इज़राइल के बुरे अधिकारियों और नेताओं ने अन्यायपूर्ण काम किए (पार्क युन-सन)। संक्षेप में, वे पाखंडी थे। यीशु ने मत्ती 7:5 में इसके बारे में कहा: "हे पाखंडी! पहले अपनी आँख से लट्ठा निकाल, और तब तू अपने भाई की आँख से तिनका निकालने के लिए साफ़ देख पाएगा।" एक पाखंडी को अपने धोखेबाज़ दिल का सामना करना होगा—वह दिल जो बुराई करता है। तभी वह अपनी आँख से "लट्ठा" निकाल सकता है।

हमें हिम्मत की ज़रूरत है। हमें अपनी ही आँख के "लट्ठे" (बड़ी लकड़ी के टुकड़े) का सामना करने की हिम्मत चाहिए। हमें परमेश्वर के वचन के नज़रिए से अपने दिल की गहराई में झाँकना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर हमारे मन की सच्चाई चाहता है (भजन संहिता 51:6)। हमें ऐसे विश्वासी कभी नहीं बनना चाहिए जिनके शब्द और दिल अलग-अलग हों। हमें धार्मिक रीति-रिवाजों की इतनी आदत नहीं डालनी चाहिए कि हम अपनी असली पहचान भूल जाएँ और खुद को धोखा देते हुए बस विश्वास का दिखावा करने लगें। हमें एक धर्मी परमेश्वर के वचन को अपने दिल की जाँच करने देनी चाहिए और पछतावे के साथ, उन पापों के लिए उससे माफ़ी माँगनी चाहिए जो इस तरह सामने आते हैं। इसलिए, दाऊद की तरह, हमें परमेश्वर के मन के अनुसार चलने वाले लोग बनना चाहिए। हमें कभी भी पाखंडी नहीं बनना चाहिए। परमेश्वर के सामने, जो दिल को देखता है, हमें सच्चे विश्वास, सही दिल और नेक चाल-चलन वाला जीवन जीना चाहिए।

(3) परमेश्वर हमें डाँटते हुए कहते हैं, "झूठ मत बोलो!"

आज का वचन देखें, भजन संहिता 58:3: "दुष्ट लोग जन्म से ही दूर हो जाते हैं; वे जन्म से ही भटक जाते हैं और झूठ बोलते हैं।" दुष्ट लोग बचपन से ही बुरे काम जमा करते हैं और आखिर में पछतावा नहीं करते, जिससे उनका पाप बढ़ता जाता है (पार्क युन-सन)। इन बुरे कामों में, झूठ बोलना दुष्टों की एक खास तौर पर पाप भरी आदत है। नतीजतन, उन्हें सही रास्ते से भटकने की आदत हो जाती है। हमें झूठ नहीं बोलना चाहिए। और न ही हमें झूठ बोलकर सही रास्ते से भटकना चाहिए।

(4) परमेश्वर हमें डाँटते हुए कहते हैं, "आवाज़ सुनो!" आज का अंश देखें, भजन संहिता 58:5: "...उस बहरे नाग की तरह जो सपेरे की धुन पर ध्यान नहीं देता, चाहे सपेरा कितना भी माहिर क्यों न हो।" साँप के ज़हर की तरह—जैसे वाइपर (ज़हरीला साँप) इंसानी ज़िंदगी को नुकसान पहुँचाता है—दुष्ट लोग हमारी ज़िंदगी को बर्बाद करना चाहते हैं। दाऊद इन दुष्ट लोगों को "बहरे नाग" कहता है। अरब या भारत जैसी जगहों पर, सपेरे साँपों को लुभाने के लिए बाँसुरी और ढोल जैसे वाद्ययंत्रों का इस्तेमाल करते हैं; साँप इन आवाज़ों पर प्रतिक्रिया देते हैं और उसी के अनुसार हिलते-डुलते हैं। हालाँकि, दाऊद कहता है कि इस अंश में बताए गए दुष्ट लोग वाइपर जैसे होते हैं जो ऐसी आवाज़ें सुनने से इनकार कर देते हैं। संक्षेप में, दुष्ट लोग "बहरे वाइपर" जैसे होते हैं (वचन 4)। जिनके कान हैं, उन्हें प्रभु की आवाज़ सुननी चाहिए। हमें प्रभु की आवाज़ सुनने के लिए अपने कान लगाने चाहिए। हमें कभी भी उनके प्रति अपने कान बंद नहीं करने चाहिए और अपनी अलग राह नहीं पकड़नी चाहिए।

जब मैं दुष्टों को दी गई परमेश्वर की फटकार पर सोचता हूँ, तो मैं खुद से पूछता हूँ: क्या मैं एक "गूँगे कुत्ते" जैसा हूँ? क्या मेरे दिल में बुराई है? क्या मैं झूठ बोलता हूँ? क्या मैं सचमुच परमेश्वर की आवाज़ सुन रहा हूँ? मैं सोचता हूँ कि क्या मैं एक "गूँगे कुत्ते" या "बहरे साँप" की तरह, परमेश्वर के वचन को हिम्मत से बताने में नाकाम हो रहा हूँ क्योंकि मैं उनकी आवाज़ नहीं सुन पा रहा हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि मैं एक पहरेदार की भूमिका निभा सकूँ—ऐसा व्यक्ति जो दिल में सच्चाई की खोज करता है, सच्चाई का वचन सुनता है और उसे हिम्मत के साथ बताता है।

न्याय करने वाले परमेश्वर (2)

[भजन संहिता 58]

पिछले रविवार, हमारे चर्च की अंग्रेज़ी सर्विस के दौरान एक नौजवान की गवाही—जो उसने गाने के ज़रिए दी थी—सुनते हुए मुझे एक बार फिर यकीन हो गया कि परमेश्वर उस भाई से कितना गहरा प्यार करते हैं। जब हमने वही गाना गाया जिसे उसने पिछली शुक्रवार की शाम को रोते हुए गाया था, तो मैंने यह सीखा कि चाहे हमारी ज़िंदगी में कितना भी अंधेरा क्यों न छा जाए, हमें परमेश्वर की पवित्रता की स्तुति करनी चाहिए। इसी माहौल में, बुधवार की सुबह की प्रार्थना सभा के लिए तय भजन संहिता 21 से 23 तक के हिस्सों को पढ़ते समय, मेरा ध्यान भजन संहिता 22:1–3 पर गया और मैं उन आयतों पर सोचने लगा। हालाँकि भजनकार दाऊद ने अपनी तकलीफ़ के बीच दिन-रात परमेश्वर को पुकारा, लेकिन उन्हें कोई जवाब नहीं मिला—उन्हें लगा कि उन्हें छोड़ दिया गया है और परमेश्वर दूर हैं और मदद नहीं कर रहे हैं—फिर भी उन्होंने माना, "तू पवित्र है, तू इस्राएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है" (22:3)। जब मैंने आज सुबह की प्रार्थना सभा में इस आयत पर फिर से मनन किया, तो मुझे उस प्यारे भाई की याद आई। मुझे याद आया कि कैसे उसने, दाऊद की तरह, पवित्र परमेश्वर की स्तुति की थी। पवित्र परमेश्वर की स्तुति करना उनकी ओर से एक अद्‌भुत आशीष है; इसलिए, परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति का अनुभव करना सचमुच एक शानदार आशीष है।

वह पवित्र परमेश्वर न्याय के परमेश्वर भी हैं। वह ऐसे परमेश्वर हैं जो सही न्याय करते हैं। इसलिए, जब हम ऐसी स्थितियों में होते हैं जहाँ हमारे साथ अन्याय हुआ हो—ठीक दाऊद की तरह—तो हमें "न्याय करने वाले परमेश्वर" (भजन संहिता 58:11) की ओर देखना चाहिए। दूसरे शब्दों में, अन्याय का सामना करते समय, हमें धर्मी परमेश्वर के न्याय पर भरोसा करना चाहिए। न्याय करने वाले परमेश्वर ही दुष्टों को डांटते हैं (आयत 1–5)। यह धर्मी परमेश्वर, जो दुष्टों को डांटते हैं, हमें भी डांटते हैं और कहते हैं कि हमें चुप नहीं रहना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, न्याय करने वाले परमेश्वर हमें पापपूर्ण चुप्पी बनाए रखने के लिए डांटते हैं (आयत 1)। जो पास्टर अन्याय के सामने चुप रहता है, वह "गूंगा कुत्ता" है (यशायाह 56:10)। क्योंकि ऐसा व्यक्ति तब नहीं भौंकता जब उसे भौंकना चाहिए—जिससे परमेश्वर की भेड़ें जंगली जानवरों का शिकार बन जाती हैं—इसलिए परमेश्वर उन लोगों को डांटते हैं जो ऐसी पापपूर्ण चुप्पी बनाए रखते हैं। इसके अलावा, यह न्याय करने वाला और नेक परमेश्वर हमारे दिलों में बुराई रखने के लिए हमें डांटता है (पद 2)। वह हमें पाखंडी का जीवन जीने से रोकता है, जिनके शब्द और काम मेल नहीं खाते। न्याय करने वाला परमेश्वर हमें झूठ बोलने के लिए डांटता है। वह हमें धोखेबाज़ी में पड़कर सही रास्ते से भटकने के लिए डांटता है। साथ ही, न्याय करने वाला परमेश्वर हमें अपनी आवाज़ न सुनने के लिए डांटता है। वह हमें इसलिए डांटता है क्योंकि बहरे सांप की तरह, जब वह बोलता है तो हम सुनने से इनकार करते हैं (पद 5)। आज, "न्याय करने वाला परमेश्वर (2)" शीर्षक के तहत, मैं प्रार्थना करता हूं कि यह संदेश हमारे लिए प्रभु की आवाज़ सुनने का एक मौका बने, जब हम न्याय करने वाले परमेश्वर के दो और पहलुओं पर विचार करें।

दूसरी बात, "न्याय करने वाला परमेश्वर" हमें प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करता है (पद 6–9)।

भजनकार दाऊद ने दुष्टों के सताए जाने के बीच परमेश्वर से पुकार की। उसने न्याय करने वाले परमेश्वर से दुष्टों के साथ निपटने की विनती की। हम दाऊद की प्रार्थना की बातों पर तीन मुख्य तरीकों से विचार कर सकते हैं:

(1) दाऊद ने परमेश्वर से विनती की कि वह उन साधनों को नष्ट कर दे जिनका इस्तेमाल दुष्ट बुराई करने के लिए करते थे।

आज के वचन, भजन संहिता 58:6 को देखें: "हे परमेश्वर, उनके मुंह के दांत तोड़ दे; हे प्रभु, जवान शेरों के नुकीले दांत उखाड़ फेंक।" दाऊद ने अपने सताने वालों—दुष्टों—को अमानवीय और क्रूर बताया और उनकी तुलना शेरों से की। जैसे शेर अपने शिकार को पकड़ने और खाने के लिए अपने मुंह का इस्तेमाल करता है, वैसे ही ये लोग बुरे तरीकों से नेक लोगों पर हमला करने और उन्हें गिराने की कोशिश करते थे; इसलिए,

दाऊद ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उन साधनों को ही नष्ट कर दे जिनका इस्तेमाल वे अपनी बुराई को अंजाम देने के लिए करते थे।

(2) दाऊद ने परमेश्वर से विनती की कि दुष्ट गायब हो जाएं और उनकी योजनाएं नाकाम हो जाएं।

आज के वचन, भजन संहिता 58:7 और 9 को देखें: "वे बहते पानी की तरह गायब हो जाएं; वे टूटे हुए तीरों की तरह हो जाएं" (पद 7); "इससे पहले कि तुम्हारी कड़ाही में कंटीली झाड़ियों की आंच लगे, चाहे वे हरी हों या जल रही हों, वह उन्हें बवंडर में उड़ा ले जाएगा" (पद 9)। आयत 7 का मतलब है कि बुरे लोग ठीक वैसे ही गायब हो जाएँगे जैसे पहाड़ी ढलान पर बहने वाली कोई धारा, जो बारिश के बाद कुछ देर बहती है और फिर सूख जाती है (पार्क युन-सन)। तीर टूटने वाली बात का मतलब है कि जैसे निशाने पर साधा गया तीर निशाने तक पहुँचने से पहले ही टूट जाता है, वैसे ही बुरे लोगों की बुरी चालें अपने मकसद में नाकाम हो जाएँगी (पार्क युन-सन)। आयत 9 भी यही संदेश देती है। जैसे रेगिस्तान में कोई भूखा यात्री काँटेदार झाड़ियों की आग पर खाना पका रहा हो और अचानक तेज़ बवंडर आकर ईंधन को उड़ा ले जाए, वैसे ही बुरे लोगों की चालें नाकाम हो जाती हैं और बेकार हो जाती हैं (पार्क युन-सन)। बुरे लोगों की योजनाओं को नाकाम करने वाले परमेश्वर का एक उदाहरण दाऊद की कहानी में मिलता है। जब दाऊद अबशालोम से भाग रहा था, तो परमेश्वर ने दाऊद के दोस्त हूशै आर्की (2 शमूएल 16:16) का इस्तेमाल करके अहीतोपेल की सही सलाह को नाकाम कर दिया (17:14)। बाइबल में इसका कारण बताया गया है: "क्योंकि यहोवा ने अहीतोपेल की अच्छी सलाह को नाकाम करने का फैसला किया था, ताकि यहोवा अबशालोम पर मुसीबत ला सके" (आयत 14)।
(3) दाऊद ने परमेश्वर से प्रार्थना की कि बुरे लोगों को घोंघे (snail) जैसा बना दे।

आज के वचन, भजन संहिता 58:8 को देखें: "वे ऐसे घोंघे की तरह हों जो चलते-चलते पिघल जाता है, या मरे हुए पैदा होने वाले बच्चे की तरह जो कभी सूरज नहीं देखता।" दाऊद ने उनके घोंघे जैसा बनने की प्रार्थना क्यों की? इसलिए क्योंकि घोंघा जब भी ज़मीन पर आगे बढ़ता है, तो वह अपने ही शरीर को घिसता और खत्म करता जाता है। दाऊद परमेश्वर से यह सुनिश्चित करने के लिए कह रहा था कि बुरे लोग जब भी अपने बुरे काम करें, तो वे खुद ही अपनी बर्बादी का कारण बनें (पार्क युन-सन)।

आखिर में, तीसरा बिंदु यह है कि "न्याय करने वाले परमेश्वर" हमें आशीष देते हैं (आयतें 10–11)।

हम परमेश्वर की आशीषों पर दो तरह से विचार कर सकते हैं:

(1) पहली आशीष खुशी है। आज के वचन, भजन संहिता 58:10 को देखें: "धर्मी लोग बदला होते देखकर खुश होंगे; वे बुरे लोगों के खून में अपने पैर धोएँगे।" हमारा परमेश्वर न्याय का परमेश्वर है। वह सही न्याय करने वाला परमेश्वर है। वह बुरे लोगों का विनाश करता है। तो फिर, दाऊद—जो एक नेक इंसान थे—खुश क्यों हुए? ऐसा इसलिए बिल्कुल नहीं था कि उन्हें बुरे लोगों के विनाश में मज़ा आता था। उन्हें खुशी इसलिए हुई क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की महिमा देखी; उन्हें खुशी इसलिए हुई क्योंकि उन्होंने परमेश्वर का न्याय और उनका सही फ़ैसला देखा।

(2) दूसरी बात, न्याय करने वाले परमेश्वर की ओर से हमें जो आशीष मिलती है, वह है भरोसा।

आज के वचन, भजन संहिता 58:11 को देखिए: "तब लोग कहेंगे, 'सचमुच नेक लोगों को इनाम मिलता है; सचमुच पृथ्वी पर न्याय करने वाला एक परमेश्वर है।'" परमेश्वर हमें यह भरोसा दिलाते हैं कि वही न्याय करने वाले हैं—न सिर्फ़ हमें, बल्कि दूसरों को भी।

जब हम परमेश्वर का न्याय करने की कोशिश करने के बजाय उन्हें अपना न्याय करने देते हैं, तो हमारे पाप सामने आ जाते हैं और हमें उनकी डांट का सामना करना पड़ता है। उस प्रक्रिया में, हमें परमेश्वर से विनती करनी चाहिए कि वे हमारे पापों को मिटा दें। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब इस दौरान परमेश्वर से मिलने वाली आशीष का अनुभव कर सकें।

आइए, हम प्रभु की शक्ति का गुणगान करें।

[भजन संहिता 59]

आज मैंने अय्यूब की कहानी पर मनन करते हुए समय बिताया—एक ऐसी कहानी जिसे मैं अच्छी तरह जानता था। जब मैंने इस पर नए सिरे से विचार किया, तो मैंने सोचा कि अय्यूब को कैसा महसूस हुआ होगा जब शैतान और उसकी ताकतों ने परमेश्वर की अनुमति से उस पर हमला किया। उसने अपनी सारी संपत्ति और अपने सभी बच्चों को खो दिया; हालाँकि शैतान उसकी जान नहीं ले सका, फिर भी अय्यूब ने असहनीय शारीरिक पीड़ा सही। यह कल्पना से परे का दुख था, फिर भी मैंने पाया कि मैं अय्यूब के दोस्तों की भावनाओं को समझ पा रहा था। अय्यूब के दोस्तों के बारे में सोचते हुए—जिन्होंने उसे सांत्वना देने की कोशिश तो की, लेकिन अंततः वे "बेकार सांत्वना देने वाले" (अय्यूब 16:2) साबित हुए और उन्होंने उसे और अधिक दुख पहुँचाया—मैं सोचने लगा कि कितनी बार मैंने भी अच्छे इरादों के साथ दुख झेल रहे साथी विश्वासियों को सांत्वना देने की कोशिश करते हुए "परेशानी बढ़ाने वाले सांत्वना देने वाले" की तरह व्यवहार किया है। मैंने इस बात पर भी विचार किया कि अय्यूब खुद किन हालात से गुज़र रहा होगा। उसके दोस्तों को उसकी परीक्षा की कोई समझ नहीं थी; सांत्वना देने के बजाय, उन्होंने उसके दुख को और बढ़ा दिया। ऐसे दुख के बीच, अय्यूब भी परमेश्वर की योजना के तहत हो रही घटनाओं को पूरी तरह से समझ नहीं पा रहा था; वह भी अनजान रहते हुए अत्यधिक पीड़ा सह रहा था। मैं खुद से पूछता हूँ: अगर मैं अय्यूब का दोस्त होता तो उसके लिए क्या कर सकता था? जब मैं उन भाई-बहनों को देखता हूँ जो शैतान की बुरी ताकतों के कारण दुख झेल रहे हैं—या जानलेवा खतरे का सामना कर रहे हैं—तो मैं क्या कर सकता हूँ? मुझे एहसास होता है कि मैं केवल परमेश्वर की ओर देख सकता हूँ, उनसे दया की याचना कर सकता हूँ और उनसे उन्हें बचाने और छुड़ाने की विनती कर सकता हूँ। खासकर जब मैं अत्यधिक दुख के सामने इंसानी बेबसी की कठोर सच्चाई को देखता हूँ, तो मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे पूरी तरह से परमेश्वर की शक्ति पर निर्भर रहना चाहिए।

इस संदर्भ में, मुझे उन चार तरह की शक्तियों की याद आई जिनके लिए हमारा चर्च साल की शुरुआत से ही 'प्रेरितों के काम' (Book of Acts) की किताब के आधार पर प्रार्थना कर रहा है: प्रार्थना की शक्ति, पवित्र आत्मा की शक्ति, वचन की शक्ति और प्रेम की शक्ति। जब मैं इन चारों के लिए प्रार्थना करता हूँ, तो मैं पाता हूँ कि मैं उन्हें एक ही अवधारणा में जोड़ रहा हूँ: "पवित्र आत्मा की शक्ति।" ...आत्मा)। तो, पवित्र आत्मा की शक्ति क्या है? हम इसे तीन तरह से देख सकते हैं: पहला, पवित्र आत्मा की शक्ति का *सिद्धांत* परमेश्वर के वचन की शक्ति है; दूसरा, पवित्र आत्मा की शक्ति का *तरीका* यीशु के प्रेम की शक्ति है; और आखिर में, पवित्र आत्मा की *असली शक्ति* प्रार्थना की शक्ति है।

भजन संहिता 59:16–17 के आज के हिस्से में, भजनकार दाऊद यह तय करता है, "मैं तेरी शक्ति के बारे में गाऊंगा..." और "हे मेरी ताकत, मैं तेरी स्तुति के गीत गाऊंगा..." आखिर प्रभु की वह कौन सी शक्ति है जिसने दाऊद को उसके बारे में गाने का संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया? आज, "आइए प्रभु की शक्ति के बारे में गाएं" शीर्षक के तहत, मैं चार बिंदुओं के माध्यम से इस पर विचार करना चाहता हूं। मेरी प्रार्थना है कि प्रभु की इस शक्ति का अपने जीवन में अनुभव करके, हम भी—दाऊद की तरह—प्रभु की शक्ति की स्तुति कर सकें, चाहे हमारे हालात कितने भी मुश्किल या दर्दनाक क्यों न हों।

पहला, प्रभु की शक्ति सुरक्षा की शक्ति है।

भजन संहिता 59:9, आयत 16 का आखिरी हिस्सा और आयत 17 देखें: "परमेश्वर मेरा गढ़ है; मैं तेरी शक्ति के कारण तेरी ओर देखूंगा" (आयत 9), "..." "तू मेरी मुसीबत के दिन मेरा गढ़ और मेरी शरणस्थान है" (आयत 16b), "तू मेरी ताकत है, और मैं तेरी स्तुति के गीत गाऊंगा; क्योंकि परमेश्वर मेरा गढ़ है और वह परमेश्वर है जो मुझ पर दया करता है" (आयत 17)। हाल ही में, मैं यह महसूस कर रहा हूं—भले ही थोड़ी मात्रा में—कि हम इंसान बहुत ही कमज़ोर प्राणी हैं। हम ऐसे बर्तनों की तरह हैं जो आसानी से टूट जाते हैं; परमेश्वर की कृपा के बिना, हम एक दिन या एक पल भी नहीं जी सकते। परमेश्वर की सुरक्षा के बिना, हम बुराई की ओर झुक जाते हैं; हम आसानी से लड़खड़ाते हैं, गिरते हैं और हिम्मत हार जाते हैं, और हम निश्चित रूप से जल्दी ही परमेश्वर—और उसके वचन—को छोड़ देते हैं और प्रभु के साथ विश्वासघात करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि परमेश्वर हमारे दिलों की रक्षा नहीं करता है, तो हम आध्यात्मिक युद्ध में शैतान की

ताकतों से आसानी से हार जाते हैं और आखिर में अविश्वास से पैदा हुई आज्ञा न मानने का पाप कर बैठते हैं। खासकर मुश्किल या डरावने हालात में, अगर परमेश्वर हमारे विचारों, भावनाओं और इच्छाओं की रक्षा न करे, तो हम हालात के काबू में आ जाते हैं और डर में घिर जाते हैं—हम सचमुच कमज़ोर और आसानी से टूट जाने वाले बर्तन जैसे हो जाते हैं। आज के भजन 59 में दाऊद किस हालात का सामना कर रहा था? राजा शाऊल के आदमी उसका पीछा कर रहे थे। ये आदमी दाऊद के दुश्मन थे—बुरे लोग जिन्हें खून-खराबे में मज़ा आता था (पद 1-2)। वे दाऊद की तरफ़ झपटे (पद 4) और कुत्तों की तरह चिल्लाते हुए शहर में घूमते रहे (पद 6, 14)। दाऊद ने दो बार अपने पीछा करने वालों को कुत्तों जैसा बताया जो चिल्लाते थे और शहर में घूमते थे। ज़रा सोचिए: खून के प्यासे कुत्तों की तरह, जो हमारे चारों ओर घूमते हुए चिल्ला रहे हों... अगर हम भी दाऊद की तरह पीछा किए जा रहे होते, तो हम क्या करते? क्या हम भाग नहीं जाते? क्या हम उन भूखे कुत्तों से बचने और अपनी जान बचाने के लिए पूरी ताकत से नहीं भागते? दाऊद शाऊल के आदमियों से भागा, जो कुत्तों की तरह उसका पीछा कर रहे थे, और परमेश्वर के पास शरण लेने के लिए भागा, जो उसका मज़बूत गढ़ था।

डॉ. पार्क युन-सन ने इसे इस तरह कहा: "प्रभु की ओर देखना ही जीने का एकमात्र तरीका है। अगर हम अपने आस-पास देखें, तो हम इस दुनिया के लालच और खतरों से भटक जाते हैं और बेचैन हो जाते हैं; अगर हम अपने अंदर देखें, तो हमें सिर्फ़ निराशा ही मिलती है। लेकिन जब हम प्रभु की ओर देखते हैं, तो हमें खुशी और आनंद मिलता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह एक 'मज़बूत गढ़'—हमारी शरण—की तरह है और वह उन्हें उद्धार देता है जो उसकी ओर देखते हैं।" मेरा मानना है कि यह सचमुच एक सही नज़रिया है। जब हम अपने आस-पास की दुनिया को देखते हैं, तो हम उलझन में पड़ सकते हैं; और जब हम अपने अंदर देखते हैं, तो हमें निराशा या आध्यात्मिक ठहराव महसूस हो सकता है। हालाँकि, उद्धार का भरोसा रखने वाले और अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को पुकारने वाले लोगों के तौर पर, हम प्रभु—अपने मज़बूत गढ़—में शरण लेते हैं और उसकी सुरक्षा की चाहत रखते हैं। नतीजतन, हम प्रभु की सुरक्षा की शक्ति का अनुभव करेंगे। उस पल, हम परमेश्वर के लिए भजन 432 गा सकेंगे: "जब तुम निराश हो, तो प्रभु तुम्हें संभालेगा; जब तुम खतरे का सामना करो, तो प्रभु तुम्हें संभालेगा" (पद 2); "प्रभु आपकी रक्षा करेंगे—कभी भी, कहीं भी, प्रभु आपकी रक्षा करेंगे; वे हमेशा आप पर नज़र रखेंगे" (कोरस)।

दूसरी बात, प्रभु की शक्ति प्रेम की शक्ति है।

भजन संहिता 59:10 को देखिए: "मेरा परमेश्वर अपने अटूट प्रेम के साथ मुझसे मिलेगा; वह मुझे मेरे शत्रुओं पर विजय देखने देगा।" हम वे लोग हैं जो परमेश्वर के प्रेम की शक्ति से जीते हैं। विश्वासी होने के नाते, हम वे लोग हैं जो—खासकर मुश्किल और कठिन समय में—परमेश्वर की दया और प्रेम के सहारे डटे रहते हैं और अंततः अपनी परिस्थितियों पर विजय पाते हैं। जब मैं परमेश्वर के प्रेम पर विचार करता हूँ, तो मुझे भविष्यद्वक्ता योना की याद आती है। जिस तरह योना ने परमेश्वर की आज्ञा न मानकर खुद को एक मछली के पेट में और समुद्र की गहराइयों में डूबते हुए पाया—फिर भी उन गहराइयों से परमेश्वर के पवित्र मंदिर की ओर देखा—ठीक वैसे ही हम विश्वासियों को भी अपने गहरे दर्द और पीड़ा के बीच परमेश्वर के प्रेम और दया का गहरा अनुभव करने के लिए बुलाया गया है। वे विश्वासी जो गहरी पीड़ा के बीच भी परमेश्वर के प्रेम की गहराई को महसूस कर सकते हैं... एक अमेरिकी गॉस्पेल गीत है जिसे मैंने अक्सर गाया है, जिसका नाम है "पावर ऑफ़ लव" (कोरियाई भाषा में इसे "कमिंग टू द लॉर्ड" के नाम से जाना जाता है)। इसके पहले पद के बोल कुछ इस तरह हैं: "प्रभु, मैं तेरे पास आता हूँ; मेरे दिल को बदल दे, नया कर दे, उस अनुग्रह से भर दे जो मुझे तुझमें मिला है। और प्रभु, मैं जान गया हूँ कि मुझमें जो कमज़ोरियाँ हैं, वे तेरे प्रेम की शक्ति से दूर हो जाएँगी।" इन बोलों पर विचार करते हुए और यह सोचते हुए कि मैं अक्सर परमेश्वर के महान प्रेम का अनुभव कब करता हूँ, मैं मानता हूँ कि यह ठीक तब होता है जब मुझे अपनी कमज़ोरी का एहसास होता है। मैं स्वीकार करता हूँ कि जब मैं कमज़ोर होता हूँ, तभी मैं मज़बूत होता हूँ। आज के वचन, भजन संहिता 59:10 में, दाऊद विश्वास व्यक्त करता है कि परमेश्वर अपने अटूट प्रेम के साथ उससे मिलेंगे। यहाँ "मिलने" शब्द का अर्थ है "सही समय पर मेरे पास आना" (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, जैसे दाऊद ने मुसीबत के समय में परमेश्वर—अपने उद्धारकर्ता और रक्षा करने वाले गढ़—की शरण ली थी, उसे पूरा भरोसा था कि प्रभु सही समय पर उसकी मदद के लिए आएँगे। इस भरोसे के साथ, दाऊद ने सभी मुश्किलों और परेशानियों का सामना किया, जैसे कि मौत की परछाई वाली घाटी से गुज़रना हो। मेरा मानना है कि यही "संतों के दृढ़ बने रहने" का असली सार है। फिर भी, यह दृढ़ता भी परमेश्वर के अटूट प्रेम से ही आती है। कारण यह है कि परमेश्वर का धैर्य और हमारे पास आने की उनकी दिली चाहत, मुश्किलों में उनका इंतज़ार करते हुए हमारे धैर्य से कहीं ज़्यादा और गहरी है। जो लोग परमेश्वर के इस प्रेम को जानते हैं, वे प्रभु की मदद का इंतज़ार करते हुए दुख और मुश्किलों को सहने के लिए इसी प्रेम की शक्ति पर भरोसा करते हैं। इस हिस्से की आयत

15 और 16 के बीच एक दिलचस्प फ़र्क दिखाई देता है। जहाँ दाऊद के दुश्मन खाने की तलाश में भटकते रहते हैं—और अगर उन्हें खाना नहीं मिलता तो वे बेचैनी में रात बिताते हैं (आयत 15)—वहीं दाऊद सुबह प्रभु की शक्ति के गीत गाने और उनके अटूट प्रेम का खुशी-खुशी बखान करने का फ़ैसला करता है (आयत 16)। मेरा मानना है कि हम इससे दो सबक सीख सकते हैं: (1) पहला सबक यह है कि हालाँकि बुरे लोग शारीरिक भोजन की तलाश में भटकते हैं, लेकिन आखिरकार... बात यह है कि जहाँ बुरे लोगों को सच्ची संतुष्टि नहीं मिलती, वहीं नेक लोग प्रभु की शक्ति से संतोष पाते हैं। (2) दूसरा सबक यह है कि, जहाँ बुरे लोग पूरी रात जागते रहते हैं—उन्हें कोई तृप्ति नहीं मिलती—वहीं नेक लोग सताए जाने और मौत के डर के बीच भी चैन की नींद सोते हैं, और फिर सुबह प्रभु की दयालुता की ज़ोर-शोर से तारीफ़ करते हैं। ऐसा क्यों है? इसलिए क्योंकि प्रभु की दयालुता की वजह से, वे सो पाए और उनके साथ मिलकर एक नए दिन और एक नई सुबह का स्वागत कर पाए।

जब हम परमेश्वर के प्रेम की शक्ति का अनुभव करते हैं, तो हम अमेरिकी गॉस्पेल गीत "आई कम टू द लॉर्ड" (I Come to the Lord) के बाकी पद और कोरस गा सकेंगे: "मेरी आँखें खोल ताकि मैं तुझे देख सकूँ और तेरे प्रेम को जान सकूँ; तेरे प्रेम से मैं नया हो जाऊँगा ताकि हर दिन अपने जीवन में तेरी इच्छा पूरी कर सकूँ" (पद 2); "प्रेम मुझे थामे रखता है और तेरी ओर ले जाता है; जैसे बाज पंख फैलाकर उड़ता है, वैसे ही मैं उठूँगा और तेरे प्रेम में तेरे साथ चलूँगा" (कोरस)।

तीसरा, प्रभु की शक्ति न्याय की शक्ति है।

भजन संहिता 59:11 पर विचार करें: "उन्हें मार न डाल, कहीं ऐसा न हो कि मेरे लोग भूल जाएँ; अपनी शक्ति से उन्हें तितर-बितर कर दे और उन्हें नीचे गिरा दे, हे प्रभु, हमारी ढाल।" दाऊद ने परमेश्वर से विनती की कि वह उसके दुश्मनों को तुरंत न मारे बल्कि उन्हें उनके पापों का फल भुगतने दे, ताकि लोग यह याद रखें कि पापियों को निश्चित रूप से ईश्वरीय दंड का सामना करना पड़ता है (पार्क युन-सन)। फिर भी, ऐसा लगता है कि लोग किसी तरह यह भूल जाते हैं कि दुष्टों को निश्चित रूप से ईश्वरीय न्याय का सामना करना पड़ेगा। इसका क्या कारण है? मुझे इसका उत्तर भजन संहिता 50:21 में मिला: "जब तूने ये काम किए और मैं चुप रहा, तो तूने सोचा कि मैं बिल्कुल तेरे जैसा हूँ..." क्योंकि पाप करने के बाद भी परमेश्वर चुप रहते हैं और

उनके साथ कुछ नहीं होता, इसलिए दुष्ट बिना किसी डर के और भी बड़े पाप करते रहते हैं। दूसरे शब्दों में, दुष्टों को यह एहसास नहीं होता कि परमेश्वर न्याय के परमेश्वर हैं। वे गलतफहमी में रहते हैं कि वह भी उन्हीं की तरह अधर्म करने वाले परमेश्वर हैं। हालाँकि, परमेश्वर न्याय के परमेश्वर हैं। वह ऐसे परमेश्वर हैं जिनके पास हमारे दुश्मनों को तितर-बितर करने और उन्हें नीचा दिखाने की शक्ति है। इन्हीं परमेश्वर से दाऊद ने विनती की, "उठ और जातियों को दंड दे; किसी भी धोखेबाज़, दुष्ट व्यक्ति पर दया न कर" (59:5)। सचमुच, हमारे धर्मी परमेश्वर ने दाऊद को उसके दुश्मनों को उनके किए का उचित दंड मिलते हुए देखने का अवसर दिया (पद 10)। उसने परमेश्वर से यह भी प्रार्थना की: "उन्हें अपने क्रोध में भस्म कर दे, उन्हें तब तक भस्म कर जब तक वे मिट न जाएँ; पृथ्वी के कोने-कोने तक यह पता चल जाए कि याकूब पर परमेश्वर का शासन है" (पद 13)।

चौथा और अंत में, प्रभु की शक्ति बचाने वाली शक्ति है। भजन संहिता 59:1–2 पर विचार करें: “हे मेरे परमेश्वर, मुझे मेरे शत्रुओं से बचा... मुझे बुराई करने वालों से छुड़ा और खून के प्यासे लोगों से मेरी रक्षा कर।” जब कोई भजन संहिता पर मनन करता है, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि दाऊद ने उद्धार के भरोसे के साथ प्रार्थना की थी। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर द्वारा छुड़ाए जाने का अनुभव करने से पहले ही—जब वह जीवन-मरण के संकट और शाऊल या अबशालोम जैसे शत्रुओं से अपनी जान को खतरे का सामना कर रहा था—उसे विश्वास था कि परमेश्वर उसे बचाएगा और इसलिए उसने उसकी बचाने वाली कृपा की याचना की। इसीलिए दाऊद ने, जैसा कि इस अंश में देखा गया है, प्रभु की शक्ति (बचाने की शक्ति) का गुणगान करने का संकल्प लिया। ऐसे संकट के बीच वह प्रभु का गुणगान करने का संकल्प कैसे ले सका? पौलुस और सीलास जेल में परमेश्वर की स्तुति कैसे कर पाए, जबकि वे जानते थे कि अगले दिन उन्हें मार डाला जाएगा? (प्रेरितों के काम 16) यह 'यूथ विद ए मिशन' (YWAM) के पास्टर होंग सुंग-गुन के विचारों से अलग है। मुझे याद है कि पास्टर होंग ने स्तुति को इस रूप में परिभाषित किया था कि परमेश्वर ने हमारे लिए जो किया है उसका जश्न मनाना; हालाँकि, प्रेरित पौलुस और सीलास—या आज के अंश में दाऊद—को देखने पर हम पाते हैं कि उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की और उसके छुड़ाने का अनुभव करने से पहले ही ऐसा करने का संकल्प लिया। हम इसकी व्याख्या कैसे कर सकते हैं? हम दो व्याख्याएँ करने का प्रयास कर सकते हैं: (1) पहली, पौलुस, सीलास और दाऊद ने परमेश्वर की स्तुति इसलिए की क्योंकि प्रार्थना के माध्यम से, उन्होंने विश्वास के द्वारा अनुभव किया कि परमेश्वर का छुड़ाने का कार्य पहले ही शुरू हो चुका था; या (2) सच्चे

उपासक होने के नाते, वे परमेश्वर के स्वभाव (जैसे उद्धारकर्ता के रूप में परमेश्वर) को जानते थे और उसमें विश्वास करते थे, जिससे वे बिना छुड़ाए गए भी उसकी स्तुति करने में सक्षम हुए। मेरा मानना है कि दूसरी व्याख्या आज के अंश की स्थिति पर अधिक लागू होती है।

यदि दाऊद अपनी स्थिति के अन्याय पर ध्यान केंद्रित करता, तो वह विश्वास के साथ परमेश्वर की बचाने वाली शक्ति के लिए उसकी स्तुति नहीं कर पाता। उसके शत्रु उसकी जान लेने की घात में इकट्ठे हो गए थे—उसकी किसी गलती या पाप के कारण नहीं (पद 3b)। वास्तव में, दाऊद निर्दोष था, फिर भी उसके शत्रु उस पर हमला करने के लिए उसकी ओर झपटे (पद 4)। ऐसी अन्यायपूर्ण स्थिति में भी, दाऊद ने परमेश्वर की बचाने वाली कृपा की लालसा की और उसकी याचना की। उसने मदद के लिए परमेश्वर की ओर देखा और प्रभु से विनती की कि वह जागे और उसके मामले की जाँच करे। इसलिए, अपनी (अनुचित) परिस्थितियों पर ध्यान देने के बजाय, हमें परमेश्वर पर ध्यान देना चाहिए। हमें विश्वास करना चाहिए कि हमारा परमेश्वर उद्धार करने वाला परमेश्वर है जो हमें उन (अनुचित) स्थितियों से बचाता है। हमें उद्धार के भरोसे के साथ उद्धार करने वाले इस परमेश्वर से सच्चे मन से प्रार्थना करनी चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो प्रभु की बचाने वाली शक्ति से सशक्त होकर, हम भजन 474 का कोरस गा सकेंगे: "ओह, प्रभु यीशु की बचाने वाली कृपा! सचमुच आनंदमय और सुखद; मैं उस कृपा का सदा आनंद लूँगा और शांति से रहूँगा।"

जैसे-जैसे मैं इस जीवन का सफर तय कर रहा हूँ, मुझे खुद यह एहसास हो रहा है कि यह दुनिया चिंताओं, कठिनाइयों, पाप और मौत के साये से भरी हुई है। इसीलिए मैं अक्सर भजन 474 गाता हूँ। गाते समय, मैं प्रभु की बचाने वाली कृपा पर मनन करता हूँ और अपने दिल में उनकी सुरक्षा के लिए प्रार्थना करता हूँ। प्रभु की सुरक्षा के बिना हम इस दुनिया में कैसे जी सकते हैं? गहरी निराशा और दुख के बीच भी हमें परमेश्वर के गहरे प्रेम का अनुभव करना चाहिए। हमें परमेश्वर के न्याय की शक्ति पर भरोसा रखते हुए इस पापी दुनिया में डटे रहना चाहिए और सहनशीलता बनाए रखनी चाहिए। ऐसा करते हुए, हमें प्रभु की बचाने वाली कृपा के लिए धन्यवाद और स्तुति करनी चाहिए। परमेश्वर की शक्ति—उनकी सुरक्षा, प्रेम, न्याय और उद्धार—के सहारे हमें अपनी आखिरी साँस तक उनकी स्तुति करते रहना चाहिए।

"हमें अभी बहाल करें!"

[भजन संहिता 60]

जब मैं "बहाली" (restoration) के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे एक-दो साल पहले चर्च के एक डीकन के साथ एक जोड़े के घर की गई अपनी यात्रा याद आती है। पत्नी मुश्किल दौर से गुज़र रही थी, इसलिए मैंने उसकी बहाली के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की। बाद में, वह उलझन में दिखी कि पादरी हमेशा बहाली के लिए प्रार्थना क्यों करते हैं। उस यात्रा के बाद चर्च लौटने पर, मैंने खुद से पूछा, "मैंने उस जोड़े से पश्चाताप करने के लिए क्यों नहीं कहा?" मेरा मानना है कि जब तक प्रभु में पाप का मसला हल नहीं हो जाता, तब तक कोई सच्ची बहाली की कृपा का आनंद नहीं ले सकता। मुझे अभी भी वह संदेश याद है जो मैंने कुछ साल पहले नए साल की पूर्व संध्या की प्रार्थना सभा में "5 R's" के बारे में दिया था: पश्चाताप (Repentance) → मेल-मिलाप (Reconciliation) → बहाली (Restoration) → सुधार (Reformation) → पुनरुद्धार (Revival)। सच्ची बहाली के लिए, हमें पहले पश्चाताप करना होगा और परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप करना होगा।

आज के अंश में, भजन संहिता 60:1 के दूसरे भाग में, भजनकार दाऊद परमेश्वर से विनती करता है: "...हमें अभी बहाल करें!" इस आयत और "हमें अभी बहाल करें!" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं इस बात पर विचार करना चाहता हूँ कि दाऊद ने बहाली के लिए प्रार्थना क्यों की, उसने वह प्रार्थना कैसे की, और प्रार्थना के बाद उसका रवैया क्या था, ताकि हम उसके उदाहरण से सीख सकें।

सबसे पहले, दाऊद ने बहाली के लिए प्रार्थना क्यों की?
इसका कारण यह था कि परमेश्वर के अनुशासन के कारण उसे युद्ध में अस्थायी हार का सामना करना पड़ा था (भजन संहिता 60:1–3)। दाऊद अस्थायी सैन्य हार के कारणों को इस प्रकार बताता है: "हे परमेश्वर, तूने

हमें त्याग दिया है और तितर-बितर कर दिया है; तू क्रोधित हुआ है..." (आयत 1); "तूने धरती को कंपा दिया है और उसे फाड़ दिया है..." (आयत 2); "तूने अपने लोगों को कठिनाई दिखाई है और हमें वह मदिरा पिलाई है जिससे हम लड़खड़ाने लगे" (आयत 3)। यहाँ, "मदिरा" (आयत 3) परमेश्वर के क्रोध का प्रतीक है (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, एदोम के आक्रमण के कारण दाऊद को अस्थायी हार का सामना करना पड़ा, और उसने पहचाना कि इसका मूल कारण परमेश्वर का क्रोध था। अंततः, दाऊद (और यहूदा के लोगों) ने परमेश्वर के क्रोध के कारण कठिनाई का सामना किया (आयत 3)। इसीलिए दाऊद ने परमेश्वर से विनती की: "हमें फिर से बहाल कर" (पद 1) और "टूटी हुई जगह को ठीक कर, क्योंकि धरती हिल रही है" (पद 2)। चूँकि प्रभु ने ही धरती को हिलाया और फाड़ा था, इसलिए स्वाभाविक रूप से एक दरार बन गई थी; दाऊद ने परमेश्वर से उस दरार को भरने के लिए कहा। यह बहाली के लिए की गई प्रार्थना है।

अगर परमेश्वर अपने क्रोध में हमें छोड़ दें, तो हम निश्चित रूप से आध्यात्मिक लड़ाई हार जाएँगे। जब तक परमेश्वर हमें थामे नहीं रखते, हम जीवन में निश्चित रूप से गिरेंगे, लड़खड़ाएँगे और असफल होंगे। चाहे हमारा विश्वास कितना भी अटूट क्यों न लगे, या हमारे परिवार, व्यवसाय या चर्च कितने भी सुरक्षित क्यों न दिखें, प्रभु धरती को हिला और फाड़ सकते हैं (पद 2)। यदि परमेश्वर अपने क्रोध में हमारे जीवन, परिवारों, व्यवसायों और जिन चर्चों की हम सेवा करते हैं, उनकी नींव को ही हिला दें, तो हम कैसे अडिग रह सकते हैं? जब हम हिल जाते हैं और अस्थिर हो जाते हैं क्योंकि परमेश्वर के क्रोध के कारण हमारे जीवन में दरारें आ जाती हैं, तो हमें याद रखना चाहिए कि उनके क्रोध को भड़काने वाला पाप हमारे भीतर ही है; हमें परमेश्वर के सामने अपने पापों का पश्चाताप करना चाहिए और उनकी दया माँगनी चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि सच्चे पश्चाताप के बिना सच्ची बहाली नहीं हो सकती।

दूसरी बात, दाऊद ने बहाली के लिए प्रार्थना कैसे की?

दाऊद ने दो विश्वासों के साथ परमेश्वर से बहाली के लिए प्रार्थना की:

(1) दाऊद ने उद्धार के भरोसे के साथ बहाली के लिए प्रार्थना की।

आज के वचन, भजन संहिता 60:5 को देखें: "हमें बचा और अपने दाहिने हाथ से हमारी सहायता कर, ताकि जिन्हें तू प्रेम करता है, वे छुड़ाए जाएँ।" यहाँ, हम देखते हैं कि दाऊद परमेश्वर के प्रेम (दयालु प्रेम) पर भरोसा करते हुए उनसे विनती कर रहा है। दाऊद को पूरा भरोसा था कि परमेश्वर—जो अपने लोगों से किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक प्रेम करते हैं—प्रार्थना में हमारी पुकार को अनसुना नहीं करेंगे, बल्कि उत्तर देंगे और अपने शक्तिशाली दाहिने हाथ से हमें बचाएँगे। गॉस्पेल गीत "विज़न" (Vision) याद आता है: "हम सिंहासन के सामने इकट्ठे होते हैं, मिलकर प्रभु की स्तुति करते हैं / परमेश्वर के प्रेम ने अपने पुत्र को दिया; उनके लहू से हम बचाए गए हैं / क्रूस पर बहाया गया प्रेम धरती पर नदी की तरह बहता है / हर राष्ट्र, जनजाति और लोगों में से, बचाए गए लोग प्रभु की आराधना करते हैं / उद्धार हमारे परमेश्वर का है जो सिंहासन पर विराजमान हैं और मेमने का है / उद्धार हमारे परमेश्वर का है जो सिंहासन पर विराजमान हैं और मेमने का है।" (2) दाऊद ने जीत के भरोसे के साथ बहाली के लिए प्रार्थना की।

आज के वचन, भजन संहिता 60:4 को देखें: "तू ने अपने डर मानने वालों को एक झंडा दिया है, ताकि सच्चाई के कारण उसे फहराया जा सके (सेलाह)।" बाइबल कहती है कि परमेश्वर उन्हें "झंडा" देता है जो उससे डरते हैं। परमेश्वर ने दाऊद को "झंडा" क्यों दिया? यह दिखाने के लिए कि वह दाऊद के साथ था और उसे जीत दिलाएगा। संक्षेप में, यहाँ जिस "झंडे" का ज़िक्र है, वह जीत का झंडा है। उस जीत का स्रोत क्या है? यह इसलिए नहीं कि सेना मज़बूत थी, सैनिक बहुत थे, या हथियार शक्तिशाली थे, बल्कि इसलिए कि परमेश्वर उनके साथ था। क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था, दाऊद को भरोसा था कि वह मोआब, एदोम और पलिस्तियों के ख़िलाफ़ लड़ाई में जीत हासिल करेगा (वचन 8)। इसीलिए उसने घोषणा की, "मैं खुशी मनाऊँगा" (वचन 6)। दाऊद ने जीत की उम्मीद में खुशी मनाई; उसे ऐसा भरोसा कैसे हुआ? इसलिए क्योंकि "परमेश्वर ने अपनी पवित्रता में कहा है" (वचन 6)। दाऊद ने जीत के पक्के भरोसे के साथ खुशी मनाई क्योंकि पवित्र परमेश्वर ने उसके साथ रहने का वादा किया था। भजन 400 के चौथे पद और कोरस के बोल पर विचार करें: "दुश्मन पहले ही हार चुका है, यीशु के हाथों पूरी तरह से पराजित हो चुका है; केवल प्रभु का झंडा ही पूरी धरती पर शानदार ढंग से चमकता है" (वचन 4); "आइए हम आगे बढ़ें, आइए हम केवल प्रभु यीशु के लिए आगे बढ़ें; अपनी जान देकर भी, आइए हम युद्ध के मैदान की ओर बढ़ें" (कोरस)।

तीसरी बात, बहाली के लिए प्रार्थना करने के बाद दाऊद का रवैया कैसा था?

संक्षेप में, दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा किया और हिम्मत से काम लिया। आज के वचन, भजन संहिता 60:12 को देखें: "परमेश्वर के द्वारा हम वीरता दिखाएँगे, क्योंकि वही हमारे दुश्मनों को कुचलेगा।" इस बात का क्या मतलब है कि उसने परमेश्वर पर भरोसा किया?

(1) परमेश्वर पर भरोसा करने का मतलब है यह विश्वास करना कि वही हमें राह दिखाता है और मार्गदर्शन करता है।

भजन संहिता 60:9 को देखें: "मुझे किले वाले शहर में कौन ले जाएगा? मुझे एदोम तक कौन ले जाएगा?" यहाँ, "किलेबंद शहर" का मतलब है पेट्रा, जो एदोम की राजधानी थी—एक ऐसा मज़बूत गढ़ जिसे अभेद्य माना जाता था (पार्क युन-सन)। एदोम का किला चट्टान जितना मज़बूत था... फिर भी दाऊद का मानना था कि सिर्फ़ परमेश्वर ही उस शहर को गिरा सकते हैं और उन्हें और इस्राएली सैनिकों को उसके अंदर ले जा सकते हैं।

(2) परमेश्वर पर भरोसा करने का मतलब है "इम्मानुएल" वाला विश्वास रखना।

दूसरे शब्दों में, यह विश्वास कि परमेश्वर हमारे साथ हैं। आयत 10 देखिए: "हे परमेश्वर, क्या तूने ही हमें ठुकरा नहीं दिया? हे परमेश्वर, तू हमारी सेनाओं के साथ नहीं जाता।" जब दाऊद ने परमेश्वर से विनती की, तो उन्हें याद आया कि कैसे परमेश्वर ने अपने क्रोध में पहले उन्हें और उनकी सेना को कुछ समय के लिए हार का सामना करने दिया था; इसलिए, उन्होंने सच्चे दिल से प्रार्थना की कि इस बार परमेश्वर उनके साथ हों। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वे जानते थे कि जब तक परमेश्वर उनके साथ युद्ध में नहीं उतरेंगे, तब तक उनकी सेना का आकार किसी काम का नहीं होगा। संक्षेप में, यह जानते हुए कि युद्ध में जीत पूरी तरह से इस बात पर निर्भर करती है कि परमेश्वर उनके साथ हैं या नहीं, उन्होंने परमेश्वर की उपस्थिति चाही।

(3) परमेश्वर पर भरोसा करने का मतलब है इंसानी मदद की बेकारता को स्वीकार करना।

आयत 11 देखिए: "दुश्मन के खिलाफ़ हमारी मदद कर, क्योंकि इंसानी मदद बेकार है।" परमेश्वर पर भरोसा करने का मतलब है लोगों पर भरोसा न करना। दाऊद का विश्वास ऐसा था जो इंसानों के बजाय पूरी तरह से परमेश्वर पर टिका था। दाऊद की तरह, हमें भी परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखना चाहिए और हिम्मत से काम लेना चाहिए। हमें अपने दुश्मनों से डरने की ज़रूरत नहीं है; इसके बजाय, हमें हिम्मत के साथ क्रूस का झंडा उठाना चाहिए और पाप, दुनिया और शैतान से लड़ने और उन पर जीत हासिल करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए।

परमेश्वर के क्रोध के कारण एदोम के खिलाफ़ युद्ध में कुछ समय के लिए हार का सामना करने के बाद, दाऊद ने उद्धार और जीत के भरोसे के साथ बहाली के लिए प्रार्थना की। उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा करने और हिम्मत से काम लेने का संकल्प लिया। हमें भी सच्चे दिल से परमेश्वर से विनती करनी चाहिए और कहना चाहिए, "हमें अभी बहाल कर!" हमें उद्धार और जीत के भरोसे को मज़बूती से थामे हुए विश्वास के साथ बहाली के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, और परमेश्वर पर भरोसा करते हुए हिम्मत से काम लेना चाहिए।

“जब मेरा मन व्याकुल हो”

[भजन संहिता 61]

हाल ही में, मैं डॉ. मार्टिन लॉयड-जोन्स की किताब *द क्रिश्चियन वॉरफेयर* (ईसाई युद्ध) पढ़ रहा हूँ। एक प्यारे साथी पादरी के साथ अय्यूब की कहानी पर चर्चा करने के बाद मुझे यह किताब पढ़ने की प्रेरणा मिली; मुझे शैतान की ताकतों और आध्यात्मिक युद्ध की प्रकृति के बारे में और जानने की ज़रूरत महसूस हुई। पढ़ते समय, शैतान की एक चाल के बारे में डॉ. लॉयड-जोन्स की बात ने मेरा ध्यान खास तौर पर खींचा: कि उसके पास प्राकृतिक दुनिया पर भी कुछ हद तक नियंत्रण रखने का अधिकार है। जब शैतान ने परमेश्वर की अनुमति से अय्यूब पर हमला करना शुरू किया, तो अय्यूब के एक सेवक ने बताया कि उसके बैलों और गधों को छीन लिया गया है और उनकी देखभाल करने वालों को मार डाला गया है। वह अभी बात कर ही रहा था कि एक और आदमी आया और उसने बताया: “...परमेश्वर की आग—यानी बिजली—आकाश से गिरी और भेड़ों और सेवकों को जला दिया, और मैं अकेला ही बचकर आपको बताने आया हूँ” (अय्यूब 1:16)। इससे हमें साफ पता चलता है कि बिजली बुलाने और उससे तबाही मचाने की क्षमता शैतान के दायरे और ताकत में है। शैतान—जिसके पास इतनी ज़बरदस्त ताकत है—सबसे ज़्यादा इंसानी मन की परवाह करता है, जो इंसानियत को दिया गया सबसे बड़ा तोहफ़ा है; वह चालाकी और डरावनी ताकत से इसे निशाना बनाता है। वह हमारे मन पर हमला करने के लिए कई तरह की चालें चलता है, जिनमें से एक है डर की भावना से हमें कुचलने की कोशिश करना। इसका एक बड़ा उदाहरण प्रेरित पतरस है; यह कहने के बावजूद कि वह प्रभु को कभी नहीं छोड़ेगा—भले ही बाकी सब छोड़ दें—आखिरकार उसने तीन बार प्रभु को नकार दिया और कहा कि वह उन्हें बिल्कुल नहीं जानता। पतरस ने ऐसा क्यों किया? कारण यह है कि शैतान—जो घोर आतंक की आत्मा है—ने उसके मन में अपनी जान खोने का डर पैदा कर दिया (जोन्स)। डॉ. लॉयड-

जोन्स ने आज के चर्च के बारे में ये खास बातें कहीं: “चर्च को सुन्न कर दिया गया है और गहरी नींद में डाल दिया गया है, और वह उस संघर्ष [आध्यात्मिक लड़ाई] से पूरी तरह अनजान है।”

शैतान, जो लगातार जाल और फंदे बिछा रहा है, अभी चर्च के अंदर सफल होता दिख रहा है। डॉ. लॉयड-जोन्स ने कहा, “निराशा, हिम्मत टूटना, हार की भावना और घोर निराशा आम तौर पर शैतान की गतिविधियों का नतीजा होती हैं”; फिर भी, हममें से कितने ईसाई निराशा, हताशा और हार की हालत में जीते हैं? हममें से कितने लोग मायूसी महसूस करते हैं? हमें प्रभु यीशु की शक्ति से शैतान के खिलाफ़ इस आध्यात्मिक लड़ाई में लड़ना और जीतना है, जिन्होंने पहले ही जीत हासिल कर ली है। हमें उस जीत पर भरोसा रखते हुए एक योद्धा ईसाई जीवन जीना चाहिए। हमें आध्यात्मिक युद्ध में शामिल होना चाहिए। इसका एक उदाहरण आज के वचन, भजन संहिता 61 में मिलता है। आयत 2 में, भजनकार दाऊद उस समय की बात करते हैं "जब मेरा मन व्याकुल हो जाता है।" यहाँ "व्याकुल" शब्द का अर्थ है "खुद में सिमट जाना" या "घिर जाना"। यह उस हालत को बताता है जब कोई व्यक्ति तरह-तरह की परेशानियों और चिंताओं से घिरकर थक जाता है और निराश हो जाता है (पार्क युन-सन)। दाऊद अपने दुश्मनों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों के कारण निराशा में डूब रहे थे (आयत 3)। आज के वचन के आधार पर, मैं चार बातें सीखना चाहता हूँ कि हम कैसे लड़ सकते हैं और जीत सकते हैं—ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया—जब हमारा मन शैतान की बुरी ताकतों के बोझ तले दबा हो।

पहला, जब हमारा मन दाऊद की तरह दबा हुआ या व्याकुल हो, तो हमें परमेश्वर से पुकारना चाहिए।

भजन संहिता 61:1 को देखें: "हे परमेश्वर, मेरी पुकार सुन; मेरी प्रार्थना पर ध्यान दे।" मुझे बुधवार की एक प्रार्थना सभा याद है जहाँ, भजन संहिता 42 पर मनन करते समय, हमें जीवन की निराशा और मायूसी को परमेश्वर के लिए तड़प पैदा करने के अवसर में बदलने की चुनौती दी गई थी। जब हम जीवन की विभिन्न मुश्किलों और दुखों के कारण बेचैन, निराश या उम्मीद खो देते हैं, तो हमें परमेश्वर से पुकारना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने आज के वचन में किया था। इसके अलावा, जब हम उससे पुकारते हैं, तो हमें अपनी प्रार्थनाएँ करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि परमेश्वर हमसे उससे कहीं ज़्यादा तड़पते हैं जितना हम उनसे तड़पते हैं। फिर भी, ऐसा लगता है कि जब हम गहरी परेशानी और तकलीफ में होते हैं, तो हम अक्सर

भूल जाते हैं कि परमेश्वर हमसे मिलने के लिए तड़प रहे हैं। दाऊद आज के वचन में कहते हैं, "जब मेरा मन व्याकुल होता है, तो मैं पृथ्वी के छोर से तुझे पुकारूँगा।" वह "पृथ्वी के छोर से" क्यों कहते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि वह घोर निराशा की हालत में थे। दाऊद को लगा कि परमेश्वर ने उन्हें छोड़ दिया है और इसलिए वह परमेश्वर से बहुत दूर हो गए हैं। ऐसी भावनाओं के बीच भी, उन्होंने हार नहीं मानी और न ही निराशा के आगे घुटने टेके। इसके बजाय, उन्होंने परमेश्वर से पुकार लगाई, "मुझे उस चट्टान तक ले चल जो मुझसे ऊँची है।" निराशा की गहरी अवस्था में भी, दाऊद ने परमेश्वर को पुकारा और उस "चट्टान" की ओर देखा जो उनसे "ऊँची" थी।

हमें ऐसे विश्वास की ज़रूरत है जो कहे, "फिर भी।" दूसरे शब्दों में, दाऊद की तरह, हमें ऐसे विश्वास की ज़रूरत है जो गहरी निराशा में डूबे होने पर भी परमेश्वर के लिए तड़पे। जब हम निराशा में हों, ठीक उसी समय हमें प्रभु को पुकारना चाहिए। जैसे भविष्यद्वक्ता योना ने समुद्र की गहराइयों से कहा था, "मैं तेरी दृष्टि से दूर कर दिया गया हूँ, फिर भी मैं तेरे पवित्र मंदिर की ओर फिर से देखूँगा" (योना 2:4), वैसे ही हमें भी अपनी परिस्थितियों की परवाह किए बिना प्रभु की ओर देखना चाहिए। जब हमारा मन व्याकुल हो, तब भी हमें प्रभु को पुकारना चाहिए।

दूसरी बात, दाऊद की तरह, जब हमारा मन व्याकुल हो तो हमें प्रभु की शरण लेनी चाहिए।

भजन संहिता 61:4 को देखें: "मैं सदा तेरे तम्बू में रहूँगा; मैं तेरे पंखों की आड़ में शरण लूँगा (सेलाह)।" निराशा के बीच हम जो कर सकते हैं, वह है परमेश्वर पिता को पुकारना और उनकी शरण लेना। इसका कारण यह है कि केवल परमेश्वर ही हमारे रक्षक हैं। इसलिए, जब दाऊद का मन व्याकुल था—यहाँ तक कि परमेश्वर से दूर महसूस करते हुए भी—उन्होंने उनसे विनती की और परमेश्वर के स्वभाव को स्वीकार किया: "तू मेरे लिए शरणस्थान और शत्रु से बचाने वाला मज़बूत गढ़ रहा है" (पद 3)। घोर निराशा और परमेश्वर से दूर होने की भावना के बीच भी दाऊद कैसे यह स्वीकार कर पाए कि परमेश्वर ही उनकी शरण और मज़बूत गढ़ थे? मुझे इसका उत्तर आज के पाठ के पद 7 के अंतिम भाग में मिला: "...दया और सच्चाई को नियुक्त कर, जो उसकी रक्षा करें।" दाऊद इसलिए यह स्वीकार कर पाए कि परमेश्वर उनकी शरण और मज़बूत गढ़ थे, क्योंकि जब उनका मन व्याकुल था, तब परमेश्वर ने उनके लिए "प्रेम-दया और सच्चाई" तैयार की थी। इस

तरह, जब उसका मन भारी था, तब भी परमेश्वर की दया और सच्चाई ने उसकी रक्षा की; इसलिए, उसने प्रभु की शरण ली और उन्हें पुकारा। यहाँ हमें यह सीख मिलती है कि जब हमारा मन व्याकुल हो, तब भी हमें परमेश्वर की दया और सच्चाई को मजबूती से थामे रखना चाहिए और कभी नहीं छोड़ना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमें विश्वास के साथ प्रभु के पास जाना चाहिए, यह भरोसा रखते हुए कि जो परमेश्वर हमसे बिना शर्त प्रेम करते हैं, उन्होंने हमें बचाने का वादा किया है और वे उस वादे को ज़रूर पूरा करेंगे (पार्क युन-सन)। जीवन की निराशा के बीच भी, हमें परमेश्वर के अनंत प्रेम (दया) और सच्चाई से जुड़े रहना चाहिए। ऐसा करते समय, हमें इस उम्मीद से आगे बढ़ना चाहिए कि हम हमेशा परमेश्वर के निवास-स्थान में रहेंगे (पद 4)। पल भर की निराशा के बीच, हमें परमेश्वर के अनंत निवास-स्थान की ओर देखना चाहिए।

तीसरी बात, दाऊद की तरह, जब हमारा मन व्याकुल हो, तो हमें उस कृपा को याद करना चाहिए जो परमेश्वर ने अतीत में हम पर की है।

भजन संहिता 61:5 को देखें: "हे परमेश्वर, तूने मेरी मन्नतों को सुना है; तूने मुझे उनकी विरासत दी है जो तेरे नाम का भय मानते हैं।" यह अंश उस समय का ज़िक्र करता है जब इज़राइल का शासन कुछ समय के लिए अबशालोम के अधर्मी गुट के हाथ में चला गया था और फिर वापस दाऊद के हाथों में आया (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, दाऊद ने उस कृपा को याद किया जिसके द्वारा परमेश्वर ने अतीत में उसके बेटे अबशालोम के विद्रोह के दौरान उसे बचाया था (पार्क युन-सन)। जब दाऊद अपने दुश्मनों से घिरा हुआ और परेशान था (पद 3), तो उसने इस बात पर ध्यान देने के बजाय कि उसने खुद परमेश्वर के लिए क्या किया था, यह याद किया कि परमेश्वर ने अतीत में उसके लिए क्या किया था। यह हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति नहीं है। जब हमारा मन बोझिल होता है, तो हमारी प्रवृत्ति यह होती है कि हम अपने कामों या गुणों का ज़िक्र करते हुए परमेश्वर से विनती करें। 1 राजा 19 में बताया गया एलिय्याह इसका एक उदाहरण है। ईज़बेल की धमकियों से डरकर, एलिय्याह जंगल में भाग गया। वहाँ, एक स्वर्गदूत के स्पर्श और मदद से वह होरेब पर्वत तक पहुँचने में सफल रहा। जब परमेश्वर प्रकट हुए और पूछा, "एलिय्याह, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" (पद 9, 13), एलिय्याह ने जवाब दिया, "मैं सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर के लिए बहुत जोश से भरा रहा हूँ" (पद 10, 14)। इस जवाब पर सोचने से ऐसा लगता है कि एलिय्याह परमेश्वर से शिकायत कर रहा था और साथ ही परमेश्वर के लिए किए गए अपने कामों—या अपनी अच्छाइयों—का ज़िक्र भी कर रहा था।

हमारी एक समस्या यह है कि हम उन बातों को नहीं भूल पाते जिन्हें भूल जाना चाहिए, जबकि जिन्हें याद रखना चाहिए, उन्हें भूल जाते हैं। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने न केवल हमारे उन पापों को माफ़ कर दिया है जिनके लिए हमने पछतावा किया है, बल्कि यह भी कहा है कि वह उन्हें अब याद नहीं रखता; इसलिए, हमें भी उन पर बार-बार नहीं सोचना चाहिए, फिर भी अक्सर हम उन्हें भूल नहीं पाते और बार-बार उनका ज़िक्र करते रहते हैं। इसके उलट, जिन बातों को हमें नहीं भूलना चाहिए... हम बहुत जल्दी उस कृपा को भूल जाते हैं जो परमेश्वर ने अतीत में हम पर की है। आज के हिस्से में दाऊद की तरह, हमें भी उस कृपा को याद रखना चाहिए जो परमेश्वर ने हमारी पूरी ज़िंदगी में हम पर की है। खासकर जब हम बोझ महसूस करते हैं, तो हमें अपनी यात्रा को पीछे मुड़कर देखना चाहिए, हर मुश्किल मोड़ पर परमेश्वर के बचाने वाले कामों को याद करना चाहिए, और विश्वास के साथ अपनी मौजूदा मुश्किल हालात का सामना करना चाहिए। जब हमारा मन भारी हो, तो अतीत में परमेश्वर की दिखाई गई कृपा को याद करने से हमारी निराशा उम्मीद में बदल जानी चाहिए।

चौथी बात, जब हमारा मन भारी हो—ठीक वैसे ही जैसे दाऊद का था—तो हमें परमेश्वर के अनंत राज्य की चाह करनी चाहिए।

भजन संहिता 61:7 पर विचार करें: "वह परमेश्वर के सामने सदा बना रहे; उसकी रक्षा के लिए अटूट प्रेम और सच्चाई को नियुक्त किया जाए!" दाऊद ने परमेश्वर से लंबी उम्र की विनती की, ताकि उसकी आयु पीढ़ियों तक बनी रहे (पद 6)। उसने जीवन, मृत्यु और भाग्य पर अधिकार रखने वाले परमेश्वर से अपने दिनों को बढ़ाने की प्रार्थना की; दूसरे शब्दों में, उसने लंबी उम्र का आशीर्वाद मांगा। इसके अलावा, दाऊद ने परमेश्वर की उपस्थिति में सदा रहने की प्रार्थना की। उस दृश्य की कल्पना करें: दाऊद, जिसका मन दुश्मनों के कारण भारी और निराशा से भरा है, परमेश्वर की ओर देखता है, उनकी शरण लेता है, और—मिली हुई कृपा को याद करके—उम्मीद पाता है; अपनी क्षणिक निराशा के बीच, वह परमेश्वर की उपस्थिति में सदा रहने की प्रार्थना करता है। हमें भी परमेश्वर की उपस्थिति में सदा रहने की प्रार्थना करनी चाहिए, भले ही हम कुछ समय के लिए निराशा का सामना कर रहे हों। खासकर, परमेश्वर के राज्य के नागरिकों के रूप में, हमें उस राज्य में सदा रहने की प्रार्थना करनी चाहिए जहाँ प्रभु—राजाओं का राजा—सदा राज्य करता है। जब हम यह प्रार्थना करते हैं, तो हमें उन शब्दों को भी दोहराना चाहिए जो प्रभु ने हमें सिखाए हैं: "तेरा राज्य

आए।" और जब यीशु कहते हैं, "जो इन बातों की गवाही देता है, वह कहता है, 'हाँ, मैं जल्द आ रहा हूँ,'" तो हमें भी—ठीक वैसे ही जैसे प्रेरित यूहन्ना ने किया था—यह प्रार्थना करते हुए जवाब देना चाहिए: "आमीन। आ प्रभु यीशु!" (प्रकाशितवाक्य 22:20)।

जब दाऊद का मन भारी था, तो उसने परमेश्वर को पुकारा। और उसने उनकी शरण ली। फिर, परमेश्वर की पिछली कृपा को याद करते हुए और उनके अनंत राज्य की चाह करते हुए, दाऊद ने उन्हें पुकारा। उसने संकल्प किया कि यदि परमेश्वर उसकी प्रार्थना का उत्तर देते हैं—उसे मार्गदर्शन देते हैं, उसकी रक्षा करते हैं और उसे उद्धार की कृपा देते हैं ताकि वह उनकी उपस्थिति में सदा रह सके—तो वह "तेरे नाम की स्तुति सदा करता रहेगा और दिन-प्रतिदिन अपनी मन्नतों को पूरा करेगा" (पद 8)। दाऊद की तरह, जब हमारा मन व्याकुल हो, तो हमें भी परमेश्वर को पुकारना चाहिए और प्रभु की शरण लेनी चाहिए, जो हमारी पनाह और मजबूत गढ़ हैं। शरण लेने के बाद, हमें उस कृपा को याद रखना चाहिए जो प्रभु ने अतीत में हम पर की है और हमेशा परमेश्वर की उपस्थिति में रहने की आशा रखनी चाहिए।

आइए हम चुपचाप सिर्फ़ परमेश्वर की ओर देखें।

[भजन संहिता 62]

हमें परमेश्वर के सामने चुप रहना सीखना चाहिए। अपनी किताब *द वे ऑफ़ द हार्ट* (The Way of the Heart) में हेनरी नूवेन ने चुप्पी के बारे में कहा है: "हम पादरियों के लिए सबसे ज़रूरी सवाल... जब हम चर्च की अलग-अलग संगठनात्मक गतिविधियों को चलाते हैं, तो यह नहीं है कि लोगों को कैसे व्यस्त रखा जाए, बल्कि यह है कि उन्हें व्यस्तता से दूर हटने में कैसे मदद की जाए ताकि वे उस आवाज़ को सुन सकें जो परमेश्वर चुप्पी में बोलते हैं" (नूवेन)। हम बहुत व्यस्त ज़िंदगी जीते हैं। खासकर हमारा मन बहुत व्यस्त रहता है। हमारा मन कितना व्यस्त है? वह दूसरी बातों में इतना उलझा रहता है कि हममें परमेश्वर की उपस्थिति में उनकी आवाज़ को शांति से सुनने का धैर्य नहीं होता। हमें भविष्यवक्ता यशायाह की बातों पर ध्यान देने की ज़रूरत है: "...शांति और भरोसे में ही तुम्हारी ताकत होगी..." (यशायाह 30:15)। हमें यह सच सुनना चाहिए कि परमेश्वर पर चुपचाप भरोसा करना ही हमारी ताकत का असली स्रोत है।

भजन संहिता 62 की आयत 1 और 5 को देखें: "मेरी आत्मा चुपचाप सिर्फ़ परमेश्वर का इंतज़ार करती है..." (आयत 1), "मेरी आत्मा, चुपचाप सिर्फ़ परमेश्वर का इंतज़ार कर..." (आयत 5)। आज, इन आयतों और इस विषय "आइए हम चुपचाप सिर्फ़ परमेश्वर की ओर देखें" पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं परमेश्वर की आवाज़ सुनना चाहता हूँ—एक ऐसी आवाज़ जो हम सभी के लिए है जो उनके सामने चुप रहकर प्रभु की बात सुनना चाहते हैं।

सबसे पहले, चुपचाप सिर्फ़ परमेश्वर की ओर देखने का क्या मतलब है?

परमेश्वर की ओर चुपचाप देखने का मतलब है पूरी तरह से उन पर निर्भर रहना, अपनी स्वार्थी इच्छाओं या अपनी मर्ज़ी से कुछ करने की किसी भी भावना से मुक्त होकर (पार्क युन-सन)। आज के पाठ, भजन संहिता 62:8 को देखें: "हे लोगों, हर समय उस पर भरोसा रखो; उसके सामने अपने दिल की बात कहो। परमेश्वर हमारी शरणस्थान है (सेलाह)।" यहाँ, "हर समय" वाक्यांश का अर्थ है "जब भी" या "किसी भी पल"। दाऊद उन लोगों से आग्रह करता है जो उसके प्रति वफ़ादार हैं कि वे हर समय पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा रखें। वह उनसे यह भी कहता है कि वे "उसके सामने अपने दिल की बात कहें" (यानी, परमेश्वर के सामने)। दूसरे शब्दों में, दाऊद उन्हें प्रोत्साहित कर रहा है कि वे परमेश्वर के सामने अपने दिल की बात खुलकर कह दें। इसका मतलब है अपना दिल भगवान को वैसे ही सौंपना जैसे कोई पानी उंडेलता है (पार्क युन-सन)। डॉ. पार्क युन-सन भगवान को दिल सौंपने के इस काम के दो पहलू बताते हैं: (1) पहला, हम प्यार में अपना दिल पूरी तरह से उन्हें सौंपते हैं ताकि हम उनका प्यार पा सकें। (2) दूसरा, भगवान के सामने अपना दिल उंडेलने का मतलब है अपनी सारी मुश्किलें उनके सामने रखना, उन पर पूरी तरह भरोसा करना और शांति पाना।

हमें चुपचाप भगवान की ओर देखना चाहिए। हमें हर समय उन पर पूरी तरह भरोसा करना चाहिए। हमें अपना पूरा दिल उस भगवान को सौंपना चाहिए जो हमारे अस्तित्व के केंद्र को देखता है। इसके अलावा, हमें चुपचाप उनके पास जाना चाहिए और प्रार्थना में अपना दिल उंडेलना चाहिए। भजन 483 के कोरस पर विचार करें, "चुपचाप यीशु के पास जाओ": "चुपचाप प्रभु यीशु के पास जाओ, और अपना दिल उंडेल दो; प्रभु, जो गुप्त रूप से देखते हैं, बड़ी कृपा करेंगे।" हमें चुपचाप भगवान के सामने जाना चाहिए और अपना दिल उंडेलना चाहिए।

दूसरी बात, हमें चुपचाप भगवान की ओर कब देखना चाहिए? जब दाऊद को अबशालोम के बागी अनुयायियों द्वारा सताया जा रहा था, तो उसने चुपचाप भगवान की ओर देखा। आज के अंश, भजन संहिता 62:3–4 पर विचार करें: "तुम सब मिलकर एक आदमी को कुचलने के लिए कब तक उस पर टूट पड़ोगे, जैसे कोई झुकती हुई दीवार या डगमगाती हुई बाड़ हो? वे उसे उसकी ऊँची जगह से गिराने का पूरा इरादा रखते हैं; उन्हें झूठ बोलने में मज़ा आता है। वे मुँह से तो आशीर्वाद देते हैं, लेकिन दिल में कोसते हैं (सेलाह)।" बागियों ने किसी भी तरह से राजा दाऊद—जिसे भगवान ने नियुक्त किया था—को उसके सिंहासन से नीचे गिराने की कोशिश की। उनकी धोखेबाज़ी में राजा को होंठों से आशीर्वाद देना और दिल में कोसना शामिल था; ये लोग, जिन्हें झूठ में मज़ा आता था, ने उसे मारने की साजिश रची। ऐसी स्थिति में, दाऊद ने पूरी तरह

से भगवान पर भरोसा किया। यह दिलचस्प है कि उसने अबशालोम के अनुयायियों—जिन्होंने उसके खिलाफ बगावत की थी—को "झुकती हुई दीवार" और "डगमगाती हुई बाड़" कहा। हालाँकि अबशालोम और उसके लोग कई लोगों को मज़बूत और खतरनाक लग सकते थे जब दाऊद उनसे भाग रहा था, लेकिन दाऊद के लिए—जो चुपचाप भगवान पर अपनी नज़रें टिकाए हुए था—वे केवल एक झुकती हुई दीवार या डगमगाती हुई बाड़ की तरह लग रहे थे। यहाँ सीख यह है कि संकट के समय चुपचाप परमेश्वर की ओर देखने वाले व्यक्ति का नज़रिया, ऐसा न करने वाले व्यक्ति से अलग होता है। दूसरे शब्दों में, संकट का सामना कर रहा एक आम इंसान—जो पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर नहीं है—अब्शालोम के बागियों जैसे समूह को एक बेहद मज़बूत, शक्तिशाली और खतरनाक ताकत के रूप में देखता है। लेकिन, जो व्यक्ति पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर है—जैसे कि दाऊद—वह ऐसी ताकतों को केवल "झुकी हुई दीवार या डगमगाती बाड़" के रूप में देखता है।

अभी आपका नज़रिया क्या है? क्या आप सचमुच अपनी मुश्किलों और परेशानियों को केवल "झुकी हुई दीवार या डगमगाती बाड़" के रूप में देखते हैं, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने देखा था जब वह चुपचाप परमेश्वर का इंतज़ार कर रहा था?

तीसरी बात, हमें चुपचाप परमेश्वर का इंतज़ार क्यों करना चाहिए?

इसका कारण यह है कि "मेरा उद्धार" और "मेरी आशा" परमेश्वर से ही मिलती है। भजन संहिता 62 की आयत 1 और 5 को देखें: "मेरा मन चुपचाप केवल परमेश्वर की प्रतीक्षा करता है; उसी से मेरा उद्धार होता है" (आयत 1); "हे मेरे मन, चुपचाप केवल परमेश्वर की प्रतीक्षा कर, क्योंकि मेरी आशा उसी से है" (आयत 5)। अब्शालोम के विद्रोह के कारण पैदा हुई खतरनाक स्थिति में भी, दाऊद का मन चुपचाप केवल परमेश्वर की प्रतीक्षा करता रहा क्योंकि वह जानता था और विश्वास करता था कि केवल परमेश्वर ही उसका उद्धार और उसकी आशा है। इसीलिए उसने आज के अंश में कहा: "मेरा मन केवल परमेश्वर की प्रतीक्षा करता है" (आयत 1), "हे मेरे मन, चुपचाप केवल परमेश्वर की प्रतीक्षा कर" (आयत 5), और "वही मेरी चट्टान, मेरा उद्धार और मेरा गढ़ है" (आयत 2, 6)।

हमारी समस्या क्या है? यह "परमेश्वर के साथ कुछ और" (God plus alpha) वाली सोच है—यानी परमेश्वर के अलावा दूसरे लोगों या चीज़ों पर निर्भर रहना। आखिरकार, इस समस्या को सुलझाने में, परमेश्वर उन सभी चीज़ों को हटा देता है जिन पर हम उसके अलावा निर्भर रहे हैं। इसलिए, वह हमें यह स्वीकार करने के लिए प्रेरित करते हैं—जैसा कि भजन 539 ("मेरी आशा किसी कम चीज़ पर नहीं टिकी है") के तीसरे पद के बोल कहते हैं—"जब मेरी आत्मा चारों ओर से डगमगाने लगती है, तब वही मेरी एकमात्र आशा और सहारा होते हैं; मैं मसीह पर, जो एक मज़बूत चट्टान हैं, खड़ा हूँ।" मुझे एक याद हमेशा ताज़ा रहती है: मेरे दादाजी ने गुज़रने से पहले मुझसे भजन 82 ("मेरी खुशी, मेरी आशा") गाने के लिए कहा था। जब भी मैं वह भजन गाता हूँ, तो कुछ पंक्तियाँ—खासकर पहले और चौथे पद की—मेरे दिल को गहराई से छू जाती हैं: "हे प्रभु, तू ही मेरी खुशी, मेरी आशा और मेरा जीवन है..." (पद 1); "...मेरा जीवन और मेरी सच्ची आशा केवल प्रभु यीशु में ही है" (पद 4)।

आखिर में, चौथा बिंदु: हम चुपचाप परमेश्वर की ओर कैसे देख सकते हैं?

(1) हमें परमेश्वर को वैसा ही पहचानना चाहिए जैसे वे वास्तव में हैं।

दूसरे शब्दों में, हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि हमारा परमेश्वर ही "मेरी चट्टान," "मेरा उद्धार," और "मेरा गढ़" है। आज के वचन, भजन संहिता 62:2 और 6 को देखें: "वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है; वही मेरा गढ़ है; मैं कभी नहीं डगमगाऊँगा" (पद 2); "वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है; वही मेरा गढ़ है; मैं नहीं डगमगाऊँगा" (पद 6)। जब हम परमेश्वर को वैसे ही जानते हैं जैसे वे हैं—उन्हें अपनी चट्टान, उद्धार और गढ़ के रूप में पहचानते हैं—और चुपचाप उन पर भरोसा करते हैं, तो हम अडिग रहते हैं। सचमुच, जो लोग परमेश्वर को जानते हैं वे मज़बूत होते हैं; जो उन्हें जानते हैं और पूरी तरह से उन पर भरोसा करते हैं, वे कभी नहीं डगमगाते। हालाँकि, जो लोग परमेश्वर को नहीं जानते—वे अज्ञानी जो परमेश्वर को अपनी चट्टान, अपना उद्धार और अपना गढ़ नहीं बनाते—वे "झुकी हुई दीवार और डगमगाती बाड़" के समान होते हैं (पद 3)।

(2) परमेश्वर का शांति से इंतज़ार करने के लिए, हमें परमेश्वर के अलावा किसी और चीज़ या इंसान पर भरोसा नहीं करना चाहिए।

(a) हमें लोगों पर भरोसा नहीं करना चाहिए।
आज का वचन देखिए, भजन 62:9: "सचमुच मामूली लोग बस एक साँस के बराबर हैं, और बड़े लोग झूठ के समान हैं; अगर उन्हें तराज़ू में तौला जाए, तो वे साँस से भी हल्के निकलेंगे।" लोग हमारे भरोसे का आधार नहीं हो सकते। इसीलिए दाऊद ने भजन 60:11 में माना: "...क्योंकि इंसान की मदद बेकार है।" उसने सिर्फ़ परमेश्वर पर भरोसा किया और हिम्मत से काम किया (वचन 12)।

(b) हमें ताकत या भौतिक चीज़ों पर भरोसा नहीं करना चाहिए।
आज का वचन देखिए, भजन 62:10: "ज़ुल्म पर भरोसा न करो, न ही लूट-पाट से कुछ पाने की बेकार उम्मीद रखो; अगर दौलत बढ़े, तो उस पर अपना दिल न लगाओ।" इंसानों की फितरत होती है कि जैसे-जैसे ताकत या दौलत बढ़ती है, वे उन पर ज़्यादा भरोसा करने लगते हैं। इसलिए, दाऊद हमें सलाह देता है कि हम ज़ुल्म, गलत तरीके से कमाई गई दौलत या भौतिक संपत्ति पर भरोसा न करें। हमें पूरी तरह और सिर्फ़ परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए।

(3) परमेश्वर का शांति से इंतज़ार करने के लिए, हमें परमेश्वर की ताकत और उसकी दयालुता पर भरोसा करना चाहिए।

आज का वचन देखिए, भजन 62:11–12: "परमेश्वर ने एक बार कहा है, मैंने दो बार सुना है: कि ताकत परमेश्वर की है। हे प्रभु, दया भी तेरी ही है; क्योंकि तू हर इंसान को उसके कामों के अनुसार फल देता है।" दाऊद ने परमेश्वर का जो वचन सुना, वह यह था कि "ताकत परमेश्वर की है" (वचन 11)। युद्ध परमेश्वर का है, और उस युद्ध में जीत भी उसी की है। अपनी ताकत से, परमेश्वर हर इंसान को उसके कामों के अनुसार फल देता है। जहाँ परमेश्वर ने दाऊद को बचाया—एक ऐसा इंसान जिसने सिर्फ़ उस पर भरोसा किया और

शांति से उसका इंतज़ार किया—वहीं उसने आखिर में अबशालोम और उसके साथियों को नष्ट कर दिया, जिन्होंने दाऊद को मारने की कोशिश की थी।

आइए हम सब सिर्फ़ परमेश्वर की ओर देखें! आइए हम परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखें—वही हमारा उद्धार, हमारी उम्मीद, हमारी चट्टान और हमारा गढ़ है। आइए हम शांति से उसके सामने आएँ और अपने दिल की बात कहें। आइए हम लोगों, ताकत या दौलत जमा करने पर भरोसा न करें; इसके बजाय, आइए हम परमेश्वर की शक्ति और उसकी दया पर भरोसा रखें। जब हम ऐसा करते हैं, तो जो मुश्किलें या मुसीबतें दूसरों को बहुत बड़ी लगती हैं—जैसे अबशालोम—वे हमें, जो परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखते हैं, बस गिरने वाली दीवार या हिलती हुई बाड़ जैसी मामूली लगेंगी। आइए हम सब चुपचाप सिर्फ़ परमेश्वर की ओर देखें, जो हमारी चट्टान, हमारा उद्धार और हमारा गढ़ है!

जब मेरा दिल डगमगाता है

“हे लोगों, हर समय उस पर भरोसा रखो; उसके सामने अपने दिल की बातें कहो। परमेश्वर हमारी शरणस्थान है। सेलाह” (भजन संहिता 62:8)।

मुझे उस सबक की याद आती है कि अनुग्रह पाने के बाद भी हमें सावधान रहना चाहिए। 2016 में, कोरिया की इंटरनेट मिनिस्ट्री यात्रा से अमेरिका लौटने के बाद—वह समय बहुत ज़्यादा अनुग्रह से भरा था—मैंने एक ऐसा पल महसूस किया जब मेरा दिल डगमगाने लगा। मुझे पता भी नहीं चला और मैं उदासी की हालत में जाने लगा। हालाँकि मैं थकान से उबर रहा था, लेकिन मैं समझ नहीं पा रहा था कि मेरा मूड क्यों कभी उदासी तो कभी स्थिरता के बीच बदलता रहता था। इसी उलझन के बीच, मैंने आज का वचन, भजन संहिता 62 पढ़ा, और आयत 3 ने मेरा ध्यान खींचा: “तुम कब तक एक आदमी पर हमला करोगे? तुम सब मारे जाओगे, जैसे झुकी हुई दीवार और डगमगाती हुई बाड़।” भजनकार दाऊद पर हमला हो रहा था; उसके दुश्मन उसे गिराने के लिए एकजुट हो गए थे। उसने अपनी मुश्किल हालत की तुलना झुकी हुई दीवार या डगमगाती हुई बाड़ से की। ऐसा इसलिए था क्योंकि उसके दुश्मन न केवल उसे उसकी ऊँची जगह से गिराने की साज़िश रच रहे थे, बल्कि झूठ बोलने में भी मज़ा ले रहे थे—मुँह से तो आशीर्वाद देते थे लेकिन दिल में बद्दुआ देते थे (आयत 4)। दूसरे शब्दों में, वे दाऊद को हिलाना चाहते थे—खासकर, उन सुरक्षा घेरों को अस्थिर करके गिराना चाहते थे, जैसे दीवारें या बाड़, जो उसकी रक्षा करते थे। शैतान का काम और रणनीति ठीक यही है। शैतान लगातार हम पर हमला करता है, और उन दीवारों और बाड़ों को हिलाने और गिराने की कोशिश करता है जो हमारे दिलों की रक्षा करते हैं—जो जीवन का स्रोत है (नीतिवचन 4:23)। शैतान लगातार हमारे दिलों पर हमला करता है, और हमें निराश, उदास और यहाँ तक कि हताश करने की कोशिश

करता है। नतीजतन, कई बार हमारे दिल डगमगा जाते हैं। ऐसे पलों में हमें क्या करना चाहिए? मैंने दो बातों पर विचार किया है:

पहली बात, जब हमारे दिल डगमगाते हैं, तो हमें चुपचाप परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए।

भजन संहिता 62:8 के पहले हिस्से को देखें: “हे लोगों, हर समय उस पर भरोसा रखो...” [(समकालीन कोरियाई संस्करण) “मेरे लोगों, हमेशा परमेश्वर पर भरोसा रखो”]। जब शैतान के हमलों से हमारा दिल डगमगाता है, तो हमें एक साथ दो सच्चाइयों को समझना चाहिए: (1) हमें अपनी दौलत पर भरोसा नहीं करना चाहिए, भले ही वह बढ़ जाए (पद 10, कंटेम्पररी कोरियन वर्शन), और (2) हमें सिर्फ़ परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए (पद 1, 2, 5, 6)। शैतान अक्सर हमें भौतिक चीज़ों का लालच देकर हमला करता है। वह पैसे का लालच देकर हमें बहकाने की पूरी कोशिश करता है, खासकर तब जब हमें पैसों की ज़रूरत होती है। वह हमें लुभाने के लिए हमारी दौलत को बढ़ने देता है, और आखिर में हमें प्रभु और पैसे, दोनों की सेवा करने के लिए उकसाता है। शैतान के इस लालच में हमारा दिल आसानी से बहक सकता है। लेकिन, जैसा कि बाइबल कहती है, हमें दौलत पर भरोसा नहीं करना चाहिए, भले ही वह बढ़ जाए (पद 10, कंटेम्पररी कोरियन वर्शन)। इसके बजाय, भजनकार दाऊद की तरह, हमें हमेशा सिर्फ़ परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए (पद 8)। जब हमारा दिल डगमगाता भी है, तब भी हमारी आत्मा को चुपचाप सिर्फ़ परमेश्वर की ओर देखना चाहिए (पद 1, 5)। हमें चुपचाप सिर्फ़ प्रभु की ओर देखना चाहिए (पद 2, 6)। यह कैसे मुमकिन है? जब हमारा दिल डगमगाता है, तो हम चुपचाप सिर्फ़ परमेश्वर की ओर कैसे देख सकते हैं? मुझे भजन संहिता 42:5, 11 और 43:5 के शब्द याद आते हैं: "हे मेरी आत्मा, तू क्यों उदास है? तू मेरे भीतर इतनी बेचैन क्यों है? परमेश्वर पर भरोसा रख, क्योंकि मैं फिर भी उसकी स्तुति करूँगा, जो मेरा उद्धारकर्ता और मेरा परमेश्वर है।" मैं अक्सर इन पदों को परमेश्वर से अपनी प्रार्थना बनाता हूँ। खासकर जब मैं निराश और बेचैन महसूस करता हूँ, तो मैं अपनी आत्मा से यह कहते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ: "जेम्स, तू क्यों उदास है? तू भीतर इतनी बेचैन क्यों है? जेम्स, परमेश्वर पर भरोसा रख।" जब मैं ऐसा करता हूँ, तो मुझे परमेश्वर की मदद मिलती है। परमेश्वर अपने वादे के शब्दों के ज़रिए मेरी निराश और बेचैन आत्मा को फिर से ताज़ा और उत्साहित करते हैं। इसी तरह, जब मेरा दिल डगमगाता है, तो मैं प्रार्थना में परमेश्वर के पास जाना चाहता हूँ और अपनी आत्मा से वैसे ही पुकारना चाहता हूँ जैसे भजनकार दाऊद ने किया था: "हे मेरी आत्मा, सिर्फ़ परमेश्वर में ही

विश्राम पा" (62:5)। हमें चुपचाप सिर्फ़ परमेश्वर की ओर क्यों देखना चाहिए? इसलिए क्योंकि "मेरा उद्धार" और "मेरी आशा" प्रभु से ही आती है (पद 1, 5)। ऐसा इसलिए है क्योंकि सिर्फ़ प्रभु ही "मेरी चट्टान" और "मेरा गढ़" हैं (पद 2, 6)। इसलिए, जब हम चुपचाप परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और उनकी ओर देखते हैं, तो हम डगमगाएंगे नहीं (पद 2, 6)। इसके बजाय, हमें ताकत मिलेगी (यशायाह 30:15)।

आखिर में, दूसरी बात यह है कि जब हमारा मन डगमगाता है, तो हमें अपना मन उनके सामने खोल देना चाहिए। आज के वचन, भजन संहिता 62:8 को देखें: "हे लोगों, हर समय उस पर भरोसा रखो; उसके सामने अपना मन खोल दो; परमेश्वर हमारे लिए शरणस्थान है (सेलाह)।" समुदाय के कई सदस्य अपनी चिंताओं और संघर्षों को साझा नहीं कर पाते हैं। ऐसा लगता है कि वे ऐसा इसलिए नहीं कर पाते क्योंकि उन्हें डर होता है कि अगर वे अपना बोझ साझा करेंगे, तो यह बात चर्च में फैल जाएगी और आखिरकार उन्हें दुख पहुंचाएगी। नतीजतन, उनके पास इन चिंताओं और संघर्षों को अकेले ढोने के अलावा कोई चारा नहीं बचता। हालांकि चर्च को एक-दूसरे के साथ बांटने वाला समुदाय होना चाहिए, लेकिन ऐसा लगता है कि एक-दूसरे की चिंताओं को गहराई से साझा करने का माहौल नहीं बन पाया है। यह सचमुच एक दुखद सच्चाई है। फिर भी, इस सच्चाई के बावजूद हम निराश नहीं होते क्योंकि हम प्रभु के सामने आ सकते हैं और अपना मन खोल सकते हैं। इसीलिए मुझे व्यक्तिगत रूप से भजन 539, "चुपचाप यीशु के पास जाओ" बहुत पसंद है। इसका कोरस कुछ इस तरह है: "चुपचाप प्रभु यीशु के पास जाओ और अपना मन खोल दो; प्रभु, जो गुप्त में देखते हैं, बड़ी कृपा करेंगे।" हमें कितना आभारी होना चाहिए कि हम चुपचाप प्रभु के पास जा सकते हैं और अपना मन खोल सकते हैं। यह एक सौभाग्य और आशीष है कि हम प्रार्थना में प्रभु के पास आ सकते हैं—जो हमसे सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं और हमें सबसे अच्छी तरह जानते हैं—और रोते हुए अपनी गहरी भावनाओं को उनके सामने रख सकते हैं। भजनकार दाऊद ने इस्राएल के लोगों को हमेशा परमेश्वर पर भरोसा करने और उनके सामने अपना मन खोलने के लिए प्रोत्साहित किया क्योंकि परमेश्वर हमारा शरणस्थान है (पद 8)। वह यह सलाह इसलिए दे पाए क्योंकि उन्होंने खुद, दुश्मनों के हमलों के बीच (पद 3–4), पूरी तरह से परमेश्वर पर—जो उनकी ताकत, उनकी चट्टान और उनका शरणस्थान थे—भरोसा किया था और उनके सामने अपना मन खोल दिया था (पद 7)। ऐसा करने पर, दाऊद ने परमेश्वर का वचन सुना। उन्होंने दो बातें सुनीं: (1) "शक्ति परमेश्वर की है" (वचन 11) और (2) "सच्चा प्रेम प्रभु का है" (वचन 12)। जब हमारा मन डगमगाता है, तो अगर हम परमेश्वर पर भरोसा रखें और अपना मन उनके सामने खोल दें, तो

हम उनकी शक्ति और उनके प्रेम का अनुभव करेंगे। चुपचाप केवल परमेश्वर की ओर देखने और उन पर भरोसा रखने से, हमें वह शक्ति मिलेगी जो वे देते हैं (यशायाह 30:15) और हम उनके उस अनंत प्रेम का अनुभव करेंगे, जो जीवन से भी बेहतर है (भजन संहिता 63:3)।

मैं इस मनन को समाप्त करना चाहता हूँ। हम एक डगमगाती दीवार या झुकी हुई बाड़ की तरह हैं (62:3, *समकालीन कोरियाई संस्करण*)। शैतान और हमारे दुश्मन लगातार हमारे खिलाफ मिलकर हमले कर रहे हैं (वचन 3)। उन्हें झूठ बोलने में मज़ा आता है; वे मुँह से कुछ और कहते हैं और मन में कुछ और सोचते हैं (वचन 4) और धोखे का सहारा लेते हैं (वचन 9); उनका मकसद बस हमें विश्वास से डिगाना है (वचन 4)। वे हमारे मन को हिलाने में पूरी तरह सक्षम हैं। ऐसे समय में, हमें चुपचाप परमेश्वर पर निर्भर रहना चाहिए और उन पर भरोसा करना चाहिए (वचन 8)। हमें चुपचाप केवल परमेश्वर की ओर देखना चाहिए, जो हमारा उद्धार और हमारी आशा हैं (वचन 1, 5)। और हमें उनके सामने अपना मन खोल देना चाहिए (वचन 8)। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर अपनी शक्ति और अपने सच्चे प्रेम से हमारे मन को संभाले रखेंगे (वचन 11–12)। नतीजतन, हम फिर कभी नहीं डगमगाएँगे (वचन 2, 6)।

"हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है"

[भजन संहिता 63]

आज सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, मैंने नीतिवचन 12:3 पर मनन किया: "दुष्टता से मनुष्य स्थिर नहीं रह सकता, परन्तु धर्मी की जड़ कभी नहीं हिलती।" जब मैंने धर्मियों की अटूट और मज़बूत जड़ों पर विचार किया और सोचा कि कोई व्यक्ति इतना गहरा विश्वास कैसे पा सकता है, तो मुझे उसी अध्याय की पहली आयत में इसका उत्तर मिला: "जो शिक्षा से प्रेम करता है, वह ज्ञान से प्रेम करता है..." धर्मियों का अटूट और गहरा विश्वास परमेश्वर के ज्ञान पर ही टिका होता है। हालाँकि, जैसा कि डॉ. मार्टिन लॉयड-जोन्स ने अपनी किताब *स्पिरिचुअल कॉन्फ्लिक्ट* (आध्यात्मिक संघर्ष) में बताया है, शैतान की चालों में से एक चाल हमें परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ने से रोकना है। आखिरकार, हम पर "प्रभु के वचन को सुनने का अकाल" आ पड़ा है—जैसा कि आमोस ने भविष्यवाणी की थी (आमोस 8:11)। नतीजतन, मेरा मानना है कि परमेश्वर के लोग ज्ञान की कमी के कारण नष्ट हो रहे हैं, ठीक वैसे ही जैसे भविष्यद्वक्ता होशे ने भविष्यवाणी की थी (होशे 4:6)। हमें परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ना चाहिए। जैसा कि प्रेरित पौलुस इफिसियों 4:13 में कहते हैं, हम सभी को विश्वास और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में एकता प्राप्त करनी चाहिए, परिपक्व बनना चाहिए और मसीह की पूर्ण कद-काठी तक पहुँचना चाहिए। तभी हम मज़बूत बनेंगे; क्योंकि बुद्धिमान शक्तिशाली होते हैं, और ज्ञान रखने वाले अपनी शक्ति बढ़ाते हैं (नीतिवचन 24:5)। भजन संहिता 63:1 में, दाऊद—यहूदा के जंगल में परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करने के बाद—परमेश्वर को शाही महल की तुलना में कहीं अधिक गहराई और व्यापकता से जानता है, जिससे वह यह स्वीकारोक्ति करता है: "हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है..." जब हम दाऊद के उस भजन पर मनन करते हैं जिसमें वह परमेश्वर को अपना परमेश्वर मानता है, तो मैं उस विश्वासी के हृदय पर विचार करना चाहता हूँ जो ऐसी स्वीकारोक्ति करता है, और परमेश्वर द्वारा दी गई शिक्षाओं को समझने के लिए छह मुख्य पहलुओं पर गौर करना चाहता हूँ।

पहला, दाऊद की आत्मा, जिसने स्वीकार किया, "हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है," परमेश्वर के लिए तरसती थी। भजन संहिता 63:1 को देखिए: “हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे बहुत लगन से ढूँढ़ता हूँ; मेरी आत्मा तेरे लिए प्यासी है; मेरा शरीर तेरे लिए व्याकुल है, जैसे सूखी और थका देने वाली ज़मीन पर जहाँ पानी नहीं है।” जैसा कि दाऊद ने बताया, जंगल एक “सूखी और थका देने वाली ज़मीन है जहाँ पानी नहीं है।” अबशालोम से भागते समय, दाऊद ने परमेश्वर को वैसे ही ढूँढ़ा जैसे कोई जंगल में प्यास लगने पर पानी ढूँढ़ता है। दूसरे शब्दों में, उसके मन में परमेश्वर को ढूँढ़ने की गहरी इच्छा थी। फिर भी, कोई सोच सकता है: “क्या दाऊद के मन में परमेश्वर को ढूँढ़ने की वैसी ही गहरी इच्छा थी जब वह शाही महल में था?” अपनी किताब *David: A Man of Passion and Destiny* (जो कोरियाई भाषा में *David: Spirituality Rooted in Reality* नाम से छपी है) में पादरी यूजीन पीटरसन कहते हैं कि दाऊद ने अपने जीवन में जो गंभीर पाप किए, उनमें से सबसे अक्षम्य पाप—और जिसके लिए उसे सबसे भारी कीमत चुकानी पड़ी—वह था अपने बेटे अबशालोम को सचमुच माफ न करना। शाही महल में किए गए पाप के बारे में उन्होंने यह बात कही: “बथशेबा के साथ व्यभिचार वासना के कारण हुआ एक क्षणिक पाप था, और उसे छिपाने के लिए राजा के तौर पर उसने जो पाप किया, वह था उरिय्याह की हत्या। लेकिन, अबशालोम को ठुकराना एक ऐसा पाप था जिसमें उसने अपने बेटे के साथ उस भरपूर आशीष को साझा करने से इनकार कर दिया जो उसे खुद परमेश्वर से मिली थी” (पीटरसन)। पादरी पीटरसन का मानना था कि जब दाऊद ने अबशालोम को महल में वापस लाने के बाद भी उसके साथ रूखा व्यवहार किया, तो परमेश्वर में उसकी रुचि और उसकी प्रार्थना का जीवन भी शायद कम हो गया। दूसरे शब्दों में, दाऊद ने अबशालोम को सचमुच माफ किए बिना जितना दूर रखा, वह परमेश्वर से उतना ही दूर होता गया। ज़ाहिर है, इसका मतलब यह था कि वह परमेश्वर से सच्ची प्रार्थना शायद ही करता था।

मेरा मानना है कि यह हमारी अपनी हालत को दिखाता है; हम दाऊद से अलग नहीं हैं। हम अक्सर परमेश्वर की दी हुई भरपूर आशीषों का आनंद लेते हुए उसे सच्चे मन से ढूँढ़ने में नाकाम रहते हैं; फिर भी, जब हमारे पाप हमें अनुशासन की ओर ले जाते हैं—और हमें “शाही महल” के आराम भरे जीवन से निकालकर जंगल में ले आते हैं—तो हम खुद को सांसारिक साधनों से रहित एक “थका देने वाली ज़मीन” पर पाते हैं, जहाँ हम सच्ची प्रार्थना में परमेश्वर को पुकारते हैं। यह निस्संदेह परमेश्वर की कृपा और आशीष का काम है। यह एक

आशीष है कि परमेश्वर हमें जंगल में ले जाता है। होशे 2:14 पर विचार करें: "इसलिए अब मैं उसे फुसलाकर जंगल में ले जाऊँगा और उससे प्यार से बात करूँगा।" होशे के समय में, इस्राएल के लोग मिली-जुली आस्था मानते थे, वे परमेश्वर और बाल (Baal) दोनों की सेवा करते थे; इसलिए, परमेश्वर ने उन्हें प्यार से अनुशासित किया और जंगल में ले गए। फिर भी, अद्भुत कृपा और आशीष की बात यह है कि उस जंगल में भी परमेश्वर ने इस्राएल से प्यार से बात की।

जब हम भरपूर जीवन के बीच परमेश्वर से दूर होकर पाप करते हैं, तो वही हमें प्यार भरे अनुशासन के ज़रिए जंगल में ले जाते हैं। परमेश्वर की सच्ची इच्छा क्या है? उस जंगल में, वह हमारे अंदर खुद को खोजने की सच्ची तड़प को फिर से जगाना चाहते हैं। जंगल में दाऊद की यह तड़प कैसे फिर से जगी? पानी से रहित, सूखे और थकाऊ जंगल में—उसके शरीर को बतशेबा जैसी स्त्री की चाहत या लालसा नहीं हुई। दूसरे शब्दों में, राजमहल में एक समय ऐसा था जब दाऊद को शरीर की लालसा, आँखों की लालसा और जीवन का घमंड (1 यूहन्ना 2:16) सताता था, लेकिन जंगल में उसकी आत्मा और शरीर दोनों केवल प्रभु के लिए तड़पने और उनकी आराधना करने लगे। इस प्रकार, दाऊद यह स्वीकार कर सका, "हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है" (भजन संहिता 63:1)।

दूसरी बात, दाऊद की आत्मा—जिसने स्वीकार किया था, "हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है"—उसने रात के समय प्रभु को याद किया।

भजन संहिता 63:6 को देखें: "जब मैं अपने बिस्तर पर तुझे याद करता हूँ, तो रात के पहरों में तुझ पर मनन करता हूँ।" हालाँकि सुबह का समय—दिन की शुरुआत—प्रभु पर मनन करने का एक अद्भुत समय है, लेकिन रात का समय—जब दिन का काम खत्म हो जाता है—भी ऐसे मनन के लिए बहुत अच्छा समय है। हमें अकेले शांत बैठकर प्रभु पर मनन करने, और दिन भर हमारे जीवन में उन्होंने जो कुछ किया है, उस पर विचार करने और उसे याद करने के लिए कुछ पलों की ज़रूरत होती है। इसके अलावा, पवित्र शास्त्र में बताए गए परमेश्वर पर मनन करने की आदत डालना—और यह सोचना कि आज हम जिस परमेश्वर से मिले, वह असल में कौन है—हमारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए बहुत फायदेमंद होगा। डॉ. पार्क युन-सन ने एक

बार कहा था, "जब कोई व्यक्ति अपने बिस्तर पर होता है, तो वह अपना ध्यान बाहरी चीज़ों से हटा लेता है। वह पल ईश्वर जैसा हृदय विकसित करने का एक बेहतरीन मौका होता है।"

इसका क्या मतलब है कि यहूदा के जंगल में रात के समय दाऊद की आत्मा ने प्रभु को याद किया? इसका मतलब है कि दाऊद को याद आया कि प्रभु ने पहले उसकी कैसे मदद की थी। इसलिए, उसे भरोसा था कि जिस प्रभु ने पहले उसकी मदद की थी, वह जंगल में उसकी मौजूदा स्थिति में भी उसकी मदद करेगा। इस तरह, उसने कहा, "क्योंकि तू मेरी मदद करता रहा है, इसलिए मैं तेरे पंखों की छाया में खुशी मनाऊंगा" (पद 7)। दाऊद जानता था कि परमेश्वर की कृपा ने ही उसे जंगल में भागने में मदद की थी—तब भी जब अबशालोम उसका पीछा कर रहा था—ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने पहले उसकी मदद की थी। इसलिए, जब उसने रात में परमेश्वर की मदद के बारे में सोचा, तो उसने प्रभु—अपने मददगार—की स्तुति की और उनके पंखों की शरण ली।

प्रभु "मेरी मदद" हैं। जब हम खतरे में होते हैं, तो वह हमें अपने पंखों की छाया में ले जाते हैं और हमारी रक्षा करते हैं। हमें इस प्रभु के बारे में सोचना चाहिए। खासकर, दाऊद की तरह, हमें रात में बिस्तर पर लेटे हुए प्रभु के बारे में सोचने के लिए समय निकालना चाहिए। हमें प्रभु की मदद को याद रखना चाहिए और उनकी बचाने वाली कृपा पर गहराई से विचार करना चाहिए।

तीसरी बात, दाऊद की आत्मा को इस बात को मानने में संतुष्टि मिली कि "हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है।"

भजन संहिता 63:5 पर विचार करें: "मेरी आत्मा ऐसे तृप्त होगी जैसे मज्जा और चिकनाई से..." ज़ाहिर है, अबशालोम से भागकर यहूदा के जंगल में जाने के बाद, दाऊद राजमहल में मिलने वाले बढ़िया खाने—मज्जा और चिकनाई—का मज़ा नहीं ले पा रहा होगा। दूसरे शब्दों में, शारीरिक रूप से, उसे उस सूखे, पानी-विहीन जंगल में संतुष्टि नहीं मिल सकती थी। फिर भी, आध्यात्मिक रूप से वह संतुष्ट था। उसे जंगल में ऐसी आध्यात्मिक संतुष्टि कैसे मिल सकती थी, मानो वह सबसे बढ़िया दावत का मज़ा ले रहा हो? ऐसा इसलिए था

क्योंकि उसने वहाँ परमेश्वर की दया का अनुभव किया था। यह महसूस करने के बाद कि प्रभु की दया जीवन से भी बढ़कर है, उसकी आत्मा को परमेश्वर के अनंत प्रेम में संतुष्टि मिली (पद 3)।

क्या हमारी आत्माएँ अभी सचमुच संतुष्ट हैं? हो सकता है कि दाऊद के विपरीत, हम आराम से रह रहे हों—शायद महल जैसी जगह पर, शारीरिक रूप से अच्छी तरह खा-पी रहे हों और तृप्त हों—फिर भी आध्यात्मिक रूप से भूखे हों? दाऊद ने कभी राजमहल में शारीरिक संतुष्टि का आनंद लिया था, लेकिन वह दौर पाप में खत्म हुआ—बथशेबा के साथ व्यभिचार और उरिय्याह की हत्या—जिसके बाद परमेश्वर ने उसे अनुशासित किया, और उसे धोखे का सामना करना पड़ा और अबशालोम से भागना पड़ा। यहूदा के जंगल में उस कठिन समय के दौरान, शारीरिक रूप से भूखा और बेसहारा होने के बावजूद, उसने जंगल को एक पवित्र स्थान में बदल दिया; परमेश्वर की शक्ति और महिमा की लालसा करके, उसे अंततः आध्यात्मिक संतुष्टि मिली।

एक गॉस्पेल गीत है जिसका शीर्षक है "देयर इज़ नन लाइक यू" (There is None Like You)। गीत के बोल कुछ इस तरह हैं: "कोई भी प्रभु की तरह मेरे दिल को नहीं छूता; इतने लंबे समय तक खोजने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि मेरे लिए उनके अलावा कोई नहीं है। / उनकी दया नदी की तरह बहती है, और उनके स्पर्श से चंगाई मिलती है; वे अपने दुखियारे बच्चों को गले लगाते हैं—उनके अलावा कोई नहीं है। / कोई भी प्रभु की तरह मेरे दिल को नहीं छूता; इतने लंबे समय तक खोजने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि मेरे लिए उनके अलावा कोई नहीं है।" अंततः, जब हम भीड़ के बीच भी अकेलापन महसूस करते हैं, तो हमें सच्चे दिल से प्रभु को खोजना चाहिए, यह विश्वास करते हुए कि केवल परमेश्वर ही हमारी प्यासी आत्माओं को संतुष्ट कर सकते हैं। तभी हमारी आत्माओं को सच्ची संतुष्टि मिल सकती है। चौथा, दाऊद की आत्मा ने—यह मानते हुए कि "हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है"—प्रभु की स्तुति की।

भजन संहिता 63:3 को देखिए: "क्योंकि तेरी करुणा जीवन से भी उत्तम है, इसलिए मेरे होंठ तेरी स्तुति करेंगे।" दाऊद ने जंगल में परमेश्वर की स्तुति क्यों की? ऐसा इसलिए था क्योंकि उसने वहाँ परमेश्वर की करुणा का अनुभव किया था। दूसरे शब्दों में, जब दाऊद ने यहूदिया के जंगल में सच्चे मन से परमेश्वर को

खोजा, तो उसने उस प्रेम करने वाले परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस किया, जिससे उसने विश्वास का यह बयान दिया: परमेश्वर प्रेम करने वाला है।

पास्टर होंग सुंग-गियोन की किताब *द पर्सन गॉड सीक्स* (The Person God Seeks) के छठे अध्याय का शीर्षक है "वह प्रभु जो स्तुति में वास करता है: स्तुति की शक्ति।" उस अध्याय में, उन्होंने स्तुति की शक्ति के बारे में बात की: "स्तुति की शक्ति कहाँ है? यह स्तुति करने की क्रिया में नहीं है; बल्कि, जब स्तुति की विषय-वस्तु विश्वास का बयान होती है, तो परमेश्वर उस विश्वास के माध्यम से अपनी शक्ति प्रकट करते हैं। स्तुति विश्वास का एक बयान है। ... जब हम कहते हैं, 'मैं प्रभु की स्तुति करूँगा,' तो अंग्रेज़ी वाक्यांश 'I will praise You' (मैं तेरी स्तुति करूँगा) का अर्थ है स्तुति करने का जान-बूझकर किया गया चुनाव। इसका मतलब है कि तब भी परमेश्वर की स्तुति करना जब मेरे हालात इतने मुश्किल हों कि स्तुति करना असंभव लगे" (होंग सोंग-गियोन)। प्रेरितों के काम 16 में बताए गए पौलुस और सीलास इसके उदाहरण हैं; जेल में रहते हुए, उन्होंने प्रार्थना करते समय विश्वास के साथ परमेश्वर की स्तुति करने का संकल्प लिया। इसी तरह, दाऊद—जो आज के पाठ, भजन संहिता 63 का मुख्य पात्र है—ने परमेश्वर की स्तुति करने का संकल्प लिया क्योंकि उसने पहचाना कि परमेश्वर का अटूट प्रेम जीवन से भी बढ़कर है। जंगल में ही उसे अपने प्रति परमेश्वर के अनंत प्रेम का सच्चा एहसास हुआ। निश्चित रूप से, उसने शाही महल में परमेश्वर के अटूट प्रेम का उतना गहरा अनुभव नहीं किया होता जितना उसने यहूदिया के जंगल में किया था। यदि उसने महल में उस प्रेम का सच्चा अनुभव किया होता, तो शायद वह अपने बेटे अबशालोम को सच्चे दिल से माफ़ न कर पाने का पाप न करता—अबशालोम द्वारा अपने दूसरे बेटे अम्नोन की हत्या करने के बाद भी उसे दूर रखना। आखिरकार, जब दाऊद महल से निकाले जाने के बाद अबशालोम से भाग रहा था—और परमेश्वर ने उसे उसके बेटे के आदमियों से बचाया और उसे "अपने पंखों की छाया" (पद 7) में पनाह दी—तब उसने यहूदिया के जंगल में परमेश्वर के प्रेम का अनुभव किया। महल के बजाय जंगल में ही दाऊद ने परमेश्वर के अच्छे और दयालु हाथ को समय पर कृपा के साथ अपनी मदद करते हुए और गहराई से महसूस किया। जंगल में, दाऊद को एहसास हुआ कि परमेश्वर की उसके लिए तड़प, परमेश्वर के लिए उसकी अपनी तड़प से कहीं ज़्यादा गहरी थी; इस अद्भुत प्रेम से प्रेरित होकर, दाऊद उसकी स्तुति किए बिना नहीं रह सका।

पांचवीं बात, दाऊद की आत्मा—यह स्वीकार करते हुए कि "हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है"—प्रभु के पीछे-पीछे चलती रही।

भजन संहिता 63:8 को देखें: "मेरी आत्मा तेरे पीछे-पीछे चलती है; तेरा दाहिना हाथ मुझे थामे रहता है।" यहाँ "प्रभु के पीछे-पीछे चलने" का क्या अर्थ है? हमें इसका संकेत व्यवस्थाविवरण 4:4 में मिलता है: "परन्तु तुम जो अपने परमेश्वर यहोवा से लिपटे रहे, आज जीवित हो, तुम में से हर एक।" दूसरे शब्दों में, प्रभु के पीछे-पीछे चलने का अर्थ है उससे लिपटे रहना और कभी भी उससे दूर न होना। यह प्रभु के प्रति दाऊद की अटूट निष्ठा को दर्शाता है। संक्षेप में, दाऊद ने यहूदिया के जंगल में फिर से खुद को समर्पित किया। शाही महल में रहते हुए, वह कुछ समय के लिए प्रभु से भटक गया था और परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था; फिर भी, जब उसे जंगल में निकाल दिया गया, तो उसने परमेश्वर का साथ नहीं छोड़ा, बल्कि प्रभु के और भी करीब हो गया। दाऊद, जो महल में प्रभु से लिपटे रहने में विफल रहा था, जंगल में उससे मजबूती से जुड़ा रहा। दूसरे शब्दों में कहें तो, उसने जंगल में परमेश्वर के प्रति अटूट निष्ठा दिखाई—कुछ ऐसा जो वह महल में नहीं कर पाया था। क्या यह दिलचस्प नहीं है? यह देखना कि कैसे वह महल में डगमगा गया था लेकिन जंगल में उसने अपनी निष्ठा बनाए रखी... जंगल में, दाऊद ने प्रभु के दाहिने हाथ को खुद को थामे हुए महसूस किया। उसने जंगल को अपना पवित्र स्थान बनाकर प्रभु की "सामर्थ्य और महिमा" को देखने की कोशिश की (भजन संहिता 63:2); परमेश्वर ने उस प्रार्थना का उत्तर अपनी सामर्थ्य से—खासकर अपनी शक्ति के दाहिने हाथ से—दाऊद को मजबूती से थामकर दिया। नतीजतन, दाऊद प्रभु से मजबूती से जुड़ा रहा और कभी भी उससे दूर नहीं हुआ। हमें प्रभु का पूरी तरह से अनुसरण करना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो उनकी शक्ति का दाहिना हाथ हमें मजबूती से थामे रहता है। दूसरे शब्दों में, जंगल में ही—यानी हमारी सबसे बड़ी कमज़ोरी और मुश्किलों के समय—हम परमेश्वर की शक्ति का अनुभव करते हैं। प्रभु न केवल हमें अपने शक्तिशाली दाहिने हाथ से मजबूती से थामे रहेंगे, बल्कि वे हमारे दुश्मनों का नाश भी करेंगे, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने उन लोगों का नाश किया था जो दाऊद की जान लेना चाहते थे (पद 9–10)।

आखिर में, छठा बिंदु: दाऊद की आत्मा—यह स्वीकार करते हुए कि "हे परमेश्वर, तू ही मेरा परमेश्वर है"—परमेश्वर में आनंदित होती है।

भजन संहिता 63:11 को देखिए: "परंतु राजा परमेश्वर में आनंदित होगा; जो कोई उसकी शपथ खाता है, वह उसकी बड़ाई करेगा; लेकिन झूठ बोलने वालों का मुँह बंद कर दिया जाएगा।" दाऊद ने जंगल में आनंद का अनुभव किया। वह आनंद उन सांसारिक सुखों से बहुत अलग था जिनका उसने राजमहल में कुछ समय के लिए अनुभव किया था। जंगल में उसने जिस आनंद का अनुभव किया, उसे न तो दुनिया समझ सकती थी और न ही दे सकती थी। वह इसलिए आनंदित हुआ क्योंकि उसने जंगल में प्रभु की सदा बनी रहने वाली प्रेमपूर्ण दया का अनुभव किया। दाऊद खुश था क्योंकि उसकी आत्मा को वहाँ संतुष्टि मिली थी। प्रभु की मदद पाकर और उनकी शक्ति के दाहिने हाथ से थामे जाने के कारण, दाऊद आनंदित हुए बिना नहीं रह सका। परमेश्वर में आनंद पाना ज़रूरी नहीं कि किसी व्यक्ति की परिस्थितियों पर निर्भर हो। दाऊद को देखिए; वह राजमहल में नहीं, बल्कि जंगल में परमेश्वर में आनंदित हुआ। दाऊद का आनंद पूरी तरह से प्रभु से मिला था; उसे अपनी खुशी और आनंद केवल प्रभु में ही मिला। इसलिए, दाऊद की तरह हमें भी आनंदित होना चाहिए और अपना आनंद केवल प्रभु में ही खोजना चाहिए।

पिछले सोमवार की शाम, मुझे अचानक हमारी इंग्लिश मिनिस्ट्री कम्युनिटी के एक भाई का फ़ोन आया। वह एक "रहस्योद्घाटन" (revelation) साझा करने के लिए मिलना चाहता था जो उसे पिछले रविवार की इंग्लिश सर्विस के दौरान मिला था। हम अगले दिन, मंगलवार को लंच और बातचीत के लिए मिले। उसे पूरा यकीन था कि प्रभु चाहते हैं कि वह कलीसिया—मसीह की देह—की सेवा करे। उसने मुझसे पूछा कि वह कैसे सेवा कर सकता है—चाहे छोटे से ही तरीके से क्यों न हो—और मैंने सबसे पहले उसे नियमित रूप से रविवार की आराधना में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया। ऐसा इसलिए है क्योंकि सेवा के काम स्वाभाविक रूप से एक आराधक के तौर पर किसी व्यक्ति की पहचान से निकलने चाहिए। वह मेरे सुझाव से सहमत लग रहा था। जब हमने प्रभु में एक-दूसरे के साथ खाना खाते हुए अपने दिल की बातें साझा कीं, तो मुझे उनके अटूट विश्वास की झलक देखकर बहुत खुशी और कृतज्ञता महसूस हुई—एक ऐसा विश्वास जो सचमुच ईश्वर के अस्तित्व पर भरोसा करता था।

भविष्यवक्ता होशे हमें प्रोत्साहित करते हैं: "... आओ हम प्रभु को जानें; आओ हम उसे जानने के लिए आगे बढ़ें ..." (होशे 6:3)। मेरी प्रार्थना है कि जैसे-जैसे हम लगन से ईश्वर को जानने की कोशिश करते हैं, हम—

आप और मैं दोनों—दाऊद की तरह कह सकें: "हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है" (भजन संहिता 63:1)। इस रेगिस्तान जैसी दुनिया में रहते हुए, मेरी प्रार्थना है कि—मुसीबत, कठिनाई, सताहट और दुख के बीच भी, जिनका सामना हमें दाऊद की तरह करना पड़ सकता है—हम अपनी आत्मा को तृप्त करने वाले ईश्वर के काम का अनुभव करें, क्योंकि हम उसके लिए तरसते हैं और रात में उसे याद करते हैं। आइए हम उसके पंखों की छाया में अपने परमेश्वर की स्तुति करें और उसके अनंत प्रेम, शक्ति और महिमा का अनुभव करें। और आइए हम खुद को उसे फिर से समर्पित करें। जब हम ऐसा करेंगे, तो हम भी केवल परमेश्वर में आनंद मना सकेंगे, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया था।

जेम्स का गीत: वीराने में गाई गई स्तुति

"क्योंकि तेरा अटूट प्रेम जीवन से भी बेहतर है, इसलिए मेरे होंठ तेरी स्तुति करेंगे" (भजन संहिता 63:3)।

मैं उन सभी का दिल से स्वागत करता हूँ जो इस "स्तुति की रात" (Night of Praise) में शामिल हुए हैं। मुझे खुशी है कि हमारे चर्च की कोरियन मिनिस्ट्री की पूजा टीम (worship team) ने यह कार्यक्रम तैयार किया है, जिससे हमें एक साथ पूरे दिल से परमेश्वर की स्तुति करने का मौका मिला है। जब मैं उन प्यारे भाई-बहनों के बारे में सोचता हूँ जिन्होंने इस शाम की तैयारी की है, तो मैं इसे "वीराने में गाया गया गीत" कहना चाहता हूँ। बेशक, हमारी नज़र में वे सचमुच किसी वीराने या जंगल में नहीं रह रहे हैं; वे शहर के बीचों-बीच रहते हैं। फिर भी, जब मैं उनके दिलों में झाँकता हूँ—परमेश्वर की स्तुति करने की उनकी सच्ची कोशिश को देखता हूँ, जो यीशु के उस प्रेम से प्रेरित है जो वीराने की सूखी ज़मीन पर भी एक सच्चे नखलिस्तान (oasis) की तरह है—तो यह वीराने में गाए गए गीत जैसा लगता है। ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने—मुसीबत और सताहट के बीच—वीराने को एक पवित्र स्थान में बदल दिया और प्रभु के अटूट प्रेम के लिए उनकी स्तुति की (जैसा कि आज के वचन, भजन संहिता 63:3 में बताया गया है), वैसे ही ये प्यारे भाई-बहन आज शाम प्रभु के प्रेम से प्रेरित होकर परमेश्वर की स्तुति कर रहे हैं।

व्यक्तिगत रूप से, इस "स्तुति की रात" के बारे में सोचते हुए, मैंने अपने जीवन पर भी नज़र डालने के लिए कुछ समय निकाला। मैंने अपनी जीवन-कहानी को छह अलग-अलग गीतों के नज़रिए से देखने का फैसला किया:

मैं वह हूँ जिसे हमारे चर्च के लोग "क्रेडल क्रिश्चियन" (cradle Christian) कहते हैं—यानी ऐसा व्यक्ति जो विश्वासियों के परिवार में पैदा हुआ हो। असल में, मेरा जन्म एक पादरी के परिवार में हुआ था, इसलिए शायद मैंने अपनी माँ के गर्भ में रहते हुए ही चर्च जाना शुरू कर दिया था। मुझे कोरिया के सांगग्ये-डोंग (Sanggye-dong) में सांगह्युन चर्च (Sanghyun Church) में बिताया अपना बचपन आज भी अच्छी तरह याद है। जब मैं उस समय को याद करता हूँ जब मैं उस चर्च में जाता था जहाँ मेरे पिता सेवा करते थे, तो मुझे जो भजन सबसे ज़्यादा याद आता है, वह है "यू कांट बाय योर वे इन" (You Can't Buy Your Way In) — जिसे अक्सर "आप पैसे से अंदर नहीं जा सकते" (You can't go with money) वाली लाइन से जाना जाता है। हालांकि इसके तीन पद हैं, मुझे असल में सिर्फ़ पहला ही याद है: (पद 1) "पैसे से आप नहीं जा सकते—परमेश्वर का राज्य; ताकत से आप नहीं जा सकते—परमेश्वर का राज्य," (कोरस) "एक ऐसा राज्य जिसमें दोबारा जन्म लेकर प्रवेश किया जाता है—परमेश्वर का राज्य; एक ऐसा राज्य जिसमें विश्वास से प्रवेश किया जाता है—परमेश्वर का राज्य।" मैं अक्सर सोचता हूँ कि इतनी कम उम्र में गाए गए सभी भजनों में से, यही भजन मेरे दिमाग में इतना साफ़ क्यों बसा हुआ है... शायद इसलिए क्योंकि पहले पद की शुरुआत में ही "पैसा" शब्द आता है। हाहा।

मुझे यह भी याद है कि एलिमेंट्री स्कूल से ग्रेजुएट होने के बाद—कोरियाई हिसाब से बारह साल की उम्र में—मैं अपने माता-पिता के साथ अमेरिका चला गया और कोरियाटाउन में रहने लगा। मुझे याद है कि मैं वहाँ बिना वर्णमाला जाने ही पहुँच गया था; जब मुझे अमेरिकी एलिमेंट्री स्कूल में दाखिले के लिए टेस्ट देना पड़ा, तो बीस शब्द याद करते हुए मैं रो पड़ा था। शायद इसलिए क्योंकि मैं किशोरावस्था में कदम रख ही रहा था, मुझे अमेरिका में जीवन के अनुकूल होने में संघर्ष करना पड़ा; सांस्कृतिक और भाषाई बाधाओं को पार करना मेरे लिए मुश्किल था। स्वाभाविक रूप से, मेरा झुकाव कोरियाई दोस्तों के साथ घूमने-फिरने की ओर हो गया। हाई स्कूल में पहुँचने पर, मैं दोस्तों के एक समूह के साथ जुड़ गया और एक ऐसे दौर से गुज़रा जिसे बागी या बिना किसी मकसद वाला दौर कहा जा सकता है। फिर भी, पादरी का बच्चा होने के नाते, मैं कभी भी रविवार की प्रार्थना सभाओं से नहीं चूकता था। इसी दौरान मेरी मुलाकात किम ह्युंग-सेओक और किम डोंग-गिल की रचनाओं से हुई। उनकी किताबें पढ़कर मैं एक उभरता हुआ दार्शनिक बन गया; मैं खुद से लगातार ऐसे सवाल पूछता था, जैसे "जीवन का उद्देश्य क्या है?" और "कोई सच में खुशी कैसे पा सकता है?"

और मैं दुनिया में उस खुशी और उद्देश्य की तलाश में भटकता रहता था। शायद इसलिए क्योंकि वह मेरे जीवन का एक मुश्किल दौर (?) था, अब पीछे मुड़कर देखने पर, मुझे वे भजन याद नहीं आते जो मैं उन दिनों गाया करता था।

फिर, कॉलेज के पहले साल में, कॉलेज मिनिस्ट्री के लिए यहीं पर एक रिट्रीट आयोजित की गई थी। शायद मैं उस सभा में अनिच्छा से शामिल हुआ था, सिर्फ़ इसलिए क्योंकि मैं एक पादरी का बेटा था। लेकिन, रिट्रीट की दूसरी या शायद आखिरी शाम को, मेरे साथ कुछ ऐसा हुआ जिसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी। मैं गेस्ट पास्टर को 'यूहन्ना 6' में बताए गए चमत्कार के बारे में बात करते हुए सुन रहा था—जहाँ यीशु ने सिर्फ़ दो मछलियों और पाँच रोटियों से 5,000 लोगों को खाना खिलाया था। मेरा दिल भावनाओं से भर गया; जब पास्टर ने उन लोगों को आगे आने के लिए कहा जो यीशु को अपना जीवन सौंपना चाहते थे—ठीक वैसे ही जैसे बाइबल में उस लड़के ने अपनी दो मछलियाँ और पाँच रोटियाँ दी थीं—तो मैं खुद को आगे बढ़ते हुए पाया। मुझे याद है कि मैं वहीं घुटनों के बल बैठ गया और फूट-फूटकर रोने लगा। मुझे ठीक-ठीक नहीं पता कि आँसू इतनी तेज़ी से क्यों बह रहे थे। किसी तरह, यीशु से मिलकर—जिन्हें मैं पहले सिर्फ़ दिमाग से जानता था—मेरी आँखों में आँसू आ रहे थे। जब मैंने उन सभी पापों के बारे में सोचा जो मैंने जान-बूझकर किए थे, तो मैं बस भगवान से माफ़ी माँगना चाहता था (पछतावे के आँसू)। मैं शुक्रगुज़ार भी था। मैं बहुत आभारी था कि उन्होंने मुझ जैसे व्यक्ति को बुलाया और इस्तेमाल किया—एक ऐसा व्यक्ति जो उन दो मछलियों और पाँच रोटियों से ज़्यादा कुछ नहीं था (शुक्रगुज़ारी के आँसू)। इसके अलावा, पवित्र आत्मा ने मेरे दिल को छुआ और मुझे अपना जीवन प्रभु को समर्पित करने के लिए प्रेरित किया (समर्पण के आँसू)। तभी मैंने पास्टर बनने का फ़ैसला किया और सेमिनरी की तैयारी शुरू कर दी। उससे पहले, मेरी यूनिवर्सिटी की पढ़ाई का मकसद "पैसा" था, लेकिन उस रिट्रीट के बाद, मेरा मकसद "यीशु" और "भगवान की महिमा" बन गया। तब से, एक भजन जो मुझे गाना बहुत पसंद है, वह है "माई लाइफ़, माई ऑल" (ना-उई मो-सेप, ना-उई सो-यू)। अंग्रेज़ी में, इसका मतलब है "आई ऑफ़र माई लाइफ़"—यानी, "मैं अपना जीवन समर्पित करता हूँ":

(पद 1) "मैं जो कुछ भी हूँ और जो कुछ भी मेरे पास है, सब मैं आपके सामने रखता हूँ, प्रभु। कृपया मेरे सारे दुख, मेरी सारी खुशियाँ और मेरे बहाए हर आँसू को स्वीकार करें।

(पद 2) मेरा अतीत और मेरा भविष्य, मेरे सपने और मेरी उम्मीदें—मैं सब आपको सौंपता हूँ। मेरी सभी इच्छाएँ और योजनाएँ, मेरे हाथ और मेरा दिल—कृपया उन्हें स्वीकार करें, प्रभु।

(कोरस) मैं आपको अपना जीवन सौंपता हूँ; अपनी महिमा के लिए इसका इस्तेमाल करें। जब तक मैं जीवित हूँ, मैं आपकी स्तुति करूँगा और खुशी का भेंट बनूँगा। कृपया मुझे स्वीकार करें; कृपया मुझे स्वीकार करें।" यह भजन तब से मेरे दिल में गहराई से बसा हुआ है और मेरी मौत के दिन तक ऐसा ही रहेगा। उसी समय के आस-पास मैंने खुद से गिटार बजाना सीखा। मैं हर वीकेंड अपने दोस्तों से मिलने यूनिवर्सिटी से लॉस एंजिल्स जाता था; लेकिन यीशु से मिलने और अपना जीवन उन्हें समर्पित करने के बाद, मैं उनके साथ शराब पीने, धूम्रपान करने, पार्टी करने और घूमने-फिरने में शामिल नहीं हो सकता था। पहले, मैंने अपनी अंतरात्मा की आवाज़ को नज़रअंदाज़ किया था और अपराधबोध के बावजूद बिना किसी मकसद के भटकता रहा था, लेकिन अब मैं उस तरह से नहीं जीना चाहता था। इसलिए, हर वीकेंड, मैं चर्च में एक टेबल पर अपना स्लीपिंग बैग बिछाता था। सोने से पहले, मैं बाहर रात के आसमान को देखता और सोचता कि मेरे दोस्त कहाँ होंगे, और—उस अकेलेपन के बीच—मैंने खुद से गिटार बजाना सीखा। मुझे याद है कि मेरी गॉस्पेल गीत-पुस्तिका के पिछले हिस्से में डायग्राम बने थे जिनमें दिखाया गया था कि कॉर्ड्स पर उंगलियाँ कैसे रखनी हैं। उनका इस्तेमाल करके, मैंने D, G और A जैसे कॉर्ड्स सीखे। जो पहला गाना मैंने खुद बजाया और गाया, वह था "गुड, गुड गॉड" (या "गॉड इज़ सो गुड")। इसमें सबसे आसान गिटार कॉर्ड्स थे। हाहा। "गुड, गुड गॉड; गुड, गुड गॉड; मेरा सचमुच अच्छा भगवान।" यीशु पर विश्वास करने के बाद, भगवान ने मेरे दिल में कॉलेज के दिनों में एक ईसाई कैंपस क्लब में सेवा करने की इच्छा जगाई, इसलिए मैंने अपने साथी भाई-बहनों की सेवा करने के लिए "पर्सनल मैनेजर" की भूमिका निभाई। यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं थी; उस समय, मैं एक पेजर रखता था, और जब भी मुझे कोई कॉल आता, तो मैं उनसे संपर्क करता था। चूँकि उनके पास कारें नहीं थीं, इसलिए मैं उन्हें जहाँ भी जाना होता था, वहाँ ले जाता था—चाहे वह किराने की दुकान हो, प्रार्थना के लिए चर्च हो, या डॉर्म्स में वापस जाना हो। सबकी देखभाल करते हुए, मुझे असल में कुछ बहनों के लिए रोमांटिक भावनाएँ महसूस होने लगीं, और उनकी सेवा करते हुए उन भावनाओं को दबाना एक बड़ी चुनौती थी। मुझे लगा कि सिर्फ़ मुझे ही मुश्किल हो रही है, लेकिन बाद में ग्रेजुएशन के बाद मुझे पता चला कि एक बहन भी मुझे चुपके से पसंद करती थी। साइकोलॉजी की अपनी पढ़ाई और इन बहनों की सेवा करने के दौरान, मैंने "दबाव" (suppression) और "अस्वीकृति" (rejection) की अवधारणाओं को गहराई से समझा।

उस समय मैंने अंग्रेज़ी का एक खास भक्ति गीत सीखा था—कई बार बहनों से ठुकराए जाने के बाद—जिसका नाम था बेनी हेस्टर का "नोबडी नोज़ मी लाइक यू" (Nobody Knows Me Like You)। मुझे वह पल आज भी अच्छी तरह याद है: जब मैंने उस बहन को पाने की हिम्मत जुटाई जिसे मैं पसंद करता था, लेकिन उसके जवाब से मुझे दुख पहुँचा; मैंने फ़ाइनल परीक्षा की पढ़ाई छोड़ दी, अकेले गाड़ी चलाकर बीच (beach) पर गया, खिड़कियाँ नीचे कीं और पूरे ज़ोर से वह गाना गाया। उस गाने के बोल—खासकर कोरस—ने मुझे बहुत सुकून दिया:

“कोई भी मुझे आपकी तरह नहीं जानता
आपने मुझे अपनी बाहों में भर लिया
आपने मुझे मुश्किलों से निकाला
और कई बार मुझे समझ नहीं आता कि क्या करूँ
भले ही कुछ लोग मुझे अच्छी तरह जानते हों
फिर भी कोई मुझे आपकी तरह नहीं जानता
मैं अपने सारे राज़ आपको बताता हूँ
जब भी मैं लड़खड़ाया और गिरा, आपने देखा
और मेरी सारी कमियाँ, हाँ, आप उन्हें अच्छी तरह जानते हैं
लेकिन आपने मुझे कभी दूर नहीं किया, नहीं, नहीं, नहीं”

कॉलेज और सेमिनरी से ग्रेजुएट होने और मिनिस्ट्रियल कैंडिडेट के तौर पर सेवा करने के दौरान, परमेश्वर ने मुझे मेरी पत्नी से मिलवाया। एक भजन जो आज भी मेरे दिल और यादों में बसा है, वह है भजन 492, “My Eternal Inheritance” (जिसे अंग्रेज़ी में अक्सर “Nearer, My God, to Thee” के नाम से जाना जाता है), जिसे हमने अपनी शादी में गाया था:

(पद 1) मेरी अनंत विरासत, जो जीवन से भी ज़्यादा कीमती है; जब तक मैं अपनी यात्रा पूरी न कर लूँ, मेरे साथ चलें। आपके करीब आते हुए, मैं आपकी ओर बढ़ता हूँ; जब तक मैं अपनी यात्रा पूरी न कर लूँ, मेरे साथ चलें।

(पद 2) दुनिया की दौलत, आराम और सारे सम्मान को छोड़कर, इस ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर चलते हुए मेरे साथ चलें। आपके करीब आते हुए, मैं आपकी ओर बढ़ता हूँ; जब तक मैं अपनी यात्रा पूरी न कर लूँ, मेरे साथ चलें।
(पद 3) अंधेरी घाटियों से गुज़रते और तूफानी समुद्रों को पार करते हुए, स्वर्ग के दरवाज़े तक पहुँचने तक मेरे साथ चलें। आपके करीब आते हुए, मैं आपकी ओर बढ़ता हूँ; जब तक मैं अपनी यात्रा पूरी न कर लूँ, मेरे साथ चलें। आमीन।

जब हमने उस समय परमेश्वर के लिए यह भजन गाया, तो न तो मेरी पत्नी और न ही मैं अपने आँसू रोक पाए।

एक और भजन जिसे मेरी पत्नी और मैं कभी नहीं भूल सकते, वह है जो हमने अपने पहले बच्चे के गुज़र जाने के बाद परमेश्वर के लिए गाया था; हमने इसे अंतिम संस्कार और अस्थि विसर्जन के बाद लौटते समय गाया था। यह अंग्रेज़ी भजन "My Savior's Love for Me" है (जिसे "I Stand Amazed" के नाम से भी जाना जाता है):

(पद 1) मैं नासरत के यीशु की उपस्थिति में आश्चर्यचकित खड़ा हूँ, और सोचता हूँ कि वह मुझसे कैसे प्यार कर सकते हैं, एक पापी, दोषी और अशुद्ध व्यक्ति से। (पद 2) मेरे लिए ही उन्होंने बगीचे में प्रार्थना की थी: "मेरी नहीं, बल्कि आपकी इच्छा पूरी हो।" उन्हें अपने दुखों के लिए कोई आँसू नहीं थे, लेकिन मेरे दुखों के लिए उनके पसीने की बूंदें खून की तरह थीं। (पद 3) स्वर्गदूतों ने दया से उन्हें देखा, और प्रकाश की दुनिया से उन्हें सांत्वना देने आए, क्योंकि उस रात उन्होंने मेरी आत्मा के लिए दुख उठाए थे।
(पद 4) उन्होंने मेरे पापों और दुखों को अपना लिया; वे उनका बोझ कलवरी तक ले गए, और अकेले ही दुख सहकर प्राण त्याग दिए।
(पद 5) जब महिमा में छुड़ाए गए लोगों के साथ मैं अंततः उनका चेहरा देखूंगा, तो युगों-युगों तक मेरे लिए उनके प्रेम का गुणगान करना ही मेरा आनंद होगा।
(कोरस)ओह, कितना अद्भुत! ओह, कितना शानदार! और मेरा गीत हमेशा यही होगा: ओह, कितना अद्भुत! ओह, कितना शानदार! मेरे उद्धारकर्ता का मेरे लिए प्रेम!

मैं स्तुति की शक्ति में विश्वास करता हूँ। पौलुस और सीलास का उदाहरण लें—परमेश्वर के सेवक जिनका ज़िक्र प्रेरितों के काम 16 में है—जिन्होंने जेल में रहते हुए प्रार्थना की और परमेश्वर की स्तुति की (प्रेरितों के काम 16:25)। अचानक, एक ज़बरदस्त भूकंप ने जेल की नींव हिला दी, दरवाज़े खुल गए, और सभी की बेड़ियाँ गिर गईं (पद 26)। आज रात, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, आपकी स्तुति हमारे दिलों के दरवाज़े खोल दे और एक चमत्कारिक कार्य करे जिससे हर सांसारिक बंधन टूट जाए। इसके अलावा, जैसे जेलर—जिसने शुरू में सोचा था कि कैदी भाग गए हैं और वह अपनी जान देने वाला था (पद 27)—पौलुस के ज़रिए प्रभु यीशु पर विश्वास करने लगा और अपने पूरे परिवार के साथ बहुत आनंदित हुआ (पद 31–34), वैसे ही मैं पूरे दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आज रात इस वीराने में गाई जाने वाली स्तुति उद्धार का एक चमत्कारिक कार्य शुरू करे।

परमेश्वर के कामों पर गहराई से सोचें!

[भजन संहिता 64]

पिछले सोमवार की शाम बाइबल पढ़ते समय, मैंने उपदेशक 3:18 पर गहराई से सोचा: "मैंने अपने मन में इंसानों की हालत के बारे में कहा कि परमेश्वर उनकी परीक्षा लेता है, ताकि वे देख सकें कि वे खुद जानवरों जैसे हैं।" इस आयत को पढ़कर मुझे पहले हैरानी हुई। यह बात कि परमेश्वर लोगों की परीक्षा लेता है ताकि उन्हें एहसास हो कि वे जानवरों से अलग नहीं हैं... आप इस आयत के बारे में क्या सोचते हैं? जब मैंने इस पर और सोचा, तो मुझे भजन संहिता 73:22 याद आया: "मैं बहुत मूर्ख और अज्ञानी था; मैं तेरे सामने जानवर जैसा था।" आसाफ, वह भजनकार जिसने कुछ समय के लिए बुरे लोगों की खुशहाली से जलन महसूस की थी, उसे परमेश्वर के पवित्र स्थान में जाने के बाद ही उनके आखिरी अंजाम का पता चला; तब उसने अपनी मूर्खता और अज्ञानता को माना और स्वीकार किया कि वह प्रभु के सामने जानवर जैसा था। जो व्यक्ति प्रभु के सामने जानवर जैसा होता है, वह बुरे लोगों के आखिरी अंजाम से अनजान होता है। दूसरे शब्दों में, ऐसा व्यक्ति बुरे लोगों के भविष्य के अंजाम को देखे बिना उनकी मौजूदा खुशहाली से जलन करता रहता है। जैसा कि भजन संहिता 64:9 बताता है, ऐसा व्यक्ति परमेश्वर के कामों पर गहराई से विचार नहीं करता। दूसरे शब्दों में, जो व्यक्ति प्रभु के सामने जानवर जैसा होता है, वह यह जाने बिना जीता है कि परमेश्वर बुरे लोगों को कैसे सज़ा देता है। इसलिए, आज के पाठ—खासकर आयत 9—पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं "परमेश्वर के कामों पर गहराई से सोचें!" शीर्षक के तहत दो बातें बताना चाहता हूँ। पहली बात जिस पर मैं विचार करना चाहता हूँ, वह है दाऊद के दुश्मनों का चालाक स्वभाव। इसके बाद, हम इस बात पर गहराई से विचार करेंगे कि परमेश्वर ने दाऊद के दुश्मनों के साथ कैसा व्यवहार किया। मैं प्रार्थना करता हूँ कि इस प्रक्रिया के ज़रिए परमेश्वर जो अनुग्रह देता है, वह हम सब पर बना रहे।

सबसे पहले, हमें अपने दुश्मन, शैतान के चालाक स्वभाव को पहचानना होगा।

भजन संहिता 64:6 देखें: "वे अन्याय की योजना बनाते हैं और कहते हैं, 'हमने एक चालाक चाल पूरी तरह तैयार कर ली है!' क्योंकि हर इंसान के मन की सोच और दिल गहरे होते हैं।" यहाँ, "वे" का मतलब दाऊद के दुश्मन हैं—चाहे वह शाऊल हो (जिसका ज़िक्र आयत 1 में है) या अबशालोम और उसके साथी। दाऊद को खत्म करने की बुरी योजना बनाते हुए, उन्होंने आखिरकार एक "चालाक चाल" सोची—एक ऐसी योजना जिसमें कोई कमी नहीं दिखती थी। यह देखकर दाऊद ने महसूस किया कि इंसानों के मन और दिल चालाक होते हैं [नोट: "दिल गहरा होता है" वाक्यांश का मतलब है कि दिल धोखेबाज़ या चालाक होता है] (पद 6)। आइए उन चार तरीकों पर गौर करें जिनसे दाऊद के दुश्मनों का चालाक दिल सामने आया; ऐसा करते हुए, हम अपने दुश्मन, शैतान की चालाक फितरत को भी समझ सकते हैं।

(1) दाऊद के दुश्मनों ने उसे नुकसान पहुँचाने के लिए एक "गुप्त साजिश" रची थी।

आज के वचन, भजन संहिता 64:2 को देखें: "मुझे बुरे काम करने वालों की गुप्त साजिशों से, और बुराई करने वालों के हंगामे से बचा।" यह हिस्सा बताता है कि दाऊद के दुश्मन उसकी जान के पीछे पड़े थे (पद 1) और उसे खत्म करने के लिए कई योजनाएँ बनाई थीं। इसके अलावा, जो बुरे लोग दाऊद के दुश्मन थे, उन्हें लगता था कि उनकी योजना बहुत शानदार है—एकदम सही चाल (पद 6)। जब हम बुरे लोगों की ऐसी चालाक चालों में फँस जाते हैं, तो हम अपनी ताकत से नहीं बच सकते। सिर्फ़ सब कुछ जानने वाले और सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही हमें ऐसी साजिशों से बचा सकते हैं (पार्क युन-सन)। इसीलिए दाऊद ने प्रभु से विनती की और कहा, "मुझे छिपा ले... मुझे बुरे काम करने वालों और बुराई करने वालों के हंगामे [लोगों का नासमझ उपद्रव] से बचा" (पद 2)। जैसा कि हमने पहले भजन संहिता 2:1–2 में मनन किया था, शैतान परमेश्वर और उनके चुने हुए मसीह (यीशु मसीह) का विरोध करता है; वह अपने सेवकों—"जातियों और लोगों" (पद 1) और "पृथ्वी के राजाओं और शासकों" (पद 2)—को इकट्ठा करता है और उन्हें "गुस्सा करने" और "बेकार की योजना बनाने" (पद 1) के लिए उकसाता है, ताकि वे मिलकर परमेश्वर और उनके चुने हुए यीशु का हर तरह से विरोध कर सकें। तो फिर, शैतान हमारा—आपका और मेरा—कितना ज़्यादा विरोध करेगा, जो परमेश्वर की संतान और उनके लोग हैं? शैतान लगातार "साजिशें" रचता रहता है। वह हमेशा

चालाक चालें सोचता रहता है और हमारे विनाश की योजना बनाता रहता है। इसलिए, हमें इस बात को लेकर सावधान रहना चाहिए कि हम अपना विश्वास का जीवन कैसे जीते हैं।

(2) दाऊद के दुश्मनों ने "बुरे इरादे" से एक-दूसरे का हौसला बढ़ाया और आपस में सलाह की कि "चुपके से जाल कैसे बिछाया जाए।"

आज के वचन, भजन संहिता 64:5 को देखें: "वे बुरे इरादों में एक-दूसरे का हौसला बढ़ाते हैं, वे अपने जाल छिपाने के बारे में बात करते हुए कहते हैं, 'उन्हें कौन देखेगा?'" यहाँ, ज़ाहिर है, "बुरे इरादे" का मतलब दाऊद की जान लेना है। इस मकसद को पूरा करने के लिए, दाऊद के दुश्मनों ने चुपके से जाल बिछाए। क्या आप जानते हैं कि "जाल" क्या होता है? क्या आपने कभी किसी को खरगोश या पक्षी पकड़ने के लिए फंदा या जाल लगाते देखा है? इसे इस्तेमाल करने का असली हुनर इसे छिपाने में ही है; जाल लगाते समय, इंसान उसे पूरी तरह से छिपा देता है और ढँक देता है (जोन्स)। जब दाऊद के दुश्मनों ने चुपके से अपने जाल बिछाए और उन्हें पूरी तरह छिपा दिया, तो वे जाल उन्हें एकदम सही लगे—इतने अच्छी तरह छिपे हुए कि उन्होंने सोचा, "उन्हें कौन देखेगा?" (वचन 5)। अगर दाऊद भी इन गुप्त जालों को नहीं देख सका—जिनके बारे में सिर्फ़ परमेश्वर और शैतान ही जानते थे—तो हम उन्हें कैसे देख सकते हैं? हमें उन जालों के खतरे को पहचानना होगा जो शैतान चुपके से हमारे जीवन में बिछाता है और उनसे बचना सीखना होगा। वह हमारी जान के पीछे पड़ा है; और "जीवन" से हमारा मतलब सिर्फ़ शारीरिक जीवन नहीं, बल्कि "अनंत जीवन" होना चाहिए। शैतान का बुरा मकसद यही है: वह हमारे जीवन में चुपके से जाल बिछाता है ताकि हमें किसी भी तरह अनंत जीवन पाने से रोक सके। इसलिए, दाऊद की तरह, हमारे पास परमेश्वर से विनती करने के अलावा कोई चारा नहीं है: "हे परमेश्वर... दुश्मन के डर से मेरे जीवन की रक्षा कर" (वचन 1)।

(3) दाऊद के दुश्मन बुरी बातों से उसे निशाना बना रहे थे।

आज के वचन, भजन संहिता 64:3 को देखें: "वे अपनी जीभ को तलवार की तरह तेज़ करते हैं और अपनी कड़वी बातों को तीर की तरह चलाते हैं।" यह होंठों की बुराई की ओर इशारा करता है। ऐसी बुरी बातें तीर की तरह दूसरों पर वार करती हैं और उन्हें मार डालती हैं; दूसरे शब्दों में, वे किसी व्यक्ति की इज़्ज़त को

खत्म कर देती हैं और उसे पूरी तरह बर्बाद कर देती हैं (पार्क युन-सन)। दाऊद के दुश्मनों ने अपनी ज़बान का गलत इस्तेमाल किया—उनकी ज़बान तलवार और तीर की तरह तेज़ और ज़हरीली थी—और वे अपनी बेरहम बातों से उसे घायल करके मार डालना चाहते थे। सचमुच, ज़बान का इस्तेमाल इस तरह बुरे कामों के लिए किया जा सकता है। इसीलिए प्रेरित याकूब ने ज़बान के बारे में कहा: "कोई भी इंसान ज़बान को काबू में नहीं कर सकता; यह एक बेकाबू बुराई है, जो जानलेवा ज़हर से भरी है" (याकूब 3:8)। बुरे लोगों की ज़बान जानलेवा ज़हर से भरी होती है; यह एक ऐसी बेकाबू बुराई है जिसे कोई काबू नहीं कर सकता। दाऊद को फँसाने की गुप्त साज़िश रचते हुए, उसके दुश्मनों ने अपनी बुरी ज़बान—तलवार और तीर की तरह—सीधे उस पर चलाई।

(4) दाऊद के दुश्मन अपनी छिपी हुई जगहों से अचानक हमला करते थे।

आज के वचन, भजन संहिता 64:4 को देखिए: "छिपी हुई जगहों से बेगुनाह लोगों पर तीर चलाना; वे अचानक तीर चलाते हैं और डरते नहीं हैं।" दाऊद के दुश्मनों ने अपनी योजनाएँ गुप्त रखीं; वे उसे नुकसान पहुँचाने की ताक में रहे और अचानक, बिना डरे हमला कर दिया। उन्होंने अपनी छिपी हुई जगहों से दाऊद पर घात लगाकर हमला किया—वह एक बेगुनाह इंसान था जिसने कुछ भी गलत नहीं किया था। आजकल इराक युद्ध की खबरें देखते हुए, हम सुनते हैं कि कैसे स्नाइपर छिपी हुई जगहों से अमेरिकी सैनिकों को गोली मारकर मार देते हैं। वे सड़क के किनारे बम भी छिपाकर रखते हैं और अमेरिकी सैनिकों को मारने के लिए उन्हें उड़ा देते हैं। हमें अपनी चौकसी कम नहीं करनी चाहिए, क्योंकि शैतान हम पर तब हमला करता है जब हम रक्षाहीन होते हैं।

अपनी किताब *स्पिरिचुअल वॉरफेयर* (Spiritual Warfare) में, डॉ. मार्टिन लॉयड-जोन्स कहते हैं, "चालाकी शैतान की एक बड़ी खासियत है" (देखिए उत्पत्ति 3:1)। आज के वचन के आधार पर, हमने दाऊद के दुश्मनों की चालाक फितरत के चार पहलुओं पर गौर किया है: उन्होंने उसे नुकसान पहुँचाने के लिए गुप्त साज़िशें रचीं, छिपे हुए जाल बिछाए, बुरी बातों से उसे निशाना बनाया, और आखिर में छिपी हुई जगह से घात लगाकर हमला किया। अब जब हम शैतान की चालाकी को पहचानते हैं, तो हमें क्या करना चाहिए? हमें दाऊद की तरह परमेश्वर से पुकार करनी चाहिए। हमें उससे क्या माँगना चाहिए?

(1) हमें प्रार्थना में अपनी चिंताएँ परमेश्वर के सामने रखनी चाहिए। भजन संहिता 64:1 के पहले हिस्से को देखिए: "हे परमेश्वर, मेरी शिकायत में मेरी आवाज़ सुन..." हमें अपने परेशान मन को—जो कांटों की झाड़ी की तरह उलझा हुआ है—प्रार्थना के ज़रिए प्रभु को सौंप देना चाहिए (पार्क युन-सन)।

(2) हमें परमेश्वर से अपनी जान बचाने की विनती करनी चाहिए।

भजन संहिता 64:1 के बाद वाले हिस्से को देखिए: "..." "दुश्मन के डर से मेरी जान बचा।" हम अकेले शैतान की चालाकी का सामना नहीं कर सकते; हम परमेश्वर की मदद के बिना जीत नहीं सकते। इसलिए, दाऊद की तरह, हमें पूरे दिल से परमेश्वर से अपनी जान बचाने के लिए कहना चाहिए। हमें परमेश्वर से हमें छिपाने की भी विनती करनी चाहिए (पद 2)। जिस परमेश्वर ने दाऊद को छिपाया था, उसके बारे में हम देखते हैं कि दाऊद के दुश्मन अपनी सारी हरकतें छिपकर करते थे—वे "गुप्त साजिशें" रचते थे (पद 2) और "छिपकर जाल बिछाते" थे (पद 5)। अपने दुश्मनों की इन बुरी और गुप्त हरकतों के बीच, दाऊद ने प्रार्थना की, "हे प्रभु, मुझे बुरे लोगों की गुप्त साजिशों और उनके छिपकर बिछाए गए जालों से बचा" (पद 2, 5)।

दूसरी बात, जब हम अपने दुश्मन—शैतान—की चालाक प्रकृति को समझ लेते हैं, तो हमें परमेश्वर के कामों पर गहराई से विचार करने की पूरी कोशिश करनी चाहिए।

भजन संहिता 64:9 पर गौर करें: "सब मनुष्य डरेंगे; वे परमेश्वर के कामों का प्रचार करेंगे और सोचेंगे कि उसने क्या किया है।" परमेश्वर के जिस खास काम पर हमें सोचना चाहिए, वह है—संक्षेप में—हमारे दुश्मनों को सज़ा देने का उसका काम। इस काम के बारे में बाइबल कहती है: "पर परमेश्वर उन पर तीर चलाएगा; वे अचानक गिर पड़ेंगे। उनकी अपनी ही ज़बान उन्हें गिरा देगी..." (पद 7-8)। यहाँ उस तरीके का वर्णन है जिससे परमेश्वर बुरे लोगों को सज़ा देता है: वह बुरे लोगों को उसी गड्ढे में गिरा देता है जिसे उन्होंने खुद खोदा है (पार्क युन-सन)। उदाहरण के लिए, जब दाऊद के दुश्मन उस पर तीर चलाने की घात में थे—अक्सर अचानक हमला करते थे (पद 3)—तो परमेश्वर ने इसके बजाय *उन* पर तीर चलाए। नतीजतन, दाऊद के दुश्मन अचानक गिर पड़े (पद 7) और हार गए (पद 8)। इसके अलावा, हालाँकि उन्होंने अपनी बुरी ज़बान—

जो तलवार और धनुष की तरह तेज़ थी—दाऊद के खिलाफ इस्तेमाल की, लेकिन परमेश्वर ने उन ज़बानों को उसे नुकसान नहीं पहुँचाने दिया; इसके बजाय, उसने उन्हीं ज़बानों से बुरे लोगों का विनाश करवा दिया।

परमेश्वर द्वारा दाऊद के दुश्मनों को सज़ा देने का क्या नतीजा हुआ?

(1) जिन लोगों ने परमेश्वर को बुरे लोगों को सज़ा देते हुए देखा, उन्होंने परमेश्वर के अस्तित्व को पहचाना (पार्क युन-सन)। भजन संहिता 64 के पद 8 और 9 को देखें, जो आज हमारा मुख्य पाठ है: "...जो कोई उन्हें देखेगा, सिर हिलाएगा। सब मनुष्य डरेंगे; वे परमेश्वर के काम का प्रचार करेंगे और सोचेंगे कि उसने क्या किया है।" हर कोई परमेश्वर से डरेगा, उसका प्रचार करेगा और उसके कामों पर गहराई से विचार करेगा।

(2) धर्मी लोग परमेश्वर में और भी ज़्यादा आनंदित होते हैं।

भजन संहिता 64 का पद 10 देखें: "धर्मी लोग प्रभु में आनंदित होंगे और उसमें शरण लेंगे; और वे सब जिनका हृदय सीधा है, गर्व करेंगे।" डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "हालाँकि दुश्मनों से बदला लेने का परमेश्वर का काम धर्मी लोगों के लिए वाकई एक अच्छी बात थी, लेकिन परमेश्वर खुद उनके लिए उससे भी बेहतर था। इसलिए, उस बदले की घटना के ज़रिए, वे परमेश्वर के करीब आते हैं और उसमें आनंदित होते हैं।" शैतान सचमुच बहुत चालाक और धोखेबाज़ है। वह लगातार हमें नुकसान पहुँचाने की कोशिश में लगा रहता है—चुपके-चुपके साज़िशें रचता है और जाल बिछाता है, बुरी ज़बान से हम पर हमला करता है, और अचानक वार करने के लिए घात लगाकर बैठा रहता है। सच तो यह है कि अपनी ताकत से भला कौन शैतान के जाल से बच सकता है? सर्वशक्तिमान परमेश्वर की मदद के बिना, हम खुद को शैतान के फंदों से नहीं छुड़ा सकते। इसलिए, हमें पूरे दिल से परमेश्वर को पुकारना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर शैतान और उसके सेवकों को सज़ा देकर हमें बचाता है। जो लोग इस सच्चाई से अनजान हैं, वे प्रभु की नज़र में जानवरों से बेहतर नहीं हैं। हमें कभी भी नादानी या अज्ञानता में परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं करना चाहिए। हमें पूरे विश्वास के साथ अपने भीतर आध्यात्मिक लड़ाई लड़नी चाहिए और इस बात पर गहराई से मनन करना चाहिए कि परमेश्वर हमारे दुश्मनों को सज़ा देता है।

"हम आपके पवित्र मंदिर की सुंदरता से संतुष्ट होंगे"

[भजन संहिता 65]

लॉरी ऐशनर और मिच मेयरसन की किताब *Why Can't I Be Satisfied?* उन लोगों के लिए एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है जो अपनी उपलब्धियों के बावजूद हमेशा असंतुष्ट और चिंतित रहते हैं, या जो—खुशी का कोई पल आने पर भी—इस सोच में डूबे रहते हैं कि वे असल में खुश नहीं हैं। काउंसलिंग के एक दशक से ज़्यादा के अनुभव के आधार पर, लेखक इस स्थिति को "क्रोनिक डिससैटिस्फैक्शन सिंड्रोम" (लगातार असंतोष की स्थिति) कहते हैं; वे इससे जुड़े सात मनोवैज्ञानिक लक्षणों का विश्लेषण करते हैं और उन्हें ठीक करने के तरीकों पर चर्चा करते हैं। वे बताते हैं कि असंतोष के ये लक्षण अक्सर उन लोगों में ज़्यादा गंभीर नहीं होते जिन्होंने बार-बार असफलता का सामना किया है, बल्कि उन लोगों में होते हैं जिन्होंने सफलतापूर्वक अपने लक्ष्य हासिल किए हैं और अपनी इच्छा की चीज़ें पाई हैं। ऐसे लोगों को देखकर जो उन पलों में भी उदास महसूस करते हैं जब उन्हें खुश होना चाहिए, लेखक इस बात पर ज़ोर देते हैं कि संतुष्टि कभी भी सिर्फ़ उपलब्धि या चीज़ें पाने का मामला नहीं होती; बल्कि असली मुद्दा वह असंतोष है जो समय के साथ जमा होता जाता है और आखिरकार इंसान को अपनी गिरफ्त में ले लेता है। कहा जाता है कि क्रोनिक डिससैटिस्फैक्शन सिंड्रोम वाले लोगों में ये मनोवैज्ञानिक लक्षण दिखाई देते हैं (स्रोत: इंटरनेट):

* सफलता मिलने पर भी उन्हें कोई खुशी महसूस नहीं होती; जश्न मनाने के पलों में भी वे इस बात की चिंता करते हैं कि क्या वे उस कारनामे को दोहरा पाएंगे।
* वे खुद को खास और प्रतिभाशाली मान सकते हैं, फिर भी साथ ही अपनी इस सोच को लेकर मन में शक भी रखते हैं।

* जब दूसरे उनकी कोशिशों को नहीं पहचानते तो वे परेशान होते हैं, लेकिन जब असल में तारीफ़ मिलती है तो असहज महसूस करते हैं।

* वे लीड लेने के बजाय सपोर्टिंग रोल निभाने में ही खुश रहते हैं। जब आप किसी ऐसे व्यक्ति को सफल होते देखते हैं जिसे आप खुद से कम काबिल या मामूली समझते थे, तो आपको कड़वाहट महसूस होती है।

· औसत सफलता काफ़ी नहीं होती; साधारण होना असफलता के बराबर है।

· आपका मानना है कि आपको दूसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए; जब भी रिश्तों, परिवार या काम में समस्याएँ आती हैं, तो आप हमेशा खुद को ही दोषी मानते हैं।

· आपको हर समय खुद को साबित करने की ज़रूरत महसूस होती है।

· आप अनजाने में ही ऐसी स्थितियों को दोहराते हैं जिनसे निराशा होती है। · आपको मदद के लिए दूसरों से संपर्क करना पसंद नहीं है।

· आप हमेशा संघर्ष और कोशिश करते रहते हैं।

क्या आप अपनी ज़िंदगी से संतुष्ट हैं? अगर नहीं, तो आपको किस चीज़ से संतुष्टि मिलेगी? क्या बहुत सारा पैसा और ज़्यादा आमदनी होने पर आप संतुष्ट हो जाएँगे? उपदेशक राजा सुलैमान, सभोपदेशक 5:10 में कहते हैं: "जो चाँदी से प्यार करता है, वह चाँदी से कभी संतुष्ट नहीं होता; और जो बहुत ज़्यादा दौलत से प्यार करता है, वह और ज़्यादा दौलत पाकर भी संतुष्ट नहीं होता। यह सब भी व्यर्थ है।" क्या आपको तब संतुष्टि मिलेगी जब आप उन सभी चीज़ों का आनंद लेंगे जिनकी आपकी आँखों ने इच्छा की और जिनसे आपके दिल को खुशी मिली? सुलैमान इस बारे में कहते हैं: "मैंने अपनी आँखों की किसी भी इच्छा को पूरा करने से खुद को नहीं रोका; मैंने अपने दिल को किसी भी खुशी से वंचित नहीं रखा। मेरे दिल को मेरी सारी मेहनत में खुशी मिली, और यही मेरी सारी मेहनत का इनाम था। फिर भी, जब मैंने उन सभी चीज़ों को देखा जो मैंने हासिल की थीं और जिनके लिए मैंने मेहनत की थी, तो सब कुछ बेकार लगा, जैसे हवा के पीछे भागना हो; इस दुनिया में कुछ भी हासिल नहीं हुआ" (2:10-11)। मैं सोचता हूँ कि क्या इस दुनिया में कभी कोई ऐसा व्यक्ति हुआ है जिसने राजा सुलैमान की तरह हर चीज़ का आनंद लिया हो। जब हम सोचते हैं कि सुलैमान ने भी, सब कुछ अनुभव करने के बाद, आखिर में यही कहा, "व्यर्थ! व्यर्थ!", तो हम भी यह मानने पर मजबूर हो जाते हैं—जैसा उन्होंने किया था—कि ये चीज़ें आखिर में हमारी आत्मा को संतुष्ट नहीं कर सकतीं।

हालाँकि, भजन 65:4 में, भजनकार दाऊद कहते हैं: "धन्य हैं वे जिन्हें आप चुनते हैं और अपने आँगन में रहने के लिए पास बुलाते हैं! हम आपके घर, आपके पवित्र मंदिर की भलाई से संतुष्ट होंगे।" यहाँ, "आपका घर, आपका पवित्र मंदिर" "कलीसिया" का प्रतीक है, और "भलाई से संतुष्ट" वाक्यांश का अर्थ "आध्यात्मिक अनुग्रह" से संतुष्ट होना है (पार्क युन-सन)। इसलिए, आज के संदेश का शीर्षक "प्रभु के मंदिर की भलाई से संतुष्ट" रखते हुए, मैं उन खास आध्यात्मिक अनुग्रहों के बारे में तीन बातें बताना चाहता हूँ जिनसे हमारी कलीसिया को संतुष्ट होना चाहिए।

पहला, हमें प्रार्थना के जवाब में परमेश्वर से मिलने वाली संतुष्टि को अपनाना चाहिए (भजन 65:1-4)। भजन संहिता 65:2 देखें: "हे प्रार्थना सुनने वाले, सब लोग तेरे पास आएंगे।" यहाँ हम यह सीख सकते हैं कि हमारा प्रभु प्रार्थना सुनने वाला प्रभु है। हालाँकि, कई बार ऐसा होता है जब प्रभु हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देते। दूसरे शब्दों में, हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलने में तीन मुख्य बाधाएँ आती हैं:

(1) हमारे पाप।

यशायाह 59:1–2 देखें: "निश्चय ही प्रभु का हाथ बचाने के लिए छोटा नहीं है, और न ही उसका कान सुनने के लिए मंद है। लेकिन तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है; तुम्हारे पापों ने उससे तुम्हारा मुँह छिपा लिया है, ताकि वह न सुने।"

(2) परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देते क्योंकि हम उनके वचन को नहीं सुनते।

नीतिवचन 28:9 देखें: "यदि कोई व्यवस्था की ओर कान नहीं देता, तो उसकी प्रार्थना भी घृणित होती है।"

(3) हमारा अहंकार।

याकूब 4:6 देखें: "लेकिन वह हमें और अधिक अनुग्रह देता है। इसीलिए पवित्र शास्त्र कहता है: 'परमेश्वर अहंकारी का विरोध करता है लेकिन दीन पर कृपा करता है।'" जब हम अहंकारी होते हैं तो परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देते।

तो फिर, हमारा प्रभु किस तरह की प्रार्थनाएँ सुनता है?

(1) हमारा प्रभु स्तुति की प्रार्थनाएँ सुनता है।

आज का वचन, भजन संहिता 65:1 देखें: "हे हमारे परमेश्वर, सिय्योन में तेरी स्तुति की प्रतीक्षा है; तेरे प्रति हमारी मन्नतें पूरी की जाएँगी।" जैसा कि हमने जून में "प्रार्थना की शक्ति" पर अपनी छोटे समूह की बाइबल अध्ययन में सीखा था, प्रार्थना कई प्रकार की होती है: स्तुति, धन्यवाद, पाप-स्वीकार, मध्यस्थता और विनती। इनमें से, स्तुति की प्रार्थना वह है जो परमेश्वर के पास जाते समय उनकी एकता को स्वीकार करने और पहचानने से शुरू होती है। इसका एक अच्छा उदाहरण भजन संहिता 18:1–2 में मिलता है: "हे प्रभु, मेरी शक्ति, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ। प्रभु मेरी चट्टान, मेरा गढ़ और मेरा उद्धारकर्ता है; मेरा परमेश्वर, मेरी शक्ति, जिस पर मैं भरोसा करूँगा; मेरी ढाल और मेरे उद्धार का सींग, मेरा मज़बूत गढ़।" भजनकार दाऊद प्रभु की उपस्थिति में चुपचाप प्रतीक्षा करता था, और परमेश्वर की स्तुति करने के क्षण का "बेसब्री से इंतजार" करता था (पार्क युन-सन)। खासकर, जिस परमेश्वर की वे स्तुति करना चाहते थे, वह "हमारे उद्धार का परमेश्वर" था (पद 5)।

(2) हमारा प्रभु हमारे धन्यवाद की प्रार्थनाओं को सुनता है।

आज के वचन, भजन संहिता 65:2 को देखें: "हे प्रार्थना के सुनने वाले, सब प्राणी तेरे पास आएंगे।" दाऊद का परमेश्वर—जो हमारा भी परमेश्वर है—वह प्रभु है जो प्रार्थना सुनता है। इसीलिए हम परमेश्वर को धन्यवाद की प्रार्थनाएँ अर्पित करते हैं। इसके अलावा, जैसा कि दाऊद ने कहा, "सब प्राणी"—चाहे वे यहूदी हों या गैर-यहूदी, ऊँचे हों या नीचे—परमेश्वर से प्रार्थना करने आते हैं (पार्क युन-सन)।

(3) प्रभु पाप स्वीकार करने (पश्चाताप) की प्रार्थनाओं को सुनता है।

आज के वचन, भजन संहिता 65:3 को देखें: "मेरे अधर्म मुझ पर हावी हो गए हैं; हमारे अपराधों को तू क्षमा करेगा।" क्षमा के आश्वासन के बारे में बाइबल के जाने-पहचाने वचन, 1 यूहन्ना 1:9 पर विचार करें, जो वादा करता है: "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सारे अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।"

कलीसिया प्रार्थना का घर है। हम प्रार्थना करने वाले लोग हैं। इसलिए, हमें प्रभु के घर जाना चाहिए और परमेश्वर से अपनी विनती करनी चाहिए। हमें उसे स्तुति, धन्यवाद और पश्चाताप की प्रार्थनाएँ अर्पित करनी चाहिए। ऐसा करते हुए, हमें उस परमेश्वर में संतुष्टि मिलनी चाहिए जो हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है।

दूसरी बात, हमें उस विजय में संतुष्टि मिलनी चाहिए जो हमें युद्ध में मिली है (भजन संहिता 65:5–8)।

भजन संहिता 65:5–8 में, दाऊद युद्ध में मिली विजय की कृपा के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता है, और अबशालोम के विद्रोह से अपनी मुक्ति पर विचार करता है (पार्क युन-सन)। अबशालोम के कारण हुए उत्पीड़न और संकटों के बीच, दाऊद पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर था; जब उसने स्तुति, धन्यवाद और पश्चाताप की प्रार्थनाएँ कीं, तो परमेश्वर ने उन्हें सुना और उनका उत्तर दिया। विशेष रूप से, परमेश्वर ने दाऊद को अबशालोम और उसकी सेनाओं से बचाया। इस प्रकार, दाऊद ने स्वीकार किया: "हे हमारे उद्धार के परमेश्वर, तू धर्म के अद्भुत कामों से हमें उत्तर देता है—तू जिस पर पृथ्वी के सभी छोर और दूर-दूर के समुद्र भरोसा करते हैं" (पद 5)। "हमें अद्भुत कामों से जवाब दें" वाक्यांश डेविड के इस भरोसे को दिखाता है कि परमेश्वर ने पहले भी उसे बचाया था—और अभी भी बचाएगा—"अद्भुत कामों, यानी अलौकिक कार्यों" के ज़रिए (पार्क युन-सन)। जब डेविड ने अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर से विनती की, तो उसे भरोसा था कि वह उसकी प्रार्थनाएँ सुनेगा और उनका जवाब देगा। इस विश्वास के केंद्र में प्रभु की शक्ति पर उसका भरोसा था (पद 6)। हालाँकि अब्सालोम और उसके आदमियों ने उसे कमज़ोर कर दिया था और उसका पीछा कर रहे थे, फिर भी डेविड ने सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर भरोसा किया—वही जिसने पहाड़ों को स्थापित किया और जो शक्ति से संपन्न है। जिस सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर उसने भरोसा किया, वही गरजते समुद्रों, उठती लहरों

और राष्ट्रों के कोलाहल को शांत करता है (पद 7)। डेविड को इस परमेश्वर पर भरोसा करने में खुशी मिली, जबकि अब्सालोम और उसके आदमियों पर डर छा गया, जिन्होंने परमेश्वर के सेवक डेविड का विरोध किया था (पद 8)।

2 शमूएल 8:6 में लिखा है, "...जहाँ-जहाँ दाऊद गया, वहाँ-वहाँ यहोवा ने उसे जीत दिलाई।" जहाँ भी दाऊद लड़ाई के लिए गया, परमेश्वर ने उसे जीत दी। इसलिए, दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा किया और हिम्मत से काम लिया (भजन संहिता 60:12)। जीत दिलाने वाले परमेश्वर के साथ होने के कारण, दाऊद जीत के भरोसे के साथ लड़ाइयों में उतरा; परमेश्वर से मिली जीत में उसे संतुष्टि और कृतज्ञता मिली। हमें भी दाऊद की तरह पूरी तरह परमेश्वर पर भरोसा करते हुए हिम्मत से काम लेना चाहिए। बेशक, चल रही आध्यात्मिक लड़ाई हमारी आत्मा को घायल, परेशान, चिंतित और निराश कर सकती है। फिर भी, आज के वचन में बताए गए दाऊद की तरह, इस आध्यात्मिक लड़ाई को लड़ते समय हमें उद्धारकर्ता परमेश्वर पर—और खासकर उनकी शक्ति पर—पूरी तरह भरोसा करना चाहिए। लड़ाई के बीच में, हमें जीत दिलाने वाले प्रभु का सहारा लेना चाहिए। क्योंकि वे हमारे साथ हैं, वे हमें हमारी आध्यात्मिक लड़ाई में जीत दिलाएंगे। हमें जीत के इस भरोसे को थामे रखकर योद्धाओं की तरह अपना जीवन जीना चाहिए। ऐसा करने से, हमारी आत्मा को प्रभु द्वारा दी गई जीत में संतुष्टि मिलनी चाहिए। इसके अलावा, हमें स्वयं जीत दिलाने वाले प्रभु में संतुष्टि मिलनी चाहिए।

तीसरी बात, हमें भरपूर फसल में संतुष्टि मिलनी चाहिए (भजन संहिता 65:9–13)।

भजन संहिता 65:9 को देखें: "तू धरती की देखभाल करता है और उसे पानी देता है; तू उसे भरपूर उपजाऊ बनाता है। परमेश्वर की नदियाँ पानी से भरी रहती हैं ताकि लोगों को अनाज मिल सके, क्योंकि तूने ऐसा ही ठहराया है।" स्वर्ग और पृथ्वी के रचयिता परमेश्वर ही हैं जो प्रकृति को इस तरह चलाते हैं कि उनके लोगों को भरपूर फसल मिले। वे ही परमेश्वर हैं जो बारिश भेजने के लिए स्वर्ग के द्वार खोलते हैं, धरती को भिगोते हैं और उसे बहुत उपजाऊ बनाते हैं, जिससे अंततः भरपूर फसल पैदा होती है। वे ही परमेश्वर हैं जो "खेत की क्यारियों को भरपूर पानी देते हैं, मेड़ों को समतल करते हैं, बौछारों से मिट्टी को नरम करते हैं और फसल की बढ़त पर आशीष देते हैं" (वचन 10)। परमेश्वर ने दाऊद को भरपूर फसल का आशीर्वाद दिया; यह इस बात का सबूत था कि उन्होंने दाऊद की पश्चाताप की प्रार्थना सुन ली थी। सचमुच, परमेश्वर ही हैं जो—अक्सर

जब हम पाप करने के बाद पश्चाताप नहीं करते—हमें 'खोए हुए बेटे' (Prodigal Son) की तरह तंगी में पड़ने देते हैं, ताकि हम उनके भरपूर घर के लिए तरसें और पश्चाताप करके उनकी ओर लौटें। जब डेविड को राजमहल में किए गए पाप के कारण अब्सालोम से भागना पड़ा, तो परमेश्वर ने जंगल में उसे पश्चाताप की ओर अग्रसर किया। बाद में, परमेश्वर ने उसे वापस महल पहुँचाया और उसकी समृद्धि को बहाल किया।

हमें 'खोए हुए बेटे' (Prodigal Son) की तरह तंगी का सामना करते समय भी धन्यवाद देना चाहिए, क्योंकि जिन भौतिक चीज़ों पर हम कभी निर्भर थे, उनके खोने से हमें परमेश्वर की ओर देखने और एक बार फिर उस पर भरोसा करने का अवसर मिलता है। यदि हम कमी के समय में परमेश्वर को धन्यवाद दे सकते हैं, तो वह हमें जो प्रचुरता देता है, उसके लिए हम आभारी क्यों नहीं होंगे? हम वे लोग हैं जिन्हें यीशु मसीह में "हर आत्मिक आशीष" मिली है (इफिसियों 1:4)। हमें परमेश्वर पिता द्वारा चुना और पहले से ही निर्धारित किया गया है, और हम उसकी संतान बन गए हैं। इसके अलावा, हमें पापों की क्षमा (छुटकारा) मिली है और हम "उसकी महिमा की प्रशंसा" बन गए हैं। ये सभी आत्मिक आशीषें हैं जो परमेश्वर पिता ने हमें मसीह में दी हैं। हमें परमेश्वर से पहले ही भरपूर अनुग्रह मिल चुका है। इसलिए, हमें उस भरपूर अनुग्रह के सहारे संतोष के साथ जीना चाहिए।

हमें संतोष का रहस्य सीखना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे प्रेरित पौलुस ने सीखा था (फिलिप्पियों 4:11–12)। वह रहस्य क्या है? वह है केवल प्रभु में संतुष्टि पाना। फिलिप्पियों 4:11–13 पर विचार करें: "मैं यह इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि मुझे किसी चीज़ की कमी है, क्योंकि मैंने हर परिस्थिति में संतोष करना सीख लिया है। मैं जानता हूँ कि कमी में रहना क्या होता है, और मैं जानता हूँ कि भरपूरता में रहना क्या होता है। मैंने किसी भी और हर स्थिति में संतोष करने का रहस्य सीख लिया है, चाहे पेट भरा हो या भूखा, चाहे भरपूरता में जी रहा हूँ या कमी में। मैं वह सब कुछ उसके द्वारा कर सकता हूँ जो मुझे शक्ति देता है।" चाहे हमारी भरपूरता कितनी भी बड़ी क्यों न हो, यदि हम केवल प्रभु में संतुष्टि नहीं पा सकते, तो वह भरपूरता हमारे लिए अभिशाप बन जाएगी। इसके विपरीत, कमी के समय में भी, यदि हम केवल प्रभु में संतुष्टि पा सकते हैं, तो वही कमी एक आशीष बन जाएगी।

“आओ और देखो कि परमेश्वर ने क्या किया है!”

[भजन संहिता 66]

इन दिनों आपका आध्यात्मिक जीवन कैसा है? मैं अक्सर उन भाई-बहनों से पूछता हूँ जिनसे मैं मिलता हूँ, “आपका आध्यात्मिक जीवन कैसा है?” हालाँकि कुछ लोग इस सवाल से हैरान हो जाते हैं, लेकिन ज़्यादातर लोग अपने कामों के बारे में बताते हैं: जैसे चर्च में अलग-अलग तरह से सेवा करना, प्रार्थना सभाओं में शामिल होना और बाइबल अध्ययन में भाग लेना। इन जवाबों को सुनकर मुझे लगता है कि उनका आध्यात्मिक जीवन “कुछ करने” पर ज़्यादा केंद्रित है, न कि “होने” पर। दूसरे शब्दों में, जब उनसे उनके आध्यात्मिक जीवन के बारे में पूछा जाता है, तो लोग अपने कामों के बारे में बात करते हैं—कि वे परमेश्वर के लिए या अपने विश्वास के लिए क्या कर रहे हैं—बजाय इसके कि वे यह बताएँ कि परमेश्वर उनके जीवन में कैसे काम कर रहा है, कैसे उसका अनुग्रह उनके आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा दे रहा है, और कैसे वे यीशु जैसे बनते जा रहे हैं। इससे पता चलता है कि हमारा आध्यात्मिक जीवन अक्सर परमेश्वर के कामों के बजाय हमारे अपने कामों पर केंद्रित होता है—यानी, इस बात पर कि परमेश्वर क्या कर रहा है और हमारे जीवन में कैसे काम कर रहा है। बेशक, इसका मतलब यह नहीं है कि हमारे काम महत्वपूर्ण नहीं हैं; असल में, हमारे काम बहुत ज़रूरी हैं क्योंकि जीवित विश्वास वही है जो कामों में दिखाई देता है। हालाँकि, सबसे ज़्यादा ज़रूरी हमारे अपने काम नहीं, बल्कि परमेश्वर के काम हैं।

भजन संहिता 66:5 में, भजनकार कहता है: “आओ और देखो कि परमेश्वर ने क्या किया है, इंसानों के लिए उसके काम कितने अद्‌भुत हैं!” आज, “आओ और देखो कि परमेश्वर ने क्या किया है” इस वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं विनम्रतापूर्वक उस अनुग्रह को पाना चाहता हूँ जो परमेश्वर देता है, जब हम एक या दो मुख्य बातों पर विचार करते हैं।

पहली बात जिस पर हमें विचार करना है, वह है परमेश्वर के काम।

(1) भजनकार इंसानों के प्रति परमेश्वर के अद्‌भुत कामों के बारे में बताता है।

आज के वचन, भजन संहिता 66:5 को देखें: "आओ और देखो कि परमेश्वर ने क्या किया है, इंसानों के लिए उसके काम कितने अद्‌भुत हैं!" इस्राएल के लोगों के लिए परमेश्वर ने जो महान और अद्‌भुत काम किए, उनमें से एक जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता, वह है मिस्र से निकलने के दौरान लाल सागर का दो भागों में बँटना—पानी को सूखी ज़मीन में बदल देना ताकि इस्राएली पैदल पार कर सकें (वचन 6)। यह परमेश्वर का एक अलौकिक काम था। इस प्रकार, भजनकार स्वीकार करता है कि इंसानों के प्रति परमेश्वर के काम अद्‌भुत हैं (वचन 5)। दूसरे शब्दों में, वह कहते हैं कि परमेश्वर के अलौकिक काम "महान और अद्‌भुत" हैं (प्रकाशितवाक्य 15:3)। इस महान, अद्‌भुत और अलौकिक काम ने परमेश्वर की शक्ति को दिखाया और साथ ही अपने लोगों के लिए उनके प्रेम और देखभाल की गहराई को भी प्रकट किया (मैकआर्थर)। जब इस्राएलियों की बाद की पीढ़ियों ने इस दैवीय शक्ति और प्रेम (देखभाल) को याद किया, तो वे प्रभु में आनन्दित हुए (भजन संहिता 66:6)। भजनकार परमेश्वर के एक और महान और अद्‌भुत कार्य का वर्णन इस प्रकार करते हैं: "वह अपनी शक्ति से सदा राज्य करता है, उसकी आँखें राष्ट्रों पर नज़र रखती हैं—विद्रोही उसके विरुद्ध न उठें (सेलाह)" (पद 7)। यह परमेश्वर की सर्वोच्च देखरेख के बारे में बताता है, जिसके द्वारा वह अपनी शक्ति से दुनिया पर सदा शासन और राज्य करता है (पार्क युन-सन)। सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जो दुनिया पर शासन और राज्य करता है, राष्ट्रों पर भी नज़र रखता है (देखें 11:4-5)। इसलिए, भजनकार आग्रह करते हैं, "विद्रोही स्वयं को ऊँचा न उठाएँ" (66:7)। हम अपने प्रभु की महान और अद्‌भुत इच्छा को समझ नहीं सकते—कि क्यों वह अपनी शक्ति से हम जैसे साधारण मनुष्यों पर शासन करते हैं, नज़र रखते हैं और हमारी देखभाल करते हैं। इसीलिए हम गाते हैं: "अद्‌भुत अनुग्रह! कितनी मधुर ध्वनि है—जिसने मुझ जैसे पापी को बचाया" (भजन 410, पद 1)।

(2) भजनकार कहते हैं कि परमेश्वर हमें ठोकर नहीं खाने देते।

आज के पाठ, भजन संहिता 66:9 को देखें: "वह हमारे प्राणों की रक्षा करता है और हमारे पैरों को फिसलने से बचाता है।" जैसे परमेश्वर अपनी शक्ति से दुनिया पर शासन और राज्य करते हैं, वैसे ही वह अपने लोगों, इस्राएल, के जीवन को संजोते हैं, सुरक्षित रखते हैं और बनाए रखते हैं। इस प्रकार, परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को ठोकर खाने से बचाया। परमेश्वर ने उन्हें ठोकर खाने से कैसे बचाया? प्रभु ने उन्हें वैसे ही तपाकर और शुद्ध करके ठोकर खाने से बचाया जैसे चाँदी को शुद्ध किया जाता है (पद 10)। प्रभु ने इस्राएल के लोगों को कैसे शुद्ध किया? आज के पाठ के पद 11-12 को देखें: "तू हमें जाल में ले आया और हमारी पीठ पर भारी बोझ डाल दिया; तूने लोगों को हमारे सिरों पर चढ़ने दिया; हम आग और पानी से गुज़रे, फिर भी तू हमें बहुतायत वाली जगह पर ले आया।" प्रभु ने इस्राएल के लोगों को जाल में फँसाकर और उन पर भारी बोझ डालकर उन्हें परखा और निखारा; उन्होंने ऐसा दुख क्यों आने दिया? इसका कारण यह है कि वे खुद को उनके—यानी अपने लोगों के—सामने प्रकट करके उनके चरित्र को ढालना चाहते थे (11:4–5, 7b) (WBC)। उन्हें परखने और निखारने के बाद, परमेश्वर उन्हें दुख से निकालकर भरपूर आशीषों वाली जगह पर ले आए (66:12)। हमारे प्रभु एक कुम्हार की तरह हैं, जो दुख के ज़रिए हमें निखारते हैं और हमें यीशु जैसा बनने के लिए ढालते हैं। हालाँकि वे हमें कुछ समय के लिए दुख सहने देते हैं, लेकिन वह दुख हमारे भले के लिए ही होता है (119:71)। दूसरे शब्दों में, दुख के ज़रिए प्रभु खुद को प्रकट करते हैं और हमारे चरित्र को ढालते हैं।

दूसरी बात, आइए उन कामों पर विचार करें जो हमें करने चाहिए।

(1) हमें परमेश्वर की स्तुति और महिमा करनी चाहिए।

भजन संहिता 66 की आयतें 1–2 और 8 देखिए: "हे सारी पृथ्वी के लोगों, परमेश्वर के लिए खुशी से जय-जयकार करो; उसके नाम की महिमा के गीत गाओ; उसकी स्तुति को शानदार बनाओ" (आयतें 1–2); "हे लोगों, हमारे परमेश्वर को धन्य कहो और उसकी स्तुति की आवाज़ सुनाओ" (आयत 8)। यहाँ, "उसके नाम की महिमा के गीत गाने" (आयत 2) की आज्ञा का अर्थ है "परमेश्वर की स्तुति करने को ही अपनी महिमा मानना" (पार्क युन-सन, इब्न एज्रा, कैल्विन)। जब भजनकार ने उन अद्‌भुत कामों पर मनन किया जो परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों के लिए किए थे और दुनिया पर शासन करने व उसे चलाने की उनकी शक्ति पर विचार किया, तो उसने परमेश्वर की स्तुति करने को ही अपनी महिमा माना और घोषणा की, "हे सारी पृथ्वी के लोगों, परमेश्वर के लिए खुशी से जय-जयकार करो..." भजनकार हमें भी परमेश्वर की स्तुति करने और उसके सामने

यह कहने के लिए प्रोत्साहित करता है: "परमेश्वर से कहो, 'तेरे काम कितने अद्भुत हैं! तेरी महान शक्ति के कारण तेरे दुश्मन तेरे सामने झुक जाएँगे। सारी पृथ्वी तेरी आराधना करेगी और तेरी स्तुति के गीत गाएगी; वे तेरे नाम की स्तुति करेंगे (सेला)'" (आयतें 3–4)।

(2) हमें परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए।

आज के पाठ में भजन संहिता 66:13 देखिए: "मैं होमबलि लेकर तेरे घर में जाऊँगा; मैं अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।" हम भजनकार को यह संकल्प लेते हुए देखते हैं—कि परमेश्वर की कृपा पर विचार करने के बाद—वह प्रभु के मंदिर में जाएगा, होमबलि चढ़ाएगा और अपनी मन्नतें पूरी करेगा। भजनकार ने यह संकल्प कब लिया? यह "मेरी मुसीबत के समय" (पद 14) था। भजनकार ने शानदार स्तुति के साथ होमबलि चढ़ाने का इरादा क्यों किया? ऐसा इसलिए था क्योंकि इंसानों का धन्यवाद और स्तुति अक्सर पाप से दूषित हो जाते हैं और इसलिए परमेश्वर उन्हें स्वीकार नहीं कर सकते (पार्क युन-सन)। इसलिए, भजनकार ने मोटे जानवरों की होमबलि चढ़ाने का संकल्प लिया—और वास्तव में चढ़ाया भी—जिसमें मेढ़कों की सुगंध भी शामिल थी (पद 15)। हमें भी यीशु मसीह की क्रूस पर प्रायश्चित वाली मृत्यु पर विश्वास करते हुए परमेश्वर को धन्यवाद और स्तुति चढ़ानी चाहिए। इसके अलावा, जैसे दाऊद ने परमेश्वर को बेहतरीन बैल और बकरे चढ़ाए थे, हमें भी अपने शरीर और मन को—जो कीमती भेंट हैं—पूरी तरह से उन्हें समर्पित करना चाहिए।

(3) हमें उन कामों का प्रचार करना चाहिए जो परमेश्वर ने हमारी आत्माओं के लिए किए हैं।

आज के वचन, भजन संहिता 66:16 को देखें: "आओ और सुनो, तुम सब जो परमेश्वर का भय मानते हो, और मैं बताऊंगा कि उसने मेरी आत्मा के लिए क्या किया है।" उद्धार की कृपा पर विचार करते हुए, भजनकार ने परमेश्वर का भय मानने वालों से "आने और सुनने" का आग्रह किया, और उन्हें बताया कि परमेश्वर ने उसके लिए क्या किया था। डॉ. पार्क युन-सन ने एक बार कहा था: "परमेश्वर की कृपा पाना किसी भी अन्य चीज़ से अधिक कीमती है। ऐसा इसलिए नहीं है कि कृपा अपने आप में कीमती है, बल्कि इसलिए है क्योंकि ऐसी कृपा पाने के अनुभव से परमेश्वर के साथ गहरा रिश्ता बनता है। इसलिए, कोई भी चुप नहीं रह सकता—

और न ही रहना चाहिए।" भजनकार दाऊद ने भी भजन संहिता 39:2 में इसके बारे में बात की है: "मैं चुप रहा और शांत रहा; मैंने अच्छी बातें कहने से भी परहेज किया, और मेरा दुख और बढ़ गया।" हमें परमेश्वर के कामों का प्रचार करना चाहिए; हमें सभी को बताना चाहिए कि उसने हमारे लिए क्या किया है और हम पर कौन सी कृपा की है।

(4) हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

आज के वचन, भजन संहिता 66:17 को देखें: "मैंने अपने मुँह से उसे पुकारा और अपनी जीभ से उसकी स्तुति की।" भजनकार ने परमेश्वर से प्रार्थना की और उसकी स्तुति की। जैसे प्रेरितों के काम 16 में पौलुस और सीलास ने प्रार्थना की और परमेश्वर की स्तुति में गीत गाए, वैसे ही भजनकार ने परमेश्वर के किए गए कामों पर मनन करते हुए प्रार्थना और स्तुति की। प्रार्थना करते समय उसके मन में कोई पाप नहीं था; वह जानता था कि यदि ऐसा होता, तो प्रभु उसकी प्रार्थना न सुनते (भजन संहिता 66:18)। वह स्वीकार करता है: "परन्तु परमेश्वर ने सचमुच मेरी प्रार्थना सुनी और उस पर ध्यान दिया है" (पद 19)। परमेश्वर ने न तो उसकी प्रार्थना को अस्वीकार किया और न ही उससे अपनी दया को रोका (पद 20)।

आइए हम सब उस महान और अद्भुत कार्य पर मनन करें जो परमेश्वर ने लगभग 2,000 साल पहले कलवरी के क्रूस पर पूरा किया था। आइए हम उस महान और अद्भुत कार्य को याद करें जो उसने हमारे अनंत जीवन (उद्धार) के लिए क्रूस पर किया था। इसके अलावा, आइए हम उसकी कृपा में गहराई से डूब जाएं क्योंकि वह अपनी संप्रभुता के भीतर हम पर—जिन्हें उसने छुड़ाया है—शासन करता है, हमारी देखरेख करता है और हमारी परवाह करता है। वह ऐसा परमेश्वर है जो हमें ठोकर नहीं खाने देता। वह दुखों के माध्यम से हमें शुद्ध करता है; उन दुखों के बीच, वह स्वयं को प्रकट करता है और हमें यीशु के समान बनाता है। साथ ही, हमें विश्वास के साथ उस यीशु पर मनन करना चाहिए जो फिर से आने वाला है और उन महान और अद्भुत कार्यों पर जो वह अपनी वापसी पर करेगा। जब वह वापस आएगा, तो हम एक पल में बदल जाएंगे और महिमामय आत्मिक शरीरों को धारण करेंगे। और वह हमें अनंत स्वर्ग में ले जाएगा। हम मेमने के विवाह भोज में शामिल होंगे और परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति में अनंत स्तुति और आराधना करेंगे। इसलिए, हमें परमेश्वर की और अधिक स्तुति और महिमा करनी चाहिए, और पूरे दिल, मन और भक्ति के साथ आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करनी चाहिए। हमें सभी को यह भी बताना चाहिए कि परमेश्वर

ने हमारे लिए क्या किया है। इसके अलावा, अपनी प्रार्थनाओं में, हमें प्रेरित यूहन्ना की तरह पुकारना चाहिए: "मारनाथा"—"आओ, प्रभु यीशु" (प्रकाशितवाक्य 22:20)।

“सभी लोग प्रभु की स्तुति करें!”

[भजन संहिता 67]

आज हमें एक दुखद खबर मिली। हमें पता चला कि कोरिया के बुंदांग सैममुल चर्च के तेईस भाई-बहनों के समूह का नेतृत्व कर रहे पादरी बे ह्युंग-क्यू को अफ़गानिस्तान में तालिबान ने बंधक बनाकर मार डाला। मैंने CNN की वेबसाइट पर एक तस्वीर देखी जिसमें पादरी बे का शव कपड़े में लिपटा हुआ एक ट्रक के पीछे लदा हुआ था। मैंने याहू न्यूज़ पर एक लेख भी पढ़ा जिसका शीर्षक था “मारे गए पादरी बे ह्युंग-क्यू की उनके जन्मदिन पर दुखद मौत,” जिसमें कहा गया था: “इस बात की पुष्टि हो गई है कि अफ़गान चरमपंथी समूह तालिबान द्वारा मारे गए पादरी बे ह्युंग-क्यू (42) की मौत उनके जन्मदिन पर ही हुई, जिससे यह स्थिति और भी दुखद हो गई है। पादरी बे का जन्म 25 जुलाई, 1965 को हुआ था। जिस दिन वे 42 साल के हुए, उसी दिन एक विदेशी धरती पर हथियारबंद चरमपंथियों ने उनके सिर, छाती और पेट में दस गोलियां मारकर उनकी जान ले ली। बुंदांग सैममुल चर्च में पादरी के तौर पर सेवा करने वाले पादरी बे जेजू द्वीप के रहने वाले थे और उनके परिवार में उनकी पत्नी और एक बेटी है जो अभी एलिमेंट्री स्कूल में पढ़ती है” (इंटरनेट)। यह सचमुच एक दिल दहला देने वाली त्रासदी है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि ईश्वर उनकी पत्नी, एलिमेंट्री स्कूल जाने वाली उनकी बेटी, उनके पूरे परिवार और रिश्तेदारों, सैममुल चर्च की मंडली और उनके दोस्तों को सांत्वना दें। दिवंगत पादरी बे के निधन की खबर सुनकर मुझे प्रेरितों के काम (Acts) अध्याय 16 का वह प्रसंग याद आया—जिस पर मैंने कई बार उपदेश दिया है—जिसमें बताया गया है कि कैसे पौलुस और सीलास ने जेल में रहते हुए ईश्वर से प्रार्थना की और उनकी स्तुति की, जबकि वे ऐसी स्थिति का सामना कर रहे थे जहाँ अगले ही दिन उनकी मौत हो सकती थी। एक तरह से, दिवंगत पादरी बे और बाकी बाईस कोरियाई लोग—प्रभु में हमारे भाई-बहन जो अभी तालिबान की कैद में हैं—खुद को ऐसी स्थिति में पाते हैं जहाँ, प्रेरित पौलुस और सीलास की तरह ही, वे सचमुच जीवन और मृत्यु के चौराहे पर खड़े हैं। मेरा मानना है कि वे प्रेरितों के काम

अध्याय 16 के पौलुस और सीलास की स्थिति को आपसे या मुझसे कहीं ज़्यादा सीधे और वास्तविक स्तर पर समझ सकते हैं। मैं सोचता हूँ: अगर मुझे भी उनकी तरह बंधक बना लिया जाता, तो क्या मैं सच में भगवान से प्रार्थना कर पाता और सबसे बढ़कर, जानलेवा खतरे का सामना करते हुए भी उनकी स्तुति कर पाता?

सी. एस. लुईस ने स्तुति के बारे में एक बार कहा था: "सबसे काबिल लोग, जिनका मन विनम्र और संतुलित होता है, वही हमेशा स्तुति करते हैं; जबकि शिकायत करने वाले लोग सबसे कम स्तुति करते हैं।" मुझे लगता है कि यह एक सही बात है। जब दिल शिकायतों से भरा होता है, तो स्तुति नहीं निकल पाती। लेकिन, जब कोई भगवान के सामने विनम्र और संतुलित मन रखता है, तो वह उनकी स्तुति किए बिना नहीं रह सकता। हमें स्तुति क्यों करनी चाहिए? इसके कई कारण हैं, लेकिन तीन खास हैं। पहला, भगवान स्तुति के योग्य हैं (भजन संहिता 18:3; भजन संहिता 96:4)। दूसरा, स्तुति ही हमारी रचना का मुख्य उद्देश्य है (यशायाह 43:21; इफिसियों 1:13-14)। तीसरा, स्तुति से भगवान प्रसन्न होते हैं (भजन संहिता 69:30-31; भजन संहिता 147:11)। आज के अंश में—खासकर भजन संहिता 67 की आयतों 3 और 5 में—भजनकार भगवान से प्रार्थना करता है: "हे परमेश्वर, लोग तेरी स्तुति करें; सब लोग तेरी स्तुति करें।" इस वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन तीन कारणों पर चर्चा करना चाहता हूँ कि हमें प्रभु की स्तुति क्यों करनी चाहिए; इसका शीर्षक है "सब लोग प्रभु की स्तुति करें।" मेरी प्रार्थना है कि इस संदेश के माध्यम से हमारा जीवन आराधना में स्थापित हो—ऐसा जीवन जो सच में प्रभु की स्तुति करे।

पहला, हमें प्रभु की स्तुति उनकी कृपा के कारण करनी चाहिए।

भजन संहिता 67:1 को देखें: "परमेश्वर हम पर अनुग्रह करे और हमें आशीष दे और अपना मुख हम पर चमकाए (सेलाह)।" भजनकार ने इस्राएल राष्ट्र ("हम") के लिए विनती की, और उसकी मुख्य प्रार्थना यह थी कि भगवान की कृपा इस्राएल के लोगों पर बनी रहे। इसका कारण क्या था? भजनकार ने भगवान से इस्राएल पर कृपा करने के लिए क्यों कहा? यह उनके उद्धार के लिए था। दूसरे शब्दों में, उसने भगवान की कृपा इसलिए माँगी क्योंकि वह चाहता था कि इस्राएल के लोगों का उसके द्वारा उद्धार हो। इसके अलावा, उन्होंने परमेश्वर की कृपा मांगी क्योंकि वह चाहते थे कि इज़राइल के लोगों के ज़रिए सभी देशों का उद्धार हो। उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की: "पृथ्वी पर तेरे मार्ग और सभी देशों में तेरा उद्धार जाना जाए" (पद 2)।

उद्धार पूरी तरह से परमेश्वर की कृपा का विषय है। कल सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान यशायाह 59 पर मनन करते हुए, मुझे एक बार फिर याद आया कि उद्धार पूरी तरह से परमेश्वर की कृपा का काम है। यशायाह 59:1-2 में, भविष्यद्वक्ता यशायाह "तुम्हारे अधर्म" या "तुम्हारे पापों" को उस कारण के रूप में बताते हैं जिसकी वजह से परमेश्वर हमारी प्रार्थनाएँ नहीं सुनते। इन पापों की सूची पद 3 से शुरू होती है। मैंने इस सूची की तीन खास बातों पर विचार किया है: "व्यर्थ बातों पर भरोसा करना" (पद 4), "अधर्म के विचार" (पद 7), और "अपने लिए टेढ़े-मेढ़े रास्ते बनाना" (पद 8)। यशायाह 59 में पापों की सूची से सिर्फ़ इन तीन उदाहरणों पर विचार करने पर भी, कोई भी इंसान की कमज़ोरी को माने बिना नहीं रह सकता; इंसान के पाप की गहराई इतनी ज़्यादा है कि इसे सुलझाना हमारी अपनी शक्ति से बाहर है। फिर भी, हमारे बारे में—कमज़ोर इंसान जो खुद को नहीं बचा सकते—बाइबल यशायाह 59:16 में दर्ज करती है: "उसने देखा कि कोई मनुष्य नहीं था, और उसे आश्चर्य हुआ कि कोई मध्यस्थ नहीं था; इसलिए उसकी अपनी भुजा ने उसके लिए उद्धार लाया; और उसकी अपनी धार्मिकता ने उसे संभाला।" परमेश्वर ही वह है, जो यह जानते हुए कि हम अपने पाप से खुद को नहीं बचा सकते, अपनी भुजा से "उद्धार लाया"। इसलिए, आप और मैं पूरी तरह से परमेश्वर की कृपा से बचाए गए हैं; यह बिल्कुल भी हमारे अपने कामों या गुणों से नहीं है (इफिसियों 2:8-9)। यह कृपा पाकर, हमें प्रभु की स्तुति करनी चाहिए: "अद्भुत कृपा! कितनी मधुर आवाज़ है... वह मुझ जैसे पापी को क्यों छुड़ाएगा, मैं बता नहीं सकता" (भजन 410, पद 1)।

दूसरी बात, हमें प्रभु के धार्मिक न्याय के लिए उनकी स्तुति करनी चाहिए। भजन संहिता 67:4 को देखें: "देश आनंदित हों और खुशी से गाएँ, क्योंकि तू लोगों का न्याय निष्पक्षता से करता है और पृथ्वी पर देशों का मार्गदर्शन करता है (सेला)।" भजनकार बताते हैं कि सभी देशों (पद 2) को खुशी और आनंद के साथ प्रभु की स्तुति क्यों करनी चाहिए; इसका पहला कारण यह है कि उन्हें परमेश्वर की भरपूर कृपा से बचाया गया है (पद 1); और दूसरा कारण, जो पद 4 में बताया गया है, वह यह है कि प्रभु लोगों का न्याय निष्पक्षता से करते हैं और उन पर शासन करते हैं। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "यदि परमेश्वर अच्छाई करने वालों को इनाम और बुराई करने वालों को सज़ा न देते, तो नेकदिल लोगों (संतों) का जीवन, जो अच्छाई की राह पर चलते हैं, अर्थहीन और आनंद-रहित हो जाता। लेकिन चूँकि वे निष्पक्षता से शासन करते हैं और काम करते हैं, तो भला उनका जीवन आनंद से क्यों न भरा हो?" न्यायप्रिय परमेश्वर, जो अच्छाई का इनाम देते हैं और बुराई

को सज़ा देते हैं, अंततः अपने निष्पक्ष न्याय के ज़रिए बुरे लोगों को सज़ा देकर उन नेकदिल लोगों (संतों) को बचाते हैं जो अच्छाई की राह पर चलते हैं।

हम जिस दुनिया में रहते हैं, वह सचमुच बहुत अन्याय से भरी हुई है। इस पाप से भरी दुनिया में ऐसे लोग हैं जिन्हें अदालत के गलत फैसलों के कारण अन्यायपूर्ण तरीके से जेल में डाल दिया गया है, जबकि—शायद बड़ी संख्या में—ऐसे लोग भी हैं जो बुरे अपराध करते हैं, फिर भी उन्हें कोई सज़ा नहीं मिलती और वे आज़ाद घूमते हैं। ऐसा लगता है कि न केवल अदालतों के जज, बल्कि देश के नेता और यहाँ तक कि चर्च के नेता भी निष्पक्ष न्याय करने की अपनी समझ खोते जा रहे हैं। जब हम इसके कारण पर विचार करते हैं, तो पाते हैं कि हमारी दुनिया में अच्छाई और बुराई के बीच का फ़र्क धुंधला होता जा रहा है। बेशक, इसका कारण परम सत्य के अस्तित्व को न मानना है। "ग्रीक भाषा में, 'धार्मिकता' (righteousness) का अर्थ है 'परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चलना'" (इंटरनेट)।

ऐसी दुनिया में रहते हुए जहाँ अक्सर परमेश्वर की इच्छा साफ़ नहीं होती, और उनके वचन में मौजूद परम सत्य का पूरा ज्ञान न होने के कारण, हम अक्सर अज्ञानता में अपना विश्वास जीते हैं और परमेश्वर की इच्छा को समझ नहीं पाते। नतीजतन, कई बार हमारा जीवन उनकी इच्छा के अनुसार नहीं चल पाता। फिर भी, हमारा परमेश्वर न्याय का परमेश्वर है। भले ही हम सही फ़ैसला करने में असमर्थ हों, वह न्याय का परमेश्वर है जो निष्पक्षता से न्याय करता है। वह निष्पक्षता से काम करने वाला परमेश्वर है, जो अच्छों को इनाम देता है और बुरों को सज़ा देता है। भजन संहिता 96:13 कहता है: "वह आ रहा है, वह पृथ्वी का न्याय करने आ रहा है। वह दुनिया का न्याय धार्मिकता से और लोगों का न्याय अपनी सच्चाई से करेगा।" बाइबल हमें बताती है कि अपने लोगों का सच्चाई से न्याय करते हुए, वह "घमंडी लोगों को उनके कर्मों का फल देने" (भजन संहिता 94:2) के लिए उठता है और नेक लोगों को इनाम देता है (भजन संहिता 58:11)। इसलिए, हम पवित्र लोगों—नेक लोगों—को उनके न्यायपूर्ण फ़ैसले के लिए प्रभु की स्तुति करनी चाहिए।

तीसरी और आखिरी बात, हमें उन आशीषों के लिए प्रभु की स्तुति करनी चाहिए जो वह हमें देता है।

भजन संहिता 67:6 पर विचार करें: "पृथ्वी ने अपनी उपज दी है; परमेश्वर, हमारा परमेश्वर, हमें आशीष देगा।" यह अंश इस्राएल को मिली भरपूर फ़सल की आशीष के बारे में बताता है। यहाँ "उपज" (या "पैदावार") के रूप में अनुवादित शब्द का अर्थ विकास, विस्तार या पैदावार से है। यह शब्द मूल रूप से खेती की पैदावार के संदर्भ में इस्तेमाल किया गया था। यह संभवतः परमेश्वर की आशीष से ज़मीन द्वारा पैदावार देने के विचार को बताता है (WBC)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों की ज़मीन को आशीष दी, जिससे उसमें फल लगे और उन्हें भरपूर फ़सल की आशीष मिली। बेशक, इस भरपूर आशीष से पहले, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों पर सबसे बड़ी आशीष दी: उद्धार। उसने बुरे लोगों का सही न्याय करके अपने लोगों को बचाया। इसलिए, भजनकार ने प्रार्थना की, "सब लोग तेरी स्तुति करें" (पद 3 और 5)। जब हम उसकी स्तुति करते हैं, तो हमें आदर भरे दिल से ऐसा करना चाहिए (पद 7)। हमारा परमेश्वर वह है जो हमें आशीष देना चाहता है। आशीषों को तीन तरह से बांटा जा सकता है: परमेश्वर की आशीष, लोगों (रिश्तों) की आशीष और भौतिक आशीष। इन तीनों में प्राथमिकता का क्रम बहुत ज़रूरी है। सबसे पहले, हमें परमेश्वर की आशीष पानी चाहिए; दूसरे शब्दों में, हमें सबसे ऊपर आध्यात्मिक आशीषें पानी चाहिए। उसके बाद ही—या ऐसा करते हुए—हमें लोगों से जुड़ी आशीषों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वे हमारे जीवन में वफ़ादार और भरोसेमंद साथी लाएँ। फिर भी, हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि सबसे बड़ी आशीष खुद यीशु मसीह हैं; वही सभी आशीषों का स्रोत हैं। इफिसियों 1:3 के अनुसार, हमें पहले ही "स्वर्गीय स्थानों में हर तरह की आध्यात्मिक आशीष" मिल चुकी है। हमें परमेश्वर का प्रेम, उनका चुनाव और उनकी पहले से तय योजना मिली है; हम परमेश्वर की संतान बन गए हैं (गोद लिए जाने के कारण) और हमें छुटकारा—पापों की क्षमा—मिल चुकी है (पद 4–7)। इसलिए, हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए।

जब मैं स्वर्गीय पास्टर बे ह्युंग-क्यू के बारे में सोचता हूँ, तो मैं आज शाम आपके साथ क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु पर विचार करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि हम यीशु के उस प्रेम और अनुग्रह को याद करें, जिन्होंने क्रूस की भयानक पीड़ा सही और हमारी मुक्ति के लिए हमारी जगह पर अपनी जान दी। इस तरह, हम यह माने बिना नहीं रह सकते, जैसा कि भजन 403 कहता है: "हम उनकी स्तुति कैसे न करें, जब उनके बहुमूल्य लहू से हमें अनंत मृत्यु से छुटकारा मिला है?" आइए, हम जिन्हें परमेश्वर का उद्धार करने वाला अनुग्रह मिला है, हर परिस्थिति में प्रभु की स्तुति करें। ऐसा हो कि हमारे ज़रिए सभी राष्ट्र प्रभु की स्तुति करें।

हे धर्मी लोगों, आनंदित हो और खुशियाँ मनाओ।

[भजन संहिता 68:1–18]

आज सुबह, मैंने एक ऑनलाइन समाचार रिपोर्ट में स्वर्गीय सिम सियोंग-मिन के पिता की तस्वीर देखी, जिसमें वे अपने बेटे की मौत पर शोक मना रहे थे। यह तस्वीर श्री सिम जिन-प्यो की थी—जिन्होंने अपना बेटा खो दिया था—और वे अपने बेटे की तस्वीर को देखते हुए आँसू बहा रहे थे। "सियोंग-मिन, कृपया किसी अच्छी जगह जाना। वहाँ पहुँचकर, उन बहुत से लोगों की मदद करना जो संघर्ष कर रहे हैं और जिन्हें ज़रूरत है। पिता, माता और तुम्हारे भाई-बहन भी अच्छी तरह रहेंगे।" स्वर्गीय शिम सियोंग-मिन (29) के लिए सियोल नेशनल यूनिवर्सिटी बुंडंग अस्पताल में बनाए गए अंतिम संस्कार स्थल पर पहुँचने पर, उनके पिता शिम जिन-प्यो (62) ने अपने बेटे की तस्वीर को देखा। जब उन्हें मौत की सच्चाई का एहसास हुआ—जिसे मानने में उन्हें बहुत मुश्किल हो रही थी—तो वे बार-बार तस्वीर को सहलाते हुए दस मिनट से ज़्यादा समय तक फूट-फूटकर रोते रहे; इस दृश्य को देखने वाले हर व्यक्ति की आँखों में आँसू आ गए। सचमुच, यह दुनिया "मुसीबतों," "कठिनाइयों" और "पाप" से भरी हुई है। यह एक ऐसी दुनिया है जहाँ "मौत के कारण बहुत हैं" (भजन 474)। ऐसी दुनिया हमें केवल दर्द, पीड़ा, दुख और आँसू ही दे सकती है। फिर भी, इस दुनिया में रहते हुए भी, हम ईसाई परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं और कह सकते हैं, "यह कितना आनंदमय और सुखद है," और यह सब "प्रभु यीशु की उद्धार करने वाली कृपा" के कारण है। "प्रभु यीशु की उद्धार करने वाली कृपा" का हमेशा आनंद लेने वाले लोगों के रूप में, हम ऐसी दुनिया में भी शांति पा सकते हैं जहाँ शांति का अभाव है।

हमारे परमेश्वर ही हैं जो हमारे दुख को नाच और आनंद में बदल देते हैं। भजन संहिता 30:11 को देखिए: "तूने मेरे विलाप को नाच में बदल दिया; तूने मेरे शोक के वस्त्र को हटा दिया और मुझे आनंद के वस्त्र

पहनाए।" भजन संहिता 68:3 में, भजनकार दाऊद कहते हैं: "लेकिन धर्मी लोग परमेश्वर के सामने खुश हों और आनंद मनाएँ; वे प्रसन्न और आनंदित हों।" आज, इस वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन पाँच कारणों पर विचार करना चाहता हूँ जिनकी वजह से धर्मी लोग आनंद मनाते हैं और खुश होते हैं, और उम्मीद करता हूँ कि यह हमारे लिए भी आनंद मनाने और खुश होने का एक अवसर बनेगा। सबसे पहले, नेक लोग इसलिए खुश और आनंदित होते हैं क्योंकि परमेश्वर बुरे लोगों का विनाश करते हैं।

भजन संहिता 68:1–2 को देखें: "परमेश्वर उठें, उनके दुश्मन बिखर जाएं; उनके विरोधी उनके सामने से भाग जाएं। आप उन्हें हवा से उड़ते धुएं की तरह उड़ा दें; बुरे लोग परमेश्वर के सामने वैसे ही नष्ट हो जाएं, जैसे आग के सामने मोम पिघलता है।" हमारे परमेश्वर ही हैं जो हमारे दुश्मनों—यानी जो प्रभु से नफरत करते हैं—को बिखेरते हैं, खदेड़ते हैं और आखिरकार उनका विनाश करते हैं। जैसे धुआं हवा में तुरंत गायब हो जाता है, वैसे ही जो बुरे लोग प्रभु से नफरत करते हैं, वे परमेश्वर के क्रोध के कारण नष्ट हो जाते हैं; वे उनके सामने वैसे ही खत्म हो जाते हैं जैसे आग के सामने मोम पिघलता है। इसलिए, नेक लोग खुश और आनंदित होते हैं क्योंकि न्याय करने वाले परमेश्वर बुरे लोगों को सज़ा देते हैं और उनका विनाश करते हैं। दूसरे शब्दों में, नेक लोग परमेश्वर के न्याय को देखकर खुशी और आनंद पाते हैं।

आज सुबह की प्रार्थना सभा में, मैंने अफ़गानिस्तान में बंधक बनाए गए भाई-बहनों के लिए प्रार्थना की और परमेश्वर से सच्चे दिल से विनती की कि वे अपना न्याय प्रकट करें। मैंने प्रार्थना की कि वे बुरे लोगों का न्याय करें और नेक लोगों को बचाएं। मैंने प्रार्थना की कि परमेश्वर की महिमा के प्रकट होने से, जो लोग ईसाई धर्म की बुराई करते हैं, उनके मुंह बंद हो जाएं और मसीह का सुसमाचार बचाए गए लोगों के ज़रिए और भी बड़े पैमाने पर फैलाया जाए। हालांकि मुझे परमेश्वर के लोगों की मुक्ति के लिए बुरे लोगों के विनाश की प्रार्थना करने की आदत नहीं है, फिर भी मैंने भजनकार के उदाहरण का पालन करते हुए यह प्रार्थना की—जिनकी प्रार्थनाओं पर मैं मनन करता रहा हूं। हमारे न्याय करने वाले परमेश्वर निश्चित रूप से उठेंगे और जो उनसे नफरत करते हैं, उन्हें बिखेर देंगे, खदेड़ देंगे और आखिरकार नष्ट कर देंगे। क्योंकि परमेश्वर खुद का इनकार नहीं कर सकते, इसलिए जब हम उनके न्याय पर विचार करते हैं तो हम विश्वास के साथ भरोसा रख सकते हैं; इसीलिए हम खुश और आनंदित हो सकते हैं।

दूसरी बात, नेक लोग इसलिए खुश और आनंदित होते हैं क्योंकि परमेश्वर नेक लोगों को समृद्धि देते हैं... ...यही कारण है।

भजन संहिता 68:6 को देखें: "परमेश्वर अकेले लोगों को परिवार देते हैं; वे बंधनों में पड़े लोगों को समृद्धि में लाते हैं; लेकिन बागी लोग सूखी ज़मीन पर रहते हैं।" हमारे परमेश्वर "अनाथों के पिता, विधवाओं के रक्षक" हैं (पद 5)। वही परमेश्वर अकेले रहने वालों—यानी बिना परिवार के रहने वालों या "अकेले" लोगों—को एक गर्मजोशी भरे घर जैसी जगह पर ले जाता है (पार्क युन-सन)। अच्छे लोगों को इनाम देने और बुरे लोगों को सज़ा देने वाले परमेश्वर के तौर पर, वह दुष्टों का विनाश करता है; जो लोग "उसके खिलाफ़ बगावत करते हैं"—यानी धर्मत्यागी या गद्दार—उनके घरों को वह "सूखी ज़मीन" में बदल देता है (पार्क युन-सन)। फिर भी, परमेश्वर उन नेक लोगों को खुशहाली देता है जिनसे वह प्यार करता है, उन आत्माओं को जो अकेलेपन में संघर्ष कर रही हैं, और खासकर उन्हें जो कभी बंधनों में जकड़े हुए थे। जो अकेला व्यक्ति इस खुशहाली का आनंद लेता है, वह परमेश्वर के प्यार और बचाने वाले स्वभाव के कारण खुशी और आनंद से भर जाता है।

यिर्मयाह 22:21 में, जिस पर आज सुबह की प्रार्थना सभा में मनन किया गया, ये शब्द मिलते हैं: "मैंने तुम्हारी खुशहाली के समय तुमसे बात की, लेकिन तुमने कहा, 'मैं नहीं सुनूंगा।' जवानी के दिनों से ही तुम्हारा यही तरीका रहा है कि तुमने मेरी आवाज़ नहीं मानी।" जब मैंने इस वचन पर मनन किया, तो मैंने अपनी कमियों—खासकर परमेश्वर की आवाज़ न सुनने की पापी आदत—के बारे में सोचा। जब मैंने सोचा कि मैं अक्सर कब परमेश्वर की बात नहीं सुनता, तो मैंने पाया कि जहाँ कोरियाई बाइबिल "शांति" के समय की बात करती है, वहीं NASB वर्शन में "तुम्हारी खुशहाली के समय" कहा गया है—यानी जब सब कुछ अच्छा चल रहा होता है, तब मैं अक्सर प्रभु के वचन को नज़रअंदाज़ कर देता हूँ। यहाँ सबसे ज़रूरी सबक यह है कि हम हमेशा ऐसी आध्यात्मिक स्थिति बनाए रखें जिसमें हम प्रभु की आवाज़ सुनने के लिए तैयार हों, चाहे समय खुशहाली का हो या मुश्किलों का। अगर हम ऐसा करते हैं, तो हम परमेश्वर के बचाने वाले काम और उसकी खुशहाली की आशीष का अनुभव करेंगे—ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने भजन संहिता 68 में बताया है—यहाँ तक कि "वीरान जगह" में भी (भजन संहिता 68:4; वचन 6)। ऐसा करने से हम सचमुच खुशी और आनंद मना सकते हैं।

तीसरी बात, नेक लोग इसलिए खुश होते हैं और आनंद मनाते हैं क्योंकि ज़रूरत के समय परमेश्वर उन्हें मज़बूत बनाता है।

भजन संहिता 68:9 को देखें: "हे परमेश्वर, तूने भरपूर बारिश भेजी; जब तेरी विरासत थक गई थी, तो तूने उसे मज़बूत किया।" हमारा परमेश्वर वह है जो "तेरी विरासत"—यानी कनान देश—पर भरपूर बारिश भेजता है और मुश्किल समय में उसे मज़बूत बनाता है, जैसे कि सूखे के समय जब फसल और फलों के पेड़ों के जीवित रहने पर खतरा मंडरा रहा हो; वही परमेश्वर है जो देश में फिर से खुशहाली लाता है (पार्क युन-सन)। लोगों को परमेश्वर पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करने के लिए, दाऊद ने उन्हें उस शक्ति को याद करने के लिए कहा जो परमेश्वर ने मिस्र से निकलने (एक्सोडस) और जंगल के दिनों में दिखाई थी (पद 7 और उसके बाद; पार्क युन-सन)। उस दिव्य शक्ति ने कनान देश में अपने लोगों पर प्रभु की उदारता—उनकी भलाई—की वर्षा की (पद 10)। वही परमेश्वर है जो ज़रूरत के समय भी अपनी भलाई दिखाता है। उस भलाई का अनुभव करने के बाद (भजन संहिता 34:8), भजनकार ने परमेश्वर में आनंद और खुशी मनाई।

मुश्किल समय में भी, हमें उस सच्चे और भले परमेश्वर की ओर देखना चाहिए जो सब कुछ भलाई के लिए काम में लाता है (रोमियों 8:28)। हालाँकि हम परमेश्वर की कृपा के बिना विश्वास में काम नहीं कर सकते, लेकिन जब वह वह कृपा देता है, तो हम मुश्किलों के बीच भी विश्वास के साथ "गुड गॉड" (भला परमेश्वर) गीत गा सकते हैं। इसलिए, हमें उम्मीद रखनी चाहिए कि परमेश्वर हमारी कमी को बहुतायत में बदल देगा। जब हम खुशहाल होते हैं तो "भले परमेश्वर" की प्रशंसा करना आसान हो सकता है; हालाँकि, ज़रूरत के समय भी विश्वास के साथ उसकी प्रशंसा करके, हमें यह अनुभव करना चाहिए कि वह हमारे दुख को खुशी और आनंद में बदल देता है। हमारे प्रति परमेश्वर की प्रेमपूर्ण दया और भलाई हमेशा बनी रहती है। हम उस अनंत प्रेमपूर्ण दया और भलाई का अनुभव करते हुए आनंदित होते हैं—न केवल खुशहाली के समय में बल्कि मुश्किल समय में भी—हमें ऐसे परमेश्वर के लोग बनना चाहिए जो आनंद मनाते हैं।

चौथा, नेक लोग इसलिए खुश और आनंदित होते हैं क्योंकि परमेश्वर हमें जीत दिलाता है।

भजन संहिता 68:14 को देखें: "जब सर्वशक्तिमान ने वहाँ राजाओं को तितर-बितर किया, तो यह ज़ल्मोन पर बर्फ गिरने जैसा था।" आज के अंश की आयतों 11-14 में, दाऊद इस्राएल द्वारा कनान को जीतने के इतिहास का वर्णन करता है। मिस्र से निकलने और कनान देश को जीतने के बारे में, परमेश्वर ने अपना शक्तिशाली वचन दिया—पक्की जीत का वादा। नतीजतन, इस्राएल के लोग उस वचन पर विश्वास करके आगे बढ़े, और उनकी महिलाओं ने जीत के गीत गाए (आयत 11) (पार्क युन-सन)। ध्यान देने वाली बात है कि जीत का इतिहास बताता है कि "सेनाओं के राजा भाग गए" (आयत 12)। परमेश्वर ने अपनी शक्ति से कनान के सभी राजाओं को हरा दिया। इस प्रकार, शारीरिक रूप से कमजोर होने के बावजूद, महिलाएँ भी दुश्मन की सेनाओं को खदेड़ने और युद्ध की लूट में हिस्सा लेने में सक्षम हुईं (पार्क युन-सन)। हालाँकि मिस्र या जंगल में इस्राएलियों का समय एक गंदी जगह—जैसे भेड़-बाड़े—में रहने जैसा था, लेकिन उस दुखभरी ज़िंदगी से उनका आध्यात्मिक जीवन चांदी और सोने की तरह चमकने लगा (पार्क युन-सन)। सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने कनान के राजाओं को तितर-बितर कर दिया और इस्राएल के लोगों को जीत दिलाई; इसलिए, वे खुश और आनंदित हुए।

अपने आप, दुनिया, पाप, शैतान और मौत के खिलाफ लड़ाई में, हम अक्सर हार जाते हैं, लड़खड़ाते और गिरते हैं; नतीजतन, हम अक्सर निराशा, अपराध-बोध और पीड़ा में घिरे रहते हैं। फिर भी, इन सबके बीच हम इसलिए खुश और आनंदित हो सकते हैं क्योंकि यीशु के क्रूस की जीत हुई है। जब हम यीशु की ओर देखते हैं, जिन्होंने मौत को हराया और फिर से जी उठे, तो हम जीत की उम्मीद में रहते हैं। इसके अलावा, उस जीत के भरोसे के साथ, हम आध्यात्मिक लड़ाई लड़ने के लिए फिर से उठ खड़े होते हैं। इसलिए, हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं, "जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जीत दिलाता है" (1 कुरिन्थियों 15:57)। उस धन्यवाद के साथ-साथ, हम यीशु की जीत के कारण खुश और आनंदित हो सकते हैं।

आखिरकार, पाँचवाँ कारण जिसकी वजह से नेक लोग खुश और आनंदित होते हैं, वह यह है कि परमेश्वर हमारे साथ है।

भजन संहिता 68:18 पर विचार करें: "तू ऊँचे पर चढ़ गया, अपने साथ बंधुओं की भीड़ को ले गया और मनुष्यों के बीच उपहार प्राप्त किए, यहाँ तक कि विद्रोहियों के बीच भी, ताकि प्रभु परमेश्वर वहाँ निवास कर सके।" इस अंश के 15-18 पदों में, दाऊद बताता है कि कैसे इस्राएल को कनान पर विजय दिलाने के बाद,

परमेश्वर ने यरूशलेम को मंदिर के स्थान के रूप में चुना और उन पर अपनी कृपा बरसाई (पार्क युन-सन)। उस कृपा के बीच दाऊद के आनंदित और खुश होने का कारण यह था कि परमेश्वर इस्राएल के लोगों के साथ रहता था। विशेष रूप से, दाऊद इसलिए खुश था क्योंकि परमेश्वर—जो "ऊँचे पहाड़ों" (पद 16) जैसे "बाशान पर्वत" (पद 15) और "सीनै पर्वत" (पद 17) पर रहता है, और जो "ऊँचे स्थानों" (पद 18) में निवास करता है—वह दाऊद के साथ था, जो सबसे निचले स्थानों में रहता था। इस पर विचार करते हुए, मुझे हबक्कूक 3:17-18 के शब्द याद आते हैं: "भले ही अंजीर के पेड़ में कलियाँ न आएँ और अंगूर की बेलों में अंगूर न लगें, भले ही जैतून की फसल खराब हो जाए और खेतों में अनाज न उगे, भले ही बाड़े में भेड़ें न हों और अस्तबल में मवेशी न हों, फिर भी मैं प्रभु में आनंदित होऊँगा, मैं अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में खुश होऊँगा।" हमारे आनंदित और खुश होने का कारण स्वयं परमेश्वर हैं। अपनी खुशी और आनंद को इस बात पर आधारित करने के बजाय कि परमेश्वर क्या देता है या क्या नहीं देता, स्वयं परमेश्वर ही हमारा आनंद और खुशी बन जाते हैं। मुझे भजन 82, पद 1 के बोल याद आते हैं: "हे प्रभु, तू ही मेरा आनंद, मेरी आशा और मेरा जीवन है; भले ही मैं दिन-रात तेरी स्तुति गाता हूँ, फिर भी मैं हमेशा और अधिक अर्पित करने की इच्छा रखता हूँ।"

मुझे सपन्याह 3:17 भी याद आता है: "प्रभु तेरा परमेश्वर तेरे साथ है, वह शक्तिशाली योद्धा जो बचाता है। वह तुझमें बहुत प्रसन्न होगा; अपने प्रेम में वह अब तुझे नहीं डांटेगा, बल्कि गीत गाकर तुझ पर आनंद मनाएगा।" दुख भरी दुनिया में भी हमारे आनंदित और खुश रहने की क्षमता इस बात पर आधारित है कि परमेश्वर हममें इतना आनंद लेता है कि वह अपनी खुशी को रोक नहीं पाता। वह ऐसा परमेश्वर है जो दुष्टों का विनाश करता है और धर्मी लोगों को समृद्धि प्रदान करता है। वही परमेश्वर है जो ज़रूरत के समय हमें मज़बूत बनाता है। वही परमेश्वर है जो हमें जीत दिलाता है और हमेशा हमारे साथ रहता है। इसीलिए परमेश्वर धर्मी लोगों से प्रसन्न होता है और उनमें आनंदित होता है।

वह परमेश्वर जो हमें शक्ति और सामर्थ्य देता है (1)

[भजन संहिता 68:19–35]

अभी, हंटिंगटन, यूटा में, कई लोग ज़मीन के नीचे 1,500 फीट की गहराई में फँसे छह खनिकों को बचाने की कोशिश कर रहे हैं। हालाँकि दस में से चार खनिक ज़िंदा बच निकलने में कामयाब रहे, लेकिन बाकी छह का क्या हुआ, यह अभी तक पता नहीं है। फिर भी, इन खनिकों को बचाने के लिए एक बचाव अभियान चल रहा है, जो शायद अभी भी ज़िंदा हों। कहा जाता है कि अगर वे ज़िंदा हैं, तो वे ऐसी स्थिति में हैं जहाँ वे खुद बाहर नहीं निकल सकते; उन्हें उस गहराई से बचाने के लिए पूरी तरह से बाहरी बचाव अभियान की सफलता पर निर्भर रहना होगा। मैं उस अकल्पनीय डर और मौत के खौफ की कल्पना करता हूँ जो वे महसूस कर रहे होंगे। वे कितनी बेसब्री से इंतज़ार कर रहे होंगे कि कोई उन्हें जल्द से जल्द बचा ले। इससे मुझे भविष्यवक्ता योना की याद आती है। मैं योना की किताब के दूसरे अध्याय में बताए गए उस दृश्य के बारे में सोचता हूँ जब योना बड़ी मछली के पेट के अंदर था और समुद्र की गहराइयों से परमेश्वर को पुकार रहा था। मुझे उस घोर संकट के क्षण में योना द्वारा की गई स्वीकारोक्ति याद आती है: "... उद्धार प्रभु की ओर से मिलता है" (योना 2:9)।

विश्वास का सही जीवन जीने के लिए, हमें अपनी कमज़ोरी और अक्षमता को अच्छी तरह से समझने की ज़रूरत है। तभी हम पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर हो सकते हैं—वह प्रभु जो हमारी शक्ति है। व्यक्तिगत रूप से, मैं अक्सर अपने आप से लड़ने में इस कमज़ोरी और अक्षमता को महसूस करता हूँ। सही बात जानने के बावजूद जिन चीज़ों को मैं बदल नहीं सकता, उन्हें देखकर मुझे अपनी कमज़ोरी और परमेश्वर की मदद के बिना बदलने में अपनी अक्षमता का एहसास होता है—कम से कम कुछ हद तक। इसीलिए मेरे पास परमेश्वर की शक्ति पर निर्भर रहने के अलावा कोई चारा नहीं है। इसीलिए मैं परमेश्वर से प्रार्थना करने के

लिए मजबूर हूँ। प्रार्थना के दौरान—अपनी बेबसी और अक्षमता का सामना करते हुए भी—मैं परमेश्वर की शक्ति और सामर्थ्य का अनुभव करता हूँ।

आज, भजन संहिता 68:35 में, भजनकार दाऊद घोषणा करता है: "हे परमेश्वर, तू अपने पवित्र स्थान में अद्भुत है; इस्राएल का परमेश्वर अपने लोगों को शक्ति और सामर्थ्य देता है। परमेश्वर की स्तुति हो!" इस अंश पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उस परमेश्वर के स्वभाव पर विचार करना चाहता हूँ जो हमें शक्ति और सामर्थ्य देता है—खासकर, उसके चरित्र के एक पहलू पर—ताकि हम उसकी दी हुई कृपा का पूरा आनंद ले सकें। सबसे पहले, जो परमेश्वर हमें ताकत और शक्ति देता है, वही प्रभु हर दिन हमारा बोझ उठाता है।

भजन संहिता 68:19 को देखिए: "प्रभु की स्तुति हो, हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की, जो हर दिन हमारा बोझ उठाता है।" तो फिर, वह "बोझ" क्या है जिसके बारे में भजनकार दाऊद यहाँ बात कर रहा है? हम इसके चार पहलुओं पर विचार कर सकते हैं।

(1) यह बोझ उस भार की ओर इशारा करता है जो परमेश्वर के लोगों पर "दुश्मनों" (पद 1) या "दुष्टों" (पद 2) द्वारा डाला जाता है।

स्वाभाविक रूप से, इस बोझ में सताए जाने से होने वाला दर्द और दुख शामिल था। इस दुख का एक खास वर्णन इस बात में मिलता है कि इस्राएलियों को कैद या बंदी बनाकर रखा गया था (पद 6)। मेरा मानना है कि हम भी ऐसे बोझ उठाते हैं। यानी, हमारे दुश्मन शैतान के कारण, कई बार हमारी आत्माएँ तड़पती और थक जाती हैं, और अनगिनत हमलों और प्रलोभनों के बीच हमारा दिल भारी महसूस करता है। जैसे इस्राएलियों के दुश्मनों ने उन्हें कभी कैद में रखा था, वैसे ही शैतान कितनी बार हमारे दिलों पर हमला करता है और हमें हमारे ही मन में कैद कर लेता है? उदाहरण के लिए, एक-दूसरे को माफ करने के प्रभु के आदेश को न मानने के लिए उकसाकर, शैतान हमें कैद जैसी ज़िंदगी में फँसा देता है। यह हमारे लिए कितना भारी बोझ बन जाता है!

(2) हमारा बोझ वह "अकेलापन" है जिसे परमेश्वर के लोग महसूस करते हैं (पद 6)।

जब इस्राएलियों को उनके दुश्मनों—दुष्टों—द्वारा सताया गया, तो वे अपने दुख और पीड़ा के बीच अकेलापन महसूस करते थे। इसीलिए दाऊद परमेश्वर का वर्णन अनाथों के पिता और विधवाओं के रक्षक के रूप में करता है (पद 5)। मेरा मानना है कि इस्राएलियों के बीच सचमुच कई अनाथ और विधवाएँ थीं; आखिरकार, इस्राएली पुरुषों की एक बड़ी संख्या मारी गई थी—चाहे जंगल में या, और भी खास तौर पर, कनान देश को जीतने के दौरान। हालाँकि, शाब्दिक अर्थ से परे, मेरा मानना है कि इस्राएलियों को "अनाथ" और "विधवा" कहने का एक आध्यात्मिक महत्व भी है। यह उस अकेलेपन को दर्शाता है जो उन्होंने अपने दुश्मनों (दुष्टों) के हाथों दुख सहते हुए महसूस किया था। हम भी वैसा ही अकेलापन महसूस करते हैं जैसा इस्राएलियों ने किया था। खासकर जब हम दर्द में होते हैं या महसूस करते हैं कि परमेश्वर दूर है, तो अक्सर कई लोगों से घिरे होने पर भी हम खुद को अकेला पाते हैं। (3) हमारा बोझ परमेश्वर के लोगों की विरासत से जुड़ी कमी या तंगी की ओर इशारा करता है (पद 9)।

यह उस कमी और मुश्किल हालात की ओर इशारा करता है जिनका सामना इस्राएलियों को कनान देश में रेगिस्तान से निकलने के बाद करना पड़ा था। दूसरे शब्दों में, यह उस समय की बात है जब कनान देश में सूखा पड़ा, जिससे फसलें और फलों के पेड़ बच नहीं पाए (पार्क युन-सन)। आर्थिक तंगी का यह बोझ इस्राएल के लोगों पर बहुत भारी था। यह बोझ शायद और भी भारी इसलिए था क्योंकि जिस ज़मीन को वे बहुत उपजाऊ मानते थे, वहाँ कमी के बीच वे मिस्र में अपनी पुरानी ज़िंदगी की चाहत जैसे पापी विचार मन में ला रहे थे। हम, समृद्ध अमेरिका में रहने वाले कोरियाई-अमेरिकी, शायद इस्राएलियों की स्थिति को समझ सकते हैं। अपने देश कोरिया को छोड़कर समृद्ध अमेरिका आने के बाद, खुद को इस्राएलियों जैसी तंगी की हालत में पाना कितना भारी बोझ होगा? जैसे सूखे के कारण कनान में खेती नाकाम हो गई, वैसे ही जब कोई अमेरिका में कारोबार शुरू करता है और नाकाम हो जाता है, जिससे आर्थिक तंगी आती है, तो यह दिल पर कितना भारी बोझ होता है!

(4) हमारा बोझ परमेश्वर के लोगों की गरीबी है (पद 10)।

आज के हिस्से, भजन संहिता 68:10 में, दाऊद कहते हैं, "...हे परमेश्वर, तूने अपनी भलाई से गरीबों के लिए इंतज़ाम किया।" ऐसा लगता है कि कनान में आने के बाद भी, इस्राएलियों को कभी-कभी गरीबी का सामना करना पड़ा, जब सूखे के कारण ज़मीन फसलें और फलों के पेड़ उगाने लायक नहीं रही। कितनी अजीब बात है—इतनी संपन्नता वाली ज़मीन पर गरीबी... फिर भी, यह हमारी सच्चाई भी हो सकती है: अमेरिका में गरीबी, जो कनान जैसी ही संपन्न ज़मीन है... बेशक, यहाँ संदर्भ भौतिक गरीबी का है, लेकिन अगर हम गहराई से सोचें, तो कितनी ही आत्माएँ संपन्नता वाली ज़मीन पर भी आध्यात्मिक रूप से कंगाल हो जाती हैं? मैं अक्सर सोचता हूँ कि कितने ही ईसाई, भौतिक रूप से अमीर बनते हुए, शैतान के लालच में फँसकर आध्यात्मिक रूप से कंगाल हो जाते हैं। सचमुच, इस बारे में सोचना ही एक भारी बोझ है।

परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों का बोझ उनकी ओर से उठाया; उन्होंने ऐसा कैसे किया? हम चार तरीकों पर विचार कर सकते हैं:

(1) उन्होंने दुश्मनों या बुरे लोगों के कारण आए बोझ को—खासकर इस्राएलियों की मुश्किल हालत के संदर्भ में—उन्हें संपन्नता और सफलता देकर उठाया (पद 6)। (2) उन्होंने इज़राइल के लोगों के अकेलेपन का भारी बोझ उठाया; "अनाथों के पिता" और "विधवाओं के रक्षक" बनकर, वे उन्हें एक ऐसे स्थान पर ले गए जो एक गर्मजोशी भरे, प्यार-भरे घर जैसा था (पद 5–6) (पार्क युन-सन)।

(3) जब कनान की धरती सूखी और ज़रूरतमंद थी, तब उन्होंने भरपूर बारिश भेजकर हमारे बोझ को हल्का किया और उस धरती को फिर से खुशहाल बनाया (पद 9; पार्क युन-सन)।

(4) उन्होंने गरीबों की ज़रूरतों को दयालुता से पूरा करके उनके बोझ को उठाया (पद 10)।

बाइबल हमें सिखाती है: "अपना बोझ प्रभु पर डाल दे, और वह तुझे संभालेगा; वह धर्मी को कभी भी डगमगाने नहीं देगा" (भजन संहिता 55:22)। हमारे बोझ चाहे कितने भी भारी क्यों न हों, आइए हम प्रार्थना के ज़रिए उन्हें परमेश्वर को सौंप दें। परमेश्वर हमें उन बोझों को उठाने की शक्ति और क्षमता देगा।

वह परमेश्वर जो हमें शक्ति और सामर्थ्य देता है (2)

[भजन संहिता 68:19-35]

विश्वास का सही जीवन जीने के लिए, हमें सचमुच खुद को समझना होगा। दूसरे शब्दों में, हमें गहराई से यह महसूस करना होगा कि हम पापी हैं। आज सुबह की प्रार्थना सभा में यहेजकेल 16 (पद 14-15, 26, और 28-29) के जिन अंशों पर मनन किया गया, उनमें परमेश्वर नबी यहेजकेल के माध्यम से इस्राएल के लोगों के पापों की ओर इशारा करते हैं: "...तुम्हारी सुंदरता इसलिए उत्तम थी क्योंकि मैंने तुम्हें महिमा दी थी... लेकिन तुमने अपनी सुंदरता पर भरोसा किया और अपनी प्रसिद्धि के कारण व्यभिचार किया... तुम्हारी वासना शांत नहीं हुई... तुमने व्यभिचार किया फिर भी उसे कम समझा... तुम्हें पता ही नहीं चला कि कब बहुत हो गया।" परमेश्वर द्वारा दी गई उत्तम सुंदरता पर भरोसा करते हुए और अपनी प्रसिद्धि के नशे में, इस्राएल के लोगों ने मिस्रियों (पद 26), पलिस्तियों (पद 27), अश्शूरियों (पद 28) और कसदियों (पद 29) के साथ आध्यात्मिक व्यभिचार किया, फिर भी वे असंतुष्ट रहे। उन्होंने परमेश्वर द्वारा दी गई आशीषों—सुंदरता और प्रसिद्धि—का इस्तेमाल उनकी महिमा के लिए करने के बजाय उनका दुरुपयोग किया, और इस तरह आध्यात्मिक व्यभिचार का पाप किया। ठीक वैसे ही जैसे होशे के समय में इस्राएलियों ने परमेश्वर से मिली भरपूर आशीषों को बाल (Baal) को भेंट करके आध्यात्मिक व्यभिचार किया था, यहेजकेल के समय में भी इस्राएलियों ने आध्यात्मिक व्यभिचार का पाप किया। नबी यहेजकेल ने उनकी तुलना एक व्यभिचारी स्त्री से की और कहा कि उनका "व्यभिचार दूसरी स्त्रियों जैसा नहीं था, क्योंकि व्यभिचार करने के लिए किसी ने तुम्हारा पीछा नहीं किया; बल्कि, तुमने बिना कोई भुगतान लिए [सुविधाएँ] दीं" (पद 34)। क्या हममें भी वही पापी प्रवृत्तियाँ नहीं हैं जो इस्राएल के लोगों में थीं? मेरा मानना है कि हममें कोई अंतर नहीं है; उनकी तरह हम भी केवल इंसान हैं और उन्हीं गलतियों के शिकार हो सकते हैं। हमारा पापी स्वभाव हमें आध्यात्मिक व्यभिचार करने के लिए प्रेरित करता है—ठीक इस्राएलियों की तरह—फिर भी हमें इसमें कभी सच्ची संतुष्टि

नहीं मिल सकती। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने हमारे भीतर अनंत काल की लालसा रखी है (सभोपदेशक 3:11)। इसलिए, मसीह में नई सृष्टि के रूप में, हम तभी तृप्ति पा सकते हैं जब हम अनंत चीजों की ओर बढ़ें। चाहे हम इस दुनिया की पापपूर्ण और क्षणभंगुर चीज़ों के पीछे कितनी भी शिद्दत से क्यों न भागें, हम—इस्राएलियों की तरह—कभी संतुष्ट नहीं होंगे।

जब मैं यहेजकेल 16 में इस्राएलियों के चित्रण में अपनी खुद की झलक देखता हूँ, तो मैं न केवल खुद से निराश होना चाहता हूँ, बल्कि सच्ची हताशा भी महसूस करना चाहता हूँ। मैं ऐसा इसलिए चाहता हूँ क्योंकि जब मैं हताशा के उस बिंदु पर पहुँचता हूँ, तभी मैं सचमुच परमेश्वर की लालसा कर सकता हूँ और केवल उन पर ही अपनी आशा रख सकता हूँ। आज, जब मैं अपने स्वभाव के विरुद्ध लड़ाई में अपनी कमजोरी और अक्षमता को महसूस करता हूँ, तो मैं परमेश्वर की शक्ति और सामर्थ्य का सहारा लेता हूँ। पिछले बुधवार से आगे बढ़ते हुए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम परमेश्वर की कृपा का अनुभव करें, जब हम उस परमेश्वर के दो और पहलुओं पर मनन करते हैं जो हमें शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करते हैं।

दूसरी बात, जो परमेश्वर हमें शक्ति और सामर्थ्य देते हैं, वे उद्धार के परमेश्वर हैं।

भजन संहिता 68:20 को देखें: "हमारा परमेश्वर उद्धार का परमेश्वर है; और प्रभु परमेश्वर ही मृत्यु से छुटकारा दिलाते हैं।" प्रभु, जो प्रतिदिन हमारा बोझ उठाते हैं, हमारे उद्धार के परमेश्वर भी हैं (पद 19-20)। उद्धार के वे परमेश्वर हमें हमारे शत्रुओं से बचाते हैं। इन शत्रुओं के विषय में, दाऊद हमें कई बातें सिखाते हैं:

(1) हमारे शत्रु प्रभु के भी शत्रु हैं।

भजन संहिता 68:21 के पहले भाग को देखें: "शत्रु का सिर..." यहाँ, दाऊद "शत्रु" की बात करते हैं। इसका अर्थ है कि हमारे शत्रु वास्तव में प्रभु के शत्रु हैं।

(2) हमारे शत्रु वे हैं जो आदतन पापपूर्ण कार्य करते हैं।

भजन संहिता 68:21 को देखें: "परमेश्वर शत्रु का सिर कुचल देंगे, उस व्यक्ति के सिर का मुकुट जो अपने अपराधों में लगा रहता है।"

(3) हमारे शत्रुओं का लक्ष्य हमारी मृत्यु है।

भजन संहिता 68:20 को देखें: "परमेश्वर हमारे लिए उद्धार के परमेश्वर हैं; और प्रभु परमेश्वर ही मृत्यु से छुटकारा दिलाते हैं।" जैसा कि दाऊद यहाँ कहते हैं, हमारे शत्रुओं का लक्ष्य "मृत्यु" के अलावा और कुछ नहीं है। दाऊद घोषणा करते हैं कि परमेश्वर—जो हमें शक्ति और सामर्थ्य देते हैं—हमें इन शत्रुओं से बचाते हैं। हमारे परमेश्वर ही हमें मौत से बचाते हैं और जीवन की ओर ले जाते हैं (पद 20), और वही हमारे दुश्मनों को "चूर-चूर" कर देते हैं (पद 21)। जो परमेश्वर हमें बचाते हैं, वे हमारे दुश्मनों को ढूँढ़कर सज़ा देते हैं, चाहे वे पहाड़ों में छिपे हों या समुद्र की गहराई में (पद 22; पार्क युन-सन)। वे अपने लोगों, यानी इस्राएल के दुश्मनों को नष्ट करने का वादा करते हैं (पद 23)। इस तरह, दुश्मनों को नष्ट करने और अपने लोगों को बचाने में प्रभु की जीत को देखते हुए, दाऊद ने भविष्यवाणी की: "मेरे परमेश्वर, मेरे राजा, पवित्र स्थान में प्रवेश करते हुए" (पद 24)।

इसलिए, दाऊद कहते हैं कि इस्राएल के लोगों के लिए सही काम परमेश्वर की स्तुति करना है: "तुम जो इस्राएल के स्रोत से हो, बड़ी सभा में परमेश्वर—प्रभु—को धन्यवाद दो" (पद 26)। क्योंकि परमेश्वर अपने दुश्मनों को बर्बाद करते हैं, दाऊद इस्राएल के लोगों से कहते हैं: "धर्मी लोग खुश हों; वे परमेश्वर के सामने आनंद मनाएँ और खुशी से झूम उठें। परमेश्वर के लिए गाओ, उनके नाम की स्तुति करो; उनके लिए रास्ता बनाओ जो जंगल में सवारी करते हैं—उनका नाम प्रभु है—और उनके सामने आनंद मनाओ" (पद 3–4)। बाइबल में नहेमायाह 8:10 कहता है: "...प्रभु का आनंद ही तुम्हारी ताकत है...।" हमें अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनंद मनाना चाहिए। हमें उस उद्धार के आनंद को भी फिर से पाना चाहिए जो उन्होंने हमें दिया है। उद्धार के उस आनंद के ज़रिए, परमेश्वर हमें ताकत और शक्ति देते हैं।

तीसरी बात, जो परमेश्वर हमें ताकत और शक्ति देते हैं, वे शक्तिमान परमेश्वर हैं।

भजन संहिता 68:34 को देखिए: "परमेश्वर को शक्ति का श्रेय दो, जिनकी महिमा इस्राएल पर है, जिनकी शक्ति आकाश में है।" परमेश्वर ही हमारे बोझ उठाते हैं और हमें बचाते हैं (पद 19–20)। वे ऐसे परमेश्वर भी हैं जो हमें उद्धार के आनंद से सशक्त करते हैं और हमारे सभी दुश्मनों को हराते हैं। परमेश्वर हमें किस तरह की शक्ति देते हैं?

(1) यह अनुग्रह की शक्ति है। जब हम देखते हैं कि दाऊद परमेश्वर से उस अनुग्रह को और मज़बूत करने की विनती कर रहा है जो उसने पहले ही इस्राएल के लोगों पर किया था (पद 28), तो हमें एहसास होता है कि वह परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर था। दाऊद की तरह, हमें भी अपने दुश्मनों—खुद, दुनिया, पाप और शैतान—के खिलाफ़ परमेश्वर के अनुग्रह से लड़ना चाहिए। हमें यह आध्यात्मिक लड़ाई परमेश्वर के अनुग्रह की शक्ति से लड़नी चाहिए।

(2) यह भक्ति की शक्ति है।

आज के पाठ के पद 29 को देखें: "यरूशलेम में तेरे मंदिर के कारण, राजा तेरे लिए भेंट लाएंगे।" हमें प्रभु को खुद को वैसे ही सौंप देना चाहिए जैसे हम हैं और आध्यात्मिक लड़ाई में शामिल होना चाहिए।

(3) यह जीत के भरोसे की शक्ति है।

पद 30 को देखें: "नरकटों के बीच के जानवर को, राष्ट्रों के बछड़ों के बीच बैलों के झुंड को डांट; और चांदी के टुकड़ों को पैरों तले रौंद; उन लोगों को तितर-बितर कर जो युद्ध में खुशी मनाते हैं।" हमें इस पक्के विश्वास के साथ आध्यात्मिक लड़ाई में उतरना चाहिए कि यह युद्ध परमेश्वर का है और वही जीत दिलाता है।

(4) यह स्तुति की शक्ति है।

पद 32 को देखें: "हे पृथ्वी के राज्यों, परमेश्वर के लिए गाओ; प्रभु की स्तुति के गीत गाओ (सेलाह)।" हम प्रेरितों के काम 16 में दर्ज घटनाओं से पहले से ही परिचित हैं, जहाँ पौलुस और सिलास ने जेल में रहते हुए प्रार्थना की और स्तुति के गीत गाए।

प्रेरित पौलुस अपने आध्यात्मिक बेटे तीमुथियुस से कहता है: "क्योंकि परमेश्वर ने हमें डर की नहीं, बल्कि शक्ति, प्रेम और समझदारी की आत्मा दी है" (2 तीमुथियुस 1:7)। हम डर में जीने वाले लोग नहीं हैं; बल्कि, परमेश्वर ने हमें शक्ति, प्रेम और समझदारी दी है। इसलिए, हमें खुद के, पाप, दुनिया और शैतान के खिलाफ़ लड़ाई में जीत हासिल करने के लिए परमेश्वर द्वारा दी गई शक्ति का इस्तेमाल करना चाहिए। ऐसा करने के बाद, हमें उस शक्ति का सारा महिमा परमेश्वर को वापस देना चाहिए (पद 34)।

मैं कभी-कभी ईमेल के ज़रिए अलग-अलग भाई-बहनों के साथ अपने 'क्वाइट टाइम' (QT) के विचारों को साझा करता हूँ। इसी तरह साझा करने के दौरान, हाल ही में एक डीकन ने मुझे चीन की यात्रा के दौरान मिले अनुग्रह के बारे में बताने के लिए एक ईमेल भेजा। मेरे विचार से, उस कहानी का मुख्य संदेश था "तनाव को छोड़ना" (या "अपनी पकड़ ढीली करना")। ठीक वैसे ही जैसे समुद्र में डूबता हुआ कोई व्यक्ति जिसे बचाने की सख्त ज़रूरत हो, उसे हाथ-पैर मारना बंद करके शांत और स्थिर हो जाना चाहिए जब बचाने वाला उसके पास आए; उसी तरह उस डीकन ने भी यात्रा के दौरान "छोड़ने" का सबक सीखा। सच तो यह है कि हमें भी अपने तनाव को छोड़ना होगा। हमें अपनी लाचारी और अक्षमता को गहराई से महसूस करना होगा। तभी हम परमेश्वर की ताकत और शक्ति का अनुभव कर सकते हैं। जो परमेश्वर हमें यह ताकत देता है, वही प्रभु हमारे बोझ को रोज़ उठाता है; वह उद्धार और शक्ति का परमेश्वर है। उसी की वजह से हम आज ताकत और शक्ति के साथ जी पा रहे हैं।

जो परमेश्वर को ज़्यादा खुश करता है

[भजन संहिता 69]

पिछले रविवार की सुबह, जब मैं अपने ऑफ़िस में था, तो मेरी सबसे छोटी बेटी, ये-उन, मेरे सामने वाली कुर्सी पर बैठी थी। वह चुपचाप बैठी कुछ सोच रही थी, तभी अचानक उसने मेरी तरफ़ मुड़कर पूछा, "क्या आपको पता है कि मैं कैसा महसूस कर रही हूँ?" अपनी प्यारी बेटी की भावनाओं को समझने और उनसे जुड़ने की इच्छा से मैंने पूछा, "मुझे पक्का नहीं पता—अभी तुम कैसा महसूस कर रही हो?" उसने जवाब दिया, "खुश।" तो मैंने पूछा, "क्यों?" ज़ाहिर है, यह सवाल पूछते समय मुझे कुछ उम्मीद थी। कोरिया और मंगोलिया की यात्रा के कारण लगभग तेरह दिनों तक घर से दूर रहने के बाद, मुझे लगा कि वह कहेगी, "मैं खुश हूँ क्योंकि पापा वापस आ गए हैं।" हालाँकि, मुझे अपनी बेटी से एक अप्रत्याशित जवाब मिला: "एक पर्म (बालों का स्टाइल)।" मेरी खुशी का पल बहुत छोटा था! हाहा। ये-उन ने शनिवार दोपहर को पर्म करवाया था, जब वह और मेरी पत्नी मुझे लेने एयरपोर्ट आए थे। जब हम रविवार सुबह चर्च पहुँचे, तो लोगों—जैसे उसकी आंटी और दादी—ने उसके नए हेयरस्टाइल पर ध्यान दिया और तारीफ़ की; इसीलिए वह इतने अच्छे मूड में थी। हालाँकि उसके अप्रत्याशित जवाब पर मैं मन ही मन हँसा, फिर भी मैं खुश था क्योंकि मेरी प्यारी बेटी खुश थी।

माता-पिता के तौर पर, जब हमारे बच्चे खुश होते हैं तो हमें खुशी होती है। हालाँकि, मैं सोचता हूँ कि क्या हमारे बच्चे भी तब खुश होते हैं जब उनके माता-पिता खुश होते हैं। कॉलेज के दिनों में, मैंने एक बार एक जूनियर स्टूडेंट को खराब ग्रेड की चिंता करते देखा और उन्हें अपनी पढ़ाई का "आनंद लेने" के लिए प्रोत्साहित किया। उनका जवाब मूल रूप से यह था, "आप यह बात मेरे माता-पिता से क्यों नहीं कहते?" हालाँकि यह साफ़ था कि स्टूडेंट अच्छे ग्रेड लाकर अपने माता-पिता को खुश करना चाहता था, लेकिन इससे

उन्हें कोई व्यक्तिगत खुशी नहीं मिल रही थी। यहाँ आध्यात्मिक सीख यह है कि पिता परमेश्वर को खुश करना हम बच्चों के लिए खुशी का स्रोत होना चाहिए। जिस तरह उस स्टूडेंट के लिए अपने माता-पिता को खुश करना एक बोझ बन गया था, उसी तरह पिता परमेश्वर को खुश करना हमारे लिए बोझ नहीं बनना चाहिए। इसके बजाय, पिता परमेश्वर को खुश करना हमारी खुशी और आनंद का कारण होना चाहिए। तो, हम परमेश्वर को कैसे खुश कर सकते हैं? हालांकि यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि परमेश्वर के वचन का पालन करने से वे प्रसन्न होते हैं, लेकिन मैं हमारे कामों के बजाय हमारे "स्वभाव" पर—यानी हम परमेश्वर की कैसी संतान बनें—अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहूंगा।

भजन संहिता 69:31 में, भजनकार दाऊद कहते हैं: "यह प्रभु को बैल या सींग और खुर वाले सांड की भेंट से कहीं अधिक प्रसन्न करेगा।" दाऊद जानते थे कि वास्तव में परमेश्वर को क्या प्रसन्न करता है। यह बैल या सींग और खुर वाले सांड की भेंट नहीं थी, बल्कि परमेश्वर के नाम की स्तुति करना और धन्यवाद के साथ उनकी महिमा करना था (पद 30)। इस अंश और "जो परमेश्वर को अधिक प्रसन्न करता है" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन लोगों की चार विशेषताओं पर विचार करना चाहता हूं जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं और पवित्र आत्मा से शिक्षा प्राप्त करते हैं।

पहला, जो व्यक्ति परमेश्वर को अधिक प्रसन्न करता है, वह प्रभु की खोज करता है।

भजन संहिता 69:6 को देखें: "हे सेनाओं के प्रभु, जो तुझ पर आशा रखते हैं, वे मेरे कारण लज्जित न हों; हे इस्राएल के परमेश्वर, जो तेरी खोज करते हैं, वे मेरे कारण अपमानित न हों।" यहां, "जो प्रभु की खोज करते हैं" और "जो प्रभु पर आशा रखते हैं" एक ही लोगों के लिए कहा गया है। जो प्रभु पर आशा रखते हैं—यानी जो अपनी आशा उन पर टिकाए रखते हैं—वे प्रभु की खोज करते हैं। दाऊद ने प्रभु पर आशा क्यों रखी और उनकी खोज क्यों की? ऐसा इसलिए था क्योंकि वे गहरे दलदल में फंस गए थे, जहां खड़े होने के लिए कोई ठोस ज़मीन नहीं थी (पद 2)। दाऊद के इस गहरे दलदल में फंसने का कारण यह था कि बिना किसी कारण के उनसे नफरत करने वालों की संख्या उनके सिर के बालों से भी अधिक थी (पद 4)। दूसरे शब्दों में, वे इस कठिन परिस्थिति में इसलिए थे क्योंकि शक्तिशाली दुश्मन, जो बिना किसी कारण के उनसे नफरत करते थे, उनकी जान लेना चाहते थे। उनकी इस दुर्दशा का एक और कारण आज के पाठ के पद 8 में बताया गया है:

"मैं अपने भाइयों के लिए अजनबी और अपनी माँ के बेटों के लिए पराया हो गया हूं।" अत्यधिक संकट की इस स्थिति में उन्हें और भी अधिक पीड़ा इस बात से हुई कि उनके अपने भाइयों ने भी उनसे मुंह मोड़ लिया था। दाऊद अकेले थे। उन्होंने आशा की और किसी ऐसे व्यक्ति की खोज की जो उन पर दया करे और उन्हें सांत्वना दे, लेकिन उन्हें कोई नहीं मिला (पद 20)। जब हम, दाऊद की तरह, अन्यायपूर्ण स्थितियों में फँस जाते हैं, तो स्वाभाविक रूप से हम चाहते हैं कि कोई हम पर दया करे और हमें दिलासा दे; यह इंसानी फितरत है। फिर भी, कभी-कभी ऐसा लगता है कि परमेश्वर ऐसे लोगों को हमसे दूर रखते हैं। यहाँ तक कि जो दोस्त हमें दिलासा देने आते हैं—जैसे अय्यूब के दोस्त थे—वे भी "बेकार दिलासा देने वाले" बन सकते हैं जो हमारी परेशानी को और बढ़ा देते हैं (अय्यूब 16:2)। परमेश्वर का मकसद हमें सिर्फ़ प्रभु की ओर ले जाना है, जो ही हम पर सच्ची दया दिखाते हैं और हमारे सच्चे दिलासा देने वाले हैं।

गहरी दलदल में फँसे होने के कारण कहीं भी पैर टिकाने की जगह न होने और अपने ही भाइयों द्वारा ठुकराए जाने पर—जब उन्हें दया या दिलासा देने वाला कोई नहीं मिला—तो दाऊद ने आखिर में परमेश्वर की ओर रुख किया और प्रार्थना की (भजन संहिता 69:13)। दूसरे शब्दों में, उस गहरे गड्ढे में फँसे होने के बावजूद, उन्होंने अपनी नज़रें प्रभु पर टिकाए रखीं और सच्चे दिल से उन्हें पुकारा। उनकी मुख्य प्रार्थना थी, "हे परमेश्वर, मुझे बचा" (पद 1)। जब उन्होंने उद्धार के लिए यह प्रार्थना की, तो वे पुकार उठे: "मदद के लिए पुकारते-पुकारते मैं थक गया हूँ; मेरा गला सूख गया है। अपने परमेश्वर को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते मेरी आँखें थक गई हैं" (पद 3)। बेताब होकर पुकारने की थकान से उनका गला सूख गया था, और परमेश्वर के लिए तड़पने के तनाव से उनकी आँखें धुंधली हो गई थीं। परमेश्वर की बचाने वाली कृपा के लिए सच्चे दिल से विनती करते हुए, उन्होंने अपने पापों को भी स्वीकार किया: "हे परमेश्वर, तू मेरी मूर्खता को जानता है; मेरा अपराध तुझसे छिपा नहीं है" (पद 5)। हालाँकि वे अपने दुश्मनों के हाथों अन्याय सह रहे थे, फिर भी दाऊद ने माना कि—भले ही इंसानों के सामने नहीं, पर परमेश्वर के सामने—वे किसी भी तरह खुद को बेगुनाह नहीं कह सकते थे। इसलिए, दाऊद का दुख उनके लिए फायदेमंद साबित हुआ। कारण यह है कि अपने दुख के ज़रिए ही वे परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार करने के काबिल बने। अपने पापों को स्वीकार करने के बाद, दाऊद ने परमेश्वर की भरपूर दया और उनके उद्धार की सच्चाई को चाहा (पद 13)। यह प्रार्थना भजन संहिता 57:3 में भी मिलती है: "वह स्वर्ग से भेजेगा और मुझे उस व्यक्ति की निंदा से बचाएगा जो मुझे निगल जाना चाहता है (सेलाह); परमेश्वर अपनी दया और अपनी सच्चाई भेजेगा।" यह एक काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो परमेश्वर

के दया और सच्चाई के बचाने वाले कामों को एक व्यक्ति के रूप में दिखाती है (पार्क युन-सन)। उसने परमेश्वर के महान प्रेम और उस सच्चाई पर भरोसा करते हुए प्रार्थना की जो उद्धार की ओर ले जाती है। यहाँ तक कि जब उसका सामना ऐसे ताकतवर दुश्मनों से हुआ जो उससे नफ़रत करते थे—और जिनकी संख्या उसके सिर के बालों से भी ज़्यादा थी—तब भी उसने परमेश्वर की अपार दया और बचाने वाली सच्चाई पर भरोसा करते हुए परमेश्वर की ओर रुख किया।

कभी-कभी हमें भी परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए—खासकर तब, जब हम बिना किसी गलती के दुख सहते हैं, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया था। निराशा में डूबने के बजाय, हमें ऐसे पलों को परमेश्वर की मदद मिलने के बेहतरीन मौकों के तौर पर देखना चाहिए। इसलिए, हमें उम्मीद के साथ परमेश्वर को पुकारना चाहिए। और जब हम प्रार्थना करते हैं, तो हमें सच्चे दिल से यह चाहना चाहिए कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का जवाब दे (पद 16-17)।

दूसरी बात, जो लोग परमेश्वर को सबसे ज़्यादा खुश करते हैं, वे नम्र लोग हैं।

भजन संहिता 69:32 पर गौर करें: "नम्र लोग यह देखकर खुश होंगे; तुम जो परमेश्वर को खोजते हो, तुम्हारे दिल फिर से ताज़ा हो जाएँ।" यहाँ "नम्र" के लिए हिब्रू शब्द *अनाविम* (Anavim) है, जिसका अर्थ है "दुखी" या "वे जो दुख सहते हैं" (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, जो लोग परमेश्वर को खुश करते हैं, वे वही हैं जो अपने विश्वास के कारण दुख सहते हैं। इसके अलावा, जो लोग अपने विश्वास के लिए दुख सहते हैं, वे ही उस दुख के ज़रिए परमेश्वर के सामने और ज़्यादा नम्र बनते हैं। जो लोग नम्र बनते हैं, वे ही परमेश्वर को खोजते हैं। दूसरे शब्दों में, क्योंकि जो लोग दुख के ज़रिए नम्र बनाए जाते हैं, वे परमेश्वर की ओर देखते हैं और पूरी तरह से उस पर निर्भर रहते हैं, इसलिए वे... वह प्रार्थना करता है। इस प्रकार, दाऊद कहता है: "मैंने उपवास करके अपनी आत्मा को नम्र किया..." (पद 10)। यह उपवास करने और टाट ओढ़ने की स्थिति को दर्शाता है—यह आध्यात्मिक रूप से और चुपचाप खुद को नम्र करने और प्रार्थना करने का काम है (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, यह आध्यात्मिक दुख और प्रार्थना में परमेश्वर के सामने खुद को नम्र करने का बाहरी इज़हार है। ऐसे नम्र लोग दुख के बीच भी इसलिए खुश होते हैं क्योंकि उन्हें उस उद्धार का पक्का भरोसा होता है जो परमेश्वर देगा। उद्धार के उस भरोसे के साथ प्रार्थना करने और आखिर में परमेश्वर की स्तुति करने से (पद

29-30) ही नम्र लोगों के दिल फिर से ताज़ा हो जाते हैं (पद 32; भजन संहिता 138:7 देखें)। भजन रचने वाले की तरह, जब हम भी मुश्किलों का सामना करते हैं, तो हमें नम्रता से परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए प्रभु के उस काम का अनुभव करना चाहिए जो हमारे दिलों को फिर से ताज़ा करता है। जब हम प्रार्थना में उनके सामने विनम्रता से झुकते हैं, तो हमें परमेश्वर द्वारा हमारे दिलों को मज़बूत किए जाने का अनुभव करना चाहिए (10:17)।

जो लोग नम्र हैं, जो अपने विश्वास के लिए दुख उठाते हैं, और जो उस दुख से और भी ज़्यादा विनम्र होते जाते हैं, वे ही भगवान को खुश करते हैं। जो लोग दिल से नरम हैं, वे भगवान को खुश करते हैं। इसलिए, हम यीशु के बुलावे का जवाब देते हैं: "मैं नरम और दिल से दीन हूँ, और तुम अपनी आत्माओं के लिए आराम पाओगे। मेरा जूआ अपने ऊपर उठाओ और मुझसे सीखो..." (मैथ्यू 11:29)।

तीसरा, जो लोग भगवान को और भी ज़्यादा खुश करते हैं, वे ज़रूरतमंद हैं।

भजन 69:33 पर गौर करें: "क्योंकि प्रभु ज़रूरतमंदों की सुनता है और अपने कैदियों को तुच्छ नहीं समझता।" डेविड ने खुद को गरीब और दुखी बताया (आयत 29)। इसका मतलब सिर्फ़ यह नहीं है कि डेविड बाहर से दुखी था; बल्कि, यह इस बात की ओर इशारा करता है कि उसकी आत्मा नम्र हो गई थी, जिससे वह पूरी तरह से भगवान पर भरोसा करने लगा (पार्क युन-सन)। वह बहुत ज़्यादा दुख के कारण ज़रूरतमंद हो गया था। दूसरे शब्दों में, डेविड की आत्मा इसलिए गरीब हो गई क्योंकि वह एक गहरे दलदल में गिर गया था जहाँ उसके पास खड़े होने के लिए कोई ठोस ज़मीन नहीं थी। इसीलिए डेविड ने भगवान से गुज़ारिश की: "मेरी आत्मा के पास आओ और उसे छुड़ाओ..." (आयत 18)। बहुत दुख सहकर मन से गरीब हो जाने के बाद, डेविड ने भगवान से अपने पास आने की गुज़ारिश की। इसका कारण यह है कि भगवान के पास जाना एक आशीर्वाद है (भजन 73:28)।

यीशु ने कहा: "धन्य हैं वे जो मन से गरीब हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है" (मत्ती 5:3)। यहाँ, "मन से गरीब" वे लोग हैं जो गरीबी झेलते हैं; ये लोग, जो आध्यात्मिक रूप से पीड़ित हैं, उनकी पहचान इस तरह

होती है: (1) पहला, वे वे लोग हैं जो अपनी नाकाबिलियत को पहचानते हैं और महसूस करते हैं कि भगवान के अलावा उनकी मदद करने वाला कोई नहीं है। (2) दूसरा, वे वे लोग हैं जो घमंडी लोगों से ज़ुल्म सहते हैं क्योंकि उनकी ज़िंदगी ऐसे लोगों के घमंड के बिल्कुल उलट होती है। (3) तीसरा, वे वे लोग हैं जो पाप से दुखी होते हैं और पछतावा करते हैं। ऐसे रूहानी तौर पर परेशान लोग खुशनसीब हैं क्योंकि स्वर्ग का राज—यानी, भगवान का रूहानी राज—उनका है (पार्क युन-सन)।

ज़रूरतमंद—दिल से गरीब—वे लोग हैं जो भगवान को खुश करते हैं। ज़रूरतमंद सिर्फ़ भगवान को ही देखते हैं जो उन पर दया करता है और उन्हें आराम देता है (भजन 69:20)। इसलिए, भगवान के रूहानी राज में रहकर, वे उनके करीब आने का आशीर्वाद पाते हैं।

आखिर में, चौथे तरह का इंसान जो भगवान को और भी ज़्यादा खुश करता है, वह वह है जो भगवान के नाम से प्यार करता है।

भजन 69:36 पर गौर करें: "उसके सेवकों की औलाद उसके वारिस होंगे, और जो उसके नाम से प्यार करते हैं वे उसमें बसे रहेंगे।" जो लोग भगवान के नाम से प्यार करते हैं वे उसके नाम की तारीफ़ करते हैं (पद 30)। इसके अलावा, वे शुक्रिया अदा करके भगवान की बड़ाई करते हैं (पद 30)। क्योंकि डेविड को भरोसा था कि भगवान उसे उस दुख और खतरे से बचाएगा जिसका वह सामना कर रहा था, उसने भगवान के नाम की तारीफ़ की और शुक्रिया अदा करके उसकी बड़ाई की, जो मुक्ति के उस भरोसे पर आधारित था। इसलिए, डेविड कहते हैं: "आसमान और धरती, समुद्र और उनमें चलने वाली हर चीज़ उसकी तारीफ़ करे। क्योंकि भगवान सिय्योन को बचाएगा और यहूदा के शहरों को फिर से बनाएगा; तब लोग वहाँ बसेंगे और उस पर कब्ज़ा करेंगे" (आयत 34–35)। जब भगवान इज़राइल के लोगों को बचाएंगे और यहूदा के शहरों को फिर से बनाएंगे, तो वह उन लोगों को वहाँ हमेशा रहने की जगह देंगे जो भगवान के नाम से प्यार करते हैं।

हमारा पवित्र भगवान एक ऐसा भगवान है जो दुनिया में अपने पवित्र नाम को बदनाम होने से बचाने के लिए जलन से काम लेता है (यहेजकेल 36:21)। इसलिए, भगवान खुद अपने महान नाम को पवित्र करते हैं—जिसे देशों के बीच, और खासकर दुनिया के लोगों के बीच हमारे द्वारा बदनाम किया गया था (आयत 23)। हमें भगवान के महान, पवित्र नाम को संजोना चाहिए। हमें भगवान के पवित्र नाम से प्यार करना चाहिए। जो लोग भगवान के पवित्र नाम से प्यार करते हैं, वही उन्हें खुश करते हैं।

पिता भगवान को खुश करना हमारी खुशी होनी चाहिए। इससे पहले कि हम अपने कामों से भगवान को खुश करने की कोशिश करें, हमें अपने होने से भी उन्हें और भी ज़्यादा खुश करना चाहिए। तो फिर, वे कौन हैं जो सच में भगवान को खुश करते हैं? वे वे हैं जो भगवान को ढूंढते हैं, जो नम्र हैं, ज़रूरतमंद हैं, और जो भगवान के नाम से प्यार करते हैं। मैं दिल से प्रार्थना करता हूं कि आप और मैं ऐसे ही लोग बनें। मैं भगवान के लिए खुशी बनना चाहता हूं

1. मैं भगवान के लिए खुशी बनना चाहता हूं; मेरे दिल को नया कर दो। मुझे एक नई मशक बनाओ, और अपनी रोशनी मुझमें चमकाओ।

{कोरस} एक चीज़ जो मैं चाहता हूं वह है भगवान के लिए खुशी बनना; एक चीज़ जो मैं चाहता हूं वह है भगवान के लिए खुशी बनना।

2. मैं विनम्रता से अपना दिल देता हूं; कृपया वह सब स्वीकार करें जो मैं हूं। मेरे दिल को साफ और पवित्र करें, और मुझे अपने रास्तों पर चलने के लिए प्रेरित करें।

वे ईसाई जो दुख के बीच भी परमेश्वर को खुश करते हैं

“मैं गीत गाकर परमेश्वर के नाम की स्तुति करूँगा और धन्यवाद के साथ उसकी महिमा करूँगा। यह प्रभु को सींग और खुर वाले बैल या बछड़े की भेंट से ज़्यादा खुश करेगा” (भजन संहिता 69:30–31)।

शायद ही इस दुनिया में कोई ऐसा हो जिसने इंसानी रिश्तों में चोट और दर्द का अनुभव न किया हो, या जिनकी वजह से भारी चिंता और तनाव न सहा हो। रिश्ते तब और भी मुश्किल और तनावपूर्ण हो जाते हैं जब कोई हमसे ऐसी वजहों से नफ़रत करता है जिन्हें हम समझ ही नहीं पाते। तनाव, बेचैनी और दर्द तब असहनीय हो जाते हैं जब—बिना किसी कारण के—न केवल एक व्यक्ति हमसे नफ़रत करता है, बल्कि उस व्यक्ति के आस-पास एक समूह बन जाता है, जिससे ज़्यादा से ज़्यादा लोग हमारे प्रति बेबुनियाद दुश्मनी पालने लगते हैं। ऐसे पलों में, हम सुकून चाहते हैं; फिर भी, जब कोई हमें सुकून नहीं देता—और इसके बजाय, लोग मुँह मोड़ लेते हैं और दूर हो जाते हैं—तो हम गहरे अकेलेपन का अनुभव करते हैं। हम तब बहुत निराश और आहत भी महसूस कर सकते हैं जब हमारे अपने परिवार के सदस्य, जिन पर हमने भरोसा किया और निर्भर रहे, मुँह मोड़ लें और दूरी बना लें। ऐसी दर्दनाक परिस्थितियाँ हमें गहरी निराशा में डुबो सकती हैं, जैसे कि हम किसी दलदल में धंस रहे हों। क्या सचमुच ऐसी गहरी निराशा के बीच परमेश्वर को खुश करने के बारे में सोचना मुमकिन है? क्या हम सचमुच उन्हें स्तुति और धन्यवाद की भेंट चढ़ा सकते हैं?

भजन संहिता 69 के लेखक दाऊद ने जो दुख सहा, वह "गहरे दलदल" या "गहरे पानी" में फँसने जैसा एक दर्दनाक अनुभव था। दाऊद ऐसे गहरे दलदल में क्यों फँस गए थे? कारण यह था कि बिना किसी वजह के उनसे नफ़रत करने वालों की संख्या उनके सिर के बालों से भी ज़्यादा थी (पद 4)। इसके अलावा, उनके

ताकतवर दुश्मन उनकी जान लेना चाहते थे (पद 4)। इतनी भारी परेशानी के बीच, उन्हें सबसे ज़्यादा दुख इस बात से हुआ कि उनके अपने भाई भी उनसे मुँह मोड़ गए थे (पद 8)। दाऊद अकेले थे। उन्होंने किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढा जो उन पर दया करे और उन्हें दिलासा दे, लेकिन उन्हें कोई नहीं मिला (पद 20)। फिर भी, ऐसे दुख के बीच भी, दाऊद ने परमेश्वर को धन्यवाद और स्तुति के गीत गाकर सुनाए (पद 30)। उनका मानना था कि ऐसा करने से परमेश्वर और भी ज़्यादा खुश होंगे (पद 31)। इतनी भारी तकलीफ सहते हुए भी वे परमेश्वर को धन्यवाद और स्तुति के गीत कैसे गा पाए? हम भी दुख के समय में परमेश्वर को और ज़्यादा कैसे खुश कर सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया था? आइए, चार बातें सीखें।

पहली बात, दुख के समय में भी परमेश्वर को और ज़्यादा खुश करने के लिए, हमें पूरे दिल से उनसे प्रार्थना करनी चाहिए।

भजन संहिता 69:13–14 और 16–17 देखिए: "हे यहोवा, मैं तो सही समय पर तुझसे प्रार्थना करता हूँ; हे परमेश्वर, अपनी अपार दया और सच्चाई से मुझे बचा। मुझे दलदल से निकाल, ताकि मैं डूब न जाऊँ; मुझे उन लोगों से बचा जो मुझसे नफ़रत करते हैं और गहरे पानी से निकाल... हे यहोवा, मेरी सुन, क्योंकि तेरी करुणा भली है; अपनी अपार दया के अनुसार मेरी ओर मुड़। और अपने सेवक से मुँह न मोड़, क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ; जल्दी से मेरी सुन।" जब हम ऐसी ताकतवर ताकतों से घिरे होते हैं जो हमारी जान लेना चाहती हैं और बहुत से लोग बिना किसी वजह के हमसे नफ़रत करते हैं, तो हम आसानी से बहुत ज़्यादा तनाव, डर और बेचैनी में फँस सकते हैं। ऐसे पलों में, भले ही हम दिलासा पाने के लिए किसी के भी पास न जा पाएँ, हमारा मन हमें उन लोगों के पास ले जाता है जो हमसे प्यार करते हैं—जैसे हमारा परिवार, भाई-बहन या करीबी दोस्त। फिर भी, हम बहुत अकेलापन महसूस कर सकते हैं जब वे लोग भी अजनबी जैसे लगने लगते हैं जिनसे हमने उम्मीद की थी। हम गहरा अकेलापन महसूस करते हैं जब हमें एहसास होता है कि हमारे टूटे हुए दिल और भारी बोझ को समझने या हमें दिलासा देने वाला कोई नहीं है (पद 20)। तब हमें दर्दनाक एहसास होता है कि लोग भरोसे के लायक नहीं हैं, और आखिरकार हम परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं, और मुश्किल घड़ी में उनसे गुहार लगाते हैं। उस पल, हमें यह सच्चाई अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि परमेश्वर हमारा स्वागत करते हैं (पद 13)। ऐसी स्थिति में जब कोई और हमारा स्वागत नहीं करता, हमें यह गहराई से समझने की ज़रूरत है कि सिर्फ़ प्रभु ही हमेशा हमारा स्वागत करते हैं। तभी, भविष्य में चाहे कैसी भी

मुश्किलें या मुसीबतें आएँ, हम सबसे पहले परमेश्वर की ओर मुड़ेंगे—प्रार्थना और विनती में घुटने टेकेंगे—न कि सबसे पहले लोगों से मदद माँगेंगे। बहुत ज़्यादा दुख और ऐसे दुश्मनों से घिरे होने पर भी जिनकी संख्या हमारे सिर के बालों से भी ज़्यादा है, हमें परमेश्वर की भरपूर करुणा और बचाने वाली सच्चाई की चाहत रखनी चाहिए, और विश्वास के साथ धैर्यपूर्वक उनकी प्रार्थनाओं के जवाब का इंतज़ार करना चाहिए। परमेश्वर निश्चित रूप से हमें बचाएगा (पद 1)। उद्धार करने वाला परमेश्वर हमें गहरे दलदल से और उन लोगों से ज़रूर बचाएगा जो हमसे नफ़रत करते हैं (पद 14)। दूसरी बात, दुख के समय भी परमेश्वर को पूरी तरह से खुश करने के लिए, हमें अपने पापों को पहचानना और स्वीकार करना चाहिए।

भजन संहिता 69:5 पर विचार करें: "हे परमेश्वर, तू मेरी मूर्खता को जानता है; मेरे पाप तुझसे छिपे नहीं हैं।" जब हमें उन लोगों से खतरा होता है जो बिना किसी कारण के हमसे नफ़रत करते हैं—या उन शक्तिशाली ताकतों से जो हमारी जान लेना चाहती हैं—तो जिन लोगों पर हम भरोसा करते हैं, उनके पास जाने से अक्सर हमें काफ़ी राहत नहीं मिलती; इसके बजाय, हम अक्सर उनके सामने अपनी शिकायतें और दुख ज़ाहिर करते हैं। सच तो यह है कि जब हम परमेश्वर पर भरोसा नहीं करते और सबसे पहले प्रार्थना में उसके पास नहीं जाते, तो हम अक्सर अपनी असंतुष्टि ज़ाहिर करने के लिए अपने करीबी लोगों के पास जाते हैं। हालाँकि, अगर हम सबसे पहले प्रार्थना में परमेश्वर के पास आते हैं, तो हमारी उंगली उन लोगों की तरफ़ नहीं उठती जो हमसे नफ़रत करते हैं, बल्कि हमारी अपनी तरफ़ उठती है। प्रार्थना में, हम पवित्र परमेश्वर के सामने अपने जीवन की जाँच करते हैं; असल में, उसकी पवित्र उपस्थिति हमारे छिपे हुए पापों को ज़रूर उजागर करती है। प्रार्थना के ज़रिए, हमें एहसास होता है कि परमेश्वर के बजाय लोगों पर भरोसा करना ही अपने आप में "मूर्खता" थी (पद 5)—एक ऐसी गलती जो सचमुच बुद्धिमान व्यक्ति कभी नहीं करेगा। इसके अलावा, हमें एहसास होता है कि हमारे पाप परमेश्वर से छिपे नहीं रह सकते। नतीजतन, हम अपनी मूर्खता और पापों को उसके सामने स्वीकार करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। दुख में यही आशीष मिलती है। दुख के ज़रिए, हमें एहसास होता है कि परमेश्वर पिता हमारा स्वागत करता है; जब हम उसे पुकारते हैं, तो हम उसकी पवित्र उपस्थिति के प्रकाश में अपने छिपे हुए पापों को भी स्वीकार करने और उनसे पश्चाताप करने की आशीष का अनुभव करते हैं, क्योंकि उसकी उपस्थिति उन्हें उजागर करती है। क्या आप इस आशीष को नहीं चाहते?

तीसरी बात, दुख के समय भी परमेश्वर को और अधिक खुश करने के लिए, हमारे अंदर प्रभु के मंदिर के लिए एक जलता हुआ जोश होना चाहिए।

भजन संहिता 69:9 पर विचार करें: "तेरे मंदिर के लिए जोश मेरे अंदर जलता है, इसलिए जो अपमान तुझे किए जाते हैं, वे मुझ पर पड़ते हैं" (समकालीन कोरियाई संस्करण)। यह कैसे संभव है? दुख सहते हुए भी हमारे अंदर प्रभु की कलीसिया के लिए जोश कैसे जल सकता है? तर्क के अनुसार, इसे समझना मुश्किल है। आमतौर पर, जब हम मुश्किलों का सामना करते हैं, तो हममें अपने या अपने परिवार के अलावा किसी और के बारे में सोचने की क्षमता नहीं रहती—तो ऐसे मुश्किल समय में हम प्रभु की देह (यानी कलीसिया) के बारे में कैसे सोच सकते हैं और उसके लिए अपना प्यार और जोश कैसे बढ़ा सकते हैं? जब हम परमेश्वर को पुकारते हैं, तो उसके स्वागत करने वाले प्यार की महानता हमें अपने पापों को मानने और उनसे पश्चाताप करने के लिए प्रेरित करती है, जिससे हम उससे और भी ज़्यादा प्यार करने लगते हैं। और जो लोग परमेश्वर से प्यार करते हैं, वे उसकी कलीसिया से प्यार किए बिना नहीं रह सकते। उस समय, प्रेरित पौलुस की तरह, हम कलीसिया के लिए ऐसे जोश से भर जाते हैं जो परमेश्वर की ओर से आता है (2 कुरिन्थियों 11:2)। दाऊद के मामले में, वह अपने दुश्मनों और उससे नफ़रत करने वालों की बदनामी और मज़ाक सहने की बात करता है—और यह सब प्रभु की खातिर सहता है (पद 7, 10, 12)। वह बताता है कि कैसे शर्म से उसका चेहरा ढँक गया था (पद 7)। इसके अलावा, दाऊद के दुश्मनों और उससे नफ़रत करने वालों ने न केवल दाऊद का, बल्कि उन लोगों का भी अपमान किया और उन्हें शर्मिंदा किया जो प्रभु पर भरोसा करते थे और उसकी खोज करते थे (पद 6)। उन्होंने उस प्रभु की निंदा की जिस पर दाऊद भरोसा करता था और जिसकी सेवा करता था (पद 9)। उस पल, दाऊद का दिल प्रभु के मंदिर के लिए जोश से जल उठा (पद 9)। हमारा दिल भी ऐसा ही होना चाहिए। जब बहुत से मसीह-विरोधी—जो बिना किसी कारण के हमसे नफ़रत करते हैं—हमारी निंदा करते हैं, हमारा मज़ाक उड़ाते हैं और प्रभु की कलीसिया को बुरा-भला कहते हैं, तो हमें कलीसिया—मसीह की देह—से और भी ज़्यादा प्यार करना चाहिए। जितने ज़्यादा लोग कलीसिया के बारे में बुरा बोलते हैं, उसकी निंदा करते हैं और उसका विरोध करते हैं, हमें कलीसिया से उतना ही ज़्यादा प्यार करना चाहिए और और भी ज़्यादा जोश के साथ खुद को उसके लिए समर्पित करना चाहिए। जब कलीसिया उत्पीड़न और मुसीबत का सामना करती है, तो कलीसिया के लिए हमारा जोश हमारे अंदर और भी तेज़ी से

जलना चाहिए। जैसा कि भजन के बोल कहते हैं, मुसीबत और उत्पीड़न के बीच भी, हमें न केवल अपने विश्वास पर मज़बूती से बने रहना चाहिए, बल्कि उस विश्वास के अनुसार प्रभु और उसकी देह, यानी कलीसिया के प्रति मरते दम तक वफ़ादार रहना चाहिए (नया भजन संग्रह संख्या 383)।

आखिर में, चौथा बिंदु: दुख के बीच भी परमेश्वर को और गहराई से प्रसन्न करने के लिए, हमें धन्यवाद भरे दिल से उसकी स्तुति करनी चाहिए।

बाइबल में भजन संहिता 69:30 को देखिए: "मैं गीत गाकर परमेश्वर के नाम की स्तुति करूँगा; मैं धन्यवाद के साथ परमेश्वर की महिमा करूँगा।" परमेश्वर का अनुग्रह सचमुच अद्‌भुत है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब परमेश्वर हम मसीहियों पर अनुग्रह करते हैं, तो हम दुख के बीच भी खुद को खुश करने के बजाय परमेश्वर को खुश करना चाहते हैं। यह परमेश्वर का काम है। परमेश्वर हमसे अपनी खुशी कैसे पूरी करवाते हैं? वे हमें उस दुख के बीच भी धन्यवाद के साथ अपनी स्तुति करने के लिए प्रेरित करते हैं। क्या आप समझ रहे हैं? दाऊद घोर दुख के बीच भी धन्यवाद के साथ परमेश्वर की स्तुति कैसे कर पाए? मुझे भजन संहिता 63:3 के शब्द याद आते हैं: "मेरे होंठ तेरी स्तुति करेंगे, क्योंकि तेरी करुणा जीवन से भी उत्तम है।" यहूदा के जंगल में अपने बेटे अबशालोम से भागते समय, दाऊद ने प्रभु के सच्चे प्रेम का अनुभव किया; इस प्रकार, उस दुख में भी, उन्होंने यहूदा के जंगल को एक पवित्र स्थान (पद 2) बना लिया और प्रभु की स्तुति की (पद 3)। हम दुख के बीच भी धन्यवाद के साथ परमेश्वर की स्तुति कैसे कर सकते हैं? परमेश्वर की वजह से, जो हमारे दुख में हमारा स्वागत करते हैं और हमें भरपूर प्रेम और उद्धार के सत्य के साथ जवाब देते हैं (पद 13), हम दुख के बीच भी धन्यवाद के साथ परमेश्वर की स्तुति कर पाते हैं। जो मसीही परमेश्वर से प्रेम करते हैं क्योंकि उन्होंने उनके भरपूर प्रेम का अनुभव किया है (पद 36), वे परमेश्वर के उद्धार करने वाले प्रेम की धन्यवाद के साथ स्तुति किए बिना नहीं रह सकते। क्या पौलुस और सिलास ने जेल में ऐसा ही नहीं किया था? उन्होंने आधी रात को प्रार्थना की और परमेश्वर की स्तुति की (प्रेरितों के काम 16:25)। मुझे भी परमेश्वर की स्तुति करना याद है जब मैंने उनके अनंत प्रेम (भजन संहिता 63:3) को थोड़ा और गहराई से महसूस किया। हमारे पहले बच्चे, जुयंग, जिसे परमेश्वर ने हमें अनुग्रह के उपहार के रूप में दिया था, के मेरी गोद में सो जाने (मृत्यु हो जाने) के बाद, मैंने उसका अंतिम संस्कार किया और उसकी राख को पानी में बहा दिया। जब मैं नीले

आसमान को देख रहा था, तो उन्होंने मुझे "माई सेवियर्स लव" (या "आई स्टैंड अमेज्ड") गीत गाकर परमेश्वर की स्तुति करने के लिए प्रेरित किया:

(पद 1) मैं नासरत के यीशु की उपस्थिति में आश्चर्यचकित खड़ा हूँ, और सोचता हूँ कि वे मुझसे कैसे प्रेम कर सकते हैं, एक पापी, दोषी और अशुद्ध व्यक्ति से। (पद 2) मेरे लिए ही उन्होंने उस बाग में प्रार्थना की: "मेरी नहीं, बल्कि आपकी मर्ज़ी पूरी हो।" अपने दुखों के लिए उनकी आँखों में आँसू नहीं थे, बल्कि मेरे लिए उनके माथे से खून की बूँदें टपक रही थीं।

(पद 3) स्वर्गदूतों ने दया भाव से उन्हें देखा, और उस रात मेरी आत्मा के लिए उठाए गए दुखों में उन्हें सांत्वना देने के लिए वे प्रकाश की दुनिया से नीचे आए।

(पद 4) उन्होंने मेरे पापों और दुखों को अपना लिया; वे उन्हें कलवरी तक ले गए; उन्होंने वह बोझ उठाया और अकेले ही दुख सहकर प्राण त्याग दिए।

(पद 5) जब महिमा में छुड़ाए गए लोगों के साथ मैं अंततः उनका चेहरा देखूँगा, तो युगों-युगों तक मेरे लिए उनके प्रेम का गुणगान करना ही मेरा आनंद होगा।

(कोरस) ओह, कितना अद्भुत! ओह, कितना शानदार! और मेरा गीत हमेशा यही होगा:
ओह, कितना अद्भुत! ओह, कितना शानदार! है मेरे उद्धारकर्ता का मेरे प्रति प्रेम!

"हे परमेश्वर, मेरी जल्दी सहायता कर"

[भजन संहिता 70]

भजन संहिता 13 पर मनन करते समय, हमने एक बार इस सवाल पर सोचा था, "कब तक?": "हे प्रभु, कब तक? क्या तू मुझे हमेशा के लिए भूल जाएगा? तू कब तक मुझसे अपना मुँह छिपाए रखेगा?" (पद 1); "मुझे कब तक अपने विचारों से जूझना होगा और दिन भर अपने दिल में दुख सहना होगा? मेरा दुश्मन कब तक मुझ पर जीत हासिल करता रहेगा?" (पद 2)। जब प्रार्थना का जवाब मिलने में देर होती है, तो हम स्वाभाविक रूप से बेचैन और डरे हुए महसूस करते हैं। ऐसे पलों में, हम वैसे ही प्रार्थना कर सकते हैं जैसे भजनकार दाऊद ने की थी: "हे प्रभु, दूर मत रह; हे मेरी शक्ति, मेरी मदद के लिए जल्दी आ" (22:19)। जब जवाब मिलने में देर होती है, तो हमें लगता है कि वह हमसे बहुत दूर हैं। इसके अलावा, ऐसी देरी से हमारी हिम्मत जवाब दे सकती है। ऐसे समय में, हम प्रभु की ओर देखते हैं, जो हमारी शक्ति हैं। दाऊद की तरह, हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं, "मेरी जल्दी सहायता कर" (70:1)।

भजन संहिता 70:1 में, भजनकार दाऊद परमेश्वर से विनती करता है: "हे परमेश्वर, मुझे छुड़ा; हे प्रभु, मेरी जल्दी सहायता कर।" इस पूरे भजन में, दाऊद "जल्दी" शब्द का इस्तेमाल पद 1 में दो बार और पद 5 में एक बार करता है; पद 5 के आखिरी हिस्से में, वह प्रार्थना करता है, "हे प्रभु, देर न कर।" "हे परमेश्वर, मेरी जल्दी सहायता कर" विषय के तहत, मुझे उम्मीद है कि हम कुछ बातों पर मनन कर सकते हैं और वह अनुग्रह पा सकते हैं जो परमेश्वर हममें से हर एक को देता है। सबसे पहले, दाऊद को परमेश्वर की मदद की ज़रूरत क्यों थी?

इसका कारण यह है कि दाऊद "दीन और दरिद्र" था। भजन संहिता 70:5 देखें, जो आज का मुख्य वचन है: "पर मैं तो दीन और दरिद्र हूँ; हे परमेश्वर, मेरे पास जल्दी आ..." यह अंश केवल भौतिक गरीबी की बात नहीं

करता, बल्कि खास तौर पर उस स्थिति की बात करता है जिसमें दाऊद को दुष्ट लोगों द्वारा सताया जा रहा था (पार्क युन-सन)। तो, वे लोग कौन थे जो दाऊद को सता रहे थे? यह वचन उनके बारे में क्या बताता है?

(1) वे वे लोग हैं जो "मेरी जान लेना चाहते हैं।" भजन संहिता 70:2 का पहला भाग देखिए: "जो लोग मेरी जान लेना चाहते हैं, वे शर्मिंदा और परेशान हों..." दाऊद के सताने वाले उसकी जान के पीछे पड़े थे। इसलिए, वे लगातार उस पर हमला करते थे और उसे सताते थे।

(2) वे ऐसे लोग हैं जो "मेरे दुख में खुश होते हैं।"

भजन संहिता 70:2 का दूसरा भाग देखिए: "...जो लोग मेरे दुख में खुश होते हैं, वे पीछे हट जाएं और शर्मिंदा हों।" दाऊद के दुश्मन उसे बर्बाद होते देखना चाहते थे। इसलिए, वे उसके दुख में खुश होते थे।

(3) वे ऐसे लोग हैं जो "आहा, आहा" कहते हैं।

भजन संहिता 70:3 देखिए: "जो लोग 'आहा, आहा!' कहते हैं, वे अपनी शर्म के कारण पीछे हट जाएं।" यहाँ, "आहा, आहा" कहने वाले दाऊद के दुश्मन हैं जो उसे तुच्छ समझते थे। दाऊद ने खुद को गरीब और ज़रूरतमंद बताया क्योंकि जो लोग उससे नफ़रत करते थे, वे उसे सता रहे थे।

तो, ऐसी स्थिति में दाऊद को क्या करना पड़ा? भजन संहिता 109:4 देखिए: "मेरे प्यार के बदले वे मुझ पर आरोप लगाते हैं, लेकिन मैं प्रार्थना करने वाला व्यक्ति हूँ।" दाऊद के पास प्रार्थना में परमेश्वर की ओर मुड़ने के अलावा कोई चारा नहीं था क्योंकि उसके दुश्मन—जो उसकी जान लेना चाहते थे, जो उसकी बदकिस्मती पर खुश होते थे, और जो उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहते थे, "आहा! आहा!"—उसे परेशान कर रहे थे। संक्षेप में, जहाँ उसके दुश्मन दाऊद की जान लेना चाहते थे, वहीं दाऊद परमेश्वर की शरण में जाना चाहता था।

दूसरी बात, दाऊद ने परमेश्वर से किस तरह की मदद मांगी?

(1) दाऊद ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसे सताने वालों से बचाए।

आज का वचन, भजन संहिता 70:1 देखिए: "हे परमेश्वर, मुझे जल्दी बचा; हे प्रभु, मेरी मदद के लिए जल्दी आ।" यह वचन बताता है कि दाऊद लंबे समय से सताने वालों के हाथों दुख झेल रहा था (पार्क युन-सन)। इसलिए, वह लंबे समय से परमेश्वर से छुटकारा पाने का इंतज़ार कर रहा था। यही कारण है कि दाऊद चाहता था कि परमेश्वर की मदद और बचाव "जल्दी" आए (दो बार ज़िक्र किया गया है)। उसने परमेश्वर से पुकारते हुए कहा, "...हे परमेश्वर, मेरे पास जल्दी आ" (वचन 5)। परमेश्वर के उद्धार का इतना लंबा इंतज़ार करने के बाद, दाऊद सच्चे दिल से परमेश्वर से छुटकारा पाना चाहता था। (2) दाऊद ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसके सताने वालों को शर्मिंदगी के साथ पीछे हटने पर मजबूर करे। आज का वचन देखें, भजन संहिता 70:2–3: "जो मेरे प्राण के खोजी हैं, वे लज्जित और निराश हों; जो मेरी बर्बादी चाहते हैं, वे अपमानित होकर पीछे हटें। जो मुझसे कहते हैं, 'आहा! आहा!' वे अपनी शर्मिंदगी के कारण पीछे हट जाएं।" जो लोग दाऊद को सताते थे, वे न केवल दाऊद का, बल्कि स्वयं परमेश्वर का भी अपमान करने पर तुले हुए थे। इसीलिए दाऊद ने परमेश्वर से विनती की कि उन पर शर्म और अपमान आए, जिससे वे पीछे हटने को मजबूर हों। कारण यह है कि यदि वे शर्मिंदा होते, तो वे और दूसरे लोग परमेश्वर के अस्तित्व और शक्ति को जान पाते, और संतों का विश्वास मज़बूत होता (पार्क युन-सन)। इस प्रकार, दाऊद ने अपने शत्रुओं की विफलता के लिए प्रार्थना की।

(3) दाऊद ने प्रार्थना की कि जो लोग प्रभु की खोज करते हैं—या जो उसके उद्धार की लालसा रखते हैं—वे उसमें आनंदित और खुश हों।

आज का वचन देखें, भजन संहिता 70:4: "जो तेरी खोज करते हैं, वे तुझमें आनंदित और खुश हों; जो तेरे उद्धार से प्रेम करते हैं, वे हमेशा कहें, 'परमेश्वर महान है!'" यहाँ, "परमेश्वर महान है" वाक्यांश का अर्थ है कि परमेश्वर विश्वासियों पर भरपूर अनुग्रह करता है (पार्क युन-सन)। परमेश्वर वह है जो उसे खोजने वालों—यानी उसके उद्धार की लालसा रखने वालों—को कभी निराश नहीं करता। वह उसे खोजने वालों पर उदारतापूर्वक अपना अनुग्रह बरसाता है।

काफ़ी समय बाद प्रोफ़ेसर जे एडम्स की किताब *क्रिश्चियन काउंसलिंग* (Christian Counseling) को दोबारा पढ़ते समय, मेरी नज़र संकट-कालीन परामर्श (crisis counseling) वाले हिस्से पर पड़ी। मुझे कुछ विद्वानों की इस बात में दिलचस्पी हुई कि "संकट" (crisis) के लिए चीनी शब्द में दो विशेषताएँ शामिल हैं: "ख़तरा" और "अवसर"। संकट हमें बदलने और आगे बढ़ने का मौका देते हैं; हम उन्हें मुश्किलों से उबरने के बेहतर तरीके विकसित करने के लिए कीमती अवसरों में बदल सकते हैं। इससे जुड़ी द्वितीय विश्व युद्ध की एक कहानी है। जब नाज़ी जर्मनी ने ब्रिटेन पर हमला किया, तो प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने रेवरेंड विलियम टेम्पल से देश की रक्षा के लिए प्रार्थना करने को कहा। रेवरेंड टेम्पल ने एक सार्वजनिक बयान में कहा: "अब समय आ गया है कि ब्रिटिश साम्राज्य ईश्वर के सामने घुटने टेके। युद्ध एक बहुत बड़ी घटना है, लेकिन ईश्वर की आराधना उससे भी बड़ी बात है। अगर हमारे लोग इस समय ईश्वर की आराधना करें और उनकी उपस्थिति पर भरोसा रखें, तो युद्ध कोई ऐसा संकट नहीं होगा जिसका सामना न किया जा सके। ईश्वर की मदद से—जिनकी हम आराधना करते हैं—हम निश्चित रूप से जीतेंगे।" उनकी बातों से प्रेरित होकर, ब्रिटिश लोग चर्चों में उमड़ पड़े, घुटने टेककर आराधना की और प्रार्थना में ईश्वर को पुकारा। आखिरकार, युद्ध का अंत ब्रिटेन और मित्र देशों की जीत के साथ हुआ।

हमें किस मकसद से ईश्वर से यह विनती करनी चाहिए कि "हे ईश्वर, मेरी जल्द मदद कर"? आपकी सबसे ज़रूरी प्रार्थना क्या है? मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु का उद्धार का काम आप पर बना रहे। आइए हम इस बात को याद रखें: जो लोग ईश्वर को खोजते हैं और उनके उद्धार के लिए तरसते हैं, ईश्वर उन्हें अपने में आनंदित और खुश करते हैं।

एक ज़रूरी प्रार्थना

“हे परमेश्वर, मुझे बचाने के लिए जल्दी कर! हे प्रभु, मेरी मदद करने के लिए जल्दी कर! ... पर मैं तो दीन-दरिद्र हूँ; हे परमेश्वर, मेरे पास जल्दी आ! तू ही मेरी मदद और मेरा उद्धार करने वाला है; हे प्रभु, देर न कर!” (भजन संहिता 70:1, 5)।

पिछले गुरुवार को, मैंने मशहूर अमेरिकी गायक माइकल जैक्सन की मौत की खबर सुनी। यह सुनकर कि पचास साल की कम उम्र में ही उनका निधन हो गया, मुझे हैरानी हुई कि इतनी अचानक मौत कैसे हो सकती है; मैंने खबरें देखीं और ऐसी रिपोर्टें पढ़ीं जिनसे पता चला कि उनकी मौत शायद कार्डियक अरेस्ट (दिल की धड़कन अचानक रुकने) से हुई थी। मैंने एक ऑनलाइन लेख पढ़ा जिसमें बताया गया था कि कार्डियक अरेस्ट एक रहस्यमयी और जानलेवा स्थिति है, जिससे हर साल अमेरिका में 200,000 से 300,000 लोगों की मौत हो जाती है। खबरों में एक कार्डियोलॉजिस्ट ने बताया कि अगर किसी को कार्डियक अरेस्ट होता है, तो जब तक दस मिनट के भीतर दिल को इलेक्ट्रिक शॉक न दिया जाए, उसकी मौत हो जाती है। हालाँकि, जब तक कोई लक्षणों को पहचानता है और 911 पर कॉल करता है, तब तक एम्बुलेंस के आने में आमतौर पर दस मिनट से ज़्यादा समय लग जाता है। नतीजतन, इस स्थिति के होने पर बचने की संभावना बहुत कम होती है। यह सचमुच एक भयानक बीमारी है। यह खबर सुनकर मुझे एक दोस्त के पिता की याद आ गई। मेरे दोस्त ने मुझे बताया कि उसके पिता को हार्ट अटैक आया था और वे अपनी माँ की गोद में तड़प रहे थे; हालाँकि आखिरकार एम्बुलेंस आ गई, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। अपने दोस्त से उस मुश्किल और समय-संवेदनशील स्थिति के बारे में सुनकर मैंने सोचा: अगर मैं कभी ऐसी ज़रूरी और मुश्किल स्थिति में फँस जाऊँ, तो मेरा दिल कितना बेचैन और व्याकुल होगा? मैं खुद से पूछता हूँ कि क्या मेरी कोई ऐसी प्रार्थना है जिसे मैं उतनी ही तत्परता के साथ परमेश्वर के सामने रखता हूँ। भजन संहिता 70:1 और 5 में, "जल्दी" (या "शीघ्रता से") शब्द तीन बार आया है। यह तीन बार दोहराया जाना दिखाता है कि भजनकार

दाऊद परमेश्वर से एक ज़रूरी गुहार लगा रहा था; उसने एक ऐसी गंभीर स्थिति में प्रार्थना की थी कि वह और इंतज़ार नहीं कर सकता था। तो फिर, दाऊद की उस ज़रूरी प्रार्थना का सार क्या था? उसकी विनतियाँ थीं: "मेरे पास जल्दी आ," "मेरी मदद जल्दी कर," और "मुझे जल्दी बचा।" दाऊद ने इतनी ज़रूरी प्रार्थना क्यों की? ऐसा उन लोगों की वजह से था जो उसकी जान लेना चाहते थे (पद 2)—जो उसकी मुसीबत में खुश होते थे (पद 2)। उनकी वजह से दाऊद बहुत तकलीफ में था और उसे बहुत ज़रूरत थी (पद 5)। इसलिए, उसने परमेश्वर से बहुत ज़रूरी समझकर प्रार्थना की। फिर भी, इतनी ज़रूरी प्रार्थना करते हुए भी, उसने विश्वास के साथ प्रार्थना की और परमेश्वर को "मेरी मदद और मेरा छुड़ाने वाला" माना (पद 5)। इसी विश्वास और परमेश्वर की मदद और छुटकारा पाने की चाहत के साथ, उसने अपनी प्रार्थना इस विनती के साथ खत्म की, "हे प्रभु, देर न कर" (पद 5)।

दाऊद की तरह, हमें भी मुश्किल हालात में परमेश्वर से ज़रूरी प्रार्थना करनी चाहिए और सच्चे दिल से उसकी मदद और छुटकारा (मुक्ति) मांगनी चाहिए। हमें ज़रूरी प्रार्थना की अहमियत को और गहराई से समझने की ज़रूरत है। जब हालात में जल्दबाज़ी की ज़रूरत हो, तब आराम से या हल्के-फुल्के ढंग से प्रार्थना करना परमेश्वर के सामने लापरवाही का पाप करना है (यिर्मयाह 48:10)। यह समझते हुए कि समय तेज़ी से बीत रहा है, मैं परमेश्वर से ज़रूरी प्रार्थना करना चाहता हूँ—सच्चे दिल से यह मांगते हुए कि "हमें एक-दूसरे से प्यार करने के काबिल बना।" मैं आत्माओं को बचाने की अहमियत और ज़रूरत को पूरी तरह समझते हुए परमेश्वर से ज़रूरी प्रार्थना करना चाहता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर हर दिन हमें उन भाई-बहनों को आराम और मदद पहुँचाने के लिए इस्तेमाल करे जो मुश्किल हालात का सामना कर रहे हैं।

"मैं हमेशा उम्मीद बनाए रखूँगा"

[भजन संहिता 71:1-14]

राष्ट्रपति निक्सन के सहयोगी चक कोल्सन ने जेल में अपने अनुभवों पर आधारित *बॉर्न अगेन* (Born Again) नाम की एक किताब लिखी। उन्होंने तीन तरह के कैदियों को देखा (स्रोत: इंटरनेट): पहले वे कैदी थे जो निराश थे और दीवारों पर अपना सिर पटकते थे और खुद को नुकसान पहुँचाते थे; दूसरे भी निराश थे और अपनी कोठरी के कोनों में बिना हिले-डुले बैठे रहते थे; और तीसरे वे थे जो अपनी रिहाई के दिन का इंतज़ार करते हुए, जब भी मौका मिलता, कसरत करने के लिए बाहर आँगन में जाते थे। अपनी कोठरी में बंद होने के बावजूद, वे ऐसे व्यवहार करते थे जैसे वे अगले ही दिन रिहा होने वाले हों। हालाँकि उनके शरीर कैद में थे, लेकिन उनके मन पहले से ही बाहर आज़ादी का आनंद ले रहे थे। उम्मीद के साथ जीने वाले व्यक्ति का जीवन आज़ाद होता है। जो लोग उम्मीद रखते हैं, वे आशावाद से भरे होते हैं। सकारात्मक और सक्रिय लोग अंधेरे के बीच भी रोशनी की तलाश करते हैं। इसके विपरीत, निराशावादी लोग रोशनी के बीच भी अंधेरा देखते हैं। क्या आप अंधेरे में रोशनी की तलाश करते हैं, या आप रोशनी में भी अंधेरा देखते हैं?

हमारे प्रति परमेश्वर के क्या विचार हैं? बाइबल में यिर्मयाह 29:11 कहता है: "क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारे लिए मेरी क्या योजनाएँ हैं," प्रभु कहते हैं, "तुम्हें समृद्ध करने और तुम्हें नुकसान न पहुँचाने की योजनाएँ, तुम्हें उम्मीद और भविष्य देने की योजनाएँ।" परमेश्वर, जो हमें उम्मीद से भरा भविष्य देना चाहते हैं, भजन संहिता 71:1–14 के अंश के माध्यम से आज हमें वह उम्मीद देना चाहते हैं। प्रभु चाहते हैं कि हम यह संकल्प लें: "मैं हमेशा उम्मीद बनाए रखूँगा।" इसलिए, मैं "मैं हमेशा उम्मीद बनाए रखूँगा" शीर्षक के तहत तीन बिंदुओं पर विचार करना चाहूँगा: (1) भजनकार किस निराशाजनक स्थिति का सामना कर रहा था? (2) भजनकार ने "हमेशा उम्मीद बनाए रखने" का संकल्प क्यों लिया? और (3) यह संकल्प लेने के बाद भजनकार का जीवन कैसा था?

विचार करने के लिए पहला बिंदु भजनकार की निराशाजनक स्थिति है, जिसमें उम्मीद की कोई किरण नज़र नहीं आ रही थी।

भजनकार "दुष्टों—अन्यायी और क्रूर लोगों" (पद 4) या "दुश्मनों" (पद 10) के कारण जानलेवा स्थिति का सामना कर रहा था। वे उसकी जान लेने की घात में थे (पद 10)। यहाँ "क्रूर" (या "निर्दयी") के रूप में अनुवादित शब्द का हिब्रू अर्थ असल में ऐसे व्यक्ति से है जो "खमीर की तरह फूला हुआ" हो। यह एक ऐसे दुष्ट या अन्यायपूर्ण व्यक्ति का वर्णन करता है जिसके मन में इतनी ज़्यादा बुराई भरी होती है कि उसे न तो अपनी बुराई को रोकना आता है और न ही पछताना; इसके बजाय, वह बुराई को और ज़्यादा फैलाता है (पार्क युन-सन)। चूँकि ऐसे लोग उसकी जान के पीछे पड़े थे, इसलिए भजनकार ने खुद को जीवन और मृत्यु के दोराहे पर पाया, एक ऐसी स्थिति में जहाँ—इंसानी नज़रिए से—कोई उम्मीद नहीं थी। फिर भी, उस पल में भजनकार ने ठान लिया: "मैं हमेशा उम्मीद रखूँगा और तेरी और ज़्यादा स्तुति करूँगा" (पद 14)।

दूसरी बात, मैं उन कारणों पर विचार करना चाहूँगा कि भजनकार ने ऐसी निराशाजनक स्थिति में भी "हमेशा उम्मीद रखने" का संकल्प क्यों लिया। (1) क्योंकि प्रभु ही उसकी उम्मीद है।

आज के पाठ में भजन संहिता 71:5 का पहला भाग देखें: "हे प्रभु परमेश्वर, तू ही मेरी आशा है..." यह दुनिया हमें कभी उम्मीद नहीं दे सकती; यह केवल निराशा ही दे सकती है। शैतान लगातार हमें निराशा की ओर धकेलने की कोशिश करता है। फिर भी, इस दुनिया में जो हमें निराश करना चाहती है, हम उम्मीद में आनंदित होकर जीते हैं। इसका कारण यह है कि हमारा प्रभु ही हमारी उम्मीद है। भजन 539, पद 3 के बोल इसे इस तरह व्यक्त करते हैं: "जब दुनिया का सारा सहारा छूट जाता है, तो उद्धारकर्ता के वादे पर भरोसा करके, मेरी उम्मीद और बढ़ती जाती है।" मसीहियों के तौर पर, जिन सांसारिक चीज़ों पर हम कभी निर्भर थे, वे जितनी ज़्यादा हमसे दूर होती जाती हैं, हम प्रभु के वादों पर उतना ही मज़बूती से खड़े रहते हैं, और उस पर हमारी उम्मीद निश्चित रूप से और मज़बूत होती जाती है।

(2) क्योंकि प्रभु वह चट्टान है जहाँ वह रहता है।

आज के पाठ में भजन संहिता 71:3 देखें: "मेरे लिए शरण की चट्टान बन, जिसके पास मैं हमेशा जा सकूँ; मुझे बचाने का आदेश दे, क्योंकि तू ही मेरी चट्टान और मेरा गढ़ है।" जब भी दुश्मनों ने उसे मारना चाहा, भजनकार ने प्रभु की शरण ली—जो उसकी चट्टान और उसका गढ़ था। वह प्रभु का वर्णन, जो उसकी चट्टान और गढ़ है, बस एक "चट्टान" के रूप में करता है (पद 3)। यहाँ, "चट्टान" का मतलब है विश्वास की एक ऐसी चीज़ जो मज़बूत और भरोसेमंद है (पार्क युन-सन)। खास तौर पर, जब दुश्मनों की वजह से उसकी ताकत कम हो गई, तो भजनकार ने प्रभु परमेश्वर पर भरोसा किया, जो उसकी ताकत थे। दुश्मनों के सताने और दुख देने के बावजूद उसका दिल क्यों नहीं डगमगाया? क्योंकि उसने प्रभु की शरण ली थी—जो उसकी चट्टान और मज़बूत गढ़ थे। विश्वास के पिता अब्राहम की तरह, जिन्होंने नामुमकिन हालात में भी उम्मीद रखी थी, हमें भी प्रभु में उम्मीद रखनी चाहिए, तब भी जब इस निराशाजनक दुनिया में उम्मीद की कोई वजह न दिखे। हम ऐसा इसलिए कर पाते हैं क्योंकि प्रभु ने हमसे वादे किए हैं। जब हम उन वादों पर मज़बूती से खड़े रहते हैं, तो हम डगमगाते नहीं हैं। इसके अलावा, हम प्रभु से प्रार्थना कर सकते हैं, उम्मीद रख सकते हैं और उनका इंतज़ार कर सकते हैं, जो उन वादों को पूरा करेंगे। प्रभु—अपनी चट्टान—की शरण लेने के बाद भजनकार ने जिस वादे को थामे रखा, वह यह था: "क्योंकि तूने मुझे बचाने की आज्ञा दी है" (पद 3)। इस तरह, उद्धार की उम्मीद और उसका भरोसा रखते हुए, उसने प्रभु की शरण ली और उनके साथ रहा, जो उसकी मज़बूत चट्टान थे।

(3) क्योंकि प्रभु जवानी के दिनों से ही उसकी उम्मीद रहे हैं।

आज के पाठ में भजन संहिता 71:5 का बाद वाला हिस्सा देखें: "...मेरी जवानी के दिनों से मेरी उम्मीद।" भजनकार का प्रभु में "हमेशा उम्मीद रखने" का पक्का इरादा—मुश्किल और निराशाजनक हालात में भी—इसलिए बन पाया क्योंकि उसने जवानी से लेकर इस भजन को लिखने के पल तक परमेश्वर की अगुवाई और छुटकारा पाया था। इसलिए, उसे भरोसा था कि परमेश्वर उसे उन दुखों और संकटों से बचाएंगे जिनका वह अभी सामना कर रहा था। मेरी इच्छा है कि भजनकार का यह भरोसा न सिर्फ़ हममें, बल्कि खासकर हमारे छोटे बच्चों में भी पैदा हो। अगर वे कम उम्र से ही परमेश्वर पर भरोसा करना सीख जाएं, तो आगे चलकर इस कठोर दुनिया में उनके लिए यह ताकत और उम्मीद का कितना बड़ा ज़रिया होगा।

तीसरी और आखिरी बात, आइए उस भजनकार के जीवन के तरीके पर गौर करें जिसने "हमेशा उम्मीद रखने" का पक्का इरादा किया था।

(1) वह परमेश्वर की शरण लेता है। आज के लिए भजन 71:1 देखें: "हे प्रभु, मैं तुझमें शरण लेता हूँ..." भजनकार मानता है कि प्रभु ही उसकी मज़बूत शरण है (पद 7)। इसलिए, उसने प्रभु में—जो उसका अटूट गढ़ है—शरण ली, ताकि वह उन दुश्मनों से बच सके जो उसे निराशा में धकेल रहे थे। इसके अलावा, वह "हर समय" इस मज़बूत शरण में गया (पद 3)।

(2) वह परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

उसकी प्रार्थना की बातें इस प्रकार थीं: (a) सबसे पहले, उसने परमेश्वर से छुटकारा पाने के लिए प्रार्थना की। भजनकार ने प्रार्थना की: "अपनी धार्मिकता में मुझे बचा और छुड़ा; मेरी ओर कान लगा और मेरी रक्षा कर" (पद 2)। अपने दुश्मनों—दुष्टों, अन्यायियों और बेरहम लोगों—से छुटकारा पाने के लिए परमेश्वर से विनती करते हुए, उसने खास तौर पर परमेश्वर से गुहार लगाई कि वह उन्हें उससे दूर रखे (पद 4)। (b) दूसरी बात, भजनकार ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसे न छोड़े। पद 9 देखें: "बुढ़ापे में मुझे दूर न फेंक; जब मेरी ताकत कम हो जाए तो मुझे न छोड़।" भजनकार ने प्रार्थना की कि बुढ़ापे में और ताकत कम होने पर भी परमेश्वर उसे न छोड़े। (c) भजनकार की तीसरी प्रार्थना यह थी कि परमेश्वर उसके दुश्मनों को नाकाम कर दे। आज के हिस्से के पद 10-13 को देखें, भजनकार ने अपने दुश्मनों के बारे में यह प्रार्थना की—जिन्होंने उसकी जान पर नज़र रखी और झूठा दावा किया कि परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया है और कोई भी उन्हें उनके हाथों से नहीं बचा सकता: "मेरे दोष लगाने वाले शर्मिंदा हों और नष्ट हो जाएं; जो मेरा बुरा चाहते हैं, वे अपमान और बदनामी से घिर जाएं" (पद 13)।

(c) वह हमेशा प्रभु की स्तुति करता है।

आज के हिस्से में भजन 71 के पद 6 और 14 देखें: "जन्म से ही मैंने तुझ पर भरोसा किया है; तूने ही मुझे मेरी माँ के गर्भ से बाहर निकाला। मैं हमेशा तेरी स्तुति करूँगा" (पद 6); "जहाँ तक मेरी बात है, मैं हमेशा उम्मीद रखूँगा; मैं तेरी और ज़्यादा स्तुति करूँगा" (पद 14)। भजनकार ने ठान लिया कि भले ही उसके दुश्मन बुराई को और ज़्यादा फैलाएँ, फिर भी वह प्रभु की और ज़्यादा स्तुति करेगा। प्रभु की शरण लेने के बाद—जो हमेशा एक मज़बूत चट्टान और सुरक्षित स्थान हैं—भजनकार ने उनकी सुरक्षा में लगातार उनकी स्तुति की। इस प्रकार, उन्होंने कहा: "मेरा मुँह आपकी स्तुति से भरा है, और मैं दिन भर आपकी महिमा का बखान करता हूँ" (पद 8)। जो लोग हमेशा परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, वे हर समय प्रभु की स्तुति करते हैं, यहाँ तक कि उन स्थितियों में भी जो निराशाजनक लगती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे जानते और मानते हैं कि केवल प्रभु ही उनकी आशा हैं। जब हम प्रभु—जो हमारी आशा हैं—को अपने दिलों में बसाकर विश्वास का जीवन जीते हैं... तो हमें हर स्थिति में प्रभु की स्तुति करनी चाहिए।

स्थिति चाहे कितनी भी निराशाजनक क्यों न लगे, आइए हम—भजनकार की तरह—यह संकल्प लें कि "मैं हमेशा आशा रखूँगा," क्योंकि प्रभु ही हमारी आशा, हमारी शरण की चट्टान और हमारी जवानी के दिनों से हमारे सहारे हैं। और आइए हम हमेशा उनकी स्तुति करें। जो लोग हमेशा प्रभु पर आशा रखते हैं, वे हमेशा उनकी स्तुति करते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम ऐसे लोग बनें जो निराशा के बीच भी प्रभु की स्तुति करें।

एक सुंदर बुज़ुर्ग

“बुढ़ापे के समय मुझे त्याग न देना; जब मेरी शक्ति क्षीण हो जाए तो मुझे छोड़ न देना” (भजन संहिता 71:9)।

व्यक्तिगत रूप से, मुझे यह पसंद नहीं है जब मेरे जैसे युवा लोग बुजुर्गों को बस “बूढ़े लोग” या “बूढ़े-पुराने” कहते हैं। फिर भी, जब मैंने आज के बाइबिल पाठ पर मनन किया और इस संदेश का शीर्षक “एक सुंदर बुजुर्ग” रखा, तो मैं उलझन में पड़ गया—कोरियाई भाषा की बारीकियों को देखते हुए—कि क्या दादा-दादी और नाना-नानी का वर्णन करने के लिए “बूढ़े व्यक्ति” (*neulgeuni*) शब्द का उपयोग करना वास्तव में उचित है। मेरा इरादा केवल बाइबिल के वाक्यांश “बुढ़ापे का समय” पर विचार करना है। मुझे बस उम्मीद है कि “बूढ़े व्यक्ति” शब्द हमारे बुजुर्गों के दिलों को कोई ठेस नहीं पहुँचाएगा। आज के पाठ पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन तीन विशेषताओं पर विचार करना चाहता हूँ जो बुजुर्गों की सुंदरता को परिभाषित करती हैं—विशेष रूप से, क्या चीज़ एक बुजुर्ग को परमेश्वर की दृष्टि में सुंदर बनाती है। ऐसा करते हुए, मैं स्वयं भी ऐसा ही सुंदर बुजुर्ग बनने की इच्छा रखता हूँ।

पहला, एक सुंदर बुजुर्ग प्रभु पर निर्भर रहता है, जो उनकी आशा है।

भजन संहिता 71:5 को देखें: “क्योंकि हे प्रभु परमेश्वर, तू ही मेरी आशा है; तू ही मेरी जवानी से मेरा भरोसा रहा है।” भजनकार ने अपने शुरुआती दिनों से ही प्रभु से शिक्षा प्राप्त करते हुए जीवन बिताया (पद 17)। परिणामस्वरूप, वह बचपन से ही प्रभु पर निर्भर रहकर अपना जीवन जीने में सक्षम था। जैसे-जैसे साल

बीतते गए, वह प्रभु पर और भी गहराई से निर्भर होता गया। उसके लिए, प्रभु एक मजबूत शरणस्थान थे (पद 7)। जब उसके शत्रुओं ने—जो भजनकार की जान लेने की ताक में थे—मिलकर षड्यंत्र रचा (पद 10), और कहा, "परमेश्वर ने उसे त्याग दिया है; उसका पीछा करो और उसे पकड़ लो, क्योंकि उसे बचाने वाला कोई नहीं है" (पद 11), तो भजनकार ने परमेश्वर से पुकार की: "हे परमेश्वर, मुझसे दूर न हो; हे मेरे परमेश्वर, मेरी सहायता करने के लिए शीघ्रता कर!" (पद 12)। इस प्रकार, जो लोग प्रभु पर—अपनी आशा पर—निर्भर रहते हैं, वे परमेश्वर से अपनी विनती करते हैं।

भजनकार कितना सुंदर दृश्य प्रस्तुत करता है! हमें भजनकार के जीवन का अनुकरण करना चाहिए, जिन्होंने जवानी से लेकर बुढ़ापे और बाल सफेद होने तक लगातार प्रभु पर—जो उनकी आशा थे—भरोसा करते हुए जीवन बिताया। जब हम, भजनकार की तरह, "बहुत सी और गंभीर मुसीबतों" (पद 20) का सामना करते हैं, तो हमें अपनी आशा, परमेश्वर पर और भी अधिक भरोसा करना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हमें उन मुसीबतों से छुड़ाएंगे। प्रभु हमें फिर से जीवित करेंगे और धरती की गहराइयों से एक बार फिर ऊपर उठाएंगे (पद 20)। जो बुजुर्ग व्यक्ति सालों-साल प्रभु पर भरोसा करते हुए बूढ़ा होता है, वह परमेश्वर की दृष्टि में सुंदर होता है।

दूसरी बात, एक सुंदर बुजुर्ग व्यक्ति आने वाली पीढ़ियों को प्रभु के कामों के बारे में बताता है।

भजन संहिता 71:18 को देखें: "हे परमेश्वर, जब मैं बूढ़ा हो जाऊं और मेरे बाल सफेद हो जाएं, तब भी मुझे न छोड़ना, जब तक कि मैं अगली पीढ़ी को तेरी शक्ति और आने वाले सभी लोगों को तेरी सामर्थ्य के बारे में न बता दूं।" भजनकार आने वाली पीढ़ियों और सभी लोगों को प्रभु की शक्ति और सामर्थ्य के बारे में बताना चाहते थे। वह "प्रभु परमेश्वर के महान कामों" और "तेरी धार्मिकता, केवल तेरी ही धार्मिकता" की घोषणा करना चाहते थे (पद 16)। उनकी जीभ दिन भर प्रभु की धार्मिकता के बारे में बोलती थी (पद 24)। इसका कारण प्रभु की "अथाह धार्मिकता और उद्धार" था—वही जो जवानी से लेकर बुढ़ापे तक उनकी आशा थे—और जो उन्हें मिली थी (पद 15)। भजनकार इस विचार को सहन नहीं कर सकते थे कि वे आने वाली पीढ़ियों

को प्रभु के उद्धार की असीम कृपा के बारे में बताने में असफल हो जाएं। इसलिए, उन्होंने परमेश्वर से विनती की कि वे उन्हें बुढ़ापे में न छोड़ें जब तक कि वे इस मिशन को पूरा न कर लें।

जो बुजुर्ग व्यक्ति अपने बच्चों और वंशजों को विश्वास की विरासत सौंपता है, वह सुंदर होता है। बुद्धिमान है वह बुजुर्ग व्यक्ति जो अपनी संतान को उस परमेश्वर की कृपा के बारे में बताता और बांटता है जो उन्हें जवानी से लेकर बुढ़ापे तक प्रभु पर—अपनी आशा पर—भरोसा करने से मिली। ऐसा व्यक्ति, जो अपनी उपलब्धियों के बारे में बात करने के बजाय अपने जीवन में परमेश्वर द्वारा किए गए महान कार्यों की गवाही देता है, वह यह कहने के योग्य है, "परमेश्वर की कृपा से ही मैं वह हूं जो मैं हूं" (1 कुरिन्थियों 15:10)। तीसरी बात, एक सुंदर बुज़ुर्ग व्यक्ति प्रभु की स्तुति करता है।

भजन संहिता 71:14 को देखिए: "पर मैं तो सदा आशा रखूँगा और तेरी स्तुति और भी अधिक करूँगा।" जैसे-जैसे साल बीतते गए, भजनकार—जिसने प्रभु पर भरोसा रखा था—न केवल उन अद्भुत और महान कामों का बखान करता रहा जो परमेश्वर ने उसके जीवन में किए थे, बल्कि प्रभु की स्तुति भी करता रहा। समय बीतने के साथ उसने प्रभु की और अधिक स्तुति की (पद 14) और लगातार उनकी स्तुति करता रहा (पद 6)। उसका मुँह दिन भर प्रभु की स्तुति और सम्मान से भरा रहता था (पद 8)। उसने वीणा बजाकर प्रभु और उनकी सच्चाई की स्तुति की (पद 22)। उसने 'इस्राएल के पवित्र' की स्तुति 'लायर' (एक प्रकार का वाद्य यंत्र) बजाकर की (पद 22)। जब वह प्रभु की स्तुति करता था, तो उसके होंठ खुशी से चिल्ला उठते थे, और उसकी आत्मा—जिसे प्रभु ने छुटकारा दिलाया था—आनंदित हो उठती थी (पद 23)।

हम भी हमेशा आशा रखते हैं और प्रभु की स्तुति में गीत गाते हैं: "ओह, प्रभु यीशु की प्रेमपूर्ण कृपा, जिन्होंने क्रूस की भारी पीड़ा सही और मेरी जगह पर प्राण दिए; उनके बहुमूल्य लहू से उन पापों से छुटकारा पाने के बाद हम उनकी स्तुति कैसे न करें जो अनंत मृत्यु की ओर ले जाते हैं?" (भजन 403, पद 1)। हमारी आत्माएँ भी प्रभु की महिमा और महानता की स्तुति करती हैं (भजन 40, कोरस)। हमारी इच्छा है कि हम प्रभु के और करीब आएँ और अपनी अंतिम साँस तक उनकी स्तुति के गीत गाते रहें (भजन 464, पद 4 और कोरस)।

"मुझे और भी महान बनाओ"

[भजन संहिता 71:15–24]

लगभग दो हफ़्ते पहले एक प्रेस्बिटरी मीटिंग में शामिल होने के दौरान मुझे एक बात का एहसास हुआ: एक पादरी के लिए अपनी सेवकाई का अंत सुंदर ढंग से करना कितना ज़रूरी है। मैंने तय किया कि ऐसा करने के लिए, मुझे अपनी सेवकाई की शुरुआत से लेकर अंत तक अटूट विश्वास बनाए रखना होगा; जैसे-जैसे समय बीतता जाए, मुझे परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में उतारना होगा और ज़्यादा से ज़्यादा यीशु जैसा बनना होगा। तभी एक पादरी का अंत सचमुच सुंदर हो सकता है और वह जूनियर पादरियों का सम्मान पा सकता है। हालाँकि सेवकाई की शुरुआत महत्वपूर्ण है, पर मेरा मानना है कि उसका अंत और भी ज़्यादा महत्वपूर्ण है। एक सुंदर अंत सुनिश्चित करने के लिए, मैंने महसूस किया कि मुझे वफ़ादारी और विनम्रता से चलना होगा—शुरू से अंत तक एक स्थिर हृदय बनाए रखना होगा, या यूँ कहें कि एक ऐसा परिपक्व हृदय जो लगातार प्रभु के हृदय का अनुकरण करे।

जब हम अपने जीवन की यात्रा पर विचार करते हैं, तो अय्यूब 8:7 के शब्द याद आते हैं: "तुम्हारी शुरुआत भले ही मामूली लगे, पर तुम्हारा भविष्य बहुत समृद्ध होगा।" भले ही हमारी शुरुआत छोटी हो, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारा भविष्य बहुत महान बने। भजन संहिता 71:21 में, हम भजनकार को परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए देखते हैं, जिसमें वह कहता है, "मुझे और भी महान बनाओ।" इस आयत पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन तीन ज़िम्मेदारियों पर विचार करना चाहता हूँ जो हम पर तब आती हैं जब हम परमेश्वर से हमें महान बनाने के लिए कहते हैं, और उनसे मिलने वाली सीख को अपनाते हैं।

पहला, और भी महान बनने के लिए, हमें अपनी जवानी के दिनों से ही परमेश्वर की शिक्षा को ग्रहण करना होगा। भजन संहिता 71:17 पर विचार करें: "हे परमेश्वर, तूने मुझे मेरी जवानी से ही सिखाया है, और आज

तक मैं तेरे अद्भुत कामों का बखान करता हूँ।" भजनकार ने प्रभु को अपने शुरुआती दिनों से ही अपनी आशा बना लिया था (आयत 5)। वह प्रभु में "हमेशा आशा रखने" का संकल्प ले पाया—यहाँ तक कि निराशाजनक लगने वाली स्थितियों में भी—क्योंकि बचपन से लेकर इस भजन को लिखने के क्षण तक परमेश्वर के सुरक्षात्मक हाथ ने उसका मार्गदर्शन किया था और उसे बचाया था। इसलिए, उसने स्वीकार किया, "तूने मुझे मेरी माँ के गर्भ से ही संभाला है" (आयत 6)। प्रभु द्वारा मज़बूती से थामे जाने के कारण, भजनकार को भरोसा था कि परमेश्वर उसकी रक्षा करेगा और उसे बचाएगा, भले ही वह अभी दुख, संकट और निराशा का सामना कर रहा हो। जीन ए. गेट्ज़ बच्चों की परवरिश में तीन अहम बातों पर ज़ोर देते हैं: "माता-पिता का उदाहरण," "सीधी सीख," और "हौसला बढ़ाना।" लेकिन, बच्चों की परवरिश में माता-पिता का ज़रूरत से ज़्यादा सुरक्षा करना, बहुत ज़्यादा छूट देना, बहुत ज़्यादा रोक-टोक करना और ज़रूरत से ज़्यादा सावधानी बरतना उनमें बेचैनी और अस्थिरता पैदा कर सकता है। इसलिए, हमें अपने बच्चों को कम उम्र से ही परमेश्वर का वचन सिखाना चाहिए। हमें व्यवस्थाविवरण 6:4–9 में दी गई सीख को दिल में उतारना चाहिए—कि हम अपने परमेश्वर यहोवा से, जो एक ही है, "अपने पूरे मन, अपनी पूरी आत्मा और अपनी पूरी शक्ति से" प्रेम करें (वचन 5)—और इसे अपने बच्चों को ध्यान से सिखाएँ (वचन 7)। जो लोग जवानी से ही परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उस पर भरोसा रखते हैं और उससे जुड़े रहते हैं, उन्हें परमेश्वर फलने-फूलने और महान बनने में मदद करता है।

दूसरी बात, फलने-फूलने और आगे बढ़ने के लिए, हमें बड़ी और गंभीर तकलीफों के बीच भी परमेश्वर की अपार कृपा में परिपक्व होना चाहिए।

भजन संहिता 71:15 पर गौर करें: "मेरा मुँह दिन भर तेरी धार्मिकता और तेरे उद्धार के बारे में बताएगा, क्योंकि मैं उनकी कोई सीमा नहीं जानता।" जिन्हें परमेश्वर ने सिखाया है और जिन्होंने जवानी से ही प्रभु पर भरोसा रखा है, उन्हें उसमें और आगे बढ़ने के लिए परीक्षाओं की ज़रूरत होती है। इन परीक्षाओं के ज़रिए, वे परमेश्वर की कृपा को और गहराई, विस्तार और विशालता के साथ महसूस करते हैं। आज के वचन, भजन संहिता 71:20 में, भजनकार बुढ़ापे में अपने जीवन पर विचार करता है और मानता है कि परमेश्वर ने उसे निखारने के लिए "कई और गंभीर मुसीबतों" का सामना करने दिया। उन पुरानी मुश्किलों के बीच, उसने महसूस किया कि प्रभु ने उसे "फिर से जीवित किया" और "धरती की गहराइयों से ऊपर उठाया," और उसे

भरोसा था कि वही प्रभु उसे उसकी मौजूदा निराशा से भी बाहर निकालेगा। परमेश्वर की समझ से परे "धार्मिकता और उद्धार" का अनुभव करने के बाद, भजनकार ने दिन भर उनके बारे में बताने का संकल्प लिया (वचन 15, 24)। उसने आगे यह भी संकल्प लिया: "मैं आकर प्रभु परमेश्वर के महान कामों का बखान करूँगा; मैं तेरी धार्मिकता का बखान करूँगा—सिर्फ़ तेरी ही" (वचन 16)।

गंभीर तकलीफों के कारण हम खुद को निराशा और मायूसी में डूबा हुआ पा सकते हैं। फिर भी, उस हालत में भी, हम हमेशा उम्मीद बनाए रख सकते हैं (पद 14), क्योंकि प्रभु ही हमारी उम्मीद हैं (पद 5)। खास तौर पर, प्रभु—हमारी उम्मीद—मुक्ति देने वाले परमेश्वर हैं जो हमें "नई ज़िंदगी देते हैं" और जब हम घोर निराशा में होते हैं तो हमें "फिर से ऊपर उठाते हैं" (पद 20)। वही परमेश्वर हमें दिलासा देते हैं (पद 21)। जब हम परमेश्वर की इस कृपा का पूरा अनुभव करते हैं—नई ज़िंदगी पाना, ऊपर उठना और दिलासा पाना—तो हम भजनकार की तरह उनकी तारीफ़ किए बिना नहीं रह सकते। परमेश्वर उन लोगों को फलने-फूलने और महान बनने में मदद करते हैं जो उनकी असीम कृपा के बीच बढ़ते हैं।

आखिर में, तीसरी बात यह है कि और भी महान बनने के लिए, हमें आने वाली पीढ़ियों को प्रभु की शक्ति के बारे में बताना चाहिए, तब भी जब हम बूढ़े हो जाएं और हमारे बाल सफ़ेद हो जाएं।

भजन संहिता 71:18 को देखिए: "हे परमेश्वर, जब मैं बूढ़ा हो जाऊं और मेरे बाल सफ़ेद हो जाएं, तब भी मुझे न छोड़ना, जब तक कि मैं आने वाली पीढ़ी को तेरी शक्ति और आने वाले सभी लोगों को तेरी सामर्थ्य के बारे में न बता दूं।" ये शब्द साफ़ तौर पर दिखाते हैं कि भजनकार एक बुज़ुर्ग व्यक्ति हैं (पार्क युन-सन)। इसके अलावा, पद 9 में उनकी प्रार्थना—"बुढ़ापे के समय मुझे दूर न करना; जब मेरी ताकत कम हो जाए तो मुझे न छोड़ना"—उनकी बढ़ती उम्र की पुष्टि करती है। उन्होंने प्रार्थना की कि परमेश्वर उन्हें तब भी न छोड़ें जब वे बूढ़े हो जाएं और उनके बाल सफ़ेद हो जाएं (पद 18)। उन्होंने ऐसी प्रार्थना क्यों की? इसलिए क्योंकि वे आने वाली पीढ़ियों को प्रभु की शक्ति के बारे में बताना चाहते थे (पद 18)। यह भजनकार की उस गहरी इच्छा को दिखाता है कि वे बुढ़ापे में भी, जब उनकी शारीरिक ताकत कम हो रही थी, प्रभु की गवाही दें और सुसमाचार सुनाएं (पार्क युन-सन)।

बुढ़ापे की कितनी सुंदर तस्वीर है यह! भले ही उनकी शारीरिक ताकत कम हो गई थी—और कम होती जा रही थी—फिर भी भजनकार प्रभु की शक्ति का प्रचार करने के लिए समर्पित रहे। एक बुज़ुर्ग व्यक्ति की कितनी सुंदर छवि है। अपने जीवन के आखिरी सालों में पीछे मुड़कर देखते हुए, और परमेश्वर की उन बेहिसाब कृपाओं को याद करते हुए जो उन्होंने उन पर की थीं, भजनकार ने महसूस किया कि वे प्रभु के किए गए "महान कामों" का प्रचार किए बिना नहीं रह सकते (पद 19)। हमारे परमेश्वर ऐसे हैं जो हमारे जीवन में "वफ़ादारी" के साथ बड़े-बड़े काम करते हैं (पद 22)। साथ ही, वे ऐसे परमेश्वर हैं जो हम जैसे मामूली लोगों के ज़रिए अपनी महानता और महिमा ज़ाहिर करते हैं, और आखिर में हमें उनकी स्तुति करने के लिए प्रेरित करते हैं: "हे मेरे परमेश्वर, मैं वीणा बजाकर तेरी स्तुति करूँगा और तेरी वफ़ादारी का गुणगान करूँगा; हे इस्राएल के पवित्र परमेश्वर, मैं सारंगी के साथ..." "मैं प्रभु की स्तुति करूँगा; जब मैं उनकी स्तुति करूँगा, तो मेरे होंठ खुशी से चिल्ला उठेंगे, और मेरी आत्मा, जिसे उन्होंने छुड़ाया है, आनंदित होगी" (पद 22–23)।

आज सुबह की प्रार्थना सभा में, मैंने अपने सबसे बड़े बेटे, डिलन के लिए उसके जन्मदिन पर प्रार्थना की। उसके बाद, मैं उसे एक कार्ड देना चाहता था, इसलिए मैंने एक छोटा सा, दिल से निकला हुआ नोट लिखा। उसी दोपहर, जब मैं उसे स्कूल से घर ला रहा था, तो मैंने उसे कार्ड दिया। डिलन की प्रतिक्रिया बस इतनी थी, "धन्यवाद।" फिर उसने कार्ड को अपनी छोटी बहन, येरी से छिपा लिया ताकि वह उसे अकेले में पढ़ सके। येरी ने उत्सुकता से पूछा, "पापा ने कार्ड पर दिल का आकार कैसे बनाया?" इसी बीच, मेरी सबसे छोटी बेटी, यीउन ने मुझसे पूछा, "मेरे भाई का जन्मदिन का तोहफ़ा कहाँ है?" कार्ड में, मैंने उसे "डिलन, परमेश्वर का प्यारा और अनमोल बेटा" कहकर संबोधित किया और उस प्यार के लिए आभार व्यक्त किया जो परमेश्वर ने उसके ज़रिए हमें दिया है—एक ऐसा प्यार जो हमें नया जीवन देता है और चंगा करता है। मैंने यह भी बताया कि मम्मी और पापा उसके लिए प्रार्थना कर रहे हैं कि वह परमेश्वर के सामने "वफ़ादार और सच्चा" रहकर अपने नाम—"डिलन"—के अर्थ को सार्थक करे। मेरी उम्मीद है कि कम उम्र से ही परमेश्वर की शिक्षा पाकर, वह प्रभु से प्रेम करेगा, उन पर भरोसा रखेगा और हमेशा उनकी सुरक्षा में बना रहेगा। मैं यह भी प्रार्थना करता हूँ कि भविष्य में आने वाली कई मुश्किलों और चुनौतियों के बावजूद, वह परमेश्वर की असीम कृपा में बढ़ता रहे। साथ ही, मैं प्रार्थना करता हूँ कि बुढ़ापे में भी वह आने वाली पीढ़ियों को प्रभु की शक्ति के बारे में बताने वाला व्यक्ति बने। भले ही उसकी शुरुआत साधारण लगे, मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर उसके भविष्य को सचमुच महान बनाए।

आदर्श राजा

[भजन संहिता 72]

कहा जाता है कि राष्ट्रपति छह तरह के होते हैं: "विद्वान-अधिकारी" (Scholar-Official) प्रकार, "प्रशासक" (Administrator) प्रकार, "CEO" प्रकार, "राजनेता" (Politician) प्रकार, "जुआरी" (Gambler) प्रकार, और "घटना-आधारित" (Event-Driven) प्रकार। इनमें से, "विद्वान-अधिकारी," "प्रशासक," और "CEO" प्रकार राष्ट्रपति की आदर्श छवि को दर्शाते हैं, जबकि "राजनेता," "जुआरी," और "घटना-आधारित" प्रकार अक्सर राष्ट्रपतियों में देखी जाने वाली वास्तविकता को दर्शाते हैं। प्रत्येक प्रकार के प्रतिनिधि उदाहरण और छवियां इस प्रकार हैं: "विद्वान-अधिकारी"—जोंग डो-जेओन, किम गु, लिंकन (पाठ्यपुस्तक जैसे, अनुकरणीय, विद्वान, अनुसरण करने योग्य, फिर भी शायद बोझिल); "प्रशासक"—गो कुन, ह्वांग हुई (प्रधानमंत्री शैली, सक्षम, प्रशासनिक, सौंपे गए कार्यों को संभालने में माहिर, राज्य पार्षद); "CEO"—चिन डे-जे, मून कुक-ह्यून, सोन हक-क्यू, ली म्योंग-बाक (स्त्री-सुलभ गुण, स्थानीय सरकार के प्रमुख, लोकतांत्रिक, अंतिम 2% की कमी, तर्कसंगत रूढ़िवादी); "राजनेता"—डेवोंगुन, पार्क चुंग-ही, हिटलर (व्यावहारिक, करीबी होने पर हानिकारक, आँख बंद करके वफादारी की मांग, भड़काऊ भाषणबाजी, तानाशाही); "जुआरी"—किम यंग-सम, रो मू-ह्यून (धोखेबाज, बड़े दांव लगाने वाला खिलाड़ी, सार की कमी, सरल/जिद्दी, उथला); और "घटना-आधारित"—ली म्योंग-बाक, रो मू-ह्यून (आसानी से धोखा खाने वाले, मल्टी-लेवल मार्केटिंग शैली, भ्रमित, शोर मचाने वाले, बिना सोचे-समझे आगे बढ़ने वाले)। विरोधाभासी रूप से, यह कहा जाता है कि "सबसे आदर्श राष्ट्रपति वह है जिसे लोग स्वयं सबसे व्यावहारिक राष्ट्रपति मानते हैं" (इंटरनेट स्रोत)।

आज, भजन संहिता 72 पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं एक "आदर्श राजा" के स्वरूप पर विचार करना चाहता हूँ—विशेष रूप से दो प्रमुख पहलुओं पर—और परमेश्वर द्वारा प्रदान की जाने वाली कृपा प्राप्त करना चाहता हूँ। विशेष रूप से जब संयुक्त राज्य अमेरिका और दक्षिण कोरिया दोनों में राष्ट्रपति चुनाव नजदीक आ रहे

हैं, तो मुझे उम्मीद है कि आज बाइबिल में सिखाए गए पाठों को अपनाकर, हम सभी एक आदर्श राष्ट्रपति चुनने में सक्षम लोग बन सकेंगे।

पहला, एक आदर्श राजा प्रभु की समझ-बूझ के साथ न्याय करता है। भजन संहिता 72:1 को देखिए: "हे परमेश्वर, राजा को अपना न्याय और राजा के पुत्र को अपनी धार्मिकता दे।" भजनकार, राजा सुलैमान ने परमेश्वर से विनती की कि वह उन्हें प्रभु की समझ और धार्मिकता दे। इसका कारण प्रभु के लोगों का धार्मिकता से न्याय करना था (पद 2)। यहाँ, "आपकी धार्मिकता" का अर्थ है सही आचरण जो परमेश्वर के मानकों के अनुरूप हो (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, राजा सुलैमान प्रभु के लोगों का न्याय निष्पक्ष रूप से और परमेश्वर के मानकों के अनुसार करना चाहते थे (पद 2)। क्यों? क्योंकि वह जानते थे कि जब प्रभु के लोगों का न्याय परमेश्वर के मानकों के अनुसार निष्पक्ष रूप से किया जाएगा, तो परमेश्वर उन्हें शांति देंगे (पद 3)। आधुनिक शब्दों में, इसका अर्थ है कि एक आदर्श राष्ट्रपति परमेश्वर के वचन के मानकों के अनुरूप धार्मिक शासन चलाकर नागरिकों के लिए शांति लाता है। यदि किसी देश के नागरिक शांति का अनुभव नहीं करते हैं, तो इसका कारण यह है कि राष्ट्रपति (और अन्य नेता) परमेश्वर के वचन के मानकों के अनुसार धार्मिकता से शासन करने में विफल हो रहे हैं। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "वह शासन जो सच्ची शांति और व्यवस्था लाता है, वह ईश्वर-केंद्रित होता है—यानी, परमेश्वर द्वारा दिए गए सत्य पर आधारित शासन" (पार्क युन-सन)।

तो, परमेश्वर के मानकों के अनुसार प्रभु के लोगों का निष्पक्ष न्याय करने का क्या अर्थ है? हमें इसका उत्तर आज के पाठ, भजन संहिता 72:4 में मिल सकता है: "वह लोगों में गरीबों का पक्ष लेगा, जरूरतमंदों के बच्चों को बचाएगा और अत्याचारी को कुचल देगा।"

(1) एक आदर्श राजा, जो परमेश्वर के मानकों के अनुसार प्रभु के लोगों का धार्मिकता से न्याय करता है, गरीबों का पक्ष लेता है और जरूरतमंदों के बच्चों को बचाता है।

राजा सुलैमान आज के पाठ, भजन संहिता 72:12–14 में इसे और विस्तार से समझाते हैं: "क्योंकि जब जरूरतमंद पुकारता है, तो वह उसे छुड़ाता है; गरीबों और उनकी भी मदद करता है जिनका कोई सहायक

नहीं होता। वह गरीबों और जरूरतमंदों पर दया करेगा और जरूरतमंदों की जान बचाएगा। वह उनके जीवन को अत्याचार और हिंसा से छुड़ाएगा; और उसकी दृष्टि में उनका लहू अनमोल होगा।" एक आदर्श राजा, जो प्रभु की समझ से प्रभु के लोगों का न्याय करता है, न केवल ज़रूरतमंद और बेसहारा गरीबों के लिए अपने दिल में दया महसूस करता है, बल्कि उन्हें वास्तविक मुक्ति भी दिलाता है (पार्क युन-सन)। इस तरह, वह प्रभु के लोगों को आज़ादी और शांति देता है। इसके विपरीत, एक बुरा राजा या नेता बुरे तरीके से शासन करता है और अंततः लोगों को उनकी आज़ादी से वंचित कर देता है। स्टालिन और हिटलर इसके उदाहरण थे।

(2) एक आदर्श राजा, जो परमेश्वर के नियमों के अनुसार सही न्याय करता है, उन लोगों को कुचल देता है जो प्रभु के लोगों पर अत्याचार करते हैं।

आज के वचन, भजन संहिता 72:4 को देखें: "वह लोगों में से गरीबों का पक्ष लेगा, ज़रूरतमंदों के बच्चों को बचाएगा और अत्याचारी को कुचल देगा।" प्रभु के ज़रूरतमंद और बेसहारा गरीबों को बचाते समय, आदर्श राजा उनके अत्याचारियों का न्याय करके उन्हें बचाता है। अंततः, प्रभु के लोगों के दुश्मन भी प्रभु द्वारा चुने गए आदर्श राजा के सामने विनम्रता से सम्मान प्रकट करते हैं (वचन 9)।

दूसरी बात, आदर्श राजा प्रभु के सही न्याय का पालन करके प्रभु के लोगों को संतुष्टि देता है।

वह किस तरह की संतुष्टि देता है?

(1) आदर्श राजा प्रभु के लोगों को मुक्ति का अनुग्रह देकर संतुष्टि देता है।

भजन संहिता 72:4 को देखें, जो आज का वचन है: "वह लोगों में से पीड़ितों का पक्ष लेगा, ज़रूरतमंदों के बच्चों को बचाएगा और अत्याचारी को कुचल देगा।" परमेश्वर के लोग इस आदर्श राजा में संतुष्टि पाते हैं, जो उनके दुश्मनों का प्रभु के सही न्याय से फैसला करके उन्हें बचाता है। आदर्श राजा प्रभु के लोगों को उनके दुश्मनों से क्यों बचाता है? इसलिए क्योंकि वे उसके लिए अनमोल हैं। वचन 14 को देखें: "वह उनके जीवन को अत्याचार और हिंसा से छुड़ाएगा, क्योंकि उनकी जान उसकी नज़र में अनमोल है।"

(2) आदर्श राजा प्रभु के लोगों को शांति देकर संतुष्टि देता है।

भजन संहिता 72:3 और 7 को देखें: "पहाड़ लोगों के लिए शांति लाएँ, और पहाड़ियाँ धार्मिकता लाएँ" (वचन 3); "उसके दिनों में धर्मी लोग फलेंगे-फूलेंगे, और शांति की बहुतायत तब तक बनी रहेगी जब तक चाँद रहेगा" (वचन 7)। यहाँ "शांति" के लिए इस्तेमाल किए गए मूल हिब्रू शब्द के दो अर्थ हैं (कैल्विन के अनुसार): "शांति" और "समृद्धि"। आखिरकार, परमेश्वर के लोग उस आदर्श राजा के ज़रिए शांति और समृद्धि का आनंद लेते हैं। दूसरे शब्दों में, उस आदर्श राजा की वजह से, परमेश्वर के लोगों को शांति के साथ-साथ "समृद्धि" और "बहुतायत" भी मिलती है (पद 16)।

प्रभु के लोग, जो ऐसी संतुष्टि का आनंद लेते हैं, उस आदर्श राजा के प्रति कैसा व्यवहार करते हैं?

(1) प्रभु के लोग परमेश्वर का भय मानते हैं।

आज के पाठ में भजन संहिता 72:5 को देखें: "जब तक सूरज और चाँद रहेंगे, तब तक वे तेरा भय मानते रहेंगे, और यह सिलसिला पीढ़ियों तक चलता रहेगा।" क्योंकि आदर्श राजा परमेश्वर का भय मानता है और अपने लोगों पर सही न्याय के साथ शासन करता है, इसलिए उसके शासन में रहने वाले लोग भी परमेश्वर का भय मानते हैं।

(2) प्रभु के लोग आदर्श राजा की सेवा करते हैं।

आज के पाठ में भजन संहिता 72:11 को देखें: "सभी राजा उसके सामने झुकें और सभी राष्ट्र उसकी सेवा करें।" बेशक, सिर्फ़ प्रभु के लोग ही आदर्श राजा की सेवा नहीं करते। क्योंकि परमेश्वर उस आदर्श राजा के साथ हैं—जो सच्चाई और न्याय से फ़ैसला करता है—और उसे दुनिया पर शासन करने की शक्ति देते हैं (पद 8), इसलिए सभी राष्ट्र उसकी सेवा करने आते हैं। इस सेवा में, जो राजा खुद उस आदर्श राजा के अधीन हैं, वे उसे उपहार भेंट करते हैं (पद 10)।

(3) प्रभु के लोग आदर्श राजा के लिए लगातार प्रार्थना करते हैं।

आज के पाठ में भजन संहिता 72:15 को देखें: "वह जीवित रहे और उसे शेबा का सोना दिया जाए; उसके लिए लगातार प्रार्थना की जाए, और दिन भर उसकी प्रशंसा की जाए।" प्रभु के लोग परमेश्वर से लगातार प्रार्थना करते थे कि वे उनके आदर्श राजा पर अपनी आशीष बनाए रखें। खास तौर पर, उसकी लंबी उम्र के लिए—कि वह "जीवित रहे"—और उस पर शांति और समृद्धि की आशीष बनी रहे, इसके लिए प्रार्थनाएँ की जाती थीं। जब ऐसा होता है, तो प्रभु के लोग शांति का आनंद लेते रह सकते हैं। इसके अलावा, प्रभु के लोग दिन भर उस आदर्श राजा की प्रशंसा करते थे; दूसरे शब्दों में, वे लगातार उसके लिए आशीष की बातें कहते थे।

(4) आखिरकार, प्रभु के लोग परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं। आज के वचन, भजन संहिता 72:18–19 को देखिए: "प्रभु परमेश्वर, इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति हो, जो अकेले ही अद्भुत काम करते हैं। उनके महिमामय नाम की सदा स्तुति हो।" आखिर में, प्रभु के लोग सिर्फ़ आदर्श राजा की ही स्तुति नहीं करते; वे उस परमेश्वर की भी स्तुति करते हैं, जिन्होंने उस आदर्श राजा को नियुक्त किया और आशीष दी।

बाइबल उन लोगों के बारे में क्या कहती है जिनका एक आदर्श राजा है—जो प्रभु की धार्मिकता के साथ उनका न्याय करता है और उन पर शासन करता है? वचन 17 को देखिए: "उनका नाम सदा बना रहे; जब तक सूरज है, तब तक उनका नाम बना रहे। तब उनके द्वारा सभी जातियों को आशीष मिलेगी, और वे उन्हें धन्य कहेंगे।" जो लोग उस आदर्श राजा की सेवा करते हैं, उन्हें उनके द्वारा आशीष मिलती है, और सभी जातियाँ उन्हें धन्य कहती हैं। वह आदर्श राजा कोई और नहीं, बल्कि हमारे प्रभु यीशु मसीह हैं। केवल यीशु ही, जो राजाओं के राजा हैं, हमारे आदर्श राजा हैं। वे ही परमेश्वर हैं जो दुष्टों का न्याय करते हैं और अपने धार्मिक न्याय के द्वारा हमें बचाते हैं। चूँकि वे हम पर शासन करते हैं, इसलिए हम शांति और समृद्धि की आशीषों का आनंद लेते हैं। केवल वे ही हमें संतुष्ट कर सकते हैं। इसलिए, हम उनका आदर और सेवा करते हैं, उनसे प्रार्थना करते हैं, और सदा उनकी स्तुति भी करते हैं।

शुद्ध मन वाले (1)

[भजन संहिता 73]

पिछले अक्टूबर में नई कार खरीदने के बाद, मैंने अपने बच्चों से कहा कि वे पिछली सीट पर कुछ न खाएं ताकि मैं उसे अच्छी हालत में रख सकूं। लगभग एक साल तक, मैं बिना किसी बड़ी परेशानी के कार को साफ़ रखने में कामयाब रहा। हालाँकि, लगभग तीन हफ़्ते पहले, मेरे सबसे बड़े बच्चे, डिलन ने अचानक पिछली सीट पर बहुत ज़्यादा उल्टी कर दी। वह ठीक महसूस नहीं कर रहा था और पिछली रात सो भी नहीं पाया था, और आखिरकार, उसने कार के अंदर उल्टी कर दी। मेरी सबसे बड़ी बेटी, येरी ने बदबू के कारण अपना नाक हाथ से ढक लिया, और मेरी सबसे छोटी बेटी, यीउन ने भी उस बदबू पर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की। हाहा। शुक्र है, पास ही एक गैस स्टेशन था; हम वहाँ गए और उस बदबूदार गंदगी को साफ़ किया और गीले तौलियों से सब कुछ पोंछा। इस घटना के बाद, मैंने इस मौके का इस्तेमाल अपने बच्चों के साथ यीशु की कुछ बातें साझा करने के लिए किया। मैंने समझाया कि जब खाना हमारे शरीर में जाता है तो वह खुद गंदा नहीं होता, लेकिन जो चीज़ अंदर से बाहर आती है—जैसे कि वह उल्टी—वह बदबूदार और अशुद्ध होती है। मैंने उन्हें बुरे विचारों, झूठ, जलन, ईर्ष्या और दूसरी पापपूर्ण चीज़ों से अपने मन की रक्षा करने का महत्व सिखाने की कोशिश की।

हमें अपने मन की सावधानी से रक्षा करनी चाहिए, क्योंकि मन ही जीवन का स्रोत है। हमें इस दुनिया की पापपूर्ण चीज़ों से अपने मन को बचाने की ज़रूरत है। हमारे आस-पास बहुत सी ऐसी पापपूर्ण चीज़ें हैं जो हमारे मन को दूषित करना चाहती हैं। हम जो देखते, सुनते, महसूस करते और सूंघते हैं, उनके ज़रिए अनगिनत प्रलोभन और पापपूर्ण प्रभाव हमें घेरे रहते हैं, जिनका मकसद हमें गुमराह करना और हमारे मन को अपवित्र करना होता है। इस पापपूर्ण दुनिया में रहते हुए, हमें मन की शुद्धता बनाए रखने की कोशिश

करनी चाहिए। मत्ती 5:8 में, यीशु ने कहा, "धन्य हैं वे जिनका मन शुद्ध है, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।" हमें उन धन्य लोगों में शामिल होना चाहिए—जिनका मन शुद्ध है और जो परमेश्वर को देखते हैं।

भजन संहिता 73 में, भजनकार आसाफ कहता है कि परमेश्वर वास्तव में इज़राइल में उन लोगों के प्रति भला है जिनका मन शुद्ध है (पद 1)। फिर भी, वह स्वीकार करता है कि वह लगभग लड़खड़ा गया था (पद 2)। वह लगभग क्यों लड़खड़ा गया था? दूसरे शब्दों में, वे कौन सी बातें हैं जिनके कारण हम लड़खड़ा जाते हैं जब हम शुद्ध मन बनाए रखने की कोशिश करते हैं? हम ऐसी तीन बातों पर विचार कर सकते हैं। सबसे पहले, आसाफ लगभग लड़खड़ा गया क्योंकि उसने बुरे लोगों की खुशहाली देखी।

भजन संहिता 73:3 देखें: "क्योंकि जब मैंने बुरे लोगों की खुशहाली देखी, तो मुझे घमंडी लोगों से जलन हुई।" बुरे लोगों की खुशहाली देखकर आसाफ के मन में उनके प्रति जलन पैदा हुई। ऐसी जलन पूरी तरह से समझ में आने वाली बात है। एक बार किसी ने मुझसे पूछा, "ऐसा क्यों है कि यीशु पर विश्वास करने वाले अक्सर गरीबी और मुश्किलों से जूझते हैं, जबकि जो विश्वास नहीं करते, उनके पास बहुत धन-दौलत होती है और वे बिना किसी बड़ी परेशानी के अच्छी ज़िंदगी जीते हैं?" यह बुजुर्ग विश्वासी इस सवाल से बहुत परेशान लग रहा था। हालाँकि, सिर्फ़ यही एक विश्वासी नहीं है जिसके मन में ऐसे विचार आते हैं; मेरा मानना है कि हममें से कई ईसाई अक्सर इसी समस्या से जूझते हैं। ऐसे पलों में, शैतान हमारे दिलों में जलन या ईर्ष्या पैदा करता है। तो, यहाँ "बुरे लोगों की खुशहाली" का क्या मतलब है? इसका मतलब है कि नेक लोगों के विपरीत, बुरे लोग दुख और मुश्किलों से मुक्त होते हैं (पद 5)। इसके अलावा, बुरे लोग अच्छी सेहत का आनंद लेते हैं (पद 4-5)। वे हमेशा शांति से रहते हैं और अपनी दौलत को बढ़ते हुए देखते हैं (पद 12)। हम बुरे लोगों से जलन क्यों न करें? हम खुद से पूछ सकते हैं, "अगर कोई व्यक्ति जो यीशु पर विश्वास नहीं करता, इतनी अच्छी ज़िंदगी जी सकता है—सेहतमंद और दुख-मुक्त—तो मैं क्यों लगातार इतनी कड़ी मुश्किलों और दर्द को सह रहा हूँ जबकि मेरा शरीर कमजोर होता जा रहा है?"

दूसरी बात, आसाफ बुरे लोगों के घमंड के कारण लगभग लड़खड़ा गया।

भजन संहिता 73:6 का पहला भाग देखें: "इसलिए घमंड उनका हार है..." आसाफ ने न केवल बुरे लोगों की खुशहाली देखी, बल्कि उनका घमंड भी देखा। हम इस घमंड को तीन तरह से देख सकते हैं:

(1) कामों में घमंड।

इसका मतलब है बुरे लोगों की हिंसा। पद 6 में, आसाफ कहता है, "हिंसा उन्हें एक कपड़े की तरह ढके हुए है।" इसका मतलब है कि उनके सभी काम और व्यवहार सिर्फ़ दूसरों पर ज़ुल्म और बेरहमी से शोषण करने वाले होते हैं (पार्क युन-सन)।

(2) दिल का घमंड।

इसका मतलब है बुरे लोगों का अहंकार। पद 7 देखें: "उनकी आँखें मोटापे से बाहर निकल रही हैं; उनके दिलों की कल्पनाएँ बेकाबू हो जाती हैं।" जब कोई व्यक्ति खूब खाता-पीता है तो क्या होता है? ज़ाहिर है, वह अहंकारी हो जाता है। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब है कि उनकी कल्पना की कोई सीमा नहीं है, जिससे वे लालच में आकर धन इकट्ठा करते हैं। नतीजतन, दूसरों की चीज़ें हड़पकर, वे उम्मीद से कहीं ज़्यादा कमाई करते हैं (पार्क युन-सन)।

(3) मुँह का अहंकार।

इसका मतलब है मुँह से किया गया पाप। आज के पाठ की आयत 8 और 9 देखें: "वे मज़ाक उड़ाते हैं और बुरी नीयत से ज़ुल्म भरी बातें करते हैं; वे घमंड में आकर धमकी देते हैं। उनके मुँह स्वर्ग पर अपना दावा करते हैं, और उनकी ज़बानें धरती पर घूमती हैं।" इसका क्या मतलब है? "उनके मुँह स्वर्ग पर अपना दावा करते हैं" वाक्यांश उनके घमंड को दिखाता है, जैसे कि वे स्वर्ग जितने ऊँचे हों। वहीं, "उनकी ज़बानें धरती पर घूमती हैं" का मतलब है कि वे जहाँ भी जाते हैं, बुरी बातें बोलते हैं।

तीसरी बात, आसाफ़ लगभग लड़खड़ा गया था क्योंकि कुछ लोग बुरे लोगों के पीछे चल रहे थे।

भजन संहिता 73:10–11 देखें: "इसलिए उसके लोग उनकी ओर मुड़ते हैं और भरपूर पानी पीते हैं। वे कहते हैं, 'परमेश्वर कैसे जान सकता है? क्या सबसे ऊँचे परमेश्वर को ज्ञान है?'" आसाफ़ का विश्वास तब डगमगा गया जब उसने देखा कि एक ऐसा गुट बन रहा है जो बुरे लोगों के बुरे विचारों और अहंकारी सोच को अपना रहा है और उनकी नकल कर रहा है—बुरे लोगों के पीछे चलने वाली एक बढ़ती हुई भीड़। जो लोग बुरे लोगों की नकल करते थे, वे धर्म से भटक गए; उन्हें परमेश्वर के उस शासन पर शक होने लगा—जिस पर वे पहले विश्वास करते थे—और उन्होंने मान लिया कि परमेश्वर दुनिया के मामलों में कोई दिलचस्पी नहीं रखते। आसाफ़ के लिए यह कितनी मुश्किल चुनौती थी! परमेश्वर के अपने लोगों को मुड़कर बुरे लोगों के पीछे चलते देखकर निश्चित रूप से उसका दिल कुछ हद तक तो हिल ही गया होगा। इस मोड़ पर, बुरे लोगों के बारे में आसाफ़ का निष्कर्ष ठीक यही था: "देखो, ये बुरे लोग हैं; हमेशा आराम से रहते हैं, और उनकी दौलत बढ़ती जाती है" (आयत 12)।

जब आप बुरे लोगों में ऐसी समृद्धि देखते हैं—उन्हें हमेशा आराम से और अमीर होते हुए देखते हैं—तो आप कैसा महसूस करते हैं? क्या आप निराश हो जाते हैं? क्या आपको गुस्सा आता है? क्या आप उन्हें कोसते हैं? जब आसाफ़ ने बुरे लोगों की यह समृद्धि देखी तो उसने कैसी प्रतिक्रिया दी?

(1) उसे लगा कि अपने दिल को शुद्ध रखना बेकार गया।

भजन संहिता 73:13 देखें: "सचमुच मैंने बेकार ही अपने दिल को शुद्ध किया और बेगुनाही में अपने हाथ धोए।" (2) उसने अपनी तकलीफ़ भरी ज़िंदगी पर दुख जताया।

भजन संहिता 73:14 देखिए: "क्योंकि दिन भर मुझे सताया गया और हर सुबह मुझे सज़ा दी गई।"

आखिरकार, जिस बात ने नेक इंसान के दिल में शिकायत पैदा की, वह थी बुरे लोगों की कामयाबी (समृद्धि) और खुद उसकी अपनी तकलीफ़ भरी हालत के बीच का फ़र्क (पार्क युन-सन)। जब आसाफ़ का सामना इस सच्चाई से हुआ—बुरे लोगों की कामयाबी और नेक लोगों की तकलीफ़—तो उसने क्या किया? सबसे

पहले, उसने इसे समझने की कोशिश की। दूसरे शब्दों में, उसने अपनी सीमित जानकारी के साथ "परमेश्वर की योजना की जटिलता" को समझने की कोशिश की (पार्क युन-सन)। हालाँकि, इस कोशिश की वजह से उसे आखिर में बहुत मानसिक परेशानी हुई (आयत 16)।

शुद्ध हृदय वाले (2)

[**भजन संहिता 73]**

इतनी परेशानी के बीच आसाफ ने क्या किया? वह परमेश्वर के पवित्र स्थान में गया (भजन संहिता 73:17)। ऐसा करने पर, उसे तीन बातें समझ आईं।

पहली बात, आसाफ को दुष्टों के अंत का पता चला।

भजन संहिता 73:17 देखिए: "जब तक मैं परमेश्वर के पवित्र स्थान में न गया; तब मुझे उनका अंत समझ आया।" दुष्टों का अंत क्या है? वह है "बर्बादी" (पद 18), "उजड़ जाना" (पद 19), "पूरी तरह विनाश" (पद 19), और "तिरस्कृत होना" (पद 20)। पद 18–20 देखिए: "निश्चय ही तूने उन्हें फिसलन वाली जगहों पर रखा है; तूने उन्हें विनाश की ओर धकेल दिया है। ओह, वे कितनी जल्दी उजड़ जाते हैं, मानो एक पल में! वे डर से पूरी तरह खत्म हो जाते हैं। जैसे जागने पर सपना गायब हो जाता है, वैसे ही हे प्रभु, जब तू जागेगा, तो तू उनकी छवि को तुच्छ समझेगा।" दुष्टों की समृद्धि कुछ समय के लिए ही होती है। जल्द ही, वे "बर्बादी" का शिकार हो जाते हैं। परमेश्वर धैर्यपूर्वक उनके बुरे कामों को सहते हैं मानो वे सो रहे हों, लेकिन जब समय आता है, तो वे उन्हें ऐसे दंड देते हैं मानो वे "जाग गए" हों।

दूसरी बात, आसाफ को धर्मी लोगों के अंत का पता चला।

धर्मी लोगों का अंत क्या है? भजन संहिता 73:24 देखिए: "तू अपनी सलाह से मेरी अगुवाई करेगा, और बाद में मुझे महिमा में अपनाएगा।" हम धर्मियों का अंतिम लक्ष्य यह है कि प्रभु हमें महिमा में अपनाएँ। इसलिए,

प्रेरित पौलुस हमें आशा का यह संदेश देते हैं: "क्योंकि मैं मानता हूँ कि इस समय के दुख उस महिमा की तुलना में कुछ भी नहीं हैं जो हममें प्रकट होगी" (रोमियों 8:18)।

तीसरी बात, आसाफ को अपनी मूर्खता और अज्ञानता का एहसास हुआ।

भजन संहिता 73:22 देखिए: "मेरा मन दुखी था, और मैं मन ही मन परेशान था। मैं कितना मूर्ख और अज्ञानी था; मैं तेरे सामने एक पशु के समान था।" आसाफ, जो पहले बुरे लोगों की कामयाबी से जलता था—और जिसके मन में उथल-पुथल और बहुत ज़्यादा तकलीफ़ देने वाली शिकायतें थीं (पद 21)—उसे परमेश्वर के पवित्र स्थान में जाने के बाद ही अपनी गलती का एहसास हुआ (पद 17)। इस एहसास के साथ, उसने पछतावा किया और खुद को "पशु" जैसा मूर्ख कहने के लिए खुद को कोसा (पद 22)।

पवित्र स्थान में जाकर बुरे लोगों के अंजाम और परमेश्वर के सामने अपनी पहचान को समझने के बाद, आसाफ ने पद 23-28 में तीन सुंदर बातें मानीं।

पहली बात यह थी: "तूने मेरा दाहिना हाथ थामे रखा है।"

भजन संहिता 73:23 देखें: "मैं लगातार तेरे साथ हूँ; तूने मेरा दाहिना हाथ थामे रखा है।" आसाफ, जो बुरे लोगों और उनके पीछे चलने वालों की कामयाबी और घमंड को देखकर लगभग लड़खड़ा गया था, गिरने से बच गया क्योंकि प्रभु ने उसका दाहिना हाथ थामे रखा था; इसके बजाय, प्रभु की सलाह ने उसे राह दिखाई (पद 24)। यह हिस्सा बताता है कि पवित्र स्थान में, प्रभु ने आसाफ को न केवल बुरे लोगों के आखिरी अंजाम को समझने में मदद की, बल्कि नेक लोगों के भविष्य—यानी आने वाले जीवन की महिमा—को भी समझने में मदद की।

दूसरी बात यह थी, "मेरे लिए परमेश्वर के पास जाना अच्छा है।"

भजन संहिता 73:28 देखें: "लेकिन मेरे लिए परमेश्वर के पास जाना अच्छा है; मैंने प्रभु परमेश्वर पर भरोसा रखा है, ताकि मैं तेरे सभी कामों का बखान कर सकूँ।" आसाफ ने परमेश्वर पर—जो उसके दिल की चट्टान और उसका हमेशा का हिस्सा थे—अपना अटूट भरोसा रखने का फैसला किया, चाहे उसके शरीर और मन को कितनी भी मुश्किलों का सामना क्यों न करना पड़े।

तीसरी बात यह थी, "पृथ्वी पर तेरे अलावा मेरी कोई और चाहत नहीं है।"

भजन संहिता 73:25 देखें: "स्वर्ग में तेरे अलावा मेरा कौन है? और पृथ्वी पर तेरे अलावा मेरी कोई और चाहत नहीं है।" एक सच्चे विश्वास करने वाला—जिसने सच में परमेश्वर का अनुभव किया है—पृथ्वी पर बुरे लोगों की कामयाबी से जलन नहीं रखता, न ही घमंड में आकर पाप करता है, न धन का लालच करता है, और न ही दुख-दर्द से बचते हुए सिर्फ़ अपना पेट भरने की कोशिश करता है। इसके बजाय, ऐसा विश्वास करने वाला बुरे और नेक, दोनों तरह के लोगों के आखिरी अंजाम को समझता है; इस दुनिया से कुछ भी न चाहते हुए, वह सिर्फ़ प्रभु के लिए तड़पते हुए जीते हैं। भजन नंबर 102 याद आता है:

प्रभु यीशु से ज़्यादा कीमती कुछ भी नहीं है; इसे इस दुनिया की दौलत (सम्मान; खुशी) के बदले नहीं पाया जा सकता...

1. मैं उस अद्भुत प्रेम को नहीं भूल सकता—वह मेरी जगह मरे, जबकि मैं आध्यात्मिक मृत्यु की ओर बढ़ रहा था।
2. जिन सांसारिक चीज़ों का मैंने कभी आनंद लिया था, वे प्रभु के प्रति मेरे प्रेम को छीन नहीं सकतीं।
3. यहाँ तक कि जब प्रलोभन और उत्पीड़न बढ़ते हैं, तब भी प्रभु की सेवा करने के लिए मेरा हृदय अडिग रहता है।

(कोरस) मैंने सभी सांसारिक सुखों और सांसारिक गर्व को त्याग दिया है; प्रभु यीशु से ज़्यादा कीमती कुछ भी नहीं है—यीशु के अलावा कोई नहीं है।

ठीक जैसे शैतान ने आसाफ—एक शुद्ध हृदय वाले व्यक्ति—को लगभग डगमगा दिया था, वैसे ही वह दुष्टों की समृद्धि और अहंकार, और उनका अनुसरण करने वाले लोगों के माध्यम से हमें डगमगाने की कोशिश करता है। ऐसे क्षणों में, हमें—आसाफ की तरह—परमेश्वर के पवित्र स्थान में प्रवेश करना चाहिए। वहाँ, हमें दुष्टों और धर्मी लोगों के अंतिम परिणाम को समझना चाहिए। हमें अपनी मूर्खता और अज्ञानता को भी पहचानना चाहिए, ठीक जैसे आसाफ ने किया था। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम भी उसकी तरह सुंदर स्वीकारोक्ति कर पाएँगे: "आपने मेरा दाहिना हाथ थामे रखा है," "परमेश्वर के निकट जाना मेरे लिए अच्छा है," और "पृथ्वी पर आपके अलावा मेरी कोई और इच्छा नहीं है।"

हे प्रभु, याद रख!

[भजन संहिता 74]

यरूशलेम के रहने वाले एरन काट्ज़, जिनके नाम याददाश्त के लिए गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड (1998) है—उन्होंने 500 अंकों की एक संख्या को सिर्फ़ एक बार सुनकर याद कर लिया था—दिमाग के विकास के विशेषज्ञ हैं। उन्होंने मोटोरोला, आईबीएम, माइक्रोसॉफ्ट और कोका-कोला जैसी मशहूर मल्टीनेशनल कंपनियों और संगठनों के लिए लगभग 1,000 वर्कशॉप आयोजित करके दुनिया भर में अपनी पहचान बनाई है। अपनी किताब *जेरोम बिकम्स अ जीनियस* (गोल्डन बॉफ़ द्वारा प्रकाशित) में, वे यहूदी लोगों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आ रहे दिमाग के विकास के तरीकों पर चर्चा करते हैं और दो मुख्य विशेषताओं पर ज़ोर देते हैं: "कल्पना" और "बेचैनी" (या असुविधा)। कल्पना की अवधारणा को समझना थोड़ा आसान है; यह बात समझ में आती है कि कल्पना का लगातार इस्तेमाल करने से दिमाग जंग नहीं खाता, जिससे याददाश्त कमज़ोर नहीं होती और चीज़ें बेहतर ढंग से याद रहती हैं। हालाँकि, "बेचैनी" या "असुविधा" का विचार उतना सहज नहीं है। काट्ज़ का तर्क है कि असहज मुद्रा में पढ़ाई या काम करने से असल में बेहतर नतीजे मिल सकते हैं। उनका कहना है कि जब हम आराम की स्थिति के आदी हो जाते हैं, तो हम अपने दिमाग का सक्रिय रूप से इस्तेमाल करना बंद कर देते हैं। काट्ज़ के अनुसार, यहूदी लोगों द्वारा पसंद की जाने वाली एक तकनीक है खड़े होकर या शरीर को आगे-पीछे झुलाते हुए पढ़ाई करना। वे बताते हैं, "शरीर को झुलाने से दिमाग को ऑक्सीजन मिलती है और शारीरिक हलचल उसे सक्रिय करती है—ठीक वैसे ही जैसे टहलते समय अक्सर हमें बेहतर विचार आते हैं।" तालमुद में एक कहावत है: "अगर आप सीखने की तकलीफ नहीं सह सकते, तो आपको अज्ञानता की तकलीफ सहनी पड़ेगी।" आखिरकार, जबकि लोग अक्सर कहते हैं कि यहूदी लोग बुद्धिमान होते हैं—जैसा कि काट्ज़ ने भी कहा—मेरा मानना है कि ऐसा जेनेटिक्स या वंश के कारण नहीं है। बल्कि, यह होलोकॉस्ट जैसे दुखद इतिहास से उबरने के लिए उनके द्वारा विकसित किए गए

दिमागी विकास के तरीकों का नतीजा हो सकता है। इस अर्थ में, हम कह सकते हैं कि बेचैनी या तकलीफ असल में हमारी याददाश्त में मदद करती है।

भजन संहिता 74 में, हम भजनकार और इज़राइल के लोगों को अपने दुश्मनों—प्रभु के विरोधियों—के हाथों तकलीफ झेलते हुए देखते हैं। उत्पीड़न के कारण वे गरीब और बेसहारा हो गए थे (पद 21)। इस बीच, हम भजनकार को ईश्वर से गुहार लगाते और विलाप करते हुए देखते हैं, "तूने हमें हमेशा के लिए क्यों त्याग दिया है?" (पद 1), साथ ही वे विनती करते हैं, "हे प्रभु, याद रख!" (पद 2, 18, 20)। आज के वचन और "हे प्रभु, याद रख!" विषय पर ध्यान देते हुए, मैं भजनकार द्वारा परमेश्वर से की गई प्रार्थना की तीन खास बातों का सारांश और उन पर विचार करना चाहता हूँ। मुझे उम्मीद है कि ऐसा करने से, परमेश्वर का याद रखने का काम दुख के समय में हमारे लिए भी याद रखने का ज़रिया बन जाएगा।

पहला, भजनकार की प्रार्थना थी: "अपनी मंडली को याद रख!"

भजन संहिता 74:2 को देखें: "अपनी मंडली को याद रख, जिसे तूने बहुत पहले खरीदा था, जिसे तूने अपनी विरासत का गोत्र बनने के लिए छुड़ाया था—और सिय्योन पर्वत को याद रख, जहाँ तू बसा है।" भजनकार प्रभु—इस्राएल के लोगों और उसकी भेड़ों के चरवाहे—से पुकारकर पूछता है कि इतने लंबे दुख के बावजूद परमेश्वर का बचाने वाला काम क्यों नहीं दिख रहा: "हे परमेश्वर, तूने हमें हमेशा के लिए क्यों त्याग दिया है? तेरी चरागाह की भेड़ों पर तेरा क्रोध क्यों धधक रहा है?" (पद 1)। इस स्थिति में, उसने परमेश्वर से इस्राएल के दुखी लोगों को याद करने की विनती की, जो प्रभु की मंडली हैं (पद 2)। क्या परमेश्वर सचमुच अपने लोगों, इस्राएल को भूल गए थे? क्या उन्होंने उन्हें बस छोड़ दिया था जबकि वे इतने लंबे समय से दुख सह रहे थे? यशायाह 49:15 को देखें: "क्या कोई स्त्री अपने दूध पीते बच्चे को भूल सकती है और अपनी कोख से जन्मे बेटे पर दया नहीं कर सकती? भले ही वह भूल जाए, पर मैं तुम्हें नहीं भूलूँगा।" परमेश्वर निश्चित रूप से इस्राएल के लोगों को नहीं भूले थे। हम यह इसलिए जानते हैं क्योंकि भविष्यद्वक्ता यशायाह के ज़रिए हमारे परमेश्वर ने वादा किया था, "मैं तुम्हें नहीं भूलूँगा" (पद 15)।

तो फिर परमेश्वर अपने लोगों को भूलने के बजाय याद क्यों रखते हैं? आज का वचन—भजन संहिता 74:1–2—इसके दो कारण बताता है:

(1) क्योंकि परमेश्वर हमारे चरवाहे हैं और हम उनकी भेड़ें हैं।

भजन संहिता 74:1 को देखें: "...तेरी चरागाह की भेड़ों के विरुद्ध..." एक चरवाहा कभी अपनी भेड़ों को नहीं भूलता। हमारे प्रभु, जो हमारे चरवाहे हैं, हमें हमेशा याद रखते हैं। यूहन्ना 10:27 को देखें: "मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे चलती हैं।"

(2) ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने हमें छुड़ाया है और हमें अपनी संपत्ति बनाया है। आज के वचन, भजन संहिता 74:2 को देखिए: "अपनी उस मण्डली को याद कर जिसे तूने बहुत पहले मोल लिया था, जिसे तूने अपनी विरासत का गोत्र बनने के लिए छुड़ाया था...।" परमेश्वर, जिन्होंने हमें यीशु मसीह के कीमती लहू से मोल लेकर छुड़ाया और अपनी संतान बनाया, वे हमें कैसे भूल सकते हैं? प्रभु आपको और मुझे याद रखते हैं। भले ही हम यह सवाल करें कि क्या वे हमें भूल गए हैं—यह सोचकर कि उनकी मुक्ति में देर हो रही है जबकि हम लंबे समय तक दर्द, मुश्किलों और तकलीफों को सहते हैं—फिर भी हमारे परमेश्वर हमें हमेशा याद रखते हैं। भजन संहिता 139:17–18 को देखिए: "हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे लिए कितने कीमती हैं! उनकी गिनती कितनी बड़ी है! यदि मैं उन्हें गिनूँ, तो वे रेत के कणों से भी ज़्यादा होंगे; जब मैं जागता हूँ, तो मैं अब भी तेरे साथ होता हूँ।" जो परमेश्वर हमसे इतना प्यार करते हैं और लगातार अनगिनत बार हमारे बारे में सोचते हैं, वे हमें कैसे भूल सकते हैं या हमें अपने मन से कैसे निकाल सकते हैं?

दूसरी बात, भजनकार की प्रार्थना यह थी, "प्रभु के दुश्मनों को याद रख!"

भजन संहिता 74:18 को देखिए: "हे प्रभु, इसे याद रख कि दुश्मन ने कैसे बुरा-भला कहा है, और कैसे मूर्ख लोगों ने तेरे नाम का अपमान किया है।" भजनकार ने परमेश्वर से न केवल अपने लोगों, इस्राएल को याद रखने की विनती की, बल्कि उन दुश्मनों को भी याद रखने की प्रार्थना की जिन्होंने इस्राएल पर अत्याचार

किया और प्रभु की निंदा की (वचन 18, 22)। दूसरे शब्दों में, उन्होंने परमेश्वर से इस्राएल के दुश्मनों—जो प्रभु के भी दुश्मन थे—को न भूलने और उनका न्याय करने के लिए कहा। भजन संहिता पर मनन करते समय हम यह बार-बार देखते हैं: भजनकार ने प्रार्थना की कि परमेश्वर अपने प्रेम और दया से इस्राएल को बचाएँ, और अपनी पवित्रता और न्याय से इस्राएल के दुश्मनों का न्याय करें। बाइबल बताती है कि आज के वचन में बताए गए इस्राएल और प्रभु के दुश्मनों ने "पवित्र स्थान में भारी तबाही मचाई" (वचन 3)। इन दुश्मनों ने—जो प्रभु के विरोधी थे—उनके पवित्र स्थान में बहुत शोर-शराबा और हंगामा किया (वचन 4; पार्क युन-सन) और मंदिर को बर्बाद कर दिया (वचन 3)। इसके अलावा, उन्होंने बेरहमी से परमेश्वर के मंदिर को नष्ट कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे लकड़हारे कुल्हाड़ियों से जंगल को काटते हैं (वचन 5–6; पार्क युन-सन)। उन्होंने परमेश्वर के पवित्र स्थान को जला दिया और मंदिर को अपवित्र कर दिया (पद 7)। पद 8 देखिए: "उन्होंने अपने मन में कहा, 'हम उन्हें पूरी तरह नष्ट कर देंगे,' और उन्होंने देश में परमेश्वर की सभी सभा-स्थलों को जला दिया।" प्रभु के दुश्मनों ने परमेश्वर के लोगों को पूरी तरह खत्म करने की कोशिश की। नतीजतन, उन्होंने उस पूरे देश में पूजा की हर जगह को जला दिया जहाँ इस्राएली रहते थे। ये दुश्मन कितने बेरहम थे—हमारे भी और प्रभु के भी! वे प्रभु का विरोध करते हैं, और वे इस्राएल के लोगों—प्रभु के लोगों—और हमारा भी विरोध करते हैं। तो, ऐसे समय में हमें क्या करना चाहिए?

(1) जैसे प्रेरित पौलुस एथेंस शहर में बहुत सी मूर्तियाँ देखकर गुस्से से भर गया था, वैसे ही आज अपने चर्चों को देखकर हमें भी गुस्सा और दुख महसूस होना चाहिए।

परमेश्वर का मंदिर किस हद तक अपवित्र हो रहा है? पाप कितना फैल गया है? क्या आप परमेश्वर के पवित्र स्थान को बर्बाद होते हुए देखते हैं? हमारे अंदर एक पवित्र गुस्सा जागना चाहिए।

(2) हमारे पास रोने वाले का दिल होना चाहिए (पार्क युन-सन)।

आज चर्च को देखकर हमें रोना चाहिए। हमें पछतावे के आँसू बहाने चाहिए, और परमेश्वर की पवित्र आत्मा के मंदिर के अपवित्र और बर्बाद होने की सच्चाई का सामना करना चाहिए—भले ही थोड़ा ही सही—और इसे परमेश्वर की पवित्र नज़रों से देखना चाहिए।

(3) चर्च की बर्बादी को देखते हुए हमें आध्यात्मिक अकेलेपन का एहसास होना चाहिए (पार्क युन-सन)।

आज के हिस्से में भजनकार ने यरूशलेम और मंदिर के खंडहरों को देखा और गहरे अकेलेपन का एहसास किया, जैसे कि परमेश्वर बहुत दूर चले गए हों (पद 3; पार्क युन-सन)। इसलिए, उसने परमेश्वर से गिड़गिड़ाकर विनती की: "हमें अपने संकेत दिखाई नहीं देते; अब कोई नबी नहीं है, और न ही हमारे बीच कोई ऐसा है जो जानता हो कि यह कब तक चलेगा। हे परमेश्वर, दुश्मन कब तक मज़ाक उड़ाता रहेगा? क्या दुश्मन हमेशा आपके नाम का अपमान करता रहेगा? आप अपना हाथ, अपना दाहिना हाथ क्यों पीछे खींच लेते हैं? इसे अपनी छाती से बाहर निकालें और उन्हें नष्ट कर दें" (पद 9–11)। उसने पूरे दिल से परमेश्वर से न्याय की प्रार्थना की और पूछा कि प्रभु कब तक चुपचाप देखते रहेंगे जब उनके विरोधी—जो परमेश्वर के पवित्र स्थान को उजाड़ रहे थे और उनके नाम को बदनाम कर रहे थे—बिना किसी चमत्कार या नबी के इस आध्यात्मिक अंधकार के दौर में प्रभु का अपमान करते रहेंगे और उनके मंदिर को नष्ट करते रहेंगे; उसने पूछा कि प्रभु कब अपने शक्तिशाली दाहिने हाथ से उनका न्याय करेंगे। उसने परमेश्वर से यह भी विनती की: "अपने विरोधियों के शोर-शराबे और जो लोग आपके विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं, उनके हंगामे को न भूलें, जो लगातार ऊपर उठ रहा है" (पद 23)। हमें यह नहीं भूलना चाहिए: हमारा पवित्र और धर्मी परमेश्वर ही वह है जो निश्चित रूप से हमारे दुश्मनों—और प्रभु के दुश्मनों—का न्याय करेगा। भले ही हमें उनका न्याय होने में देरी होती दिखे, प्रभु एक पवित्र और धर्मी परमेश्वर हैं जो निश्चित रूप से अपने समय पर हमारे दुश्मनों और अपने विरोधियों का न्याय करेंगे। यशायाह 13:11 पर विचार करें: "मैं दुनिया को उसकी बुराई के लिए और दुष्टों को उनके पापों के लिए सज़ा दूँगा; मैं घमंडी लोगों के अहंकार को खत्म कर दूँगा और बेरहम लोगों के घमंड को नीचा दिखाऊँगा।"

अंत में, भजनकार की तीसरी प्रार्थना यह थी: "हे प्रभु, अपनी वाचा को याद रखें!"

भजन संहिता 74:20 को देखिए: "अपनी वाचा पर ध्यान दे, क्योंकि देश के अंधेरे कोने हिंसा के अड्डों से भरे हुए हैं।" इस हिस्से की आयतों 12-17 में, हम देखते हैं कि भजनकार परमेश्वर की वफ़ादारी पर भरोसा करते हुए और अतीत में इस्राएल के लोगों पर परमेश्वर की कृपा को याद करते हुए विनती कर रहा है। दूसरे शब्दों में, वर्तमान दुख और अंधेरे के बीच, भजनकार ने अतीत की परमेश्वर की वफ़ादार कृपा को याद करके परमेश्वर से उद्धार और मदद मांगी। उसने उस वाचा को मजबूती से थामे रखा जो परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों के साथ बांधी थी। जिस तरह वफ़ादार परमेश्वर ने वाचा को नहीं भुलाया और अतीत में अंधेरे के समय में इस्राएलियों को कृपापूर्वक बचाया, उसी तरह भजनकार ने परमेश्वर से विनती की कि वह अपनी वाचा को याद रखे और इस्राएल के लोगों को—जिन्हें उसने प्यार किया और चुना था—वर्तमान के अंधेरे से बचाए। इस प्रकार, उसने प्रार्थना की कि इस्राएल के गरीब और ज़रूरतमंद लोग प्रभु के नाम की स्तुति कर सकें (आयत 21)।

हमारा परमेश्वर एक वफ़ादार परमेश्वर है जो हमारे साथ बांधी गई वाचा को दृढ़ता से निभाता है। भजन संहिता 89:28 को देखिए: "मैं उसके लिए अपनी करुणा हमेशा बनाए रखूंगा, और उसके साथ मेरी वाचा अटल रहेगी।" परमेश्वर हमसे अटूट प्रेम करता है और हमारे साथ बांधी गई वाचा को वफ़ादारी से निभाता है। जब जीवन की कठिनाइयां और अप्रत्याशित मुसीबतें हमें ऐसा महसूस कराती हैं मानो हम अंधेरे में घिरे हुए हैं, तब भी हमें परमेश्वर के वफ़ादार वादों को मजबूती से थामे रखना चाहिए। चाहे स्थिति कितनी भी निराशाजनक क्यों न लगे या भविष्य कितना भी धुंधला क्यों न दिखे, हमें परमेश्वर की वाचा को याद रखना चाहिए। व्यक्तिगत रूप से, मैं गिनती 23:19 के शब्दों को थामे रखता हूं और उनमें ताकत और उम्मीद पाता हूं: "परमेश्वर मनुष्य नहीं है कि झूठ बोले, न ही मनुष्य का पुत्र है कि अपना मन बदले। क्या वह कहता है और फिर करता नहीं? क्या वह वादा करता है और उसे पूरा नहीं करता?" मैं यशायाह 55:11 को भी मजबूती से थामे रखता हूं: "वैसे ही मेरा वचन है जो मेरे मुंह से निकलता है: वह मेरे पास खाली नहीं लौटेगा, बल्कि वह करेगा जो मैं चाहता हूं और उस उद्देश्य को पूरा करेगा जिसके लिए मैंने उसे भेजा है।"

परमेश्वर हमें कभी नहीं भूलता—जिन्हें उसने प्यार किया है, चुना है और अपना माना है। वह हमारे दुश्मनों का भी ध्यान रखता है; वह उन्हें भूलते नहीं हैं। इसलिए, वही परमेश्वर हैं जो निश्चित रूप से अपने समय पर

उनका न्याय करेंगे। साथ ही, वह ऐसे परमेश्वर हैं जो हमारे साथ किए गए अपने वादे (नियम) को याद रखते हैं। हमें इन परमेश्वर को अपने विचारों में रखना चाहिए और यीशु मसीह के ज़रिए हमारे साथ किए गए वादे को कभी नहीं भूलना चाहिए। हमें उनके दिए गए वादों पर मज़बूती से बने रहना चाहिए और विश्वास के साथ उन्हें पुकारना चाहिए। ऐसा करने पर, जब प्रभु दुष्टों का न्याय करके हमें छुड़ाएंगे, तो हम उद्धार की कृपा का आनंद उठा सकेंगे।

न्यायाधीश के रूप में परमेश्वर

[भजन संहिता 75]

कल, मंगलवार की सुबह, CNN पर ऑनलाइन खबरें देखते हुए मुझे एक कहानी मिली जिसमें एक फायरफाइटर ने दक्षिणी कैलिफ़ोर्निया में हाल ही में लगी आग के बारे में कहा, "ऐसा लगा जैसे दुनिया का अंत हो रहा हो।" आग कितनी भयानक रही होगी कि उन्हें ऐसा कहना पड़ा? आज तक, लगभग 16 जगहों पर आग लगी हुई है, और करीब दस लाख लोगों को अपने घर खाली करने का आदेश दिया गया है। आज सुबह की खबर में यह भी बताया गया कि अकेले सैन डिएगो में आग से संपत्ति का नुकसान लगभग 1 बिलियन डॉलर तक पहुँच गया है। कल, हमारे चर्च में हमारी प्रेस्बिटरी के पादरियों के लिए एक बैठक हुई, और मैं उनमें से कई से मिला; सांता क्लैरिटा में रहने वाले एक पादरी को अपना घर खाली करना पड़ा और वे अभी अपने ससुराल में रह रहे हैं। एक और पादरी ने अपनी कलीसिया के एक सदस्य की कहानी सुनाई, जिन्हें घर खाली करना पड़ा था; जब वे बाद में अपने घर को देखने लौटे, तो उन्होंने पाया कि फायरफाइटर आग को घर के पिछले हिस्से में—या लगभग दरवाज़े पर ही—बुझाने में कामयाब रहे थे, जिससे घर जलने से बच गया। मेरी पत्नी की छोटी कज़िन भी सैन डिएगो से निकल आई थीं और अभी मेरी साली के घर पर रह रही हैं। कल NBC न्यूज़ देखते हुए, मैंने देखा कि आग कितनी ज़ोरदार थी; एक घर के सामने खड़ी कार का स्टील का हिस्सा पिघल गया था, और आग के गुज़रने के बाद, पिघली हुई धातु ठंडी होकर चाकू जैसी चपटी शक्ल में बदल गई थी। इन दृश्यों को देखकर, मैं भी दुनिया के अंत के बारे में सोचने लगा, ठीक वैसे ही जैसे उस फायरफाइटर ने सोचा था। मैं यह सोचने लगा कि "दुनिया का अंत"—जैसा कि उन्होंने बताया था—असल में कैसा होगा। लूका 17:29–30 में कहा गया है, "जिस दिन लूत सदोम से निकला, उस दिन स्वर्ग से आग और गंधक बरसी और उन सभी का विनाश हो गया। ठीक ऐसा ही उस दिन होगा जब मनुष्य

का पुत्र प्रकट होगा।" बाइबल स्पष्ट रूप से दुनिया के विनाश और आग द्वारा न्याय की भविष्यवाणी करती है।

मैंने इस न्याय पर विचार किया है, और प्रेरितों के काम 17:31 पर ध्यान केंद्रित किया है—खासकर इस बात पर कि परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया और उन्हें पूरी दुनिया का न्यायाधीश नियुक्त किया। परमेश्वर ने यीशु के माध्यम से "एक दिन तय किया है जब वह न्याय के साथ दुनिया का न्याय करेगा।" यह सच्चाई हमें दो सबक सिखाती है: पहला, "पश्चाताप करो!" और दूसरा, "यीशु पर विश्वास करो और उद्धार पाओ!" भजनकार आज के वचन, भजन संहिता 75:7 में परमेश्वर को न्यायकर्ता के रूप में भी बताता है: "परमेश्वर ही न्याय करता है: वह एक को नीचे गिराता है, दूसरे को ऊँचा उठाता है।" हमारा धर्मी परमेश्वर ही वह है जो "निश्चित समय" पर निष्पक्ष न्याय करता है (वचन 2)। जब हम आज इस धर्मी न्यायकर्ता—परमेश्वर—पर कुछ तरीकों से मनन करते हैं, तो मुझे उम्मीद है कि हमें वे शिक्षाएँ मिलेंगी जो वह हमें देना चाहता है।

पहला, न्यायकर्ता के रूप में परमेश्वर ही वह है जो घमंडी को नीचा दिखाता है।

न्यायकर्ता परमेश्वर किसे नीचा दिखाता है? बाइबल उन्हें डींग मारने वाले और दुष्ट बताती है। भजन संहिता 75:4 को देखें: "मैंने डींग मारने वालों से कहा, 'डींग मत मारो,' और दुष्टों से कहा, 'अपने सींग ऊँचे मत करो।'" इन अहंकारी लोगों और बुरे काम करने वालों को घमंडी भी कहा जा सकता है। इसलिए, भजनकार उनसे कहता है: "अपने सींग ऊँचे मत करो; अकड़कर बातें मत करो" (वचन 5)। इन घमंडी लोगों के साथ समस्या यह है कि वे खुद को ऊँचा समझते हैं (वचन 6)। प्रेरित पौलुस ने बताया कि अंतिम दिनों के कठिन समय में, लोग "डींग मारने वाले" होंगे (2 तीमुथियुस 3:2)। इन अंतिम दिनों में, लोग परमेश्वर के बजाय अपनी डींग मारते हैं, और परमेश्वर की महिमा प्रकट करने के बजाय खुद को ऊँचा समझते हैं (यिर्मयाह 9:23–24)। उचित सीमा से अधिक सोचने (रोमियों 12:3) के कारण, वे अपने ही मुँह से अपनी प्रशंसा करते हैं (नीतिवचन 27:2) और खुद को ऊँचा उठाते हैं।

तो फिर, परमेश्वर इस घमंड को कैसे देखता है? नीतिवचन 8:13 पर विचार करें: "यहोवा का भय मानना बुराई से घृणा करना है; मैं घमंड और अहंकार, बुरे व्यवहार और टेढ़ी-मेढ़ी बातों से घृणा करता हूँ।" बाइबल

बताती है कि परमेश्वर घमंड से घृणा करता है। नतीजतन, वह उन पापियों पर अपना क्रोध बरसाता है जो अहंकारी, घमंडी और दुष्ट हैं। भजनकार इस सच्चाई का वर्णन करता है: "यहोवा के हाथ में मसालों से मिश्रित झागदार दाखमधु का एक प्याला है; वह उसे उंडेलता है, और पृथ्वी के सभी दुष्ट उसे तलछट तक पी जाते हैं" (भजन संहिता 75:8)। परमेश्वर घमंडी और दुष्ट लोगों पर अपने क्रोध का प्याला उंडेलते हैं और "दुष्टों के सींग" को—यानी उनकी ताकत को (पद 10)—काट देते हैं, जिससे आखिर में वे "पिघलकर खत्म" हो जाते हैं (पद 3)। दूसरी बात, परमेश्वर ही न्याय करने वाले हैं और वही ऊँचा उठाते हैं।

न्याय करने वाले परमेश्वर किसे ऊँचा उठाते हैं? वे उन्हें ऊँचा उठाते हैं जो खुद को दीन बनाते हैं—यानी जो प्रभु के सामने नम्र रहते हैं। इसीलिए प्रेरित याकूब ने कहा: "प्रभु के सामने खुद को दीन बनाओ, और वह तुम्हें ऊँचा उठाएगा" (याकूब 4:10)। याकूब 4:6 देखिए: "लेकिन वह और ज़्यादा अनुग्रह देता है। इसलिए वह कहता है: 'परमेश्वर घमंडियों का विरोध करता है, लेकिन नम्र लोगों को अनुग्रह देता है।'" तो फिर, जो लोग प्रभु के सामने खुद को दीन बनाते हैं, उनकी क्या पहचान होती है?

(1) वे प्रभु का धन्यवाद करते हैं।

भजन संहिता 75:1 का पहला हिस्सा देखिए: "हे परमेश्वर, हम तेरा धन्यवाद करते हैं, हम धन्यवाद करते हैं! क्योंकि तेरे अद्भुत काम बताते हैं कि तेरा नाम पास है..." भजनकार और इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर का धन्यवाद इसलिए किया क्योंकि "तेरा नाम पास है" (पद 1)। दूसरे शब्दों में, उन्होंने धन्यवाद इसलिए किया क्योंकि उन्होंने प्रभु की उपस्थिति को महसूस किया। उनके लिए, परमेश्वर की उपस्थिति का मतलब था उद्धार, इसलिए उन्होंने उनका धन्यवाद किया। परमेश्वर—जो धर्मी न्यायकर्ता हैं—की उपस्थिति का मतलब आखिर में दुष्टों का विनाश और धर्मियों का उद्धार होता है। इसलिए, भजनकार ने इस्राएल के लोगों के साथ मिलकर नम्रता से परमेश्वर का धन्यवाद किया।

(2) नम्र लोग प्रभु की स्तुति करते हैं।

भजन संहिता 75:9 देखिए: "लेकिन मैं हमेशा घोषणा करूँगा, मैं याकूब के परमेश्वर की स्तुति में गीत गाऊँगा।" इस भरोसे के साथ कि परमेश्वर—जो धर्मी न्यायकर्ता हैं—घमंडी दुष्टों को नष्ट करने और नम्र धर्मियों को बचाने के लिए अपनी उपस्थिति प्रकट करेंगे, भजनकार ने विश्वास के साथ परमेश्वर की स्तुति करने का संकल्प लिया और खुद को समर्पित किया।

(3) नम्र लोग प्रभु के अद्‌भुत कामों का प्रचार करते हैं।

आज के पाठ में भजन संहिता 75:1 का बाद वाला हिस्सा देखिए: "...लोग तेरे अद्‌भुत कामों का प्रचार करते हैं।" भजनकार कहता है कि परमेश्वर के लोग परमेश्वर के अद्‌भुत कामों का बखान करेंगे—जो अपनी उपस्थिति से अहंकारी लोगों पर न्याय का क्रोध बरसाता है और अपने दीन लोगों को बचाता है।

परमेश्वर उन दीन लोगों को कैसे ऊँचा उठाता है जो प्रभु का धन्यवाद और स्तुति करते हैं और उसके अद्‌भुत कामों का बखान करते हैं? प्रभु उन्हें स्थापित करता है। भजन संहिता 75:3 का पहला भाग देखिए: "मैंने पृथ्वी के खंभों को स्थापित किया है..." प्रभु दीन लोगों को स्थापित करता है। जहाँ प्रभु अहंकारी लोगों को नीचे गिराता है, वहीं वह दीन लोगों को स्थापित करता है—और उन्हें मज़बूती से स्थापित करता है। नतीजतन, जब न्यायकर्ता के सामने न्याय का दिन आता है, तो परमेश्वर यह सुनिश्चित करता है कि उसके दीन लोग अडिग रहें। हमारे परमेश्वर, जो न्यायकर्ता है, ने यीशु को बहुत ऊँचा उठाया—जिसने "खुद को खाली कर दिया, एक सेवक का रूप धारण किया, मनुष्यों के समान पैदा हुआ," और जिसने क्रूस पर "मृत्यु तक आज्ञाकारी बनकर खुद को दीन किया": "इसलिए परमेश्वर ने उसे बहुत ऊँचा उठाया और उसे वह नाम दिया जो हर नाम से ऊपर है, ताकि यीशु के नाम पर हर घुटना झुके, स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे, और हर जीभ स्वीकार करे कि यीशु मसीह प्रभु है, परमेश्वर पिता की महिमा के लिए" (फिलिप्पियों 2:7-8)। इसलिए, यीशु के शिष्यों के रूप में, हमें भी खुद को खाली करके और दीन बनाकर उसका अनुकरण करना चाहिए। हमें भी दीनतापूर्वक परमेश्वर की "आज्ञा माननी" चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने किया था। सही समय पर, परमेश्वर हमें ऊँचा उठाएगा, ठीक वैसे ही जैसे उसने यीशु को ऊँचा उठाया था।

परमेश्वर का खुद को हमारे सामने प्रकट करना

[भजन संहिता 76]

प्रकटीकरण क्या है? प्रकटीकरण का अर्थ है "किसी छिपी हुई चीज़ को सामने लाना" (जैसे पर्दे को हटाकर उसके पीछे की चीज़ दिखाना)। यह शब्द आमतौर पर "दैवीय प्रकटीकरण" के संदर्भ में इस्तेमाल किया जाता है, जिसमें खास तौर पर परमेश्वर के स्वभाव—जो सत्य है—पर ज़ोर दिया जाता है कि वे खुद को प्रकट करते हैं ("स्व-प्रकटीकरण")। परमेश्वर जान-बूझकर खुद को हमारे सामने प्रकट करते हैं। इसीलिए ऑगस्टीन ने कहा था, "मैं समझने के लिए विश्वास करता हूँ" (*Credo ut intelligam*)। प्रकटीकरण दो तरह के होते हैं: "सामान्य प्रकटीकरण" और "विशेष प्रकटीकरण"। सामान्य प्रकटीकरण को "प्राकृतिक प्रकटीकरण" भी कहा जाता है क्योंकि यह प्राकृतिक दुनिया के ज़रिए पूरी मानवता तक पहुँचता है। परमेश्वर द्वारा बनाई गई प्राकृतिक दुनिया उनके अस्तित्व और सिद्धांतों को दर्शाती है। विशेष प्रकटीकरण को "अलौकिक प्रकटीकरण" भी कहा जाता है क्योंकि यह अलौकिक तरीकों से खास लोगों तक पहुँचाया जाता है। विशेष प्रकटीकरण, सामान्य प्रकटीकरण की तुलना में ज़्यादा सीधा और स्पष्ट होता है; यह सामान्य प्रकटीकरण को पूरा करता है, ज़ोर देकर दोहराता है और उसकी सही व्याख्या करता है। पापियों के उद्धार के लिए विशेष प्रकटीकरण के ज़रिए मिलने वाली परमेश्वर की कृपा बहुत ज़रूरी है, क्योंकि सामान्य प्रकटीकरण के सिद्धांतों के तहत, एक पापी को केवल न्याय और विनाश का सामना करना पड़ता है।

आज सुबह की प्रार्थना सभा में पढ़े गए गलातियों 1:11–12 के अंश में लिखा है: "भाइयों और बहनों, मैं चाहता हूँ कि आप जानें कि मैंने जो सुसमाचार सुनाया, वह इंसानों का बनाया हुआ नहीं है। न तो मैंने इसे किसी इंसान से पाया और न ही किसी ने मुझे यह सिखाया; बल्कि, मुझे यह यीशु मसीह के प्रकटीकरण से मिला।" गलातिया की कलीसिया के विश्वासियों को लिखे अपने पत्र में, प्रेरित पौलुस उन लोगों से बात करते हैं जो "किसी और सुसमाचार" (पद 6) को मान रहे थे। वे कहते हैं कि उन्होंने जिस "मसीह के सुसमाचार" (पद 7)

का प्रचार किया, वह "इंसानी इच्छा" (पद 11) से नहीं निकला था। दूसरे शब्दों में, उन्होंने बताया कि मसीह का सुसमाचार न तो दूसरों से सीखा गया था और न ही इंसानों द्वारा सिखाया गया था, बल्कि यह "यीशु मसीह के प्रकटीकरण के ज़रिए" (पद 12) आया था।

हमारे परमेश्वर ऐसे परमेश्वर हैं जो खुद को प्रकट करते हैं। आसान शब्दों में कहें तो, वे खुद को हमारे सामने प्रकट करना चाहते हैं। भजन संहिता 76:1 में, भजनकार कहते हैं कि परमेश्वर ने यहूदा में खुद को प्रकट किया है। महान और महिमामय परमेश्वर ने खुद को अपने लोगों, यानी इस्राएलियों पर प्रकट किया—जो गिनती में बहुत कम थे। जब हम खुद को प्रकट करने वाले इस परमेश्वर के चार पहलुओं पर मनन करते हैं, तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब उन्हें और गहराई से जान सकें।

पहला, जो परमेश्वर खुद को हम पर प्रकट करता है, वह क्रोध करने वाला परमेश्वर है।

भजन संहिता 76:7 पर विचार करें: "हे परमेश्वर, तू ही भययोग्य है; जब तू क्रोध करता है, तो तेरे सामने कौन टिक सकता है?" परमेश्वर अपने लोगों, यानी इस्राएलियों के दुश्मनों पर अपना क्रोध बरसाता है—जो असल में उसके भी दुश्मन हैं। नतीजतन, वह उनके तीरों, ढालों, तलवारों और युद्ध के हथियारों को चकनाचूर कर देता है (पद 3)। दूसरे शब्दों में, क्रोध करने वाला यह परमेश्वर इस्राएल के दुश्मनों को हराता और नष्ट करता है। भजनकार लिखता है: "हे याकूब के परमेश्वर, तेरी डांट से रथ और घोड़े दोनों गहरी नींद में सो गए" (पद 6)। यीशु ही वह है जिसने तूफ़ान को डांटा और उसे शांत किया; परमेश्वर ने पूरी दुनिया का न्याय करने के लिए एक दिन तय किया है और यीशु को न्याय करने वाला नियुक्त किया है। दुष्टों का न्याय करते समय, वह अपना क्रोध बरसाता है, और उन्हें हमेशा की सज़ा मिलती है।

भजनकार बताता है कि क्रोध करने वाला यह परमेश्वर इंसानी गुस्से पर भी काबू रखता है (पद 10)। इसका मतलब है कि परमेश्वर इंसानी गुस्से को अपने मकसद के लिए इस्तेमाल करता है (पार्क युन-सन)। यह कहने का मतलब है कि परमेश्वर अपनी महिमा दिखाने के लिए इंसानी गुस्से का इस्तेमाल करता है। यहाँ परमेश्वर जिस इंसानी गुस्से की इजाज़त देता है, वह इस्राएल के दुश्मनों का गुस्सा है; परमेश्वर इस बुरे गुस्से को होने देता है और उसका इस्तेमाल करता है ताकि आखिर में उनका विनाश हो सके, और इस तरह उसके लोग

दुष्टों का विनाश देख सकें और उसकी स्तुति कर सकें। आखिर में, परमेश्वर दुष्टों के गुस्से का इस्तेमाल अपने पवित्र क्रोध को बरसाने के मौके के तौर पर करता है। इस तरह, दुष्टों को नष्ट करके, वह अपने लोगों के सामने अपनी पवित्रता और धार्मिकता ज़ाहिर करता है। इस तरह परमेश्वर की मौजूदगी का अनुभव करके, इस्राएल के लोग उसकी स्तुति किए बिना नहीं रह सकते (पद 10)। वह ऐसा परमेश्वर है जो दुष्टों के गुस्से का इस्तेमाल भी उन पर अपना क्रोध बरसाने के लिए करता है, और इस तरह अपनी महिमा प्रकट करता है।

जब हम क्रोध करने वाले इस परमेश्वर पर विचार करते हैं, तो हमें उससे डरने की ज़रूरत को समझना चाहिए। हमारा परमेश्वर ही भययोग्य है (पद 7)। भजनकार परमेश्वर को "वह जिससे डरना चाहिए" (पद 11) कहते हैं। वे ऐसे परमेश्वर हैं जो पृथ्वी के राजाओं के दिलों में डर पैदा करते हैं (पद 12)। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जिस परमेश्वर का हमें आदर करना चाहिए, वही हमारे पापों के लिए हमें डांटते भी हैं। भजन 39:11 पर विचार करें: "जब तू पाप के कारण मनुष्य को डांटकर सुधारता है, तो तू उसकी सुंदरता को कीड़े की तरह गला देता है; सचमुच हर मनुष्य बस एक सांस के समान है (सेला)।" इसलिए, हमें परमेश्वर के क्रोध में उनकी डांट से डरना चाहिए: "हे यहोवा, अपने क्रोध में मुझे न डांट, और न ही अपने भारी रोष में मुझे सुधार" (38:1)।

दूसरी बात, जो परमेश्वर खुद को हमारे सामने प्रकट करते हैं, वही बचाने वाले परमेश्वर हैं।

भजन 76:9 पर विचार करें: "जब परमेश्वर न्याय करने के लिए उठे, ताकि पृथ्वी के सभी दीन-दुखियों को बचा सकें (सेला)।" परमेश्वर, जो न्यायकर्ता हैं, उन्होंने "स्वर्ग से न्याय की बात सुनाई" (पद 8), और अपने लोगों को बचाते हुए दुष्टों का नाश करने के लिए अपना क्रोध उन पर बरसाया। वे बचाने वाले परमेश्वर हैं—खासकर, वे दीन-दुखियों को बचाने वाले परमेश्वर हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर नम्र लोगों को बचाते हैं। ये नम्र लोग कौन हैं? "दीन" या "नम्र" शब्द उन विश्वासियों के लिए इस्तेमाल किया गया है जिन्होंने मुसीबत और सताहट के बीच खुद को नम्र किया है और पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा करना सीखा है (पार्क युन-सन)। आज के पाठ में बताए गए इन नम्र विश्वासियों—जिन्होंने अपने दिलों को नम्र किया है और केवल परमेश्वर पर भरोसा किया है—की चार विशेषताएं हम पहचान सकते हैं: (1) नम्र वे हैं जो परमेश्वर को जानते हैं (पद 1)। क्योंकि वे परमेश्वर को जानते हैं, इसलिए वे नम्र हुए बिना नहीं रह सकते। (2) नम्र वे हैं जो प्रभु के निवास

स्थान में रहते हैं (पद 2)। दूसरे शब्दों में, वे प्रभु की उपस्थिति में रहते हैं या प्रभु के साथ चलते हैं। (3) नम्र वे हैं जो परमेश्वर से डरते हैं (पद 7)। और (4) नम्र वे हैं जो प्रभु की स्तुति करते हैं (पद 10)। परमेश्वर इन नम्र लोगों को बचाते हैं; वे उन्हें घमंडी लोगों—यानी उन लोगों को जो नम्र लोगों का विरोध करते हैं और उन्हें सताते हैं, या "कठोर हृदय वाले" (पद 5)—को पीछे हटाकर और नष्ट करके बचाते हैं। परमेश्वर ही नम्र लोगों को ऊँचा उठाते हैं (भजन संहिता 75)। प्रेरित याकूब ने कहा: "परन्तु वह और अधिक अनुग्रह देता है। इसलिए वह कहता है: 'परमेश्वर घमंडी लोगों का विरोध करता है, लेकिन नम्र लोगों को अनुग्रह देता है'" (याकूब 4:6)। परमेश्वर ही घमंडियों का विरोध करते हैं और नम्र लोगों पर अनुग्रह बरसाते हैं। वह जो अनुग्रह देते हैं, वही असल में "मुक्ति" है। नम्र लोगों की मुक्ति के लिए परमेश्वर के उत्साह के बारे में जॉन कैल्विन ने कहा: "परमेश्वर के लिए उन लोगों को छोड़ देना असंभव है जिन पर अन्यायपूर्ण तरीके से अत्याचार किया गया है, ठीक वैसे ही जैसे उनके लिए खुद को नकारना असंभव है" (कैल्विन)।

तीसरी बात, जो परमेश्वर खुद को हमारे सामने प्रकट करते हैं, वे एक महिमामयी और महान परमेश्वर हैं।

भजन संहिता 76:4 पर विचार करें: "आप महिमामयी हैं, शिकार करने वाले पहाड़ों से भी अधिक महान हैं।" मूल हिब्रू भाषा में, "महिमामयी" शब्द का अर्थ है "प्रकाश से सुसज्जित" होना। यह ऐसी शक्ति का प्रदर्शन है जो इंसानी पहुँच से परे है (दानिय्येल 2:22; 1 तीमुथियुस 6:16) (पार्क युन-सन)। यह महिमामयी परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों के सामने महानता के साथ प्रकट होते हैं; वे लूट-पाट करने वाली जातियों को हराकर और अपने लोगों को बचाने के लिए जीत हासिल करके ऐसा करते हैं (पार्क युन-सन)। इस विजयी और महान परमेश्वर के सामने, "हौसले वाले" या "योद्धा" भी बेबस हो जाते हैं (पद 5)।

इसलिए, भजनकार हमें सलाह देते हैं कि "अपने परमेश्वर यहोवा से मन्नतें मानो और उन्हें पूरा करो": "अपने परमेश्वर यहोवा से मन्नतें मानो और उन्हें पूरा करो; आस-पास की सभी जातियाँ उस परमेश्वर के लिए भेंट लाएँ जिनसे डरना चाहिए" (पद 11)। परमेश्वर के लोगों को उद्धार का अनुग्रह मिला है—जिसके द्वारा परमेश्वर ने लूट-पाट करने वाली अन्य जातियों को हराकर इस्राएल को बचाया—इसलिए उन्हें परमेश्वर से मन्नतें माननी चाहिए और उन्हें पूरा करना चाहिए। इसके अलावा, भजनकार कहते हैं कि आस-पास की सभी जातियों को भी परमेश्वर को भेंट चढ़ानी चाहिए। हमें इस महान परमेश्वर के बचाने वाले अनुग्रह पर विचार करना चाहिए

और उन्हें सम्मान और महिमा देनी चाहिए। हमें अपनी मन्नतें पूरी करनी चाहिए और सच्ची भक्ति के साथ परमेश्वर को अपनी भेंट चढ़ानी चाहिए। जब हम इस बात पर विचार करते हैं कि महिमामयी परमेश्वर ने हम जैसे पापियों के लिए तय क्रोध को अपने एकलौते पुत्र, यीशु पर उँडेल दिया—और इस तरह हमें उद्धार का अनुग्रह दिया और हमें अनमोल समझा—तो हमें खुद को उनके लिए जीवित बलिदान के रूप में समर्पित करना चाहिए। हमें प्रभु को वैसे ही समर्पित करना चाहिए जैसे हम हैं।

चौथी और आखिरी बात, जो परमेश्वर खुद को हमारे सामने प्रकट करते हैं, वे एक महान परमेश्वर हैं।

भजन संहिता 76:1 को देखें: "परमेश्वर यहूदा में जाने जाते हैं; इस्राएल में उनका नाम महान है।" परमेश्वर ने इस्राएल के दुश्मनों पर अपना क्रोध उँडेलकर—उन्हें नष्ट करके और अपने लोगों को बचाकर—अपनी महिमा और सम्मान प्रकट किया, ताकि इस्राएली उन्हें जान सकें। भजनकार, जो इस परमेश्वर को जानते थे, ने स्वीकार किया, "इस्राएल में उनका नाम महान है" (पद 1)। परमेश्वर ने इस्राएल को चुना और उससे प्रेम किया—जो सभी देशों में सबसे छोटा था (व्यवस्थाविवरण 7:6–8)—और एक विदेशी देश (अश्शूर) को नष्ट करके पूरी दुनिया के सामने अपना महान नाम प्रकट किया, ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने मिस्र से बाहर निकलते समय (निर्गमन के दौरान) फिरौन के हाथ से इस्राएल को अपने शक्तिशाली हाथ से छुड़ाकर अपनी महिमा प्रकट की थी। क्या वही परमेश्वर—जो सबसे महान होते हुए भी सबसे छोटे लोगों के प्रति इतना महान प्रेम और बचाने वाली कृपा दिखाता है—हमसे (जो उसी तरह छोटे या मामूली हैं) उसी महान प्रेम से प्रेम नहीं करता? क्या वह हमें अपनी कृपा से बचाता और छुड़ाता नहीं है, जो ज़रूरत के समय हमारी मदद करती है? परमेश्वर के इस महान प्रेम का जवाब हमें कैसे देना चाहिए? पहला, हमें प्रभु की स्तुति करनी चाहिए (पद 10)। और हमें प्रभु का भय मानना चाहिए (पद 7, 11, 12)। तीसरा, हमें प्रभु के सामने विनम्र होना चाहिए (पद 9)। चौथा, हमें पूरे दिल, मन, भक्ति और समर्पण के साथ प्रभु की सेवा करनी चाहिए (पद 11)।

आज, नर्सिंग होम जाते समय, या-उन ने कहा कि वह हमारी कलीसिया की एक बुज़ुर्ग महिला से मिलना चाहती है और उसने सुझाव दिया कि हम सिर्फ़ उसी एक व्यक्ति से मिलें। जब मैंने पूछा, "क्यों?" तो उसने समझाया कि चूँकि दूसरी महिलाएँ बोल या हमें पहचान नहीं सकती थीं, इसलिए वह सिर्फ़ उसी से मिलना

चाहती थी जो बात कर सकती थी। मैंने या-उन को जवाब दिया, "अगर हम ऐसा करते हैं, तो जो महिला बोल नहीं सकती, उसे दुख हो सकता है। भले ही वह हमें न पहचाने, लेकिन परमेश्वर हमारी उससे हुई मुलाक़ात के बारे में सब कुछ जानते हैं।" मुझे पूरा भरोसा है कि भले ही श्रीमती पार्क डिमेंशिया के कारण अपनी सारी याददाश्त खो चुकी हों, परमेश्वर अपनी प्यारी बेटी को नहीं भूले हैं; उन्हें वह याद है।

भले ही जब परमेश्वर खुद को प्रकट करते हैं तो हम चीज़ों को पूरी तरह न समझ पाएँ, मैं 1 कुरिन्थियों 8:3 के इन शब्दों को मज़बूती से थामे रहती हूँ: "लेकिन जो कोई परमेश्वर से प्रेम करता है, उसे परमेश्वर जानते हैं।" और हमारे पास जो आशा है, वह यह है: "...अभी मैं थोड़ा-बहुत जानता हूँ; तब मैं पूरी तरह जान जाऊँगा, ठीक वैसे ही जैसे मैं पूरी तरह जाना जाता हूँ" (13:12)। इसी आशा के साथ, मैं प्रार्थना करती हूँ कि आप और मैं दोनों आज परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ते रहें।

मैं अपनी आवाज़ से परमेश्वर को पुकारूँगा

[भजन संहिता 77]

जैसे-जैसे हम नए साल की तैयारी कर रहे हैं, हमने यह आदर्श वाक्य चुना है: "खुद को प्रार्थना में समर्पित करो!" यह वाक्य प्रेरितों के काम 1:14 पर आधारित है: "वे सब मिलकर लगातार प्रार्थना करते रहे, साथ में स्त्रियाँ, यीशु की माँ मरियम और उनके भाई भी थे।" हमारी इच्छा है कि हम शुरुआती कलीसिया के विश्वासियों की तरह एक मन होकर इकट्ठा हों और परमेश्वर के वादे के वचन को थामे रखकर प्रार्थना करें।

जॉन कैल्विन ने प्रार्थना के बारे में पाँच मुख्य बातें बताई हैं: (1) यह परमेश्वर का प्रेमपूर्ण निमंत्रण है। प्रार्थना की पहल परमेश्वर करते हैं; उन्होंने हमें अपने वादे दिए हैं और प्रार्थना करने का आदेश दिया है। (2) मध्यस्थ के रूप में यीशु। सारी प्रार्थनाएँ मसीह के मेल-मिलाप और मध्यस्थता के काम के द्वारा ही संभव होती हैं। परमेश्वर को स्वीकार्य और प्रसन्न करने वाली प्रार्थना के लिए, उसका हमारे मध्यस्थ यीशु द्वारा पवित्र किया जाना ज़रूरी है। (3) परमेश्वर का अनिवार्य वचन। हमारी प्रार्थनाएँ परमेश्वर के वचन पर आधारित, उससे आकार लेने वाली और उससे निर्देशित होनी चाहिए। प्रार्थना में परमेश्वर को पुकारना शामिल है, साथ ही उनके दिए गए वादों पर भरोसा करना और उन्हें थामे रखना भी। "वादे के वचन पर विश्वास किए बिना प्रार्थना करना केवल प्रार्थना का दिखावा करना है।" (4) पवित्र आत्मा की भूमिका। रोमियों 8:26 इस बात को समझाता है: "इसी तरह, आत्मा हमारी कमज़ोरी में हमारी मदद करती है। हम नहीं जानते कि हमें किस बात के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, लेकिन आत्मा खुद ऐसी आहों के साथ हमारे लिए विनती करती है जिन्हें शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।" (5) विश्वास का महत्व। विश्वास सच्ची प्रार्थना की नींव और एक ज़रूरी शर्त है। "विश्वास प्रार्थना से मज़बूत होता है, और प्रार्थना को विश्वास से पोषण मिलता है।"

आज के शास्त्र पाठ, भजन संहिता 77:1 में, भजनकार कहता है: "मैंने अपनी आवाज़ से परमेश्वर को पुकारा—अपनी आवाज़ से परमेश्वर को—और उन्होंने मेरी सुनी।" इस आयत और "मैं अपनी आवाज़ से परमेश्वर को पुकारूँगा" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं भजनकार की प्रार्थना के दो पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ और उनसे मिलने वाली सीखों को समझना चाहता हूँ।

सबसे पहले, आइए इस बात पर विचार करें कि भजनकार ने *कब* अपनी आवाज़ से परमेश्वर को पुकारा। यहाँ दो बातें ध्यान देने योग्य हैं। सबसे पहले, भजनकार ने अपनी आवाज़ से परमेश्वर को पुकारा, जब उसकी आत्मा को कोई सांत्वना नहीं मिल रही थी।

भजन संहिता 77:2 देखिए: "अपनी मुसीबत के दिनों में मैंने प्रभु को खोजा; रात भर मेरा हाथ बिना रुके फैला रहा; मेरी आत्मा ने सांत्वना पाने से इनकार कर दिया।" इज़राइल पर आए राष्ट्रीय संकट के गहरे दुख के बीच, भजनकार ने प्रार्थना में अपने हाथ नीचे नहीं किए; बल्कि, वह तब तक लगा रहा जब तक परमेश्वर ने उसे जवाब नहीं दिया। सच्ची प्रार्थना की इस स्थिति में, उसने माना कि जब तक परमेश्वर उसकी पुकार का जवाब नहीं देता, तब तक वह अपनी आत्मा के लिए कोई सांत्वना स्वीकार नहीं करेगा। दूसरे शब्दों में, वह कह रहा था कि उसकी आत्मा को सांत्वना *तभी* मिल सकती है जब परमेश्वर उसकी प्रार्थना का जवाब दे। जब भजनकार की आत्मा ने सांत्वना लेने से इनकार किया, तो उसकी स्थिति कैसी थी?

(1) भजनकार की आत्मा घायल थी। भजन संहिता 77:3 देखिए, जो आज का पाठ है: "मैंने परमेश्वर को याद किया, और परेशान हो गया; मैंने शिकायत की, और मेरी आत्मा व्याकुल हो गई (सेलाह)।" यह बात कि उसकी आत्मा व्याकुल थी, इसका मतलब है कि भजनकार की आत्मा चिंता और परेशानी से भरी हुई थी। तो फिर, भजनकार की आत्मा क्यों चिंतित और परेशान थी? ऐसा इसलिए था क्योंकि वह परमेश्वर के बारे में सोच रहा था। दूसरे शब्दों में, वह परेशान और व्याकुल था क्योंकि उसे ऐसा लग रहा था कि परमेश्वर वैसा काम नहीं कर रहे हैं जैसा उन्होंने अतीत में किया था—मानो उन्होंने अपना चेहरा छिपा लिया हो या वे नाराज़ हों (पार्क युन-सन)।

(2) भजनकार गहरे दुख में था।

भजन संहिता 77:4 देखिए, जो आज का पाठ है: "तू मेरी पलकों को खुला रखता है; मैं इतना परेशान हूँ कि बोल नहीं सकता।" भजनकार इतनी पीड़ा में था कि वह बोल भी नहीं पा रहा था। वह सो नहीं पा रहा था क्योंकि वह तड़प रहा था और सोच-विचार कर रहा था, यह समझ नहीं पा रहा था कि जो दुख वह झेल रहा है, वह क्यों खत्म नहीं हो रहा (पार्क युन-सन)। फिर भी, वे पल—जब हम नींद न आने और कभी न खत्म होने वाले दुख के कारण बोल नहीं पाते—असल में प्रभु की आवाज़ सुनने का एक बेहतरीन मौका हो सकते हैं।

कभी-कभी ऐसा हो सकता है कि हम, भजनकार की तरह, इतने परेशान हों और हमारी आत्मा इतनी व्याकुल हो कि हम सांत्वना लेने से इनकार कर दें। ऐसे समय में, किसी और के सांत्वना भरे शब्द या काम हमें राहत नहीं दे सकते; हमारे दिल अपने आस-पास के अपनों से मिलने वाले दिलासे को भी ठुकरा देते हैं। ऐसे पलों में, सिर्फ़ परमेश्वर ही हमें दिलासा दे सकते हैं। इसीलिए हम उनसे पुकार लगाते हैं। भजन 119:50 के शब्द दिल को छू जाते हैं: "मेरी मुसीबत में यही मेरा दिलासा है, क्योंकि तेरे वचन ने मुझे जीवन दिया है।" आइए, परमेश्वर के इस वादे को थामे रखें और उनसे पुकार लगाएँ।

दूसरी बात, जब भजनकार कमज़ोर महसूस कर रहा था, तो उसने अपनी आवाज़ में परमेश्वर से पुकार लगाई।

भजन 77:10 देखिए: "और मैंने कहा, 'यह मेरी कमज़ोरी है; सर्वप्रधान के दाहिने हाथ के साल।'" भजनकार की कमज़ोरी उसके विचारों में झलकती थी: "क्या प्रभु हमेशा के लिए त्याग देंगे? और क्या वे फिर कभी मेहरबान नहीं होंगे? क्या उनकी दया हमेशा के लिए खत्म हो गई है? क्या उनका वादा हमेशा के लिए टूट गया है? क्या परमेश्वर दया करना भूल गए हैं? क्या उन्होंने गुस्से में अपनी कोमल दया को रोक दिया है? (सेला)" (पद 7–9)। दुख और तकलीफ़ से कमज़ोर होकर, भजनकार के मन में परमेश्वर के बारे में तरह-तरह के शक पैदा होने लगे। ये शक विश्वास के उलट थे: "क्या प्रभु हमेशा के लिए त्याग देंगे? और क्या वे फिर कभी मेहरबान नहीं होंगे? क्या उनकी दया हमेशा के लिए खत्म हो गई है...?" (पद 7–8)। क्या भजनकार—और हमारे—प्रति परमेश्वर की प्रेम-भरी दया सचमुच खत्म हो सकती है, जैसा उसे डर था? क्या परमेश्वर सचमुच दया दिखाना भूल सकते हैं? क्या प्रभु सचमुच हमें हमेशा के लिए त्याग सकते हैं? जैसा कि

हम जानते हैं, ऐसे सभी शक परमेश्वर के स्वभाव के बिल्कुल उलट हैं। परमेश्वर हमें कभी नहीं छोड़ते, और उनके लिए ऐसा करना मुमकिन भी नहीं है। हमारे परमेश्वर हम पर दया करना कभी नहीं भूल सकते; वे ऐसे परमेश्वर हैं जो अभी भी अपनी दया बरसा रहे हैं। वे हमसे इतना गहरा प्यार करते हैं कि उन्होंने अपने एकलौते बेटे, यीशु को दे दिया। उनके प्यार की कोई सीमा नहीं है।

हम भजनकार से अलग नहीं हैं। जैसे-जैसे हमारा दुख और मुश्किलें बढ़ती जाती हैं, हम शरीर और आत्मा दोनों से कमज़ोर हो जाते हैं, और हमारे मन में भी वही कमज़ोर विचार आने लगते हैं जो भजनकार के मन में आए थे: "क्या परमेश्वर सचमुच मुझे इस दुख से बचाएँगे? वे कब तक मुझे बस इस दौर से गुज़रते हुए देखते रहेंगे? पक्का उन्होंने मुझे छोड़ा नहीं है..." ऐसे पलों में, क्या हम—भजनकार की तरह—अपनी आवाज़ में परमेश्वर से पुकार लगाते हैं? व्यक्तिगत रूप से, मेरा मानना है कि कभी-कभी हमारा दुख हमें शारीरिक और भावनात्मक रूप से इतना थका देता है कि हम ज़ोर से प्रार्थना करने के लिए अपना मुँह भी नहीं खोल पाते। ऐसे समय में, मैं अक्सर एक गॉस्पेल गीत गाता था, "कोई आपके लिए प्रार्थना कर रहा है" (Someone Is Praying for You): "जब आप थके हुए हों और प्रार्थना न कर पा रहे हों, और आँसू बारिश की तरह गिर रहे हों, तो प्रभु हमारी कमज़ोरी को जानते हैं और प्यार से हमारा मार्गदर्शन करते हैं। {कोरस} कोई आपके लिए प्रार्थना कर रहा है; कोई प्रार्थना कर रहा है। जब आप अकेले हों और आपका दिल टूट रहा हो, तो कोई आपके लिए प्रार्थना कर रहा है।" एक और गॉस्पेल गीत जिसने मुझे सुकून दिया है, वह है "अपनी नज़रें सिर्फ़ प्रभु पर टिकाएँ" (Fix Your Eyes Only on the Lord): (पद 1) "आप जो परमेश्वर के प्रेम के लिए तरसते हैं, आप जो परमेश्वर की शांति की तलाश करते हैं—यह महसूस करें कि प्रभु, जिन्होंने आपको बनाया है, आपसे कितना गहरा प्रेम करते हैं। {कोरस} प्रेम भरी नज़रों से, परमेश्वर हर समय आप पर नज़र रखते हैं; दयालुता भरे कानों से, वे हमेशा आपकी ओर ध्यान देते हैं। वे अंधेरे में तेज़ रोशनी चमकाते हैं और आपकी हल्की-सी आह का भी जवाब देते हैं; इसलिए आप जहाँ भी हों, प्रभु की ओर मुड़ें और अपनी नज़रें सिर्फ़ उन पर टिकाएँ।"

आखिरी बात जिस पर मैं विचार करना चाहता हूँ, वह यह है कि भजनकार अपनी आवाज़ में परमेश्वर को कैसे पुकार पाए।

ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने उन कामों पर विचार किया जो परमेश्वर ने अतीत में किए थे।

भजन संहिता 77:11 को देखें: "मैं प्रभु के कामों को याद करूँगा; हाँ, मैं पुराने समय के आपके चमत्कारों को याद करूँगा।" भजनकार ने ऐसा तब किया जब उनकी आत्मा को सांत्वना नहीं मिल रही थी और वे कमज़ोर महसूस कर रहे थे: "मैंने पुराने दिनों, बहुत पहले के सालों के बारे में सोचा; मुझे रात में अपना गीत याद आया; मैंने अपने दिल में मनन किया, और मेरी आत्मा ने गंभीरता से खोज की" (पद 5–6)। जब उनकी आत्मा को सांत्वना नहीं मिली और वे कमज़ोर महसूस करने लगे, तो उन्होंने उस कृपा को याद किया जो परमेश्वर ने अतीत में की थी। इसके ज़रिए, उन्होंने सुकून पाने और भविष्य के लिए उम्मीद बनाए रखने की कोशिश की। इस प्रक्रिया में—पद 11 तक पहुँचते हुए—भजनकार ने परमेश्वर के पुराने चमत्कारों (उनके किए गए कामों) पर विचार किया, उनकी स्तुति की, उनमें संतोष पाया, और भविष्य को पूरी तरह से परमेश्वर को सौंप दिया (पार्क युन-सन)। प्रभु के सभी कामों पर ध्यान करने और उनके कामों पर गहराई से सोचने (पद 12) के कारण, वह अपनी आवाज़ में परमेश्वर को पुकार सका (पद 13–20)। जिस परमेश्वर पर उसने ध्यान किया, वह पवित्र और महान है (पद 13); वह ऐसा परमेश्वर है जो अपनी शक्ति दिखाता है (पद 14) और इस्राएल के लोगों को छुड़ाता है (पद 15)। उसने परमेश्वर के उन चमत्कारों पर विचार किया, जिनके द्वारा उन्होंने इस्राएलियों को मिस्र से बचाया और लाल सागर के पार पहुँचाया (पद 16–20)। इसी वजह से, वह परमेश्वर को पुकार सका।

भजनकार की तरह, जब हम खुद को टूटे हुए मन और ऐसी परेशानी में पाते हैं जहाँ हमारी आत्मा को कोई दिलासा नहीं मिलता, तो हमें भी अपनी सारी चिंताएँ प्रार्थना में प्रभु को सौंप देनी चाहिए और साथ ही उस उद्धार करने वाली कृपा पर गहराई से ध्यान करना चाहिए जो परमेश्वर ने अतीत में हम पर दिखाई है। हमारा प्रभु निश्चित रूप से ऐसा परमेश्वर है जो हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है (पद 1)। और वह अपने समय पर और अपनी इच्छा के अनुसार हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा।

मैं आपके साथ गॉस्पेल गीत "यू आर माई सन" (You Are My Son) गाना चाहूँगा:

जब मैं थका-हारा और निराश होता हूँ, और उठने की मुझमें कोई हिम्मत नहीं बचती, तब आप चुपचाप मेरे पास आते हैं, मेरा हाथ थामते हैं और मुझसे बात करते हैं। जब मैं खुद से निराश होता हूँ और अपनी कमज़ोरी

व दर्द में आँसू बहाता हूँ, तब आप अपने कीलों के ज़ख्मों वाले हाथों से मेरे आँसू पोंछते हैं और मुझसे कहते हैं: “तुम मेरे बेटे हो; आज ही मैंने तुम्हें जन्म दिया है। तुम मेरे बेटे हो—मेरे प्यारे बेटे। तुम हमेशा, बिना किसी बदलाव के, मेरे बेटे हो; क्योंकि मैंने तुम्हें अपने क्रूस की पीड़ा—यानी बच्चे को जन्म देने के दर्द—के ज़रिए जन्म दिया है।”

मेरी कमज़ोरी

“और मैंने कहा, ‘यह मेरी कमज़ोरी है...’” (भजन संहिता 77:10)।

जैसे-जैसे समय बीतता है, हमें यह एहसास होता जाता है कि इंसान कितने कमज़ोर हैं। हम इस कमज़ोरी को बहुत गहराई से महसूस करते हैं, खासकर मुश्किलों और तकलीफ़ों के समय। मुश्किल जितनी बड़ी होती है—खासकर जब वह हमारी सहने की क्षमता से बाहर हो—हम अपनी बेबसी को उतना ही ज़्यादा महसूस करते हैं। तो ऐसे पलों में हमें क्या करना चाहिए?

आज के वचन, भजन संहिता 77:10 में, भजनकार आसाफ अपनी कमज़ोरी को स्वीकार करता है। उसने इस कमज़ोरी को चार तरह से ज़ाहिर किया (पद 1–9)।

पहला, आसाफ बेचैन और परेशान था।

भजन संहिता 77:3 के पहले हिस्से को देखिए: “मैंने परमेश्वर को याद किया, और मैं परेशान हो गया...” यह दुनिया सचमुच मुश्किलों और चिंता की वजहों से भरी हुई है (भजन 474)। इसके अलावा, ऐसी स्थितियाँ अक्सर आती रहती हैं जो हमें बेचैन कर देती हैं। लोग बेचैन क्यों महसूस करते हैं? एक वजह है अपनों के छोड़ देने का डर। खासकर मसीहियों के लिए, बेचैनी अक्सर इस एहसास से पैदा होती है कि जिस परमेश्वर से वे प्यार करते हैं, उसने उन्हें छोड़ दिया है (भजन संहिता 43:2)। आज के वचन में, आसाफ ने अपनी “मुश्किल की घड़ी” में प्रभु को पुकारा (भजन संहिता 77:2), फिर भी वह बेचैन और परेशान हो गया—शायद इसलिए क्योंकि परमेश्वर का जवाब मिलने में देर हो रही थी। चिंता और बेचैनी से भरा दिल सचमुच बहुत कमज़ोर होता है।

दूसरा, आसाफ का मन बहुत भारी हो गया था। भजन संहिता 77:3 के बाद वाले हिस्से को देखिए: "... मेरा मन कमज़ोर हो गया (सेलाह)।" मुश्किल के दिनों में, चिंता और बेचैनी के बीच, आसाफ का मन आखिरकार भारी और कमज़ोर हो गया। नतीजतन, वह सो नहीं पाया और इतनी तकलीफ़ में था कि बोल भी नहीं पा रहा था (पद 4)। जब लोग बहुत ज़्यादा परेशानी में होते हैं, तो वे अक्सर सो नहीं पाते या बोल भी नहीं पाते। मुझे अपनी सेवा के दौरान का एक समय याद है जब मैं बहुत मुश्किल दौर से गुज़र रहा था और लगभग तीन हफ़्ते तक ठीक से सो नहीं पाया था। मुझे इतना ज़्यादा तनाव भी याद है कि खाना सामने होने के बावजूद, मैं खा नहीं पा रहा था। बहुत से लोग बड़ी मुश्किल और तकलीफ़ का सामना करते समय ठीक से सो या खा नहीं पाते हैं। अगर हम किसी करीबी से कह पाते हैं कि "इन दिनों मैं परेशान हूँ," तो इसका मतलब हो सकता है कि हमारी परेशानी अभी अपनी चरम सीमा तक नहीं पहुँची है। कुछ दुख इतने गहरे होते हैं कि इंसान सचमुच कुछ बोल नहीं पाता। ऐसी पीड़ा हमें खामोश कर देती है—सिर्फ़ दूसरों के सामने ही नहीं, बल्कि ईश्वर के सामने भी। पीड़ा हमारी आत्मा को घायल कर देती है, और घायल आत्मा कमज़ोर होती है।

तीसरी बात, आसाफ़ ने सांत्वना लेने से इनकार कर दिया।

भजन संहिता 77:2 का बाद वाला हिस्सा देखिए: "...मेरी आत्मा ने सांत्वना लेने से इनकार कर दिया।" आसाफ़ इतनी गहरी पीड़ा में था कि उसने सांत्वना स्वीकार करने से मना कर दिया। अपनी मुश्किल घड़ी की बेचैनी, चिंता, नींद न आने और कुछ न बोल पाने की हालत से उसकी आत्मा इतनी टूट चुकी थी कि उसने हर तरह की सांत्वना को ठुकरा दिया। इससे अय्यूब की कहानी याद आती है। अय्यूब बहुत ज़्यादा दर्द और पीड़ा में था; दोस्त उसे सांत्वना देने आए, फिर भी उसने उन्हें "परेशान करने वाले सांत्वना देने वाले" कहा (अय्यूब 16:2)। जब कोई व्यक्ति बहुत ज़्यादा दुख में होता है, तो अक्सर वह नहीं चाहता कि कोई उसे सांत्वना दे। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उन्हें लगता है कि कोई भी उन्हें सच में सांत्वना नहीं दे सकता। हमारे जीवन में भी ऐसे पल आते हैं। हम दूसरों से सांत्वना लेने से इनकार कर सकते हैं क्योंकि हमें लगता है कि सिर्फ़ ईश्वर ही हमें सच में सांत्वना दे सकते हैं। जो व्यक्ति इस तरह सांत्वना लेने से इनकार करता है, वह कमज़ोरी की हालत में होता है।

चौथी बात, आसाफ़ को ईश्वर पर शक हुआ।

भजन संहिता 77:7–9 पर गौर करें: "क्या प्रभु हमेशा के लिए त्याग देंगे? क्या वे फिर कभी अपनी कृपा नहीं दिखाएँगे? क्या उनका अटूट प्रेम हमेशा के लिए खत्म हो गया है? क्या उनका वादा हमेशा के लिए टूट गया है? क्या ईश्वर दया करना भूल गए हैं? क्या उन्होंने गुस्से में अपनी करुणा रोक ली है? (सेलाह)" आसाफ़ ने अपनी मुसीबत के समय ईश्वर को पुकारा लेकिन कोई जवाब नहीं मिला, जिससे उसका दिल और आत्मा कमज़ोर हो गए। कमज़ोरी की इस हालत में, आसाफ़ को ईश्वर से मिलने वाले उद्धार पर शक होने लगा; उद्धार का उसका भरोसा डगमगा गया। ऐसी अनिश्चितता कमज़ोर दिल को दिखाती है। कमज़ोर दिल में बँटा हुआ मन होता है: एक हिस्सा ईश्वर पर भरोसा करता हुआ दिखता है, जबकि दूसरा हिस्सा उनके प्रति अविश्वास रखता है। आखिरकार, चिंता, परेशानी और टूटी हुई आत्मा वाले दिल में अविश्वास की जड़ें जम ही जाती हैं, खासकर तब जब वह आत्मा सांत्वना लेने से इनकार कर दे।

तो फिर, जब हम खुद को ऐसी कमज़ोर हालत में पाएँ, तो हमें क्या करना चाहिए? सबसे पहले, हमें उन अद्भुत कामों को याद रखना चाहिए जो परमेश्वर ने अतीत में किए थे।

भजन संहिता 77:11 के पहले हिस्से को देखें: "मैं प्रभु के कामों को याद करूँगा..."। जब हम मुश्किलों और दुख से घिरे हों, तो हमें अपनी कमज़ोरी में भी उस बचाने वाली कृपा पर सोचना चाहिए जो परमेश्वर ने अतीत में हम पर की थी। व्यक्तिगत रूप से, जब मैं मुश्किल समय का सामना करता हूँ, तो अक्सर अपने सबसे बड़े बच्चे, जू-यंग के बारे में सोचता हूँ, जिसकी मेरे हाथों में ही मृत्यु हो गई थी। मैं ऐसा इसलिए करता हूँ क्योंकि मैंने वैसा दर्द कभी महसूस नहीं किया। फिर भी, अब मेरे दिल में कोई दर्द नहीं है; बस परमेश्वर की वह कृपा और प्यार याद है जो उन्होंने मुझ पर और मेरे जीवनसाथी पर दिखाया था। इसीलिए मैं याद करता हूँ। इसीलिए मैं उन्हें याद करता हूँ। जब मैं अपनी मौजूदा मुश्किलों के बीच उस समय परमेश्वर द्वारा दिखाए गए प्यार और कृपा को याद करता हूँ और उसका सम्मान करता हूँ, तो मुझे अपने कमज़ोर दिल और आत्मा में नई शक्ति महसूस होती है। मुझे अपनी ताकत वापस मिलती है। जैसे-जैसे मैं याद करता हूँ, मेरी कमज़ोरी में परमेश्वर की शक्ति प्रकट होती है।

दूसरी बात, हमें परमेश्वर के किए गए कामों का ज़िक्र करना चाहिए।

भजन संहिता 77:11 के बाद वाले हिस्से को देखें: "...मैं उन कामों का ज़िक्र करूँगा जो तूने किए हैं।" हमें न केवल उन कामों को याद रखना चाहिए जो परमेश्वर ने अतीत में किए थे, बल्कि उनका ज़िक्र भी करना चाहिए। कभी-कभी, कलीसिया के बुज़ुर्ग सदस्य मुझसे पूछते हैं कि मैं अभी भी जू-यंग, अपने सबसे बड़े बच्चे के बारे में क्यों बात करता हूँ। फिर भी, मैं कभी-कभी अपने उपदेशों के दौरान जू-यंग के बारे में कहानियाँ सुनाता हूँ। मैं ऐसा इसलिए करता हूँ क्योंकि मैं उस कृपा और प्यार को बताना चाहता हूँ जो परमेश्वर ने उस समय जू-यंग के ज़रिए हम पर बरसाया था। "जू-यंग" नाम का अर्थ है "प्रभु की महिमा देखना"; इसी नाम के अनुरूप, मैं उस प्रभु के बारे में बताना चाहता हूँ जिसे हमने देखा था। हम ये कहानियाँ इसलिए सुनाते हैं क्योंकि अगर प्रभु हमारे साथ न होते, तो मैं और मेरी पत्नी मुश्किलों का सामना नहीं कर पाते। इसलिए, हम उस समय जू-यंग के साथ हमारे जीवन में परमेश्वर ने जो किया, उसे याद करते हैं और बताते हैं। जब हम अतीत में परमेश्वर के किए गए कामों को याद करते हैं और बताते हैं, तो हम महसूस करते हैं कि उनके काम हमारे कमज़ोर दिलों को मज़बूत कर रहे हैं।

तीसरी बात, हमें प्रभु के सभी कामों पर गहराई से मनन करना चाहिए। भजन संहिता 77:12 को देखिए: "मैं तेरे सब कामों पर मनन करूँगा और तेरे महान कार्यों पर विचार करूँगा।" मुसीबत और कमजोरी के समय में, आसाफ ने उन चमत्कारों को याद किया जो परमेश्वर ने अतीत में किए थे और उनके कामों को दोहराया; ऐसा करते हुए, उसने परमेश्वर पर मनन किया—न केवल अतीत के बारे में, बल्कि और भी व्यापक रूप से, उस परमेश्वर पर जो उसकी वर्तमान मुसीबत के बीच सक्रिय रूप से काम कर रहे थे। सच तो यह है कि जब हम कमजोर होते हैं और उन दर्दनाक हालात पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिनका हम सामना कर रहे हैं, तो हम यह नहीं देख पाते कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं। हालाँकि, जब हम इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि परमेश्वर ने अतीत में क्या किया है, तो हमें विश्वास हो जाता है कि वही परमेश्वर वर्तमान में भी काम कर रहे हैं, और उस विश्वास के माध्यम से, हम प्रभु के कार्यों को देखने लगते हैं। फिर भी, आसाफ वहीं नहीं रुका; उसने इस बात पर भी गहराई से विचार और मनन किया कि परमेश्वर भविष्य में क्या करेंगे। ऐसा मनन एक गहरा कार्य है जो प्रभु में विश्वास के बिना असंभव है। यह मनन का एक ऐसा रूप है जो केवल विश्वास के माध्यम से ही संभव है। यह हमारी कमजोरियों पर काबू पाने का असली रहस्य है। जब हम परमेश्वर के सभी कार्यों पर गहराई से मनन करते हैं, तो हम अपनी कमजोरी पर काबू पा सकते हैं।

जैसे-जैसे समय बीतता है, हमारा शरीर कमजोर होता जाता है, और हम अक्सर खुद को चिंता और परेशानी से जूझते हुए पाते हैं। ऐसे समय में, हमें रातों को नींद नहीं आती और हम अकथनीय पीड़ा से गुजरते हैं। टूटे हुए मन के साथ, हम सच्चे दिल से परमेश्वर को खोजते हैं, फिर भी जब उनका उत्तर मिलने में देर होती है, तो हम—अपने संदेह के कारण—किसी से भी सांत्वना लेने से इनकार कर सकते हैं। ऐसे क्षणों में, हमें परमेश्वर के पुराने महान कार्यों को याद करना चाहिए। हमें उन कार्यों पर मनन करना चाहिए और उन्हें दोहराना चाहिए जो उन्होंने किए हैं। इसके अलावा, मेरी प्रार्थना है कि हम परमेश्वर द्वारा किए गए सभी कार्यों पर गहराई से मनन करके अपनी कमजोरियों पर काबू पाएं।

जब मैं कमज़ोर होता हूँ

“तब मैंने कहा, ‘यह मेरी कमज़ोरी है; पर मैं परमप्रधान के दाहिने हाथ के कामों को—अर्थात् पुराने समय के प्रभु के आश्चर्यकर्मों को—याद करूँगा; मैं उनके कामों की चर्चा करूँगा और उनके कार्यों पर मनन करूँगा।’” (भजन संहिता 77:10–12)

ऐसी दुनिया में जहाँ ज़िंदा रहने के लिए ताकत ज़रूरी लगती है, हर कोई अलग-अलग तरीकों से मज़बूत बनने की कोशिश करता है। लोग न सिर्फ़ शारीरिक रूप से, बल्कि मानसिक और सामाजिक रूप से भी मज़बूत बनने की कोशिश करते हैं। इसलिए, हम अक्सर दूसरों के सामने अपनी कमज़ोरियाँ मानने से हिचकिचाते हैं। फिर भी, ज़िंदगी के सफ़र में, मुश्किलों और परेशानियों के तूफ़ान हमें यह एहसास दिलाते हैं कि इंसान असल में कितना कमज़ोर है। यहाँ तक कि एक तंदुरुस्त नौजवान भी, जब डॉक्टर से उसे लाइलाज कैंसर होने का पता चलता है, तो मौत के सामने खुद को बेबस पाता है। सच तो यह है कि हम इंसान बहुत ही कमज़ोर प्राणी हैं।

भजन संहिता 77:10 में, भजनकार आसाफ मानता है, “यह मेरी कमज़ोरी है।” अपनी कमज़ोरी को मानकर, वह स्वीकार करता है कि इसी कमज़ोरी की वजह से उसके मन में कमज़ोर और डगमगाते हुए विचार आए। कमज़ोरी से पैदा हुए ये विचार क्या थे? उसी भजन संहिता की आयतें 7–9 देखिए: “क्या प्रभु हमें हमेशा के लिए ठुकरा देंगे? क्या वे फिर कभी हम पर कृपा नहीं करेंगे? क्या उनका अटूट प्रेम हमेशा के लिए खत्म हो गया है? क्या उनका वादा हमेशा के लिए टूट गया है? क्या परमेश्वर कृपा करना भूल गए हैं? क्या उन्होंने गुस्से में अपनी दया रोक ली है?” परमेश्वर कभी भी अपने लोगों को नहीं छोड़ते, फिर भी अपनी कमज़ोरी में आसाफ ने सोचा, "क्या प्रभु हमें हमेशा के लिए ठुकरा देंगे?" हालाँकि परमेश्वर दयालु हैं और कृपा करने में

खुश होते हैं, फिर भी आसाफ ने सवाल किया, "क्या परमेश्वर कृपा करना भूल गए हैं?" भले ही वे प्रेम करने वाले परमेश्वर हैं और हमारे लिए उनका स्नेह अनंत और सदा रहने वाला है, फिर भी आसाफ ने अपनी कमज़ोरी में यहाँ तक सोच लिया, "क्या उनका अटूट प्रेम खत्म हो गया है?" परमेश्वर वफ़ादारी से अपने वादे पूरे करते हैं, फिर भी आसाफ को शक हुआ कि क्या परमेश्वर के वादे हमेशा के लिए खत्म हो गए हैं। अपनी गहरी कमज़ोरी में, आसाफ परमेश्वर की दया को महसूस भी नहीं कर पा रहा था। ये एक ऐसे इंसान के विचार थे जो अपनी ही कमज़ोरी से जूझ रहा था।

आसाफ ने अपनी कमज़ोरी के बीच परमेश्वर के प्रेम, कृपा और दया पर शक किया; किस चीज़ ने उसे यह कमज़ोरी मानने पर मजबूर किया? वह मुसीबत थी जो उस पर आई थी (आयत 2)। इस परेशानी की वजह से, आसाफ ने पूरे दिल से परमेश्वर को खोजा और तब तक शांत नहीं हुआ जब तक परमेश्वर ने उसकी प्रार्थनाओं का जवाब नहीं दिया (पद 2)। जब हम मुश्किल समय में परमेश्वर से विनती करते हैं और कोई जवाब नहीं मिलता, तो हम भी यह कमज़ोर सोच रख सकते हैं कि प्रभु ने हमें छोड़ दिया है। दाऊद ने भी ऐसा ही महसूस किया था। खासकर, भजन संहिता 22:1–2 में बताया गया है कि कैसे दिन-रात प्रार्थना में परमेश्वर के सामने अपने दिल का दर्द बयां करने के बाद भी जब कोई जवाब नहीं मिला, तो वह चिल्ला उठा, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया है?" (22:1)। मुसीबत और बहुत ज़्यादा दुख के समय में, दाऊद और आसाफ जैसे लोगों को कभी-कभी ऐसा लगता था जैसे परमेश्वर ने उन्हें छोड़ दिया हो। फिर भी, जैसा कि हम जानते हैं, परमेश्वर हमें कभी भी हमेशा के लिए नहीं छोड़ता। इतनी गहरी पीड़ा के बीच, जब उसकी ज़ोरदार पुकार के बावजूद प्रार्थनाओं का कोई जवाब नहीं मिला, तो आसाफ के मन में—अपनी कमज़ोरी के कारण—यह ख्याल आया कि शायद परमेश्वर ने उसे त्याग दिया है (भजन संहिता 77:7)। वह चिंता और परेशानी से भर गया था, और उसका मन बहुत व्याकुल था (पद 3)। उसे बहुत दुख हुआ और उसे नींद नहीं आ रही थी (पद 4)। जिस मुसीबत का उसने सामना किया, उसने उसे आध्यात्मिक, शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से बहुत कमज़ोर कर दिया था। इतनी गहरी कमज़ोरी की हालत में आसाफ ने क्या किया? उसने परमेश्वर के पुराने चमत्कारों को याद करने का फ़ैसला किया: "मैं प्रभु के कामों को याद करूँगा; हाँ, मैं तेरे पुराने चमत्कारों को याद करूँगा। मैं तेरे सभी कामों पर सोच-विचार करूँगा और तेरे महान कामों पर मनन करूँगा" (पद 11–12)। उसने प्रभु द्वारा अतीत में किए गए सभी कामों को याद करके और उन पर गहराई से सोच-विचार करके अपनी मौजूदा मुश्किलों से उबरने की कोशिश की। उसने अपनी गहरी पीड़ा के बीच सही फ़ैसला किया। आसाफ ने परमेश्वर के पुराने कामों को याद करने का फ़ैसला क्यों

किया? ऐसा इसलिए था क्योंकि वह परमेश्वर के स्वभाव पर—कि परमेश्वर असल में कौन है—गहराई से मनन करना चाहता था, उन कामों के ज़रिए जो उसने किए थे। असल में, भजन संहिता 78:34–35 में, जब इस्राएल के लोग अपने पापों के कारण परमेश्वर की ताड़ना सह रहे थे, तो वे वापस लौटे और पूरे दिल से उसे खोजा; उन्हें याद आया कि परमेश्वर उनकी चट्टान है और परमप्रधान परमेश्वर ही उनका छुड़ानेवाला है (पद 35)। आसाफ ने परमेश्वर के कामों पर विचार करते हुए उनके स्वभाव पर गहराई से मनन किया। इसी तरह, जब हम दुख और मुश्किलों का सामना करते हैं, तो हमें अपनी कमज़ोरी को अच्छी तरह समझना चाहिए और उन सभी कामों पर सोचना चाहिए जो परमेश्वर ने हमारे जीवन में किए हैं। हमें परमेश्वर के महान कामों के ज़रिए उनके असली स्वभाव पर गहराई से विचार करना चाहिए; यही हमारी कमज़ोरियों पर जीत पाने का एकमात्र तरीका है। ऐसा करने से, मुश्किलों के दौरान हमें जो कमज़ोरी महसूस हुई थी, वह प्रभु में ताकत में बदल जाएगी। आइए हम कभी न भूलें कि प्रभु को याद रखना ही हमारी ताकत का स्रोत है।

“अपनी आने वाली पीढ़ियों को बताओ”

[भजन संहिता 78:1–22]

“यहूदी 3-आयामी प्रतिभाशाली शिक्षा का रहस्य: बच्चों को कबूतर जैसा दिल और साँप जैसा दिमाग देकर बड़ा करें” शीर्षक वाले एक लेख में कहा गया है कि प्रतिस्पर्धी समाज में सफल होने के लिए, व्यक्ति के पास दयालु हृदय (EQ) और तेज दिमाग (IQ) होना चाहिए। यीशु ने भी अपने बारह शिष्यों को निर्देश दिया था: “देखो, मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच भेड़ों की तरह भेजता हूँ; इसलिए साँप की तरह बुद्धिमान और कबूतर की तरह हानिरहित बनो” (मत्ती 10:16)। यहूदी लोग इसका अर्थ यह निकालते हैं कि जहाँ हृदय (EQ) को शुद्ध रहना चाहिए, वहीं मन (IQ) को सांसारिक ज्ञान से आगे निकलना चाहिए। नतीजतन, कहा जाता है कि यहूदी माता-पिता अपने बच्चों को तीन साल की उम्र से ही जटिल कानून सिखाना शुरू कर देते हैं। कानून सीखने से एक सूक्ष्म स्वभाव विकसित होता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि किसी भी चीज़ को नज़रअंदाज़ न किया जाए या लापरवाही से न संभाला जाए। यही यहूदी लोगों के एक अग्रणी राष्ट्र बनने के पीछे का रहस्य है। लेख के लेखक की रुचि यहूदी बच्चों के पालन-पोषण के तरीकों में तब जगी जब उन्होंने सोचा, “यहूदी शिक्षा हमारी शिक्षा से कैसे अलग है? कोरियाई लोग भी अपने बच्चों की शिक्षा को लेकर उतने ही जुनूनी हैं, फिर भी हम उतने उत्कृष्ट प्रतिभाओं को क्यों पैदा नहीं कर पाते?” एक दिलचस्प पहलू यहूदी प्रतिभाशाली शिक्षा के तीन चरणों में निहित है: “प्रथम-आयामी प्रतिभाशाली शिक्षा: ज्ञान-आधारित बुद्धिमत्ता का विकास, जिसमें मानक स्कूलों में पाई जाने वाली IQ-केंद्रित शिक्षा शामिल है; द्वितीय-आयामी प्रतिभाशाली शिक्षा: चालाकी, चतुराई और समझदारी का विकास; तृतीय-आयामी प्रतिभाशाली शिक्षा: ज्ञान का विकास।” जब प्रतिभाशाली शिक्षा के इन तीन चरणों को निम्नतम से उच्चतम तक व्यवस्थित किया जाता है, तो क्रम ज्ञान, *चालाकी* और ज्ञान होता है। स्वाभाविक रूप से, शिक्षा का लक्ष्य शिक्षार्थियों को तीसरे चरण—ज्ञान—तक

ऊपर उठाना है, फिर भी कोरिया में वास्तविकता यह है कि शिक्षा अक्सर पहले चरण: ज्ञान पर ही अटकी रहती है। इसके विपरीत, यहूदी प्रतिभाशाली शिक्षा सबसे पहले उच्चतम स्तर (ज्ञान) को सिखाने को प्राथमिकता देती है, उसके बाद *चालाकी*, और अंत में, ज्ञान (आमतौर पर स्कूलों में सिखाया जाता है) को। दूसरे शब्दों में, ज्ञान और *चालाकी* को बाइबिल पर आधारित चरित्र शिक्षा के माध्यम से विकसित किया जाता है।

यहूदी प्रतिभाशाली शिक्षा का यह त्रि-आयामी दृष्टिकोण आकर्षक है। यह बात खास तौर पर दिलचस्प है कि जब प्रतिभाशाली बच्चों को शिक्षित किया जाता है, तो यहूदी परिवार पहले पहलू—यानी ज्ञान पर आधारित बुद्धिमत्ता का विकास—को प्राथमिकता नहीं देते, बल्कि तीसरे पहलू—यानी समझदारी या विवेक (wisdom) को विकसित करने—पर ज़ोर देते हैं। नतीजतन, यहूदी बच्चों को कम उम्र से ही धार्मिक जीवन के माध्यम से समझदारी-केंद्रित शिक्षा मिलती है और वे उन सीखों को अपने रोज़मर्रा के जीवन में अपनाते हैं। उनका मानना है कि समझदारी ईश्वर का उपहार है और इसकी नींव ईश्वर के प्रति श्रद्धा या भय में है; इसका अर्थ है हमेशा इस बात का एहसास रखना कि ईश्वर विनम्र लोगों को समझदारी देता है। यहूदी समझदारी ओल्ड टेस्टामेंट (पुराने नियम) के भजनों (Psalms), नीतिवचनों (Proverbs), उपदेशक (Ecclesiastes) और अय्यूब (Job) जैसे ग्रंथों के साथ-साथ तालमुद और कानून (तोराह) में समाहित है। वे इन शिक्षाओं की सामग्री और स्वरूप को अपने जीवन के ढांचे में इस तरह शामिल करते हैं कि समझदारी उनकी अनूठी "ऊर्ध्वाधर संस्कृति" (vertical culture) में गहराई और व्यापकता से रच-बस जाती है। यहाँ, "ऊर्ध्वाधर संस्कृति" का तात्पर्य इतिहास, दर्शन, विचारधारा, परंपरा, क्लासिक्स और धर्म से बनी संस्कृति से है—वे तत्व जो किसी व्यक्ति की आंतरिक आध्यात्मिक दुनिया का निर्माण करते हैं। इसके विपरीत, "क्षैतिज संस्कृति" (horizontal culture) बाहरी, ठोस पहलुओं जैसे भौतिक धन, शक्ति, सम्मान, चलन (trends) और आधुनिक शैक्षणिक व वैज्ञानिक गतिविधियों को दर्शाती है। जहाँ ऊर्ध्वाधर संस्कृति कभी न बदलने वाली आत्मा के मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है, वहीं क्षैतिज संस्कृति उन चीजों का प्रतिनिधित्व करती है जो लगातार बदलती रहती हैं... ...ये सब शारीरिक या भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए होती हैं। यदि "ऊर्ध्वाधर संस्कृति" गहराई वाली संस्कृति है जो जीवन का अर्थ खोजती है, तो "क्षैतिज संस्कृति" सतही संस्कृति है जो जीवन का आनंद खोजती है। ऊर्ध्वाधर संस्कृति मानवीय आत्मा को मज़बूत करती है और एक ऐसे माध्यम के रूप में कार्य करती है जो आंतरिक आत्मविश्वास को विकसित करता है। यदि ऊर्ध्वाधर संस्कृति कंप्यूटर का हार्डवेयर है, तो

आधुनिक विद्वता और विज्ञान की तुलना सॉफ्टवेयर से की जा सकती है। ज्ञान का सही उपयोग तभी किया जा सकता है जब वह महान समझदारी पर आधारित हो।

भजन संहिता 78:4–5 के आज के अंश में, भजनकार "अगली पीढ़ी को बताने" (पद 4) का संकल्प लेता है और हमें "उन्हें अपने बच्चों को बताने" (पद 5) के लिए प्रेरित करता है। इसलिए, "उन्हें अपने बच्चों को बताएं" शीर्षक के तहत, मैं आज के पाठ से तीन सीख बताना चाहता हूँ कि हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों को क्या सौंपना चाहिए।

पहली बात, जो हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों को बतानी चाहिए, वह है ईश्वर के कार्य। भजन संहिता 78:4 और 7 को देखिए: "हम उन्हें उनके बच्चों से नहीं छिपाएंगे; हम अगली पीढ़ी को प्रभु के प्रशंसनीय कामों, उनकी शक्ति और उनके किए गए चमत्कारों के बारे में बताएंगे" (पद 4); "...परमेश्वर के कामों को न भूलें..." (पद 7)। आज के हिस्से में भजनकार ने इज़राइल के लोगों को परमेश्वर के जिन कामों के बारे में बताया है, उनमें लाल सागर पार करने से लेकर जंगल में हुई घटनाएँ (पद 12–22) तक सब कुछ शामिल है (पार्क युन-सन)। पद 12 से शुरू करते हुए, भजनकार बताता है कि कैसे परमेश्वर ने बहुत पहले, इज़राइलियों के पूर्वजों के समय में मिस्र देश में "चमत्कार" किए थे। ये "चमत्कार" क्या थे? इनमें शामिल हैं: लाल सागर को दो भागों में बांटना और पानी को ढेर की तरह खड़ा कर देना ताकि इज़राइली उसमें से गुजर सकें (पद 13); दिन में बादल और रात में आग की रोशनी से जंगल में इज़राइलियों का मार्गदर्शन करना (पद 14); जंगल में चट्टान को तोड़कर पानी निकालना ताकि लोग जी भरकर पी सकें (पद 15–16, 20); और स्वर्ग के द्वार खोलकर उन पर मन्ना—स्वर्गीय भोजन—की वर्षा करना (पद 23 और आगे)। फिर भी, समस्या क्या थी? इसका जवाब पद 11 में मिलता है: "वे भूल गए कि उसने क्या किया था और उसने उन्हें कौन-से चमत्कार दिखाए थे।" परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों के लिए कई अद्भुत काम किए, फिर भी वे उन सभी चमत्कारों को भूल गए जो उसने किए थे। वे भूल गए—सच तो यह है कि वे बहुत आसानी से भूल गए—उन चमत्कारी कामों को जो परमेश्वर ने किए थे। हालाँकि, ऐसा नहीं लगता कि यह समस्या सिर्फ़ इस्राएलियों की ही है। हम भी बहुत आसानी से उन बातों को भूल जाते हैं जो परमेश्वर ने हमारे पिछले जीवन में की हैं और उस कृपा को जो उसने हम पर की है। इसलिए, जैसे भजनकार ने संकल्प किया और उसे पूरा किया (भजन संहिता

77:11), हमें भी परमेश्वर के "पुराने अद्भुत कामों"—यानी हमारे अपने जीवन में किए गए कामों—को याद रखने और उन पर अमल करने का संकल्प लेना चाहिए।

दूसरी बात, हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों को परमेश्वर की आज्ञाओं के बारे में बताना चाहिए।

भजन संहिता 78:5 और 7 पर विचार करें: "उसने याकूब में एक गवाही स्थापित की और इस्राएल में एक नियम ठहराया, जिसकी आज्ञा उसने हमारे पूर्वजों को दी कि वे अपने बच्चों को सिखाएँ" (पद 5), "..." "...ताकि वे उसकी आज्ञाओं का पालन करें" (पद 7)। परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों—जो उसके वाचा के लोग थे—के लिए "नियम" ठहराए और उन्हें आज्ञा दी कि वे इन्हें अपनी आने वाली पीढ़ियों को सिखाएँ (पद 5)। इसके अलावा, उसने आज्ञा दी कि वे आने वाली पीढ़ियाँ, बदले में, अपने बच्चों को परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना सिखाएँ (पद 7)। यहाँ, परमेश्वर के "नियमों" का अर्थ संकीर्ण रूप में उन दस आज्ञाओं के रूप में लिया जा सकता है जो मूसा को मिस्र से निकलने के दौरान सीनै पर्वत पर मिली थीं, या व्यापक रूप से परमेश्वर की सभी आज्ञाओं के रूप में। "नियम" शब्द के अलावा, भजनकार पद 5 के पहले भाग में "गवाही" शब्द का भी उपयोग करता है। यह शब्द एक ऐसी गवाही को दर्शाता है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस बात की गवाही देती है कि परमेश्वर ने खुद को अपने लोगों पर प्रकट किया है (पार्क युन-सन)। इस आत्म-प्रकटीकरण का एक उदाहरण व्यवस्थाविवरण 6:4 में मिलता है: "हे इस्राएल, सुन: यहोवा हमारा परमेश्वर, यहोवा एक ही है!" हालाँकि, समस्या का वर्णन भजन संहिता 78:10 में किया गया है: "उन्होंने परमेश्वर की वाचा का पालन नहीं किया; उन्होंने उसके नियम पर चलने से इनकार कर दिया।" यह हिस्सा इस बात की ओर इशारा करता है कि एप्रैम के वंशज—हालांकि वे लड़ाई में स्वाभाविक रूप से कुशल थे (उत्पत्ति 49:24)—कनान की विजय के दौरान हार गए (न्यायियों 1:29) (पार्क युन-सन)। इस हार का कारण उनकी आज्ञा न मानना और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन न करने में विश्वास की कमी थी। भजनहार ने इस्राएल के पूर्वजों द्वारा की गई आज्ञा न मानने और अविश्वास की गलतियों को इस प्रकार दर्ज किया है: "परमेश्वर के विरुद्ध लगातार पाप करना और जंगल में परमप्रधान के विरुद्ध विद्रोह करना" (भजन संहिता 78:17); लालच के कारण अपने दिलों में "परमेश्वर की परीक्षा लेना" (पद 18); और परमेश्वर की शक्ति पर संदेह करना (पद 19-20)। इसके अलावा, इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर के विरुद्ध बातें कहीं, यह सवाल उठाते हुए कि क्या वह जंगल में मेज़

सजा सकते हैं—यह पूछते हुए कि, भले ही उन्होंने चट्टान पर प्रहार किया जिससे पानी की धाराएँ बह निकलीं, क्या वह अपने लोगों के लिए रोटी और मांस का प्रबंध भी कर सकते हैं (पद 19-20)। एकमात्र सच्चे परमेश्वर ने इस्राएल के पूर्वजों और हम दोनों को आज्ञा दी है: "जो बातें मैं आज तुम्हें बताता हूँ, वे तुम्हारे दिल में होनी चाहिए। तुम उन्हें अपने बच्चों को ध्यान से सिखाओगे, और जब तुम अपने घर में बैठोगे, रास्ते पर चलोगे, लेटोगे और उठोगे, तब उनके बारे में बात करोगे। तुम उन्हें अपने हाथ पर एक निशान के रूप में बाँधोगे, और वे तुम्हारी आँखों के बीच माथे पर पट्टी की तरह होंगे।" "तुम उन्हें अपने घर के दरवाज़ों की चौखटों और अपने फाटकों पर लिखना" (व्यवस्थाविवरण 6:6–9)। परमेश्वर इस्राएल के लोगों को—और हमें भी—आज्ञा देते हैं कि हम उनकी आज्ञाओं को अपने दिलों में बसाएँ और अपने बच्चों को उन्हें अच्छी तरह सिखाएँ।

तीसरी बात, हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों को यह बताना है कि परमेश्वर पर भरोसा रखना कितना ज़रूरी है।

बाइबल में भजन संहिता 78:7 को देखें: "...ताकि वे परमेश्वर पर भरोसा रखें..."। आज के इस हिस्से में, भजनकार इस्राएल के पापों के इतिहास का ज़िक्र करता है ताकि वह अपने समय के लोगों और उनकी आने वाली पीढ़ियों को चेतावनी दे सके (पार्क युन-सन)। उसका मकसद इस्राएल के लोगों को पाप करने से रोकना है—जैसा उनके पूर्वजों ने किया था—जब वे परमेश्वर के अद्भुत कामों को भूल गए और उनकी आज्ञाओं को नहीं माना। एक तरह से देखें तो, भजनकार का निष्कर्ष अविश्वास नहीं, बल्कि विश्वास है। दूसरे शब्दों में, निष्कर्ष यह है कि हमें परमेश्वर पर शक करने के बजाय उन पर भरोसा करना चाहिए। ऐसा करने के लिए, इस्राएल के लोगों और हम सभी को परमेश्वर के अद्भुत कामों को याद रखना होगा और उनकी आज्ञाओं का पालन करना होगा। एक और नज़रिए से देखें तो, केवल परमेश्वर पर विश्वास करके ही हम सचमुच उनके अद्भुत कामों को याद रख सकते हैं और उनकी आज्ञाओं का पालन कर सकते हैं (पार्क युन-सन)। भविष्यद्वक्ता यशायाह हमें सलाह देते हैं: "प्रभु पर सदा भरोसा रखो, क्योंकि प्रभु परमेश्वर एक अटूट चट्टान है" (यशायाह 26:4)। सिर्फ़ परमेश्वर ही हमारे सदा के भरोसे के पात्र हैं। हमें प्रभु पर भरोसा रखना चाहिए, जो हमारी अटूट चट्टान हैं, और हमें अपने बच्चों के सामने ऐसा जीवन जीना चाहिए।

यह उस समय की कहानी है जब मेरे अंकल, स्वर्गीय पादरी किम चांग-ह्युक, कैंसर के कारण अस्पताल में भर्ती थे। एक सोमवार सुबह जब मैं उनसे मिलने गया, तो हमने बातचीत की और खूब हँसे-मज़ाक भी किया। ज़ाहिर है, हमने उनकी पत्नी और उनके दो बच्चों के बारे में भी बात की। उस बातचीत के दौरान, उन्होंने खास तौर पर उन नामों का ज़िक्र किया जो उन्होंने अपने होने वाले पोते-पोतियों के लिए सोचे थे। अपने बड़े बेटे के लिए, उन्होंने लड़के का नाम "स्यूंग-ग्योम" और लड़की का नाम "ये-सोन" सोचा था। जहाँ तक उनके दूसरे बेटे की बात है, तो उन्होंने लड़के के लिए "स्यूंग-ये" और लड़की के लिए "ये-बांग" नाम बताए, अगर भविष्य में उसकी शादी होती है और बच्चे होते हैं। उन्होंने अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए ये नाम क्यों चुने? मुझे लगता है कि इसके दो कारण थे: "नम्रता" और "बचाव" (सावधानी)। उन्हें लगता था कि उनमें घमंड आ सकता है, इसलिए उन्होंने ऐसे नाम चुने ताकि उनके बड़े बेटे के बच्चे "नम्रता" अपनाएँ, जबकि दूसरे बेटे के बच्चों के लिए उन्होंने "बचाव" (गलतियों या मुश्किलों से बचने) के विचार से नाम चुने। अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों के लिए चुने गए नामों पर सोचते हुए, मुझे एहसास हुआ कि समझदार व्यक्ति वही है जो नम्र होता है और सावधानी बरतता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि समझदार लोग परमेश्वर से डरते हैं और इसलिए उनके सामने घमंड नहीं करते। इसके बजाय, समझदार लोग नम्रता से उन कामों को याद करते हैं जो परमेश्वर ने उनके जीवन में किए हैं और उनकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। साथ ही, समझदार लोग कभी भी खुद पर या दुनिया पर भरोसा नहीं करते; वे पूरी तरह से प्रभु पर भरोसा रखते हैं। मेरी प्रार्थना है कि जब तक प्रभु हमें अपने पास नहीं बुला लेते, तब तक हम—आप और मैं—अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों को परमेश्वर के कामों, उनकी आज्ञाओं और केवल परमेश्वर पर भरोसा रखने के महत्व के बारे में सिखाएँ और अपने शब्दों और जीवन के ज़रिए उन्हें यह करके दिखाएँ।

एक बेचैन दिल

[भजन संहिता 78:23–41]

पिछले सोमवार को मैं अपनी माँ को MRI और CT स्कैन के लिए अस्पताल ले गया। जब MRI हो रहा था, तो जिस कमरे में डॉक्टर और टेक्नीशियन थे, उसका दरवाज़ा खुला था, जिससे मुझे मॉनिटर पर अपनी माँ की एक झलक मिल गई। मुझे बताया गया कि नतीजों को आने में कुछ समय लगेगा। अपनी माँ की शारीरिक सेहत का पता लगाने के लिए हो रहे इन स्कैन के बारे में सोचते हुए, मैंने विचार किया कि—जबकि ऐसे मेडिकल तरीकों से शरीर की जाँच की जा सकती है—हम इंसानी दिल की जाँच कैसे कर सकते हैं। मुझे ख्याल आया कि हम परमेश्वर के वचन के ज़रिए अपने दिलों की जाँच कर सकते हैं।

याकूब 1:7–8 में, प्रेरित याकूब लिखते हैं, "उस व्यक्ति को प्रभु से कुछ भी पाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। ऐसा व्यक्ति दोहरे मन वाला होता है और अपने हर काम में अस्थिर होता है।" वे सिखाते हैं कि अस्वस्थ दिल की पहचान "दोहरा मन" और स्थिरता की कमी है। दोहरा मन एक बँटा हुआ, बिखरा हुआ दिल होता है—जो लाज़मी तौर पर डगमगाता और बदलता रहता है। झूठ से भरा ऐसा दिल लगातार चंचलता और अप्रत्याशित हालात पैदा करता है। चूँकि यह न तो पूरा होता है और न ही स्वस्थ, इसलिए इस तरह का दिल आसानी से घायल हो जाता है, निराश हो जाता है और टूट सकता है। कमज़ोर और ज़िंदगी के तनावों को झेलने में असमर्थ होने के कारण, यह इंसान को एक स्वस्थ, जीवंत ज़िंदगी से दूर खींचकर अर्थहीनता और सुस्ती भरी ज़िंदगी में ले जाता है। यह एक बीमार दिल है। इसीलिए नीतिवचन 4:23 हमें हिदायत देता है: "सबसे बढ़कर, अपने दिल की हिफ़ाज़त करो, क्योंकि तुम जो कुछ भी करते हो, वह उसी से निकलता है।" भजन संहिता 78:37 में, भजनकार ऐसे दिल के बारे में बात करता है जो स्थिर नहीं है: "क्योंकि उनका दिल उसकी ओर स्थिर नहीं था, और न ही वे उसके वाचा के प्रति वफ़ादार थे।" यहाँ इस बात का क्या मतलब है

कि इस्राएलियों के दिल स्थिर नहीं थे? इसका मतलब है कि उनकी आत्माएँ परमेश्वर के प्रति वफ़ादार नहीं थीं (पद 8)। दूसरे शब्दों में, जो दिल स्थिर नहीं होता, वह बेवफ़ा दिल होता है। ऐसा बेवफ़ा दिल न तो परमेश्वर की वाचा के प्रति वफ़ादार होता है और न ही वफ़ादार रहने के काबिल होता है (पद 37)। मैं अस्थिर दिल के इस विचार पर तीन तरह से सोचना चाहूँगा, और इसे अपने दिलों की जाँच करने के एक मौके के तौर पर इस्तेमाल करूँगा। मेरी प्रार्थना है कि हम अपने परखे हुए दिलों को परमेश्वर पिता के सामने रखें, पश्चाताप के ज़रिए शुद्धि पाएँ, और ऐसे दिल पाएँ जो स्थिर हों।

सबसे पहले, जो दिल स्थिर नहीं होता, वह लालच के पीछे भागता है।

भजन संहिता 78:30 को देखें: "वे अपनी लालसा से पीछे नहीं हटे; जबकि भोजन अभी उनके मुँह में ही था..." भजनकार इस्राएलियों को पाप न करने की चेतावनी देता है और उनसे कहता है कि वे अपने पूर्वजों को एक चेतावनी भरे उदाहरण के तौर पर देखें। ऐसा करते हुए, वह उनके पूर्वजों द्वारा किए गए लालच के पाप का वर्णन करता है: "उन्होंने अपनी इच्छा के अनुसार भोजन की माँग की और अपने दिलों में परमेश्वर की परीक्षा ली" (पद 18)। मिस्र से निकलने के समय इस्राएलियों के पूर्वजों ने अपने लालच के ज़रिए परमेश्वर की परीक्षा कैसे ली? आज के अंश, भजन संहिता 78:19–20 को देखें: "हाँ, उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध यह कहते हुए बात की, 'क्या परमेश्वर जंगल में मेज़ सजा सकते हैं? देखो, उन्होंने चट्टान पर प्रहार किया जिससे पानी की धाराएँ फूट पड़ीं और नदियाँ बहने लगीं। क्या वह रोटी भी दे सकते हैं? क्या वह अपने लोगों के लिए मांस का प्रबंध कर सकते हैं?'" इस्राएल के पूर्वजों ने परमेश्वर की शक्ति पर संदेह किया। हालाँकि इसके कारण परमेश्वर उन पर बहुत क्रोधित हुए, फिर भी उन्होंने ऊपर बादलों को आज्ञा दी और स्वर्ग के द्वार खोल दिए; उन्होंने उनके खाने के लिए मन्ना बरसाया और उन्हें स्वर्ग का अनाज दिया (पद 23–24)। अगर यह परमेश्वर की कृपा नहीं है तो क्या है? इस्राएल के पूर्वजों के लिए—जो उनके क्रोध के बीच सज़ा के हकदार थे—परमेश्वर ने "इसके बजाय" स्वर्ग खोल दिया और मन्ना बरसाया। परमेश्वर ने इस्राएल के उन लोगों को भरपूर भोजन दिया जो उनकी परीक्षा ले रहे थे (पद 25)। अपनी शक्ति से (पद 26), उन्होंने "धूल की तरह" मांस बरसाया (पद 27), और इस्राएल के लोगों ने खाया और तृप्त हुए (पद 29)। परमेश्वर ने उन्हें उनकी अपनी इच्छाओं के अनुसार भोजन दिया (पद 29)। फिर भी, इस्राएल के लोग अपने लालच से पीछे नहीं हटे (पद 30)। भोजन की कमी होने पर उन्होंने पाप किया, और भोजन मिलने पर भी उन्होंने पाप किया; क्योंकि वे सचमुच सुधरने वाले नहीं थे, इसलिए आखिरकार परमेश्वर ने उन्हें सज़ा दी (गिनती 11:33–35; भजन संहिता

78:31) (पार्क युन-सन)। बाइबल में याकूब 1:15 में लिखा है, "फिर, जब इच्छा जन्म लेती है, तो वह पाप को जन्म देती है; और पाप, जब पूरा बढ़ जाता है, तो मौत लाता है।" आखिरकार, लालच का नतीजा मौत ही होता है। फिर भी, इंसानी लालच की कोई सीमा नहीं दिखती; कभी न भरने वाली भूख लालच की फितरत ही है। पिछले हफ़्ते, चर्च के काम से एक ईसाई किताबों की दुकान पर जाते समय, मुझे *हीडेज़ होप* (ली ही-डे की लिखी) नाम की एक किताब मिली। लेखक—जो खुद कैंसर से जूझ चुके एक ऑन्कोलॉजिस्ट थे—के बारे में यह जानकर कि उन्होंने भगवान की कृपा से ठीक होने के बाद यह किताब लिखी थी, मेरी दिलचस्पी जगी और मैंने इसे खरीदने और पढ़ने का फैसला किया। जब मैंने स्टेज 4 कैंसर से लड़ने के बाद लेखक के "जीवन के पांचवें चरण"—जिसे भगवान ने तैयार किया था—के अनुभव के बारे में पढ़ा, तो कैंसर सेल्स के बारे में उनके वर्णन ने मुझे खास तौर पर आकर्षित किया। लेखक के अनुसार, कैंसर सेल्स उन सेल्स में जेनेटिक म्यूटेशन (आनुवंशिक बदलाव) से पैदा होते हैं जिन्हें आम तौर पर बढ़ने और मरने के चक्र से गुजरना चाहिए; इसके बजाय, वे ऐसे सेल्स बन जाते हैं जो कभी नहीं मरते और लगातार बढ़ते रहते हैं। कैंसर सेल्स को जो चीज़ इतना डरावना बनाती है, वह यह है कि वे अपनी लगातार बढ़ोतरी के लिए दूसरे सेल्स के हिस्से के पोषक तत्वों पर कब्ज़ा कर लेते हैं। दूसरे शब्दों में, वे लगातार एक जगह से दूसरी जगह जाते रहते हैं, और बढ़ने के लिए ज़्यादा कैलोरी वाले पोषक तत्व छीनकर जमा करते रहते हैं। संक्षेप में, लेखक कैंसर सेल के मूल स्वभाव को लालच के रूप में परिभाषित करते हैं। हमें लालच को छोड़ देना चाहिए। ऐसी दुनिया में रहते हुए जो लगातार हमारे लालच को बढ़ावा देती है, हमें—हर पल, हर दिन—अपने अंदर उठने वाले लालच को क्रूस के चरणों में सौंप देना चाहिए। यीशु की तरह, हमें लगातार अपने दिलों को खाली करना चाहिए; हमें बार-बार चीज़ों को छोड़ना चाहिए। हमें अपने दिलों को यीशु के दिल से भरना चाहिए। हमें सिर्फ़ यीशु में संतोष पाने का रहस्य सीखना चाहिए। हमें हर हाल में मसीह यीशु में मिले अनंत जीवन के उपहार (रोमियों 6:23) और भगवान के अटूट प्रेम (रोमियों 8:38–39) के लिए धन्यवाद देना चाहिए। इसलिए, हमें अब लालच को—जो बिल्कुल कैंसर सेल की तरह काम करता है—अपने दिलों पर हावी नहीं होने देना चाहिए। दूसरी बात, जिस दिल में दृढ़ता की कमी होती है, वह भगवान पर विश्वास नहीं करता। भजन संहिता 78:32 पर गौर करें: “इतना सब होने पर भी, वे पाप करते रहे; उनके चमत्कार देखने के बावजूद, उन्होंने विश्वास नहीं किया।” हालाँकि मिस्र से निकलने के दौरान परमेश्वर ने दया करके स्वर्ग के द्वार खोले और इस्राएलियों के लिए भरपूर मात्रा में मन्ना बरसाया, फिर भी उनका लालच शांत नहीं हुआ। अपनी कभी न

बुझने वाली इच्छाओं के कारण परमेश्वर का क्रोध और सज़ा झेलने के बाद भी (पद 31), वे पाप करते रहे और परमेश्वर के चमत्कारी कामों पर विश्वास करने में नाकाम रहे (पद 32)। आखिरकार, उन्होंने अपने लालच के कारण परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया; लालच ने ही पाप को जन्म दिया था। असल में, वह पाप "अविश्वास" था। भजनकार ने मिस्र से निकलने के दौरान इस्राएलियों के पाप की पहचान इस तरह की: "क्योंकि उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया और न ही उनके उद्धार पर भरोसा किया" (पद 22)। लाल सागर से लेकर जंगल के सफ़र तक परमेश्वर द्वारा किए गए अनेक चमत्कारों के बावजूद, इस्राएली उन पर विश्वास करने या उनके उद्धार पर भरोसा करने में नाकाम रहे, जिससे उनका भयंकर क्रोध भड़क उठा (पद 21)। नतीजतन, परमेश्वर ने उनके दिनों को साँस की तरह गायब कर दिया और उनके वर्षों को डर में खत्म कर दिया (पद 33)। तभी उन्होंने सच्चे मन से परमेश्वर को खोजा और याद किया कि वही उनकी चट्टान और परमप्रधान परमेश्वर उनके उद्धारकर्ता थे (पद 34–35)। यूहन्ना 20:30–31 में, प्रेरित यूहन्ना बताते हैं कि यीशु ने यूहन्ना के सुसमाचार में दर्ज चमत्कारों के अलावा और भी कई चमत्कार किए, और इसका मकसद यह था: "ताकि तुम विश्वास करो कि यीशु ही मसीह, परमेश्वर का पुत्र है, और विश्वास करने से तुम्हें उसके नाम में जीवन मिले।" यीशु ने लोगों से आग्रह किया कि अगर वे उन पर विश्वास नहीं करते, तो कम से कम उनके द्वारा किए गए कामों के आधार पर "मुझ पर विश्वास करें" (यूहन्ना 10:38; 14:11)। पुनर्जीवित यीशु ने एम्माउस के रास्ते पर दो चेलों से जो शब्द कहे थे—जो लूका 24:25 में दर्ज हैं—वे आज भी सच हैं और हम पर भी लागू होते हैं: "हे नासमझो, और भविष्यद्वक्ताओं की कही हुई बातों पर विश्वास करने में सुस्त दिल वालों!" सचमुच, हम अक्सर नासमझ होते हैं और परमेश्वर के वचन पर विश्वास करने में सुस्त होते हैं। फिर भी, विश्वास करने में इस सुस्ती के बारे में पौलुस साफ तौर पर कहते हैं: "...जो कुछ विश्वास से नहीं है, वह पाप है" (रोमियों 14:23)। इसलिए, अपने विश्वास में बढ़ने के लिए, हमें मसीह की बातों को ध्यान से सुनना चाहिए (रोमियों 10:17)। नतीजतन, हमें अब उन लोगों जैसा नहीं होना चाहिए जिन्हें दूध की ज़रूरत होती है और जो ठोस भोजन नहीं खा सकते (इब्रानियों 5:12)। हमें अब ऐसे लोग नहीं बने रहना चाहिए जो "धार्मिकता के वचन में कुशल नहीं हैं" (पद 13)। इसके बजाय, हमें परिपक्व बनना चाहिए, "जो अभ्यास के कारण अच्छे और बुरे में फर्क करने के लिए अपनी समझ का इस्तेमाल करते हैं" (पद 14)।

तीसरी बात, अस्थिर मन झूठ बोलता है।

भजन संहिता 78:36 पर विचार करें: "फिर भी उन्होंने अपने मुँह से उसकी खुशामद की, और अपनी जीभ से उससे झूठ बोला।" जब इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर पर विश्वास न करके पाप किया, तो उन पर परमेश्वर का क्रोध भड़क उठा। हालाँकि बाइबल कहती है कि वे परमेश्वर की ओर लौटे और सच्चे मन से उसे खोजा (पद 34), लेकिन उनका वह पश्चाताप केवल खुशामद से ज़्यादा कुछ नहीं था। दूसरे शब्दों में, उनका पश्चाताप केवल खोखली खुशामद थी जिसका मकसद परमेश्वर को खुश करना था। उनके पश्चाताप के केवल खुशामद होने के दो कारण बताए गए हैं: पहला, यह परमेश्वर पर केंद्रित नहीं था बल्कि पूरी तरह से स्वार्थ से प्रेरित था; और दूसरा, यह परमेश्वर को खुश करने की केवल बाहरी कोशिश थी, जिसमें अपने पाप के लिए कोई सच्चा पछतावा या दिल से निकला दुख नहीं था (पार्क युन-सन)। इस्राएलियों की इस प्रवृत्ति के बारे में, भविष्यद्वक्ता यशायाह ने कहा: "प्रभु कहता है: 'ये लोग अपने मुँह से मेरे पास आते हैं और अपने होंठों से मेरा आदर करते हैं, लेकिन उनके दिल मुझसे दूर हैं। मेरी उनकी उपासना केवल उन इंसानी नियमों पर आधारित है जो उन्हें सिखाए गए हैं'" (यशायाह 29:13)। आखिरकार, जबकि उनके होंठ प्रभु के प्रति समर्पित लग रहे थे, उनके दिल उससे बहुत दूर चले गए थे। चूँकि उनके दिल इस तरह अस्थिर थे, इसलिए वे परमेश्वर के साथ किए गए वाचा के प्रति वफादार नहीं रह पाए (भजन संहिता 78:37)। फिर भी, जो बात सचमुच अद्‌भुत है, वह है परमेश्वर की उन लोगों के प्रति वफादार कृपा, जो उसकी वाचा के प्रति बेवफा थे। कृपया आज का वचन देखें, भजन संहिता 78:38–39: "फिर भी वह दयालु था; उसने उनके पापों को क्षमा कर दिया और उन्हें नष्ट नहीं किया। बार-बार उसने अपने क्रोध को रोका और अपना पूरा गुस्सा नहीं भड़काया। उसे याद रहा कि वे केवल मांस-शरीर थे—एक गुज़रती हुई हवा जो कभी लौटकर नहीं आती।" यह जानते हुए कि इस्राएल के लोग—जिन्होंने झूठ बोला और पाप किए—केवल मांस-शरीर (इंसानी जीवन) थे, जो गुज़रती हुई हवा की तरह हैं और कभी लौटकर नहीं आते, परमेश्वर ने अपना क्रोध हटा लिया और अपनी दया से, उन्हें नष्ट करने के बजाय उनके पापों को क्षमा कर दिया। फिर भी, इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर के विरुद्ध ये पाप किए: "उन्होंने जंगल में कितनी बार उसके विरुद्ध विद्रोह किया और वीराने में उसे दुखी किया! बार-बार उन्होंने परमेश्वर की परीक्षा ली; उन्होंने इस्राएल के पवित्र परमेश्वर को नाराज़ किया" (पद 40–41)। वे परमेश्वर की कृपा और दया को भूल गए, और बार-बार उनकी परीक्षा लेते रहे और उन्हें दुखी करते रहे।

कल सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, मैंने प्रकाशितवाक्य 14:5 के इन शब्दों पर मनन किया: “उनके मुँह में कोई झूठ नहीं पाया गया; वे निर्दोष हैं।” इस वचन का अर्थ है कि जिन्हें छुटकारा मिला है—जो परमेश्वर और मेमने के हैं, विशेष रूप से परमेश्वर की प्रतीकात्मक 1,44,000 संतानें—उनके मुँह में कोई झूठ नहीं है। यहाँ, छुटकारा पाए लोगों के मुँह में झूठ का न होना "ईमानदार बातचीत और आचरण" को दर्शाता है (पार्क युन-सन)। नीतिवचन 6:16–17 में कहा गया है कि "झूठी जीभ" उन चीज़ों में से एक है जिनसे परमेश्वर घृणा करते हैं। इसलिए, हमें झूठी जीभ को त्याग देना चाहिए। छुटकारा पाए लोगों के रूप में, हमें झूठ से मुक्त होना चाहिए; दूसरे शब्दों में, हमारा हृदय और जीभ सत्यवादी होने चाहिए।

परमेश्वर ने अपना क्रोध "कई बार" हटा लिया (भजन संहिता 78:38), फिर भी इस्राएल के लोगों ने उन्हें "बार-बार" दुखी किया (पद 40)। हालाँकि परमेश्वर ने अपना क्रोध पूरी तरह से नहीं बरसाया, फिर भी इस्राएलियों ने अपने लालच को पूरी तरह से पूरा किया और उनके विरुद्ध पाप किया। संक्षेप में, परमेश्वर ने अपने क्रोध को रोककर रखा, जबकि निर्गमन (Exodus) के युग के इस्राएली अपने लालच को रोकने में विफल रहे। परमेश्वर ने इस्राएलियों पर दया और करुणा दिखाई (पद 23), फिर भी उन्होंने उनके विरुद्ध पाप किया और उनके चमत्कारी कार्यों पर विश्वास करने से इनकार कर दिया (पद 32)। इस्राएली परमेश्वर के साथ किए गए वाचा (नियम) के प्रति अविश्वासी रहे (पद 37), लेकिन परमेश्वर उसके प्रति वफादार रहे। जहाँ इस्राएलियों में परमेश्वर के प्रति दृढ़ हृदय का अभाव था, वहीं परमेश्वर ने अपने लोगों, इस्राएल से दृढ़ हृदय के साथ प्रेम किया। हम देखते हैं कि परमेश्वर का वफादार और वाचा-संबंधी प्रेम इस्राएलियों का पीछा करता रहा, जबकि वे पाप की ओर भागते रहे। जो हृदय परमेश्वर के इस वफादार प्रेम का अनुभव करता है... मैं ऐसे हृदय के साथ उनकी सेवा करूँगा जो दृढ़ता से उन पर टिका हो। लालच के बजाय, मैं केवल यीशु में ही संतोष पाऊँगा; मैं परमेश्वर के अद्भुत कामों पर विश्वास करूँगा और उनके उद्धार पर भरोसा रखूँगा, और मैं सच्चे दिल और ज़बान से परमेश्वर की महिमा करने वाला जीवन जीऊँगा।

सच्चे दिल से

[भजन संहिता 78:42–72]

पिछले हफ़्ते, भजन संहिता 78:23–41 पर ध्यान देते हुए, हमने "अस्थिर दिल"—यानी ऐसे दिल जिसमें स्थिरता या सच्चाई की कमी हो—के स्वभाव पर मनन किया। हमने सीखा कि ऐसा दिल लालच के पीछे भागता है, परमेश्वर के प्रति अविश्वास और शक रखता है, और झूठ बोलता है। इसराइल के पूर्वजों के बारे में सोचते हुए—जिनका पछतावा सिर्फ़ दिखावा था, जहाँ होंठ तो प्रभु का सम्मान करते दिखते थे लेकिन दिल उनसे दूर रहता था—हमने अपने दिलों की जाँच करने के लिए समय निकाला। इन विचारों के बीच, यिर्मयाह 17:9 के शब्द याद आए: "दिल सब चीज़ों से ज़्यादा धोखेबाज़ और बहुत बुरा होता है; इसे कौन जान सकता है?" यीशु ने क्रूस पर बहाए अपने कीमती लहू से इस भ्रष्ट दिल को शुद्ध किया है। नतीजतन, हमें एक नया दिल मिला है। फिर भी, हम अपने अंदर एक अस्थिर दिल महसूस करते हैं। तो फिर, हम ऐसे दिल की रक्षा और उसे बेहतर कैसे बना सकते हैं?

आज सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, मैंने भजन संहिता 26:2 पर मनन किया: "हे प्रभु, मेरी जाँच कर और मुझे परख; मेरे मन और दिल को आज़मा।" इस आयत के आधार पर, मैंने उन तीन तरीकों पर विचार किया जिनसे हम अपने दिलों को बेहतर बना सकते हैं। पहला, बौद्धिक पहलू के बारे में, मुझे एहसास हुआ कि अपने दिलों को बेहतर बनाने के लिए, हमें "तेरा सत्य" (आयत 3) जानने की कोशिश करनी चाहिए। दूसरा, अपनी भावनाओं के अनुशासन के बारे में, मुझे एहसास हुआ कि प्रभु के प्रति "प्रेम" (आयत 8) हमारे दिलों में प्रेरणा की शक्ति होनी चाहिए। तीसरा, अपनी इच्छाशक्ति के अनुशासन के बारे में, मुझे एहसास हुआ कि हमें "ईमानदारी से चलना" चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे भजनकार दाऊद ने किया (आयत 11)। दूसरे शब्दों में, मैंने यह सबक सीखा कि हमें ईमानदारी से अपना जीवन जीना चाहिए।

भजन संहिता 78 में, आखिरी आयत (आयत 72) परमेश्वर के बारे में भजनकार की बात बताती है: "इसलिए उसने अपने दिल की ईमानदारी के अनुसार उनकी चरवाही की, और अपने हाथों की कुशलता से उन्हें रास्ता दिखाया।" इस अंश पर ध्यान देते हुए—खासकर "अपने दिल की सच्चाई के साथ" वाक्यांश पर—मैं उन तीन तरीकों पर विचार करना चाहता हूँ जिनसे हमारे प्रभु, हमारे चरवाहे के रूप में, उसी सच्चाई के माध्यम से हम पर कृपा बरसाते हैं, और उस कृपा को ग्रहण करना चाहता हूँ जो वे हम सभी को देते हैं।

पहला, हमारे प्रभु, जो हमारे चरवाहे हैं, ने हमें प्यार से चुना।

भजन संहिता 78 की आयत 68 और 70 को देखें: "लेकिन उन्होंने यहूदा के गोत्र को चुना, सिय्योन पर्वत को जिससे वे प्रेम करते थे... उन्होंने अपने सेवक दाऊद को भी चुना, और उसे भेड़ों के बाड़े से लिया।" परमेश्वर का सर्वोच्च चुनाव स्पष्ट है; जिन्हें उन्होंने चुना और जिन्हें नहीं चुना, उनके बीच एक स्पष्ट अंतर है। जहाँ आयत 68 का कोरियाई अनुवाद "केवल" (*ओजिक*) शब्द से शुरू होता है, वहीं अंग्रेजी अनुवाद "लेकिन" से शुरू होते हैं। इस "लेकिन" का कारण आयत 67 के साथ इस आयत का अंतर दिखाना है: "इसके अलावा उन्होंने यूसुफ के तंबू को अस्वीकार कर दिया, और एप्रैम के गोत्र को नहीं चुना।" भजनकार स्पष्ट रूप से कहते हैं कि परमेश्वर ने एप्रैम के गोत्र को नहीं चुना—जो यूसुफ के दूसरे बेटे के वंशज थे। भजनकार कहते हैं कि जहाँ परमेश्वर ने एप्रैम के गोत्र को नहीं चुना, वहीं उन्होंने दाऊद को चुना (आयत 70)। इस प्रकार, परमेश्वर के चुनने और न चुनने के कार्य स्पष्ट हैं।

प्रेरित पौलुस परमेश्वर के इस स्पष्ट, सर्वोच्च चुनाव—और न चुनने—के बारे में बात करते हैं: "जैसा कि लिखा है: 'याकूब से मैंने प्रेम किया, लेकिन एसाव से मैंने घृणा की'" (रोमियों 9:13)। रोमियों अध्याय 9 विशेष रूप से परमेश्वर की सर्वोच्चता को संबोधित करता है। उल्लेखनीय है कि आयत 20 से कुम्हार का प्रसिद्ध दृष्टांत शुरू होता है। परमेश्वर को कुम्हार के रूप में बताते हुए, जिन्हें "एक ही लोई से एक बर्तन सम्मान के लिए और दूसरा अपमान के लिए" बनाने का अधिकार है (आयत 21), प्रेरित पौलुस रोमियों 9:20 में पूछते हैं: "लेकिन हे मनुष्य, तू कौन है जो परमेश्वर का उत्तर देता है? क्या बनाई हुई चीज़ उसे जिसने उसे बनाया है, यह कहेगी, 'तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया है?'" यहाँ सीख यह है कि कोई भी बनाई हुई चीज़ बनाने वाले की सर्वोच्चता को चुनौती देने की हिम्मत नहीं कर सकती। इसलिए, जैसे परमेश्वर ने अपनी मर्जी से एसाव के

बजाय याकूब को चुना, वैसे ही हमें आज के हिस्से (वचन 67–68) की इस शिक्षा को विनम्रता से स्वीकार करना चाहिए कि परमेश्वर ने दाऊद को चुना और एफ्राइम के कबीले को नहीं चुना।

इफिसियों 1:4 के जाने-माने हिस्से में, प्रेरित पौलुस कहते हैं: "जैसे उसने दुनिया की नींव रखे जाने से पहले ही हमें उसमें चुन लिया था, ताकि हम प्रेम में उसके सामने पवित्र और दोषरहित हों।" परमेश्वर ने दुनिया की नींव रखे जाने से पहले ही मसीह में हमें चुन लिया था। परमेश्वर का यह चुनाव किसी भी तरह इसलिए नहीं किया गया था कि हमारे अंदर कुछ ऐसा था जिसने हमें चुने जाने के योग्य बनाया। परमेश्वर ने दुनिया की नींव रखे जाने से पहले ही बिना किसी शर्त के हमें चुना। हमारे परमेश्वर, जो चरवाहा हैं, ने हमसे प्रेम किया, हमें चुना और हमें अपनी भेड़ें बनाया।

दूसरी बात, हमारे परमेश्वर, जो चरवाहा हैं, ने उन्हें छुड़ाया जिन्हें उन्होंने चुना था।

भजन संहिता 78:42 को देखें: "उन्होंने उसकी शक्ति को याद नहीं किया, न ही उस दिन को जब उसने उन्हें दुश्मन से छुड़ाया था।" हालाँकि इज़राइल के पूर्वजों ने अविश्वास के कारण परमेश्वर की उस शक्ति को याद नहीं रखा जिसने उन्हें उनके दुश्मनों से छुड़ाया था, फिर भी परमेश्वर ने उस वाचा को याद रखा जो उसने अब्राहम के साथ बांधी थी और अपने सच्चे दिल से इज़राइल के लोगों को छुड़ाया। वचन 43 से आगे, भजनकार दुश्मनों से इज़राइल की मुक्ति की घटना का वर्णन करता है। यह वृत्तांत बताता है कि कैसे परमेश्वर ने—जब इज़राइल के पूर्वज मिस्र में गुलामी में जी रहे थे—उस देश पर दस विपत्तियाँ भेजीं (वचन 43–41) और आखिरकार फिरौन को लोगों को जाने देने के लिए मजबूर किया, और इस तरह मिस्र से "अपने लोगों" (वचन 52) को छुड़ाया। यहाँ "मुक्ति" (redemption) का क्या अर्थ है? छुड़ाने का अर्थ है कीमत चुकाकर कुछ खरीदना। जैसे गुलामों के बाज़ार में किसी गुलाम को खरीदा जाता है, वैसे ही मुक्ति का अर्थ है परमेश्वर का शैतान के बाज़ार से पापियों को खरीदने और उन्हें परमेश्वर के घर में लाने के लिए भारी कीमत चुकाना। आखिरकार, मुक्ति का अर्थ है कि परमेश्वर और यीशु ने शैतान के गुलामी वाले बाज़ार से हमें खरीदने के लिए लहू की कीमत चुकाई। कूच (Exodus) के दौरान दसवीं विपत्ति से पहले, परमेश्वर ने इज़राइलियों को आज्ञा दी कि वे अपने दरवाज़ों की चौखटों पर मेमने का लहू लगाएँ; वह लहू सीधे यीशु के लहू की ओर इशारा करता है—परमेश्वर का मेमना जो दुनिया के पाप को दूर करता है। छुटकारे की इस घटना पर सोचने

से हमें यशायाह 43:4 के शब्दों को समझने में मदद मिलती है: "क्योंकि तुम मेरी नज़र में अनमोल हो, तुम्हें सम्मान मिला है, और मैंने तुमसे प्रेम किया है; इसलिए मैं तुम्हारी जगह लोगों को और तुम्हारी जान के बदले अन्य जातियों को दे दूँगा।" परमेश्वर हमें अनमोल और सम्मानित क्यों मानते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि हमें यीशु के अनमोल लहू की कीमत देकर खरीदा गया है। हम परमेश्वर की नज़र में अनमोल और सम्मानित हो गए हैं क्योंकि यीशु हमारी जगह क्रूस पर मरे।

तीसरी बात, परमेश्वर, जो हमारे चरवाहे हैं, "सच्चे मन" से हमारी देखभाल करते हैं और हमें राह दिखाते हैं।

भजन संहिता 78:72 को देखिए: "इसलिए उन्होंने अपने सच्चे मन के अनुसार उनकी चरवाही की, और अपने हाथों की कुशलता से उन्हें राह दिखाई।" आज के भाग की 52वीं आयत में, भजनकार कहते हैं कि परमेश्वर ने एक चरवाहे की तरह काम करते हुए, इस्राएल के पूर्वजों को मिस्र से एक झुंड की तरह बाहर निकाला और उन्हें जंगल में भेड़ों के झुंड की तरह राह दिखाई। क्योंकि परमेश्वर ने इस्राएलियों को सुरक्षित रूप से राह दिखाई और उनकी अगुवाई की, इसलिए वे डर से मुक्त थे (आयत 53)। आखिरकार, परमेश्वर इस्राएलियों को कनान की प्रतिज्ञा की हुई भूमि में ले आए—जिसे "उनके पवित्र स्थान की सीमा, वह पर्वत जिसे उनके दाहिने हाथ ने हासिल किया था" (आयत 54) कहा गया है—जहाँ उन्होंने उनके सामने की जातियों को खदेड़ दिया, उन्हें विरासत के रूप में ज़मीन दी, और उन्हें वहाँ बसाया (आयत 55)। फिर भी, इस्राएल के पूर्वजों ने कैसा जवाब दिया? आज के भाग की आयतों 56–58 को देखिए: "फिर भी उन्होंने परमप्रधान परमेश्वर की परीक्षा ली और उनके विरुद्ध विद्रोह किया और उनकी आज्ञाओं को नहीं माना; वे मुड़ गए और अपने पूर्वजों की तरह विश्वासघाती काम किए; वे धोखेबाज़ धनुष की तरह मुड़ गए, अपनी ऊँची जगहों से उन्हें क्रोधित किया और अपनी खुदी हुई मूर्तियों से उन्हें जलन दिलाई।" हालाँकि परमेश्वर ने अपने सच्चे मन से इस्राएल के लोगों की चरवाही की और उनकी अगुवाई की (आयत 72), फिर भी उन्होंने परमेश्वर की परीक्षा ली, उनके विरुद्ध विद्रोह किया और उनके साथ विश्वासघात किया (आयत 56)। अपने विश्वासघात में, वे "धोखेबाज़ धनुष की तरह मुड़ गए," ऊँची जगहें बनाईं, और अपनी खुदी हुई मूर्तियों से परमेश्वर को क्रोधित किया (आयतें 57–58)। आखिरकार, अपने क्रोध में, परमेश्वर इस्राएल से बहुत घृणा करने लगे (आयत 59); उन्होंने इंसानों के बीच बनाए गए अपने "पवित्र डेरे" को छोड़ दिया (पद 60) और अपने लोगों को—जो उनकी "महिमा" थे—दुश्मन के हाथों और तलवारों के हवाले कर दिया (पद 60–61)। फिर भी, इन सबके

बीच, परमेश्वर ने दाऊद को चुना (पद 70) और "अपने सच्चे दिल" से उसकी अगुवाई की और उसे सही रास्ता दिखाया (पद 71–72)।

जब हमने भजन संहिता 78:23–41 पर विचार किया, तो देखा कि जब इस्राएलियों ने मिस्र से निकलने के दौरान लालच में आकर परमेश्वर की शक्ति की परीक्षा ली (पद 18–20), तब परमेश्वर ने "बदले में" स्वर्ग के दरवाज़े खोल दिए और उनके खाने के लिए मन्ना बरसाया (पद 23–24)। दूसरे शब्दों में, जब इस्राएल के लोगों ने पाप किया, तो परमेश्वर ने "बदले में" उन पर अपनी कृपा की। यह परमेश्वर की सच्ची कृपा और प्रेम के अलावा और कुछ नहीं हो सकता। यहाँ तक कि इस्राएल के उन लोगों के प्रति भी, जिनके दिल अस्थिर थे, परमेश्वर ने—अपने सच्चे दिल की वफ़ादारी के कारण—उनकी देखभाल की, उन्हें सही रास्ता दिखाया और उनकी अगुवाई की। यह परमेश्वर के दिल और इस्राएल के लोगों के दिलों के बीच के अंतर को दिखाता है: परमेश्वर का सच्चा दिल बनाम इस्राएल के लोगों के अस्थिर दिल।

हमारे दिल चंचल होते हैं, लेकिन परमेश्वर का दिल अडिग है। अपने अडिग दिल के साथ, परमेश्वर पिता ने दुनिया बनने से पहले ही हमें चुना, परमेश्वर पुत्र ने हमें छुटकारा दिलाया, और परमेश्वर पवित्र आत्मा हमारा मार्गदर्शन और अगुवाई करते हैं। चूँकि हमारे त्रिएक परमेश्वर—अपने दिल की अडिगता के कारण—हमें चुनते हैं, छुटकारा दिलाते हैं और मार्गदर्शन करते हैं (भले ही हमारे अपने दिल चंचल या अविश्वासी हों), तो भला हम पूरे दिल से उनकी स्तुति कैसे न करें?

“हे प्रभु, मैं पूरे दिल से तेरी स्तुति करता हूँ; तूने जो अद्‌भुत काम किए हैं, मैं दुनिया को उनके बारे में बताऊँगा। हे प्रभु, मैं पूरे दिल से तेरी स्तुति करता हूँ; मैं तुझमें आनंदित और प्रफुल्लित होता हूँ। हालेलुयाह, हे सर्वोच्च परमेश्वर, मैं तेरे नाम की स्तुति करता हूँ; हालेलुयाह।”

“हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर”

[भजन संहिता 79]

मैं भजन संहिता 34 पर मनन कर रहा हूँ, और खास तौर पर आयत 8 पर ध्यान दे रहा हूँ: “परखकर देखो कि यहोवा भला है; धन्य है वह मनुष्य जो उसकी शरण लेता है।” जो लोग परमेश्वर की शरण लेते हैं, उन्हें कौन सी भलाई—या आशीष—मिलती है? एक शब्द में कहें तो, यह “शरीर और आत्मा, दोनों का उद्धार” है। शारीरिक रूप से, यह “छुटकारा” है [(आयत 4) “...मुझे मेरे सारे डरों से छुटकारा दिया,” (आयत 6) “...उन्हें उनकी सारी मुसीबतों से बचाया,” (आयत 7) “...उन्हें छुटकारा देता है,” (आयत 17) “...उन्हें उनकी सारी मुसीबतों से छुटकारा दिया,” (आयत 18) “...उन लोगों को बचाता है जिनका मन टूटा हुआ है,” (आयत 19) “...उन्हें उनके सारे दुखों से छुटकारा देता है”]। आध्यात्मिक रूप से, जो लोग परमेश्वर की शरण लेते हैं, उन्हें वह जो आशीष देता है, वह है छुटकारा या मुक्ति [(आयत 22) “यहोवा अपने सेवकों की आत्मा को छुड़ाता है, और जो कोई उसकी शरण लेता है, उनमें से कोई भी दोषी नहीं ठहराया जाएगा”]।

आज के भाग, भजन संहिता 79 में, हम देखते हैं कि भजनकार परमेश्वर की शरण लेता है और उससे पुकार करता है। उसकी प्रार्थनाओं में से, आयत 9 मुझे विशेष रूप से प्रभावित करती है: “हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, हमारी सहायता कर, अपने नाम की महिमा के लिए; हमें छुटकारा दे और हमारे पापों का प्रायश्चित कर, अपने नाम की खातिर।” इस आयत और “हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर” शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन तीन प्रार्थना-निवेदनों पर मनन करना चाहता हूँ जो भजनकार ने उद्धारकर्ता परमेश्वर से किए थे, और इस तरह उनसे मिलने वाली सीख और अनुग्रह को प्राप्त करना चाहता हूँ।

पहला, भजनकार का प्रार्थना-निवेदन है: "हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, हमारी सहायता कर!" भजन संहिता 79:9 को देखें: "हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, अपने नाम की महिमा के लिए हमारी सहायता कर...।" भजनकार ने उद्धारकर्ता परमेश्वर से सहायता के लिए विनती क्यों की? इसलिए क्योंकि प्रभु के लोग—इस्राएल—बहुत बुरी हालत में थे; वे भारी मुसीबत झेल रहे थे और सताने वालों के हाथों यरूशलेम का विनाश हो रहा था। आज के हिस्से की पहली 4 आयतों में हम इसे साफ़ देख सकते हैं: "हे परमेश्वर, अन्य जातियों ने तेरी विरासत पर हमला किया है; उन्होंने तेरे पवित्र मंदिर को अपवित्र कर दिया है और यरूशलेम को मलबे के ढेर में बदल दिया है। उन्होंने तेरे सेवकों के शरीरों को आकाश के पक्षियों का भोजन बना दिया है, और तेरे पवित्र लोगों के मांस को धरती के जानवरों का; उन्होंने यरूशलेम के चारों ओर उनका खून पानी की तरह बहा दिया है, और उन्हें दफ़नाने वाला कोई नहीं था। हम अपने पड़ोसियों के लिए निंदा का कारण और अपने आस-पास के लोगों के लिए मज़ाक और तिरस्कार का निशाना बन गए हैं।" इस्राएल के दुश्मनों ने यरूशलेम को—जो "तेरे मंदिर" की जगह थी—अपवित्र कर दिया और शहर को मलबे के ढेर में बदल दिया (आयत 1)। उन्होंने शहर के अंदर मौजूद "तेरे सेवकों" और "तेरे पवित्र लोगों" को मार डाला और बिना दफ़नाए छोड़ दिया (आयत 2)। नतीजतन, उनका खून यरूशलेम के चारों ओर पानी की तरह बहा दिया गया (आयत 3)। इसके अलावा, इस्राएल के लोग अपने पड़ोसियों के लिए निंदा, मज़ाक और तिरस्कार का कारण बन गए (आयत 4)। ऐसे समय में, भजनकार ने उद्धार करने वाले परमेश्वर से मदद के लिए पुकार लगाई। फिर भी, यह मदद मांगते समय, उसने खास तौर पर परमेश्वर से प्रभु के नाम की महिमा के लिए मदद की विनती की (आयत 9)। यह इस बात को मानता है कि उनमें अपनी कोई धार्मिकता नहीं है; इसके बजाय, वे सिर्फ़ प्रभु की पवित्र प्रतिष्ठा के लिए उद्धार चाहते हैं—क्योंकि उसने उन्हें चुना है (पार्क युन-सन)। परमेश्वर की मदद को गंभीरता से मांगते हुए, भजनकार ने अपने नाम या महिमा के लिए मदद नहीं मांगी; बल्कि, उसने परमेश्वर से उसकी महिमा और उसके नाम के लिए दखल देने की विनती की। उसने सिर्फ़ यह इच्छा करते हुए प्रार्थना की कि परमेश्वर की मर्ज़ी पूरी हो।

जब हम मुसीबत और सतावट के बीच बेबस महसूस करते हैं, तो हमें परमेश्वर की मदद लेनी चाहिए। हालाँकि ऐसा लगता है कि हम अपनी ताकत से बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं, लेकिन असल में हम कमज़ोर इंसान हैं जो अपने दिलों को भी ठीक से नहीं संभाल सकते। एक तरह से, विश्वास के जीवन में अपनी

कमज़ोरी और बेबसी का गहरा एहसास होता है, और साथ ही यह मानना और स्वीकार करना भी शामिल है कि हम परमेश्वर की मदद के बिना जी नहीं सकते। उदाहरण के लिए, अय्यूब पर विचार करें। अपनी तकलीफ़ के बीच, उसने स्वीकार किया: "क्या मेरी मदद मेरे अंदर नहीं है?" (अय्यूब 6:13)। बहुत बड़ी मुसीबत के समय, अय्यूब ने अपनी बेबसी को पहचाना और माना कि वह खुद को नहीं बचा सकता। इसलिए, हमें भी उसी बात को मानते हुए प्रार्थना करनी चाहिए जो भजनहार ने भजन 46:1 में कही थी: "परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, मुसीबत में वह हमेशा मदद के लिए मौजूद रहता है।" जब हम अपनी बेबसी में उस परमेश्वर को पुकारते हैं जो मुसीबत के समय बड़ी मदद करता है, तो वह सचमुच हमारी बहुत बड़ी मदद करेगा।

दूसरी बात, भजनहार की प्रार्थना यह है: "हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, हमें बचा!" भजन 79:9 पर गौर करें: "हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, अपने नाम की महिमा के लिए हमारी मदद कर; हमें बचा और हमारे पापों का प्रायश्चित कर, अपने नाम की खातिर..." भजनहार—जिसने यरूशलेम के विनाश, प्रभु के संतों की मौत और मुसीबत में इज़राइल के लोगों की बेबसी के बीच परमेश्वर की महिमा के लिए मदद की गुहार लगाई थी—इस हिस्से की 5वीं आयत में परमेश्वर से पुकारता है: "हे प्रभु, कब तक? क्या तू हमेशा नाराज़ रहेगा? क्या तेरा क्रोध आग की तरह भड़केगा?" हमने पहले भजन 13 में "कब तक?" वाली इस प्रार्थना पर मनन किया है: "हे प्रभु, कब तक? क्या तू मुझे हमेशा के लिए भूल जाएगा? कब तक तू मुझसे अपना मुँह छिपाए रखेगा? कब तक मुझे अपने मन में सलाह करनी होगी और दिन भर दिल में दुख सहना होगा? कब तक मेरा दुश्मन मुझ पर हावी रहेगा?" (आयतें 1–2)। ऐसी प्रार्थनाएँ संतों की उस इच्छा को दिखाती हैं कि वे परमेश्वर से जल्द छुटकारा चाहते हैं, जबकि वे सब्र के साथ मुसीबत और ज़ुल्म सहते हैं। भजन 79 के बारे में, आयत 7 बताती है कि भजनहार को ऐसी तुरंत रिहाई की गुहार लगाने के लिए क्यों मजबूर होना पड़ा: "क्योंकि उन्होंने याकूब को निगल लिया है और उसके घर को उजाड़ दिया है।" विनाश के इस संकट के बीच, भजनहार ने परमेश्वर से विनती की कि वह इज़राइल के लोगों से अपना क्रोध हटा ले और इसके बजाय उसे उन जातियों—उनके दुश्मनों—पर बरसाए जो प्रभु के नाम को नहीं पुकारते (आयत 6)। भजनहार ने परमेश्वर से ऐसी गुहार क्यों लगाई? इसका जवाब हमें 10वीं आयत में मिलता है: "अन्य जातियाँ क्यों कहें, 'उनका परमेश्वर कहाँ है?' हमारे देखते-देखते अन्य जातियों को पता चले कि तूने अपने सेवकों के बहाए गए खून का बदला लिया है।" भजनकार ने परमेश्वर से विनती की कि वह अन्य जातियों पर अपना क्रोध बरसाए, क्योंकि

गैर-विश्वासी अन्य जातियों ने न केवल यरूशलेम के मंदिर को अपवित्र किया था (आयत 1), बल्कि वे यह पूछकर परमेश्वर के नाम का अपमान भी कर रही थीं कि इस्राएल का परमेश्वर कहाँ है। इस विनती का एक और खास कारण यह था कि भजनकार चाहता था कि अन्य जातियाँ देखें कि परमेश्वर अपने सेवकों के खून का बदला ले रहा है। असल में, आयत 12 बताती है कि इस्राएल के लोगों पर ज़ुल्म करने वाली अन्य जातियों ने प्रभु का "अपमान" किया था। इस्राएलियों को मारने वाली अन्य जातियों पर परमेश्वर का क्रोध बरसाने की विनती करते हुए, भजनकार ने प्रभु से यह भी कहा कि वह बंधुओं की कराह सुने और अपनी महान शक्ति से "मौत के लिए ठहराए गए लोगों को बचाए" (आयत 11)।

यह कितनी अद्‌भुत विनती है! भजनकार ने परमेश्वर से न केवल अपनी महान शक्ति से मौत के लिए ठहराए गए लोगों को बचाने के लिए कहा, बल्कि इस्राएल के लोगों को सुरक्षित रखने के लिए भी कहा। परमेश्वर के लोगों के उद्धार की चिंता से कहीं ज़्यादा उसे परमेश्वर के सम्मान की चिंता थी (पार्क युन-सन)। हालाँकि वह सच्चे दिल से परमेश्वर के उद्धार की इच्छा रखता था और प्रार्थना करता था, "हमें बचा" (आयत 9), लेकिन वह यह बर्दाश्त नहीं कर सकता था कि गैर-विश्वासी अन्य जातियाँ दुख झेल रहे इस्राएलियों का मज़ाक उड़ाते हुए पूछें, "उनका परमेश्वर कहाँ है?" (आयत 10)। हमें इसी सोच के साथ परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए और उससे हमें बचाने के लिए कहना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमें अपनी प्रार्थनाएँ परमेश्वर के सामने ऐसे दिल से रखनी चाहिए जो सच्चे दिल से उसकी महिमा चाहता हो।

तीसरी बात, भजनकार की प्रार्थना यह है: "हे हमारे उद्धार के परमेश्वर, हमारे पापों को क्षमा कर!"

भजन संहिता 79:9 को फिर से देखें: "हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, अपने नाम की महिमा के लिए हमारी सहायता कर; अपने नाम की खातिर हमें छुड़ा और हमारे पापों का प्रायश्चित कर!" यह समझते हुए कि यरूशलेम और इस्राएल के लोगों पर आई मुसीबतें और तबाही पाप का नतीजा थीं—जो परमेश्वर के क्रोध के कारण आई थीं—भजनकार ने परमेश्वर से विनती की कि वह "हमारे पापों का प्रायश्चित करे" (पद 9b)। उसने खास तौर पर प्रभु के नाम की खातिर माफी मांगी। उसने परमेश्वर से आगे यह भी कहा: "हमारे पूर्वजों के पापों को हमारे विरुद्ध याद न रख; तेरी दया जल्द ही हम तक पहुँचे, क्योंकि हम बहुत दीन-हीन हो गए हैं" (पद 8)। निर्गमन 20:5 में कहा गया है कि परमेश्वर पूर्वजों के पापों का दंड तीसरी और चौथी पीढ़ी तक

के बच्चों को देता है। इसका मतलब है कि ऐसा न्याय तब होता है जब वंशज बिना पछतावा किए वही पाप करते रहते हैं जो उनके पूर्वज करते थे (पार्क युन-सन)। इसलिए, भजनकार ने प्रभु की दया मांगी। गहरे अपमान और परेशानी की हालत में, उसने विनम्रता से परमेश्वर की दया की गुहार लगाई। उस दया के साथ, उसने परमेश्वर से विनती की कि वह उसे और इस्राएल के लोगों को जल्द ही अपना ले और बहाल करे। आखिरकार, भजनकार को जिस मदद और छुटकारा (उद्धार) की ज़रूरत थी, वह पाप के मुद्दे से गहराई से जुड़ी हुई थी। दूसरे शब्दों में, उसे प्रभु की दया के ज़रिए पापों की माफी की सख्त ज़रूरत थी। यह जानते हुए कि इस्राएल पर सारी मुसीबतें और तबाही पाप के कारण आई थीं, उसने माना कि—जब तक प्रभु के सामने पाप का मूल मुद्दा हल नहीं हो जाता—तब तक ऐसी तकलीफों से कोई भी मदद या छुटकारा बहुत मायने नहीं रखेगा। यहाँ सीख यह है कि हमें सबसे पहले प्रभु के सामने अपने पाप के मुद्दे को सुलझाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, जब हम—भजनकार या इस्राएल के लोगों की तरह—मुसीबत, तकलीफ या जानलेवा संकट का सामना करते हैं, तो हमें निश्चित रूप से परमेश्वर से मदद और छुटकारा मांगना चाहिए; फिर भी, इस बीच हमें परमेश्वर से "हमारे (मेरे) पापों को क्षमा करने" के लिए कहना नहीं भूलना चाहिए, अगर हमारी स्थिति हमारी अपनी गलतियों के कारण पैदा हुई हो। जब भजनकार परमेश्वर के सामने प्रार्थना की ये तीन विनतियाँ रखता है, तो वह बताता है कि अगर परमेश्वर उनकी प्रार्थना का जवाब देते हैं, तो वह और इस्राएल के लोग कैसा जवाब देंगे: "तब हम, जो तेरे लोग और तेरी चरागाह की भेड़ें हैं, सदा तेरा धन्यवाद करेंगे; पीढ़ी-दर-पीढ़ी हम तेरी स्तुति करेंगे" (पद 13)। इससे हमें यह सीख मिलती है कि जिन विश्वासियों को परमेश्वर से मदद, छुटकारा और क्षमा मिली है, उनके लिए सही प्रतिक्रिया यही है कि वे उनका धन्यवाद करें और उनकी स्तुति करें। मेरी आशा है कि भजनकार की प्रार्थना की ये तीन विनतियाँ हमारी भी विनतियाँ बन जाएँ, और अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर पाकर हम ऐसे उपासक बन सकें जो परमेश्वर का धन्यवाद और स्तुति करते हैं।

“हमें बचाओ”

[भजन संहिता 80]

मुझे लगता है कि आप सभी ने ली म्युंग-बाक के राष्ट्रपति चुने जाने की खबर सुनी होगी। कोरियाई मीडिया ने उनकी जीत की खबर के साथ-साथ उनके जीवन के सफर को दिखाने वाले कार्यक्रम भी दिखाए। एक दिलचस्प बात यह है कि नवनिर्वाचित राष्ट्रपति ली म्युंग-बाक का जन्मदिन मेरी पत्नी के जन्मदिन—19 दिसंबर—के दिन ही आता है। पता चला कि 19 दिसंबर उनकी शादी की सालगिरह भी है। कहा जाता है कि उन्होंने अपनी शादी के लिए अपना जन्मदिन इसलिए चुना ताकि वे सालगिरह न भूलें। इसके उलट, मैंने अपनी पत्नी के जन्मदिन—19 दिसंबर—को सगाई इसलिए की थी ताकि एक ही तोहफ़ा देकर पैसे बचा सकूँ (एक तीर से दो निशाने)... हाहा। उनके चुने जाने की खबर सुनने के कुछ ही समय बाद, मुझे "गो डो-वोन का पत्र" (Go Do-won’s Letter) से रोज़ाना वाला ईमेल मिला, और उस दिन के संदेश का शीर्षक था "सच्ची लीडरशिप" (True Leadership)। संदेश में यह लिखा था:

“सच्ची लीडरशिप क्या है? लीडर सिर्फ़ वह नहीं है जो काम को अच्छे से निपटाता है। लीडर वह है जो ‘सही काम’ करता है। लीडर वह नहीं है जो लक्ष्य पाने के लिए किसी भी हद तक चला जाए, बल्कि वह है जो सही मूल्यों के आधार पर काम करता है। लीडर वह है जो अपनी खूबियों और कमियों को सही ढंग से समझता है और अपनी कमियों को दूर करने की कोशिश करता है।” [गैरी एल. मैकिन्टोश और सैमुअल डी. रिमा की किताब *द शैडो साइड ऑफ़ लीडरशिप* से]

“लीडर वह होता है जो रोशनी और परछाई के बीच उस्तरे की धार पर चलता है।” इंसान को हमेशा खुद को बारीकी से परखना चाहिए ताकि यह पक्का हो सके कि वह सही रास्ते पर चल रहा है। ऐसा करने के दो तरीके हैं: खुद के अंदर झाँककर (आत्म-चिंतन) और दूसरों की नज़र से खुद को देखकर। अगर कोई लीडर सही रास्ते पर नहीं चलता, तो वह लोगों और इतिहास पर एक लंबी, काली परछाई छोड़ जाता है। ऐसा लगता है कि यह संदेश ईमेल के ज़रिए तब आया जब मिस्टर ली म्युंग-बाक के राष्ट्रपति चुने जाने की खबर सामने आई थी।

खबरों में नवनिर्वाचित राष्ट्रपति ली म्युंग-बाक की बातें सुनकर ऐसा लगा कि उन्होंने तीन मुख्य वादे किए: पहला, अर्थव्यवस्था को फिर से मज़बूत करना; दूसरा, बँटे हुए समाज में एकता लाना; और तीसरा, विनम्रता के साथ लोगों की सेवा करना। अब यह नवनिर्वाचित राष्ट्रपति की ज़िम्मेदारी है कि वे ईमानदारी से इन वादों को पूरा करें। मैं सोचता हूँ: क्या वह सच में कोरिया की अर्थव्यवस्था को फिर से ठीक कर पाएँगे? क्या वह सच में उस समाज में एकता ला पाएँगे जो लंबे समय से बँटा हुआ है? कोरियाई ईसाइयों के तौर पर, हमें सबसे पहले नए चुने गए राष्ट्रपति—जो चर्च के एक एल्डर भी हैं—का प्रार्थना के ज़रिए समर्थन करना चाहिए, क्योंकि वह देश का नेतृत्व कर रहे हैं। हमें अपने देश, कोरिया के लिए भी प्रार्थना करते रहना चाहिए। आज, मैं बाइबल के उस हिस्से से तीन बातें बताना चाहता हूँ कि हमें किन खास विषयों पर प्रार्थना करनी चाहिए।

प्रार्थना का पहला विषय है: "हम पर अपनी रोशनी चमकाओ।"

कृपया भजन संहिता 80, आयत 1, 3, 7 और 19 देखें: "हे इस्राएल के चरवाहे, हमारी सुन, तू जो यूसुफ को झुंड की तरह ले चलता है। तू जो करूबों के बीच सिंहासन पर विराजमान है, चमक" (आयत 1); "हे परमेश्वर, हमें बहाल कर; हम पर अपना चेहरा चमका, ताकि हम बच सकें" (आयत 3); "हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर, हमें बहाल कर; हम पर अपना चेहरा चमका, ताकि हम बच सकें" (आयत 7); "हे प्रभु सर्वशक्तिमान परमेश्वर, हमें बहाल कर; हम पर अपना चेहरा चमका, ताकि हम बच सकें" (आयत 19)। आज के हिस्से में, भजनकार "अपनी रोशनी चमकाओ"—यानी "अपना चेहरा चमकाओ..."—वाली विनती को चार बार दोहराता है। भजनकार ने परमेश्वर से "हम पर अपना चेहरा चमकाओ" की विनती इसलिए की क्योंकि इस्राएल के लोग घोर अंधकार के समय का सामना कर रहे थे। "अंधकार के इस समय" का मतलब है घोर दुख और बदहाली

की स्थिति (पार्क युन-सन)। आखिर इस घोर दुख की स्थिति का मतलब क्या है? यह उस स्थिति की ओर इशारा करता है जहाँ परमेश्वर के क्रोध (आयत 4) के कारण, पड़ोसी ताकतवर देश इस्राएल को निगलने की कोशिश कर रहे थे (आयत 6)। संक्षेप में, यह प्रभु की फटकार (आयत 16) से आई बर्बादी की स्थिति का वर्णन करता है। प्रभु की फटकार के तहत इस्राएल के लोगों को ऐसी बर्बादी का सामना क्यों करना पड़ा? इसका कारण उनका पाप था। हालाँकि आज का पाठ उस पाप की असल प्रकृति के बारे में नहीं बताता, लेकिन यह निश्चित है कि उनके पाप ने प्रभु के क्रोध को भड़काया और परिणामस्वरूप उन्हें प्रभु का अनुशासन झेलना पड़ा (पार्क युन-सन)। इस मुश्किल समय में, भजनकार को लगा कि इज़राइल के पापों के कारण प्रभु ने अपना चेहरा छिपा लिया है; इसलिए, उसने परमेश्वर से विनती की कि "वे अपना चेहरा हम पर चमकाएँ।"

पिछले सोमवार, मैं एक सीनियर पादरी के चर्च में वेस्टमिंस्टर थियोलॉजिकल सेमिनरी के पूर्व छात्रों की एक सभा में शामिल हुआ, जहाँ मुझे एक और सीनियर पादरी की ओर से उपदेश की CD तोहफ़े में मिली। मैंने अपनी कार में वह CD सुनी और उसमें बताई गई एक बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया, जिसे मैं आपके साथ साझा करना चाहता हूँ। संदेश बस इतना था: "ईसाई धर्म इस बारे में है कि परमेश्वर हमें ढूँढ़ते हैं, जबकि हमारा आस्था का जीवन इस बारे में है कि हम परमेश्वर को ढूँढ़ते हैं।" इस बात को समझाने के लिए, पादरी ने लुका-छिपी के खेल का उदाहरण दिया। जब माता-पिता अपने छोटे बच्चों के साथ लुका-छिपी खेलते हैं, तो बच्चे आखिरकार उन्हें ढूँढ़ ही लेते हैं... कहा जाता है कि जब माता-पिता लुका-छिपी खेलते हैं, तो वे इस तरह छिपते हैं कि बच्चों के लिए उन्हें ढूँढ़ना आसान हो। अगर कोई माता-पिता इतनी अच्छी तरह छिप जाएँ कि बच्चे उन्हें बिल्कुल भी न ढूँढ़ पाएँ, तो यह बहुत अजीब बात होगी। आमतौर पर, माता-पिता वहीं छिपते हैं जहाँ बच्चे उन्हें ढूँढ़ सकें, या जब बच्चों को परेशानी हो रही हो तो वे संकेत देते हैं। जब प्रभु हमारे बिना पछतावे वाले पापों के कारण हमसे अपना चेहरा छिपाते हैं, तो वे ऐसे परमेश्वर नहीं हैं जो हमें खुद को ढूँढ़ने से रोकने के लिए पूरी तरह छिप जाते हैं। वे ऐसे परमेश्वर हैं जो खुद को हमारे सामने प्रकट करना चाहते हैं। इसलिए, जब हम अपने पापों के लिए परमेश्वर के अनुशासन का सामना करते हैं और सब कुछ अंधेरे में डूबा हुआ लगता है, तो हमें—भजनकार की तरह—विनती करनी चाहिए, "हे प्रभु, अपना चेहरा हम पर चमका।"

जब हम यीशु के जन्म का जश्न मनाते हुए और उसे याद करते हुए इस क्रिसमस के मौसम का स्वागत करते हैं, तो हम उनके दोबारा आने का इंतज़ार करते हैं और नए यरूशलेम और नई पृथ्वी में अपनी उम्मीद रखते

हैं। नए यरूशलेम और नई पृथ्वी के बारे में, प्रेरित यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 21:23 में लिखा है: "शहर को चमकने के लिए सूरज या चाँद की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि परमेश्वर की महिमा उसे रोशनी देती है, और मेमना उसका दीपक है।" जिस स्वर्ग की ओर हम यात्रा कर रहे हैं, वहाँ बिल्कुल भी अंधेरा नहीं है। वहाँ सूरज या दिन की रोशनी की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि परमेश्वर की महिमा और स्वयं यीशु ही वह रोशनी होंगे जो स्वर्ग को तेज़ी से रोशन करेंगे। मेरी प्रार्थना है कि इस धरती पर रहते हुए हम इस उम्मीद को थामे रखें और कभी हिम्मत न हारें—भले ही हालात कितने भी मुश्किल और निराशाजनक क्यों न हों—बल्कि प्रार्थना करते हुए आगे बढ़ें: "हे प्रभु, हम पर अपनी रोशनी डाल।"

प्रार्थना का दूसरा विषय है: "हमें अपनी ओर वापस बुला ले।"

अगर हम भजन संहिता 80 को फिर से देखें—खासकर आयत 3, 7 और 19 को—तो हम भजनकार को प्रार्थना करते हुए पाते हैं: "हे परमेश्वर, हमें बहाल कर...", "हे सेनाओं के परमेश्वर, हमें बहाल कर...", और "हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, हमें बहाल कर..." ...वह परमेश्वर से विनती करता है। यह अंश एक ऐसी प्रार्थना लगती है जिसमें इस्राएली लोगों की—जिन्हें परदेस में बंधक बना लिया गया था—अपनी मातृभूमि में वापसी की मांग की गई है (पार्क युन-सन)। इसका मतलब है कि इस्राएलियों के पापों के कारण परमेश्वर का क्रोध उन पर टूटा था; उन्हें पड़ोसी ताकतवर देशों के हाथों भारी अपमान सहना पड़ा और आखिरकार उनमें से एक देश ने उन्हें जीत लिया और बंधक बना लिया। नतीजतन, भजनकार ने विनती की, "हे परमेश्वर, हमें बहाल कर"—यानी परमेश्वर से उन्हें कैद से छुड़ाने और उनकी मातृभूमि में वापस लाने की प्रार्थना की (आयत 3)। खासकर, यह याद करते हुए कि कैसे परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से बचाया था और उन्हें कनान की प्रतिज्ञा की हुई भूमि में पहुँचाया था, साथ ही दाऊद और सुलैमान के समय के "स्वर्ण युग" को याद करते हुए, भजनकार ने परमेश्वर से एक बार फिर वैसी ही बहाली की कृपा देने की विनती की (पार्क युन-सन) (आयत 8–11)। आयत 8–9 में, भजनकार इस्राएलियों की तुलना एक "अंगूर की बेल" से करता है, और बताता है कि कैसे परमेश्वर ने उसे मिस्र से कनान में लगाया, जहाँ उसकी जड़ें गहरी हो गईं और वह पूरी ज़मीन पर फैल गई; आयत 10–11 में परमेश्वर द्वारा उनकी आबादी बढ़ाने और उनके इलाके का विस्तार करने की बात कही गई है—खासकर उस स्वर्ण युग का ज़िक्र करते हुए जब दाऊद और सुलैमान के शासनकाल में उनकी सीमाएँ फरात नदी तक फैल गई थीं। इसके बाद भजनकार आयत 12–13 में

इस्राएलियों के बाद के पतन का वर्णन करता है—जो कभी परमेश्वर की कृपा और शक्ति से इतने धन्य थे—और यह स्वीकार करता है कि यह स्थिति परमेश्वर के हस्तक्षेप से पैदा हुई थी... हम यह स्वीकारोक्ति होते हुए देखते हैं। भजनकार ये शब्द आत्म-निंदा और पश्चाताप की भावना के साथ कहता है, साथ ही परमेश्वर की सर्वोच्चता पर भरोसा भी रखता है (पार्क युन-सन)। इज़राइल का इतना पतन क्यों हुआ? इसका कारण उनका पाप था। नतीजतन, इज़राइल के लोगों को परमेश्वर के क्रोध के बीच अनुशासन का सामना करना पड़ा।

जब हम इस हिस्से को अपने जीवन पर लागू करते हैं, तो हम सीखते हैं कि परमेश्वर से यह प्रार्थना करने से पहले कि "हमारी ओर मुड़ें"—यानी, "हे परमेश्वर, हमें बहाल करें"—हमें उनके सामने अपने पापों के लिए पछतावा करना होगा। लगभग दो-तीन साल पहले, नए साल की पूर्व संध्या की प्रार्थना सभा में, मैंने "5 Rs" पर उपदेश दिया था: पछतावा (Repentance), बहाली (Restoration), मेल-मिलाप (Reconciliation), सुधार (Reformation), और पुनरुद्धार (Revival)। परमेश्वर के सामने टूटे और पछतावे से भरे दिल के साथ प्रार्थना किए बिना सच्ची बहाली नहीं हो सकती। अगर हम सच्चा पुनरुद्धार चाहते हैं, तो हमें पछतावे से शुरुआत करनी होगी। तभी सच्ची बहाली, मेल-मिलाप, सुधार और पुनरुद्धार हो सकता है। तो फिर, हमें पछतावा कैसे करना चाहिए? हमें परमेश्वर की फटकार (वचन 16) को हल्के में नहीं लेना चाहिए। दूसरे शब्दों में, जब हमें परमेश्वर की फटकार मिलती है, तो हमें सावधान रहना चाहिए, प्रभु के सामने खुद को विनम्र करना चाहिए और अपने पापों के लिए पछतावा करना चाहिए। इसके अलावा, हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए और उनसे कहना चाहिए कि "अपनी खातिर हमें मज़बूत करें" (वचन 17)। हमें परमेश्वर से विनती भी करनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे भजनकार ने की थी: "हमें पुनर्जीवित करें" (वचन 18)।

तीसरी प्रार्थना विनती है, "आओ और हमें बचाओ।"

भजन संहिता 80 (वचन 2, 3, 7, और 19) में, भजनकार परमेश्वर के अपनी शक्ति के साथ हमें बचाने के लिए आने की बात करता है, उनसे उद्धार देने के लिए कहता है, और घोषणा करता है कि हम बचाए जाएँगे। इस्राएल के लोगों की ओर से, जो घोर दुख और गहरे अंधेरे में डूबे हुए थे, भजनकार ने परमेश्वर से विनती की, "अपना मुख हम पर चमकाएँ" और "हमें अपनी ओर वापस लाएँ"; फिर भी, उसकी मुख्य प्रार्थना थी, "हे परमेश्वर, हमें बचाओ।" यह प्रार्थना करते समय, भजनकार ने परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा किया:

"...अपनी शक्ति जगाओ और आओ और हमें बचाओ" (वचन 2)। भजनकार ने परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा क्यों किया? ऐसा इसलिए था क्योंकि वह और इस्राएल के लोग, दोनों ही उस दयनीय और अंधेरी स्थिति में अपनी शक्ति को कमज़ोर होते हुए महसूस कर रहे थे (पार्क युन-सन)। जैसे-जैसे उनकी शक्ति कमज़ोर होती गई, उन्हें गहराई से एहसास हुआ कि वे खुद को नहीं बचा सकते; नतीजतन, वे परमेश्वर की शक्ति पर और अधिक निर्भर हो गए और उद्धार की कृपा के लिए बेसब्री से तड़पने लगे। इज़राइल की मुक्ति के लिए प्रार्थना करते हुए, भजनकार ने लोगों के "सुनहरे दौर" को भी याद किया—वह समय जब उनकी ताकत कम नहीं हुई थी—और प्रार्थना की कि परमेश्वर अपनी महिमा के लिए अपने लोगों को फिर से शक्ति दे (पद 15)। जब परमेश्वर के लोगों ने इस प्रार्थना के जवाब में उनकी बचाने वाली शक्ति का अनुभव किया, तो उन्होंने उस ताकत को भी महसूस किया जो केवल वही देते हैं।

हमें अपनी ताकत का भरोसा छोड़ना होगा—या दूसरे शब्दों में, हमें अपनी कमजोरी को गहराई से समझना होगा। तभी हम परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा कर सकते हैं और उनकी दी हुई ताकत से अपने विश्वास का जीवन जी सकते हैं। अगर हम अपनी ताकत के भरोसे विश्वास का जीवन जीने की कोशिश करते हैं, तो हम घमंड में पड़ जाते हैं और परमेश्वर की महिमा को धुंधला कर देते हैं। इसलिए, चाहे हम परमेश्वर की सर्वोच्च इच्छा के तहत मुश्किलों और दुखों का सामना करें, या—आज के हिस्से में बताए गए इज़राइलियों की तरह—अपने पापों के कारण परमेश्वर की प्यार भरी अनुशासनात्मक सीख पाएँ, हमें अपनी ताकत छोड़ने और प्रभु की शक्ति पर भरोसा करने के लिए प्रशिक्षण की ज़रूरत है। इसके अलावा, हमें परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए और उनके उद्धार की कृपा की सच्ची चाहत के साथ उनसे प्रार्थना करनी चाहिए।

परमेश्वर हमसे क्या चाहते हैं

[भजन संहिता 81]

कल रात—नए साल के दिन—परिवार के साथ प्रार्थना करने से पहले, हम पाँचों अपने बिस्तर पर दीवार के सहारे बैठकर कुछ पढ़ रहे थे। मेरी पत्नी डायलन और मैं बाइबल पढ़ रहे थे, जबकि येरी अपनी छोटी बहन यीउन को राजकुमारी वाली किताब पढ़कर सुना रही थी। थोड़ी देर बाद, मैंने कहा, "चलो, अब प्रार्थना करते हैं।" यीउन का मन नहीं था और उसने किताब रखने में थोड़ी आनाकानी की; आखिरकार, येरी ने डायलन की बाइबल से पहला हिस्सा पढ़ा, और प्रार्थना करने से पहले मैंने उस अध्याय के मुख्य संदेश पर थोड़ी बात रखी। हालाँकि, यीउन का सहयोग नहीं मिल रहा था। मैंने उसे बिस्तर से नीचे उतरकर मेरे सामने खड़े होने को कहा, और जब मैंने पूछा कि क्या वह हमारे साथ प्रार्थना करना चाहती है, तो उसने धीरे से जवाब दिया, "नहीं।" इसलिए, मैंने उससे कहा, "तो जो किताब तुम पढ़ रही थी, उसे लेकर अपने कमरे में चली जाओ।" वह खुशी से मुस्कुराई और सीधे अपने कमरे में चली गई। हाहा। असल में, हम सबके पढ़ने के लिए इकट्ठा होने से पहले, यीउन ने चुपके से अपने बड़े भाई की किताब उसकी शेल्फ से निकाल ली थी, हमारे बिस्तर पर अकेली बैठी थी, और उसे "पढ़ते" हुए परमेश्वर से बातें कर रही थी। वह राजकुमारी वाली किताब पढ़ना जारी रखना चाहती थी, इसलिए जब हमने परिवार के साथ प्रार्थना के लिए बुलाया तो उसे थोड़ा बुरा लगा। आज सुबह अपनी पत्नी से फोन पर बात करते हुए मुझे पता चला कि जब डायलन और येरी सो रही थीं, तब यीउन सिर्फ़ उस किताब को दोबारा देखने के लिए जल्दी उठ गई थी। हाहा। उसे सच में उसे देखने का मन रहा होगा... हाहा। माता-पिता के तौर पर हम चाहते थे कि यीउन परिवार की प्रार्थना में हमारे साथ शामिल हो, लेकिन वह राजकुमारी वाली किताब पढ़ना चाहती थी। हालाँकि मुझे इस बात से थोड़ी बेचैनी हुई, लेकिन हमारी पारिवारिक प्रार्थना सभा में सिर्फ़ मेरी पत्नी डायलन, येरी और मैं ही शामिल हुए; यीउन अपनी राजकुमारी वाली किताब के साथ अपने कमरे में ही रही। उसे बहुत अच्छा लगता है जब उसकी बड़ी बहन येरी उसे वह किताब पढ़कर सुनाती है, और भले ही हमने प्रार्थना शुरू करने में जानबूझकर देरी की थी

ताकि वे ऐसा कर सकें, लेकिन लगता है कि यीउन को अपनी राजकुमारी वाली किताब के साथ और समय चाहिए था। हाहा। इस घटना पर सोचते हुए, मेरे मन में यह बात आई कि कैसे परमेश्वर पिता और उनकी संतान—यानी हम—की इच्छाएँ कभी-कभी अलग-अलग हो सकती हैं। परमेश्वर निश्चित रूप से हमसे कुछ अपेक्षाएँ रखते हैं, फिर भी क्या ऐसा अक्सर नहीं होता कि हम यीउन की तरह अपनी ही इच्छाओं के अनुसार काम करते हैं? अंततः, मेरा मानना है कि परिपक्व विश्वास वही है जिसमें हम परमेश्वर पिता की इच्छा के अनुसार जीवन जीते हैं—ठीक वैसे ही जैसे एक समझदार बच्चा अपने माता-पिता के मन की बात समझता है और उनकी इच्छाओं का पालन करता है। आज, भजन संहिता 81 पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं "परमेश्वर हमसे क्या चाहते हैं" विषय के अंतर्गत उन तीन बातों पर मनन करना चाहता हूँ जिनकी परमेश्वर हमसे अपेक्षा करते हैं। मेरी प्रार्थना है कि हम इन तीन बातों को सीखें और ऐसा जीवन जिएँ जो परमेश्वर पिता की इच्छा को पूरा करे।

पहली बात, परमेश्वर हमसे "स्तुति" की अपेक्षा करते हैं।

भजन संहिता 81:1 को देखें: "परमेश्वर के लिए ऊँचे स्वर में गाओ, जो हमारा बल है; याकूब के परमेश्वर के लिए आनंद से जय-जयकार करो।" यहूदा में एक पर्व मनाने के संदर्भ में इस भजन की रचना करते समय, भजनकार लोगों को परमेश्वर की स्तुति करने का आह्वान करता है (पद 1–4)। इस स्तुति का केंद्र निश्चित रूप से परमेश्वर ही हैं, जिन्हें भजनकार "हमारा बल" (पद 1) कहता है। जो परमेश्वर हमारा बल हैं, वे सर्वशक्तिमान परमेश्वर हैं। वही सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमें सामर्थ्य प्रदान करते हैं। उस सामर्थ्य को पाने का एक तरीका आनंदित हृदय से परमेश्वर की स्तुति करना है। डॉ. पार्क युन-सुन ने कहा है: "सच्चे मन से परमेश्वर की स्तुति करने से मनुष्य उनकी महिमा करता है और साथ ही, अपने आध्यात्मिक जीवन के लिए सामर्थ्य भी प्राप्त करता है।" वास्तव में, आनंद के साथ परमेश्वर की स्तुति करना न केवल उनकी महिमा करता है, बल्कि हमारे आध्यात्मिक जीवन को भी बल प्रदान करता है। तो फिर, हमें परमेश्वर की स्तुति कैसे करनी चाहिए? हमें आनंदित हृदय से उनकी स्तुति करनी चाहिए। इसका कारण नहेमायाह 8:10 के उत्तरार्ध में मिलता है: "...यह दिन हमारे प्रभु के लिए पवित्र है। शोक न करो, क्योंकि प्रभु का आनंद ही तुम्हारा बल है..."। चूँकि परमेश्वर में आनंद मनाना ही हमारा वास्तविक बल है, इसलिए हम आनंदित हृदय से उनकी स्तुति करते हैं।

परमेश्वर की आराधना करने वालों के लिए स्तुति का उद्देश्य विश्वास में एकता को बढ़ावा देना, परमेश्वर-भक्ति को सबके सामने स्वीकार करना और आध्यात्मिक जीवन के विकास को आगे बढ़ाना है (कैल्विन, पार्क युन-सुन)। (1) पहला मकसद—मानने वालों के बीच विश्वास में एकता—का मतलब है कि जब हम मिलकर परमेश्वर की स्तुति करते हैं, तो हम एक-दूसरे को फिर से यकीन दिलाते हैं कि हमारा विश्वास एक ही है। (2) दूसरा, हमारी स्तुति का मकसद "परमेश्वर-भक्ति का सार्वजनिक इज़हार" करना है। दूसरे शब्दों में, जब हम मिलकर परमेश्वर की स्तुति में गीत गाते हैं, तो हम सबके सामने यह मानते हैं कि "हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं।" (3) तीसरे मकसद को "आत्मिक विकास" कहा जा सकता है। हम परमेश्वर की स्तुति करके—अपने साझे विश्वास के दायरे में—आत्मिक रूप से बढ़ते हैं; ऐसी स्तुति सबके सामने उनके प्रति हमारे प्रेम को ज़ाहिर करती है। लेकिन समस्या क्या है? मसीहियों के तौर पर हमारी स्तुति का मकसद अक्सर परमेश्वर को खुश करने के बजाय खुद को खुश करना बन जाता है। अगर मुख्य लक्ष्य खुद को खुश करना और सुनने वालों के कानों को अच्छा लगना हो, तो ऐसी "खुद पर केंद्रित स्तुति" कभी भी सबके सामने यह नहीं बता सकती कि हम प्रभु में एक शरीर हैं और हमारा विश्वास एक ही है; न ही यह हमारे आत्मिक विकास को बढ़ावा दे सकती है। इसलिए, जैसा कि भजनकार आज हमें सिखाते हैं, हमें ऐसी "स्तुति" करनी चाहिए जैसी परमेश्वर चाहते हैं। हमें इसे खुशी भरे दिल से (पद 1), संगीत के वाद्ययंत्रों का इस्तेमाल करके (पद 2), और प्रभु के दिन (पद 3) पर करना चाहिए, और ज़ोर से उस परमेश्वर के लिए गाना चाहिए जो हमारी ताकत है (पद 1)। यह वह "नियम"—परमेश्वर का हुक्म—है जिसे आपको और मुझे मानना है (पद 4)।

दूसरा, परमेश्वर हमसे "प्रार्थना" चाहते हैं।

भजन संहिता 81:7 को देखिए: "तुमने मुसीबत में पुकारा, और मैंने तुम्हें छुड़ाया; मैंने गरज की गुप्त जगह में तुम्हें जवाब दिया; मैंने मेरिबा (सेला) के पानी के पास तुम्हारी परीक्षा ली।" यह अंश हमारे लिए खास तौर पर अहम है क्योंकि हम खुद को प्रार्थना में लगाने की कोशिश कर रहे हैं। मिस्र से निकलने की घटनाओं को याद करते हुए, भजनकार इस्राएल के लोगों को याद दिलाते हैं कि जब उनके पूर्वजों ने मुसीबत में परमेश्वर को पुकारा, तो उन्होंने उनकी प्रार्थनाओं का जवाब दिया। भजनकार अपने समय के लोगों को यह क्यों याद दिलाते हैं कि परमेश्वर ने मिस्र से निकलने के दौरान इस्राएलियों की प्रार्थनाओं का जवाब दिया था? इसलिए क्योंकि वह इस्राएल के लोगों को प्रार्थना में सच्चे मन से परमेश्वर को खोजने के लिए प्रोत्साहित करना चाहते

थे। दूसरे शब्दों में, यह आपके लिए एक बुलावा है कि आप परमेश्वर को पुकारें, ठीक वैसे ही जैसे इस्राएलियों ने अपने दुख के समय में उन्हें पुकारा था। इस सलाह के खास शब्द हैं: "...अपना मुँह पूरा खोलो और मैं उसे भर दूँगा..." (पद 10)। इस हिस्से का मतलब है कि हमें पूरे दिल से परमेश्वर की कृपा और उद्धार की इच्छा करनी चाहिए (पार्क युन-सन)।

हमें परमेश्वर की कृपा और उद्धार के लिए तड़पना चाहिए। जैसे इस्राएलियों ने अपनी मुसीबत में परमेश्वर को पुकारा था, वैसे ही हमें भी उन्हें पुकारना चाहिए। जब हम पुकारते हैं, तो हमें उनकी कृपा और उद्धार के लिए विनती करनी चाहिए। साथ ही, हमें इस भरोसे के साथ प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारी प्रार्थनाओं का जवाब मिलेगा। परमेश्वर ने आज के वचन में साफ वादा किया है: "अपना मुँह पूरा खोलो और मैं उसे भर दूँगा" (पद 10)। परमेश्वर को पुकारते समय हमें इस वादे को मजबूती से थामे रखना चाहिए। हमारे परमेश्वर भरने वाले परमेश्वर हैं। हालाँकि, भरने के लिए, हमें खुद को खाली करने की ज़िम्मेदारी पूरी करनी होगी। हमें क्या खाली करना है? हमारे पाप। किस तरह के पाप? आज के पाठ के पद 11 को देखें: "परन्तु मेरी प्रजा ने मेरी बात न मानी, और इस्राएल ने मेरी कुछ भी परवाह न की।" परमेश्वर की वह कौन सी आवाज़—या वचन—थी जिसे मानने से इस्राएलियों ने इनकार कर दिया? यह पद 9 में मिलता है: "तुम्हारे बीच कोई पराया देवता न हो; और न ही तुम किसी पराये देवता की पूजा करो।" फिर भी, आखिर में, इस्राएलियों ने इस आज्ञा को नहीं माना और मूर्तिपूजा का पाप किया। जब हम इस पाप के लिए पछतावा करते हैं, परमेश्वर के वचन को मानने का संकल्प लेते हैं और उन्हें पुकारते हैं, तो परमेश्वर हमारी प्रार्थनाएँ सुनते हैं और हमें कृपा और उद्धार का आशीर्वाद देते हैं। हमारे परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं की आवाज़ सुनने वाले परमेश्वर हैं। अद्‌भुत सच्चाई यह है कि, भले ही कई बार हम परमेश्वर की आवाज़ नहीं सुनते और उन्हें नहीं चाहते (पद 11), फिर भी वे ऐसे परमेश्वर हैं जो हमें चाहते हैं और हमारी प्रार्थनाएँ सुनने के लिए उत्सुक रहते हैं। कृपा से भरपूर इस परमेश्वर के सामने हमें और भी ज़्यादा प्रार्थना में खुद को समर्पित करना चाहिए।

तीसरी बात, परमेश्वर हमसे "आज्ञापालन" चाहते हैं।

भजन संहिता 81:8 और 13 को देखिए: "हे मेरे लोगों, सुनो, मैं तुम्हें चेतावनी दूँगा! हे इस्राएल, काश तुम मेरी बात सुनते!" (आयत 8); "काश मेरे लोग मेरी बात सुनते, काश इस्राएल मेरे बताए रास्ते पर चलता!" (आयत

13)। परमेश्वर हमसे यही चाहते हैं कि हम उनकी आवाज़ सुनें और उसे मानें। लेकिन, मिस्र से निकलने के समय इस्राएली परमेश्वर की आवाज़ नहीं सुनना चाहते थे; उन्होंने उनकी बात नहीं मानी। इसका नतीजा क्या हुआ? आयत 12 देखिए: "इसलिए मैंने उन्हें उनके अपने जिद्दी दिलों के हवाले कर दिया, ताकि वे अपनी ही सलाह मानें।" परमेश्वर पापियों को दो तरह से सज़ा देते हैं: "पहला तरीका है पापी को उसके पाप में ही रहने देना, और दूसरा तरीका है पापी पर दुख या विनाश लाना" (पार्क युन-सन)। व्यक्तिगत रूप से, मुझे पहला तरीका ज़्यादा डरावना लगता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अगर परमेश्वर हमें हमारे कठोर दिलों के हवाले कर देते हैं, तो हम लगातार उनके वचन का विरोध करेंगे और उनकी बात न मानते हुए जीवन बिताएँगे। आखिरकार, परमेश्वर ने इस्राएल के बात न मानने वाले लोगों को उनके दुश्मनों के हवाले करके उन्हें अनुशासित किया (आयत 14)। फिर भी, परमेश्वर इस्राएल के लोगों—और हमें—आशीष देने का वादा करते हैं, बशर्ते हम पछतावा करें और उनकी ओर लौट आएँ। भजनकार इस वादे के बारे में दो तरह से बात करते हैं: पहला है इस्राएल के दुश्मनों को हराने का वादा (आयत 14)। यह वादा है कि परमेश्वर के अनुशासन का हाथ, जो पापी इस्राएलियों के खिलाफ़ था, उनके पछतावा करने पर उनके दुश्मनों की ओर मुड़ जाएगा। परमेश्वर का दूसरा वादा आज के हिस्से की आयत 16 में बताया गया है: "वह उन्हें सबसे अच्छे गेहूँ से खिलाएँगे, और चट्टान से निकले शहद से तृप्त करेंगे।" यह वादा भौतिक आशीषों के बारे में है (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, यह वादा है कि भले ही इस्राएल के लोगों ने—कनान देश में भरपूर सुख-सुविधाओं के बीच रहते हुए—परमेश्वर के वचन को न मानकर और दूसरे देवताओं की पूजा करके पाप किया, फिर भी अगर वे अपने पापों के लिए पछतावा करते और परमेश्वर की ओर लौटते, तो परमेश्वर उन्हें उस देश में और भी ज़्यादा आशीष देते।

आइए हम भी प्रार्थना में आगे बढ़ते हुए परमेश्वर के इन वादों को मज़बूती से थामे रहें। प्रभु के उस वादे के बारे में—"मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा..." ठीक वैसे ही जैसे शुरुआती कलीसिया के 120 विश्वासियों ने इकट्ठा होकर पूरे मन से प्रार्थना की—प्रेरितों के काम 1:8 के वादे और मत्ती 16:18 के शब्दों को थामे हुए—हम भी खुद को पूरी तरह प्रार्थना में लगाना चाहते हैं। अगर इस दौरान, हम परमेश्वर की बात न मानकर और उनकी आज्ञा का उल्लंघन करके पाप कर बैठते हैं, तो हमें पछतावा करना चाहिए और भजन संहिता 81:14 और 16 में दिए गए वादों को थामकर प्रभु के पास लौटना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हमारे

पापों को क्षमा कर देते हैं, जो न्याय का हाथ हमारी ओर था उसे हमारे दुश्मनों की ओर मोड़ देते हैं, और हम पर भरपूर आशीष बरसाते हैं।

कल, लूनर न्यू ईयर के दिन, हमारा परिवार आराधना सभा के लिए मेरे बड़े भाई के घर इकट्ठा हुआ। मेरे अंकल—जो एक पादरी हैं—के ज़रिए परमेश्वर ने 1 थिस्सलुनीकियों 5:18 पर आधारित एक संदेश दिया। हम इस साल को ऐसा बनाने की कोशिश कर रहे हैं जिसमें हम हर हाल में धन्यवाद देने का संकल्प लें। हालाँकि मेरे तीसरे अंकल, पादरी किम चांग-ह्युक, कैंसर से पीड़ित हैं, फिर भी हमने परमेश्वर का धन्यवाद करने का संकल्प लिया और सभा के बाद उनके लिए मिलकर और पूरे जोश के साथ प्रार्थना की। हमने परिवार में बारी-बारी से उपवास रखने का भी फैसला किया और इसे शुरू भी कर दिया है। अलग होने से पहले, पादरी किम चांग-ह्युक अपने कमरे से—जहाँ वे बिस्तर पर लेटे हुए थे—बाहर लिविंग रूम में आए और हमारे रिश्तेदारों के सामने परमेश्वर की स्तुति में गीत गाया। उन्होंने अपने पसंदीदा भजन, "हाउ ग्रेट दाऊ आर्ट" (भजन संख्या 40) का पहला पद और कोरस गाया। अपनी तकलीफ के बावजूद, उन्होंने अपनी आत्मा से परमेश्वर की स्तुति की; जब हमने साथ मिलकर प्रार्थना की और 2008 के नए साल के लिए "हर हाल में धन्यवाद देने" की आज्ञा का पालन किया... पादरी और उनके परिवार को देखकर, मुझे लगता है कि परमेश्वर हमारे परिवारों के लिए भी ठीक ऐसी ही तस्वीर चाहते हैं।

“हे परमेश्वर, उठ और दुनिया का न्याय कर”

[भजन संहिता 82]

कल, मंगलवार की शाम, मैंने और मेरी पत्नी ने रात के खाने के दौरान अमेरिकी राजनीति पर बातचीत की। बातचीत की शुरुआत मेरी पत्नी के मौजूदा अमेरिकी आव्रजन कानूनों (इमिग्रेशन कानूनों) पर विचारों से हुई, लेकिन फिर हम कई तरह के विषयों पर बात करने लगे—जैसे कि राष्ट्रपति पद के लिए खड़े उम्मीदवारों की आव्रजन नीतियां, उनके व्यक्तिगत मूल्य, और अमेरिकी इवेंजेलिकल ईसाइयों के लिए चिंता के मुद्दे, जैसे गर्भपात और समलैंगिक विवाह। हमने अभी-अभी यह खबर सुनी थी कि न्यू हैम्पशायर डेमोक्रेटिक प्राइमरी में सीनेटर हिलेरी क्लिंटन ने सीनेटर बराक ओबामा को 2% के अंतर से हराया है। इस पर विचार करते हुए, हमने अपनी इस उम्मीद को फिर से दोहराया कि—चाहे कोई भी अंततः अमेरिकी राष्ट्रपति बने—वह नेता यीशु में विश्वास रखने वाला हो और बाइबिल के मानकों और मूल्यों के आधार पर देश का शासन चलाए। बाद में उसी सुबह, मैंने *गॉस्पेल न्यूज़पेपर* (23 दिसंबर, 2007 का अंक) में “नए राष्ट्रपति से कोरियाई चर्च की क्या उम्मीदें हैं” शीर्षक वाला एक लेख पढ़ा। इससे यह स्पष्ट हो गया कि कोरियाई चर्च चाहता है कि नवनिर्वाचित राष्ट्रपति ली म्युंग-बाक ऐसे नेता बनें जो परमेश्वर का भय मानते हों। चुनाव के दिन, 19 दिसंबर को, सोमांग चर्च—जहाँ नवनिर्वाचित राष्ट्रपति जाते हैं—ने बुधवार की अपनी नियमित शाम 7:30 बजे की प्रार्थना सभा के बाद, रात 8:30 बजे उनके चुनाव के लिए धन्यवाद सभा आयोजित की; ऐसा लगता है कि कई अन्य चर्चों ने भी नवनिर्वाचित राष्ट्रपति के लिए प्रार्थना सभाएं आयोजित कीं। मतदान समाप्त होने के बाद बुधवार की प्रार्थना सभा के दौरान चर्चों के माहौल के बारे में लेख पढ़ते समय, “वह परमेश्वर के न्याय के साथ शासन करें” वाक्यांश ने मेरे मन को गहराई से छू लिया, खासकर आज के धर्मग्रंथ के संदर्भ में। मैं पूरी उम्मीद करता हूँ कि नवनिर्वाचित राष्ट्रपति ली म्युंग-बाक परमेश्वर के न्याय के अनुसार कोरिया का शासन

चलाएंगे। यहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका में भी—हालाँकि हमें अभी यह नहीं पता है कि राष्ट्रपति कौन चुना जाएगा—मैं प्रार्थना करता हूँ कि जो व्यक्ति पद संभालेगा, वह ऐसा नेता हो जो परमेश्वर का भय मानता हो और उनके न्याय को बनाए रखते हुए देश का अच्छी तरह से शासन करे।

इस संदर्भ में, भजन संहिता 82:8 को देखते हुए, हम भजनकार को यह कहते हुए पाते हैं, "हे परमेश्वर, उठ और पृथ्वी का न्याय कर।" मुझे उम्मीद है कि आज रात, भजनकार की यह प्रार्थना हमारी अपनी प्रार्थना बन जाएगी। इस हिस्से पर ध्यान देते हुए, मैं हमारे लिए दो सीखों—या प्रार्थना के विषयों—पर विचार करना चाहूँगा, जो उस आवाज़ से मिली हैं जो परमेश्वर ने भजनकार के ज़रिए इज़राइल के न्यायियों और शासकों से कही थी।

पहली बात, न्यायियों और शासकों को अन्यायपूर्ण फ़ैसले नहीं सुनाने चाहिए।

भजन संहिता 82:2 को देखिए: "तुम कब तक अन्यायपूर्ण फ़ैसले सुनाते रहोगे और दुष्टों का पक्ष लेते रहोगे? (सेलाह)" जिस दुनिया में हम रहते हैं, वह सचमुच अन्याय और नाइंसाफ़ी से भरी हुई लगती है। इसका एक हालिया उदाहरण कोरिया के ग्योंगगी प्रांत के इचेओन में कोल्ड स्टोरेज वेयरहाउस में लगी आग है, जो बस दो-तीन दिन पहले ही हुई थी। मैंने हाल ही में इचेओन, ग्योंगगी प्रांत में एक रेफ्रिजरेटेड वेयरहाउस के बारे में एक समाचार रिपोर्ट पढ़ी। इस सुविधा का संचालन करने वाली कंपनी, कोरिया 2000 कंपनी लिमिटेड, ने 15.3 बिलियन वॉन की एक व्यापक कॉर्पोरेट बीमा पॉलिसी ले रखी थी। हालाँकि अधिकतम भुगतान 15.3 बिलियन वॉन था—जिसमें आग से होने वाले नुकसान के बीमा राइडर्स सहित असल में 15 बिलियन वॉन मिलने की उम्मीद थी—लेकिन रिपोर्ट से पता चला कि मारे गए चालीस लोगों और घायल हुए अन्य लोगों को कुछ भी नहीं मिलेगा। यह सोचना भी मुश्किल है कि पीड़ित परिवारों पर क्या गुज़र रही होगी। एक और उदाहरण संयुक्त राज्य अमेरिका की समाचार रिपोर्टों से मिलता है, जहाँ हम कभी-कभी ऐसे लोगों के बारे में सुनते हैं जिन्हें गलत तरीके से दोषी ठहराया गया और सालों तक जेल में रखा गया, और बाद में DNA टेस्ट से बेगुनाही साबित होने पर उन्हें बरी कर दिया गया और रिहा कर दिया गया। जब मैं सुनता हूँ कि इन लोगों ने रिहाई से पहले एक-दो साल नहीं, बल्कि दस या बीस साल से ज़्यादा समय जेल में बिताया, तो मैं

उस गहरे अन्याय के एहसास के बारे में सोचे बिना नहीं रह पाता जो उन्हें महसूस हुआ होगा। आज के हिस्से में भजनकार जो सच्चाई साफ़ तौर पर बताते हैं, वह यह है कि परमेश्वर उन न्यायियों का न्याय करते हैं जो गलत फ़ैसले सुनाते हैं (पद 1)। परमेश्वर इज़राइल के न्यायियों का न्याय क्यों करते हैं? इसलिए क्योंकि उन्होंने दुष्टों का पक्ष लिया और न्याय की प्रक्रिया को बिगाड़ दिया (पद 2; पार्क युन-सन)। दुष्टों के प्रति पक्षपात के कारण गलत फ़ैसले सुनाने वाले इन इज़राइली न्यायियों के बारे में भजनकार कहते हैं: "वे कुछ नहीं जानते, वे कुछ नहीं समझते। वे अंधेरे में भटकते रहते हैं; पृथ्वी की सारी नींव हिल गई है" (पद 5)। उनकी अज्ञानता, संवेदनहीनता और गलत फ़ैसले की मूल वजह यह है कि वे "अंधेरे में भटक रहे थे।" बाइबल कहती है: "न्याय को न बिगाड़ो और न ही पक्षपात करो। रिश्वत न लो, क्योंकि रिश्वत बुद्धिमानों की आँखें अंधी कर देती है और नेक लोगों की बातों को टेढ़ा कर देती है" (व्यवस्थाविवरण 16:19)। रिश्वत लेने और न्याय को बिगाड़ने वाला जज कोई पुरानी बात नहीं है; ऐसे पाप आज भी अक्सर होते हैं। जैसे धर्मग्रंथ चेतावनी देते हैं कि रिश्वत आँखें अंधी कर देती है और नेक लोगों की बातों को बिगाड़ देती है, वैसे ही हमें रिश्वत के कारण अपनी सही-गलत समझने की समझ को खोने और अपने फैसले को गलत होने नहीं देना चाहिए।

आप शायद *टैमगवान-ओरी* (भ्रष्ट अधिकारी) शब्द से परिचित होंगे। इसका मतलब है ऐसा अधिकारी जो लोगों की संपत्ति का लालच करता है, उसे जबरदस्ती हड़पता है और जिसमें नैतिक ईमानदारी की कमी होती है। इतिहास में ऐसे भ्रष्ट अधिकारियों के प्रमुख उदाहरणों में ग्योंगसांग-उडो के सैन्य कमांडर बेक नाक-सिन शामिल हैं, जिनके कामों ने जिंजू विद्रोह को भड़काया था, और गोबू के मजिस्ट्रेट जो ब्योंग-गैप, जिनके व्यवहार ने डोंगहाक किसान क्रांति को बढ़ावा दिया था। ये भ्रष्ट अधिकारी—जिन्होंने लोगों की मेहनत की कमाई छीन ली और उन्हें दुख में धकेल दिया—ऐतिहासिक कहानियों में भी अक्सर दिखाई देते थे। वे *द टेल ऑफ़ इम केओक-जोंग*, *द टेल ऑफ़ जियोन वू-ची* और *द टेल ऑफ़ चुनह्यांग* में दिखाई दिए। इनमें से, *चुनह्यांगजेओन* (*द टेल ऑफ़ चुनह्यांग*) के गवर्नर ब्यन भ्रष्ट अधिकारी की पहचान बन गए। इस तरह के भ्रष्टाचार से बचने के लिए, दासन जियोंग याक-योंग ने अपनी किताब *मोंगमिंसिमसेओ* (लोगों पर शासन करने के बारे में सलाह) के *युल्गी* (आत्म-अनुशासन) हिस्से में स्थानीय अधिकारियों के लिए आचरण के सिद्धांत बताए: "पहला, अपना व्यवहार गरिमापूर्ण रखें; दूसरा, अपना मन और विचार हमेशा ईमानदार और निष्कलंक रखें; तीसरा, कभी भी दूसरों से कोई अनुचित मांग या एहसान न लें; चौथा, फिजूलखर्ची से बचें और सादगी से रहें; और पांचवां, अपने घर-परिवार को अच्छे से संभालें—खासकर, पद संभालते समय

परिवार के सदस्यों को साथ न ले जाएं, और यह पक्का करें कि मिलने आने वाले भाई-बहन या रिश्तेदार लंबे समय तक न रुकें। छठा, उन्होंने संसाधनों को बचाने और लोगों के साथ उदारता से बांटने की इच्छा को एक अधिकारी के लिए ज़रूरी गुण बताया। ... आज के समाज में भी भ्रष्ट अधिकारी आम बात हैं। लोग प्रमोशन पाने के लिए रिश्वत देते थे और अपने नीचे काम करने वालों से किकबैक (अवैध कमीशन) मांगते थे; वे चुने हुए पदों को पाने के लिए नॉमिनेशन फीस देते थे और चुनाव जीतने के लिए किसी भी हद तक चले जाते थे—हर तरह के गैर-कानूनी काम करते थे। वे अपने फायदे के लिए सेब के बक्सों या ट्रकों में भरकर पैसे भी ले जाते थे। इन खर्चों को पूरा करने के लिए, वे रिश्वत और किकबैक लेते थे और निजी संपत्ति जमा करने के लिए अपनी शक्ति का गलत इस्तेमाल करते थे" (इंटरनेट)। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "जब भ्रष्ट अधिकारी शासन करते हैं, तो सामाजिक व्यवस्था बिगड़ जाती है और अस्थिरता फैल जाती है।" "इसलिए, मानव समाज में व्यवस्था बनाए रखने के लिए बुनियादी तत्व न्याय है—जो सच्चे धर्म का परिणाम है" (इंटरनेट)। क्योंकि भ्रष्ट अधिकारी—खासकर जज—अमेरिकी न्यायिक प्रणाली में गलत फैसले सुनाते हैं, इसलिए बेगुनाह लोगों को जेल भेजा जा रहा है; इसके अलावा, ऐसे भ्रष्ट लोगों की वजह से सामाजिक व्यवस्था बिगड़ रही है और बड़े पैमाने पर अस्थिरता पैदा हो रही है। परमेश्वर बस खड़े होकर यह सब नहीं देखेंगे। हमारे न्याय करने वाले परमेश्वर निश्चित रूप से इन गलत फैसले सुनाने वाले जजों का न्याय करेंगे। आज का वचन देखें, भजन संहिता 82:6–7: "मैंने कहा, 'तुम देवता हो, और तुम सब परमप्रधान की संतान हो।' लेकिन तुम इंसानों की तरह मरोगे, और राजकुमारों की तरह गिरोगे।" यहाँ, "देवता" और "परमप्रधान की संतान" शब्द इज़राइल के जजों के लिए इस्तेमाल किए गए हैं। उन्हें ऐसा इसलिए कहा गया क्योंकि शासक का पद परमेश्वर के काम के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने से जुड़ा होता है (पार्क युन-सन)। जब वे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार न्याय करने में असफल रहते हैं और इसके बजाय अन्यायपूर्ण फ़ैसले सुनाते हैं, तो परमेश्वर उनका न्याय करेगा।

दूसरी और आखिरी बात, जजों और शासकों को निष्पक्ष फ़ैसले करने चाहिए।

भजन संहिता 82:3 देखिए: “कमज़ोर और अनाथों का पक्ष लें; ग़रीबों और सताए हुए लोगों के अधिकारों की रक्षा करें।” आज के हिस्से में, भजनकार कहता है कि न्याय करने वाले परमेश्वर, जजों के बीच न्याय करने के

लिए खड़े होते हैं (पद 1) और उनसे कहते हैं: "इसराइल के जजों, न्याय करो।" तो फिर, न्याय कैसे किया जाना चाहिए?

(1) उन्हें ग़रीबों और अनाथों के पक्ष में फ़ैसला करना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, इसराइल के जजों को पीड़ित और बेसहारा लोगों के लिए न्याय बनाए रखना चाहिए (पद 3)। उन्हें उन लोगों की देखभाल करनी चाहिए और उन्हें न्याय दिलाना चाहिए जिन पर अन्यायपूर्ण तरीके से ज़ुल्म किया गया है—जैसे ग़रीब, अनाथ, पीड़ित और बेसहारा लोग। यही सच्ची धार्मिकता (धर्म) है: "हमारे परमेश्वर पिता की नज़र में जो धर्म शुद्ध और बेदाग है, वह यह है: मुसीबत में अनाथों और विधवाओं की देखभाल करना और खुद को दुनिया की बुराइयों से दूर रखना" (याकूब 1:27)।

(2) उन्हें ग़रीबों और ज़रूरतमंदों को बचाना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, उन्हें ग़रीबों और ज़रूरतमंदों को बुरे लोगों के हाथों से छुड़ाना चाहिए (पद 4)। जब ग़रीब और ज़रूरतमंद—जो कमज़ोर और असहाय होते हैं—बुरे लोगों के हाथों ज़ुल्म और मुश्किलों का सामना करते हैं, तो एक निष्पक्ष जज की ज़िम्मेदारी होती है कि वह उन्हें बचाए। कमज़ोरों की रक्षा करना एक नेक जज का फ़र्ज़ है। नीतिवचन 31:9 देखिए: "अपना मुँह खोलो, सही न्याय करो और पीड़ित व ज़रूरतमंद लोगों के अधिकारों की रक्षा करो।" इसराइल के जजों का यही फ़र्ज़ है: सच्चाई और ईमानदारी से न्याय करना और कमज़ोर लोगों का पक्ष लेना। ऐसा करके, वे सच्चे जज—स्वयं परमेश्वर—के प्रतिनिधियों के तौर पर अपनी भूमिका ईमानदारी से निभाएँगे और इस तरह परमेश्वर की महिमा ज़ाहिर करेंगे।

"नेक जीवन और शासन तभी मिलता है जब वह परमेश्वर के वचन पर आधारित हो। परमेश्वर अपने लोगों से नेक और ईमानदार होने की उम्मीद करते हैं, क्योंकि न्याय और ईमानदारी उनके स्वभाव का हिस्सा हैं। सच्चाई और नेकी का जीवन उन लोगों के लिए सही जीवन-शैली है जो प्रभु परमेश्वर को अपना पिता मानते हैं" (इंटरनेट)। आज रात, आइए हम भी वही प्रार्थना करें जो भजनकार ने परमेश्वर से की थी: "हे परमेश्वर,

उठ और पृथ्वी का न्याय कर।" आइए हम प्रार्थना करें कि इस दुनिया में परमेश्वर का न्याय प्रकट हो। परमेश्वर निश्चित रूप से अपनी धार्मिकता से दुनिया का न्याय करेंगे। इसलिए, जो लोग उनके प्रतिनिधि के तौर पर काम करते हैं—यानी वे न्यायाधीश जो उनमें विश्वास रखते हैं—उन्हें निष्पक्ष न्याय करना चाहिए। उन्हें गरीबों, अनाथों, ज़रूरतमंदों और कमज़ोर लोगों के अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए और उन्हें बुरे लोगों के हाथों से बचाना चाहिए। हम सभी परमेश्वर के उद्धार करने वाले न्याय के माध्यम बनें।

“पूरी दुनिया को पता चले कि सिर्फ़ आप ही सबसे ऊँचे हैं”

[भजन संहिता 83]

कल मंगलवार की सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, मैंने निर्गमन 3:7–8 पर मनन किया: “प्रभु ने कहा, ‘मैंने मिस्र में अपने लोगों की मुसीबत को ज़रूर देखा है, और काम करवाने वालों की वजह से उनकी पुकार सुनी है, क्योंकि मैं उनके दुखों को जानता हूँ। इसलिए मैं उन्हें मिस्रियों के हाथ से छुड़ाने, और उस देश से निकालकर एक अच्छे और बड़े देश में—जहाँ दूध और शहद बहता है—कनानियों, हित्तियों, एमोरियों, परिज़्ज़ियों, हिवियों और यबूसी लोगों के देश में ले जाने के लिए नीचे आया हूँ।’” मैंने हमारे लिए परमेश्वर के उद्धार के काम पर विचार किया, और इन दो आयतों में मिली छह क्रियाओं पर ध्यान दिया: “देखा,” “सुना,” “परवाह की” (उनके दुखों को जानना), “नीचे आया,” “ऊपर ले जाना” (छुड़ाना), और “अगुआई करना।” मैंने इस वचन को हमारे चर्च की स्वर्गीय दादी जांग यूल-सू के जीवन पर लागू किया: परमेश्वर ने उनकी पीड़ा देखी, उनकी पुकार सुनी—’हे परमेश्वर, कृपया मुझे स्वर्ग ले चलो’—और उनके दर्द को समझा; वह उन्हें उस सारी पीड़ा से छुड़ाने के लिए नीचे आए और उन्हें कनान के सच्चे देश—स्वर्ग के प्रतिज्ञा किए हुए देश—में ले गए। परमेश्वर के इस काम पर विचार करते हुए, मैं यह माने बिना नहीं रह सकता कि वह सचमुच एक अच्छे परमेश्वर हैं। वह ऐसे परमेश्वर हैं जो इस तरह से अपनी भलाई हम पर ज़ाहिर करना चाहते हैं; दूसरे शब्दों में, वह ऐसे परमेश्वर हैं जो खुद को प्रकट करते हैं। भजन संहिता 83:18 में, भजनकार परमेश्वर से यह विनती करता है: “वे जान लें कि सिर्फ़ आप ही, जिनका नाम प्रभु है, पूरी पृथ्वी पर सबसे ऊँचे हैं।” इस आयत पर और भजनकार की इस इच्छा पर ध्यान केंद्रित करते हुए कि केवल प्रभु को ही सबसे ऊँचा माना जाए, मैं उन एक या दो तरीकों पर विचार करना चाहता हूँ जिनसे परमेश्वर खुद को दुनिया के सर्वोच्च शासक के रूप में प्रकट करते हैं और उन सीखों पर गौर करना चाहता हूँ जो वह इनके ज़रिए देते हैं।

सबसे पहले, प्रभु अपने लोगों—यानी हमारी—रक्षा करके पूरी पृथ्वी पर खुद को सबसे ऊँचे परमेश्वर के रूप में प्रकट करते हैं। पिछले साल नए साल की पूर्व संध्या की प्रार्थना सभा में, जब हमने नए साल का स्वागत किया, तो मैंने हारून के याजकीय आशीर्वाद (गिनती 6:22–26) पर आधारित तीन आशीर्वादों के साथ अपने पूरे चर्च परिवार को आशीर्वाद दिया। इनमें से पहला आशीर्वाद परमेश्वर की सुरक्षा का था। मैंने प्रार्थना की—और अब भी करता हूँ—कि परमेश्वर हमारी देखभाल करे और हमें पाप, बुरे लोगों और शैतान से बचाए। उस समय, मैंने सभी को भजन संहिता 121:3–8 के शब्दों को मजबूती से थामे रखने के लिए भी प्रोत्साहित किया: "वह तुम्हारे पैर को फिसलने नहीं देगा—जो तुम्हारी देखभाल करता है, वह ऊँघेगा नहीं; सचमुच, जो इस्राएल की देखभाल करता है, वह न तो ऊँघेगा और न ही सोएगा। प्रभु तुम्हारी देखभाल करता है—प्रभु तुम्हारे दाहिने हाथ की ओर तुम्हारी छाया है; दिन में सूरज तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाएगा, और न ही रात में चाँद। प्रभु तुम्हें हर नुकसान से बचाएगा—वह तुम्हारे जीवन की देखभाल करेगा; प्रभु तुम्हारे आने-जाने की देखभाल अभी और हमेशा करेगा।" परमेश्वर बिना ऊँघे या सोए हमारी सुरक्षा और देखभाल क्यों करता है? इसका उत्तर हमें आज के वचन, भजन संहिता 83:3 में मिल सकता है: "वे चालाकी से तुम्हारे लोगों के खिलाफ साजिश रचते हैं; वे उन लोगों के खिलाफ योजना बनाते हैं जिन्हें तुम बहुत प्यार करते हो।" परमेश्वर हमारी सुरक्षा और देखभाल इसलिए करता है क्योंकि हम परमेश्वर के लोग हैं—वे लोग जिन्हें वह बहुत प्यार करता है और सुरक्षित रखता है। "जिन्हें तुम बहुत प्यार करते हो" वाक्यांश (कुछ संस्करणों में "तुम्हारे गुप्त लोग" के रूप में अनुवादित) उन लोगों को संदर्भित करता है जिन्हें प्रभु बहुत प्रिय मानता है और अपने दिल के करीब रखता है। हम वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर अपने दिल में रखता है; हम वे लोग हैं जिन्हें वह बहुत अनमोल मानता है। इसीलिए हम उसकी सुरक्षा में हैं। हम उसकी अनमोल संपत्ति हैं: "क्योंकि तुम अपने प्रभु परमेश्वर के लिए पवित्र लोग हो। तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने तुम्हें पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोगों में से अपने लोग, अपनी अनमोल संपत्ति बनने के लिए चुना है" (व्यवस्थाविवरण 7:6)।

परमेश्वर बिना ऊँघे या सोए हमारी सुरक्षा और देखभाल इसलिए करता है क्योंकि न केवल हम "वे लोग हैं जिन्हें वह बहुत प्यार करता है," बल्कि इसलिए भी कि हम उसकी "भेड़ें" हैं। आज के हिस्से में भजन संहिता 83:12 को देखें: "उन्होंने कहा, 'आओ, हम परमेश्वर की चरागाहों पर कब्ज़ा कर लें।'" यहाँ, "परमेश्वर की चरागाहों" का मतलब कनान देश से है (पार्क युन-सन के अनुसार)। बुरे लोगों ने कनान देश पर हमला करने

की कोशिश की—जहाँ इज़राइल के लोग, यानी परमेश्वर की भेड़ें रहती थीं—और उसे अपनी संपत्ति बनाने की कोशिश की। कनान देश को—जहाँ इज़राइल के लोग रहते थे—परमेश्वर की चरागाह कहना यह दिखाता है कि परमेश्वर इज़राइलियों को अपनी भेड़ें मानते हैं। प्रभु, जो हमारे चरवाहे हैं, अपनी भेड़ों से इतना प्यार करते हैं कि उन्होंने उनके लिए अपनी जान दे दी (यूहन्ना 10:15)। वे ऐसे परमेश्वर हैं जो हमारी—अपनी भेड़ों की—रक्षा और देखभाल के लिए अपनी जान जोखिम में डालते हैं। हमारे चरवाहे-प्रभु हमें अपने दिल में बहुत प्रिय रखते हैं; हम वे भेड़ें हैं जिनसे वे इतना प्यार करते हैं कि उनके लिए अपनी जान तक दे सकते हैं। वे बिना सोए या झपकी लिए हमारी रक्षा और देखभाल करते हैं। इस तरह, प्रभु यह बताते हैं कि वही पूरी धरती पर सबसे ऊँचे परमेश्वर हैं।

दूसरी और आखिरी बात, बुरे लोगों का नाश करके प्रभु खुद को पूरी दुनिया में सबसे ऊँचे परमेश्वर के रूप में प्रकट करते हैं।

बुरे लोगों ने इज़राइल के लोगों—प्रभु की भेड़ें, जिन्हें वे अपने दिल में बहुत मानते थे—को खत्म करने की कोशिश की। उन्होंने प्रभु के लोगों के खिलाफ साजिश रची और हमले की योजना बनाने के लिए एकजुट हुए (पद 3)। उनकी साजिश कैसी थी? भजन संहिता 83:4 को देखें: "वे कहते हैं, 'आओ, हम उन्हें एक राष्ट्र के रूप में खत्म कर दें, ताकि इज़राइल का नाम याद न रहे।'" जब ये बुरे लोग इस बात पर चर्चा करने के लिए इकट्ठा हुए कि इज़राइल को कैसे खत्म किया जाए और उनकी याद से उनका नाम कैसे मिटाया जाए, तो उन्होंने ऐसा "एक मन और एक सोच" के साथ किया (पद 5)। प्रेरितों के काम 4:25 से शुरू होने वाले हिस्से पर विचार करने पर, मुझे याद आता है कि कैसे दुनिया के देशों और शासकों ने यीशु का विरोध किया था; खास तौर पर हेरोदेस और पीलातुस—जो पहले दुश्मन थे—ने हाथ मिलाया और दोस्त बनकर उनके खिलाफ मिलकर काम किया। इसी तरह, आज के पाठ—भजन संहिता 83:4–5—में इज़राइल के दुश्मन एकजुट हुए और इज़राइल के लोगों को खत्म करने की साजिश रची। ये बुरे दुश्मन न सिर्फ़ एक साथ मिलकर साज़िश रचने लगे, बल्कि उन्होंने आपस में एक समझौता भी किया (आयत 5); दूसरे शब्दों में, उन्होंने एक एकजुट मोर्चा बनाया। दुश्मनों के इस गठबंधन में एदोम और इश्माएलियों, मोआब और हागरियों, गेबाल,

अम्मोन और अमालेक के साथ-साथ फ़िलिस्तीनी और टायर (सूर) के लोग भी शामिल थे; यहाँ तक कि अश्शूर भी लूत के वंशजों का साथ देने के लिए उनके साथ आ मिला (आयतें 6–8)।

ऐसे हालात में, भजनकार को याद आया कि कैसे परमेश्वर ने अतीत में इस्राएल के दुश्मनों को नष्ट किया था और उसने परमेश्वर से विनती की कि वे मौजूदा दुश्मनों के ख़िलाफ़ भी वैसा ही करें जैसा उन्होंने तब किया था (आयत 9), और उन्हें हरा दें (आयतें 10–11)। उदाहरण के लिए, आयत 9 में, भजनकार ऐतिहासिक घटनाओं का ज़िक्र करता है—जैसे कि न्यायियों के दौर में गिदोन का परमेश्वर की मदद से मिद्यानियों की विशाल सेना को नष्ट करना, और दबोरा की अगुवाई में बाराक का किशोन नदी के पास सिसरा और याबीन जैसे दुश्मनों को बुरी तरह हराना—और परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे इस्राएल के आज के दुश्मनों का भी विनाश करें। इस्राएल के लोगों के दुश्मनों के बारे में भजनकार की अर्जियों को एक या दो मुख्य बातों में समेटा जा सकता है:

(1) पहली अर्जी यह प्रार्थना है कि इस्राएल के दुश्मन शर्मिंदा हों: "उनके चेहरों को शर्म से भर दे ताकि वे तेरे नाम की खोज करें, हे प्रभु। वे हमेशा शर्मिंदा और निराश रहें; वे बदनामी के साथ नष्ट हो जाएँ" (आयतें 16–17)।

जब भजनकार परमेश्वर से इस्राएल के दुश्मनों को शर्मिंदा करने के लिए कहता है, तो असल में वह परमेश्वर के चुने हुए लोगों को नष्ट करने की बुरे लोगों की योजनाओं के नाकाम होने की प्रार्थना कर रहा होता है (पार्क युन-सन)। इसके अलावा, वह प्रार्थना करता है कि इस नाकामी के ज़रिए, बुरे लोग प्रभु के नाम की खोज करने लगें। दूसरे शब्दों में, भजनकार परमेश्वर से विनती करता है कि जैसे ही इस्राएल को नष्ट करने की उनकी साज़िश नाकाम हो, वे आख़िरकार पछतावा करें और परमेश्वर की ओर लौट आएँ। (2) दूसरी प्रार्थना यह है कि इज़राइल के दुश्मन बर्बाद हो जाएं: "हे मेरे परमेश्वर, उन्हें सूखे तिनकों या हवा में उड़ते भूसे जैसा बना दे। अपनी तेज़ हवा से उनका पीछा कर और अपने तूफ़ान से उन्हें डरा दे, ठीक वैसे ही जैसे आग जंगल को खा जाती है और लपटें पहाड़ों को जला देती हैं" (पद 13–15)।

भजनकार की प्रार्थना—जिसमें वह परमेश्वर से दुष्टों (जो उसके सामने कुछ भी नहीं हैं) को अपनी तेज़ हवा और तूफ़ान से दूर भगाने के लिए कहता है—यह बताती है कि दुष्ट लोग हवा में उड़ते भूसे की तरह हैं। इससे पता चलता है कि वे ऐसे लोग हैं जिनके पास, जब परमेश्वर न्याय करता है और अपनी शक्तिशाली हवा उन पर चलाता है, तो बह जाने के अलावा कोई चारा नहीं बचता। हमारा पवित्र प्रभु वह परमेश्वर है जो दुष्टों का न्याय करके यह ज़ाहिर करता है कि वही—पूरी दुनिया का प्रभु—सर्वोच्च है। अपनी पवित्रता और धार्मिकता को प्रकट करके, वह दुनिया को बताता है कि वही सर्वोच्च है।

हमारे परमेश्वर ऐसे परमेश्वर हैं जो स्वयं को प्रकट करते हैं। वे पूरी पृथ्वी पर सर्वोच्च प्रभु हैं; केवल वही उस सर्वोच्च स्थान पर विराजमान हैं। वे सर्वोच्च प्रभु इस साधारण पृथ्वी पर आए और क्रूस पर—जो श्राप का वृक्ष था—प्राण दिए, ताकि वे दुनिया को न केवल अपनी पवित्रता और न्याय के बारे में, बल्कि अपने महान प्रेम, अनुग्रह और दया के बारे में भी बता सकें। यीशु ने हमारी उन पापों के लिए, जिनके कारण हमारा अनंत विनाश निश्चित था, हमारी जगह क्रूस पर परमेश्वर के क्रोध का दंड सहा; उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा हमें उद्धार मिला है। हमें ऊँचा स्थान मिला है क्योंकि सर्वोच्च परमेश्वर के पुत्र ने क्रूस पर प्राण दिए। हम परमेश्वर की बहुमूल्य और सम्मानित संतान बन गए हैं। अभी भी, प्रभु हमें हमारे स्वर्गीय घर की ओर ले जा रहे हैं। स्वर्गीय भाई जांग उल-सू की तरह, हमें भी अपनी अंतिम साँस तक प्रभु की महानता और महिमा का गुणगान करते हुए इस संसार से विदा लेकर उस स्वर्गीय राज्य में प्रवेश करना चाहिए।

आशीष का माध्यम बनने वाला व्यक्ति

[भजन संहिता 84]

अब्राहम लिंकन के कई उपनाम थे, जिनमें से एक था "ऑनेस्ट एब" (ईमानदार एब)। उनके किशोरावस्था के दिनों की एक कहानी है जब वे एक दुकान में क्लर्क के तौर पर काम करते थे। एक ग्राहक ने एक चीज़ के लिए पैसे दिए और चला गया, लेकिन बाद में लिंकन को एहसास हुआ कि वे उसे दस सेंट वापस देना भूल गए थे। दस सेंट की इस गलती से पूरी रात परेशान रहने के बाद, अगले ही दिन—अपनी छुट्टी के दिन—वे उस ग्राहक को ढूँढ़ने और पैसे लौटाने के लिए तीन मील पैदल चले। उनके आस-पास के लोगों ने उनकी ईमानदारी की तारीफ़ की। हालाँकि, कहा जाता है कि उन्होंने जवाब दिया, "मुझे नहीं पता कि मेरी तारीफ़ क्यों होनी चाहिए। मैं ऐसा व्यक्ति नहीं बनना चाहता जिसकी तारीफ़ सिर्फ़ इसलिए हो कि उसने वही किया जिसकी उम्मीद थी; मैं ऐसा व्यक्ति बनना चाहता हूँ जिसकी तारीफ़ ज़रूरत से ज़्यादा करने के लिए हो।" वकील बनने के बाद, लिंकन ने सबसे पहले जो काम किया, वह था एक ऐसे पीड़ित व्यक्ति को मुफ़्त कानूनी मदद देना जो पैसे की कमी के कारण मुक़दमा नहीं लड़ सकता था। मुक़दमे के पहले दिन, कहा जाता है कि उन्होंने कहा था, "मुझे खुशी है कि मैं किशोरावस्था में ईश्वर से किए गए वादे को पूरा कर पाया" (स्रोत: इंटरनेट)।

मेरा सच में मानना है कि अब्राहम लिंकन ईश्वर द्वारा इस्तेमाल किए गए आशीष के एक माध्यम थे। यह सोचकर कि उनकी वजह से कितने लोगों को आज़ादी का आशीष मिला, मुझे याद आया कि कैसे ईश्वर ने मेरे माता-पिता और ससुराल वालों, दोनों का इस्तेमाल मुझ पर भरपूर आशीष बरसाने के माध्यम के तौर पर किया। उनके ज़रिए ईश्वर से मिले आशीषों के कारण, मैं भी दूसरों के लिए आशीष का माध्यम बनना चाहता हूँ। इसी मकसद से, मैं आज भजन संहिता 84 के अंश पर मनन करना चाहता हूँ। भजन संहिता 84 में, "धन्य हैं..." वाक्यांश तीन बार आता है (पद 4, 5 और 12)। उन शब्दों पर मनन करते हुए, मैं "आशीष का माध्यम

बनने वाले व्यक्ति" की तीन विशेषताओं पर विचार करना चाहता हूँ। मेरी प्रार्थना है—यीशु के नाम में—कि हम सभी, आशीष पाने वाले लोगों के तौर पर, इस दुनिया में अपने पूरे जीवनकाल में प्रभु के आशीष के माध्यम के रूप में सेवा कर सकें।

पहला, आशीष का माध्यम बनने वाला व्यक्ति वह है जो प्रभु के घर में रहता है।

भजन संहिता 84:4 देखें: "धन्य हैं वे जो तेरे घर में रहते हैं; वे सदा तेरी स्तुति करते रहेंगे (सेलाह)।" भजनकार शायद एक पुजारी थे जो यरूशलेम में तीर्थयात्रा पर आए थे (पार्क युन-सन)। वे मंदिर जाने के लिए बहुत उत्सुक थे (पद 1-4)। वे प्रभु के मंदिर के लिए इतनी गहराई से क्यों तरसते थे? कारण यह है कि प्रभु का मंदिर परमेश्वर से प्रार्थना करने की जगह है (पार्क युन-सन)। वे इसके लिए इसलिए तरसते थे क्योंकि वहाँ परमेश्वर से प्रार्थना करके वे उनसे मिल सकते थे और उनसे बातचीत कर सकते थे। उसी गहरी चाहत के कारण, भजनकार ने कहा, "हे सेनाओं के यहोवा, तेरा निवास-स्थान कितना प्यारा है!" (पद 1)। डॉ. पार्क युन-सन ने एक बार कहा था, "चर्च की सुंदरता उसकी इमारत से नहीं, बल्कि इस बात से तय होती है कि वहाँ परमेश्वर का आत्मा वास करता है।" परमेश्वर का मंदिर प्रार्थना का घर है। यह वह जगह है जहाँ हम उस परमेश्वर से मिलते हैं जो प्रार्थना करने पर हमारे करीब आता है (व्यवस्थाविवरण 4:7); भजनकार ने मंदिर के प्रति अपने प्रेम को इसलिए व्यक्त किया क्योंकि उन्होंने वहाँ परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव किया था। वे प्रभु के मंदिर के लिए कितनी गहराई से तरसते थे? आज के पाठ, भजन संहिता 84 के पद 2 को देखें: "मेरा प्राण यहोवा के आंगनों के लिए तरसता है, हाँ, व्याकुल हो जाता है; मेरा हृदय और मेरा शरीर जीवित परमेश्वर के लिए पुकारते हैं।" भजनकार परमेश्वर के आंगनों के लिए इतनी गहराई से तरसते थे कि उस चाहत के कारण वे शारीरिक रूप से कमजोर भी हो गए थे। प्रभु के मंदिर के लिए उनकी इतनी गहरी चाहत का कारण प्रार्थना के माध्यम से परमेश्वर की उपस्थिति की उनकी तीव्र इच्छा थी। इस प्रकार, उनका हृदय और शरीर जीवित परमेश्वर के लिए पुकार उठे। "मेरे राजा, मेरे परमेश्वर और सेनाओं के यहोवा" (पद 3) को पुकारते हुए, भजनकार ने अपनी भावनाओं को इस तरह व्यक्त किया: "मेरे राजा, मेरे परमेश्वर और सेनाओं के यहोवा, गौरैया को भी तेरी वेदी पर घर मिल गया है, और अबाबील को अपने दो बच्चों के लिए घोंसला" (पद 3)। यहाँ, भजनकार अपनी दुखद स्थिति—मंदिर से दूर होने—की तुलना उस गौरैया से करते हैं जिसे अपने बच्चों के लिए घोंसला मिल जाता है; वे प्रभु के मंदिर जाने की तीव्र इच्छा व्यक्त करते हैं (पार्क युन-

सन)। इसलिए वह कहते हैं: "क्योंकि तेरे आंगनों में एक दिन बिताना कहीं और हज़ार दिन बिताने से बेहतर है; मैं बुरे लोगों के डेरों में रहने के बजाय अपने परमेश्वर के घर में द्वारपाल बनना ज़्यादा पसंद करूँगा" (पद 10)। यहाँ प्रभु के आंगनों में रहने का मतलब है "परमेश्वर के साथ सच्ची संगति वाला जीवन" (पार्क युन-सन)। भजनकार की यह बात—कि परमेश्वर के साथ सच्ची संगति का एक दिन बुरे जीवन के हज़ार दिनों से बेहतर है—हमें सिखाती है कि हमें भी प्रभु और उनकी कलीसिया के लिए और ज़्यादा तड़पना चाहिए।

हमें भजनकार की तरह कलीसिया के लिए तड़पना चाहिए, जो परमेश्वर का घर है। हमें परमेश्वर के घर जाना चाहिए, एक साथ इकट्ठा होना चाहिए, और—एक मन होकर किए गए वादे को थामे रखकर और प्रार्थना में खुद को समर्पित करके—परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करना चाहिए। कलीसिया, यानी प्रभु का घर, प्रार्थना का घर है। प्रार्थना की मिठास चखने के बाद, हमें परमेश्वर के घर के लिए और भी ज़्यादा तड़पना चाहिए। इस तड़प में, उन लोगों की तरह जो सचमुच धन्य हैं, हमें प्रभु के घर में रहना चाहिए और लगातार उनकी स्तुति करनी चाहिए (पद 4)। मुझे वह बात आज भी अच्छी तरह याद है। 2003 में 'पास्टर्स काउंसिल फॉर चर्च रिन्यूअल' (KOCER) के रिट्रीट के दौरान... मुझे वह पल याद है जब मत्ती 16:18 के वादे—"मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा"—को थामे हुए, विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के बारे में सोचते हुए और भजन 246, "आई लव दाई किंगडम, लॉर्ड" (हे प्रभु, मुझे तेरे राज्य से प्रेम है) गाते हुए मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। पहला पद गाते समय मैं खास तौर पर भावुक हो गया और अपने आँसू नहीं रोक पाया: "हे प्रभु, मुझे तेरे राज्य से प्रेम है, तेरे निवास स्थान से, उस कलीसिया से जिसे हमारे धन्य उद्धारकर्ता ने अपने कीमती लहू से बचाया है।" फिर, जब मैंने तीसरा पद गाया—"उसके लिए मेरे आँसू बहेंगे, उसके लिए मेरी प्रार्थनाएँ ऊपर जाएँगी; मेरी चिंताएँ और मेहनत उसके लिए समर्पित होंगी, जब तक कि मेहनत और चिंताएँ खत्म न हो जाएँ"—तो मैंने विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च लौटने और ईमानदारी से सेवा करने का संकल्प लिया। तो फिर, हमें उस स्वर्गीय घर—परमेश्वर के अनंत घर—में रहने के लिए कितना ज़्यादा तड़पना चाहिए? आज के पाठ में भजनकार की तरह, हम भी तीर्थयात्री हैं जो उस स्वर्गीय घर—सच्चे नए यरूशलेम मंदिर—की ओर निकल पड़े हैं। इसीलिए, इब्रानियों 11 के विश्वास के नायकों की तरह, हम गवाही देते हैं कि हम "पृथ्वी पर परदेशी और यात्री हैं" (इब्रानियों 11:13)। हम वे लोग हैं जो "एक बेहतर, यानी स्वर्गीय देश की इच्छा रखते हैं" (पद

16)। जब हम उस देश की यात्रा करते हैं, तो हम प्रभु को आमने-सामने देखेंगे (1 कुरिन्थियों 13:12) और हमेशा उनके साथ रहेंगे। इसलिए, हमें अपना मन ऊपर की चीज़ों पर लगाना चाहिए और ऊपर की चीज़ों को खोजना चाहिए (कुलुस्सियों 3:1-2)। ऐसा व्यक्ति सचमुच धन्य है।

दूसरी बात, धन्य व्यक्ति वह है जिसे प्रभु में शक्ति मिलती है।

भजन संहिता 84:5 को देखें: "धन्य है वह मनुष्य जिसकी शक्ति आपमें है, जिसका मन सिय्योन के मार्गों पर लगा है।" धन्य व्यक्ति, जो प्रभु के मंदिर के लिए तरस रहा था, उसने परमेश्वर से ज़ोरदार इच्छा के साथ पुकार की कि वह उनके आँगन में जाए और वह शक्ति प्राप्त करे जो वे देते हैं। प्रार्थना में, उसने सच्चे दिल से परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करने की कोशिश की—"हे यहोवा, मेरी शक्ति" (18:1)। भजनकार ने प्रभु की शक्ति पाने की इतनी गहरी इच्छा क्यों की? पद 7 को देखें: "वे शक्ति से शक्ति की ओर बढ़ते जाते हैं, जब तक कि हर कोई सिय्योन में परमेश्वर के सामने प्रकट न हो जाए।" वह परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करने और उनकी शक्ति प्राप्त करने के लिए तरसता था क्योंकि वह जानता था कि केवल परमेश्वर द्वारा दी गई शक्ति से ही कोई सिय्योन के मंदिर में जा सकता है (पार्क युन-सन)। प्रभु के मंदिर में जाने के लिए परमेश्वर की शक्ति क्यों ज़रूरी है? इसका कारण आज के पाठ के पद 6 में मिलता है: "जब वे आँसुओं की घाटी से गुज़रते हैं, तो वे उसे झरनों की जगह बना देते हैं; शरद ऋतु की बारिश भी उसे आशीषों से भर देती है।" डॉ. पार्क युन-सन ने इसे इस तरह समझाया: "पुराने समय में विदेशों में रहने वाले इस्राएलियों के लिए, यरूशलेम के मंदिर जाने की योजना और कोशिश में 'आंसुओं की घाटी' जैसी तकलीफें और रुकावटें आती थीं। फिर भी, अगर वे हिम्मत बनाए रखते और उस रास्ते से गुज़र जाते, तो वे 'झरनों वाली जगह' पर पहुँच जाते—यानी आध्यात्मिक सुकून और खुशी की हालत में। वहाँ उन्हें 'पतझड़ की बारिश' जैसे स्वर्गीय तोहफ़े मिलते और वे आध्यात्मिक रूप से परमेश्वर से मिलने का अनुभव करते।" इसलिए, भजनकार ने परमेश्वर से पुकार लगाई: "हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन; हे याकूब के परमेश्वर, कान लगा! (सेलाह)" (पद 8)।

एक गॉस्पेल गीत है जो मुझे बहुत पसंद है, उसका नाम है "आशीष पाने वाला व्यक्ति" (या "प्रभु में शक्ति पाना")। इसके बोल कुछ इस तरह हैं: "तुम जो प्रभु में शक्ति पाते हो और जिनके दिल में ज़ियोन (सिय्योन)

जाने का रास्ता है—तुम परमेश्वर के आशीष पाए हुए व्यक्ति हो; प्रभु तुमसे बहुत खुश होते हैं। तुम जो प्रभु के घर में रहने और हमेशा उनकी स्तुति करने की चाहत रखते हो—तुम परमेश्वर के आशीष पाए हुए व्यक्ति हो; प्रभु तुमसे बहुत प्यार करते हैं। तुम्हारी सेवा एक सुंदर भजन है; तुम्हारी भक्ति एक सुगंधित प्रार्थना है; तुम जहाँ भी कदम रखोगे, प्रभु का नाम ऊँचा किया जाएगा।" यह गीत भजन संहिता 84 पर आधारित है। जब भी मैं इसे सुनता हूँ, मुझे अक्सर शक्ति मिलती है। इस गीत को सुनने या गाने से मुझे प्रभु से शक्ति पाने में मदद मिलती है और उनके घर में रहने की मेरी चाहत और गहरी हो जाती है। यहाँ तक कि जब मैं निराश होता हूँ, तब प्रभु से मिली शक्ति मुझे फिर से उठने और उस स्वर्गीय घर की ओर आगे बढ़ने में मदद करती है। खासकर, जब मैं उस स्वर्गीय घर की ओर यात्रा करता हूँ, तो ऊपर की चीज़ों और विश्वास के उन पूर्वजों के बारे में सोचने से जो पहले से ही वहाँ हैं, स्वर्ग के लिए मेरी तड़प और बढ़ जाती है। मेरा मानना है कि "ज़ियोन के रास्ते" वाला दिल होने का यही मतलब है। ज़ियोन का रास्ता हमारे दिलों पर गहराई से अंकित हो जाता है क्योंकि वे धीरे-धीरे स्वर्ग की झलक में बदल जाते हैं; प्रभु के साथ उस रास्ते पर हमारे कदम शक्ति और उम्मीद से भरे होते हैं। इसीलिए हम आशीष पाए हुए लोग हैं।

तीसरी बात, धन्य वह व्यक्ति है जो प्रभु पर भरोसा रखता है।

भजन संहिता 84:12 को देखिए: "हे सेनाओं के यहोवा, धन्य है वह मनुष्य जो तुझ पर भरोसा रखता है!" भजनकार ने किस तरह के परमेश्वर पर भरोसा किया?

(1) भजनकार ने उस परमेश्वर पर भरोसा किया, जो हमारी ढाल है (पद 9)।

क्योंकि सिय्योन में मंदिर की यात्रा दुखों और बाधाओं से भरी है—जैसे "आंसुओं की घाटी"—इसलिए भजनकार ने प्रभु पर और भी अधिक भरोसा किया, जो कलीसिया की ढाल का काम करते हैं। भजनकार घोषणा करता है: "मेरी ढाल परमेश्वर के पास है, जो सच्चे मन वालों को बचाता है" (7:10)।

(2) भजनकार ने उस परमेश्वर पर भरोसा किया, जो "अनुग्रह और महिमा देता है।"

भजन संहिता 84:11 को देखिए: "क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य और ढाल है; यहोवा अनुग्रह और महिमा देता है; जो लोग सच्चाई से चलते हैं, उनसे वह कोई भी अच्छी चीज़ नहीं रोकता।" जिस परमेश्वर पर भजनकार ने भरोसा किया, वही अनुग्रह और महिमा देता है और जो लोग सच्चाई से चलते हैं, उनसे अच्छी चीज़ें नहीं रोकता। भजनकार ने उसी परमेश्वर पर भरोसा किया।

भजन 342 (कोरियाई भजन-संग्रह), पद 1 और कोरस में लिखा है: "जब मैं मुश्किल समय का सामना करता हूँ और मेरा विश्वास कमज़ोर होता है, तो मैं उस प्रभु पर और भी अधिक भरोसा करता हूँ जिस पर मेरा विश्वास है। जैसे-जैसे साल बीतते हैं, मैं केवल उसी पर निर्भर रहता हूँ; चाहे कुछ भी हो, मैं यीशु पर भरोसा करता हूँ।" हमें पूरी तरह से परमेश्वर पर—अपनी ढाल पर—भरोसा करना चाहिए, जो सच्चे लोगों को अनुग्रह और महिमा देता है और उनसे कोई भी अच्छी चीज़ नहीं रोकता। जैसे-जैसे समय बीतता है, जब भी हम मुश्किलों का सामना करते हैं और अपने विश्वास की कमज़ोरी को महसूस करते हैं, तो हमें—उस कमज़ोरी और बेबसी को पूरी तरह स्वीकार करते हुए—केवल यीशु पर ही और अधिक भरोसा करना चाहिए। जो लोग इस तरह से पूरी तरह प्रभु पर भरोसा करते हैं, वे सचमुच धन्य हैं।

आप धन्य लोग हैं जो बारिश वाली बुधवार की शाम को प्रभु की उपस्थिति की चाहत में, उनकी स्तुति और प्रार्थना करने के लिए उनके घर आए हैं। आप धन्य लोग हैं जो प्रभु को पुकारते हुए उनमें शक्ति पाते हैं और अपने दिलों में सिय्योन का मार्ग लिए हुए हैं। आप धन्य लोग हैं जो जैसे-जैसे साल बीतते हैं, प्रभु पर और अधिक भरोसा करते हैं। प्रभु आपसे बहुत प्रसन्न हैं। प्रभु आपसे गहरा प्रेम करते हैं। आपकी सेवा प्रशंसा का एक सुंदर गीत है। आपकी भक्ति एक सुगंधित प्रार्थना है। आप जहाँ भी कदम रखेंगे, वहाँ प्रभु का नाम महिमामंडित होगा।

“हमें अपना उद्धार दें”

[भजन संहिता 85]

“अपने उद्धार को सिद्ध करो” संदेश हमें कई बातें सिखाता है। (1) यह हमें सिखाता है कि छोटी-छोटी बातों में भी परमेश्वर के प्रति वफादार रहें। बहुत से लोग अपनी बुरी आदतों पर पछतावा करते हुए अपनी ज़िंदगी का ज़्यादातर हिस्सा बर्बाद कर देते हैं। वे एक नई ज़िंदगी में दोबारा जन्म लेने की बात तो करते हैं, लेकिन असल में अपने उद्धार को सिद्ध करने का काम कभी शुरू नहीं करते। आपके पास हर पल अपने उद्धार में और गहराई से शामिल होने का मौका है। हर पल परमेश्वर द्वारा दिए गए मौकों का फ़ायदा उठाएँ। (2) यह हमें परमेश्वर की बात सुनना सिखाता है। हमें परमेश्वर की उपस्थिति में रहना चाहिए और ऐसी किसी भी चीज़ से बचना चाहिए जो हमें उनसे दूर ले जाए। हमें यह जानना चाहिए कि वे हमारे अंदर वास करते हैं और उनके सामने अपना दिल खोलकर रख देना चाहिए। हमें सबसे ज़्यादा परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए। हमें अपनी योजनाओं को परमेश्वर की इच्छा के अधीन कर देना चाहिए। हमें यह पता लगाना चाहिए कि वे हमारे लिए क्या चाहते हैं और तुरंत उस पर अमल करना चाहिए। जब हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कोई छोटा-सा काम भी करते हैं, तो वह छोटा-सा काम भी महान बन जाता है। (3) यह हमें परमेश्वर की आज्ञा मानना और प्रेम के कारण वे जो हमसे चाहते हैं, उसे करना सिखाता है। बस इतना ही काफ़ी है। चाहे हालात कितने भी मुश्किल या तकलीफ़देह क्यों न हो जाएँ, आप आज़ाद रहते हैं क्योंकि आपने उन सबको परमेश्वर के हाथों से स्वीकार किया है। सबसे महान काम है बिना निराश हुए दुख को स्वीकार करना (इंटरनेट)।

मुझे डॉ. मार्टिन लॉयड-जोन्स के इफिसियों अध्याय 3 पर दिए गए उपदेशों का एक अंश याद आता है, जिसे मैंने कल रात पढ़ा था। इसने मुझे याद दिलाया कि हम जो यीशु में विश्वास करते हैं, वे ऐसे लोग हैं जो दुख के बीच भी खुशी और आनंद पाते हैं... हम सिर्फ़ ऐसे लोग नहीं हैं जो इस धुंधली उम्मीद के साथ अपनी सच्चाई के दर्द को स्वीकार करते हैं कि चीज़ें बेहतर हो जाएँगी। हम इसे खुशी के साथ स्वीकार करते हैं। और इसे

स्वीकार करते समय, हमें यह सब परमेश्वर के हाथों से लेना चाहिए। ऐसे पलों में, हम आज़ाद होते हैं। इसलिए, जब हम दुख सहते हैं, तो हमें निराशा या मायूसी के आगे नहीं झुकना चाहिए; बल्कि, हमें परमेश्वर के उद्धार की चाहत रखनी चाहिए।

भजन संहिता 85:7 में, हम भजनकार को परमेश्वर के उद्धार की चाहत रखते हुए देखते हैं: “हे प्रभु, हमें अपना अटूट प्रेम दिखा और हमें अपना उद्धार दे।” इस आयत और "हमें अपना उद्धार दें" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं चार चरणों में यह बताना चाहूँगा कि जब हम सच्चे दिल से परमेश्वर से छुटकारा पाने की कोशिश करते हैं, तो वे हमें कैसे बचाते हैं।

पहला, जो प्रभु हमें बचाते हैं, वे अपना क्रोध हम पर से हटा लेते हैं।

भजन संहिता 85:3–4 को देखें: "तूने अपना सारा क्रोध दूर कर दिया और अपने भयंकर गुस्से को शांत कर दिया। हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, हमें फिर से बहाल कर और हमारे प्रति अपनी नाराज़गी दूर कर।" जो लोग प्रभु का उद्धार चाहते हैं, उनके लिए पाप करने के बाद सबसे पहली बात यह है कि वे उनकी दया मांगें (आयत 10)। भले ही हम उस सज़ा के लायक हैं जो पाप का स्वाभाविक परिणाम है, हमें उनसे विनती करनी चाहिए कि वे वह सज़ा न दें बल्कि अपना क्रोध हम पर से हटा लें। परमेश्वर से "हमें अपना उद्धार दें" (आयत 7) की विनती करते हुए, भजनकार ने प्रार्थना की कि परमेश्वर हम पर से अपना सारा भयंकर क्रोध हटा लें और उसे शांत कर दें (आयत 3–4)। उन्होंने यह विनती इस विश्वास के साथ की कि परमेश्वर उन लोगों से हमेशा नाराज़ नहीं रहेंगे जिन्हें वे प्यार करते हैं: "क्या तू हम पर हमेशा नाराज़ रहेगा? क्या तू पीढ़ियों तक अपना क्रोध बनाए रखेगा?" (आयत 5)। भजन संहिता 30:5 में भजनकार के कहे शब्दों पर विचार करें: "उनका क्रोध केवल एक पल के लिए रहता है, लेकिन उनकी कृपा जीवन भर रहती है..." हमारे परमेश्वर को क्रोध देर से आता है। उनका क्रोध केवल एक पल के लिए रहता है। इसलिए, जब हमने पाप किया हो और परमेश्वर का क्रोध मोल लिया हो, तो हमें उनकी दया मांगनी चाहिए और सच्चे दिल से उनसे विनती करनी चाहिए कि वे अपना क्रोध हम पर से हटा लें। हमें यह विनती ऐसे दिल से करनी चाहिए जो प्रभु का आदर करता हो (85:9)। आदर की इसी भावना के साथ हमें परमेश्वर का उद्धार मांगना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो जो परमेश्वर हमें बचाते हैं, वे अपना सारा क्रोध हम पर से हटा लेते हैं।

दूसरा, जो प्रभु हमें बचाते हैं, वे हमारे सभी पापों को ढक लेते हैं।

भजन संहिता 85:2 को देखें: "तूने अपने लोगों के अधर्म को क्षमा किया और उनके सभी पापों को ढक दिया (सेलाह)।" हमें बचाने की प्रक्रिया में, पहले अपना क्रोध हटाने के बाद, प्रभु हमें जो कृपा देते हैं (आयत 1), वह हमारे सभी पापों को ढकना है। दूसरे शब्दों में, हमारे उद्धार के हिस्से के रूप में, परमेश्वर हमारे सभी पापों को क्षमा कर देते हैं। हमारे परमेश्वर, जो प्रेम और कृपा से भरपूर हैं—जिन्होंने अतीत में हमारे पापों को क्षमा किया और हमारे अपराधों को ढँक दिया (पद 2)—वे आज भी हमारे द्वारा किए गए पापों को क्षमा करने की इच्छा रखते हैं और इसमें खुशी पाते हैं। परमेश्वर हमें क्षमा करने की इच्छा और खुशी क्यों रखते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि वे हमें अपनी दया और प्रेम दिखाना चाहते हैं (पद 7)। इसलिए, भजनकार ने परमेश्वर से विनती की: "हे यहोवा, अपने नाम के कारण मेरे अधर्म को क्षमा कर, क्योंकि वह बहुत बड़ा है" (25:11)।

भले ही हमारे पाप कितने भी बड़े क्यों न हों, हमारे प्रति परमेश्वर का प्रेम उससे भी कहीं अधिक बड़ा है। इसीलिए, हमें बचाने में, हमारे परमेश्वर अपने अपार प्रेम के द्वारा हमारे बड़े पापों को क्षमा करते हैं। इसके अलावा, परमेश्वर हमसे शांति की बात करते हैं (भजन संहिता 85:8)। इसलिए, भजनकार की तरह, हमें परमेश्वर के इस वचन को सुनने का संकल्प लेना चाहिए (पद 8)। हमें मूर्खता की ओर नहीं लौटना चाहिए (पद 8); दूसरे शब्दों में, हमें पाप की ओर वापस नहीं जाना चाहिए। जो लोग सचमुच धन्य हैं, उनके बारे में भजनकार दाऊद भजन संहिता 32:1–2 में लिखते हैं: "धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया है, जिसका पाप ढँक दिया गया है। धन्य है वह जिसके हृदय में कोई कपट नहीं है और जिसे प्रभु दोषी नहीं ठहराते।" जिन्हें क्षमा मिल गई है और जिनके पाप ढँक दिए गए हैं, वे धन्य हैं। जिन्हें परमेश्वर उनके पापों के लिए दोषी नहीं ठहराते, वे धन्य हैं। ऐसे धन्य लोगों के हृदय में कोई कपट नहीं होता; यानी, वे अपने किए गए पापों को छिपाते नहीं हैं, बल्कि ईमानदारी और सच्चाई से परमेश्वर के सामने उन्हें स्वीकार करते हैं और क्षमा मांगते हैं। यह हम सभी की ज़िम्मेदारी है। हमें सच्चे हृदय से परमेश्वर के सामने अपने सभी पापों को स्वीकार करना चाहिए और उनसे क्षमा मांगनी चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारे परमेश्वर—जो प्रेम और कृपा से भरपूर हैं—हमारे सभी पापों को ढँक देंगे।

तीसरी बात, जो प्रभु हमें बचाते हैं, वही हमें नया जीवन भी देते हैं।

भजन संहिता 85:6 को देखें: "क्या तू हमें फिर से जीवित नहीं करेगा, ताकि तेरे लोग तुझमें आनंदित हो सकें?" जब परमेश्वर हमें बचाते हैं, तो वे हमारे प्रति अपना क्रोध हटा लेते हैं और हमारे पापों को ढँक देते हैं, और इसके बाद हमें नया जीवन देते हैं। दूसरे शब्दों में, वे हमारी आत्माओं को बहाल करते हैं और उनमें नई जान डालते हैं। जिस हृदय ने पाप किया है, उसे पश्चाताप के बाद बहाल किए जाने की आवश्यकता होती है। पाप के बोझ से दबी और पछतावा कर चुकी आत्मा को फिर से जीवित और नई ऊर्जा से भरने की ज़रूरत होती है—न केवल परमेश्वर द्वारा पाप की क्षमा के ज़रिए, बल्कि उनके वचन के ज़रिए भी। आज के अंश में, आयत 1 का दूसरा भाग बताता है कि भजनकार ने परमेश्वर के जीवन देने वाले उद्धार के काम का वर्णन कैसे किया: "...आपने याकूब की किस्मत को फिर से संवारा।" यहाँ, "याकूब के बंधुओं" का मतलब इज़राइल के उन लोगों से है जिन्हें बेबीलोन या दूसरे देशों ने बंदी बना लिया था (पार्क युन-सन)। भजनकार की परमेश्वर से नई ज़िंदगी लाने की गुहार—उनके उद्धार के काम की चाहत के साथ—असल में बंदी बनाए गए इज़राइलियों की आज़ादी के लिए एक प्रार्थना थी। इस तरह, उन्होंने प्रार्थना की कि इज़राइल के लोगों को कनान देश में वापस लाया जाए। संक्षेप में, भजनकार "बहाली" ["...आपने याकूब की किस्मत को फिर से संवारा" (आयत 1); "हे हमारे उद्धार के परमेश्वर, हमें बहाल कर..." (आयत 4)] के लिए गुहार लगा रहे थे।

हमारे उद्धार के परमेश्वर वही प्रभु हैं जो हमें बहाल करके खुशी देते हैं (पद 6b)। हालाँकि हम निश्चित रूप से इसलिए खुश होते हैं क्योंकि हमें बहाली (उद्धार) मिली है, लेकिन असल में, परमेश्वर ही हमें उनमें खुशी और आनंद पाने के काबिल बनाते हैं (पद 6; पार्क युन-सन)। इससे वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म का पहला सवाल याद आता है: सवाल 1: इंसान का मुख्य मकसद क्या है? जवाब: इंसान का मुख्य मकसद परमेश्वर की महिमा करना और हमेशा उनमें आनंद लेना है। परमेश्वर ही वह प्रभु हैं जो अपने चुने हुए, प्यारे लोगों से अपनी महिमा करवाते हैं और ऐसा करते हुए उन्हें खुद में खुशी पाने का मौका देते हैं। हमें फिर से जीवित करके और उठाकर, वे हमें प्रभु की उपस्थिति में जीने के काबिल बनाते हैं (होशे 6:2)।

आखिर में, चौथा बिंदु यह है कि जो प्रभु हमें बचाते हैं, वे हमें अच्छी चीज़ें देते हैं।

भजन संहिता 85:12 देखें: "प्रभु अच्छी चीज़ें देंगे, और हमारी ज़मीन अपनी उपज देगी।" जो परमेश्वर हमें बहाल करते हैं, वे सचमुच अच्छे परमेश्वर हैं जो हमें अपनी उपस्थिति में रहने देते हैं और उदारता से हमें

अच्छी चीज़ें देते हैं। वे ऐसे परमेश्वर नहीं हैं जो सिर्फ़ भरपूर आध्यात्मिक आशीषें देते हैं; वे ऐसे परमेश्वर भी हैं जो भरपूर भौतिक आशीषें भी देते हैं। वे ऐसे परमेश्वर हैं जो सीधे रास्ते पर चलने वालों से कोई भी अच्छी चीज़ नहीं रोकते (84:11)। रोमियों 8:32 देखें: "जिन्होंने अपने ही बेटे को नहीं बचाया, बल्कि हम सबके लिए उसे सौंप दिया—तो क्या वे उसके साथ-साथ हमें सब कुछ कृपापूर्वक नहीं देंगे?" परमेश्वर, जिन्होंने अपने इकलौते बेटे यीशु को नहीं बचाया, बल्कि हमें उद्धार देने के लिए उन्हें क्रूस पर सौंप दिया, वही परमेश्वर उदारता से हमें हर अच्छी चीज़ देते हैं। प्रेरित पौलुस के अनुसार, परमेश्वर ने हमसे प्रेम किया और मसीह में स्वर्गीय स्थानों में हर आध्यात्मिक आशीष से हमें आशीष दी (इफिसियों 1:3)। उन्होंने दुनिया की नींव रखे जाने से पहले ही हमें चुना और पहले से तय किया, हमें छुटकारा—पापों की क्षमा—दिया और हमें अपनी संतान बनाया (पद 4-5)। परमेश्वर ने हमें ये आध्यात्मिक आशीषें मुफ्त में दीं (पद 6)। इस तरह, आप और मैं परमेश्वर द्वारा इतनी उदारता से दी गई आशीषों का आनंद लेते हुए अपना जीवन जीते हैं।

वे किस तरह के परमेश्वर हैं? पहली बात, वह परमेश्वर है जो मुझे सबसे अच्छी तरह जानता है (भजन संहिता 139)। दूसरी बात, वह परमेश्वर है जो मुझसे सबसे ज़्यादा प्यार करता है (रोमियों 8:32)। तीसरी बात, वह परमेश्वर है जो मुझे अभी वही देता है जो मेरे लिए सबसे अच्छा है (भजन संहिता 84:11; 85:12)। इस परमेश्वर ने अपना सारा क्रोध अपने एकलौते बेटे, यीशु पर उँडेल दिया। उसने उस क्रोध को हम पर आने से रोक दिया और उसकी जगह उसे यीशु पर डाल दिया। इसके अलावा, हमारे सभी पापों को माफ़ करने के लिए, उसने यीशु से उन सभी पापों का बोझ उठवाया और उसे क्रूस पर मरने दिया। फिर भी, तीन दिन बाद, परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया। और यीशु में, उसने हमें भरपूर मात्रा में हर तरह की आत्मिक आशीष दी है (इफिसियों 1:3)।

अपने सेवक को शक्ति दें!

[भजन संहिता 86]

स्वर्गीय रेवरेंड किम चांग-ह्युक—जिन्होंने हमारे चर्च में पादरी के तौर पर सेवा की और जो मेरे चाचा थे—के अंतिम संस्कार के सभी कार्यक्रम परमेश्वर की कृपा से पूरे हो गए हैं। हालाँकि वे अब शारीरिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, फिर भी हम उनकी उन यादों को संजोकर रखते हैं जो परमेश्वर ने हमारे जीवन में छोड़ी हैं। जब हम इन यादों को संजोते हैं और उनके माध्यम से हममें से प्रत्येक पर परमेश्वर द्वारा बरसाई गई कृपा और प्रेम के लिए धन्यवाद देते हैं, तो हमें प्रभु के सेवक के रूप में उनके सिखाए गए पाठों को व्यवहार में लाना चाहिए। मेरा मानना है कि यह हेनरी नूवेन द्वारा बताई गई "याद रखने की सेवा" (ministry of remembering) का ही एक रूप है। अभी भी, जब मैं इन बातों पर विचार करता हूँ—और विशेष रूप से आज सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान गिनती की पुस्तक (Numbers) 11:4 के इस अंश पर विचार करते हुए: "उनके साथ आए लोगों ने दूसरे भोजन की लालसा की, और इस्राएलियों ने फिर से विलाप करना शुरू कर दिया और कहा, 'हमें खाने के लिए मांस कौन देगा?'"—तो मुझे योंगडोंग सेवरेंस अस्पताल के कैंसर सेंटर के प्रमुख ब्रदर ली ही-डे के शब्द याद आते हैं: "कैंसर लालच है।" एक किताब जिसे मैंने पढ़ा—पादरी की कैंसर से लड़ाई से प्रेरित होकर—उसमें यह वाक्यांश था "कैंसर लालच है," जिसने आज सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान मेरे चिंतन को प्रेरित किया। डॉ. ली ही-डे बताते हैं कि कैंसर कोशिकाएँ (cells) हम सभी के भीतर मौजूद होती हैं। हालाँकि, हम जीवित हैं और कैंसर के रोगियों की तरह पीड़ित नहीं हैं, इसका कारण यह है कि हमारे शरीर में कैंसर कोशिकाओं की तुलना में स्वस्थ कोशिकाएँ अधिक हैं। इस पर विचार करते हुए, यदि हम आध्यात्मिक कैंसर कोशिकाओं को "लालच" के रूप में परिभाषित करें, तो स्वस्थ कोशिकाएँ क्या हैं? मैंने निष्कर्ष निकाला कि वे "केवल यीशु में संतुष्टि पाने" (संतोष) का प्रतिनिधित्व करती हैं। दूसरे शब्दों में, आध्यात्मिक स्वास्थ्य का अर्थ है केवल यीशु के साथ संतुष्ट होकर जीना—उन लोगों के विपरीत

जिनमें लालच होता है—ठीक वैसे ही जैसे प्रेरित पौलुस ने किया था। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम यीशु द्वारा प्रदान की गई शक्ति के माध्यम से आध्यात्मिक स्वास्थ्य में जी सकते हैं। मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप परमेश्वर के वचन के प्रकाश में अपने आध्यात्मिक स्वास्थ्य की जाँच करें। जिस तरह हम साल में एक बार व्यापक मेडिकल जाँच करवाते हैं, उसी तरह हमें दिन-प्रतिदिन, पल-पल अपने आध्यात्मिक स्वास्थ्य का आकलन करना चाहिए। एक आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ विश्वासी केवल यीशु के साथ संतुष्ट होकर जीता है; अपनी कमियों, अपर्याप्तताओं और कमजोरियों के बावजूद, वे परमेश्वर से मिलने वाली शक्ति से प्रेरित होकर साहसपूर्वक ऊंचाइयों की ओर बढ़ते हैं।

आज के बाइबल पाठ, भजन संहिता 86:16 में, भजनकार दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता है: "मेरी ओर मुड़ और मुझ पर दया कर; अपने सेवक को अपनी शक्ति दे और अपनी दासी के पुत्र को बचा।" आज, इस पाठ और "अपने सेवक को शक्ति दे" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं प्रभु द्वारा हमें दी जाने वाली शक्ति के तीन पहलुओं पर विचार करना चाहता हूं, और प्रार्थना करता हूं कि वह यह शक्ति आप और मुझ दोनों को प्रदान करे।

पहला, प्रभु हमें जो शक्ति देते हैं, वह प्रार्थना की शक्ति है।

भजन संहिता 86:1, 6 और 7 को देखें: "हे प्रभु, सुन और मुझे उत्तर दे, क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूं" (पद 1); "हे प्रभु, मेरी प्रार्थना सुन; दया के लिए मेरी पुकार पर ध्यान दे" (पद 6); "मुसीबत के दिन मैं तुझे पुकारूंगा, क्योंकि तू मुझे उत्तर देगा" (पद 7)। दाऊद ने मुसीबत के दिनों में प्रभु को पुकारा। उसने कष्ट और ज़रूरत की स्थिति में परमेश्वर को याद किया। दाऊद ने जिन कष्टों का सामना किया, उनका वर्णन इस प्रकार किया है: "हे परमेश्वर, अहंकारी लोग मेरे विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं; निर्दयी लोगों का एक समूह मेरी जान लेना चाहता है—ऐसे लोग जिन्हें तेरा कोई भय नहीं है" (पद 14)। दाऊद के दुश्मन अहंकारी थे और परमेश्वर से नहीं डरते थे; इसलिए, वे दाऊद की, जो एक धर्मी व्यक्ति था, जान लेना चाहते थे। उन्होंने दाऊद की जान लेने की कोशिश क्यों की? कारण यह था कि वे उससे नफरत करते थे (पद 17)। ऐसी स्थिति में, दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा किया (पद 2) और प्रभु को पुकारा। उसने परमेश्वर से क्या मांगा? सबसे पहले, उसने परमेश्वर की दया के लिए विनती की (पद 3, 15)। उसने दिन भर प्रभु से दया की पुकार लगाई (पद 3)। उसने प्रभु से

अपनी आत्मा की रक्षा करने के लिए भी कहा: "मेरे प्राण की रक्षा कर, क्योंकि मैं तेरा भक्त हूं। तू मेरा परमेश्वर है; अपने उस सेवक को बचा जो तुझ पर भरोसा रखता है" (पद 2)। संक्षेप में, दाऊद की प्रार्थना परमेश्वर से उद्धार पाने के लिए थी (पद 2)। उसने परमेश्वर से विनती की कि वे उसे उसके दुश्मनों से बचाएँ, और उसे पूरा भरोसा था कि उसकी प्रार्थना सुनी जाएगी। दाऊद को यकीन था कि उद्धार देने वाले परमेश्वर उसे उसके दुश्मनों के हाथों से छुड़ाएँगे। उसे इतना पक्का यकीन कैसे था? ऐसा इसलिए था क्योंकि उसके प्रति प्रभु का अटूट प्रेम बहुत बड़ा था (पद 13)।

मेरा मानना है कि क्योंकि बहुत से लोगों ने स्वर्गीय पादरी किम चांग-ह्युक के लिए प्रार्थना की, इसलिए परमेश्वर ने उन पर दया की और उनकी आत्मा को हमेशा के लिए बचाने का काम किया। हालाँकि "उद्धार" का मतलब शारीरिक चंगाई भी हो सकता है, लेकिन मेरे सबसे बड़े बच्चे, जू-यंग के गुज़र जाने के बाद, परमेश्वर ने मेरे दिल में यह बात बिठा दी: यह सच कि उन्होंने जू-यंग को हमेशा के लिए स्वर्ग में ले जाकर हमारी प्रार्थनाओं का जवाब दिया, अपने आप में बचाने वाली कृपा का काम था। मुझे उम्मीद है कि जैसे-जैसे हम प्रार्थना में खुद को समर्पित करेंगे, हम परमेश्वर के बचाने वाले काम को और भी गहराई से महसूस करेंगे, और इस तरह उद्धार देने वाले परमेश्वर से ताकत पाएँगे जो हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देते हैं।

दूसरी बात, प्रभु हमें जो ताकत देते हैं, वह प्रेम की ताकत है।

भजन संहिता 86:5, 13 और 15 को देखें: "क्योंकि हे प्रभु, तू भला है और क्षमा करने को तैयार है, और जो कोई तुझे पुकारता है, उस पर तू बहुत दया करता है" (पद 5); "क्योंकि मेरे प्रति तेरी दया बहुत बड़ी है, और तूने मेरी आत्मा को पाताल की गहराइयों से बचाया है" (पद 13); "लेकिन हे प्रभु, तू दया से भरा, अनुग्रहकारी, धीरज रखने वाला और दया और सच्चाई से भरपूर परमेश्वर है" (पद 15)। जब दाऊद ने परमेश्वर से उद्धार पाने की इच्छा की और उन्हें पुकारा... तो उसे यह भरोसा इसलिए था क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर कौन हैं। खास तौर पर, दाऊद जानता था कि उसका परमेश्वर दयालु परमेश्वर है जो अनुग्रह करना चाहता है। उसका मानना था कि परमेश्वर देर से क्रोध करने वाला और अटूट प्रेम और सच्चाई से भरपूर है। क्योंकि उसने इस परमेश्वर पर भरोसा करके पुकारा था, इसलिए दाऊद को यकीन था कि उसकी प्रार्थनाएँ सुनी जाएँगी। वह जानता था कि परमेश्वर उन लोगों के प्रति भला है जो उसे पुकारते हैं और वह अटूट प्रेम से भरपूर है (पद 5)। इसलिए, जब दाऊद ने परमेश्वर से पुकार लगाई—और उनके अटूट प्रेम पर भरोसा

किया—तो उसे इस बात का भरोसा था कि उसके पाप माफ़ कर दिए गए हैं। दाऊद का मानना था कि परमेश्वर भला है और वह माफ़ करना चाहता है।

हमें इस बात के भरोसे की ज़रूरत है कि हमें माफ़ी मिल गई है। इसकी एक वजह यह है कि हममें से कई लोग अपनों के साथ गलत व्यवहार करने के अपराध-बोध के साथ जी रहे हैं। कुछ लोग तो किसी अपने की मौत की वजह से और भी ज़्यादा अपराध-बोध महसूस कर रहे होंगे। हमें प्रेम की शक्ति की भी ज़रूरत है। परमेश्वर के प्रेम के ज़रिए, हमें ऐसे लोग बनना चाहिए जो एक-दूसरे को माफ़ करना जानते हों। हमें खुद को भी माफ़ करना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने यीशु मसीह के ज़रिए हमें माफ़ किया है। और हमें उन्हें भी माफ़ करना चाहिए जिन्होंने हमारे ख़िलाफ़ पाप किया है। हम परमेश्वर के लोग हैं, जिनके सारे पाप माफ़ कर दिए गए हैं। माफ़ी पाने के बाद, हम परमेश्वर के अटूट प्रेम की विशालता को—कम से कम कुछ हद तक—उनके हमें माफ़ करने के काम के ज़रिए महसूस करते हैं। इसलिए, हमें परमेश्वर के इस प्रेम को दिखाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमें माफ़ी देने वाला जीवन जीना चाहिए। यही प्रेम की शक्ति है। प्रेम की इस शक्ति को महसूस करने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन का पालन करना चाहिए। जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, वे उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। इसीलिए दाऊद ने परमेश्वर से विनती की: "हे प्रभु, मुझे अपने मार्ग सिखा..." "मुझे सिखा, ताकि मैं तेरे सत्य पर चल सकूँ; मुझे एक ऐसा मन दे जो तेरे नाम का भय माने" (पद 11)। हमें पूरे मन से प्रभु के वचन का पालन करने की कोशिश करनी चाहिए। उसकी आज्ञाओं में से एक आज्ञा माफ़ करना है। इसलिए, परमेश्वर से माफ़ी पाने वाले लोगों के तौर पर, हमें एक-दूसरे को माफ़ करते हुए जीना चाहिए। ऐसा करते समय, हमें प्रेम के परमेश्वर से शक्ति लेनी चाहिए।

तीसरी बात, प्रभु हमें जो ताकत देते हैं, वह है स्तुति की शक्ति।

आज के हमारे पाठ, भजन संहिता 86 की आयत 9 और 12 को देखें: "हे प्रभु, जिन जातियों को तूने बनाया है, वे सब आकर तेरी उपासना करेंगी और तेरे नाम की महिमा करेंगी" (आयत 9); "हे मेरे परमेश्वर प्रभु, मैं पूरे मन से तेरी स्तुति करूँगा और सदा तेरे नाम की महिमा करूँगा" (आयत 12)। परमेश्वर के भरपूर प्रेम पर भरोसा करते हुए, दाऊद ने इस विश्वास के साथ उनसे पुकार की कि उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलेगा। नतीजतन, उसने न केवल पूरे मन से प्रभु की स्तुति करने का, बल्कि हमेशा उनकी महिमा करने का भी

संकल्प लिया (आयत 12)। इसके अलावा, दाऊद सभी जातियों को प्रभु के सामने आकर उपासना करने के लिए प्रोत्साहित करता है (आयत 9)। वह घोषणा करता है कि सभी जातियों को प्रभु की महिमा करनी चाहिए (आयत 9)। तो, वह कैसा परमेश्वर है जिसकी दाऊद ने पूरे मन से स्तुति की?

(1) जिस परमेश्वर की दाऊद ने पूरे मन से स्तुति की, वह एक शानदार और महान परमेश्वर है।

आज के हमारे पाठ, भजन संहिता 89:10 को देखें: "क्योंकि तू महान है और अद्भुत काम करता है; केवल तू ही परमेश्वर है।" क्योंकि इस महान परमेश्वर ने दाऊद के जीवन में उद्धार का एक शक्तिशाली कार्य किया था, इसलिए उस महान परमेश्वर की कृपा और प्रेम से प्रेरित होकर दाऊद पूरे मन से उसकी स्तुति किए बिना नहीं रह सका।

(2) जिस परमेश्वर की दाऊद ने पूरे मन से स्तुति की, वह एकमात्र परमेश्वर है।

आज के हमारे पाठ, भजन संहिता 89:8 को देखें: "हे प्रभु, देवताओं में तेरे समान कोई नहीं है; और न ही तेरे कामों के समान कोई काम हैं।" इस दुनिया में कोई भी ऐसा देवता नहीं है जो परमेश्वर के समान उद्धार के कार्य करता हो। (3) जिस परमेश्वर की दाऊद ने पूरे मन से स्तुति की, वह ऐसा परमेश्वर है जो हमारी सहायता और हमें सांत्वना देता है।

आज के पाठ, भजन संहिता 89:17 को देखें: "मुझे अपनी कृपा का कोई चिन्ह दिखा, ताकि जो लोग मुझसे घृणा करते हैं, वे उसे देख सकें और लज्जित हों, क्योंकि हे प्रभु, तू मेरी सहायता करता है और मुझे सांत्वना देता है।" आज जब हम स्वर्गीय रेवरेंड किम चांग-ह्युक का अंतिम संस्कार और दफ़नाने की रस्म कर रहे हैं, तो हमें इस बात पर विचार करके परमेश्वर से मदद और सांत्वना मिली है कि कैसे उन्होंने अपने जीवनकाल में प्रभु की महिमा और महानता की प्रशंसा की। दिवंगत की तरह, हमें भी अपनी आखिरी सांस तक परमेश्वर की प्रशंसा करनी चाहिए। परमेश्वर का महान प्रेम पाने वाले लोगों के तौर पर, हमें उनकी प्रशंसा करनी चाहिए।

हमारे प्रभु वह परमेश्वर हैं जो हमें शक्ति देते हैं। वह ऐसे परमेश्वर हैं जो हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं, हम पर अपना महान और भरपूर प्रेम बरसाते हैं, और उद्धार करने वाले वे अद्भुत और एकमात्र परमेश्वर हैं जो हमारी मदद करते हैं और हमें सांत्वना देते हैं। वह हमें जो शक्ति देते हैं, वह प्रार्थना की शक्ति, प्रेम की शक्ति और प्रशंसा की शक्ति है। परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली यह शक्ति हम कैसे पा सकते हैं? आज के वचन, भजन संहिता 86:4 को देखें: "हे प्रभु, मैं अपनी आत्मा को तेरी ओर उठाता हूँ; हे प्रभु, मेरी आत्मा को आनंदित कर।" हमें प्रभु की ओर देखना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो प्रभु हमें शक्ति देंगे और हमारी आत्मा को आनंद से भर देंगे।

सच्ची कलीसिया

[भजन संहिता 87]

ए. डब्ल्यू. टोज़र की किताब, *Am I Real or Fake?* (क्या मैं असली हूँ या नकली?), सच्चे विश्वास को फिर से जगाने का बुलावा है और धार्मिक दिखावे के खिलाफ एक चेतावनी है। लेखक "नकली विश्वास" की आलोचना करते हैं—जो आधुनिक कलीसिया के भौतिकवाद से बिगड़ गया है—और जो असंतुलित मान्यताओं, धर्मशास्त्र (थियोलॉजी) से रहित अनुभवों और ऐसी बेजान परंपराओं में दिखता है जिनमें परमेश्वर से मिलने का जोश या रोमांच नहीं होता। वे ऐसे विश्वास को अपनाने का आग्रह करते हैं जो खेतों के जंगली फूलों की तरह मज़बूत हो, दुनिया में सच्चे नमक की तरह काम करे और क्रूस को अपनाए। क्योंकि सच्चे मसीही मसीह की जीत में विश्वास करते हैं, इसलिए वे उस जीत का हिस्सा बनने के लिए ज़रूरी किसी भी दुख से पीछे नहीं हटते। टोज़र सच्चे विश्वासी की पाँच विशेषताएँ बताते हैं: (1) सच्चा विश्वासी खुरदरे क्रूस से शर्मिंदा नहीं होता (अध्याय 1); (2) सच्चा विश्वासी "कॉटन कैंडी गॉस्पेल" (आसान और मीठी-मीठी बातें) को ठुकराता है और काँटों के ताज वाले सुसमाचार को अपनाता है (अध्याय 2); (3) सच्चा विश्वासी प्रभु के "काम" से ज़्यादा खुद प्रभु को प्राथमिकता देता है (अध्याय 3); (4) सच्चा विश्वासी खुशी से ज़्यादा पवित्रता की चाहत रखता है (अध्याय 4); और (5) सच्चा विश्वासी विश्वास की बुनियादी बातों के प्रति वफादार रहता है (अध्याय 5)। इसके विपरीत, गलत रास्ते पर चलने वाले विश्वासी बाइबल की अपनी पसंद की खास आयतों पर बहुत ज़्यादा ज़ोर देते हैं, जिससे अनजाने में ही दूसरे धर्मग्रंथों का महत्व कम हो जाता है। अपनी किताब में, पादरी टोज़र आठ विशेषताएँ बताते हैं: (1) नकली विश्वास तुरंत असर दिखाने वाला होता है (अध्याय 7); (2) नकली विश्वास चरित्र में बदलाव को नज़रअंदाज़ करता है (अध्याय 8); (3) नकली विश्वास परमेश्वर की अनुशासनात्मक शिक्षा को क्रूस उठाने जैसा समझ लेता है (अध्याय 9); (4) नकली विश्वास अच्छे कामों के ज़रिए पापों की माफ़ी चाहता है (अध्याय 10); (5) नकली विश्वास धार्मिक सिद्धांतों (creeds) को नहीं मानता (अध्याय 11); (6) नकली विश्वास धर्मशास्त्र को कम महत्व देता है (अध्याय 12); (7) नकली विश्वास भावनाओं

को नज़रअंदाज़ करता है (अध्याय 13); और (8) नकली विश्वास में आध्यात्मिक संतुलन की कमी होती है (अध्याय 14)।

हमें 1 यूहन्ना 4:1 की बातों पर ध्यान देना चाहिए: "हे प्रियों, हर आत्मा पर विश्वास न करो, बल्कि आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं, क्योंकि दुनिया में बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता निकल आए हैं।" विश्वासियों के तौर पर, हमें अलग-अलग तरह की आत्माओं के बीच फ़र्क करना चाहिए। एक तो पवित्र आत्मा है—सच्चाई की आत्मा जो परमेश्वर से आती है और हमें सही रास्ता दिखाती है—और दूसरी बुरी आत्माएँ हैं—झूठी आत्माएँ जो विश्वासियों को धोखा देती हैं और उन्हें बुराई की ओर ले जाती हैं। खासकर, हमें झूठे नबियों, झूठे चर्चों और झूठे विश्वासियों और सच्चे नबियों, सच्चे चर्चों और सच्चे विश्वासियों के बीच फ़र्क करना आना चाहिए। हम यह फ़र्क कैसे कर सकते हैं? "जो व्यक्ति किसी बुरी आत्मा—यानी धोखे की आत्मा—के बहकावे में आकर चर्च का नेतृत्व करता है, वह झूठा नबी है; जो चर्च किसी झूठे नबी की शिक्षाओं को अपनाता है, वह झूठा चर्च है; और जो विश्वासी किसी झूठे नबी की शिक्षाओं को मानता है, वह झूठा विश्वासी है। इसके उलट, जो व्यक्ति पवित्र आत्मा—यानी सच्चाई की आत्मा जो परमेश्वर से आती है—की अगुवाई में चर्च का नेतृत्व करता है, वह सच्चा नबी है; जो चर्च किसी सच्चे नबी की शिक्षाओं को अपनाता है, वह सच्चा चर्च है; और जो विश्वासी किसी सच्चे नबी की शिक्षाओं को मानता है, वह सच्चा विश्वासी है।

आज, भजन संहिता 87 पर ध्यान देते हुए, मैं सच्चे चर्च की चार विशेषताओं पर विचार करना चाहता हूँ, और प्रार्थना करता हूँ कि हमारा चर्च परमेश्वर की नज़र में एक सच्चा चर्च बन सके।

पहली बात, सच्चे चर्च की नींव मज़बूत होती है।

भजन संहिता 87:1 को देखिए: 'उसकी नींव पवित्र पर्वत पर है।' यह वचन सच्चे चर्च की मज़बूत आध्यात्मिक नींव की ओर इशारा करता है (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, सच्चा चर्च अडिग और सुरक्षित होता है। सच्चा चर्च इतना अडिग कैसे हो सकता है? ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रभु, जो चर्च के मुखिया हैं, ने अपने चर्च को "इस चट्टान पर" स्थापित किया (मत्ती 16:18)। यहाँ, "चट्टान" का मतलब प्रेरित पतरस द्वारा विश्वास की

स्वीकारोक्ति से है: "तू मसीह है, जीवित परमेश्वर का पुत्र" (मत्ती 16:18)। इस प्रकार, चट्टान पर बना चर्च उन लोगों का समुदाय है जो प्रेरित पतरस की तरह यीशु के बारे में सही विश्वास स्वीकार करते हैं। इसके अलावा, चट्टान पर बना चर्च यीशु के चेलों का समुदाय है जो न केवल उस विश्वास को मानते हैं बल्कि उसके अनुसार जीवन भी जीते हैं। और साफ़ तौर पर कहें तो, यहाँ "चट्टान" का मतलब स्वयं यीशु मसीह से है। इफिसियों 2:20 पर विचार करें: "तुम प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर बनाए गए हो, और मसीह यीशु स्वयं कोने का पत्थर है।" जैसा कि प्रेरित पौलुस ने बताया है, चट्टान पर बना एक मज़बूत कलीसिया वह है जो प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर खड़ा है, और यीशु मसीह इसके कोने का पत्थर हैं। "कोने का पत्थर" शब्द नए नियम में 1 पतरस 2:6 और इफिसियों 2:20 जैसे हिस्सों में आता है। कोने के पत्थर के लिए यूनानी शब्द *akrogōniaios* है; इसमें *akro-* उपसर्ग का अर्थ है "ऊँचा," जो "ऊँची जगह पर रखी चट्टान" को दर्शाता है। कहा जाता है कि इज़राइल में सभी इमारतों का निर्माण कोने के पत्थर से शुरू होता था, और पूरी संरचना की दिशा इसी पत्थर की स्थिति से तय होती थी। इसी तरह, कलीसिया का निर्माण यीशु को कोने का पत्थर मानकर किया जाना चाहिए, और पूरी कलीसिया की दिशा मसीह के मार्ग के अनुरूप होनी चाहिए। इसलिए, जब हम प्रभु के वचन की नींव पर—खासकर यीशु मसीह के कोने के पत्थर पर, जो उस वचन के केंद्र में हैं—एक साथ बनाए जाते हैं, और जब पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर इस घर में वास करते हैं, तो यह एक सुंदर और सच्ची कलीसिया बन जाती है।

तो फिर, प्रभु ने अपनी कलीसिया को एक मज़बूत चट्टान पर क्यों स्थापित किया? इसका कारण आज के शास्त्र-वचन, भजन संहिता 87:2 में बताया गया है: "प्रभु याकूब के सभी निवास-स्थानों की तुलना में सिय्योन के फाटकों से अधिक प्रेम करते हैं।" प्रभु ने अपनी कलीसिया को मज़बूती से इसलिए स्थापित किया है क्योंकि वे उससे प्रेम करते हैं। मेरी प्रार्थना है कि हमारी कलीसिया परमेश्वर की दृष्टि में एक सच्ची कलीसिया बने—एक ऐसी कलीसिया जिससे परमेश्वर प्रेम करते हैं, जिसका कोने का पत्थर यीशु मसीह हैं, और जो प्रभु के सेवकों द्वारा घोषित परमेश्वर के वचन की नींव पर बनी एक मज़बूत कलीसिया है।

दूसरी बात, एक सच्ची कलीसिया महिमामयी होती है।

भजन संहिता 87:3 को देखें: "हे परमेश्वर के नगर, तेरे विषय में महिमामयी बातें कही गई हैं (सेलाह)।" सच्ची कलीसिया महिमामयी क्यों है? इसका कारण यह है कि सच्ची कलीसिया "परमेश्वर का नगर" है (पद 3)। दूसरे शब्दों में, सच्ची कलीसिया महिमामयी है क्योंकि परमेश्वर वहाँ वास करते हैं। यह इसलिए महिमामयी नहीं है कि परमेश्वर का नगर अपने आप में सुंदर है, बल्कि इसलिए है क्योंकि महिमा के प्रभु उससे प्रेम करते हैं (पार्क युन-सन)। सच्ची कलीसिया महिमामयी है क्योंकि परमेश्वर 'परमेश्वर के नगर' का बहुत सम्मान करते हैं, और महिमा के प्रभु उससे प्रेम करते हैं। यह अंश ऑगस्टीन की किताब, *द सिटी ऑफ़ गॉड* (परमेश्वर का नगर) की याद दिलाता है। ऑगस्टीन उस समय जीवित थे जब पश्चिमी रोमन साम्राज्य ढह रहा था। पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन ने उन्हें अपनी प्रसिद्ध रचना, *द सिटी ऑफ़ गॉड* लिखने के लिए प्रेरित किया। किताब का मूल शीर्षक—"भले ही दुनिया का सबसे बड़ा शहर गिर जाए, परमेश्वर का नगर हमेशा बना रहेगा"—लेखक के इरादे को स्पष्ट रूप से बताता है। रोम ने 313 ईस्वी में ईसाई धर्म को अपना राजकीय धर्म माना था और एक विशाल साम्राज्य स्थापित किया था जहाँ राजनीति और धर्म एक साथ थे। नतीजतन, उस युग के लोग रोम को परमेश्वर का राज्य मानते थे और उसे "पवित्र रोमन साम्राज्य" भी कहते थे। उन्हें यकीन था कि रोम एक शाश्वत साम्राज्य होगा जो कभी नहीं गिरेगा। फिर भी, बर्बर जनजातियों (गोथ्स) के हमले के बाद आखिरकार रोम का पतन हो गया। इससे लोगों के मन में यह सवाल उठा: "परमेश्वर का राज्य बर्बर लोगों द्वारा कैसे नष्ट किया जा सकता है?" ऑगस्टीन ने भी इस मुद्दे पर गहराई से विचार किया। गहन चिंतन के बाद, उन्होंने निष्कर्ष निकाला: "रोम, एक सांसारिक राज्य, परमेश्वर का राज्य नहीं है; इसलिए, यह किसी भी समय ढह सकता है। परमेश्वर का सच्चा राज्य प्रभु के शासन के अधीन क्षेत्र है, और यह राज्य प्रभु के दूसरे आगमन पर पूरा होगा।" "और परमेश्वर का यह राज्य नष्ट नहीं होगा बल्कि हमेशा बना रहेगा" (इंटरनेट)।

हमारी कलीसिया वह है जिसे महिमामयी प्रभु मजबूती से स्थापित कर रहे हैं। महिमामयी प्रभु हमारी कलीसिया से प्रेम करते हैं और उसमें प्रसन्न होते हैं, और वे मत्ती 16:18 में किए गए अपने वादे के अनुसार इसे वफादारी से बना रहे हैं। इसलिए, हमारी प्रार्थना यह होनी चाहिए कि प्रभु विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च—जो उनका अपना शरीर है—को एक "तेजस्वी कलीसिया" (इफिसियों 5:27) के रूप में स्थापित करें। हम प्रार्थना करते हैं कि प्रभु अपने वचन से हमारी कलीसिया को शुद्ध करें और उसे पवित्र बनाएं (पद 26)।

तीसरी बात, सच्ची कलीसिया स्वयं प्रभु द्वारा स्थापित की जाती है।

भजन संहिता 87:5 को देखें: "सचमुच, सिय्योन के बारे में कहा जाएगा, 'यह और वह उसमें पैदा हुए थे'; और स्वयं परमप्रधान उसे स्थापित करेंगे।" "सर्वोच्च स्वयं सिय्योन की स्थापना करेंगे" - यह वाक्यांश एक वादा है कि प्रभु—जो सर्वोच्च हैं—व्यक्तिगत रूप से सिय्योन, यानी अपनी कलीसिया की स्थापना करेंगे। इस अंश का अर्थ वही है जो उस वचन का है जिसे हमारी कलीसिया मानती है, मत्ती 16:18: "... मैं ... अपनी कलीसिया बनाऊंगा..."। ये दोनों वचन हमें स्पष्ट रूप से बताते हैं कि सच्ची कलीसिया—प्रभु की देह—की स्थापना व्यक्तिगत रूप से सर्वोच्च प्रभु द्वारा की जाती है, जो कलीसिया के सिर हैं। इसके अलावा, जैसे ही प्रभु अपनी कलीसिया की स्थापना करते हैं, अन्यजाति के लोग भी पश्चाताप करेंगे और प्रभु की ओर लौटेंगे, और सब मिलकर सिय्योन के लोग बन जाएंगे (वचन 4) (पार्क युन-सन)।

प्रभु द्वारा स्थापित शानदार कलीसिया हर उस देश के लोगों से बनी है जिन्हें उन्होंने चुना है; यह कई जातियों और संस्कृतियों वाली और सार्वभौमिक है। प्रभु द्वारा स्थापित कलीसिया कभी भी अलग-अलग जातियों के बीच दीवारें नहीं बनाती—जैसा कि यहूदियों ने एक समय गैर-यहूदियों के प्रति पूर्वाग्रह के कारण किया था—और न ही यह अलग-अलग जातियों और पृष्ठभूमियों की सच्चाई को नकारती है। प्रभु द्वारा स्थापित कलीसिया एक मज़बूत कलीसिया है। यह एक शानदार कलीसिया भी है। स्वयं शानदार प्रभु ही इस शानदार कलीसिया का निर्माण कर रहे हैं। आइए हम इसे याद रखें: यह हमारे प्रभु की कलीसिया है। चाहे हम मत्ती 16:18 को देखें या आज के भजन 87:5 के वचन को, हमें यह सच्चाई नहीं भूलनी चाहिए कि कलीसिया—मसीह का शरीर—स्वयं प्रभु द्वारा स्थापित की गई है। इसलिए, आइए हम अपनी ताकत और तरीकों से प्रभु की कलीसिया बनाने की कोशिश करने का पाप न करें। यदि हम अपनी शक्ति से प्रभु की कलीसिया बनाने का प्रयास करते हैं, तो इसकी नींव सुरक्षित नहीं हो सकती; यह निश्चित रूप से डगमगाएगी और ढह जाएगी। इसके अलावा, ऐसी कलीसिया निश्चित रूप से परमेश्वर की महिमा के बजाय इंसानी महिमा को बढ़ाएगी। मेरी प्रार्थना है कि हमारी कलीसिया स्वयं प्रभु द्वारा स्थापित कलीसिया हो।

चौथी और आखिरी बात, सच्ची कलीसिया स्वर्ग के राज्य के नागरिकों का एक समुदाय है।

भजन 87:6 को देखें: "जब यहोवा लोगों की गिनती करेगा, तो वह दर्ज करेगा, 'यह व्यक्ति वहाँ पैदा हुआ था' (सेला)।" "जब यहोवा लोगों की गिनती करेगा" वाक्यांश नए नियम के युग के बारे में एक भविष्यवाणी है, जिसमें सभी देशों के लोगों को स्वर्ग के राज्य में शामिल किया जाता है—यानी, वे मसीह में विश्वास के माध्यम से उद्धार प्राप्त करते हैं (पार्क युन-सन)। इस भविष्यवाणी में शामिल देश हैं राहाब (मिस्र का एक काव्यात्मक नाम), बेबीलोन, पलिश्ती, टायर और कूश (वचन 4)। भजनकार भविष्यवाणी करता है कि इज़राइल के दुश्मन होने के बावजूद, एक दिन परमेश्वर इन देशों को पश्चाताप करने और उनकी ओर लौटने के लिए प्रेरित करेंगे। इसीलिए भजनकार कहता है, "उन लोगों के बीच जो मुझे जानते हैं" (वचन 4)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर उन सभी को—चाहे वे यहूदी हों या गैर-यहूदी—जो उन्हें मानते हैं, स्वर्ग के राज्य का नागरिक मानते हैं (पार्क युन-सन)। इसलिए, उस राज्य के सभी नागरिक परमेश्वर की कृपा का जवाब देते हुए कहते हैं, "मेरी खुशी के सारे स्रोत आपमें हैं" (पद 7)। परमेश्वर की कृपा के लिए शुक्रगुजार होकर, वे उसकी स्तुति करते हैं।

आइए हम सब विश्वास के साथ फिलिप्पियों 3:20–21 के इन शब्दों को थामे रहें: "लेकिन हमारी नागरिकता स्वर्ग में है। और हम वहाँ से एक उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह का बेसब्री से इंतज़ार करते हैं, जो उस शक्ति से, जिससे वह सब कुछ अपने नियंत्रण में ला सकता है, हमारे साधारण शरीरों को बदल देगा ताकि वे उसके महिमामयी शरीर जैसे हो जाएं।" हमारी नागरिकता स्वर्ग में है; यह निश्चित रूप से इस पृथ्वी की नहीं है। हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि हम स्वर्ग के अनंत राज्य के नागरिक हैं। इसलिए, इस पृथ्वी पर रहते हुए, हमें उस राज्य के नागरिकों की तरह व्यवहार करना चाहिए। हमें उस चट्टान पर बने अटूट विश्वास के साथ जीना चाहिए। हमें परमेश्वर की महिमा के लिए जीना चाहिए। हमें परमेश्वर के नगर की ओर आगे बढ़ना चाहिए।

तो फिर, हम सच्चे चर्च और झूठे चर्च के बीच अंतर कैसे कर सकते हैं? सच्चा चर्च वह है जो एक मजबूत नींव—चट्टान—पर बना हो। सच्चा चर्च एक महिमामयी चर्च होता है। सच्चा चर्च स्वयं प्रभु द्वारा स्थापित किया जाता है। और सच्चा चर्च स्वर्ग के राज्य के नागरिकों का एक समुदाय होता है। इसके विपरीत, झूठा चर्च कमजोर नींव या रेत पर बना होता है। झूठा चर्च इंसानी महिमा की चाह रखता है। नकली चर्च वह है जिसे लोग स्थापित करने की कोशिश करते हैं, और यह दुनिया के नागरिकों का समुदाय होता है। हमारा चर्च एक सच्चा चर्च बनना चाहिए।

“मेरी पुकार पर कान लगा”

[भजन संहिता 88]

पिछले सोमवार (25 फरवरी) को, मैं उस अस्पताल गया जहाँ स्वर्गीय पादरी ज्योंग सांग-वू की पत्नी, श्रीमती ज्योंग म्योंग-सोन बीमार पड़ी थीं। वहाँ उनके बड़े बेटे और बहू को पाकर, मैंने पूछा कि क्या मैं उनके लिए थोड़ी देर प्रार्थना कर सकता हूँ; उनकी अनुमति से, मैंने अपना हाथ उनके माथे पर रखा और उनके साथ मिलकर प्रार्थना की। प्रार्थना करते समय, मैंने परमेश्वर की दया और अनुग्रह की याचना की। हालाँकि मैं उनके बच्चों के मन की बात पूरी तरह नहीं समझ सकता था, फिर भी मैंने परमेश्वर से सच्चे दिल से विनती की कि उन्हें होश में आने का अनुग्रह मिले, भले ही कुछ पलों के लिए ही सही, ताकि वे उनसे बात कर सकें। उनके बेटे के सिसकने की आवाज़ सुनकर, मैंने बस यही प्रार्थना की कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दें। इसके बाद, मैं अस्पताल से निकलकर उस नर्सिंग होम गया जहाँ क्वोन-सा (सीनियर डीकनेस) पार्क रहती हैं, क्योंकि मुझे पता था कि उस दिन—25 तारीख को—उनका 90वाँ जन्मदिन था। जब मैं वहाँ पहुँचा, तो मैंने उनका अभिवादन किया; वे चुपचाप आँखें खुली रखकर लेटी हुई थीं। कुछ बातें करने के बाद, मैंने इस अवसर को मनाने के लिए “हैप्पी बर्थडे” गीत गाया। फिर मैंने परमेश्वर से प्रार्थना की और भजन 495, “सेव्ड बाय ग्रेस” (जिसे “मेरी आत्मा ने अनुग्रह पाया है” के नाम से भी जाना जाता है) गाया। न जाने क्यों, जब भी मैं वह भजन गाता हूँ, वे धीरे-धीरे अपनी आँखें बंद कर लेती हैं और सो जाती हैं; उन्हें सोता हुआ देखकर, मैं चुपचाप वहाँ से चला आया। उसी शाम, मुझे अपनी भाभी का फ़ोन आया। रोते हुए, उन्होंने मुझसे अपनी माँ के लिए प्रार्थना करने को कहा—यह मानते हुए कि मैं शायद पहले से ही ऐसा कर रहा था—और मैंने वहीं फ़ोन पर ही परमेश्वर से प्रार्थना की। उनके दुख और पीड़ा की गहराई पर विचार करते हुए, मुझे वह समय याद आया, जब बरसों पहले मेरी अपनी पहली संतान, जू-यंग, सिर्फ़ 55 दिन की उम्र में मेरी गोद में गुज़र गई थी। ऐसी स्थिति की संभावना पर विचार करते हुए—जहाँ जीवन बचाने वाले उपकरणों, जैसे कि वेंटिलेटर,

को हटाना पड़ सकता है—मैंने अपनी भाभी की भावनाओं को समझने की कोशिश की, और याद किया कि जब जू-यंग वैसी ही हालत में थी, तो मैं किस दौर से गुज़रा था। दुख की बात है कि आज सुबह-सुबह मिसेज़ जियोंग का निधन हो गया। वह उस अनंत लोक—स्वर्ग—में चली गई हैं, जहाँ उनकी दाहिनी आँख के कोने से अब कभी आँसू नहीं बहेंगे।

हम जिस दुनिया में रहते हैं, वह सचमुच ऐसी परिस्थितियों से भरी है जो मौत की ओर ले जाती हैं। मैं पहले से कहीं ज़्यादा गहराई से महसूस करता हूँ—जैसा कि भजन 474 के बोल बताते हैं—कि यह दुनिया दुख, पीड़ा और पाप से भरी हुई है। तो फिर, ऐसी दुनिया में हम अपनी बाकी ज़िंदगी कैसे बिताएँ? आज का पाठ, भजन 88, हमें बताता है कि हमें पूरे दिल से परमेश्वर से विनती करनी चाहिए और उन्हें पुकारना चाहिए। "मेरी पुकार पर कान लगा" (भजन 88:2 के दूसरे हिस्से से) वाक्यांश को अपना शीर्षक बनाते हुए, मैं दो बातों पर विचार करना चाहता हूँ: पहला, "भजनकार ने प्रभु को क्यों पुकारा?" और दूसरा, "भजनकार किस तरह के परमेश्वर को पूरे दिल से खोज रहा था?" जब हम आज के पाठ के आधार पर इन दो सवालों का जवाब देते हैं, तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु हममें से हर एक को प्रार्थना करने वाला व्यक्ति बनाएँ।

पहला सवाल जिस पर मैं विचार करना चाहता हूँ, वह है: "भजनकार ने प्रभु को क्यों पुकारा?" इसका जवाब यह है कि भजनकार ने खुद को ऐसी स्थिति में पाया जहाँ प्रार्थना करने के अलावा उसके पास कोई चारा नहीं था। हम उस स्थिति के चार पहलू देख सकते हैं:

पहला, जिस स्थिति ने भजनकार को प्रार्थना करने के लिए मजबूर किया, वह गहरी परेशानी से भरी थी। भजन 88:3, 9 और 15 पर विचार करें: "क्योंकि मेरी आत्मा मुसीबतों से भरी है, और मेरा जीवन कब्र के करीब है" (पद 3); "दुख के कारण मेरी आँखें कमज़ोर हो गई हैं; हे प्रभु, मैंने हर दिन तुझे पुकारा है; मैंने तेरे सामने अपने हाथ फैलाए हैं" (पद 9); और "मैं जवानी से ही दुखी रहा हूँ और मरने के कगार पर हूँ; मैं तेरे डर का सामना कर रहा हूँ; मैं बहुत परेशान हूँ।" भजनकार ने परमेश्वर को पूरे दिल से पुकारा क्योंकि उसकी आत्मा इतनी गहरी पीड़ा से भरी थी कि उसे लगा कि उसका जीवन ही खतरे में है। इस पीड़ा में "उदासी और दर्द" शामिल था (पार्क युन-सन)। "दर्द" का मतलब "दर्दनाक बीमारी" हो सकता है (भजन के शीर्षक में *महलथ लियन्नोथ* शब्द का यही अर्थ है), और "उदासी" उस दर्दनाक बीमारी से पैदा हुई निराशा हो

सकती है। इसलिए, भजनकार कहता है, "मेरी आत्मा मुसीबतों से भरी है" (पद 3)। ऐसा लगता है कि इसका एक कारण उसका दुख-भरा इतिहास था—जवानी से ही तकलीफें सहना और मौत के करीब पहुँचने वाले अनुभवों का सामना करना (पद 15)। इसके अलावा, वह मानता है कि ऐसे दुख के बीच प्रभु से रोज़ प्रार्थना करने के तनाव से उसकी आँखें कमज़ोर हो गई थीं (पद 9) (पार्क युन-सन)।

जब मैंने इन आयतों पर मनन किया, तो मुझे भजन 474, पद 2 के बोल याद आए: "इस दुनिया में बहुत सी मुसीबतें हैं, और आराम का कोई सच्चा दिन नहीं मिला है..." हमारे आस-पास कितने लोग बीमारी और दर्द से जूझ रहे हैं? क्या कुछ लोग जीवन और मृत्यु के बीच की दहलीज पर खड़े नहीं हैं? तो, ऐसे समय में हम क्या कर सकते हैं? मुझे ये शब्द याद आते हैं, "मैं प्रार्थना करने वाला व्यक्ति हूँ" (भजन 109:4)। जब हम मुसीबतों से घिर जाते हैं, तो हम बस परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं। सच तो यह है कि जैसे-जैसे हमारी मुसीबतें बढ़ती हैं, हमें—भजनकार की तरह—परमेश्वर से और भी ज़्यादा जोश के साथ और रोज़ाना पुकारना चाहिए।

दूसरी बात, भजनकार प्रार्थना करने के लिए प्रेरित हुआ क्योंकि वह पूरी तरह अकेला था।

भजनकार इतना अकेला क्यों था? आज के पाठ में हमें इसके दो कारण मिल सकते हैं।

(1) क्योंकि उसे लगा कि परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया है।

भजन 88:14 को देखें: "हे प्रभु, तू मेरी आत्मा को क्यों ठुकराता है और मुझसे अपना मुँह क्यों छिपाता है?" जैसा कि हमने हर बुधवार को भजनों पर मनन किया है, हमने अक्सर भजनकार को यह पूछते हुए पाया है, "हे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया है?" भजनकार को लगा कि परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया है—खासकर तब जब उसने तड़पते हुए पुकारा लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। यह उसके लिए असहनीय था; ऐसी स्थिति में, उसने गहरा अकेलापन महसूस किया। इस गहरे अकेलेपन के बीच, भजनकार ने परमेश्वर को सच्चे दिल से पुकारा। (2) क्योंकि उसे लगता था कि परमेश्वर ने ही उसके अपनों और दोस्तों को उससे दूर कर दिया है।

आयत 8 और 18 को देखिए: "तूने मेरे सबसे करीबी दोस्तों को मुझसे दूर कर दिया है और मुझे उनके लिए घृणित बना दिया है। मैं फँस गया हूँ और निकल नहीं सकता" (आयत 8); "तूने मुझसे मेरे दोस्त और पड़ोसी को छीन लिया है—अंधेरा ही मेरा सबसे करीबी दोस्त है" (आयत 18)। भजनकार को न केवल परमेश्वर ने, बल्कि उसके प्यारे दोस्तों ने भी अकेला छोड़ दिया था; वह सचमुच बहुत बुरी हालत में था।

भजनकार की तरह, हम भी आसानी से महसूस कर सकते हैं कि परमेश्वर, हमारे प्यारे परिवार या दोस्तों ने हमें अकेला छोड़ दिया है, जिससे बहुत अकेलापन महसूस होता है। अगर हम कभी ऐसी स्थिति में हों—अभी या भविष्य में—तो हमें भजनकार की तरह परमेश्वर से सच्चे दिल से प्रार्थना करनी चाहिए। निराश होने के बजाय, हमें इस अकेलेपन का इस्तेमाल दुनिया से अलग होने, एकांत में जाने और पूरे दिल से परमेश्वर को खोजने के मौके के तौर पर करना चाहिए।

तीसरी बात, भजनकार प्रार्थना करने के लिए मजबूर था क्योंकि वह जीवन और मृत्यु के मोड़ पर खड़ा था।

भजन संहिता 88:3 के बाद वाले हिस्से और आयत 4, 5, 6, 10 और 15 पर गौर कीजिए: "...मेरा जीवन कब्र के करीब पहुँच रहा है" (आयत 3b); "मेरी गिनती उन लोगों में होती है जो कब्र में चले जाते हैं; मैं उस आदमी की तरह हूँ जिसमें कोई ताकत नहीं बची" (आयत 4); "मरे हुओं के बीच फेंक दिया गया हूँ, जैसे वे मारे गए लोग जो कब्र में पड़े हैं, जिन्हें तू अब याद नहीं करता, और जो तेरे हाथ से अलग हो गए हैं" (आयत 5); "तूने मुझे सबसे गहरी खाई में, अंधेरे में, गहराई में डाल दिया है" (आयत 6); "क्या तू मरे हुओं के लिए चमत्कार करेगा? क्या मरे हुए लोग उठेंगे और तेरी स्तुति करेंगे? (सेलाह)" (आयत 10); और "मैं जवानी से ही दुखी हूँ और मरने को हूँ; मैं तेरे डर का सामना कर रहा हूँ; मैं बहुत परेशान हूँ" (आयत 15)। असल में, जब हम अपने अपनों को जीवन और मृत्यु के मोड़ पर देखते हैं, तो हमें एहसास होता है कि हम असल में कितना कम कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, जब मैंने ज़िंदगी और मौत के दोराहे पर खड़े लोगों को देखा और अपनी बेबसी महसूस की, तो मुझे गहराई से यह एहसास हुआ कि प्रार्थना ही एकमात्र चीज़ थी जो मैं उनके लिए कर सकता था। हो सकता है कि मरीज़ों को भी यही महसूस हो रहा हो। इसका सबूत हमें भजनकार की इस बात में मिलता है: "मेरी गिनती उन लोगों में होती है जो कब्र में चले जाते हैं; मैं बिना ताकत वाले इंसान जैसा हूँ" (पद 4)। जब हम सोचते हैं कि भजनकार ने खुद को इतना बेबस क्यों बताया, तो हमें इसका जवाब

आज के हिस्से के 5वें पद में मिलता है: उसे लगा कि "प्रभु उन्हें अब याद नहीं रखते, और वे उसके हाथ से अलग हो गए हैं।" मौत के मुहाने पर खड़े होने पर, यह एहसास कि प्रभु अब हमें याद नहीं रखते या हमारी परवाह नहीं करते, हमें पूरी तरह बेबस महसूस करा सकता है, जिससे निराशा और हताशा पैदा होती है। फिर भी, ऐसी निराशा के बीच भी, भजनकार ने परमेश्वर की ओर देखा और उनसे पुकार लगाई।

हमें ऐसे प्रार्थना करने वाले लोग बनने की ज़रूरत है जो ज़िंदगी और मौत के दोराहे पर खड़े अपने प्रियजनों के लिए सच्चे दिल से परमेश्वर से पुकार करें। इसके अलावा, जब हम खुद कभी उसी दोराहे पर खड़े हों, तो हमें भजनकार को याद रखना चाहिए और उन हालात में भी परमेश्वर से पुकार लगानी चाहिए। ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने क्रूस पर चढ़ाए जाने से एक रात पहले गेथसेमनी के बाग में सच्ची प्रार्थना की थी, हमें भी ज़िंदगी और मौत की दहलीज पर खड़े होने पर परमेश्वर से पूरे दिल से प्रार्थना करनी चाहिए।

चौथी बात, जिस स्थिति ने भजनकार को प्रार्थना करने के लिए मजबूर किया, वह यह थी कि वह प्रभु के क्रोध का सामना कर रहा था।

भजन संहिता 88:7 और 16 को देखें: "तेरा क्रोध मुझ पर भारी पड़ा है; तूने अपनी सभी लहरों से मुझे डुबो दिया है (सेला)" (पद 7); "तेरा भयंकर क्रोध मुझ पर टूट पड़ा है; तेरे खौफ ने मुझे अलग-थलग कर दिया है" (पद 16)। जब मैं प्रभु के क्रोध के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे पिछले हफ़्ते की एक घटना याद आती है जब मुझे अपनी प्यारी सबसे छोटी बेटी, ये-उन को अनुशासित करना पड़ा था। अनुशासन का कारण यह था कि उसने किंडरगार्टन में दोस्तों को मारा था, जबकि वह जानती थी कि यह गलत है। मैंने उसे छड़ी से अनुशासित किया, भले ही मैंने अपनी रोती हुई, प्यारी बेटी की आँखों में आँसू और बहती नाक देखी। मैंने छड़ी उठाई और उसे अनुशासित किया, जबकि वह डरी हुई थी और बेतहाशा सिसक रही थी। बेशक, मैं जानता हूँ कि इसकी तुलना प्रभु के क्रोध से नहीं की जा सकती; फिर भी, जब हम उसके क्रोध पर विचार करते हैं, तो हम—भजनकार की तरह—अक्सर डर महसूस करते हैं और अपनी पीड़ा में, हमें समझ नहीं आता कि क्या करें। ऐसे क्षणों में, हमारे पास परमेश्वर को पुकारने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता। हम अपने पापों को स्वीकार करने और उसकी क्षमा के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रेरित होते हैं। बस कल, पिछले मंगलवार की शाम, ये-उन से बात करते समय, मैंने उसे यह स्वीकार करते हुए सुना कि उसने मुझसे किया अपना वादा

तोड़ा था और फिर से एक लड़के को मारा था। जब मैंने छड़ी ली और कमरे में गया, तो ये-उन—ठीक वैसे ही जैसे उसने पिछले हफ़्ते किया था—जानती थी कि क्या होने वाला है; वह बिस्तर पर खड़ी हो गई और सावधान की मुद्रा में खड़े होने के लिए तैयार हो गई। मैं उसके चेहरे पर डर देख सकता था। इसलिए, मैंने उससे बिस्तर पर बैठने के लिए कहा, और हमने बात की। जब मैंने पूछा कि उसने उसे क्यों मारा, तो उसने कहा कि उसने उसे धक्का दिया था। जब मैंने पूछा कि उसने उसे कहाँ मारा, तो उसने कहा कि उसने उसकी पीठ पर मारा। और जब मैंने पूछा कि दूसरे बच्चे ने कैसी प्रतिक्रिया दी, तो उसने कहा कि कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। इसलिए, मैंने एक बार फिर ये-उन को सिखाया कि दूसरों को मारना गलत है—चाहे वह कितनी भी गुस्से में क्यों न हो—और उसे परमेश्वर के सामने अपना पाप स्वीकार करने और क्षमा के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके जवाब में, या-उन ने भगवान से प्रार्थना की और कहा, "मुझे बहुत अफ़सोस है," और उनसे माफ़ी मांगी। इसके बाद, मैंने उसे गले लगाया और कहा कि उसके पापा उससे प्यार करते हैं।

जब हम अपने पापों के कारण भगवान के क्रोध का सामना करते हैं, तो हमें उनसे पछतावे की प्रार्थना करनी चाहिए, जिसमें भगवान के अनुशासन से पैदा हुआ उनके प्रति आदरपूर्ण डर हो। हमें भगवान से पुकार लगानी चाहिए, यह समझते हुए कि यह पूरी स्थिति हमारे अपने पाप से पैदा हुई है—यह याद रखते हुए कि उनके क्रोध ने हमें मुसीबत में डाल दिया है, जिससे हमें लगता है कि भगवान और हमारे अपनों, दोनों ने हमें छोड़ दिया है, और यहाँ तक कि हम जीवन और मृत्यु के कगार पर पहुँच गए हैं। हमारा क्या? वे कौन सी परिस्थितियाँ हैं जो हमें प्रार्थना करने के लिए मजबूर करती हैं? आइए हम विश्वास करें कि ये स्थितियाँ—जो हमें प्रार्थना की ओर ले जाती हैं—भगवान द्वारा तय की गई हैं, और आइए हम पूरे मन से प्रार्थना में लग जाएँ।

दूसरी और आखिरी बात, मैं इस सवाल पर विचार करना चाहूँगा: "भजनकार ने ऐसी मुश्किल स्थिति में किस भगवान को पूरे मन से खोजा?" दूसरे शब्दों में, उसने किस तरह के भगवान को पुकारा? आज का पाठ हमें इसके दो पहलू दिखाता है।

पहला, जिस भगवान को भजनकार ने पूरे मन से खोजा, वह उद्धार के भगवान थे।

भजन संहिता 88:1 देखें: "हे प्रभु, मेरे उद्धार के भगवान, मैंने दिन-रात आपके सामने पुकार लगाई है।" "हे प्रभु, मेरे उद्धार के भगवान" वाली बात—भगवान के लिए यह नाम—उस व्यक्ति की सोच से आती है जिसने बार-बार भगवान द्वारा दिए गए उद्धार का अनुभव किया है (पार्क युन-सन)। अतीत के संकटों के दौरान भगवान को पुकारकर उनकी उद्धार करने वाली कृपा का अनुभव करने के बाद, भजनकार—खुद को एक बार फिर ऐसी स्थिति में पाकर जिसने उसे प्रार्थना करने के लिए मजबूर किया—ने इस भरोसे के साथ भगवान को पुकारा कि उसकी प्रार्थना का जवाब दिया जाएगा।

दूसरा, जिस भगवान को भजनकार ने पूरे मन से खोजा, वह प्रार्थना का जवाब देने वाले प्रभु थे।

भजन संहिता 88:13 देखें: "लेकिन मैं मदद के लिए आपसे पुकारता हूँ, हे प्रभु; सुबह मेरी प्रार्थना आपके सामने आती है।" भजनकार ने *सिर्फ* प्रभु को पुकारा। ऐसा इसलिए था क्योंकि प्रभु के अलावा कोई और नहीं था जो उसकी प्रार्थना का जवाब दे सके और उसे उद्धार दिला सके। इसीलिए उसने सुबह प्रभु से विनती की। हमारे परमेश्वर ही हैं जो हमारी पुकार सुनते हैं (पद 2)।

आइए, आज रात हम सब मिलकर उस परमेश्वर से प्रार्थना करें। चाहे हम किसी भी परिस्थिति में हों, आइए उस स्थिति को प्रार्थना का अवसर बनाएं और परमेश्वर को पुकारें। जो प्रभु हमारी प्रार्थनाएं सुनते हैं, वही हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर हैं। आइए, आज रात हम सब मिलकर उनसे प्रार्थना करें।

आशीषित परिवार

[भजन संहिता 89:1–18]

असल में, "आशीषित परिवार" किसे कहते हैं? डिक्शनरी के हिसाब से, एक आशीषित परिवार वह हो सकता है जो भौतिक रूप से अमीर हो। लेकिन क्या बाइबल में बताया गया आशीषित मसीही परिवार सिर्फ़ वही है जिसके पास बहुत सारी भौतिक चीज़ें हों? भजन संहिता 1:1 में "आशीषित व्यक्ति" की बात की गई है, और आयत 2 साफ़ करती है कि वह व्यक्ति वही है जो "प्रभु की व्यवस्था में आनंद लेता है और दिन-रात उसकी व्यवस्था पर मनन करता है।" जो परिवार दिन-रात परमेश्वर के वचन पर मनन करता है, वह आशीषित परिवार है। जो परिवार परमेश्वर के वचन पर मनन करके उसे जानता है, वह आशीषित परिवार है।

हाल ही में, जब मैं "विश्वास की विरासत" के बारे में सोच रहा हूँ, तो परमेश्वर मुझे फिर से सिखा रहे हैं कि उन्हें जानना कितना ज़रूरी है, और उस ज्ञान को अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाना कितना महत्वपूर्ण है। खासकर, पिछले हफ़्ते सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान जब मैं न्यायियों 2:7 और 10 पर मनन कर रहा था, तो मुझे उस पीढ़ी और उसके बाद की पीढ़ी के बीच का अंतर बहुत गहरा लगा—एक पीढ़ी जो परमेश्वर को जानती थी और दूसरी जो नहीं जानती थी: "लोगों ने यहोशू और उन बुजुर्गों के जीवन भर प्रभु की सेवा की जो उसके बाद भी जीवित रहे और जिन्होंने उन सभी महान कामों को देखा था जो प्रभु ने इस्राएल के लिए किए थे" (आयत 7); "वह पूरी पीढ़ी भी अपने पूर्वजों में जा मिली। उनके बाद एक और पीढ़ी उठी जो न तो प्रभु को जानती थी और न ही उन कामों को जो उसने इस्राएल के लिए किए थे" (आयत 10)। जिन लोगों ने यहोशू और परमेश्वर द्वारा इस्राएल के लिए किए गए महान कामों को देखा था, उन्होंने जीवन भर परमेश्वर की सेवा की; हालाँकि, उस पीढ़ी के गुज़र जाने के बाद, एक नई पीढ़ी आई जो न तो परमेश्वर को जानती थी और न ही उन कामों को जो उसने इस्राएल के लिए किए थे। नतीजतन, उन्होंने बुराई की और परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया (आयत 11 और उसके बाद)। यह परमेश्वर को जानने के महत्व को रेखांकित

करता है। हमारे और हमारे बच्चों के लिए यह समझना सचमुच बहुत ज़रूरी है कि परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों के जीवन में कैसे काम किया। इसलिए, हमें सिखाना चाहिए; हमें अपने बच्चों को परमेश्वर के बारे में बताना चाहिए और अपने जीवन में उसके द्वारा किए गए कामों को साझा करना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारे परिवार, हमारे बच्चों के परिवार और हमारी आने वाली पीढ़ियाँ सचमुच आशीषित होंगी। भजन संहिता 89:15 में कहा गया है, "धन्य हैं वे लोग जो उस आनंदमयी ध्वनि को जानते हैं..." यहाँ, "आनंदमयी ध्वनि" का अर्थ परमेश्वर के उद्धार का शुभ समाचार है (पार्क युन-सन)। इसका मतलब है कि जो लोग यह शुभ समाचार पाते हैं, वे सचमुच धन्य हैं। इस वचन और "धन्य व्यक्ति" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उस परमेश्वर के पाँच पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ जिनकी ओर धन्य व्यक्ति देखता है और जिन पर वह भरोसा करता है। मेरी प्रार्थना है कि, उन पर विश्वास के द्वारा, हम न केवल उद्धार का समाचार सुनें बल्कि उस उद्धार के अनुभव को जीएँ और सचमुच धन्य लोग बनें।

सबसे पहले, जिस परमेश्वर की ओर धन्य व्यक्ति देखता है और जिस पर वह भरोसा करता है, वह अटूट प्रेम करने वाला परमेश्वर है। कृपया भजन संहिता 89 के वचन 1 और 2 के पहले हिस्सों, और साथ ही वचन 14 को देखें: "मैं सदा प्रभु के अटूट प्रेम का गीत गाऊँगा..." (वचन 1a), "क्योंकि मैंने कहा, 'अटूट प्रेम सदा बना रहेगा...'" (वचन 2a), और "धार्मिकता और न्याय तेरे सिंहासन की नींव हैं; अटूट प्रेम और सच्चाई तेरे आगे-आगे चलते हैं" (वचन 14)। भजनकार परमेश्वर के अटूट प्रेम के शाश्वत स्वभाव को पहचानते हुए, सदा उसका गुणगान करने और उसकी प्रशंसा करने का संकल्प लेता है। उसने परमेश्वर के अटूट प्रेम की सदा प्रशंसा करने का संकल्प क्यों लिया? ऐसा इसलिए था क्योंकि उसका विश्वास था कि परमेश्वर अपने लोगों के प्रति सदा अटूट प्रेम से व्यवहार करेगा (पार्क युन-सन)। तो फिर, परमेश्वर ने अपने लोगों के प्रति अपना अटूट प्रेम कैसे दिखाया है? उसने हमें यीशु में चुना। वचन 3 को देखें: "तूने कहा है, 'मैंने अपने चुने हुए व्यक्ति के साथ वाचा बाँधी है; मैंने अपने सेवक दाऊद के लिए शपथ खाई है।'" हम परमेश्वर के शाश्वत प्रेम के द्वारा "परमेश्वर के चुने हुए लोग" ("मेरा चुना हुआ व्यक्ति") बन गए हैं। हालाँकि यहाँ पाठ परमेश्वर के सेवक दाऊद का उल्लेख करता है, लेकिन इफिसियों 1:4 के प्रकाश में देखने पर, हम—आप और मैं—परमेश्वर के लोग हैं, जिन्हें उसने अपने शाश्वत प्रेम में चुना है। इसलिए, परमेश्वर द्वारा चुने गए लोगों के रूप में, हमें उसके अटूट प्रेम पर भरोसा करना चाहिए (भजन संहिता 89:14; पार्क युन-सन)। जो जीवन परमेश्वर के अटूट प्रेम पर निर्भर है, वह इस सच्चाई पर विश्वास करने, उसे महसूस करने और उसका आनंद लेने वाला जीवन है कि परमेश्वर हमसे इतना प्रेम करते हैं कि उन्होंने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया (यूहन्ना 3:16)। हम, जिन्होंने

यीशु के क्रूस के प्रेम को महसूस किया है—और लगातार महसूस कर रहे हैं—और इस भरोसे के साथ कि "परमेश्वर हमारे प्रति अपने प्रेम को इस तरह दिखाता है कि जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिए मरा" (रोमियों 5:8), हमें प्रभु की अनंत प्रेमपूर्ण दया पर निर्भर रहकर जीना चाहिए।

दूसरी बात, जिस परमेश्वर की ओर धन्य व्यक्ति देखता है और जिस पर निर्भर रहता है, वह एक विश्वासयोग्य परमेश्वर है।

भजन संहिता 89 की इन आयतों पर विचार करें: "...मैं अपनी वाणी से सभी पीढ़ियों को तेरी विश्वासयोग्यता के बारे में बताऊंगा" (आयत 1b), "...तू स्वर्ग में अपनी विश्वासयोग्यता को स्थापित करेगा" (आयत 2b), "और हे प्रभु, स्वर्ग तेरे चमत्कारों की प्रशंसा करेंगे; पवित्र लोगों की सभा में तेरी विश्वासयोग्यता की भी प्रशंसा होगी" (आयत 5), और "हे सेनाओं के प्रभु परमेश्वर, हे प्रभु, तेरे समान शक्तिशाली कौन है? तेरी विश्वासयोग्यता भी तेरे चारों ओर है" (आयत 8)। जिस विश्वासयोग्य परमेश्वर पर भजनकार ने भरोसा किया, वह वही है जो अनंत प्रेम से चुने गए लोगों के साथ किए गए अपने वाचा (समझौते) को ईमानदारी से पूरा करता है (पार्क युन-सन)। भले ही इज़राइल के चुने हुए लोग परमेश्वर के साथ किए गए वाचा को तोड़ दें, फिर भी विश्वासयोग्य परमेश्वर उस वाचा के प्रति सच्चा रहता है। परमेश्वर की विश्वासयोग्यता कभी डगमगाती या बदलती नहीं है; ऐसा इसलिए है क्योंकि यह स्वर्ग में मजबूती से स्थापित है, जहाँ कोई अस्थिरता नहीं है (पार्क युन-सन)। अपने प्रेम में, परमेश्वर ने अपने चुने हुए सेवक दाऊद के साथ एक वाचा स्थापित की और उससे शपथ खाई: "मैं तेरी संतान को सदा के लिए स्थापित करूँगा और सभी पीढ़ियों के लिए तेरे सिंहासन को बनाए रखूँगा" (सेलाह) (आयत 4)। यह शपथ उस वाचा को दोहराती है जो परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता नाथन के माध्यम से दाऊद के साथ की थी, जिसका उल्लेख 2 शमूएल 7:16 में है: "तेरा घर और तेरा राज्य मेरे सामने सदा के लिए पक्का किया जाएगा। तेरा सिंहासन सदा के लिए स्थापित रहेगा।" वास्तव में, यह वाचा उस सार्वभौमिक उद्धार की भविष्यवाणी थी जो मसीह के माध्यम से प्रकट होने वाला था (यशायाह 55:3–5) (पार्क युन-सन)। हमारे परमेश्वर, जो उस वाचा को पूरी निष्ठा से निभाते हैं, ने यीशु मसीह के ज़रिए अपने चुने हुए लोगों को अपनी कभी न बदलने वाली वफ़ादारी—यानी अपनी पूरी स्थिरता—से बचाया है और बचाते रहते हैं (यशायाह 25:1)। इसलिए, भजनकार की तरह, हमें भी प्रभु की वफ़ादारी के बारे में सभी पीढ़ियों को अपने मुँह से बताना चाहिए (भजन संहिता 89:1)। दूसरे शब्दों में, हमें प्रभु की वफ़ादारी की तारीफ़ करनी चाहिए (पद

5)। भजन 447, "तेरी वफ़ादारी महान है," याद आता है: "हे मेरे पिता परमेश्वर, तेरी वफ़ादारी महान है; तुझमें बदलाव की कोई परछाईं नहीं है; तू बदलता नहीं, तेरी दया कभी कम नहीं होती; जैसा तू हमेशा से रहा है, वैसा ही हमेशा रहेगा," (कोरस) "तेरी वफ़ादारी महान है! तेरी वफ़ादारी महान है! हर सुबह मैं नई दया देखता हूँ; मुझे जिसकी भी ज़रूरत थी, तेरे हाथ ने उसे पूरा किया है—हे प्रभु, मेरे प्रति तेरी वफ़ादारी महान है!"

तीसरी बात, जिस परमेश्वर की ओर वह धन्य व्यक्ति देखता है और जिस पर भरोसा करता है, वह सृष्टि की रचना करने वाला परमेश्वर है।

भजन संहिता 89:12 को देखें: "तूने उत्तर और दक्षिण की रचना की; ताबोर और हेर्मोन तेरे नाम में आनंद मनाते हैं।" यह अंश बताता है कि परमेश्वर ने न केवल इज़राइल के पूरे इलाके—उत्तर और दक्षिण दोनों—को बनाया, बल्कि माउंट ताबोर (जो यहूदा में है) और माउंट हेर्मोन (जो सीरिया के इलाके में है) को भी बनाया, जो एक-दूसरे से बहुत दूर हैं; ये सभी परमेश्वर की रचना हैं। दूसरे शब्दों में, ऐसा कोई इलाका नहीं है जिसे परमेश्वर ने न बनाया हो (पार्क यूं-सन)। जिस परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की, उसने अपने चुने हुए लोगों, इज़राइल, को मिस्र से छुड़ाने के लिए लाल सागर को सूखी ज़मीन की तरह पार करने में मदद की (पद 9-10)। यानी, सृष्टि की रचना करने वाले परमेश्वर ने, जिसका समुद्र पर भी अधिकार है, लाल सागर के पानी को सूखी ज़मीन में बदल दिया, जिससे इज़राइली सुरक्षित रूप से पार हो सके। इस रचना करने वाले परमेश्वर के बारे में भजनकार स्वीकार करता है: "स्वर्ग तेरा है, और पृथ्वी भी तेरी है; संसार और उसकी सारी चीज़ें—तूने ही उनकी नींव रखी है" (पद 11)। जिस उद्धार करने वाले परमेश्वर पर उसने भरोसा किया, वही परमेश्वर है जिसने पूरी दुनिया को बसाया। सचमुच, हमारे उद्धार का परमेश्वर ही सृष्टि की रचना करने वाला परमेश्वर है। ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने 'एक्सोडस' (मिस्र से कूच) के दौरान फ़िरौन और मिस्र की सेना से इस्राएलियों को बचाने के लिए प्रकृति को अपनी सर्वोच्च शक्ति से नियंत्रित किया था, वैसे ही वे आज भी अपने चुने हुए लोगों को बचाने के लिए प्रकृति को संचालित और नियंत्रित करते हैं। इसलिए, भजनकार की तरह, हमें उद्धारकर्ता परमेश्वर—सृष्टिकर्ता परमेश्वर—के नाम में आनंद मनाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमें सृष्टिकर्ता परमेश्वर के नाम की स्तुति करनी चाहिए। भजन संख्या 40, "हाउ ग्रेट दाऊ आर्ट" (कोरियाई शीर्षक: "प्रभु परमेश्वर द्वारा रची गई सारी दुनिया"), याद आता है: (पद 1) "जब मैं अपने हृदय में प्रभु परमेश्वर द्वारा

रची गई सारी दुनिया—आकाश के तारे, गरजती हुई बिजली—की कल्पना करता हूँ, तो मैं देखता हूँ कि प्रभु की शक्ति पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है," (कोरस) "मेरी आत्मा प्रभु की महानता और महिमा का गुणगान करती है; मेरी आत्मा प्रभु की महानता और महिमा का गुणगान करती है।"

चौथा, जिस परमेश्वर की ओर धन्य व्यक्ति देखता है और जिस पर भरोसा करता है, वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है।

भजन संहिता 89:6, आयत 8 का पहला भाग, आयत 10 और आयत 13 पर विचार करें: "क्योंकि आकाश में कौन यहोवा की बराबरी कर सकता है? स्वर्गदूतों में कौन यहोवा के समान है?" (आयत 6); "हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, कौन तेरे समान सामर्थी है...?" (आयत 8a); "तूने राहाब को ऐसे कुचल डाला जैसे कोई मारा गया हो; तूने अपनी सामर्थी भुजा से अपने शत्रुओं को तितर-बितर कर दिया" (आयत 10); और "तेरी भुजा में सामर्थ्य है; तेरा हाथ बलवान है, तेरा दाहिना हाथ ऊँचा किया गया है" (आयत 13)। हमारे उद्धार का परमेश्वर सर्वशक्तिमान परमेश्वर है। वह वही परमेश्वर है जो हमें विपत्ति से छुड़ाने में समर्थ है। वह वही परमेश्वर है जो अपनी शक्ति की सामर्थी भुजा से अपने शत्रुओं को तितर-बितर करता है (आयत 10) और अपने लोगों को बचाता है। इसका एक उदाहरण मिस्र से निर्गमन (Exodus) के समय की घटना है, जब परमेश्वर ने लाल सागर में मिस्रियों का विनाश किया और इस्राएल के लोगों को छुड़ाया। इस्राएल के लोगों ने सृष्टिकर्ता परमेश्वर की शक्ति—उसके उद्धार की शक्ति—का अनुभव किया। इसलिए, भजनकार ने स्वीकार किया: "क्योंकि तू ही उनकी शक्ति की महिमा है, और तेरी कृपा से हमारा सींग ऊँचा किया गया है" (आयत 17)। इसका अर्थ है कि प्रभु ही उस शक्ति का स्रोत है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं (पार्क युन-सन)। हमारा प्रभु हमारी शक्ति का स्रोत है; उसके द्वारा ही हमें शक्ति मिलती है। चूँकि प्रभु हमारी शक्ति की महिमा है, इसलिए हम धन्य लोग हैं। हम जो परमेश्वर की बचाने वाली शक्ति का अनुभव करते हैं, वास्तव में धन्य हैं। पाँचवाँ और अंतिम, जिस परमेश्वर की ओर धन्य व्यक्ति देखता है और जिस पर भरोसा करता है, वह पवित्र परमेश्वर है।

भजन संहिता 89:18 को देखें: "क्योंकि हमारी ढाल यहोवा की है, और हमारा राजा इस्राएल के पवित्र की ओर से है।" भजनकार घोषणा करता है कि इस्राएल का राजा पवित्र प्रभु का है। वह स्वीकार करता है कि यह पवित्र परमेश्वर ही इस्राएल की "ढाल" है। यह पवित्र परमेश्वर इस्राएल के लोगों के लिए ढाल का काम

करता है और उन्हें उनके शत्रुओं से बचाता है। इसके अलावा, पवित्र परमेश्वर ही दुष्टों का न्याय करता है; वही परमेश्वर हमें दुष्टों से बचाता है। वह हमसे प्यार करते हैं, और उनका प्यार पवित्र है। जब हम उनके खिलाफ़ कोई पाप करते हैं, तो वे ऐसे परमेश्वर हैं जो प्यार की छड़ी से हमें सुधारते हैं। प्यार से सुधारने के तरीके में भी वे वफ़ादार रहते हैं। स्वर्ग और पृथ्वी को बनाने वाले सर्वशक्तिमान परमेश्वर के रूप में, वे हम पर और बुरे लोगों पर अपनी पवित्रता ज़ाहिर करते हैं। आप और मैं—जो इस पवित्र परमेश्वर की ओर देखते हैं और उन पर भरोसा करते हैं—वही सच में धन्य हैं।

आज सुबह की प्रार्थना सभा में प्रार्थना करते समय मैंने इस संदेश पर विचार किया। जब मैंने प्रभु में अपने भाइयों के लिए प्रार्थना की, तो मेरे मन में उस "आनंदमयी आवाज़"—परमेश्वर के उद्धार की खुशखबरी—को सुनने की गहरी और सच्ची इच्छा हुई। काश हम वह खुशखबरी सुन पाते कि प्रभु हमें बचाते और छुटकारा दिलाते हैं... आज रात, जब हम अपने प्रियजनों के लिए प्रार्थना करते हैं, तो आइए हम सब मिलकर सच्चे दिल से प्रार्थना करें: "हे प्रभु, वे धन्य लोग बनें।" आइए हम सब मिलकर अपने परमेश्वर से प्रार्थना करें और कहें, "हे परमेश्वर, मैं आपके उद्धार की खबर सुनने के लिए तरसता हूँ," और "हे परमेश्वर, कृपया मुझे छुटकारा दिलाएँ।"

वह परमेश्वर जो मुझे मज़बूत बनाता है

[भजन संहिता 89:19-52]

मुझे लगता है कि आपने वह खबर सुनी होगी—कोरिया के एक पूर्व बेसबॉल खिलाड़ी की कहानी, जिसने एक माँ और उसकी तीन बेटियों की हत्या कर दी और फिर खुदकुशी कर ली। यह सुनकर, मैंने सोचा कि कोई इंसान इतना क्रूर कैसे हो सकता है। इसने मुझे इंसानी बुराई और ऐसी क्रूरता की हद के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया। खबरों के अनुसार, उस पूर्व खिलाड़ी ने उन तीन बहनों की माँ से पैसे ऐंठे थे—जिनकी उसने बाद में हत्या कर दी—और उन पैसों का इस्तेमाल दूसरों का कर्ज़ चुकाने में किया। इससे मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ता है कि क्या इन हत्याओं की असली वजह आर्थिक तंगी थी। हाल ही में, मैंने खबरों और अपने आस-पास के लोगों से सुना है कि आर्थिक स्थिति बहुत खराब है, न सिर्फ़ अमेरिका में बल्कि पूरे यूरोप और एशिया में भी। ऐसा लगता है कि आर्थिक तंगी के कारण कई तरह के बुरे काम सामने आ रहे हैं। बहुत से लोग निराश और हताश दिखते हैं, उन्हें बेबसी और निराशा महसूस होती है, और कुछ लोग तो ज़िंदगी से पूरी तरह हार मान लेते हैं।

सचमुच, यह दुनिया चिंताओं और मुश्किलों से भरी है। यह दुनिया पाप और मौत के साये से घिरी हुई है (जैसा कि भजन 474 में बताया गया है)। ऐसी दुनिया में रहते हुए, हम अक्सर निराशा, हताशा और यहाँ तक कि मायूसी का अनुभव करते हैं। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? मुझे बाइबल की एक आयत याद आती है जिसे स्वर्गीय रेवरेंड सांग-वू जंग (चुंगह्युन मिशन चर्च के पादरी एमेरिटस) और उनकी पत्नी बहुत पसंद करते थे—भजन संहिता 18:1: "हे प्रभु, मेरी ताकत, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ।" हालाँकि कोरियाई बाइबल में इसे इस तरह कहा गया है, लेकिन मूल हिब्रू और अंग्रेज़ी अनुवादों में इसे ऐसे भी कहा जा सकता है: "मैं तुझसे प्रेम करता हूँ, हे प्रभु, मेरी ताकत।" जब मैं इस आयत पर विचार करता हूँ, तो मुझे एहसास होता है

कि हम प्रभु से प्रेम इसलिए करते हैं क्योंकि परमेश्वर ही हमारी ताकत है। आज, भजन संहिता 80:21 हमें बताता है कि हमारा परमेश्वर ही हमें मज़बूत बनाता है। "वह परमेश्वर जो मुझे मज़बूत बनाता है" शीर्षक के तहत, मैं उन दो तरीकों पर विचार करना चाहता हूँ जिनसे वह हम पर अपनी कृपा बरसाता है और हम सब मिलकर उस कृपा को प्राप्त करें।

पहला, वह परमेश्वर जो मुझे मज़बूत बनाता है, मुझे मदद की ताकत देता है। भजन संहिता 89:19 को देखिए: "तब तूने दर्शन में अपने पवित्र जन से कहा: 'मैंने एक शक्तिशाली व्यक्ति को सहायता दी है; मैंने लोगों में से चुने हुए एक व्यक्ति को ऊँचा उठाया है।'" अपने चुने हुए लोगों, इस्राएल को बचाने के लिए, परमेश्वर ने अपने चुने हुए सेवक दाऊद के साथ एक वाचा बाँधी और उसे ईमानदारी से निभाया, और दाऊद को—"उस शक्तिशाली व्यक्ति" को—सहायता की शक्ति दी। परमेश्वर ने अपने सेवक दाऊद का अपने पवित्र तेल से अभिषेक किया (पद 20), उसे इस्राएल का राजा नियुक्त किया, और उसे मज़बूती से स्थापित करने के लिए उसके साथ रहे; उन्होंने अपने शक्तिशाली दाहिने हाथ से दाऊद को मज़बूत किया (पद 21). नतीजतन, परमेश्वर से शक्ति पाकर, दाऊद ने उनसे पुकार की: "तू मेरा पिता, मेरा परमेश्वर और मेरे उद्धार की चट्टान है" (पद 26)। जब उसने परमेश्वर पिता—अपने उद्धार की चट्टान—से पुकार की, तो परमेश्वर ने उसके दुश्मनों को उस पर हावी होने से रोका और दुष्टों को उसे सताने नहीं दिया (पद 22)। परमेश्वर ने दाऊद के दुश्मनों को उसके सामने नष्ट कर दिया (पद 23)। इसके अलावा, परमेश्वर ने दाऊद को ऊँचा उठाया (पद 24) और उसके राज्य का विस्तार किया (पद 25)। हमारे परमेश्वर वह हैं जो ज़रूरत के समय हमारी मदद करने के लिए अनुग्रह देते हैं: "इसलिए आओ हम पूरे भरोसे के साथ परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के पास जाएँ, ताकि हम दया पाएँ और ज़रूरत के समय मदद के लिए अनुग्रह पाएँ" (इब्रानियों 4:16)। हमारे परमेश्वर हमारी ज़रूरतों को—आपकी और मेरी—पूरी तरह से जानते हैं। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर हैं जो अच्छी तरह जानते हैं कि हमें कब और किस तरह की मदद की ज़रूरत है। इसके अलावा, वह ऐसे परमेश्वर हैं जो "हमारी कमज़ोरियों के प्रति सहानुभूति रखते हैं" (इब्रानियों 4:15)। क्योंकि वह हमारी कमज़ोरियों को समझते हैं, इसलिए जब हमें मदद की ज़रूरत होती है तो वह हमारे साथ खड़े होते हैं और हमें शक्ति देते हैं। वह अपने शक्तिशाली दाहिने हाथ से हमें थामे रखते हैं। जैसा कि गॉस्पेल गीत "यू आर माई सन" (तू मेरा बेटा है) के बोल बताते हैं, जब हम "थके-हारे, निराश और गिरे हुए होते हैं, और उठने की कोई ताकत नहीं बचती," तो वह चुपचाप पास आते हैं, हमारा हाथ पकड़ते हैं और हमसे बात करते हैं। परमेश्वर क्या कहते हैं? ठीक

वैसे ही जैसे गीत में है: "तू मेरा बेटा है; आज मैंने तुझे जन्म दिया है। तू मेरा बेटा है—मेरा प्यारा बेटा।" मेरी प्रार्थना है कि आज रात हम सब परमेश्वर की यह आवाज़ सुनें और शक्ति पाएँ। परमेश्वर हमें मदद करने के लिए शक्ति देना चाहते हैं। जो परमेश्वर ज़रूरत के समय कृपा करते हैं, वे हमारे साथ रहें और हमें शक्ति दें, जब हम आज रात उनके वचन को सुनें और विश्वास के साथ उन्हें पुकारें।

दूसरी बात, जो परमेश्वर मुझे शक्ति देते हैं, वे अपनी प्रेम-भरी दया को हमेशा बनाए रखते हैं।

भजन संहिता 89:28 को देखिए: "मैं उसके लिए अपनी प्रेम-भरी दया हमेशा बनाए रखूँगा, और उसके साथ मेरा वाचा (समझौता) पक्का रहेगा।" भजन संहिता 89:1–18 में, खासकर आयत 2 और 3 में, परमेश्वर अपने चुने हुए व्यक्ति, दाऊद के साथ एक वाचा बाँधते हैं और कसम खाते हैं, और कहते हैं: "मैं तुम्हारी संतान को हमेशा बनाए रखूँगा और तुम्हारी गद्दी को सभी पीढ़ियों के लिए स्थापित करूँगा।" परमेश्वर ने कैसे कहा कि वे इस कसम को पूरा करेंगे? उन्होंने अपने अटूट प्रेम के ज़रिए इसे हमेशा बनाए रखने और अपनी सच्चाई के ज़रिए वाचा को पक्का करने का वादा किया (आयत 2)। दाऊद से किए गए अपने वादे में, परमेश्वर ने अपने प्रेम (अटूट प्रेम) के ज़रिए हमेशा उसके साथ रहने का वचन दिया। इस संदर्भ में, परमेश्वर ने न केवल दाऊद को पृथ्वी के राजाओं में सबसे महान बनाने (आयत 27) और उसे हमेशा सुरक्षित रखने (आयत 28) का वादा किया, बल्कि यह भी वादा किया कि दाऊद का वंश हमेशा बना रहेगा (आयत 29)। हालाँकि, परमेश्वर ने यह भी वादा किया कि अगर दाऊद के वंशज उनके विरुद्ध पाप करेंगे, तो वे उन्हें सज़ा देंगे (आयत 30–32)। आयत 32 को देखिए: "मैं उनके अपराधों के लिए उन्हें छड़ी से और उनके पापों के लिए कोड़ों से सज़ा दूँगा।" फिर भी, आज के भाग की आयत 33–34 में परमेश्वर का अद्भुत, अनंत प्रेम दिखाई देता है: "लेकिन मैं उससे अपना अटूट प्रेम नहीं हटाऊँगा, और न ही अपनी सच्चाई से मुकरूँगा। मैं अपनी वाचा को नहीं तोड़ूँगा, और न ही अपने मुँह से निकली बात को बदलूँगा।" परमेश्वर ने वादा किया कि भले ही वे दाऊद के वंशजों को पाप करने पर सज़ा देंगे, लेकिन वे उन्हें पूरी तरह से त्याग नहीं देंगे। परमेश्वर दाऊद के वंशजों को हमेशा के लिए क्यों नहीं त्याग सकते? क्योंकि अपनी पवित्रता की कसम खाने के बाद, वे दाऊद से झूठ नहीं बोल सकते (आयत 35)। इसलिए, दाऊद ने परमेश्वर से विनती की कि वे उस वाचा (वादे) को याद रखें जो उन्होंने उससे की थी और इस्राएल को उनकी मौजूदा मुसीबत और अपमान से बचाएं (पद 38–51) (पार्क युन-सन)। यह समझते हुए कि इस्राएल के लोगों को जो दुख और शर्म सहनी पड़ रही थी, वह परमेश्वर के क्रोध के कारण थी (पद 38, 46), उसने प्रभु से पुकार की और पूछा कि उस क्रोध के बीच वे

कब तक अपना मुँह छिपाए रखेंगे (पद 46)। अपने क्रोध में, प्रभु ने दुश्मन की ताकत बढ़ा दी थी (पद 42), जिससे उन्हें इस्राएल के लोगों का अपमान करने का मौका मिला (पद 50)। इस प्रकार, परमेश्वर की दया के लिए प्रार्थना करते हुए (पद 47–48), दाऊद ने परमेश्वर से उद्धार की विनती की, और उस "पुरानी करुणा" (भलाई) पर भरोसा किया जिसका वादा परमेश्वर ने अपनी सच्चाई के साथ उससे किया था (पद 49)।

हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम अनंत है। उसी अनंत प्रेम के साथ, परमेश्वर आपसे और मुझसे प्रेम करते हैं—अतीत में, वर्तमान में और हमेशा के लिए। फिर भी, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर का प्रेम एक पवित्र प्रेम भी है। जब हम परमेश्वर के विरुद्ध पाप करते हैं, तो वे हमें अनुशासित करते हैं क्योंकि वे हमसे प्रेम करते हैं। हालाँकि, परमेश्वर की अद्भुत कृपा यह सुनिश्चित करती है कि जब वे हमें अनुशासित करते हैं, तब भी वे हमसे अपना अनंत प्रेम वापस नहीं लेते। परमेश्वर ऐसे हैं जो अपने क्रोध के बीच भी हमारे लिए अपना प्रेम पूरी तरह से वापस नहीं लेते। इसलिए, भजनकार की तरह, जब हम अपने पापों के कारण परमेश्वर के क्रोध के तहत अनुशासित हो रहे हों, तब भी हमें उनके अनंत और अटूट प्रेम (करुणा) पर भरोसा करना चाहिए और उनकी बचाने वाली कृपा को सच्चे मन से खोजना चाहिए।

भजनकार की तरह, मुसीबत के समय में, उस परमेश्वर से शक्ति पाकर जो हमें सामर्थ्य देता है, हम क्या कर सकते हैं? हम परमेश्वर की स्तुति करने का संकल्प ले सकते हैं और उस संकल्प को पूरा कर सकते हैं [(पद 52) "प्रभु की स्तुति सदा होती रहे। आमीन और आमीन"]। जब हम अपनी मुसीबत में परमेश्वर को पुकारते हैं, तो वे हमें सहने की शक्ति देते हैं; वे ऐसे परमेश्वर हैं जो हमें अपना अनंत प्रेम (करुणा) दिखाते हैं। इस प्रकार, जिस आत्मा ने परमेश्वर के इस अनंत प्रेम का अनुभव किया है, वह उनकी स्तुति किए बिना नहीं रह सकती।

हमें अपने दिनों को गिनना सिखा।

[भजन संहिता 90]

इंग्रिड बर्गमैन नाम की एक अभिनेत्री थीं। उन्हें *फॉर व्होम द बेल टोल्स*, *द बेल्स ऑफ़ सेंट मैरीज़* और *गैसलाइट* जैसी फ़िल्मों से शोहरत मिली; उनकी फ़िल्मों को हमेशा बहुत तारीफ़ मिली, जिसका मुख्य कारण उनकी बेहतरीन एक्टिंग थी। मूल रूप से स्वीडन की रहने वाली बर्गमैन ने यूरोप में बड़ी सफलता हासिल की और फिर और भी ज़्यादा नाम कमाने की बड़ी उम्मीदों के साथ हॉलीवुड चली गईं। हॉलीवुड में उन्होंने कई फ़िल्मों में काम किया और दो बार एकेडमी अवॉर्ड जीता—एक ऐसी उपलब्धि जो बहुत कम अभिनेताओं को मिलती है। फिर भी, अपनी सफलता के शिखर पर पहुँचने के बाद, इस मशहूर अभिनेत्री ने कहा: "हॉलीवुड! सिल्वर स्क्रीन... क्या यह सच में इतना वीरान है? क्या यह इतना खाली है?" उन्होंने एक मशहूर फ़िल्म डायरेक्टर से शादी करने के लिए अपने पति और बेटी को छोड़ दिया था, लेकिन जल्द ही उनकी शादी टूट गई। इसके बाद उन्होंने कई और पुरुषों से शादी की। फिर एक दिन, एक भयानक घटना हुई: उनकी बेटी ने अपने सौतेले पिता की हत्या कर दी। उनका एक लक्ष्य था, और उन्होंने उसे हासिल भी कर लिया था। हालाँकि, उनके जीवन में कोई सच्चा मकसद नहीं था। आखिरकार, कैंसर से उनकी दुखद मौत हो गई। उन्होंने ऐसा जीवन जिया जिसमें लक्ष्य तो थे, लेकिन मकसद की कमी थी। बहुत से लोगों के पास लक्ष्य तो होते हैं, लेकिन मकसद नहीं होता। जहाँ लक्ष्य दिशा के बारे में बताता है, वहीं मकसद जीवन के अर्थ के बारे में पूछता है। "मैं क्यों जी रहा हूँ?" यह मकसद से जुड़ा सवाल है, जबकि "मैं कहाँ जा रहा हूँ?" यह लक्ष्य से जुड़ा सवाल है। बहुत से लोग लक्ष्य और मकसद में फ़र्क नहीं कर पाते और दोनों को एक ही चीज़ समझते हैं; ऐसा करने से वे बिना किसी मकसद के भटकते रहते हैं और अपनी कीमती, एक बार मिलने वाली ज़िंदगी बर्बाद कर देते हैं।

ठीक इंग्रिड बर्गमैन की तरह—वह अभिनेत्री जिन्होंने अपने लक्ष्य तो हासिल किए, लेकिन फिर भी गहरे खालीपन का अनुभव किया—आज कितने ही लोग वैसा ही खालीपन महसूस करते हैं? इसका एक मुख्य बाइबिल-संबंधी उदाहरण राजा सुलैमान हैं, जो 'उपदेशक' (Ecclesiastes) किताब के लेखक हैं। 'उपदेशक' 1:2 में उनका यह कथन—"व्यर्थ! व्यर्थ! सब कुछ व्यर्थ है!"—यह बताता है कि उन्होंने खुद जीवन की पूरी निरर्थकता का अनुभव किया था। अगर 'उपदेशक' किताब को एक ही वाक्य में समेटा जाए, तो यह हमें सिखाती है कि परमेश्वर के बिना जीवन कितना खाली होता है। दूसरे शब्दों में, यह दिखाता है कि ईश्वर से अलग किए गए सभी इंसानी प्रयास बेकार हैं, और इंसान को हमेशा रहने वाली कीमत और मकसद तभी मिल सकता है जब ईश्वर और इंसान के बीच का रिश्ता फिर से जुड़ जाए। ईश्वर के बिना, समझदारी बेकार है (1:12–6:9), खुशी और भौतिक चीज़ें बेमतलब हैं (2:1–11), दौलत की चाहत बेकार है (पद 12–23), ज़ुल्म खोखला है (4:1–3), सारी मेहनत बेमतलब है (पद 4–12), और राजनीति भी बेकार है (पद 13–16)। 'एक्लेसियास्टिस' (Ecclesiastes) के लेखक ने ये बातें सिर्फ़ काल्पनिक सोच या थ्योरी के आधार पर नहीं बताईं; बल्कि, उन्होंने इन्हें अपने निजी अनुभवों से सीखे गए सबक के तौर पर साझा किया। आखिरकार, इस दुनिया में हमेशा रहने वाली और सच्ची खुशी नहीं मिल सकती; ज़िंदगी में असली संतुष्टि सिर्फ़ ईश्वर के साथ रिश्ते में—या खुद ईश्वर में ही—मिलती है।

तो फिर, हमें इस दुनिया में कैसे जीना चाहिए जो इतनी बेमतलब है? इसका जवाब पाने के लिए, हमें ईश्वर से वही प्रार्थना करनी चाहिए जो भजनकार ने आज के हिस्से, भजन 90:12 में की थी: "हमें अपने दिनों को गिनना सिखा।" हम इस प्रार्थना को दो नज़रिए से देख सकते हैं; "हमें अपने दिनों को गिनना सिखा" वाली गुज़ारिश में दो अलग-अलग बातें शामिल हैं।

पहली बात है: "हमें ज़िंदगी की बेमतलब बातों के बारे में सिखा।" आज का हिस्सा, भजन 90:3–10, हमें तीन वजहें बताता है कि इंसानी ज़िंदगी क्यों छोटी और बेमतलब है:

(1) ज़िंदगी छोटी है क्योंकि आखिर में हम मिट्टी में ही मिल जाते हैं।

भजन 90:3 देखिए: "तू इंसान को वापस मिट्टी में मिला देता है और कहता है, 'वापस आ जाओ, ऐ इंसानों की औलाद।'" ईश्वर ने आदम से कहा था, "क्योंकि तू मिट्टी है और मिट्टी में ही वापस मिल जाएगा" (उत्पत्ति 3:19)। ईश्वर, जिसने आदम को मिट्टी से बनाया था, ने कहा, "तू मिट्टी है, और मिट्टी में ही वापस मिल जाएगा।" सच तो यह है कि हमारी ज़िंदगी ऐसी है कि हमारे पास मिट्टी में वापस मिलने के अलावा कोई चारा नहीं है। इसीलिए ज़िंदगी छोटी है। राजा सुलैमान ने भी उपदेशक 3:19–21 में इस बारे में कहा है: "क्योंकि जो इंसानों के साथ होता है, वही जानवरों के साथ भी होता है; दोनों का अंजाम एक ही है: जैसे एक मरता है, वैसे ही दूसरा भी मरता है। सच तो यह है कि दोनों में एक ही साँस है; इंसान को जानवरों पर कोई बढ़त हासिल नहीं है, क्योंकि सब कुछ व्यर्थ है। सब एक ही जगह जाते हैं: सब मिट्टी से बने हैं और सब मिट्टी में ही मिल जाते हैं। कौन जानता है कि इंसानों की आत्मा ऊपर जाती है और जानवरों की आत्मा नीचे धरती में जाती है?" जैसा कि उपदेशक ने कहा, सब कुछ व्यर्थ है; क्योंकि सब मिट्टी से पैदा होते हैं और मिट्टी में ही मिल जाते हैं—सब एक ही जगह जाते हैं—इसलिए इंसानी ज़िंदगी बहुत छोटी है।

(2) ज़िंदगी छोटी है क्योंकि यह बहुत कम समय की होती है। भजन 90:4–6 पर गौर करें: "क्योंकि तेरी नज़र में हज़ार साल बीते हुए कल की तरह हैं, या रात के एक पहर की तरह। तू उन्हें बाढ़ की तरह बहा ले जाता है; वे नींद की तरह हैं; सुबह वे उस घास की तरह होते हैं जो उगती है: सुबह वह फलती-फूलती और बढ़ती है; शाम को वह काट दी जाती है और सूख जाती है।" इंसानी ज़िंदगी "नींद की तरह" और "सुबह उगने वाली घास की तरह" है। समय और ज़िंदगी तेज़ी से आते और जाते हैं; यह निश्चित रूप से एक छोटी और व्यर्थ ज़िंदगी है। जैसे बाढ़ लोगों को बहा ले जाती है और अचानक भारी तबाही मचाती है, वैसे ही इंसानी ज़िंदगी भी तेज़ी से खत्म हो जाती है। ज़िंदगी कुछ पल के लिए सोने और फिर जागने जैसी है। क्योंकि सोते समय समय का पता नहीं चलता, इसलिए जागने की तुलना में यह बहुत तेज़ी से बीतती हुई लगती है। इसके अलावा, जैसे नींद सपनों से भरी होती है, वैसे ही इंसानी ज़िंदगी अक्सर व्यर्थ, सपनों जैसी चीज़ों के पीछे भागने में बीत जाती है (पार्क युन-सन)। जैसा कि भजनकार कहता है, ज़िंदगी सुबह उगने वाली घास की तरह है। यह छोटी और व्यर्थ है क्योंकि, जैसे घास सुबह खिलती और बढ़ती है लेकिन शाम तक काट दी जाती और सूख जाती है, वैसे ही इंसानी ज़िंदगी का भी यही हाल होता है। इसलिए, प्रेरित याकूब ने कहा: "तुम नहीं जानते कि कल क्या होगा। क्योंकि तुम्हारी ज़िंदगी क्या है? यह बस एक भाप की तरह है जो थोड़ी देर के लिए दिखाई देती है और फिर गायब हो जाती है" (याकूब 4:14)। यह बात तब और भी साफ़ हो जाती है जब हम इसकी तुलना

परमेश्वर के कभी न खत्म होने वाले स्वभाव से करते हैं—जो अनादि काल से अनंत काल तक परमेश्वर है (भजन संहिता 90:2); इंसानी ज़िंदगी की तुलना परमेश्वर की अनंतता से नहीं की जा सकती। सच तो यह है कि ज़िंदगी बहुत छोटी है। यह बस एक पल की तरह है—एक ऐसा अस्तित्व जो खाली और क्षणभंगुर है।

(3) ज़िंदगी खाली है क्योंकि इसमें इंसान के दिनों में सिर्फ़ मेहनत और दुख ही होता है। भजन संहिता 90:10 को देखिए: "हमारी उम्र सत्तर साल या अस्सी साल की हो सकती है, अगर हम मज़बूत रहें; फिर भी उनमें सबसे अच्छे दिन भी परेशानी और दुख से भरे होते हैं, क्योंकि वे जल्दी बीत जाते हैं, और हम उड़ जाते हैं।" ज़िंदगी बेकार है क्योंकि हमारी उम्र—सत्तर साल, या अस्सी अगर हम मज़बूत हैं—तेज़ी से बीतते हुए सिर्फ़ मेहनत और दुख से भरी होती है। इसीलिए राजा सुलैमान, जो उपदेशक थे, ने कहा: "सूरज के नीचे लोग इतनी मेहनत और चिंता भरी कोशिशें करते हैं, तो उन्हें क्या मिलता है? उनके सारे दिनों में उनका काम दुख और दर्द भरा होता है; यहाँ तक कि रात में भी उनके मन को आराम नहीं मिलता। यह भी बेकार है" (सभोपदेशक 2:22-23)। बाइबल हमें बताती है कि ज़िंदगी जीवन भर की चिंता और मेहनत का सफ़र है जिससे सिर्फ़ दुख मिलता है—दर्द और तकलीफ़ से भरी ज़िंदगी, जहाँ इंसान रात में भी बिना आराम किए मेहनत करता है, और आखिर में पाता है कि सब कुछ बेकार है। इसलिए, राजा सुलैमान ने कहा, "बेकार! बेकार! पूरी तरह बेकार! सब कुछ बेकार है" (1:2)।

भजन रचने वाले की तरह, हमें भी परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए और उनसे कहना चाहिए कि वे हमें ज़िंदगी की व्यर्थता के बारे में सिखाएँ। खासकर, हमें आज के वचन में बताए गए उन तीन कारणों को जानना चाहिए कि ज़िंदगी क्यों बेकार है। हमें इस सच्चाई को गहराई से समझने की ज़रूरत है: ज़िंदगी बेकार है क्योंकि हम मिट्टी में मिल जाते हैं, यहाँ हमारा समय बहुत कम होता है, और हमारे दिन सिर्फ़ मेहनत और दुख से भरे होते हैं।

दूसरी आखिरी प्रार्थना यह है: "हमें एक सार्थक जीवन जीना सिखाएं।"

अगर हम जीवन की नश्वरता को समझें, तो हमें इसे कभी बर्बाद नहीं करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमें सोचना चाहिए कि इस छोटे से जीवन को सार्थक तरीके से कैसे जिया जाए। आज के वचन से हम तीन बातें सीख सकते हैं:

(1) सार्थक जीवन जीने के लिए, हमें परमेश्वर का भय मानना चाहिए।

भजन संहिता 90:11 को देखें: "तेरे क्रोध की शक्ति को कौन जानता है? तेरे भय के अनुसार तेरे प्रकोप को कौन जानता है?" परमेश्वर का भय मानने के लिए, हमें "बुद्धिमान हृदय" की तलाश करनी चाहिए, जैसा कि भजनकार ने किया था (पद 12)। क्यों? क्योंकि प्रभु का भय ही बुद्धि का आरंभ है (नीतिवचन 1:7)। इसलिए, राजा सुलैमान ने उपदेशक की पुस्तक में यह कहने के बाद कि सब कुछ "व्यर्थता की व्यर्थता" है, उपदेशक 12:13 में निष्कर्ष निकाला: "अब सब कुछ सुना जा चुका है; बात का सार यह है: परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर, क्योंकि सभी मनुष्यों का यही कर्तव्य है।" बाइबल हमें बताती है कि मनुष्य के रूप में हमारा कर्तव्य परमेश्वर का भय मानना और उसकी आज्ञाओं का पालन करना है। इसलिए, सार्थक जीवन जीने के लिए, हमें—भजनकार की तरह—परमेश्वर से बुद्धिमान हृदय मांगना चाहिए और ऐसा जीवन जीना चाहिए जिसमें उसका भय हो।

(2) सार्थक जीवन जीने के लिए, हमें प्रभु के अटूट प्रेम में संतुष्टि पानी चाहिए।

भजन संहिता 90:14 को देखें: "सुबह हमें अपने अटूट प्रेम से तृप्त कर, ताकि हम खुशी के गीत गाएं और अपने सभी दिनों में आनंदित रहें।" हम—जो अन्यथा अपना जीवन दुख और व्यर्थता में बिता सकते थे—उनके लिए परमेश्वर ने यीशु मसीह के माध्यम से सच्चा आनंद दिया है और देता रहता है। वह आनंद और खुशी सीधे प्रभु की दयालुता से आती है। दूसरे शब्दों में, जब हम प्रभु के प्रेम से संतुष्ट होते हैं, तो हम जीवन भर सच्चे आनंद का अनुभव कर सकते हैं। इसके अलावा, प्रभु के उसी प्रेम के द्वारा यीशु की आज्ञाओं—परमेश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसियों से प्रेम करना—का पालन करके, हम एक सच्चे सार्थक जीवन जी सकते हैं।

(3) सार्थक जीवन जीने के लिए, हमें प्रभु की महिमा के लिए जीना चाहिए। भजन संहिता 90:16 को देखिए: "तेरे काम तेरे सेवकों पर और तेरा प्रताप उनके वंशजों पर प्रकट हो।" भजनकार ने परमेश्वर से विनती की कि वे लोगों—खासकर इस्राएल के लोगों—को उनके दुखों के दिनों (यानी तकलीफ के सालों) के अनुपात में खुशी दें। उन्होंने प्रभु से यह भी कहा कि वे अपने कामों और अपनी महिमा को उन पर प्रकट करें ताकि वे इस खुशी का अनुभव कर सकें (पद 15)। अक्सर मेहनत और दुख से भरी ज़िंदगी में, परमेश्वर से मिलने वाली खुशी का अनुभव करने के लिए ज़रूरी है कि उनके काम हमारे जीवन में दिखाई दें। सच तो यह है कि जब हमारे जीवन में परमेश्वर की महिमा प्रकट होती है, तो हम खुशी मनाए बिना नहीं रह सकते। मेहनत और दुख के बीच जीवन अक्सर संघर्षपूर्ण इसलिए बन जाता है क्योंकि हम परमेश्वर की महिमा के बजाय अपनी महिमा के लिए जीते हैं और सिर्फ़ खुद को दिखाना चाहते हैं। सच में कीमती जीवन जीने के लिए, हमें परमेश्वर की महिमा के लिए जीना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं और हमारे जीवन में परमेश्वर के काम प्रकट होते हैं, तो हमारा अस्तित्व सचमुच सार्थक और मूल्यवान बन जाता है।

(4) मूल्यवान जीवन जीने के लिए, हमें पूरे दिल से परमेश्वर की कृपा पानी चाहिए।

भजन संहिता 90:17 को देखिए: "हमारे प्रभु परमेश्वर की कृपा हम पर बनी रहे; हमारे हाथों के कामों को हमारे लिए स्थापित कर—हाँ, हमारे हाथों के कामों को स्थापित कर।" कल सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, मैंने 2 शमूएल 9:1 पर मनन किया और "परमेश्वर की दया" (पद 3) पर ध्यान दिया, जो दाऊद ने मेफीबोशेत—योनातान के बेटे, जो दोनों पैरों से लंगड़ा था—के प्रति दिखाई थी। योनातान के साथ किए गए अपने वादे को निभाते हुए, दाऊद ने मेफीबोशेत से कहा, "मैं तेरे पिता योनातान की खातिर तुझ पर ज़रूर दया करूँगा" (पद 7)। उसने मेफीबोशेत को वह सारी ज़मीन वापस दिला दी जो उसके दादा शाऊल की थी (पद 7) और उसके लिए राजा की मेज़ पर नियमित रूप से भोजन करने का इंतज़ाम किया, ठीक वैसे ही जैसे राजा के अपने बेटे करते थे (पद 7, 10, 11, 13)। इसके अलावा, उसने ज़ीबा—शाऊल के सेवक—को, ज़ीबा के पंद्रह बेटों और बीस सेवकों के साथ, मेफीबोशेत की सेवा करने के लिए नियुक्त किया (पद 10)। मेफीबोशेत का जवाब विनम्रता भरा था: "उसने झुककर कहा, 'आपका दास क्या है, कि आप मुझ जैसे मरे हुए कुत्ते पर ध्यान दें?'" (पद 8)। इस हिस्से पर सोचने से एक ही नतीजा निकलता है: हम सिर्फ़ परमेश्वर का अनंत धन्यवाद और स्तुति कर सकते हैं, जिन्होंने हमें यीशु मसीह के ज़रिए उद्धार और हर तरह की

आध्यात्मिक आशीष दी—भले ही हम ऐसी ईश्वरीय कृपा के बिल्कुल भी लायक नहीं थे। इसीलिए हम भजन 495 गाते हैं, "मेरी आत्मा को अनुग्रह मिला है": (पद 1) "मेरी आत्मा को अनुग्रह मिला है और पाप का भारी बोझ उतर गया है; अब यह दुख-भरी दुनिया स्वर्ग में बदल गई है।" (कोरस) "हल्लेलुयाह, आइए स्तुति करें! मेरे सारे पाप माफ़ हो गए हैं और प्रभु यीशु के साथ चलते हुए, मैं जहाँ भी हूँ, वह जगह स्वर्ग बन जाती है।" आज के संदेश पर मनन करते समय, मुझे ऑनलाइन एक कविता मिली जिसे मैं आपके साथ साझा करना चाहता हूँ: "घुमावदार रास्ते पर बहती हुई धारा कहाँ जाती है? पत्तों के गिरने से पहले वह अपनी सुंदरता दिखाती है, फिर भी जब वे चुपचाप—एक-एक करके—नीचे गिरते हैं, तो बस खालीपन का एहसास रह जाता है। वह चकाचौंध भरी सुंदरता बस एक पल की होती है; जैसे हमारी जवानी पलक झपकते ही बीत जाती है, वैसे ही हम आखिरकार जीवन के पतझड़ का सामना करते हैं, अकेले और मुरझाए हुए पत्तों की तरह—पीछे बस व्यर्थता का एहसास छोड़ जाते हैं। जीवन की मुश्किलों के बारे में रोने-चिल्लाने का समय बीत चुका है; गिरते पत्तों को देखते हुए और जीवन के आखिरी पलों का इंतज़ार करते हुए, मैं जीवन के असली अर्थ पर सोचने लगता हूँ। पतझड़ के पत्तों के शानदार रंगों की तरह, जीवन की गूँज भी चुपचाप मिट जाती है, बिना कोई निशान छोड़े। आह, इस धरती पर जीवन का क्या अर्थ था? हमारा जीवन सुंदर पतझड़ के पत्तों का रंग ले लेता है, हमारी यादों को रंग देता है और हमारे दिलों में खट्टी-मीठी टीस जगाता है" (इंटरनेट)। हमें इस दुनिया में जीवन की व्यर्थता को गहराई से समझना चाहिए, जो आखिरकार सब कुछ बेकार है। इसलिए, हमें पवित्रशास्त्र से सीखना चाहिए—और उसे अमल में लाना चाहिए—कि इस एक बार मिलने वाले सफ़र में सार्थक जीवन कैसे जिया जाए। आइए हम परमेश्वर के प्रति आदर भाव से जिएं और प्रभु की प्रेमपूर्ण दया में संतोष पाएं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब प्रभु की महिमा के लिए जिएँ और सच्चे मन से उनकी कृपा पाने का प्रयास करें।

“मेरी शरण”

[भजन संहिता 91]

पिछले हफ़्ते, मैंने बेघर लोगों के बारे में एक टीवी न्यूज़ रिपोर्ट देखी। इसमें दक्षिणी कैलिफ़ोर्निया के एक शहर का दृश्य दिखाया गया था जहाँ स्थानीय सरकार ने बेघर लोगों की मदद के लिए बजट आवंटित किया था; हालाँकि, जैसे-जैसे अलग-अलग जगहों से और बेघर लोग उस इलाके में आने लगे, स्थिति बेकाबू हो गई और आखिरकार शहर को उस डेरे को हटाना पड़ा। मैंने एक रिपोर्टर को एक-दो बेघर महिलाओं का इंटरव्यू लेते देखा; जब उनसे पूछा गया कि वे आगे क्या करने की योजना बना रही हैं, तो उन्होंने जवाब दिया कि उन्हें सच में नहीं पता, फिर भी वे बहुत ज़्यादा चिंतित नहीं लग रही थीं। इन बेघर लोगों को बिना किसी मकसद के घूमते हुए देखकर मुझे मिस्र से बाहर निकलने (एक्सोडस) के दौरान इस्राएलियों की याद आ गई। जब वे मिस्र से कनान की प्रतिज्ञा की हुई भूमि की ओर यात्रा कर रहे थे, तो वे बिना स्थायी घरों के जंगल में अस्थायी डेरों में रहते थे। इस्राएलियों के लिए, “मिलापवाला तम्बू” (tabernacle) बहुत महत्वपूर्ण था; यह उनके जीवन का केंद्र था। जंगल से गुज़रते समय परमेश्वर की आराधना करने और रुकने की जगह के तौर पर उन्होंने तम्बू लगाया—जिससे यह उनकी आराधना का मुख्य केंद्र बन गया। तम्बू (या पवित्र स्थान) के अंदरूनी हिस्से को ‘अति पवित्र स्थान’ और ‘पवित्र स्थान’ में बांटा गया था; ‘अति पवित्र स्थान’ में वाचा का संदूक रखा जाता था, जबकि ‘पवित्र स्थान’ में धूप की वेदी, भेंट की रोटियों की मेज़ और सोने का दीवट (lampstand) रखे जाते थे। इस तम्बू—जो परमेश्वर का निवास स्थान था—के चारों ओर इस्राएल के बारह गोत्र तीन-तीन के समूहों में डेरा डालते थे, जो पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर दिशाओं में स्थित थे। लेवीवंशी तम्बू के भीतर सेवा करते थे, जो परमेश्वर की उपस्थिति का स्थान था। जब भी परमेश्वर का तम्बू आगे बढ़ता, इस्राएल के सभी गोत्र भी उसके साथ आगे बढ़ते, और जब वह रुकता, तो वे भी रुक जाते थे। भजन संहिता

84:1–2 में, भजनकार ने कहा: "हे सेनाओं के यहोवा, तेरा निवास स्थान कितना प्यारा है! मेरा प्राण यहोवा के आंगनों के लिए तरसता है, यहाँ तक कि व्याकुल हो जाता है; मेरा हृदय और मेरा शरीर जीवित परमेश्वर के लिए पुकारते हैं।" भजनकार प्रभु के आंगनों के लिए इतनी गहराई से क्यों तरसता था? इसलिए क्योंकि वहाँ परमेश्वर की उपस्थिति थी। दूसरे शब्दों में, असल में मायने यह नहीं रखता कि तम्बू या महल कैसा है, बल्कि यह मायने रखता है कि वहाँ परमेश्वर मौजूद है या नहीं। भजन संहिता 91:2 में, भजनकार कहता है: "मैं यहोवा के विषय कहूँगा, 'वह मेरा शरणस्थान और मेरा गढ़ है, मेरा परमेश्वर, जिस पर मैं भरोसा रखता हूँ।'" इस आयत और "मेरा शरणस्थान" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मुझे उम्मीद है कि यह समय परमेश्वर की भलाई को याद करने और उन्हें धन्यवाद देने का होगा—क्योंकि हम उन तीन तरीकों पर मनन करेंगे जिनसे परमेश्वर, जो हमारा शरणस्थान है, हम पर अपनी कृपा बरसाता है।

पहला, परमेश्वर, जो मेरा शरणस्थान है, हमें बचाता है।

भजन संहिता 91:3 को देखें: "निश्चय ही वह तुम्हें बहेलिए के जाल और घातक महामारी से बचाएगा।" यह आयत हमें दो चीज़ों—या स्थितियों—के बारे में बताती है जिनसे परमेश्वर, हमारा शरणस्थान, हमें बचाता है।

(1) भजनकार कहता है कि परमेश्वर हमें "जाल" से बचाता है।

"जाल" एक ऐसा उपकरण है जिसका उपयोग पक्षियों या जानवरों को पकड़ने के लिए किया जाता है। चूँकि यह धोखे से नुकसान पहुँचाता है, इसलिए सीधे-सादे दिल वाले विश्वासी आसानी से इसमें फँस सकते हैं (पार्क युन-सन)। तो, शैतान सीधे-सादे दिल वाले विश्वासियों को अपने जाल में कैसे फँसाता है? इसके कई तरीके हैं, लेकिन उनमें से एक है झूठ। दूसरे शब्दों में, शैतान—जो झूठ का पिता है—सीधे-सादे दिल वाले विश्वासियों को धोखा देने और उन्हें जाल में फँसाने के लिए झूठ का सहारा लेता है। हम विश्वासियों को धोखा देने और इस तरह जाल में फँसाने के पीछे शैतान का मकसद क्या है? उसका मकसद हमारे "विनाश" के अलावा

और कुछ नहीं है (आयत 6 का बाद का हिस्सा)। हालाँकि, विश्वासयोग्य परमेश्वर (आयत 4)—जो हमारा शरणस्थान है—ने हमें शैतान के जाल से बचाया है और आगे भी बचाता रहेगा।

(2) कहा गया है कि परमेश्वर हमें "घातक महामारी" से बचाता है।

यहाँ "महामारी" शब्द का अर्थ ऐसी बीमारी से है जो संक्रामक है और फैलती है; यह उस बुरी ज़बान के लिए भी एक रूपक है जो दूसरों की बुराई और निंदा करती है (पार्क युन-सन)। यह "महामारी" शब्द आयत 6 के पहले भाग में भी आता है: "वह महामारी जो अंधेरे में फैलती है..." इसके अलावा, आयत 5 में "रात के डर..." का ज़िक्र है। जब इन आयतों पर एक साथ विचार किया जाता है, तो "घातक महामारी" का अर्थ सबसे पहले ऐसी बीमारी से होता है जो हमें मौत की ओर ले जाती है। फिर भी, यह शैतान की ज़हरीली ज़बान का भी संकेत हो सकता है—जो विश्वासियों को झूठ बोलकर धोखा देने और साथ ही उनकी बुराई और बदनामी करके उन्हें बर्बाद करने की कोशिश में घूमता रहता है (पार्क युन-सन)। आखिर में, परमेश्वर, जो हमारी शरणस्थान है, वही हमें जाल और जानलेवा महामारी से बचाता है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर, हमारी शरणस्थान, उद्धार करने वाला परमेश्वर है जो हमें बर्बादी और मौत (और उसके डर) से बचाता है।

तो, बाइबल के अनुसार, हमारा उद्धार करने वाला परमेश्वर किसे जाल और जानलेवा महामारी से बचाता है? आयत 14 देखें: "परमेश्वर कहता है, 'क्योंकि वह मुझसे प्रेम करता है, इसलिए मैं उसे बचाऊंगा...'" उद्धार करने वाला परमेश्वर, जो हमारी शरणस्थान है, उन लोगों को बचाता है जो उससे प्रेम करते हैं। जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, वे मानते हैं कि वह "सर्वोपरि" और "सर्वशक्तिमान" है (आयत 1)। यह विश्वास करते हुए कि यह सर्वोपरि और सर्वशक्तिमान परमेश्वर उन्हें "जाल" और "जानलेवा महामारी" से बचाने में सक्षम है, वे परमेश्वर को—अपनी शरणस्थान को—पुकारते हैं। आयत 15 देखें: "वह मुझे पुकारेगा, और मैं उसे उत्तर दूंगा; मैं मुसीबत में उसके साथ रहूंगा; मैं उसे बचाऊंगा और उसका सम्मान करूंगा।" परमेश्वर ही उन लोगों की प्रार्थनाओं का उत्तर देता है जो उससे प्रेम करते हैं और विश्वास के साथ उसे पुकारते हैं। इसलिए, परमेश्वर उन लोगों की प्रार्थनाओं का उत्तर देता है जो उससे प्रेम करते हैं और उसे पुकारते हैं; वह मुसीबत

के समय उनके साथ खड़ा रहता है, उन्हें बचाता है और उन्हें महिमा देता है। दूसरी बात, परमेश्वर, जो मेरी शरणस्थान है, हमारी रक्षा करता है।

भजन संहिता 91:11 देखें: "क्योंकि वह तुम्हारे लिए अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, कि वे तुम्हारे सभी कामों में तुम्हारी रक्षा करें।" जो विश्वासी परमेश्वर को अपनी शरणस्थान बनाते हैं (आयत 9), उनके लिए परमेश्वर उनके घरों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है (आयतें 9–10)। परमेश्वर ने भजनकार और इज़राइल के लोगों के घरों की सुरक्षा कैसे सुनिश्चित की, जिन्होंने उसे अपनी शरणस्थान बनाया था? आयतें 10–11 देखें: "कोई बुराई तुम पर नहीं आएगी, और न ही कोई महामारी तुम्हारे घर के पास आएगी; क्योंकि वह तुम्हारे लिए अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, कि वे तुम्हारे सभी कामों में तुम्हारी रक्षा करें।" परमेश्वर उन लोगों की रक्षा करता है जो उससे प्रेम करते हैं और उसे पुकारते हैं, और उन्हें नुकसान और आपदा से बचाता है। वह परमेश्वर हमारी रक्षा करता है ताकि बुराई और मुसीबत उन लोगों के घरों के पास न आ सके जो उससे प्रेम करते हैं। यह परमेश्वर हमारी देखभाल करने और हमारे सभी रास्तों पर हमारी रक्षा करने के लिए स्वर्गदूतों को भेजता है। भजन संहिता 37:7 और 2 राजा 6:16 जैसे वचन यह नहीं सिखाते कि हर व्यक्ति के लिए एक ही रक्षक स्वर्गदूत नियुक्त होता है; बल्कि, वे बताते हैं कि एक व्यक्ति की भलाई के लिए कई स्वर्गदूत काम करते हैं। हालाँकि बुराई की कई ताकतें संत को नुकसान पहुँचाने की कोशिश करती हैं, लेकिन उसकी रक्षा करने वाली ताकतें कहीं ज़्यादा बड़ी हैं (पार्क युन-सन)। परमेश्वर, जो इस तरह स्वर्गदूतों के ज़रिए हमारी रक्षा और हिफ़ाज़त करता है, वही है जो न केवल स्वर्गदूतों से हमें थामे रखता है ताकि हमारे पैर पत्थर से न टकराएँ (वचन 12), बल्कि हमें शेर और वाइपर जैसे खतरनाक जीवों से भी बचाता और सुरक्षित रखता है (वचन 13)। यहाँ, "शेर," "वाइपर," "जवान शेर," और "साँप" जैसे खतरनाक जानवर अज्ञानी और बुरे दुश्मनों के लिए रूपक के तौर पर इस्तेमाल किए गए हैं (पार्क युन-सन)। क्योंकि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसे पुकारते हैं, इसलिए वह हमें इन बुरे दुश्मनों से बचाता और सुरक्षित रखता है।

इसलिए, हमें परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए, जो हमारी शरण है (वचन 2)। जो परमेश्वर हमारी रक्षा और हिफ़ाज़त करता है—हमारी शरण—उसी पर हम अपना भरोसा रखते हैं। वह हमारा गढ़ है (वचन 2)। उसकी वफ़ादारी हमारी "ढाल और कवच" बन जाती है (वचन 4)। मैं प्रार्थना करता हूँ कि भजन संहिता 18:2 के शब्द हम सभी का विश्वास-बयान बन जाएँ: "यहोवा मेरी चट्टान, मेरा गढ़ और मेरा छुड़ानेवाला है; मेरा परमेश्वर, मेरी चट्टान, जिसमें मैं शरण लेता हूँ, मेरी ढाल, मेरे उद्धार का सींग, मेरा ऊँचा गढ़ है।"

तीसरी और आखिरी बात, परमेश्वर, जो मेरी शरण है, हमें संतुष्ट करता है।

भजन संहिता 91:16 को देखिए: "मैं उसे लंबी उम्र दूँगा और उसे अपना उद्धार दिखाऊँगा।" जो परमेश्वर हमारी शरण है, वह हमें किस चीज़ से संतुष्ट करने का वादा करता है? वह है "लंबी उम्र।" लंबी उम्र के बारे में बाइबल का एक जाना-माना वादा इफिसियों 6:2–3 में मिलता है: "अपने माता-पिता का आदर करो—जो वादे के साथ पहला हुक्म है—ताकि तुम्हारा भला हो और तुम धरती पर लंबी उम्र पाओ।" इस वचन से हमें यह समझना चाहिए कि लंबी उम्र का आशीर्वाद—जो परमेश्वर का वादा है—पाने में हमारी अपनी ज़िम्मेदारी भी शामिल है। इफिसियों 6:2–3 के मामले में, वह ज़िम्मेदारी है "माता-पिता का आदर करना।" तो, आज के वचन, भजन संहिता 91 के अनुसार हमारी ज़िम्मेदारी क्या है? दूसरे शब्दों में, लंबी उम्र के वादे वाले आशीर्वाद को पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? वह है परमेश्वर को जानना और उससे प्रेम करना (भजन 91:14), उस पर भरोसा करना (वचन 2), उसकी शरण लेना (वचन 2, 9), और उसे पुकारना (वचन 15)। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर—जो हमारी शरण है—हमारी आत्माओं को संतुष्ट करेगा। हमें मुसीबत से बचाकर (वचन 15), वह हमारी उम्र बढ़ाएगा।

हम असल में क्या चाहते हैं? अगर हम सच में परमेश्वर को अपनी शरण मानकर जी रहे हैं, तो हम इस धरती पर लंबी उम्र के बजाय अपने अनंत स्वर्गीय घर में प्रभु के साथ रहने की ज़्यादा इच्छा करेंगे। हम निश्चित रूप से उस दिन का इंतज़ार करेंगे जब यीशु के दोबारा आने से परमेश्वर का उद्धार पूरी तरह से पूरा होगा। उस समय, हमारा प्रभु हमारी आत्माओं को पूरी तरह से संतुष्ट करेगा। उस पल तक, हमें प्रभु को ही अपनी शरण बनाना चाहिए। हम प्रार्थना करते हैं कि आप परमेश्वर के उद्धार, सुरक्षा और उस अनुग्रह का आनंद लेते हुए जिएं जो आपकी आत्मा को संतुष्ट करता है, और आप उस पर भरोसा करें, उससे प्रेम करें और उसे पुकारें।

प्रभु के गहरे विचार

[भजन संहिता 92]

आज मेरी पत्नी कोरियाटाउन में चावल के केक की एक दुकान पर गईं। उन्हें हमारी सबसे छोटी बेटी, ये-उन के लिए "रेनबो राइस केक" का ऑर्डर देना था, ताकि वह किंडरगार्टन में अपना जन्मदिन मना सके। ये-उन ने अपनी माँ से कहा था कि वह इस शुक्रवार को होने वाले सेलिब्रेशन में रेनबो राइस केक के साथ *हानबोक* (कोरियाई पारंपरिक कपड़े) पहनना चाहती है। हाहा। केक का ऑर्डर देने के बाद, मेरी पत्नी चर्च के आफ्टर-स्कूल प्रोग्राम से बच्चों को लेने गईं। वहाँ ये-उन ने अपनी माँ का परिचय एक दोस्त से कराते हुए कहा, "ये मेरी माँ हैं।" यह सुनकर मेरे चेहरे पर मुस्कान आ गई, लेकिन साथ ही मुझे यह भी लगा—क्योंकि उसने अपनी माँ का परिचय बस "मेरी माँ" के तौर पर दिया—कि क्या वह अपनी माँ को एक दोस्त की तरह देखती है? हाहा। ये-उन, ये-री और डायलन के बारे में सोचते हुए मुझे एहसास हुआ कि भले ही मैं एक बहुत अच्छा पिता नहीं हूँ, लेकिन खुद परमेश्वर ही इन बच्चों की परवरिश कर रहे हैं।

इन बच्चों के बारे में सोचते हुए—जो परमेश्वर की ओर से हमें मिले उपहार हैं—मुझे अय्यूब की पुस्तक के पहले अध्याय का वह हिस्सा याद आया जिसे मैंने कल रात सोने से पहले पढ़ा था। खासकर, "शायद... उन्होंने अपने मन में परमेश्वर को बुरा-भला कहा हो" (पद 5) वाली बात मेरे मन में आई। जैसा कि हम जानते हैं, अय्यूब एक ऐसे व्यक्ति थे जो "निर्दोष और सीधे थे, जो परमेश्वर का भय मानते थे और बुराई से दूर रहते थे" (पद 1)। फिर भी, इस चिंता में कि कहीं उनके सात बेटों और तीन बेटियों (पद 2) ने कोई पाप न किया हो या अपने मन में परमेश्वर को बुरा-भला न कहा हो, वह अपने बेटों के घरों में दावत के अगले दिन सुबह-सुबह उन सभी के लिए परमेश्वर को होमबलि चढ़ाते थे (पद 5)। यह हिस्सा दिखाता है कि एक पिता के तौर पर अय्यूब को अपने बच्चों के मन की बहुत परवाह थी। जहाँ कोरियाई बाइबिल में इसे इस तरह कहा गया

है कि क्या उनके बच्चों ने अपने मन में परमेश्वर के साथ विश्वासघात किया है, वहीं अंग्रेज़ी अनुवाद बताते हैं कि अय्यूब ने इस चिंता में होमबलि चढ़ाई कि कहीं उनके बच्चों ने अपने मन में परमेश्वर को *बुरा-भला* न कहा हो। कल जब मैं अय्यूब की पुस्तक पढ़ रहा था, तो मैंने देखा कि "बुरा-भला कहना" (curse) शब्द बार-बार आ रहा था। उदाहरण के लिए, अय्यूब 2:9 में—जब शैतान ने अय्यूब को सिर से पैर तक दर्दनाक फोड़ों से पीड़ित कर दिया था (2:7)—तो उसकी पत्नी ने अपने पीड़ित पति को देखकर कहा, "क्या तुम अब भी अपनी सच्चाई पर कायम हो? परमेश्वर को कोसकर मर जाओ!" इस अंश पर विचार करते हुए और अय्यूब की सच्चाई, ईमानदारी और परमेश्वर के प्रति श्रद्धा से उपजी बुराई के प्रति नफ़रत को देखते हुए, मुझे अपने दिल या विचारों में परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने से बचने और अपने मन में चल रही आध्यात्मिक लड़ाई में लगन से शामिल होने की चुनौती महसूस होती है। इस आध्यात्मिक लड़ाई को सफलतापूर्वक लड़ने के लिए, हमें "अपने मन को नया करके बदलना" होगा (रोमियों 12:2)। ऐसा करने के लिए, हमें अपने विचारों को प्रभु के विचारों के अनुरूप बनाने के लिए खुद को प्रशिक्षित करना होगा—इसके लिए उनके वचन पर मनन करना, उनके विचारों को समझना और उन पर गहराई से सोचना ज़रूरी है।

भजन संहिता 92:5 में, भजनकार कहता है: "हे प्रभु, तेरे काम कितने महान हैं! तेरे विचार बहुत गहरे हैं।" "तेरे विचार बहुत गहरे हैं" वाक्यांश पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मुझे उम्मीद है कि मनन का यह समय—प्रभु के गहरे विचारों के एक या दो पहलुओं को समझना—हमें उनके विचारों को समझने और उन पर भरोसा करने में मदद करेगा। हम अपनी सोच को उनके विचारों के अनुरूप बनाएं, ताकि हमें अपने दिलों की रक्षा करने और अपने बदलाव को जारी रखने की शक्ति मिले।

सबसे पहले, आइए दुष्टों के बारे में प्रभु के गहरे विचारों पर विचार करें। संक्षेप में, दुष्टों के बारे में प्रभु के गहरे विचार उनके विनाश के बारे में हैं। हालाँकि दुष्ट घास की तरह उग सकते हैं और बुराई करने वाले फल-फूल सकते हैं, लेकिन अंततः वे हमेशा के लिए नष्ट हो जाएंगे (पद 7)। यह अंश हमें सिखाता है कि हमें दुष्टों की समृद्धि को किस नज़रिए से देखना चाहिए:

(1) यह हमें बताता है कि, जैसा कि हम असल ज़िंदगी में देखते हैं, दुष्ट वास्तव में फलते-फूलते हैं—और वे तेज़ी से ऐसा करते हैं।

इस अंश में, भजनकार दुष्टों की तुलना घास से करता है और बताता है कि वे कैसे "उगते" या बढ़ते हैं। इसका मतलब है कि वे बिना सच्ची मेहनत किए, चालाकी से तेज़ी से सफलता हासिल करते हैं। दूसरे शब्दों में, जबकि दुष्ट धोखेबाज़ी के तरीकों से बिना कड़ी मेहनत के तेज़ी से सफल हो सकते हैं, ऐसी सफलता परमेश्वर द्वारा आशीष प्राप्त सच्ची सफलता नहीं होती (पार्क युन-सन)। (2) बुरे लोगों की समृद्धि जंगली घास के तेज़ी से बढ़ने जैसी लग सकती है, लेकिन मुख्य बात यह है कि इसमें कोई फल नहीं लगता।

कहने का मतलब है कि अपनी तरक्की के बीच भी, बुरे लोग परमेश्वर की नज़र में कोई फल नहीं दे पाते। बिना फल वाली घास जैसी समृद्धि—बाइबल में बुरे लोगों की यही तस्वीर दिखाई गई है।

(3) इसका मतलब है कि बुरे लोगों की तेज़ी से बढ़ती समृद्धि उन्हें केवल हमेशा के विनाश की ओर ले जाती है।

जैसे कसाईखाने ले जाने से पहले सुअर को अच्छी तरह खिला-पिलाकर मोटा किया जाता है, वैसे ही बुरे लोगों की समृद्धि उनके अंतिम, हमेशा के विनाश का कारण बनती है। इस आयत में बताई गई बुरे लोगों की समृद्धि के बारे में डी. एल. मूडी ने कहा था: "बुरे लोग घास की तरह बढ़ते हैं, ताकि वे बस ईंधन बन सकें।"

एक बार भजन संहिता 73 पर मनन करते समय मुझे परमेश्वर से "बुरे लोगों की समृद्धि और नेक लोगों के दुख" के बारे में एक सीख मिली। बुरे लोगों की समृद्धि के बारे में, पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि भले ही वे बाहर से "घास की तरह उगते" और "फलते-फूलते" दिखें, लेकिन उनका अंतिम अंत हमेशा का विनाश है (नीतिवचन 20:21)। जब बुरे लोग तेज़ी से सफलता या समृद्धि पाते हैं, तो हमें उनसे ईर्ष्या या जलन नहीं करनी चाहिए (भजन संहिता 73:3)। ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है क्योंकि जिस तेज़ी से वे सफलता की ओर बढ़ते हैं, उसी तेज़ी से उनका विनाश भी होगा। भजन संहिता 73:18–20 पर विचार करें: "सचमुच तूने उन्हें फिसलन वाली जगहों पर खड़ा किया है; तूने उन्हें विनाश की ओर गिरा दिया है। ओह, वे एक पल में कैसे बर्बादी का शिकार हो जाते हैं! वे पूरी तरह से डर से घिर जाते हैं! जैसे जागने पर सपना गायब हो जाता है, वैसे ही, हे प्रभु, जब तू जागेगा, तो तू उनकी छवि को तुच्छ समझेगा।" बुरे लोग उतनी ही तेज़ी से—या उससे भी ज़्यादा तेज़ी से—बर्बाद होंगे जितनी तेज़ी से उन्होंने सफलता पाई थी। वे एक पल में अचानक तबाह और

नष्ट हो जाएंगे, और जागने पर सपने की तरह गायब हो जाएंगे। आज का वचन, भजन संहिता 92:9, कहता है: "क्योंकि देख, हे प्रभु, तेरे दुश्मन—क्योंकि देख, तेरे दुश्मन नष्ट हो जाएंगे; बुराई करने वाले सभी लोग तितर-बितर हो जाएंगे।" बुरे लोग—जो बुराई करते हैं—वे परमेश्वर के दुश्मन हैं; वे नष्ट हो जाएंगे और तितर-बितर हो जाएंगे। इसलिए, जब हम अपने दुश्मनों को सफल और समृद्ध होते देखते हैं, तो हमें उनसे जलन या नाराज़गी नहीं होनी चाहिए। इसके अलावा, भले ही बुरे लोग और दुष्ट, परमेश्वर की कलीसिया पर ज़ुल्म करते हुए कुछ समय के लिए जीतते हुए दिखें, फिर भी हमें विश्वास में मज़बूत और अडिग रहना चाहिए। हमें यह विश्वास रखना चाहिए कि परमेश्वर आखिरकार उनका न्याय करेगा और उन्हें नष्ट कर देगा (वचन 11; पार्क युन-सन)।

इस अंश पर विचार करते हुए, मैंने प्रभु के गहरे विचारों पर—बहुत ही विनम्रता से—सोचा। मैंने खुद से यह सवाल पूछा: "परमेश्वर बुरे लोगों को फलने-फूलने और समृद्ध होने की इजाज़त क्यों देता है, भले ही कुछ समय के लिए ही सही?" मैंने इसके पीछे परमेश्वर के मकसद पर गौर किया। वह मकसद हम जैसे परमेश्वर के बच्चों की भलाई के लिए है। दूसरे शब्दों में, बुरे लोगों की कुछ समय की समृद्धि, तरक्की और फलना-फूलना असल में हमारे फायदे के लिए है। नीतिवचन 13:22 के आखिरी हिस्से को देखिए: "...पापी की संपत्ति धर्मी के लिए जमा की जाती है।" इस वचन के आधार पर, बाइबल हमें बताती है कि बुरे लोगों की तरक्की और समृद्धि—जैसे कि उनकी संपत्ति—हमारे लिए है। यही परमेश्वर का गहरा मकसद है। जब हम प्रभु के इस गहरे मकसद को समझते हैं, तो हमें एहसास होता है कि बुरे लोगों की तरक्की, समृद्धि या सफलता से जलन या ईर्ष्या करने की कोई ज़रूरत नहीं है। इसके अलावा, मेरा मानना है कि प्रभु बुरे लोगों को समृद्ध होने की इजाज़त इसलिए देते हैं ताकि उसी समृद्धि के ज़रिए हमारी परीक्षा ले सकें। वह परीक्षा यह परखती है कि क्या धर्मी लोग, बुरे लोगों की समृद्धि को देखकर—अपनी खुद की तकलीफों के बीच भी—पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा और निर्भर रहेंगे और भजन संहिता 73:25 के इन शब्दों को कहेंगे: "स्वर्ग में मेरा कौन है सिवाय तेरे? और पृथ्वी पर तेरे अलावा मेरी कोई और चाहत नहीं है।"

दूसरी और आखिरी बात, मैं नेक लोगों के बारे में प्रभु के गहरे विचारों पर बात करना चाहूँगा।

जब बुरे लोग फलते-फूलते हैं (भजन संहिता 92:7) और नेक लोगों को उनके दुश्मनों—यानी बुरे काम करने वालों (पद 11)—के हाथों सताया जाता है, तो हम अक्सर सोचते हैं कि परमेश्वर, जो हमसे प्यार करते हैं, हमें ऐसा अन्यायपूर्ण उत्पीड़न और दुख क्यों सहने देते हैं। फिर भी, हमें यह याद रखना चाहिए कि उस दुख के बीच भी प्रभु का गहरा विचार—उनका मकसद—छिपा होता है। आज का वचन, भजन संहिता 92, प्रभु के इस गहरे विचार के तीन पहलुओं को उजागर करता है।

(1) प्रभु का गहरा विचार यह है कि जब हम दुख सहते हैं, तो वे अपने महान कार्यों—खासकर, एक बड़े उद्धार—की योजना बनाते हैं और उन्हें पूरा करते हैं।

भजन संहिता 92 के पद 5 को देखें: "हे यहोवा, तेरे काम कितने महान हैं! तेरे विचार कितने गहरे हैं!" यहाँ भजनकार द्वारा बताए गए प्रभु के "महान कार्यों" का मतलब असल में "उद्धार" है। दूसरे शब्दों में, हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर ही वह हैं जो बुरे लोगों की समृद्धि और नेक लोगों के दुख के बीच, बुरे लोगों का नाश करते हैं और नेक लोगों को बचाते हैं (उद्धार करते हैं)। हमें बचाने के इस काम के ज़रिए, प्रभु का गहरा मकसद हमें अपनी महानता, अपनी महिमा और उद्धारकर्ता के रूप में अपनी पहचान दिखाना है—संक्षेप में, परमेश्वर के रूप में अपने स्वभाव को प्रकट करना है।
(2) प्रभु का गहरा विचार हमें उद्धार का अनुग्रह देना है, ताकि हम खुशी से भर जाएँ और उनकी स्तुति करें।

भजन संहिता 92 के पद 4 के पहले हिस्से को देखें: "क्योंकि हे यहोवा, तूने मुझे अपने काम से खुश किया है..." उद्धार के अपने महान काम के ज़रिए, परमेश्वर हमें उद्धार की खुशी देते हैं (भजन संहिता 51:12)। नतीजतन, प्रभु हमें उस खुशी से उपजे धन्यवाद के साथ परमेश्वर की स्तुति करने के लिए प्रेरित करते हैं। इसलिए, आज के भजन 92:1–4 में भजनकार कहता है: “हे परमप्रधान, यहोवा का धन्यवाद करना और तेरे नाम का भजन गाना भला है; भोर को तेरी करुणा और रात को तेरी सच्चाई का वर्णन करना, दस-तारों वाली वीणा और सारंगी के साथ, और लयबद्ध संगीत के साथ। क्योंकि हे यहोवा, तूने अपने कामों से मुझे आनन्दित किया है; मैं तेरे हाथों के कामों के कारण आनन्द से गाऊंगा।”

(3) प्रभु का गहरा मकसद यह है कि हम परमेश्वर के आँगन में फलें-फूलें।

आज के भजन 92:13 को देखें: “जो यहोवा के भवन में लगाए गए हैं, वे हमारे परमेश्वर के आँगन में फलेंगे-फूलेंगे।” “यहोवा के भवन में लगाए गए” वाक्यांश मसीह के साथ हमारे जुड़ाव को दिखाने वाला एक रूपक है (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, यह बताता है कि कैसे हम, यीशु मसीह से जुड़े होने के कारण, स्वर्ग के राज्य—जो परमेश्वर का अपना आँगन है—में हमेशा फलेंगे-फूलेंगे। यह एक वादा है कि भले ही बुरे लोग इस धरती पर कुछ समय के लिए फलें-फूलें, लेकिन धर्मी लोग स्वर्ग में हमेशा फलेंगे-फूलेंगे। हम परमेश्वर के आँगन में “खजूर के पेड़ की तरह फलेंगे-फूलेंगे और लबानोन के देवदार की तरह बढ़ेंगे” (पद 12)। यानी, शानदार और कभी न नष्ट होने वाले शरीरों में, हम मसीह की सुगंध फैलाते हुए परमेश्वर के आँगन में हमेशा रहेंगे। इसके अलावा, बुरे लोगों के फलहीन होने के विपरीत, धर्मी लोग “बुढ़ापे में भी फल देंगे; वे ताज़े और हरे-भरे रहेंगे” (पद 14)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर धर्मियों से फल लगवाएंगे और उन्हें जीवन-शक्ति से भरपूर रखेंगे (पार्क युन-सन)। हमारे प्रति प्रभु का यही गहरा विचार है। परमेश्वर हमसे ऐसे वादे क्यों करते हैं? इसलिए क्योंकि प्रभु हमसे प्रेम करते हैं और हमें बहुत मानते हैं। आज के वचन, भजन 92:10 को देखें: “परन्तु तूने मेरे सींग को जंगली बैल के सींग के समान ऊँचा किया है; मुझ पर ताज़ा तेल मला गया है।” “ताज़ा तेल मला जाना” वाक्यांश यहूदियों के उस रिवाज की ओर इशारा करता है जिसमें किसी खास मेहमान का सम्मान करने के लिए उन पर तेल मला जाता था; यह दिखाता है कि परमेश्वर जिनसे प्रेम करते हैं, उनके साथ सम्मानित मेहमानों जैसा व्यवहार करते हैं (पार्क युन-सन)। इस तरह, परमेश्वर हमें अपने दरबार—यानी स्वर्ग—में स्वागत करेंगे और सम्मानित मेहमानों जैसा बर्ताव करेंगे, और हमें वहाँ हमेशा प्रभु के साथ रहने का मौका देंगे।

हम भला प्रभु के विचारों की गहराई को कैसे पूरी तरह समझ सकते हैं? फिर भी, एक बात पक्की है: प्रभु लगातार हमारे बारे में सोचते रहते हैं। भजनकार कहते हैं: "हे परमेश्वर, मेरे लिए तेरे विचार कितने अनमोल हैं! उनकी गिनती कितनी बड़ी है! अगर मैं उन्हें गिनने बैठूँ, तो वे रेत के कणों से भी ज़्यादा होंगे; जब मैं जागता हूँ, तो भी मैं तेरे साथ ही होता हूँ" (139:17–18)। हालाँकि हम प्रभु के हमारे लिए अनगिनत और गहरे

विचारों को पूरी तरह नहीं समझ सकते, फिर भी हमें इस भरोसे और यकीन के साथ जीना चाहिए कि—भले ही हम इस दुनिया में थोड़ी देर के लिए दुख सहें—हम उनके दरबार में हमेशा फलेंगे-फूलेंगे, खुशी मनाएँगे, धन्यवाद देंगे और उनके उद्धार की कृपा से प्रभु की स्तुति करेंगे।

आइए हम भगवान को धन्यवाद देते हुए उनकी तारीफ़ करें।

“हे सबसे ऊँचे, प्रभु का धन्यवाद करना, तेरे नाम की तारीफ़ करना अच्छा है; सुबह तेरी दया और हर रात तेरी वफ़ादारी का ऐलान करना, दस तारों वाले साज़ और वीणा पर सुरीली आवाज़ के साथ” (भजन 92:1–3)।

अपनी किताब *द चर्च अवेकनिंग* में, पादरी चार्ल्स स्विंडोल हमसे खुद को पूजा के लिए कमिट करने की गुज़ारिश करते हैं। वह देखते हैं कि, पूजा के लिए कमिटेड होने के बजाय, चर्च अभी इस पर एक "जंग" में लगा हुआ है; वह इस झगड़े का कारण यह मानते हैं कि हम पूजा के *असल* के बजाय उसके *एक्सप्रेशन* पर ध्यान देते हैं। चर्च के अंदर, कुछ लोग पारंपरिक भजन गाने पर ज़ोर देते हैं, जबकि दूसरे तर्क देते हैं कि गॉस्पेल गाने ठीक हैं। इसी तरह, कुछ लोग पूजा में ड्रम के इस्तेमाल की वकालत करते हैं, जबकि दूसरे इसका कड़ा विरोध करते हैं। ये अलग-अलग नज़रिए आखिरकार राय के टकराव में बदल जाते हैं, जिससे अंदरूनी लड़ाई होती है। पादरी स्विंडोल बताते हैं कि, आखिर में, यह सिर्फ़ लोगों की अपनी निजी *पसंद* बताने के अलावा और कुछ नहीं है। वह ईसाइयों से कहते हैं कि वे पूजा के सार को प्राथमिकता दें और उसके लिए समर्पित रहें। दूसरे शब्दों में, हमें "सिखाना," "मेलजोल," "रोटी तोड़ना," और "प्रार्थना" (प्रेरितों के काम 2:42) के बाइबिल के तरीकों के प्रति अपने कमिटमेंट में पक्के रहना चाहिए। मैं पर्सनली पादरी स्विंडोल से सहमत हूँ। मुझे पूजा के सार और उसे दिखाने के बीच का उनका फ़र्क खास तौर पर समझदारी भरा लगा, और मैं उनके इस विचार से पूरी तरह सहमत हूँ कि पूजा का दिखावा उसके सार से अपने आप निकलना चाहिए। साथ ही, मेरा मानना है कि यह पहचानना बहुत ज़रूरी है - जैसा कि कैल्विन ने कहा था - कि भगवान जिन सच्चे भक्तों को चाहते हैं (जॉन 4:23) के तौर पर स्थापित होने के लिए, हमें भगवान को

जानकर खुद को जानना होगा। हमें सच्चाई के वचन के ज़रिए भगवान को जानना होगा। जब पवित्र आत्मा हमें उनके वचन के ज़रिए भगवान के असली रूप को समझने में मदद करती है, तो हम ज़रूर खुद को समझने लगते हैं। तभी हम विनम्रता से झुक सकते हैं और सच्चे उपासक के तौर पर स्थापित हो सकते हैं जो परमेश्वर की तारीफ़ और महिमा करते हैं।

आज भजन 92 के हिस्से में—जो "सब्त के दिन के लिए भजन" है—भजन लिखने वाला कहता है कि परमेश्वर को धन्यवाद देना और प्रभु के नाम की तारीफ़ करना अच्छा है। वह सुबह प्रभु के पक्के प्यार और रात में उनकी वफ़ादारी का ऐलान करने की अच्छाई को भी पक्का करता है। ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रभु ने, अपने पक्के प्यार और वफ़ादारी से, भजन लिखने वाले को अपने कामों से खुश किया है (पद 4)। इसलिए, भजन लिखने वाले ने प्रभु के हाथों से जो कुछ हुआ था, उसकी वजह से खुशी से गाया (पद 4)। उसने खुशी और शुक्रगुज़ारी के साथ प्रभु की तारीफ़ की क्योंकि उसने परमेश्वर के किए महान कामों के बारे में सोचा (पद 5)। खास तौर पर, उसने परमेश्वर के गहरे विचारों से प्रेरित होकर, शुक्रिया और खुशी के साथ तारीफ़ की (पद 5)। उसने इतने शुक्रगुज़ार और खुशी के साथ प्रभु की तारीफ़ की क्योंकि वह प्रभु के गहरे विचारों को समझ गया था—ऐसे विचार जिन्हें बेवकूफ़ और अनजान लोग कभी नहीं समझ सकते (पद 6)।

तो, प्रभु के ये गहरे विचार क्या थे जिन्हें भजन लिखने वाले ने समझा? शॉर्ट में कहें तो: परमेश्वर उन दुष्टों को हमेशा के लिए खत्म कर देता है जो कामयाब होते दिखते हैं (पद 9–11), जबकि दुख झेलने वाले नेक लोगों को फलने-फूलने देता है (पद 12–14)। शॉर्ट में, प्रभु का गहरा मकसद दुष्टों का इंसाफ़ करना और नेक लोगों को बचाना है। परमेश्वर ज़रूर "दुष्टों" (पद 7) का इंसाफ़ करेगा—जो "प्रभु के दुश्मन" हैं (पद 9)। भले ही दुष्ट लोग बिना ज़्यादा मेहनत के चालाकी से जल्दी कामयाबी पा लेते दिखें, लेकिन असल में, यह किसी भी तरह से परमेश्वर की दी हुई सच्ची कामयाबी नहीं है। इंसानी नज़रों में, उनकी खुशहाली जंगली घास की हरी-भरी बढ़त जैसी हो सकती है, लेकिन ज़रूरी बात यह है कि वे परमेश्वर का बनाया कोई फल नहीं देते। भले ही वे दुनिया की नज़रों में फलते-फूलते दिखें, लेकिन बुरे लोगों की खुशहाली—जो भगवान की नज़र में कोई फल नहीं देते—आखिरकार हमेशा के लिए बर्बादी की ओर ले जाएगी (पद 7)। इस दुनिया में बुरे लोगों की खुशहाली उन्हें हमेशा के लिए बर्बादी की ओर ले जाती है। भगवान के दुश्मन जो बुराई करते हैं, वे ज़रूर

गिरेंगे (पद 9)। भगवान बुरे काम करने वालों को सज़ा देंगे (पद 11)। लेकिन, नेक लोग बच जाएंगे। भगवान हमें ज़रूर बचाएंगे, जिन्हें यीशु में विश्वास के ज़रिए सही ठहराया गया है। वह ज़रूर हमें बढ़ने, फलने-फूलने और फल देने में मदद करेंगे (पद 12–13)। इसके अलावा, वह हमें बुढ़ापे में भी फल देते रहने में मदद करेंगे (पद 14)। इसलिए, भगवान न सिर्फ़ हमें शुक्रगुज़ारी और खुशी के साथ उनकी तारीफ़ करने के लिए उकसाएंगे, बल्कि वह हमें यह ऐलान करने के लिए भी उकसाएंगे कि वह सीधे हैं, कि वह हमारी चट्टान हैं, और उनमें कोई बुराई नहीं है (पद 15)।

हमें बुरे लोगों की कामयाबी को किस नज़रिए से देखना चाहिए?

"भले ही बुरे लोग घास की तरह उगते हैं और सभी बुरे काम करने वाले फलते-फूलते हैं, लेकिन वे हमेशा के लिए नष्ट हो जाएँगे" (भजन संहिता 92:7)।

स्वर्ग जाने से कुछ हफ़्ते पहले, एक बुज़ुर्ग ने मुझसे पूछा, "बुरे लोग कामयाब क्यों होते हैं जबकि नेक लोगों को दुख उठाना पड़ता है?" उनके सोच-विचार वाले स्वभाव को देखते हुए, मुझे लगता है कि उन्होंने शायद जीवन भर इस सवाल पर सोचा होगा—या कम से कम, अपनी सांसारिक यात्रा के आखिरी पड़ाव पर पहुँचते हुए, वे निश्चित रूप से इस मुद्दे को लेकर बहुत उलझन में थे। क्या आप भी ऐसा ही सोचते हैं? क्या आपने कभी सच में इस बात पर गौर किया है कि ईसाई होने के नाते, हमें नेक लोगों के दुख और बुरे लोगों की कामयाबी को किस नज़रिए से देखना चाहिए? हमने अक्सर ये दिलासा देने वाली बातें सुनी हैं कि नेक लोगों का दुख हमें यीशु के दुखों में शामिल होने का मौका देता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हमें बुरे लोगों की कामयाबी को कैसे स्वीकार करना चाहिए?

भजन संहिता 92:7 इस मामले पर हमें परमेश्वर का नज़रिया बताती है। हम तीन मुख्य बातों पर विचार कर सकते हैं:

(1) बुरे लोग फलते-फूलते हैं—और सच में, तेज़ी से फलते-फूलते हैं—जैसा कि हम असल ज़िंदगी में देखते हैं।

इस हिस्से में, भजनकार बुरे लोगों की तुलना घास से करते हैं और कहते हैं कि वे "उगते" हैं। इसका मतलब है कि वे तेज़ी से कामयाबी हासिल करते हैं, अक्सर ईमानदारी से मेहनत करने के बजाय चालाकी से। कुछ समय पहले, मैंने और मेरी पत्नी ने अपने घर के पिछवाड़े में घास के कुछ हिस्से सूखते हुए देखे; हमने उन्हें ठीक करने की कोशिश की, उस जगह पर पानी डाला और नए बीज बोए। अब, हम वहाँ घनी हरी घास तेज़ी से उगती हुई देख रहे हैं। ऐसा लगता है कि भजनकार बुरे लोगों की कामयाबी का वर्णन ठीक इसी तरह कर रहे हैं—ऐसी चीज़ जो घास की तरह तेज़ी से उगती है। (2) बुरे लोगों की कामयाबी जंगली घास की घनी बढ़त जैसी लग सकती है, लेकिन अहम बात यह है कि इसमें कोई फल नहीं लगता।

दूसरे शब्दों में, फलते-फूलते हुए भी, बुरे लोग परमेश्वर की नज़र में कोई फल नहीं दे पाते। बुरे लोगों की कामयाबी—जिसकी तुलना बिना फल वाली घास से की गई है—ठीक वैसी ही तस्वीर है जैसी बाइबल उनके बारे में दिखाती है।

(3) बुरे लोगों की तेज़ी से मिलने वाली कामयाबी आखिरकार उन्हें हमेशा के विनाश के लिए तैयार करती है।

ठीक वैसे ही जैसे कसाईखाने ले जाने से पहले सूअर को अच्छा खाना खिलाकर मोटा किया जाता है, बुरे लोगों की कामयाबी का अंजाम भी हमेशा का विनाश ही होता है। इस हिस्से में बुरे लोगों की कामयाबी के बारे में जो बताया गया है, उसके बारे में पादरी डी. एल. मूडी ने कहा: "बुरे लोग घास की तरह बढ़ते हैं, लेकिन आखिर में वे ईंधन ही बनते हैं।"

आज हम अपनी ज़िंदगी में बुरे लोगों को कामयाब होते देखते हैं। उनकी कामयाबी देखकर यह खतरा बना रहता है कि हम अपनी ज़िंदगी की तुलना उनसे करने लगें और बहुत परेशान हो जाएँ। ऐसे समय में, हमें बुरे लोगों को भजन 92:7 के नज़रिए से देखना चाहिए—यानी उन्हें वैसे ही देखना चाहिए जैसे परमेश्वर उन्हें देखते हैं। ठीक वैसे ही जैसे भजन रचने वाले ने आयत 11 में कहा था, "मेरी आँखों ने मेरे दुश्मनों की हार देखी है; मेरे कानों ने उन बुरे लोगों का विनाश सुना है जो मेरे खिलाफ़ उठे थे," हमें भी परमेश्वर के वचन के ज़रिए बुरे लोगों पर परमेश्वर का न्याय देखना और सुनना चाहिए। जब हम यह समझ जाएँगे और मान लेंगे

कि उनका आखिरी अंजाम हमेशा के लिए विनाश है, तो हम उनसे जलन नहीं करेंगे, और न ही हम "बुरे लोगों की कामयाबी बनाम नेक लोगों की तकलीफ़" वाली उलझन से परेशान होंगे।

“प्रभु का राज है”

[भजन संहिता 93]

हमारे परमेश्वर ने पूरी प्रकृति की रचना की है और वे उस पर राज करते हैं (भजन संहिता 8:1, 3, 6)। दूसरे शब्दों में, उन्होंने मानवता की रचना की और वे उस पर शासन करते हैं; वे लोगों के जीवन, मृत्यु, सौभाग्य और दुर्भाग्य को अपनी सर्वोच्च इच्छा से नियंत्रित करते हैं। परमेश्वर ने न केवल ब्रह्मांड की रचना की, बल्कि वे इसे चलाते और बनाए भी रखते हैं, और इतिहास को आगे बढ़ाते हैं; वे ही परमेश्वर हैं जो पूरी सृष्टि पर राज करते हैं (भजन संहिता 103:19)। तो फिर, हम—जो परमेश्वर की सर्वोच्च इच्छा और शासन पर भरोसा करने वाले विश्वासी हैं—जीवन की विभिन्न दर्दनाक परीक्षाओं का सामना करते समय कैसा व्यवहार करें? रोमियों 8:28 के आधार पर, यदि हम मानते हैं कि सब कुछ परमेश्वर की स्वतंत्र इच्छा और सर्वोच्च शासन से होता है, तो हमें अडिग और आश्वस्त रहना चाहिए कि अंततः, सब कुछ भलाई के लिए ही होता है। एक विश्वासी—जिसे परमेश्वर ने चुना और बचाया है और जो उनके शासन में जी रहा है—उन्हें उनके साथ अपना रिश्ता कैसे बनाए रखना चाहिए? भजन संहिता 23:1–6 के आधार पर, हमें चरवाहे और उसकी भेड़ों जैसा रिश्ता बनाए रखना चाहिए। जब भेड़ें चरवाहे का अनुसरण करती हैं और उसकी बात मानती हैं, तो वह उन्हें हरे-भरे चरागाहों और शांत जल के पास ले जाता है। अच्छे चरवाहे के पीछे चलने का यह सफर हमारे पूरे जीवन भर जारी रहना चाहिए, जो हमें हमेशा के लिए प्रभु के घर में रहने की ओर ले जाएगा। इस प्रकार, हम भजन संहिता 103:22 के वचनों को मानने के लिए प्रेरित होते हैं: “हे प्रभु, उसके सारे कामों, उसके पूरे राज्य में उसकी स्तुति करो” (इंटरनेट)।

आज का वचन, भजन संहिता 93:1, घोषणा करता है: “प्रभु का राज है, उसने महिमा का वस्त्र पहना है; प्रभु ने महिमा का वस्त्र पहना है और शक्ति से सुसज्जित है; सचमुच, दुनिया स्थापित है, दृढ़ और सुरक्षित है।”

आज, इस अंश और "प्रभु का राज है" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं परमेश्वर के शासन के तीन पहलुओं पर मनन करने से मिलने वाली कृपा प्राप्त करना चाहता हूँ।

परमेश्वर के शासन का पहला पहलू है "परमेश्वर का अधिकार।"

भजन संहिता 93:1 के पहले भाग को देखें: "प्रभु का राज है; उसने महिमा का वस्त्र पहना है..." यहाँ जिस "अधिकार" से परमेश्वर ने स्वयं को सुसज्जित किया है, वह ब्रह्मांड के शासक की महिमा और प्रताप को दर्शाता है (पार्क युन-सन)। हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम परमेश्वर के इस अधिकार के अधीन रहें। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के अधिकारपूर्ण वचन को मानना हम दोनों की ज़िम्मेदारी है। हमें परमेश्वर के अधिकार पर सवाल नहीं उठाना चाहिए, क्योंकि वह सर्वोच्च है। परमेश्वर की संतान होने के नाते, जो उसके सर्वोच्च अधिकार को मानते हैं, हमारा फ़र्ज़ है कि हम उसके अधिकारपूर्ण वचन को सुनें और मानें। हम परमेश्वर के अधिकार को कैसे दिखा सकते हैं? उदाहरण के लिए, परिवार का मुखिया परमेश्वर के अधिकारपूर्ण वचन को मानकर और उसका पालन करके परिवार में परमेश्वर के अधिकार को दिखाता है। इसी तरह, एक पादरी कलीसिया में परमेश्वर के अधिकार को तब दिखाता है जब वह खुद परमेश्वर के वचन को मानता है। हालाँकि, अगर मैं दिखावटी ज़िंदगी जीऊँ—सिर्फ़ परमेश्वर के वचन का प्रचार करूँ और उसे मानने की कोई कोशिश न करूँ—तो मैं परमेश्वर के अधिकार को नहीं दिखा रहा होऊँगा; बल्कि, मैं एक ऐसा तानाशाह पादरी बन जाऊँगा जो उस अधिकार का गलत इस्तेमाल करता है। इसी तरह, घर में, अगर मैं मुँह से तो पवित्र शास्त्र की बातें करूँ लेकिन खुद परमेश्वर के अधिकारपूर्ण वचन को न मानूँ या उसका पालन न करूँ, तो मैं एक तानाशाह पति और पिता बन जाता हूँ। हम ईसाइयों—परमेश्वर की संतानों—के लिए इस दुनिया में परमेश्वर के अधिकार को दिखाने का तरीका यह है कि हम उसके अधिकारपूर्ण वचन को मानते हुए जीवन जिएँ। हमें अपने जीवन के ज़रिए परमेश्वर के अधिकार को दिखाना चाहिए और उसके वचन—खासकर यीशु की दो आज्ञाओं: परमेश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसियों से प्रेम करना—को अमल में लाना चाहिए।

परमेश्वर के शासन का दूसरा पहलू है "परमेश्वर की शक्ति।"

भजन संहिता 93:1 (बाद का हिस्सा) और आयत 4 पर गौर करें: "...प्रभु ने शक्ति धारण की है और कमर कसी है; दुनिया स्थापित है, मज़बूत और अटल है," और "ऊपर प्रभु की शक्ति बहुत से जल-प्रवाहों की गर्जना और समुद्र की प्रचंड लहरों से भी अधिक शक्तिशाली है।" यहाँ, "शक्ति" का अर्थ है "बनाई गई दुनिया को बनाए रखने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली प्राकृतिक या अलौकिक ताकत" (पार्क युन-सन)। हम परमेश्वर के इस गुण को "परमेश्वर की सर्वशक्तिमानता" कहते हैं। यह गुण उस असीम शक्ति को दर्शाता है जिससे वह जो चाहे कर सकता है। उदाहरण के लिए, हम प्राकृतिक दुनिया में परमेश्वर की सर्वशक्तिमानता देख सकते हैं—खासकर उसकी रचना करने वाली शक्ति में, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी को अस्तित्व में लाया (उत्पत्ति 1:1; इब्रानियों 11:3) और उस शक्ति में जिससे वह बनाई गई पूरी सृष्टि को बनाए रखता है (कुलुस्सियों 1:17)। हम आध्यात्मिक दुनिया में भी परमेश्वर की सर्वशक्तिमानता देख सकते हैं; यह न केवल उनके पवित्र स्वर्गदूतों पर नियंत्रण (दानिय्येल 4:35) तक फैली हुई है, बल्कि शैतान और बुरी आत्माओं पर भी उनका अधिकार है (अय्यूब 1:12)। इसलिए, भजनकार कहता है, "ऊँचे स्थान पर प्रभु की शक्ति बहुत से जल के गर्जन और समुद्र की प्रचंड लहरों से भी अधिक महान है" (भजन संहिता 93:4)। तो फिर, परमेश्वर की यह शक्ति हमारे जीवन में कैसे प्रकट हो सकती है? हमें इसका उत्तर 2 कुरिन्थियों 12:9 में मिलता है: "परन्तु उसने मुझसे कहा, 'मेरा अनुग्रह तेरे लिए पर्याप्त है, क्योंकि मेरी शक्ति कमजोरी में ही सिद्ध होती है।' इसलिए मैं अपनी कमजोरियों पर और भी खुशी से गर्व करूँगा, ताकि मसीह की शक्ति मुझ पर बनी रहे।" परमेश्वर की शक्ति हमारी कमजोरियों के माध्यम से प्रकट होती है। इसलिए, प्रेरित पौलुस की तरह, हमें अपनी कमजोरियों पर गर्व करना चाहिए। परमेश्वर ही कमजोरों को—जैसे आप और मैं—चुनते हैं ताकि ताकतवरों को शर्मिंदा किया जा सके (1 कुरिन्थियों 1:27)। जब हमारी कमजोरियों के माध्यम से परमेश्वर की शक्ति प्रकट होती है, तो हम दृढ़ और अडिग खड़े रहेंगे। भजनकार कहता है कि परमेश्वर की शक्ति के कारण, "संसार स्थापित है; यह कभी नहीं हिलेगा" (भजन संहिता 93:1)। क्योंकि परमेश्वर अपनी शक्ति से शासन करते हैं, इसलिए संसार दृढ़ और अडिग खड़ा है। यदि परमेश्वर हम पर शासन करते हैं, तो हम भी दृढ़ और अडिग खड़े रहेंगे (पद 1-2)। यदि परमेश्वर अपनी शक्ति से हमारे परिवारों और हमारी कलीसियाओं पर शासन करते हैं, तो वे दृढ़ और अडिग खड़े रहेंगे।

परमेश्वर के शासन का तीसरा पहलू है "परमेश्वर की पवित्रता।"

भजन संहिता 93:5 को देखें: "तेरी गवाहियाँ बहुत पक्की हैं; हे प्रभु, तेरे भवन के लिए पवित्रता सदा शोभा देती है।" परमेश्वर अपने अधिकार और शक्ति से पूरे ब्रह्मांड पर शासन करते हैं। इसके अलावा, वे अपनी धार्मिकता से इस संसार का शासन करके अपनी पवित्रता प्रकट करते हैं। परमेश्वर पिता पवित्र हैं। उनका अधिकार एक पवित्र अधिकार है, और उनकी शक्ति एक पवित्र शक्ति है। अंततः, त्रिएक परमेश्वर अपने अधिकार और शक्ति के माध्यम से अपनी पवित्रता प्रकट करते हैं। तो फिर, हम परमेश्वर की इस पवित्रता को कैसे प्रकट कर सकते हैं? इसका जवाब हमें 1 पतरस 1:16 में मिलता है: "क्योंकि लिखा है: 'पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।'" खुद पवित्रता में जीकर, हम इस अपवित्र दुनिया में परमेश्वर की पवित्रता को दिखा सकते हैं। इसलिए, हमें परमेश्वर की पवित्रता को पाने की कोशिश करनी चाहिए। इसे पाने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के प्रति वफादार रहना होगा, पवित्र आत्मा के पवित्र करने वाले काम की दिल से चाहत रखनी होगी, और सच्चाई के वचन को मानने की कोशिश करनी होगी—जो हमारी ज़िम्मेदारी है।

एक अमेरिकी गॉस्पेल गाना है जिसका नाम है "Ruler over My Soul" (मेरी आत्मा का शासक)। आज के संदेश पर मनन करते समय मुझे वह गाना याद आया, और मैंने उसे परमेश्वर के सामने एक प्रार्थना के तौर पर गाया। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर मेरी आत्मा पर राज करे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु मेरे परिवार पर राज करे। और मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु हमारे विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च पर राज करे। ऐसा करते हुए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर का अधिकार, शक्ति और पवित्रता प्रकट हो।

बदला लेने वाले परमेश्वर

[भजन संहिता 94]

पिछले शनिवार, एज्रा अध्याय 9 पर आधारित उपदेश देने के बाद, मैंने इस विषय पर और मनन किया: "हे परमेश्वर, आप तो निशब्द हो गए होंगे, है ना?" जब मैंने एज्रा के बारे में सोचा—जो शर्म के मारे परमेश्वर के सामने अपना चेहरा उठाने में असमर्थ होकर स्तब्ध और मौन बैठा था—तो मुझे एहसास हुआ कि एक मसीही और पास्टर के तौर पर मुझे भी शर्म महसूस होनी चाहिए। मुझे यह स्वीकार करना पड़ा कि मुझमें और इस्राएल के उन लोगों में बहुत कम अंतर था, जिन्होंने परमेश्वर की कृपा को भुला दिया था और एक बार फिर उनकी आज्ञाओं का उल्लंघन किया था। जैसे इस्राएल के नेताओं ने परमेश्वर के वचन को तोड़ने में पहल की थी, वैसे ही मैंने एक कलीसियाई नेता के तौर पर अपने पाप पर विचार किया—कि कैसे मैं भी परमेश्वर के वचन की अवज्ञा करने में सबसे आगे रहा था। एक वफादार जीवन जीने और सही रास्ते पर चलने के दृढ़ संकल्प के साथ, मैंने आज के वचन, भजन संहिता 94 पर मनन करना शुरू किया।

भजन संहिता 94:1 कहता है: "हे यहोवा, बदला लेने वाले परमेश्वर, हे बदला लेने वाले परमेश्वर, प्रकट हो।" यहाँ "बदला लेने" (repay) शब्द का अर्थ दो तरह से निकाला जा सकता है: दुष्टों के लिए "दंड" के रूप में या धर्मी लोगों के लिए "सुधारात्मक दंड" (chastisement) के रूप में। भजन संहिता 94 और "बदला लेने वाले परमेश्वर" विषय पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन शिक्षाओं को जानना चाहता हूँ जो परमेश्वर हमें यह बताते हुए देते हैं कि वे दुष्टों और अपने धर्मी लोगों को कैसे प्रतिफल देते हैं।

पहला, हमारे बदला लेने वाले परमेश्वर वे हैं जो दुष्टों को दंड देते हैं।

भजन संहिता 94:2 को देखें: "हे पृथ्वी के न्यायकर्ता, उठ; घमंडी लोगों को उनके कर्मों का उचित फल दे।" हमारे परमेश्वर, जो बदला लेते हैं, न्याय के परमेश्वर हैं। परमेश्वर ऐसे नहीं हैं जो तब चुपचाप बैठे रहें जब दुष्ट लोग लंबे समय तक जीतते रहें (पद 3)। वे निश्चित रूप से एक धर्मी परमेश्वर हैं जो दुष्टों का न्याय करते हैं; बदला लेने वाले परमेश्वर के रूप में, वे उन्हें उचित दंड देते हैं। बदला लेने वाले ये धर्मी परमेश्वर दुष्टों को ऐसा उचित दंड क्यों देते हैं?

(1) पहला कारण यह है कि दुष्ट लोग अहंकारी होते हैं (पद 2)। अपनी अकड़ के कारण, बुरे लोग बकवास करते हैं, घमंड से बात करते हैं, बुरे काम करते हैं और अपनी ही डींगें मारते हैं (पद 4)। दूसरे शब्दों में, घमंडी और बुरे लोग ज़हरीली बातें कहते हैं, दूसरों को नुकसान पहुँचाने के लिए बिना सोचे-समझे बोलते हैं, और बिना झिझक के परमेश्वर का अपमान भी करते हैं (पार्क युन-सन); इसलिए, धर्मी परमेश्वर ऐसे घमंडी और बुरे लोगों को उचित सज़ा देते हैं।

(2) दूसरा कारण जिसकी वजह से परमेश्वर बुरे लोगों को उचित सज़ा देते हैं, वह यह है कि वे परमेश्वर के लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और कमज़ोर लोगों की हत्या करते हैं (पार्क युन-सन)।

आज के वचन, भजन संहिता 94:5–6 को देखें: "हे प्रभु, वे तेरे लोगों को कुचलते हैं और तेरी विरासत को सताते हैं; वे विधवा और परदेसी को मार डालते हैं और अनाथों की हत्या करते हैं।" बुरे लोग परमेश्वर के लोगों पर ज़ुल्म करते हैं। वे "धर्मी की जान लेने के लिए एकजुट होते हैं और बेगुनाह के खून को दोषी ठहराते हैं" (पद 21)। इसके अलावा, वे "विधवा," "परदेसी," और "अनाथ"—जिन पर परमेश्वर विशेष दया करते हैं—उनकी हत्या करके क्रूरता दिखाते हैं (पद 6)। इसलिए, धर्मी परमेश्वर उन्हें उचित सज़ा देते हैं। ऐसे बुरे काम करते हुए, बुरे लोग क्या कहते हैं? पद 7 देखें: "वे कहते हैं, 'प्रभु नहीं देखता, और न ही याकूब का परमेश्वर ध्यान देता है।'" संक्षेप में, बुरे लोग परमेश्वर की अनदेखी करते हैं और उनका अनादर करते हैं (पार्क युन-सन)। उनका मानना है कि परमेश्वर उनके किए गए बुरे पापों को नहीं देखते और उन्हें इसकी कोई परवाह नहीं है। परमेश्वर बुरे लोगों के ऐसे विचारों की व्यर्थता को जानते हैं (पद 11)। इसलिए, परमेश्वर इस प्रकार कहते हैं: "हे लोगों में नासमझों, समझो; हे मूर्खों, तुम कब बुद्धिमान बनोगे? जिसने कान बनाया, क्या वह सुनता नहीं? जिसने आँख रची, क्या वह देखता नहीं?" (पद 8-9)। बुरे लोग—जो नासमझ और अज्ञानी

हैं—उन्हें यह बात समझनी चाहिए: परमेश्वर, जिन्होंने आँख बनाई है, सब कुछ देखते हैं, और जिन्होंने कान बनाया है, वे सब कुछ सुनते हैं। अंततः, परमेश्वर, जो बदला लेते हैं, बुरे लोगों को उनके पापों का फल भुगतने पर मजबूर करेंगे और उनके बुरे कामों के कारण उन्हें मिटा देंगे (पद 23)। दूसरी बात, हमारे परमेश्वर, जो बदला लेने वाले हैं, वे अपने लोगों को अनुशासित भी करते हैं।

भजन संहिता 94:12 पर विचार करें: "हे यहोवा, धन्य है वह मनुष्य जिसे तू अनुशासित करता है और जिसे तू अपनी व्यवस्था से सिखाता है।" इसका अर्थ है कि हमारे परमेश्वर, जो बदला लेने वाले परमेश्वर हैं, मामलों को सही रास्ते पर लाने के लिए अपने न्याय के अनुसार कार्य करते हैं। परमेश्वर के लोगों को, जो दुष्टों के हाथों सताए जाते हैं, उस उत्पीड़न को किस नज़रिए से देखना चाहिए? दुष्टों द्वारा किए गए ऐसे उत्पीड़न में अनुशासन और शिक्षा का महत्व होता है (पार्क युन-सन)। इसलिए, यह वचन बताता है कि जो विश्वासी ऐसे उत्पीड़न से गुज़रता है, वह धन्य है, क्योंकि वे इसके माध्यम से परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली शिक्षाओं को प्राप्त कर सकते हैं। यह वास्तव में एक दिलचस्प नज़रिया है। मेरा मानना है कि यह एक बहुमूल्य शिक्षा है कि जो लोग दुष्टों द्वारा किए गए उत्पीड़न को परमेश्वर के अनुशासन और शिक्षा को प्राप्त करने के अवसर के रूप में देखते हैं, वे वास्तव में धन्य हैं। आज के वचन के 10वें पद में, भजनकार परमेश्वर का वर्णन एक धर्मी और न्यायपूर्ण बदला लेने वाले के रूप में करते हैं; वे ऐसे परमेश्वर हैं जो हमें अनुशासित करते हैं और साथ ही ज्ञान से हमें सिखाते भी हैं। अतः, धन्य है वह व्यक्ति जो दुष्टों के उत्पीड़न को परमेश्वर के अनुशासन के रूप में देखता है और उससे सीखता है (पद 12)। किस तरह के आशीर्वाद हैं? मैंने तीन की पहचान की है:

(1) जो लोग दुष्टों के उत्पीड़न को परमेश्वर के अनुशासन के रूप में देखते हैं और उससे सीखते हैं, उन्हें प्रभु की विधियों को सीखने का आशीर्वाद मिलता है (पद 12)।

हम धन्य हैं क्योंकि हम दुष्टों के उत्पीड़न से होने वाले कष्टों के माध्यम से प्रभु की विधियों को सीखते हैं। दूसरे शब्दों में, जब हम दुष्टों के हाथों सताए जाते हैं, तो यह एक आशीर्वाद बन जाता है क्योंकि वह कष्ट हमें अपनी गलतियों से दूर होने, प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने और सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करता है। इसीलिए भजनकार ने भजन संहिता 119:67 और 71 में स्वीकार किया: "दुख उठाने से पहले मैं भटक गया था, लेकिन अब मैं तेरे वचन का पालन करता हूँ... मेरे लिए यह अच्छा है कि मैंने दुख उठाया, ताकि मैं तेरी विधियों को सीख सकूँ।"

(2) जो लोग दुष्टों के उत्पीड़न को परमेश्वर के अनुशासन के रूप में देखते हैं और उससे सीखते हैं, उन्हें उस शांति का आनंद लेने का आशीर्वाद मिलता है जो परमेश्वर मुसीबतों के बीच भी प्रदान करते हैं। भजन संहिता 94 की आयत 13 को देखें: "आप उसे मुश्किल दिनों से राहत देते हैं, जब तक कि बुरे लोगों के लिए गड्ढा न खोदा जाए।" इस आयत का मतलब है कि जो व्यक्ति अनुशासन की वजह से मुश्किल दौर से गुज़र रहा है, वह उस मुश्किल के बीतने तक—यानी जब तक सताने वाले का विनाश न हो जाए—अपने दिल में शांति बनाए रखता है। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब है कि मुश्किल सहते हुए भी उसकी आत्मा में शांति रहती है (पार्क युन-सन)। मुश्किलों के बीच परमेश्वर से मिलने वाली शांति का अनुभव कैसे किया जा सकता है? यह इसलिए संभव है क्योंकि ऐसी परीक्षाओं के बीच हम प्रभु के नियमों को सीखते हैं। जब हम प्रभु के नियमों को अपने दिलों पर राज करने और उन्हें चलाने देते हैं, तो हम परमेश्वर से मिली शांति का आनंद ले सकते हैं। पवित्र आत्मा हमें ऐसी शांति का अनुभव करने में मदद करती है जिसे दुनिया न तो समझ सकती है और न ही दे सकती है; यह तब होता है जब हम परमेश्वर के वचन को अपने दिलों पर राज करने देते हैं।

(3) जो लोग बुरे लोगों के सताए जाने को परमेश्वर की ओर से सुधार या अनुशासन मानते हैं—और उस अनुशासन से सीखते हैं—उन्हें मुश्किलों के बीच भी प्रभु के कभी न बदलने वाले प्यार का अनुभव होता है।

आज का वचन देखिए, भजन संहिता 94:18: "जब मैंने कहा, 'मेरा पैर फिसल रहा है,' हे प्रभु, तेरे कभी न बदलने वाले प्यार ने मुझे संभाला।" जब हम मुश्किलों के समय फिसलने वाले होते हैं, तो उस नाज़ुक पल में परमेश्वर अपने कभी न बदलने वाले प्यार से हमें थामे रखते हैं। हमने भजन संहिता 73 में आसाफ के अनुभव से पहले ही यह सीखा है—नेक लोगों का दुख और बुरे लोगों की कामयाबी। बुरे लोगों की कामयाबी देखकर आसाफ लगभग डगमगा गया था, लेकिन परमेश्वर ने उससे प्यार किया और उसे मजबूती से थामे रखा (73:23)। परमेश्वर के प्यार का अनुभव करने के बाद, आसाफ ने माना: "स्वर्ग में मेरा कौन है तेरे सिवा? और धरती पर भी मुझे तेरे सिवा और कुछ नहीं चाहिए... लेकिन मेरे लिए, परमेश्वर के करीब रहना ही अच्छा है..." (भजन संहिता 73:25, 28)। हमारे परमेश्वर ही वो हैं जिनकी तसल्ली हमारी आत्मा को खुश करती है, खासकर तब जब हमारा मन चिंता भरे विचारों से भरा हो (94:19)। मुश्किलों के बीच हमारे मन में कितने सारे विचार आते हैं? ऐसे समय में, प्रभु हमें दिलासा देते हैं, और न केवल हमारी आत्मा को शांति देते हैं बल्कि गहरा

आनंद भी देते हैं। भजनकार ने अपनी आत्मा में इस शांति और आनंद का अनुभव करने के बाद माना: "प्रभु मेरा किला बन गया है, और मेरा परमेश्वर मेरी पनाह की चट्टान है" (वचन 22)। परमेश्वर हमारा किला और हमारी पनाह की चट्टान हैं। जब हमें बुरे लोगों से सताया जाता है, तो हमें इसे परमेश्वर का अनुशासन मानना चाहिए और उस अनुशासन के ज़रिए वे जो सबक और आशीष देते हैं, उन्हें नम्रता से स्वीकार करना चाहिए। ऐसे हालात में, हमें भी भजनकार की तरह यह कहने में सक्षम होना चाहिए, "परमेश्वर मेरा मज़बूत गढ़ और मेरी पनाह की चट्टान है।"

इस हफ़्ते की शुरुआत में, मैंने कुछ पादरियों से बात की। उनमें एक बात समान थी कि वे दोनों अपनी सेवा-कार्य में मुश्किलों का सामना कर रहे थे—खासकर, उन लोगों की वजह से चुनौतियाँ आ रही थीं जो आध्यात्मिक परीक्षाओं या कड़वाहट में पड़ गए थे। एक पादरी ने बताया कि उनके चर्च के एक सदस्य ने एक-दो परिवारों को फ़ोन करके पादरी के बारे में बुरा-भला कहा और उन्हें चर्च न जाने के लिए उकसाया। दिलचस्प बात यह है कि जिन लोगों को फ़ोन आया था, उनमें से एक बहन ने फ़ोन करने वाले को चेतावनी देते हुए कहा, "अगर तुम परमेश्वर के सेवक से इतनी नफ़रत करते हो, तो परमेश्वर तुम्हें सज़ा देगा।" मुझे पता चला कि वह महिला एक पादरी की बेटी थी; उसने अपने पिता को ऐसी मुश्किलों का सामना करते देखा था, लेकिन उसने यह भी देखा था कि परमेश्वर उन लोगों को कैसे सुधारते हैं जो प्रभु के सेवक का विरोध करते हैं। पादरी से यह कहानी सुनकर मैं परमेश्वर के काम करने के अद्‌भुत तरीके से बहुत प्रभावित हुआ। इससे मेरा यह विश्वास और मज़बूत हुआ कि प्रभु अपने सेवकों और अपनी कलीसिया से प्रेम करते हैं, और वे सक्रिय रूप से उनकी रक्षा और देखभाल करते हैं। इसलिए, मैंने यह कहानी उस पादरी को सुनाई जिन्होंने मुझे परेशानी में फ़ोन किया था, और उन्हें भरोसा दिलाया कि चूँकि परमेश्वर उनसे और उस कलीसिया से प्रेम करते हैं जिसकी वे सेवा करते हैं, इसलिए वे निश्चित रूप से उनकी रक्षा और देखभाल करेंगे। मेरी सच्ची उम्मीद है कि परमेश्वर—जो न्याय करते हैं—भटके हुए इन प्रिय सदस्यों को वापस प्रभु के पास और सही रास्ते पर लाएँगे, भले ही इसके लिए उन्हें सुधारने की ज़रूरत पड़े। मैं यह भी प्रार्थना करता हूँ कि जो पादरी इन परेशान करने वाले विश्वासियों की वजह से दुख झेल रहे हैं, वे उसी दुख के बीच उस परमेश्वर का आशीर्वाद पाएँ जो प्रतिफल देते हैं। हमारे परमेश्वर प्रतिफल देने वाले परमेश्वर हैं; वे ही दुष्टों को उचित सज़ा देते हैं जो नेक लोगों—परमेश्वर के अपने लोगों—पर अत्याचार करते हैं। फिर भी, जो नेक लोग ऐसा अत्याचार सहते हैं, उन्हें उसी परीक्षा या सुधार के ज़रिए आशीर्वाद मिलते हैं: प्रभु के नियमों को सीखने का आशीर्वाद,

मुसीबत के बीच भी प्रभु द्वारा दी गई शांति का अनुभव करने का आशीर्वाद, और प्रभु की अनंत दया का अनुभव करने का आशीर्वाद। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी इन आशीर्वादों का आनंद ले सकें।

जो लोग परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करते हैं

[भजन संहिता 95]

आप अपनी "आत्मा के लिए विश्राम" कैसे पाते हैं? भजन संहिता 94 की आयत 19 में—जिस पर हमने पिछले हफ़्ते बुधवार की प्रार्थना सभा में मनन किया था—भजनकार कहते हैं: "जब मेरे मन में बहुत चिंता थी, तब आपकी सांत्वना ने मेरी आत्मा को आनंद दिया।" जब हम मुश्किल और कठिन हालात का सामना करते हैं, तो हमारे मन में कितने विचार आते हैं! उन पलों में, प्रभु हमें दिलासा देते हैं, हमारी आत्मा को शांति देते हैं और उसे आनंद से भर देते हैं। इस शांति और आनंद का अनुभव करने के लिए, हमें—भजनकार की तरह—मुसीबत और दुख के बीच भी "प्रभु के नियमों" को सीखना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम मुसीबत के समय अपने दिलों को उनके नियमों से नियंत्रित कर सकते हैं और उस शांति का अनुभव कर सकते हैं जो परमेश्वर देता है। इसके अलावा, उस प्रक्रिया में, हम प्रभु की प्रेमपूर्ण दया का अनुभव करते हैं। तभी हमारी आत्मा को सचमुच विश्राम मिल सकता है।

इब्रानियों 4:9–10 में कहा गया है: "इसलिए, परमेश्वर के लोगों के लिए एक सब्त का विश्राम बाकी है; क्योंकि जो कोई परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करता है, वह भी अपने कामों से विश्राम पाता है, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने अपने कामों से विश्राम पाया था।" "विश्राम का समय" जो हमारा इंतज़ार कर रहा है, वह अनंत विश्राम है जिसमें हम तब प्रवेश करेंगे जब प्रभु वापस आएंगे। वहाँ, हम अपनी मेहनत से विश्राम करेंगे, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने अपने कामों से विश्राम किया था। इसलिए, हमें उस अनंत विश्राम में प्रवेश करने के लिए हर संभव कोशिश करनी चाहिए (आयत 11)।

भजन संहिता 95:11 में, भजनकार दाऊद लिखते हैं: "इसलिए मैंने अपने क्रोध में शपथ खाई, 'वे कभी भी मेरे विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे।'" आज, इस आयत और "जो लोग परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करते हैं" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन दो चीज़ों के बारे में जानना चाहता हूँ जो वे लोग करते हैं जो परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करते हैं। मेरी प्रार्थना है कि आप और मैं परमेश्वर द्वारा दिए गए विश्राम का आनंद लें, जबकि हम उसके अनंत विश्राम की ओर यात्रा कर रहे हैं।

पहला, जो लोग परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करते हैं, वे परमेश्वर की स्तुति करते हैं।

भजन संहिता 95:1–2 को देखें: "आओ, हम प्रभु के लिए गाएँ! आओ, हम अपनी मुक्ति की चट्टान के लिए खुशी से जय-जयकार करें। आओ, हम धन्यवाद के साथ उसके पास आएँ। आओ, हम खुशी के साथ उसकी स्तुति के भजन गाएँ।" दाऊद हमें परमेश्वर के सामने धन्यवाद के साथ एक साथ आने ("आओ") और "आनंद से जय-जयकार करने" (या खुशी से गाने) के लिए प्रेरित करते हैं। दूसरे शब्दों में, वह हमें एक साथ मिलकर परमेश्वर की स्तुति करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। दाऊद हमें एक साथ आने और खुशी से परमेश्वर की स्तुति करने के लिए क्यों कहते हैं?

(1) पहला कारण यह है कि परमेश्वर हमारी "मुक्ति की चट्टान" हैं (पद 1)।

हमें एक साथ आने और धन्यवाद के साथ स्तुति करने का कारण यह है कि वे हमारे उद्धारकर्ता हैं। परमेश्वर को "मुक्ति की चट्टान" के रूप में सोचने पर वह गॉस्पेल गीत याद आता है: "परमेश्वर, मेरी चट्टान; आपने जो कुछ भी किया है वह उत्तम है। परमेश्वर, मेरे जीवन का स्रोत; आपने मेरे लिए जो किया है, मैं उसकी स्तुति करता हूँ। विश्वासयोग्य परमेश्वर, मेरे अच्छे प्रभु जो कोई गलती नहीं करते; विश्वासयोग्य परमेश्वर, मेरे अच्छे प्रभु जो कोई गलती नहीं करते।" परमेश्वर की उद्धार करने वाली कृपा पाकर, हमें परमेश्वर की, जो हमारी मुक्ति की चट्टान हैं, स्तुति करनी चाहिए। इसके अलावा, जब हम उनका उद्धार (छुटकारा) पाकर जीवन के जंगल से गुज़रते हैं, तो हमें धन्यवाद के साथ परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। जैसे उन्होंने इज़राइल के लोगों को रोज़ की रोटी देकर भूख से बचाया और चट्टान से पानी निकालकर उनकी प्यास बुझाई, वैसे ही वे हमारी आत्मिक प्यास भी बुझाते हैं और हमें बचाते हैं; इसलिए, हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। डॉ. पार्क युन-सन ने एक बार कहा था: "कोई व्यक्ति उद्धारकर्ता के बारे में क्यों नहीं सोच पाता या उनमें आनंद लेना क्यों

नहीं जानता, इसका कारण यह है कि उन्हें अभी तक यह एहसास नहीं हुआ है कि उनकी अपनी स्थिति कितनी दयनीय है।"

(2) दूसरा कारण यह है कि हमें परमेश्वर की स्तुति करने के लिए एक साथ आना चाहिए क्योंकि वे एक "महान परमेश्वर" हैं।

आज के वचन, भजन संहिता 95:3 को देखें: "क्योंकि यहोवा महान परमेश्वर है, और सब देवताओं के ऊपर महान राजा है।" क्या आपको वह गॉस्पेल गीत "महान प्रभु के लिए" (To the Great Lord) याद है जिसे हमने अक्सर गाया है? उसके बोल कुछ इस तरह हैं: "महान प्रभु की महिमा करो; परमेश्वर के नगर में, उनके पवित्र पर्वत पर—जिसकी नींव ऊँची और सुंदर है, जो पूरी पृथ्वी का आनंद है। उत्तर में सिय्योन पर्वत, महान राजा का नगर। हालेलुयाह गाओ, हालेलुयाह गाओ, हालेलुयाह गाओ—महान राजा का नगर।" जब मुश्किलें बड़ी लगने लगें और दर्द और ज़ख्म बहुत ज़्यादा महसूस हों, तो हम अपने महान प्रभु पर नज़र टिकाकर—उनकी कृपा से शक्ति पाकर—शुक्रगुज़ार दिल से परमेश्वर की खुशी-खुशी स्तुति कर सकते हैं। हम महान परमेश्वर की स्तुति तब कर पाते हैं जब दर्द और मुश्किलों के अनुभव से हमें अपनी तुच्छता का एहसास होता है और हम उनकी महानता को पहचानते हैं।

(3) तीसरी बात, हम सबको मिलकर परमेश्वर की स्तुति इसलिए करनी चाहिए क्योंकि वे महान सृष्टिकर्ता हैं।

आज के वचन, भजन संहिता 95:4–5 को देखिए: "पृथ्वी की गहराइयां उनके हाथ में हैं, और पहाड़ों की चोटियां उनकी हैं। समुद्र उनका है, क्योंकि उन्होंने ही उसे बनाया है, और उनके हाथों ने सूखी ज़मीन को रचा है।" आपको वह गॉस्पेल गीत "महान और शक्तिशाली प्रभु" (Great and Mighty Lord) याद होगा—जिसे अक्सर "महान प्रभु के लिए" (To the Great Lord) गीत के ठीक बाद गाया जाता है? "महान और शक्तिशाली प्रभु, हमारे प्रभु परमेश्वर; महान और शक्तिशाली प्रभु, हमारे प्रभु परमेश्वर। झंडा ऊँचा उठाओ और उसे लहराओ; राजा की स्तुति करो। महान और शक्तिशाली प्रभु, हमारे प्रभु परमेश्वर; महान और शक्तिशाली प्रभु, हमारे प्रभु परमेश्वर।" दाऊद ने महान परमेश्वर की स्तुति इसलिए की क्योंकि उन्होंने "पृथ्वी

की गहराइयों और सबसे ऊँची चोटियों—ऐसी जगहें जो इंसानी पहुँच से दूर हैं—के साथ-साथ स्वर्ग, पृथ्वी और समुद्र की रचना की और उन पर शासन करते हैं" (पार्क युन-सन)।

हमें परमेश्वर की स्तुति करने के लिए एक साथ इकट्ठा होना चाहिए—वे हमारी मुक्ति की चट्टान, शक्तिशाली परमेश्वर और महान सृष्टिकर्ता हैं। हमें धन्यवाद के साथ स्तुति करनी चाहिए और प्रभु के लिए खुशी-खुशी गाना चाहिए। जब हम परमेश्वर के सच्चे, अनंत विश्राम में प्रवेश करेंगे, तो हम हमेशा कृतज्ञता और खुशी के साथ उनकी स्तुति करेंगे।

दूसरी बात, जो लोग परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करते हैं, वे उनकी आराधना करते हैं।

भजन संहिता 95:6 पर विचार करें: "आओ, हम झुककर आराधना करें, हम अपने बनाने वाले प्रभु के सामने घुटने टेकें।" हम परमेश्वर की स्तुति इसलिए करते हैं क्योंकि उन्होंने हमारे लिए जो कुछ किया है। हम उनकी स्तुति इसलिए करते हैं क्योंकि महान सृष्टिकर्ता परमेश्वर—शक्तिशाली परमेश्वर और हमारी मुक्ति की चट्टान—ने हमें मुक्ति की कृपा दी है। परमेश्वर की आराधना करने का अर्थ है उनकी आराधना करना कि वे वास्तव में कौन हैं। दूसरे शब्दों में, हम उनकी आराधना केवल इसलिए नहीं करते कि उन्होंने हमारे लिए क्या किया है, बल्कि इसलिए करते हैं क्योंकि "वे हमारे परमेश्वर हैं" (वचन 7)। वह "हमारा परमेश्वर है, और हम उसकी चरागाह के लोग हैं, उसकी देखरेख में पलने वाली भेड़ें हैं" (पद 7a)। अगर हम सच में परमेश्वर की आराधना कर रहे हैं, तो हमें उसकी आवाज़ सुननी चाहिए (पद 7b)। हमें कभी भी अपने दिल कठोर नहीं करने चाहिए (पद 8)। इसके अलावा, हमें परमेश्वर की परीक्षा नहीं लेनी चाहिए जैसा कि इस्राएल के पूर्वजों ने जंगल में किया था (पद 9)। हमें अपने दिलों की बंजर ज़मीन को तोड़ना चाहिए और उपजाऊ मिट्टी जैसे दिल से परमेश्वर का वचन ग्रहण करना चाहिए। आज के वचन में, दाऊद हमें आराधना में "सिर झुकाने" और "घुटने टेकने" (पद 6) के लिए प्रेरित करता है, और हमें सिखाता है कि जो लोग परमेश्वर की आराधना करते हैं, उन्हें प्रभु की आवाज़ सुननी चाहिए और उसका पालन करना चाहिए। अगर हम परमेश्वर की आराधना करने का दावा तो करते हैं लेकिन उसकी आवाज़ सुनते या मानते नहीं हैं, तो हम केवल अपने होंठों से उसकी आराधना कर रहे होते हैं जबकि हमारे दिल उससे दूर रहते हैं (यशायाह 29:13)। नतीजतन, इस्राएल के पूर्वजों ने जंगल में चालीस साल तक परमेश्वर को दुखी किया (भजन संहिता 95:10)। वे ऐसे लोग

थे जो परमेश्वर के तरीकों को नहीं जानते थे; उनके दिल भटक गए थे (पद 10), जिसके कारण उन्होंने परमेश्वर की आवाज़ सुनने से इनकार कर दिया और उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं किया। परिणामस्वरूप, उन्होंने परमेश्वर के क्रोध को भड़काया और उसके विश्राम में प्रवेश करने में असफल रहे।

जो लोग परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करते हैं, वे उसकी आराधना करते हैं। और परमेश्वर... जो लोग सच में उसकी आराधना करते हैं, वे उसकी आवाज़ सुनते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। एक सच्चा आराधक परमेश्वर का वचन सुनते समय कभी भी अपना दिल कठोर नहीं करता; बल्कि, वे लगन से अपने दिल की बंजर ज़मीन को तोड़ते हैं और उसे नरम बनाते हैं ताकि वे परमेश्वर के वचन पर तुरंत ध्यान दे सकें। परमेश्वर के तरीकों को जानते हुए, वे अपने दिलों को भटकने नहीं देते। इस प्रकार, वे ऐसे आराधक होते हैं जो परमेश्वर को दुखी नहीं करते बल्कि उसके दिल को खुशी पहुँचाते हैं—और वे ही सच्चे विश्राम का आनंद लेते हैं।

आप और मैं विश्राम की एक अनंत जगह की ओर यात्रा करने वाले यात्री हैं। इसलिए, इस दुनिया में रहते हुए, हम परमेश्वर द्वारा दिए जाने वाले अनंत विश्राम की लालसा करते हैं, और साथ ही अभी भी उस विश्राम का थोड़ा अनुभव करते हैं। इस विश्राम का आनंद लेने वालों के रूप में, आइए आज हम परमेश्वर की स्तुति और आराधना करें।

एक सच्चा उपासक

[भजन संहिता 96]

हमारे चर्च के तीन मुख्य लक्ष्यों में से पहला है "सच्चे उपासकों को तैयार करना।" हमारे चर्च का एक उद्देश्य यह है कि स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च का हर सदस्य—जहाँ प्रभु का वास है—एक "उपासक-गवाह" के रूप में स्थापित हो। इस मिशन स्टेटमेंट में लिखा है: "'उपासना' में परमेश्वर की उपस्थिति की प्रशंसा करके, हम उन लोगों को भी—जो विश्वास नहीं करते—यह बताते हैं कि उन्हें 'झुककर परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए और यह स्वीकार करना चाहिए कि परमेश्वर सचमुच तुम्हारे बीच है'" (1 कुरिन्थियों 14:25)। यह कथन 1 कुरिन्थियों 14:25 के इन शब्दों पर आधारित है: "उसके दिल के भेद खुल जाएँगे। इसलिए वह झुककर परमेश्वर की उपासना करेगा और कहेगा, 'परमेश्वर सचमुच तुम्हारे बीच है!'"

आज के पाठ, भजन संहिता 96 और शीर्षक "एक सच्चा उपासक" पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं इस बात पर विचार करना चाहता हूँ कि एक सच्चा उपासक कैसे जीवन व्यतीत करता है और परमेश्वर से मिलने वाली शिक्षाओं को कैसे ग्रहण करता है। मेरी प्रार्थना है कि हम सच्चे उपासकों के रूप में और अधिक मज़बूती से स्थापित हों।

पहला, एक सच्चा उपासक परमेश्वर की महिमा करता है।

भजन संहिता 96:7 को देखें: "हे जातियों के कुलों, यहोवा का गुणगान करो, यहोवा की महिमा और सामर्थ्य का गुणगान करो।" भजन संहिता 90 इस क्षणभंगुर संसार में परमेश्वर की दृष्टि में मूल्यवान जीवन जीने के चार तरीके बताती है: (1) परमेश्वर का भय मानना, (2) परमेश्वर के प्रेम में संतुष्टि पाना, (3) परमेश्वर की महिमा के लिए जीना, और (4) परमेश्वर की कृपा की लालसा करना। हमें अपनी महिमा के बजाय परमेश्वर की

महिमा की खोज करते हुए जीना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमें इस बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि परमेश्वर हमारे लिए क्या करता है—उसके महान कार्य—न कि इस बात पर कि हम प्रभु के लिए क्या करते हैं। तभी हम वास्तव में परमेश्वर को महिमा दे सकते हैं। भजन संहिता 96:8 के पहले भाग में, भजनकार आज्ञा देता है, "यहोवा को उसके नाम के योग्य महिमा दो..." तो फिर, हम परमेश्वर की महिमा कैसे कर सकते हैं?

(1) हम परमेश्वर की प्रशंसा करके उसके नाम के योग्य महिमा दे सकते हैं। भजन संहिता 96 की आयतें 1, 2 और 4 देखें: "यहोवा के लिए नया गीत गाओ; हे सारी पृथ्वी, यहोवा के लिए गाओ" (आयत 1); "यहोवा के लिए गाओ, उसके नाम को धन्य कहो; दिन-प्रतिदिन उसके उद्धार का प्रचार करो" (आयत 2); "क्योंकि यहोवा महान है और अत्यंत स्तुति के योग्य है; वह सब देवताओं से अधिक भय मानने योग्य है" (आयत 4)। हमें एक नए गीत के साथ महान परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। इसके अलावा, हमें आनंद और खुशी के साथ परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए (आयत 11)। इसलिए, हमें परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए। हमें पूरे जोश के साथ परमेश्वर की स्तुति करके उसकी महिमा क्यों करनी चाहिए? इसका कारण है "उसका उद्धार" (आयत 2)। हमें हर दिन एक नए गीत के साथ परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए क्योंकि उसने हमें उद्धार का अनुग्रह दिया है।

(2) हम परमेश्वर के महान कार्यों का प्रचार करके उसके नाम के योग्य महिमा दे सकते हैं।

भजन संहिता 96:3 देखें: "जातियों के बीच उसकी महिमा का वर्णन करो, सब लोगों के बीच उसके अद्भुत कार्यों का बखान करो।" मुझे याद है कि पादरी चार्ल्स स्विंडोल ने अपनी पुस्तक *द ग्रेस अवेकनिंग* में कहा था कि चर्च में सबसे बड़ी गलत शिक्षा यह है कि हम इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि हमने परमेश्वर के लिए क्या किया है, न कि इस बात पर कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया है। मेरा मानना है कि इसका एक कारण यह है कि परमेश्वर के लिए अपने कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने से हम अपनी ही महिमा चाहने लगते हैं। हालाँकि, यदि हम प्रभु के कार्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम प्रभु की महिमा चाह सकते हैं। इसलिए, हमें परमेश्वर के महान कार्यों का प्रचार करते हुए हर दिन जीने का संकल्प और प्रयास करना चाहिए। विशेष रूप से, जैसा कि आज के पाठ की आयत 2 में कहा गया है, हमें हर दिन उस "उद्धार" का प्रचार करते हुए

जीना चाहिए जो परमेश्वर ने हमें यीशु मसीह के द्वारा दिया है। तभी हम परमेश्वर को उसके नाम के योग्य महिमा दे सकते हैं।

दूसरी बात, एक सच्चा उपासक परमेश्वर को कुछ भेंट करता है।

भजन संहिता 96:8 देखें: "यहोवा को उसके नाम के योग्य महिमा दो; भेंट लाओ और उसके आँगन में आओ।" हम अक्सर लोगों को यह कहते हुए सुनते हैं कि वे "आराधना सेवा देखने जा रहे हैं।" हालाँकि, आराधना कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम केवल देखने जाते हैं; हम परमेश्वर की आराधना करने जाते हैं। दूसरे शब्दों में, उपासना का मतलब है अपने शरीर, मन, दिल और अपनी चीज़ों को परमेश्वर को समर्पित करना। एक सच्चा उपासक खुशी-खुशी अपना सब कुछ परमेश्वर को सौंप देता है। लेकिन यहूदी लोगों के साथ समस्या यह थी कि वे होंठों से तो प्रभु की उपासना करते थे, पर उनके दिल उनसे बहुत दूर थे। परमेश्वर दिल को देखते हैं, फिर भी इसराइल के लोग बिना सच्चे दिल के उन्हें बलिदान चढ़ाते थे। यशायाह 1:11–13 को देखिए: “प्रभु कहते हैं, ‘तुम्हारे इतने सारे बलिदानों का मेरे लिए क्या मतलब है? मैं मेढ़ों और मोटे पशुओं की चर्बी वाले होम-बलिदानों से ऊब गया हूँ। मुझे बैलों, मेमनों या बकरियों के खून में कोई खुशी नहीं मिलती। जब तुम मेरे सामने आते हो, तो यह सब तुमसे किसने माँगा—मेरे आँगन को इस तरह रौंदना? अब और बेकार बलिदान मत लाओ; धूप जलाना मुझे घृणित लगता है। नए चाँद के त्योहार, सब्त के दिन और सभाएँ बुलाना—मैं बुराई और ऐसी पवित्र सभाओं को बर्दाश्त नहीं कर सकता।’” बिना सच्चे दिल से परमेश्वर को समर्पित किए गए अनगिनत चढ़ावे या बलिदान उनके किसी काम के नहीं होते। परमेश्वर ऐसे चढ़ावों से खुश नहीं होते; उनकी नज़र में वे बेकार हैं। वे हमसे कहते हैं कि हम उन्हें न लाएँ। वे कहते हैं कि जब हम प्रभु के घर में उपासना करने और चढ़ावा चढ़ाने आते हैं, और फिर बाहर जाकर दुनिया में बुराई करते हैं, तो वे इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते। इसलिए, जब हम परमेश्वर की उपासना करते हैं, तो हमें ऐसे चढ़ावे लाने चाहिए जो उनकी नज़र में अच्छे हों—ऐसे चढ़ावे जो सच्ची भक्ति वाले दिल से आए हों। प्रेरित पौलुस हमें समझाते हैं: “इसलिए भाइयों, मैं परमेश्वर की दया का वास्ता देकर तुमसे विनती करता हूँ कि तुम अपने शरीरों को एक जीवित बलिदान के रूप में समर्पित करो, जो पवित्र हो और परमेश्वर को स्वीकार्य हो; यही तुम्हारी उचित सेवा है” (रोमियों 12:1)। हमें “इस दुनिया के साँचे में नहीं ढलना चाहिए, बल्कि अपने मन को नया करके

बदलना चाहिए, ताकि हम परख सकें कि परमेश्वर की अच्छी, स्वीकार्य और सिद्ध इच्छा क्या है" (पद 2), और अपने शरीर, दिल और उपहार उन्हें सौंपते हुए प्रभु की इच्छा के अनुसार जी सकें। तभी हम सच्चे उपासक कहला सकते हैं।

तीसरी बात, सच्चे उपासक पवित्र जीवन जीते हैं। भजन संहिता 96:9 के पहले हिस्से को देखिए: "पवित्रता की शोभा में यहोवा की उपासना करो...।" पवित्र परमेश्वर की उपासना करने वालों के तौर पर, हमें अपने जीवन में उनकी पवित्रता को दिखाना चाहिए। अगर हम परमेश्वर की उपासना करने का दावा तो करते हैं, लेकिन अपने जीवन से दुनिया के सामने उनकी पवित्रता नहीं दिखाते, तो न तो हम परमेश्वर की महिमा कर रहे हैं और न ही खुद को पूरी तरह उन्हें सौंप रहे हैं। हमें उपासना को जीवन से अलग नहीं करना चाहिए—या दूसरे शब्दों में, हमें रविवार की उपासना को हफ़्ते भर के रोज़मर्रा के जीवन से अलग नहीं करना चाहिए। उपासना सिर्फ़ रविवार को एक घंटे के लिए की जाने वाली चीज़ नहीं है; सभा खत्म होने के बाद भी इसे हमारे पूरे जीवन में दिखना चाहिए। हम जो जीवन परमेश्वर को सौंपते हैं, वह पवित्र होना चाहिए। जब हम उपासना करने वालों के तौर पर पवित्र जीवन जीते हैं, तो हम दुनिया के सामने परमेश्वर का सम्मान, महिमा, शक्ति और सुंदरता दिखा सकते हैं (पद 6)। इसके अलावा, जब उपासना करने वालों के तौर पर हमारा पवित्र जीवन इस अंधेरी दुनिया में परमेश्वर की पवित्रता को दिखाता है, तो हम यह साबित करते हैं कि परमेश्वर के उलट, "जातियों के सभी देवता मूर्तियाँ हैं" (पद 5)।

चौथी और आखिरी बात, सच्चा उपासक परमेश्वर से डरता है।

भजन संहिता 96:9 का आखिरी हिस्सा देखिए: "...सारी पृथ्वी उसके सामने कांपे।" सच्चे उपासक परमेश्वर की पवित्रता के सामने आदर और भय के साथ उपासना करते हैं। हमें सभी दूसरे देवताओं से ऊपर परमेश्वर का आदर करना चाहिए (पद 4)। हमारा परमेश्वर महान है (पद 4), सृष्टिकर्ता है (पद 5), सम्मान, महिमा, शक्ति और सुंदरता का परमेश्वर है (पद 6), और वह पूरी दुनिया और ब्रह्मांड पर राज करता है (पद 10)। इसके अलावा, हमारा परमेश्वर निष्पक्ष न्याय करने वाला है (पद 10)। इसलिए, जो लोग इस धर्मी, सच्चे और पवित्र न्यायकर्ता (पद 13) की उपासना करते हैं, उन्हें उसके सामने कांपना चाहिए। हमें परमेश्वर से डरना चाहिए। हमें उसके पास आदर के साथ जाना चाहिए और उपासना करनी चाहिए। हमें कभी भी परमेश्वर को

हल्के में नहीं लेना चाहिए। इसीलिए राजा सुलैमान ने कहा: "जब तुम परमेश्वर के घर जाओ तो अपने कदमों का ध्यान रखो..." (सभोपदेशक 5:1)। हमें परमेश्वर के घर में प्रवेश करना चाहिए, उसके पास जाना चाहिए और उसका वचन सुनना चाहिए (पद 1)। हमें परमेश्वर के सामने बिना सोचे-समझे या जल्दबाजी में कुछ नहीं बोलना चाहिए (पद 2)। यदि हम परमेश्वर से कोई मन्नत मानते हैं, तो हमें उसे बिना देरी के पूरा करना चाहिए (पद 4)।

मैं वैसा सच्चा उपासक बनना चाहता हूँ जैसा परमेश्वर चाहता है। मैं परमेश्वर की महिमा करना चाहता हूँ, उसे अपना पूरा दिल और भक्ति के साथ-साथ अपनी भेंटें चढ़ाना चाहता हूँ, पवित्र जीवन जीना चाहता हूँ और उसके प्रति आदर के साथ चलना चाहता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु मुझे एक सच्चे उपासक के रूप में स्थापित करे।

“प्रभु का राज है”

[भजन संहिता 97]

मैं भजन संहिता 96 की आयत 10 पर फिर से ध्यान देना चाहता हूँ, जिस पर हमने पिछले हफ़्ते बुधवार की प्रार्थना सभा में मनन किया था: “जातियों के बीच कहो, ‘प्रभु का राज है। दुनिया मज़बूती से स्थापित है, इसे हिलाया नहीं जा सकता; वह लोगों का न्याय सच्चाई से करेगा।’” जब परमेश्वर का राज होता है, तो चीज़ें मज़बूती से टिकी रहती हैं। अगर परमेश्वर हमारे परिवारों और हमारी कलीसिया पर राज करते हैं, तो हम डगमगाएँगे नहीं। इसलिए, हमें परमेश्वर के राज और उनके शासन की दिल से चाहत रखनी चाहिए। भजन संहिता 97:1 में, भजनकार घोषणा करता है, “प्रभु का राज है...” इस आयत पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं तीन बातें सीखना चाहता हूँ कि प्रभु के राज के बारे में हमें कैसा रवैया अपनाना चाहिए।

पहली बात, क्योंकि प्रभु का राज है, इसलिए हमें आनंदित और खुश होना चाहिए।

भजन संहिता 97:1 को देखें: “प्रभु का राज है; पृथ्वी आनंदित हो, बहुत से द्वीप खुश हों!” प्रभु के राज का अर्थ है उनका इस पृथ्वी पर अपने लोगों पर शासन करने के लिए आना। यह वादा नए नियम के समय में यीशु के माध्यम से पूरा हुआ, जो परमेश्वर के एकलौते पुत्र हैं (पार्क युन-सन)। हम—परमेश्वर के वे लोग जिन्होंने यीशु को, जिन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया और जो फिर से जी उठे, अपने उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार किया है—उनके राज में रहते हैं। प्रभु के शासन में रहने वाले हम लोगों के आनंदित और खुश होने का कारण प्रभु का न्याय है। आयत 8 को देखें: “सिय्योन ने सुना और खुश हुआ, और यहूदा की बेटियाँ तेरे न्याय के कारण आनंदित हुईं, हे प्रभु।” प्रभु के न्याय धार्मिक और निष्पक्ष हैं (आयत 2)। इन न्याय के माध्यम से, प्रभु दुष्टों का न्याय करते हैं और उन्हें सज़ा देते हैं, जिससे उनकी धार्मिकता और न्याय प्रकट होता है।

नतीजतन, "वे सभी जो तराशी हुई मूर्तियों की पूजा करते हैं और बेकार की मूर्तियों पर घमंड करते हैं, शर्मिंदा होते हैं" (आयत 7)। इसके अलावा, स्वर्ग उनकी धार्मिकता की घोषणा करते हैं, और सभी लोग उनकी महिमा देखते हैं (आयत 6)। इसलिए, क्योंकि परमेश्वर का राज दुष्टों के लिए न्याय का प्रतीक है लेकिन उनके लोगों के लिए उद्धार का, हम आनंदित और खुश हुए बिना नहीं रह सकते।

हमें विश्वास करना चाहिए कि सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता परमेश्वर पूरे ब्रह्मांड पर शासन और नियंत्रण करते हैं। हमें इस पापी दुनिया को ऐसे विश्वास की नज़र से देखना चाहिए। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर इस दुनिया का न्याय अपने सही और निष्पक्ष न्याय से करेंगे। परमेश्वर बुरे लोगों का न्याय करेंगे, फिर भी वे उन लोगों को बचाएंगे जिन्हें उन्होंने चुना है और जिनसे वे प्यार करते हैं। इसलिए, परमेश्वर के लोगों के तौर पर, आप और मैं खुशी मना सकते हैं और आनंदित हो सकते हैं।

दूसरी बात, क्योंकि प्रभु का राज है, इसलिए हमें बुराई से नफ़रत करनी चाहिए।

भजन संहिता 97:10 को देखिए: "तुम जो प्रभु से प्रेम करते हो, बुराई से नफ़रत करो! वह अपने पवित्र लोगों की आत्माओं की रक्षा करता है और उन्हें बुरे लोगों के हाथों से बचाता है।" प्रभु के राज में रहने वाले परमेश्वर के लोगों के तौर पर, आपको और मुझे बुराई से नफ़रत करनी चाहिए। यह उस व्यक्ति का जीवन है जो सच्ची खुशी के साथ परमेश्वर की आराधना करता है (पद 7)। यदि कोई व्यक्ति दावा करता है कि वह परमेश्वर के शासन में है, फिर भी बुराई से प्रेम करता है, तो उस जीवन को सचमुच परमेश्वर द्वारा शासित जीवन नहीं कहा जा सकता। विश्वासियों के तौर पर हमें किस तरह की बुराई से नफ़रत करनी चाहिए? हमें "खुदी हुई मूर्तियों की पूजा करने और बेकार की मूर्तियों पर घमंड करने" की बुराई नहीं करनी चाहिए (पद 7)। हमें विशेष रूप से ऐसे पाप से घृणा करनी चाहिए। परमेश्वर के शासन में रहने वाले विश्वासी—जो प्रभु के सही और निष्पक्ष मानकों के अनुसार मामलों का न्याय करते हैं—अच्छी चीज़ों से प्रेम करते हैं और बुरी चीज़ों से नफ़रत करते हैं। आराधना का ऐसा जीवन सचमुच परमेश्वर की धार्मिकता और न्याय को प्रकट करता है। इसके लिए, हमें ईमानदार और सीधा होना चाहिए (पद 11)। ईमानदारी के ज़रिए, हमें अच्छे और बुरे के बीच फ़र्क करना चाहिए, अच्छे से प्रेम करना और बुरे से नफ़रत करना चाहिए। ऐसा करके, हम प्रभु की रोशनी को प्रतिबिंबित कर सकते हैं (पद 11)। परमेश्वर उनसे दो वादे करते हैं जो उनसे प्रेम करते हैं—जो

उनके शासन में रहते हैं और बुराई से नफ़रत करते हैं: रक्षा और छुटकारा। पद 10 को देखिए: "तुम जो प्रभु से प्रेम करते हो, बुराई से नफ़रत करो! वह अपने पवित्र लोगों की आत्माओं की रक्षा करता है और उन्हें बुरे लोगों के हाथों से बचाता है।" प्रभु के राज में रहने वाला विश्वासी अपने भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा के काम के ज़रिए परमेश्वर के वचन से निर्देशित होता है। क्योंकि वे परमेश्वर के वचन से शासित होते हैं, इसलिए वे प्रभु की सच्चाई के आधार पर निर्णय लेने में सक्षम होते हैं (96:13)। ऐसी समझ के साथ, वे अच्छे और बुरे के बीच फ़र्क करते हैं, अच्छे से प्रेम करते हैं और बुरे से नफ़रत करते हैं। नतीजतन, वे ईमानदार और सच्चे होते हैं। इस तरह, परमेश्वर के सच्चे उपासक होने के नाते, वे ऐसा जीवन जीते हैं जो इस अंधेरी दुनिया में रोशनी की तरह चमकता है।

आखिर में, तीसरी बात: क्योंकि प्रभु का राज है, इसलिए हमें धन्यवाद देना चाहिए।

भजन संहिता 97:12 को देखिए: "हे धर्मियों, प्रभु में आनन्दित होओ, और उसके पवित्र नाम का स्मरण करके धन्यवाद करो।" भजनकार इसलिए आनन्दित और खुश था क्योंकि परमेश्वर का राज है; उसने बुराई से नफ़रत करके और अपने फ़ैसलों को प्रभु के फ़ैसलों के साथ मिलाकर परमेश्वर की पवित्रता का अनुकरण करने के अवसर के लिए धन्यवाद दिया, और उसने दूसरों को भी उस धन्यवाद में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया। इसलिए, हमें भी धन्यवाद देना चाहिए। हमारे पास लगातार धन्यवाद देने की हर वजह है: परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र, यीशु को इस धरती पर भेजा, और क्रूस पर उसकी मृत्यु और उसके पुनरुत्थान के ज़रिए हमें उद्धार की कृपा दी; इसके अलावा, हमारे भीतर रहने वाली पवित्र आत्मा हमें पवित्र बनाने के लिए काम करती है, जिससे हम परमेश्वर की पवित्रता में भागीदार बन सकें। ऐसी महान कृपा हमें परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिए प्रेरित करती है। पूरी भजन संहिता में, हमें अक्सर यह घोषणा मिलती है: "प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसका अटूट प्रेम सदा बना रहता है" (107:1)। परमेश्वर भला है। उसका अटूट प्रेम अनंत है। जैसे-जैसे हम उसकी भलाई का अनुभव करते हुए और उसके अनंत अटूट प्रेम को महसूस करते हुए जीते हैं, हमें उस परमेश्वर का दिल से धन्यवाद करना चाहिए जो हम पर राज करता है।

क्योंकि प्रभु का राज है, इसलिए हमें आनन्दित और खुश होना चाहिए। क्योंकि प्रभु का राज है, इसलिए हमें बुराई से नफ़रत करनी चाहिए। और क्योंकि प्रभु का राज है, इसलिए हमें धन्यवाद देना चाहिए।

“प्रभु के लिए नया गीत गाओ”

[भजन संहिता 98]

क्या आपने कभी मुश्किल या कठिन समय में परमेश्वर की स्तुति की है? क्या आपने कभी उस शांति का अनुभव किया है जो परमेश्वर स्तुति के द्वारा आपके हृदय को देता है? कल रात के खाने के बाद, मैं चार डीकन (मंडली के सेवकों) के साथ डेज़र्ट (मीठा) खाने के लिए एक कॉफ़ी शॉप में गया। जब मैंने उनमें से एक से पूछा कि जब वे भावनात्मक रूप से दुखी होते हैं तो क्या करते हैं, तो उन्होंने जवाब दिया कि वे गाते हैं; वहीं कॉफ़ी शॉप में, उन्होंने भजन 543, “प्रेसिंग ऑनवर्ड” (जिसे “हायर ग्राउंड” के नाम से भी जाना जाता है) का पहला पद गाया। मुझे उम्मीद नहीं थी कि वे सचमुच ऐसी सार्वजनिक जगह पर गाएंगे... हाहा। आज सुबह की प्रार्थना सभा में पढ़े गए अंश में—खासकर भजन संहिता 68:35 के दूसरे भाग में—भजनकार दाऊद घोषणा करता है: “...इस्राएल का परमेश्वर अपने लोगों को शक्ति और सामर्थ्य देता है; परमेश्वर की स्तुति हो।” परमेश्वर ही हमें शक्ति और सामर्थ्य देता है; जब हम कठिनाई के समय में उसकी स्तुति करते हैं, तो हम उसी शक्ति और सामर्थ्य को पाने की कृपा का अनुभव करते हैं।

आज, भजन संहिता 98:1–9 और “प्रभु के लिए नया गीत गाओ” शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं इस बात पर विचार करना चाहता हूँ कि हमें परमेश्वर के लिए नया गीत क्यों गाना चाहिए, साथ ही किसे और कैसे गाना चाहिए, और उससे मिलने वाली सीख को ग्रहण करना चाहता हूँ।

पहला, हमें प्रभु के लिए नया गीत क्यों गाना चाहिए?

इसका कारण परमेश्वर द्वारा किए गए अद्भुत कार्य हैं। आज के पाठ में भजन संहिता 98:1 को देखें: "प्रभु के लिए नया गीत गाओ, क्योंकि उसने अद्भुत कार्य किए हैं; उसके दाहिने हाथ और उसकी पवित्र भुजा ने उसके लिए उद्धार का कार्य किया है।" यहाँ, "अद्भुत कार्यों" का अर्थ अंततः "उद्धार" से है। दूसरे शब्दों में, प्रभु के लिए नया गीत गाने का कारण वह उद्धार है जो परमेश्वर ने हमें दिया है। हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए क्योंकि उसने उस उद्धार को पूरा किया है जिसका वादा उसने हमसे, यानी अपने चुने हुए लोगों से किया था (पार्क युन-सन)। परमेश्वर ने "अपने दाहिने हाथ और अपनी पवित्र भुजा" से हमें बचाया। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने आपको और मुझे अपने दाहिने हाथ की महान शक्ति और दैवीय तरीकों से बचाया (पार्क युन-सन)। उन्होंने अपने इकलौते बेटे, यीशु मसीह को इस धरती पर हम जैसे लोगों के लिए क्रूस पर मरने के लिए क्यों भेजा? क्या यह हमारी भलाई के लिए था? आज के पाठ की पहली आयत में, बाइबल कहती है कि परमेश्वर ने "अपनी ही भलाई के लिए" उद्धार दिया। इसका मतलब है कि परमेश्वर ने आपको और मुझे अपनी महिमा दिखाने के लिए बचाया (पार्क युन-सन)। इसलिए, भजनकार कहता है: "प्रभु ने अपना उद्धार प्रकट किया है; उसने सभी देशों के सामने अपनी धार्मिकता दिखाई है" (आयत 2)। इस्राएल के लोगों को बचाकर, परमेश्वर ने "पृथ्वी के सभी कोनों" को हमारे परमेश्वर का उद्धार दिखाया (आयत 3)। परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों के लिए उद्धार का यह काम क्यों किया, इसका कारण इस प्रकार बताया गया है: "उसने इस्राएल के घराने के प्रति अपनी दया और अपनी सच्चाई को याद रखा है; पृथ्वी के सभी कोनों ने हमारे परमेश्वर का उद्धार देखा है" (आयत 3)। परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को उद्धार इसलिए दिया क्योंकि वह उनके प्रति दयालु और सच्चा था। उस दया और सच्चाई को याद करते हुए, परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को उद्धार दिया। इसीलिए भजनकार हमें एक नए गीत के साथ परमेश्वर की स्तुति करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

दूसरी बात, प्रभु की स्तुति में नया गीत किसे गाना चाहिए?

"सारी पृथ्वी को।" आज का पाठ, भजन संहिता 98:4 देखें: "हे सारी पृथ्वी, प्रभु के लिए खुशी से जय-जयकार करो; गीत गाओ, आनंद मनाओ और स्तुति करो।" परमेश्वर के महान प्रेम और सच्चाई से उद्धार पाने के बाद, इस्राएल के लोगों को उसकी स्तुति करनी चाहिए। न केवल इस्राएल के लोगों को, बल्कि हमें भी एक नए गीत के साथ परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। हमें उस उद्धार की कृपा के लिए परमेश्वर की स्तुति करनी

चाहिए जो उसने हमें दी है। परमेश्वर, जिसने प्रेम से इस्राएल के लोगों को चुना और पुराने नियम के समय में उन्हें उद्धार का वादा किया था, उसने ईमानदारी से उस वादे को पूरा किया और उद्धार का काम पूरा किया। नए नियम के समय में, उद्धार का वह काम सभी देशों में पृथ्वी के कोनों तक पूरा हो गया है (आयत 3) (पार्क युन-सन)। इसलिए, सभी देशों को, जो परमेश्वर की दया और सच्चाई के माध्यम से उद्धार की कृपा का आनंद लेते हैं, एक नए गीत के साथ उसकी स्तुति करनी चाहिए। भजनकार कहते हैं कि न केवल सभी देशों को, बल्कि पूरी सृष्टि को भी एक नए गीत के साथ परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए: "समुद्र और उसमें जो कुछ है, वे सब गरजें; संसार और उसमें रहने वाले सब लोग; नदियाँ तालियाँ बजाएँ; पहाड़ प्रभु के सामने मिलकर आनन्द मनाएँ" (पद 7–8)। यह "समुद्र और उसमें जो कुछ है," "संसार और उसमें रहने वाले लोग," साथ ही "नदियों" और "पहाड़ों" के लिए एक बुलावा है कि वे सब मिलकर परमेश्वर की स्तुति करें। क्योंकि यीशु मसीह के उद्धार के काम का नतीजा पूरी सृष्टि का नयापन है—न केवल उन लोगों का जिन्हें परमेश्वर ने चुना है—इसलिए पूरी सृष्टि को भी एक नए गीत के साथ परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। रोमियों 8:21 पर विचार करें: "कि सृष्टि स्वयं भी विनाश की गुलामी से छुटकारा पाकर परमेश्वर की सन्तानों की महिमापूर्ण स्वतंत्रता में प्रवेश करेगी।" सृष्टि स्वयं—ठीक आपकी और मेरी तरह, जो परमेश्वर की सन्तानें हैं—विनाश की गुलामी से आज़ाद होने की इच्छा रखती है और उस पल का इंतज़ार करती है। इसलिए, सृष्टि को भी उम्मीद और आशा से भरी खुशी-खुशी स्तुति करनी चाहिए।

तीसरी बात, हम प्रभु की स्तुति का नया गीत कैसे गाएँ?

(1) हमें खुशी के साथ प्रभु की स्तुति करनी चाहिए।

भजन संहिता 98 के पद 4, 6 और 8 को देखें: "हे सारी पृथ्वी, प्रभु के लिए खुशी से जय-जयकार करो; संगीत के साथ खुशी के गीत गाओ" (पद 4); "राजा प्रभु के सामने तुरहियों और मेढ़े के सींग की आवाज़ के साथ खुशी से जय-जयकार करो" (पद 6); "नदियाँ तालियाँ बजाएँ, पहाड़ प्रभु के सामने खुशी से मिलकर गाएँ" (पद 8)। जब हम प्रभु परमेश्वर के लिए नया गीत गाने में पूरी सृष्टि के साथ शामिल होते हैं, तो हमें खुशी के साथ ऐसा करना चाहिए। इसका कारण वह उद्धार है जो परमेश्वर ने हमें यीशु मसीह के द्वारा दिया है।

खासकर, क्योंकि हमारे पास उद्धार की खुशी है, इसलिए हमें उसी खुशी में डूबे हुए परमेश्वर की खुशी-खुशी स्तुति करनी चाहिए।

(2) हमें संगीत वाद्ययंत्रों का इस्तेमाल करके प्रभु की स्तुति करनी चाहिए। भजन संहिता 98 की आयत 5 और 6 को देखिए: "वीणा बजाकर यहोवा का भजन गाओ; हाँ, वीणा और गाने की आवाज़ के साथ; तुरहियों और मेढ़े के सींग की आवाज़ के साथ—राजा यहोवा के सामने खुशी से जय-जयकार करो।" जैसे भजनकार हमें वीणा, तुरही, मेढ़े के सींग और अपनी आवाज़ से परमेश्वर की स्तुति करने के लिए प्रेरित करता है, वैसे ही जब भी हम परमेश्वर के उद्धार की कृपा पर विचार करते हैं, तो हमें भी खुशी-खुशी उनकी स्तुति करने के लिए हर तरह के संगीत वाद्ययंत्रों का इस्तेमाल करना चाहिए। इस साल की शुरुआत में, मैं स्वर्गीय श्रीमती जांग यूल-सू और स्वर्गीय रेवरेंड किम चांग-ह्युक के अंतिम संस्कार में शामिल हुआ था; दोनों ही मौकों पर हमने भजन नंबर 40, "हाउ ग्रेट दाऊ आर्ट" (आप कितने महान हैं) गाया—एक ऐसा भजन जिसे वे जीवन भर पसंद करते थे और गाते थे। वे ऐसे लोग थे जिन्होंने अपनी आखिरी सांस तक प्रभु की महानता और महिमा की स्तुति की। मुझे याद है कि परमेश्वर की उद्धार करने वाली कृपा के कारण उनकी आँखों में कृतज्ञता और श्रद्धा के आँसू आ जाते थे। मुझे यह भी याद है कि वे भजन संहिता 23 का पाठ करते थे, जिसकी शुरुआत "यहोवा मेरा चरवाहा है; मुझे किसी बात की कमी न होगी" से होती थी और अंत "निश्चय ही भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ रहेगी, और मैं सदा यहोवा के भवन में वास करूँगा" के साथ होता था। इस धरती पर उनके आखिरी पल सचमुच बहुत सुंदर थे, जो प्रभु की महानता और महिमा की स्तुति से भरे हुए थे। उनकी तरह, मैं भी ऐसा जीवन जीना चाहता हूँ जो प्रभु की महानता और महिमा की स्तुति करे, और अंत में मैं उनकी उपस्थिति में खड़ा हो सकूँ।

परमेश्वर के शासन में कलीसिया

[भजन संहिता 99]

"जो लोग आँसू बहाते हुए बीज बोते हैं, वे खुशी के गीतों के साथ फसल काटेंगे। जो लोग रोते हुए बीज बोने जाते हैं, वे खुशी के गीतों के साथ लौटेंगे और अपने साथ फसल की पूली लाएंगे" (भजन संहिता 126:5-6)। जब इस्राएल के लोग बेबीलोन में बंधुआई में रह रहे थे, तो उन्होंने मुश्किलों का सामना किया और कठिनाइयों के बावजूद अपना विश्वास बनाए रखा। इसके जवाब में, परमेश्वर ने उन्हें उद्धार का अनुग्रह दिया, जिससे वे यरूशलेम लौट सके और उन्हें छुटकारा पाने की खुशी मिली। नतीजतन, लौटने पर इस्राएलियों ने कहा, "यह एक सपने जैसा था" (पद 1)। उन्होंने ईश्वरीय उद्धार के ऐसे काम का अनुभव किया जो किसी भी उम्मीद या कल्पना से परे था। इस अंश पर मनन करते हुए, मुझे आशा के महत्व की याद आई। मुझे यह एहसास हुआ कि विश्वासियों के रूप में, हमें सपने देखना और प्रभु की ओर देखना जारी रखना चाहिए—जो हमारी सच्ची आशा हैं—तब भी जब हम ऐसी मुश्किलों का सामना कर रहे हों कि हार मान लेना चाहते हों, या जब हम निराशा और हताशा से घिर गए हों। इस सच्चाई पर विचार करते हुए कि परमेश्वर कभी भी हमारा साथ नहीं छोड़ते—और वास्तव में छोड़ *नहीं सकते*—भले ही हम खुद को, अपने परिवारों को, अपने कार्यस्थलों को, अपने व्यवसायों को, अपनी कलीसियाओं को या समाज को छोड़ने के लिए ललचाएं, मैं प्रभु में सपने देखने के लिए प्रेरित होता हूँ। इसीलिए हम प्रार्थना करते हैं, उम्मीद करते हैं और प्रतीक्षा करते हैं।

मुझे भजन संहिता 126 का संदेश विशेष रूप से हमारी स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन कलीसिया को ध्यान में रखते हुए मिला। मैं स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन कलीसिया के भविष्य के लिए प्रार्थना करता हूँ, उम्मीदें रखता हूँ और प्रतीक्षा करता हूँ। चाहे निराशा या हताशा कितनी भी गहरी क्यों न हो जाए, मेरी इच्छा है कि मैं प्रभु में सपने देखता रहूँ। मैं ऐसे नेताओं को तैयार करने और भेजने का सपना देखता रहता हूँ जिनके पास मसीह-केंद्रित

दृष्टि हो—गिदोन के 300 योद्धाओं जैसे नेता—ताकि परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाया जा सके। भजन 542 की पहली पंक्ति और कोरस याद आते हैं: "हे प्रभु, कल रात मैंने आपको सपने में देखा; कृपया उस सपने को सच कर दें। मुझे रात-दिन दर्शनों में यह दिखाएं, और मुझ पर हमेशा अपनी कृपा बनाए रखें। (कोरस) मुझे पूरा विश्वास है कि यह अद्भुत सपना उस महान कृपा का संकेत है जो मुझे मिलेगी; मेरा अद्भुत सपना ज़रूर सच होगा, और मैं प्रभु का चेहरा देखूंगा।"

एक सपने देखने वाले के तौर पर, आज भजन 99:1–9 पर मनन करते हुए, मैंने सोचा कि हमारी कलीसिया कैसी होनी चाहिए। जैसे हमने पहले भजन 93 और 97 पर मनन किया था, वैसे ही आज के हिस्से—भजन 99—में विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के लिए मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर हमारी मंडली पर राज करे। आज, "परमेश्वर के शासन में कलीसिया" शीर्षक के तहत, मैं ऐसी कलीसिया के स्वभाव के बारे में तीन बातें बताना चाहता हूँ, और फिर हम सब मिलकर अपनी कलीसिया के लिए प्रार्थना करेंगे।

पहली बात, परमेश्वर के शासन में रहने वाली कलीसिया की पहचान कांपने, स्तुति करने और आराधना करने से होती है।

भजन 99 की आयतें 1, 3, 5 और 9 देखें: "प्रभु राज करता है; लोग कांपें! वह करूबों पर विराजमान है; पृथ्वी कांपे! ... वे तेरे महान और अद्भुत नाम की स्तुति करें! वह पवित्र है! ... हमारे प्रभु परमेश्वर की महिमा करो, और उसके चरणों के पास आराधना करो! वह पवित्र है! ... हमारे प्रभु परमेश्वर की महिमा करो, और उसके पवित्र पर्वत पर आराधना करो; क्योंकि हमारा प्रभु परमेश्वर पवित्र है!" भजनकार कहता है कि क्योंकि परमेश्वर राज करता है, इसलिए सभी लोग कांपेंगे और पृथ्वी हिलेगी। यह प्रभु के महान और अद्भुत नाम के कारण है। दूसरे शब्दों में, क्योंकि परमेश्वर पवित्र है, हमें डर और कांपते हुए उसकी स्तुति और आराधना करनी चाहिए। यही उस कलीसिया का सार है जो परमेश्वर की महिमा करती है। जब हमारी कलीसिया के संस्थापक पादरी ने विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च की स्थापना की, तो उन्होंने तीन मुख्य लक्ष्य तय किए: (1) ऐसी कलीसिया जो प्रभु का स्वागत करती है, (2) ऐसी कलीसिया जो प्रभु जैसी है, और (3) ऐसी कलीसिया जो प्रभु की महिमा (बड़ाई) करती है। आज के वचन के अनुसार, प्रभु की महिमा करने वाली कलीसिया होने का अर्थ है पवित्र परमेश्वर के सामने डर और आदर के साथ उनकी स्तुति और आराधना करना। सृष्टि के प्राणी होने के नाते,

हमें सृष्टिकर्ता—पवित्र और महान परमेश्वर—का आदर करना चाहिए और उनकी स्तुति व आराधना करनी चाहिए। यह सृष्टि के सभी प्राणियों का उचित कर्तव्य है।

हालाँकि, जिस युग में हम जी रहे हैं, उसमें लोग परमेश्वर के सत्य को झूठ से बदल देते हैं और सृष्टिकर्ता के बजाय बनाई गई चीज़ों की आराधना और सेवा करते हैं (रोमियों 1:25)। न तो परमेश्वर के प्रति कोई आदर है और न ही पवित्र परमेश्वर का कोई भय। नतीजतन, लोग परमेश्वर के सत्य को झूठ से बदलने और बनाई गई चीज़ों की आराधना करने का पाप करते हैं। यह पापी संसार, जो परमेश्वर की प्रभुता को अस्वीकार करता है, बिना किसी डर या कांपने के पवित्र परमेश्वर के विरुद्ध गंभीर पाप करता है। यही बात कुछ धार्मिक समूहों पर भी लागू होती है; वे अपने नेताओं को देवता मानकर और उनकी आराधना करके परमेश्वर के विरुद्ध बड़ा पाप करते हैं। यहाँ तक कि कलीसिया के भीतर भी, सृष्टिकर्ता परमेश्वर की आराधना और महिमा करने के बजाय स्वयं को ऊँचा उठाने और अपनी आराधना करने का पाप कभी नहीं होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, चूँकि कलीसिया परमेश्वर के शासन के अधीन है, इसलिए उसे डर और आदर के साथ केवल परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए और उन्हें वह स्तुति और आराधना देनी चाहिए जिसके वे योग्य हैं।

दूसरा, परमेश्वर द्वारा संचालित कलीसिया की शक्ति न्याय के प्रति उसके प्रेम में निहित है।

भजन संहिता 99:4 पर विचार करें: "राजा की शक्ति न्याय से प्रेम करती है; तूने निष्पक्षता स्थापित की है; तूने याकूब में न्याय और धार्मिकता को क्रियान्वित किया है।" भजनकार घोषणा करता है, "राजा की शक्ति न्याय से प्रेम करती है।" यह अंश हमें यह गहरा सत्य सिखाता है कि न्याय ही शक्ति है (पार्क युन-सन)। जब इसे कलीसिया पर लागू किया जाता है, तो उसकी शक्ति का स्रोत न्याय के प्रति प्रेम के अलावा कुछ नहीं होता; वास्तव में, न्याय से प्रेम करना ही हमारी कलीसिया की वास्तविक शक्ति और क्षमता है। कई मायनों में, आज दुनिया को कलीसिया के शक्तिहीन और अप्रभावी लगने का कारण न्याय से प्रेम करने, निष्पक्षता स्थापित करने और न्याय व धार्मिकता का पालन करने में उसकी विफलता है। यदि हम, इस टेढ़ी-मेढ़ी दुनिया में रहने वाले विश्वासियों के रूप में, न्याय और धार्मिकता का पालन करने में विफल रहते हैं, तो हमने मसीहियों के रूप में अपनी शक्ति पहले ही खो दी है। नतीजतन, हम दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डालने में असमर्थ हैं। प्रभाव के इस नुकसान का मूल कारण परमेश्वर के न्याय से प्रेम करने और उसका पालन करने में हमारी विफलता है।

हमारे प्रभु की हमारी कलीसिया से विशेष अपेक्षाएँ हैं। मीका 7:8 को देखिए: "हे मनुष्य, उसने तुझे बता दिया है कि क्या अच्छा है; और प्रभु तुझसे क्या चाहता है, सिवाय इसके कि तू न्याय करे, दया से प्रेम करे और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले?" परमेश्वर, जो हम पर शासन करता है, बस यही चाहता है कि हम न्यायपूर्ण व्यवहार करें, दया से प्रेम करें और उसके साथ नम्रता से चलें। इसलिए, प्रभु की इच्छा का पालन करते हुए, हमें एक ऐसी कलीसिया बनना चाहिए जो न्याय करती हो, दया से प्रेम करती हो और परमेश्वर के साथ नम्रता से चलती हो। खासकर, आज के वचन के आधार पर, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारी कलीसिया—परमेश्वर के न्याय से प्रेम करके और उसका पालन करके—प्रभु को हमारे बीच और हमारी सेवा के माध्यम से निष्पक्षता को मजबूती से स्थापित करते हुए देखे।

तीसरी बात, परमेश्वर के शासन के अधीन कलीसिया एक प्रार्थना करने वाली कलीसिया होती है।

भजन संहिता 99:6 को देखिए: "मूसा और हारून उसके याजकों में से थे, और शमूएल उन लोगों में से था जो उसके नाम का आह्वान करते थे; उन्होंने प्रभु को पुकारा, और उसने उन्हें उत्तर दिया।" यहाँ, भजनकार तीन आदर्श व्यक्तियों का परिचय देता है जो पुराने नियम की कलीसिया का प्रतिनिधित्व करते हैं—मूसा, हारून और शमूएल—और उनके माध्यम से परमेश्वर के कार्यों के बारे में बताता है। दूसरे शब्दों में, वह परमेश्वर की कलीसियाई सेवा के सिद्धांतों को प्रस्तुत करता है (पार्क युन-सन)। वह सिद्धांत प्रार्थना के अलावा और कुछ नहीं है। मूसा, हारून और शमूएल प्रार्थना करने वाले व्यक्ति थे जिन्होंने कलीसिया के लिए मध्यस्थता की। वे ऐसे व्यक्ति भी थे जिन्हें परमेश्वर से अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर मिला (निर्गमन 17:11; गिनती 16:43; 1 शमूएल 7:8–9; 9:12) (पार्क युन-सन)। एक दिलचस्प बात यह है कि आज के वचन की आयतों 7–8 में, भजनकार प्रार्थना का उत्तर पाने के लिए एक या दो योग्यताओं का वर्णन करता है:

(1) प्रार्थना का उत्तर पाने के लिए, व्यक्ति को परमेश्वर के वचन का पालन करना चाहिए।

भजन संहिता 99:7 को देखिए: "उसने उनसे बादल के खंभे में बात की; उन्होंने उसकी गवाही और उसके द्वारा दिए गए नियमों का पालन किया।" परमेश्वर के शासन के अधीन रहने वाला विश्वासी परमेश्वर के वचन को सुनता है और उसका पालन करता है। परिणामस्वरूप, वे निष्पक्ष निर्णय लेने और न्याय का अभ्यास करने में सक्षम होते हैं। भजनकार हमें सिखाता है कि परमेश्वर ऐसे विश्वासियों की प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। (2) प्रार्थना का उत्तर पाने के लिए, व्यक्ति को पापों की क्षमा प्राप्त करनी चाहिए। आज के वचन, भजन संहिता 99:8 को देखिए: "हे प्रभु हमारे परमेश्वर, तूने उनकी सुनी; तू उनके लिए क्षमा करने वाला परमेश्वर था—भले ही तूने उनके कामों का बदला लिया।" हमारा परमेश्वर न्याय करने वाला परमेश्वर है; इसलिए, वह हमारे पापों के लिए हमें अनुशासित करता है। फिर भी, वह प्रेम करने वाला परमेश्वर भी है; इसलिए, जब हम अपने पापों के लिए पश्चाताप करते हैं, तो वह हमें क्षमा कर देता है।

हमारा चर्च परमेश्वर के शासन के अधीन चलने वाला चर्च होना चाहिए। इसलिए, हमें पूरे मन से प्रार्थना में खुद को समर्पित करना चाहिए। परमेश्वर के चर्च का काम उन लोगों के द्वारा पूरा होता है जो पूरी तरह से प्रार्थना के प्रति समर्पित होते हैं। दूसरे शब्दों में, प्रभु मूसा, हारून और शमूएल जैसे प्रार्थना करने वाले लोगों के माध्यम से अपने चर्च—अपनी देह—का निर्माण करता है। ऐसे प्रार्थना करने वाले लोग वे होते हैं जिन्हें अपने पापों की क्षमा मिल गई है और जो परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु आपको और मुझे ऐसे प्रार्थना करने वाले लोगों के रूप में स्थापित करे ताकि हम उसके चर्च का निर्माण कर सकें। परमेश्वर के शासन के अधीन चर्च आदर-भरे भय, प्रशंसा और आराधना से भरा होता है। इसके अलावा, परमेश्वर द्वारा संचालित चर्च की शक्ति न्याय के प्रति उसके प्रेम में निहित है। और परमेश्वर के शासन के अधीन चर्च प्रार्थना करता है। मैं सपना देखता हूँ कि हमारा चर्च ऐसा विजयी चर्च बने।

हमें परमेश्वर के पास कैसे जाना चाहिए?

[भजन संहिता 100]

पिछले रविवार की अंग्रेज़ी सर्विस के दौरान, प्रेरितों के काम 15:22–35 पर ध्यान देते हुए, मैंने मंडली को प्रोत्साहित किया कि वे एक-दूसरे को उन अनुभवों के ज़रिए दिलासा दें जो प्रभु हमें हफ़्ते भर के दौरान देते हैं। फिर, पिछले मंगलवार को, सुबह की प्रार्थना सभा के बाद, मैंने पादरी स्टाफ़ के एक सदस्य और उनकी पत्नी के साथ नाश्ता और कॉफ़ी ली; उनसे बातचीत करते हुए, मैंने पाया कि उन्हें दिलासा देने के बजाय मुझे ही दिलासा मिल रहा था। ख़ास तौर पर, जब पादरी की पत्नी ने उस भरपूर अनुग्रह के बारे में बताया जो परमेश्वर उन लोगों पर बरसाते हैं जो *कोराम देओ* (परमेश्वर की उपस्थिति में) विश्वास का जीवन जीते हैं, तो हमने साथ मिलकर खुशी मनाई और उनका धन्यवाद किया। तो फिर, परमेश्वर के सामने विश्वास का जीवन असल में कैसा होता है? *कोराम देओ* जीवन वह जीवन है जो परमेश्वर की उपस्थिति में जिया जाता है। परमेश्वर-केंद्रित सोच पर आधारित यह जीवन हमें अंततः उनके सामने बिना किसी शर्म के जीने में सक्षम बनाता है। जब हम इस तरह जीते हैं—परमेश्वर के सामने बिना शर्म के—तो जब हम उनकी स्तुति और आराधना करने के लिए उनके पास जाते हैं, तो हमारे दिल आज़ाद होते हैं।

आज, भजन संहिता 100 पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं इस पाठ से तीन बातें बताना चाहूँगा जो इस सवाल का जवाब देती हैं: "हमें परमेश्वर के पास कैसे जाना चाहिए?"

पहला, हमें परमेश्वर के पास धन्यवाद के साथ जाना चाहिए।

भजन संहिता 100:4 को देखें: "धन्यवाद करते हुए उसके फाटकों में और स्तुति करते हुए उसके आंगनों में प्रवेश करो; उसका धन्यवाद करो और उसके नाम की स्तुति करो।" जब हम आराधना करने के लिए प्रभु के

घर में आते हैं, तो हमें कृतज्ञता भरे दिल के साथ प्रवेश करना चाहिए। हमें परमेश्वर की स्तुति और आराधना करने के लिए धन्यवाद भरे दिल के साथ पवित्र स्थान में क्यों प्रवेश करना चाहिए? भजनकार इसका कारण इस प्रकार बताते हैं: "क्योंकि प्रभु भला है; उसकी दया सदा की है, और उसकी सच्चाई पीढ़ी-दर-पीढ़ी बनी रहती है" (पद 5)। परमेश्वर की आराधना धन्यवाद के साथ करने के लिए प्रभु के घर जाने का कारण यह है कि परमेश्वर भले हैं, और हमारे प्रति उनकी दया और सच्चाई हमेशा बनी रहने वाली है। दूसरे शब्दों में, ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर दया और सच्चाई के गुणों के द्वारा अपने लोगों का उद्धार करते हैं। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "परमेश्वर अपने संतों से केवल कुछ समय के लिए प्यार नहीं करते, ताकि बीच में ही अपना मन बदल लें। संतों के जीवन में भी कई उतार-चढ़ाव आते हैं। उनके रास्ते कभी मुश्किल तो कभी आसान हो सकते हैं। फिर भी, ये सभी बातें उनके भले के लिए ही काम करती हैं; ये सब प्रभु की प्रेमपूर्ण सलाह का ही हिस्सा हैं। हमारे प्रति उनकी वफादार देखभाल पीढ़ियों तक बनी रहती है।" यीशु मसीह के द्वारा हमें मिले उद्धार की कृपा पर विचार करते हुए, हमें धन्यवाद के साथ परमेश्वर की आराधना करने के लिए प्रभु के घर जाना चाहिए।

आपके साथ कैसा होता है? क्या आप रविवार को धन्यवाद भरे दिल से परमेश्वर की आराधना करने के लिए प्रभु के घर आते हैं? अक्सर ऐसा लगता है कि जब हम चर्च जाते हैं तो शैतान हमें लुभाता है, हमें पवित्र स्थान में कदम रखने से रोकने की कोशिश करता है और हमें घर वापस लौटने के लिए उकसाता है। कई बार ऐसा होता है कि पति-पत्नी के बीच बहस के कारण लोग पवित्र स्थान में प्रवेश किए बिना ही घर लौट जाते हैं। सच तो यह है कि रविवार को धन्यवाद भरे दिल से पवित्र स्थान में आना आसान नहीं है। हो सकता है कि आप अलग-अलग परिस्थितियों के कारण परेशान मन से आएं, या चिंता और घबराहट से भरे भारी मन के साथ पवित्र स्थान में प्रवेश करें। फिर भी, आज के वचन में भजनकार हमें धन्यवाद भरे दिल से परमेश्वर की आराधना करने के लिए प्रभु के घर जाने का आग्रह करते हैं। आइए हम सब प्रभु के घर आएं और उस उद्धार की कृपा पर विचार करते हुए, जो उन्होंने यीशु मसीह के माध्यम से हमें दी है, कृतज्ञता से भरे दिलों के साथ परमेश्वर की आराधना करें।

दूसरी बात, हमें यह जानते हुए परमेश्वर के पास आना चाहिए कि वे कौन हैं।

भजन संहिता 100:3 देखें: “जान लो कि यहोवा ही परमेश्वर है। उसी ने हमें बनाया है, और हम उसी के हैं; हम उसकी प्रजा हैं, उसकी चरागाह की भेड़ें हैं।” इस दौर में—जिसे “यहोवा के वचन सुनने का अकाल” (आमोस 8:11) कहा गया है—हम लोगों की उस दुखद सच्चाई को देखते हैं जिनके कान तो हैं, लेकिन वे प्रभु की आवाज़ नहीं सुन पाते। खासकर, जब हम पादरी—होशे के दिनों के इस्राएल के याजकों की तरह—परमेश्वर के ज्ञान को छोड़ देते हैं और उनके नियम (उनके वचन) को भूल जाते हैं, तो झुंड को नुकसान उठाना पड़ता है; भटकी हुई भेड़ों की तरह, वे आध्यात्मिक रूप से भूखे और कुपोषित हैं, और शैतान के प्रलोभनों से हर तरफ़ परेशान हैं। ऐसे समय में, हमें "जानना चाहिए; आइए हम प्रभु को जानने के लिए आगे बढ़ें" (होशे 6:3)। हमें यीशु के ज्ञान में बढ़ना चाहिए। इसलिए, प्रेरित पतरस की तरह, जब यीशु पूछते हैं, "तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?" (मत्ती 16:15), तो हमें ऐसे विश्वासी बनना चाहिए जो स्वीकार करें, "आप मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र" (पद 16)। आज के वचन, भजन संहिता 100:3 में, भजनकार हमें प्रोत्साहित करते हैं: "जान लो कि प्रभु ही परमेश्वर है।" वह हमें यह पहचानने के लिए कहते हैं कि परमेश्वर ही हमारा सृष्टिकर्ता है जिसने हमें बनाया है और वह चरवाहा भी है जो हमारी देखभाल करता है। इसलिए, वह हमें बताते हैं कि क्योंकि हम "उसके" हैं, "उसके लोग" हैं, और "उसके चरागाह की भेड़ें" हैं (पद 3), हमें प्रभु को अपने परमेश्वर के रूप में स्वीकार करना और पहचानना चाहिए, और इस प्रकार उसकी स्तुति और आराधना करने के लिए प्रभु के घर जाना चाहिए।

तीसरी और आखिरी बात, हमें खुशी के साथ परमेश्वर के पास जाना चाहिए।

भजन संहिता 100:1–2 को देखें: "हे सारी पृथ्वी, प्रभु के लिए खुशी की जय-जयकार करो! खुशी के साथ प्रभु की सेवा करो; गाते हुए उसके सामने आओ।" जब हम स्तुति और आराधना करने के लिए प्रभु के घर आते हैं, तो हमें न केवल धन्यवाद के साथ—परमेश्वर को परमेश्वर के रूप में स्वीकार करते हुए—बल्कि खुशी के साथ भी ऐसा करना चाहिए। हमें खुशी के साथ परमेश्वर की स्तुति और आराधना क्यों करनी चाहिए? हम तीन कारणों पर विचार कर सकते हैं: (1) क्योंकि परमेश्वर ने हमें बचाया है, इसलिए हमें अपने भीतर उद्धार की खुशी से स्तुति और आराधना करनी चाहिए। (2) क्योंकि हमारा परमेश्वर हमारे लिए गाकर खुशी मनाता है (सपन्याह 3:17), इसलिए हमें भी परमेश्वर की खुशी से भरकर स्तुति और आराधना करनी चाहिए। (3) हमें खुशी के साथ स्तुति और आराधना करनी चाहिए क्योंकि हमारा परमेश्वर स्वयं ही हमारी खुशी है।

आज सुबह-सुबह, मैंने सपने में स्वर्गीय पादरी किम चांग-ह्युक को देखा। मुझे अच्छी तरह याद है कि वे कह रहे थे, "मैं हमेशा यहाँ नहीं रहूँगा।" उसी समय, मैंने देखा कि पेड़ों की शाखाएँ धीरे-धीरे एक-एक करके गायब हो रही थीं, जैसे ही उन पर पानी छिड़का जा रहा था। इसके बाद, मेरे रिश्तेदार मेरे पिता के आस-पास भजन गाने के लिए जमा हुए; हम भजन 544, "जब तक मैं इस दुनिया में हूँ," गा रहे थे, तभी मेरी नींद खुली। इसलिए, आज सुबह की प्रार्थना सभा में, जब मैंने परमेश्वर के लिए यह भजन गाया, तो मुझे पादरी और उन साथी विश्वासियों की याद आई जो पहले ही स्वर्ग जा चुके हैं। मेरी प्रार्थना है कि, जब हम धरती पर अपना जीवन बिता रहे हों—लगातार स्तुति-गीत गाते हुए—तो जब हमारा समय पूरा हो और प्रभु हमें अपने पास बुलाएँ, तब हम परमेश्वर की महिमापूर्ण उपस्थिति में प्रवेश कर सकें।

(पद 4) "मैं उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जब न कोई आह होगी और न ही मृत्यु; जब मैं उस प्रभु को देखूँगा जिसके लिए मैंने तरसा है, तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहेगा"; (कोरस) "मैं स्वर्ग के खुले द्वारों में प्रवेश करूँगा, इस दुनिया के बोझ उतार फेंकूँगा, एक चमकता हुआ मुकुट प्राप्त करूँगा, और प्रभु के साथ राज्य करूँगा।"

मैं प्रार्थना करता हूँ कि अपनी आखिरी साँस तक, मैं अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर का धन्यवाद करूँ, और—आनंद से भरकर—उनसे मिलने जाते समय अपनी स्तुति और आराधना अर्पित करूँ।

आदर्श राजा और उसकी आदर्श प्रजा

[भजन संहिता 101]

इस हफ़्ते जब अमेरिकी इवेंजेलिकल आंदोलन के जाने-माने नेता डॉ. जेम्स डॉब्सन टीवी पर आए, तो मैंने उनकी बातों पर ध्यान दिया। उन्होंने डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार सीनेटर ओबामा के बारे में कहा कि सीनेटर की "धार्मिक समझ उलझी हुई" है। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं था कि डॉ. डॉब्सन रिपब्लिकन उम्मीदवार सीनेटर जॉन मैक्केन को वोट देने का इरादा रखते थे; ऐसा लगता है कि वे किसी को भी वोट नहीं देंगे। मेरा मानना है कि इससे उनकी यह सोच पता चलती है कि बाइबिल के नज़रिए से देखने पर, राष्ट्रपति पद के लिए इनमें से कोई भी ईसाई उम्मीदवार सही नहीं है।

अब चार साल बीत चुके हैं। 13 मार्च, 2004 को—शनिवार की सुबह की प्रार्थना सभा के बाद—मुझे अपने देश से खबर मिली कि राष्ट्रपति रो मू-ह्यून पर महाभियोग चलाया गया है। मैंने 1 शमूएल 15:23 के इन शब्दों पर मनन किया: "क्योंकि तूने यहोवा के वचन को ठुकरा दिया है, इसलिए उसने तुझे राजा के पद से हटा दिया है।" इस आयत के ज़रिए, मैंने बाइबिल के नज़रिए से महाभियोग पर विचार किया। राजा शाऊल को हटाए जाने की कहानी पर मनन करते हुए, मुझे इस बात से तसल्ली मिली कि भले ही शाऊल को दुख और संकट के समय में हटा दिया गया था, लेकिन उसी दौर में राजा दाऊद को भी खड़ा किया गया था—जो परमेश्वर के मन के अनुसार चलने वाला व्यक्ति था। पूरे देश के लिए अपने राजा को हटाए जाते देखना कितना चौंकाने वाला रहा होगा! फिर भी, परमेश्वर पहले से ही किसी और को तैयार कर रहे थे। जब मैं खुद से पूछता हूँ कि राजा दाऊद परमेश्वर के मन के अनुसार क्यों था, तो 1 शमूएल 15:22 के मशहूर शब्द याद आते हैं: "आज्ञा मानना बलिदान से बेहतर है, और बात मानना मेढ़ों की चर्बी से बेहतर है।" संदेश यह है कि परमेश्वर के मन के अनुसार राजा वह है जो परमेश्वर के वचन को सुनता है और उसका पालन करता है। उस

समय, मैंने इस सच्ची प्रार्थना के साथ अपना मनन समाप्त किया कि परमेश्वर कोरिया के लिए ऐसा "राजा" (राष्ट्रपति) खड़ा करें जो उनके मन के अनुसार हो। हालाँकि, चार साल बाद, हमने अपने देश में बड़े पैमाने पर कैंडललाइट विरोध प्रदर्शन देखे—जो बीफ़ आयात समझौतों पर फिर से बातचीत की माँग के कारण शुरू हुए थे—और यह सब एक 'एल्डर' (बुज़ुर्ग/धार्मिक नेता) के राष्ट्रपति बनने के कुछ ही समय बाद हुआ। ऑनलाइन घटनाओं पर नज़र रखते हुए, मैंने राष्ट्रपति की आलोचना करने वाली कई बातें भी पढ़ीं। बाद में, मैं एक साथी ईसाई से मिला, जिनकी राय थी कि शायद राष्ट्रपति ने अहंकार में आकर ऐसा किया होगा। इतनी अलग-अलग राय के बीच, हममें से हर किसी के अपने-अपने विचार हो सकते हैं—न सिर्फ़ अपने देश के राष्ट्रपति के बारे में, बल्कि अमेरिका के मौजूदा राष्ट्रपति और नवंबर में होने वाले चुनाव में खड़े उम्मीदवारों के बारे में भी। कुछ पल के लिए, मैं चाहता हूँ कि हम उन विचारों को एक तरफ़ रख दें। इसके बजाय, भजन संहिता 101:1–8 पर ध्यान देते हुए, मैं चाहता हूँ कि हम एक आदर्श राजा के स्वभाव पर विचार करें और यह भी सोचें कि बाइबल हमें आदर्श लोगों के बारे में क्या सिखाती है।

सबसे पहले, आइए विचार करें: एक आदर्श राजा की असल पहचान क्या है? एक आदर्श राजा का दिल एकदम सही (या निष्कलंक) होता है। इसलिए, वह ईमानदारी और सच्चाई के रास्ते पर सावधानी से चलता है। आज के पाठ में भजन संहिता 101:2 को देखें: "मैं सावधानी से एक बेदाग़ ज़िंदगी जीऊँगा—आप मेरे पास कब आएँगे? मैं अपने घर के कामकाज एक बेदाग़ दिल से करूँगा।" यह "सही दिल" (perfect heart)—जिसे "बेदाग़ दिल" (NIV) या "ईमानदारी/सच्चाई वाला दिल" (NASB) कहा गया है—कैसा होता है, जो एक आदर्श राजा की पहचान है?

पहला, एक आदर्श राजा का दिल वह होता है जो दया और न्याय को महत्व देता है। भजन संहिता 101:1 को देखें: "मैं दया और न्याय के गीत गाऊँगा; हे प्रभु, मैं तेरी स्तुति के गीत गाऊँगा।" जब कोई राजा किसी देश और वहाँ के लोगों पर राज करता है, तो दया और न्याय बहुत ज़रूरी होते हैं। सिक्के के दो पहलुओं की तरह, ये दोनों गुण अपनी प्रजा पर राज करने वाले राजा के लिए बहुत ज़रूरी हैं। अगर दया या न्याय में से कोई एक भी न हो तो क्या होगा? न्याय के बिना दया कमज़ोरी की ओर ले जाती है, जबकि दया के बिना

न्याय ज़ुल्म या तानाशाही में बदल जाता है (पार्क युन-सन)। राजा दाऊद, जिन्होंने ये भजन लिखे थे, ने परमेश्वर की दया और न्याय के साथ इज़राइल के लोगों पर राज किया।

दूसरा, एक आदर्श राजा का सही दिल एक विनम्र दिल होता है।

भजन संहिता 101:3 को देखें: "मैं अपनी आँखों के सामने कोई बुरी चीज़ नहीं रखूँगा; मैं उन लोगों के कामों से नफ़रत करता हूँ जो भटक गए हैं; वे मुझ पर हावी नहीं होंगे।" यहाँ, "बुरी चीज़" शब्द का मतलब "धर्मत्याग की बुराई" (ईश्वर से मुँह मोड़ लेने की बुराई) से है। सत्ता में रहने वाले लोग आसानी से अहंकारी हो जाते हैं, जिससे वे सच्चाई से भटक सकते हैं और भ्रष्टाचार में पड़ सकते हैं (पार्क युन-सन)। हालाँकि, दाऊद ने परमेश्वर के सामने अपना दिल विनम्र रखा और धर्मत्याग की बुराई से नफ़रत की। उन्होंने खुद धर्मत्याग से पूरी तरह दूरी बनाए रखी। वे उसी चीज़ से प्यार करते थे जिससे प्यार किया जाना चाहिए और उसी चीज़ से नफ़रत करते थे जिससे नफ़रत की जानी चाहिए; खास तौर पर, वे दया और न्याय से प्यार करते थे जबकि धर्मत्याग की बुराई से नफ़रत करते थे।

तीसरी बात, एक आदर्श राजा का उत्तम हृदय कुटिल हृदय से दूर रहता है।

भजन संहिता 101:4 को देखें: "कुटिल हृदय मुझसे दूर रहेगा; मैं बुराई को नहीं जानूँगा।" यहाँ, "कुटिल हृदय" का अर्थ है धोखेबाज़ दिल—एक ऐसा जीवन जहाँ बाहरी दिखावा अंदर की सच्चाई से अलग हो (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, "कुटिल हृदय" का अर्थ है पाखंड। दाऊद ने ऐसे पाखंड—इस कुटिल हृदय—से दूरी बनाए रखी। जो राजा इस तरह से काम करता है, वह धोखेबाज़ दरबारियों को पहचानकर उन्हें दूर कर सकता है (पार्क युन-सन)। एक आदर्श राजा के मन में कोई धोखेबाज़ भावना नहीं होती; वह कभी ऐसा जीवन नहीं जीता जहाँ उसके बाहरी काम उसके अंदर के स्वभाव से अलग हों। राजा दाऊद एक आदर्श राजा थे जो पाखंड से नफ़रत करते थे और उससे दूर रहते थे।

आज के पाठ के आलोक में आदर्श राजा—भजनकार दाऊद—पर विचार करते हुए, मैंने एक आदर्श राष्ट्रपति के बारे में भी सोचा। एक आदर्श राष्ट्रपति उस देश के लोगों से प्यार करता है जिस पर वह शासन करता है।

यदि कोई बिना प्यार के केवल न्याय करता है, तो वह निश्चित रूप से एक अत्याचारी राष्ट्रपति बन जाता है। इसलिए, एक आदर्श राष्ट्रपति न केवल लोगों से प्यार करता है बल्कि उनके बीच न्याय भी करता है। न्याय के बिना प्यार निश्चित रूप से कमज़ोरी में बदल जाता है; ऐसा प्यार असंतुलित और दोषपूर्ण होता है। इस प्रकार, एक आदर्श राष्ट्रपति प्यार और न्याय में तालमेल बिठाता है और परमेश्वर द्वारा उसे सौंपे गए लोगों पर प्रभावी ढंग से शासन करता है। एक आदर्श राष्ट्रपति विनम्रता के साथ लोगों की सेवा करता है। वह कभी भी केवल इसलिए अपनी सत्ता का दुरुपयोग नहीं करता कि उसके पास शक्ति है, और न ही वह अहंकार के कारण बुरे काम करता है। एक आदर्श राष्ट्रपति पाखंड से दूर रहता है और धोखेबाज़ लोगों को अपने से दूर रखता है; वह कभी भी पाखंडी अधिकारियों को अपने करीबी दायरे में नहीं रखता।

इसके बाद, मैं इस बात पर विचार करना चाहूँगा: "एक आदर्श राजा की आदर्श प्रजा किस तरह के लोग होते हैं?" संक्षेप में, आदर्श प्रजा भी ईमानदारी के रास्ते पर चलती है। आज के पाठ में भजन संहिता 101:6 के दूसरे हिस्से को देखें: "...जो व्यक्ति ईमानदारी के रास्ते पर चलता है, वही मेरी सेवा करेगा।" हम "ईमानदारी के रास्ते पर चलने" को लगभग पाँच तरीकों से समझ सकते हैं:

पहला, आदर्श नागरिक अपने पड़ोसियों से प्यार करते हैं। भजन संहिता 101:5 के पहले हिस्से को देखें: "जो कोई चुपके से अपने पड़ोसी की बुराई करता है, मैं उसे नष्ट कर दूँगा..." यहाँ, "जो कोई चुपके से अपने पड़ोसी की बुराई करता है" का मतलब है "वह व्यक्ति जो छिपी हुई बुरी बातों से दूसरों को नुकसान पहुँचाता है" (पार्क युन-सन)। अगर किसी सरकार में ऐसे बहुत से लोग हों, तो वे धोखेबाज़ अधिकारियों की तरह काम करते हैं जो वफ़ादार नागरिकों को नुकसान पहुँचाते हैं। राजा दाऊद, जो भजन लिखने वाले हैं, कहते हैं कि एक आदर्श राजा ऐसे लोगों को नष्ट कर देता है। इस अंश से हम यह नतीजा निकाल सकते हैं कि आदर्श नागरिक वे नहीं हैं जो दूसरों को नुकसान पहुँचाते हैं, बल्कि वे हैं जो उनसे प्यार करते हैं।

दूसरा, आदर्श नागरिक विनम्र लोग होते हैं।

भजन संहिता 101:5 के दूसरे हिस्से को देखें: "...जिसकी नज़र घमंडी है और जिसका दिल अहंकारी है, उसे मैं बर्दाश्त नहीं करूँगा।" एक आदर्श राजा कभी भी अहंकारी लोगों को बर्दाश्त नहीं करता। अगर कोई अहंकारी व्यक्ति राज्य के कामों में शामिल होता है, तो वह दूसरों के प्रति नफ़रत भरी सोच के साथ लोगों के

साथ बुरा व्यवहार कर सकता है और ऊँचे पद की चाहत में देशद्रोह की साज़िश भी रच सकता है (पार्क युन-सन)। इसलिए, एक आदर्श राजा को आदर्श नागरिकों की ज़रूरत होती है—यानी विनम्र लोगों की।

तीसरा, आदर्श नागरिक वफ़ादार लोग होते हैं।

भजन संहिता 101:6 को देखें: "मेरी नज़र देश के वफ़ादार लोगों पर होगी, ताकि वे मेरे साथ रह सकें; जो व्यक्ति सही रास्ते पर चलता है, वही मेरी सेवा करेगा।" एक आदर्श राजा वफ़ादार लोगों को खोजने के लिए पूरे देश में नज़र रखता है और उन्हें अपनी मदद के लिए सेवक के तौर पर नियुक्त करता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक आदर्श राजा को धोखेबाज़ों के बजाय वफ़ादार कर्मचारियों की ज़रूरत होती है। वफ़ादार और सच्चे कर्मचारियों को ही आदर्श राजा की सेवा करनी चाहिए। जिन लोगों को कोई काम सौंपा गया है, उनसे वफ़ादारी की ही उम्मीद की जाती है (1 कुरिन्थियों 4:2)। जब ऐसे वफ़ादार और निष्ठावान सेवक एक आदर्श राष्ट्रपति के साथ खड़े होते हैं, तो देश में शांति और समृद्धि आती है।

चौथा, आदर्श नागरिक सच्चे लोग होते हैं।

भजन संहिता 101:7 को देखें: "जो कोई धोखा देता है, वह मेरे घर में नहीं रहेगा; जो कोई झूठ बोलता है, वह मेरी आँखों के सामने नहीं खड़ा हो पाएगा।" एक झूठा व्यक्ति किसी नेक राजा के सामने खड़ा नहीं हो सकता; वहाँ सिर्फ़ सच बोलने वाले ही खड़े हो सकते हैं। जो लोग धोखे से झूठ बोलते हैं, वे किसी भी तरह से आदर्श नागरिक नहीं होते। हमें अपने दिल को टेढ़ा-मेढ़ा या धोखेबाज़ बनने से बचाना चाहिए। हमें ईमानदार होना चाहिए। और हमें सच्चे दिल से सच बोलना चाहिए।

पाँचवीं बात, आदर्श नागरिक बुराई नहीं करते।

भजन संहिता 101:8 को देखिए: “हर सुबह मैं देश के सभी बुरे लोगों को खत्म कर दूँगा, और प्रभु के शहर से सभी बुरे काम करने वालों को हटा दूँगा।” क्योंकि एक आदर्श राजा नेक होता है, इसलिए वह बुराई होते

हुए चुपचाप नहीं देखता; बल्कि, वह बुरे काम करने वालों का न्याय करता है और उन्हें सज़ा देता है। ऐसे आदर्श राजा को आदर्श नागरिकों की ज़रूरत होती है—ऐसे लोगों की जो बुराई न करें।

एक आदर्श राष्ट्रपति के लिए आदर्श नागरिकों की ज़रूरत होती है। आदर्श नागरिक ईमानदारी के रास्ते पर चलते हैं। जो लोग ईमानदारी के रास्ते पर चलते हैं, वे अपने पड़ोसियों से प्यार करते हैं और विनम्र, वफादार और सच्चे होते हैं; साथ ही, वे बुराई के काम नहीं करते।

इस हफ़्ते, मैंने ज़िम्बाब्वे से आने वाले राष्ट्रपति चुनाव के बारे में परेशान करने वाली खबर सुनी: मौजूदा राष्ट्रपति के समर्थक विपक्ष के समर्थकों के हाथ काट रहे थे, उन्हें पीट रहे थे, और यहाँ तक कि महिलाओं के साथ बलात्कार और उनकी हत्या भी कर रहे थे। इससे मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ता है कि क्या इस दुनिया में सचमुच कोई आदर्श राष्ट्रपति है—एक ऐसा राष्ट्रपति जिसके पास दाऊद जैसा ईमानदार दिल हो और जो नेकी के रास्ते पर चले। हमारी दुनिया की ऐसी दुखद सच्चाइयाँ प्राचीन इज़राइल के इतिहास में भी साफ़ तौर पर दिखाई देती हैं। राजा शाऊल से लेकर आगे तक, हम देखते हैं कि इज़राइल के हर राजा ने पाप किया—यहाँ तक कि दाऊद ने भी गलती की। उनमें से एक भी राजा पूरी तरह सही नहीं था। इसका कारण यह है कि ये सभी अपूर्ण राजा यीशु की ओर इशारा करते थे, जो राजाओं का राजा है। यीशु राजाओं का राजा है। वह ऐसा राजा है जो परमेश्वर के राज्य पर प्यार-भरी दया और न्याय के साथ शासन करता है। वह एक विनम्र राजा है, जिसके दिल में बुराई का ज़रा भी अंश नहीं है। तो फिर, राजा यीशु के शासन में स्वर्ग के राज्य के नागरिक होने के नाते हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए? आज का शास्त्र हमें सिखाता है कि यीशु की आज्ञाओं के अनुसार, हमें अपने पड़ोसियों से प्यार करना चाहिए और विनम्र, वफादार और सच्चा होना चाहिए, साथ ही बुराई से दूर रहना चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम, स्वर्ग के नागरिक जो पूर्ण और आदर्श राजा यीशु की सेवा करते हैं, ऐसे लोगों के रूप में और मज़बूती से स्थापित हों जो पूर्ण हृदय के साथ ईमानदारी के रास्ते पर चलते हैं, ठीक वैसे ही जैसे वह चलते हैं।

पूरे दिल से ईमानदारी के रास्ते पर चलने वाले ईसाई

“मैं ईमानदारी के रास्ते पर ध्यान दूँगा—आप मेरे पास कब आएँगे? मैं अपने घर में पूरे दिल से चलूँगा” (भजन संहिता 101:2)।

लोग हमारे चलने के रास्ते को देखते हैं। खासकर हमारे परिवार के सदस्य इस बात पर बहुत ध्यान देते हैं कि हम कैसे रहते हैं। फिर भी, वे अक्सर हमारे दिलों को नहीं देख पाते; वे यह नहीं देख सकते कि हमारे अंदर क्या है। अगर हम खुद अपने दिलों को ठीक से नहीं देख पाते, तो दूसरे उन्हें कैसे समझ सकते हैं—ऐसे दिल जो हमारे लिए भी कुछ हद तक रहस्यमय बने रहते हैं? हालाँकि, परमेश्वर हमारे दिलों को साफ-साफ देखते हैं; वे उन्हें अच्छी तरह जानते हैं। इसलिए, जो ईसाई परमेश्वर के सामने अपने विश्वास के अनुसार जीते हैं, वे अपना ध्यान उस दिल पर लगाते हैं जिसे परमेश्वर देखते हैं। वे प्रभु के दिल जैसा बनने की कोशिश करते हैं और उसी भावना के साथ उनके वचन का पालन करने का प्रयास करते हैं। इसके विपरीत, जो ईसाई दूसरों के सामने सिर्फ़ धार्मिक दिखावा करते हैं, वे बाहरी व्यवहार पर ध्यान देते हैं जिसे लोग देख सकते हैं। नतीजतन, भले ही उनके दिल सच में यीशु के दिल जैसे नहीं होते, फिर भी उनका बाहरी व्यवहार दूसरों को उनकी छवि जैसा लगता है। उन्हें लोगों से तारीफ़ और सम्मान भी मिलता है। शायद, जब उन्हें पहली बार ऐसी तारीफ़ मिली, तो उन्हें ज़मीर की चुभन और अंदरूनी बेचैनी महसूस हुई। फिर भी, क्योंकि उन्होंने पश्चाताप नहीं किया, अपने दिलों को सही नहीं किया और परमेश्वर के सामने सच्चे विश्वास का जीवन नहीं जिया, इसलिए वे लगातार दूसरों का ध्यान रखते हुए जीते रहे और ऐसा जीवन बनाए रखने की कोशिश करते रहे जिससे लोगों की तारीफ़ और सम्मान मिले। जैसे-जैसे यह सिलसिला चलता रहा, वे आखिर में सिर्फ़ दिखावे के लिए धार्मिक विश्वास वाले जीवन की नकल करने लगे। आखिरकार, फरीसियों की तरह, वे अपने होंठों से तो परमेश्वर का सम्मान करते हैं, लेकिन उनके दिल उनसे दूर होते हैं (मत्ती 15:8)। तो फिर, अपना

जीवन जीते समय हम किस पर ध्यान देते हैं? क्या परमेश्वर पर या लोगों पर? क्या दिल पर या बाहरी कामों पर?

भजन संहिता 101:2 में, भजनकार दाऊद कहते हैं, "मैं बेदाग रास्ते पर ध्यान दूँगा" और "मैं अपने घर में ईमानदारी के साथ चलूँगा।" इस वचन पर विचार करते हुए, मैंने इस मनन का शीर्षक रखा "बेदाग दिल के साथ बेदाग रास्ते पर चलने वाले ईसाई।" हालाँकि, यह शीर्षक चुनने के बाद मुझे एहसास हुआ कि पाठकों के लिए "बेदाग़ दिल" और "बेदाग़ रास्ते" की बातों को मानना मुश्किल हो सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम आम तौर पर मानते हैं कि इस दुनिया में कोई भी सचमुच "बेदाग़ दिल" रखने या "बेदाग़ रास्ते" पर चलने के काबिल नहीं है। फिर भी, हम मानते हैं कि सिर्फ़ यीशु ही—एक पाप-रहित, परिपूर्ण इंसान के तौर पर—इस धरती पर बेदाग़ दिल और बेदाग़ रास्ते के साथ चले। इसलिए, उनके चेले होने के नाते, हम ईसाइयों का फ़र्ज़ है कि हम यीशु के बेदाग़ दिल और ज़िंदगी की मिसाल पर चलें। यह ध्यान देने वाली बात है कि इस हिस्से में दाऊद जिस "बेदाग़ दिल" और "बेदाग़ रास्ते" की बात करते हैं, उसका मतलब है ऐसा दिल और ऐसी ज़िंदगी जो किसी भी दाग़ या बुराई से मुक्त हो। दूसरे शब्दों में, हमें सिखाया जाता है कि हमें बेदाग़ ईसाई बनना चाहिए। जैसे-जैसे हम अपने विश्वास में बढ़ते हैं, हमें और ज़्यादा बेदाग़ बनते जाना चाहिए। भले ही हम इस धरती पर रहते हुए पूरी तरह परिपूर्ण न हो पाएँ, फिर भी हमें उस लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना चाहिए। इसे पाने के लिए, हमें सबसे पहले बेदाग़ दिल पाने की कोशिश करनी चाहिए। हमें अपने चाल-चलन से ज़्यादा दिल को अहमियत इसलिए देनी चाहिए क्योंकि हमारे काम स्वाभाविक रूप से दिल से ही निकलने चाहिए। जब हम बेदाग़ दिल पाने की कोशिश करते हैं, तो उसी दिल से स्वाभाविक रूप से बेदाग़ चाल-चलन भी ज़ाहिर होना चाहिए। तो, बेदाग़ दिल कैसा होता है?

पहला, बेदाग़ दिल बुरे दिल से दूर रहता है।

भजन संहिता 101:4 देखिए: "टेढ़ा दिल मुझसे दूर रहेगा; मैं बुराई के बारे में कुछ नहीं जानूँगा।" यहाँ, "टेढ़े दिल" का मतलब है धोखेबाज़ दिल—ऐसी ज़िंदगी जहाँ इंसान का अंदरूनी रूप उसके बाहरी रूप से अलग हो (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, टेढ़े दिल का मतलब है पाखंड। दाऊद ने ऐसे पाखंड—यानी ऐसे टेढ़े दिल—से दूरी बनाए रखी। उन्होंने धोखेबाज़ी करने वालों से भी दूरी बनाए रखी (आयत 7) और झूठ बोलने

वालों को अपने सामने खड़े नहीं होने दिया (आयत 7)। इस तरह, दाऊद ने बुरे कामों से दूरी बनाए रखी; उन्होंने सभी बुरे लोगों को खत्म करने और परमेश्वर के शहर से सभी बुरे काम करने वालों को हटाने की कोशिश की (आयत 8)।

बेदाग़ और परिपूर्ण दिल पाने की कोशिश करने वाले ईसाइयों के तौर पर, हमें टेढ़े दिल से दूर रहना चाहिए। यानी, हमें धोखेबाज़ दिल और पाखंड से दूर रहना चाहिए; हमें ऐसी ज़िंदगी नहीं जीनी चाहिए जिसमें हमारे अंदर की सोच और हमारे बाहरी कामों में फ़र्क हो। हमें झूठ और बुरे कामों से दूर रहना चाहिए। टेढ़ी और धोखेबाज़ सोच को छोड़कर, हमें ऐसी ज़िंदगी जीनी चाहिए जो दिखावे और बुराई को नकारे। हमें सच्चे दिल से अच्छे कामों की ओर बढ़ना चाहिए। एक बेदाग़ और साफ़ दिल पाने की कोशिश करते हुए, हमें ईमानदारी से भलाई करने वाली ज़िंदगी जीनी चाहिए।

दूसरी बात, एक बेदाग़ दिल घमंडी दिल को बर्दाश्त नहीं करता।

भजन संहिता 101:5 को देखिए: "जो कोई चुपके से अपने पड़ोसी की बुराई करता है, मैं उसे मिटा दूँगा; जिसकी नज़रें घमंडी हैं और दिल में अहंकार है, उसे मैं बर्दाश्त नहीं करूँगा।" राजा दाऊद ने घमंडी नज़रों और अहंकारी दिल वाले लोगों को बर्दाश्त नहीं किया। अगर राजा के तौर पर वे ऐसे लोगों को बर्दाश्त करते, तो वे राज्य के मामलों में दखल दे सकते थे; दूसरों के प्रति घमंड और बेपरवाही के कारण, वे लोगों पर ज़ुल्म करते और सिर्फ़ ऊँचे ओहदे पाने की कोशिश करते, और आखिर में देशद्रोह की साज़िश रचते (पार्क युन-सन)। ऐसे घमंडी लोग ही "चुपके से अपने पड़ोसियों की बुराई" करते हैं। दूसरे शब्दों में, घमंडी वे लोग हैं जो "छिपी हुई बुरी बातों और झूठे प्रचार से दूसरों को नुकसान पहुँचाते हैं" (पार्क युन-सन)। राजा दाऊद ने न सिर्फ़ इन घमंडी और धोखेबाज़ लोगों को बर्दाश्त करने से इनकार किया, बल्कि उन्हें मिटा भी दिया।

मसीही होने के नाते, बेदाग़ और साफ़ दिल पाने की कोशिश करते हुए, हमें कभी भी घमंडी दिल को बर्दाश्त नहीं करना चाहिए। न ही हमें घमंडी लोगों को बर्दाश्त करना चाहिए। इसके अलावा, हमें कभी भी चुपके से अपने पड़ोसियों की बुराई नहीं करनी चाहिए, और न ही ऐसा करने वालों को बर्दाश्त करना चाहिए। वजह यह है कि जब प्रभु ने हमें बुलाया, तो उन्होंने हमें पड़ोसियों को नुकसान पहुँचाने के लिए नहीं, बल्कि उनसे

प्यार करने के लिए बुलाया। इसलिए, हमें नम्र दिल से अपने पड़ोसियों से प्यार करना चाहिए। बेदाग़ और साफ़ दिल पाने की कोशिश करते हुए, हमें अपने पड़ोसियों को खुद से बेहतर समझना चाहिए और नम्रता से उनके भले का सोचना चाहिए (फिलिप्पियों 2:3–4)।

तीसरी बात, एक बेदाग़ दिल वफ़ादार दिल होता है। भजन संहिता 101:6 पर गौर कीजिए: "मेरी नज़रें देश के वफ़ादार लोगों पर होंगी, ताकि वे मेरे साथ रह सकें; जो सही रास्ते पर चलता है, वही मेरी सेवा करेगा।" राजा दाऊद ने अपने लोगों को परखा और न सिर्फ़ बुरे या अहंकारी दिल वाले लोगों से दूरी बनाए रखी, बल्कि बेवफ़ा लोगों के कामों से नफ़रत भी की (आयत 3)। इसके बजाय, उन्होंने विश्वासयोग्य लोगों को अपने करीब बुलाया और उन्हें अपने सेवक के तौर पर नियुक्त किया (पद 6)। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उन्हें धोखेबाज़ या घमंडी लोगों के बजाय विश्वासयोग्य सेवकों की ज़रूरत थी; उन्होंने सेवा करने के लिए ऐसे लोगों को चुना जो ईमानदारी के रास्ते पर चलते थे (पद 6)।

मसीही होने के नाते, जो बेदाग और सच्चे दिल की चाहत रखते हैं, हमें अविश्वासियों के कामों से नफ़रत करनी चाहिए और विश्वासयोग्य लोगों के कामों से प्यार करना चाहिए। ऐसा करने के लिए, सबसे पहले हमारे अपने दिल को विश्वासयोग्य बनना होगा और हमें अपने प्रभु के प्रति वफ़ादार रहना होगा। आख़िरकार, एक प्रबंधक से यही उम्मीद की जाती है कि वह विश्वासयोग्य हो (1 कुरिन्थियों 4:2)। हमें छोटी-छोटी बातों में भी विश्वासयोग्य रहना चाहिए (लूका 16:10); ऐसा करने से, हम बड़ी बातों में भी विश्वासयोग्य बने रहने के काबिल हो जाते हैं (पद 10)। हमें मौत तक प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य रहना चाहिए (प्रकाशितवाक्य 2:10)। मेरी प्रार्थना है कि जब हम प्रभु के सामने खड़े हों, तो हम सभी को उनसे यह सुनने को मिले, "शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य सेवक।"

बेसहारा लोगों की प्रार्थना

[भजन संहिता 102]

पिछले रविवार को ज़ोन 1 के लिए बाइबल अध्ययन के दौरान—जब हम "आध्यात्मिक युद्ध" (Spiritual Warfare) सीरीज़ का तीसरा पाठ, जिसका शीर्षक "आंतरिक प्रलोभनों का सामना करना" था, पढ़ रहे थे—तो एक प्रतिभागी ने मत्ती 5:3 के शब्द साझा किए: "धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।" इस वचन को साझा करते हुए, उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि हमें अपने दिलों को खाली करना चाहिए। जब हम आंतरिक प्रलोभनों पर विचार करते हैं, तो मेरा मानना है कि हम उन्हें दूर करने में इसलिए असफल रहते हैं क्योंकि हमने अपने दिलों को खाली नहीं किया होता है। उदाहरण के लिए, आज मैंने पास्टर गोमेज़ (जो हमारे हिस्पैनिक मिनिस्ट्री के पास्टर हैं) के साथ दोपहर का भोजन किया, और हमने उन आंतरिक प्रलोभनों पर चर्चा की जिनका सामना मिशन के काम में लगे लीडर कर सकते हैं। ये आंतरिक प्रलोभन हैं - अहंकार और लालच। समस्या की जड़ क्या है? समस्या यह है कि हम अपने दिल को खाली नहीं कर पाते। आपका दिल कैसा है? आइए हम अपने भीतर झाँकें। उनमें क्या भरा है? क्या प्रभु का प्रेम है, या नफ़रत और ईर्ष्या? विनम्रता या अहंकार? क्या वे परमेश्वर के वचन से भरे हैं? वगैरह। आज के अंश, भजन संहिता 102 पर विचार करते हुए, मुझे व्यक्तिगत रूप से आध्यात्मिक दीनता की आवश्यकता का एहसास हुआ। दूसरे शब्दों में, मुझे लगा कि मुझे भूखा रहने की ज़रूरत है—एक ऐसा दिल रखने की ज़रूरत है जो परमेश्वर का वचन सुनने के लिए तड़पे। मैं दीन मन से परमेश्वर का वचन सुनना, सीखना और उस पर मनन करना चाहता हूँ। मैं दीन मन से परमेश्वर को पुकारना भी चाहता हूँ। अंततः, मैं अपने दिल को परमेश्वर के वचन से भरना चाहता हूँ।

भजन संहिता 102:17 में, भजनकार कहता है: "प्रभु ने बेसहारा लोगों की प्रार्थना पर ध्यान दिया है और उनकी प्रार्थना को तुच्छ नहीं समझा है।" आज, इस अंश पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं "दुखी/पीड़ित लोगों की प्रार्थना" शीर्षक के तहत दो बिंदुओं पर विचार करना चाहूँगा: पहला, "पीड़ित" कौन हैं, और दूसरा, "पीड़ितों" की प्रार्थना का स्वरूप क्या है।

पहला, "पीड़ित" कौन हैं?

यह शब्द "दुख सह रहे संतों" (पार्क युन-सन) को संदर्भित करता है। भजन संहिता 41 में, जिस पर हम पहले ही मनन कर चुके हैं, "कमज़ोर" वाक्यांश आता है (वचन 1)। वहाँ, इस शब्द का मतलब है "बेसहारा (निर्गमन 30:15), बीमार (उत्पत्ति 41:19), और कमज़ोर दिल वाले (2 शमूएल 13:4)" (पार्क युन-सन)। इन सभी अर्थों को एक साथ देखें तो, "गरीब" का मतलब है कोई भी व्यक्ति जो परमेश्वर की ताड़ना या अनुशासन से गुज़र रहा हो (कैल्विन)। इस शब्द का अनुवाद "बेबस" के तौर पर किया जाता है—यानी वे लोग जो अपनी मदद खुद नहीं कर सकते या जिनमें शक्ति की कमी है। बाइबल के दूसरे हिस्सों में, इसके लिए हिब्रू शब्द का अनुवाद "गरीब" या "कमज़ोर" किया गया है। यह ऐसे व्यक्ति की ओर इशारा करता है जो आर्थिक तंगी के कारण निचले स्तर पर आ गया है—जिसकी स्थिति कमज़ोर है और इसलिए वह ज़ुल्म का शिकार हो सकता है। 1 थिस्सलुनीकियों 5:14 में ऐसे लोगों को "डरपोक" और "कमज़ोर" कहा गया है। यह "गरीब" व्यक्ति भजन संहिता 102:17 में बताए गए "बेसहारा" व्यक्ति जैसा ही है; दोनों शब्द उन लोगों के लिए इस्तेमाल हुए हैं जो परमेश्वर की ताड़ना से गुज़र रहे हैं। आज के हिस्से में यही बेसहारा भजनकार परमेश्वर से दिल से प्रार्थना करता है।

किस तरह के दुख ने इस बेसहारा व्यक्ति को परमेश्वर से इतनी शिद्दत से प्रार्थना करने के लिए मजबूर किया? हालाँकि इस भजन के लेखक का पता नहीं है, लेकिन यह पक्का है कि इसे बेबीलोन की गुलामी के दौरान लिखा गया था, जिसमें यरूशलेम की बहाली की तड़प झलकती है (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, भजनकार द्वारा बताए गए दुख का मतलब बेबीलोन की गुलामी के दौरान सहे गए कष्ट से है। इस दुख के कारण, उस बेसहारा व्यक्ति का शरीर सूख गया (पद 3), और उसका दिल घास की तरह मुरझा गया (पद 4)। इसके अलावा, वह गहरे अकेलेपन की हालत में था... (पद 6-9)। पद 6 में बताए गए "रेगिस्तानी उल्लू" और "उल्लू"

अकेलेपन का प्रतीक हैं; दूसरे शब्दों में, विश्वास करने वाला अक्सर अकेलेपन का अनुभव करता है (पद 7) (पार्क युन-सन)। इस गहरे अकेलेपन और परेशानी का फ़ायदा उठाते हुए, दुश्मनों ने भजनकार पर हमला कर दिया, जो पहले से ही बेसहारा था। यह दुख के ऊपर और मुसीबत आने जैसा मामला था (पार्क युन-सन)। ऐसे दुख के बीच, भजनकार पद 10 में अपने दर्द की सबसे बड़ी वजह बताता है: "आपके क्रोध और आपके गुस्से के कारण; क्योंकि आपने मुझे ऊपर उठाया और फेंक दिया।" आज के पाठ में भजनकार ने समझा कि इस्राएल के लोग परमेश्वर के क्रोध के कारण बेबीलोन में गुलामी की पीड़ा सह रहे थे। बेशक, इसका कारण इस्राएल के लोगों द्वारा किए गए पाप थे।

क्या हम भी दुख उठाने वालों में से नहीं हैं? क्या हम अपने ही पापों के कारण परमेश्वर के अनुशासन (सुधारने वाली ताड़ना) के तहत दुख नहीं उठा रहे हैं? क्या इस दुख से हमारा शरीर और मन मुरझा नहीं गया है, जिससे हम अकेलेपन की स्थिति में आ गए हैं? और इस सबके बीच, क्या हम उन लोगों के कारण और भी अधिक दर्द नहीं सह रहे हैं जो हमें सताते हैं? यदि आप ऐसे दुख का सामना कर रहे हैं, तो यह प्रार्थना करने का एक बेहतरीन मौका है। आज के पाठ में दुख उठाने वाले भजनकार की तरह, हमें सच्चे मन से परमेश्वर की खोज करनी चाहिए। हमें उनसे पूरी लगन से प्रार्थना करनी चाहिए।

दूसरी बात, "दुख उठाने वाले" की प्रार्थना का स्वरूप क्या था?

हम इस पर दो तरह से विचार कर सकते हैं:

(1) विचार करने योग्य पहली बात है दुख उठाने वाले की "प्रार्थना की मुद्रा" (यानी प्रार्थना करते समय उसकी स्थिति)।

संक्षेप में, दुख उठाने वाले की प्रार्थना की मुद्रा उद्धार के भरोसे को दर्शाती है। दूसरे शब्दों में, भजनकार ने परमेश्वर से प्रार्थना की और उम्मीद बनाए रखी क्योंकि उसे पक्का भरोसा था कि परमेश्वर इस्राएल के लोगों को बेबीलोन की गुलामी से छुड़ाएंगे। यह एक ऐसा "दृढ़ विश्वास" है जो परमेश्वर से आता है।

(a) इस दृढ़ विश्वास का आधार परमेश्वर का अनंत अस्तित्व है।

आज के पाठ में भजन 102:12 को देखें: "परन्तु हे यहोवा, तू सदा बना रहेगा, और तेरी चर्चा पीढ़ी-पीढ़ी तक होती रहेगी।" जब हमें यह एहसास होता है कि परमेश्वर हमेशा जीवित रहते हैं, तो हमें यह भरोसा हो जाता है कि सब कुछ ठीक हो जाएगा (पार्क युन-सन)। भजनकार को यह दृढ़ विश्वास था कि यह जीवित, अनंत परमेश्वर सत्य के प्रकट वचन के अनुसार किए गए अपने वादों को पूरा करेंगे—और अपने "स्मारक नाम" के अनुरूप कार्य करेंगे। इसी भरोसे के साथ, उसने परमेश्वर से सच्चे मन से प्रार्थना की।

(b) इस दृढ़ विश्वास का आधार यह तथ्य है कि "यहोवा उठेगा और सिय्योन पर दया करेगा" (पद 13)।

दूसरे शब्दों में, बेसहारा लोगों के लिए उद्धार का भरोसा परमेश्वर की दया पर टिका है। पद 13 को देखें: "तू उठकर सिय्योन पर दया करेगा, क्योंकि उस पर कृपा करने का समय आ गया है; ठहराया हुआ समय आ गया है।" यह जानते हुए कि परमेश्वर इस्राएल ("सिय्योन") पर दया करेंगे, भजनकार को भरोसा था कि परमेश्वर अपने ठहराए हुए समय पर इस्राएल के लोगों को बचाएंगे। भजनकार को यह इसलिए पता था कि परमेश्वर इस्राएल पर दया करेंगे क्योंकि उसने लोगों को पछतावा करते हुए देखा था—और पहले उसकी असली कीमत न समझने के बाद—अब वे "सिय्योन" (कलीसिया) को बहुत महत्व दे रहे थे, यहाँ तक कि उसके पत्थरों और धूल के लिए भी तरस रहे थे (पद 14) (पार्क युन-सन)।

हमें भी उद्धार का यह भरोसा होना चाहिए। प्रार्थना करते समय, हमें यह विश्वास करना चाहिए कि चूँकि परमेश्वर अनंत हैं और अपनी कलीसिया के प्रति दयालु हैं, इसलिए वे हमें हर तरह की मुश्किलों से बचाएंगे; हमें इसी विश्वास के साथ उनके सामने अपनी विनती रखनी चाहिए। खासकर, आज के हिस्से के पद 16 को देखते हुए, हम विश्वास के साथ परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं, यह जानते हुए कि हमारे प्रभु "सिय्योन"—अपनी कलीसिया—को बनाते हैं और अपनी महिमा में प्रकट होते हैं, और फिर से प्रकट होंगे। परमेश्वर अपने लोगों पर नज़र रखते हैं (पद 19) और "कैदी की कराह सुनते हैं," और इस तरह हमें आज़ाद करते हैं (पद 20)। इसका मकसद क्या है? इसका मकसद यह है कि उनके लोग परमेश्वर की महिमा का प्रचार कर सकें और उनकी सेवा कर सकें (पद 21)।

(2) दूसरी बात, आइए "दुखी व्यक्ति की प्रार्थना" के विषय पर विचार करें।

(a) दुखी व्यक्ति की प्रार्थना का पहला हिस्सा अपनी ज़िंदगी लंबी करने की विनती थी।

आज का पाठ देखें, भजन संहिता 102:23–24: "उसने रास्ते में मेरी ताकत कम कर दी; उसने मेरे दिन घटा दिए। मैंने कहा, 'हे मेरे परमेश्वर, मुझे मेरी ज़िंदगी के बीच में ही न उठा ले; तेरे साल तो हर पीढ़ी तक बने रहते हैं।'" भजनकार ने जो भयानक दुख बताया—वह शारीरिक और मानसिक रूप से थक चुका था—उसने उसे परमेश्वर से विनती करने के लिए प्रेरित किया कि वे उसकी सेहत ठीक करें और उसे समय से पहले मौत से बचाएं (पद 3–11; पार्क युन-सन)। (b) पीड़ित व्यक्ति की प्रार्थना का दूसरा हिस्सा यह विनती थी कि प्रभु के सेवकों की संतानें बनी रहें और उनके सामने मज़बूती से खड़ी रहें।

आज के वचन, भजन संहिता 102:28 को देखिए: "तेरे सेवकों की संतानें बनी रहेंगी, और उनके वंशज तेरे सामने स्थापित रहेंगे।" अपनी सेहत ठीक होने और समय से पहले मौत से बचने की प्रार्थना करते हुए, पीड़ित भजनकार ने परमेश्वर के लोगों के हमेशा बने रहने के लिए भी विनती की। वह ऐसी प्रार्थना इसलिए कर सका क्योंकि उसे परमेश्वर के हमेशा बने रहने (अनंतता) पर विश्वास था। भजनकार ने विश्वास के साथ परमेश्वर से विनती की, उसे भरोसा था कि चूँकि परमेश्वर अनंत है, इसलिए कलीसिया—प्रभु की देह जिससे वह प्रेम करता है—भी हमेशा बनी रहेगी।

जब मैंने भजनकार की प्रार्थना पर मनन किया—जो खुद को गरीब और ज़रूरतमंद बताता है—तो मुझे गेथसेमनी के बाग में यीशु की प्रार्थना याद आई। यीशु, जो बहुत परेशान और दुखी थे (मरकुस 14:33), जिनकी आत्मा गहरे दुख से भर गई थी (वचन 34), और जो जानते थे कि उनके सभी चेले उन्हें छोड़ देंगे (वचन 27)—उनकी प्रार्थना क्या थी? वह थी, "अब्बा, पिता, तेरे लिए सब कुछ मुमकिन है। इस प्याले को मुझसे दूर कर दे। फिर भी, मेरी मर्ज़ी नहीं, बल्कि तेरी मर्ज़ी पूरी हो" (वचन 36)। आखिरकार, पिता की मर्ज़ी के अनुसार, उन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया और वे हमारी मुक्ति के लिए मरे। मरते समय उनकी पुकार थी, "एलोई, एलोई, लेमा सबक्तनी?"—जिसका अर्थ है, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (15:34)। यीशु को स्वयं परमेश्वर पिता ने भी छोड़ दिया था; फिर भी उनकी मृत्यु के द्वारा हमें अनंत जीवन मिला है। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा प्रभु की कलीसिया को अनंत बना दिया गया है। इसलिए, स्वर्ग के राज्य के नागरिकों के रूप में, जो अपने अनंत घर की ओर यात्रा कर रहे हैं, हमें इस वीरान

यात्रा के दौरान परमेश्वर पिता से वैसी ही प्रार्थना करनी चाहिए जैसी यीशु ने की थी—गरीब और ज़रूरतमंद की प्रार्थना। चाहे हम किसी भी दुख या पीड़ा का सामना करें, हमें दया से भरपूर अनंत परमेश्वर से मुक्ति के भरोसे के साथ सच्चे मन से प्रार्थना करनी चाहिए। परमेश्वर यह सुनिश्चित करेंगे कि हम स्वर्ग के राज्य में प्रभु के साथ हमेशा रहें।

आइए हम परमेश्वर की सभी भलाइयों को न भूलें।

[भजन संहिता 103]

आज सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, मैंने यशायाह 30:18 पर मनन किया: "फिर भी प्रभु आप पर कृपा करने के लिए उत्सुक है; इसलिए वह आप पर दया करने के लिए उठेगा। क्योंकि प्रभु न्याय का परमेश्वर है। धन्य हैं वे सब जो उसकी प्रतीक्षा करते हैं!" परमेश्वर हम पर कृपा और दया करने के लिए प्रतीक्षा करता है, और जब हम उसे पुकारते हैं तो वह सुनता है और उत्तर देता है; वह हम सब पर भरपूर कृपा बरसाता है। इस कृपा को पाने वालों के रूप में, हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम उन भलाइयों को न भूलें जो उसने हमें दी हैं। भजन संहिता 103:2 में, भजनकार दाऊद कहता है: "हे मेरे प्राण, प्रभु की स्तुति कर, और उसकी सभी भलाइयों को न भूल।" इस वचन और "आइए हम परमेश्वर की सभी भलाइयों को न भूलें" विषय पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं चाहता हूँ कि हम परमेश्वर की पाँच खास भलाइयों पर मनन करें और उन्हें याद रखें, और उस कृपा के दायरे में अपना जीवन जिएँ।

परमेश्वर की पहली भलाई यह है कि वह हमारे सभी पापों को क्षमा करता है।

भजन संहिता 103:3 के पहले भाग को देखें: "वह तुम्हारे सभी पापों को क्षमा करता है..."। ज़मीर रखने वाला कोई भी ईसाई अनिवार्य रूप से पाप की समस्या से जूझता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति और उसका पवित्र वचन हमारे पापों को उजागर करते हैं और हमारे ज़मीर को झकझोरते हैं। हालाँकि, समस्या तब पैदा होती है जब लोग अपने पापों के कारण अपराध-बोध से इतने परेशान और घिर जाते हैं कि उन्हें इससे उबरने में मुश्किल होती है। अंततः, ऐसे लोग अपराध-बोध के बोझ तले दब जाते हैं और खुद से कभी न खत्म होने वाली निराशा के चक्र में फँस जाते हैं। नतीजतन, वे अनिवार्य रूप से कम आत्म-सम्मान से पीड़ित होते हैं; वे अपने अस्तित्व को बहुत कम महत्व देते हैं। यह स्थिति आत्म-परीक्षण

और चिंतन के असंतुलित रूप से पैदा होती है। हालाँकि परमेश्वर के वचन के माध्यम से अपने पाप का एहसास होना एक अनमोल कृपा है, लेकिन समस्या तब होती है जब कोई व्यक्ति विश्वास के साथ यीशु के उस अनमोल लहू की ओर नहीं देखता—जो उस पाप का प्रायश्चित करता है—और इस प्रकार परमेश्वर के प्रेम और कृपा की पूर्णता को नहीं समझ पाता। आज के वचन में, भजन संहिता 103:10 और 12 में, दाऊद कहते हैं: "वह हमारे पापों के अनुसार हमसे व्यवहार नहीं करते और न ही हमारे बुरे कामों का बदला लेते हैं... जितनी दूर पूरब पश्चिम से है, उतनी ही दूर उन्होंने हमारे अपराधों को हमसे हटा दिया है।" परमेश्वर हमारे पापों या बुरे कामों का बदला नहीं लेते। हालाँकि जब हम पाप करते हैं तो परमेश्वर नाराज़ होते हैं (वचन 8–9), लेकिन वे ऐसे परमेश्वर नहीं हैं जिन्हें जल्दी गुस्सा आता हो या जो सज़ा देने में जल्दबाज़ी करते हों (वचन 8)। ऐसा क्यों है? जब हम पाप करते हैं तो परमेश्वर तुरंत सज़ा इसलिए नहीं देते क्योंकि वे चाहते हैं कि हम पश्चाताप करें (रोमियों 2:4)। दूसरे शब्दों में, तुरंत सज़ा न देकर, परमेश्वर हमें पश्चाताप करने का समय—एक मौका—देते हैं। जब हम पाप करते हैं तो परमेश्वर नाराज़ हो सकते हैं, लेकिन वे उस गुस्से को हमेशा के लिए मन में नहीं रखते (भजन संहिता 103:9)। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे प्रति उनकी दया महान (वचन 11) और भरपूर (वचन 8) है। इसलिए, हमारे प्रेमी परमेश्वर हमारे अपराधों का बदला नहीं लेते; बल्कि, वे हमारे पापों को हमसे उतनी दूर हटा देते हैं जितनी दूर पूरब पश्चिम से है। हमारे विश्वास के जीवन का एक पहलू जो सचमुच हैरान करने वाला है, वह यह है कि भले ही परमेश्वर ने हमारे अपराधों को हमसे उतनी दूर हटा दिया है जितनी दूर पूरब पश्चिम से है, फिर भी हम उन्हें बहुत कसकर पकड़े रहते हैं। परमेश्वर हमारे अपराधों को क्षमा करने में खुशी महसूस करते हैं और पूरी तरह से ऐसा करते हैं, फिर भी हम अक्सर अपने पापों को क्षमा करने में असफल रहते हैं। हमें विश्वास से इस बात को स्वीकार करना चाहिए कि परमेश्वर ने हमारे अपराधों को उतनी दूर हटा दिया है जितनी दूर पूरब पश्चिम से है। परमेश्वर ने हमारे पापों को पूरी तरह से क्षमा कर दिया है; जैसे-जैसे हम विश्वास का जीवन जीते हैं, हमें उस अनुग्रह की गहराई को और अधिक समझने की ज़रूरत है।

भजन संहिता 86:5, जिस पर हमने पहले भी मनन किया है, कहता है, "क्योंकि हे प्रभु, तू भला है, और क्षमा करने को तैयार है..." अपनी किताब *वन हू पार्टिसिपेट्स इन गॉड्स नेचर* (One Who Participates in God's Nature) में, पादरी होंग सोंग-गॉन ने लिखा है: "हालाँकि, जब हम पश्चाताप करते हैं, तो परमेश्वर की दया निश्चित रूप से हम तक पहुँचती है। चाहे स्थिति कितनी भी गंभीर क्यों न हो या पाप का दुष्चक्र कितना

भी गहरा क्यों न हो, परमेश्वर क्षमा करने में खुशी महसूस करते हैं।" परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करने में खुशी क्यों महसूस करते हैं? वह हमारे साथ इतनी दयालुता से क्यों पेश आते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि वह हमारी बनावट को जानते हैं (भजन संहिता 103:14)—यानी, उन्हें याद है कि हम बस धूल हैं (पद 14)। आज के वचन, भजन संहिता 103:15–16 को देखें: "इंसान के दिन घास की तरह होते हैं; वह खेत के फूल की तरह खिलता है। हवा के झोंके से वह गायब हो जाता है, और उसकी जगह उसे फिर कभी याद नहीं करती।" घास जैसी ज़िंदगी, जंगली फूल जैसी ज़िंदगी, हवा चलने पर गायब हो जाने वाली ज़िंदगी—सचमुच एक नाज़ुक अस्तित्व। क्योंकि परमेश्वर हमारी इस प्रकृति को जानते हैं, इसलिए वह हम पर दया करते हैं (पद 13)। इसीलिए हमारे परमेश्वर हमारे पापों को माफ़ करने में खुशी महसूस करते हैं। हमें परमेश्वर की इस कृपा को नहीं भूलना चाहिए—उस परमेश्वर की कृपा जो हमारे सभी पापों को माफ़ करने में इतनी खुशी महसूस करते हैं।

परमेश्वर से मिलने वाला दूसरा फ़ायदा हमारी सभी बीमारियों का ठीक होना है।

भजन संहिता 103:3 का बाद वाला हिस्सा देखें: "...जो तुम्हारी सभी बीमारियों को ठीक करता है..." आजकल हम अपने आस-पास बहुत से लोगों को बीमारी से जूझते हुए देखते हैं। जैसा कि जीवन के चक्र के बारे में कहा जाता है—जन्म, बुढ़ापा, बीमारी और मौत—इंसान का बीमार पड़ना और मरना तय है। एक तरह से, बीमार पड़ना जीवन का एक बिल्कुल स्वाभाविक हिस्सा है। फिर भी, यह जानते हुए भी, जब हम बीमार पड़ते हैं, तो अक्सर हम परमेश्वर से हमें ठीक करने की सच्चे दिल से प्रार्थना करते हैं। आख़िरकार, बीमारी में कौन तड़पना चाहेगा? इसीलिए हम परमेश्वर की ओर देखते हैं।

निर्गमन 15:26 में, परमेश्वर कहते हैं, "...मैं ही वह प्रभु हूँ जो तुम्हें चंगा करता है।" इसके अलावा, भजन संहिता 147:3 हमें बताती है कि वह "टूटे हुए दिलों को चंगा करते हैं और उनके घावों पर मरहम लगाते हैं।" वह ऐसे परमेश्वर हैं जो हमारी शारीरिक बीमारियों को ठीक करते हैं, लेकिन वह ऐसा तभी करते हैं जब पहले हमारी बुनियादी समस्या को हल कर लेते हैं। वह बुनियादी समस्या, ज़ाहिर है, पाप है। हालाँकि हमेशा ऐसा नहीं होता (जैसा कि अय्यूब के मामले में देखा गया), शारीरिक बीमारी से पीड़ित होने का एक कारण हमारा पाप भी है। इसका एक बड़ा उदाहरण राजा यहोराम हैं, जिनका ज़िक्र 2 इतिहास 21:18–19 में किया गया

है। बाइबल में लिखा है कि प्रभु ने यहोराम को आंतों की एक लाइलाज बीमारी दी। हमें यह याद रखना चाहिए कि जब हम पाप करते हैं और पछतावा नहीं करते, तो हमारे पवित्र परमेश्वर हमें उस बिना पछतावे वाले पाप से होने वाली बीमारी, घावों और तकलीफों के बीच रहने देते हैं। शारीरिक बीमारी को ठीक करने से पहले पाप की मूल समस्या को हल करने का एक बेहतरीन उदाहरण उस लकवाग्रस्त व्यक्ति की कहानी में मिलता है जो चटाई पर लेटा हुआ था (मत्ती 9:1–8)। प्रभु ने पहले उस लकवाग्रस्त व्यक्ति के पापों को माफ़ किया (वचन 2: "...यीशु ने उनका विश्वास देखा और उस लकवाग्रस्त व्यक्ति से कहा, 'हिम्मत रख, बेटा; तेरे पाप माफ़ हो गए हैं'") और फिर उसकी शारीरिक हालत को ठीक किया (वचन 6–7: "...उन्होंने उस लकवाग्रस्त व्यक्ति से कहा, 'उठ, अपनी चटाई उठा और घर जा।' तब वह व्यक्ति उठा और घर चला गया")। तो फिर, परमेश्वर हमारी सभी बीमारियों को कैसे ठीक करते हैं? वे हमें अपने वचन के द्वारा ठीक करते हैं। भजन संहिता 107:20 पर विचार करें: "उन्होंने अपना वचन भेजा और उन्हें ठीक किया; उन्होंने उन्हें कब्र से बचाया।" नए नियम में, मत्ती 8:8 में एक शतपति (centurion) का ज़िक्र है जिसने यीशु से अपने नौकर को ठीक करने के लिए कहा। शतपति ने यीशु से कहा, "प्रभु, मैं इस लायक नहीं हूँ कि आप मेरे घर आएँ। बस एक शब्द कह दीजिए, और मेरा नौकर ठीक हो जाएगा" (वचन 8)। हमारे परमेश्वर ही हैं जो अपने वचन की शक्ति से न केवल हमारे पाप की मूल समस्या को हल करते हैं, बल्कि हमारी शारीरिक बीमारियों को भी ठीक करते हैं। हमें परमेश्वर से मिलने वाले इस लाभ को नहीं भूलना चाहिए।

परमेश्वर से मिलने वाला तीसरा लाभ यह है कि वे हमारे जीवन को विनाश से बचाते हैं।

भजन संहिता 103:4 के पहले हिस्से को देखिए: "जो तेरे प्राणों को विनाश [गड्ढे] से छुड़ाता है..." यहाँ "गड्ढा" शब्द बाइबल के एक खास व्यक्ति की याद दिलाता है: और वह कोई और नहीं, बल्कि योना है। कारण यह है कि भविष्यद्वक्ता योना ने परमेश्वर की इस आज्ञा को नहीं माना कि "उठ, जा और प्रचार कर" (योना 1:2); इसके बजाय, वह नीचे ही नीचे उतरता गया—यहाँ तक कि समुद्र की गहराइयों में, यानी उस "गड्ढे" (2:6) तक पहुँच गया। वह योप्पा गया (1:3), जहाज़ में नीचे गया (वचन 3), जहाज़ के निचले हिस्से में गया (वचन 5), और और भी नीचे, "पहाड़ों की जड़ों" (2:6) तक चला गया। अपनी नाफरमानी के कारण, योना आखिरकार "गड्ढे" (वचन 6) में उतर गया। फिर भी, उस गहरे गड्ढे (विनाश) में भी, योना ने "[परमेश्वर के] पवित्र मंदिर" की ओर देखा (वचन 4)। नतीजतन, परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी और उसके प्राणों को गड्ढे से बचाया (वचन 6)। योना के बारे में सोचने से हमें यीशु की याद आती है। योना के विपरीत, यीशु ने परमेश्वर

के वचन का पालन किया, फिर भी उन्होंने गहरे गड्ढे जैसी पीड़ा सही—नरक जैसी तड़प। परमेश्वर के एकलौते पुत्र को परमेश्वर पिता ने त्याग दिया था। यीशु ने इतनी भयानक तड़प और विनाश क्यों सहा? इसलिए क्योंकि वह आपके और मेरे जीवन का उद्धार करना चाहते थे। अय्यूब के दोस्त एलीहू ने उससे कहा था: "ताकि उसके प्राण को गड्ढे से वापस लाया जाए, और वह जीवन की ज्योति से रोशन हो" (अय्यूब 33:30)। हमारे प्राणों को गड्ढे (विनाश)—जो नरक जैसी जगह है—से वापस लाने में परमेश्वर का मकसद हम पर जीवन की ज्योति चमकाना था। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने क्रूस पर यीशु की मृत्यु के ज़रिए आपको और मुझे इसलिए बचाया ताकि हमें अनंत जीवन मिल सके। यीशु मसीह में उपहार के तौर पर यह अनंत जीवन पाने के बाद, हमें परमेश्वर की इस आशीष को नहीं भूलना चाहिए।

परमेश्वर की चौथी आशीष यह है कि वह हम पर भरपूर अनुग्रह करता है।

भजन संहिता 103:4 के बाद वाले हिस्से को देखिए: "जो तुझे करुणा और दया का मुकुट पहनाता है।" यह वाक्यांश इतनी ज़्यादा कृपा को दर्शाता है जो सभी को साफ़ दिखाई देती है (पार्क युन-सन)। हमें उस भरपूर कृपा को नहीं भूलना चाहिए जो परमेश्वर ने हमारे जीवन में बरसाई है। एक और बात जो हमें याद रखनी चाहिए, वह यह है कि ऐसी भरपूर कृपा देने से पहले परमेश्वर अक्सर हमारी परीक्षा लेते हैं और हमें शुद्ध करते हैं। भजन संहिता 66:10 और आयत 12 का आखिरी हिस्सा देखें: "हे परमेश्वर, तूने हमारी परीक्षा ली है; तूने हमें वैसे ही शुद्ध किया है जैसे चांदी को शुद्ध किया जाता है... तू हमें भरपूरता वाली जगह पर ले आया।" भरपूर कृपा पाने के लिए, हमें ऐसे पात्र बनना होगा जो उसे संभाल सकें; उस कृपा को संभालने के लिए तैयार होने के लिए ऐसी शुद्धता ज़रूरी है। शुद्ध होने की इस प्रक्रिया के ज़रिए, हम अपने दिल और मुँह को पूरी तरह खोल सकते हैं, और विश्वास, विनम्रता और कृतज्ञता के साथ उस भरपूर कृपा को पा सकते हैं जिसे परमेश्वर ने स्वर्ग में जमा करके रखा है। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि परमेश्वर की इस भरपूर कृपा का अनुभव पाप के गहरे एहसास के साथ सबसे अच्छी तरह होता है। रोमियों 5:20 देखें: "...लेकिन जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ कृपा और भी ज़्यादा बढ़ गई।" जो लोग परमेश्वर की भरपूर कृपा को पा सकते हैं और उसका आनंद ले सकते हैं, वे ही पाप की विशालता, विस्तार और गहराई को समझते हैं। इस पाप को पहचानने और यीशु के छुटकारे की कृपा को पाने के बाद, वे उस भरपूर कृपा में रह सकते हैं और उसका आनंद ले सकते हैं जो परमेश्वर ने यीशु मसीह के ज़रिए दी है—और देते रहते हैं। तो फिर, जो विश्वासी इस

भरपूर कृपा को पाकर और उसका आनंद लेकर जीते हैं, वे कैसा व्यवहार करते हैं? आज का वचन देखें, भजन संहिता 103:20–21: "हे प्रभु के स्वर्गदूतों, तुम जो शक्ति में श्रेष्ठ हो, जो उसकी आज्ञा का पालन करते हो और उसकी आवाज़ सुनते हो, प्रभु की स्तुति करो। हे प्रभु की सारी सेनाओं, उसके सेवकों, जो उसकी इच्छा पूरी करते हो, प्रभु की स्तुति करो।" जो विश्वासी परमेश्वर की भरपूर कृपा को पाकर और उसका आनंद लेकर जीते हैं, वे परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उसके अनुसार आज्ञाकारी जीवन जीते हैं (आयत 20)। वे परमेश्वर की सेवा करते हैं और उसकी इच्छा पूरी करते हैं (आयत 21)।

परमेश्वर का पाँचवाँ और आखिरी फ़ायदा यह है कि वह हमारी इच्छाओं को अच्छी चीज़ों से पूरा करते हैं।

भजन संहिता 103:5 देखें: "जो तुम्हारे मुँह को अच्छी चीज़ों से तृप्त करता है, ताकि तुम्हारी जवानी उकाब की तरह नई हो जाए।" इस आयत का अर्थ है कि परमेश्वर संत पर भरपूर आध्यात्मिक कृपा बरसाते हैं, जिससे उनकी आत्मा को खुशी और शक्ति मिलती है ताकि वे बुढ़ापे की कमज़ोरी के कारण समय से पहले हार न मान लें (पार्क युन-सन)। मेरा मानना है कि आज के समय में बहुत से ईसाइयों पर लागू होने वाला एक वचन वह है जो प्रभु ने लाओदीकिया की कलीसिया से कहा था: "मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ, कि तुम न तो ठंडे हो और न ही गर्म..." (प्रकाशितवाक्य 3:15)। हम अपने विश्वास के जीवन को "गुनगुना" क्यों कहते हैं? एक कारण यह है कि लाओदीकिया के संतों की तरह, वे कहते हैं, "मैं अमीर हूँ; मैंने धन कमाया है और मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है" (वचन 17)। दूसरे शब्दों में, वे इस गलतफहमी में जीते हैं कि वे "अमीर" हैं और उन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं है, जबकि वे उस आत्मा को नहीं पहचान पाते जो प्यासी, भूखी और जिसे सख्त ज़रूरत है। हमें कैसे पता चलेगा कि ऐसा ही है? हमें कैसे पता चलेगा कि किसी में गरीबी की भावना—यानी आध्यात्मिक ज़रूरत का विनम्र अहसास—नहीं है? हम इसे ऐसी आत्मा को देखकर जान सकते हैं जो मांगती नहीं है; दूसरे शब्दों में, वह आत्मा जो प्रार्थना नहीं करती है। भजनकार, जिसकी आत्मा भूखी, प्यासी और तड़प रही थी, भजन संहिता 107:4–5 में स्थिति का वर्णन करता है: "वे जंगल में, रेगिस्तान के रास्ते में भटकते रहे; उन्हें रहने के लिए कोई शहर नहीं मिला। भूखे और प्यासे, उनकी आत्मा उनमें निढाल हो गई।" उस भूख, प्यास और परेशानी के बीच, उसने प्रभु को पुकारा (वचन 6)। और परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया: "क्योंकि वह तरसती हुई आत्मा को तृप्त करता है, और भूखी आत्मा को अच्छाई से भर देता है" (वचन 9)। उस परमेश्वर का अनुभव करने के बाद जो तरसती और भूखी आत्मा को अच्छी चीज़ों से भरता है, भजनकार ने कहा: "काश, लोग प्रभु की अच्छाई और मनुष्यों के लिए उनके अद्भुत

कामों के लिए उनका धन्यवाद करते!" (वचन 8)। तो फिर, प्रभु हमारी इच्छाओं को अच्छी चीज़ों से क्यों पूरा करते हैं? ऐसा इसलिए है ताकि हमारी जवानी को उकाब (eagle) की तरह नया किया जा सके (वचन 5)। दाऊद ने अपनी जवानी की तुलना उकाब से क्यों की? कहा जाता है कि उकाब बुढ़ापे से नहीं मरता; बल्कि, क्योंकि यह बहुत लंबे समय तक जीवित रहता है, इसलिए इसकी चोंच इतनी लंबी हो जाती है कि ठीक से काम नहीं कर पाती, जिससे यह खा नहीं पाता। इस तरह, बाज़ लंबे समय तक बनी रहने वाली जीवन-शक्ति का प्रतीक है। यह सच है कि जो लोग विश्वास करते हैं, वे अपने विश्वास की शक्ति के कारण लंबी शारीरिक आयु का आनंद ले सकते हैं (पार्क युन-सन)। इसीलिए भविष्यवक्ता यशायाह ने यशायाह 40:29–31 में कहा: “वह थके हुए को शक्ति देता है और कमज़ोर की ताकत बढ़ाता है। यहाँ तक कि जवान भी थक जाते हैं और कमज़ोर पड़ जाते हैं, और नौजवान लड़खड़ाकर गिर जाते हैं; लेकिन जो प्रभु पर भरोसा रखते हैं, वे अपनी शक्ति को फिर से पा लेंगे। वे बाज़ की तरह पंख फैलाकर उड़ेंगे; वे दौड़ेंगे और थकेंगे नहीं, वे चलेंगे और कमज़ोर नहीं पड़ेंगे।”

हम परमेश्वर की आशीषों को पाने वाले हैं। इसलिए, भजनकार दाऊद की तरह, हमें खुद से कहना चाहिए: “हे मेरे मन, प्रभु की स्तुति कर; मेरे भीतर का सब कुछ उसके पवित्र नाम की स्तुति करे। हे मेरे मन, प्रभु की स्तुति कर, और उसकी सभी आशीषों को न भूल... प्रभु की स्तुति करो, उसके राज्य में हर जगह उसके सभी काम उसकी स्तुति करें। हे मेरे मन, प्रभु की स्तुति कर” (भजन संहिता 103:1–2, 22)। हमारी आत्माओं को परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए और उसकी स्तुति करनी चाहिए। परमेश्वर की आशीषें पाने वालों के तौर पर, हमें उसकी स्तुति करनी चाहिए। और उसने हमें जो आशीषें दी हैं, उन्हें हमें कभी नहीं भूलना चाहिए।

“हे प्रभु, तेरे काम कितने तरह के हैं!”

[भजन संहिता 104]

इस बात पर ध्यान देने के बजाय कि हमने परमेश्वर के लिए क्या किया है, हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया है। दूसरे शब्दों में, हमें अपना जीवन उन कामों पर मनन करते हुए बिताना चाहिए जो परमेश्वर हमारी भलाई के लिए करता है। इसीलिए भजनकार भजन संहिता 77:12 में कहता है: “मैं तेरे सब कामों पर मनन करूँगा, और तेरे कार्यों की चर्चा करूँगा।” प्रभु ने जो काम पूरे किए हैं, हमें उन पर गहराई से मनन करना चाहिए। हमें न केवल इस बात पर विचार करना चाहिए कि उसने व्यक्तिगत रूप से आपके और मेरे लिए क्या किया है, बल्कि उन कामों पर भी विचार करना चाहिए जो उसने इस दुनिया में किए हैं—और करता रहता है।

हमारे परमेश्वर के अनेक कामों में से एक यह है कि उसने स्वर्ग और पृथ्वी और उनमें मौजूद सभी चीजों की रचना की, और वह उन पर शासन करता रहता है (भजन संहिता 104)। हमारा महान, शक्तिशाली और महिमामय परमेश्वर (पद 1) ही सृष्टिकर्ता है। उसने स्वर्ग को फैलाया (पद 2) और पृथ्वी की नींव रखी ताकि वह कभी न हिले (पद 5)। सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने स्वर्ग, पृथ्वी और सारी सृष्टि की रचना बुद्धि से की (पद 24)। इस प्रकार, हम सृष्टि की व्यवस्था के माध्यम से परमेश्वर की बुद्धि को देखते हैं। यह सृष्टिकर्ता परमेश्वर सभी चीजों पर सर्वोच्च अधिकार के साथ शासन करता है। हीडलबर्ग कैटेकिज़्म का प्रश्न 27 पूछता है, “परमेश्वर की देखभाल (प्रोविडेंस) से आप क्या समझते हैं?” इसका उत्तर है: “देखभाल परमेश्वर की सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी शक्ति है, जिसके द्वारा वह स्वर्ग और पृथ्वी और सभी प्राणियों को ऐसे संभालता और उन पर शासन करता है, मानो अपने ही हाथों से।” बेल्जिक कन्फेशन का अनुच्छेद 13 कहता है, "हम विश्वास करते हैं कि इस भले परमेश्वर ने, सभी चीजों की रचना करने के बाद, उन्हें छोड़ा नहीं, त्यागा नहीं, या किस्मत के भरोसे

नहीं छोड़ा; बल्कि, वह अपनी पवित्र इच्छा के अनुसार उन पर शासन करता है, ताकि इस दुनिया में उसकी आज्ञा के बिना कुछ भी न हो" (इंटरनेट)। दूसरे शब्दों में, जिस परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की, वह अपनी देखभाल के द्वारा सभी चीजों को सर्वोच्च अधिकार से नियंत्रित करता है। परमेश्वर घाटियों में जल-धाराएँ बहाता है ताकि जंगली जानवर और पक्षी पानी पी सकें (पद 10–11) और आकाश के पक्षियों को उनके किनारों पर घोंसले बनाने देता है (पद 12)। नतीजतन, "पृथ्वी तेरे कामों के फल से तृप्त होती है" (पद 13)। इसके अलावा, परमेश्वर पशुओं के लिए घास उगाते हैं, इंसानों के इस्तेमाल के लिए पेड़-पौधे उगाते हैं, और धरती से भोजन पैदा करते हैं (पद 14)। वह ऐसी दाखमधु भी देते हैं जो इंसान के दिल को खुश करती है, ऐसा तेल जो चेहरे को चमकाता है, और ऐसा भोजन जो दिल को मज़बूत करता है (पद 15)। बारिश भेजकर, परमेश्वर हमें सब्ज़ियाँ, अनाज, फल और तेल पाने में मदद करते हैं जिनकी हमें ज़रूरत होती है। जो कोई भी इन चीज़ों को देखता है, वह ईमानदारी से यह इनकार नहीं कर सकता कि ये सब बनाने वाले की कारीगरी हैं (पार्क युन-सन)। परमेश्वर ही हैं जो चाँद और सूरज को चलाते हैं और रात-दिन को नियंत्रित करते हैं (पद 19–20); वह जंगल के सभी जानवरों पर भी राज करते हैं (पद 21–22)। वह हमारे परमेश्वर हैं—जिन्होंने अपनी बुद्धि से समुद्र और उसमें रहने वाले सभी छोटे-बड़े जीवों को बनाया (पद 24–25); जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया और उन पर राज करते हैं, साथ ही खास तौर पर अपनी रचनाओं की देखभाल करते हैं और उनकी सभी ज़रूरतों को पूरा करते हैं। जब वह अपनी रचनाओं को देने के लिए अपना हाथ खोलते हैं, तो वह उन्हें अच्छी चीज़ों से तृप्त करते हैं (पद 28)। आखिर में, परमेश्वर की महिमा हमेशा बनी रहती है, और वह अपने कामों में आनंद लेते हैं (पद 31)।

जब हम बनाने वाले परमेश्वर के अनेक कामों को देखते हैं, तो हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए? इन महान कामों को देखकर, भजनकार ने संकल्प किया: "मैं जीवन भर प्रभु के लिए गाऊंगा; जब तक मैं जीवित हूँ, अपने परमेश्वर की स्तुति करूँगा। मेरा ध्यान उसे भाए, क्योंकि मैं प्रभु में आनंद करूँगा... हे मेरे मन, प्रभु को धन्य कह। हालेलुयाह!" (पद 33–35)। भजनकार ने जीवन भर परमेश्वर के लिए गाने और उनकी स्तुति करने का निश्चय किया। उसने खुद को जीवन भर स्तुति करने के लिए समर्पित किया—ऐसी स्तुति जो परमेश्वर में आनंद लेने पर आधारित हो। एक बार जब हम परमेश्वर की महानता, उनके आश्चर्यजनक कामों और उनकी शक्ति के महान कार्यों को पहचान लेते हैं, तो हम जीवन भर उनकी स्तुति किए बिना नहीं रह सकते। आइए भजन 40 की पहली और दूसरी आयत गाएँ: (आयत 1) “हे प्रभु मेरे परमेश्वर, जब मैं आश्चर्य से उन सभी

लोकों पर विचार करता हूँ जिन्हें तेरे हाथों ने रचा है; मैं तारे देखता हूँ, बादलों की गड़गड़ाहट सुनता हूँ, और पूरे ब्रह्मांड में तेरी शक्ति को प्रकट होते देखता हूँ," (आयत 2) "जब मैं जंगलों और वन-उपवनों में घूमता हूँ और पेड़ों पर पक्षियों का मधुर गीत सुनता हूँ; जब मैं ऊँचे पहाड़ों की भव्यता से नीचे देखता हूँ और झरने की आवाज़ सुनता हूँ और हल्की हवा महसूस करता हूँ," (कोरस) "तब मेरी आत्मा मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर, तेरी स्तुति करती है; तू कितना महान है, तू कितना महान है।" भजनकार, जिसने परमेश्वर द्वारा रची गई दुनिया पर विचार करते हुए जीवन भर प्रभु की महानता और महिमा की स्तुति करने का संकल्प लिया था, उसने परमेश्वर से विनती की कि पापियों और दुष्टों को पृथ्वी से मिटा दिया जाए ताकि उनका अस्तित्व ही न रहे (आयत 35)। वह चाहता था कि पापी इस दुनिया से गायब हो जाएँ और इस दुनिया के श्राप वापस लौट जाएँ (मैकआर्थर)। दूसरे शब्दों में, भजनकार उस "नए स्वर्ग और नई पृथ्वी" के लिए तरस रहा था जिसकी भविष्यवाणी प्रकाशितवाक्य 21:1 में की गई है। आइए भजन 40 की चौथी आयत गाएँ: "जब मसीह जय-जयकार के साथ आएँगे और मुझे अपने घर ले जाएँगे, तो मेरे हृदय में कितनी खुशी भर जाएगी! तब मैं विनम्र आराधना में झुकूँगा, और फिर घोषित करूँगा, 'हे मेरे परमेश्वर, तू कितना महान है!'" वह उस नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में हमेशा प्रभु की स्तुति करना चाहता था। भजनकार की तरह, हमें भी हमेशा प्रभु की महानता और महिमा की स्तुति करनी चाहिए; उनकी रची हुई दुनिया की कल्पना करते हुए और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की लालसा करते हुए, जबकि पुरानी चीजें बीत रही हैं। आइए हम हमेशा परमेश्वर की स्तुति करें—वह जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की सभी चीजों को रचा, उन पर शासन किया और उन्हें नियंत्रित किया; वह जो अपनी देखभाल और योजना के द्वारा पूरी सृष्टि का बुद्धिमानी से संचालन करता है; वह महान, शक्तिशाली, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता परमेश्वर।

आइए हम परमेश्वर के कामों को याद करें।

[भजन संहिता 105]

हेनरी नूवेन की एक किताब है जिसका शीर्षक है *अ पर्सन हू रिमाइंड्स अस ऑफ़ जीसस* (एक व्यक्ति जो हमें यीशु की याद दिलाता है)। इसमें हमें ऐसे लोग बनने के लिए प्रोत्साहित किया गया है जो दूसरों को यीशु द्वारा दिए जाने वाले चंगेपन (healing) की याद दिलाएँ। यदि हम, सेवकों के रूप में, ऐसे लोग बनना चाहते हैं जो दूसरों को यीशु की याद दिलाएँ, तो हमारा "पहला काम है अतीत की दर्दनाक यादों का सामना करना और उन्हें बिना किसी डर के रोशनी में आने का मौका देना। एक सेवक का महान मिशन है इंसानी कहानी को लगातार परमेश्वर की कहानी से जोड़ना। चंगाई का काम यह दिखाना है कि हम इंसानों को जो घाव मिलते हैं, वे उस दुख से गहराई से जुड़े हैं जो खुद परमेश्वर सहते हैं। इसलिए, यीशु मसीह को गहराई से याद करने का मतलब है यह पहचानना कि हमारे अपने छोटे-छोटे दर्द उस बहुत बड़े दुख की कहानी से मेल खाते हैं जो परमेश्वर ने यीशु मसीह के रूप में सहा। चंगाई का मतलब मूल रूप से दर्द को खत्म करना नहीं है; बल्कि यह दिखाना है कि हमारा दर्द एक बड़े दर्द का हिस्सा है, हमारा दुख एक बड़े दुख का हिस्सा है, और हमारा अनुभव मसीह के उस बड़े अनुभव का हिस्सा है—जिन्होंने पूछा था, 'क्या मसीह को ये सब दुख नहीं सहने थे और फिर अपनी महिमा में प्रवेश नहीं करना था?' (लूका 24:26)" (स्रोत: इंटरनेट)।

जब मैंने व्यक्तिगत रूप से चंगाई की सेवा के बारे में हेनरी नूवेन के इन शब्दों पर विचार किया, तो दो शब्दों ने मेरे मन को गहराई से छुआ: "याद करना" (remembering) और "स्मरण करना" (commemorating)। याद करने का क्या मतलब है? नूवेन के अनुसार, "याद करने का मतलब है अतीत की घटनाओं को वर्तमान में लाना और उन्हें यहीं और अभी याद करना।" ब्रेवार्ड एस. चाइल्ड्स ने एक बार कहा था: "याद करने का काम उस पीढ़ी के लिए अतीत को हकीकत बना देता है जो घटना के समय मौजूद नहीं थी। इसके माध्यम से, लोग उद्धार के महान कार्यों का गहराई से अनुभव कर सकते हैं। ... हालाँकि समय और स्थान के कारण

अतीत में परमेश्वर के प्रकटीकरण के दायरे से अलग हो गए हैं, लेकिन याद करने के माध्यम से यह अंतर भर जाता है, जिससे वे लोग जो कभी बाहर थे, वे एक बार फिर उद्धार के इतिहास में शामिल हो सकें" (नूवेन)। हमें याद करने के इस अभ्यास को अपनाना चाहिए। अतीत में परमेश्वर द्वारा किए गए उद्धार के कार्यों को याद करके, हमें आज अपने जीवन में उन्हें स्मरण करना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो मुश्किलों, दुख और ज़ख्मों के बीच भी—परमेश्वर की बचाने वाली कृपा के सहारे—हम उसका धन्यवाद और स्तुति कर सकते हैं, और उद्धार के भरोसे के साथ, हिम्मत से उठकर स्वर्गीय राज्य की ओर अपनी यात्रा जारी रख सकते हैं।

आज के बाइबल पाठ, भजन संहिता 105:5 में, भजनकार हमें "उसके किए गए अद्‌भुत कामों, उसके चमत्कारों और उसके सुनाए गए फैसलों" को याद करने के लिए कहता है। वह हमें "परमेश्वर के कामों को याद रखने" के लिए प्रेरित करता है। तो फिर, यहाँ "परमेश्वर के कामों" से क्या मतलब है? ये उन सभी अद्‌भुत कामों की ओर इशारा करते हैं जो परमेश्वर ने अब्राहम से किए गए वादे को पूरा करने के लिए किए थे—कि वह उसे कनान देश देगा (पद 8–11)। आखिर वे कौन से अद्‌भुत काम थे जो परमेश्वर ने अब्राहम को कनान का वादा किया हुआ देश देने के लिए किए थे? आज के पाठ में, पद 12 से 44 तक, हम इस बारे में तीन बातें देख सकते हैं:

पहला, इज़राइल के उन पूर्वजों पर विचार करें जिन्हें यह वादा मिला था। जब वे कनान देश में परदेसियों की तरह रह रहे थे—"एक देश से दूसरे देश, एक राज्य से दूसरे राज्य" भटक रहे थे (भजन संहिता 105:12–13)—तो परमेश्वर ने अब्राहम से किए गए वादे को पूरा करने के लिए उनकी रक्षा की (पद 14–15)।

भजन संहिता 105:14–15 को देखें: "उसने किसी को भी उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाने दिया; उनकी खातिर उसने राजाओं को डाँटा: 'मेरे चुने हुए लोगों को मत छुओ; मेरे नबियों को कोई नुकसान न पहुँचाओ।'" परमेश्वर ने इज़राइलियों के इस छोटे से समूह की—जो कनान में बिना किसी स्थायी ठिकाने के भटक रहे थे—स्थानीय राजाओं से रक्षा की। इसका एक बेहतरीन उदाहरण बाइबल में अब्राहम और सारा की सुरक्षा का किस्सा है। उत्पत्ति 12:10–17 के अनुसार, जब अकाल के कारण अब्राम (जिसे वादा मिला था) और

उसकी पत्नी साराई को मिस्र जाना पड़ा, तो अब्राम ने—इस डर से कि साराई की खूबसूरती के कारण उसे मार डाला जाएगा—कहा कि वह उसकी बहन है; नतीजतन, मिस्र के राजा फिरौन ने साराई को अपने महल में बुला लिया। उस समय, परमेश्वर ने फिरौन और उसके घरानों पर भारी विपत्तियाँ डालीं, जिससे अब्राम अपनी पत्नी साराई को वापस ला सका। उत्पत्ति 20:3–7 में भी ऐसी ही घटना का ज़िक्र है। उस समय भी, जब अब्राहम गेरार नाम की जगह पर थे, उन्होंने अपनी पत्नी सारा को अपनी बहन बताया; जब गेरार के राजा ने सारा को ले लिया, तो परमेश्वर ने रात में राजा अबीमेलेक को सपने में दर्शन दिया और चेतावनी दी कि किसी दूसरे आदमी की पत्नी को लेने के कारण वह मर जाएगा, और आखिरकार सारा की रक्षा की और उसे छुड़ाया। इस तरह, परमेश्वर ने अब्राहम से सिर्फ़ वादा ही नहीं किया; बल्कि उस वादे को पूरा करते हुए उन्होंने अब्राहम और उनकी पत्नी सारा की रक्षा और देखभाल भी की।

दूसरी बात, अब्राहम से किए गए वादे को पूरा करने के लिए—ऐसे समय में जब याकूब, उनके बच्चे और उनके वंशज बिना किसी स्थायी घर के खानाबदोशों की तरह रह रहे थे—परमेश्वर ने याकूब के बेटों में से एक, यूसुफ को पहले ही मिस्र भेज दिया और कनान देश में अकाल डाल दिया, जिससे उनका भोजन का स्रोत बंद हो गया (भजन संहिता 105:16–17)।

क्या यह अजीब नहीं है? जिस परमेश्वर ने अब्राहम से वादा किया था, वह कैसे—अब्राहम के पोते याकूब और उनके वंशजों को कनान देश में—जो दूध और शहद से भरा-पूरा देश था—खुशहाली से रहने देने के बजाय, ऐसा अकाल ला सकते थे जिसने उन्हें घोर गरीबी में धकेल दिया? यह बात हमारी आम समझ से परे है। फिर भी, निस्संदेह यह अब्राहम से किए गए वादे को पूरा करने के लिए परमेश्वर की रहस्यमयी योजना का हिस्सा है। यह योजना उस भविष्यवाणी को पूरा करने के बारे में है जो परमेश्वर ने उत्पत्ति 15:13 में अब्राहम से कही थी—कि उनके वंशज, यानी इस्राएली, किसी विदेशी देश में परदेसी बनकर रहेंगे, वहाँ के लोगों की सेवा करेंगे और 400 साल तक ज़ुल्म सहेंगे। ऐसा करने के लिए, उन्होंने कनान देश में, जहाँ इस्राएली रहते थे, अकाल डाला (भजन संहिता 105:16) और ऐसी घटनाएँ रचीं कि यूसुफ, जिससे उसके भाई नफ़रत करते थे, को गुलाम बनाकर मिस्र बेच दिया गया (पद 17)। आखिरकार, यूसुफ मिस्र का प्रधानमंत्री बना (पद 20–21), और उसके पिता याकूब, अपने बच्चों और वंशजों के साथ मिस्र चले गए (पद 23), जहाँ परमेश्वर ने

इस्राएल के लोगों की संख्या बहुत बढ़ा दी (पद 24)। क्या परमेश्वर की यह योजना अद्‌भुत नहीं है? ज़रा सोचिए कि कैसे परमेश्वर ने याकूब के बच्चों और वंशजों के उस छोटे से समूह को—जिनकी संख्या केवल सत्तर थी (पद 12) और जो कनान में परदेसी की तरह रह रहे थे—मिस्र की मुश्किलों के बीच भी फलने-फूलने का मौका दिया। व्यवस्थाविवरण 10:22 को देखिए: "तुम्हारे पूर्वज सत्तर लोगों के साथ मिस्र गए थे, और अब तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें आकाश के तारों के समान अनगिनत बना दिया है।" आखिर में, परमेश्वर ने अब्राहम से किया अपना वादा पूरा किया—कि उसके वंशज आकाश के अनगिनत तारों की तरह बढ़ेंगे (उत्पत्ति 15:5)—और मिस्र के दुख-तकलीफों के बीच उस वादे को सच कर दिखाया। परमेश्वर, जो इस्राएल (याकूब) और उसके बच्चों और वंशजों के छोटे से समूह को अकाल के कारण तंगी की हालत में ले आए थे, उन्होंने ही आखिर में उन सबको मिस्र पहुँचाया; वहाँ, गुलामी की दर्दनाक ज़िंदगी के बीच भी उन्होंने उन्हें खूब फलने-फूलने दिया और उन्हें उनके दुश्मन मिस्र से भी ज़्यादा ताकतवर बना दिया (पद 24)। यही परमेश्वर अपनी देखरेख के ज़रिए अब्राहम से किए वादे को पूरा कर रहे थे।

तीसरी बात, अब्राहम से किए वादे को पूरा करने के लिए, परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को—जो मिस्र में बहुत बढ़ गए थे—400 साल बाद मूसा के ज़रिए उस देश से बाहर निकाला (भजन संहिता 105:26–43) और आखिर में इस्राएल जाति को, यानी अब्राहम के वंशजों को, कनान के समृद्ध देश में पहुँचाया—एक ऐसा देश जहाँ दूध और शहद बहता था, जैसा कि उन्होंने वादा किया था (पद 44)।

जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र में फलने-फूलने और मिस्रियों से ज़्यादा ताकतवर बनने का मौका दिया (पद 24), तो फिरौन और मिस्र के लोगों के दिल बदल गए और वे इस्राएलियों से नफ़रत करने लगे (पद 25)। आखिर में, जब इस्राएलियों ने अपनी मुसीबत और ज़ुल्म के बीच परमेश्वर को पुकारा, तो उन्होंने मूसा और हारून को मिस्र भेजा; मूसा के ज़रिए उन्होंने दस विपत्तियाँ भेजीं और आखिर में इस्राएलियों को "चाँदी और सोने के साथ" मिस्र से निकलने का मौका दिया (पद 37)। इसके अलावा, परमेश्वर ने बादल के खंभे और आग के खंभे के ज़रिए जंगल में उनकी अगुवाई की (पद 39) और खाने के लिए बटेर देकर और चट्टान से पानी निकालकर उनकी ज़रूरतें पूरी कीं (पद 40–41)। आज के हिस्से का 42वां पद बताता है कि परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया: "क्योंकि उन्हें अपना पवित्र वादा और अपने सेवक अब्राहम की याद आई।" चूँकि परमेश्वर

को अब्राहम से किया गया पवित्र वादा याद था, इसलिए उन्होंने पूरी निष्ठा से उस वादे को पूरा किया। इस तरह, उन्होंने इस्राएल के लोगों को मिस्र से छुड़ाया। ऐसा करते हुए, उन्होंने उन्हें खुशी-खुशी मिस्र से बाहर निकाला और अपने चुने हुए लोगों को गाते-बजाते हुए बाहर ले गए (पद 43)। तो फिर, परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों से किया वादा क्यों पूरा किया? उनका मकसद क्या था? पद 45 में मकसद बताया गया है: "ताकि वे उनके नियमों को मानें और उनके कानूनों का पालन करें..." अब्राहम से वादा करके और बाद में उसे पूरा करके, परमेश्वर ने अब्राहम के वंशजों—यानी इस्राएल में अपने चुने हुए लोगों—को अपनी बात मानने के काबिल बनाया।

अब्राहम को कनान देश देने के अपने वादे को पूरा करने के लिए परमेश्वर ने जो तीन अद्‌भुत काम किए, उन पर विचार करते हुए मैंने यह बात समझी है: मुझे पूरा भरोसा है कि जैसे प्रभु हमारे विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च से किए गए वादे को पूरा कर रहे हैं—जो मत्ती 16:18 में है—वैसे ही वे वफादारी से हमारी रक्षा और देखभाल कर रहे हैं। इसके अलावा, परमेश्वर के सुरक्षा के वादे से हमें इतना सुकून और ताकत इसलिए मिलती है क्योंकि, भले ही हम इस वीरान दुनिया में परदेसी की तरह रह रहे हैं, वे हमारी रक्षा करते हैं और हमें सच्चे "कनान"—यानी स्वर्ग के राज्य—की ओर ले जाते हैं, जिसका वादा उन्होंने यीशु मसीह के ज़रिए हमसे किया है। मेरा यह भी मानना है कि प्रभु अब्राहम से किए गए वादे को पूरा करते रहते हैं; वे अपने आध्यात्मिक बच्चों—यानी हममें से जो लोग इस वीरान दुनिया में रह रहे हैं—की संख्या को तारों की तरह अनगिनत बनाते हैं, भले ही हमें कितनी भी मुश्किलों का सामना क्यों न करना पड़े। हमें उस परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए जो ऐसी मुश्किलों के ज़रिए हमारी दुनियावी निर्भरताओं को हटा देता है और हमें ऐसी स्थिति में ले आता है जहाँ हमें सिर्फ़ उसी पर निर्भर रहना पड़े; इसी परमेश्वर पर भरोसा करते हुए, हमें स्वर्ग के उस 'वादे किए गए देश' की ओर अपनी यात्रा जारी रखनी चाहिए।

प्यारे लोगों, परमेश्वर ने हमें उद्धार का अनुग्रह दिया है। इस अनुग्रह का मकसद क्या है? परमेश्वर के वचन का पालन करना। हम परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं, जिन्हें शैतान के राज्य—जिसे मिस्र के रूप में दिखाया गया है—से छुड़ाया गया है, और हम अभी परमेश्वर के राज्य की ओर जाने वाले रास्ते में परदेसी की तरह चल रहे हैं। जैसे-जैसे हम एक बेहतर घर की चाह में आगे बढ़ते हैं, हमें परमेश्वर के वचन का पालन करना

चाहिए। हमें प्रभु की शिक्षाओं के अनुसार जीना चाहिए और कभी भी दाएं या बाएं नहीं भटकना चाहिए। इस दौरान, मेरी प्रार्थना है कि हम—भजनकार की तरह—परमेश्वर का धन्यवाद करें (पद 1a), उसके उद्धार के कामों के बारे में गाएं और उनका प्रचार करें (पद 1–2), और अपने स्वर्गीय घर की ओर बढ़ते हुए उसके दर्शन और उसकी शक्ति को खोजें (पद 3–4)।

मुझे कृपा के साथ याद रखना।

[भजन संहिता 106]

एमनीशिया (याददाश्त खोना) क्या है? यह ग्रीक शब्द *एमनीशिया* से आया है और इसका मतलब है याददाश्त से जुड़ी एक बीमारी। इसके कारणों को ऑर्गेनिक (शारीरिक) और फंक्शनल (कार्य-संबंधी) कारकों में बांटा गया है। ऑर्गेनिक कारणों से होने वाले Amnesia को "ट्रॉमेटिक Amnesia" कहा जाता है; यह दिमाग के उन हिस्सों (आमतौर पर हिप्पोकैम्पस) में खराबी के कारण होता है जो याददाश्त के लिए जिम्मेदार होते हैं—जैसे दुर्घटना, बीमारी या ड्रग्स के इस्तेमाल से लगी चोट। फंक्शनल कारणों से होने वाले Amnesia को "डिसोसिएटिव Amnesia" कहा जाता है। फंक्शनल कारकों में मनोवैज्ञानिक तत्व शामिल होते हैं, जैसे डिफेंस मैकेनिज्म (बचाव के तरीके)। एक स्थिति "आंशिक Amnesia" (partial amnesia) भी होती है। इसे आम तौर पर लंबे समय की याददाश्त खोने और कम समय की याददाश्त खोने में बांटा जाता है। "लंबे समय की याददाश्त खोने" का मतलब है अतीत की यादें खो जाना—खासकर, याददाश्त का कुछ हिस्सा खो जाना। इस श्रेणी में दो प्रकार शामिल हैं: "आंशिक Amnesia," जिसमें अतीत का केवल कुछ हिस्सा भुला दिया जाता है, और "पूर्ण Amnesia" (total amnesia), जिसमें पूरा अतीत भुला दिया जाता है। इसके विपरीत, "कम समय की याददाश्त खोने" का मतलब है कुछ ही पल पहले हुई घटनाओं को याद न कर पाना। यह Amnesia का सबसे आम रूप है; गंभीर मामलों में, व्यक्ति को यह भी याद नहीं रहता कि उसने एक पल पहले क्या कहा था। हालांकि *Amnesia* की तुलना कभी-कभी साधारण भूलने की आदत से की जाती है, लेकिन अंतर इसके स्तर में है: रोज़मर्रा की भूलने की आदत में कभी-कभी चीजें भूलना शामिल है, जबकि Amnesia में याददाश्त पूरी तरह से चली जाती है (स्रोत: इंटरनेट)। ऑनलाइन याददाश्त खोने के बारे में रिसर्च करते समय, मैंने भूलने के अलग-अलग स्तरों के बारे में सोचा। साधारण भूलने की आदत—यानी ध्यान न देना—कम समय की याददाश्त खोने की तुलना में बहुत मामूली है, फिर भी लंबे

समय की याददाश्त खोने की तुलना में कम समय की याददाश्त खोना भी संभालने लायक लगता है। हालांकि अतीत के कुछ हिस्सों की याददाश्त खोना दुर्भाग्यपूर्ण है, मुझे एहसास हुआ कि "पूर्ण Amnesia"—यानी सब कुछ पूरी तरह से भूल जाना—एक बहुत गंभीर बात होगी। यह सोच आज के पाठ, भजन संहिता 106 से आई; मैंने यह सोचकर ही सिहरन महसूस की कि अगर हम भगवान की कृपा को पूरी तरह से भूल जाएं—एक तरह का "आध्यात्मिक पूर्ण Amnesia"—जैसा कि इस पाठ में इज़राइलियों ने किया था, तो क्या नतीजे होंगे। फिर भी, भले ही हम भगवान की अद्भुत कृपा को पूरी तरह से याद न रख पाएं, मुझे यकीन है कि एक स्पष्ट उम्मीद बनी रहती है। उम्मीद इस बात में है कि हम भी वही प्रार्थना कर सकते हैं जो भजनकार ने परमेश्वर से की थी: "हे प्रभु, मुझे भी उसी कृपा के साथ याद कर जो तू अपने लोगों पर करता है" (भजन संहिता 106:4)। इस आयत और "मुझे कृपा के साथ याद कर" शीर्षक पर आधारित, मैं चिंतन के लिए दो बातें बताना चाहता हूँ: पहली, इस्राएली क्या याद रखने में नाकाम रहे? और दूसरी, परमेश्वर क्या याद रखता है?

इस्राएली क्या याद रखने में नाकाम रहे? यह अंश तीन बातों पर ज़ोर देता है।

पहली बात, वे प्रभु की भरपूर दया और प्रेम को याद नहीं रख पाए।

भजन संहिता 106:7 को देखें: "मिस्र में हमारे पूर्वजों ने तेरे चमत्कारों को नहीं समझा; वे तेरी अपार दया को याद नहीं रख पाए, बल्कि समुद्र—लाल सागर—के पास विद्रोह किया।" तो फिर, मिस्र से निकलने (निर्गमन) के समय परमेश्वर ने इस्राएलियों पर कौन सी भरपूर दया और प्रेम दिखाया था? यह वह प्रेम था जो तब दिखा जब परमेश्वर ने इस्राएलियों की पुकार सुनी, उन पर दया की, मूसा को भेजा, और—उसके ज़रिए—फ़िरौन और मिस्र पर दस विपत्तियाँ लाकर उन्हें छुड़ाया। फिर भी, इस्राएली मिस्र में परमेश्वर द्वारा किए गए चमत्कारों को समझ नहीं पाए; वे उसकी भरपूर दया और प्रेम को भूल गए और लाल सागर के पास उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया। लाल सागर के किनारे डेरा डाले हुए, उन्होंने सुना कि मिस्र की सेना उनका पीछा कर रही है और मूसा के विरुद्ध शिकायत की (निर्गमन 14:11)। असल में, यह परमेश्वर के विरुद्ध शिकायत करने जैसा था, जिसने मूसा को उनका नेता नियुक्त किया था। यह विश्वास की कमी को दर्शाता है (पार्क युन-सन)।

इस्राएलियों के इतने पापपूर्ण व्यवहार के बावजूद, परमेश्वर ने अपने नाम की खातिर लाल सागर के पास उन्हें बचाया (भजन संहिता 106:8)। उसने लाल सागर को डाँटा, जिससे वह सूख गया, और इस्राएलियों को समुद्र पार करने में मदद की जैसे वे किसी जंगल से गुज़र रहे हों (आयत 9)। इस बीच, पानी ने पीछा कर रही मिस्र की सेना को निगल लिया, और कोई भी जीवित नहीं बचा (आयत 11)। परमेश्वर ने इस्राएलियों को उनसे नफ़रत करने वालों के हाथों से बचाया और दुश्मन के हाथों से छुड़ाया (आयत 10), और इस तरह अपनी महान शक्ति को प्रकट किया (आयत 8)। नतीजतन, इस्राएली परमेश्वर के वादों पर विश्वास करने लगे और उनकी स्तुति में गीत गाए (पद 12)।

क्या हम भी अपना जीवन वैसे ही जी रहे हैं जैसे इस्राएलियों ने किया था—परमेश्वर की भरपूर दया (प्रेम) को भूलकर? परमेश्वर ने आप पर और मुझ पर—जो मिस्र की तरह शैतान के राज्य में अविश्वास में जी रहे थे—"अपने नाम की खातिर" उद्धार की कृपा की; फिर भी, क्या हम उस महान कृपा और प्रेम को भूलकर जी रहे हैं? इसीलिए हमें भी आज के भाग में भजनकार की तरह प्रार्थना करनी चाहिए: "मुझे उस कृपा के साथ याद रख जो तू अपने लोगों पर दिखाता है" (पद 4)।

दूसरी बात, इस्राएल के लोग परमेश्वर के कामों को भूल गए।

भजन संहिता 106:13 को देखें: "वे जल्द ही उसके कामों को भूल गए; उन्होंने उसकी सलाह का इंतज़ार नहीं किया।" लाल सागर पर परमेश्वर के उद्धार के काम का अनुभव करने के बावजूद, इस्राएलियों ने मूसा—जो परमेश्वर द्वारा नियुक्त नेता था—के खिलाफ बड़बड़ाने का पाप किया, सिर्फ इसलिए कि जंगल में कुछ समय के लिए भोजन की कमी हो गई थी। इस प्रकार, इस्राएली जल्दी ही परमेश्वर के कामों को भूल गए। परमेश्वर के इंतज़ाम का इंतज़ार करने के बजाय, उन्होंने बेसब्री से भोजन की इच्छा की और मूसा के खिलाफ शिकायत करके पाप किया (पार्क युन-सन)। पद 14 को देखें: "उन्होंने जंगल में तीव्र इच्छा को हावी होने दिया और रेगिस्तान में परमेश्वर की परीक्षा ली।" भले ही उन्होंने इस तरह पाप किया, परमेश्वर ने उनके पीने के लिए चट्टान से पानी निकाला और मन्ना और बटेर का मांस दिया (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने वह दिया जिसकी इस्राएलियों ने मांग की थी (पद 15)। फिर भी, इस्राएलियों ने मूसा और हारून के खिलाफ विद्रोह करने का पाप किया (गिनती 16) और इसके अलावा, होरेब में सोने के बछड़े को बनाने और

उसकी पूजा करने का घोर घृणित पाप किया (भजन संहिता 106:19; निर्गमन 32)। उन्होंने परमेश्वर की महिमा को घास खाने वाले बैल की मूर्ति से बदलने का पाप किया (पार्क युन-सन)।

आज हम जिस पापी दुनिया में जी रहे हैं, वह "अमर परमेश्वर की महिमा को नश्वर मनुष्य, पक्षियों, जानवरों और रेंगने वाले जीवों जैसी मूर्तियों से बदलने" का पाप कर रही है (रोमियों 1:23)। समस्या यह है कि हम, यानी परमेश्वर के लोग भी, यह पाप कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, हम ईसाई भी परमेश्वर की महिमा के बदले इंसानी महिमा पाने के दोषी हैं। आज के वचन—भजन संहिता 106:14—के अनुसार, इसका एक मुख्य कारण "लालच" है। चाहे सम्मान की चाहत हो या भौतिक धन की इच्छा, ऐसा लालच परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की महिमा के बजाय अपनी महिमा पाने का पाप करने की ओर ले जाता है। हम परमेश्वर की महिमा के बजाय इंसानी महिमा इसलिए चाहते हैं क्योंकि हम परमेश्वर के कामों पर ध्यान देने के बजाय इंसानी कामों पर ध्यान देते हैं। इसलिए, आज के वचन में भजनकार की तरह, हमारे पास प्रार्थना करने के अलावा कोई चारा नहीं है: "मुझे उस भलाई [अनुग्रह] के साथ याद रख जो तू अपने लोगों को दिखाता है" (पद 4)।

तीसरी बात, इस्राएल के लोग अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को भूल गए।

भजन संहिता 106:21 को देखिए: "वे अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को भूल गए, जिसने मिस्र में बड़े-बड़े काम किए थे।" इस्राएल के लोग न केवल परमेश्वर की भरपूर दया और उनके लिए किए गए कामों को भूल गए, बल्कि वे उससे भी आगे बढ़कर खुद परमेश्वर—अपने उद्धारकर्ता—को ही भूल गए। हालाँकि परमेश्वर ने मिस्र में "बड़े काम" (पद 21) करके और अपनी महान शक्ति दिखाकर इस्राएल के लोगों को बचाया था, फिर भी वे अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को भूल गए। लाल सागर (पद 22) पर चमत्कार करने वाले परमेश्वर को भूलकर, इस्राएलियों ने परमेश्वर के वादे पर विश्वास नहीं किया (अविश्वास) (पद 24); उन्होंने शिकायत की और परमेश्वर की बात मानने से इनकार कर दिया (आज्ञा न मानना) (पद 25); और वे और भी आगे बढ़कर मूर्तिपूजक देवता बाल-पओर की पूजा करने लगे (पद 28)। इसके अलावा, उन्होंने मेरिबा के जल के पास परमेश्वर की आत्मा के विरुद्ध विद्रोह किया (पद 33); कनान देश में प्रवेश करने पर, मूर्तिपूजक जातियों को नष्ट करने के बजाय, वे उनके साथ घुल-मिल गए, उनके तौर-तरीके सीखे (पद 35), और उनकी मूर्तियों की सेवा की (पद 36)। उन्होंने उन मूर्तियों के सामने अपने ही बच्चों की बलि तक चढ़ा दी और उनका खून

बहाया (पद 37–38)। इस्राएलियों के काम अशुद्ध और विश्वासघाती हो गए (पद 39)। आखिरकार, उनके पापों के कारण पवित्र परमेश्वर का क्रोध भड़क उठा (पद 23, 29, 32, 40) और उन्होंने उन्हें दूसरी जातियों के हवाले कर दिया (पद 41); अपने दुश्मनों के अत्याचार से परेशान होकर (पद 42), इस्राएलियों ने परमेश्वर से दुहाई दी—जिन्होंने उनकी पुकार सुनी और उनके दुख को समझा (पद 44)—और हालाँकि उन्होंने उन्हें "कई बार" बचाया, फिर भी अपनी बगावत भरी योजनाओं और अपने ही बुरे कामों के कारण वे मुसीबत में पड़ गए (पद 43)।

हम अक्सर भगवान की बचाने वाली कृपा को बहुत जल्दी भूल जाते हैं। और तो और, हम उस भगवान को भी जल्दी भूल जाते हैं जिन्होंने हमें वह मुक्ति दी। भले ही भगवान ने हम पर दया की और हमें उन दुखों और मुश्किलों से बचाया जिनके लिए हमने पुकार लगाई थी, लेकिन जब हम शांति से और ऐसी मुश्किलों से दूर रहते हैं, तो हम उस बचाने वाली कृपा को जल्दी ही भूल जाते हैं। हम जिन दुखों और मुश्किलों से गुज़रे, उन्हें तो हम याद रखते हैं, लेकिन भगवान की उस बचाने वाली कृपा को जल्दी भूल जाते हैं जिसने हमें उनसे बचाया था। दूसरे शब्दों में, हमें वे दुख और मुश्किलें तो अच्छी तरह याद रहती हैं जिनका हमने सामना किया, लेकिन हम भगवान के उन कामों—उनकी कृपा—को बहुत जल्दी भूल जाते हैं जिनकी वजह से हमें मुक्ति मिली। इसके अलावा, एक बार जब हम बच जाते हैं और शांति से रहने लगते हैं, तो हम अक्सर अपने बचाने वाले भगवान को भूल जाते हैं। इसीलिए, आज के भजन में भजनकार की तरह, हमें प्रार्थना करनी चाहिए, "मुझे उस कृपा [अनुग्रह] के साथ याद रखें जो आप अपने लोगों पर दिखाते हैं" (पद 4)।

तो, भगवान क्या याद रखते हैं?

वे ठीक वही "अपना वाचा" (covenant) याद रखते हैं जो उन्होंने हमारे साथ किया था।

भजन संहिता 106:45 देखें: "उनकी खातिर उन्होंने अपनी वाचा को याद किया और अपने अटूट प्रेम की महानता के अनुसार दया की।" हालाँकि, इज़राइल के लोग भगवान के प्रेम और कृपा को इस तरह भूल गए, और अविश्वास और आज्ञा न मानने के कारण पाप करने लगे। इस प्रकार, भगवान, जिन्होंने इज़राइल के लोगों को अनुशासित किया था, ने अंततः उन पर दया की; जब वे अपनी मुसीबत में चिल्लाए, तो उन्होंने

"उनकी खातिर अपनी वाचा को याद किया और अपने अटूट प्रेम की महानता के अनुसार दया की" (पद 45), जिससे उन्हें उन सभी लोगों की नज़र में दया मिली जिन्होंने उन्हें बंदी बनाया था (पद 46)। दूसरे शब्दों में, भगवान ने एक बार फिर इज़राइल के लोगों को अस्थायी सज़ा से बचाया (पार्क युन-सन)। हालाँकि इज़राइली भगवान के भरपूर अटूट प्रेम और उनके महान कामों को भूल गए थे—और, इसके अलावा, अपने बचाने वाले भगवान को भी भूल गए थे—फिर भी भगवान ने अपने लोगों, इज़राइल को याद रखा और उनके साथ की गई वाचा को नहीं भूले। भले ही इज़राइली वाचा के प्रति वफादार नहीं रहे, लेकिन भगवान उनके अविश्वास के बावजूद अपनी वाचा वाले लोगों के प्रति वफादार रहे। इसका कारण क्या है? हमें इसका जवाब 2 तीमुथियुस 2:13 में मिलता है: "यदि हम अविश्वासी हैं, तो भी वह विश्वासी बना रहता है—क्योंकि वह स्वयं का इनकार नहीं कर सकता।" असल बात यही है। परमेश्वर अपने वाचा के लोगों—यानी आप और मुझ—के प्रति इसलिए वफ़ादार रहते हैं क्योंकि वह खुद से मुकर नहीं सकते। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ऐसे हैं जो हमारे प्रति वफ़ादार रहे बिना रह ही नहीं सकते। यह उनका स्वभाव ही है। इसे अनुग्रह के अलावा और क्या कहा जा सकता है? मुझे यशायाह 49:15 के शब्द याद आते हैं: "क्या कोई माँ अपनी छाती से दूध पीने वाले बच्चे को भूल सकती है और अपनी कोख से जन्मे बच्चे पर दया नहीं कर सकती? भले ही वह भूल जाए, पर मैं तुम्हें नहीं भूलूँगा!" यह कितनी बड़ी कृपा है कि अगर कोई माँ अपने दूध पीते बच्चे को भूल भी जाए, तब भी हमारा परमेश्वर हमें कभी नहीं भूलेगा। हम अक्सर परमेश्वर की भरपूर दया और प्रेम को याद रखने में नाकाम रहते हैं, जल्दी ही उन कामों को भूल जाते हैं जो उन्होंने हमारे जीवन में किए हैं, और यहाँ तक कि ऐसे जीते हैं मानो उनका कोई अस्तित्व ही न हो; फिर भी, परमेश्वर वादा करते हैं कि वे हमें कभी नहीं भूलेंगे—भले ही हम कितने भी कृतघ्न क्यों न हों। अगर यह अनुग्रह नहीं है, तो और क्या है? इसीलिए, आज के वचन में भजनकार की तरह, हम भी प्रार्थना करने के लिए प्रेरित होते हैं: "मुझे उस भलाई [अनुग्रह] के साथ याद कर जो तू अपने लोगों पर करता है" (पद 4)।

प्रियजनों, आइए आज रात हम परमेश्वर से वैसी ही प्रार्थना करें जैसी भजनकार ने की थी: "हे प्रभु, मुझे उस अनुग्रह के साथ याद कर जो तूने मुझ पर किया है" (पद 4)। भले ही हम आध्यात्मिक भूलने की बीमारी से ग्रस्त हों—परमेश्वर की भरपूर दया और उनके महान कामों को भूल गए हों, या ऐसे जी रहे हों मानो हम

अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को भूल ही गए हों—आइए आज रात हम पुकारें और उनसे कहें कि वे हमें केवल उस अनुग्रह के कारण याद रखें जो उन्होंने हम पर दिखाया है।

वह परमेश्वर जो बड़े पाप के बीच भी बड़ी कृपा करता है

[भजन संहिता 106:6-12]

मैं जिन बहुत से वचनों को जानता हूँ—कम से कम दिमागी तौर पर—उनमें से कुछ समय ऐसे होते हैं जब परमेश्वर किसी खास वचन के ज़रिए मुझ पर अपनी कृपा बरसाते हैं। वह वचन रोमियों 5:20 का बाद वाला हिस्सा है: "...परन्तु जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ अनुग्रह और भी अधिक बढ़ा।" इस वचन के ज़रिए, परमेश्वर मुझे मेरा पाप दिखाते हैं। पवित्र आत्मा के इस काम के बीच जो बात सचमुच अद्‌भुत है, वह यह है कि मेरा दिल परमेश्वर की कृपा से भर जाता है। दूसरे शब्दों में, मैं अपने पाप की विशालता के बीच ही परमेश्वर की कृपा की विशालता का अनुभव करता हूँ।

जब हम आज के अंश, भजन संहिता 106:6-12 के आधार पर परमेश्वर के स्वभाव पर विचार करते हैं, तो हम उन्हें एक ही वाक्यांश में बता सकते हैं: वह ऐसे परमेश्वर हैं जो बड़े पाप के बीच भी बड़ी कृपा करते हैं। मेरी प्रार्थना है कि आज हम भजन संहिता 106:6-12 के अंश के ज़रिए इन परमेश्वर से मिलें।

पहली बात जिस पर हमें विचार करना चाहिए, वह है इस्राएल के लोगों द्वारा किया गया बड़ा पाप। भजन संहिता 106:6 में, भजनकार स्वीकार करता है, "हमने पाप किया है, ठीक वैसे ही जैसे हमारे पूर्वजों ने किया था; हमने गलत काम किया है और बुराई की है।" आखिर वह कौन सा बुरा पाप था जो उन्होंने अपने पूर्वजों के साथ मिलकर किया था? हम तीन पहलुओं की पहचान कर सकते हैं:

पहला, इस्राएल के लोगों ने—अपने पूर्वजों के साथ मिलकर—जो बुरा पाप किया, वह यह था कि वे प्रभु के अद्‌भुत कामों को समझ नहीं पाए।

भजन संहिता 106:7 के पहले हिस्से को देखें: "मिस्र में हमारे पूर्वज आपके अद्भुत कामों को नहीं समझ पाए..." इस्राएल के लोग उन चमत्कारों को समझने में नाकाम रहे जो परमेश्वर ने मिस्र से निकलने (एक्सोडस) के समय किए थे। उन्होंने उनमें कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई और उन पर कोई ध्यान नहीं दिया। दूसरे शब्दों में, दाऊद के समय के यहूदियों ने उन महान कामों को भूलने का पाप किया जो परमेश्वर ने मिस्र के दौर में उनके पूर्वजों के जीवन में किए थे (वचन 7)। और हमारा क्या? क्या हम भी वही पाप नहीं कर रहे हैं जो इस्राएल के लोगों ने किया था? मेरा मानना है कि हममें कोई अंतर नहीं है। हम भी अक्सर अतीत में परमेश्वर द्वारा हमारे लिए किए गए अच्छे कामों को भूलकर अपना जीवन जीते हैं। आज भी, इस दुनिया में रहते हुए, हम उन कामों को नहीं पहचान पाते जो परमेश्वर हमारे जीवन में कर रहे हैं। आज के वचन में इसी गंभीर पाप की ओर इशारा किया गया है।

दूसरी बात, इस्राएल के लोगों ने—अपने पूर्वजों के साथ मिलकर—जो बुरा पाप किया, वह था प्रभु की अपार दया और प्रेम को याद न रखना।

भजन संहिता 106:7 के बीच का हिस्सा देखिए: "...उन्होंने तेरी अपार दया को याद नहीं रखा..." क्योंकि दाऊद के समय के इस्राएलियों ने उन चमत्कारों को भुला दिया था जो परमेश्वर ने मिस्र के समय में उनके पूर्वजों के जीवन में किए थे, इसलिए उन्होंने परमेश्वर के "अपार प्रेम" को भूलने का पाप भी किया। और हम? हम कितनी बार उस महान और अपार प्रेम को भूलकर जीते हैं जो परमेश्वर ने अतीत में अपने शक्तिशाली कामों के ज़रिए हमें दिखाया है? पवित्र शास्त्र इसे भी एक गंभीर पाप मानता है।

तीसरी बात, इस्राएल के लोगों ने—अपने पूर्वजों के साथ मिलकर—जो बुरा पाप किया, वह था परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करना। भजन संहिता 106:7 का बाद का हिस्सा देखिए: "...उन्होंने समुद्र के पास, लाल सागर के पास विद्रोह किया।" लाल सागर और पीछे आती मिस्र की सेना का सामना करते हुए, इस्राएलियों ने मूसा के विरुद्ध शिकायत की (निर्गमन 14:11)। परमेश्वर द्वारा नियुक्त नेता के विरुद्ध शिकायत करना, स्वयं परमेश्वर के विरुद्ध शिकायत करने के समान है।

इतना गंभीर पाप करने वाले इस्राएलियों पर परमेश्वर ने कौन सी बड़ी कृपा की? वह "उद्धार" से कम कुछ नहीं था। आज का वचन, भजन संहिता 106:8 देखिए: "फिर भी उसने अपने नाम की खातिर उन्हें बचाया, ताकि वह अपनी महान शक्ति को प्रकट कर सके।" परमेश्वर ने इस्राएलियों के गंभीर पाप के बावजूद उनके लिए उद्धार का महान कार्य किया। यह कितना अद्भुत कार्य और कितनी बड़ी कृपा है! यह परमेश्वर की कृपा है जो उन्हें—उनके पाप के बावजूद—"फिर भी" कहकर बचाती है। परमेश्वर ने उन एहसान न मानने वाले इस्राएलियों को क्यों बचाया जिन्होंने इतना बड़ा पाप किया था? इसका कारण था "अपने नाम की खातिर" (वचन 8)। यीशु के नाम का क्या अर्थ है? क्या इसका अर्थ यह नहीं है कि "प्रभु ही उद्धारकर्ता है"? भले ही हमने पाप किया है, प्रभु—हमारे उद्धारकर्ता—हमें अपने नाम की खातिर बचाते हैं। यह कितनी अपार कृपा है! इसके अलावा, इस उद्धार के ज़रिए परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपनी "महान शक्ति" दिखाई। ज़रा मिस्र की उस सेना के बारे में सोचिए जिससे इस्राएली बहुत डरते थे... फिर भी परमेश्वर ने लाल सागर को डांटा और उसे सुखा दिया, और इस्राएलियों को समुद्र के पार ऐसे ले गए मानो वे किसी जंगल से गुज़र रहे हों (पद 9)। इस तरह, परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को उनसे नफ़रत करने वालों के हाथों से बचाया और उन्हें दुश्मन के चंगुल से छुड़ाया (पद 10)। उन्होंने ऐसा क्यों किया? इसलिए क्योंकि, जहाँ मिस्र के लोग—जो इस्राएल के दुश्मन थे—उनसे नफ़रत करते थे, वहीं परमेश्वर इस्राएल के लोगों से प्यार करते थे, भले ही उनका स्वभाव एहसान न मानने वाला और पापी था। परमेश्वर की महान शक्ति न केवल उनके प्रिय लोगों के उद्धार में, बल्कि उनके दुश्मन मिस्र की सेना के विनाश में भी दिखाई दी (पद 11)।

पवित्र परमेश्वर के ख़िलाफ़ गंभीर पाप करने के बावजूद, परमेश्वर की महान शक्ति से मिले महान उद्धार की कृपा का अनुभव करने के बाद एक विश्वासी को कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए? आज के हिस्से के पद 12 को देखिए: "तब उन्होंने उनकी बातों पर विश्वास किया और उनकी स्तुति गाई।" बाइबल दो प्रतिक्रियाओं की ओर इशारा करती है: (1) पहली, परमेश्वर के वचन पर और भी गहराई से विश्वास करना। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब है परमेश्वर के वादे वाले वचन पर विश्वास करना और उसके अनुसार जीवन जीना। इसका मतलब है कि जो विश्वासी अपने गंभीर पाप के बीच परमेश्वर की महान कृपा का अनुभव करता है, वह परमेश्वर पर और भी ज़्यादा भरोसा करने लगता है। (2) दूसरी, परमेश्वर की स्तुति करना। जिस विश्वासी ने परमेश्वर के उद्धार की कृपा का अनुभव किया है, उसके लिए उनकी स्तुति न करना नामुमकिन होना चाहिए। मैं दिल से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसी कृपा आप पर और मुझ पर भी बनी रहे।

परमेश्वर के महान प्रेम को समझें।

[भजन संहिता 107]

परमेश्वर की नज़र में सचमुच मूल्यवान जीवन जीने के लिए—न कि ऐसा जीवन जो बस कुछ समय का हो—हमें प्रभु की प्रेमपूर्ण दया से संतुष्ट जीवन जीना चाहिए (भजन संहिता 90:14)। परमेश्वर ने हमारे भीतर अनंत काल की चाहत रखी है (सभोपदेशक 3:11)। इसलिए, यीशु में नई सृष्टि के रूप में, हम तब एक संतोषजनक जीवन जी सकते हैं जब हम परमेश्वर के अनंत प्रेम के साथ एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। फिर भी, इज़राइल के लोगों की तरह, हम अक्सर प्रभु की भरपूर प्रेमपूर्ण दया को याद किए बिना ही अपना जीवन जीते हैं (भजन संहिता 106:7)। आज परमेश्वर हमसे भजन संहिता 107:43 के माध्यम से बात करते हैं: "जो कोई बुद्धिमान है वह इन बातों पर ध्यान देगा, और वे प्रभु की प्रेमपूर्ण दया को समझेंगे।" इस आयत और "परमेश्वर के महान प्रेम को समझें" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं इस बात पर विचार करना चाहता हूँ कि हम वास्तव में इस महान प्रेम को कैसे समझ सकते हैं और उनकी दी हुई कृपा को कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

हम परमेश्वर के महान प्रेम को कैसे समझ सकते हैं? हम परमेश्वर की बुद्धि के माध्यम से इस महान प्रेम को समझ सकते हैं। जब हमारे पास परमेश्वर की बुद्धि होती है, तो हम—यानी "बुद्धिमान"—"इन बातों पर ध्यान देते हैं" (आयत 43)। तो फिर, यहाँ किन "बातों" का ज़िक्र है? दूसरे शब्दों में, परमेश्वर की बुद्धि के माध्यम से हमें किस बात पर ध्यान देना चाहिए? इसका अर्थ है वे "अद्भुत कार्य" जो परमेश्वर ने मानव जाति के लिए किए हैं (आयत 8, 15, 21, 31)। तो फिर, वे अद्भुत कार्य कौन से हैं जो परमेश्वर ने मानवता के लिए किए हैं? संक्षेप में, यह इज़राइल के लोगों को "बचाने" का परमेश्वर का कार्य है। आज के अंश के आधार पर, हम चार विशिष्ट स्थितियों की पहचान कर सकते हैं जिनसे परमेश्वर ने इज़राइल के लोगों को बचाया (पार्क युन-सन)।

पहला, परमेश्वर ने इज़राइल के लोगों को तब बचाया जब वे जंगल में भटक रहे थे (आयत 4–9)।

भजन संहिता 107:4–5 को देखें: "वे जंगल में, रेगिस्तान के रास्ते पर भटकते रहे; उन्हें रहने के लिए कोई शहर नहीं मिला। भूखे और प्यासे, उनकी आत्मा उनमें निढाल हो गई।" जब इस्राएली रेगिस्तान में भटकते हुए भूख और प्यास से बेहाल हो गए, तो उन्होंने "अपनी मुसीबत में प्रभु को पुकारा," और परमेश्वर ने उन्हें उनकी परेशानी से बचाया (पद 6)। इसके अलावा, परमेश्वर ने न केवल उन्हें उनके दुख से बचाया, बल्कि उन्हें सही रास्ते पर भी चलाया और एक ऐसे शहर तक पहुँचाया जहाँ वे रह सकें (पद 7)। तो फिर, इस्राएलियों के लिए सही प्रतिक्रिया क्या थी जिन्हें यह बचाने वाली कृपा मिली? पद 8 देखें: "वे प्रभु की दया और इंसानों के लिए उनके अद्‌भुत कामों के लिए उनकी स्तुति करें।" इस्राएलियों को परमेश्वर की स्तुति क्यों करनी चाहिए? इसलिए क्योंकि उन्होंने उनकी प्यासी आत्माओं को संतुष्ट किया और उनकी भूखी आत्माओं को अच्छी चीज़ों से भर दिया (पद 9)।

हम जिस दुनिया में रहते हैं, वह एक रेगिस्तान जैसी है। इस रेगिस्तान जैसी दुनिया में रहते हुए, हम भूख और प्यास का अनुभव करते हैं। यह पूरी तरह से स्वाभाविक है। फिर भी, किसी कारण से, हम इस सच्चाई से बचना चाहते हैं और शहर के बीच रहना पसंद करते हैं। एक ऐसी दुनिया में—जो शहर की तरह है—जहाँ लोग शरीर की इच्छाओं, आँखों की लालसा और जीवन के घमंड के पीछे भागते हैं, हम सांसारिक समृद्धि पाने में व्यस्त रहते हैं। और सचमुच, हम कभी-कभी वह सांसारिक समृद्धि पा भी लेते हैं। फिर भी, हमारी आत्माएँ असंतुष्ट ही रहती हैं। ऐसी समृद्धि रेगिस्तान की कमी से किसी भी तरह बेहतर नहीं है; क्योंकि रेगिस्तान में कम से कम ऐसी आत्माएँ तो होती हैं जो—ज़रूरत के कारण—ईमानदारी से परमेश्वर को खोजती हैं और उनकी चाहत रखती हैं। इसलिए, रेगिस्तान की कमी शहर की समृद्धि से कहीं ज़्यादा कीमती है। परमेश्वर, जो हमारी ज़रूरतमंद आत्माओं को संतुष्ट करते हैं, हमें उद्धार की कृपा देते हैं जब हम चाहत और भूख के साथ उन्हें पुकारते हैं। वे हमें रेगिस्तान में बिना मकसद के भटकने से बचाते हैं और सही रास्ते पर ले जाते हैं—हमें सच्चे "शहर," यरूशलेम तक पहुँचाते हैं। इसलिए, हमें परमेश्वर के महान प्रेम के लिए उनकी स्तुति करनी चाहिए।

दूसरी बात, परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को तब बचाया जब वे गुलामी में थे (पद 10–16)।

भजन संहिता 107:10 पर विचार करें: "कुछ लोग अंधेरे और घोर अंधकार में बैठे थे, कैदी लोहे की ज़ंजीरों में जकड़े हुए दुख सह रहे थे।" तो फिर, इस्राएल के लोग दुख और ज़ंजीरों में बंधे हुए अंधेरे और मौत की छाया में क्यों बैठे थे? भजनकार इसका कारण बताते हैं: "क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वचनों के विरुद्ध विद्रोह किया और परमप्रधान की सलाह को तुच्छ समझा" (पद 11)। उनका पाप परमेश्वर के वचन का हठपूर्वक विरोध करना था। जो लोग ऐसे गंभीर पाप करते हैं, वे कैद की सज़ा के हकदार होते हैं—एक ऐसा अंजाम जो मौत से भी ज़्यादा भयानक है (यिर्मयाह 22:10) (पार्क युन-सन)। नतीजतन, परमेश्वर ने इज़राइल के लोगों को मुश्किलों के ज़रिए विनम्र बनाया और उन्हें ठोकर खाने के लिए छोड़ दिया, जहाँ उनकी मदद करने वाला कोई नहीं था (भजन संहिता 107:12)। अपनी मुसीबत में, इज़राइल के लोगों ने प्रभु को पुकारा (पद 13)। परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने उन्हें उनके दुख से बचाया, उन्हें अंधेरे और मौत की छाया से बाहर निकाला और उनकी बेड़ियाँ तोड़ दीं (पद 13–14)। इसलिए, इज़राइल के लोगों के लिए, ऐसी बचाने वाली कृपा पाने के बाद, सही प्रतिक्रिया यह है कि वे "प्रभु की प्रेमपूर्ण दया और इंसानों के लिए किए गए उनके अद्भुत कामों के लिए उनकी स्तुति करें" (पद 15)। इज़राइल के लोगों को परमेश्वर की स्तुति क्यों करनी चाहिए? इसलिए क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें आज़ाद किया (पद 16)।

हमारे आस-पास ऐसे लोग हैं जो कैद या गुलामी में जी रहे हैं। जो लोग माफ़ नहीं कर सकते और माफ़ी स्वीकार करने से इनकार करते हैं, वे असल में कैद में जी रहे हैं। एक तरह से, जो लोग लत से जूझ रहे हैं—जैसे शराब की लत, नशीली दवाओं का दुरुपयोग, या जुआ—वे गुलामों की तरह जी रहे हैं। परमेश्वर के वचन की अवज्ञा करने और परमप्रधान को तुच्छ समझने से, इंसान आखिरकार कैद या गुलामी की हालत में संघर्ष करने लगता है। इस तरह, परमेश्वर हमें विनम्र बना सकते हैं और उन लोगों को हटा सकते हैं जो हमारी मदद करते। फिर भी, जब हम परमेश्वर के सामने खुद को विनम्र करते हैं और अपनी मुसीबत में उन्हें पुकारते हैं—ठीक वैसे ही जैसे इज़राइलियों ने किया था—तो वे हमें हमारे दुख से छुटकारा दिलाते हैं। वे हमारी सभी बेड़ियाँ तोड़कर हटा देते हैं। परमेश्वर हमें सच्ची आज़ादी देते हैं। इसलिए, हमें परमेश्वर के महान प्रेम के लिए उनकी स्तुति करनी चाहिए। तीसरी बात, परमेश्वर ने इज़राइल के लोगों को तब बचाया जब वे मौत के कगार पर थे, जैसे कि वे लोग जो किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित हों (पद 17–22)।

भजन संहिता 107:18 को देखें: "उनकी आत्मा को हर तरह के भोजन से घृणा हो गई, और वे मौत के दरवाज़े के करीब पहुँच गए।" "उनकी आत्मा को हर तरह के भोजन से घृणा हो गई" वाक्यांश बताता है कि वे इतने बीमार थे कि कुछ खा नहीं सकते थे (पार्क युन-सन)। इस तरह, इज़राइल के लोग मौत के कगार पर थे। इसका कारण क्या था? कारण यह था कि मूर्ख लोग अपने पापों और गलत कामों के कारण दुख उठाते हैं (पद 17)। उस समय, इज़राइल के लोगों ने "अपनी मुसीबत में प्रभु को पुकारा," और परमेश्वर ने उन्हें उनकी परेशानी से बचाया (पद 19)। परमेश्वर ने "अपना वचन भेजा" और उन्हें चंगा किया, और उन्हें उनकी खतरनाक हालत से बचाया (पद 20)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने अपनी सर्वोच्च शक्ति का इस्तेमाल किया और इज़राइल के लोगों को बचाने का आदेश दिया, जो गंभीर बीमारी के कारण मौत का सामना कर रहे थे (पार्क युन-सन)। तो फिर, इज़राइल के लोगों के लिए सही प्रतिक्रिया क्या थी जिन्हें उद्धार की यह कृपा मिली? आज के पाठ के पद 21–22 को देखें: "वे प्रभु की दया और मनुष्यों के लिए उनके अद्‌भुत कामों के लिए उनकी स्तुति करें! वे धन्यवाद के बलिदान चढ़ाएं, और खुशी के साथ उनके कामों का बखान करें।"

मेरा मानना है कि इस दुनिया में तीन तरह के द्वार हैं: (1) अकोर का द्वार ["अकोर की घाटी," होशे 2:15]—यानी, दुख का द्वार; (2) मृत्यु का द्वार (भजन संहिता 107:18); और (3) आशा का द्वार (होशे 2:15)। भले ही हम इस दुनिया में रहते हैं—एक ऐसा जंगल जो चिंताओं, मुश्किलों, पाप और मौत की सच्चाई से भरा है (भजन 474)—और भले ही हमें दुख और मौत के द्वारों से गुजरना पड़े, लेकिन आखिरी द्वार जिससे हमें गुजरना है, वह आशा का द्वार है। आज भी, प्रभु हमें स्वर्ग के द्वारों की ओर ले जा रहे हैं। उद्धार की इस कृपा पर विचार करते हुए, हम उनके असीम प्रेम से प्रेरित होकर अपनी आखिरी सांस तक प्रभु की स्तुति किए बिना नहीं रह सकते (भजन 403)।

आखिर में, चौथा बिंदु यह है कि परमेश्वर ने इज़राइल के लोगों को तब बचाया जब वे खतरे में थे, ठीक वैसे ही जैसे नाविक समुद्र की तूफानी लहरों के बीच जहाज चलाते हैं (भजन संहिता 107:23–32)।

सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने तूफानी हवा से समुद्र की लहरों को उठाया (पद 25), और मुसीबतों के ज़रिए इस्राएलियों के दिलों को पिघला दिया—उन्हें ऐसे खतरे में डाल दिया कि उनकी हिम्मत जवाब दे गई (पद 26)—और उनकी समझ को खत्म कर दिया जिससे वे नशे में धुत लोगों की तरह लड़खड़ाने लगे (पद 27)। उस पल,

"उन्होंने अपनी मुसीबत में प्रभु को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी परेशानी से बाहर निकाला; उसने तूफान को शांत कर दिया और लहरों को थाम लिया" (पद 28–29)। इसके अलावा, परमेश्वर ने इस्राएलियों को—उस नई शांति का आनंद लेते हुए—उनकी मनचाही सुरक्षित जगह तक पहुँचाया (पद 30)। भजन 462 के बोल याद आते हैं: (पद 1) "एक अंधेरे समुद्र पर जहाँ बड़ी लहरें उठती हैं और लाइटहाउस की रोशनी धुंधली है, प्रभु यीशु—जो इस तूफान में नाव चलाते हैं—इस नाव के खेवैया हैं"; (पद 2) "बड़े तूफान इस नाव को डराते हैं और गहरा पानी इसे निगलने के लिए मुँह खोलता है, फिर भी प्रभु यीशु—जो इस समुद्र को पार कराते हैं—इस नाव के खेवैया हैं"; (पद 3) "अपनी ज़बरदस्त आवाज़ से वे लहरों को हुक्म देते हैं, और समुद्र शांत हो जाता है; जब पूरब का आसमान चमकेगा, तो मैं प्रभु के साथ इस समुद्र को पार करूँगा"; (कोरस) "मुझे कोई डर नहीं, बिल्कुल भी डर नहीं, क्योंकि प्रभु यीशु हमेशा पहरा देते हैं; एक बार जब मैं इस उथल-पुथल भरे समुद्र को पार कर लूँगा, तो मैं उम्मीद की ज़मीन पर पहुँच जाऊँगा।" इसलिए, जिन इस्राएलियों को ऐसी बचाने वाली कृपा मिली है, उन्हें कैसा जवाब देना चाहिए? आज के हिस्से के पद 31–32 को देखें: "वे प्रभु के अटूट प्यार और इंसानों के लिए उसके अद्‌भुत कामों के लिए उसका धन्यवाद करें। वे लोगों की सभा में उसकी बड़ाई करें और बुज़ुर्गों की परिषद में उसकी तारीफ़ करें।"

जैसे सीप समुद्र की गहराई में एक सुंदर मोती बनाती है—तेज़ लहरों और भयंकर तूफानों के बीच भी—वैसे ही परमेश्वर इस रेगिस्तान जैसी दुनिया के तूफानों का इस्तेमाल हमें परमेश्वर के कीमती और सम्मानित बच्चे बनाने के लिए करते हैं। अक्सर, जब ज़िंदगी के तूफान आते हैं और हवा-पानी का ज़ोर होता है, जिससे हमारे दिल डर और घबराहट से कांपने लगते हैं, तो हम अपनी परेशानी में परमेश्वर को पुकारते हैं; फिर वह हमें बचाता है और हमारे दिलों को शांति देता है। इसलिए, हम गाते हैं: "मेरी थकी हुई आत्मा के लिए आराम की जगह, लहरों के बीच एक सुरक्षित ठिकाना, मैं प्रभु की उस अनंत भुजा का सहारा लेता हूँ जो तूफ़ान पर भी राज करती है। प्रभु की अनंत भुजा के सहारे, मैं जहाँ भी जाऊँ, अडिग रहता हूँ, क्योंकि मैं उनकी भुजा पर भरोसा करता हूँ" (भजन 464, पद 1 और कोरस)।

आखिरकार, दुख और मुश्किलों के बीच, परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को बचाया, उन्हें आशीष दी और उन्हें बहुत समृद्ध बनाया (पद 38)। परमेश्वर ने ज़रूरतमंद इस्राएलियों को उनकी तकलीफों से बाहर निकाला

और उनके परिवारों को भेड़ों के झुंड जैसा बना दिया (पद 41), जिससे नेक लोगों ने यह देखा और खुशी मनाई (पद 42)। परमेश्वर ने आपके और मेरे जीवन में कौन-कौन से अद्‌भुत काम किए हैं? क्या आप और मैं उन अद्‌भुत कामों के ज़रिए परमेश्वर के महान प्रेम को महसूस करते हैं? क्या परमेश्वर ने हमें तब नहीं बचाया—हमारी रक्षा नहीं की—जब हम इस रेगिस्तान जैसी दुनिया में भटक रहे थे, पाप के गुलाम थे, हमेशा की मौत का सामना कर रहे थे और ज़िंदगी के तूफ़ानों से जूझ रहे थे? तो फिर, जब हम उद्धार की इस कृपा पर विचार करते हैं, तो हम प्रभु की स्तुति करने से कैसे चूक सकते हैं?

"ओह, प्रभु यीशु की उद्धार करने वाली कृपा! यह सचमुच आनंददायक और सुखद है; मैं हमेशा उस कृपा का आनंद लूँगा और जल्द ही शांतिपूर्ण विश्राम पाऊँगा" (भजन 474, कोरस)।

"परमेश्वर का प्रेम इतना महान है कि इसे ज़बान या कलम से कभी बयान नहीं किया जा सकता; यह सबसे ऊँचे तारों से भी परे है और धरती की सबसे निचली जगहों तक पहुँचता है। पापी आत्माओं को बचाने के लिए, उन्होंने अपने पुत्र को प्रायश्चित का बलिदान बनने के लिए भेजा और हमारे पापों को क्षमा किया। परमेश्वर का महान प्रेम असीम है—एक ऐसा प्रेम जो कभी नहीं बदलता; हे संतों, आओ हम उनकी स्तुति करें" (भजन 404, पद 1 और कोरस)।

क्या आप परमेश्वर के महान प्रेम को समझते हैं?

“जो बुद्धिमान है, वह इन बातों पर ध्यान देगा और प्रभु की दयालुता को समझेगा” (भजन संहिता 107:43)।

क्या आप दुख के समय भी परमेश्वर के महान प्रेम को महसूस करते हैं? जब हम दुख में होते हैं, तो हम परमेश्वर के महान प्रेम को कैसे देख सकते हैं?

दुख के बीच परमेश्वर के महान प्रेम को समझने के लिए, हमें परमेश्वर की बुद्धि की आवश्यकता है। जब हमारे पास परमेश्वर की बुद्धि होती है, तो हम “इन बातों पर ध्यान देते हैं” (भजन संहिता 107:43)। और जब हम प्रभु के अद्भुत कामों (पद 8, 15, 21 और 31) पर ध्यान देते हैं, तो हम दुख के समय में भी उनके महान प्रेम को महसूस कर सकते हैं। प्रभु के वे अद्भुत काम कौन से हैं जिन पर हमें ध्यान देना चाहिए?

पहला, प्रभु का अद्भुत काम दुख के माध्यम से हमें विनम्र बनाना है।

भजन संहिता 107:12 के पहले भाग को देखें: “इसलिए उन्होंने कठिनाई से उनके दिलों को विनम्र किया...” परमेश्वर हम पर दुख क्यों लाते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि हम परमेश्वर के वचन के विरुद्ध विद्रोह करते हैं और उनकी इच्छा का अनादर करते हैं (पद 11)। नतीजतन, परमेश्वर हमें अंधकार और मृत्यु की छाया में बिठाते हैं, जहाँ हम कष्ट और बेड़ियों में जकड़े होते हैं (पद 10)। तब भी, हमें उनके इस अद्भुत काम के माध्यम से परमेश्वर के महान प्रेम को पहचानना चाहिए। जिस महान प्रेम को हमें समझना है, वह यही है—परमेश्वर का हमें विनम्र बनाने का अद्भुत कार्य, भले ही वह ऐसे दुख के माध्यम से हो। यदि हम दुख के माध्यम से विनम्र हो सकते हैं, तो हमें खुशी-खुशी उस दर्द के लिए धन्यवाद देना चाहिए और उसमें आनंद

लेना चाहिए। और प्रभु के इस अद्भुत काम के माध्यम से, हमें उस महान प्रेम को समझना चाहिए जो परमेश्वर हमसे करते हैं। दूसरा, प्रभु के अद्भुत कामों में से एक हमें बिना किसी मददगार के छोड़ देना है।

भजन संहिता 107:12 के बाद वाले भाग को देखें: "...वे ठोकर खाकर गिरे, और मदद करने वाला कोई नहीं था।" जब हम दुख में होते हैं, तो स्वाभाविक रूप से हम किसी से मदद मांगना चाहते हैं। हमारा दुख जितना गहरा होता है, हमें मदद की उतनी ही अधिक आवश्यकता होती है। फिर भी, बाइबिल हमें बताती है कि परमेश्वर हमें ठोकर खाने देते हैं और उस समय हमारी मदद करने वाला कोई नहीं होता। परमेश्वर ऐसा क्यों करते हैं? यह प्रभु के अद्भुत कामों में से एक कैसे है? इसके माध्यम से हम परमेश्वर के महान प्रेम का अनुभव कैसे कर सकते हैं? इंसानी मदद को हटाकर, परमेश्वर हमें यह एहसास दिलाते हैं कि न केवल "मदद [हमारे] भीतर नहीं है" (अय्यूब 6:13) बल्कि इंसानी मदद बेकार और व्यर्थ भी है (यशायाह 30:7)। इस तरह, परमेश्वर हमें यह एहसास दिलाते हैं कि हमारी मदद केवल उन्हीं से मिलती है: "मैं अपनी आँखें पहाड़ों की ओर उठाता हूँ—मेरी मदद कहाँ से आती है? मेरी मदद प्रभु से आती है, जो स्वर्ग और पृथ्वी का बनाने वाला है" (भजन संहिता 121:1-2)। प्रभु के इस अद्भुत काम के ज़रिए, हमें परमेश्वर के महान प्रेम को समझना चाहिए।

तीसरी बात, प्रभु के अद्भुत कामों में से एक है हमें चंगा करने के लिए अपना वचन भेजना।

भजन संहिता 107:20 को देखिए: "उसने अपना वचन भेजा और उन्हें चंगा किया; उसने उन्हें कब्र से बचाया।" जब हम अपने पापों के कारण परमेश्वर की ताड़ना (अनुशासन) से गुज़र रहे होते हैं, तो वह हमें नम्र बनाते हैं और बिना किसी इंसानी मदद के छोड़ देते हैं, जिससे हम नम्रतापूर्वक केवल प्रभु की ओर देखने के लिए मजबूर हो जाते हैं। और तब, परमेश्वर हमें अपना वचन भेजते हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर की ताड़ना हमें जंगल में ले जाती है, जबकि उनका प्रेम उस जंगल में हमारे दिलों से कोमलता से बात करता है (होशे 2:14)। वह वचन हमें चंगा करता है (भजन संहिता 107:20)। यह एक ऐसा वचन है जो हमारे पापों को उजागर करता है और हमें यीशु द्वारा क्रूस पर बहाए गए कीमती लहू पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करता है। यह एक ऐसा वचन है जो हमें अपने पापों का पश्चाताप करने के लिए प्रेरित करता है और हमें क्षमा का भरोसा दिलाता है। उस वचन के माध्यम से, सबसे पहले हमारा आंतरिक जीवन चंगा होता है; और जैसे-जैसे हम

चंगे होते हैं, हम उनके वचन के माध्यम से परमेश्वर के महान प्रेम का अनुभव करते हैं। यह प्रभु का एक अद्भुत काम है, और हमें उस महान प्रेम को समझना चाहिए जो परमेश्वर हमसे करते हैं।

चौथी बात, प्रभु का एक अद्भुत काम हमारे जीवन के भयानक तूफानों को शांत करना है।

भजन संहिता 107:29 को देखिए: "उसने तूफान को शांत करके धीमी आवाज़ में बदल दिया; समुद्र की लहरें थम गईं।" हमारे परमेश्वर ही हैं जो हम पर भयानक तूफान भेजते हैं जब हम, भविष्यद्वक्ता योना की तरह, उनकी आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं (योना 1:4)। वह समुद्र को और अधिक अशांत कर देते हैं (पद 11), जिससे हम अपने पापों को स्वीकार करने के लिए मजबूर हो जाते हैं (पद 10)। जब हम खुद को क्रूस पर बहाए गए यीशु के कीमती लहू के सागर में समर्पित करते हैं, तो उफनती लहरें शांत हो जाती हैं (पद 15)। संक्षेप में, परमेश्वर हमारे जीवन के हिंसक तूफानों को शांत करते हैं (भजन संहिता 107:29)। वे हमारे दिलों को शांत करते हैं, जो तेज़ लहरों से हिलते हुए समुद्र की तरह होते हैं, और हमें शांति प्रदान करते हैं। यह प्रभु का एक अद्भुत कार्य है, और हमें उस महान प्रेम को समझना चाहिए जो परमेश्वर हमसे करते हैं। पाँचवाँ, प्रभु का एक अद्भुत कार्य यह है कि जब हम अपनी मुसीबत में उन्हें पुकारते हैं तो वे हमारी प्रार्थनाएँ सुनते हैं और हमें दर्दनाक स्थितियों से छुटकारा दिलाते हैं।

भजन संहिता 107:6, 13, 19 और 28 पर विचार करें: "तब उन्होंने अपनी मुसीबत में प्रभु को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तकलीफों से छुटकारा दिलाया" (पद 6); "तब उन्होंने अपनी मुसीबत में प्रभु को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तकलीफों से बचाया" (पद 13); "तब उन्होंने अपनी मुसीबत में प्रभु को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तकलीफों से बचाया" (पद 19); "तब उन्होंने अपनी मुसीबत में प्रभु को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तकलीफों से बाहर निकाला" (पद 28)। प्रभु का एक अद्भुत कार्य यह है कि परमेश्वर न केवल हमारे आंतरिक स्वरूप को चंगा करते हैं, बल्कि हमारे बाहरी स्वरूप को भी पीड़ा से छुटकारा दिलाते हैं। जब हम अपनी मुसीबत में परमेश्वर को पुकारते हैं, तो वे हमारी प्रार्थनाएँ सुनते हैं और हमें हमारे दर्द से बचाते हैं। यह प्रभु का एक अद्भुत कार्य है कि वे हम जैसे पापियों की प्रार्थनाएँ सुनते हैं; इसके अलावा, वे हमें जंगल, साथ ही अंधेरे और कष्ट से छुटकारा दिलाकर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं। जब हम उद्धार की इस कृपा का अनुभव करते हैं, तो हम परमेश्वर के महान प्रेम के लिए धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सकते।

हम यह स्वीकार करने के लिए विवश हो जाते हैं कि "परमेश्वर ही उद्धार है" (यीशु नाम का अर्थ)। यह प्रभु का एक अद्भुत कार्य है, और हमें उस महान प्रेम को समझना चाहिए जो परमेश्वर हमसे करते हैं।

छठा, प्रभु का एक अद्भुत कार्य यह है कि वे हमें सही रास्ते पर ले जाते हैं।

भजन संहिता 107:7 पर विचार करें: "और वह उन्हें सही रास्ते पर ले गया, ताकि वे रहने के लिए एक शहर जा सकें।" हमारे परमेश्वर ने हमें शैतान के राज्य—जिसकी तुलना मिस्र से की गई है—से बचाया है और इस रेगिस्तान जैसी दुनिया से होते हुए हमें कनान की सच्ची भूमि, यानी स्वर्ग की प्रतिज्ञा की हुई भूमि की ओर ले जा रहे हैं। परमेश्वर की भेड़ों के झुंड के रूप में, हमें अपने चरवाहे, प्रभु की आवाज़ सुननी चाहिए और उसका पालन करना चाहिए (यूहन्ना 10 देखें); फिर भी, रेगिस्तान जैसी इस दुनिया में, हम अक्सर दाएं-बाएं भटक जाते हैं और बिना किसी मकसद के घूमते रहते हैं (भजन संहिता 107:4)। जब भी ऐसा होता है, तो हमारे चरवाहे प्रभु हमें अपनी "लाठी और सोंटी" से दिलासा देते हैं और सही रास्ता दिखाते हैं (भजन संहिता 23:4)। नतीजतन, हम अब शैतान के टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर नहीं चलते, बल्कि सही रास्ते पर चलते हैं। यह प्रभु का एक अद्भुत काम है, और इसके ज़रिए हमें परमेश्वर के महान प्रेम को समझना चाहिए।

सातवां, प्रभु का अद्भुत काम प्यासी आत्मा को तृप्त करना और भूखी आत्मा को अच्छी चीज़ों से भरना है।

भजन संहिता 107:9 देखें: "क्योंकि वह प्यासी आत्मा को तृप्त करता है, और भूखी आत्मा को भलाई से भर देता है।" परमेश्वर हमें रेगिस्तान में ले जाते हैं और ज़रूरत की स्थिति में लाते हैं। ऐसा करके, वह हमारी आत्माओं में भूख पैदा करते हैं। फिर वह हमारी भूखी आत्माओं में एक तड़प पैदा करते हैं—परमेश्वर और उनके वचन के लिए एक चाहत (व्यवस्थाविवरण 8:2–3 देखें)। उस वचन के ज़रिए, वह हमें समझ देते हैं और यह महसूस करने में मदद करते हैं कि इस धरती पर प्रभु के अलावा चाहने लायक कोई और नहीं है (भजन संहिता 73:25)। कारण यह है कि परमेश्वर चाहते हैं कि हम संतोष के साथ जिएं और केवल प्रभु से संतुष्ट रहें। यह प्रभु के अद्भुत कामों में से एक है, और इसके ज़रिए हमें हमारे प्रति परमेश्वर के महान प्रेम को समझना चाहिए।

आठवां, प्रभु का अद्‌भुत काम हमें सच्ची आज़ादी देना है।

भजन संहिता 107:14 देखें: "वह उन्हें अंधेरे और मौत की छाया से बाहर ले आए और उनकी बेड़ियाँ तोड़ दीं।" सच्चाई के परमेश्वर ही वह परमेश्वर हैं जो हमें आज़ाद करते हैं (यूहन्ना 8:32 देखें)। हमें आज़ाद करते समय, वह सबसे पहले हमारे आंतरिक स्वरूप को पाप से मुक्त करते हैं, और इस तरह हमारे बाहरी स्वरूप को दर्दनाक हालात से आज़ाद करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर जानते हैं कि पाप की बेड़ियों में बंधना और उसका गुलाम होना, शारीरिक बेड़ियों से होने वाली तकलीफ़ से कहीं बड़ी समस्या है। फिर भी, अक्सर शारीरिक बेड़ियों में तकलीफ़ सहते हुए, हम पाप की बेड़ियों में बंधे होने की गंभीरता को नहीं समझ पाते। हम अक्सर उन शारीरिक बंधनों में सहने वाली तकलीफ़ की असली वजह को भी नहीं समझ पाते। खासकर, हालाँकि परमेश्वर चाहते हैं कि हम शारीरिक बंधन की तकलीफ़ के ज़रिए धार्मिकता के सेवक और पाप के सेवक होने के बीच का बड़ा फ़र्क सीखें, पर हम अक्सर इतने नासमझ होते हैं कि उनके इस अद्‌भुत काम को देख नहीं पाते। इसलिए, हमें परमेश्वर से बुद्धि मांगनी चाहिए (याकूब 1:5)। उनकी दी हुई बुद्धि से हमें उनके अद्‌भुत कामों पर ध्यान देना चाहिए (भजन संहिता 107:43)। और हमें परमेश्वर के उस महान प्रेम को समझना चाहिए, जो हमें पाप के बंधन और हमें जकड़ने वाली शारीरिक बेड़ियों, दोनों से आज़ाद करता है। नौवीं बात, प्रभु का अद्‌भुत काम हमें हमारी इच्छाओं के ठिकाने तक ले जा रहा है।

भजन संहिता 107:30 को देखिए: "तब वे शांत होने के कारण खुश होते हैं; इसलिए वह उन्हें उनकी मनचाही बंदरगाह तक पहुँचाता है।" परमेश्वर हमारे जीवन की तूफानी हवाओं को शांत करता है और हमें उस बंदरगाह तक ले जाता है जिसकी हमें चाहत है। ऐसा करते हुए, प्रभु स्वयं हमारे नाविक बन जाते हैं, और हमें अभी भी स्वर्ग की बंदरगाह की ओर ले जाते हैं। भले ही आगे का रास्ता लंबा और खतरनाक लग सकता है, मैं सच्चे दिल से प्रार्थना करता हूँ कि हम सब विश्वास के साथ प्रभु—हमारे नाविक—की ओर देखें और उस स्वर्गीय बंदरगाह तक पहुँचें।

दसवीं बात, प्रभु के अद्‌भुत काम हमें परमेश्वर की स्तुति करने के लिए प्रेरित करते हैं।

भजन संहिता 107:8, 15, 21, 31 और 32 को देखिए: "काश, लोग प्रभु की भलाई और मनुष्यों के लिए उनके अद्‌भुत कामों के लिए उनका धन्यवाद करते!" (पद 8), "काश, लोग प्रभु की भलाई और मनुष्यों के लिए

उनके अद्‌भुत कामों के लिए उनका धन्यवाद करते!" (पद 15), "काश, लोग प्रभु की भलाई और मनुष्यों के लिए उनके अद्‌भुत कामों के लिए उनका धन्यवाद करते!" (पद 21), "काश, लोग प्रभु की भलाई और मनुष्यों के लिए उनके अद्‌भुत कामों के लिए उनका धन्यवाद करते!" (पद 31), "वे लोगों की सभा में भी उनकी महिमा करें, और बुज़ुर्गों की संगति में उनकी स्तुति करें" (पद 32)। आखिरकार, हमारे जीवन में चमत्कारिक और अद्‌भुत काम करके, परमेश्वर हमें उनके महान प्रेम के जवाब में उनकी स्तुति करने के लिए प्रेरित करते हैं। जब मैं उस परमेश्वर के बारे में सोचता हूँ जो दुख के माध्यम से हमें विनम्र बनाता है, तो मुझे भजन 330, "दर्द का जुआ उतार फेंकना" (To Cast Off the Yoke of Pain) के तीसरे पद के बोल याद आते हैं: "अपने अहंकारी दिल को एक तरफ रखकर, मैं यीशु के पास आता हूँ; मैं प्रभु के पास उनके पवित्र वचन का पालन करने आता हूँ। थका हुआ और निराश होकर, मैं ताकत पाने, यीशु का महान प्रेम प्राप्त करने और स्वर्गीय आनंद का अनुभव करने के लिए प्रभु के पास आता हूँ।" जब मैं उस परमेश्वर के बारे में सोचता हूँ जो हमें बिना किसी इंसानी मदद के छोड़ देता है, तो मुझे भजन 349, "प्रभु की मदद पाना" का पहला पद याद आता है: "मैं प्रभु यीशु से प्रार्थना करता हूँ और उनकी मदद चाहता हूँ; मुझे उद्धार दें और मुझे अपना बना लें।" जब मैं उस परमेश्वर पर विचार करता हूँ जो अपना वचन भेजकर हमें चंगा करता है, तो मुझे भजन 235, "वह प्यारा और अद्‌भुत वचन" का तीसरा पद और कोरस याद आता है: "जीवन का वचन, जो दूर-दूर तक गूँजता है, हर दिल में माफ़ी और शांति लाता है; बस यीशु का वचन सुनकर हमें आशीष मिलती है। सुंदर और अनमोल वचन, जीवन का स्रोत; सुंदर और अनमोल वचन, जीवन का स्रोत।" जब मैं उस परमेश्वर के बारे में सोचता हूँ जो हमारे जीवन के तूफ़ानों को शांत करता है, तो मुझे भजन 462, "उफनती लहरों वाले काले समुद्र पर" का तीसरा पद याद आता है: "जब वह अपनी ज़बरदस्त आवाज़ से लहरों को हुक्म देता है, तो यह समुद्र शांत हो जाता है; और जब पूरब में सुबह की रोशनी फैलती है, तो मैं प्रभु के साथ इस समुद्र को पार करूँगा।" जब मैं उस परमेश्वर के बारे में सोचता हूँ जो मुसीबत में हमारी पुकार सुनता है और हमें दर्दनाक हालात से बचाता है, तो भजन 474, "यह दुनिया दुखों से भरी है" के तीसरे पद और कोरस के बोल याद आते हैं: "यह दुनिया पाप और मौत के खतरों से भरी है; फिर भी मेरे प्रभु यीशु मुझे बचाते हैं, और मैं शांति से रहूँगा। प्रभु यीशु की बचाने वाली कृपा में मैं कितना खुश और आनंदित हूँ; मैं हमेशा उस कृपा का आनंद लूँगा और शांति से रहूँगा।" जब मैं उस परमेश्वर के बारे में सोचता हूँ जो हमें सही रास्ते पर ले जाता है, तो भजन 442 के चौथे पद और कोरस के बोल याद आते हैं: "आज से आपकी इच्छा के अनुसार जीने में मेरी मदद करें; अपना महान प्रेम दें और मुझे आपके पीछे चलने दें। अच्छे चरवाहे, उद्धारकर्ता, हमेशा मेरी अगुवाई करें; अच्छे चरवाहे, उद्धारकर्ता, हमेशा मेरी अगुवाई करें।" जब मैं उस परमेश्वर के बारे में सोचता हूँ

जो हमारी प्यासी आत्माओं को तृप्त करता है और भूखों को अच्छी चीज़ों से भर देता है, तो भजन 102 के तीसरे पद और कोरस के बोल याद आते हैं: "प्रभु यीशु से अधिक कीमती कुछ भी नहीं है; मैं उन्हें इस दुनिया की खुशियों के बदले नहीं छोड़ सकता। भले ही प्रलोभन और उत्पीड़न बढ़ें, मेरा दिल उनकी सेवा में अडिग रहता है; मैंने सभी सांसारिक सुखों और सांसारिक गर्व को त्याग दिया है। प्रभु यीशु से अधिक कीमती कुछ भी नहीं है; यीशु के अलावा कोई नहीं है।" जब मैं उस परमेश्वर के बारे में सोचता हूँ जो हमें सच्ची स्वतंत्रता देता है, तो गॉस्पेल गीत "आई हैव फाउंड फ्रीडम" (मुझे स्वतंत्रता मिली है) के पहले पद के बोल याद आते हैं: "मुझे स्वतंत्रता मिली है, तुम्हें स्वतंत्रता मिली है, हमें स्वतंत्रता मिली है; मुझे स्वतंत्रता मिली है, तुम्हें स्वतंत्रता मिली है, हमें स्वतंत्रता मिली है। प्रभु ने कहा है—बेड़ियाँ टूट गई हैं; हमें स्वतंत्रता मिली है। हालेलुयाह! मुझे स्वतंत्रता मिली है, तुम्हें स्वतंत्रता मिली है, हमें स्वतंत्रता मिली है।" जब मैं उस परमेश्वर पर विचार करता हूँ जो हमें हमारी इच्छाओं के किनारे तक ले जाता है, तो मुझे भजन 462, "ऑन ए डार्क सी ऑफ़ रेजिंग वेव्स" (उफनती लहरों के काले समुद्र पर) का कोरस फिर से याद आता है: "मुझे अब कोई डर नहीं, मुझे अब कोई डर नहीं; प्रभु यीशु हमेशा चौकस रहते हैं। जब मैं इस अशांत समुद्र को पार कर लूँगा, तो मैं आशा की उस भूमि पर पहुँच जाऊँगा।" जब हम उनके अद्भुत कार्यों के माध्यम से हमारे लिए परमेश्वर के महान प्रेम को महसूस करते हैं, तो हम उनकी महिमा और महानता की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते (भजन 40, "हाउ ग्रेट दाऊ आर्ट" / आप कितने महान हैं):

1. हे प्रभु मेरे परमेश्वर, जब मैं विस्मय के साथ उन सभी दुनियाओं पर विचार करता हूँ जिन्हें आपके हाथों ने बनाया है; मैं तारे देखता हूँ, मैं गरजती हुई बिजली की आवाज़ सुनता हूँ, पूरे ब्रह्मांड में आपकी शक्ति दिखाई देती है।

2. जब मैं जंगलों और वन-क्षेत्रों में घूमता हूँ, और पेड़ों में पक्षियों को मधुर गीत गाते हुए सुनता हूँ; जब मैं ऊँचे पहाड़ों की भव्यता से नीचे देखता हूँ और झरने की आवाज़ सुनता हूँ और हल्की हवा महसूस करता हूँ।

3. और जब मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को नहीं बचाया, बल्कि उन्हें मरने के लिए भेजा, तो मुझे विश्वास ही नहीं होता; कि क्रूस पर, खुशी-खुशी मेरा बोझ उठाते हुए, उन्होंने मेरे पापों को दूर करने के लिए अपना लहू बहाया और प्राण दिए।

4. जब मसीह जय-जयकार के साथ आएँगे और मुझे अपने घर ले जाएँगे, तो मेरे दिल में कितनी खुशी भर जाएगी; तब मैं श्रद्धा और विनम्रता से सिर झुकाऊँगा, और फिर कहूँगा, "हे मेरे परमेश्वर, तू कितना महान है!"

<कोरस> तब मेरी आत्मा गाती है, हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर, तेरी स्तुति; तू कितना महान है, तू कितना महान है! तब मेरी आत्मा गाती है, हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर, तेरी स्तुति; तू कितना महान है, तू कितना महान है!

“मैं भोर को जगाऊंगा”

[भजन संहिता 108]

इस साल, हमारे स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च का आदर्श वाक्य है “प्रार्थना में खुद को पूरी तरह समर्पित करें।” जब मैं इस आदर्श वाक्य पर विचार करता हूँ, तो सोचता हूँ कि हम कैसे पता लगा सकते हैं कि हमारा चर्च सचमुच प्रार्थना में खुद को समर्पित कर रहा है या नहीं। ऐसा आकलन करने के कई तरीके हैं। उदाहरण के लिए, हम संख्याओं को देख सकते हैं: कितने लोग मासिक रात भर चलने वाली प्रार्थना सभा (जो शुक्रवार से शनिवार तक होती है), बुधवार की प्रार्थना सभा, या शनिवार की सुबह की प्रार्थना सेवा में शामिल होते हैं। हालाँकि उपस्थिति की संख्या हमारी प्रतिबद्धता को मापने का एक तरीका है, लेकिन हमें अपनी प्रार्थनाओं की गुणवत्ता का भी आकलन करना चाहिए। बेशक, यह कोई आसान काम नहीं है; यह कुछ ऐसा है जिसका आकलन हर व्यक्ति को खुद करना चाहिए। आखिरकार, हम यह पता लगा सकते हैं कि क्या पूरा चर्च परिवार सचमुच प्रार्थना में खुद को समर्पित कर रहा है, यह देखकर कि सुबह की प्रार्थना सेवाओं के दौरान परमेश्वर से कैसी प्रार्थनाएँ की जाती हैं। मैं सुबह की सेवा पर ध्यान केंद्रित करता हूँ क्योंकि यह दिन के शुरुआती पलों को दर्शाता है। जितने अधिक लोग प्रभु के घर में दिन की शुरुआत उन्हें समर्पित करने के लिए आते हैं—धन्यवाद और स्तुति से भरी प्रार्थनाएँ करते हुए—उतना ही हम कह सकते हैं कि हमारा चर्च सचमुच प्रार्थना के प्रति अटूट समर्पण के इस साल के आदर्श वाक्य को जी रहा है। यह निश्चित रूप से मुश्किल है कि ऐसे समय में उठें जब कोई स्वाभाविक रूप से थका हुआ और नींद में हो, प्रभु के घर आकर दिन के शुरुआती पल उन्हें समर्पित करें, और धन्यवाद और स्तुति की प्रार्थनाएँ करें। कोई यह पूछ सकता है कि क्या सुबह की प्रार्थना सेवा आयोजित करना वास्तव में आवश्यक है। फिर भी, यदि कोई भोर को जगा सकता है और परमेश्वर को धन्यवाद और स्तुति अर्पित करके दिन की शुरुआत कर सकता है, तो उस व्यक्ति को सचमुच “भोर को जगाने वाला प्रार्थना योद्धा” कहा जा सकता है। तो, भोर को जगाने वाला व्यक्ति कैसे

प्रार्थना करता है? हम तीन पहलुओं पर विचार कर सकते हैं। पहला, जो व्यक्ति प्रार्थना करने के लिए जल्दी उठता है, वह परमेश्वर को धन्यवाद और स्तुति की प्रार्थनाएँ अर्पित करता है।

भजन संहिता 108:3 को देखें: "हे प्रभु, मैं लोगों के बीच तेरा धन्यवाद करूँगा; मैं राष्ट्रों के बीच तेरी स्तुति के गीत गाऊँगा।" आज का अंश दाऊद का परिचय देता है, एक ऐसा व्यक्ति जो प्रार्थना करने के लिए जल्दी उठता था। उसने परमेश्वर से अपनी प्रार्थना धन्यवाद और स्तुति के साथ शुरू की। उसने ऐसा धन्यवाद और स्तुति क्यों की? ऐसा इसलिए था क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के अटूट प्रेम और सच्चाई की महानता का अनुभव किया था। आयत 4 को देखिए: "क्योंकि तेरा अटूट प्रेम आकाश से भी ऊँचा है; तेरी सच्चाई बादलों तक पहुँचती है।" तो फिर, दाऊद ने परमेश्वर के अटूट प्रेम और सच्चाई का अनुभव कैसे किया? उन्होंने परमेश्वर के उद्धार की कृपा—यानी उनके छुटकारा दिलाने के काम (आयत 6)—के ज़रिए उनके अटूट प्रेम का अनुभव किया, और उनकी पवित्रता के ज़रिए परमेश्वर की बातें सुनकर उनकी सच्चाई का अनुभव किया (आयत 7)।

मेरा मानना है कि सुबह-सुबह प्रभु के घर जाकर प्रार्थना करना और उनके अटूट प्रेम और सच्चाई के लिए धन्यवाद और स्तुति करना, विश्वास का एक बहुत ही अनमोल रूप है। इसके अलावा, धन्यवाद और स्तुति के भाव के साथ प्रभु में अपना पूरा दिन बिताना भी एक बहुत ही कीमती विश्वास को दर्शाता है। फिर भी, जब मैं पिछले हफ़्ते के अपने जीवन पर नज़र डालता हूँ, तो मुझे मानना होगा कि मैंने परमेश्वर के सामने पूरी तरह से ऐसा जीवन नहीं जिया है। आज के वचन के प्रकाश में इसके कारण पर विचार करते हुए, मुझे एहसास होता है कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मैं परमेश्वर के उद्धार की कृपा और उनके पवित्र वचन का पूरी तरह से अनुभव नहीं कर पाया। अगर रोज़मर्रा की ज़िंदगी में परमेश्वर हमें छुटकारा दिला रहे हैं और हम उनके पवित्र वचन को सुनते हुए दिन-ब-दिन अपने विश्वास के अनुसार जी रहे हैं, तो हम सुबह-सुबह प्रभु के घर जाकर धन्यवाद और स्तुति की प्रार्थना क्यों नहीं करेंगे? दाऊद की तरह—जो प्रार्थना करने वाले व्यक्ति थे और सुबह उठते थे—मैं भी परमेश्वर के घर जाना चाहता हूँ और धन्यवाद और स्तुति से भरी प्रार्थना करना चाहता हूँ। मैं परमेश्वर की स्तुति करते हुए प्रार्थना करना चाहता हूँ, उनके छुटकारा दिलाने (उद्धार) और उनके पवित्र वचन के प्रति कृतज्ञता और आदर-भाव से प्रेरित होकर। और आप? क्या आप भी दाऊद की

तरह, परमेश्वर के उद्धार की कृपा और उनके वचन से प्रेरित होकर, उन्हें धन्यवाद और स्तुति की प्रार्थना नहीं करना चाहते?

दूसरी बात, जो व्यक्ति प्रार्थना करने के लिए सुबह जल्दी उठता है, वह परमेश्वर की महिमा के लिए ऐसा करता है।

भजन संहिता 108:5 को देखिए: "हे परमेश्वर, तू आकाश से भी ऊँचा हो जा, और तेरी महिमा सारी पृथ्वी पर छा जाए।" जो व्यक्ति प्रार्थना करने के लिए सुबह जल्दी उठता है, वह पवित्र परमेश्वर के सामने खुद को विनम्र बनाता है। वह पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में कभी भी खुद को ऊँचा नहीं उठा सकता या घमंड से पेश नहीं आ सकता। अगर कोई फ़रीसी की तरह अपनी बड़ाई करते हुए प्रार्थना करता है, तो उसे सुबह उठकर प्रार्थना करने वाला सच्चा योद्धा नहीं कहा जा सकता। इसके अलावा, अपनी बड़ाई करने वाली प्रार्थना को सच्ची प्रार्थना नहीं माना जा सकता। आज के हिस्से में जिस दाऊद का ज़िक्र है, जो सुबह जल्दी उठकर प्रार्थना करता था, उसने प्रार्थना की कि सिर्फ़ प्रभु की ही महिमा हो। उसने प्रार्थना की कि प्रभु ही ऊँचे उठाए जाएँ और पूरी दुनिया में उनकी महिमा हो। दाऊद ने ऐसी प्रार्थना इसलिए की क्योंकि उसने परमेश्वर की महान दया और सच्चाई का अनुभव किया था। इसलिए, अपनी आत्मा की गहराई से प्रभु की महानता और बड़ाई करते हुए (पद 1), दाऊद ने प्रार्थना की कि सिर्फ़ प्रभु की ही महिमा हो। उसने प्रार्थना की कि पूरी धरती पर परमेश्वर की महिमा हो (पद 5)। तीसरी बात, जो व्यक्ति सुबह प्रार्थना करता है, वह परमेश्वर से छुटकारा पाने के लिए विनती करता है।

भजन संहिता 108:6 देखिए: "हमें बचाओ और अपने दाहिने हाथ से हमारी मदद करो, ताकि जिन्हें तुम प्यार करते हो, वे छुटकारा पाएँ।" दाऊद ने परमेश्वर की दया और सच्चाई को मानते हुए उन्हें धन्यवाद और स्तुति की प्रार्थनाएँ चढ़ाईं, और परमेश्वर की महिमा के लिए प्रार्थना की। साथ ही, दाऊद ने परमेश्वर से अपने दुश्मनों से बचाने की विनती की। पहले छुटकारा पाने के कामों के ज़रिए परमेश्वर की महान दया का अनुभव करने के बाद, दाऊद ने अब परमेश्वर से एक बार फिर दुश्मनों से बचाने की गुहार लगाई। इस प्रार्थना में, दाऊद ने माना कि इंसानी मदद बेकार है (पद 12)। इसलिए, वह अपनी विनतियों के साथ पूरी तरह से प्रभु की ओर मुड़ा, जो दयालु और सच्चा है। खासकर यह जानते हुए कि दुश्मन पर जीत पाना तब तक नामुमकिन था

जब तक परमेश्वर इस्राएली सेनाओं के साथ आगे न बढ़ें—क्योंकि वे अपने लोगों को कभी नहीं छोड़ेंगे (पद 11)—दाऊद ने प्रार्थना करते समय पूरी तरह से उद्धार करने वाले परमेश्वर पर भरोसा किया।

हमें भी पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए और अपनी विनतियाँ उनके सामने रखनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया था। जब हम प्रार्थना करते हैं, तो हमें इंसानी मदद की बेकारता को पहचानना चाहिए और विश्वास के साथ, छुटकारा पाने के लिए सिर्फ़ परमेश्वर की ओर देखना चाहिए। खासकर जब हम आध्यात्मिक लड़ाई लड़ रहे हों, तो हमें पक्का विश्वास होना चाहिए कि परमेश्वर ही हमारे साथ चलते हैं और हमें कभी नहीं छोड़ते (पद 11); हमें मदद के लिए उन्हें पुकारना चाहिए और अपने दुश्मनों पर जीत के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

इस तरह, सुबह प्रार्थना करने वाले व्यक्ति को दो चीज़ों का अनुभव होता है। (1) इनमें से पहली चीज़ है दिल की शांति।

आज के वचन, भजन 108:1 को देखिए: "हे परमेश्वर, मेरा मन स्थिर है; मैं अपनी पूरी आत्मा से गाऊंगा और संगीत बजाऊंगा।" जो व्यक्ति प्रार्थना करने के लिए सुबह जल्दी उठता है—परमेश्वर का धन्यवाद और स्तुति करता है और उसकी महिमा चाहता है—उसे उसकी मुक्ति मांगते समय मन की शांति मिलती है। यह अंदरूनी शांति परमेश्वर का एक वरदान है जो उन लोगों को मिलता है जो प्रार्थना के ज़रिए उस पर पूरा भरोसा रखते हैं। भजन 112:7 के बाद वाले हिस्से पर गौर करें: "...यहोवा पर भरोसा रखने के कारण, उसका मन स्थिर रहता है।" क्योंकि जो व्यक्ति प्रार्थना के लिए सुबह जल्दी उठता है, वह पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर रहता है, इसलिए उसका मन स्थिर और शांत रहता है।

(2) इसके अलावा, जो लोग प्रार्थना के लिए सुबह जल्दी उठते हैं, वे हिम्मत से काम करते हैं।

आज के वचन, भजन 108:13 को देखिए: "परमेश्वर के साथ हम जीत हासिल करेंगे, और वह हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।" प्रार्थना करने और परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखने के बाद, दाऊद ने हिम्मत से काम लिया। वह अपने दुश्मनों से नहीं डरा; इसके बजाय, वह जीत के भरोसे अपनी सेना के साथ निडरता और बहादुरी

से आगे बढ़ा। ऐसा इसलिए था क्योंकि उसे विश्वास था कि परमेश्वर उसके और उसकी सेना के साथ जाएगा (वचन 11)। उसे यह भी भरोसा था कि परमेश्वर उन्हें जीत दिलाएगा और उन्हें "मज़बूत शहर" में ले जाएगा (वचन 10)। इस तरह, दाऊद ने निडरता और हिम्मत से काम लिया।

प्यारे दोस्तों, आइए हम खुद को प्रार्थना में लगाएं। आइए हम ऐसे लोग बनने की कोशिश करें जो भजनकार दाऊद की तरह सुबह जल्दी उठकर प्रार्थना करते हैं। आइए हम परमेश्वर की महानता, दया और वफ़ादारी को मानते हुए धन्यवाद और स्तुति की प्रार्थना करें। दाऊद की तरह, आइए हम प्रार्थना करें: "हे परमेश्वर, तू आकाश के ऊपर ऊंचा हो, और तेरी महिमा सारी पृथ्वी पर छा जाए" (वचन 5)। आइए हम छुटकारा पाने के लिए पूरे दिल से परमेश्वर को पुकारें। जब हम ऐसा करेंगे, तो परमेश्वर हमें मन की स्थिरता और हिम्मत देगा। आइए हम स्थिर और अटूट मन के साथ प्रभु की महिमा के लिए बहादुरी से काम करें।

“मैं प्रार्थना करने वाला व्यक्ति हूँ”

[भजन संहिता 109]

परमेश्वर किस तरह के व्यक्ति का इस्तेमाल करते हैं? कल, YMCA में कसरत करते समय और अपने MP3 प्लेयर पर शार्लेट में 'रिफॉर्म्ड थियोलॉजिकल सेमिनरी' के प्रेसिडेंट का लेक्चर सुनते समय, मूसा—जिनका इस्तेमाल परमेश्वर ने किया था—के बारे में एक खास बात ने मेरे दिल को छू लिया। लेक्चर ने मूसा के 120 साल के जीवन को तीन चरणों में बाँटकर मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया और दिखाया कि कैसे परमेश्वर ने उन्हें अपनी सेवा के लिए धीरे-धीरे तैयार किया: (1) मिस्र में अपने 40 सालों के दौरान, मूसा को लगता था कि वह *कुछ* हैं; (2) मिद्यान में अपने 40 सालों के दौरान, उन्हें एहसास होने लगा कि वह *कुछ भी नहीं* हैं; और (3) उन 40 सालों के दौरान जब उन्होंने इस्राएलियों को जंगल से होकर आगे बढ़ाया, तो उन्हें समझ आया कि परमेश्वर *कुछ भी नहीं* (यानी जो खुद को कुछ नहीं समझते) का इस्तेमाल करते हैं। यह सुनकर, मैंने सोचा कि मैं अभी किस चरण में हूँ। ऐसा लगता है कि मैं चरण (1) और (2) के बीच झूलता रहता हूँ। कई बार मैं गलती से मान बैठता हूँ कि मैं *कुछ* हूँ। उन पलों में, परमेश्वर अपने प्यार से मुझे सिखाते हैं कि असल में मैं *कुछ भी नहीं* हूँ। *कुछ* होने का वह एहसास मेरे अंदर लालच और घमंड पैदा करता है। जब भी ऐसा होता है, परमेश्वर मुझे नम्र बनाने के लिए जंगल में ले जाते हैं। वह मुझे अकेले उनके सामने चुपचाप बैठने का मौका देते हैं; प्रार्थना और उनके वचन के ज़रिए, वह मेरे दिल के पाप को दिखाते हैं और मुझे पछतावे की ओर ले जाते हैं। उनके कोमल शब्दों से मुझे सुकून और ताकत मिलती है (होशे 2:14)। मुझे मरकुस 9:29 के शब्द याद आते हैं: “...सिवाय प्रार्थना के...” जैसे यीशु ने सिखाया था कि कुछ दुष्टात्माओं को प्रार्थना के बिना नहीं निकाला जा सकता, वैसे ही लगता है कि लालच और घमंड जैसी पापी चीज़ों को खुद से दूर करने का एकमात्र तरीका प्रार्थना ही है।

भजन संहिता 109:4 में, भजनकार दाऊद कहते हैं: "मेरे प्यार के बदले वे मुझ पर आरोप लगाते हैं, लेकिन मैं खुद को प्रार्थना में लगाता हूँ।" यह अंश हमें बताता है कि दाऊद अपने दुश्मनों से प्यार करते थे, फिर भी वे उनका विरोध करते थे। ऐसी स्थिति में, दाऊद कहते हैं, "मैं खुद को प्रार्थना में लगाता हूँ।" तो फिर, दाऊद के दुश्मनों ने उनका विरोध कैसे किया? उन्होंने बुरे शब्दों से उनका विरोध किया। आयत 2 और 3 को देखिए: "क्योंकि बुरे और धोखेबाज़ लोगों ने मेरे ख़िलाफ़ मुँह खोला है; उन्होंने झूठ बोलकर मेरे ख़िलाफ़ बातें की हैं। उन्होंने नफ़रत भरी बातों से मुझे घेर लिया है और बिना किसी वजह के मुझ पर हमला किया है।" दाऊद के दुश्मनों ने उसे नुकसान पहुँचाने के लिए ज़हरीली और बुरी बातें कहीं ("बुरे मुँह") और उसके ख़िलाफ़ साज़िश रचने के लिए धोखे भरी बातें कीं ("धोखेबाज़ मुँह")। इसके अलावा, उन्होंने दाऊद को—जो बेगुनाह था—गलत इल्ज़ाम लगाकर परेशान किया ("बिना वजह हमला किया") (पार्क युन-सन)। दाऊद के दुश्मनों ने उसकी भलाई के बदले बुराई और उसके प्यार के बदले नफ़रत दी (आयत 5)।

सच तो यह है कि ज़बान के फ़ायदेमंद पहलू भी हैं, लेकिन साथ ही इसका एक डरावना पहलू भी है। ज़बान का एक फ़ायदेमंद पहलू है—यह खुशखबरी सुना सकती है, दयालुता की बातें कह सकती है, और दिलासा व हिम्मत दे सकती है—लेकिन इसका एक डरावना पहलू भी है; यह दूसरों को ज़ख्मी और दुखी कर सकती है, और झूठे इल्ज़ाम, बदनामी, झूठ और अफ़वाहें फैलाकर किसी इंसान की ज़िंदगी तक बर्बाद कर सकती है। कुछ समय पहले, CNN की एक ऑनलाइन न्यूज़ रिपोर्ट में मिसौरी की एक 13 साल की लड़की की आत्महत्या की घटना के बारे में बताया गया था। मिसौरी की 13 साल की मेगन मेयर की मुलाक़ात सोशल नेटवर्किंग साइट MySpace पर जोश इवांस (16) नाम के लड़के से हुई; उसने उसे "सेक्सी" कहकर मैसेज भेजे और उसका दिल जीत लिया, और वह उसके प्यार में बुरी तरह पड़ गई। कुछ समय तक मैसेज का आदान-प्रदान करने के बाद, जोश ने अचानक कहा कि वह जा रहा है, और मेगन ने उससे रुकने की गुज़ारिश की। लेकिन, जोश ने एक मैसेज भेजा जिसमें लिखा था, "तुम्हारे बिना यह दुनिया बेहतर जगह होगी," और बीस मिनट बाद, मेगन ने फाँसी लगाकर अपनी जान दे दी। बाद में मेगन के माता-पिता को पता चला कि "जोश" असल में उनके पड़ोस की एक 49 साल की औरत थी। इस घटना में लड़की की एक सहेली की माँ शामिल थी, जिसने MySpace पर लड़के का रूप धरकर लड़की से रिश्ता बनाया, और बाद में बुरी

बातों और ज़ालिम शब्दों से उसे गहरे भावनात्मक ज़ख्म दिए, जिससे आखिरकार लड़की ने आत्महत्या कर ली। मेरा मानना है कि यह घटना इंटरनेट पर तेज़ी से फैलने वाली बुरी अफ़वाहों और नफ़रत भरे ऑनलाइन कमेंट्स के खतरों के बारे में एक गंभीर चेतावनी है। इसीलिए प्रेरित याकूब लिखते हैं: "कोई भी इंसान जीभ को काबू में नहीं रख सकता। यह एक बेचैन बुराई है, जो जानलेवा ज़हर से भरी है" (याकूब 3:8)। दाऊद के दुश्मन अपनी ज़बान से "लगातार बुराई और जानलेवा ज़हर" उगलकर उसका विरोध करते थे। उन्हें बददुआ देना पसंद था; असल में, बददुआ देना उनके लिए किसी कपड़े की तरह था जिसे वे पहनते थे (भजन संहिता 109:17–18)। उन्हें दूसरों को दुआ देने में कोई खुशी नहीं मिलती थी; इसके बजाय, उन्हें बददुआ देने में मज़ा आता था। दाऊद के दुश्मन उसे इस तरह बददुआ क्यों देते थे? दाऊद इसका कारण बताते हैं: "क्योंकि उसने कभी दया दिखाने के बारे में नहीं सोचा, बल्कि गरीबों, ज़रूरतमंदों और टूटे दिल वालों पर ज़ुल्म किया, यहाँ तक कि उन्हें मौत के घाट उतारने की कोशिश की" (पद 16)। दाऊद के दुश्मन ऐसे लोग थे जिनका गरीबों, ज़रूरतमंदों या टूटे दिल वालों के प्रति दया दिखाने का कोई इरादा नहीं था। इसके उलट, वे उन्हीं लोगों पर ज़ुल्म करते थे और उन्हें मार डालना चाहते थे। ऐसे बेरहम लोग दाऊद के खिलाफ खड़े हो गए और अपनी ज़बान से उसे बददुआ देने लगे। ऐसी स्थिति में, दाऊद ने प्रार्थना में परमेश्वर की ओर रुख किया। "मैं प्रार्थना करने वाला व्यक्ति हूँ" (NIV) वाक्यांश मूल पाठ का अनुवाद "मैं प्रार्थना का व्यक्ति हूँ" के रूप में करता है, जबकि NASB इसे "लेकिन मैं प्रार्थना में हूँ" कहता है। दूसरे शब्दों में, ऐसी स्थिति में जब उसके दुश्मन अपनी बुरी ज़बान का इस्तेमाल उसे बददुआ देने और नुकसान पहुँचाने के लिए कर रहे थे, दाऊद ने घोषणा की, "लेकिन मैं प्रार्थना में हूँ।" हिब्रू का शाब्दिक अनुवाद है "मैं प्रार्थना हूँ।" इसका मतलब है कि दाऊद खुद प्रार्थना *था*—कि उसका पूरा जीवन ही प्रार्थना बन गया था (पार्क युन-सन)। तो फिर, दाऊद की प्रार्थना का विषय क्या था? इसे मोटे तौर पर दो बिंदुओं में बांटा जा सकता है (पार्क युन-सन):

(1) दाऊद ने प्रार्थना की कि परमेश्वर का न्याय उसके दुश्मनों पर हो (पद 6–20)। अपनी प्रार्थना में, दाऊद ने परमेश्वर से बुरे लोगों—यानी अपने दुश्मनों—से निपटने के लिए कहा (पद 6)। वे सज़ा के हकदार हैं; क्योंकि उनकी प्रार्थनाएँ सच्चे पछतावे के बजाय बस कुछ पल की चापलूसी हैं, इसलिए उन्हें परमेश्वर से जवाब मिलने के बजाय न्याय का सामना करना पड़ेगा (पद 7)। पद 8–16 में दी गई प्रार्थना दाऊद की गुहार है कि परमेश्वर उसके बुरे दुश्मनों पर बर्बादी और विनाश लाए (पार्क युन-सन)। इसके अलावा, आयत 17-20 में यह प्रार्थना की गई है कि परमेश्वर उन लोगों को उनके कर्मों का फल दे जो उसे कोसने में खुशी महसूस करते हैं (आयत 20)।

(2) दाऊद ने परमेश्वर से छुटकारा पाने के लिए विनती की (आयत 21-31)।

छुटकारे के लिए की गई यह प्रार्थना परमेश्वर से यह विनती थी कि वह उसकी दयनीय और बुरी हालत को देखे, उस पर दया करे और उसे बचाए (आयत 22-25)। उसने खुद को गरीब और ज़रूरतमंद बताया, जिसका दिल बुरी तरह ज़ख्मी था (आयत 22); उसने कहा कि वह शाम की लंबी होती परछाई की तरह मिटता जा रहा था (आयत 23) और प्रार्थना करते-करते कमज़ोर हो गया था (आयत 24)। इस तरह, परमेश्वर की दया और प्रेम पर भरोसा करते हुए, उसने उससे मदद और उद्धार दोनों माँगे (आयत 26)। दाऊद ने न केवल छुटकारे के लिए प्रार्थना की, बल्कि यह भी चाहा कि उसके दुश्मन पहचान लें कि परमेश्वर ने ही उसे बचाया है (आयत 27)। उसे उद्धार का भरोसा भी था (आयत 28)। उसे पक्का यकीन था कि परमेश्वर ज़रूरतमंद—यानी खुद उसके—दाहिनी ओर खड़ा होगा और उसे दुश्मनों से बचाएगा। इसके अलावा, दाऊद ने प्रार्थना की कि भले ही उसके दुश्मन उसे कोसें, परमेश्वर उन श्रापों को आशीष में बदल दे (आयत 28)। उसने अपने उन दुश्मनों के बारे में भी प्रार्थना की—जो श्राप को कपड़ों की तरह पहनते थे (आयत 18)—और कहा कि वे "अपनी ही शर्म को लबादे की तरह ओढ़ लें" (आयत 29)। परमेश्वर की दया और प्रेम पर भरोसा करते हुए, उसने इस पक्के यकीन के साथ यह विनती की कि परमेश्वर उसकी प्रार्थना का जवाब देगा। नतीजतन, उसने तय किया: "मैं अपने मुँह से प्रभु का बहुत धन्यवाद करूँगा; मैं लोगों की भीड़ के बीच उसकी स्तुति करूँगा" (आयत 30)।

आइए हम दाऊद की तरह प्रार्थना करें, चाहे हमें कैसी भी मुश्किलों, मुसीबतों या अन्यायपूर्ण हालात का सामना क्यों न करना पड़े। यहाँ तक कि जब हमारे दुश्मन बुरी बातों से हमें नुकसान पहुँचाने की कोशिश करें, तब भी हम—दाऊद की तरह—लगातार प्रार्थना का रवैया बनाए रखें और असल में यह कहें, "लेकिन मैं तो प्रार्थना कर रहा हूँ।" परमेश्वर हमारे दुश्मनों को सुधारने के लिए अनुशासित करेगा और हमें उनके हाथों से बचाएगा। इसलिए, आइए हम अपने होंठों से परमेश्वर का बहुत-बहुत धन्यवाद और स्तुति करें।

“प्रभु के युवा लोग, सुबह की ओस की तरह”

[भजन संहिता 110]

पिछले रविवार, मैंने डिस्ट्रिक्ट 4 की बाइबल स्टडी में हिस्सा लिया, जहाँ हमने “आध्यात्मिक युद्ध” (Spiritual Warfare) सीरीज़ का छठा पाठ पढ़ा: “युद्ध प्रभु का है।” “शुरुआत” वाले हिस्से में, हमने इस बारे में बात की कि हमारी ज़िंदगी में सबसे बड़े युद्ध के मैदान कहाँ हैं। हमने इन युद्ध के मैदानों को अपने घरों, काम की जगहों, दूसरों के साथ रिश्तों और अपने अंदर के मन के रूप में पहचाना। ऐसा करते हुए, हमने खुद से एक ज़रूरी सवाल पूछा: “क्या हम सच में इस आध्यात्मिक युद्ध के लिए सही ढंग से तैयार हैं?” वजह साफ़ है: सही सुरक्षा कवच के बिना, हम यह बड़ा युद्ध नहीं जीत सकते। क्या आप और मैं परमेश्वर के पूरे सुरक्षा कवच से लैस हैं? क्या हम सच में सच्चाई की कमरबंद, विश्वास की ढाल, धार्मिकता की छाती-ढाल, उद्धार का हेलमेट, शांति के सुसमाचार के जूते और आत्मा की तलवार—यानी परमेश्वर का वचन—से लैस हैं? क्या हम अभी जिन आध्यात्मिक लड़ाइयों का सामना कर रहे हैं, उनमें परमेश्वर के वचन और विश्वास के साथ अच्छी तरह लड़ रहे हैं? क्या हम उद्धार के भरोसे के साथ लड़ रहे हैं? क्या हम इसे शांति के सुसमाचार का अनुभव करने और उसे फैलाने के मौके के तौर पर देख रहे हैं?

व्यक्तिगत रूप से, डिस्ट्रिक्ट बाइबल स्टडी के अगले दिन—पिछले सोमवार—मैं अपने निजी युद्ध के मैदान में हार गया: यानी अपने अंदर चल रहे संघर्ष में। सोमवार देर रात, जब मुझे नींद नहीं आ रही थी, तो मैं लिविंग रूम के सोफे पर बैठा और अपनी ज़िंदगी के बारे में सोचने लगा; मुझे वे संदेश याद आए जो मैंने सुनाए थे। मुझे वे उपदेश याद आए जो मैंने दिए थे—शुक्रवार और शनिवार की सुबह की प्रार्थनाओं और इंग्लिश सर्विस के दौरान “सुस्त दिलों” (मरकुस 6:52) पर, और कोरियन सर्विस के दौरान “उद्धार से जुड़े

मामलों" (प्रेरितों के काम 27:27–44) पर। जब मुझे ये शिक्षाएँ याद आईं, तो मैंने देखा कि मैं अपनी अंदरूनी शांति की रक्षा करने में नाकाम रहा था; इसके बजाय, मैंने अपने दिल को कठोर होने दिया, जिससे मैंने परमेश्वर के वचन की आज्ञा नहीं मानी। मुझे बहुत भारीपन और निराशा महसूस हुई जब मुझे एहसास हुआ कि, सुनाए गए संदेश को जानने के बावजूद, मैंने जानबूझकर पूरा दिन उसकी आज्ञा न मानते हुए और पापपूर्ण विचारों में डूबे हुए बिताया था। अपनी कमज़ोरी, नाकाफ़ीपन, बेकार होने और पापों का एहसास होने पर—और अपने "पुराने स्वभाव" के ख़िलाफ़ अंदरूनी लड़ाई हारने की सच्चाई का सामना करते हुए—मैंने परमेश्वर की दया और करुणा मांगी। मैंने परमेश्वर के सामने अपने पापों को माना और उनसे माफ़ी मांगी। बाद में, मंगलवार की सुबह की प्रार्थना सभा में, सोमवार को हुई आध्यात्मिक लड़ाई के बारे में बताने के बाद, प्रार्थना करते समय मुझे फिलिप्पियों 4:6–7 का वह वचन याद आया—जो रविवार की कोरियाई सभा में सुनाया गया था। फिर मैंने "धन्यवाद के साथ" परमेश्वर के सामने अपनी विनती रखी और आभारी रहने का फ़ैसला किया। इस दौरान, परमेश्वर ने मुझे मन की शांति दी और मुझे जीत की खुशी का अनुभव कराया।

परमेश्वर की इस आध्यात्मिक लड़ाई में जीत हासिल करने के लिए, हमें "सुबह की ओस जैसे उनके युवा लोगों" के रूप में तैयार होना होगा, जैसा कि भजन संहिता 110:3 में बताया गया है: "तेरे लोग तेरी शक्ति के दिन अपनी मर्ज़ी से आगे आएंगे; पवित्रता की सुंदरता में, सुबह की कोख से, तेरे पास तेरी जवानी की ओस है।" मैंने पहली बार कोरिया के सियोह्युन चर्च में "सुबह की ओस जैसे उनके युवा लोग" वाक्यांश सुना था। यह तब हुआ जब युवा वयस्क सेवा (ministry) के प्रभारी पादरी ने सियोह्युन चर्च के युवा वयस्कों को इस नाम से संबोधित किया। उस समय, मुझे यह एक बहुत अच्छा वाक्यांश लगा, भले ही मैं इसका पूरा मतलब नहीं समझ पाया था। हालाँकि, आज भजन संहिता 110 पर मनन करते हुए और उस वाक्यांश को फिर से देखते हुए, मैंने इस बात पर सोचना शुरू किया कि "सुबह की ओस जैसे उनके युवा लोग" होने का असल में क्या मतलब है। मैं इस पर तीन नज़रियों से विचार करना चाहता हूँ। इस बीच, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी प्रभु के युवा लोगों के रूप में—सुबह की ओस की तरह—तैयार हों और अपनी आध्यात्मिक लड़ाइयों में विजयी हों।

सबसे पहले, प्रभु के युवा लोग, जो सुबह की ओस की तरह हैं, वे हैं जो खुशी-खुशी खुद को प्रभु को समर्पित करते हैं।

यहाँ, "सुबह की ओस जैसे प्रभु के युवा लोग" वाक्यांश उन लोगों के लिए इस्तेमाल किया गया है जो प्रभु की शक्ति के दिन—यानी उनकी लड़ाई के दिन—खुशी से या अपनी मर्ज़ी से खुद को अपने सेनापति, प्रभु यीशु को समर्पित करते हैं। ये युवा, जिन्होंने खुशी-खुशी खुद को यीशु मसीह के लिए समर्पित कर दिया है—वही जो कब्र से जी उठे, स्वर्ग गए और स्वर्ग के राजा के रूप में परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान हैं (पद 1)—उनकी गिनती अनगिनत है, ठीक वैसे ही जैसे "सुबह की ओस" का अर्थ है। दूसरे शब्दों में, प्रभु के उन युवाओं की भीड़ जिन्होंने खुशी-खुशी खुद को मसीह और उनकी कलीसिया के लिए समर्पित किया है, वे प्रभु की आत्मिक सेना का निर्माण करते हैं। यह आत्मिक सेना—सुबह की ओस जैसे ये युवा—मसीह यीशु के "अच्छे सैनिक" हैं (2 तीमुथियुस 2:3–4)। वे ऐसे लोग हैं जो प्रभु के साथ दुख सहते हैं और सांसारिक जीवन के मामलों में उलझने से इनकार करते हुए, उस व्यक्ति को प्रसन्न करने की कोशिश करते हैं जिसने उन्हें सैनिक के रूप में भर्ती किया है।

प्रभु ने आपको और मुझे अपनी सेना में भर्ती किया है। हम प्रभु के युवा हैं—सुबह की ओस की तरह—जिन्होंने खुशी-खुशी खुद को अपने सेनापति के लिए समर्पित किया है। प्रभु की सेना में भर्ती आत्मिक सैनिकों के रूप में, हमें प्रभु के "अच्छे सैनिक" बनने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें यह पहचानना होगा कि प्रभु के साथ दुख सहना एक सौभाग्य है (फिलिप्पियों 1:29) और उनके दुखों में ईमानदारी से भाग लेना है (फिलिप्पियों 3:10)। इसके अलावा, हमें अपने जीवन के मामलों में नहीं उलझना चाहिए, बल्कि उस प्रभु को प्रसन्न करने का प्रयास करना चाहिए जिसने हमें भर्ती किया है। प्रभु के अच्छे सैनिकों के रूप में, यीशु—हमारे सेनापति—को प्रसन्न करने के लिए हमें उनके प्रति वफादार रहना चाहिए और उनकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। हमें खुद को यीशु, अपने सेनापति, के लिए समर्पित करना चाहिए और उनके वचन का पालन करने का संकल्प लेना चाहिए।

दूसरी बात, प्रभु के युवा—जिनकी तुलना सुबह की ओस से की गई है—वे हैं जिनका चरित्र पवित्र है।

सुबह की ओस धूल से अछूती ताजगी का प्रतीक है। इस प्रकार, "सुबह की ओस जैसे प्रभु के युवा" उन लोगों को संदर्भित करता है जिनमें सुबह की धूप में चमकती ओस की स्पष्टता जैसी पवित्रता है। प्रभु के ये युवा, ऐसी पवित्रता रखते हुए, "पवित्र वस्त्रों से सुसज्जित" हैं (पद 3)। दूसरे शब्दों में, वे प्रभु की लड़ाई के दिन के लिए उनके पवित्र आत्मिक सैनिक हैं। तो फिर, उस युद्ध की प्रकृति क्या है जिसमें ये आत्मिक सैनिक अपने सेनापति यीशु पर भरोसा करते हुए शामिल होते हैं? यह एक पवित्र आत्मिक युद्ध है। जब हम—आप और मैं—इस पवित्र आध्यात्मिक युद्ध में हिस्सा लेते हैं, तो हमें प्रभु के पवित्र आध्यात्मिक सैनिकों के तौर पर "ओस की तरह" चमकना चाहिए। यानी, इस अंधेरी दुनिया का सामना करते हुए हमें प्रभु की पवित्र रोशनी फैलानी चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें अंधेरे के कामों को उजागर करना और उनकी निंदा करनी चाहिए (इफिसियों 5:11, 13)। प्रभु के पवित्र सैनिकों के तौर पर, हमें कभी भी अंधेरे के कामों में शामिल नहीं होना चाहिए (वचन 11)। नतीजतन, प्रभु के पवित्र आध्यात्मिक सैनिकों के तौर पर, हमें इस पवित्र आध्यात्मिक युद्ध में जीत हासिल करनी चाहिए और इस तरह पवित्र प्रभु की महिमा करनी चाहिए।

तीसरी बात, प्रभु के युवा लोग, जो सुबह की ओस की तरह हैं, वे हैं जिन्हें नई शक्ति मिलती है और जो दुनिया पर जीत हासिल करते हैं।

प्रभु के युवा लोग, जो सुबह की ओस की तरह हैं और प्रभु के पवित्र सैनिकों के रूप में पवित्र आध्यात्मिक युद्ध लड़ते हैं, उन्हें यीशु मसीह से नई शक्ति मिलती है। यीशु मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठे हैं, और इस तरह वे आध्यात्मिक युद्ध में जीत हासिल करते हैं। इस पवित्र आध्यात्मिक युद्ध को लड़ते हुए, प्रभु के युवा लोग (जो सुबह की ओस की तरह हैं) यह समझते हैं कि यह लड़ाई हाड़-मांस के खिलाफ नहीं है। यानी, वे यह ध्यान में रखते हैं कि आध्यात्मिक युद्ध "अधिकारों, शासकों, इस अंधेरी दुनिया के हाकिमों और स्वर्गीय स्थानों में बुराई की आध्यात्मिक ताकतों के खिलाफ" है (इफिसियों 6:12)। इसलिए, प्रभु के आध्यात्मिक सैनिकों को (जो सुबह की ओस की तरह हैं) परमेश्वर के पूरे कवच (या पूरे हथियार) को पहनना चाहिए। खासकर बुरी आत्माओं के खिलाफ लड़ाई में, उन्हें आत्मा की तलवार को तेज करना चाहिए, जो उनका एकमात्र हथियार है। हमें परमेश्वर के वचन से अपने विचारों और दिलों को तेज करके, सतर्क और संयमित रहकर, और प्रार्थना करके आध्यात्मिक युद्ध में शामिल होना चाहिए (1 पतरस 4:7)। हमें कभी भी दुनिया के प्रलोभनों, धन और लालच को वचन को दबाने और उसे फल लाने से रोकने नहीं देना चाहिए (मत्ती 13:22)।

अगर हम आध्यात्मिक रूप से सुस्त होकर आध्यात्मिक लड़ाई में शामिल होते हैं, तो हम जीत नहीं सकते। हमें जीत के भरोसे और अपने सेनापति यीशु पर विश्वास करके खुद के, पाप, दुनिया और शैतान के खिलाफ लड़ना चाहिए। हमारे चर्च को ऐसी ही छवि बनानी चाहिए। दूसरे शब्दों में, हम सभी को जीत के भरोसे के साथ एक संघर्षपूर्ण जीवन जीना चाहिए।

प्रभु के युवा लोगों (सैनिकों) के रूप में आध्यात्मिक युद्ध लड़ने के लिए हमारे चर्च को वास्तव में किस चीज़ की ज़रूरत है, जो सुबह की ओस की तरह हों? वह है प्रभु द्वारा हर दिन, हर पल दी जाने वाली नई शक्ति। हमें उस प्रभु से हर दिन, हर पल यह नई शक्ति प्राप्त करनी चाहिए जिसने मृत्यु पर विजय प्राप्त की, जी उठा, स्वर्ग गया और परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है। तभी हम शक्ति प्राप्त कर सकते हैं और इस पवित्र आध्यात्मिक युद्ध में जीत सकते हैं। प्रभु द्वारा दी जाने वाली नई शक्ति प्राप्त करने के लिए, हमें अपने दिलों की शांति में परमेश्वर की सूक्ष्म आवाज़ को सुनना चाहिए। जैसे आधी रात को चुपचाप ओस गिरती है, वैसे ही हमें अपने दिलों की शांति में परमेश्वर की धीमी, शांत आवाज़ सुनकर नई ताकत हासिल करनी चाहिए। आध्यात्मिक लड़ाई में लड़ने और जीतने के लिए, हमें कभी भी कमज़ोर नहीं पड़ना चाहिए। बल्कि, अधर्म और पाप की ताकतों से लड़ने और उन पर जीत हासिल करने के लिए, हमें प्रभु से रोज़ाना ताकत पाने की ज़रूरत है। हमें परमेश्वर के वचन की शक्ति, यानी आत्मा की तलवार की ज़रूरत है। हमें सुसमाचार की शक्ति की ज़रूरत है। इसके अलावा, हमारी कलीसिया की आध्यात्मिक लड़ाई में जीत के लिए, हमें प्रार्थना की शक्ति की ज़रूरत है।

निर्गमन 17:15 में, हमें यह वाक्यांश मिलता है "यहोवा निस्सी (प्रभु हमारा झंडा है)।" जब इस्राएल और अमालेक के बीच रेफिद्रीम में लड़ाई हुई, तो मूसा ने प्रार्थना में अपने हाथ उठाए, और इस्राएल की जीत हुई (वचन 11)। जब सूरज डूबने तक मूसा के हाथ नीचे नहीं आए, तो इस्राएल विजयी हुआ, इसलिए उन्होंने एक वेदी बनाई और उसका नाम यहोवा निस्सी रखा (वचन 15)। युद्ध में जीत दिलाने वाली शक्ति परमेश्वर की शक्ति थी, जो मूसा की प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं। आज, हमें इस संदेश को सुनना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए। जिस आध्यात्मिक लड़ाई का हम सामना कर रहे हैं—वह बड़ा युद्धक्षेत्र जहाँ आप और मैं अभी आध्यात्मिक लड़ाई में लगे हुए हैं—उसमें हमें प्रार्थना में अपने हाथ नीचे नहीं करने चाहिए। प्रभु के युवा लोगों के रूप में, सुबह की ओस की तरह, आपको और मुझे खुशी-खुशी खुद को प्रभु को समर्पित करना चाहिए।

और प्रभु के अच्छे सैनिकों के रूप में, हमें परमेश्वर की पवित्रता का प्रकाश फैलाना चाहिए। हम प्रभु के पवित्र आध्यात्मिक सैनिक हैं। प्रभु की पवित्रता को प्रकट करने के लिए हमें इस अंधेरी दुनिया के खिलाफ लड़ना चाहिए। हमें सौंपी गई आध्यात्मिक लड़ाई को जीतने के लिए हर दिन और हर पल प्रभु से नई ताकत हासिल करनी चाहिए। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप और मैं वे लोग बनें जो अपने युद्धक्षेत्र पर जीत का झंडा गाड़ें और कहें "यहोवा निस्सी," "यहोवा मेरा झंडा है।"

“एक अच्छी समझ”

[भजन संहिता 111]

कल रात, जब मैं यूहन्ना के अध्याय 11 से 13 तक पढ़ रहा था, तो मेरी नज़र यूहन्ना 13:2 पर रुकी: “शैतान ने पहले ही शिमोन के बेटे यहूदा इस्करियोती के मन में यीशु को धोखा देने का विचार डाल दिया था।” पढ़ते-पढ़ते, मुझे यूहन्ना 13:27 में यहूदा इस्करियोती के बारे में एक और बात मिली: “जैसे ही उसने वह निवाला लिया, शैतान उसमें समा गया। तब यीशु ने उससे कहा, ‘जो तुम करने जा रहे हो, उसे जल्दी करो।’” इन दो आयतों पर मनन करते हुए, मैंने सोचा कि कैसे यहूदा इस्करियोती अपने विचारों के स्तर पर आध्यात्मिक लड़ाई लड़ने में नाकाम रहा; इसके बजाय, उसने शैतान द्वारा डाले गए यीशु को धोखा देने के विचार को अपने दिल में आने और पनपने दिया, जिसके कारण आखिरकार शैतान उसमें समा गया और उसने यीशु को धोखा दिया। आपको क्या लगता है कि यहूदा इस्करियोती ने यीशु को धोखा देने का विचार मन में लाने से लेकर असल में धोखा देने का काम करने तक का कदम कैसे उठाया? मुझे इसका कारण यूहन्ना 12:4–6 में मिला: “लेकिन उसके चेलों में से एक, यहूदा इस्करियोती—वही जो उसे धोखा देने वाला था—ने कहा, ‘यह इत्र तीन सौ दीनार में क्यों नहीं बेचा गया और उसका पैसा गरीबों को क्यों नहीं दिया गया?’ उसने यह इसलिए नहीं कहा कि उसे गरीबों की परवाह थी, बल्कि इसलिए कि वह चोर था; वह पैसे का डिब्बा अपने पास रखता था और उसमें डाले गए पैसे में से चोरी करता था।” यूहन्ना 12:4–6 में, हम बेथनिया में लाज़र के घर की एक घटना देखते हैं जहाँ मरियम ने “बहुत कीमती जटामांसी का इत्र लिया, यीशु के पैर धोए और अपने बालों से उनके पैर पोंछे” (आयत 3)। तब यहूदा इस्करियोती ने पूछा, “यह खुशबूदार इत्र तीन सौ दीनार में क्यों नहीं बेचा गया और गरीबों को क्यों नहीं दिया गया?” (आयत 5)। यहूदा के ऐसा कहने का कारण गरीबों की चिंता नहीं थी, बल्कि सिर्फ़ यह था कि उसका ध्यान पैसे पर था। वह एक चोर था जो पैसे

का डिब्बा अपने पास रखता था और उसमें डाले गए पैसे में से चोरी करता था (आयत 6)। संक्षेप में, यहूदा इस्करियोती एक ऐसा व्यक्ति था जिसे पैसे से प्यार था। नतीजतन, जैसा कि यूहन्ना 13:2 में बताया गया है, शैतान ने यहूदा के मन में यीशु को धोखा देने का विचार डाला; शैतान ने यहूदा के मन में यह विचार इसलिए डाला क्योंकि उसे पैसे से प्यार था। यह विचार तब तक बढ़ता गया जब तक कि शैतान यहूदा के भीतर नहीं आ गया (13:27), और आखिरकार, यहूदा ने तीस चाँदी के सिक्कों के बदले मुख्य याजकों को यीशु सौंप दिया (मत्ती 26:15, 26:46–50)।

जब मैंने इस हिस्से पर मनन किया, तो मुझे याकूब 1:15 की याद आई: "फिर, जब इच्छा जन्म लेती है, तो वह पाप को जन्म देती है; और पाप, जब पूरी तरह बढ़ जाता है, तो मृत्यु लाता है।" आखिरकार, क्योंकि यहूदा को पैसे से प्यार था—जो हर तरह की बुराई की जड़ है (1 तीमुथियुस 6:10)—इसलिए जब शैतान ने उसके मन में यीशु को धोखा देने का विचार डाला, तो वह खुद को बचा नहीं पाया; उसने उस विचार को स्वीकार किया और गुमराह हो गया, जिससे उसके मन में पाप बढ़ता गया और अंततः पाप का फल निकला। जब मैंने यहूदा इस्करियोती के जीवन और मृत्यु पर मनन किया—जिसका जीवन कड़वाहट की जड़ से शुरू होकर सड़े हुए फल तक पहुँचा—तो मुझे एक बार फिर अपने विचारों की लड़ाई के महत्व की याद आई। मैंने अपनी इस ज़िम्मेदारी को फिर से दोहराया कि जब भी शैतान मेरे मन में बुरे या पापपूर्ण विचार डाले, तो मैं अच्छे विचारों से लड़ूँ और उन पर जीत हासिल करूँ। ऐसा करने के लिए, हमें दिन-रात परमेश्वर के वचन पर मनन करना चाहिए। ऐसा करते हुए, हमें उसके वचन के माध्यम से समझ हासिल करनी चाहिए। यह "समझ" क्या है? अपनी किताब *गाइडेंस एंड द वॉयस ऑफ़ गॉड* (Guidance and the Voice of God) में, जे.आई. पैकर बताते हैं कि समझ का मतलब है यह समझना कि परमेश्वर के प्रकाशन के अनुसार आज्ञाकारी होकर कैसे जिया जाए। बुद्धि, सबसे बढ़कर, समझ है (पैकर)। इसके अलावा, बुद्धि का विस्तार उस समझ को सावधानीपूर्वक अमल में लाने तक होता है (पैकर)। आज का वचन इसे "अच्छी समझ" कहता है (भजन संहिता 111:10)। भजन संहिता 111 के 10वें पद पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं यह जानना चाहता हूँ कि हम यह "अच्छी समझ" कैसे प्राप्त कर सकते हैं और परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली कृपा कैसे पा सकते हैं।

तो फिर, हम अच्छी समझ कैसे प्राप्त कर सकते हैं? इसका जवाब हमें भजन संहिता 111:10 में मिलता है: "यहोवा का भय मानना ही बुद्धि का आरम्भ है; जो कोई उसकी आज्ञाओं को मानता है, वह अच्छी समझ रखता है। उसकी स्तुति सदा बनी रहती है।" बाइबल हमें बताती है कि अच्छी समझ पाने के लिए, हमें "उसकी आज्ञाओं"—यानी परमेश्वर के हुक्मों—को मानना होगा। तो फिर, यहाँ परमेश्वर की किस आज्ञा की बात हो रही है? वह है परमेश्वर का भय मानना (पद 10)। परमेश्वर का भय मानने का असल में क्या मतलब है? मैं पहले परमेश्वर के भय को मुख्य रूप से इस पद के नज़रिए से देखता था: "यहोवा का भय मानना बुराई से घृणा करना है" (नीतिवचन 8:13)। बेशक, मेरा यह मानना नहीं है कि वह नज़रिया गलत था; आखिरकार, बाइबल यही कहती है। हालाँकि, जेम्स पैकर की किताब *नोइंग गॉड* (खासकर परमेश्वर के मार्गदर्शन वाले हिस्से) को पढ़ते समय, मुझे एहसास हुआ कि परमेश्वर के भय का एक पहलू ऐसा था जिसे मैं पूरी तरह नहीं समझ पाया था। पैकर कहते हैं, "आदर-भाव (reverence) का डर से कोई लेना-देना नहीं है; इसका मतलब है सम्मान।" वे आगे बताते हैं कि आदर-भाव का मतलब है परमेश्वर की महानता को विस्मय और श्रद्धा के साथ देखना, साथ ही सक्रिय रूप से उनकी आज्ञा मानना और उन्हें प्रसन्न करने की कोशिश करना। इसे पढ़कर मुझे एहसास हुआ कि परमेश्वर का भय मानने में निश्चित रूप से उनके वचन का पालन करना और बुराई से घृणा करना शामिल है, लेकिन यह इससे कहीं आगे की बात है: यह प्रभु की महानता के लिए उनकी स्तुति और आराधना करने के बारे में है। तो, प्रभु की महानता की स्तुति और आराधना करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? मुझे इस सवाल का जवाब आज के पाठ के तीन बिंदुओं में मिला। मेरी प्रार्थना है कि हम इन तीन बाइबिल-सम्मत सिद्धांतों को सीखें और उन पर अमल करें, और प्रभु की महानता की स्तुति और आराधना करके सच्ची समझ हासिल करें।

पहला, प्रभु की महानता की स्तुति और आराधना करने के लिए, हम सभी को प्रभु के कामों का अध्ययन करना चाहिए।

भजन संहिता 111:2 को देखें: "यहोवा के काम महान हैं; जो कोई उनमें आनंद लेता है, वह उन पर मनन करता है।" यहाँ बताए गए "यहोवा के काम" खास तौर पर उन घटनाओं की ओर इशारा करते हैं जहाँ परमेश्वर ने मूसा के ज़रिए मिस्र पर दस विपत्तियाँ भेजीं और इस्राएलियों को गुलामी से छुड़ाया (पद 4); जंगल में मन्ना, बटेर और पानी का इंतज़ाम किया (पद 5); और उन्हें कनान का वादा किया हुआ देश उनकी विरासत के तौर पर दिया (पद 6)। ये "प्रभु के काम" उस "छुटकारे" को दिखाते हैं जो परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों

को दिया था (पद 9)। भजनकार ऐसा क्यों कहता है कि जो लोग परमेश्वर के महान और शक्तिशाली उद्धार के कामों—जो मिस्र से निकलने के समय इस्राएल के लिए किए गए थे—में खुशी पाते हैं, वे उनका अध्ययन करते हैं? इसका कारण यह है कि अतीत में परमेश्वर द्वारा किए गए उद्धार के कामों के बारे में और जानने से हमें यह विश्वास हो जाता है कि उनकी उद्धार करने वाली धार्मिकता हमेशा बनी रहेगी, चाहे वर्तमान हो या भविष्य (पद 3) (पार्क युन-सन)। आसान शब्दों में कहें तो, हम परमेश्वर के कामों का विस्तार से अध्ययन इसलिए करते हैं ताकि हमारा विश्वास और भरोसा मज़बूत हो—खासकर, हमारे उद्धार का भरोसा और विश्वास।

हमें बाइबल में परमेश्वर के उद्धार के इतिहास का अध्ययन करना चाहिए ताकि हम यह विश्वास और भरोसा पैदा कर सकें कि जिस परमेश्वर ने अतीत में उद्धार किया था, वही हमें आज की मुश्किलों और परेशानियों से भी बचाएगा। इन किस्सों में से, मुझे यूसुफ की कहानी सबसे ज़्यादा पसंद है। परमेश्वर ने यूसुफ को उसके भाइयों, पोतीफ़र और उसकी पत्नी, और जेल से बचाया; आखिरकार, उन्होंने यूसुफ को उनसे पहले भेजा ताकि याकूब के पूरे परिवार की जान बचाई जा सके (उत्पत्ति 45:5)। इस तरह, परमेश्वर ने मिस्र में इस्राएल के लोगों की संख्या बढ़ाई, और लगभग 400 साल बाद, मूसा के ज़रिए उन्हें छुड़ाया और कनान, यानी 'वादे की भूमि' तक पहुँचाया। यूसुफ के जीवन में परमेश्वर के उद्धार का जो इतिहास दिखता है, वह यीशु की ओर इशारा करता है—जो सच्चे यूसुफ हैं—और जो अपने जीवन और मृत्यु के ज़रिए हमें बचाते हैं और स्वर्ग की 'वादे की भूमि' तक ले जाते हैं। इसलिए, भले ही हम पर बिना किसी गलती के अलग-अलग संकट आएँ—जैसा यूसुफ के साथ हुआ था—हम यह विश्वास और भरोसा रख सकते हैं कि परमेश्वर निश्चित रूप से हमें बचाएगा और सब कुछ भलाई के लिए करेगा। इस उद्धार करने वाले विश्वास और भरोसे को मज़बूती से थामे रखने के लिए, हमें बाइबल में दर्ज परमेश्वर के उद्धार के इतिहास का लगन और सावधानी से अध्ययन करना चाहिए। नतीजतन, इस समझ के साथ, हमें प्रभु की महानता के लिए उनकी स्तुति और आराधना करनी चाहिए।

दूसरी बात, प्रभु की महानता की स्तुति और आराधना करने के लिए, हम सभी को प्रभु के कामों को याद रखना चाहिए।

भजन संहिता 111:4 को देखें: "उन्होंने अपने अद्भुत कामों को याद रखने लायक बनाया है; प्रभु दयालु और करुणामयी हैं।" दयालु और कृपालु परमेश्वर ने भजनकार के समय में इस्राएल के लोगों को उस उद्धार के इतिहास की याद दिलाई, जो उन्होंने मिस्र से निकलने (एक्सोडस) के दौरान उनके पूर्वजों के लिए रचा था। इसका मकसद क्या था? यह दिखाना कि वे एक वफादार और वाचा निभाने वाले परमेश्वर हैं, जो इस्राएल के साथ की गई वाचा को याद रखते हैं (पद 5), उसे कायम रखते हैं (पद 9), और आखिर में उस वाचा को पूरा करते हैं।

हमारे परमेश्वर ही हमें उन उद्धार के कामों—उन अद्भुत कार्यों—को याद दिलाते हैं जो उन्होंने हमारे जीवन में किए हैं। इसलिए, आज हमारे जीवन में चाहे कैसी भी मुश्किलें या परेशानियाँ क्यों न आएं, अतीत में किए गए उद्धार के कामों की याद दिलाकर परमेश्वर हमें यह विश्वास और भरोसा देते हैं कि वे हमें हमारी मौजूदा मुश्किलों से भी निकालेंगे। इस तरह, हम भजन 40, पद 4 के शब्द गा सकते हैं: "जब मेरे प्रभु यीशु इस दुनिया में लौटेंगे, तो वे मुझे उस स्वर्गीय राज्य में ले जाएंगे; मैं विनम्रता से झुककर आराधना करूंगा और हमेशा प्रभु की स्तुति करूंगा।" हमारे प्रभु, जो हमारे साथ की गई वाचा को वफादारी से पूरा करते हैं, उन्होंने हमारे भीतर उद्धार का अच्छा काम पहले ही शुरू कर दिया है; यीशु मसीह के लौटने पर उस उद्धार को पूरा करके, वे हमें प्रभु के घर में जाने और हमेशा उनकी महिमा और महानता की स्तुति और आराधना करने के योग्य बनाएंगे।

तीसरी बात, प्रभु की महानता और महिमा के लिए उनकी स्तुति और आराधना करने के लिए, हमें प्रभु के कामों में आनंद लेना चाहिए।

भजन संहिता 111:2 पर विचार करें: “प्रभु के काम महान हैं, और जो लोग उनमें आनंद लेते हैं, वे उन पर मनन करते हैं।” मिस्र से बाहर निकलने (निर्गमन) के समय प्रभु ने इस्राएल के लोगों के लिए जो महान काम किया, वह वास्तव में “छुटकारा” था। जिस तरह परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से बचाने के लिए दसवीं विपत्ति के दौरान अपने दरवाज़ों की चौखटों पर मेमने का लहू लगाने का आदेश दिया था, उसी तरह उन्होंने यीशु के बहुमूल्य लहू से आपको और मुझे मोल लिया है, और हमें उद्धार का अनुग्रह प्रदान किया है। 1

पतरस 1:18–19 को देखें: “यह जानते हुए कि तुम्हारा छुटकारा नाशवान चीज़ों, जैसे चांदी या सोने से नहीं... बल्कि मसीह के बहुमूल्य लहू से हुआ है, जो बिना किसी दोष और दाग के मेमने के समान था।”

इसलिए, हम भजन 410 गा सकते हैं: “अद्भुत अनुग्रह! कितनी मधुर ध्वनि है—जिसने मुझ जैसे पापी का उद्धार किया!” (पद 1)। इसका कारण यह है कि हमारे पास “[उनके] उद्धार का आनंद” है (भजन संहिता 51:12)। हमें उद्धार के इस काम में आनंद लेना चाहिए—जो महान (111:2), सम्मानजनक और महिमामय (पद 3) है—जिसे परमेश्वर ने पूरा किया है। इसके अलावा, हमें उनके उद्धार के आनंद से भरकर परमेश्वर की स्तुति और आराधना करनी चाहिए। मेरी प्रार्थना है कि आप और मैं ऐसा जीवन जिएं जिसमें परमेश्वर का भय हो—एक ऐसा जीवन जिसमें उनकी महानता की स्तुति और आराधना हो—जिससे हमें सच्ची बुद्धि मिले और परमेश्वर की महिमा हो।

मैं पूरे दिल से परमेश्वर का धन्यवाद करूँगा और हमेशा उसकी स्तुति करूँगा।

“हल्लेलूयाह! मैं सीधे-सादे लोगों की सभा और मंडली में पूरे दिल से प्रभु का धन्यवाद करूँगा... प्रभु का भय ही बुद्धि की शुरुआत है; जो कोई उसकी आज्ञाओं का पालन करता है, उसे अच्छी समझ मिलती है। उसकी स्तुति हमेशा बनी रहती है” (भजन संहिता 111:1, 10)।

हम विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च की स्थापना की 34वीं वर्षगांठ मनाने के लिए कई सभाएँ आयोजित कर रहे हैं। कल, शुक्रवार को, अतिथि वक्ता के माध्यम से परमेश्वर ने मुझे जो संदेश दिया, वह था “केवल त्रिएक परमेश्वर की उद्धार करने वाली कृपा से” (इफिसियों 1:3–14)। मुझे यह सच्चाई पता चली कि पिता परमेश्वर ने मुझ जैसे पापी से प्रेम किया और दुनिया की नींव रखे जाने से पहले ही मुझे चुन लिया; पुत्र परमेश्वर, यीशु ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा मेरा उद्धार किया (मेरे पापों को क्षमा किया); और पवित्र आत्मा परमेश्वर ने मुझ पर मुहर लगाई और मेरी गारंटी दी। यह संदेश मिलने के बाद, हम सबने परमेश्वर की स्तुति में गॉस्पेल गीत “भले ही मैं इसे पूरी तरह व्यक्त नहीं कर सकता” गाया। उस रात, चर्च में पादरी के कार्यालय में बैठकर, मैंने YouTube पर वह गीत ढूंढा और उसे बार-बार सुना (गायन वाला वर्शन और वायलिन इंस्ट्रूमेंटल दोनों)। एक युवा बहन को वायलिन पर धुन बजाते हुए सुनकर मैं विशेष रूप से प्रभावित हुआ। बाद में, सुबह की प्रार्थना श्रृंखला के अंतिम उपदेश की तैयारी करते समय—खासकर जब मैंने भजन संहिता 119 पढ़ना शुरू किया, जो आज की सभा के लिए तय था—मैंने पाया कि मेरा ध्यान वापस भजन संहिता 111 पर चला गया, जिस पर हमने सप्ताह की शुरुआत में ही मनन किया था। जब मैंने भजन संहिता 111 को बार-बार पढ़ा, तो मेरा

ध्यान आयतों 1 और 10 के अंतिम हिस्सों की ओर गया। भजन संहिता 111 (विशेष रूप से आयतों 1 और 10) के आज के पाठ में, भजनकार घोषणा करता है कि परमेश्वर का पूरे दिल से धन्यवाद और स्तुति हमेशा जारी रहनी चाहिए। इसका कारण क्या है? इसका कारण यह है कि परमेश्वर के किए गए कार्य महान हैं (आयत 2)। इन महान कार्यों में आनंद लेते हुए, भजनकार ने उनका अध्ययन किया (आयत 2)। खासकर, उन्होंने उन कामों का अध्ययन किया जो परमेश्वर ने मिस्र से निकलने (Exodus) के दौरान इस्राएल के लोगों के लिए किए थे—ये ऐसे महान काम थे जिन्हें तीन चरणों में बांटा जा सकता है:

पहला चरण वह है जिसमें परमेश्वर ने मूसा के ज़रिए मिस्र पर दस विपत्तियाँ (plagues) भेजीं और आखिर में इस्राएलियों को मिस्र के राजा फ़िरौन के चंगुल से छुड़ाया।

भजन संहिता 111:4 को देखिए: "उसने अपने अद्‌भुत कामों की याद दिलाई है; प्रभु दयालु और करुणामय है।" भजनकार ने यहाँ किन ईश्वरीय चमत्कारों को याद किया? वे दस विपत्तियाँ थीं जो परमेश्वर ने मिस्र से निकलने के दौरान मिस्र पर भेजी थीं। भजनकार ने न केवल परमेश्वर के इन महान चमत्कारों को याद किया, बल्कि उनका अध्ययन भी किया (पद 2)। इन चमत्कारों के अध्ययन से उनका निष्कर्ष यह था: "परमेश्वर दयालु और करुणामय है" (पद 4)। भजनकार की तरह, हमें भी परमेश्वर के किए गए महान कामों में खुशी मनानी चाहिए और उनका अध्ययन करना चाहिए। हमें अपने अतीत को देखना चाहिए और उन चमत्कारों को याद करना चाहिए जो परमेश्वर ने हमारे लिए किए हैं। जिस चमत्कार को हमें याद रखना चाहिए, वह यह है कि कैसे उसने हमें—सच्चे मूसा, यीशु के ज़रिए—शैतान के राज्य से छुड़ाया, जो मिस्र जैसा है। परमेश्वर ने हमें कैसे आज़ाद किया और शैतान के राज्य से कैसे छुड़ाया, जहाँ हम कभी पाप के गुलाम थे? बात ठीक यही है: जैसे उसने मिस्र पर दसवीं विपत्ति भेजी थी, वैसे ही परमेश्वर ने अपने एकलौते बेटे यीशु—जो फसह का मेमना (Passover Lamb) है—को क्रूस पर मरने देकर हमें शैतान के राज्य से छुड़ाया। जब हम परमेश्वर के इस महान चमत्कार को याद करते हैं, तो हमें भजनकार की तरह यह स्वीकार करना चाहिए कि "परमेश्वर दयालु और करुणामय है" (पद 4)।

दूसरा चरण वह है जिसमें परमेश्वर ने जंगल में इस्राएलियों को भोजन दिया।

भजन संहिता 111:5 को देखिए: "वह उन लोगों को भोजन देता है जो उसका भय मानते हैं; वह अपनी वाचा को हमेशा याद रखता है।" भजनकार ने न केवल इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाने के परमेश्वर के महान काम को याद किया और उस पर मनन किया, बल्कि इस बात पर भी विचार किया कि कैसे परमेश्वर ने उन्हें चालीस साल तक जंगल में भोजन खिलाया। उन्हें याद था कि कैसे परमेश्वर ने उन चालीस सालों तक इस्राएलियों को जंगल के रास्ते पर चलाया (व्यवस्थाविवरण 8:2)। उन्हें यह भी याद था कि कैसे परमेश्वर ने उन्हें मन्ना खिलाया (पद 3)। जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को खिलाने के लिए स्वर्ग से मन्ना बरसाया—उन्हें स्वर्ग की रोटी दी (भजन संहिता 78:24)—तो भजनकार ने यह स्वीकार किया कि परमेश्वर ने अपनी वाचा हमेशा के लिए कायम की है और वह उसे हमेशा याद रखता है (111:5, 9)। भजनकार की तरह, हमें भी परमेश्वर के किए गए महान कामों पर खुशी मनानी चाहिए और उन पर मनन करना चाहिए। जब हम अपने अतीत को देखते हैं, तो हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर ने हमारी रोज़ की रोटी का इंतज़ाम कैसे किया है। खास तौर पर, परमेश्वर की दी हुई स्वर्गीय रोटी जिसे हमें याद रखना चाहिए, वह स्वयं यीशु हैं; यानी, हमें यीशु को याद रखना चाहिए, जो जीवन की रोटी हैं (यूहन्ना 6:48)। हमें उस अनंत वाचा को याद रखना चाहिए जो परमेश्वर ने यीशु के ज़रिए कायम की थी। हालाँकि पहले आदम ने परमेश्वर की कायम की हुई वाचा को नहीं माना, लेकिन यीशु—जो दूसरे आदम हैं—ने क्रूस पर अपनी मौत तक परमेश्वर की बात मानी। नतीजतन, यीशु से किए गए अपने वादे के अनुसार, परमेश्वर ने हमारे सारे पाप माफ़ कर दिए हैं और हमें बचाया है। यीशु मसीह के ज़रिए, हमें पापों की माफ़ी और उद्धार मिला है, और इस तरह हमें अनंत जीवन मिला है। इसलिए, यह अनंत जीवन पाकर, हमें—भजनकार की तरह—यह स्वीकार करना चाहिए कि "परमेश्वर का नाम पवित्र और अद्‌भुत है" (पद 9)।

तीसरे चरण में परमेश्वर का इस्राएल के लोगों को उनकी विरासत के तौर पर कनान का वादा किया हुआ देश देना शामिल है।

भजन संहिता 111:6 को देखिए: "उसने उन्हें अन्य जातियों की विरासत दी है और उन्हें अपने कामों की शक्ति दिखाई है।" तो फिर, परमेश्वर ने अपने लोगों, इस्राएल को क्या विरासत दी? वह कनान का देश था—"अन्य जातियों के देश" (पद 6, *समकालीन कोरियाई संस्करण*)। इस्राएलियों को कनान का वादा किया हुआ देश देकर, परमेश्वर ने अपनी शक्ति दिखाई (पद 6)। उसने यह शक्ति यहोशू और इस्राएल के लोगों के

साथ रहकर दिखाई, जिससे वे कनान देश को जीत सके (यहोशू 18:1)। परमेश्वर ने कनान की सात जातियों को नष्ट कर दिया और वह देश इस्राएलियों को विरासत के तौर पर दे दिया (प्रेरितों के काम 13:19)। असली "यहोशू" यीशु हैं (दोनों नामों का एक ही मतलब है: "परमेश्वर उद्धार है"), और असली "कनान देश" स्वर्ग का राज्य है। क्रूस पर यीशु की मौत के ज़रिए, परमेश्वर ने हमें पापों की माफ़ी (छुटकारा) और उद्धार (हमेशा का जीवन) दिया है। इसके अलावा, परमेश्वर खुद हमारी विरासत बन गए हैं (व्यवस्थाविवरण 10:9)। प्रभु की वजह से, जो हमारी हमेशा की उम्मीद हैं, हम स्वर्ग की ओर देखने लगे हैं—जो एक "बेहतर देश" है (इब्रानियों 11:16)। उद्धार की इस शक्ति का अनुभव करने वाले लोगों के तौर पर, हमें भजनकार की तरह यह मानना चाहिए: "उनके हाथों के काम सच्चे और न्यायपूर्ण हैं; उनके सभी नियम भरोसेमंद हैं। वे हमेशा-हमेशा के लिए कायम हैं, सच्चाई और ईमानदारी से लागू किए गए हैं" (भजन संहिता 111:7–8)। हमें यह मानना चाहिए, "परमेश्वर जो उद्धार के काम करते हैं, वे सच्चे और न्यायपूर्ण हैं; क्योंकि वे सच्चाई और धार्मिकता से काम करते हैं, इसलिए वे हमेशा के लिए पक्के हैं" (पद 7–8)।

इसराइल के लोगों के लिए परमेश्वर द्वारा किए गए महान कामों पर सोचने के बाद भजनकार ने क्या माना? भजन संहिता 111:3 देखें, जो आज का वचन है: "उनके काम शानदार और आलीशान हैं, और उनकी धार्मिकता हमेशा बनी रहती है।" तो फिर, यहाँ "उनके कामों" (परमेश्वर के कामों) से क्या मतलब है? यह "छुटकारा" है (पद 9)। परमेश्वर ने इसराइल के लोगों को छुड़ाया और उन्हें बचाया। यह महसूस करते हुए कि इस उद्धार में परमेश्वर की धार्मिकता हमेशा कायम रहती है, भजनकार ने माना, "परमेश्वर शानदार और आलीशान हैं" (पद 3)। उन्होंने यह भी कहा, "हे परमेश्वर, मैं पूरे दिल से आपका धन्यवाद करूँगा; हे परमेश्वर, मैं हमेशा आपकी तारीफ़ करूँगा" (पद 1, 10)। भजनकार की तरह, हम भी परमेश्वर द्वारा हमारे लिए किए गए उद्धार के महान काम को याद करें और उस पर सोचें, ताकि हम पूरे दिल से उनका धन्यवाद कर सकें और हमेशा उनकी तारीफ़ कर सकें।

परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने वालों के लिए आशीष

[भजन संहिता 112]

आज, मैं अपनी दो बेटियों, येरी और यीउन के साथ बुधवार की प्रार्थना सभा में शामिल होने के लिए चर्च गया। रास्ते में, येरी यीउन को एक किताब पढ़कर सुना रही थी। जब मैंने किताब में एक वाक्य सुना जिसमें "धीमी बुद्धि वाली खरगोश माँ, उससे भी धीमे खरगोश पिता और सबसे धीमे खरगोश बच्चे" का ज़िक्र था, तो मैंने मज़ाक में लड़कियों से कहा कि यह कुछ-कुछ हमारे परिवार जैसा लगता है। हो सकता है येरी ने मेरी बात न सुनी हो या इसे बस पिता का मज़ाक समझा हो, वह पढ़ती रही। हालाँकि, कुछ सेकंड बाद, यीउन ने कहा, "चूँकि मैं घर में सबसे छोटी बच्ची हूँ, इसका मतलब है कि मैं सबसे धीमी हूँ।" यह महसूस करते हुए कि यीउन को शायद थोड़ा बुरा लगा हो, मैंने बात को संभालते हुए कहा, "होशियार होना मायने नहीं रखता; कोशिश करना मायने रखता है।" मुझे इस बातचीत में एक आध्यात्मिक सीख मिली: आध्यात्मिक रूप से सुस्त होने से बचने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन पर मनन करने में पूरी लगन से खुद को लगाना चाहिए। इसके अलावा, उस मनन के ज़रिए, हमें ऐसे लोग बनना चाहिए जो प्रभु, हमारे चरवाहे की आवाज़ सुनें और उसका पालन करें।

पिछले बुधवार, हमने भजन संहिता 111 के आधार पर "अच्छी समझ" के विचार पर मनन किया था। हमने सीखा कि अच्छी समझ पाने के लिए, हमें परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए (पद 10)। हमने सीखा कि यहाँ जिस आज्ञा की बात की गई है, वह है "परमेश्वर का भय मानना" (पद 10), और परमेश्वर का भय मानने का अर्थ है "प्रभु की महानता और महिमा के लिए उनकी स्तुति और आराधना करना।" हमने यह भी सीखा कि प्रभु की महानता की स्तुति और आराधना करने के लिए, हमें प्रभु के कामों का अध्ययन करना चाहिए, उन्हें याद रखना चाहिए और उनमें आनंद लेना चाहिए। हमने सीखा है कि परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने से हमें अच्छी समझ मिलती है और हम इस दुनिया में बुद्धिमानी से जी सकते हैं। भजन संहिता

112:1 में, भजनकार हमें परमेश्वर की आज्ञाओं में बहुत आनंद लेने के लिए प्रोत्साहित करता है: "हल्लेलूयाह! धन्य है वह मनुष्य जो प्रभु का भय मानता है, जो उसकी आज्ञाओं में बहुत आनंद लेता है।" बाइबल हमें बताती है कि जब हम ऐसा करते हैं तो आशीषें मिलती हैं। आज, जब मैं उन आशीषों के बारे में सोचता हूँ जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने वालों को मिलती हैं, तो मुझे उम्मीद है कि आप और मैं भी उनके वचन का पालन करके उन्हीं आशीषों का अनुभव कर सकेंगे।

पहली बात, परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने की आशीष व्यक्ति की आने वाली पीढ़ियों तक भी पहुँचती है।

भजन संहिता 112:2 को देखें: "उसकी संतान पृथ्वी पर शक्तिशाली होगी; सीधे-सच्चे लोगों की पीढ़ी आशीष पाएगी।" विश्वास रखने वाले माता-पिता की सबसे गहरी इच्छाओं में से एक यह होती है कि वे अपने विश्वास को अपनी संतानों को एक विरासत के रूप में सौंपें। लेकिन क्या ऐसा वैसे ही हो रहा है जैसा हम चाहते हैं? आप किसी भी अन्य व्यक्ति से बेहतर जानते हैं कि बच्चों की परवरिश शायद ही कभी माता-पिता की इच्छा के अनुसार होती है। तो, अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों को यह आध्यात्मिक विरासत सौंपने के लिए माता-पिता के रूप में हमें क्या करना चाहिए? जैसा कि आज का वचन हमें सिखाता है, हमें माता-पिता के रूप में सबसे पहले परमेश्वर का भय मानना चाहिए, और उस आदर-भाव को उनकी आज्ञाओं का पालन करके दिखाना चाहिए। हमें अपनी संतानों को केवल भौतिक धन-संपत्ति नहीं सौंपनी चाहिए, बल्कि जीवित परमेश्वर का भय मानने का तरीका सिखाना चाहिए (पार्क युन-सन)। अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों को आशीष दिलाने के लिए, हमें माता-पिता के रूप में परमेश्वर का भय मानते हुए उनके हृदय से उनकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। संक्षेप में, हमें "सीधे-सच्चे लोग" बनना चाहिए (पद 2)। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारे चले जाने के बाद भी परमेश्वर हमारे बच्चों और संतानों पर आशीष बरसाएंगे और उन्हें इस धरती पर समृद्ध करेंगे। आइए हम इस बात को याद रखें: हमारे जाने के बाद इस कठिन दुनिया में हमारे बच्चों और संतानों की उन्नति के लिए, हमें परमेश्वर का भय मानना चाहिए और लगन से उनकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए।

दूसरी बात, परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने वालों को मिलने वाली एक आशीष धन-संपत्ति की बहुतायत है।

भजन संहिता 112:3 को देखें: "उसके घर में धन-संपत्ति होगी, और उसकी धार्मिकता सदा बनी रहेगी।" जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं और उनकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, उन्हें भौतिक आशीषें मिलती हैं। दूसरे शब्दों में, जो व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता है, वही वास्तव में धनी है। तो फिर, एक सच्चे धनी व्यक्ति की पहचान क्या है? सच्चा धनी व्यक्ति वह है जिसके पास, भले ही बहुत अधिक भौतिक संपत्ति न हो, परमेश्वर उसकी विरासत के रूप में हों; इस प्रकार, वह हमेशा संतुष्ट महसूस करता है और दूसरों की मदद के लिए दान करता है। यदि किसी के पास बहुत धन है लेकिन संतोष की कमी है, तो वह व्यक्ति केवल लालच, व्यर्थ इच्छाओं और जीवन का गुलाम है—निश्चित रूप से वह सच्चा धनी नहीं है (पार्क युन-सन)। इसके उलट, सच में अमीर व्यक्ति "दयालु, करुणामयी और धर्मी" होता है (पद 4)। वे दूसरों के प्रति उदारता भरा जीवन जीते हैं (पार्क युन-सन)। कोई सच में अमीर कैसे बन सकता है? दूसरे शब्दों में, कोई बहुत ज़्यादा धन-दौलत कैसे पा सकता है? इसका कारण यह है कि जो व्यक्ति परमेश्वर का भय मानता है और उसकी आज्ञाओं का पालन करता है, उसमें "धार्मिकता" भी होती है (पद 3; पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में कहें तो, परमेश्वर हमारी धार्मिकता को देखता है और हमें भौतिक आशीषें देता है। जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, उनकी धार्मिकता हमेशा बनी रहती है (पद 3, 9)। नतीजतन, परमेश्वर उनके घर पर बहुत ज़्यादा धन-दौलत की आशीष देता है। इसलिए, उसके दिल में संतोष होता है।

तीसरी बात, जो लोग परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं, उनके लिए एक आशीष परमेश्वर की कृपा पाना है।

भजन संहिता 112:4 देखें: "सीधे लोगों के लिए अंधेरे में रोशनी चमकती है; वह दयालु, करुणामयी और धर्मी है।" हमारे परमेश्वर ने हमें पहले ही अंधेरे के शासन से छुड़ा लिया है और अपने प्यारे बेटे के राज्य में पहुँचा दिया है (कुलुस्सियों 1:13)। अब हम इस अंधेरी दुनिया के नहीं हैं (यूहन्ना 17:14)। फिर भी, इस अंधेरी दुनिया में रहते हुए, जब हम परमेश्वर का भय मानने और उसकी आज्ञाओं का पालन करने की कोशिश करते हैं, तो कभी-कभी हमें अंधेरे का सामना करना पड़ता है। हालाँकि, अंधेरे के ऐसे समय में भी, परमेश्वर रोशनी चमकाता है। दूसरे शब्दों में, बीमारी या मुसीबत जैसी मुश्किलों के बीच भी व्यक्ति को परमेश्वर की कृपा मिलती है (पार्क युन-सन)। जब सीधे लोग अंधेरे में रहते हैं तो परमेश्वर उन पर अपनी रोशनी चमकाता है

और उन्हें बचाता है। इसलिए, जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, उन्हें अंधेरे के बीच भी परमेश्वर से और भी ज़्यादा कृपा मिलती है।

चौथी बात, जो लोग परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं, उनके लिए एक आशीष यह है कि वे समृद्ध होते हैं।

भजन संहिता 112:5 देखें: "उस आदमी का भला होता है जो उदारता से व्यवहार करता है और उधार देता है; जो न्याय के साथ अपने काम करता है।" जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, वे दूसरों के साथ उस कृपा को बांटते हैं जो उन्हें मिली है (पद 5)। पाठ का पद 9 देखें: "उसने चारों ओर बांटा है, और गरीबों को दिया है; उसकी धार्मिकता हमेशा बनी रहती है, और उसका सम्मान बढ़ाया जाएगा।" वह दूसरों को उधार देता है; यानी, वह सेवा का जीवन जीता है। इसलिए, वह समृद्ध होता है। मुझे नीतिवचन 11:24–25 की बातें याद आती हैं: "कोई खुलकर देता है, फिर भी और अमीर होता जाता है; दूसरा वह रोकता है जो उसे देना चाहिए, और केवल कमी का सामना करता है। जो आशीष लाता है वह समृद्ध होगा, और जो पानी देता है उसे खुद पानी मिलेगा।" दूसरों को देने के लिए बांटने पर भी कोई व्यक्ति अधिक अमीर क्यों हो जाता है? इसका कारण यह है कि परमेश्वर यह सुनिश्चित करते हैं कि उनकी समृद्धि तब तक अटूट रहे जब तक दूसरों की मदद करने में उनकी धार्मिकता बनी रहती है (पार्क युन-सन)। ऐसी सफलता का रहस्य परमेश्वर का भय मानने और ईमानदारी से उनकी आज्ञाओं का पालन करने में निहित है। उन आज्ञाओं में से एक है सभी मामलों में न्याय के साथ काम करना। मीका 6:8 को देखें: "हे मनुष्य, उसने तुझे बताया है कि क्या अच्छा है; और प्रभु तुझसे क्या अपेक्षा करता है, सिवाय इसके कि तू न्याय करे, दया से प्रेम करे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले?" सभी बातों में न्याय के साथ काम करना अच्छा है; यही सच्ची सफलता का रहस्य है। दुष्ट लोग, जो धर्मी लोगों की समृद्धि से ईर्ष्या करते हैं, निराशा में दांत पीसेंगे और अंततः नष्ट हो जाएंगे; दुष्टों की इच्छाएं व्यर्थ हो जाती हैं (भजन संहिता 112:10)।

पांचवां, जो लोग परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं, उन्हें स्थिरता का आशीर्वाद मिलता है।

भजन संहिता 112:8 को देखें: "उसका हृदय स्थिर है; वह डरेगा नहीं, जब तक कि वह अपने विरोधियों को जीत के साथ न देख ले।" जो व्यक्ति परमेश्वर का भय मानता है और उसकी आज्ञाओं का पालन करता है, उसका हृदय स्थिर क्यों होता है, ताकि वह "बुरी खबर" से न डरे (पद 7)? ऐसा इसलिए है क्योंकि उसने अपना हृदय परमेश्वर पर भरोसा करने में दृढ़ता से लगाया है (पद 7)। क्योंकि वह इन परिस्थितियों के बीच गरीबों को देता है, इसलिए जो व्यक्ति परमेश्वर का भय मानता है और उसकी आज्ञाओं का पालन करता है, वह निडर रहता है (पार्क युन-सन)। गरीबों की मदद करना अपने पड़ोसी से प्रेम करने का कार्य है, और ऐसे प्रेम में कोई भय नहीं होता (1 यूहन्ना 4:18), क्योंकि पूर्ण प्रेम भय को दूर कर देता है। हमें भी परमेश्वर का भय मानते हुए उनकी आज्ञाओं का पालन करके अपने हृदय को स्थिर रखना चाहिए। हमें दुष्टों के बारे में "बुरी खबर" सुनकर भी डरना नहीं चाहिए; इसके बजाय, हमें पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर रहने के लिए अपने हृदय को दृढ़ता से तैयार करना चाहिए। जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, वे धन्य हैं। यह आशीष उनकी आने वाली पीढ़ियों तक भी पहुँचती है; उन्हें भौतिक आशीषें मिलती हैं और वे परमेश्वर की कृपा का अनुभव करते हैं। इसके अलावा, जो लोग उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, वे समृद्ध होते हैं और उन्हें कोई भय नहीं होता, क्योंकि उनके हृदय दृढ़ होते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि ऐसी आशीषें हम सभी पर बनी रहें।

“हे प्रभु के सेवकों, उसकी स्तुति करो”

[भजन संहिता 113]

स्तुति क्या है? मुझे ऑनलाइन एक लेख मिला जिसमें कहा गया है कि स्तुति किसी व्यक्ति की आध्यात्मिक स्थिति की “आत्म-जांच” का एक तरीका हो सकती है: “अगर आप अपनी वर्तमान आध्यात्मिक स्थिति जानना चाहते हैं, तो बस उन गीतों पर ध्यान दें जो अक्सर आपके होंठों पर रहते हैं। अगर आप अकेले हैं, तो अकेलेपन के गीत आपके होंठों से निकलेंगे; अगर आप निराशा में हैं, तो निराशावादी और उदास गीत आपके होंठों से निकलेंगे। यही बात आपकी आध्यात्मिक स्थिति पर भी लागू होती है। आप अक्सर जो स्तुति-गीत गाते हैं, उनकी जांच करके आप तुरंत अपनी वर्तमान आध्यात्मिक स्थिति का पता लगा सकते हैं। यदि आप ‘प्रभु जैसा मेरे दिल को कोई नहीं छूता’ जैसा गीत गाते हुए पाए जाते हैं, तो इसका मतलब है कि आपको सांत्वना और चंगाई की आवश्यकता है। हमारे मुँह से वही बातें निकलती हैं जो हमारे भीतर होती हैं। इससे भी अधिक उल्लेखनीय बात यह है कि आपके होंठों पर गीतों को बदलने से वास्तव में आपकी आंतरिक स्थिति बदल सकती है। यदि आप अपनी आध्यात्मिक स्थिति को बदलना चाहते हैं, तो बस अपने होंठों पर स्तुति के गीत बदल लें। क्योंकि परमेश्वर गीतों से प्रसन्न होते हैं, वे हमारे होंठों से निकली स्तुति को सुनते हैं और उसी के अनुसार कार्य करते हैं” (इंटरनेट)। इस विचार में बहुत बुद्धिमानी है कि हमारे होंठों पर स्तुति बदलने से हमारी आध्यात्मिक स्थिति बदल सकती है। बेशक, मेरा मानना है कि परमेश्वर की कृपा के बिना यह असंभव है; यह केवल विश्वास के माध्यम से ही संभव है। उदाहरण के लिए, विश्वास के बिना, जब किसी का हृदय पीड़ा और दर्द से भरा हो, तो भजन संख्या 40, “हाउ ग्रेट दाऊ आर्ट” (आप कितने महान हैं) को सच्चे मन से गाना असंभव होगा। हालाँकि कोई व्यक्ति जबरदस्ती शब्द बोल सकता है, लेकिन केवल गीत के बोल गाने से उसकी आध्यात्मिक स्थिति नहीं बदलेगी। हालाँकि, जब हम विश्वास के साथ परमेश्वर की ओर

देखते हैं और स्तुति करते हैं, तो पवित्र आत्मा हमारे हृदयों को बदल देती है। इसके अलावा, ठीक वैसे ही जैसे प्रेरितों के काम 16 में पॉल और सिलास के जेल में होने पर चमत्कार हुआ था—जब उन्होंने प्रार्थना की और परमेश्वर की स्तुति की—वैसे ही जब हम विश्वास के साथ परमेश्वर की स्तुति करते हैं, तो परमेश्वर न केवल हमारी आध्यात्मिक स्थिति को बल्कि हमारी परिस्थितियों को भी बदल देंगे।

इसलिए, हमारे लिए परमेश्वर की स्तुति करना उचित है। भजन संहिता 113:1 में, भजनकार हमें प्रोत्साहित करते हैं: “हल्लेलूयाह! हे प्रभु के सेवकों, स्तुति करो, प्रभु के नाम की स्तुति करो।” यहाँ, "प्रभु के सेवक" का मतलब उन लोगों से है जो परमेश्वर की खातिर विनम्र स्थिति में रहते हैं (पार्क युन-सन)। यह अंश हमें सिखाता है कि हमें विश्वास के ज़रिए विनम्र बनना चाहिए, परमेश्वर को सच में जानना चाहिए, और उन्हें वह प्रशंसा देनी चाहिए जिसके वे हकदार हैं (पार्क युन-सन)। अपनी विनम्र स्थिति से, हमें "अभी से लेकर हमेशा तक प्रभु के नाम की प्रशंसा करनी चाहिए" (पद 2)। दूसरे शब्दों में, हमें हमेशा परमेश्वर की प्रशंसा करनी है। इसके अलावा, हमारे साथ-साथ, पूरी दुनिया को विनम्रतापूर्वक "सूरज उगने से लेकर उसके डूबने तक" परमेश्वर की प्रशंसा करनी चाहिए (पद 3)। तो फिर, इतनी विनम्र स्थिति से हमें हमेशा परमेश्वर की प्रशंसा क्यों करनी चाहिए? हमें इस लेख में दो कारण मिल सकते हैं।

पहला कारण यह है कि परमेश्वर महान और ऊँचे हैं।

भजन संहिता 113:4–5 को देखें: "प्रभु सभी राष्ट्रों से ऊँचे हैं, और उनकी महिमा स्वर्ग से भी ऊँची है! हमारे परमेश्वर प्रभु जैसा कौन है, जो ऊँचे स्थान पर विराजमान हैं?" जब मैं इन पदों पर विचार करता हूँ, तो मुझे भजन 40, "हाउ ग्रेट दाऊ आर्ट" (कोरियाई में जिसका शाब्दिक अर्थ है "प्रभु परमेश्वर द्वारा रची गई सारी दुनिया") याद आता है। जो आत्मा प्रभु की महानता और बड़प्पन की प्रशंसा करती है, वह परमेश्वर के महान स्वरूप को पहचानती है। और परमेश्वर के महान स्वरूप और बड़प्पन को पहचानकर, हम गाए बिना नहीं रह सकते, "मैं विनम्रतापूर्वक झुककर आराधना करूँगा और हमेशा प्रभु की प्रशंसा करूँगा।" दूसरे शब्दों में, जो विश्वासी प्रभु की महानता को जान जाता है, वह विनम्र बनने के लिए प्रेरित होता है। नतीजतन, वे विनम्रतापूर्वक झुकते हैं और प्रभु की महिमा और बड़प्पन की प्रशंसा करते हैं। भजनकार हमें प्रोत्साहित करता है कि हम परमेश्वर को सही ढंग से और विनम्रतापूर्वक जानकर उनकी योग्य प्रशंसा करें। ऐसी योग्य

प्रशंसा वह है जो परमेश्वर के महान स्वरूप को समझकर की जाती है। आज के अंश में, भजनकार हमें हमेशा परमेश्वर की महिमा की प्रशंसा करने के लिए प्रेरित करता है—जो स्वर्ग से भी ऊँचे हैं और एक ऊँचे और महिमामयी सिंहासन पर विराजमान हैं (पद 4–5)। तो फिर, हम प्रभु की महानता को कैसे जान सकते हैं और उन्हें वह प्रशंसा और महिमा कैसे दे सकते हैं जिसके वे हकदार हैं? हम इसे परमेश्वर के वचन (विशेष प्रकाशन) और उनके द्वारा बनाई गई प्राकृतिक दुनिया (सामान्य प्रकाशन) के माध्यम से जान सकते हैं। एक तरीका—जैसा कि हमने पहले भजन 111 में सोचा था—यह है कि हम परमेश्वर के महान कामों का अध्ययन करें (पद 2), उन पर मनन करें (पद 4) और उन्हें याद रखें; इसके ज़रिए हम प्रभु की महानता को समझ सकते हैं। संक्षेप में, परमेश्वर ने हमारे जीवन में उद्धार के जो महान काम किए हैं, उन्हें याद करके, उन पर मनन करके और उनमें आनंदित होकर हम उनकी महानता को जानते हैं और उनकी उचित स्तुति कर सकते हैं।

दूसरा कारण जिसकी वजह से हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए, वह यह है कि उन्होंने खुद को दीन बनाया।

भजन 113:6 को देखिए: "वह स्वर्ग और पृथ्वी को देखने के लिए झुकते हैं।" हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए क्योंकि वह उन सभी लोगों को देखने के लिए झुकते हैं जो दीन-हीन हैं। जिन भजनों पर हमने पहले मनन किया है, उनमें ऐसे अंश हैं जो बताते हैं कि परमेश्वर मानव जीवन को कैसे देखते हैं: "यहोवा स्वर्ग से देखते हैं; वह मनुष्यों की सभी संतानों को देखते हैं। अपने निवास स्थान से वह पृथ्वी के सभी निवासियों को देखते हैं; वह उनके दिलों को अलग-अलग रचते हैं; वह उनके सभी कामों पर विचार करते हैं" (33:13-15); "परमेश्वर स्वर्ग से मनुष्यों की संतानों को देखते हैं, यह देखने के लिए कि क्या कोई ऐसा है जो समझता है, जो परमेश्वर को खोजता है" (53:2)। तो फिर, वे कौन लोग हैं जिन्हें देखने के लिए परमेश्वर खुद को दीन बनाते हैं? वे हैं "गरीब," "ज़रूरतमंद" (113:7), और "बाँझ स्त्री" (पद 9)। दूसरे शब्दों में, जिन लोगों पर ध्यान देने के लिए सर्वोच्च परमेश्वर खुद को दीन बनाते हैं, वे दीन और असहाय लोग हैं—जिनके पास कोई और सहारा नहीं है। परमेश्वर उन लोगों पर नज़र डालते हैं जो सचमुच दयनीय परिस्थितियों में हैं (पार्क युन-सन)। जब वह उन्हें देखते हैं, तो वह उन्हें धूल से "ऊपर उठाते" हैं (पद 7), राख के ढेर से "ऊपर उठाते" हैं (पद 7), और उन्हें राजकुमारों के साथ—अपने लोगों के राजकुमारों के साथ—"बिठाते" हैं (पद 8)। हमें परमेश्वर की

स्तुति इसलिए करनी चाहिए क्योंकि सर्वोच्च परमेश्वर दीन लोगों के प्रति सहानुभूति रखने के लिए खुद को दीन बनाते हैं (पार्क युन-सन)। जब मैं उस परमेश्वर के बारे में सोचता हूँ जो हमारी कमज़ोरियों को समझता है, तो मुझे इब्रानियों 4:15 की बात याद आती है: "क्योंकि हमारा महायाजक ऐसा नहीं है जो हमारी कमज़ोरियों को न समझ सके, बल्कि वह हर तरह से हमारी तरह परखा गया, फिर भी उसने कोई पाप नहीं किया।" प्रभु, जिनकी परीक्षा हमारी ही तरह हर बात में हुई, वही महायाजक हैं जो हमारी कमज़ोरियों को समझते हैं। इसलिए, पवित्र आत्मा हमारी कमज़ोरी में हमारी मदद करता है (रोमियों 8:26)। हालाँकि हम नहीं जानते कि हमें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए, आत्मा स्वयं हमारे लिए ऐसी आहें भरकर विनती करता है जिन्हें शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता (पद 26)। इसलिए, हमें अपने प्रभु की स्तुति करनी चाहिए।

मुझे फिलिप्पियों 2:6–8 के शब्द याद आते हैं, जो यीशु के दीन बनने का वर्णन करते हैं: "जिन्होंने परमेश्वर के रूप में होते हुए भी, परमेश्वर के बराबर होने को कोई ऐसी चीज़ नहीं माना जिसे ज़बरदस्ती बनाए रखा जाए, बल्कि उन्होंने खुद को शून्य कर दिया, एक दास का रूप धारण किया, और मनुष्यों के समान बन गए। और मनुष्य के रूप में पाए जाने पर, उन्होंने खुद को दीन किया और मृत्यु तक, यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी बने रहे।" यीशु मसीह ने परमेश्वर के साथ अपनी समानता को पकड़े नहीं रखा, बल्कि खुद को दीन किया और परमेश्वर पिता की आज्ञा का पालन क्रूस पर मृत्यु तक किया। इसका परिणाम क्या हुआ? "इसलिए परमेश्वर ने उन्हें बहुत ऊँचा स्थान दिया और उन्हें वह नाम दिया जो सब नामों से ऊँचा है, ताकि यीशु के नाम पर स्वर्ग में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे रहने वाले सभी घुटने टेकें, और हर जीभ यह स्वीकार करे कि यीशु मसीह ही प्रभु हैं, जिससे परमेश्वर पिता की महिमा हो" (फिलिप्पियों 2:9–11)। क्योंकि सबसे ऊँचे प्रभु ने हमें बचाने के लिए इस पृथ्वी पर आने और क्रूस पर मरने के लिए खुद को दीन किया, इसलिए परमेश्वर ने उन्हें बहुत ऊँचा स्थान दिया। नतीजतन, परमेश्वर ने हमें हमेशा प्रभु की स्तुति करके परमेश्वर पिता की महिमा करने के योग्य बनाया है। इसलिए, हमें अनंत काल तक दीनता के साथ प्रभु की स्तुति करनी चाहिए।

परमेश्वर के पवित्र स्थान के रूप में कलीसिया

[भजन संहिता 114]

आप कलीसिया का असली स्वरूप क्या मानते हैं? कलीसिया का असल में कलीसिया होने का क्या अर्थ है? व्यक्तिगत रूप से, प्रेरितों के काम की पुस्तक पर मनन करते हुए, मैंने शुरुआती कलीसिया में पाँच सिद्धांत पाए, और मेरी इच्छा है कि हमारी विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन कलीसिया इन पाँच सिद्धांतों का पालन करे ताकि हम सचमुच एक कलीसिया बन सकें। ये पाँच सिद्धांत हैं: (1) प्रार्थना करने वाली कलीसिया, (2) पवित्र आत्मा से भरी हुई कलीसिया, (3) ऐसी कलीसिया जो निडर होकर सुसमाचार का प्रचार करती है, (4) ऐसी कलीसिया जिसमें प्रभु विश्वासियों को जोड़ते हैं, और (5) प्रेम का समुदाय।

आज के शास्त्र-पाठ, भजन संहिता 114:2 में, भजनकार घोषणा करता है: "यहूदा उसका पवित्र स्थान बना, और इस्राएल उसका राज्य।" यहाँ, भजनकार "यहूदा" को "परमेश्वर का पवित्र स्थान" कहता है; दूसरे शब्दों में, वह इस्राएल को परमेश्वर का पवित्र स्थान बताता है। तो, परमेश्वर का "पवित्र स्थान" क्या है? यह वह स्थान है जहाँ परमेश्वर अपने लोगों के बीच निवास करते हैं और उनके साथ रहते हैं। यह वह स्थान है जहाँ परमेश्वर का वचन मौजूद है और उसका प्रचार किया जाता है। यह वह स्थान भी है जहाँ परमेश्वर के लोग बलिदान चढ़ाने, वाचा के वचन सुनने और परमेश्वर की आराधना और प्रार्थना करने के लिए इकट्ठा होते थे। इसके अलावा, यह वह स्थान था जहाँ बड़े त्योहार और उत्सव मनाए जाते थे। पुराने नियम में यह "परमेश्वर का पवित्र स्थान" नए नियम में "कलीसिया" की ओर इशारा करता है; दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के पवित्र स्थान का अर्थ कलीसिया है। भजन संहिता 114:2 पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं परमेश्वर के पवित्र स्थान के रूप में कलीसिया की तीन विशेषताओं पर मनन करना चाहता हूँ और उसकी दी हुई कृपा प्राप्त करना चाहता हूँ। मेरी प्रार्थना है कि हमारी कलीसिया ऐसा समुदाय बने।

कलीसिया—परमेश्वर का पवित्र स्थान—किस तरह का समुदाय है? सबसे पहले, कलीसिया—परमेश्वर का पवित्र स्थान—एक ऐसा समुदाय है जिसने उद्धार प्राप्त किया है।

भजन संहिता 114:1 पर विचार करें: "जब इस्राएल मिस्र से निकला, और याकूब का घराना अजीब भाषा बोलने वाले लोगों के बीच से आया।" यहाँ, भजनकार याद करता है कि कैसे मिस्र से निकलने के समय (Exodus), परमेश्वर ने मूसा का इस्तेमाल करके इस्राएल के लोगों को मिस्रियों के हाथों से छुड़ाया—ऐसे लोग जिनकी "भाषा अजीब" थी, या जो "असभ्य लोग" थे (जैसा कि पार्क युन-सन ने बताया है)। दूसरे शब्दों में, वह परमेश्वर के उस बचाने वाले काम पर विचार कर रहा है जिसके द्वारा उसने अपने लोगों, इस्राएल को मिस्र से बाहर निकाला। परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से बाहर क्यों निकाला? उसने उन्हें क्यों बचाया? ऐसा इसलिए था क्योंकि परमेश्वर इस्राएल के लोगों से प्रेम करता था और उस शपथ को पूरा करना चाहता था जो उसने उनके पूर्वजों से खाई थी। व्यवस्थाविवरण 7:7–8 को देखें: "यहोवा ने तुमसे इसलिए प्रेम नहीं किया और न ही तुम्हें इसलिए चुना कि तुम किसी अन्य लोगों की तुलना में संख्या में अधिक थे, क्योंकि तुम सभी लोगों में सबसे कम थे; बल्कि इसलिए कि यहोवा तुमसे प्रेम करता है, और इसलिए कि वह उस शपथ को पूरा करेगा जो उसने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी, यहोवा तुम्हें एक शक्तिशाली हाथ से बाहर लाया है, और तुम्हें गुलामी के घर से, मिस्र के राजा फिरौन के हाथ से छुड़ाया है।" परमेश्वर का उद्धार पूरी तरह से उसकी संप्रभुता के अंतर्गत पूरा होता है। क्योंकि वह इस्राएलियों से प्रेम करता था, उनमें प्रसन्न था, और उन्हें चुना था, इसलिए उसने उनके पूर्वजों से किए गए वादे को पूरा करने के लिए उन्हें मिस्र से छुड़ाया।

नए नियम के युग में, कलीसिया ही परमेश्वर के सच्चे लोग हैं—वे जिन्होंने परमेश्वर का उद्धार प्राप्त किया है। वास्तव में, "कलीसिया" (church) के लिए ग्रीक शब्द, *ekklesia*, *ek* ("बाहर") और *kaleo* ("बुलाना") का मेल है। दूसरे शब्दों में, कलीसिया का अर्थ है वे जिन्हें "बाहर बुलाया गया है।" परमेश्वर ने दुनिया की नींव रखे जाने से पहले ही मसीह में कलीसिया को चुना। अपनी अच्छी इच्छा के अनुसार, उसने हमें अपने पुत्र बनने के लिए पहले से ही निर्धारित किया। उसने कलीसिया को शैतान के राज्य—जिसकी तुलना मिस्र से की गई है—से बचाया ताकि कलीसिया उसके अनुग्रह की महिमा की प्रशंसा कर सके (इफिसियों 1:4–5)। इसलिए, जब भी हम परमेश्वर के बचाने वाले अनुग्रह पर विचार करते हैं, तो हमें उसकी प्रशंसा करनी चाहिए;

कलीसिया को आराधना का समुदाय होना चाहिए। इसके अलावा, जैसे-जैसे हम उस उद्धार पर विचार करते हैं जो परमेश्वर ने यीशु मसीह के माध्यम से दिया है, हमें उस उद्धार की भी आशा के साथ प्रतीक्षा करनी चाहिए जो प्रभु के दूसरे आगमन पर पूरा होगा। दूसरी बात, चर्च—जो परमेश्वर का पवित्र स्थान है—एक ऐसा समुदाय है जहाँ परमेश्वर निवास करते हैं।

भजन संहिता 114:2 पर विचार करें: "यहूदा उनका पवित्र स्थान बना, और इस्राएल उनका राज्य।" जैसा कि हमने पहले भी सोचा है, "परमेश्वर का पवित्र स्थान" उस जगह को बताता है जहाँ परमेश्वर अपने लोगों के बीच मौजूद होते हैं और उनके साथ रहते हैं। दूसरे शब्दों में, चर्च को परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करना चाहिए—यह जानना, महसूस करना और व्यक्तिगत रूप से इस सच्चाई का सामना करना कि परमेश्वर हमेशा हमारे साथ हैं। आत्मा और सच्चाई से आराधना करते समय चर्च को विशेष रूप से परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस करना चाहिए। इसके अलावा, संकट और मुश्किलों के समय में भी चर्च को परमेश्वर की उपस्थिति का और भी गहराई से अनुभव करने की ज़रूरत है। आज के अंश के दूसरे पद में, भजनकार याद दिलाते हैं कि कैसे मिस्र से आज़ाद हुए यहूदी लोग परमेश्वर के साथ चले (पार्क युन-सन)। परमेश्वर इस्राएल के बीच मौजूद थे। मिस्र से निकलने के दौरान, परमेश्वर आग और बादल के खंभों के ज़रिए इस्राएलियों के साथ थे, और जंगल में, वे उनके साथ चलने के लिए पवित्र तम्बू (टैबरनेकल) में रहते थे। परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर मूसा के ज़रिए इस्राएलियों को व्यवस्था दी (पद 4; पार्क युन-सन); दूसरे शब्दों में, परमेश्वर अपने वचन के ज़रिए इस्राएलियों के साथ चले।

बाइबल में यूहन्ना अध्याय 1 कहता है कि वह वचन, जो परमेश्वर के साथ था (पद 1-2), देहधारी हुआ और हमारे बीच बसा (पद 14)। बाइबल हमारे बीच रहने वाले इस परमेश्वर को "इम्मानुएल" (मत्ती 1:23) कहती है—जिसका अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ।" 1 कुरिन्थियों 3:16 में, प्रेरित पौलुस पूछते हैं, "क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मंदिर हो और परमेश्वर का आत्मा तुममें वास करता है?" हम परमेश्वर का मंदिर हैं; परमेश्वर का पवित्र आत्मा हमारे भीतर वास करता है। पवित्र आत्मा हमेशा हमारे साथ है और हममें से जो बचाए गए हैं, उन्हें पवित्र करता है। इसलिए, चर्च को पवित्र होना चाहिए। इस अंधेरी दुनिया को यह दिखाने के लिए कि प्रभु सचमुच मौजूद हैं, चर्च को पवित्र होना चाहिए। हमें दुनिया से अलग जीवन जीना चाहिए, जो इम्मानुएल के विश्वास पर टिका हो—यानी इस विश्वास पर कि परमेश्वर हमारे साथ हैं। संक्षेप में, चर्च परमेश्वर

का पवित्र समुदाय है। तीसरी बात, चर्च—जो परमेश्वर का पवित्र स्थान है—एक ऐसा समुदाय है जो परमेश्वर की शक्ति को प्रकट करता है।

परमेश्वर ने बार-बार अपनी शक्ति दिखाई, जब उन्होंने इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकाला (निर्गमन के समय) और उन्हें कनान, यानी 'वादे की भूमि' तक पहुँचाया। मिस्र में, परमेश्वर ने दस विपत्तियों के ज़रिए अपनी शक्ति दिखाई; जंगल में, उन्होंने चट्टान से पानी निकाला और इस्राएल के लोगों को खिलाने के लिए स्वर्ग से मन्ना बरसाया (पद 8)। परमेश्वर ने लाल सागर पर और लगभग चालीस साल बाद यरदन नदी पर भी अपनी शक्ति दिखाई, जब लोग कनान की 'वादे की भूमि' के करीब पहुँच रहे थे (पद 3, 5)। परमेश्वर की महान शक्ति के सामने, समुद्र दो भागों में बँटकर सूखी ज़मीन बन गया और चट्टान से पानी की धारा बह निकली। सचमुच, परमेश्वर की शक्ति के सामने पूरी प्राकृतिक दुनिया काँप उठी (पार्क युन-सन)। इसलिए, भजनकार कहता है: "हे पृथ्वी, प्रभु की उपस्थिति में, याकूब के परमेश्वर की उपस्थिति में काँप उठ" (पद 7)। दुनिया के सभी लोगों को परमेश्वर की शक्ति देखकर उनसे डरना और उनका आदर करना चाहिए।

चर्च को परमेश्वर की शक्ति को प्रकट करना चाहिए। परमेश्वर की वह शक्ति स्वयं सुसमाचार है। रोमियों 1:16 पर विचार करें: "क्योंकि मैं सुसमाचार से लज्जित नहीं होता, क्योंकि यह परमेश्वर की वह शक्ति है जो विश्वास करने वाले हर व्यक्ति को उद्धार देती है: पहले यहूदियों को, फिर गैर-यहूदियों को।" इस सुसमाचार का—जो परमेश्वर की शक्ति है—निडरता से प्रचार करके हमारे चर्च को परमेश्वर की उद्धार करने वाली शक्ति को दिखाना चाहिए। परमेश्वर का चर्च उन लोगों का समुदाय है जिन्हें छुटकारा मिला है, एक ऐसा समुदाय जहाँ परमेश्वर निवास करते हैं, और एक ऐसा समुदाय जो परमेश्वर की शक्ति को प्रकट करता है। मेरी प्रार्थना है कि हमारा चर्च परमेश्वर का ऐसा ही चर्च बने।

परमेश्वर से आशीष पाए हुए लोग

[भजन संहिता 115]

आज सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, मैंने कुलुस्सियों 1:6 पर मनन किया: "यह सुसमाचार आप तक पहुँचा है। ठीक उसी तरह, यह पूरी दुनिया में फल ला रहा है और बढ़ रहा है—जैसे यह आपके बीच उस दिन से हो रहा है जब आपने इसे सुना और परमेश्वर के अनुग्रह को सच में समझा।" इस वचन पर मनन करते हुए, मैंने सीखा कि जिस पल हम सुसमाचार सुनते हैं और परमेश्वर के अनुग्रह को सच में समझते हैं, हमारे जीवन में "फल" ज़रूर दिखना चाहिए। मुझे सिखाया गया कि जैसे-जैसे हम उस अनुग्रह को और गहराई, विस्तार और बहुतायत से समझते हैं, हमें हर अच्छे काम में फल लाना चाहिए (वचन 10)। तो फिर, वह महान अनुग्रह क्या है जो परमेश्वर ने आप पर और मुझ पर किया है? प्रेरित पौलुस कहते हैं, "उसमें हमें छुटकारा मिला है, पापों की क्षमा मिली है" (वचन 14)। परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए कई महान अनुग्रहों में से, मैंने खास तौर पर छुटकारे—यानी पापों की क्षमा—पर विचार किया। सिर्फ़ यह सोचकर कि यीशु में पाप की समस्या का समाधान हो गया है, मेरा दिल बहुत ज़्यादा कृतज्ञता से भर जाता है।

आपके और मेरे बारे में—जिन्हें ऐसा अनुग्रह मिला है और मिलता जा रहा है—भजन संहिता 115:15 कहती है: "तुम प्रभु से आशीष पाए हुए हो, जो स्वर्ग और पृथ्वी का बनाने वाला है।" पवित्र शास्त्र पुष्टि करता है कि हम वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर ने आशीष दी है। सचमुच, आप और मैं परमेश्वर से आशीष पाए हुए लोग हैं—हमें एक बहुत बड़ी, असाधारण आशीष मिली है। परमेश्वर का प्रेम पाकर, उनके द्वारा चुने और पहले से ठहराए जाकर, और यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के ज़रिए अनंत जीवन पाकर—हमें कितनी ज़बरदस्त

आशीष मिली है! सबसे बढ़कर, क्योंकि यीशु—जो सभी आशीषों का स्रोत हैं—हमारे प्रभु हैं और हमारे साथ हैं, हम अपनी आशीषों को गिने बिना और यह महसूस किए बिना नहीं रह सकते कि "मैं सचमुच एक आशीष पाया हुआ व्यक्ति हूँ।" सिर्फ़ यह बात कि प्रभु, जिन्होंने इतनी भरपूर आशीषें दी हैं, हमसे प्रेम करते हैं और हमारे साथ रहते हैं, हमें यह कहने के लिए प्रेरित करती है कि हम वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर ने आशीष दी है और लगातार आशीष दे रहे हैं। आज के भाग के वचन 15 में, भजनकार इस्राएल के लोगों की पहचान उन लोगों के तौर पर करते हैं जिन्हें परमेश्वर से आशीषें मिलती हैं। भजनकार ने उनके लिए यह आशीष की प्रार्थना की: "प्रभु आपको—आपको और आपकी आने वाली पीढ़ियों को—और भी बढ़ाए" (पद 14)। इस प्रार्थना पर विचार करते हुए मुझे हमारे चर्च के डीकन किम की पहली पोती, जोई की याद आई; मुझे याद आया कि उसकी माँ ने बताया था कि "जोई" नाम का अर्थ है "परमेश्वर बढ़ाता है।" इस अंश में भजनकार द्वारा समृद्धि बढ़ने के लिए की गई प्रार्थना इसराइल के लोगों की संख्या में वृद्धि के लिए है—जिसमें वर्तमान पीढ़ी और उनकी आने वाली पीढ़ियाँ दोनों शामिल हैं (पार्क युन-सन)। हम इसे पद 16 में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं: "स्वर्ग प्रभु का है, लेकिन पृथ्वी उसने मानवजाति को दी है।" भजनकार ने इसराइल की वृद्धि के लिए यह प्रार्थना पूरे भरोसे के साथ की, जो इस सच्चाई पर आधारित थी कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही उन्हें आशीष देता है और उसने मानवता को पृथ्वी दी है और साथ ही संख्या में बढ़ने का आदेश भी दिया है (पार्क युन-सन)।

तो, किस तरह का व्यक्ति परमेश्वर से वृद्धि की यह आशीष प्राप्त करता है? मैं आज के अंश के आधार पर तीन बिंदुओं पर विचार करना चाहूँगा।

पहला, जो लोग परमेश्वर से समृद्धि की आशीष प्राप्त करते हैं, वे ही परमेश्वर की महिमा करते हैं।

भजन संहिता 115:1 को देखें: "हे प्रभु, हमें नहीं, हमें नहीं, बल्कि अपने नाम को महिमा दे, अपनी दया के कारण, अपनी सच्चाई के कारण।" 1 शमूएल 15:12 में, हम राजा शाऊल को देखते हैं—जिसने अमालेकियों को पूरी तरह से नष्ट करने के परमेश्वर के आदेश की अवहेलना की थी—उसने अपनी सैन्य जीत के बाद कार्मेल में एक स्मारक बनवाया। इससे क्या पता चलता है? यह दिखाता है कि उसने जीत का श्रेय परमेश्वर

के बजाय खुद को दिया। राजा शाऊल ने अपनी उपलब्धि की याद में स्मारक बनवाया; उसने अमालेकियों पर जीत को परमेश्वर की कृपा का परिणाम नहीं, बल्कि अपनी खुद की उपलब्धि माना। शाऊल, जो कभी इतना विनम्र था कि खुद को तुच्छ समझता था, राजा बनने के बाद अहंकारी हो गया; उसने परमेश्वर के आदेश को नहीं माना और अपने पाप को महसूस करने और पश्चाताप करने के बजाय, महिमा खुद लेने के लिए एक स्मारक बनवाया। इसे देखते हुए, हमें भजनकार की भजन 115:1 की प्रार्थना के महत्व को और गंभीरता से लेना चाहिए: "हे प्रभु, हमें नहीं, हमें नहीं, बल्कि अपने नाम को महिमा दें।" संक्षेप में, यह प्रार्थना खुद को या इज़राइल के लोगों को वह महिमा देने से इनकार करना है जो केवल परमेश्वर की है। परमेश्वर से अपनी विनती में "हमें नहीं" वाक्यांश को दो बार दोहराकर, उन्होंने परमेश्वर की महिमा चुराने के काम को दृढ़ता से अस्वीकार कर दिया। वह केवल परमेश्वर को महिमा देना चाहते थे। प्रार्थना करते समय, उनकी दिली इच्छा थी कि केवल परमेश्वर को ही महिमा मिले। भजनकार क्यों चाहते थे कि महिमा केवल परमेश्वर को दी जाए? इसका कारण प्रभु की प्रेमपूर्ण दया और विश्वासयोग्यता है (पद 1)। विद्वान डेलिट्ज़ ने बताया कि भजन 115—जो आज का पाठ है—इज़राइल की एक प्रार्थना है जो मूर्तिपूजक दुश्मनों के खिलाफ युद्ध के दौरान परमेश्वर की मदद मांगती है (पार्क युन-सन)। यदि ऐसा है, तो भजनकार प्रार्थना कर रहे थे कि परमेश्वर को ही महिमा मिले क्योंकि वे विश्वासयोग्यता से काम करते हैं—अपने प्रेम के कारण इज़राइल के लोगों को बचाने का अपना वादा पूरा करते हुए—अपने मूर्तिपूजक विरोधियों के साथ संघर्ष के बीच। भजनकार ने प्रार्थना की कि परमेश्वर, अपनी प्रेमपूर्ण दया और विश्वासयोग्यता के माध्यम से, इज़राइल के लोगों को युद्ध में जीत दिलाएं। इस प्रकार, वह चाहते थे कि केवल परमेश्वर की महिमा हो। लेकिन क्या होगा अगर इज़राइल हार जाए और मूर्ति-पूजा करने वाले अन्यजाति (पद 4-8) जीत जाएं? अन्यजाति इज़राइल के लोगों का मज़ाक उड़ाएंगे और पूछेंगे, "अब उनका परमेश्वर कहाँ है?" (पद 2)। क्योंकि भजनकार केवल परमेश्वर की महिमा चाहते थे, इसलिए वह नहीं चाहते थे कि वह महिमा धूमिल हो। इसलिए, उन्होंने प्रार्थना की कि परमेश्वर युद्ध के दौरान अपनी प्रेमपूर्ण दया और विश्वासयोग्यता प्रकट करें, इज़राइल के लोगों को उनके मूर्तिपूजक दुश्मनों के हाथों से बचाएं और उन्हें जीत दिलाएं। यह प्रार्थना करते हुए, भजनकार ने परमेश्वर की प्रभुता को स्वीकार किया: "हमारा परमेश्वर स्वर्ग में है; वह वही करता है जो उसे भाता है" (पद 3)। परमेश्वर इज़राइल के लोगों को युद्ध में जीत दिला सकते हैं, या वे उनकी हार को न रोकने का विकल्प चुन सकते हैं। हार को न रोकने का एक कारण यह हो सकता है कि यह लोगों के बिना पछतावे वाले पाप के लिए ईश्वरीय अनुशासन का कार्य हो सकता है। आखिरकार, भजनकार की प्रार्थना का जवाब इस बात

पर निर्भर करता है कि परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार क्या करता है; दूसरे शब्दों में, युद्ध में जीत और हार परमेश्वर की सर्वोच्च सत्ता पर निर्भर करती है।

जो लोग परमेश्वर से आशीष पाते हैं, वे ही प्रभु की महिमा करते हैं, जो सभी आशीषों का स्रोत है। उनकी उस महिमा को खुद लेने की कोई इच्छा नहीं होती। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर से आशीष पाने वाले केवल उसकी दया और सच्चाई को चाहते हैं। जिन लोगों को परमेश्वर समृद्ध करता है, उनके दिलों में केवल प्रभु की दया और सच्चाई पर भरोसा होता है; इसलिए, जब उनकी प्रार्थनाओं का जवाब मिलता है, तो वे परमेश्वर के काम को पहचानते हैं और केवल उसी की महिमा करते हैं। यहाँ, "प्रार्थना का जवाब" मिलने का मतलब हमेशा वही चीज़ पाना नहीं है जो हमने माँगी थी; बल्कि, परमेश्वर अपनी सर्वोच्च इच्छा के अनुसार जवाब देता है। इसलिए, भले ही जवाब हमारी इच्छाओं के अनुसार न हो, फिर भी परमेश्वर से आशीष पाने वाले उसकी महिमा करते हैं, क्योंकि वे अपनी सर्वोच्च सत्ता में किए गए उसके कामों में उसकी दया और सच्चाई का अनुभव करते हैं। इस प्रकार, यदि हम—अपने बच्चों और वंशजों के साथ—परमेश्वर से समृद्धि का आशीष पाना चाहते हैं, तो हमें केवल उसी की महिमा करनी चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि जब हम परमेश्वर से प्रार्थना करें और पूरी तरह से उसकी दया और सच्चाई पर भरोसा रखें, तो आपके और मेरे जीवन में उसकी महिमा प्रकट हो।

दूसरी बात, जो लोग परमेश्वर से समृद्धि का आशीष पाते हैं, वे ही उस पर भरोसा करते हैं।

तीसरी बात, जो लोग परमेश्वर से समृद्धि का आशीर्वाद पाते हैं, वे वही हैं जो उससे डरते हैं।

भजन संहिता 115:13 को देखिए: "वह उन लोगों को आशीष देगा जो प्रभु से डरते हैं—चाहे वे छोटे हों या बड़े।" जो लोग परमेश्वर से डरते हैं—जो उसके प्रति आदर और श्रद्धा रखते हैं—वे युद्ध के समय भी अपने दुश्मनों से नहीं डरते। इसका कारण यह है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जो जीत दिलाने वाला परमेश्वर है, अपने लोगों की मदद करता है, उनकी रक्षा करता है और उन्हें जीत की ओर ले जाता है। इसके बजाय, वे परमेश्वर से डरते हैं। परमेश्वर ऐसे लोगों पर समृद्धि का आशीर्वाद बरसाता है। व्यवस्थाविवरण 6:1-2 में हम देखते हैं कि इस्राएलियों के कनान (वादे की भूमि) में प्रवेश करने से पहले, परमेश्वर ने मूसा के ज़रिए उन्हें

आज्ञाएँ, नियम और कानून दिए (पद 1)। परमेश्वर का मकसद क्या था? व्यवस्थाविवरण 6:2 को देखिए: "ताकि तुम, तुम्हारे बच्चे और उनके बाद उनके बच्चे, जब तक जीवित रहो, अपने प्रभु परमेश्वर का भय मानो और उसके उन सभी नियमों और आज्ञाओं का पालन करो जो मैं तुम्हें देता हूँ, और ताकि तुम लंबी उम्र पाओ।" परमेश्वर ने ये आज्ञाएँ, नियम और कानून इसलिए दिए ताकि इस्राएली जीवन भर उससे डरें। इसलिए, बाइबल क्या कहती है कि अगर इस्राएली—अपने बच्चों और वंशजों के साथ—इन आज्ञाओं, नियमों और कानूनों को सुनें और ध्यान से उनका पालन करें, तो क्या होगा? व्यवस्थाविवरण 6:3 को देखिए: "हे इस्राएल, सुन और पालन करने में सावधान रह—ताकि तेरा भला हो और तू उस दूध और शहद की धारा बहने वाली भूमि में बहुत बढ़े, जैसा कि प्रभु, तेरे पूर्वजों के परमेश्वर ने तुझसे वादा किया था।" मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर की ओर से मिलने वाला यह समृद्धि का आशीर्वाद हम सभी के जीवन में भरपूर हो जो उससे डरते हैं, क्योंकि हम उसकी महिमा करते हैं और उस पर ज़्यादा से ज़्यादा भरोसा करते हैं।

“जब तक मैं जीवित हूँ, प्रार्थना करता रहूँगा।”

[भजन संहिता 116]

आज, अपनी सबसे छोटी बेटी ये-उन के साथ बुधवार की प्रार्थना सभा में जाते समय, उसने अचानक कहा, “डैडी, मैं बड़ी होना चाहती हूँ।” जब मैंने उससे पूछा कि वह इतनी जल्दी बड़ी क्यों होना चाहती है, तो पाँच साल की बच्ची ने जवाब दिया, “क्योंकि मैं एक प्यारा बच्चा चाहती हूँ।” हाहा। तो, मैंने उससे कहा कि जब वह बड़ी हो जाए, तो उसे एक ऐसे ईसाई पुरुष से शादी करनी चाहिए जो यीशु से प्यार करता हो और बच्चा पैदा करे, और मैंने उसे ऐसे पुरुष के लिए भगवान से प्रार्थना शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया। फिर मैंने उसे बताया कि मैंने भी प्रार्थना की थी, और भगवान ने उसकी माँ को मेरे जीवन में भेजा ताकि हम शादी कर सकें। मैंने यह भी बताया कि हमने चार बच्चों के लिए प्रार्थना की थी, और भगवान ने मम्मी और डैडी की प्रार्थनाओं का जवाब दिया। ये-उन ने जवाब में कुछ नहीं कहा। जब मैंने पूछा कि क्या वह मेरी बात सुन रही है, तो उसने मुझे बताया कि उसने अभी-अभी प्रार्थना की है। मैंने पूछा कि उसने किस चीज़ के लिए प्रार्थना की, और उसने कहा कि उसने बॉयफ्रेंड के लिए प्रार्थना की। जब मैंने पूछा कि क्या उसने ऐसे बॉयफ्रेंड के लिए प्रार्थना की जो यीशु से प्यार करता हो, तो उसने माना कि उसने “यीशु से प्यार करने” वाली बात छोड़ दी थी। हाहा। इस और अन्य बातचीत के ज़रिए, मैं ये-उन को भगवान से प्रार्थना करने के बारे में सिखाना चाहता था। दूसरे शब्दों में, मैं उसे प्रार्थना की ज़रूरत के बारे में सिखाना चाहता था। मैं उसे यह सच्चाई भी सिखाना चाहता था कि भगवान हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देते हैं। हाल ही में हुए अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव और मेरे गृह राज्य कैलिफ़ोर्निया में मतपत्र उपायों—खासकर प्रस्ताव 8 और 4—को देखते हुए, मुझे इस देश और इसके लोगों के लिए प्रार्थना करने की ज़रूरत और ज़्यादा महसूस हुई। हालाँकि प्रस्ताव 8, जो पारंपरिक विवाह का समर्थन करता है (और समलैंगिक विवाह का विरोध करता है), पारित हो गया था, लेकिन वकीलों

और नागरिक अधिकार समूहों द्वारा दायर तत्काल कानूनी चुनौतियों से पता चलता है कि स्थिति के और अधिक विवादास्पद होने की संभावना है; यह मुझे हमारे परिवारों के लिए और भी ज़्यादा लगन से प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करता है। इसके अलावा, मेरा मानना है कि चर्च को अपनी सच्ची बुलाहट पर खरा न उतरने के लिए पश्चाताप करना चाहिए, जिससे गैर-विश्वासियों के बीच समलैंगिक-विरोधी, निर्णय लेने वाले और पाखंडी होने की छवि बनी है। हमें इस बात के लिए भी पश्चाताप करने की ज़रूरत है कि चर्च सच्ची ईसाई गवाही को अपनाने में विफल रहा है, और इसके बजाय ईसाई धर्म क्या *नहीं* है, इसके लिए ज़्यादा जाना जाने लगा है। मैं सभी के लिए, खासकर इस देश के नेताओं के लिए प्रार्थना करने की अहमियत को भी समझता हूँ (1 तीमुथियुस 2:1–2)। फिर भी, जब मैं अपने दिल की जाँच करता हूँ, तो मुझे मानना पड़ता है कि इन सबके बावजूद, मुझे प्रार्थना की उतनी ज़रूरत महसूस नहीं होती जितनी होनी चाहिए। मुझे ऑनलाइन एक लेख मिला जिसमें 16वीं सदी के सुधारक जॉन कैल्विन के विचारों का सारांश था—जो बाइबिल, यानी परमेश्वर के वचन पर आधारित हैं। हालाँकि प्रार्थना के अनगिनत कारण हैं, लेकिन लेख में उन्हें छह मुख्य बिंदुओं में समेटा गया है: "पहला, हम प्रार्थना इसलिए करते हैं ताकि परमेश्वर को लगातार खोजने, उनसे प्रेम करने और उनकी सेवा करने की इच्छा और जोश हमारे दिलों में जलता रहे। दूसरा, ताकि शर्मनाक इच्छाओं या ख्यालों को हमारे दिलों में आने से रोका जा सके—ऐसी बातें जिन्हें परमेश्वर के सामने बताने में हमें शर्म आएगी। तीसरा, यह पक्का करने के लिए कि जब परमेश्वर हम पर तरह-तरह की कृपाएँ करते हैं, तो हम उन्हें सच्चे धन्यवाद के साथ स्वीकार करें। चौथा, ताकि हम परमेश्वर की प्रेमपूर्ण दया पर और भी गंभीरता से मनन कर सकें, इस भरोसे के साथ कि उन्होंने हमारी प्रार्थनाओं का जवाब दिया है। पाँचवाँ, ताकि हम प्रार्थना के ज़रिए मिलने वाली चीज़ों को और भी ज़्यादा खुशी के साथ स्वीकार कर सकें। आखिर में, अपनी कमज़ोरी के बावजूद, आदत और अनुभव के ज़रिए उनकी देखभाल और मार्गदर्शन (प्रोविडेंस) की पुष्टि करना।" इन छह बिंदुओं में से, चौथा बिंदु मुझे खास तौर पर पसंद आया। मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ कि हमें प्रार्थना करने की ज़रूरत है ताकि, हमारी प्रार्थनाओं के जवाब के ज़रिए, हम परमेश्वर की प्रेमपूर्ण दया पर और भी गंभीरता से मनन कर सकें। प्रार्थना के दौरान, परमेश्वर मुझे यह भरोसा दिलाते हैं कि उन्होंने मेरी अर्जियों का जवाब पहले ही दे दिया है, और इस तरह वह मुझे ऐसी कृपा देते हैं जिससे मैं उनके प्रेम और दया में और गहराई से जा सकूँ। इस प्रकार, परमेश्वर मुझे प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करते हैं।

आज भजन संहिता 116:2 से बाइबिल पाठ में, भजनकार यह संकल्प लेता है, "जब तक मैं जीवित हूँ, मैं उसे पुकारता रहूँगा।" उसने यह संकल्प क्यों लिया? इसलिए क्योंकि परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी थी। भजन संहिता 116 की आयत 1 और 2 को देखें, जो आज का हमारा पाठ है: "प्रभु ने मेरी आवाज़ और मेरी विनतियों को सुना है..." (आयत 1), और "क्योंकि उसने मेरी ओर कान लगाया है, इसलिए जब तक मैं जीवित हूँ, मैं उसे पुकारता रहूँगा" (आयत 2)। परमेश्वर, जो हमारी प्रार्थनाएँ सुनते हैं और जब हम मुसीबत में पुकारते हैं तो हमारी विनती पर ध्यान देते हैं, उन्होंने भजनकार की प्रार्थना सुनी और उसका जवाब दिया, जब वह "बड़ी मुसीबत" (पद 10) और "संकट और दुख" (पद 3) का सामना कर रहा था। दूसरे शब्दों में, जब भजनकार ने पुकारा, "मेरी जान बचाओ!" (पद 3-4), जबकि वह "मौत के फंदे" और "पाताल की पीड़ा" में फँसा हुआ था, तो परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी और उसे बचाया (पद 6)। परमेश्वर ने न केवल उसे बचाया बल्कि उसकी आत्मा को शांति भी दी (पद 7)। इसके अलावा, परमेश्वर ने उसके साथ दया का व्यवहार किया (पद 7) और उस पर भरपूर कृपा की (पद 12)। इस प्रकार, भजनकार ने पूछा, "मेरे प्रति परमेश्वर की सभी भलाइयों के बदले मैं उन्हें क्या दूँ?" (पद 12)।

क्या हम सचमुच उस सारी कृपा को पहचानते और समझते हैं जो परमेश्वर हम पर करते हैं? क्या हम सचमुच परमेश्वर द्वारा दी गई उस कृपा का आनंद ले रहे हैं—वह कृपा जो "हमारी माँग या सोच से कहीं ज़्यादा करने में सक्षम है"? (इफिसियों 3:20)। यदि हाँ, तो हमें—भजनकार की तरह—यह संकल्प लेना चाहिए, "जब तक मैं जीवित हूँ, मैं उन्हें पुकारता रहूँगा," और उस संकल्प को अमल में लाना चाहिए। हमें ऐसा संकल्प क्यों लेना चाहिए? इसलिए क्योंकि, प्रार्थनाओं का उत्तर मिलने के माध्यम से, हम परमेश्वर को जान पाते हैं कि वे वास्तव में कौन हैं। दूसरे शब्दों में, जैसे भजनकार ने प्रार्थनाओं के उत्तर के माध्यम से जाना कि परमेश्वर दयालु, धर्मी और करुणामयी हैं (पद 5), वैसे ही हमें भी जीवन भर परमेश्वर से प्रार्थना करने का संकल्प लेना चाहिए। इसलिए, हमें उन मुसीबतों, कष्टों और दुखों की आवश्यकता है जो हमें प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो, ऐसी परीक्षाओं के बीच, हमें कुछ हद तक "सरल" या "नासमझ" लोगों (पद 6) जैसा बनना चाहिए। यहाँ, "सरल" का अर्थ है वे लोग जो "खुले" हैं—जो अपनी बुद्धि पर भरोसा करने के बजाय परमेश्वर को खुद को सौंपने के लिए अपना दिल खोलते हैं (पार्क युन-सन)। जो लोग मुसीबत और दुख के समय अपनी बुद्धि पर भरोसा करते हैं, वे अनिवार्य रूप से दूसरे लोगों से मदद माँगेंगे। लेकिन, जो लोग अपना दिल खोलते हैं और परमेश्वर पर भरोसा करते हैं—यह मानते हुए कि "सभी इंसान झूठे हैं"—वे पूरी

तरह से दयालु, कृपालु, सच्चे और धर्मी परमेश्वर पर निर्भर रहेंगे और उन्हें पुकारेंगे (पद 11)। हमें मुसीबतों, कष्टों और दुखों को खुद को विनम्र बनाने देना चाहिए (पद 6)। भजनकार कहता है कि परमेश्वर ने उसे तब बचाया "जब मैं बहुत नीचे गिर गया था" (पद 6)। सच तो यह है कि जीवन की मुश्किलों, कठिनाइयों, कष्टों और दुखों के ज़रिए हमें परमेश्वर के सामने विनम्र होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, ऐसी मुश्किल और दर्दनाक परिस्थितियों में, हमें परमेश्वर के सामने खुद को विनम्र करना चाहिए, झुकना चाहिए और उन्हें पुकारना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हम पर क्या कृपा करते हैं? पद 8 देखिए: "क्योंकि तूने मेरी जान को मौत से, मेरी आँखों को आँसुओं से और मेरे पैरों को ठोकर खाने से बचाया है।" परमेश्वर से प्रार्थना का जवाब मिलने और उद्धार की कृपा का अनुभव करने के बाद भजनकार ने क्या किया? दूसरे शब्दों में, जो परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देते हैं और हमें उद्धार देते हैं, उनकी कृपा का बदला हम कैसे और किस चीज़ से चुकाएँ? (पद 12)

सबसे पहले, हमें परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए। और हमें उस प्रेम को स्वीकार करना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे भजनकार ने किया था।

भजन संहिता 116:1 देखिए: "मैं प्रभु से प्रेम करता हूँ, क्योंकि उन्होंने मेरी आवाज़ और मेरी विनतियों को सुना है।" जो परमेश्वर हमारी विनतियों को सुनते हैं और हम पर उद्धार की कृपा करते हैं, उनके सामने हमें सच्चे दिल से कहना चाहिए, "हे परमेश्वर, मैं आपसे प्रेम करता हूँ।" भजनकार कहता है, "हे प्रभु, मैं आपसे प्रेम करता हूँ; कारण यह है कि आपने मेरी आवाज़ और मेरी विनतियों को सुना है" (पद 1)। प्रेम को स्वीकार करना सबसे पहले आता है। हमने पहले भी भजन संहिता 18:1 में भजनकार के ऐसे ही एक कथन पर मनन किया है: "हे प्रभु, मेरी शक्ति, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ।" जो परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देते हैं और हमें बचाते हैं, उनके सामने हमें यह कहने में सक्षम होना चाहिए, "हे प्रभु, मैं आपसे प्रेम करता हूँ।"

दूसरी बात, हमें हमेशा परमेश्वर के सामने ईमानदारी और सच्चाई से चलने की कोशिश करनी चाहिए।

भजन संहिता 116:9 देखिए: "मैं जीवितों के देश में प्रभु के सामने चलूँगा।" भजनकार ने परमेश्वर द्वारा अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर दिए जाने के बाद, अपनी बाकी ज़िंदगी प्रभु के सामने बिताने का संकल्प लिया। क्योंकि परमेश्वर ने उसे मौत के मुँह से बचाया था, इसलिए उसने अपनी इस दूसरी ज़िंदगी को—जो परमेश्वर ने दी

थी—उसी को समर्पित करने और पूरी तरह से उसके सामने चलने का फ़ैसला किया (पार्क युन-सन)। बाइबल कहती है कि जो परमेश्वर से प्रेम करता है, वही उसकी आज्ञाओं को मानता और उन पर चलता है (यूहन्ना 14:21)। अगर हमने सच में परमेश्वर से कहा है, "मैं आपसे प्रेम करता हूँ," तो हमें उसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। इसलिए, हमें प्रभु के सामने ईमानदारी और सच्चाई से भरी ज़िंदगी जीनी चाहिए।

तीसरी बात, हमें धन्यवाद भरे दिल से परमेश्वर की स्तुति और आराधना करनी चाहिए।

भजन संहिता 116:13 और 17 देखिए: "मैं उद्धार का प्याला उठाऊँगा और प्रभु का नाम पुकारूँगा" (पद 13); "मैं तुझे धन्यवाद का बलिदान चढ़ाऊँगा और प्रभु का नाम पुकारूँगा" (पद 17)। परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए उद्धार के अनुग्रह का सही जवाब यही है कि हम धन्यवाद के साथ उसकी स्तुति और आराधना करें। जो लोग परमेश्वर का अनुग्रह तो पाते हैं लेकिन जिनमें सच्चा धन्यवाद का भाव नहीं होता, उन्हें भविष्य में और अनुग्रह नहीं मिलेगा (पार्क युन-सन)। और अनुग्रह पाने के लिए, हमें धन्यवाद भरे दिल से परमेश्वर की स्तुति और आराधना करनी चाहिए। हमारे पास हर हाल में धन्यवाद देने का कारण है, खासकर तब जब हम उस उद्धार (अनंत जीवन) के अनुग्रह पर विचार करते हैं जो परमेश्वर ने हमें यीशु मसीह के ज़रिए दिया है। इसलिए, हमें धन्यवाद भरे दिल से स्तुति और आराधना करके परमेश्वर के बचाने वाले अनुग्रह का बदला चुकाना चाहिए। चौथी और आखिरी बात, हमें परमेश्वर से किए गए अपने वादों को पूरा करना चाहिए।

भजन संहिता 116:14 और 18–19 देखिए: "मैं प्रभु के सामने उसके सभी लोगों के बीच अपनी मन्नतें पूरी करूँगा" (पद 14); "मैं प्रभु के सभी लोगों के सामने—प्रभु के घर के आँगन में, हे यरूशलेम, तुम्हारे बीच—प्रभु से की गई अपनी मन्नतें पूरी करूँगा। हालेलुयाह" (पद 18–19)। जब भजनकार ने अपनी मन्नत पूरी करने का संकल्प लिया, तो उसे याद आया कि कैसे उसे मौत के मुँह से बचाया गया था (पद 15) (पार्क युन-सन)। पद 15 को देखें: "प्रभु की नज़र में अपने संतों की मृत्यु बहुत कीमती है।" इसका मतलब है कि परमेश्वर किसी संत की मृत्यु को बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं और इसे किसी खास, कीमती मकसद के बिना होने नहीं देते (पार्क युन-सन)। सच तो यह है कि हमारे परमेश्वर हम सभी के जीवन और मृत्यु से जुड़े मामलों को बहुत महत्व देते हैं। इसलिए, जब हम जीवन और मृत्यु के दोराहे पर खड़े हों, तब भी हमें उस परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए जो जीवन, मृत्यु, सौभाग्य और दुर्भाग्य को पूरी तरह नियंत्रित करते हैं, और उद्धार के लिए हमें

सच्चे मन से उनकी ओर देखना चाहिए। जब परमेश्वर हमारी मन्नतों वाली प्रार्थनाएँ सुनते हैं और हमें मुसीबत और दुख से बचाते हैं, तो हमें उनसे किया गया वादा पूरा करना चाहिए।

हमारे परमेश्वर ही हमारी विनती की आवाज़ सुनते हैं। वे ऐसे परमेश्वर हैं जो हमारी बात ध्यान से सुनते हैं और जब हम दुख, मुसीबत और गम के बीच नम्रता से खुद को झुकाकर उनसे उद्धार के लिए प्रार्थना करते हैं, तो वे हमें बचाते हैं। इसके अलावा, वे हमें शांति देते हैं और हम पर भरपूर कृपा बरसाते हैं। नतीजतन, हम परमेश्वर से और भी ज़्यादा प्रेम करने लगते हैं। हम उनके सामने पूरी तरह से जीकर उस प्रेम को ज़ाहिर करते हैं। साथ ही, जब हम परमेश्वर की स्तुति और आराधना करते हैं, तो हम उनसे की गई मन्नतें पूरी करते हैं। मेरी प्रार्थना है कि आप और मैं ऐसे लोग बनें जो जीवन भर परमेश्वर से प्रार्थना करते रहें।

"मैं जीवन भर प्रार्थना करता रहूँगा"

[भजन संहिता 116:1-12]

परमेश्वर की कृपा और आपके प्यार भरे सहयोग से, मैंने पिछले दो महीने छुट्टी (सबैटिकल) पर बिताए। लगभग पाँच हफ़्तों तक, मैं कोरिया गया—कुछ हद तक अपने 'साइवर्ल्ड' (Cyworld) होमपेज के ज़रिए चलाए जा रहे ऑनलाइन सेवा-कार्य के सिलसिले में—और वहाँ कई अनमोल मुलाक़ातें हुईं जिन्हें परमेश्वर ने ही रचा और होने दिया। इन मुलाक़ातों के ज़रिए, परमेश्वर ने मुझे न केवल उनकी आँखों से बहते आँसू देखने दिए, बल्कि उनके दिलों में छिपे आँसू भी दिखाए। उनके दिलों में दर्द, ज़ख्म, तड़प और तकलीफ़ें थीं। परमेश्वर की इच्छा को पूरी तरह न समझ पाने के बावजूद, वे अपने दर्द और तकलीफ़ों के बीच भी एक धुंधले से विश्वास के सहारे आगे बढ़ रहे थे। दुनिया की मार झेलते हुए और निराशा व हताशा का सामना करते हुए, वे उस प्रभु की ओर देखते हुए दिन-ब-दिन जी रहे थे जो हमारी उम्मीद है। मैं ऐसे लोगों से मिला जो बीमारी या पुराने ज़ख्मों से जूझ रहे थे, और साथ ही ऐसे लोगों से भी जो मौजूदा मुश्किलों—जैसे शादी-शुदा ज़िंदगी में झगड़े और अनबन, बच्चों की परवरिश में दिक्कतें और काम-काज की चुनौतियों—का सामना कर रहे थे। मैंने ऐसे नौजवानों को भी देखा जो अपने अनिश्चित भविष्य को लेकर परेशान थे। और क्या बस इतना ही? हम सभी शायद अनगिनत ऐसी मुश्किलों का बोझ उठाए हुए हैं जिन्हें शब्दों में पूरी तरह बयां नहीं किया जा सकता। परमेश्वर ने मुझे इन लोगों से क्यों मिलवाया? मुझे लगा कि शायद वह मुझे अपना दिल—परमेश्वर पिता का दिल—सिखाना चाहते थे। हालाँकि मैंने जिन लोगों से मुलाक़ात की, उनमें से कुछ के साथ यह बात साझा की, लेकिन मेरा मानना है कि परमेश्वर ने मुझे रोने वालों से मिलवाया ताकि मैं वह देख सकूँ जो पिता देखते हैं और वह सुन सकूँ जो पिता सुनते हैं। परमेश्वर की कृपा से कोरिया में यह सेवा-कार्य करने और अमेरिका लौटने के बाद, मैं बाइबल पढ़ रहा था—खासकर लूका 6:21 का बाद वाला

हिस्सा—और मुझे रोने वालों के लिए उम्मीद का एक संदेश मिला। उम्मीद का वह संदेश ठीक यही है: "धन्य हैं वे जो अभी रोते हैं।" जो रोते हैं वे धन्य क्यों हैं? इसलिए क्योंकि जो रोते हैं वे हँसेंगे (पद 21)। इसलिए क्योंकि परमेश्वर रोने वालों को दिलासा देंगे (पद 24) और उन्हें बड़ा इनाम देंगे (पद 23)।

परमेश्वर की दी हुई कृपा का आनंद लेते हुए कोरिया में लगभग पाँच हफ़्ते बिताने के बाद, मैं अमेरिका लौटा और उसके कुछ ही समय बाद, एक हफ़्ते के लिए अपने ससुर के घर पर रहा। चूंकि मैं और कुछ खास नहीं कर सकती थी, इसलिए जब मेरे ससुर शारीरिक बीमारी से जूझ रहे थे, तो मैं बस उनके पास ही रही; मैंने परमेश्वर की स्तुति की, उन्हें बाइबल पढ़कर सुनाई और प्रार्थना की। इसी दौरान—खासकर जब मैं 'चूसोक' (Chuseok) की छुट्टियों में अपने ससुराल वालों को फ़ैमिली डॉक्टर के पास ले गई थी—तब पता चला कि मेरे ससुर को फेफड़ों का कैंसर है। इसी बीच, हमारे चर्च के एक डीकन (deacon) कैंसर की सर्जरी के बाद अस्पताल में भर्ती हैं। एक और डीकन की छोटी बहन भी कैंसर की सर्जरी के बाद अस्पताल में हैं, और हमारे चर्च के एसोसिएट पास्टर की माँ की भी कैंसर की सर्जरी हुई है। दोस्तों, जब हम ऐसी बीमारी और दर्द से जूझ रहे लोगों के बारे में सोचते हैं, तो हमें क्या करना चाहिए? जब हम अपने इन अपनों के बारे में सोचते हैं, तो हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए?

मुझे इसका जवाब भजन संहिता 116:2 में मिला: "जब तक मैं जीवित हूँ, मैं उससे प्रार्थना करता रहूँगा।" आज के वचन में भजनकार परमेश्वर से यह संकल्प करता है: "हे परमेश्वर, जब तक मैं जीवित हूँ, मैं प्रार्थना करता रहूँगा।" संक्षेप में, उसने खुद को प्रार्थना के लिए समर्पित कर दिया। उसने जीवन भर प्रार्थना करने का संकल्प क्यों लिया? इसलिए क्योंकि परमेश्वर ने उसकी प्रार्थनाएँ सुनी थीं (पद 1-2)। क्या आप सच में विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ही आपकी प्रार्थनाएँ सुनता है? क्या आप सच में विश्वास करते हैं कि जब आप दुख में उसे पुकारते हैं, तो वह आपकी विनतियों पर कान लगाता है? कोरिया में रहते हुए, मैं एक जोड़े से मिली—पति जो एक एल्डर (elder) थे और पत्नी जो एक सीनियर डीकनेस (deaconess) थीं—जो बहुत निष्ठा और समर्पण के साथ चर्च की सेवा करते थे। उनके बेटे से मुझे पता चला कि एल्डर को दोबारा कैंसर हो गया था और डीकनेस ब्रेन ट्यूमर की सर्जरी के बाद मुश्किल दौर से गुज़र रही थीं, इसलिए मैं उनसे मिलने गई। अपनी पहली मुलाक़ात के दौरान, मैंने डीकनेस की आँखों में आँसू देखे। मैंने उनकी ओर से परमेश्वर से प्रार्थना की, और प्रार्थना करते समय वे बार-बार "आमीन, आमीन" कह रही थीं। मैंने उनसे वादा

किया था कि अमेरिका लौटने से पहले मैं उनसे दोबारा मिलूँगी, इसलिए उस शनिवार मैं उनके घर गई। वे दोनों वहाँ मौजूद थे, और थोड़ी बातचीत के बाद, मैंने सुझाव दिया कि हम सब मिलकर "हमारे भले परमेश्वर" की स्तुति करें। फिर, जब मैं प्रार्थना करने के लिए खड़ा हुआ, तो एल्डर ने मेरा पैर पकड़ा और कहा कि हम बैठकर प्रार्थना करें। इसलिए, हम तीनों ने एक घेरे में बैठकर, एक-दूसरे का हाथ पकड़कर परमेश्वर से प्रार्थना की। उस समय भी, डिकनेस ने पूरे जोश के साथ कहा, "आमीन, आमीन।" दोस्तों, आज के वचन में भजनकार का विश्वास था। उसे विश्वास था कि परमेश्वर ही प्रार्थना का उत्तर देने वाले हैं। इसलिए, जब वह "मुसीबत और दुख" (वचन 3) में पड़ा और "भारी संकट" (वचन 10) का सामना किया, तो उसने परमेश्वर को पुकारा। जिन मुसीबतों, दुखों और भारी संकटों का उसने सामना किया, वे इतने गंभीर थे कि वह जीवन और मृत्यु के दोराहे पर खड़ा था। इसीलिए उसने "मृत्यु के बंधनों" और "कब्र की पीड़ा" (वचन 3) की बात कही। ऐसे हालात में, उसने परमेश्वर को पुकारा। दूसरे शब्दों में, भजनकार ने परमेश्वर को तब पुकारा जब वह जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहा था।

अगर आप और मैं जीवन और मृत्यु के उसी दोराहे पर खड़े होते, तो आपको क्या लगता है कि परमेश्वर से हमारी प्रार्थनाएँ कैसी होतीं? आप क्या सोचते हैं कि हम उनसे कैसी सच्ची प्रार्थनाएँ करते? भजनकार ने परमेश्वर से इस तरह प्रार्थना की: "तब मैंने प्रभु का नाम पुकारा: 'हे प्रभु, मुझे बचा ले!'" (वचन 4)। उसने परमेश्वर से पुकार लगाई, "मुझे बचा ले!" (वचन 4)। जब उसने ऐसा किया, तो परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी और न केवल उसे बचाया (वचन 6) बल्कि उसकी आत्मा को शांति भी दी (वचन 7)। मुख्य बात यह है: जीवन और मृत्यु के दोराहे का सामना करते समय भी, जो ईसाई प्रार्थना में परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, उन्हें उद्धार का भरोसा और आत्मा की शांति मिलती है जो परमेश्वर देता है। इसीलिए वे भजन 470 गा सकते हैं: (वचन 1) "जब शांति नदी की तरह मेरे रास्ते में आती है, जब दुख समुद्र की लहरों की तरह उमड़ते हैं; चाहे मेरी किस्मत में कुछ भी हो, तूने मुझे कहना सिखाया है, 'सब ठीक है, मेरी आत्मा के लिए सब ठीक है।' (कोरस) मेरी आत्मा के लिए सब ठीक है, सब ठीक है, मेरी आत्मा के लिए सब ठीक है।" इसके अलावा, परमेश्वर ने भजनकार के साथ उदारता से व्यवहार किया (वचन 7) और उस पर भरपूर अनुग्रह किया (वचन 12)। इस भरपूर कृपा का अनुभव करने के बाद, भजनकार पूछता है: "प्रभु ने मेरे साथ जो भलाई की है, उसका बदला मैं कैसे चुकाऊं?" (पद 12)। क्या हम सचमुच उस सारी कृपा को समझते और महसूस करते हैं जो परमेश्वर ने हम पर की है? क्या हम उस कृपा की गहराई को समझते हैं—उस परमेश्वर की कृपा जो हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है और हमें "उससे कहीं ज़्यादा देता है जितना हम मांगते या सोचते हैं" (इफिसियों 3:20)?

अगर हमें इस भरपूर कृपा की थोड़ी सी भी समझ है, तो हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए? भजनकार की तरह, हमें "जीवन भर प्रार्थना करने" का संकल्प लेना चाहिए और उस संकल्प को पूरा करना चाहिए। जिन्होंने प्रार्थना के असली स्वरूप को चखा है, वे निश्चित रूप से खुद को इसके लिए समर्पित करेंगे और भजनकार की तरह ही जीवन भर प्रार्थना करने का पक्का इरादा करेंगे।

मेरा मानना है कि जिन मुश्किलों, तकलीफों और दुखों का हम सामना करते हैं, वे ज़रूरी हैं, क्योंकि वे हमें प्रार्थना की ओर ले जाती हैं। और साफ़ तौर पर कहें तो, जैसा कि आज के पाठ का पद 6 बताता है, हमें ऐसी मुश्किलों के बीच "मूर्ख" बनना होगा। यहाँ, "मूर्ख" होने का मतलब है "खुले दिल का होना"—यानी अपनी बुद्धि पर भरोसा करने के बजाय परमेश्वर पर भरोसा करने के लिए अपना दिल खोलना (पार्क युन-सन)। हमें अपना दिल खोलने और मुश्किल हालात में भी सब कुछ परमेश्वर को सौंपने के अनुशासन की ज़रूरत है। मैं ऐसा इसलिए मानता हूँ क्योंकि इंसानी फितरत हमें शायद ही कभी परमेश्वर पर भरोसा करने या प्रार्थना के ज़रिए सब कुछ उन्हें सौंपने के लिए प्रेरित करती है। मुश्किलों, तकलीफों और दुखों का सामना करते समय हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति अपनी बुद्धि पर भरोसा करने और दूसरों से मदद मांगने की होती है। हालाँकि, जो लोग ऐसे समय में अपना दिल खोलते हैं और परमेश्वर पर भरोसा करते हैं—यह मानते हुए कि "सभी इंसान झूठे हैं" (पद 11)—वे पूरी तरह से दयालु, कृपालु, सच्चे और धर्मी परमेश्वर पर निर्भर रहते हैं और उनसे विनती करते हैं (पद 5)। हमें भी मुश्किलों, तकलीफों और दुखों के ज़रिए विनम्र बनना चाहिए (पद 6)। इन परीक्षाओं के ज़रिए, हमें न केवल अपना दिल खोलने और सब कुछ परमेश्वर को सौंपने के लिए बुलाया जाता है, बल्कि उनके सामने विनम्र बनने के लिए भी कहा जाता है। भजनकार कहता है कि परमेश्वर ने उसे तब बचाया "जब मैं बहुत नीचे गिर गया था" (पद 6)। सचमुच, हमें अपने जीवन की मुश्किलों, परेशानियों, तकलीफ़ों और दुखों के बीच परमेश्वर के सामने विनम्र होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, ऐसे मुश्किल और दर्दनाक हालात में हमें विनम्र होकर, झुककर सच्चे दिल से परमेश्वर को खोजना चाहिए। जब भजनकार ने ऐसा किया, तो परमेश्वर ने उस पर क्या कृपा की? आयत 8 देखिए: "क्योंकि तूने मेरी जान को मौत से, मेरी आँखों को आँसुओं से और मेरे पैरों को ठोकर खाने से बचाया है।" उसने उद्धार की कृपा का अनुभव किया; जब भजनकार ने अपनी मुश्किलों और तकलीफ़ों के बीच विनम्रता से झुककर परमेश्वर से विनती की, तो परमेश्वर ने उसे मौत, आँसुओं और ठोकर खाने से बचाया। क्या आप भी उद्धार की इस कृपा का अनुभव नहीं करना चाहते?

हमें परमेश्वर की स्तुति क्यों करनी चाहिए

[भजन संहिता 117]

आज सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, मैंने 2 पतरस 2:8 पर मनन किया: "क्योंकि वह धर्मी मनुष्य, जो उनके बीच रहता था, उनके अधर्मी कामों को देखकर और सुनकर दिन-ब-दिन अपनी धर्मी आत्मा को तड़पाता था।" सदोम और अमोरा जैसी दुनिया में रहते हुए, मैंने सोचा कि कैसे—लूत की तरह ही—हमारी अपनी धर्मी आत्माएँ भी इस पापी दुनिया के अश्लील और अधर्मी कामों से परेशान होती हैं (पद 7)। तो फिर, जब हमारी धर्मी आत्माएँ इस तरह परेशान हों, तो हमें क्या करना चाहिए? (1) हमें उद्धार के भरोसे को मज़बूती से थामे रखना चाहिए (पद 9)। हमें पूरे भरोसे के साथ आगे देखना चाहिए, यह जानते हुए कि परमेश्वर धर्मियों को बचाएगा और दुष्टों का नाश करेगा। (2) हमें अटूट विश्वास में मज़बूती से खड़े रहना चाहिए (3:17)। बाइबल हमें बताती है कि झूठे शिक्षक (2:1) "अस्थिर आत्माओं को बहकाते हैं" (पद 14) और "शरीर की वासनाओं—अश्लीलता—के ज़रिए उन्हें बहकाते हैं जो असल में गलत रास्ते पर चलने वालों से बच निकले थे" (पद 18)। इसलिए, हमें मज़बूती से खड़े रहना चाहिए ताकि हम परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने के रास्ते पर न भटक जाएँ। (3) जब हमारी धर्मी आत्माएँ इस दुनिया में देखी, सुनी और महसूस की गई पापी चीज़ों के कारण परेशान और दुखी होती हैं, तो हमें क्रूस पर यीशु के दुख और पीड़ा पर मनन करना चाहिए। ऐसा करने पर, हमारा अपना दर्द कम हो जाएगा, और हम महसूस करेंगे कि प्रभु हमारी घायल आत्माओं पर मरहम लगा रहे हैं और उन्हें चंगा कर रहे हैं। यह संदेश देने के बाद, उसी सुबह मैंने एक कोरियाई युवक के बारे में एक समाचार लेख पढ़ा, जिसने अपने एक दोस्त को कई बार गोली मारकर मार डाला, उसकी लाश को हाईवे 110—जो L.A. डॉजर्स स्टेडियम का रास्ता है—के पास फेंक दिया, और आखिरकार जुआ खेलते हुए पकड़ा गया। यह सोचकर कि एक साधारण-सा दिखने वाला कोरियाई युवक ऐसा काम कैसे कर सकता है, मुझे आज सुबह की प्रार्थना सभा का संदेश याद आ गया। हम सचमुच एक पापी दुनिया में रहते

हैं—एक ऐसी दुनिया जो अधर्म से भरी हुई है। तो फिर, जब हम ऐसे पापी कामों को देखते हैं, उनके बारे में सुनते हैं या उनका सामना करते हैं, तो हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए? व्यक्तिगत रूप से, मैं अक्सर खुद को याद दिलाता हूँ, "यह दुनिया मेरा घर नहीं है; मैं उस ऊँचे स्थान की ओर यात्रा कर रहा हूँ।" इस बीच, मैं प्रभु की उस प्रतिज्ञा वाली वापसी का बेसब्री से इंतज़ार करता हूँ—वह पल जब वे हमें उस निवास स्थान पर ले जाने आएँगे जिसे उन्होंने तैयार किया है। 2 पतरस 3:12-13 में, प्रेरित पतरस लिखते हैं: "परमेश्वर के उस दिन की प्रतीक्षा करते हुए और उसे जल्दी लाने की कोशिश करते हुए, जिसके कारण आकाश जलकर नष्ट हो जाएँगे और तत्व अत्यधिक गर्मी से पिघल जाएँगे; फिर भी हम, उनकी प्रतिज्ञा के अनुसार, नए आकाश और नई पृथ्वी की प्रतीक्षा करते हैं जिसमें धार्मिकता का वास है।" नए आकाश और नई पृथ्वी की प्रतीक्षा करने वालों के रूप में, हम अपनी अंतिम साँस तक स्तुति करने के लिए प्रेरित हैं, और परमेश्वर की बचाने वाली कृपा के लिए आभारी हैं। इसके अलावा, प्रभु यीशु मसीह की दूसरी वापसी—जिन्होंने हमारे उद्धार को पूरा किया है और उसे पूर्णता तक पहुँचाएँगे—के लिए प्रार्थना करने, उसकी आशा करने और प्रतीक्षा करने वालों के रूप में, हमें परमेश्वर की स्तुति और आराधना करनी चाहिए। भजन संहिता 117:1 में, भजनकार घोषणा करता है: "हे सब जातियों, यहोवा की स्तुति करो; हे सब लोगों, उसकी प्रशंसा करो।" भजनकार परमेश्वर के सभी लोगों से उसकी स्तुति करने का आग्रह क्यों करता है? वह पद 2 में इसका कारण बताता है: "क्योंकि हमारे प्रति उसका प्रेम महान है, और यहोवा की सच्चाई सदा बनी रहती है। हालेलुयाह।" इससे हम दो कारण जान सकते हैं कि हमें परमेश्वर की स्तुति क्यों करनी चाहिए।

पहला कारण हमारे प्रति परमेश्वर की महान प्रेम-दया है।

हम अक्सर नवंबर को धन्यवाद देने के मौसम के रूप में देखते हैं, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि इसी महीने में 'थैंक्सगिविंग डे' (धन्यवाद दिवस) आता है। हालाँकि, जब हम हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम पर विचार करते हैं, तो हमें एहसास होता है कि हर महीना—बल्कि, हर दिन और हर पल—परमेश्वर की संतान के रूप में हमारे लिए धन्यवाद का समय होना चाहिए। बेशक, भले ही हम बाइबिल की यह शिक्षा जानते हैं कि हमें हर परिस्थिति में धन्यवाद देना चाहिए, फिर भी कई बार हम कठिनाई और मुश्किलों के समय ऐसा करने में विफल रहते हैं। इसका कारण यह है कि हम परमेश्वर के महान प्रेम का अनुभव करने में विफल रहते हैं।

दूसरे शब्दों में, जब हम मुश्किल स्थितियों का सामना करते हैं, तो हम संघर्ष के बीच परमेश्वर के अपार प्रेम को महसूस नहीं कर पाते; नतीजतन, हम उन्हें सच्चे दिल से धन्यवाद देते हुए उनकी तारीफ़ नहीं कर पाते। आयत 1 में एक दिलचस्प बात है—"उनका प्यार महान है"; यहाँ "महान" के लिए हिब्रू शब्द *गबार* (gabar) इस्तेमाल हुआ है, जिसका मतलब है "बहुत ज़्यादा" या "बढ़ता हुआ" (पार्क युन-सन)। यह बात इसलिए अहम है क्योंकि इसका मतलब है कि हमारे लिए परमेश्वर की दया—उनका प्यार—समय के साथ और भी बढ़ता जाता है (पार्क युन-सन)। इंसानी प्यार के मुकाबले यह कितना अलग है! जहाँ इंसानी प्यार समय के साथ कम होता जाता है, वहीं परमेश्वर का प्यार सिर्फ़ बढ़ता ही जाता है। अहम सवाल यह है कि क्या हम अपनी ज़िंदगी में परमेश्वर के इस लगातार बढ़ते प्यार को महसूस और अनुभव करते हुए जी रहे हैं? खासकर, क्या हम अपने लिए परमेश्वर के बढ़ते प्यार को तब भी पहचानते और महसूस करते हैं—और खासकर तब—जब हम मुश्किलों और परेशानियों का सामना कर रहे होते हैं?

भजन संहिता 139:17–18 हमें बताता है कि हमारे बारे में परमेश्वर के विचार रेत के कणों से भी ज़्यादा हैं। जब हम विश्वास में चलते हैं—और खासकर जब हम कलीसिया (मसीह की देह) की सेवा करते हैं और हर एक व्यक्ति से प्यार करते हैं—तो कई बार हमारा दिल तरह-तरह के विचारों, चिंताओं और घबराहट के बोझ से भारी हो जाता है। उन पलों में, क्या हमें अपने लिए परमेश्वर का प्यार—और हमारे और उन लोगों के बारे में उनके अनगिनत विचार—याद आते हैं और क्या हम उस प्यार को महसूस करते हैं? क्या हम इसके लिए परमेश्वर की तारीफ़ और धन्यवाद करते हैं? अगर हम परमेश्वर के महान और लगातार बढ़ते प्यार के लिए उनकी तारीफ़ करने का फ़ैसला करते हैं—जैसा कि आज उनका वचन हमें सिखाता है—तो हमें वह तारीफ़ कभी नहीं रोकनी चाहिए। हमें अपने पड़ोसियों से भी परमेश्वर के उसी महान प्यार के साथ प्यार करना चाहिए। हर एक व्यक्ति के लिए हमारा प्यार धीरे-धीरे और गहरा और मज़बूत होना चाहिए। अगर परमेश्वर के प्यार करने वाले लोगों के लिए हमारा प्यार बढ़ने के बजाय कम हो रहा है, तो हम सच में ऐसे उपासक नहीं कहला सकते जो परमेश्वर की महान दया की सही मायने में तारीफ़ करते हैं। परमेश्वर की अपार दया की सही तारीफ़ करने वाले सच्चे उपासक बनने के लिए, समय के साथ अपने पड़ोसियों के लिए हमारा प्यार

बढ़ता रहना चाहिए। इसलिए, आपको और मुझे ऐसे लोग बनना चाहिए जो धीरे-धीरे अपने पड़ोसियों के सामने परमेश्वर के महान प्यार की रोशनी फैलाएँ।

दूसरा कारण हमारे प्रति परमेश्वर की कभी न बदलने वाली वफ़ादारी है। मुझे याद है कि स्वर्गीय चोई जिन-सिल की आत्महत्या के बाद कुछ समाचार लेख छपे थे, जिनमें उनके नाम "जिन-सिल" (जिसका अर्थ है "सच्चाई") को बदलकर "गा-सिक" (जिसका अर्थ है "दिखावा" या "पाखंड") कर दिया गया था। "दिखावा" क्या है? एक ऑनलाइन शब्दकोश इसे इस तरह परिभाषित करता है: "अपने शब्दों या कार्यों को ऐसा रूप देना जिससे वे नेक या सही लगें।" मुझे नहीं पता कि किसी ने उनके नाम को "जिन-सिल" से बदलकर "गा-सिक" क्यों किया या ऐसी बातें क्यों छापीं; हालाँकि, दो बच्चों की माँ की आत्महत्या—जो दूसरों की आलोचना और बातों को और अधिक सहन नहीं कर सकीं—शायद उस साल की मनोरंजन जगत की सबसे बड़ी खबर बन गई थी। मुझे आज भी चर्च की एक बुजुर्ग 'क्कोंसा' (चर्च में एक वरिष्ठ महिला नेता) की दी हुई सलाह याद है। मैं अपनी दादी के साथ बुजुर्गों के लिए बने एक अपार्टमेंट कॉम्प्लेक्स में गई थी, जहाँ हमारी मुलाकात उस बुजुर्ग 'क्कोंसा' से हुई; वह मेरी दादी के सहारे इमारत की ओर जा रही थीं। जब मेरी दादी ने बताया कि मैं पादरी बनने वाली हूँ, तो वह महिला मेरी ओर मुड़ीं और बस एक बात कही: "सच्ची रहना।" मैं उन शब्दों को कभी नहीं भूली। कभी-कभी, जब मैं उस बारे में सोचती हूँ, तो मुझे आश्चर्य होता है कि उन्हें कितने ऐसे पादरियों का सामना करना पड़ा होगा जिन्होंने ईमानदारी नहीं बरती, जिससे उन्हें मुझसे ऐसा कहने की ज़रूरत महसूस हुई। साथ ही, मुझे खुद भी सच्चा बने रहने की एक बड़ी ज़िम्मेदारी का एहसास होता है।

आज के पाठ, भजन संहिता 117 में, भजनकार हमारे प्रति परमेश्वर की अनंत वफादारी को उस दूसरे कारण के रूप में बताते हैं जिसके लिए सभी लोगों को उनकी स्तुति करनी चाहिए। इस कथन का क्या अर्थ है? इसका क्या अर्थ है कि हमारे प्रति परमेश्वर की सच्चाई अनंत है? इसका अर्थ है कि परमेश्वर हमारे साथ किए गए वादों को पूरी वफादारी से पूरा करते हैं। उल्लेखनीय बात यह है कि जब हम परमेश्वर के वादों को पाने वालों के रूप में अपनी ज़िम्मेदारियों को ईमानदारी से निभाने में विफल रहते हैं, तब भी परमेश्वर उन वादों को पूरी वफादारी से पूरा करते रहते हैं। आज के पाठ, भजन संहिता 117:1 को प्रेरित पौलुस ने रोमियों 15:11 में उद्धृत किया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि, जैसा कि परमेश्वर ने पुराने नियम में वादा किया था, उन्होंने न केवल इस्राएल के लोगों को बल्कि अन्यजातियों को भी (उदाहरण के लिए, पौलुस के ज़रिए)

सुसमाचार सुनाया, उन्हें अपने चुने हुए लोगों के रूप में बुलाया और उन्हें अपनी प्रजा बनाया (पार्क युन-सन)। इसलिए, आज के पाठ में प्रेरित पौलुस और भजनकार, दोनों ही यह कहते हैं कि अन्यजाति विश्वासी, इस्राएल के लोगों के साथ मिलकर, परमेश्वर की स्तुति करें।

यीशु मसीह में परमेश्वर ने जो वादे किए हैं, उनमें से एक इब्रानियों 4:9 में मिलता है: "इसलिए, परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त का विश्राम बाकी है।" परमेश्वर ने आपको और मुझे हमेशा का विश्राम देने का वादा किया है। जिस दिन यीशु वापस आएंगे, वे हमें उस हमेशा के विश्राम वाली जगह पर ले जाएंगे। परमेश्वर, जिनकी वफ़ादारी हमेशा बनी रहती है, निश्चित रूप से इस वादे को पूरा करेंगे। तो फिर, हमारी ज़िम्मेदारी क्या है? इब्रानियों के लेखक कहते हैं: "इसलिए, आइए हम उस विश्राम में प्रवेश करने की पूरी कोशिश करें, ताकि कोई भी उनकी तरह आज्ञा न मानने के उदाहरण का पालन करके नष्ट न हो जाए" (वचन 11)। हमें उस हमेशा के विश्राम में प्रवेश करने का प्रयास करना चाहिए और उसकी आशा को मज़बूती से थामे रखना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमें विश्वास पर आधारित एक वफ़ादार जीवन जीना चाहिए। हमें प्रभु की आवाज़ सुननी चाहिए और उनकी आज्ञा माननी चाहिए, और उस ऊँचे स्थान की ओर आगे बढ़ना चाहिए। गॉस्पेल गीत "टुवर्ड्स अस" (Towards Us) के बोल याद आते हैं:

(पद 1) "महान, बहुत महान है हमारे प्रति प्रभु की दयालुता; महान, बहुत महान (2 बार)

(पद 2) हमेशा का, हमेशा का, हमेशा का है हमारे प्रति प्रभु का विश्वासयोग्य प्रेम (2 बार)।"

“प्रभु का धन्यवाद करो”

[भजन संहिता 118]

जब हम बीते हुए साल को याद करते हैं, तो आपने और मैंने कब और कैसे परमेश्वर की भलाई और प्रेम-भरी दया का अनुभव किया है? व्यक्तिगत रूप से, जो पल मेरी याद में सबसे साफ़ तौर पर बसे हैं, वे वे अंतिम संस्कार हैं जिनमें मैं शामिल हुआ। इस साल छह अंतिम संस्कारों में शामिल होने के बाद—और खासकर उनमें से दो में शव को रखने और दफनाने की रस्मों को पूरा करने के बाद—मुझे उन पलों में परमेश्वर की भलाई और प्रेम-भरी दया का अनुभव और स्वाद आज भी अच्छी तरह याद है। उन दोनों ही मौकों पर, भजन 40, “हाउ ग्रेट दाऊ आर्ट” (कोरियाई शीर्षक: “प्रभु परमेश्वर द्वारा रची गई सारी दुनिया”) गाते हुए और जीवन, मृत्यु और भाग्य पर राज करने वाले परमेश्वर की—साथ ही उनकी महिमा और महानता की—प्रशंसा करते हुए, मैंने उनके अपार प्रेम और उनके सच्चे अच्छे स्वभाव को और गहराई से महसूस किया। खासकर, जब मैंने स्वर्गीय दादी जांग उल-सू और स्वर्गीय रेवरेंड किम चांग-ह्युक के आखिरी पलों पर विचार किया, और उन्हें परमेश्वर से मिले उद्धार के अनुग्रह के बारे में सोचा, तो मुझे याद है कि मैंने परमेश्वर की भलाई और प्रेम-भरी दया के लिए उनकी प्रशंसा और धन्यवाद किया था।

हमें परमेश्वर का धन्यवाद क्यों करना चाहिए? कारण यह है कि परमेश्वर भला है, और उसकी प्रेम-भरी दया हमेशा बनी रहती है। भजन संहिता 118:1 देखें: “प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसकी प्रेम-भरी दया हमेशा बनी रहती है।” आज के पाठ की आयतों 1-5 में, हम देखते हैं कि भजनकार परमेश्वर का धन्यवाद कर रहा है क्योंकि उसने मुसीबत के समय की गई प्रार्थनाओं का उत्तर दिया। आयत 5 देखें: “मैंने अपनी मुसीबत में प्रभु को पुकारा; प्रभु ने मुझे उत्तर दिया और मुझे एक खुली जगह में पहुँचाया।” ऐसा लगता

है कि भजनकार—संभवतः दाऊद—दुख और पीड़ा में था क्योंकि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था और वह परमेश्वर के अनुशासन से गुज़र रहा था (आयत 18)। इस दैवीय अनुशासन में एक ऐसी स्थिति शामिल थी जहाँ अन्य जातियों (आयत 10)—जो इस्राएल के लोगों से नफ़रत करती थीं (आयत 7)—ने उन्हें घेर लिया था, जिससे न केवल दुख और कठिनाई हुई, बल्कि मौत का डर भी पैदा हुआ। हम इसे टेक्स्ट में बार-बार इस्तेमाल किए गए वाक्यांशों जैसे "मुझे घेरा" (v. 10), "मुझे घेरा, हाँ, मुझे घेरा" (v. 11), और "मुझे घेरा" (v. 12) से समझ सकते हैं। दुश्मन देशों से घिरे होने के कारण इतनी ज़्यादा तकलीफ़ और मुसीबत सहने के बावजूद, दाऊद और इज़राइल के लोगों ने माना कि परमेश्वर ने उन्हें मौत के हवाले नहीं किया (v. 18)। इस संकट के बीच, दाऊद ने पूरे दिल से परमेश्वर को पुकारा। हालाँकि वह एक बहुत मुश्किल हालात में फँसा था और निकलने का कोई साफ़ रास्ता नहीं दिख रहा था, फिर भी उसने परमेश्वर से विनती की। परमेश्वर ने दाऊद की सच्ची प्रार्थना सुनी और उसे एक बड़ी जगह पर पहुँचाया—एक "बिना सीमा वाली खुली ज़मीन" (पार्क युन-सन, डेलिट्ज़) (v. 5)। अंग्रेज़ी अनुवाद इसे "मुझे एक बड़ी जगह पर रखा" (NASB) या "मुझे आज़ाद किया" (NIV) के तौर पर बताते हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने दाऊद को आस-पास के देशों से बचाकर और एक चौड़ी, खुली जगह पर ले जाकर उसकी प्रार्थना का जवाब दिया। आसान शब्दों में कहें तो, परमेश्वर ने दाऊद पर उद्धार की कृपा की। दाऊद इस प्रार्थना के जवाब का ज़िक्र एक और तरीके से करता है, यह मानते हुए कि "जिस पत्थर को बनाने वालों ने ठुकरा दिया था, वही कोने का मुख्य पत्थर बन गया है" (v. 22)। यह हिस्सा बताता है कि हालाँकि दाऊद को शुरू के सालों में कई ताकतवर लोगों ("बनाने वालों") ने सताया था, फिर भी परमेश्वर ने उसे राजा—"कोने का मुख्य पत्थर"—के तौर पर स्थापित किया, जबकि उन लोगों ने उसे ठुकरा दिया था (कैल्विन, पार्क युन-सन)। आखिरकार, दाऊद को अपनी गलतियों की वजह से परमेश्वर की कड़ी सज़ा का सामना करना पड़ा; उस दर्द, तकलीफ़ और डरावने हालात के बीच, उसने प्रार्थना में पूरे दिल से परमेश्वर को पुकारा। जब परमेश्वर ने उसे बचाया, तो दाऊद ने परमेश्वर की भलाई—जो सब कुछ भलाई के लिए काम में लाती है—और उसके कभी न बदलने वाले, हमेशा रहने वाले प्यार को महसूस किया।

जब हम मुश्किलों और बुरे हालात से गुज़र रहे होते हैं, तो हम कितनी बार परमेश्वर की भलाई और प्यार पर शक करते हैं? ऐसे पलों में, हमारे मन में अक्सर ऐसे सवाल आते हैं, "अगर परमेश्वर सच में मुझसे प्यार करता है, तो मुझे यह तकलीफ़ और दर्द क्यों सहना पड़ रहा है?" और, हिम्मत बनाए रखने में नाकाम रहने पर,

हम परमेश्वर की भलाई वाली इच्छा को समझने में संघर्ष करते हैं। क्या हमारी ज़िंदगी में कभी ऐसा समय नहीं आया—खासकर ऐसी तकलीफ़ों के बीच—जब हर रास्ता बंद लगता था और हमें लगता था कि हम फँस गए हैं और कोई समाधान नहीं दिख रहा? ऐसे समय में, हमें भजनकार की मिसाल पर चलना चाहिए और परमेश्वर को पुकारना चाहिए। उसकी बचाने वाली कृपा के ज़रिए, हमें उसके कभी न बदलने वाले प्यार और उस भलाई का अनुभव करना चाहिए जो सब चीज़ों को भलाई के लिए काम में लाती है। हमें परमेश्वर की कभी न बदलने वाली भलाई और प्यार-भरी दया का अनुभव और भी गहराई और पक्के तौर पर करने की ज़रूरत है, चाहे मुश्किल का समय हो या शांति का। यह कैसे मुमकिन है? दाऊद ने प्रार्थना के ज़रिए परमेश्वर की भलाई और प्यार-भरी दया का अनुभव कैसे किया, तब भी जब वह परमेश्वर की अनुशासनात्मक कार्रवाई के कारण जानलेवा स्थिति का सामना कर रहा था? ऐसा इसलिए था क्योंकि दाऊद का दिल निडर और साहसी था और उसे लड़ाई में जीत का भरोसा था। ...यही कारण है (पद 6–16)। आज के हिस्से के पद 6 को देखिए: "प्रभु मेरी तरफ़ है; मैं नहीं डरूँगा। इंसान मेरा क्या बिगाड़ सकता है?" प्यार में कोई डर नहीं होता, और सच्चा प्यार डर को दूर कर देता है (1 यूहन्ना 4:18)। भयानक घेराबंदी का सामना करते हुए और अपनी जान का डर होने के बावजूद, दाऊद ने परमेश्वर के सच्चे प्यार पर भरोसा किया और बिना डरे उसे पुकारा। वह आसानी से हिम्मत हार सकता था, निराश हो सकता था और लड़ाई में हारने से डर सकता था; फिर वह बिना डरे परमेश्वर से प्रार्थना कैसे कर पाया? ऐसा इसलिए था क्योंकि दाऊद को परमेश्वर पर पूरा भरोसा था। भजन संहिता 118 के पद 8 और 9 को देखिए: "इंसान पर भरोसा करने से बेहतर है कि प्रभु की शरण ली जाए; राजकुमारों पर भरोसा करने से बेहतर है कि प्रभु की शरण ली जाए।" अगर हम यशायाह 30:15 को देखें—जो बाइबल की मेरी पसंदीदा आयतों में से एक है—तो उसमें लिखा है, "...बाइबल हमें बताती है, 'शांति और भरोसे में ही तुम्हारी ताकत है।' जब मैंने इस आयत पर मनन किया, तो मुझे एक बार फिर यह याद करने का मौका मिला कि परमेश्वर पर चुपचाप भरोसा करना ही मेरी ताकत का स्रोत है। ऐसा करने से मुझे अंदरूनी ताकत मिली; डर की जगह मुझे उद्धार का भरोसा और हिम्मत मिली। क्योंकि दाऊद को परमेश्वर पर पूरा भरोसा था, इसलिए न केवल उसने बिना डरे प्रार्थना की, बल्कि उसमें हिम्मत, साहस और लड़ाई में जीत का पक्का भरोसा भी था। घेरेबंदी के बावजूद दाऊद को जीत का इतना भरोसा कैसे था? ऐसा इसलिए था क्योंकि उसे किसी बात का डर नहीं था; वह जानता था कि परमेश्वर उसके साथ है (भजन संहिता 118:6, 7)। उसे विश्वास था कि परमेश्वर—जो उसके साथ था—अपने शक्तिशाली दाहिने हाथ से उसकी और इस्राएल के लोगों की मदद करेगा (आयतें 15, 16; आयतें 7, 13)। आज के हिस्से की आयत

13 को देखिए: "तुमने मुझे गिराने के लिए ज़ोर से धक्का दिया, लेकिन प्रभु ने मेरी मदद की।" जब परमेश्वर की मदद से दाऊद को उद्धार मिला, तो उसने क्या किया? यह मानते हुए कि "प्रभु मेरी ताकत और मेरा गीत है; वह मेरा उद्धार बन गया है" (आयत 14), उसने प्रभु के घर में जाने और उसका धन्यवाद करने का संकल्प लिया (आयतें 19–21, 28)। भजन संहिता 118 की आयतें 21 और 28 देखिए: "मैं तेरा धन्यवाद करूँगा, क्योंकि तूने मेरी प्रार्थना सुनी; तू मेरा उद्धार बन गया है" (आयत 21); "तू मेरा परमेश्वर है, और मैं तेरा धन्यवाद करूँगा; तू मेरा परमेश्वर है, और मैं तेरी महिमा करूँगा" (आयत 28)। उसने विश्वास के साथ परमेश्वर के उन कामों का प्रचार करने का भी संकल्प लिया जिन्होंने उसकी जान बचाई थी (आयत 17)। उसने न केवल परमेश्वर का धन्यवाद किया और उसके उद्धार के कामों का प्रचार किया, बल्कि हम सभी को भी प्रोत्साहित किया: "प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; "उनका प्रेम सदा बना रहता है" (पद 29)। आइए हम सब परमेश्वर का धन्यवाद करें। वह भले हैं और उनका प्रेम सदा बना रहता है। धन्यवाद के इस समय में, आइए हम यीशु मसीह पर विचार करें—वह पत्थर जिसे बनाने वालों ने ठुकरा दिया था, पर जो मुख्य आधार-शिला बन गया—और उस उद्धार की कृपा के लिए धन्यवाद दें जो परमेश्वर ने हम सब पर की है।

जो उस मार्ग (वचन) पर चलते हैं

[भजन संहिता 119:1-8]

भजन संहिता 119:1-8 का मुख्य संदेश यह है कि जो लोग उस मार्ग पर चलते हैं, वे धन्य हैं। दूसरे शब्दों में, यह वचन बताता है कि जो लोग परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करते हैं, वे धन्य हैं (पद 1)। सचमुच, जिनके चाल-चलन बेदाग हैं क्योंकि वे परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करते हैं, वे धन्य हैं (पद 1)। तो फिर, ऐसे धन्य लोग कैसा आचरण करते हैं? यह वचन दो बातें बताता है।

पहला, धन्य व्यक्ति अधर्म का काम नहीं करता।

भजन संहिता 119:3 का पहला भाग देखें: "वे कोई अधर्म का काम नहीं करते..." हम अधर्म करने से कैसे बच सकते हैं? हमें सही न्याय (धर्मपूर्ण निर्णय) सीखना होगा। पद 7 देखें: "जब मैं तेरे धर्मपूर्ण निर्णयों को सीखूँगा, तब मैं सीधे मन से तेरी स्तुति करूँगा।" जब हम धर्मपूर्ण निर्णय लेना सीखते हैं, तो हम सही और गलत, और अच्छे और बुरे के बीच स्पष्ट अंतर करने में सक्षम हो जाते हैं। ऐसी सही समझ होने पर, व्यक्ति अधर्म का काम नहीं करता। हालाँकि, यदि हममें सही समझ की कमी हो, तो हम गलत रास्ता (बुराई) चुनेंगे, और गलत रास्ता चुनने से हम खुद को अशुद्ध कर लेंगे। नतीजतन, हमें निश्चित रूप से शर्मिंदगी का सामना करना पड़ेगा (पद 6)।

दूसरा, धन्य व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता है।

भजन संहिता 119:1 देखें: "धन्य हैं वे जो मार्ग में बेदाग हैं, जो प्रभु की व्यवस्था पर चलते हैं।" धन्य व्यक्ति परमेश्वर की व्यवस्था के माध्यम से सही निर्णय लेना सीखता है। और इस सही समझ के साथ, वह सही रास्ता

(अच्छाई) चुनता है और गलत रास्ते (बुराई) से बचता है। जो लोग सही निर्णय लेना सीखते हैं, वे कभी गलत रास्ता नहीं चुनते; इसलिए, वे अधर्म के काम नहीं करते। तो फिर, हम ऐसे सही निर्णय लेना कैसे सीख सकते हैं? यह परमेश्वर की व्यवस्था के माध्यम से होता है। हम जितना अधिक परमेश्वर की व्यवस्था को सीखते हैं, उतनी ही अधिक हममें सही निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है। नतीजतन, हम सही और गलत के बीच स्पष्ट अंतर करने की क्षमता प्राप्त करते हैं—जिसे "बाइबल-सम्मत समझ" (biblical discernment) कहा जा सकता है। जब हम सही समझ के माध्यम से अच्छाई को चुनने और बुराई से घृणा करने के लिए इस समझ का उपयोग करते हैं, तो हमारे हृदय निश्चित रूप से सीधे (ईमानदार) हो जाते हैं। और सीधे हृदय वाले लोग धार्मिकता का मार्ग चुनते हैं, अधर्म का मार्ग कभी नहीं। हमें परमेश्वर के वचन के ज़रिए सही फ़ैसला करने की क्षमता होनी चाहिए, और हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जो उस फ़ैसले के आधार पर अच्छाई को चुने और बुराई से नफ़रत करे। दूसरे शब्दों में, हमें सिर्फ़ उस मार्ग (वचन) को सीखने तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए; हमें उस मार्ग पर चलने वाला भी बनना चाहिए। हमें वचन पर अमल करने वाला बनना चाहिए, न कि सिर्फ़ सुनने वाले जो खुद को धोखा देते हैं (याकूब 1:22)। हमें पूरी लगन से ऐसा करना चाहिए; यानी, हमें पूरी लगन से परमेश्वर के वचन को मानना और उसका पालन करना चाहिए (पद 4)। हमें कभी भी बुराई करने में तत्पर नहीं होना चाहिए (पद 3)। इसे हासिल करने के लिए हमें सच्चे दिल से परमेश्वर की मदद लेनी चाहिए (पद 2)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के वचन को अमल में लाने के लिए हमें पूरे दिल से परमेश्वर को खोजना चाहिए (पद 2), और प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के मार्ग (वचन) पर चलना चाहिए।

धन्य हैं वे जो परमेश्वर के वचन को अमल में लाते हैं (पद 2)। उन्हें शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा (पद 6), और वे प्रभु का धन्यवाद करेंगे (पद 7)।

एक जवान आदमी अपनी चाल-चलन को कैसे शुद्ध रख सकता है?

[भजन संहिता 119:9-16]

यीशु पर विश्वास करने वालों के तौर पर, हम अपने दिलों में प्रभु की पवित्रता को अपनाना चाहते हैं, फिर भी हम अक्सर पाते हैं कि हमारा कमज़ोर शरीर पाप की ओर भागता है। इसीलिए प्रेरित पौलुस ने माना: "...तो फिर, मैं अपने मन से परमेश्वर के नियम की सेवा करता हूँ, लेकिन अपने शरीर से पाप के नियम की" (रोमियों 7:25)। यह एक आध्यात्मिक लड़ाई है—खुद के खिलाफ़ एक आध्यात्मिक लड़ाई। इस संघर्ष में, हमें अपने स्वभाव के बारे में बाइबल का नज़रिया अपनाना चाहिए—खासकर, इंसानी बुराई (पाप) के बारे में। नीतिवचन 20:9 में, लेखक पूछता है: "कौन कह सकता है, 'मैंने अपने दिल को शुद्ध किया है, मैं अपने पाप से साफ़ हूँ'?" इसके अलावा, अय्यूब 15:14-16 कहता है: "इंसान क्या है, कि वह शुद्ध हो सके? और जो औरत से पैदा हुआ है, वह धर्मी कैसे हो सकता है? अगर परमेश्वर अपने पवित्र लोगों पर भरोसा नहीं करता, और स्वर्ग भी उसकी नज़र में शुद्ध नहीं हैं, तो इंसान की क्या बिसात, जो घिनौना और भ्रष्ट है, जो पानी की तरह बुराई पीता है!" सचमुच, हम इंसान भ्रष्ट हैं। कोई कैसे शुद्ध हो सकता है? फिर भी, आज के वचन—भजन संहिता 119:9—में भजनकार यह सवाल पूछता है: "एक जवान आदमी अपनी चाल-चलन को कैसे शुद्ध रख सकता है? ..." इस वचन पर ध्यान देते हुए, मैं उन चार तरीकों पर बात करना चाहूँगा जिनसे हम एक शुद्ध (पवित्र) जीवन जी सकते हैं।

पहला, एक शुद्ध (पवित्र) जीवन जीने के लिए, हमें प्रभु के वचन के अनुसार जीना चाहिए।

भजन संहिता 119:9 को देखिए: "एक जवान व्यक्ति पवित्रता के रास्ते पर कैसे चल सकता है? आपके वचन के अनुसार जीकर।" खुद को शुद्ध करने और परमेश्वर के वचन के बीच गहरा संबंध है। उदाहरण के लिए, प्रेरित पतरस हमें बताता है कि सच्चाई का पालन करने से हमारी आत्माओं को शुद्ध करना संभव होता है: "अब जब तुमने सच्चाई का पालन करके खुद को शुद्ध कर लिया है..." (1 पतरस 1:22)। इस प्रकार, आज के वचन—भजन संहिता 119:9—में भजनकार कहता है कि हमें प्रभु के वचन के अनुसार "ध्यान देना" चाहिए (या अपनी चाल-चलन की रक्षा करनी चाहिए)। यहाँ "ध्यान देने" (take heed) शब्द के दो मतलब हैं। एक है पैसिव या निष्क्रिय अर्थ—यानी "बचना" या "न करना"। व्यवस्थाविवरण 4:23 इसका एक उदाहरण है: "सावधान रहो [ध्यान दो] कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उस वाचा को न भूल जाओ जो उसने तुम्हारे साथ बाँधी थी; और ऐसी कोई मूर्ति न बनाओ जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने मना किया हो।" दूसरा मतलब है एक्टिव या सक्रिय अर्थ—यानी "पालन करना" या "करना"। उत्पत्ति 18:19 इसका उदाहरण है: "क्योंकि मैंने उसे चुना है, ताकि वह अपने बच्चों और अपने परिवार को सही और न्यायपूर्ण काम करके यहोवा के रास्ते पर चलने का निर्देश दे, ताकि यहोवा अब्राहम के लिए वह सब पूरा करे जिसका उसने वादा किया था।" तो, हम प्रभु के वचन के अनुसार "ध्यान" कैसे दें? इसके लिए तीन बातें बताई गई हैं।

(1) हमें प्रभु के नियमों पर मनन करना चाहिए।

भजन संहिता 119:15 का पहला हिस्सा देखें: "मैं तेरे नियमों पर मनन करता हूँ..." हमें परमेश्वर के वचन पर मनन करना चाहिए—और बार-बार मनन करना चाहिए। हमें परमेश्वर के वचन पर मनन करने की अच्छी आदत डालनी चाहिए। परमेश्वर पर मनन करने का मतलब सिर्फ़ बाइबल पढ़ना नहीं है। मनन में सोचना—और जो शब्द हमने पढ़े हैं, उनके बारे में बार-बार सोचना—शामिल है। इसका मतलब है उन शब्दों के अर्थ पर विचार करना और प्रार्थना भरे दिल से उन पर बार-बार सोचना (पद 148)।

(2) हमें प्रभु के रास्ते (उसके वचन) पर ध्यान देना चाहिए।

भजन संहिता 119:15 का दूसरा हिस्सा देखें: "...और तेरी राहों पर अपनी नज़र टिकाए रखता हूँ।" हमें परमेश्वर के वचन पर मनन करके उसका रास्ता खोजना चाहिए। दूसरे शब्दों में, बाइबल के ज़रिए हम यीशु को जानते हैं और हमें उन कदमों पर ध्यान देना चाहिए जिन पर वे चले थे। इसलिए, जब हम परमेश्वर के वचन के ज़रिए प्रभु के रास्ते को समझते हैं, तो हमें अपने रास्ते की तुलना उनके रास्ते से करनी चाहिए। अगर हमारा रास्ता प्रभु के रास्ते से अलग है, तो हमें अपने पाप के लिए पछताना चाहिए, वापस मुड़ना चाहिए और प्रभु के रास्ते पर चलना चाहिए।

(3) हमें प्रभु की गवाहियों के रास्ते में खुशी मिलनी चाहिए। भजन संहिता 119:14 को देखिए: "मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में उतना ही खुश हुआ हूँ, जितना कि सारी दौलत में।" लोग दौलत से बहुत प्यार करते हैं। भजनकार कहता है कि उसे प्रभु के वचन को मानने में उतनी ही खुशी मिलती है जितनी दौलत में। जो ईसाई परमेश्वर के वचन को मानने की खुशी का अनुभव करता है, वह आज्ञापालन की उस खुशी में अपने चाल-चलन को शुद्ध करता है।

दूसरी बात, एक शुद्ध (पवित्र) जीवन जीने के लिए, हमें पूरे दिल से प्रभु की खोज करनी चाहिए।

भजन संहिता 119:10 का पहला भाग देखिए: "मैंने पूरे दिल से तेरी खोज की है..." हम प्रभु की खोज क्यों करते हैं? हम प्रभु से प्रार्थना क्यों करते हैं? हम पवित्र जीवन जीना और शुद्ध रास्ते पर चलना चाहते हैं; हम परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं और उस रास्ते पर विचार करते हैं जिस पर प्रभु चले थे, फिर भी हम ठोकर खाते हैं, गिरते हैं और पाप करते हैं। इसलिए, प्रभु की पवित्रता का अनुकरण करने की सच्ची इच्छा वाले दिल के साथ, हम उनसे विनती करते हैं। भजनकार की सच्ची प्रार्थना थी, "मुझे तेरी आज्ञाओं से भटकने न दे" (पद 10)। हमारी प्रार्थना भी यही होनी चाहिए, क्योंकि हमारे अंदर एक पापी स्वभाव है जो प्रभु की आज्ञाओं से दूर भटकना चाहता है। हालाँकि हमारे मन में उनकी आज्ञाओं को मानने की पवित्र इच्छा होती है, फिर भी हमारी पुरानी आदतें बनी रहती हैं, और हमारे अंदर का पापी स्वभाव अक्सर हमें भटका देता है। खासकर घमंड हमें प्रभु के रास्ते से दूर ले जाकर बुराई की ओर ले जाता है (पद 21)। इसलिए, भजनकार की तरह, हमें पूरे दिल से परमेश्वर की खोज करनी चाहिए। हमें सच्चे दिल से प्रार्थना करनी चाहिए, "मुझे तेरी आज्ञाओं से भटकने न दे" (पद 10)। ऐसा करते हुए, हमें यह भी कहना चाहिए, "मुझे अपने नियम सिखा" (पद 12)। हमें अपनी अज्ञानता को स्वीकार करना चाहिए और मानना चाहिए कि हम खुद से प्रभु के नियमों

को नहीं समझ सकते। हमें परमेश्वर के सर्वोच्च निर्देशों की ज़रूरत को पहचानना चाहिए (पद 34)। हमें पूरे दिल से प्रभु की खोज करनी चाहिए—अपने चाल-चलन को शुद्ध करने और उनके वचन के अनुसार जीने के लिए। अपनी अज्ञानता और उनकी आज्ञाओं को मानने में अपनी असमर्थता को स्वीकार करते हुए, हमें परमेश्वर से बुद्धि और शक्ति मांगनी चाहिए, और इस तरह एक पवित्र जीवन जीना चाहिए। तीसरी बात, एक साफ़-सुथरा (पवित्र) जीवन जीने के लिए, हमें प्रभु के वचन को अपने दिलों में रखना चाहिए।

भजन संहिता 119:11 को देखिए: "मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में छिपा रखा है ताकि मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।" प्रभु के वचन को अपने दिलों में रखने का क्या मतलब है? इसका मतलब है उनके वचन को अनमोल समझना और उसे अपने अंदर मज़बूती से थामे रखना। हमारे लिए प्रभु की यही इच्छा है। इसीलिए नीतिवचन के लेखक नीतिवचन 7:1 में हमें सलाह देते हैं: "हे मेरे पुत्र, मेरे वचनों को मान और मेरी आज्ञाओं को अपने भीतर संजोकर रख।" हमें परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में क्यों संजोकर रखना चाहिए? इसका कारण है प्रभु के विरुद्ध पाप करने से बचना (भजन संहिता 119:11)। जब हम परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में रखते हैं, तो हम उस वचन के अनुसार चल सकते हैं और उसके द्वारा निर्देशित हो सकते हैं।

तो, हम असल में प्रभु के वचन को अपने दिलों में कैसे संजोकर रख सकते हैं? हम आज के अंश से दो बातें सीख सकते हैं।

(1) प्रभु के वचन को अपने दिलों में रखने के लिए, हमें उसमें खुशी मिलनी चाहिए।

भजन संहिता 119:14 और आयत 16 का पहला भाग देखिए: "मैं तेरी गवाही के मार्ग में उतना ही खुश हुआ हूँ जितना कि सारी दौलत में" (आयत 14); "मैं तेरी विधियों में खुशी मनाऊँगा..." (आयत 16)। परमेश्वर के वचन में खुशी पाए बिना बाइबल पढ़ना सचमुच मुश्किल है। हालाँकि, जब हम परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं और उनके द्वारा दिए गए आशीषों का अनुभव करते हैं, तो हम स्वाभाविक रूप से उनके वचन की ओर खिंचे चले आते हैं। भजनकार हमें प्रभु की गवाही के मार्ग में खुशी मनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे हम अपनी सारी दौलत में खुशी मनाते हैं (आयत 14)। जब हम प्रभु की विधियों में खुशी मनाते हैं (आयत 16), तो हम परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में संजोकर रखने में सक्षम हो जाते हैं।

(2) प्रभु के वचन को अपने दिलों में बसाए रखने के लिए, हमें यह पक्का इरादा करना होगा कि हम उसे भूलें नहीं।

आज के पाठ में भजन संहिता 119:16 के दूसरे हिस्से को देखें: "...मैं तेरे वचन को नहीं भूलूँगा।" अगर हम परमेश्वर के वचन को अपने करीब नहीं रखते, तो हम आसानी से उसे भूल जाते हैं। इसके अलावा, हमारे दिल कठोर हो जाते हैं। नतीजतन, हम आखिरकार परमेश्वर के वचन की आज्ञा नहीं मानते। हमें ऐसा नहीं होने देना चाहिए। हमें परमेश्वर के वचन को अपने करीब रखना चाहिए। भजनकार की तरह, हमें यह पक्का इरादा करना चाहिए कि हम उसे भूलें नहीं। हमें खुद को परमेश्वर के वचन के प्रति समर्पित करना चाहिए। खासकर, परमेश्वर के वचन को न भूलने के लिए, हमें उस आवाज़ को मानना चाहिए जो हम उस पर मनन करते समय सुनते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम परमेश्वर के वचन को अपने दिलों की तख्तियों पर लिख सकते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर का वचन हमारी अपनी संपत्ति बन जाता है (पद 56)। मेरा मानना है कि परमेश्वर के वचन को न भूलने का यही सबसे बड़ा राज़ है।

आखिर में, चौथा बिंदु: एक पवित्र जीवन जीने के लिए, हमें प्रभु के वचन का प्रचार करना चाहिए।

भजन संहिता 119:13 को देखें: "मैंने अपने होंठों से तेरे मुँह के सभी फैसलों का ऐलान किया है।" परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में संजोने के लिए, हमें अपने होंठों से उसका प्रचार करना चाहिए और उसे अपने जीवन में उतारना चाहिए। बेशक, जब हम परमेश्वर के वचन का प्रचार करते हैं, तो हमारे अपने जीवन में वे शब्द झलकने चाहिए जिनका हम प्रचार करते हैं। हमें परमेश्वर के वचन की गवाही ऐसे जीवन के ज़रिए देनी चाहिए जो खुद एक गवाही का काम करे। दूसरे शब्दों में, हमें एक पवित्र और शुद्ध जीवन जीते हुए प्रभु के पवित्र वचन का प्रचार करना चाहिए। मसीह के गवाहों के तौर पर, हमें गवाही वाला जीवन जीना चाहिए। हमें पूरे जोश और जुनून के साथ परमेश्वर के वचन का प्रचार करना चाहिए (भजन संहिता 39:1–3; 40:9)।

तो फिर, हम एक पवित्र जीवन कैसे जी सकते हैं? हमें प्रभु के वचन के अनुसार जीना चाहिए (पद 9)। हमें पूरे दिल से प्रभु की खोज करनी चाहिए (पद 10)। हमें प्रभु के वचन को अपने दिलों में संजोकर रखना चाहिए और उसका प्रचार करना चाहिए। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप और मैं पवित्र और शुद्ध जीवन जी सकें।

“ताकि मैं आपके विरुद्ध पाप न करूँ”

“मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में छिपा रखा है, ताकि मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूँ” (भजन संहिता 119:11)।

25 दिसंबर—क्रिसमस के दिन—समाचार माध्यमों ने कोविना शहर में हुई एक हत्या की घटना को “क्रिसमस नरसंहार” (Christmas Massacre) की हेडलाइन के साथ प्रमुखता से दिखाया। सांता क्लॉज़ के भेष में एक 45 वर्षीय तलाकशुदा व्यक्ति, क्रिसमस की पूर्व संध्या पर रात लगभग 11:30 बजे अपनी पूर्व पत्नी के माता-पिता के घर पहुँचा। उसने क्रिसमस पार्टी में आए मेहमानों पर अंधाधुंध गोलियाँ चलाईं और घर में आग लगा दी, जिससे नौ लोगों की मौत हो गई; बाद में उसने आत्महत्या कर ली। इस भयानक अपराध के बारे में सुनकर मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि तलाक का सदमा कैसे इतने दुखद परिणामों का कारण बन सकता है। ऐसा लगा कि अपने दिल में नफरत, गुस्से और आवेगों पर काबू न रख पाने के कारण उसने ऐसा भयानक काम किया। इसे और टेलीविज़न पर अपराध की अन्य कई खबरों को देखकर, मुझे यकीन हो गया है कि जब दिल पापपूर्ण बातों से भरा होता है, तो अपराध करना अपरिहार्य हो जाता है। मेरा मानना है कि यह हम विश्वासियों पर भी लागू होता है जो यीशु का अनुसरण करते हैं। यदि हमारे दिल बुरी, पापपूर्ण बातों से भरे हैं, तो हम परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने से नहीं बच सकते। हालाँकि, जैसे-जैसे हमारे दिल परमेश्वर के वचन से भरते जाते हैं, प्रभु के विरुद्ध पाप करने की घटनाएँ भी धीरे-धीरे कम होती जाएँगी। ऐसा करने के लिए, हमें दृढ़ संकल्प लेना होगा और खुद को समर्पित करना होगा। हमें प्रभु के विरुद्ध पाप न करने का संकल्प लेना होगा, और इसके लिए, हमें उनके वचन को अपने दिलों में बसाने का संकल्प लेना होगा।

भजन संहिता 119:11 में, भजनकार स्वीकार करता है कि उसने प्रभु के वचन को अपने दिल में इसलिए छिपा रखा है ताकि वह उनके विरुद्ध पाप न करे। तो फिर, हम परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में कैसे रख सकते हैं? मैंने पाँच तरीकों पर विचार किया है:

पहला, परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में रखने के लिए, हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। हमें प्रार्थना करनी चाहिए और कहना चाहिए, "हे परमेश्वर, कृपया मुझे अपना वचन सिखाएँ।"

भजन संहिता 119:12 को देखें: "हे यहोवा, तेरी स्तुति हो; मुझे अपनी विधियाँ सिखा।" भजनकार ने परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह उसे अपना वचन सिखाएँ ताकि वह उसे अपने दिल में रख सके। हमें भी प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर हमें अपना वचन सिखाए। इसका कारण यह है कि पवित्र आत्मा ही बाइबल का असली रचयिता है। चूँकि पवित्र आत्मा हममें से उन लोगों के भीतर वास करता है जो यीशु पर विश्वास करते हैं, इसलिए हम परमेश्वर के वचन को तभी समझ सकते हैं जब वह हमारे लिए उस पर रोशनी डाले। यदि हमें परमेश्वर का वचन सीखने की इच्छा की कमी महसूस हो, तो हमें पश्चाताप करना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर हमें ऐसा हृदय दे जो उसके वचन को सीखने के लिए तरसे और इच्छा रखे।

दूसरा, परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में बसाए रखने के लिए, हमें उस पर ध्यान देना चाहिए और लगन से उस पर मनन करना चाहिए।

भजन संहिता 119:15 को देखें: "मैं तेरे आदेशों पर मनन करता हूँ और तेरे मार्गों पर विचार करता हूँ।" भजनकार ने परमेश्वर के वचन पर ध्यान दिया और दिन-रात उस पर मनन किया। भजनकार की तरह, हमें भी परमेश्वर के वचन पर ध्यान देना चाहिए। हमें परमेश्वर के वचन को अपने करीब रखना चाहिए। हमें लगन और नियमित रूप से उस पर मनन करना चाहिए। जब हम बाइबल पढ़ते हैं, तो हमें परमेश्वर के वचन पर गहराई से सोचना चाहिए। प्रार्थनापूर्ण हृदय के साथ, हमें परमेश्वर के वचन पर गहराई से और बार-बार विचार करना चाहिए। ऐसे मनन के माध्यम से, हमें विनम्रतापूर्वक उस संदेश—उस आवाज़—को सुनना चाहिए जिसे परमेश्वर हम तक पहुँचाना चाहता है।

तीसरा, परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में बसाए रखने के लिए, हमें उस वचन को दूसरों के साथ बाँटना चाहिए जिस पर हमने मनन किया है।

भजन संहिता 119:13 को देखें: "मैंने अपने होंठों से तेरे मुँह के सभी फैसलों की घोषणा की है।" भजनकार ने अपने होंठों से प्रभु के सभी फैसलों की घोषणा की। हमें भी परमेश्वर के वचन पर मनन करते समय जो बातें समझ आती हैं, उन्हें अपने आस-पास के भाई-बहनों के साथ बाँटना चाहिए। विशेष रूप से, हमें यीशु मसीह के सुसमाचार को बाँटना चाहिए जिसे हम पवित्र शास्त्र पर मनन करते समय समझते हैं। जब हम वचन को बाँटते हैं तो वह हमारे हृदय में और गहराई से बस जाता है। जब हम उन सच्चाइयों को लिखते हैं जिन पर हमने मनन किया है और उन्हें दूसरों के साथ बाँटते हैं, तो हमारे हृदय परमेश्वर के वचन से और अधिक भर जाते हैं।

चौथा, परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में बसाए रखने के लिए, हमें उसमें आनंद लेना चाहिए।

भजन संहिता 119:14 को देखें: "मैंने तेरी गवाहियों के मार्ग में उतना ही आनंद लिया है, जितना कि सारी दौलत में।" भजनकार को परमेश्वर के वचन में वैसे ही खुशी मिलती थी जैसे किसी को बहुत बड़ी दौलत मिलने पर मिलती है। हमें भी परमेश्वर के वचन में वैसी ही खुशी मिलनी चाहिए जैसी हमें दुनिया की चीज़ों में मिलती है। हो सकता है कि शुरू-शुरू में परमेश्वर के वचन में खुशी पाना आसान न हो। लेकिन, जैसे-जैसे हम वचन पर मनन करते हैं और परमेश्वर से मिलने वाली समझ का अनुभव करते हैं, हम भजनकार की इस बात को—कम से कम कुछ हद तक—समझने लगेंगे कि परमेश्वर का वचन शहद से भी ज़्यादा मीठा है (पद 103)। आखिर में, हम परमेश्वर के वचन की मिठास का जितना ज़्यादा अनुभव करेंगे, उसमें खुशी न पाना उतना ही मुश्किल होगा। इस खुशी में, हम परमेश्वर के वचन को और भी ज़्यादा महत्व देंगे और उस पर और भी गहराई से मनन करेंगे।

आखिर में, पाँचवीं बात: परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में बसाए रखने के लिए, हमें उसे भूलना नहीं चाहिए।

भजन संहिता 119:16 को देखिए: "मैं तेरी विधियों में खुशी मनाऊँगा; मैं तेरे वचन को नहीं भूलूँगा।" क्योंकि भजनकार को परमेश्वर के वचन में खुशी मिलती थी, इसलिए उसने उसे न भूलने का संकल्प लिया। हमें भी यही संकल्प लेने की ज़रूरत है। हमें भी परमेश्वर के प्रति खुद को समर्पित करना चाहिए और यह वादा करना चाहिए कि हम उसके वचन को नहीं भूलेंगे। परमेश्वर से प्रार्थना करने और उसके वचन पर मनन करने से मिलने वाली खुशी से हम जितना ज़्यादा भरेंगे, वह वचन हमारे दिलों में उतनी ही गहराई से बस जाएगा—यह सिर्फ़ दिमागी जानकारी से आगे बढ़कर हमारे अस्तित्व का हिस्सा बन जाएगा। जब ऐसा होगा, तो हम परमेश्वर के वचन को नहीं भूलेंगे, और हम ऐसा जीवन जिएँगे जो उस वचन को दर्शाता हो। जो विश्वासी ऐसा जीवन जीता है, वह प्रभु के विरुद्ध पाप नहीं करेगा।

हम जो यीशु पर विश्वास करते हैं, हमें दुनिया के लोगों के साथ मिलकर पाप नहीं करना चाहिए। जब दुनिया के घरों में पाप का बोलबाला हो, तो मसीही परिवारों को वही पाप नहीं करने चाहिए। जब दुनियावी संस्थाओं में हर तरह के पाप हो रहे हों, तो हमारे चर्च में ऐसे पाप नहीं होने चाहिए। ऐसा होने से रोकने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में बसाए रखना होगा; हमें अपने दिलों को उससे भरना होगा। हमें यह पक्का करना होगा कि हम परमेश्वर के वचन को न भूलें, और प्रार्थना, मनन और उस मनन से मिली समझ को दूसरों के साथ बाँटने से मिलने वाली खुशी और आनंद को थामे रखें। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में बसाए रखें और इस तरह उसके विरुद्ध पाप करने से बचें।

“ताकि मैं आपके विरुद्ध पाप न करूँ”

“मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में छिपा रखा है, ताकि मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूँ” (भजन संहिता 119:11)।

यीशु पर विश्वास करने वाला कोई भी ईमानदार ईसाई प्रभु के विरुद्ध पाप नहीं करना चाहता। फिर भी, हम अक्सर खुद को अपराध-बोध, निराशा और हताशा के दलदल में फँसा हुआ पाते हैं, क्योंकि हम ऐसे पाप करते हैं जिन्हें हम करना नहीं चाहते। हम ऐसे पाप क्यों करते हैं जिन्हें हम नहीं चाहते? हम परमेश्वर के वचन का पालन करने में क्यों असफल हो जाते हैं—जबकि हम ऐसा करना चाहते हैं—और इसके बजाय ऐसे पाप कर बैठते हैं जिनकी हम इच्छा नहीं करते? इसका कारण हमें रोमियों 7:13–25 में मिल सकता है। वह कारण है “वह पाप जो मुझमें बसा है” (पद 17, 20)। अपने मन से परमेश्वर की व्यवस्था की सेवा करने की इच्छा रखते हुए भी अपने शरीर से पाप की व्यवस्था की सेवा करते हुए देखकर, प्रेरित पौलुस ने स्वीकार किया, “मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ!” (पद 25)। ठीक यही हमारी स्थिति है: हम वह अच्छा काम नहीं कर पाते जो हम करना चाहते हैं और इसके बजाय वह बुरा काम कर बैठते हैं जिससे हम नफरत करते हैं (पद 15, 19)। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? हमें अपने प्रभु यीशु मसीह की ओर देखना चाहिए (पद 25)। ऐसा करते हुए, हमें अपनी ज़िम्मेदारी को ईमानदारी से पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। वह ज़िम्मेदारी और कुछ नहीं, बल्कि प्रभु के विरुद्ध पाप न करना है। आखिर यह कैसे संभव है?

आज के अंश—भजन संहिता 119:9–16—के संदर्भ में, चार ऐसी बातें हैं जिन्हें हमें अमल में लाना चाहिए यदि हम परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में छिपाना चाहते हैं और प्रभु के विरुद्ध पाप करने से बचना चाहते हैं।

पहला, हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

भजनकार ने पूरे मन से प्रभु की खोज की (पद 10)। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह प्रभु की आज्ञाओं से भटकना नहीं चाहता था (पद 10)। इसलिए, उसने प्रभु से प्रार्थना की और विनती की, "मुझे अपनी विधियाँ सिखा" (पद 12)। हमें भी परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमें अपना वचन सिखाए। हमें नम्र भाव और सीखने की तत्परता के साथ परमेश्वर से अपना वचन सिखाने के लिए गंभीरता से विनती करनी चाहिए। कभी-कभी, जिन वचनों का मैंने प्रचार किया है या सिखाया है, वे ही मेरे अपने अंतर्मन को चुभने लगते हैं। उन पलों में, मुझे एहसास होता है कि मैंने खुद को सिखाने में लापरवाही बरती है। मुझे लगता है कि मुझे परमेश्वर के वचन रूपी आध्यात्मिक आईने में अपने दिल और जीवन को ध्यान से देखने की आदत डालनी चाहिए। प्रभु मुझे याद दिलाते हैं कि दूसरों को सिखाने से पहले मुझे खुद को अच्छी तरह सिखाना होगा। मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि मैं नम्रता से शिक्षा ग्रहण करने वाला बनूँ। मेरी इच्छा है कि मैं परमेश्वर से प्रार्थना करने की अच्छी आदत डालूँ ताकि उनके वचन से मुझे अच्छी शिक्षा मिल सके।

दूसरी बात, हमें परमेश्वर के वचन पर मनन करना चाहिए।

भजनकार ने प्रभु के नियमों पर मनन किया और उनके मार्गों पर ध्यान दिया (पद 15)। जब हम परमेश्वर से अपना वचन सिखाने की प्रार्थना करते हैं, तो हम बस चुपचाप बैठे नहीं रह सकते; हमें उस वचन को महत्व देना चाहिए। हमें बाइबल को अपने पास रखना चाहिए। हमें परमेश्वर के वचन पर ध्यानपूर्वक और नियमित रूप से मनन करने की आदत डालनी चाहिए और उस पर पूरा ध्यान देना चाहिए। मेरा मानना है कि "शांत समय" (वचन पर मनन करना) की व्यावहारिक आदत डालना बहुत ज़रूरी है। हमें केवल वचन को सुनने, पढ़ने या अध्ययन करने तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए; हमें उस पर सोचने—और गहराई से सोचने—के अनुशासन की ज़रूरत है। इस अनुशासन के ज़रिए, जब हम भजनकार की तरह दिन-रात परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं, तो हम अपने मन में परमेश्वर के वचन की मदद से पापपूर्ण विचारों का सामना कर सकते हैं और उन पर जीत हासिल कर सकते हैं।

तीसरी बात, हमें परमेश्वर के वचन का पालन करना चाहिए। भजनकार ने प्रभु के मुँह से निकले सभी नियमों को अपने होंठों से घोषित किया (पद 13)। हमें केवल वचन को सीखने और उस पर मनन करने तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए; जैसे-जैसे हम परमेश्वर के वचन को सीखते और उस पर मनन करते हैं, हमें प्रभु की आवाज़ सुननी चाहिए और उसका पालन करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमें प्रभु के वचन का पालन करना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो वह वचन हमारे दिलों की पट्टियों पर अंकित हो जाता है और सचमुच हमारा अपना बन जाता है (पद 56)।

आखिर में, चौथी बात यह है कि हमें परमेश्वर के वचन में आनंद लेना चाहिए।

भजनकार ने स्वीकार किया कि उसे परमेश्वर की गवाही के मार्ग में उतना ही आनंद मिला जितना कि सारी दौलत में (पद 14)। हम वचन का आनंद तब महसूस करते हैं जब हम प्रार्थना के ज़रिए उसे सीखते और उस पर मनन करते हैं, और उस प्रक्रिया में हमसे बात करने वाली परमेश्वर की आवाज़ का पालन करते हैं। जब हमारे पास परमेश्वर के वचन की यह खुशी होगी, तो हम परमेश्वर के वचन को नहीं भूलेंगे (पद 16)।

प्रभु के विरुद्ध पाप करने से बचने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में संजोकर रखना चाहिए। इसके लिए, हमें प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के वचन को सीखना और उस पर मनन करना चाहिए। इस प्रक्रिया के द्वारा परमेश्वर हमें जो सिखाते हैं, हमें उस वचन का पालन करना चाहिए। इसलिए, हमें परमेश्वर के वचन की मिठास का अनुभव करके आनंदित होना चाहिए।

आध्यात्मिक ईंधन

"मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में छिपा रखा है, ताकि मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूँ" (भजन संहिता 119:11); "मेरी यही संपत्ति है: कि मैं तेरे नियमों का पालन करूँ" (भजन संहिता 119:56)।

आज सुबह जब मैं प्रार्थना सभा के लिए निकला, तो मुझे थोड़ी घबराहट महसूस हुई। पहले भी मुझे घबराहट का सामना करना पड़ा था जब चर्च की वैन, जिसमें मैं सवार था, ईंधन खत्म होने के कारण रुक गई थी; आज, अपनी कार चलाते समय, मैंने देखा कि ईंधन गेज की सुई 'खाली' (empty) होने के संकेत के पास थी। इसलिए, गाड़ी चलाते हुए मैंने प्रार्थना की कि प्रभु मुझे हाईवे 2 से बाहर निकलने और आर्को (Arco) गैस स्टेशन तक पहुँचने में मदद करें। शुक्र है, आर्को स्टेशन पर ईंधन भरवाने के बाद, मैं आसानी से गति बढ़ा सका और सुरक्षित रूप से चर्च पहुँच गया।

आज सुबह के अनुभव पर विचार करते हुए, मैंने प्रार्थना सभा के दौरान भजन संहिता 119:11 और 56 की आयतें साझा कीं। भजनकार ने परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में संजोकर रखा था (आयत 11)। उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने से बचने के लिए उस वचन को अपने भीतर बसाए रखा। उस वचन के प्रति आज्ञाकारिता का जीवन—यही भजनकार की "संपत्ति" थी (आयत 56)। दूसरे शब्दों में, भजनकार आध्यात्मिक ईंधन से भरा हुआ था। नतीजतन, जब पाप के प्रलोभन सामने आए, तो वह उनसे दूर भागने में सक्षम रहा—ठीक वैसे ही जैसे गति बढ़ाने के लिए एक्सीलरेटर दबाया जाता है—क्योंकि उसने खुद को वचन के मार्गदर्शन में चलने दिया।

फिर भी, जब मैं सोचता हूँ कि मैं भजनकार की तरह वचन के साथ अपने जीवन की यात्रा में गति क्यों नहीं बढ़ा पाता, तो मुझे एहसास होता है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं ज़रूरत पड़ने पर अपने आध्यात्मिक ईंधन को फिर से नहीं भरता—या उसकी नई आपूर्ति प्राप्त नहीं करता। मैं अक्सर सोचता हूँ कि क्या मैं अपने विश्वास के जीवन में जल्दबाजी कर रहा हूँ—यहाँ-वहाँ सेवा करने में इतना व्यस्त कि मुझे पता ही नहीं चलता कि मैंने कितना आध्यात्मिक ईंधन खर्च कर दिया है—ठीक वैसे ही जैसे बिना ईंधन गेज की जाँच किए एक हफ़्ते तक कार चलाना, यह जाने बिना कि कितना ईंधन बचा है। जब मैं परमेश्वर के जीवित और सक्रिय वचन—अपने आध्यात्मिक ईंधन—को ग्रहण करता हूँ और उसे अपने जीवन में अपनाकर सचमुच अपना बनाता हूँ, तो मेरा आध्यात्मिक टैंक भर जाता है, जिससे मैं गति बढ़ा पाता हूँ और दुनिया के कई प्रलोभनों से बच पाता हूँ; मेरा मानना है कि ऐसा न कर पाने का कारण उसी आध्यात्मिक ईंधन की कमी है। एक और ज़रूरी बात यह है कि मेरे पास किस *तरह* का आध्यात्मिक ईंधन है। उदाहरण के लिए, जब भी मैं अपनी कार में ईंधन भरवाता हूँ, तो मैं लगभग हमेशा "रेगुलर अनलेडेड" (regular unleaded) चुनता हूँ क्योंकि यह सबसे सस्ता विकल्प है। हालाँकि, मुझे याद है कि जब मैं एरिज़ोना में अपने ससुर से मिलने के लिए लंबी दूरी की यात्रा कर रहा था, तो मैंने "प्रीमियम अनलेडेड" (premium unleaded) का इस्तेमाल किया था; मेरी पत्नी ने इसका सुझाव दिया था, क्योंकि बेहतर क्वालिटी लंबी दूरी की ड्राइविंग के लिए ज़्यादा सही रहती है। फिर भी, एक और ऊँचा ग्रेड है: "सुपर अनलेडेड" (super unleaded)। चूँकि इसकी कीमत प्रति गैलन ज़्यादा होती है, इसलिए मैंने शायद ही कभी इसका इस्तेमाल किया हो। मेरा मानना है कि हमारे आध्यात्मिक ईंधन को भी इसी तरह से बांटा जा सकता है। सबसे सस्ता विकल्प, "रेगुलर अनलेडेड," एक ऐसी आध्यात्मिक स्थिति को दिखाता है जहाँ व्यक्ति परमेश्वर के वचन को केवल बौद्धिक रूप से जानता है—यानी परमेश्वर के वचन को केवल दिमाग में जमा जानकारी की तरह मानता है। "प्रीमियम अनलेडेड"—एक ऊँचा ग्रेड—एक ऐसी स्थिति को दिखाता है जहाँ व्यक्ति वचन के ज़रिए अनुग्रह पाता है और उसे लागू करने की कोशिश करता है, फिर भी अक्सर लड़खड़ाता और गिरता है; ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आध्यात्मिक जड़ें उतनी गहरी नहीं होतीं। आखिर में, मेरा मानना है कि "सुपर अनलेडेड"—गैसोलीन का सबसे ऊँचा ग्रेड—उस बदलाव का प्रतीक हो सकता है जो परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में लागू करने से आता है; यह एक ऐसे जीवन को दिखाता है जिसकी जड़ें गहरी हैं और जो फल देता है। मुझे लगता है कि भजनकार का आध्यात्मिक ईंधन "सुपर अनलेडेड" जैसा था—कुछ ऐसा जिसे उसने परमेश्वर के वचन को सक्रिय रूप से

लागू करके अपना बनाया था। शायद इसीलिए उसने महसूस किया कि वचन उसकी आत्मा को नई जान दे रहा है।

आज जब मैंने देखा कि मेरी कार का फ्यूल गेज लगभग खाली था, तो मुझे घबराहट हुई। प्रार्थना करते समय, मुझे भजनकार की बात याद आई जब वह अपनी आत्मा से पूछता था, "तू मेरे भीतर क्यों बेचैन है?" (भजन संहिता 42:5, 11; 43:5)। जब आध्यात्मिक ईंधन कम हो जाता है, तो आत्मा स्वाभाविक रूप से बेचैन और निराश हो जाती है। मैंने सीखा है कि अपने आध्यात्मिक ईंधन के स्तर को बार-बार जाँचते रहना और चेतावनी का संकेत मिलने पर उसे फिर से भरना कितना ज़रूरी है—या इससे भी बेहतर, चेतावनी मिलने से पहले ही प्रभु से अपनी आपूर्ति को पहले से ही भर लेना। मुझे पूरा भरोसा है कि अगर मैं अपने आध्यात्मिक टैंक को सबसे अच्छे "आध्यात्मिक गैसोलीन" से भर लूँ, तो जब भी प्रलोभन मेरी ओर बढ़ेंगे, मेरे पास आगे बढ़ने और उनसे बचने की गति होगी। जैसे कार को नियमित और लगातार ईंधन भरने की ज़रूरत होती है, वैसे ही मैं भी अपने आध्यात्मिक टैंक को हमेशा सबसे अच्छी क्वालिटी के आध्यात्मिक ईंधन—परमेश्वर के वचन—से भरना चाहता हूँ। फिर, जब दुनिया के प्रलोभनों का सामना करना पड़े, तो मैं परमेश्वर के वचन की शक्ति पाकर ठीक वैसे ही "भाग" सकता हूँ जैसे यूसुफ भागा था। आज सुबह मनन करने, वचन का प्रचार करने और प्रार्थना करने के बाद—और अब इसे लिखते हुए और गहराई से सोचते हुए—मैं परमेश्वर के वचन का पालन करके अपनी आत्मिक टंकी को बेहतरीन "आत्मिक ईंधन" से भरने की कोशिश कर रहा हूँ।

जीवन का मकसद

[भजन संहिता 119:17–24]

अमेरिका की जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के सोशल साइंटिस्ट्स ने एक नेशनल मेंटल हेल्थ एजेंसी के साथ मिलकर 48 यूनिवर्सिटीज़ के 7,948 स्टूडेंट्स पर दो साल तक एक स्टडी की। उन्होंने यह सवाल पूछा: "अभी आपके लिए सबसे ज़रूरी क्या है?" नतीजों से पता चला कि जहाँ 16% लोगों ने कहा "पैसा कमाना," वहीं 78% लोगों ने कहा, "अपने जीवन का मकसद खोजना।" इस सर्वे का नतीजा यह निकला कि इंसान असल में भौतिक चीज़ें नहीं, बल्कि जीवन का मकसद खोजना चाहता है (स्रोत: इंटरनेट)। सच में, आपके जीवन का मकसद क्या है? आप किस मकसद के लिए जी रहे हैं? हमारे जीवन का असली मकसद क्या है? वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म सवाल 1 में यह कहता है: [सवाल 1] इंसान का मुख्य मकसद क्या है? [जवाब] इंसान का मुख्य मकसद परमेश्वर की महिमा करना और हमेशा उसका आनंद लेना है (1 कुरिन्थियों 10:31; रोमियों 11:36; भजन संहिता 73:24–26; यूहन्ना 17:22–24)। तो फिर, हम ऐसा जीवन कैसे जिएं जिससे परमेश्वर की महिमा हो?

आज के हिस्से में, भजन संहिता 119:17 के दूसरे भाग में, हमें बताया गया है कि जीवन का मकसद पूरा करने के लिए—परमेश्वर की महिमा करना और हमेशा उसका आनंद लेना—हमें परमेश्वर के वचन को मानना होगा: "...मैं तेरे वचन को मानूंगा।" तो फिर, हम परमेश्वर के वचन को कैसे मान सकते हैं? मैं आज के हिस्से, भजन संहिता 119:17–24 के आधार पर तीन बातों के ज़रिए इस पर विचार करना चाहूंगा।

पहली बात, परमेश्वर के वचन को मानने के लिए, हमारी आत्मा की आँखें खुलनी चाहिए। भजन संहिता 119:18 देखें: "मेरी आँखें खोल ताकि मैं तेरी व्यवस्था में अद्‌भुत बातें देख सकूं।" भजनकार ने परमेश्वर से प्रार्थना की, "मेरी आँखें खोल।" क्यों? ताकि वह प्रभु की व्यवस्था में अद्‌भुत बातें देख सके। परमेश्वर से प्रेरित

होकर, भजनकार ने उसके वचन के अद्भुत स्वभाव को समझने की कोशिश की (पार्क युन-सन)। हम इस धरती पर परदेसी हैं (पद 19)। यह धरती हमारा घर नहीं है; हम एक बेहतर घर—स्वर्ग के राज्य—की ओर यात्रा कर रहे हैं। यहाँ परदेसी के तौर पर रहते हुए, हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम इस धरती पर रहते हुए परमेश्वर के वचन का पालन करें—जो स्वर्ग में रहते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम स्वर्ग के नागरिक हैं (फिलिप्पियों 3:20)। इसलिए, धरती पर रहने वाले स्वर्ग के नागरिकों के तौर पर, हमें उस नागरिकता के योग्य जीवन जीना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमें परमेश्वर के वचन के अनुसार जीना चाहिए। फिर भी, यहाँ रहते हुए, हम परमेश्वर के वचन को तब तक सच में नहीं देख सकते जब तक हमारी आत्मिक आँखें न खुलें। आत्मिक आँखें खुले बिना, हम इस धरती पर परमेश्वर के काम को होते हुए नहीं देख सकते। इसलिए, भजनकार परमेश्वर से विनती करता है, "मुझसे अपनी आज्ञाओं को न छिपा" (भजन संहिता 119:19)। हमें भी परमेश्वर से यही प्रार्थना करनी चाहिए। जब परमेश्वर अपनी दया से हमारी प्रार्थना का उत्तर देते हैं और हमारी आत्मिक आँखें खोलते हैं, तो हम उनके वचन के अद्भुत रहस्यों को देख पाएँगे। नतीजतन, हम परमेश्वर के वचन का पालन करने के लिए समर्थ हो जाएँगे। जीवन का यही उद्देश्य है: परमेश्वर के वचन का पालन करना!

दूसरी बात, परमेश्वर के वचन का पालन करने के लिए, हमारे दिलों में उसके लिए एक गहरी और तड़पा देने वाली चाहत होनी चाहिए।

भजन संहिता 119:20 को देखें: "मेरा मन हर समय तेरे नियमों के लिए तड़पता रहता है।" भजनकार कहता है कि उसका मन परमेश्वर के वचन के लिए लगातार और तीव्र चाहत से व्याकुल—या थक—गया है। भजनकार ने परमेश्वर के वचन के लिए कितनी गहरी चाहत रखी होगी कि उसे दिल की ऐसी तड़प महसूस हुई? क्या हम भी, भजनकार की तरह, परमेश्वर के वचन के लिए लगातार इतनी तड़प रखते हैं कि हमारा दिल उस चाहत से दुखने लगे? हालाँकि इस सवाल का जवाब "हाँ" *होना चाहिए*, लेकिन ऐसा लगता है कि अक्सर ऐसा नहीं होता। इसका एक कारण यह है कि हमारी आत्मिक आँखें पूरी तरह से खुली नहीं हैं; परमेश्वर के वचन की अद्भुत प्रकृति को न समझ पाने के कारण, हम दिल की उस तीव्रता के साथ उसके लिए तड़पते नहीं हैं। हम अपने जीवन की यात्रा के लिए परमेश्वर के वचन की परम आवश्यकता को पूरी तरह से नहीं समझते हैं। नतीजतन, हम अहंकार में पड़ जाते हैं और प्रभु की आज्ञाओं से भटक जाते हैं (पद

21)। और क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं से दूर रहते हैं, इसलिए प्रभु हमें डांटता है (पद 21)। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? हमें नम्रता से पछतावा करना चाहिए और प्रभु के पास लौटना चाहिए। हमें उसके वचन को मानने के लिए खुद को फिर से समर्पित करना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो—इस दुनिया में परदेसी होने के नाते—हम परमेश्वर के वचन में सुकून पा सकते हैं (पद 23)। हम दुश्मनों के सताए जाने के बीच भी उसके वचन में शांति पा सकते हैं (पद 22—"निंदा और अपमान")। इसलिए, हमें जीवन की मुश्किलों और परेशानियों से अपने दिल को टूटने देने की ज़रूरत है—ताकि हम उस पवित्र तड़प को महसूस कर सकें। उस टूटेपन में, भजनकार की तरह, हम परमेश्वर के वचन को मानने के लिए और भी ज़्यादा जोश के साथ उसकी चाहत रखेंगे।

तीसरी बात, परमेश्वर के वचन को मानने के लिए, हमें उसमें मिलने वाली खुशी का अनुभव करना चाहिए।

भजन संहिता 119:24 को देखें: "तेरी गवाहियां मेरी खुशी और मेरे सलाहकार हैं।" भजनकार मानता है कि प्रभु का वचन "मेरी खुशी और मेरे सलाहकार" है। इस दुनिया में, जहाँ हम बस परदेसी हैं, हमारी खुशी क्या है? धरती पर प्रभु के अलावा चाहने लायक कोई और नहीं है (73:25)। इस धरती पर हमें जिस चीज़ की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है, वह प्रभु के मुँह से निकले वचन के अलावा और कुछ नहीं है (व्यवस्थाविवरण 8:3)। केवल प्रभु—हमारा चरवाहा—ही हमें इस दुनिया से, जहाँ हम बस परदेसी हैं, स्वर्ग के राज्य यानी आने वाली दुनिया तक ले जा सकता है। हम ऐसे लोग हैं जिन्हें प्रभु की अगुवाई की बहुत ज़रूरत है; हमें उसके मुँह से निकले वचनों से निर्देशित होने की ज़रूरत है। इसलिए, भजनकार की तरह, हमें परमेश्वर के वचन को अपनी खुशी और अपना सलाहकार बनाना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें उसके वचन में मिलने वाली खुशी का स्वाद चखना होगा और उसके वचन की शक्ति का अनुभव करना होगा। इसके लिए ज़रूरी है कि हम नम्रता और विश्वास के साथ परमेश्वर के वचन का पालन करें। जब हम उसके वचन को मानते हैं तो हम परमेश्वर की शक्ति का अनुभव कर सकते हैं, और ऐसा करने पर हमें एहसास होगा कि उसका पालन करने में कितनी खुशी मिलती है।

हमारे जीवन का मकसद परमेश्वर की महिमा करना और हमेशा उसका आनंद लेना है। ऐसा जीवन जीने के लिए हमें परमेश्वर के वचन का पालन करना होगा, और उसके वचन का पालन करने के लिए हमें प्रार्थना

करनी होगी। हमें पूरे दिल से परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमारे मन की आँखें खोल दे (वचन 18)। हमें परमेश्वर के वचन के लिए ऐसी गहरी तड़प रखनी चाहिए जो हमारी आत्मा को भर दे (वचन 20), और हमें उससे मिलने वाले आनंद का अनुभव करना चाहिए। तभी हम उसके वचन का पालन कर पाएँगे। मेरी प्रार्थना है कि हम सब परमेश्वर के वचन का पालन करके उसकी महिमा करें और उसका आनंद लें।

मैं प्रभु के वचन की ओर दौड़ूँगा!

[भजन संहिता 119:25–32]

एक बार एक पादरी चर्च के एक सदस्य के घर उनसे मिलने गए। हालाँकि घर के अंदर किसी के होने के साफ़ संकेत मिल रहे थे, लेकिन दरवाज़ा नहीं खुला, चाहे उन्होंने कितनी भी बार खटखटाया हो। अपमानित महसूस करते हुए और यह सोचकर कि उन्हें नज़रअंदाज़ किया जा रहा है, पादरी ने प्रकाशितवाक्य 3:20 का हवाला देते हुए एक नोट छोड़ा: "देखो, मैं दरवाज़े पर खड़ा खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरी आवाज़ सुनकर दरवाज़ा खोलता है, तो मैं अंदर आऊँगा और उसके साथ भोजन करूँगा, और वह मेरे साथ।" अगले रविवार, चर्च के सदस्य ने उसी तरह पादरी को एक नोट वापस दिया। उस वचन को देखने पर, पादरी ज़ोर से हँस पड़े। वह वचन उत्पत्ति 3:10 था: "मैंने तुझे बाग में सुना, और मैं डर गया क्योंकि मैं नंगा था; इसलिए मैं छिप गया" (इंटरनेट)। इस किस्से को पढ़कर और हँसते हुए, हम एक मूल्यवान सबक सीख सकते हैं: वचन को जीवन में लागू करने का महत्व। मैंने एक बार एक लेख पढ़ा जिसमें एक पादरी ने कहा था कि आज कोरियाई चर्च के सामने सबसे बड़ी समस्या सिद्धांतों की अधिकता है, लेकिन उन्हें लागू करने में कमज़ोरी है। बाइबिल के ज्ञान की प्रचुरता, हर चर्च में बाइबिल अध्ययन सत्रों की भरमार और बेहतरीन ईसाई किताबों की विशाल श्रृंखला के बावजूद, स्वर्गीय शक्ति की कमी है। इसे पढ़कर मुझे यह एहसास हुआ कि उस स्वर्गीय शक्ति का अनुभव करने के लिए, हमें वचन को लागू करना होगा। तो, वचन को लागू करने का क्या अर्थ है? "यदि मनन करने का अर्थ है वचन को मज़बूती से थामे रखना और उसे हमारे विचारों और दिलों में गहराई तक जड़ जमाने और प्रभाव डालने देना, तो 'लागू करना' उस वचन को हमारे जीवन में ठोस रूप से प्रकट करने की प्रक्रिया है" (इंटरनेट)। आज, भजन संहिता 119:25–32 और "मैं प्रभु के वचन की ओर दौड़ूँगा" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं हमारे जीवन में तीन सबक लागू करना चाहता हूँ। मैं आपको दो प्रार्थना अनुरोधों और एक प्रतिबद्धता के आह्वान के साथ चुनौती भी देना चाहता हूँ।

प्रभु के वचन की ओर दौड़ने के संबंध में पहली प्रार्थना विनती यह है: "हे प्रभु, मुझे अपना वचन समझने में मदद कर!"

भजन संहिता 119:27 को देखें: "मुझे अपनी आज्ञाओं का मार्ग समझा; ताकि मैं तेरे अद्भुत कामों पर मनन कर सकूँ।" मैंने सोचा कि इस दौर को कैसे बताया जाए। मुझे मरकुस 4:12 की बातें याद आईं: "...सुनते तो हैं, पर समझते नहीं..." यह दौर समझने में नाकाम क्यों है? इसलिए क्योंकि यह दौर बुराई के करीब जा रहा है। अय्यूब 28:28 का आखिरी हिस्सा देखिए: "...प्रभु का डर मानना ही समझदारी है, और बुराई से दूर रहना ही समझ है।" याकूब की किताब के नज़रिए से देखें तो, हम ईसाई परमेश्वर के वचन को समझने में इसलिए नाकाम रहते हैं क्योंकि हम दुनिया की बुराइयों से दूषित हो गए हैं (याकूब 1:27)। हालाँकि हमारी "धर्मी आत्माओं" को इस दुनिया के बुरे कामों को रोज़ देखकर और सुनकर परेशान होना चाहिए (2 पतरस 2:8), लेकिन हम उस परेशानी को महसूस नहीं कर पाते क्योंकि हम दुनिया की बुराइयों में लिप्त हैं। दूसरे शब्दों में, क्योंकि हमने खुद को दुनियादारी से नहीं बचाया, इसलिए हम परमेश्वर का वचन दर्जनों—यहाँ तक कि सैकड़ों—बार सुनते हैं, फिर भी उसका मतलब नहीं समझ पाते। भविष्यवक्ता यशायाह, यशायाह 44:18 में इस समझ की कमी का कारण बताते हैं: "वे न तो जानते हैं और न ही समझते हैं; क्योंकि उसने उनकी आँखें बंद कर दी हैं, ताकि वे देख न सकें, और उनके दिल बंद कर दिए हैं, ताकि वे समझ न सकें।" आज के हिस्से—भजन संहिता 119—में भजनकार एक अंधेरे दौर में जी रहा था और प्रभु के नियमों के तरीके को समझना चाहता था (भजन 119:27)। दुनिया की बुराइयों से घिरे होने के बावजूद—उन्हें देखने, सुनने और खुद अनुभव करने के बावजूद (2 पतरस 2:8)—उसने बुराई के रास्ते पर चलने के बजाय परमेश्वर से प्रार्थना करना चुना, और उसे अपनी प्रार्थना का जवाब मिला (भजन 119:26)। प्रार्थना के ज़रिए अपने मुश्किल भविष्य को परमेश्वर को सौंपने के बाद, भजनकार को ईश्वरीय जवाब मिला। नतीजतन, उसने कहा: "मुझे अपने नियम सिखा" (पद 26)। इस प्रार्थना के जवाब के ज़रिए प्रभु के वचन को और गहराई से समझने की इच्छा रखते हुए, उसने दुनिया के बुरे तरीकों का पालन करने के बजाय प्रभु के नियमों के तरीके को समझने और उसके रास्ते पर चलने की कोशिश की। इसका कारण क्या था? इसका कारण यह था कि वह प्रभु के अद्भुत कामों पर मनन करना चाहता था (पद 27)। उन्होंने प्रभु के नियमों के तरीके को समझने की कोशिश

की ताकि वे प्रभु के वचन की सुंदरता—उसके "अद्भुत कामों"—पर मनन कर सकें और उसका आनंद ले सकें (पार्क युन-सन)।

मेरी दिली इच्छा है कि यह साल ऐसा हो जिसमें हम प्रभु के वचन की सुंदरता का अनुभव करें। जब हम पवित्र शास्त्र को पढ़ते, सुनते और उस पर मनन करते हैं, तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा हमें हर एक आयत की मिठास को महसूस करने की समझ दे। मुझे पूरी उम्मीद है कि हम भी भजन संहिता 119:103 में कही गई बात को कह पाएँगे: "हे प्रभु, तेरे वचन मुझे कितने मीठे लगते हैं, वे मेरे मुँह में शहद से भी ज़्यादा मीठे हैं!"

जब हम प्रभु के वचन की ओर बढ़ते हैं, तो दूसरी प्रार्थना यह होती है: "मुझे अपने वचन के अनुसार स्थापित कर!"

भजन संहिता 119:28 को देखें: "मेरा प्राण भारीपन के कारण पिघल रहा है; मुझे अपने वचन के अनुसार मज़बूत [स्थापित] कर।" भजनकार ने यह दूसरी प्रार्थना किन हालात में की थी? उसने परमेश्वर से अपने वचन के अनुसार सहारा पाने की प्रार्थना तब की थी जब उसका प्राण ज़ुल्म के बोझ तले पिघल रहा था। यह प्रभु के वचन से सहारा पाने की एक गुहार थी, जब वह मुसीबत और परेशानी से जूझ रहा था (पार्क युन-सन) और दुख के कारण उसका प्राण उदास था (कैल्विन)। दूसरे शब्दों में, जब वह मुश्किलों से घिरा था और उसकी ताकत पानी की तरह खत्म हो गई थी, तो उसने परमेश्वर से विनती की कि वह अपने वचन की शक्ति से उसकी कमज़ोर आत्मा को मज़बूत करे। भारी मन हमारी आत्मा को पिघला देता है और उसे खत्म कर देता है, ठीक वैसे ही जैसे मोमबत्ती पिघलकर अपना वजूद खो देती है। पछतावा करने वाली आत्मा का मन पाप के कारण आँसुओं में पिघल जाता है; फिर भी, ऐसी पछतावा करने वाली आत्मा का मन भी मुसीबत के दबाव में पिघल सकता है। ठीक ऐसे ही पलों में इंसान का मन करता है कि वह परमेश्वर के सामने गिड़गिड़ाकर अपने दिल की बात कहे। हमें इस प्रार्थना के संदर्भ के बारे में आयत 25 में और जानकारी मिलती है: "मेरा प्राण धूल से चिपका हुआ है।" इसका मतलब है कि भजनकार ने परमेश्वर से तब प्रार्थना की थी जब दुनिया की चीज़ों की व्यर्थता के कारण उसके प्राणों से उम्मीद खत्म हो रही थी। तो फिर, उसने क्या प्रार्थना की थी? वह थी, "अपने वचन के अनुसार मुझे फिर से जीवित कर" (आयत 25)। यह कैसी प्रार्थना

है—एक ऐसे भजनकार की ओर से जो सचमुच परमेश्वर के वचन की मिठास को समझता था! वह जानता था कि दुनिया में कड़वाहट के अलावा कुछ नहीं है; इसलिए, जब मुसीबत, परेशानी और दुनिया की व्यर्थता के बीच उम्मीद खत्म हो रही थी, तब भी उसने अपनी उम्मीद परमेश्वर के वचन पर टिकाए रखी। कारण यह था कि उसे विश्वास था कि केवल परमेश्वर का वचन ही उसकी कमज़ोर और निराश आत्मा को फिर से जीवित और सशक्त बना सकता है।

मैं परमेश्वर के वचन की शक्ति में विश्वास करता हूँ। मेरा मानना है कि परमेश्वर के वचन में हमारी रुकी हुई और निराश आत्माओं को ऊपर उठाने की शक्ति है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर का वचन स्वयं जीवित और सक्रिय है (इब्रानियों 4:12)। भले ही हम कलीसिया—मसीह की देह—की सेवा करते हुए थक जाएँ और गिर पड़ें, हमें मत्ती 16:18 में किए गए वादे को मज़बूती से थामे रखना चाहिए: "मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा..." हमें उस वादे वाले वचन से अपने दिलों के लिए शक्ति प्राप्त करनी चाहिए। उस वादे के माध्यम से, प्रभु हमें ऊपर उठाते हैं और हमें उनकी कलीसिया की निष्ठापूर्वक सेवा करने में सक्षम बनाते हैं। हम अपने जीवन में नीतिवचन 24:16 की सच्चाई का अनुभव करते हैं: "क्योंकि धर्मी सात बार गिरता है, फिर भी वह उठ खड़ा होता है..." मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि आने वाला वर्ष ऐसा हो जिसमें हम प्रभु के वादों से और अधिक मज़बूत हों। भजनकार की तरह, जब इस व्यर्थ और अर्थहीन दुनिया में मुसीबत और पीड़ा के कारण हमारे दिल और आत्माएँ पानी की तरह पिघल जाएँ, तब भी हम अपनी उम्मीद पूरी तरह से परमेश्वर के वचन पर रखने की कृपा का अनुभव करें और ठीक उसी समय उसकी शक्ति को देखें जब हम सबसे कमज़ोर हों।

प्रभु के वचन की ओर बढ़ने का एक व्यावहारिक तरीका यह संकल्प लेना है: "मैं खुद को प्रभु के वचन के प्रति समर्पित करूँगा।"

भजनकार ने खुद को वचन के प्रति कैसे समर्पित किया? हम तीन तरीकों पर विचार कर सकते हैं।

(1) भजनकार ने निष्ठा का मार्ग चुना।

आज के वचन, भजन संहिता 119:30 को देखें: "मैंने निष्ठा का मार्ग चुना है; मैंने तेरे नियमों को अपने सामने रखा है।" भले ही उसके सामने विश्वासघात के कई रास्ते थे, भजनकार ने उन्हें नहीं चुना। इसलिए, वह परमेश्वर से प्रार्थना करता है: "मुझे धोखे के रास्ते से दूर रख..." (पद 29)। हम अपने जीवन में किस तरह के चुनाव करते हैं? बात दो विकल्पों में से एक पर आकर रुकती है: सच्चाई का रास्ता या झूठ का रास्ता। फिर भी, दुख की बात यह है कि बहुत से ईसाई सच्चाई के रास्ते और झूठ के रास्ते में भ्रमित हो जाते हैं। वे झूठ के रास्ते को—जिसे उन्होंने चुना है और जिस पर वे चल रहे हैं—सच्चाई का रास्ता समझ बैठते हैं, और झूठ को ही सच मान लेते हैं। परमेश्वर का वचन स्पष्ट है। इसके अलावा, लोग झूठ का रास्ता इसलिए चुनते हैं—भले ही वे सच्चाई के रास्ते और झूठ के रास्ते में अंतर कर सकते हों—क्योंकि उन्होंने सच्चाई का रास्ता चुनने की क्षमता खो दी है। भजनकार, जिसने परमेश्वर के वचन को समझा, उसकी मिठास का अनुभव किया और उससे खुद को मज़बूत होते हुए महसूस किया, उसने वफ़ादारी का रास्ता चुना। उसने उस रास्ते को अपने जीवन का आधार बनाया (पद 30)। भजनकार की तरह, हमें भी वफ़ादारी का रास्ता चुनना चाहिए और उस पर चलने का संकल्प लेना चाहिए।

(2) भजनकार प्रभु के वचन से मज़बूती से जुड़ा रहा।

आज का वचन देखें, भजन 119:31: "मैं तेरी गवाहियों से चिपटा रहता हूँ; हे प्रभु, मुझे शर्मिंदा न होने दे।" हम मसीहियों को दुनिया के लोगों के सामने शर्मिंदगी का सामना क्यों करना पड़ता है? ऐसा इसलिए है क्योंकि हम परमेश्वर के वचन के अनुसार नहीं जीते हैं। उदाहरण के लिए, हमें शर्मिंदगी उठानी पड़ती है क्योंकि हम ईमानदारी का रास्ता चुनने के बजाय धोखेबाज़ी वाला व्यवहार करते हैं (पद 29–30)। इसी तरह, जब हम परमेश्वर के वचन का पालन करते हुए जीवन जीने में असफल रहते हैं, तो हमें दुनिया के सामने निश्चित रूप से शर्मिंदगी का सामना करना पड़ता है। ऐसी शर्मिंदगी से बचने की इच्छा से, भजनकार प्रभु के वचन से मज़बूती से जुड़ा रहा (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, वह वफ़ादारी से परमेश्वर के वचन से जुड़ा रहा। जब हम, भजनकार की तरह, प्रभु के वचन के और करीब आते हैं, तो हम झूठ से दूर हो पाते हैं।

(3) भजनकार ने प्रभु की आज्ञाओं के रास्ते पर चलने का संकल्प लिया।

आज का वचन देखें, भजन 119:32: "मैं तेरी आज्ञाओं के रास्ते पर दौड़ूँगा, क्योंकि तू मेरे दिल को बड़ा करेगा।" भजनकार ने झूठ के रास्ते के बजाय ईमानदारी का रास्ता चुना था और प्रभु के वचन से मज़बूती से जुड़ा हुआ था। इस भरोसे के साथ कि प्रभु उसके दिल को बड़ा करेंगे, उसने घोषणा की कि वह प्रभु की आज्ञाओं के रास्ते पर दौड़ेगा। यहाँ, "दौड़ने" शब्द का अर्थ है एक केंद्रित, सीधी दिशा में तेज़ी और जोश के साथ आगे बढ़ना। प्रभु उस व्यक्ति के दिल को और बड़ा करेंगे जो उनके वचन पर ध्यान केंद्रित करता है और उसकी ओर दौड़ता है (जैसे, 1 राजा 4:29)। किस चीज़ ने भजनकार को प्रभु की आज्ञाओं के रास्ते पर दौड़ने में सक्षम बनाया? कारण यह है कि प्रभु ने उसके दिल को आज़ाद कर दिया है (भजन 119:32)।

हमें प्रभु के वचन की ओर दौड़ना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। हमें परमेश्वर से सच्चे दिल से प्रार्थना करनी चाहिए कि वे हमें अपना वचन समझने में मदद करें। हमें यह भी प्रार्थना करनी चाहिए कि वे हमें अपने वचन के अनुसार स्थापित करें। जब हम इस तरह प्रार्थना करते हैं, तो हमें खुद को प्रभु के वचन के प्रति समर्पित करना चाहिए। हमें वफ़ादारी का रास्ता चुनने, उनके वचन पर मज़बूती से बने रहने और उनकी आज्ञाओं के रास्ते पर चलने के लिए खुद को समर्पित करना चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि ऐसी प्रार्थना और समर्पण हम दोनों में हो।

“मैं इसे आखिर तक निभाऊंगा”

[भजन संहिता 119:33–40]

कल रात, CBS के 9 बजे के समाचार में, मैंने हर्मोसा बीच के एक निवासी को—दूसरे प्रतिभागियों के साथ—आर्थिक मुश्किलों का सामना कर रहे स्कूलों की मदद के लिए 24 घंटे तक बिना रुके रेतीले समुद्र तट पर 3.36 मील की दूरी तक आगे-पीछे दौड़ते हुए देखा। उन्हें देखकर, मैंने सोचा कि रेत पर दौड़ना कितना मुश्किल काम होगा; अगर एक स्टैंडर्ड ट्रैक पर बिना रुके 24 घंटे दौड़ना ही बहुत मुश्किल है, तो रेत पर ऐसा करने से शरीर पर कितना ज़ोर पड़ेगा। फिर भी, उनका एक साफ़ मकसद था—पिछले साल, प्रतिभागियों ने 83.04 मील दौड़कर एक वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया था और दान में करोड़ों डॉलर जुटाए थे—और उस लक्ष्य को पाने के लिए उन्हें इतनी कड़ी मेहनत करते देखना सचमुच प्रेरणादायक था। उस दृश्य ने मुझे उस विश्वास की दौड़ के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया जो हम, ईसाई होने के नाते, दौड़ते हैं। जैसा कि हम जानते हैं, विश्वास की दौड़ 100 मीटर की दौड़ नहीं बल्कि लंबी दूरी की मैराथन है; ज़ाहिर है, हम यह गहराई से सोचने के लिए प्रेरित होते हैं कि उस मैराथन को फ़िनिश लाइन तक पूरा करने के लिए हमें क्या करना चाहिए।

भजन संहिता 119:33 में, भजनकार कहता है: “हे प्रभु, मुझे अपने नियमों का मार्ग सिखा, और मैं इसे आखिर तक निभाऊंगा।” दूसरे शब्दों में, उसने प्रभु की आज्ञाओं—उसके वचन—को आखिर तक मानने का संकल्प लिया। यह असल में कैसे संभव है? परमेश्वर के वचन को आखिर तक मानने के लिए हमें क्या करना चाहिए? हम तीन बातों पर विचार कर सकते हैं:

पहला, हमें परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने में खुशी मिलनी चाहिए।

भजन संहिता 119:35 को देखें: "मुझे अपनी आज्ञाओं के मार्ग पर चला, क्योंकि मुझे इसमें खुशी मिलती है।" भजनकार ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसे प्रभु की आज्ञाओं के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करे, क्योंकि उसे उनमें खुशी मिलती थी। इसका कारण यह था कि उसे प्रभु की आज्ञाओं के मार्ग में खुशी मिलती थी। इसका मतलब है कि भजनकार ने उस खुशी का आनंद लिया जो परमेश्वर देता है, क्योंकि परमेश्वर ने उसे सिखाया (वचन 33), उसे अपना वचन समझने के काबिल बनाया (वचन 34), और उसे पूरे दिल से उस समझे हुए वचन का पालन करने की शक्ति दी (वचन 34)। जब हम इस खुशी का अनुभव करते हैं, तो हम परमेश्वर के वचन को आखिर तक मान पाते हैं। जब यह खुशी हमारे अंदर होती है, तो हम विश्वास की दौड़ पूरी कर सकते हैं।

जब मैं अपनी सबसे छोटी बेटी, ये-उन (Ye-eun) को देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि वह हमारे चार लोगों के परिवार में बाकी लोगों से थोड़ी अलग है। ये-उन उन कामों को खुशी, आनंद और पूरे मन से करती है जो उसे पसंद हैं। कल, समर स्कूल से लौटने के बाद, उसने मेरी पत्नी और मुझसे पूछा कि क्या वह उस स्कूल में ट्रांसफर ले सकती है। ऐसा लगता है कि उसका मानना है कि जिस स्कूल में वह अभी समर स्कूल जा रही है, वह बेहतर है। उसे वह स्कूल इसलिए पसंद है क्योंकि वहाँ उसे कुकिंग क्लास बहुत अच्छी लगती है; वह वहाँ के टीचर की भी बहुत तारीफ करती है। ये-उन को इतना खुश और आनंदित देखकर बहुत अच्छा लगा, और मैंने बस परमेश्वर का धन्यवाद किया। अपनी सबसे छोटी बेटी को देखकर मुझे वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म (Westminster Shorter Catechism) के पहले सवाल का जवाब याद आया। मुझे एहसास हुआ कि हम अक्सर उस जवाब के पहले हिस्से पर ही बहुत ज़्यादा ध्यान देते हैं। हम सब जानते हैं कि ईसाइयों को परमेश्वर की महिमा के लिए जीना चाहिए। लेकिन, जिस हिस्से को हम अक्सर नज़रअंदाज़ कर देते हैं, वह है "हमेशा परमेश्वर का आनंद लेना।" ऐसा भी लगता है कि हमें ठीक से पता ही नहीं है कि परमेश्वर का आनंद *कैसे* लिया जाए। फिर भी, जब हम परमेश्वर की महिमा के लिए जीते हैं और साथ ही उसका आनंद भी लेते हैं, तो हम अपने सामने रखी विश्वास की दौड़ को आखिर तक पूरा कर पाते हैं। जब हमें परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने में खुशी मिलती है, तो हम उसके वचन को आखिर तक मान पाएँगे।

दूसरी बात, हमें परमेश्वर के वचन से नई शक्ति मिलनी चाहिए।

भजन संहिता 119:37 और 40 को देखिए: "मेरी आँखों को बेकार चीज़ों से हटा ले; अपने रास्ते के अनुसार मेरे जीवन की रक्षा कर... मैं तेरी आज्ञाओं को पाने के लिए तरसता हूँ; अपनी धार्मिकता में मेरे जीवन की रक्षा कर।" जब मुसीबत और सतावट के कारण हमारी आत्मा धूल से चिपक जाती है (पद 25), या जब ज़ुल्म के बोझ तले हमारी आत्मा पिघलने लगती है (पद 28), तो हमें परमेश्वर के वचन के ज़रिए अपनी आत्मा में नई जान और ताज़गी महसूस करनी चाहिए। तभी हम आखिर तक परमेश्वर के वचन पर चल सकते हैं।

व्यक्तिगत रूप से, जब भी मेरी आत्मा निराशा में डूबी है, प्रभु ने मुझे अपने वादों के ज़रिए फिर से उठाया है और मुझे यहाँ तक पहुँचने में मदद की है। एक ऐसे खिलौने की तरह जो गिरने के बाद फिर से खड़ा हो जाता है, मैं भी डटा रहा क्योंकि प्रभु ने मुझे पाँच रोटियों और दो मछलियों वाली घटना (यूहन्ना 6:1–15) पर मनन करने के लिए प्रेरित किया, जिससे मेरी आत्मा में फिर से उम्मीद जगी। परमेश्वर ने मेरी आत्मा में नई जान डाली और मुझे सही राह दिखाई; यह भरोसा दिलाते हुए कि वह—जो सच्चा है और खुद का इनकार नहीं कर सकता (2 तीमुथियुस 2:13)—निश्चित रूप से अपनी बात पूरी करेगा (गिनती 23:19)। जब मेरी आत्मा उदास और बेचैन थी (भजन संहिता 42:5, 11; 43:5), तो परमेश्वर ने अपने जीवित और असरदार वचन (इब्रानियों 4:12) का इस्तेमाल करके मेरी आत्मा को वापस प्रभु की ओर मोड़ा, जिससे मेरे मन में उनके लिए तड़प और उनमें उम्मीद जगी। इसलिए, मुझे पूरी उम्मीद है कि सच्चा और अपना वादा निभाने वाला परमेश्वर मुझे आखिर तक उसके वचन को मानने और उस पर चलने में मदद करेगा।

तीसरी और आखिरी बात, हमें परमेश्वर का भय मानना चाहिए।

भजन संहिता 119:38 को देखिए: "अपने सेवक से किया अपना वादा पूरा कर, ताकि तेरा भय माना जाए।" भजनकार ने परमेश्वर से विनती की कि वह उसे दिया गया वादा पूरा करे। उसकी इच्छा थी कि उस वादे के पूरे होने के बाद वह परमेश्वर का भय माने। परमेश्वर के वादे के पूरा होने के ज़रिए—एक ऐसा वादा जो प्रभु का भय मानने के लिए प्रेरित करता है—वह यह पक्का करना चाहता था कि उसका मन लालच की ओर न मुड़े (पद 36)। इसके अलावा, परमेश्वर के भय के कारण, उसकी इच्छा थी कि उसकी आँखें बेकार चीज़ों

को न देखें (पद 37)। परमेश्वर के भय से प्रेरित होकर, भजनकार बिना दाएं या बाएं मुड़े आखिर तक परमेश्वर के वचन पर चलना चाहता था।

मैं इसी एक रास्ते पर आखिर तक चलना चाहता हूँ। मैं उस सही रास्ते पर चलना चाहता हूँ जो प्रभु मेरे लिए चाहते हैं, और अपनी नज़रें सिर्फ़ उन्हीं पर टिकाए रखना चाहता हूँ, बिना दाएं या बाएं मुड़े। फिर भी, आत्मा तो तैयार है, पर शरीर कमज़ोर है (मत्ती 26:41), और मैं अक्सर शैतान की चालों को महसूस करता हूँ जो मुझे गुमराह करने की कोशिश करती हैं। मैं मानता हूँ कि शैतान की चालों में वही लालच और बेकार की चीज़ें होती हैं जिनका ज़िक्र भजनकार ने आज के वचन में किया है। कई बार मैं खुद को बेकार और व्यर्थ चीज़ों को देखते हुए पाता हूँ, जो आँखों की लालसा से प्रेरित होती हैं (1 यूहन्ना 2:16)। जब मैं अपनी आँखों को बेकार चीज़ों—ऐसी चीज़ें जिनका मेरे लिए कोई मूल्य या फ़ायदा नहीं है—पर टिका हुआ पाता हूँ और अपने दिल में उनके लिए लालच देखता हूँ, तो मैं अक्सर खुद से बहुत निराश होता हूँ। जब मैं सोचता हूँ कि मैं बार-बार एक पवित्र परमेश्वर के ख़िलाफ़ ऐसे पाप क्यों करता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि समस्या की जड़ यह है कि मैं परमेश्वर से डरता नहीं हूँ। क्योंकि मैं परमेश्वर से नहीं डरता, इसलिए मैं बुराई से नफ़रत नहीं कर पाता। इसलिए, आज के वचन की आयत 38 में भजनकार ने जो प्रार्थना की है, वही मेरी भी सच्ची प्रार्थना है: "अपने सेवक के लिए अपने वचन को पक्का कर, जिससे तेरे प्रति आदर-भाव पैदा हो।" मैं भजनकार की तरह परमेश्वर का डर मानना चाहता हूँ, और चाहता हूँ कि वे उन वादों को पूरा करें जो उन्होंने मुझसे किए हैं। इसके अलावा, परमेश्वर के प्रति आदर के कारण, मैं लालच, व्यर्थ चीज़ों और हर तरह के पाप से आज़ाद होना चाहता हूँ—ऐसी चीज़ें जो मुझे धार्मिकता के रास्ते पर आखिर तक चलते हुए दाएं या बाएं भटकने पर मजबूर कर सकती हैं।

जब मैं बूढ़ा हो जाऊँ और अपनी ज़िंदगी को पीछे मुड़कर देखूँ, तो मैं उस सही रास्ते को देखना चाहता हूँ जिस पर मैं प्रभु के साथ चला था (नीतिवचन 16:31)। ख़ास तौर पर, मैं प्रेरित पौलुस की तरह यह कहना चाहता हूँ: "मैंने अच्छी लड़ाई लड़ी है, मैंने दौड़ पूरी की है, और मैंने विश्वास बनाए रखा है" (2 तीमुथियुस 4:7)। मैं आखिर तक परमेश्वर के वचन को मानकर और उसका पालन करके उनकी महिमा करना चाहता हूँ। इसके लिए, मैं परमेश्वर के वचन का पालन करने में और भी ज़्यादा खुशी महसूस करना चाहता हूँ और यह गहराई से जानना चाहता हूँ कि कैसे उनका वचन मेरी आत्मा को नया जीवन देता है। ईश्वर के प्रति श्रद्धा

के कारण, मैं बुराई से दूर रहना चाहता हूँ और पूरी तरह से प्रभु के मार्ग पर समर्पित जीवन जीना चाहता हूँ—ऐसा जीवन जो ईश्वर के वचन का पालन करता हो।

आज़ादी से चलो!

[भजन 119:41-48]

पादरी चार्ल्स स्पर्जन ने आज़ादी के सबसे ऊँचे रूप के बारे में इस तरह कहा: "आज़ादी का सबसे ऊँचे रूप हमेशा परमेश्वर के मन को जानने और उसके जैसा बनने की कोशिश करना है।" तो फिर, यह कैसे मुमकिन है? सबसे पहले, हमें परमेश्वर के मन को जानना होगा। हमें उनके वचन के ज़रिए परमेश्वर के दिल को जानना होगा। ऐसा करने में, हमें उनकी आज्ञाओं का पालन करना होगा। सबसे ऊँचे आज़ादी का जीवन जीने का यही मतलब है—यानी, परमेश्वर के वचन के ज़रिए उनके दिल को जानकर और उस वचन का पालन करके वह सच्ची आज़ादी का आनंद लेना जो वह देते हैं।

आज के हिस्से में, भजन 119:45, भजन लिखने वाला कहता है: "मैं आज़ादी से घूमूँगा, क्योंकि मैंने तेरे उपदेशों को ढूँढ़ा है।" भजन लिखने वाला कहता है, "मैं आज़ादी से चलूँगा।" वह यह कैसे कह पाया? और आप और मैं आज़ादी से कैसे चल सकते हैं? आज का टेक्स्ट दो तरीके बताता है।

सबसे पहले, आज़ादी से चलने के लिए, हमें प्रभु के उपदेशों को ढूँढ़ना होगा।

भजन 119:45 देखें: "मैं आज़ादी से घूमूंगा, क्योंकि मैंने तेरे उपदेशों को खोजा है।" भजन लिखने वाले ने प्रभु के उपदेशों को खोजा। यहाँ, "उपदेशों" का मतलब है वह दिशा, नियम, या सिद्धांत और शिक्षाएँ जिनका वाचा समुदाय के सभी लोगों को पालन करना चाहिए। इसका मतलब है कि जब हम बाइबिल के सिद्धांतों को खोजते हैं और उन्हें अमल में लाते हैं, तो हम सच्ची आज़ादी का आनंद ले सकते हैं। हालाँकि, चुनौती बाइबिल के सिद्धांतों और गैर-बाइबिल सिद्धांतों के बीच अंतर करने में है। ऐसा लगता है कि हम अक्सर इन

दो सिद्धांतों को कन्फ्यूज़ कर देते हैं। मेरा मानना है कि इस कन्फ्यूज़न का एक कारण यह है कि हम परमेश्वर के वचन के ज़रिए उनके दिल को नहीं जान पाते हैं। दूसरे शब्दों में, जब हम परमेश्वर के वचन को ठीक से नहीं सीख पाते हैं, तो हम उनकी इच्छा के बजाय अपनी इच्छा को प्राथमिकता देते हैं, जिससे हम बाइबिल के सिद्धांतों को गैर-बाइबिल सिद्धांतों के साथ कन्फ्यूज़ हो जाते हैं। इसलिए, सच्ची आज़ादी से चलने के लिए, हमें उनके वचन के ज़रिए परमेश्वर के दिल को जानना होगा; उनके दिल को समझकर, हम उनकी इच्छा को समझ सकते हैं और उसका पालन कर सकते हैं। इसे पाने के लिए, हमें सबसे पहले प्रभु के नियमों को ईमानदारी से खोजना होगा।

दूसरा, आज़ादी से चलने के लिए, हमें प्रभु की आज्ञाओं से प्यार करना चाहिए।

भजन 119:47–48 पर गौर करें: "मैं तेरे आदेशों से, जिनसे मैं प्यार करता हूँ, खुश रहूँगा, और तेरे आदेशों की ओर अपने हाथ उठाऊँगा, जिनसे मैं प्यार करता हूँ, और तेरे नियमों पर ध्यान करूँगा।" प्रभु के आदेशों से प्यार करने का क्या मतलब है? हम इस पर चार तरीकों से सोच सकते हैं:

(1) प्रभु के आदेशों पर खुशी से ध्यान करना।

जो लोग प्रभु के आदेशों से प्यार करते हैं, वे उनके वचन पर ध्यान करते हैं क्योंकि उन्हें इसमें खुशी मिलती है, और उन्हें ध्यान करने के काम में ही खुशी मिलती है। संक्षेप में, जो लोग प्रभु के आदेशों से प्यार करते हैं, उन्हें उन पर ध्यान करने में खुशी मिलती है।

(2) प्रभु के वचन पर भरोसा करना।

भजन 119:42 पर गौर करें: "इस तरह जो मुझे बुरा-भला कहता है, उसे मेरे पास जवाब होगा, क्योंकि मैं तेरे वचन पर भरोसा करता हूँ।" अगर हम प्रभु के आदेशों से प्यार करते हैं, तो हम उन पर भरोसा करते हैं। इसलिए, भजन लिखने वाले की तरह, हम प्रार्थना करते हैं, "हे प्रभु, तेरी दया मुझ पर भी आए—तेरे वचन के अनुसार तेरा उद्धार" (पद 41)। भजन लिखने वाले की तरह, हम प्रभु के वादे किए गए वचन पर भरोसा करते

हैं, भले ही वे हमें बुरा-भला कहें (पद 39)। (3) प्रभु की आज्ञाओं से प्यार करने का मतलब है सच्चाई की बात को अपने पास रखना।

भजन 119:43 देखें: "सच्चाई की बात मेरे मुँह से पूरी तरह न निकाल, क्योंकि मैंने तेरे नियमों पर भरोसा रखा है।" भजन लिखने वाला प्रभु की बात को अपने होठों के पास रखना चाहता था, जबकि उसमें अपनी उम्मीद रखता था। दूसरे शब्दों में, वह चाहता था कि उसके होंठ और दिल प्रभु की बात से चले। इस तरह सच्चाई की बात से चलने वाला दिल आज़ाद दिल होता है।

(4) प्रभु की आज्ञाओं से प्यार करने का मतलब है उन्हें मानना।

भजन 119:44 देखें: "मैं तेरे नियम को हमेशा, हमेशा और हमेशा मानूंगा।" प्रभु की आज्ञाओं के रास्ते पर आखिर तक चलने के लिए (आयत 33), इंसान को हमेशा, हमेशा के लिए उनके नियम का पालन करना चाहिए (आयत 44)। सच्ची आज़ादी में चलना ही प्रभु की आज्ञाओं के रास्ते पर चलना है। उन आज्ञाओं को मानना और उनका पालन करना ही आज़ादी में चलने का राज़ है। जो उन आज्ञाओं से प्यार करता है, उनका पालन करता है और उनका पालन करता है, वही प्रभु से प्यार करता है (यूहन्ना 14:21)।

यीशु ने यूहन्ना 8:32 में कहा: "तुम सच को जानोगे, और सच तुम्हें आज़ाद करेगा।" मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप और मैं सच के ज़रिए परमेश्वर के दिल को जानकर और उनकी मर्ज़ी के मुताबिक उनकी आज्ञाओं का पालन करके आज़ादी में चल सकें।

खुद को दिलासा दें!

[भजन संहिता 119:49–56]

आज मैंने कोरियाई-अमेरिकी ईसाई अख़बार में एक खबर पढ़ी कि PCUSA डेनोमिनेशन (संप्रदाय) का एक बड़ा कोरियाई चर्च बंट गया है। PCA डेनोमिनेशन में—जिससे मेरा अपना चर्च जुड़ा है—एक बड़ा कोरियाई चर्च पहले ही बंट चुका है, जिसके कारण एक ही इमारत में दो अलग-अलग समूह पूजा कर रहे हैं; मुझे इस बड़े PCUSA चर्च के भविष्य की भी चिंता है। यह सचमुच दिल तोड़ने वाली सच्चाई है, खासकर उन भाई-बहनों के बारे में सोचकर जिन्हें इससे दुख पहुँचेगा। हाल ही में, मैं अक्सर सोचता हूँ कि क्या चर्च ऐसी जगह बन गया है जहाँ लोग ठीक होने के बजाय और ज़ख्मी हो जाते हैं। शायद इसीलिए मुझे ज़ोरदार ढंग से महसूस होता है कि हमें "दिलासा देने वालों" की बहुत ज़रूरत है—बरनबास जैसे लोग, जिनके दिल प्यार से भरे हों।

लंबे समय से, मैंने व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर से प्रार्थना की है कि वह मुझे "ऐसा दिलासा देने वाला बनाए जिसका दिल प्यार से भरा हो।" हालाँकि, जब हमारे चर्च की इंग्लिश मिनिस्ट्री के एक प्यारे प्रचारक ने इस्तीफ़ा दिया, तो मुझे इतना दर्द और दुख हुआ कि मैंने किसी से भी दिलासा लेने से इनकार कर दिया। मुझे लगता है कि मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मेरा दिल बहुत ज़ोर से दुख रहा था और मैं बहुत तकलीफ में था। आज के बाइबल पाठ के संदर्भ में उस अनुभव को याद करते हुए, मैं खुद से पूछता हूँ: "एक पादरी खुद को दिलासा देने के लिए ज़रूरी 'आध्यात्मिक आत्मनिर्भरता' कैसे विकसित कर सकता है?" यह इसलिए ज़रूरी है क्योंकि अगर कोई पादरी अपने अंदर दिलासा नहीं पा सकता, तो वह प्रभु द्वारा सौंपी गई मंडली को प्रभावी ढंग से दिलासा नहीं दे सकता।

मुझे लगता है कि जब कोई व्यक्ति गहरे दर्द और तकलीफ में होता है, तो वह अक्सर किसी से भी दिलासा लेने से इनकार कर देता है। जब वह दर्द और तकलीफ इतनी बढ़ जाती है कि हम उसे सह नहीं पाते, तो निराशा में हार मान लेने का असली खतरा पैदा हो जाता है। तकलीफ और ज़ख्मों की हालत में बने रहने का खतरा होता है—यहाँ तक कि इससे खुद को और ज़्यादा हताशा, निराशा और दर्द पहुँच सकता है। फिर भी, हैरानी की बात है कि आज के पाठ में भजनकार ने "मुसीबत" (पद 50) के बीच भी "खुद को दिलासा देने" (पद 52) का तरीका ढूँढ लिया। इसलिए, जब मैं भजन संहिता 119:49–56 पर फिर से मनन करता हूँ, तो मैं इस बात पर गौर करना चाहता हूँ—इस लेख के आधार पर—कि हम खुद को दिलासा देने की आध्यात्मिक क्षमता कैसे विकसित कर सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे भजनकार ने किया था।

सबसे पहले, खुद को दिलासा देने की इस आध्यात्मिक क्षमता को विकसित करने के लिए, हमें एक बात से सख्ती से बचना होगा: हमें घमंडी लोगों को अपनी आत्मा से बात करने की इजाज़त नहीं देनी चाहिए।

भजनकार बताते हैं कि घमंडियों ने "उनका बहुत मज़ाक उड़ाया" (पद 51)। घमंडियों का बुरा इरादा या मकसद क्या था? वह यह था कि भजनकार को प्रभु के वचन से दूर कर दिया जाए (पद 51)। शैतान की यह कितनी भयानक चाल है। जैसे कोई बुरा इंसान मछली को मारने के लिए उसे उसके टैंक से बाहर निकाल सकता है, वैसे ही शैतान घमंडियों का इस्तेमाल करके हमारा ज़ोरदार मज़ाक उड़ाता है, ताकि हमें परमेश्वर के वचन के "टैंक" से बाहर खींच सके और हमें बर्बाद कर सके। जब मैं इस तरह के ज़ोरदार मज़ाक के स्वभाव के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे भजन संहिता 14:1 याद आती है: "मूर्ख अपने मन में कहता है, 'कोई परमेश्वर नहीं है'..." खासकर जब हम मुसीबत में होते हैं—जैसे भजनकार थे—तो हम अक्सर बेवकूफी में घमंडियों के मज़ाक को दोहराते हुए अपनी आत्मा से ऐसे सवाल पूछते हैं, "अगर परमेश्वर सच में है, तो वह मुझे इस दुख से क्यों नहीं बचाता?" या "मुझे इतना दर्द और ज़ख्म क्यों सहना पड़ रहा है?" ऐसी स्थितियों में, हम अक्सर खुद को पीड़ित महसूस करने लगते हैं। हम दूसरों, अपनी परिस्थितियों और यहाँ तक कि खुद परमेश्वर को भी दोष देते हैं। इन मुश्किलों के बीच, हमारा अहंकार सामने आ जाता है; हम परमेश्वर के अस्तित्व पर शक करते हैं, उसकी मदद को ठुकरा देते हैं, और अपने दुख और परिस्थितियों को अपनी आत्मा पर हावी होने देते हैं। आखिरकार, हम देखते हैं कि मुसीबत के समय हम शैतान की चालों में फँस जाते हैं और प्रभु के वचन से दूर हो जाते हैं। फिर भी, उस समय हम अक्सर इसे देख नहीं पाते, बल्कि दर्द,

तकलीफ़ और आँसुओं में खोकर अपना समय गुज़ारते हैं। मैं अपने निजी अनुभव से कह रहा हूँ; एक प्यारे साथी के इस्तीफ़े के बाद, मैंने अपने दिन दर्द और आँसुओं से भरे हुए, सुन्न अवस्था में बिताए। हालाँकि मैंने प्रार्थना और पवित्र शास्त्र पढ़ने का जीवन बनाए रखने की पूरी कोशिश की, लेकिन मैं वचन को सच में अपने दिल पर राज करने देने में नाकाम रहा। मैं बस तीन हफ़्तों तक एक तरह की सुन्न अवस्था में रहा। असल में, शैतान दर्द, तकलीफ़ और परेशान करने वाली घटनाओं का इस्तेमाल हमें प्रभु के वचन को भुलाने के लिए करता है, जिससे एक तरह की "आध्यात्मिक भूलने की बीमारी" (spiritual dementia) हो जाती है। नतीजतन, हम वचन से दूर हो जाते हैं और खुद को निराशा और दुख में और गहरा धकेल देते हैं। हमें सतर्क रहना होगा और शैतान को अहंकारी लोगों के मज़ाक का इस्तेमाल करके हमारी आत्मा से बात करने से रोकना होगा। तभी हम खुद को दिलासा देने के लिए आध्यात्मिक आंतरिक शक्ति पैदा कर सकते हैं।

आखिरकार, खुद को दिलासा देने के लिए इस आध्यात्मिक आंतरिक शक्ति को विकसित करने के लिए हमें तीन ज़रूरी काम करने होंगे:

(1) सबसे पहले, हमें प्रभु के वादों को याद रखना होगा (भजन संहिता 119:49, 52, 55)।

भजनकार ने प्रभु के "पुराने नियमों" (पद 52) को याद करके खुद को दिलासा दिया। यहाँ, "पुराने नियमों" का मतलब परमेश्वर का वचन है—वह सच्चाई जो लंबे समय से कायम है और खुद को साबित कर चुकी है (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, भजनकार ने परमेश्वर के वादे को याद किया—एक ऐसा वचन जो उसके पिछले जीवन में सच और अटूट साबित हुआ था। उदाहरण के लिए, उस वादे पर विचार करें जो प्रभु ने हमारे स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च को मत्ती 16:18 में दिया था: "मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा।" मुसीबत के समय इस वादे को याद करने से हमें इस बात पर विचार करने का मौका मिलता है कि कैसे, पिछले एक साल और पाँच महीनों में, प्रभु ने वफ़ादारी से स्युंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च—जो उनका शरीर है—को कई तरह से बनाया है। अतीत को पीछे मुड़कर देखने और अपने वादों को पूरा करने में परमेश्वर की वफ़ादारी पर विचार करने से, भजनकार को अपनी आत्मा के लिए सच्चा दिलासा मिला। इस प्रकार, उसने स्वीकार किया, "मेरे दुख में यही मेरा दिलासा है, क्योंकि तेरे वचन ने मुझे जीवन दिया है" (भजन संहिता 119:50)।

अक्सर ऐसा लगता है कि हम बस आगे की ओर भाग रहे हैं, और सिर्फ़ इस बात पर ध्यान दे रहे हैं कि आगे क्या है। जब हम भविष्य के लक्ष्यों और सफलता के लिए प्रयास करते हैं, तो हमें कठिनाइयों या मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है—ठीक वैसे ही जैसे भजनकार ने किया था। उन पलों में, हमें रुकने और सोचने की ज़रूरत है: "शायद प्रभु इस कठिनाई का इस्तेमाल मुझे एक पल के लिए रुकने, पीछे मुड़कर देखने और उन निशानों को याद करने के लिए कर रहे हैं कि कैसे उन्होंने वफ़ादारी से अपने वादों को पूरा किया है।" हम बहुत भाग-दौड़ भरी ज़िंदगी जीते हैं, और लगातार सिर्फ़ भविष्य की ओर देखते रहते हैं। इसीलिए मेरा मानना है कि प्रभु जो मुश्किलें आने देते हैं, वे फायदेमंद हो सकती हैं (पद 71)। यह पीछे मुड़कर देखने का समय है—बीते समय के दर्दनाक घावों या बुरी यादों में खोए रहने के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर की वफादार कृपा के निशानों को याद करने के लिए। खासकर "रात" के समय (पद 55)—जब दर्द और तकलीफ की लहरें हमारे दिलों को अंधेरे में डुबोने लगती हैं—तब हमें प्रभु के वादे को और भी ज़्यादा याद रखना चाहिए और उसे थामे रहना चाहिए। (2) दूसरी बात, खुद को दिलासा देने के लिए आध्यात्मिक अंदरूनी ताकत पाने के लिए, हमें वादे के वचन को मजबूती से थामे रखना चाहिए और सच्चे दिल से परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

आज के हिस्से में, भजन 119:49 में, भजनकार प्रभु से प्रार्थना करता है: "अपने सेवक से किए उस वचन को याद रख, जिस पर तूने मुझे आशा दिलाई है।" वह प्रभु के वादे को याद करके और उसे थामे रखकर उनसे गुहार लगाता है: "प्रभु, आपको वह वादा याद है न जो आपने मुझसे किया था? कृपया, मैं आपसे उस वचन को याद रखने के लिए कहता हूँ।" बेशक, प्रभु हमसे किए गए वादों को कभी नहीं भूलते; बस अक्सर हम ही उन्हें भूल जाते हैं जब हम मुश्किल में होते हैं। भजनकार ने परमेश्वर से अपना वादा याद रखने की प्रार्थना इसलिए की क्योंकि उसकी मौजूदा हालत में, वही वादा उस आशा का स्रोत था जो परमेश्वर ने उसमें जगाई थी। एक तरह से, परमेश्वर के वादों की रोशनी और भी ज़्यादा आशा के साथ चमकती है जब हम बहुत ज़्यादा मुश्किल और तकलीफ में होते हैं—ठीक वैसे ही जैसे घने अंधेरे की पृष्ठभूमि में रोशनी सबसे ज़्यादा चमकती है। इसलिए, भजनकार की तरह, हमें भी बहुत दर्द और तकलीफ के समय प्रभु के सामने झुकना चाहिए और आगे बढ़ते हुए उनके वादों को दोहराना चाहिए। गहरी तकलीफ से यह महसूस करने के बाद कि कहीं और कोई आशा नहीं है, हमें यह मानना और स्वीकार करना चाहिए कि हमारी एकमात्र आशा प्रभु और उनके वचन में है, और हमें केवल उन्हीं के पास आना चाहिए। हमें पवित्र आत्मा के काम का अनुभव करना

चाहिए—वचन के ज़रिए—जो अकेलेपन के बगीचे में हमारी अकेली आत्माओं को फिर से जीवित और नया करता है, जब हम आशा के शब्दों के साथ उनसे प्रार्थना करते हैं और कोई और चीज़ हमें दिलासा नहीं दे सकती।

(3) आखिर में, तीसरा ज़रूरी कदम है प्रभु के नियमों (आज्ञाओं) का पालन करना। दूसरे शब्दों में, संदेश यह है कि बहुत ज़्यादा मुश्किल हालात में भी, हमें प्रभु के नियमों से दूर नहीं हटना चाहिए, बल्कि उन्हें और भी वफादारी से मानना चाहिए। शैतान की चालों का सामना करने का तरीका है परमेश्वर के वचन को मजबूती से थामे रखना—उसके करीब आना और उसके वादों पर भरोसा रखना—साथ ही प्रार्थना के ज़रिए आध्यात्मिक शक्ति पाना और उस वचन को असल ज़िंदगी में लागू करने की पहल करना। भजनकार ने प्रभु के नियमों का पालन किया (पद 55, 56)। इसके अलावा, वह मानता है कि इन नियमों का पालन करना ही उसकी असली संपत्ति है (पद 56)। कोई व्यक्ति परमेश्वर के वचन को अपनी संपत्ति कैसे बना सकता है? जो वचन हम सुनते और सीखते हैं, उसे हम सचमुच अपना कैसे बना सकते हैं? यह आसान है: हमें उस वचन के अनुसार जीना चाहिए। भजनकार ने मुश्किलों के बीच भी ठीक यही किया। हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि आराम के समय में, हम अक्सर अपने पापी स्वभाव के बहकावे में आ जाते हैं और प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने में नाकाम रहते हैं।

ज़िंदगी के सफ़र में, हमें कई तरह की मुश्किलों, तकलीफ़ों और ज़ख्मों का सामना करना पड़ता है—हम दूसरों को भी तकलीफ़ देते हैं और खुद भी उन्हें झेलते हैं। यह बात खासकर कलीसिया यानी मसीह की देह में सच साबित होती है, जहाँ हम अक्सर एक-दूसरे को दुख पहुँचाते और ज़ख्मी करते हैं। लेकिन दुख की बात है कि हम इन "मुश्किलों" को किसी फ़ायदेमंद चीज़ में बदलने में नाकाम रहते हैं। इसकी वजह यह है कि हममें खुद को दिलासा देने के लिए भजनकार जैसी आध्यात्मिक अंदरूनी ताकत की कमी होती है। हमें खुद को दिलासा देने की उसी आध्यात्मिक क्षमता को विकसित करना चाहिए। इसलिए, हमें सच्चे दिलासा देने वालों की तरह जीना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे बरनबास ने किया था।

वह प्रभु जो मुझे उम्मीद देता है

“अपने सेवक से कहे गए उस वचन को याद रख, जिस पर तूने मुझे उम्मीद दिलाई है। मेरी मुसीबत में यही मेरा दिलासा है, क्योंकि तेरे वचन ने मुझे जीवन दिया है” (भजन संहिता 119:49–50)।

हमने नए साल का स्वागत किया है। आइए, हम एक-दूसरे को “नया साल मुबारक” कहें। मैं दिल से प्रार्थना करता हूँ कि आने वाला साल हम सभी के लिए—विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के लोगों के लिए—बहुत ज़्यादा खुशी और आनंद लेकर आए। हम उन वैश्विक घटनाओं के बारे में जानते हैं जो शायद नए साल में भी जारी रहेंगी। इसलिए, हो सकता है कि बहुत से लोग आने वाले साल को उम्मीद भरी नज़र से न देखें। असल में, कई लोग शायद इस बात को लेकर परेशान और चिंतित हों कि वे आने वाले साल में कैसे गुज़ारा करेंगे। उनके लिए, नया साल उम्मीद के बजाय निराशा और मायूसी का समय लग सकता है। हालाँकि, जब हम नए साल का स्वागत करते हैं, तो हमें अपनी उम्मीद प्रभु पर रखनी चाहिए। कारण यह है कि, भले ही हमारे जीवन में कई तरह की आर्थिक मुश्किलें आ जाएँ, प्रभु ही वह है जो हमारे अंदर उम्मीद जगाता है।

आज भजन संहिता 119:49 के अंश में, भजनकार कहता है, “तूने मुझे उम्मीद दिलाई है।” हमारे प्रभु ने केवल भजनकार को ही उम्मीद नहीं दी; उसने आपको और मुझे भी एक स्पष्ट और पक्की उम्मीद दी है। प्रभु ने हमें यह उम्मीद कैसे दी? उसने हमें अपना वादा किया हुआ वचन देकर ऐसा किया। बाइबल में परमेश्वर के अनगिनत वादे हैं, और उनमें से कुछ खास वादे ऐसे ज़रूर हैं जिन्हें आप में से हर कोई मज़बूती से थामे हुए है। विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के तौर पर हम जिस वादे को मज़बूती से थामे हुए हैं, वह मत्ती 16:18 में मिलता है: “...मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा।” इस वादे पर सोचते हुए, मैं आज के अंश, भजन संहिता

119:50 में भजनकार की बात दोहरा सकता हूँ: "मेरी मुसीबत में यही मेरा दिलासा है, क्योंकि तेरे वचन ने मुझे जीवन दिया है।" विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च—जो उसका अपना शरीर है—को बनाने के प्रभु के वादे पर मनन करने से मुझे दिलासा मिलता है, चाहे मेरा दिल कितना भी भारी या परेशान क्यों न हो। दूसरे शब्दों में, जब मैं उस परमेश्वर की सच्चाई और भरोसेमंद स्वभाव को देखता हूँ जिसने वह वादा किया था, तो वह वादा ही मेरी निराश और हताश आत्मा में नई जान डाल देता है। नए साल के स्वागत के साथ, मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु आपको और भी मज़बूती से स्थापित करें। मैं यह भी प्रार्थना करता हूँ कि वे आपके परिवारों को मज़बूत और स्थापित करें, जैसा कि उन्होंने वादा किया है। इसके अलावा, मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु आने वाले साल में हमारे विक्ट्री चर्च को मज़बूती से स्थापित करें। हालाँकि खबरों में दुनिया भर में आर्थिक कठिनाइयाँ बढ़ने की बात कही जा रही है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि हम, विक्ट्री परिवार, विश्वास के साथ प्रभु के वादों को थामे रखकर उम्मीद बनाए रखेंगे। इस साल चाहे कैसी भी मुश्किलें या परेशानियाँ आएँ, मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु के वादों (वचन 52) को याद करके आपको सुकून मिले। मैं आपके लिए आशीष की प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु के वचन का काम—हमारी आत्माओं में नई जान डालना और उन्हें आध्यात्मिक रूप से नया करना—इस साल और भी ज़्यादा तेज़ी और भरपूर मात्रा में आगे बढ़े।

परमेश्वर के वचन से जीत हासिल करने वाले मसीही अगुए

[भजन संहिता 119:49–56]

कल, हमारे चर्च के बाइबल सम्मेलन के पहले दिन, परमेश्वर ने गेस्ट स्पीकर के ज़रिए मुझे सही राह दिखाई, ज्ञान दिया और प्रोत्साहित किया। उन्होंने मुझे ऐसे अगुए तैयार करने के विज़न (लक्ष्य) पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया—जैसे बरनबास थे, जो पवित्र आत्मा और विश्वास से भरे एक अच्छे इंसान थे (प्रेरितों के काम 11:25–26)। सिर्फ़ प्रोत्साहन ही नहीं, बल्कि परमेश्वर ने अपने वचन के ज़रिए मुझे दिलासा और हिम्मत दी, और अपनी कृपा से मुझे और भी मज़बूत विश्वास के साथ उस विज़न (जो उन्होंने मुझे और चर्च को दिया था) पर चलने के काबिल बनाया। उनकी कृपा से, मैं मेहनत से काम करना चाहता हूँ—हर इंसान में काबिलियत देखना, होनहार अगुओं को ढूँढना और उन्हें तैयार करने के काम में नम्रता से हिस्सा लेना। मैं खुद को ऐसे मसीही अगुओं को तैयार करने की सेवा में पूरी तरह लगाना चाहता हूँ जो परमेश्वर के वचन की ताकत से आध्यात्मिक लड़ाई में जीत हासिल करते हैं—यानी पाप, इस दुनिया, शैतान और मौत के खिलाफ़ लड़ते हैं। तो, वे मसीही अगुए कौन हैं जो परमेश्वर के वचन से जीत हासिल करते हैं? मैं आज के वचन, भजन संहिता 119:49–56 पर आधारित चार बातों पर सोचना और उनसे सीखना चाहूँगा:

पहली बात, परमेश्वर के वचन से जीत हासिल करने वाले मसीही अगुए परमेश्वर के वचन को ही अपनी "आशा" बनाते हैं।

भजन संहिता 119:49 देखिए: "अपने दास से किए गए अपने वचन को याद रख, क्योंकि तूने मुझे आशा दी है।" भजनकार "मुसीबत" के बीच में था (वचन 50)। घमंडी लोग उसका बहुत मज़ाक उड़ाते थे (वचन 51)। इस मज़ाक का मकसद भजनकार को प्रभु की व्यवस्था से दूर करना था (वचन 51)। इसके अलावा,

भजनकार उन बुरे लोगों की वजह से भी दुखी था जिन्होंने प्रभु की व्यवस्था को छोड़ दिया था (वचन 53)। ऐसी तकलीफ के बीच, उसने प्रभु से प्रार्थना की। अपनी प्रार्थना में, उसने परमेश्वर से विनती की और कहा, "अपने दास से किए गए अपने वचन को याद रख" (वचन 49)। दूसरे शब्दों में, भजनकार ने परमेश्वर से उन वादों को याद करने के लिए कहा जो उसने उससे किए थे। सच्चा और भरोसेमंद परमेश्वर भला उन वादों को कैसे भूल सकता है जो उसने भजनकार से किए थे? अगर भूलना मुमकिन होता, तो भजनकार—एक इंसान—ही होता जो भगवान के दिए वादों को भूल सकता था, न कि खुद भगवान। इसलिए, जब भजनकार मुश्किल में था, तो उसने खुद भगवान के पुराने नियमों को याद किया (पद 52)। उसने रात में भगवान का नाम याद किया और उनके नियम का पालन किया (पद 55)। उसने भगवान के वचन को क्यों याद किया? इसलिए क्योंकि भगवान का वचन ही उसकी "आशा" थी (पद 49)। भगवान का वचन हमारी आशा है।

जब हम दर्द में हों, तो हमें विश्वास के साथ भगवान की ओर देखना चाहिए, जो हमारी "आशा" हैं। जब हम मुश्किल का सामना करें, तो हमें भगवान के वचन को याद करना चाहिए, जो हमारी "आशा" है। हमें उस भरोसेमंद भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए, उनकी ओर देखना चाहिए और उनका इंतज़ार करना चाहिए जो उन वादों को पूरा कर रहे हैं।

दूसरी बात, जो ईसाई नेता भगवान के वचन के ज़रिए जीत हासिल करते हैं, वे उस वचन को अपना "सांत्वना" (comfort) मानते हैं।

भजन संहिता 119:50 को देखें: "मेरी मुसीबत में यही मेरी सांत्वना है, क्योंकि आपके वचन ने मुझे जीवन दिया है।" जब भजनकार मुश्किल में था, तो उसने भगवान के वचन में सांत्वना ढूंढी। इसलिए, उसने भगवान के पुराने नियमों को याद किया और उनमें "सांत्वना पाई" (पद 52)। यहाँ, "पुराने नियम" भगवान के वचन की ओर इशारा करते हैं, जो लंबे समय से सच साबित हुआ है और अटल है (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, भजनकार ने भगवान के वादे वाले वचन को याद किया—एक ऐसा वचन जो सच साबित हुआ था और उसके पिछले जीवन में अटल रहा था। अतीत को याद करके और वादों को पूरा करने में भगवान की वफ़ादारी पर सोच-विचार करके, उसे अपनी आत्मा के लिए सच्ची सांत्वना मिली।

ईसाई नेताओं को खुद को सांत्वना देने की आध्यात्मिक क्षमता विकसित करने की ज़रूरत है। ऐसा करने के लिए, किसी को न केवल भगवान के वादे वाले वचन को "अपनी आशा" बनाना चाहिए, बल्कि—और इससे भी ज़्यादा ज़रूरी—उस वादा निभाने वाले भगवान को "अपनी आशा" बनाना चाहिए जिन्होंने वह वादा किया था (पद 49)। इसके अलावा, किसी को उस भरोसेमंद भगवान के वादे को याद रखना चाहिए—जो "मेरी आशा" हैं—उस वचन को मज़बूती से थामे रखना चाहिए, और विश्वास के साथ भगवान को पुकारना चाहिए। ऐसा करने से, परमेश्वर के वचन के द्वारा—जो परेशान आत्मा को नई जान देता है (पद 50)—हम परमेश्वर की दया और प्रेम को अपने आराम के स्रोत के रूप में अनुभव करते हैं (पद 76)।

तीसरी बात, जो मसीही अगुवे परमेश्वर के वचन के द्वारा जीत हासिल करते हैं, वे उस वचन को "अपना गीत" बना लेते हैं।

भजन संहिता 119:54 पर विचार करें: "मेरे परदेसी होने के घर में तेरे नियम ही मेरे गीत रहे हैं।" अपनी मुश्किलों के बीच, भजनकार ने परमेश्वर के वादे वाले वचन को—जो उसकी उम्मीद और आराम का स्रोत था—"अपना गीत" बनाया और परमेश्वर की स्तुति की। उसने यह स्तुति खास तौर पर "अपने परदेसी होने के घर में" की। एक परदेसी का घर कैसे हो सकता है? भले ही किसी के पास रहने की जगह हो, वह बस कुछ समय के लिए होती है। भजनकार अपने हमेशा के घर—स्वर्गीय राज्य—की ओर देख रहा था। वह परमेश्वर के वचन का पालन करते हुए उस स्वर्गीय घर की यात्रा कर रहा था। और यह तब होता है जब हम परमेश्वर के वचन को अपना गीत बनाते हैं और उसकी स्तुति करते हैं।

हम परदेसी हैं जो अपने स्वर्गीय घर की ओर यात्रा कर रहे हैं। इस दुनिया में रहते हुए—जो बस कुछ समय के लिए रहने की जगह है—हम ऐसे उपासक हैं जो एक बेहतर देश की चाह रखते हैं और मुश्किलों के बीच भी परमेश्वर की स्तुति करते हैं। जब हम उपासना करते हैं, तो हमें परमेश्वर की स्तुति करते समय उस उद्धार के काम को याद रखना चाहिए जो उसने हमारे लिए यीशु मसीह में पहले ही पूरा कर दिया है। इसके अलावा, हमें विश्वास के साथ परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए और यीशु के दोबारा आने की भविष्य की घटना की

उम्मीद रखनी चाहिए। भविष्यद्वक्ता हबक्कूक की तरह, हमें अपने गीतों को प्रार्थनाओं में बदलना चाहिए और परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए (हबक्कूक 3)। जैसे पौलुस और सीलास ने जेल में रहते हुए प्रार्थना और स्तुति के गीत गाते हुए एक चमत्कारिक घटना का अनुभव किया—न केवल जेल से रिहाई पाई, बल्कि जेलर और उसके परिवार को उद्धार पाते हुए भी देखा (प्रेरितों के काम 16:25)—वैसे ही हमें भी परमेश्वर के वादे वाले वचन को अपना गीत बनाकर और अपनी प्रार्थनाएँ उसे सौंपकर उसके अद्भुत उद्धार के काम का अनुभव करना चाहिए।

आखिर में, चौथी बात: जो मसीही अगुवे परमेश्वर के वचन के द्वारा जीत हासिल करते हैं, वे उस वचन को अपनी निजी संपत्ति बना लेते हैं।

भजन संहिता 119:56 को देखें: "मेरा यही हिस्सा है: कि मैंने तेरे नियमों का पालन किया है।" अपनी मुश्किलों के बीच, भजनकार ने परमेश्वर के वचन को अपनी उम्मीद, आराम और गीत बनाया; परमेश्वर के नियमों का पालन करके, उन्होंने सचमुच उस वचन को अपना बना लिया। उन्होंने अपने दुख को परमेश्वर के वचन को अपनी निजी संपत्ति मानने के अवसर में बदल दिया—खासकर, अपने जीवन के संकटों के माध्यम से उस वचन को अपने दिल की पट्टियों पर गहराई से अंकित करने का अवसर।

मेरे पहले बच्चे की मृत्यु के माध्यम से—जो मेरे जीवन का सबसे बड़ा संकट था—परमेश्वर ने भजन संहिता 63:3 के वचनों को मेरे दिल पर गहराई से अंकित कर दिया। क्योंकि प्रभु का अनंत प्रेम मेरे पहले बच्चे जुयंग के जीवन के उन पचपन दिनों से कहीं अधिक महान था, इसलिए मेरे होंठ प्रभु की स्तुति किए बिना नहीं रह सके। मैं परमेश्वर के प्रेम की स्तुति करने के लिए विवश हो गया, यह सोचकर आश्चर्यचकित था कि मेरे प्रति यह कितना शानदार और अद्भुत है। आज भी, जब भी मैं उन कठिन समयों के दौरान मेरे दिल में बोए गए वचन पर फिर से मनन करता हूँ, परमेश्वर उसे मेरी आत्मा पर और भी गहराई से अंकित करते रहते हैं। भजन संहिता 63:3, यूहन्ना 6:1–15, और मत्ती 16:18 "मेरे अपने" बन गए हैं; आज भी, परमेश्वर इन वचनों का उपयोग मुझे आशा और सांत्वना देने और मुझे उनकी स्तुति करने के लिए प्रेरित करने के लिए करते हैं।

जो ईसाई नेता परमेश्वर के वचन के माध्यम से विजयी होते हैं, उन्हें उस वचन को अपनी संपत्ति, अपनी सांत्वना और अपना गीत बनाना चाहिए। इस प्रकार, उन्हें परमेश्वर के वचन के माध्यम से आध्यात्मिक युद्ध जीतना चाहिए, उन्हें विजय का गीत सुनाना चाहिए, और स्वर्गीय राज्य की ओर आगे बढ़ना चाहिए। मेरी प्रार्थना है कि आप और मैं ऐसे ईसाई नेता बनें।

मेरी संपत्ति

"यह मुझे इसलिए मिला, क्योंकि मैंने तेरे नियमों का पालन किया" (भजन संहिता 119:56)।

नए साल की शुरुआत में, विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च में कोरियाई सेवा के दौरान, हम शुरुआती भजन के तौर पर गॉस्पेल भजन "मेरा अस्तित्व, मेरी संपत्ति" (My Being, My Possession) का दूसरा पद गाते हैं। जब हम "मेरी संपत्ति" वाक्यांश सुनते हैं, तो भौतिक धन के बारे में सोचना आसान होता है; हालाँकि, आज का पाठ "मेरी संपत्ति" के एक अलग पहलू को उजागर करता है। विशेष रूप से, "मेरी संपत्ति" को "प्रभु के नियमों का पालन करना" बताया गया है।

भजनकार यह दावा नहीं करता कि केवल प्रभु के नियमों को *जानना* ही उसकी संपत्ति है; बल्कि, वह उन नियमों का *पालन करने* को ही अपनी संपत्ति मानता है। इससे पता चलता है कि भजनकार ने प्रभु की आज्ञाओं का पालन करते हुए जीवन जिया—एक ऐसा जीवन जिसमें परमेश्वर का वचन उसके चरित्र में समाया हुआ था। वचन को अपने जीवन में उतारने वाले भजनकार के जीवन का अध्ययन करने पर—खासकर पद 49 से 51 के संदर्भ में—हम तीन मुख्य विशेषताएँ देख सकते हैं:

पहला, भजनकार ने प्रभु द्वारा दिए गए वादों को कभी नहीं भुलाया।

भजन संहिता 119:49 के पहले भाग को देखें: "अपने दास को दिए वचन को याद रख..." भजनकार क्यों चाहता था कि परमेश्वर उसे कहे गए वचन को याद रखे? ऐसा इसलिए था क्योंकि परमेश्वर के वादे वाले वचन ने उसे आशा दी थी (पद 49)। इस अंश पर मनन करने से रोमियों 4:18 में वर्णित अब्राहम की याद आती है।

वह "सारी उम्मीदों के विपरीत" भी आशा कर सका क्योंकि उसे परमेश्वर का वादा याद था—"तेरी संतान ऐसी ही होगी" (पद 18)—और उसे पूरा भरोसा था कि प्रभु इसे पूरा करेंगे (पद 21)। दूसरे शब्दों में, वादे वाले वचन से प्रेरित जीवन ही वचन को अपने जीवन में उतारने और प्रभु के वचन को वास्तव में अपना बनाने का रहस्य है।

दूसरा, भजनकार को प्रभु के वचन में सांत्वना मिली। भजन संहिता 119:50 के पहले हिस्से को देखिए: "मेरी मुसीबत में यही मेरा दिलासा है..." जब हम इतनी गहरी परेशानी का सामना करते हैं कि कोई और हमें दिलासा नहीं दे पाता—या जब हम ऐसी हालत में होते हैं जहाँ हम दूसरों का दिलासा लेने से इनकार कर देते हैं—और हम अकेलेपन में संघर्ष करते हुए, रोते-बिलखते हुए सिर्फ़ प्रभु से दिलासा पाने की गुहार लगाते हैं, तो वह अपने वादे वाले वचन के ज़रिए हमें फिर से हिम्मत देता है। मेरे लिए, दिलासा का सबसे बड़ा ज़रिया वह वादा है जो पाँच रोटियों और दो मछलियों की कहानी (यूहन्ना 6:1–15) में मिलता है। जब मैं निराशा में गिरकर टूट गया था और कोई मुझे उठा नहीं पा रहा था—और जब मेरी आध्यात्मिक हालत ऐसी थी कि मैं दूसरों से दिलासा नहीं ले पा रहा था—तब उस वादे ने मुझे नई जान दी (भजन संहिता 119:50) और मुझे खड़ा किया, जिससे मैं ऐसा जीवन जी पाया जो हमेशा वापसी करता है, जैसे एक 'रोली-पोली' खिलौना (जो गिरने पर भी वापस खड़ा हो जाता है)। भजनकार ने प्रभु के वादे वाले वचन में दिलासा पाते हुए जीवन जिया क्योंकि उसने उस नई जान का अनुभव किया था जो वचन से मिलती है। जब हम परमेश्वर के वचन के ज़रिए ऐसी आध्यात्मिक नई जान का अनुभव करते हुए जीवन जीते हैं, तो उस वचन का पालन करना स्वाभाविक रूप से हमारे व्यक्तित्व का एक अहम हिस्सा बन जाता है। तीसरी बात, भजनकार ने ऐसा जीवन जिया जो कभी भी प्रभु के वचन से दूर नहीं हुआ।

भजन संहिता 119:51 के दूसरे हिस्से को देखिए: "...फिर भी मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा।" यहाँ तक कि जब घमंडी लोगों ने उसका बहुत मज़ाक उड़ाया, तब भी भजनकार ने प्रभु की व्यवस्था को नहीं छोड़ा। इस सिद्धांत पर सोचने से यूहन्ना 6:68 के शब्द याद आते हैं। जब बहुत से चेले यीशु को छोड़कर चले गए और उनके साथ चलना बंद कर दिया क्योंकि उनकी शिक्षाएँ बहुत मुश्किल थीं (यूहन्ना 6:66), और यीशु ने उन बारह चेलों से पूछा, "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?" (पद 67), तो प्रेरित पतरस ने जवाब दिया, "प्रभु, हम

किसके पास जाएँ? अनंत जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं" (पद 68)। कितनी अद्भुत बात कही उन्होंने! आज बहुत से ईसाई प्रभु और उनकी कलीसिया को छोड़ रहे हैं क्योंकि उन्हें उनका वचन बहुत मुश्किल या विश्वास करने में कठिन लगता है। पतरस की तरह "अनंत जीवन की बातों" का अनुभव न कर पाने के कारण, वे मसीह के उस सुसमाचार को सुनने के बजाय, जो अनंत जीवन देता है, शैतान के कुछ समय के लिए चलने वाले, नकली "सुसमाचार" को सुनते हैं। पादरियों और चर्च के सदस्यों के बीच भी, सच्चाई यह है कि लोग अनंत जीवन के शब्दों के बजाय "इस जीवन की बातों" को ही कहते और सुनते हैं। फिर भी, भजनकार—चाहे हालात कैसे भी हों या कोई कुछ भी कहे—प्रभु के वादे वाले वचन से कभी नहीं भटका। उसने दूसरी बातों पर ध्यान नहीं दिया। वह अडिग रहा क्योंकि प्रभु के वादे वाले वचन ने उसे तब भी उम्मीद दी जब कोई उम्मीद नहीं थी, और मुश्किलों के बीच उसे सुकून और नई ताकत दी। ये बातें हमें क्या सिखाती हैं? यही कि हमें अपना जीवन प्रभु को सौंपकर—और आराधना में परमेश्वर के सामने पेश करके—आगे बढ़ना चाहिए; ऐसा जीवन जो वचन का रूप ले चुका हो और सचमुच हमारा अपना हो। रविवार को परमेश्वर के घर में आराधना के दौरान भेंट चढ़ाने का मतलब सिर्फ़ "जो मेरा है" उसे परमेश्वर को सौंप देना नहीं है; बल्कि, हमें सोमवार से शनिवार तक ऐसा जीवन जीने के बाद आराधना के लिए आना चाहिए जो परमेश्वर के वादों को याद रखे, उनसे सुकून पाए और उनमें अडिग रहे। दूसरे शब्दों में, हमें वादे वाले वचन के अनुसार जीवन जीना चाहिए, और फिर रविवार को प्रभु के घर आकर—जैसे हम हैं वैसे ही—अपना जीवन (जो अब उस वचन को अपना चुका है) उन्हें भेंट करना चाहिए, साथ ही प्रशंसा, प्रार्थना, भेंट और ध्यान से सुनने का काम भी करना चाहिए जो स्वाभाविक रूप से भीतर से बाहर की ओर बहते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारा जीवन एक ऐसी भेंट बन जाता है जिसे परमेश्वर खुशी-खुशी स्वीकार करते हैं।

अपने पैर मोड़ो!

[भजन 119:57–64]

एडम क्लार्क ने भगवान की तरह ज़िंदगी जीने का राज़ इस तरह बताया: "ठहराव एक अच्छी शुरुआत पक्का करता है, प्रार्थना भगवान की भक्ति को बनाए रखती है, और सोचने से गलतियाँ ठीक होती हैं।" मेरा मानना है कि इन शब्दों में बहुत समझदारी है। भगवान की भक्ति वाली ज़िंदगी में सोचना खास तौर पर ज़रूरी है। भगवान के पवित्र वचन के रूहानी आईने में खुद को देखना, जो पाप सामने आते हैं उन्हें मानना, और उनसे दूर होकर पछतावा करना बहुत ज़रूरी है। आज के हिस्से में, खासकर भजन 119:59 में, भजन लिखने वाला कहता है: "मैंने अपने रास्तों पर सोचा, और अपने पैर तेरी गवाही की तरफ मोड़ लिए।" इस आयत और टाइटल "अपने पैर मोड़ो!" पर ध्यान देते हुए, मैं दो सबक सीखना चाहता हूँ कि हम सच में अपने पैर कैसे मोड़ सकते हैं।

सबसे पहले, हमें अपने रास्तों पर सोचना चाहिए।

भजन 119:59 का पहला आधा हिस्सा देखें: "मैंने अपने रास्तों पर सोचा...." भजन लिखने वाले ने अपने कामों पर सोचा। जब हम सोचते हैं, तो वह हमें आज के हिस्से के आधार पर सात बातों की एक चेकलिस्ट देता है:

(1) क्या मैं प्रभु का वचन मान रहा हूँ? (वचन 57) क्या मैं इसे मानने में लापरवाही कर रहा हूँ? (वचन 60)
(2) क्या मैं पूरे दिल से प्रभु की कृपा चाहता हूँ? (वचन 58)
(3) क्या मैं ऐसे जी रहा हूँ जैसे मैं प्रभु का नियम भूल गया हूँ? (वचन 61)
(4) क्या मैं प्रभु के वचन के लिए शुक्रगुजार होकर जी रहा हूँ? (वचन 62)

(5) क्या मैं प्रभु से डरता हूँ? (वचन 63)
(6) क्या मैं उन लोगों से दोस्ती करता हूँ जो प्रभु की आज्ञाएँ मानते हैं? (वचन 63)
(7) क्या मैं प्रभु की दया से भरा हूँ? (वचन 64)

हमें खुद से ये सवाल पूछकर अपनी ज़िंदगी को करीब से देखने की ज़रूरत है। ऐसा करते समय, हमें विनम्रता से भगवान के सामने खुद के बारे में सोचना चाहिए; अर्थात्, हमारा आत्म-परीक्षण वास्तविक आत्म-चिंतन की ओर ले जाना चाहिए।

दूसरा, हमें अपने पैर प्रभु की गवाही की ओर मोड़ने चाहिए।

भजन 119:59 के उत्तरार्ध को देखें: "... मैंने अपने पैर तेरी गवाही की ओर मोड़ लिए।" परमेश्वर के सामने प्रभु के वचन को मानने का संकल्प करने और वादा करने के बाद (पद 57), भजनकार ने पूरे दिल से प्रभु की कृपा मांगी (पद 58)। फिर, बिना देर किए, उसने तुरंत प्रभु की आज्ञाओं का पालन किया (पद 60)। दूसरे शब्दों में, भजनकार ने अपने संकल्प और प्रार्थनाओं को तत्काल कार्रवाई में बदल दिया। हमें भी अपने कार्यों की जांच करनी चाहिए, संकल्प करना चाहिए, प्रार्थना करनी चाहिए, और फिर तुरंत परमेश्वर द्वारा दी गई आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। हालांकि, जब हम इस तरह से परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने के लिए जल्दी से कार्य करते हैं, तो हमें प्रलोभन का सामना करना पड़ेगा। हालांकि, प्रलोभन का सामना करते समय, हमें प्रभु के वचनों को नहीं भूलना चाहिए (पद 61); इसके बजाय, हमें इस पल का इस्तेमाल भगवान के वचन को अपने दिलों में और भी गहराई से लिखने के मौके के तौर पर करना चाहिए। हमें रात में शुक्रगुजार होकर अपने दिन के बारे में सोचना चाहिए (वचन 62) और भगवान के वचन को सीखते रहना चाहिए (वचन 64)। हमें उन लोगों से भी दोस्ती करनी चाहिए जो भगवान से डरना और उनके वचन को मानना सीखते हैं (वचन 63)।

अपने दिल से फैट हटाओ!

“उनके दिल कठोर और बेरहम हैं, लेकिन मैं तेरे नियम से खुश रहता हूँ” (भजन संहिता 119:70)।

क्या दिल में सच में फैट जमा हो सकता है और मोटापा हो सकता है? सियोल नेशनल यूनिवर्सिटी बुंडांग हॉस्पिटल के इंटरनल मेडिसिन डिपार्टमेंट के प्रोफेसर लिम सू के अनुसार, जैसे पेट का फैट मोटापे का कारण बनता है, वैसे ही दिल के आसपास फैट जमा हो सकता है, जिससे "कार्डियक ओबेसिटी" होती है। स्टडीज़ से पता चलता है कि भले ही कोई व्यक्ति पूरी तरह से मोटा न हो, लेकिन "कार्डियक ओबेसिटी" होने से कार्डियोवैस्कुलर बीमारी का खतरा काफी बढ़ जाता है। समस्या यह है कि, क्योंकि दिल की मसल्स किसी की मर्ज़ी के हिसाब से नहीं चलतीं, इसलिए कार्डियक फैट को सीधे बर्न करना नामुमकिन है। इसलिए, कार्डियक फैट को इनडायरेक्टली कम करने के लिए, व्यक्ति को हेल्दी वज़न बनाए रखना चाहिए, नमक और सैचुरेटेड फैट का सेवन कम करना चाहिए, खूब सारा फाइबर वाला खाना खाना चाहिए—जैसे ताज़ी सब्ज़ियाँ, साबुत अनाज और फलियाँ—और रेगुलर एक्सरसाइज़ करनी चाहिए।

आज के हिस्से, भजन 119:70 में, हम ऐसे लोगों से मिलते हैं जो "कार्डियक ओबेसिटी" से परेशान हैं—या, ज़्यादा सही कहें तो, ऐसे लोग जिनके दिल चर्बी से भरे हुए हैं। ये लोग घमंडी होते हैं जो भजन लिखने वाले पर हमला करने के लिए झूठ बोलते हैं (आयत 69)। जब मैंने इस आयत पर सोचा, तो मुझे एहसास हुआ कि न सिर्फ़ ईसाइयों के दुश्मन, बल्कि हम खुद भी अपने दिलों में चर्बी जमा कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, हमारे दिलों में चर्बी जमा हो सकती है, जिससे घमंड और बेईमानी होती है जो भगवान की महिमा को छिपाती है और यीशु मसीह के सुसमाचार को फैलाने में रुकावट बनती है। हमारे दिलों में इस तरह की चर्बी क्यों बनती है? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम प्रभु के नियमों (आयत 70) में खुश नहीं होते और उनके कानून (आयत

69) का पालन नहीं कर पाते। और साफ़ तौर पर कहें तो, हमारे दिलों के कठोर होने का कारण—जो घमंड और झूठ की ओर ले जाता है—यह है कि हमने उनमें प्रभु के वचन को संजोकर नहीं रखा है (आयत 11)। क्योंकि हम प्रभु की आज्ञाओं को मानने में नाकाम रहते हैं और उनके वचन को अपना नहीं बनाते, इसलिए हमारे दिलों पर एक रूहानी कठोरता आ जाती है (वचन 56)। नतीजतन, हम प्रभु की आज्ञाओं से भटक जाते हैं (वचन 10) और उनके खिलाफ पाप करते हैं (वचन 11), और अपने दिलों को लालच की ओर मोड़ लेते हैं (वचन 36)। तो, हमें क्या करना चाहिए? हमें अपने दिलों से इस कठोरता को निकालना होगा। यह कैसे मुमकिन है? हम इस रूहानी चर्बी को कैसे हटा सकते हैं?

सबसे पहले, हमें फायदेमंद दुख की ज़रूरत है।

हमें वफादार परमेश्वर द्वारा हम पर लाई गई तकलीफ़ की ज़रूरत है (वचन 75)। ऐसा इसलिए है, क्योंकि फायदेमंद दुख के ज़रिए, हमें एहसास होता है कि हम कहाँ भटक गए हैं (वचन 67) और हम प्रभु के नियम सीखते हैं (वचन 71), जिससे हम उनके वचन को मानने में काबिल बनते हैं (वचन 67)।

दूसरा, हमें परमेश्वर के वचन को ठीक से अपने अंदर उतारना चाहिए।

ऐसा करने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन में खुशी मनानी चाहिए (पद 70) और पूरे दिन उस पर ध्यान करना चाहिए (पद 97)। ऐसा करने से, हमें बुद्धि और समझ मिलती है (पद 98–99)। इससे हम आध्यात्मिक समझ का इस्तेमाल कर पाते हैं—सच और झूठ में फर्क कर पाते हैं—ताकि हम झूठ को नकार सकें और सच को अपने अंदर अपना सकें।

तीसरा, हमें परमेश्वर के वचन को मानना और मानना चाहिए।

हमें परमेश्वर की आवाज़ माननी चाहिए जो हमसे बात करती है, जब हम दिन-रात उस वचन पर ध्यान करते हैं जिसे हमने दुख सहकर सीखा है। जब हम आज्ञा मानते हैं, तो परमेश्वर का वचन हमारे दिल की पट्टियों पर लिखा होता है। आज्ञा मानने से, कठोरता खत्म हो जाती है, और इसकी जगह हमारे अंदर आध्यात्मिक

ताकत बनती है। इसके अलावा, जैसे-जैसे हमारे दिलों में आध्यात्मिक ताकत बढ़ती है, हमें घमंड और झूठ जैसे सभी तरह के पापों को दूर करने की आध्यात्मिक ताकत मिलती है। जब ऐसा होता है, तो भले ही हमें अपने दुश्मनों के हाथों ज़ुल्म और परेशानी का सामना करना पड़े, हम न सिर्फ़ अपने दिलों में डर पर काबू पा सकेंगे, बल्कि दाएं-बाएं भटकने और भगवान के खिलाफ़ पाप करने से भी बच सकेंगे।

दुख सहने का फ़ायदा

"मेरे लिए अच्छा हुआ कि मैं दुखी हुआ, ताकि मैं तेरे नियम सीख सकूँ। तेरे मुँह से निकली शिक्षा मेरे लिए सोने-चाँदी के हज़ारों सिक्कों से भी ज़्यादा कीमती है" (भजन संहिता 119:71-72)।

इस "परिवार के महीने" के दौरान, आज मैंने CNN पर एक बहुत परेशान करने वाली खबर देखी। शिकागो के पास एक छोटे से शहर में एक घटना हुई, जहाँ 34 साल के एक पिता ने अपनी ही 8 साल की बेटी और उसकी 9 साल की सहेली की चाकू मारकर हत्या कर दी—एक को 20 और दूसरी को 11 घाव दिए। सबसे भयानक बात यह पता चली कि उस आदमी ने अपनी बेटी की आँखों में भी चाकू घोंपा था; यह सोचकर मुझमें बहुत गुस्सा भर आया कि यह एक ऐसा बुरा काम था जिसे कोई इंसान नहीं कर सकता। मेरे गुस्से के बीच, मेरे मन में सवाल उठे: "क्या वह सच में इंसान है?" और "क्या वह सच में पिता बनने के लायक था?"

कार चलाने के लिए, ड्राइवर का लाइसेंस लेना ज़रूरी होता है। फिर भी, पिता बनने के लिए ऐसा कोई सर्टिफ़िकेट नहीं होता, और न ही इस भूमिका के लिए कोई खास ट्रेनिंग की ज़रूरत होती है। आज रात, मुझे पहले सुनी हुई एक और खबर याद आ रही है: एक माँ जिसने अपनी बेटी के सिर पर मारा, उसे दो दिनों तक लिविंग रूम में मरने के लिए छोड़ दिया, और आखिर में—एक भयानक घटनाक्रम में—अपनी खूबसूरत बेटी का सिर कटा हुआ और फेंका हुआ देखा। यह मुझे यह पूछने पर मजबूर करता है: क्या हम, माता-पिता के तौर पर, सच में माता-पिता बनने की काबिलियत रखते हैं?

बाइबल में इफिसियों के अध्याय 5 और 6 हमें सिखाते हैं कि पुरुषों की ज़िम्मेदारी है कि वे पति और पिता के तौर पर अपनी पत्नियों और बच्चों की "देखभाल" करें (या उन्हें "बड़ा करें")। यहाँ "देखभाल" के लिए

इस्तेमाल किए गए ग्रीक शब्द का मतलब है "संकरा" (narrow)। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब है कि पति और पिता के तौर पर, हमें अपनी पत्नियों और बच्चों को वह संकरा रास्ता दिखाना चाहिए जिस पर यीशु चले थे—क्रूस का रास्ता। दूसरे शब्दों में, संदेश यह है कि हमें अपना क्रूस उठाना चाहिए और दुख के रास्ते पर यीशु के पीछे चलना चाहिए। फिर भी, हमारे अंदर एक ऐसी प्रवृत्ति होती है जो दुख के उस रास्ते पर चलने का विरोध करती है; हम जानबूझकर उससे बचने की कोशिश करते हैं। इसकी वजह यह है कि दुख और तकलीफ के अलावा, हम दुख सहने के फायदों को नहीं समझ पाते। साथ ही, क्योंकि हमने इन फायदों का अनुभव नहीं किया है, इसलिए दुख के दौर से गुज़रते हुए डटे रहने के लिए हममें विश्वास की कमी होती है।

आज, भजन संहिता 119:65–72 पर ध्यान देते हुए, मैं "दुख सहने के फायदों" के बारे में एक या दो बातों पर चर्चा करना चाहता हूँ:

पहला, दुख का एक फायदा यह है कि यह हमें इस बात का एहसास दिलाता है कि हम भटक गए हैं।

भजन संहिता 119:67 के पहले हिस्से को देखिए: "दुख उठाने से पहले मैं भटक गया था।" अक्सर, हमें पता ही नहीं चलता कि हम सही रास्ते से भटक गए हैं, जब तक कि दुख हम पर नहीं आता। बेशक, कई बार हम जान-बूझकर गलत रास्ता चुनते हैं। फिर भी, अक्सर हम आध्यात्मिक रूप से अंधे और बहरे हो जाते हैं; प्रभु के दिखाए उस संकरे और क्रूस उठाने वाले रास्ते पर चलने के बजाय, हम बिना किसी मकसद के इधर-उधर भटकते रहते हैं। ऐसे पलों में, प्रभु द्वारा आने दिया गया दुख हमें होश में लाता है। जैसे एक चरवाहा अपनी भटकती हुई भेड़ को सही रास्ते पर लाने के लिए लाठी का इस्तेमाल करता है, वैसे ही प्रभु—हमारे चरवाहे—भटक जाने पर हमें वापस लाने के लिए दुख की "लाठी" का इस्तेमाल करते हैं। भविष्यवक्ता यशायाह ने कहा, "हम सब भेड़ों की तरह भटक गए थे, हममें से हर कोई अपने ही रास्ते पर चल पड़ा था..." (यशायाह 53:6)। नासमझ भेड़ों की तरह, हम अक्सर अपने ही रास्तों पर चलने में बहुत व्यस्त रहते हैं... यानी प्रभु के संकरे रास्ते के बजाय दुनिया के चौड़े रास्ते पर। ऐसे समय में आने वाला दुख हमें यह एहसास दिलाता है कि हम भटक गए हैं।

दूसरा और आखिरी, दुख का फायदा यह है कि यह हमें प्रभु के वचन का पालन करने की ओर ले जाता है।

भजन संहिता 119:67 के दूसरे हिस्से को देखिए: "...लेकिन अब मैं तेरे वचन का पालन करता हूँ।" यहाँ, हमें उन छह तरीकों पर विचार करना चाहिए जिनसे दुख हमें प्रभु के वचन का पालन करने में मदद करता है:

(1) दुख हमें प्रभु की आज्ञाओं पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करता है।

भजन संहिता 119:66 के पहले हिस्से को देखिए: "मैंने तेरी आज्ञाओं पर विश्वास किया है..." दुख, जो गलत रास्ते पर चलने के दौरान हमारी गलतियों को उजागर करता है, हमें यू-टर्न लेने (वापस मुड़ने) के लिए मजबूर करता है; इससे हमें यह विश्वास होता है कि प्रभु की आज्ञाएँ ही सच्चा मार्ग हैं। हर दिन, हम दो रास्तों में से एक को चुनते हैं: प्रभु का संकरा रास्ता या दुनिया का चौड़ा रास्ता। दूसरे शब्दों में, हर पल हम या तो प्रभु की आज्ञाओं का पालन करना चुनते हैं या शैतान या दुनिया की बातों पर ध्यान देते हैं। दुख न केवल हमें अपनी गलत पसंद का एहसास कराता है, बल्कि—उन गलत फैसलों के कारण मिलने वाली प्यार भरी सीख के रूप में—हमें सही रास्ते (प्रभु का रास्ता और उनकी आज्ञाएँ) पर विश्वास करने और उस पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

(2) दुख हमें सही-गलत की पहचान और ज्ञान सिखाता है।

भजन संहिता 119:66 के दूसरे हिस्से को देखें: "...मुझे सही-गलत की पहचान और ज्ञान सिखा।" हममें से कितने ईसाई अज्ञानता में गलत रास्ते पर चलते हैं, क्योंकि हमने सही-गलत की पहचान खो दी है—यानी, अच्छे और बुरे में फर्क करने की क्षमता? आध्यात्मिक समझ खोने से अपनी आध्यात्मिक स्थिति के बारे में पक्के विश्वास के बजाय उलझन पैदा होती है। आखिरकार, यह हमें प्रभु की आज्ञाओं के रास्ते पर लगातार चलने से रोकता है; इसके बजाय, यह हमें दुनिया के रास्तों—उलझन भरे रास्तों—पर भटकने के लिए मजबूर करता है। हालाँकि, दुख के ज़रिए प्रभु हमें अज्ञानता और सही समझ खोने की दलदल से बचाते हैं। वे हमें ईश्वरीय समझ और अपनी इच्छा का ज्ञान देते हैं, जिससे हम उनके वचन की ओर दौड़ पाते हैं।

(3) दुख हमें प्रभु की भलाई का अनुभव कराता है।

भजन संहिता 119:68 के पहले हिस्से पर विचार करें: "तू भला है, और तू भलाई करता है..." दुख के ज़रिए प्रभु की भलाई का जो अनुभव होता है (भजन संहिता 34:8 देखें), उसमें सबसे बड़ा फ़ायदा—या आशीष—उस भले परमेश्वर का अनुभव करना है जो सब कुछ, यहाँ तक कि दुख को भी, भलाई के लिए काम में लाता है (रोमियों 8:28)। भले परमेश्वर की महिमा हमारे जीवन में तब सबसे ज़्यादा चमकती है जब हम सबसे बुरे दौर में होते हैं—थके हुए, टूटते हुए, और बहुत ज़्यादा दर्द और दुख सहते हुए। इसीलिए, घोर मुश्किलों के बीच भी हम गा सकते हैं, "भले परमेश्वर, भले परमेश्वर, मेरे सचमुच भले परमेश्वर।"

(4) दुख हमें घमंडी लोगों के झूठ से नफ़रत करना सिखाता है। भजन संहिता 119:69 के पहले हिस्से पर गौर करें: "अहंकारियों ने मेरे खिलाफ झूठ गढ़ा है..." दुख सहने से पहले, अहंकारियों के झूठ हमें अक्सर इतने सच्चे लगते हैं कि हम अक्सर उनके दिखाए धोखे भरे रास्तों पर चलने लगते हैं। इस दुनिया में अहंकारी लोगों के झूठ पर विचार करें—ऐसे झूठ जो सच जैसे लगते हैं और हम ईसाई, उलझन में पड़कर, उन्हें सच मान लेते हैं और गलत रास्ता चुन लेते हैं। क्या हम अभी उस गलत रास्ते पर तेज़ी से नहीं बढ़ रहे हैं? यह धोखे भरी सफलता, सम्मान और भौतिकवाद का रास्ता है जिसे दुनिया के अहंकारी लोग बढ़ावा देते हैं। फिर भी, दुख सहने के बाद, हम अहंकारियों के उन झूठे रास्तों से नफ़रत करने लगते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि दुख सही रास्ते—प्रभु के रास्ते—को साफ़-साफ़ दिखाता है। यह क्रूस का संकरा रास्ता है, जिसे पवित्र शास्त्र में विनम्र यीशु ने दिखाया है। और उस रास्ते की मंज़िल मौत है। यह दुनिया के रास्ते के नतीजे से कितना अलग है! क्या आप इसके प्रति कोई आध्यात्मिक खिंचाव महसूस करते हैं? क्या आपको और मुझे इस बात में कोई आध्यात्मिक आकर्षण लगता है कि जिस संकरे रास्ते पर हम चलते हैं, उसका अंत मौत है? क्या आप इस सच्चाई से आकर्षित होते हैं कि मुझ जैसे पापी को प्रभु की महिमा के लिए शहीद होना पड़ सकता है? ऐसा लगता है कि हर कोई ऐसी सच्चाई को स्वीकार नहीं कर सकता। अहंकारी व्यक्ति का दिल न तो इसे मान सकता है और न ही अपना सकता है। फिर भी, दुख के ज़रिए, हमारे प्रभु इस सच्चाई को हमारे दिलों में बसाते हैं। इस बसाने की प्रक्रिया में, वे दुख का इस्तेमाल करके हमें अहंकारियों के झूठ से नफ़रत करना सिखाते हैं।

(5) दुख दिल की चर्बी को हटाता है।

भजन संहिता 119:70 के पहले हिस्से को देखें: "उनके दिल चर्बी जैसे हैं..." आजकल संयुक्त राज्य अमेरिका में मोटापा एक बड़ी समस्या बन गया है। अनगिनत लोग वज़न कम करने के लिए डाइटिंग और कसरत कर रहे हैं। कुछ लोग तो अतिरिक्त चर्बी हटाने के लिए सर्जरी भी करवाते हैं। जहाँ इतने सारे लोग अपने शरीर से अतिरिक्त चर्बी हटाने की कोशिश करते हैं, वहीं हम ईसाई—जो इस कोशिश में शामिल होते हैं—अक्सर "दिल की चर्बी" को पहचान भी नहीं पाते, उसे हटाने की कोशिश तो दूर की बात है। शरीर की अतिरिक्त चर्बी कई तरह की परेशानियाँ पैदा करती है और आखिरकार जीवनशैली से जुड़ी बीमारियाँ हो जाती हैं; इसी तरह, "दिल की चर्बी" पापपूर्ण नतीजे पैदा करती है जो हमारे विश्वास के जीवन में बाधा डालते हैं। फिर भी, इस बात पर ध्यान देने के बजाय, हम अक्सर उन पापपूर्ण परिणामों को हल्के में लेते हैं और इस तरह उनमें लिप्त होकर और भी बड़ा पाप कर बैठते हैं। इस आध्यात्मिक अवस्था में, दुख दिल की चर्बी को हटाने के लिए एक ज़रूरी—शायद सबसे बड़ा—उपाय का काम करता है। हमें दुख के ज़रिए इस आध्यात्मिक चर्बी को दूर करना होगा।

(6) दुख हमें परमेश्वर के वचन की सबसे बड़ी कीमत को गहराई से समझने में मदद करता है।

भजन संहिता 119:72 पर विचार करें: "मेरे लिए तेरे मुँह की व्यवस्था सोने-चाँदी के हज़ारों सिक्कों से कहीं बेहतर है।" मिस्र से निकलने के बाद, परमेश्वर चाहते थे कि इस्राएली रेगिस्तान में चालीस साल की मुश्किलों से यह सीखें कि "मनुष्य केवल रोटी से नहीं, बल्कि हर उस वचन से जीवित रहता है जो प्रभु के मुँह से निकलता है" (व्यवस्थाविवरण 8:3)। इसी तरह, जब हम इस रेगिस्तान जैसी दुनिया में उस संकरे रास्ते—क्रूस के रास्ते—पर चलते हैं और कई तरह के दुखों का सामना करते हैं, तो हमें यह समझना चाहिए कि हम ऐसे प्राणी हैं जो असल में केवल प्रभु के मुँह से निकले वचन से ही जीवित रह सकते हैं। उस पल, हम यह मानते हैं कि उनके वचन की कीमत हमारी अपनी ज़िंदगी से भी ज़्यादा कीमती है। धरती पर इंसान की छोटी सी ज़िंदगी की तुलना उस अनंत वचन से कैसे की जा सकती है? दुख हमें इस वचन की कीमत—यानी इसकी सबसे बड़ी अहमियत—दिखाता है, जो भौतिक धन-दौलत से कहीं ज़्यादा है।

सामाजिक उथल-पुथल वाली इस दुनिया में, जो तेज़ी से अंत के समय की ओर बढ़ रही है, यीशु पर विश्वास करने वाले ईसाइयों को प्रभु के संकरे रास्ते पर चलते हुए अतीत या वर्तमान की तुलना में और भी ज़्यादा दुखों का सामना करना पड़ेगा। हालाँकि, अगर हमें दुख आने पर उससे मिलने वाले फ़ायदों का अनुभव करने का आशीर्वाद मिलता है, तो हम ऐसे लोग बन सकते हैं जो उन फ़ायदों और आशीर्वादों का आनंद लेना जानते हैं—तब भी जब हम पहले से कहीं ज़्यादा बड़ी मुश्किलों का सामना कर रहे हों। ठीक वैसे ही जैसे भजनकार ने आयत 65 में कहा था, जब हम अच्छे प्रभु को अपने साथ "अच्छा व्यवहार करते" हुए अनुभव करते हैं और उनकी भलाई का स्वाद चखते हैं, तो हम अपने दिल की गहराइयों से यह कह पाएँगे: "परमेश्वर बहुत अच्छा है।" मैं यीशु के नाम से प्रार्थना करता हूँ कि मुश्किलों का ऐसा आशीर्वाद आप पर और मुझ पर बना रहे।

प्रभु के वचन का इंतज़ार करें!

[भजन संहिता 119:73–80]

इंतज़ार करना एक गुण है। खासकर, प्रार्थना का जवाब पाने के लिए इंतज़ार करना—विश्वास और उम्मीद के साथ प्रार्थना करते हुए—ईसाईयों का एक सुंदर गुण है। यह देखना बहुत अच्छा लगता है जब कोई विश्वासी उम्मीद के प्रभु की ओर विश्वास से देखता है और उनके उद्धार का इंतज़ार करता है। आज के वचन, भजन संहिता 119:74 में, हम भजनकार को—जो एक विश्वासी का सुंदर उदाहरण है—यह कहते हुए देखते हैं: "जो लोग तुझसे डरते हैं, वे मुझे देखकर खुश होंगे, क्योंकि मैंने तेरे वचन पर भरोसा रखा है।" इस वचन पर ध्यान देते हुए, मैं "प्रभु के वचन का इंतज़ार करें!" शीर्षक के तहत दो बातें सीखना चाहता हूँ कि हमें कैसे इंतज़ार करना चाहिए।

पहला, हमें समझदारी के साथ इंतज़ार करना चाहिए।

भजन संहिता 119:75 को देखें: "हे प्रभु, मैं जानता हूँ कि तेरे फैसले सही हैं, और तूने सच्चाई से मुझे दुख दिया है।" भजनकार के अनुसार हमें क्या जानना चाहिए?

(1) हमें यह जानना चाहिए कि प्रभु के फैसले सही और न्यायपूर्ण हैं।

भजनकार अहंकारी लोगों के कारण दुख उठा रहा था। इन अहंकारी लोगों ने बिना किसी कारण के उसे गिरा दिया था (वचन 78)। फिर भी, क्योंकि वह परमेश्वर से डरता था (वचन 74, 79), भजनकार ने प्रभु के

नियम का पालन किया (वचन 77, 80)। प्रभु के सही फैसले पर भरोसा करते हुए, उसने परमेश्वर से प्रार्थना की: "वे शर्मिंदा हों" (वचन 78) और "मैं शर्मिंदा न होऊँ" (वचन 80)।

(2) हमें यह जानना चाहिए कि प्रभु द्वारा हमें दिया गया दुख उनकी सच्चाई और वफ़ादारी का नतीजा है।

इसका क्या मतलब है? अहंकारी लोगों के हाथों दुख सहते हुए भी, भजनकार को भरोसा था कि परमेश्वर सच्चाई से अपनी उत्तम इच्छा पूरी करेंगे (वचन 75)। परमेश्वर की वह उत्तम इच्छा क्या है? इसका एक पहलू यह है कि परमेश्वर दुख के ज़रिए हमें तैयार करते हैं—खासकर हमें प्रभु के वचन को मज़बूती से थामे रहने, उनके वादों के पूरा होने के लिए दिल से प्रार्थना करने और उम्मीद के साथ इंतज़ार करने के लिए प्रेरित करते हैं। हमें परमेश्वर की सच्चाई और न्याय को पहचानना चाहिए और विश्वास के साथ प्रभु का इंतज़ार करना चाहिए। जब हमें घमंडी लोगों की वजह से दुख उठाना पड़ता है, तो हमें परमेश्वर के सही न्याय और उनकी वफ़ादारी पर भरोसा रखते हुए इंतज़ार करना चाहिए।

दूसरी बात, हमें प्रार्थना करते हुए इंतज़ार करना चाहिए।

तो फिर, हमें किस चीज़ के लिए प्रार्थना करनी चाहिए? आज के हिस्से में, भजनकार हमारे सामने प्रार्थना की पाँच बातें रखते हैं:

(1) हमें प्रभु से दिलासा माँगना चाहिए।

भजन संहिता 119:76 को देखिए: "जैसा तूने अपने सेवक से वादा किया है, वैसा ही तेरा अटूट प्रेम मुझे दिलासा दे।" अपनी तकलीफ़ के बीच, भजनकार सबसे ज़्यादा प्रभु से दिलासा पाना चाहते थे। उन्होंने प्रभु के अटूट प्रेम को ही अपने दिलासे का ज़रिया बनाया। हमें भी प्रभु के अटूट प्रेम को—जो जीवन से भी बेहतर है (भजन संहिता 63:3)—अपना दिलासा बनाना चाहिए और दुख के समय परमेश्वर से शांति माँगनी चाहिए।

(2) हमें प्रभु से दया माँगनी चाहिए।

भजन संहिता 119:77 को देखिए: "मुझ पर अपनी दया कर ताकि मैं जी सकूँ, क्योंकि तेरी व्यवस्था में ही मुझे खुशी मिलती है।" जब हम मुश्किल में हों, तो हमें—भजनकार की तरह—प्रभु के अटूट प्रेम को अपना दिलासा और उनकी व्यवस्था को अपनी खुशी बनाना चाहिए। ऐसे हालात में, हमें प्रभु से दया माँगनी चाहिए। जब दुख हमें परमेश्वर के वचन में खुशी ढूँढ़ने के लिए प्रेरित करता है, और उस खुशी से हमें अपने पाप का एहसास होता है, तो हम प्रभु से दया माँगने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

(3) हमें प्रभु से न्याय माँगना चाहिए।

आज के वचन, भजन संहिता 119:78 को देखिए: "घमंडी लोग शर्मिंदा हों क्योंकि उन्होंने बिना किसी वजह के मेरे साथ बुरा किया है; जहाँ तक मेरी बात है, मैं तेरी आज्ञाओं पर मनन करूँगा।" भजनकार के दुख का कारण "घमंडी लोग" थे (पद 78)। उन्होंने बिना किसी वजह के उन्हें नीचे गिराया और झूठ बोलकर उन्हें परेशान किया। फिर भी, ऐसी परेशानी के बीच, भजनकार प्रभु का वचन सीखने (पद 73) और उस पर मनन करने (पद 78) के लिए और भी ज़्यादा उत्सुक थे। दुख सहते हुए परमेश्वर के वचन को थामे रखकर, भजनकार ने प्रभु से न्याय माँगा; उन्होंने परमेश्वर से विनती की कि घमंडी लोग शर्मिंदा हों। (4) हमें प्रभु के इंतज़ाम की तलाश करनी चाहिए।

आज का वचन देखें, भजन संहिता 119:79: "जो लोग तुझसे डरते हैं, वे मेरी ओर मुड़ें, ताकि वे तेरी गवाहियों को जान सकें।" जब भजनकार मुसीबत में था, तो परमेश्वर ने उसे ऐसे साथी विश्वासी दिए जो प्रभु से डरते थे। दुख के समय में यह कितना बड़ा आपसी दिलासा रहा होगा! जब हम मुश्किलों का सामना करते हैं, तो हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर हमें ऐसे साथी विश्वासी भेजे जो प्रभु से डरते हों। जब प्रभु हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देता है और हमें विश्वास में ये साथी भेजता है, तो हमें साथ मिलकर प्रभु के वचन को देखना चाहिए, एक-दूसरे को दिलासा देना चाहिए और साथ मिलकर अपनी मुश्किलों पर सफलतापूर्वक जीत हासिल करनी चाहिए।

(5) हमें प्रभु के सिद्ध करने वाले काम की तलाश करनी चाहिए। आज का वचन देखें, भजन संहिता 119:80: "मेरा मन तेरे नियमों के प्रति बेदाग रहे, ताकि मुझे शर्मिंदा न होना पड़े।" अपने दुख के बीच, भजनकार ने

प्रभु के वचन की ओर देखा और परमेश्वर से विनती की कि वह उस वचन के ज़रिए उसके मन को बेदाग बनाए। उसने अपनी मुश्किलों और परेशानी को प्रभु के वचन के ज़रिए अपने मन को सिद्ध बनाने के मौके में बदल दिया। भजनकार की तरह, हमें भी दर्दनाक और परेशान करने वाली स्थितियों का इस्तेमाल प्रभु के वचन के ज़रिए अपने मन को बेदाग बनाने के मौकों के तौर पर करना चाहिए।

हमें प्रभु के वचन का इंतज़ार करना चाहिए। फिर भी, हमें समझदारी के साथ इंतज़ार करना चाहिए। हमें यह जानते हुए इंतज़ार करना चाहिए कि प्रभु के फ़ैसले सही हैं। हमें यह भी जानते हुए इंतज़ार करना चाहिए कि प्रभु का हमें दुख देने का काम उसकी वफ़ादारी से आता है। हमें प्रार्थना करते हुए इंतज़ार करना चाहिए। हमें प्रभु के वचन का इंतज़ार करना चाहिए, और उससे दिलासा, दया, न्याय, इंतज़ाम और हमारे अंदर किए जाने वाले उसके सिद्ध करने वाले काम की तलाश करनी चाहिए।

"हे प्रभु, आप मुझे कब दिलासा देंगे?"

[भजन संहिता 119:81–88]

क्या आपने कभी महसूस किया है कि आपकी सहनशक्ति की सीमा आ गई है? क्या आपने कभी परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए पूछा है, "मुझे यह दुख और तकलीफ कब तक सहनी होगी?" जब हम पर आने वाली मुसीबतें और दर्द लंबे समय तक चलते हैं, तो कभी-कभी हमारा धैर्य जवाब देने लगता है। ऐसे पलों में, हम अक्सर परमेश्वर से पुकारकर पूछते हैं, "और कब तक?" भजन संहिता 119 के रचयिता का अनुभव भी कुछ ऐसा ही था। वह परमेश्वर के वचन और उनके उद्धार के लिए तरस रहे थे, लेकिन जब उनकी प्रार्थना का उत्तर मिलने में देर होती दिखी, तो उन्होंने प्रार्थना की: "आपकी बात की बाट जोहते-जोहते मेरी आँखें थक गई हैं; मैं कहता हूँ, 'आप मुझे कब दिलासा देंगे?'" (पद 82)। आज, इस अंश और "हे प्रभु, आप मुझे कब दिलासा देंगे?" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं "सहनशक्ति की सीमा" और "सहनशक्ति की चुनौती" पर विचार करना चाहता हूँ और उनसे मिलने वाली सीख को समझना चाहता हूँ।

सबसे पहले, आइए सहनशक्ति की सीमा पर विचार करें। भजन संहिता 119:81–82 को देखें: "मेरी आत्मा आपके उद्धार के लिए तरसते-तरसते निढाल हो गई है, लेकिन मैंने आपके वचन पर आशा रखी है। आपके वादे की बाट जोहते-जोहते मेरी आँखें थक गई हैं; मैं कहता हूँ, 'आप मुझे कब दिलासा देंगे?'" भजनकार थक चुके थे; वे पूरी तरह से निढाल और हताश हो गए थे। क्यों? क्योंकि दुश्मन उन्हें सता रहे थे (पद 84)। ये दुश्मन कौन थे? वे "घमंडी लोग थे जो आपके नियम का पालन नहीं करते" (पद 85)। उन्होंने भजनकार को "बिना किसी कारण के" सताया (पद 86) और उन्हें नुकसान पहुँचाने के लिए गड्ढे (जाल) खोदे (पद 85)—दूसरे शब्दों में, उन्होंने उनके खिलाफ साजिश रची। उन्होंने उन्हें "लगभग खत्म ही कर दिया था" (पद 87); वे उन्हें "मार ही डालने वाले थे" (पद 87)। ऐसी गंभीर स्थिति में, भजनकार प्रभु के उद्धार के लिए तरस रहे थे (पद 81) और उनके वचन पर आशा रखे हुए थे (पद 82), फिर भी ऐसा लगता है कि उन्हें अभी तक

परमेश्वर का उद्धार या उनके वादों का पूरा होना अनुभव नहीं हुआ था। इस तरह, वह थक गया था (v. 81) और उसका बुरा हाल हो गया था (v. 82)।

हमारे साथ भी ऐसा होता है जब हम भजनकार की तरह थका हुआ और बेदम महसूस करते हैं। कभी-कभी हम शरीर और मन दोनों से थक जाते हैं—क्योंकि चाहे हम कितनी भी शिद्दत से परमेश्वर से मुश्किल हालात से बचाने की गुहार लगाएं, ऐसा लगता है कि वे कोई जवाब नहीं दे रहे हैं, और हमारी हालत और बिगड़ती जाती है। ऐसे पलों में, सबसे बड़ा खतरा हिम्मत हारने का होता है। जब हमारे हालात बहुत मुश्किल और दर्दनाक हों, फिर भी परमेश्वर चुप दिखें और स्थिति और खराब होती जाए, तो हम शायद तब तक सहते रहें जब तक हम और न सह सकें; उस थकी हुई हालत में, हमारे हिम्मत हारने या निराशा में डूबने का खतरा होता है। हम खासकर तब हिम्मत हारने लगते हैं जब हमारे घमंडी दुश्मन हमारा मज़ाक उड़ाते हुए पूछते हैं, "तुम्हारा परमेश्वर कहाँ है?" (भजन संहिता 42:10)। हम तब भी बहुत निराश हो सकते हैं जब परमेश्वर का न्याय धीमा लगता है—जिससे हम भजनकार की तरह सोचने लगते हैं, "तू मेरे घमंडी दुश्मनों को कब सज़ा देगा?" (पद 84, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? हमें क्या करना चाहिए जब हमारी आत्मा बेचैन और निराश हो क्योंकि हमारी प्रार्थनाओं और परमेश्वर से उद्धार की उम्मीद भरी प्रतीक्षा के बावजूद, कोई जवाब नहीं मिलता? हमें क्या करना चाहिए जब हम इंतज़ार करते-करते थक जाएं और परमेश्वर का दिलासा महसूस न कर पाएं, जिससे हम भजनकार की तरह पुकार उठें, "हे प्रभु, तू मुझे कब दिलासा देगा?" यही तो धैर्य की चुनौती है।

दूसरी बात, आइए धैर्य की इस चुनौती पर विचार करें।

हमें क्या करना चाहिए जब हम प्रभु के उद्धार की चाहत में थक जाते हैं (पद 81, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)? हमें क्या करना चाहिए जब प्रभु का दिलासा मिलने में देर हो, जब उनकी प्रतिज्ञाओं के पूरे होने का इंतज़ार करते-करते हमारी आँखें थक जाएं (पद 82, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*), और जब हमें लगे कि हम "बेकार" हो गए हैं (पद 83, *कंटेम्पररी कोरियन वर्शन*)? हमें क्या करना चाहिए जब घमंडी लोग, जो प्रभु के नियम का पालन नहीं करते, बिना किसी कारण के हमें सताते हैं और हमें फँसाने के लिए जाल बिछाते हैं, फिर भी उन पर परमेश्वर का न्याय होने में देर होती है (पद 84–86)? जब उन्होंने हमें "लगभग मार ही

डाला" हो (पद 87), तब हमें क्या करना चाहिए? धैर्य की इस चुनौती का सामना हमें कैसे करना चाहिए? भले ही प्रभु के उद्धार की प्रतीक्षा करते-करते हम थक जाएं, फिर भी हमें "आपके वचन पर भरोसा" रखना चाहिए (पद 81)। इसका कारण यह है कि "आपकी आज्ञाएँ भरोसेमंद हैं" (पद 86)। इसके अलावा, भले ही प्रभु के वादे के पूरा होने की प्रतीक्षा में हम थक-हार जाएं (पद 82), फिर भी हमें "आपकी व्यवस्था को नहीं भूलना" चाहिए (पद 83)। भले ही हमारे अहंकारी दुश्मन बिना किसी कारण के हमें सताएं और मौत के कगार पर पहुंचा दें, फिर भी हमें "आपके नियमों को नहीं छोड़ना" चाहिए (पद 87)। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम "आपके अटूट प्रेम के अनुसार" पुनर्जीवित (जीवन में बहाल) हो जाएंगे (पद 88)। तब, हम प्रभु की व्यवस्था का पालन करते रहेंगे (पद 88)।

परमेश्वर का लंबा धैर्य—उनके हस्तक्षेप में देरी—किसी भी तरह से लापरवाही भरा काम नहीं है। परमेश्वर के इंतजार का एक भी पल बर्बाद नहीं होता; हर पल का इस्तेमाल सबसे कीमती तरीके से किया जाता है (पार्क युन-सन)। भले ही हमारे नज़रिए से परमेश्वर का उद्धार, सांत्वना और मदद में देरी होती दिखे—जिससे हम पूछने पर मजबूर हो जाते हैं, "हे प्रभु, आप मुझे कब सांत्वना देंगे?" "हे प्रभु, आप मेरी मदद कब करेंगे?" या "हे प्रभु, आप मुझे कब छुड़ाएंगे?"—फिर भी हमें ऐसे समय में प्रभु की विश्वसनीय आज्ञाओं को नहीं भूलना चाहिए और न ही उनके वचन पर भरोसा करना छोड़ना चाहिए। हमें उस वचन को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। जब प्रभु का ठहराया हुआ समय आएगा, तो वे निश्चित रूप से हमें बचाएंगे; विश्वासयोग्य प्रभु निश्चित रूप से हमसे किए गए वादों को पूरा करेंगे। उद्धार के इस भरोसे को थामे रखकर, हमें विश्वास और आशा के साथ मुसीबत और सताहट का सामना करते रहना चाहिए। जब हमें लगे कि हम अपनी सहनशक्ति की सीमा तक पहुँच गए हैं, तब भी हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए; इसके बजाय, हमें अपनी नज़रें प्रभु पर—जो हमारी सच्ची आशा हैं—टिकाए रखनी चाहिए और उनके वचन को और अधिक संजोते हुए उनकी लालसा करनी चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा, जो सांत्वना देने वाले हैं, परमेश्वर के जीवित और प्रभावशाली वचन के माध्यम से हमें सांत्वना दें।

“मेरी खुशी”

[भजन संहिता 119:89–96]

आपकी खुशी क्या है? आपको किस चीज़ से खुशी मिलती है, खासकर तब जब आप दुख में हों? आज के वचन, भजन संहिता 119:92 में, भजनकार कहता है: “अगर तेरी व्यवस्था मेरी खुशी न होती, तो मैं अपने दुख में नष्ट हो जाता।” इस वचन और “मेरी खुशी” विषय पर ध्यान देते हुए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम परमेश्वर की कृपा का अनुभव करें जब हम इस बात पर मनन करें कि हमें किस चीज़ में खुशी मिलनी चाहिए, हम वह खुशी कैसे पा सकते हैं, और ऐसी खुशी के क्या परिणाम होते हैं।

पहला, “मेरी खुशी” क्या है?

भजनकार की खुशी “तेरी व्यवस्था” थी (वचन 92)। उसे दुख के बीच भी प्रभु की व्यवस्था में खुशी मिलती थी (वचन 92)। इसलिए, वह कहता है, “मैं तेरी आज्ञाओं को कभी नहीं भूलूँगा” (वचन 93)।

दूसरा, “तेरी व्यवस्था” में खुशी पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

(1) भजनकार हमें बताता है कि प्रभु की व्यवस्था में खुशी पाने के लिए, हमें उस पर “ध्यान” देना चाहिए।

आज के पाठ में भजन संहिता 119:95 को देखें: “दुष्ट मुझे नष्ट करने की घात में रहते हैं, पर मैं तेरी गवाही पर ध्यान करूँगा।” जब दुष्ट उसे नष्ट करने की घात में होते थे, तो भजनकार ध्यानपूर्वक प्रभु की व्यवस्था पर

विचार करता था। दूसरे शब्दों में, जब भी उसे जीवन में किसी संकट का सामना करना पड़ता था, तो वह प्रभु के वचन पर ध्यानपूर्वक मनन करता था। उसने ऐसा क्यों किया? इसलिए क्योंकि उस वचन ने "उसे जीवन दिया" (वचन 93)। यह हमारी आदत बन जानी चाहिए। हमें संकट के समय में परमेश्वर के वचन पर और भी ध्यानपूर्वक मनन करने की आदत डालनी चाहिए। (2) भजनकार प्रभु की व्यवस्था में खुशी पाने के लिए उसे "खोजने" की आवश्यकता के बारे में बताता है।

आज के पाठ, भजन संहिता 119:94 को देखें: "मैं तेरा हूँ; मुझे बचा, क्योंकि मैंने तेरी आज्ञाओं को खोजा है।" भजनकार ने प्रभु की व्यवस्था को खोजा क्योंकि वह प्रभु से उद्धार चाहता था। एक सच्चा विश्वासी परमेश्वर के वचन पर अपनी आशा रखता है; इसलिए, वे इसे भूलते नहीं बल्कि इसे खोजते हैं (पद 93–94)। दुख के समय में, हमारी एकमात्र आशा प्रभु में है। दुख के दौरान प्रभु के वचन की ओर देखने के अलावा हमारे पास कोई विकल्प नहीं है। इसके अलावा, केवल परमेश्वर का वचन ही हमें दुख से छुटकारा दिला सकता है।

तीसरी और अंतिम बात, प्रभु की व्यवस्था पर मनन करने और उसे खोजने का क्या परिणाम हुआ?

भजनकार द्वारा प्रभु की व्यवस्था पर मनन करने और उसे खोजने के दो मुख्य परिणाम हम देख सकते हैं:

(1) प्रभु की व्यवस्था पर मनन करने और उसे खोजने से, भजनकार प्रभु की आज्ञाओं की असीम विशालता को समझ पाया।

आज के वचन, भजन संहिता 119:96 को देखें: "मैंने सब पूर्णता का अंत देखा है, लेकिन तेरी आज्ञा अत्यंत विस्तृत है।" दुख के बीच प्रभु की व्यवस्था पर मनन करने और उसे खोजने के द्वारा, परमेश्वर के वचन की शक्ति से उसका जीवन बदल गया। इस प्रकार, दुख प्रभु के विशाल वचन द्वारा हमारे हृदयों को विस्तृत करने का एक बहुमूल्य अवसर बन जाता है।

(2) भजनकार ने यह स्वीकार किया कि प्रभु का वचन स्वर्ग में सदा स्थिर रहता है।

आज के वचन, भजन संहिता 119:89 को देखें: "हे प्रभु, तेरा वचन सदा स्वर्ग में स्थिर है।" दुख अस्थायी है, लेकिन परमेश्वर का वचन शाश्वत है। उस शाश्वत वचन के माध्यम से, परमेश्वर स्वर्ग, पृथ्वी और समस्त सृष्टि का संचालन करते हैं। भजनकार ने अपने दुख के बीच प्रभु की व्यवस्था पर मनन करके और उसे खोजकर इस सत्य को जाना।

हमें परमेश्वर के वचन में आनंद लेना चाहिए; यह हमारी खुशी का स्रोत बनना चाहिए। इसलिए, हमें परमेश्वर के वचन पर लगन से मनन करना चाहिए—विशेषकर संकट का सामना करते समय—क्योंकि केवल उसका वचन ही हमें जीवन दे सकता है। हमें परमेश्वर के वचन को खोजना भी चाहिए, खासकर क्लेश और सताहट के समय में। हमें ऐसा क्यों करना चाहिए? क्योंकि हम परमेश्वर के उद्धार की लालसा रखते हैं। जो लोग उसके छुटकारे की चाह रखते हैं, उन्हें उसके वचन को गंभीरता से खोजना चाहिए। परिणामस्वरूप, हम परमेश्वर के वचन की विशालता को जानेंगे और उसकी शक्ति से हमारे हृदयों के विस्तृत होने की बहुमूल्य कृपा का अनुभव करेंगे। इसके अलावा, परमेश्वर के वचन पर मनन करने और उसे खोजने से, हम उसके शाश्वत सत्य पर दृढ़ता से खड़े रहने का आशीष प्राप्त करेंगे।

समझदार व्यक्ति

[भजन संहिता 119:97-104]

मैं एक दिलचस्प लेख साझा करना चाहता हूँ जो मुझे आज *अमेरिकाज़ गॉस्पेल न्यूज़पेपर* (मिजू गॉस्पेल न्यूज़पेपर) में मिला। पूरे अमेरिका में कोरियाई चर्चों के 3,338 वरिष्ठ पादरियों को एक सर्वे भेजा गया था; 333 जवाबों के विश्लेषण से पता चला कि प्रवासी सेवा-कार्य (इमिग्रेंट मिनिस्ट्री) में "पादरी और मंडली के बीच टकराव" (21.35%) को सबसे बड़ी चुनौती बताया गया। मैं खुद से पूछता हूँ कि पादरी और मंडली के बीच का टकराव मुझ जैसे पादरियों के लिए इतनी बड़ी मुश्किल क्यों पैदा करता है। एक कारण आपसी बातचीत के कौशल या समस्याओं और टकरावों को सुलझाने की क्षमता की कमी हो सकती है। आज के बाइबिल पाठ के नज़रिए से देखें तो, मेरा मानना है कि ये टकराव सेवा-कार्य में इतनी बड़ी बाधा इसलिए बन जाते हैं क्योंकि हम पादरियों में "समझ" (discernment) की कमी होती है।

एक बाइबिल शब्दकोश "समझ" (या अंतर्दृष्टि) को चीज़ों के पीछे के कारण की "बुद्धिमान समझ" से जोड़कर परिभाषित करता है। इसे "समझदारी से व्यवहार करने और अच्छी, व्यावहारिक सामान्य बुद्धि (common sense) का उपयोग करने" के रूप में भी बताया गया है। हालाँकि, समस्या यह है कि हम उस भविष्यवाणी को सच होते देख रहे हैं कि लोग इसलिए नष्ट हो जाते हैं क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के ज्ञान को ठुकरा दिया है (होशे 4:6)। और स्पष्ट रूप से कहें तो, यह भविष्यवाणी इसलिए सच हो रही है क्योंकि "याजकों"—या आधुनिक शब्दों में, मुझ जैसे पादरियों—ने परमेश्वर के ज्ञान को त्याग दिया है, जिससे परमेश्वर के लोगों का विनाश हो रहा है। परमेश्वर के ज्ञान के बजाय सांसारिक ज्ञान की चाह में, ऐसा लगता है कि हम परमेश्वर के वचन के सिद्धांतों का सख्ती से पालन करने के बजाय, सांसारिक सिद्धांतों और तरीकों को उनके साथ मिलाकर सेवा-कार्य कर रहे हैं। इसका मूल कारण परमेश्वर के ज्ञान की कमी है—दूसरे शब्दों में, समझ की कमी। पादरियों द्वारा सही और व्यावहारिक सामान्य बुद्धि का इस्तेमाल न कर पाने का एक नतीजा उनके

और उनकी मंडली के बीच टकराव हो सकता है। बाइबल में यिर्मयाह 9:24 कहता है: "जो कोई घमंड करे, वह इस बात का घमंड करे कि उसे मुझे जानने की समझ है, कि मैं ही प्रभु हूँ, जो पृथ्वी पर दया, न्याय और धार्मिकता दिखाता हूँ—क्योंकि इन्हीं बातों में मुझे खुशी मिलती है..." इस अंश से, हम उस समझ के दो पहलू पहचान सकते हैं जो परमेश्वर को खुश करती है: (1) परमेश्वर को जानना, और (2) यह महसूस करना कि परमेश्वर ही वह है जो पृथ्वी पर दया, न्याय और धार्मिकता दिखाता है। इस उम्मीद के साथ कि हम—पास्टर और मंडली के लोग—ऐसे समझदार लोग बनें जो इस तरह के ज्ञान और समझ से परमेश्वर को खुश करें, मैं आज के अंश के आधार पर "समझदार व्यक्ति" की तीन विशेषताओं पर विचार करना चाहता हूँ:

पहला, समझदार व्यक्ति वह है जो प्रभु के वचन पर मनन करता है।

भजन संहिता 119:99 को देखें: "मुझे अपने सभी शिक्षकों से ज़्यादा समझ है, क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं पर मनन करता हूँ।" भजनकार कहता है कि उसमें अपने सभी शिक्षकों से ज़्यादा समझ थी क्योंकि वह प्रभु के वचन पर मनन करता था। यह बौद्धिक पहलू की बात करता है; प्रभु के वचन के माध्यम से, भजनकार प्रभु को जान पाया और उसके कामों को समझ पाया। इस दोहरे मनन का फल चखने के बाद, वह समझ में अपने शिक्षकों से आगे निकल गया। इसके अलावा, प्रभु के वचन के माध्यम से, वह अपने दुश्मनों से ज़्यादा बुद्धिमान बन गया (पद 98)।

अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में, हम अक्सर अपने दुश्मन, शैतान के प्रलोभनों का सामना करते हैं। शैतान हमसे कहीं ज़्यादा बुद्धिमान है। हालाँकि उसकी बुद्धि टेढ़ी-मेढ़ी है, लेकिन यह एक निर्विवाद तथ्य है कि वह धर्मग्रंथों को हमसे बेहतर और ज़्यादा विस्तार से जानता है; जब वह हमसे बात करता है तो वह बस परमेश्वर के वचन को तोड़-मरोड़ देता है। इसलिए, हमें शैतान की चालों में नहीं फँसना चाहिए और न ही उसे अपने दिमाग को बिगाड़ने देना चाहिए। इस बौद्धिक—या मानसिक—लड़ाई में जीत हासिल करने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन पर लगन से मनन करना चाहिए। हमें उस वचन का इस्तेमाल अपने दिमाग को तेज़ करने के लिए करना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे कोई पवित्र आत्मा की तलवार को तेज़ करता है, और उसे अपने विचारों और दिलों पर राज करने देना चाहिए। तभी हम दुश्मन से ज़्यादा बुद्धिमान बनेंगे और उसके खिलाफ लड़कर जीत हासिल कर पाएँगे।

दूसरा, समझदार व्यक्ति वह है जो प्रभु के वचन से प्रेम करता है। भजन संहिता 119:97 को देखिए: "हे यहोवा, मैं तेरी व्यवस्था से कितना प्रेम करता हूँ! दिन भर मैं उसी पर मनन करता हूँ।" भजनकार, जो दिन भर प्रभु के वचन पर मनन करता था, वह सचमुच उस वचन से प्रेम करता था। वह निश्चित रूप से ऐसा व्यक्ति नहीं था जो परमेश्वर के वचन को केवल बौद्धिक स्तर पर जानता था; वह उस वचन से गहराई से प्रेम करता था—"हे यहोवा, मैं कितना प्रेम करता हूँ..." यह उसके विश्वास के भावनात्मक पहलू को दर्शाता है। प्रभु के वचन से प्रेम करने का अर्थ है स्वयं प्रभु से प्रेम करना, और इस प्रकार उनकी आवाज़ सुनने में आनंद पाना। समझदार भजनकार प्रभु को और गहराई से जानना चाहता था और यह पूरी तरह से अनुभव करना चाहता था कि प्रभु अपने वचन के माध्यम से उसके जीवन में कैसे काम कर रहे थे।

हालाँकि परमेश्वर का जो वचन हम जानते हैं, वही वचन भजनकार भी जानता था, फिर भी ऐसा लगता है कि—कई उपदेशों और बाइबल अध्ययनों में भाग लेने के बावजूद—हम अक्सर उस वचन के माध्यम से हमारे भीतर और हमारे जीवन में सक्रिय रूप से काम कर रहे परमेश्वर को पहचानने में विफल रहते हैं। हम शायद परमेश्वर के वचन को अपने दिमाग में जानते हों और अपने होंठों से दावा करते हों कि हम प्रभु को जानते हैं, फिर भी हम अक्सर उन्हें अपने जीवन में एक जीवित, सक्रिय उपस्थिति के रूप में अनुभव करने में विफल रहते हैं। इसलिए, हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि क्या हम सचमुच परमेश्वर के वचन से प्रेम करते हैं।

अंत में, तीसरा बिंदु: समझदार व्यक्ति वह है जो प्रभु के वचन का पालन करता है।

भजन संहिता 119:100 को देखिए: "मैं बुजुर्गों से अधिक समझ रखता हूँ, क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं का पालन करता हूँ।" यह इच्छाशक्ति के पहलू को दर्शाता है। भजनकार ने प्रभु के वचन को केवल बौद्धिक या भावनात्मक रूप से नहीं अपनाया; उसने अपनी इच्छाशक्ति से उसका पालन करने का संकल्प लिया। विशेष रूप से, हम उन तीन तरीकों की पहचान कर सकते हैं जिनसे भजनकार ने वचन का पालन करने का संकल्प लिया:

(1) उसने "अपने पैरों को हर बुरे रास्ते से रोका।"

आज के पाठ, भजन संहिता 119:101 को देखिए: "तेरे वचन का पालन करने के लिए मैंने अपने पैरों को हर बुरे रास्ते से रोका है।" हम हर दिन निर्णय लेते हुए जीवन जीते हैं। जबकि कुछ निर्णय हमारे विश्वास से प्रेरित होते हैं, अक्सर हम अविश्वास और शैतान के प्रलोभनों से प्रेरित होकर चुनाव करते हैं। हर दिन, हम एक ऐसे चौराहे पर खड़े होते हैं जहाँ हमारे सामने सच्चाई का एक रास्ता होता है, और साथ ही शैतान के प्रलोभन या झूठ के निन्यानवे रास्ते होते हैं। लालच और धोखे के ये रास्ते हमारी आँखों को साफ़-साफ़ दिखाई देते हैं; ये लुभावने लगते हैं—खाने की इच्छा जगाने वाले, देखने में अच्छे और ज्ञान पाने के लिए आकर्षक। आँकड़ों के हिसाब से देखें तो, सच्चाई के एकमात्र रास्ते को चुनने के बजाय निन्यानवे गलत रास्तों में से किसी एक को चुनने की संभावना कहीं ज़्यादा होती है। नतीजतन, हम अक्सर इन धोखे भरे रास्तों पर कदम रख बैठते हैं, और फिर पछतावे में फँसकर उलझन में भटकते रहते हैं। फिर भी, भजनकार ने ऐसा नहीं किया। उसने "किसी भी बुरे रास्ते" पर कदम नहीं रखा; उसने अपने पैरों को उनसे पूरी तरह दूर रखा। परमेश्वर के वचन से ताकत पाने वाले व्यक्ति का यह कितना अद्भुत उदाहरण है! यह सचमुच एक समझदार व्यक्ति का जीवन है जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है।

(2) वह प्रभु के वचन से दूर नहीं हटा।

आज के वचन, भजन संहिता 119:102 को देखें: "क्योंकि तूने स्वयं मुझे सिखाया है, मैं तेरे फैसलों से नहीं हटा हूँ।" न जाने कितनी बार, दिन-ब-दिन, हम ऐसी बातों और कामों में लगे रहते हैं जिनका परमेश्वर के वचन से कोई लेना-देना नहीं होता? हम कितनी बार अपनी भावनाओं को ऐसे तरीकों से ज़ाहिर करते हैं जो परमेश्वर के लोगों के लिए शोभा नहीं देते? हम अच्छी तरह जानते हैं कि मछली अपने पानी (अपने टैंक) के बाहर जीवित नहीं रह सकती, फिर भी हम अक्सर उस शाश्वत सत्य को नज़रअंदाज़ करते हुए अपनी व्यस्त ज़िंदगी जीते हैं कि परमेश्वर की संतानें अपने स्वर्गीय पिता के वचन से अलग होकर जीवित नहीं रह सकतीं। हम ऐसे आध्यात्मिक माहौल में साँस लेते और जीते हुए अपने दिन बिताते हैं जहाँ हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी वचन से कटी हुई होती है। हमें गंभीरता से आत्म-चिंतन करना चाहिए और पूछना चाहिए कि क्या हम शारीरिक रूप से जीवित होते हुए भी (आध्यात्मिक रूप से) मरे हुए लोगों जैसा जीवन जी रहे हैं। भजनकार

स्वीकार करता है कि वह प्रभु के वचन से दूर नहीं हटा है (पद 102)। हमें भी यही बात कहने में सक्षम होना चाहिए जब हम अपने जीवन की अंतिम मंज़िल तक पहुँचें।

(3) वह हर गलत रास्ते से नफ़रत करता था।

आज के अंश, भजन संहिता 119:104 को देखें: "मैं तेरे आदेशों से समझ हासिल करता हूँ; इसलिए मैं हर गलत रास्ते से नफ़रत करता हूँ।" भजनकार, जिसने प्रभु के वचन पर मनन किया और उससे प्रेम किया, उसने अपने मन और हृदय को उस सच्चाई से इतना भर लिया कि वह "हर गलत रास्ते से नफ़रत" करने लगा। क्योंकि वह परमेश्वर के वचन को अपने पूरे अस्तित्व—बुद्धि, भावना और इच्छाशक्ति—से जानता था और उस सच्चाई में पूरी तरह डूबा हुआ था, इसलिए वह पवित्र क्रोध से भर उठता था। संक्षेप में, जो सच्चाई से प्यार करता है, वह झूठ से नफ़रत किए बिना नहीं रह सकता। भजनकार एक ऐसा विश्वासी था जो सच्चाई से प्यार करता था—एक ऐसी सच्चाई जिसमें झूठ की कोई जगह नहीं थी।

जब मैं सोचता हूँ कि भजनकार परमेश्वर के वचन के प्रति इतना समर्पित कैसे हो गया, तो मुझे इसका जवाब आज के वचन, आयत 103 में मिलता है: "तेरे वचन मेरे स्वाद के लिए कितने मीठे हैं, मेरे मुँह में शहद से भी ज़्यादा मीठे!" प्रभु के वचन की मिठास का अनुभव करने के बाद, भजनकार खुद को और भी गहराई से उस वचन के प्रति समर्पित करने के लिए प्रेरित हुआ। वह एक ऐसा विश्वासी था जिसने अपना पूरा अस्तित्व परमेश्वर के वचन को समर्पित कर दिया था—उस पर मनन करना, उससे प्यार करना और उसे मानने के लिए खुद को समर्पित करना। इसीलिए बाइबल उसे समझदार व्यक्ति बताती है। मेरी प्रार्थना है कि हम भी भजनकार की तरह समझदार बनें और लगातार उस खुशी का अनुभव करें जो परमेश्वर के वचन को मानकर जीने वाले जीवन से मिलती है।

आइए, हम आखिर तक पालन करें!

[भजन संहिता 119:105–112]

आज सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, मैंने उपदेशक 7:8 पर मनन किया: "किसी काम का अंत उसकी शुरुआत से बेहतर होता है..." हालाँकि किसी काम की शुरुआत महत्वपूर्ण होती है, लेकिन उसका समापन और भी ज़रूरी है। ऐसा इसलिए है क्योंकि, चाहे शुरुआत कितनी भी शानदार या सुंदर क्यों न हो, अगर कोई उसे अंत तक पूरा नहीं कर पाता, तो वह बेकार है। हमें ऐसे लोग बनना चाहिए जो कामों को पूरा करते हैं। अगर हम बहुत धूमधाम से शुरुआत करते हैं लेकिन काम को खत्म नहीं कर पाते, तो वह शुरुआत बेमतलब हो जाती है।

भजन संहिता 119:112 में, भजनकार कहता है: "मैंने अपना मन हमेशा, यानी आखिर तक, तेरे नियमों का पालन करने में लगाया है।" इस आयत और "आइए, हम आखिर तक पालन करें!" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं आज परमेश्वर की कृपा पाना चाहता हूँ। इसके लिए मैं उन पाँच तरीकों पर मनन करूँगा जिनसे हम प्रभु की आज्ञाओं का वफादारी से आखिर तक पालन कर सकते हैं।

पहला, प्रभु की आज्ञाओं का आखिर तक पालन करने के लिए, हमें उन्हें मानने का संकल्प लेना होगा।

भजन संहिता 119:106 को देखिए: "मैंने कसम खाई है और पक्का किया है कि मैं तेरे धर्मी फैसलों को मानूँगा।" बेशक, हमें परमेश्वर के सामने जल्दबाजी में कसम नहीं खानी चाहिए। हालाँकि, जब प्रभु के वचन को मानने की बात आती है, तो संकल्प लेना ज़रूरी है। इसका कारण यह है कि प्रभु का वचन "अनंत जीवन

का वचन" है (यूहन्ना 6:68)। एक और कारण यह है कि परमेश्वर का वचन इस अंधेरी दुनिया में एक मार्गदर्शक—एक दीये की तरह—काम करता है (भजन संहिता 119:105)।

दूसरा, प्रभु की आज्ञाओं का आखिर तक पालन करने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन को मजबूती से थामे रखना होगा और प्रार्थना करनी होगी।

भजन संहिता 119:107 को देखिए: "मैं बहुत मुसीबत में हूँ; हे प्रभु, अपने वचन के अनुसार मुझे नया जीवन दे।" भजनकार ने परमेश्वर से प्रार्थना कब की? उसने परमेश्वर से तब प्रार्थना की जब वह "बहुत बड़ी मुसीबत" में था। यहाँ "बहुत बड़ी मुसीबत" का क्या मतलब है? आज के पाठ में भजन 110 के पहले हिस्से को देखें: "दुष्टों ने मेरे लिए जाल बिछाया है..." भजनकार दुष्टों के हाथों सताया जा रहा था। नतीजतन, उसकी जान हमेशा खतरे में थी (पद 109)। जानलेवा खतरे के बीच, भजनकार ने परमेश्वर से प्रार्थना की: "अपने वचन के अनुसार मुझे नया जीवन दे" (पद 107)। उसने विश्वास के साथ प्रार्थना की और परमेश्वर से अपनी तकलीफों से छुटकारा दिलाने को कहा। उस स्थिति में, भजनकार ने परमेश्वर से यह प्रार्थना की: "हे प्रभु, मेरे मुँह की स्वेच्छा से दी गई भेंट को स्वीकार कर, और मुझे अपने नियम सिखा" (पद 108)। क्योंकि उसने तकलीफों के बीच भी प्रभु के वचन का पालन किया था, इसलिए उसका दिल खुशी से भर गया और उसने परमेश्वर की स्तुति की।

तीसरी बात, प्रभु की आज्ञाओं को अंत तक मानने के लिए, हमें प्रभु के नियम को नहीं भूलना चाहिए।

भजन 119:109 को देखें: "मेरी जान हर पल खतरे में रहती है, फिर भी मैं तेरे नियम को नहीं भूलता।" भजनकार ने ठान लिया था कि वह प्रभु के वचन को नहीं भूलेगा, भले ही उसकी जान खतरे में हो। अक्सर जब हम जीवन-मरण की स्थितियों का सामना करते हैं तो परमेश्वर के वचन को भूल जाते हैं। संकट के समय हम अक्सर परमेश्वर के वचन पर मजबूती से टिके रहने में नाकाम रहते हैं। हम अक्सर परमेश्वर के नियमों से भटक जाते हैं। हालाँकि, ऐसा करने का मतलब है कि हम अपनी परिस्थितियों को खुद पर हावी होने दें और अपने विश्वास को छोड़ दें। अंधेरे रास्ते पर चलते हुए हमें अपना दीपक नहीं छोड़ना चाहिए।

चौथी बात, प्रभु की आज्ञाओं को अंत तक मानने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन को अपनी विरासत बनाना चाहिए। भजन 119:111 को देखें: "तेरी गवाहियाँ हमेशा के लिए मेरी विरासत हैं, क्योंकि वे मेरे दिल की खुशी हैं।" क्योंकि परमेश्वर का वचन हमारी खुशी है, इसलिए हमें प्रभु के वचन को अपनी हमेशा की विरासत बनाना चाहिए। हालाँकि, अगर हम इस खुशी का अनुभव नहीं करते हैं, तो हम परमेश्वर के वचन को अपनी विरासत नहीं बना सकते। हमारे दिलों के लिए सच्ची खुशी केवल प्रभु के वचन में ही मिलती है। जब हम उस वचन के अनुसार जीते हैं, तो हम अपने दिलों में ईश्वरीय खुशी का अनुभव करेंगे। हमें उस खुशी का भरपूर आनंद लेना चाहिए। पांचवीं और आखिरी बात, प्रभु की आज्ञाओं को आखिर तक पूरा करने के लिए, हमें अपने दिलों को परमेश्वर के वचन की ओर लगाना होगा।

भजन संहिता 119:112 को देखिए: "मैंने अपने मन को सदा, आखिर तक, तेरी विधियों को पूरा करने में लगाया है।" परमेश्वर की आज्ञाओं को आखिर तक मानने के लिए, हमें अपने दिलों को उसके वचन की ओर लगाना होगा। जब हम बहुत ज़्यादा दुख-तकलीफ में हों, तब तो हमें अपने दिलों को परमेश्वर के वचन की ओर और भी ज़्यादा लगाना चाहिए। हमें उस वचन को मज़बूती से थामे रखना चाहिए। इसलिए, हमें उस वचन को अपने जीवन का मार्गदर्शन करने और हमें राह दिखाने देना चाहिए।

हमें आखिर तक परमेश्वर के वचन को मानना चाहिए। हमें उस वचन को मानने का संकल्प लेना चाहिए। हमें उस वचन को थामे रखना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए। हमें प्रभु के वचन को नहीं भूलना चाहिए। हमें उस वचन को अपनी विरासत बनाना चाहिए और अपने दिलों को उसकी ओर लगाना चाहिए। मेरी प्रार्थना है कि आप और मैं ऐसे लोग बनें जो आखिर तक परमेश्वर के वचन को मानते हैं।

आइए हम साफ़-साफ़ समझें कि हमें किन चीज़ों से प्यार करना चाहिए और किनसे नफ़रत!

[भजन संहिता 119:113–120]

बाइबल हमें सिखाती है कि जब "हाँ" कहना हो तो "हाँ" कहें और जब "नहीं" कहना हो तो "नहीं" कहें, फिर भी ऐसा लगता है कि हमारे विश्वास के जीवन में इस स्पष्टता की कमी है। हम अक्सर ऐसा विश्वास का जीवन जीते हैं जहाँ "हाँ" कभी-कभी "नहीं" बन सकता है, और "नहीं" कभी-कभी "हाँ" बन सकता है। हम कितनी बार परमेश्वर की आज्ञा मानकर "हाँ" कहते हैं, लेकिन असल में ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे जवाब "नहीं" हो—यानी अपने कामों में उनकी आज्ञाओं को नहीं मानते? इसके उलट, जिन चीज़ों को न करने की परमेश्वर आज्ञा देते हैं—जहाँ हमें "नहीं" कहना चाहिए—वहाँ हम अक्सर आसानी से उन्हें "हाँ" कह देते हैं और पाप कर बैठते हैं।

ऐसा लगता है कि हम साफ़-साफ़ सही या गलत (काले और सफ़ेद) के बजाय बीच का रास्ता (ग्रे एरिया) चुनते हैं। हालाँकि हमें उस जीवन से प्यार करना चाहिए जो प्रभु को प्रिय है—यानी उनके वचन को मानना—और दुनिया के पापों से नफ़रत करनी चाहिए, फिर भी हम—माउंट कार्मेल पर इस्राएलियों की तरह—एक ऐसी स्थिति में रहते हैं जो न पूरी तरह एक तरफ़ है और न दूसरी तरफ़ (1 राजा 18:21)। हमारे मौजूदा विश्वास के जीवन में स्पष्टता की कमी है। हम प्यार और नफ़रत की चीज़ों के बीच एक साफ़ लकीर नहीं खींच पा रहे हैं—यानी जिससे प्यार करना चाहिए उससे प्यार करना और जिससे नफ़रत करनी चाहिए उससे नफ़रत करना।

हालाँकि, आज के भाग (भजन संहिता 119) में भजनकार को साफ़ पता था कि वह किससे प्यार करता है और किससे नफ़रत। वह "दोहरे मन वाले लोगों" से नफ़रत करता था और "आपके नियम" से प्यार करता था (पद 113)। हमें भी ऐसी ही साफ़ लकीर खींचनी चाहिए, जैसे भजनकार ने खींची थी। फिर भी, हम वह लकीर खींचने में हिचकिचाते हैं। एक कारण यह है कि "बीच के रास्ते" (ग्रे एरिया) पर जीना आरामदायक होता है। हमें उस स्थिति में जीने की बहुत ज़्यादा आदत हो गई है। ऐसा इसलिए है क्योंकि आधे-अधूरे मन से आध्यात्मिक जीवन जीने से—न पूरी तरह एक तरफ़ न दूसरी तरफ़—इंसान इस दुनिया में आराम से जी पाता है। लेकिन बाइबल चाहती है कि हमारी पहचान साफ़ हो। परमेश्वर परमेश्वर है, और मूर्ति मूर्ति है; वह नहीं चाहते कि ईसाई ऐसा जीवन जिएं जो न इधर का हो न उधर का। आज जब मैं भजनकार की प्रेम और घृणा की स्पष्ट चीज़ों पर विचार करता हूँ, तो मुझे उम्मीद है कि हम भी अपने प्रेम और घृणा की चीज़ों को स्पष्ट रूप से परिभाषित कर पाएँगे।

सबसे पहले, भजनकार के प्रेम का विषय क्या था?

आज के अंश—भजन संहिता 119:113–120—को देखने पर हम देख सकते हैं कि भजनकार के प्रेम का विषय परमेश्वर का वचन था। बेशक, क्योंकि प्रभु स्वयं उसके प्रेम का विषय थे, इसलिए प्रभु का वचन भी उसके प्रेम का विषय था। आइए, प्रभु के वचन से प्रेम करने वाले व्यक्ति के जीवन के चार पहलुओं पर विचार करें:

(1) वह प्रभु के वचन पर लगातार ध्यान देता है।

पद 117 के बाद वाले हिस्से को देखें: "...मैं हमेशा तेरी विधियों पर ध्यान दूँगा।" भजनकार परमेश्वर के वचन का सम्मान और कद्र करता था।

(2) वह प्रभु के वचन का पालन करता है।

पद 115 के बाद वाले हिस्से को देखें: "...मैं अपने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करूँगा।" भजनकार प्रभु की आज्ञाओं का पालन करता था। यूहन्ना 14:21 हमें बताता है कि जो प्रभु से प्रेम करता है, वही उसकी आज्ञाओं को मानता और उनका पालन करता है। जो लोग प्रभु से प्रेम करते हैं, वे केवल उसके वचन का सम्मान और कद्र करने तक ही सीमित नहीं रहते; वे वास्तव में उसका पालन करते हैं।

(3) वह प्रभु के वचन पर अपनी आशा रखता है।

भजन संहिता 119:114 के बाद वाले हिस्से को देखें: "...मैं तेरे वचन पर आशा रखता हूँ।" जब हम प्रभु के वचन का पालन करने का प्रयास करते हैं, तो हमें अक्सर शैतान के हमलों का सामना करना पड़ता है। इसलिए, भजनकार की तरह, हमें प्रभु को अपना "छिपने का स्थान" और "ढाल" (पद 114) बनाना चाहिए, उसमें बने रहना चाहिए, और प्रभु के वचन (वादे) पर अपनी आशा रखनी चाहिए (पद 116)।

(4) उसे प्रभु के वचन से सहारा मिलता है। आज के वचन, भजन संहिता 119:116–117 को देखें: "अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल, ताकि मैं जीवित रहूँ... मुझे सम्भाल..." जब हम प्रभु के वचन को मानने—उसका सम्मान और कद्र करने—की कोशिश करते हैं, तो हमें शैतान के हमलों और कई तरह के खतरों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे समय में, हमें प्रभु की शरण में रहना चाहिए, जो हमारी पनाहगाह और ढाल हैं, और उनके वादे के पूरे होने की उम्मीद रखनी चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो प्रभु हमारे जीवन को बनाए रखेंगे (वचन 116) और हमें बचाएंगे (वचन 117)। अगर हम प्रभु के वचन से इस तरह सम्भाले जाते हैं, तो वे सचमुच उस वचन के अनुसार हमें बनाए रखेंगे और बचाएंगे।

तो फिर, भजनकार की नफ़रत का कारण क्या था?

उनकी नफ़रत का कारण "दो मन वाले" लोग थे (वचन 113)। "दो मन वाले" कौन हैं? याकूब 1:6–8 में उन लोगों का वर्णन है जो परमेश्वर से प्रार्थना तो करते हैं लेकिन "शक" करते हैं, उन्हें दो मन वाला कहा गया है। क्या हम खुद भी दो मन वाले नहीं हैं? जब हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं तो कितनी बार हमारे मन में शक होता है? ऐसे दो मन वाले लोग अपने सभी कामों में अस्थिर होते हैं (वचन 8)। हमें अपने अंदर की दो-मन

वाली सोच से नफ़रत करनी चाहिए। भजन संहिता 119:113 के संदर्भ में, "दो मन वालों" की पहचान तीन तरह से की जा सकती है:

(1) दो मन वाले वे लोग हैं जो परमेश्वर के वचन से दूर हो गए हैं। आज के पाठ में वचन 118 का पहला भाग देखें: "तू उन सभी को ठुकरा देता है जो तेरे नियमों से भटक जाते हैं..." मसीही होने के नाते, जिनका प्रेम प्रभु और उनके वचन के प्रति है, हमें उन लोगों से नफ़रत करनी चाहिए जो परमेश्वर के वचन से दूर हो गए हैं—यानी, जिनके मन बंटे हुए हैं। बाइबल कहती है कि प्रभु उन्हें तुच्छ समझते हैं (वचन 118)। क्योंकि वे धोखेबाज़ लोग हैं जो बेकार चीज़ों के पीछे भागते हैं, इसलिए जो लोग प्रभु के वचन से प्रेम करते हैं, उन्हें उन लोगों से नफ़रत करनी चाहिए जो उससे भटक गए हैं।

(2) जिनका मन बंटा हुआ है, वे बुरे काम करने वाले होते हैं। आज के वचन के 115वें पद के पहले हिस्से को देखें: "हे बुरे काम करने वालों..." जो लोग दो-चित्त वाले होते हैं और प्रभु के वचन से भटक जाते हैं, वे ज़रूर बुरे काम करते हैं। इसलिए, जो लोग प्रभु के वचन से प्रेम करते हैं, वे बुरे काम करने वालों से नफ़रत करते हैं।

(3) दो-चित्त वाले लोग ही दुष्ट होते हैं।

आज के वचन के 119वें पद के पहले हिस्से को देखें: "तू पृथ्वी के सब दुष्टों को मैल की तरह दूर कर देता है..." जो ईसाई साफ़ तौर पर प्रभु से प्रेम करते हैं, वे अपने विश्वास के जीवन में दुष्टों को भी साफ़ तौर पर नफ़रत के पात्र मानते हैं।

यहाँ एक अद्भुत बात यह है कि परमेश्वर वादा करते हैं कि वे "[हमारे] मैल को पूरी तरह से दूर कर देंगे और [हमारी] सारी मिलावट को हटा देंगे"—भले ही हम वे लोग हैं जिन्हें उन्होंने प्रेम से चुना है (यशायाह 1:25)। परमेश्वर की कितनी अद्भुत कृपा और प्रेम है! यह एक ऐसा वादा है कि जो परमेश्वर दुष्टों को मैल की तरह दूर कर देते हैं, वे हमें पूरी तरह से शुद्ध करेंगे, भले ही हममें भी वही मैल मौजूद हो। और क्या परमेश्वर ने यीशु मसीह के ज़रिए इस वादे को पूरा नहीं किया? परमेश्वर ने क्रूस पर यीशु के बहुमूल्य लहू के ज़रिए हमें पूरी तरह से शुद्ध किया है। इसलिए, हमें अब अपने प्रेम और नफ़रत के पात्रों के बीच भ्रमित नहीं

होना चाहिए, और न ही ऐसा जीवन जीना चाहिए जो मैल जैसा हो। हमें अब अस्पष्टता वाला जीवन नहीं जीना चाहिए—जहाँ चीज़ें आपस में उलझी हुई हों। हमें ऐसे विश्वास वाले जीवन से संतुष्ट नहीं होना चाहिए जो किसी धुंधली स्थिति में अटका हो, जहाँ हमें यह समझ न आए कि हमें किससे प्रेम करना है और किससे नफ़रत। हम आधे-अधूरे मन वाले नहीं हो सकते; हमें या तो पूरी तरह गर्म होना चाहिए या ठंडा। अब समय आ गया है कि हम अपने विश्वास में डगमगाना बंद करें और एक पक्का फ़ैसला लें। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब साफ़ तौर पर पहचान सकें कि किससे प्रेम करना है और किससे नफ़रत, और अपने विश्वास के जीवन में एक स्पष्ट रेखा खींच सकें।

“यह प्रभु के काम करने का समय है”

[भजन संहिता 119:121–128]

यह कैसा समय है? मेरा मानना है कि यह उस अनुग्रह की रक्षा करने का समय है जो हमें मिला है, और उस अनुग्रह की शक्ति से परमेश्वर की आज्ञाओं को अमल में लाने का समय है। हालाँकि ऐसे समय होते हैं जब हमें अनुग्रह मिलता है, लेकिन उस अनुग्रह को ईमानदारी से बनाए रखना और उससे शक्ति पाकर परमेश्वर की आज्ञाओं को ज़्यादा से ज़्यादा अमल में लाना सचमुच महत्वपूर्ण है।

आज के वचन, भजन संहिता 119:126 में, भजनकार कहता है: “उन्होंने तेरी व्यवस्था को रद्द कर दिया है; यह प्रभु के काम करने का समय है।” मैं इस वचन के आधार पर दो बातों पर विचार करना चाहता हूँ: (1) यह कैसा समय है? (2) ऐसे समय में हमें क्या करना चाहिए?

सबसे पहले, यह कैसा समय है?

यह पाठ हमें इस बारे में दो बातें सिखाता है:

(1) यह वह समय है जब “उन्होंने तेरी व्यवस्था को रद्द कर दिया है” (वचन 126)।

यह वह समय है जब परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन किया जा रहा है। यह वह समय भी है जब न्याय और धार्मिकता का पालन करने वालों पर अत्याचार किया जा रहा है (वचन 121)। दूसरे शब्दों में, यह वह समय है जब अहंकारी लोग प्रभु के सेवक पर अत्याचार कर रहे हैं (वचन 122, 125)।

(2) यह प्रभु के काम करने का समय है (वचन 126)।

यहाँ, "प्रभु के काम" को दो तरह से समझा जा सकता है। (a) पहला, "प्रभु का काम" परमेश्वर के न्याय को दर्शाता है (पार्क युन-सन)। परमेश्वर उन लोगों का न्याय करेगा जो उसकी आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं। वह उन लोगों का न्याय करेगा जो लगातार और जानबूझकर उसके नियमों को तोड़कर जीते हैं। इसके अलावा, परमेश्वर उन लोगों का न्याय करेगा जो न्याय और धार्मिकता का पालन करने वाले संतों पर अत्याचार करते हैं। परमेश्वर निश्चित रूप से अहंकारियों का न्याय करेगा। (b) दूसरा, "प्रभु का काम" परमेश्वर के उद्धार को दर्शाता है। आज के पाठ, भजन संहिता 119:123 को देखें: "तेरा उद्धार और तेरा धर्मी वचन ढूँढ़ते-ढूँढ़ते मेरी आँखें थक गई हैं।" हम जो यीशु में विश्वास करते हैं, हमारे लिए वह समय जब अहंकारी अत्याचारी प्रभु के नियमों को रद्द कर देते हैं, थकावट का समय होता है। हालांकि ज़ुल्म या उत्पीड़न खुद ही थका देने वाला होता है, लेकिन असली थकान तो प्रभु के उद्धार और उनके नेक वचन की गहरी चाहत से आती है। इसलिए, यही वह समय है—जब प्रभु के आदेशों का उल्लंघन हो रहा है—कि हम प्रार्थना करें, और प्रभु के उद्धार और उनके वचन को पाने की सच्ची इच्छा और चाहत रखें।

दूसरी बात, ऐसे समय में हमें क्या करना चाहिए?

जब प्रभु के नियम को रद्द कर दिया जाए और उनके आदेशों को तोड़ा जाए, तो हमें क्या करना चाहिए? जब अहंकारी लोग प्रभु के सेवकों—और हम पर, जो न्याय और नेकी का पालन करते हैं—ज़ुल्म करते हैं, तो हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए?

(1) हमें प्रभु के आदेशों से और भी ज़्यादा प्रेम करना चाहिए।

आज के वचन, भजन संहिता 119:127 को देखें: "इसलिए मैं तेरे आदेशों से सोने से भी, बल्कि शुद्ध सोने से भी ज़्यादा प्रेम करता हूँ।" ऐसे समय में, भजनकार प्रभु के आदेशों को शुद्ध सोने से भी ज़्यादा प्यार करता था। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। ऐसे समय में जब प्रभु के आदेशों का उल्लंघन होता है—और जब उन्हें

मानने के कारण हमें उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है—तो हमें उन आदेशों से और भी ज़्यादा प्रेम करना चाहिए। प्रभु के आदेशों का पालन करने के कारण दुनिया में जो उत्पीड़न और दुख आते हैं, उनके कारण हमें उन आदेशों से दूर नहीं होना चाहिए। इसके विपरीत, मुसीबत और उत्पीड़न के बीच, हमें समझौता करने से इनकार करना चाहिए और इसके बजाय प्रभु के आदेशों से प्रेम करने और उनका पालन करने के लिए खुद को और भी ज़्यादा समर्पित करना चाहिए।

(2) हमें सभी मामलों में प्रभु के नियमों (आदेशों) को सही मानना चाहिए। आज के वचन, भजन संहिता 119:128 को देखें: "इसलिए मैं सभी बातों के बारे में तेरे सभी नियमों को सही मानता हूँ; मैं हर गलत रास्ते से नफ़रत करता हूँ।" भजनकार की तरह, ऐसे समय में जब लोग प्रभु के आदेशों का उल्लंघन करते हैं, हमें उन आदेशों को सही मानना चाहिए। इसके अलावा, हमें हर उस गलत रास्ते से नफ़रत करनी चाहिए जो उन नेक आदेशों से दूर ले जाता है।

हम ऐसे समय में जी रहे हैं जब परमेश्वर के आदेशों का उल्लंघन हो रहा है। यह परमेश्वर के काम करने का समय है; उनके न्याय और उद्धार के आने का समय है। परमेश्वर उन लोगों का न्याय करेंगे जो उनके आदेशों का उल्लंघन करते हैं और उन्हें बचाएंगे जो उनका पालन करते हैं। ऐसे समय में, हमें प्रभु के आदेशों से और भी ज़्यादा प्रेम करना चाहिए और अपने जीवन के हर पहलू में उन्हें सही मानना चाहिए। मेरी प्रार्थना है कि हम सभी ऐसे लोग बनें जो परमेश्वर की आज्ञाओं को सही मानें और इसलिए, हर गलत रास्ते से नफ़रत करें।

“मेरे कदमों को अपने वचन में मज़बूती से जमाए रख!”

[भजन संहिता 119:129–136]

मेरा मानना है कि परमेश्वर की कृपा के बिना किसी एक रास्ते पर वफ़ादारी से आखिर तक चलना नामुमकिन है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनकी कृपा के बिना, हम ज़िंदगी में एक रास्ते पर वफ़ादारी से चलने के बजाय कई धोखे भरे रास्तों पर भटक सकते हैं। हमारे कदमों को एक खास मज़बूती की ज़रूरत होती है—एक ऐसी मज़बूती जो हमें उस रास्ते पर शांति और पक्के इरादे से चलने में मदद करे। जब हम गोलगोथा जाने वाले संकरे रास्ते पर चलते हैं—वही रास्ता जिस पर प्रभु खुद चले थे—तो हमें अपने कदमों को और भी मज़बूती से जमाना चाहिए। इसलिए, हमें उन चौड़े रास्तों से गुमराह नहीं होना चाहिए जो हमारे सामने फैले हुए हैं।

भजन संहिता 119:133 में, भजनकार परमेश्वर से प्रार्थना करता है: “मेरे कदमों को अपने वचन में मज़बूती से जमाए रख, और किसी भी बुराई को मुझ पर हावी न होने दे।” इस आयत पर ध्यान देते हुए, मैं “मेरे कदमों को अपने वचन में मज़बूती से जमाए रख!” शीर्षक के तहत दो बातों पर विचार करना चाहता हूँ: (1) हमें प्रभु के वचन में अपने कदमों को मज़बूती से क्यों जमाना चाहिए? और (2) हम प्रभु के वचन में अपने कदमों को मज़बूती से कैसे जमा सकते हैं?

पहला, हमें प्रभु के वचन में अपने कदमों को मज़बूती से क्यों जमाना चाहिए?

इसके दो कारण हैं।

(1) हमें प्रभु के वचन में अपने कदमों को मज़बूती से जमाना चाहिए ताकि कोई भी बुराई हम पर हावी न हो सके।

बुराई हम पर कब हावी होती है? ऐसा तब होता है जब हम प्रभु के वचन को अपने दिलों में नहीं रखते। भजन संहिता 119:11 को देखिए: "मैंने तेरे वचन को अपने दिल में छिपाकर रखा है ताकि मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।" परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ने के इस दौर में, हम देखते हैं—यहाँ तक कि खुद में भी—कि हम परमेश्वर के वचन को हल्के में लेते हैं और उसे अपने दिलों में नहीं रखते। इसका नतीजा पाप करना होता है। हम अनजाने में ही पाप कर बैठते हैं क्योंकि परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में न रखकर, हम वचन को हावी होने देने के बजाय अपने पापी पुराने स्वभाव को खुद पर राज करने देते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। हमें अब पाप को हम पर राज नहीं करने देना चाहिए। इसके बजाय, हमें परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में संजोकर रखना चाहिए और उसे अपनी ज़िंदगी पर राज करने देना चाहिए। हमें प्रभु की आज्ञाओं से और भी अधिक प्रेम करना चाहिए और उन्हें मानने का प्रयास करना चाहिए। इसलिए, हमें प्रभु के वचन पर अपने कदम मजबूती से जमाने चाहिए।

(2) प्रभु के वचन पर अपने कदम मजबूती से जमाने का कारण यह है कि हम दूसरों के अत्याचार से छुटकारा पा सकें।

आज के वचन, भजन संहिता 119:134 को देखें: "मुझे मनुष्यों के अत्याचार से छुड़ा, ताकि मैं तेरी आज्ञाओं को मान सकूँ।" परमेश्वर के वचन का पालन करने की कोशिश करते समय हम जिस दबाव का सामना करते हैं, वह एक मूल्यवान परीक्षा है जो यह दिखाती है कि क्या हम वास्तव में उस वचन पर मजबूती से खड़े हैं या नहीं। यदि हम परमेश्वर के वचन में मजबूती से स्थापित नहीं हैं, तो दबाव के कारण हम उसे छोड़ सकते हैं, दुनिया के साथ समझौता कर सकते हैं और परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर सकते हैं। हालाँकि, यदि हम परमेश्वर के वचन पर मजबूती से खड़े रहते हैं, तो हम पर पड़ने वाला दबाव उस वचन में अपने कदमों को और भी मजबूती से जमाने का अवसर बन जाता है। परमेश्वर का उद्धार वास्तव में यही है। यद्यपि अत्याचार से छुटकारा निश्चित रूप से उद्धार का एक रूप है, लेकिन उस अत्याचार के बीच प्रभु के वचन पर और भी मजबूती से खड़े होने के लिए सशक्त होना भी परमेश्वर का उद्धार है।

दूसरे, हम प्रभु के वचन पर अपने कदम मजबूती से कैसे जमा सकते हैं? भजन संहिता 119:129–136 का अंश हमें तीन मुख्य शिक्षाएँ देता है।

(1) प्रभु के वचन पर अपने कदम मजबूती से जमाने के लिए, हमें "सरल" हृदय वाला बनना होगा।

वचन 130 को देखें: "तेरे वचनों का खुलना प्रकाश देता है; यह सरल लोगों को समझ देता है।" यहाँ, "सरल" का अर्थ उन विश्वासियों से है जो परमेश्वर के सामने विभाजित हृदय नहीं रखते बल्कि पूरी निष्ठा के साथ उसका सम्मान करना चाहते हैं (मत्ती 11:25; भजन संहिता 27:4) (पार्क युन-सन)। जब ऐसे व्यक्ति के सामने परमेश्वर का वचन खुलता है, तो समझ आती है। और उस समझ के साथ, हम प्रभु के वचन पर अपने कदम मजबूती से जमा सकते हैं।

(2) प्रभु के वचन पर अपने कदम मजबूती से जमाने के लिए, हमें अपना मुँह पूरा खोलना चाहिए और तीव्र लालसा के साथ हाँफना चाहिए।

भजन संहिता 119:131 को देखें: "मैंने अपना मुँह खोला और हाँफने लगा, क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं के लिए लालायित था।" जैसे कोई व्यक्ति हवा के लिए हांफता है क्योंकि उसके बिना वह मर जाएगा, वैसे ही भजनकार परमेश्वर की आज्ञाओं के लिए तड़पता था, क्योंकि वह जानता था कि उनके बिना वह नष्ट हो जाएगा (पार्क युन-सन)। यह दिखाता है कि हमें कितनी शिद्दत से प्रभु के वचन की चाहत रखनी चाहिए। हमें अपना मुँह खोलकर परमेश्वर के वचन के लिए हांफना चाहिए; हमें यह समझना होगा कि उसे अपनाए बिना हम मर जाएँगे। इसलिए, जीवित रहने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन के लिए तड़पना चाहिए। हमें इसे जीवन-मरण की गंभीरता के साथ खोजना चाहिए—यह एहसास करते हुए कि हमारा अस्तित्व इसी पर निर्भर करता है।

(3) प्रभु के वचन पर अपने कदमों को मजबूती से जमाने के लिए, हमें उसकी अद्‌भुत गवाहियों को मानना चाहिए।

भजन संहिता 119:129 को देखें: "तेरी गवाहियाँ अद्‌भुत हैं; इसलिए मेरा मन उन्हें मानता है।" भजनकार प्रभु की आज्ञाओं को मानता था क्योंकि उसने परमेश्वर की गवाहियों के अद्‌भुत स्वभाव का अनुभव किया

था। उसने प्रभु के वचन पर अपने कदमों को मजबूती से जमाया था। हमारा क्या? यदि हम परमेश्वर के वचन के अद्भुतपन का अनुभव कर रहे हैं, तो हम उसे मानने और उस पर चलने की और अधिक कोशिश करेंगे। हालाँकि, यदि हम उस अद्भुतपन का अनुभव करने में विफल रहते हैं, तो हम परमेश्वर के वचन को मानने में लापरवाह हो जाएँगे। भजनकार की तरह, हो सकता है कि हम प्रभु के वचन को सीखने की कोशिश भी न करें (पद 135)। नतीजतन, परमेश्वर की आज्ञाओं को न मानकर, हम उन लोगों की आँखों से आँसू बहाने का कारण बनेंगे जो उन्हें मानते हैं (पद 136)। हमें इस तरह से नहीं चलना चाहिए। हमें परमेश्वर के वचन के अद्भुतपन का अनुभव करना चाहिए। हमें उस अनुग्रह का और अधिक और गहराई से अनुभव करना चाहिए जो परमेश्वर उन लोगों पर बरसाता है जो उसके वचन को मानते हैं (पद 132)। इसलिए, हमें प्रभु के वचन पर अपने कदमों को मजबूती से जमाना चाहिए।

हमें प्रभु के वचन पर अपने कदमों को मजबूती से जमाना चाहिए। हमें ऐसा इसलिए करना चाहिए ताकि कोई पाप हम पर हावी न हो सके। जो लोग प्रभु के वचन का उल्लंघन करते हैं, उनके अत्याचार से छुटकारा पाने के लिए भी हमें प्रभु के वचन पर अपने कदमों को मजबूती से जमाना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें सरल हृदय वाला बनना होगा; हमें केवल प्रभु का सम्मान करने के लिए पूरी लगन और निष्ठा के साथ उनके वचन की चाहत रखनी होगी। इसके अलावा, हमें अपना मुँह पूरा खोलकर परमेश्वर के वचन को ग्रहण करना चाहिए ताकि हमारा जीवन बना रहे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम दोनों परमेश्वर की अद्भुत गवाहियों को मानते हुए उनके वचन पर अपने कदम मज़बूती से जमा सकें।

जब मुझ पर मुसीबत और परेशानी आती है

[भजन संहिता 119:137–144]

जब हम पर मुसीबत और परेशानी आती है, तो हमें क्या करना चाहिए?

भजन संहिता 119:143 में, भजनकार कहता है: "मुसीबत और परेशानी मुझ पर आ पड़ी हैं, लेकिन तेरी आज्ञाओं में ही मुझे खुशी मिलती है।" आज के इस हिस्से को देखकर, मैं तीन बातें सीखना चाहता हूँ कि कैसे भजनकार ने ऐसी मुश्किलों के बीच भी प्रभु की आज्ञाओं में खुशी पाई, और इन बातों को अपने जीवन में अपनाना चाहता हूँ। मेरी प्रार्थना है कि हम भी, मुसीबत और परेशानी का सामना करते हुए, प्रभु की आज्ञाओं को अपनी खुशी मानें।

पहली बात, जब हम पर मुसीबत और परेशानी आए, तो हमें ईमानदार रहना चाहिए।

भजन संहिता 119:137 को देखिए: "हे प्रभु, तू धर्मी है, और तेरे फैसले सही हैं।" जब हम मुसीबत और परेशानी का सामना करते हैं, तो अक्सर ईमानदार रहने के बजाय झूठ बोलना आसान लगता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उस पल में, झूठ बोलना उस स्थिति से बचने का आसान तरीका लग सकता है। हालाँकि, भजनकार की तरह, जब मुसीबत और परेशानी आए तो हमें सही और ईमानदार फैसले लेने चाहिए; हमें कभी भी अपनी सोच को धुंधला नहीं होने देना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमारा चरित्र प्रभु की धार्मिकता से भरा होना चाहिए। ईमानदारी उसी धार्मिकता से आनी चाहिए। प्रभु का नियम सत्य है (पद 142)। हमें सत्य के इस वचन को अपने जीवन में उतारना चाहिए और ईमानदारी का जीवन जीना चाहिए। हमें कभी भी झूठ के लालच में नहीं पड़ना चाहिए और अपनी ईमानदारी को नहीं छोड़ना चाहिए।

दूसरी बात, जब हम पर मुसीबत और परेशानी आए, तो हमें वफादार रहना चाहिए। भजन संहिता 119:138 को देखिए: "तूने जो गवाही दी है, वह धर्मी और बहुत ही भरोसेमंद है।" हालाँकि मुसीबत और परेशानी के बीच ईमानदार रहना आसान नहीं है, लेकिन वफादार रहना और भी मुश्किल हो सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ऐसी मुश्किलों के बीच वफादार रहने के लिए धैर्य और सहनशक्ति की ज़रूरत होती है। फिर भी, आज के हिस्से में भजनकार वफादार रहा। भले ही वह अपने दुश्मनों की वजह से मुसीबत और परेशानी झेल रहा था (पद 139), फिर भी वह प्रभु के वचन के प्रति वफादार रहा। वह प्रभु के वचन को नहीं भूला (पद 139)। वह परमेश्वर के वचन के प्रति इतना वफ़ादार इसलिए रह सका क्योंकि उसने व्यक्तिगत रूप से उस वचन की "अत्यधिक वफ़ादारी" का अनुभव किया था (पद 138)। दूसरे शब्दों में, भजनकार न केवल परमेश्वर के वचन के ज़रिए उनकी वफ़ादारी के बारे में जानता था, बल्कि उसने अपने जीवन में व्यक्तिगत रूप से इसका अनुभव भी किया था; इसलिए, जीवन की मुश्किलों और परेशानियों के बीच भी, जो उसी वफ़ादारी के दायरे में आती थीं, उसे परमेश्वर की वफ़ादारी पर पक्का भरोसा था। हमें भी परमेश्वर की वफ़ादारी पर वैसा ही पक्का भरोसा रखना चाहिए जैसा भजनकार ने रखा था। मुश्किलों और परेशानियों का सामना करते समय तो हमें ऐसा और भी ज़्यादा करना चाहिए।

तीसरी और आखिरी बात, जब हम पर मुश्किलें और परेशानियाँ आएँ, तो हमें प्रेम करना चाहिए।

भजन संहिता 119:140 को देखिए: "तेरा वचन बहुत शुद्ध है; इसलिए तेरा दास उससे प्रेम करता है।" हमें प्रभु के वचन से प्रेम करना चाहिए, जो बहुत ही शुद्ध है। हमें प्रभु के बहुत शुद्ध वचन से प्रेम क्यों करना चाहिए? इसलिए, क्योंकि जैसे शुद्ध सोना पाने के लिए सोने को भट्टी में पिघलाया जाता है, वैसे ही जीवन की मुश्किलों और परेशानियों के ज़रिए परमेश्वर का बहुत शुद्ध वचन हमें भी शुद्ध करता है। प्रभु के वचन में कितनी अद्‌भुत शक्ति है! मुश्किलों और परेशानियों के बीच, परमेश्वर का वचन हमारे विश्वास, हमारे दिलों और हमारे चरित्र को शुद्ध करता है। इस तरह, भजनकार की तरह, हमारे पास भी ऐसी परीक्षाओं के बीच प्रभु की आज्ञाओं को अपनी खुशी बनाने के अलावा कोई और चारा नहीं बचता।

जीवन में आने वाली मुश्किलों और परेशानियों के बीच हमें सीधा और खरा बने रहना चाहिए। हमें प्रभु के सही और अटल वचन को ईमानदारी से मानना चाहिए, और उसके बहुत शुद्ध किए हुए वचन से और भी ज़्यादा प्रेम करना चाहिए। तभी हम जी पाएँगे (पद 144)।

प्रभु से पुकारें!

[भजन संहिता 119:145–152]

अगर ईसाई जीवन में प्रार्थना के मामले में किसी ऐसे व्यक्ति का ज़िक्र हो जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता, तो वह जॉर्ज म्यूलर हैं। वे प्रार्थना करने वाले व्यक्ति थे, जिन्हें ऐसे व्यक्ति के तौर पर जाना जाता था जिनकी प्रार्थनाओं का जवाब 50,000 से ज़्यादा बार मिला। अपने विश्वास के बारे में, उन्होंने कहा था: "मेरा विश्वास वैसा ही है जैसा सभी विश्वासियों का होता है। यह ऐसा विश्वास है जो प्रभु के रास्ते पर चलता है और हर दिन थोड़ा-थोड़ा बढ़ता है। मेरा विश्वास किसी भी तरह से कोई खास किस्म का विश्वास नहीं है" (इंटरनेट)। जॉर्ज म्यूलर की तरह—जो प्रार्थना करने वाले ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें रोज़ बढ़ने वाले विश्वास के साथ परमेश्वर से पुकारने पर 50,000 से ज़्यादा जवाब मिले—हमें भी प्रार्थना करने वाले लोग बनना चाहिए। हमें ऐसे लोग बनना चाहिए जो विश्वास के साथ प्रार्थना करते हैं।

आज के बाइबल पाठ, भजन संहिता 119:145 में, भजनकार कहता है: "मैं पूरे दिल से पुकारता हूँ; हे प्रभु, मुझे जवाब दे! मैं तेरी आज्ञाओं का पालन करूँगा।" इस आयत और "प्रभु से पुकारें!" शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं प्रार्थना के तीन पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ और उन सीखों को समझना चाहता हूँ जो प्रभु देते हैं।

पहला, हमें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए? (प्रार्थना का तरीका)

भजन संहिता 119:145 में, हम देखते हैं कि भजनकार ने प्रभु को "पूरे दिल से" पुकारा। भजनकार की तरह, हम पर जितना बड़ा खतरा हो, हमें चिंता और परेशानी के बजाय विश्वास और प्रार्थना में खुद को उतना ही

ज़्यादा लगाना चाहिए (पार्क युन-सन)। भजनकार किस खतरनाक स्थिति का सामना कर रहा था? आयत 150 देखें: "जो लोग बुराई के पीछे चलते हैं, वे पास आ रहे हैं; वे तेरी व्यवस्था से दूर हैं।" भजनकार जिस स्थिति का सामना कर रहा था, वह ऐसे लोगों के समूह का आना था जो प्रभु की व्यवस्था का पालन करने के बजाय बुराई के पीछे चलते थे। चूँकि भजनकार प्रभु की व्यवस्था से प्रेम करता था, इसलिए बुरे लोग—जो उस व्यवस्था से नफ़रत करते थे—उसके पास आ गए। बुरे लोगों ने भजनकार से संपर्क क्यों किया? इसलिए क्योंकि वे उसे प्रभु की व्यवस्था से दूर करना चाहते थे। हालाँकि, ऐसी स्थिति में भी भजनकार को भरोसा था कि प्रभु पास ही हैं (पद 151) और उसने पूरे दिल से परमेश्वर को पुकारा। उसने दिन-रात प्रभु के वचन पर मनन किया (पद 148)। सच्चाई के वचन को थामे हुए, उसने पूरे मन से प्रभु को पुकारा (पद 149)। इसके अलावा, उसने प्रभु की दया और प्रेम पर भरोसा करते हुए पुकारा (पद 149)। भजनकार की तरह, जब बुरे लोग हमारे करीब आते हैं, तो हमें भी पूरे दिल से प्रार्थना में प्रभु के करीब आना चाहिए। जब हम प्रार्थना में उनके पास जाते हैं, तो हमें उनकी दया और प्रेम पर भरोसा करते हुए पुकारना चाहिए। हमें विश्वास के साथ उनके सच्चाई के वचन को थामे रखना चाहिए और पूरे दिल से उन्हें पुकारना चाहिए।

दूसरी बात, हमें किस चीज़ के लिए प्रार्थना करनी चाहिए? (प्रार्थना का विषय)

भजनकार की परमेश्वर से पुकार का विषय भजन 119:146 में बताया गया है: "मैं तुझे पुकारता हूँ; मुझे बचा, और मैं तेरी गवाहियों को मानूँगा।" संक्षेप में, भजनकार ने परमेश्वर से खुद को बचाने की पुकार लगाई। उसने परमेश्वर से विनती की कि वह उसे उन बुरे लोगों से बचाए जो प्रभु के नियम को नहीं मानते थे। परमेश्वर से उद्धार पाने में उसका मकसद क्या था? मकसद यह था कि वह वफ़ादारी से परमेश्वर के वचन का पालन कर सके। आज के पाठ में पद 145 और 146 के बाद के हिस्सों को देखें: "...मैं तेरी विधियों को मानूँगा" (पद 145b) और "...मैं तेरी गवाहियों को मानूँगा" (पद 146b)। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा, "किसी विश्वासी का मुसीबत से छुटकारा पाने की कोशिश करने का मकसद इस दुनिया में लंबी ज़िंदगी जीना नहीं, बल्कि परमेश्वर के वचन को ज़्यादा वफ़ादारी से मानना है।" हम परमेश्वर से छुटकारा पाने की विनती इसलिए करते हैं ताकि हम उनके वचन का बेहतर ढंग से पालन कर सकें। हमें इसी सही मकसद को ध्यान में रखकर परमेश्वर से उद्धार के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

तीसरी और आखिरी बात, हमें कब प्रार्थना करनी चाहिए? (प्रार्थना का समय)

भजन 119:147 में, भजनकार कहता है कि उसने "भोर होने से पहले" परमेश्वर को पुकारा। उसने इतनी ज़रूरी और सच्ची प्रार्थना की कि दिन निकलने से पहले ही उसने परमेश्वर को पुकारा। इससे पता चलता है कि वह कितनी गहराई से प्रभु से छुटकारा (पद 146) और प्रभु के वचन (पद 147) की चाहत रखते थे। उसी लगन के साथ, हमें भी—यीशु की तरह—सुबह-सुबह किसी सुनसान जगह पर जाकर परमेश्वर को पुकारना चाहिए।

हमें पूरे दिल से प्रभु को पुकारना चाहिए। हमें प्रभु की दया पर भरोसा करते हुए और उनके वचन के अनुसार पुकारना चाहिए। पुकारते समय, हमें प्रभु से छुटकारा पाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। हमें पूरे मन से प्रभु से छुटकारा पाना चाहिए ताकि हम परमेश्वर के वचन का और भी ईमानदारी से पालन कर सकें। इसके अलावा, भजनकार और यीशु की तरह, हमें सुबह-सुबह परमेश्वर को पुकारना चाहिए। जब हम ऐसा करेंगे, तो हमें एहसास होगा कि प्रभु हमारे पास हैं (पद 151), और हम यह मानने के लिए मजबूर हो जाएंगे कि उनकी सभी आज्ञाएँ सच हैं (पद 151)। और हम प्रभु के वचन पर—जो हमारी हमेशा की नींव है—मजबूती से खड़े रहेंगे और उस वचन के अनुसार जीवन जिएँगे।

"हे प्रभु, मुझे नया जीवन दे!"

[भजन संहिता 119:153–160]

क्या अतीत को याद करना आपके लिए सुखद अनुभव है या दुखद? ऐसा लगता है कि बहुत से लोग अतीत के बारे में सोचने पर खुशी के बजाय परेशानी महसूस करते हैं। अक्सर ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उनके मन में सुखद यादों की तुलना में दुखद यादें अधिक होती हैं। जो लोग बहुत सी दुखद यादों के बोझ तले दबे होते हैं, वे उन्हें अपने दिल की गहराइयों में दबाकर रखना चाहते हैं और अतीत को फिर से याद करने से बचना चाहते हैं। फिर भी, जब उनके वर्तमान जीवन में नई मुसीबतें आती हैं, तो वे पुरानी, दुखद यादें फिर से उभर आती हैं, जिससे वे और भी गहरी परेशानी और निराशा में डूब जाते हैं। दुख और निराशा के इस चक्र में फँसे हुए, वे और भी गहरी निराशा—या यहाँ तक कि घोर निराशा—में गिर सकते हैं, क्योंकि वे पछतावे, मन में दबे अपराध-बोध और लंबे समय से चली आ रही नाराज़गी से भरे अपने ही अस्तित्व का सामना करते हैं। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? हमें निराशा से बचना चाहिए।

आज के अंश में—खासकर भजन संहिता 119 की आयतों 154, 156 और 159 के अंतिम भागों में—भजनकार प्रार्थना करता है, "मुझे नया जीवन दे।" इन आयतों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं "हे प्रभु, मुझे नया जीवन दे!" विषय पर मनन करना चाहता हूँ और निराशा से बचने के दो तरीकों पर विचार करना चाहता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर की कृपा हम सभी पर बनी रहे।

पहला, हमें निराशा में क्या ले जाता है?

दो बातें हैं।

(1) जो चीज़ हमें निराशा में ले जाती है, वह है "मेरा दुख" या "मेरी विपत्ति"।

भजन संहिता 119:153 को देखें: "मेरे दुख पर दृष्टि कर और मुझे छुड़ा, क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूलता।" भजनकार ने जो दुख सहा, वह "दुष्टों" (आयत 155)—जिन्होंने उसे सताया—और उसके विरोधियों (आयत 157) के हाथों मिला। उसे इन दुष्ट लोगों के कारण सताया गया, जिन्होंने प्रभु की विधियों को नहीं खोजा (आयत 155), और उन धोखेबाज़ लोगों के कारण, जिन्होंने प्रभु के वचन का पालन नहीं किया (आयत 158)। उनके सताए जाने के कारण, भजनकार—जो प्रेम के कारण प्रभु की विधियों को खोजता था और उसके वचन का पालन करता था—को बहुत दुख सहना पड़ा और उसके निराशा में डूबने का खतरा पैदा हो गया। ऐसी स्थिति में, उन्होंने प्रभु से तीन बार विनती की और कहा, "मुझे नया जीवन दे" (पद 154, 156, 159)।

(2) निराशा में डूबने का कारण हमारी शिकायत या दुख की भावना होती है।

आज के वचन, भजन संहिता 119:154 को देखें: "मेरा पक्ष ले और मुझे छुड़ा; अपने वचन के अनुसार मुझे नया जीवन दे।" जब भजनकार को अन्यायपूर्ण दुख का सामना करना पड़ा—यानी कोई गलत काम न करने के बावजूद बुरे लोगों द्वारा सताया गया—तो उन्होंने अपनी शिकायत के बारे में परमेश्वर से गुहार लगाई। जब हम अन्याय का सामना करते हैं, तो हम भी निराशा में डूब सकते हैं। ऐसी निराशा महसूस होने पर हमें क्या करना चाहिए?

दूसरी बात, हम निराशा से कैसे उबर सकते हैं?

हम प्रार्थना और वचन के द्वारा निराशा से उबर सकते हैं। जब भजनकार बुरे लोगों के अत्याचार के कारण दुख झेल रहे थे, तो उनके सामने दो विकल्प थे: या तो दुख के कारण अपनी आत्मा को निराश होने दें, या फिर वचन और प्रार्थना के जीवन में और अधिक सक्रियता से शामिल हों। भजनकार ने बाद वाला विकल्प चुना; अपने दुख के बीच भी उन्होंने और भी अधिक लगन से प्रार्थना और वचन का पालन किया। उनकी

प्रार्थनाओं को देखें: "मुझे छुड़ा" (पद 153) और "मुझे नया जीवन दे" (पद 154, 156, 159)। दुख के बीच निराशा में डूबने के बजाय, उन्होंने प्रभु की ओर देखा और छुटकारा व नए जीवन के लिए प्रार्थना की। इसके अलावा, मुसीबत के समय भी वे प्रभु के नियम को नहीं भूले (पद 153) और न ही उनकी गवाहियों से मुड़े (पद 157)। वे प्रभु के वचन से और भी मजबूती से जुड़े रहे। इस प्रकार, भजनकार ने प्रभु से पुकार की, "अपने वचन के अनुसार मुझे नया जीवन दे" (पद 154) और "अपने न्याय के अनुसार मुझे नया जीवन दे" (पद 156)। दुख के समय निराशा से बचने के लिए, हमें भी प्रभु के वचन के अनुसार प्रार्थना करनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमें उनके वचन को मजबूती से थामे रखना चाहिए और विश्वास के साथ उनसे अपनी विनती करनी चाहिए। हमारे दिलों का मार्गदर्शन प्रभु के वचन से होना चाहिए और हमें खुद को उसके अधीन रखना चाहिए; वरना, मुश्किलों का सामना करते समय हम आसानी से निराशा में डूब सकते हैं। ज़िंदगी में मिलने वाले दुख और अन्यायपूर्ण तकलीफ़ों से हम कभी-कभी निराश हो सकते हैं। ऐसे समय में, हमें परमेश्वर के वचन पर मज़बूती से बने रहना चाहिए और प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए। उनकी दया और प्रेम पर भरोसा करते हुए, हमें उनके वचन के अनुसार यह विनती करनी चाहिए: "मुझे नया जीवन दें।" जब हम ऐसा करते हैं, तो प्रभु हमारी प्रार्थनाएँ सुनते हैं और हमारे दिलों में नई जान डाल देते हैं। वे हमें निराशा से बाहर निकालते हैं और हमारे दिलों को उम्मीद और उनकी चाहत की ओर मोड़ते हैं, जिससे हम उदासी से मुक्त हो जाते हैं। इसके अलावा, वे हमें बुरे लोगों और हमें सताने वालों से बचाते हैं। मेरी प्रार्थना है कि आप और मैं, दोनों ही उद्धार के इस काम का अनुभव कर सकें।

परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करें!

[भजन संहिता 119:161-168]

अगर हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं, तो हमें उनकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए (यूहन्ना 14:21)। परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते समय, हमें उनकी छोटी-से-छोटी बात को भी नज़रअंदाज़ किए बिना उन्हें मानना और उन पर चलना चाहिए (मत्ती 5:19)। आज के वचन, भजन संहिता 119:166 में, भजनकार कहता है: "हे प्रभु, मैं तेरे उद्धार की आशा करता हूँ, और तेरी आज्ञाओं का पालन करता हूँ।" इस वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं "परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करें!" शीर्षक के तहत तीन बिंदुओं पर विचार करना चाहूँगा: (1) परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? (2) हमें परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन कैसे करना चाहिए? (3) परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का क्या परिणाम होता है?

सबसे पहले, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

आज का वचन, भजन संहिता 119:161-168, हमें तीन बातें सिखाता है:

(1) परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए, हमें केवल परमेश्वर के वचन का आदर करना चाहिए।

भजन संहिता 119:161 को देखें: "बड़े-बड़े लोग बिना कारण मुझे सताते हैं, लेकिन मेरा मन तेरे वचन का आदर करता है।" अन्यायपूर्ण सताहट का सामना करते हुए भी, भजनकार उन बड़े लोगों से नहीं डरा जो उसे सताते थे; इसके बजाय, उसने केवल प्रभु के वचन का आदर किया। जब हम प्रभु के वचन के प्रति ऐसा आदर रखते हैं, तो हम भी भजनकार की तरह परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन कर सकते हैं। ऐसे आदर के

बिना, हमें उन लोगों से डरने का खतरा रहता है जो हमें सताते हैं और हम परमेश्वर की आज्ञाओं को न मानकर आज्ञा न मानने का पाप कर बैठते हैं।

(2) परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए, हमें प्रभु के वचन में आनंद लेना चाहिए। आज का वचन, भजन संहिता 119:162 देखें: "मैं तेरे वचन से वैसे ही आनंदित होता हूँ जैसे कोई बड़ा खज़ाना पाकर होता है।" भजनकार न केवल परमेश्वर के वचन का आदर करता था बल्कि उसमें आनंद भी लेता था। वह परमेश्वर के वचन में वैसे ही आनंदित होता था जैसे कोई युद्ध में बड़ी लूट मिलने पर आनंदित होता है। हमें भी अपने दुखों के बीच परमेश्वर के वचन में आनंद लेना चाहिए—उसी तीव्रता के साथ आनंद लेना चाहिए जैसे कोई बड़ा खज़ाना पाकर आनंदित होता है। जैसे कोई व्यक्ति बिना किसी निजी कोशिश या काबिलियत के मिली चीज़ों से खुश होता है, वैसे ही हमें भी उस वादे से बहुत खुश होना चाहिए जो हमें दिया गया है—एक ऐसा तोहफ़ा जो हमें तब भी मिलता है जब हम उसके लायक नहीं होते—और यह खुशी हमें तब भी होनी चाहिए जब हम दुख सह रहे हों।

(3) परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने के लिए हमें प्रभु के वचन से प्यार करना चाहिए।

आज के वचन, भजन 119:163 को देखिए: "मैं झूठ से नफ़रत और घृणा करता हूँ, लेकिन मैं आपके नियम से प्यार करता हूँ।" परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन से वैसे ही प्यार करना चाहिए जैसे भजनकार ने किया था। और परमेश्वर के वचन से प्यार करने के लिए, हमें झूठ से नफ़रत और घृणा करनी चाहिए। हमें ज़रा सा भी झूठ बर्दाश्त नहीं करना चाहिए। सिर्फ़ इसलिए झूठ को बर्दाश्त करना कि वह छोटा लगता है, इस बात का सबूत है कि हम सच में परमेश्वर के वचन से प्यार नहीं करते। जो लोग सच्चाई के वचन से प्यार करते हैं, वे सबसे छोटे झूठ से भी नफ़रत और घृणा करते हैं; क्योंकि वे परमेश्वर के वचन से प्यार करते हैं, इसलिए वे उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं।

दूसरी बात, हमें परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन कैसे करना चाहिए?

भजन 119:166 को देखिए: "हे प्रभु, मुझे आपके उद्धार की आशा है, और मैं आपकी आज्ञाओं का पालन करता हूँ।" भजनकार ने प्रभु के उद्धार की आशा रखते हुए परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किए बिना उद्धार की आशा करना विरोधाभासी है। हालाँकि उद्धार पूरी तरह से परमेश्वर की ओर से है, लेकिन उसके वचन का पालन करने की इंसानी ज़िम्मेदारी को नज़रअंदाज़ करते हुए उद्धार के लिए प्रार्थना करने में एक समस्या है। हमें उद्धार के लिए परमेश्वर की ओर देखना चाहिए और साथ ही उसके वचन का पालन करने की अपनी इंसानी ज़िम्मेदारी भी पूरी करनी चाहिए। हमें परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए और साथ ही उसके उद्धार की आशा भी रखनी चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हमें हमारे दुखों से बचाता है।

तीसरी बात, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का क्या नतीजा होता है?

इससे हम प्रभु की स्तुति करते हैं। आज के वचन, भजन 119:164 को देखिए: "मैं दिन में सात बार आपके सही फ़ैसलों के लिए आपकी स्तुति करता हूँ।" भजनकार ने दिन में सात बार प्रभु की स्तुति की क्योंकि उसके फ़ैसले सही थे; असल में, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने से ही वह उसकी स्तुति करने लगा। जो लोग परमेश्वर के वचन का आदर करते हैं, उसमें खुशी पाते हैं और उससे प्यार करते हैं, वे प्रभु की स्तुति करते हैं। परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का एक और नतीजा है दिल को बहुत शांति मिलना। आयत 165 देखिए: “जो लोग आपके नियम से प्रेम करते हैं, उन्हें बहुत शांति मिलती है और कोई भी चीज़ उन्हें ठोकर नहीं खिलाती।” जो लोग परमेश्वर के वचन से प्रेम करते हैं और उसके अनुसार जीवन जीते हैं, उन्हें मन में बहुत शांति मिलती है।

हमें परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। दुख-तकलीफों के बीच भी हमें परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में अपनाना चाहिए। हमें आदर, खुशी और प्रेम के साथ उसके वचन का पालन करना चाहिए। आज्ञा मानते हुए, मुश्किलों के समय हमें उद्धार के लिए परमेश्वर की ओर देखना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हमें बहुत शांति देता है और हमें प्रभु की स्तुति करने के लिए प्रेरित करता है।

“तब मैं प्रभु की स्तुति करूँगा”

[भजन संहिता 119:169–176]

परमेश्वर ही हमारी स्तुति के पात्र हैं (व्यवस्थाविवरण 10:21; यिर्मयाह 17:14)। परमेश्वर ने हमें नई सृष्टि के रूप में इसी उद्देश्य से रचा है कि “हम उनकी स्तुति का बखान करें” (यशायाह 43:21)। आज के वचन, भजन संहिता 119:175 में, भजनकार कहता है: “मेरे प्राण जीवित रहें और तेरी स्तुति करें; और तेरे नियम मेरी सहायता करें।” यहाँ, भजनकार प्रार्थना करता है कि यदि प्रभु उसके प्राण को जीवन दें, तो वह प्रभु की स्तुति करेगा। इस वचन और “तब मैं प्रभु की स्तुति करूँगा” शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उन तीन तरीकों पर विचार करना चाहता हूँ जिनसे हमारे प्राण सचमुच जीवित हो सकते हैं और परमेश्वर द्वारा दी गई कृपा प्राप्त कर सकते हैं। मेरी प्रार्थना है कि हम—आप और मैं दोनों—अपने प्राणों में इस जीवन का अनुभव करें और प्रभु की स्तुति करें।

पहला, हमारे प्राणों के जीवित रहने के लिए, हमें प्रार्थना करने वाले लोग बनना होगा।

भजन संहिता 119 के 169 और 170 वचनों के पहले हिस्सों को देखें: “हे यहोवा, मेरी पुकार तेरे सम्मुख पहुँचे” (वचन 169a) और “मेरी विनती तेरे सम्मुख पहुँचे” (वचन 170a)। अपने प्राणों के जीवित रहने को सुनिश्चित करने के लिए, भजनकार ने परमेश्वर से प्रार्थना की और उनकी सहायता की गंभीरता से याचना की (वचन 173, 175)। भजनकार ने परमेश्वर से जो सहायता माँगी, वह दो तरह की थी: आंतरिक रूप से, उसने परमेश्वर के वचन के अनुसार समझ माँगी (वचन 169), और बाहरी रूप से, उसने छुटकारा (वचन 170) या

“तेरा उद्धार” (वचन 174) माँगा। दूसरा, हमारे प्राणों के जीवित रहने के लिए, हमें ऐसे प्राण वाले बनना होगा जो प्रभु के वचन में आनंद लेते हैं।

भजन संहिता 119:174 को देखें: “हे यहोवा, मैं तेरे उद्धार की लालसा करता हूँ, और तेरी व्यवस्था में मुझे आनंद मिलता है।” ऐसी स्थिति में जब उसे परमेश्वर की सहायता की अत्यंत आवश्यकता थी, भजनकार ने परमेश्वर के वचन को चुना क्योंकि उसे उसमें आनंद मिलता था। फिर, परमेश्वर से विनती करते समय उसने स्वयं को उस वचन द्वारा निर्देशित होने दिया। इसलिए, उन्हें पूरा भरोसा था कि परमेश्वर उन्हें बचाएंगे। दूसरे शब्दों में, भजनकार को पक्का यकीन था कि उन्हें प्रभु के वचन (पद 170) के अनुसार मदद (पद 173, 175) और छुटकारा (पद 170) मिलेगा। भजनकार की तरह, हमें भी उद्धार का भरोसा होना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन से मार्गदर्शन पाना होगा। हमें उस वचन से सीखना होगा (पद 171), और उसे समझना और अपनाना होगा (पद 169)। हमें परमेश्वर के वचन में खुशी मिलनी चाहिए (पद 174)।

आखिरकार, हमारी आत्माओं के जीवित रहने के लिए, हमें खोई हुई भेड़ जैसी आत्मा बनना होगा।

भजन संहिता 119:176 को देखिए: "मैं खोई हुई भेड़ की तरह भटक गया हूँ; अपने सेवक को खोजिए, क्योंकि मैं आपकी आज्ञाओं को नहीं भूला हूँ।" यहाँ, खोई हुई भेड़ जैसी आत्मा का मतलब है ऐसी आत्मा जो खुद को पापी मानती है। खास बात यह है कि भजनकार मानता है कि वह खोई हुई भेड़ की तरह भटक गया था, जबकि वह प्रभु की आज्ञाओं को भूला नहीं था (पद 176)। इस स्वीकारोक्ति का मतलब यह नहीं है कि हम वचन याद होने के *बावजूद* पाप करते हैं; बल्कि, क्योंकि हम वचन को नहीं भूलते, हम लगातार खुद को उसके आधार पर परखते हैं, और इसलिए इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि हम पापी हैं। हमारी आत्माओं के जीवित रहने के लिए, हमें भजनकार की तरह यह अच्छी आदत डालनी होगी कि हम परमेश्वर के वचन की रोशनी में लगातार खुद को परखें, जिसे हम हमेशा याद रखते हैं। ऐसा करने के लिए, हमें अपने पाप को पहचानने और परमेश्वर व उनके वचन के सामने यह मानने के लिए विनम्रता की ज़रूरत है कि हम पापी हैं। जब हम ऐसी विनम्रता के साथ परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं, तो वह हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देंगे।

प्रभु की स्तुति करने के लिए, हमारी आत्माओं का जीवित होना ज़रूरी है। हमारी आत्माओं के जीवित रहने के लिए, हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए और उनके वचन में खुशी मिलनी चाहिए; प्रार्थना और परमेश्वर के वचन के ज़रिए ही हमारी आत्माओं को जीवन मिलता है। इसके अलावा, हमारी आत्माओं के जीवित रहने के लिए, हमें खोई हुई भेड़ जैसा बनना होगा—यानी, हमें यह मानना होगा कि हम पापी हैं। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी अपनी आत्माओं में इस जीवन का अनुभव करें और अपने प्रभु की स्तुति करें।

“भले ही मैं शांति चाहता हूँ...”

[भजन संहिता 120]

आजकल, मैं और मेरी पत्नी अक्सर अपनी सबसे छोटी बेटी, ये-उन (Ye-eun) की वजह से मुस्कुराते रहते हैं। कुछ समय पहले, जब हम चर्च से लौट रहे थे, तो ये-उन ने पूछा कि “धैर्य” (patience) क्या होता है, तो मैंने उसे बताया कि धैर्य का मतलब है इंतज़ार करना। मेरी पत्नी, जो मेरे बगल में बैठी थी, ने ये-उन को समझाया कि धैर्य का मतलब है “अच्छे से इंतज़ार करना” (waiting nicely)। उस समय, ये-उन ने मज़ाक में पूछा कि “अच्छे से इंतज़ार करने” का क्या मतलब है; जब मैंने इसे एक-एक अक्षर करके बताया—"w-a-i-t-i-n-g n-i-c-e-l-y"—तो उसने बस इतना कहा, "O-M-G!" (इसका मतलब है "ओह माय गॉश" यानी "हे भगवान"।) उस समय हम दोनों खूब हँसे थे, और जब भी मैं उस पल को याद करता हूँ, तो आज भी मुस्कुरा देता हूँ। फिर, पिछले हफ़्ते थैंक्सगिविंग की छुट्टियों के दौरान, हम अपने ससुराल से घर लौट रहे थे; हम लगभग पहुँच ही गए थे, और जब डायलन और येरी सो रहे थे, तो ये-उन मेरे और मेरी पत्नी के बीच हो रही बातचीत में शामिल होने की कोशिश करती रही। उसने हमसे अंदाज़ा लगाने को कहा कि वह क्या चाहती है, और हिंट दिया कि शब्द "R" अक्षर से शुरू होता है। जब मेरी पत्नी ने पूछा कि क्या यह खाने की चीज़ है, तो ये-उन ने कहा नहीं—यह पीने की चीज़ है। मैंने "R" से शुरू होने वाले किसी ड्रिंक के बारे में सोचने के लिए बहुत दिमाग लगाया। मुझे याद आया कि जब वह छोटी थी, तो वह पानी को "मानू" (manu) कहती थी (एक ऐसा शब्द जिसका मतलब मैं बिल्कुल नहीं समझ पाया था), इसलिए मुझे लगा कि उसे पानी चाहिए होगा। भले ही मुझे पता था कि "water" (पानी) शब्द "R" से शुरू नहीं होता, फिर भी मैंने अंदाज़ा लगाया, और वह उत्साह से चिल्लाई, "आप सही हैं!" मेरी पत्नी और मैं इस अजीब सी बात पर हँस पड़े। हालाँकि, आजकल ये-उन अक्सर खुद से कुछ-कुछ बुदबुदाती रहती है; वह यह आयत याद कर रही है: "ऊँचे स्थानों पर परमेश्वर की महिमा हो, और पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच शांति हो" (लूका 2:14) और गर्व से

हमें सुनाती है। ऐसा लगता है कि वह संडे स्कूल की क्रिसमस ईव सर्विस में होने वाले नाटक के लिए लाइनें याद कर रही है। ऐसा लगता है कि यह लूक 2:14 की आयत है: "सबसे ऊँचे स्थान पर परमेश्वर की महिमा हो, और पृथ्वी पर उन लोगों को शांति मिले जिन पर उसकी कृपा है।" आजकल, मैं अक्सर या-उन से कहती हूँ, "आओ, हम एक खुशहाल परिवार बनाएँ।" मैं उसे यह सिखाने की कोशिश कर रही हूँ कि खुशहाल परिवार बनाने के लिए किसी को भी शिकायत नहीं करनी चाहिए, रोना नहीं चाहिए या गुस्सा नहीं करना चाहिए। जब मैं अपने चर्च के बारे में सोचती हूँ, तो मैं यही सलाह देना चाहती हूँ: "आओ, हम एक खुशहाल चर्च बनाने की कोशिश करें।" तो, इसे पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

आज के शास्त्र-पाठ, भजन 120:7 में, भजनकार कहता है: "मैं शांति चाहता हूँ; लेकिन जब मैं बोलता हूँ, तो वे युद्ध चाहते हैं।" यीशु में विश्वास रखने वालों के नाते, स्वाभाविक रूप से हमें शांति की इच्छा रखनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे भजनकार ने की थी। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारा चर्च एक खुशहाल चर्च बन सकता है। यीशु ने कहा, "धन्य हैं वे जो मेल-मिलाप कराते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर की संतान कहलाएँगे" (मत्ती 5:9)। बाइबल आपको और मुझे मेल-मिलाप कराने वालों के रूप में पहचानती है। इसलिए, परमेश्वर की संतान होने के नाते, हमें शांति की इच्छा रखनी चाहिए और ऐसा जीवन जीना चाहिए जो शांति को बढ़ावा दे। फिर भी, हम अपने बीच लड़ाई-झगड़े और टकराव क्यों देखते हैं? चर्च के भीतर ऐसी बातें क्यों होती हैं? प्रेरित याकूब हमें बताते हैं कि इसकी मूल वजह हमारे भीतर ही है, जो "उन इच्छाओं से पैदा होती है जो हमारे अंदर लड़ती रहती हैं" (याकूब 4:1)। जब इन लड़ती हुई इच्छाओं के कारण चर्च में टकराव और झगड़े पैदा होते हैं, तो समुदाय में निश्चित रूप से "अव्यवस्था और हर तरह के बुरे काम" होते हैं (3:16)। इसलिए, प्रेरित याकूब हमें सलाह देते हैं: "लेकिन अगर तुम्हारे दिलों में कड़वी जलन और स्वार्थी महत्वाकांक्षा है, तो उस पर घमंड न करो और न ही सच्चाई से इनकार करो" (आयत 14)।

आज के पाठ, भजन 120 में, भजनकार लंबे समय तक उन लोगों के बीच रहा जो शांति से नफरत करते थे (आयत 6); जबकि वह शांति चाहता था, उसके आस-पास के लोग झगड़े पसंद करते थे और झूठ बोलकर दूसरों को नुकसान पहुँचाने में खुशी महसूस करते थे (आयत 5; पार्क युन-सन)। नतीजतन, उसे बहुत कष्ट सहना पड़ा। इस स्थिति में, हम भजनकार को परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए देखते हैं: "मैंने अपनी मुसीबत में प्रभु को पुकारा, और उसने मेरी सुनी। हे प्रभु, मुझे झूठ बोलने वाले होंठों और धोखेबाज जीभ से बचा" (120:1-2)। हमें भी परमेश्वर से ऐसी ही प्रार्थना करनी चाहिए, जैसे भजनकार ने की थी। इस अंश में भजनकार

उन लोगों के झूठ बोलने वाले होंठों और धोखेबाज जीभ के कारण पीड़ा और कठिनाई झेल रहा था जो शांति से नफरत करते थे (पद 6), और इसलिए उसने उनसे छुटकारा पाने के लिए प्रार्थना की। इसी तरह, जब हमें कलीसिया में उन लोगों के झूठ बोलने वाले होंठों और धोखेबाज जीभ के कारण कठिनाइयों और दर्द का सामना करना पड़ता है जो शांति से नफरत करते हैं, तो हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए—जैसा भजनकार ने किया था—कि हमें "झूठ बोलने वाले होंठों और धोखेबाज जीभ" से छुटकारा मिले (पद 2)। हालाँकि, अगर हमें अपने अंदर ऐसी पापी इच्छाएँ मिलती हैं जो शांति से नफरत करती हैं, तो हमें अपने होंठों पर लगाम लगानी चाहिए—जो अन्यथा सच्चाई के खिलाफ झूठ बोल सकते हैं—उन पापी इच्छाओं के लिए पश्चाताप करना चाहिए, और परमेश्वर से ईमानदारी से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमें उनसे छुटकारा दिलाए। जब हम इस तरह प्रार्थना करते हैं, तो हमें "झूठ बोलने वाले होंठों और धोखेबाज जीभ" से सावधान रहना चाहिए (पद 2)। जैसा कि प्रेरित याकूब ने सिखाया है, हमें एक ही मुँह से "स्तुति और श्राप" नहीं निकलने देना चाहिए (याकूब 3:10)। यदि हम अपनी जीभ पर काबू रखने में विफल रहते हैं और—इस अंश में शांति से नफरत करने वाले लोगों की तरह—कलीसिया की शांति को भंग करने के लिए झूठ बोलने वाले होंठों और धोखेबाज जीभ का उपयोग करते हैं, तो भजनकार घोषणा करता है: "हे धोखेबाज जीभ, तुझे क्या दिया जाएगा, और तेरे साथ और क्या किया जाएगा? योद्धा के तेज तीर, और झाड़ू-वृक्ष (broom tree) के कोयले!" (120:3–4)। पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि प्रभु न्याय करेंगे। वह घोषणा करता है कि अचानक आने वाली, जानलेवा विपत्ति—जैसे योद्धा का तेज तीर शरीर को भेदता है—ऐसी धोखेबाज जीभ वाले व्यक्ति पर पड़ेगी (पार्क युन-सन)। इसके अलावा, बाइबिल कहती है कि प्रभु उन पर ऐसा न्याय लाएंगे जो शरीर को छूने वाले झाड़ू-वृक्ष के कोयलों की कभी न बुझने वाली आग जैसा होगा (पार्क युन-सन)।

इसलिए, प्रभु के न्याय से डरते हुए, हमें शांति से नफरत करने वाले लोगों की तरह झूठ बोलने वाले होंठों और धोखेबाज जीभ का उपयोग करके कलीसिया की शांति को भंग नहीं करना चाहिए। इसके बजाय, भजनकार की तरह, हमें शांति चाहने वाले लोग बनना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमें ऐसे लोग बनना चाहिए जो शांति से प्यार करते हैं और सक्रिय रूप से शांति कायम करते हैं। इसके लिए हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। जहाँ हमें निश्चित रूप से उन साथी विश्वासियों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए जो झगड़े में फँसे हैं, वहीं हमें खुद के अंदर झगड़ने या लड़ने की इच्छा से छुटकारा पाने के लिए भी प्रार्थना करनी चाहिए। इस

प्रक्रिया में, हमें अपनी ज़बान पर काबू रखना चाहिए; हमें ऐसा झूठ नहीं बोलना चाहिए जो सच्चाई के खिलाफ हो। इसके अलावा, जैसे यीशु "हमारी शांति" हैं (इफिसियों 2:14), हमें शांति का प्रचार करना चाहिए (वचन 17) और मेल-मिलाप की सेवा को ईमानदारी से निभाना चाहिए (2 कुरिन्थियों 5:18)। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब कलीसिया में विविधता के बीच एकता बनाए रखकर परमेश्वर की महिमा करें और अपने पड़ोसियों की प्रशंसा पाएँ।

परमेश्वर, मेरा सहायक

[भजन संहिता 121]

पिछले सोमवार को, सेमिनरी के पूर्व छात्रों की एक सभा के दौरान, मैंने चीन में सेवा कर रहे एक मिशनरी जोड़े और उनके चार बच्चों के साथ भोजन किया और फिर उनकी मिशन रिपोर्ट सुनी। चूँकि उनके चार बेटे थे, इसलिए मिशनरी पादरी ने बच्चों की देखभाल की जबकि उनकी पत्नी ने रिपोर्ट पेश की; मैंने उनकी बात सुनी और उनकी अनोखी सेवा—खासकर सेक्स वर्करों तक पहुँचने के उनके काम—की तस्वीरें देखीं। पादरी ने बताया कि कैसे वे परमेश्वर का वचन सिखाने के लिए बस से दस घंटे का सफर करके और फिर दो घंटे पैदल चलकर पहाड़ों की एक दूर-दराज की घाटी तक पहुँचे; उन्होंने माना कि वहाँ के लोगों की गहरी आध्यात्मिक भूख को देखकर उन्हें खुद भी अनुग्रह मिला। रिपोर्ट के बाद, जब उन्होंने हमारी प्रार्थनाओं की माँग की, तो उन्होंने आशीष का माध्यम बनने की इच्छा जताई; मैंने उन्हें नए बने या छोटे चर्चों के पादरियों के लिए प्यार और चिंता के आँसू बहाते देखा। जहाँ मिशन रिपोर्ट अक्सर आर्थिक मदद की माँग के साथ खत्म होती हैं, वहीं इस जोड़े ने *हमारी* मदद करने की इच्छा जताई—वे यहाँ रहने के दौरान छोटे या नए बने चर्चों के पादरियों के लिए आशीष का माध्यम बनना चाहते थे। उन्हें—ऐसे लोग जिन्हें खुद मदद की ज़रूरत है—दूसरों की मदद करने की इच्छा रखते हुए देखकर, मैं प्रभु के प्रति उनके समर्पण और प्रेम की सुंदरता और अनमोलता से प्रभावित हुआ। फिर भी, इतनी सुंदर सोच के बावजूद, कभी-कभी—चाहे कभी-कभार या अक्सर—हमें खुद भी मदद की सख्त ज़रूरत होती है। ऐसे समय में हमें मदद के लिए किसकी ओर देखना चाहिए? भजन संहिता 121:1-2 में, भजनकार कहता है: "मैं अपनी आँखें पहाड़ों की ओर उठाता हूँ—मेरी मदद कहाँ से आती है? मेरी मदद प्रभु से आती है, जो स्वर्ग और पृथ्वी का बनाने वाला है।" पहाड़ों की ओर अपनी आँखें उठाने और अपनी मदद के स्रोत पर विचार करने के बाद, भजनकार ने निष्कर्ष

निकाला, "मेरी मदद प्रभु से आती है, जो स्वर्ग और पृथ्वी का बनाने वाला है।" यहाँ, "पहाड़" इस दुनिया की विशाल और प्रभावशाली ताकतों का प्रतीक हैं (पार्क युन-सन)। भजनकार ने इन सांसारिक ताकतों में मदद खोजने की कोशिश की थी लेकिन अंततः असफल रहा; तभी उसे एहसास हुआ कि केवल परमेश्वर ही उसका उद्धारकर्ता और मदद का स्रोत है (पार्क युन-सन)। जब हमें सख्त ज़रूरत होती है तो आप और मैं मदद के लिए किसकी ओर देखते हैं? भजनकार की तरह, क्या हम भी "मेरी मदद कहाँ से आएगी?" यह पूछते समय—परमेश्वर के बजाय—दूसरे लोगों या चीज़ों की ओर देखते हैं? हममें एक पापी स्वभाव होता है जो मदद के लिए पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर रहने का विरोध करता है, जब तक कि हमें अपनी लाचारी का पूरी तरह एहसास न हो जाए। नतीजतन, हम अक्सर खुद रचनाकार परमेश्वर की ओर मुड़ने के बजाय, उनके बनाए "पहाड़ों" की ओर देखकर मदद मांगते हैं। फिर भी, दुनिया के "पहाड़ों" में सच्ची मदद न मिलने और निराशा व हताशा में डूबने के बाद, पवित्र आत्मा का काम हमें सर्वशक्तिमान रचनाकार—जिन्होंने वे पहाड़ भी बनाए—की ओर देखने के लिए प्रेरित करता है और आखिरकार हम परमेश्वर से मदद की गुहार लगाते हैं। उनकी मदद मिलने के बाद, हम भजनकार के साथ यह स्वीकार करते हैं, "मेरी मदद प्रभु से आती है, जो स्वर्ग और पृथ्वी के रचनाकार हैं।" तो, आज का वचन हमें कैसे बताता है कि परमेश्वर—जिन्हें भजनकार अपना सहायक मानते हैं—असल में आपकी और मेरी मदद कैसे करते हैं?

पहला, परमेश्वर, जो हमारे सहायक हैं, हमें ठोकर खाने से बचाते हैं।

भजन संहिता 121:3 के पहले हिस्से को देखें: "प्रभु तुम्हारे पैर को फिसलने नहीं देंगे..." इसका मतलब है कि परमेश्वर, जो हमारी मदद करते हैं, आपको और मुझे सच्चाई के रास्ते से भटकने से रोकते हैं (पार्क यूं-सन)। यह परमेश्वर की ओर से कितना अनमोल आशीर्वाद और अनुग्रह है! हम कमज़ोर इंसान हैं जो अक्सर "भेड़ों" की तरह व्यवहार करते हैं जो "भटक गई हैं" और "हर कोई—अपने-अपने रास्ते पर मुड़ गया है" (यशायाह 53:6); फिर भी, यीशु—जो मार्ग, सत्य और जीवन हैं—हमें सच्चाई के रास्ते से भटकने से बचाते हैं। यह कितना बड़ा आशीर्वाद और अनुग्रह है!

यह जानने के लिए कि कोरियाई युवा क्यों भटक जाते हैं, मैंने ऑनलाइन कुछ जानकारी देखी और सर्वे के ये नतीजे पाए, जिन्हें मैं साझा करना चाहता हूँ। सैमसंग मेडिकल सेंटर के बाल और किशोर मनोरोग विभाग के प्रोफेसर होंग सोंग-डो और किम जी-हे की अगुवाई वाली एक रिसर्च टीम ने सियोल में 431 मिडिल और हाई स्कूल के छात्रों (224 लड़के और 207 लड़कियाँ) के बीच गलत व्यवहार पर एक सर्वे किया। उन्होंने बताया कि ऐसे व्यवहार के मुख्य कारण लिंग के आधार पर अलग-अलग थे: लड़कों के लिए "चिंता और नकारात्मक भावनाएँ" मुख्य कारण थीं, जबकि लड़कियों के लिए "खुद के बारे में गलत सोच" मुख्य कारण थी। प्रोफेसर होंग की टीम ने समझाया, "लड़के और लड़कियों में गलत व्यवहार के कारणों के अलग होने का कारण यह है कि लड़के अक्सर चिंता जैसी नकारात्मक भावनाओं को दूर करने के लिए कुछ समय के लिए गलत काम करते हैं, जबकि लड़कियों में खुद के बारे में नकारात्मक सोच और विचार ऐसे व्यवहार के मुख्य कारण पाए गए" (इंटरनेट)। सर्वेक्षण के नतीजों पर विचार करते हुए—जो किशोरों में गलत व्यवहार के कारणों के रूप में "नकारात्मक भावनाओं" (पुरुषों के लिए) और "खुद के बारे में नकारात्मक सोच" (महिलाओं के लिए) की पहचान करते हैं—मैंने सोचा कि हम ईसाई, जो यीशु (हमारे सत्य) में विश्वास करते हैं और उनका अनुसरण करते हैं, खुद सत्य से क्यों भटक जाते हैं। मेरा मानना है कि इसका एक कारण नेक लोगों के दुख के प्रति नकारात्मक रवैया है। मेरा यह तर्क भजन संहिता 73 से आता है, जहाँ भजनकार आसाफ नेक लोगों के दुख और बुरे लोगों की समृद्धि के बीच अंतर के कारण लगभग डगमगा गया था। आप क्या सोचते हैं? क्या आप सहमत हैं कि नेक लोगों के दुख के प्रति नकारात्मक रवैया ईसाइयों के सत्य से भटकने का एक कारण है? यदि हाँ, तो हम दुख के प्रति सकारात्मक रवैया कैसे अपना सकते हैं? मुझे इसका उत्तर फिलिप्पियों 1:29 में मिला: "क्योंकि तुम्हें मसीह की ओर से न केवल उस पर विश्वास करने का, बल्कि उसके लिए दुख सहने का भी वरदान मिला है।" यदि हम यह पहचान लें कि यीशु मसीह के लिए दुख सहना परमेश्वर की कृपा का काम है—और उस कृपा को धन्यवाद के साथ स्वीकार करना और संजोना सीख लें—तो हम सत्य से नहीं भटकेंगे। हमें इसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए। हमें परमेश्वर से यह समझने की कृपा माँगनी चाहिए कि दुख वास्तव में उसकी कृपा और आशीष है, ताकि हम सत्य से दूर न भटकें। जब हम इस तरह प्रार्थना करते हैं, तो हम पूरे विश्वास के साथ प्रार्थना कर सकते हैं कि परमेश्वर हमें गिरने से बचाता है, जैसा कि भजनकार भजन संहिता 121:3 में कहता है।

दूसरी बात, परमेश्वर, जो मेरी सहायता है, हमारी देखभाल करता है।

तो, परमेश्वर हमारी देखभाल कैसे करता है? (1) परमेश्वर बिना ऊँघे या सोए हमारी देखभाल करता है। भजन संहिता 121:3 के दूसरे हिस्से और आयत 4 को देखिए: "जो तुम्हारी रखवाली करता है, वह ऊँघेगा नहीं; सचमुच, जो इस्राएल की रखवाली करता है, वह न तो ऊँघेगा और न ही सोएगा।" हाल ही में, मेरा बेटा डायलन बुरे सपनों की वजह से रात में सोने से डरने लगा था। इसलिए, मैंने उसे सोने से पहले बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया। जब उसने पिछले रविवार और सोमवार की रात मेरी पत्नी को बताया कि उसने सपने में एक गोरिल्ला देखा है, तो उसने उसे दिलासा देते हुए कहा, "हम उस गोरिल्ला को मार डालेंगे; यह दवा से भरा एक छोटा गुब्बारा है जो गोरिल्ला को मार देगा लेकिन तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा—इसे सोते समय अपने पास रखना।" ऐसा लगता है कि उसके बाद वह रविवार की रात अच्छी तरह सो पाया। हम डायलन से कितना भी प्यार क्यों न करें, हम रात भर उसके सिर पर हाथ रखकर और प्रार्थना करते हुए उसके पास नहीं बैठ सकते, जब उसे बुरे सपने आ रहे हों। हम बिना सोए अपने बच्चों की रखवाली कैसे कर सकते हैं? फिर भी, बाइबल हमें स्पष्ट रूप से बताती है कि हमारे स्वर्गीय पिता बिना ऊँघे या सोए आपकी और मेरी रखवाली करते हैं। लेकिन समस्या क्या है? जब परमेश्वर की मदद में देरी होती है या हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं मिलता, तो हम कभी-कभी सोचते हैं कि क्या परमेश्वर सो गए हैं। हालाँकि, असल में परमेश्वर सोते नहीं हैं। हमारे परमेश्वर सही समय पर मुश्किलों का सामना कर रहे विश्वासियों की मदद करते हैं। इसलिए, विश्वासियों को धैर्य रखना सीखना चाहिए।

(2) परमेश्वर हमारी छाया बनते हैं और हमें नुकसानदायक चीज़ों से बचाते हैं। कृपया आज के वचन, भजन संहिता 121:5–6 को देखें: "प्रभु ही तुम्हारा रक्षक है; प्रभु तुम्हारे दाहिने हाथ की ओर तुम्हारी छाया है। दिन में धूप तुम्हें नहीं सताएगी, और न ही रात में चाँद।" कल सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान इस सच्चाई पर मनन करते हुए कि "परमेश्वर मेरे दाहिने हाथ की छाया हैं," मेरे मन में एक विचार आया। जब मैंने कल्पना की कि अगर रेगिस्तान की तेज़ धूप मुझ पर लगातार पड़ती तो क्या होता, तो इस सच्चाई ने कि परमेश्वर मेरी छाया के रूप में काम करते हैं, मेरे दिल को बहुत सुकून दिया। जैसे हम चिलचिलाती गर्मी में एक बड़े पेड़ की छाया की चाहत रखते हैं और उसके नीचे शरण लेते हैं, वैसे ही कभी-कभी—जब हम इस दुनिया की मुश्किलों से थक-हार जाते हैं—तो हम चाहते हैं कि परमेश्वर पिता हमारी छाया बनें और हम उनके करीब जाएँ। इस सुनसान दुनिया में रहते हुए, हमें यह जानकर सुकून मिलता है कि जब नुकसान पहुँचाने वाली

ताकतें—जैसे दिन में तेज़ धूप या रात में चाँद—हमें नुकसान पहुँचाने की कोशिश करती हैं, तो परमेश्वर हमारे दाहिने हाथ की ओर हमारी छाया बनकर खड़े रहते हैं। जो परमेश्वर हमारी छाया हैं, वे हमें इस दुनिया की नुकसान पहुँचाने वाली चीज़ों से बचाते हैं जो हमारी ओर बढ़ती हैं। वही परमेश्वर हमारी ढाल बनकर काम करते हैं; जब हम ऊँचाइयों की ओर बढ़ते हैं, तो वे हमारी रक्षा करते हैं और इस सुनसान दुनिया के सभी खतरों से हमें बचाते हैं। इसलिए, हम भी वही बात कह सकते हैं जो दाऊद ने भजन संहिता 23:4 में कही थी: "भले ही मैं मौत की छाया की घाटी से गुज़रूँ, मैं किसी बुराई से नहीं डरूँगा, क्योंकि आप मेरे साथ हैं; आपकी लाठी और आपकी छड़ी मुझे दिलासा देती हैं।"

(3) परमेश्वर हमें सभी मुसीबतों से बचाता है।

आज का वचन देखें, भजन संहिता 121:7: "प्रभु तुम्हें हर नुकसान से बचाएगा—वह तुम्हारे जीवन की रक्षा करेगा।" जो परमेश्वर हमारी मदद करता है, वह उद्धार का परमेश्वर है; वह हमें गिरने से बचाता है, हर खतरे से हमारी रक्षा और हिफ़ाज़त करता है, और हमें सभी मुसीबतों से निकालता है। क्या यह दिलचस्प नहीं है? भले ही परमेश्वर हमारी रक्षा और देखभाल करता है, फिर भी सच तो यह है कि हमें "हर तरह की मुसीबतों" से गुज़रना ही पड़ता है। हम स्वाभाविक रूप से सोच सकते हैं कि अगर स्वर्ग और पृथ्वी का रचयिता हमारी रक्षा कर रहा है, तो हमें किसी भी मुसीबत का सामना नहीं करना चाहिए; फिर भी, परमेश्वर हमारी देखभाल करते हुए हमें अलग-अलग परीक्षाओं से गुज़रने देता है, ताकि वह हमें उनसे बचा सके। मुझे यह बात बहुत दिलचस्प लगती है। मेरा मानना है कि हालाँकि परमेश्वर हमें सच्चाई से भटकने नहीं देता, लेकिन वह हमें मुसीबतों का सामना करने देता है ताकि हम निखर सकें और उसके आशीषों के स्थान के और करीब पहुँच सकें।

पिछले हफ़्ते कोरिया से भेजी गई कुछ किताबें देखते समय मुझे एक सुखद आश्चर्य हुआ। मुझे पता चला कि मेरी एक भक्तिपूर्ण रचना (शांत समय के विचार) "प्रीसेप्ट" मिनिस्ट्री की भक्ति-पुस्तिका के दिसंबर अंक में प्रकाशित हुई थी। मुझे नहीं पता था कि इसे किसने भेजा है, लेकिन जैसे ही मैंने लापरवाही से पुस्तिका खोली, एक अंश जाना-पहचाना लगा; ध्यान से देखने पर, मैंने वहाँ अपना नाम और अपने चर्च का नाम लिखा हुआ पाया। हाहा। बाद में मुझे पता चला कि कोरिया के एक चर्च की एक बहन—जो प्रीसेप्ट की संपादकीय टीम

में काम करती है—ने मेरी भक्तिपूर्ण रचना ली थी, उसका सुंदर ढंग से सारांश बनाया था और उसे पुस्तिका में शामिल किया था। यह विचार होशे 2:14 पर केंद्रित है, जिसमें इस बात पर ध्यान दिया गया है कि कैसे परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को अनुशासित करते हुए उन्हें जंगल में ले जाकर उनके दिलों से प्यार भरी बातें कीं। यह इस सच्चाई को उजागर करता है कि यह अनुशासन केवल सज़ा नहीं थी, बल्कि परमेश्वर की ओर से एक आशीष थी—यह दिखाता है कि दुख और कठिनाइयाँ असल में ईश्वरीय आशीषें हैं। सचमुच, जिन कठिनाइयों, विपरीत परिस्थितियों और मुसीबतों का हम सामना करते हैं, वे परमेश्वर की ओर से आशीषें हैं। हालाँकि उस समय वे दर्दनाक, परेशान करने वाली और दिल तोड़ने वाली हो सकती हैं, लेकिन वे ऐसी आशीषें हैं जो हमें सच्चाई से भटकने से रोकती हैं और हमारे विश्वास को और गहरा करती हैं। इसके अलावा, वे हमें प्रार्थना करने, उन प्रार्थनाओं का उत्तर पाने और उद्धार की कृपा का अनुभव करने का एक शानदार अवसर प्रदान करती हैं। इसलिए, हम भजन 383, "मुसीबत और सतावट के बीच" गा सकते हैं: "मुसीबत और सतावट के बीच, संतों ने अपना विश्वास बनाए रखा; इस विश्वास के बारे में सोचने से दिल खुशी से भर जाता है। संतों के विश्वास का अनुसरण करते हुए, मैं मरते दम तक वफादार रहूँगा।" मेरी प्रार्थना है कि आपकी मुश्किल परिस्थितियों में भी, आपकी ज़िंदगी में ऐसे ही प्रशंसा के गीत गूँजते रहें।

मेरी आत्मा की रक्षा कौन करता है?

"प्रभु तुम्हें हर तरह की बुराई से बचाएगा—वह तुम्हारे जीवन की रखवाली करेगा" (भजन संहिता 121:7)।

प्रभु परमेश्वर ही हमारी आत्माओं की रक्षा करते हैं (भजन संहिता 121:5)। फिर भी, एक सवाल उठता है: "क्या इस मामले में मेरी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है?" मुझे पेट्रोल और कार से जुड़ी एक घटना याद आती है। क्या यह समझदारी होगी कि मैं परमेश्वर से प्रार्थना करूँ कि मैं बिना गैस स्टेशन पर रुके चर्च—अपनी मंज़िल—तक पहुँच जाऊँ, जबकि कार में लगभग ईंधन खत्म हो चुका हो? कार निश्चित रूप से चर्च पहुँचने से पहले ही सड़क के किनारे बंद हो जाती, ठीक वैसे ही जैसे एक बार पहले हुआ था जब मैं सुबह की प्रार्थना के लिए जा रहा था और चर्च की गाड़ी का पेट्रोल खत्म हो गया था। यह बात सामान्य समझ की लग सकती है, लेकिन विश्वास के जीवन में, हम अक्सर अपनी मानवीय ज़िम्मेदारियों को पूरा किए बिना ही परमेश्वर से बेतुकी प्रार्थनाएँ करते हैं।

भजन संहिता 121:7 पर विचार करते हुए—जो परमेश्वर द्वारा हमारी आत्माओं की रक्षा करने की बात करता है—हमें खुद से एक सवाल पूछना चाहिए: यदि हम पुकारते हैं, "हे प्रभु, मेरी आत्मा की रक्षा कर!" जबकि हमारे आध्यात्मिक ईंधन के टैंक खाली हैं, तो क्या हम सचमुच भरोसे के साथ यह दावा कर सकते हैं कि हम शैतान के प्रलोभनों में पड़ने और परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने से बच जाएँगे? हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम परमेश्वर के वचन को अपना बनाएँ (भजन संहिता 119:56) और उस वचन के अनुसार आज्ञाकारी जीवन जिएँ। यह हमारा कर्तव्य है कि हम परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में रखें ताकि हम पाप न करें (पद 11)। संक्षेप में, अपनी आत्माओं की रक्षा के लिए, हमें अपने आध्यात्मिक ईंधन के टैंकों को पूरा भरने की ज़िम्मेदारी

लेनी होगी। जैसे कार ईंधन कम होने पर संकेत देती है, वैसे ही हमें यह पहचानना होगा कि हमारा आध्यात्मिक ईंधन कब खत्म हो रहा है और जंगल में परमेश्वर की आवाज़ सुनकर उसे फिर से भरना होगा (होशे 2:14)।

आज बहुत से ईसाई चर्च की सेवा तो करते हैं, लेकिन शैतान की उन बुरी आध्यात्मिक ताकतों के खिलाफ़ असुरक्षित रहते हैं जो हमारी आत्माओं को नष्ट करना चाहती हैं। हम साथी विश्वासियों के सामने बाहर से अडिग—देवदार के पेड़ की तरह मज़बूती से खड़े—दिखाई दे सकते हैं, जबकि अंदर से हम आध्यात्मिक रूप से सूखे हुए होते हैं। हम उन ईसाइयों की तरह हैं जो जल्दबाजी में रहते हैं, और आध्यात्मिक ईंधन की कमी से आत्माओं के मुरझाने के बावजूद "गाड़ी चलाते" रहने को मजबूर होते हैं। ऐसा क्यों है कि हम परमेश्वर से प्रार्थना तो करते हैं, फिर भी अपनी आत्माओं में नई जान महसूस नहीं कर पाते? हम अनगिनत उपदेश क्यों सुनते हैं, फिर भी हमें आध्यात्मिक ऊर्जा (spiritual fuel) क्यों नहीं मिलती? हम प्यार करने के आदेश को तो जानते हैं, फिर भी ऐसा क्यों नहीं कर पाते? ऐसा इसलिए है क्योंकि हम अपनी आत्मा की रक्षा को प्राथमिकता नहीं देते और न ही मसीह की पूर्णता को पाने के लिए पूरी ताकत से कोशिश करते हैं। हम अपनी आत्मा की रक्षा करने में इसलिए असफल रहते हैं क्योंकि हम परमेश्वर के वचन—जो हमारी आध्यात्मिक ऊर्जा है—को इस तरह से नहीं अपनाते कि वह सचमुच हमारा अपना बन जाए।

आज जब हम परमेश्वर से अपनी आत्मा की रक्षा करने के लिए कहते हैं, तो आइए हम यह भी प्रार्थना करें कि हम विश्वास की दौड़ में समझदार धावक बनें—आध्यात्मिक ऊर्जा का भरपूर भंडार जमा करें ताकि हम भी अपनी आत्मा की रक्षा कर सकें।

जो लोग कलीसिया से प्रेम करते हैं, वे समृद्ध होते हैं।

[भजन संहिता 122]

फिलिप यान्सी ने *Church: Why Bother?* (कलीसिया: क्यों परवाह करें?) नाम की एक किताब लिखी। इसमें वे कलीसियाई समुदाय के स्वरूप के बारे में बात करते हैं: "मसीही समुदाय की मूल नींव—परमेश्वर का मेल-मिलाप कराने वाला प्रेम—दुनिया के सभी देशों, जातियों, वर्गों, उम्र और लिंगों से ऊपर है। समुदाय पहले आता है; जो झगड़े और मुद्दे हमें बांटते हैं, वे बाद में आते हैं।" हालाँकि कलीसियाई समुदाय में अलग-अलग तरह के लोग इकट्ठा होते हैं, फिर भी कलीसिया को—परमेश्वर के परिवार के रूप में—उस विविधता के बीच एकता की तलाश करनी चाहिए। "कलीसिया कितनी सुंदर हो जाती है जब, तमाम मतभेदों के बावजूद, लोग उस एक साझे बंधन के कारण एक समुदाय के रूप में एकजुट होते हैं!" (यान्सी)। व्यक्तिगत रूप से, मैं ऐसे ही एक सुंदर समुदाय का सपना देखता हूँ—एक ऐसी कलीसिया जो विविधता के बीच बंटवारे का शिकार होने के बजाय पवित्र आत्मा की एकता को ईमानदारी से बनाए रखती है।

भजन संहिता 122:6 में, भजनकार दाऊद घोषणा करता है: "यरूशलेम की शांति के लिए प्रार्थना करो: 'जो तुमसे प्रेम करते हैं, वे सुरक्षित रहें।'" यहाँ, "यरूशलेम" कलीसिया का प्रतीक है (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, यह उन लोगों के लिए समृद्धि की कामना है जो कलीसिया से प्रेम करते हैं। सचमुच, जो लोग कलीसिया से प्रेम करते हैं, वे समृद्ध होते हैं क्योंकि परमेश्वर उनके साथ है। तो, जो लोग कलीसिया से प्रेम करते हैं, वे क्या करते हैं? आइए आज के वचन से दो बातें सीखें।

पहली बात, जो लोग कलीसिया से प्रेम करते हैं, वे कलीसिया जाने में आनंदित होते हैं।

भजन संहिता 122:1 को देखें: "मैं उन लोगों के साथ आनंदित हुआ जिन्होंने मुझसे कहा, 'आओ, हम प्रभु के घर चलें।'" दाऊद अपने दोस्तों के उस निमंत्रण पर आनंदित हुआ जिसमें उन्होंने "प्रभु के घर"—यानी यरूशलेम में परमेश्वर के मंदिर—जाने के लिए कहा था। इसका कारण क्या था?

(1) पहला कारण यह था कि "जो पहले नष्ट हो गया था, वह अब फिर से बना दिया गया था" (पार्क युन-सन)।

जब यरूशलेम में नष्ट हुए मंदिर का पुनर्निर्माण हुआ, तो दाऊद बहुत आनंदित हुआ। यह हमारे लिए भी आनंद का विषय होना चाहिए। जो लोग कलीसिया से प्रेम करते हैं, उन्हें "तब बहुत आनंदित होना चाहिए जब कोई गिरी हुई कलीसिया पश्चाताप करती है और सुंदर ढंग से फिर से स्थापित होती है" (पार्क युन-सन)। क्या यह आपके और मेरे लिए आनंद का स्रोत नहीं है? एक ऐसी कलीसिया को देखना जो भ्रष्टाचार में गिर गई थी, लेकिन सच्चे सुधार के माध्यम से शुद्ध और नई हो गई है? कितनी खुशी की बात है यह देखना कि कलीसिया—मसीह का शरीर—प्रभु द्वारा बनाई जा रही है और एक पवित्र दुल्हन में बदल रही है, जो अपने दूल्हे, यीशु का स्वागत करने के लिए पूरी तरह तैयार है।

(2) दूसरी बात, भजनकार के प्रभु के घर—परमेश्वर के मंदिर—में जाने पर खुश होने का कारण यह था कि वह परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए उनकी आराधना करना चाहता था।

आज के वचन, भजन 122:4 को देखें: "इस्राएल को दिए गए नियम के अनुसार, प्रभु के गोत्र प्रभु के नाम का धन्यवाद करने के लिए ऊपर जाते हैं।" परमेश्वर के दयालु हाथ से फिर से बसाए गए पवित्र शहर यरूशलेम (नहेमायाह 2:18) को देखकर, दाऊद खुशी के साथ परमेश्वर के घर जाना चाहता था और धन्यवाद से भरी आराधना करना चाहता था। इसके अलावा, दाऊद खुश था और परमेश्वर का धन्यवाद कर रहा था क्योंकि यरूशलेम शहर—जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति थी—आबादी वाला था (भजन 122:3) और वहाँ सही शासन व्यवस्था थी (वचन 5) (पार्क युन-सन)।

हमारे दिलों का नज़रिया भी ऐसा ही होना चाहिए। जब हम कलीसिया को शुद्ध करने और बनाने के प्रभु के काम का अनुभव करते हैं, तो हमें खुशी और आनंद के साथ प्रभु के घर जाना चाहिए और धन्यवाद भरे दिल

से परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए। इसके अलावा, चूँकि प्रभु कलीसिया—अपने शरीर—में वास करते हैं और सच्ची जागृति, कलीसिया का विकास और बाइबल के अनुसार सही कलीसियाई शासन लाते हैं, इसलिए हमें कृतज्ञता के साथ प्रभु के घर जाना चाहिए और खुशी से परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए। केवल वे ही जो कलीसिया से प्रेम करते हैं और हमारे बीच परमेश्वर के काम का अनुभव करते हैं, प्रभु के घर जाकर खुशी और धन्यवाद भरे दिल से उनकी आराधना कर सकते हैं। जैसे-जैसे हम आराधना के आनंद का अनुभव करते हैं, हमें कलीसिया—मसीह के शरीर—से और भी अधिक प्रेम करना चाहिए।

दूसरी बात, जो लोग कलीसिया से प्रेम करते हैं, वे उसकी शांति और समृद्धि चाहते हैं।

भजन 122:6–8 को देखें: "यरूशलेम की शांति के लिए प्रार्थना करो: 'जो तुमसे प्रेम करते हैं, वे सुरक्षित रहें। तुम्हारी दीवारों के भीतर शांति और तुम्हारे किलों में सुरक्षा हो।' अपने परिवार और दोस्तों की खातिर, मैं कहूँगा, 'तुममें शांति हो।'" यरूशलेम से प्रेम करने वाले व्यक्ति के रूप में, दाऊद ने उसके लिए आशीष की घोषणा की। वह आशीष असल में यरूशलेम की "शांति और समृद्धि" थी। यहाँ "शांति" का मतलब परमेश्वर और इंसान के बीच शांति, और साथ ही लोगों के बीच शांति से है। दूसरे शब्दों में, जो लोग यरूशलेम से प्यार करते थे, उन्होंने उसके लिए शांति की आशीष की प्रार्थना की। यरूशलेम के लिए शांति की इस आशीष को मांगते हुए, भजनकार ने परमेश्वर से मिलने वाली समृद्धि की आशीष की भी दिल से इच्छा की।

अगर हम कलीसिया से प्यार करते हैं, तो हमें उसे आशीष देनी चाहिए। कलीसिया से प्यार करने वालों के तौर पर, हमें उसकी शांति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। शांति कलीसिया—मसीह की देह—की एक खास पहचान है, जहाँ प्रभु वास करते हैं और जिसे वे बनाते हैं (पार्क युन-सन)। कलीसिया के भीतर आत्मिक शांति होनी चाहिए; इसका मतलब है न केवल परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते में शांति, बल्कि कलीसिया के सदस्यों के बीच भी शांति। इस शांति के बीच, कलीसिया—मसीह की देह के रूप में—समृद्ध होनी चाहिए, क्योंकि प्रभु हमारे साथ इम्मानुएल के रूप में मौजूद हैं।

भजन 246, "हे प्रभु, मुझे तेरे राज्य से प्यार है" पर विचार करें; इसके पहले 3 पदों के बोल इस प्रकार हैं: (पद 1) "हे प्रभु, मुझे तेरे राज्य से प्यार है, तेरे वास का घर, वह कलीसिया जिसे हमारे उद्धारकर्ता ने अपने कीमती

लहू से बचाया"; (पद 2) "हे परमेश्वर, मुझे तेरी कलीसिया से प्यार है! उसकी दीवारें तेरे सामने खड़ी हैं, तेरी आँखों की पुतली की तरह प्यारी, और तेरे हाथों पर खुदी हुई"; (पद 3) "उसके लिए मेरे आँसू बहेंगे, उसके लिए मेरी प्रार्थनाएँ ऊपर जाएँगी; मेरी चिंताएँ और मेहनत उसे समर्पित हों, जब तक कि मेहनत और चिंताएँ खत्म न हो जाएँ।" कलीसिया—मसीह की देह—से प्यार करने वालों के तौर पर, हमें बहुत खुशी मनानी चाहिए क्योंकि यह यीशु, हमारे दूल्हे के लिए एक बेदाग और पवित्र दुल्हन में बदल रही है। जब हम अपनी कलीसिया को बनाने में प्रभु के काम को देखते हैं, तो हमें खुशी के साथ उनके घर जाना चाहिए और धन्यवाद से भरी आराधना करनी चाहिए। इसके अलावा, हमें उस कलीसिया की शांति चाहनी चाहिए जिससे हम प्यार करते हैं। इस दिव्य शांति को पाने की कोशिश में, हमें भाई-बहनों के तौर पर एक-दूसरे के साथ रिश्तों में भी शांति बनाए रखनी चाहिए। ऐसा करते हुए, हमें कलीसिया की भलाई के लिए अपने भाई-बहनों के लिए आशीष माँगनी चाहिए (पद 9)। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारी कलीसिया परमेश्वर की शांति और समृद्धि की आशीषों से भरपूर हो।

सिर्फ़ प्रभु की ओर देखें

[भजन संहिता 123]

हमारे विश्वास के जीवन में अक्सर ऐसे समय आते हैं जब हमारे पास प्रभु के सामने आने, झुकने और उन्हें पुकारने के अलावा कोई चारा नहीं होता। ऐसे पलों में, जब हम अपनी परिस्थितियों को देखते हैं, तो हम दमन और पीड़ा से भारी मन के साथ चुपचाप प्रभु के पास आते हैं और परमेश्वर के सामने अपनी आवाज़ उठाते हैं। जब हम ये प्रार्थनाएँ करते हैं, तो पवित्र आत्मा हमारे भीतर काम करता है और हमें पिता परमेश्वर के सामने अपने भारी और परेशान मन को पूरी तरह से उंडेलने के लिए प्रेरित करता है। पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर के वचन की याद दिलाता है, और उसका उपयोग करके हमें हमारे पापों का एहसास कराता है और पश्चाताप की ओर ले जाता है। पवित्र आत्मा के इस काम के बीच, हमें अपने पापों के लिए परमेश्वर से क्षमा माँगनी चाहिए। इसके अलावा, पवित्र आत्मा हमें पिता परमेश्वर के हृदय को अपनाने और उसी हृदय से उनसे प्रार्थना करने में सक्षम बनाता है; वह हमें प्रभु की इच्छा जानने के लिए भी मार्गदर्शन करता है। इसलिए, हमारे जीवन की दर्दनाक और कठिन परिस्थितियाँ प्रभु की ओर देखने और अपनी प्रार्थनाएँ करने के अनमोल अवसर के रूप में काम करती हैं।

आज के अंश, भजन संहिता 123:2 में, हम भजनकार को एक कष्टकारी स्थिति का सामना करते हुए परमेश्वर की ओर देखते हुए पाते हैं। भजनकार किस तरह की परेशानी का सामना कर रहा था? यह मज़ाक और तिरस्कार से भरी स्थिति थी (पद 4)। यहाँ, "आराम से रहने वाले" (या "जो निश्चिंत हैं") उन लोगों को संदर्भित करता है जो बिना किसी चिंता के लापरवाह जीवन जीते हैं और परमेश्वर की चेतावनियों के बारे में कोई एहसास नहीं रखते (पार्क युन-सन)। ऐसे लोग अहंकारी होते हैं और उनमें परमेश्वर के प्रति कोई आदर नहीं होता। दूसरे शब्दों में, भजनकार इसलिए पीड़ित था क्योंकि उसे इन "लापरवाह" और "अहंकारी" लोगों के मज़ाक और तिरस्कार का सामना करना पड़ रहा था। फिर भी, इस दर्दनाक स्थिति के बीच, उसने अपनी

आँखें पूरी तरह से प्रभु पर टिकाए रखीं। आज, मैं उन तीन तरीकों पर विचार करना चाहता हूँ जिनसे भजनकार ने अपनी पीड़ा के बीच प्रभु की ओर देखा। मेरी प्रार्थना है कि हम भी इससे सीखें और—अपनी आँखें पूरी तरह से प्रभु पर टिकाकर—परमेश्वर की कृपा से अपनी दर्दनाक परिस्थितियों पर सफलतापूर्वक विजय प्राप्त करें।

पहला, हमें अपनी आँखें उठाकर उस प्रभु को देखना चाहिए जो स्वर्ग में वास करता है। भजन संहिता 123:1 को देखिए: "हे स्वर्ग में रहने वाले, मैं अपनी आँखें तेरी ओर उठाता हूँ।" इस धरती पर रहते हुए, हमें निश्चित रूप से अनगिनत मुश्किलों और दर्दनाक आज़माइशों का सामना करना पड़ेगा। नतीजतन, हमारा दिल भारी और थका हुआ महसूस कर सकता है। तो फिर, सबसे पहली चीज़ हमें क्या करनी चाहिए? हमें अपनी आँखें उठाकर स्वर्ग में रहने वाले परमेश्वर को देखना चाहिए। जब हम इस धरती पर मुश्किलों और बाधाओं का सामना करते हैं, और चारों ओर देखने पर भी मदद का कोई ज़रिया नहीं मिलता, तो हमें क्या करना चाहिए? हमें अपनी आँखें पहाड़ों की ओर उठानी चाहिए (भजन संहिता 121:1–2)। कारण यह है कि हमारी मदद "उस प्रभु से आती है, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया" (पद 2)। आइए हम कभी भी केवल इस धरती की चीज़ों से मदद पाने में ही संतुष्ट न रहें। इसके बजाय, यह मानते हुए कि सर्वोपरि परमेश्वर से मिलने वाला उद्धार ही एकमात्र सच्चा उद्धार है, आइए हम अपनी आँखें उठाएँ और स्वर्ग में परमेश्वर से मिलने वाली मुक्ति की चाह रखें (पार्क युन-सन)।

व्यक्तिगत रूप से, मुझे योना 2:4 से ताकत मिलती है: "मैंने कहा, 'मैं तेरी नज़रों से दूर कर दिया गया हूँ; फिर भी मैं तेरे पवित्र मंदिर की ओर फिर से देखूँगा।'" मुझे यह वचन बहुत प्रिय है क्योंकि यह मुझे तब दिलासा और ताकत देता है जब—योना की तरह—मैंने प्रभु के वचन की अवज्ञा की हो और अपने पाप के लिए अनुशासन का सामना किया हो, जिससे मेरी आत्मा निराशा में डूब गई हो, मानो गहरे कीचड़ में धंस रही हो। संक्षेप में, मुझे योना 2:4 के शब्द इसलिए पसंद हैं क्योंकि वे मुझे प्रभु की ओर "फिर से" देखने के लिए प्रेरित करते हैं—ठीक वैसे ही जैसे योना ने प्रभु के पवित्र मंदिर की ओर "फिर से" देखा था। आज के अंश, भजन संहिता 123 में, भजनकार ने अपनी नज़र उन दर्दनाक और मुश्किल हालात पर नहीं टिकाई जिनका उसने सामना किया था। उस स्थिति के बारे में सोचने के बजाय, उसने अपनी आँखें उठाकर स्वर्ग में रहने वाले परमेश्वर को देखा। भजनकार की तरह, आइए हम भी इस पल अपनी आँखें उठाकर स्वर्ग में प्रभु

को देखें। भले ही हमारी शारीरिक आँखें मुश्किल और कठिनाई देखें, लेकिन हमारी आध्यात्मिक आँखें केवल उद्धार देने वाले परमेश्वर को देखें, जो हमें उन मुश्किल हालात से छुड़ाने में समर्थ हैं। हमारे उद्धार के परमेश्वर हमें छुड़ाएँगे। धर्मी परमेश्वर उन "आराम से रहने वालों" और "घमंडी लोगों" को दबा देंगे जो हमें सताते हैं। परमेश्वर निश्चित रूप से हमारी मदद करेंगे और हमें ताकत देंगे। दूसरी बात, हमें एक सेवक के नज़रिए से प्रभु की ओर देखना चाहिए।

भजन संहिता 123:2 को देखिए: "जैसे सेवकों की आँखें अपने मालिक के हाथ की ओर लगी रहती हैं, जैसे दासी की आँखें अपनी मालकिन के हाथ की ओर, वैसे ही हमारी आँखें हमारे प्रभु परमेश्वर की ओर लगी रहती हैं, जब तक कि वह हम पर दया न करे।" प्रभु की ओर "जैसे सेवकों की आँखें अपने मालिक के हाथ की ओर लगी रहती हैं" - इस तरह देखने का क्या मतलब है? इसका अर्थ है कि भजनकार प्रभु की ओर देखने के काम को एक ईश्वरीय बुलाहट—एक *चेओनजिक* (पार्क युन-सन)—मानता था। *चेओनजिक* क्या है? यह स्वर्ग से मिले पृथ्वी पर किसी मिशन या काम को दर्शाता है। क्या आप और मैं प्रभु की ओर देखने को अपनी ईश्वरीय बुलाहट मानते हैं? हाँ, हम मानते हैं। स्वर्ग में रहने वाले परमेश्वर ने पृथ्वी पर रहते हुए हमें जो मिशन दिया है, वह है प्रभु की ओर देखना। तो फिर, जो सेवक इस मिशन—प्रभु की ओर देखने—को अपनाता है, उसका नज़रिया कैसा होना चाहिए, खासकर तब जब उसे अहंकारी लोगों के मज़ाक और तिरस्कार का सामना करना पड़े? हमें विनम्र होना चाहिए। जो लोग प्रभु की ओर देखने को अपनी पवित्र बुलाहट मानते हैं और सेवक का नज़रिया रखते हैं, वे दर्दनाक हालात में भी जब उसकी ओर उम्मीद से देखते हैं, तो उसके उद्धार में देरी होने पर शिकायत नहीं करते। असल में, उन्हें शिकायत करना आता ही नहीं है (पार्क युन-सन)। इसके अलावा, अगर प्रभु मुझ जैसे सेवक का उद्धार न भी करे, तब भी मैं सिर्फ़ अपनी आँखें उस पर टिकाकर उसकी सेवा करता रहूँगा। एक सेवक प्रभु की सर्वोच्च सत्ता को मानता है। एक सेवक प्रभु के सर्वोच्च कामों पर सवाल उठाने या शिकायत करने की हिम्मत कैसे कर सकता है?

पृथ्वी पर रहते हुए, हमें अपनी आँखें सिर्फ़ प्रभु पर टिकाकर ऊपर की ऊँचाइयों की ओर बढ़ना चाहिए। बाइबल सिखाती है कि प्रभु के सेवकों के तौर पर हमारा यही सही नज़रिया होना चाहिए। यहाँ रहते हुए, हमें परमेश्वर—अपने प्रभु—की ओर देखना चाहिए और यह समझना चाहिए कि उसकी खातिर दुख सहना अनुग्रह का एक ज़रूरी हिस्सा है। खासकर तब, जब हमारी आत्माएँ "आराम से रहने वालों" और

"अहंकारियों" के मज़ाक और तिरस्कार से घिर जाती हैं—जैसा भजनकार ने महसूस किया था—तो हमें प्रभु के शक्तिशाली हाथ पर भरोसा करना चाहिए। उसका शक्तिशाली दाहिना हाथ हमारा हाथ थाम लेगा और हमें गहरे दलदल से बाहर निकाल लेगा। वही हमारा उद्धारकर्ता है। ऐसे समय में, हमें यह शिकायत नहीं करनी चाहिए कि प्रभु का उद्धार आने में देर हो रही है; बल्कि, हमें विश्वास के साथ उनकी ओर देखते हुए धैर्यपूर्वक आगे बढ़ना चाहिए।

तीसरी और आखिरी बात, हमें तब तक प्रभु की ओर देखना चाहिए जब तक कि वह हम पर अपनी दया न दिखाए। भजन संहिता 123:2 के दूसरे भाग और आयत 3 को देखें: "...हमारी आँखें हमारे प्रभु परमेश्वर की ओर लगी रहती हैं, जब तक कि वह हम पर दया न करे। हे प्रभु, हम पर दया कर, हम पर दया कर, क्योंकि हमने बहुत अपमान सह लिया है।" भजनकार ने तब तक प्रभु की ओर देखना और प्रार्थना करना बंद नहीं किया जब तक कि परमेश्वर ने उस पर दया (और अनुग्रह) नहीं की। जहाँ कोरियाई बाइबिल में लिखा है, "हम आपके दया करने का इंतज़ार करते हैं," वहीं अंग्रेज़ी NASB में इसका अनुवाद है, "जब तक कि वह हम पर अनुग्रह न करे।" दूसरे शब्दों में, भजनकार ने तब तक परमेश्वर की ओर देखना न छोड़ने का संकल्प लिया जब तक कि उसने उसे अनुग्रह प्रदान नहीं किया। यह अंश उत्पत्ति 32:25 में स्वर्गदूत के साथ कुश्ती करते समय याकूब के दृढ़ संकल्प की याद दिलाता है: "जब तक तू मुझे आशीष नहीं देता, मैं तुझे जाने नहीं दूँगा।" भजनकार ने तब तक प्रभु की ओर देखना और प्रार्थना करना जारी रखा जब तक कि प्रभु ने दया और अनुग्रह प्रदान नहीं किया। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "इसलिए, वह परमेश्वर को पुकारता है। इस प्रकार, प्रार्थना संत का हथियार है। प्रार्थना के माध्यम से, वह हर बाधा को पार करता है। हालाँकि प्रार्थना किसी की परिस्थितियों को बदल सकती है, लेकिन अगर परिस्थितियाँ नहीं भी बदलती हैं, तो प्रार्थना करने वाले का हृदय बदल जाता है, जिससे वह सभी कठिनाइयों को सहने और उन पर विजय पाने में सक्षम हो जाता है" (पार्क युन-सन)। प्रभु की ओर देखने और प्रार्थना करने से दो में से एक बात होती है: या तो मेरे सामने आने वाली दर्दनाक स्थिति बदल जाती है, या फिर मैं—प्रार्थना करने वाला—बदल जाता हूँ और उस स्थिति पर विजय पाने में सक्षम हो जाता हूँ। जब हम कठिन समय में प्रभु से प्रार्थना करते हैं, तो हमें चार बातों को ध्यान में रखते हुए लगातार परमेश्वर की दया और अनुग्रह की खोज करनी चाहिए (पार्क युन-सन): (1) हमें याद रखना चाहिए कि ऐसी कठिन स्थिति में होना प्रभु की इच्छा से होता है; (2) हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर हमें इसे सहने की शक्ति देता है; (3) हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर ऐसी स्थितियों को भी हमारे लिए

आशीष में बदल देता है; और (4) हमें याद रखना चाहिए कि अंत में, परमेश्वर हमें उस स्थिति से बाहर निकालता है। आप शायद गॉस्पेल गीत "Fix Your Eyes Only on the Lord" (जू-मैन बाराबोलजिरा) से परिचित होंगे। इसके बोल कुछ इस तरह हैं:

(पद 1) "आप जो परमेश्वर के प्रेम के लिए तरसते हैं, आप जो परमेश्वर की शांति की ओर देखते हैं—समझें कि प्रभु, जिन्होंने आपको बनाया है, आपसे कितना गहरा प्रेम करते हैं।"

(पद 2) "आप जो परमेश्वर की स्तुति और आराधना करते हैं, आप जो उनकी अच्छाई को अपने जीवन में उतारना चाहते हैं—प्रभु, जिन्होंने आपको बनाया है, उन्होंने आपको अपनी संतान बनाया है।"

(कोरस) "परमेश्वर हर समय प्रेम भरी नज़रों से आप पर नज़र रखते हैं और हमेशा दयालुता से आपकी पुकार सुनते हैं; वे अंधेरे में उज्ज्वल प्रकाश फैलाते हैं और आपकी धीमी से धीमी आह का भी उत्तर देते हैं। इसलिए, आप कहीं भी हों, प्रभु की ओर मुड़ें और अपनी नज़रें केवल उन्हीं पर टिकाए रखें।"

आइए, हम अपनी आँखें ऊपर उठाएँ और स्वर्ग में प्रभु की ओर देखें। आइए, हम विनम्रतापूर्वक उनके शक्तिशाली दाहिने हाथ पर भरोसा रखें और उन्हें पुकारें। आइए, हम तब तक परमेश्वर से पूरी लगन से विनती करते रहें, जब तक कि वे हम पर दया न करें और हमें हमारी कष्टदायक परिस्थितियों से छुटकारा न दिलाएँ।

अगर परमेश्वर हमारी तरफ़ न होते

[भजन संहिता 124]

जब आप बीते समय के बारे में सोचते हैं, तो आपके मन में क्या विचार आते हैं? अक्सर, जब हम गुज़रे हुए दिनों को याद करते हैं, तो हमें उनकी कमी महसूस होती है और हम सोचते हैं, "वह कितना अच्छा समय था..." पुरानी यादों का यह एहसास तब और भी गहरा हो जाता है जब हम मुश्किल या कठिन हालात से गुज़र रहे होते हैं। अगर हम अभी शांतिपूर्ण जीवन जी रहे होते, तो पीछे मुड़कर देखते हुए हम क्या सोचते? क्या हम सचमुच उस कृपा को याद करते और उसके लिए धन्यवाद देते जो परमेश्वर ने हमें दुख के समय में दिखाई थी? अगर हम उस भरपूर कृपा को याद कर पाते जो परमेश्वर ने हमें पहले दिखाई है, तो हम अपनी मौजूदा मुश्किलों और दर्द के बीच भी मदद के लिए उनकी ओर देख पाते। फिर भी, अक्सर हम उस भरपूर कृपा को भूलकर जीते हैं जो परमेश्वर ने हम पर बरसाई है। नतीजतन, जब हम जीवन में मुश्किलों का सामना करते हैं, तो अक्सर हम प्रभु की ओर नहीं देखते और खुद को मुश्किल हालात से बाहर निकालने में असमर्थ पाते हैं। बाद में ही हम उस कृपा पर विचार करते हैं जो परमेश्वर ने तब दिखाई थी, अपनी नज़रें वापस प्रभु की ओर घुमाते हैं और प्रार्थना में घुटनों के बल झुक जाते हैं। हम एक बार फिर प्रभु के घर जाते हैं, और ऐसे दिल से उनकी मदद मांगते हैं जो उनकी कृपा पाने के लिए तरस रहा हो। और प्रार्थना में, हम विश्वास और विनम्रता के साथ इंतज़ार करते हैं कि परमेश्वर हमें उन दर्दनाक हालात से छुटकारा दिलाएं जिनका हम सामना कर रहे हैं। इंतज़ार के दौरान, परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देते हैं, हमें तेज़ी से छुटकारा दिलाते हैं और अपनी महिमा प्रकट करते हैं। परमेश्वर की ऐसी बचाने वाली कृपा का अनुभव करने के बाद, हमें रुककर सोचना चाहिए: "अगर परमेश्वर ने तब मुझ पर कृपा न की होती तो मैं आज कहाँ होता?" या "अगर परमेश्वर ने उस समय मेरी मदद न की होती तो मेरा क्या होता?" भजन संहिता 124:1–2 में, भजनकार इज़राइल के लोगों से—जब वे मंदिर जा रहे होते हैं—एक खास सवाल पूछने के लिए कहता है: "अगर प्रभु हमारी तरफ़ न होते..." वह उन्हें उस कृपा को याद करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो परमेश्वर ने उनके

साथ खड़े होकर और अन्यायपूर्ण उत्पीड़न का सामना करते समय उन्हें छुटकारा दिलाकर दिखाई थी। ऐसा लगता है कि यह इंसानी स्वभाव है कि मुसीबत के समय परमेश्वर की मदद तो मिलती है, लेकिन उसे पहचाना नहीं जाता, और अक्सर कृतघ्नता दिखाई जाती है (पार्क युन-सन)। जब हम सोचते हैं कि हममें ऐसी कृतघ्नता की भावना क्यों होती है, तो मुझे लगता है कि इसकी जड़ हमारे कृतघ्न दिलों में है, जो बहुत जल्दी ही उस अपार कृपा को भूल जाते हैं जो परमेश्वर ने हम पर की है। बेशक, जब हम मुश्किलों और विपत्तियों से बचते हैं, तो हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं और मानते हैं कि उन्होंने हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया है; लेकिन समस्या यह है कि हमारा धन्यवाद अक्सर थोड़े समय के लिए ही होता है। हमें परमेश्वर के प्रति हमेशा कृतज्ञ हृदय के साथ जीना चाहिए, फिर भी जब हम पर विपत्तियों और मुश्किलों की नई लहरें आती हैं, तो हम उन्हें धन्यवाद देने के लिए नहीं, बल्कि बस अपनी कठिन परिस्थितियों से बचने की इच्छा से खोजते हैं। अक्सर, हम उन मुश्किलों के बीच परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली कृपा को विश्वास के साथ नहीं देख पाते हैं।

आज, भजनकार हमें यही सलाह देता है। वह न केवल इस्राएल के लोगों से, बल्कि आपसे और मुझसे भी वही सवाल पूछने का आग्रह करता है: "अगर प्रभु हमारी ओर न होते..." भजनकार कहता है कि अगर खतरे के समय परमेश्वर इस्राएल के लोगों के साथ न होते—यानी, अगर उनके दुश्मन उनके खिलाफ खड़े होने पर परमेश्वर उनकी ओर न खड़े होते (पद 2)—तो क्या होता? आज के अंश, भजन संहिता 124:3–5 को देखें: "तब उनका क्रोध हमारे खिलाफ भड़क उठता और हमें जीवित निगल जाता; तब पानी हमें डुबो देता, और तेज बहाव हमारी आत्माओं को बहा ले जाता; तब उफनता पानी हमारी आत्माओं को बहा ले जाता।" वह कहता है कि अगर परमेश्वर इस्राएल के लोगों के साथ न होते, तो वे "हमें जीवित निगल जाते" (पद 3), "हमें बहा ले जाते" (पद 4), और "हमारी आत्माओं को डुबो देते" (पद 4–5)। ये शब्द "अत्यधिक संकट के बीच एक निराशाजनक स्थिति को दर्शाते हैं" (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, भजनकार हमें याद दिलाने का आग्रह करता है कि कैसे अतीत में, जब इस्राएल के लोग अत्यधिक संकट का सामना करते हुए और अपनी लाचारी को महसूस करते हुए परमेश्वर से पुकारते थे, तो परमेश्वर उनकी ओर खड़े होते थे, उनकी मदद करते थे और उन्हें बचाते थे।

यह संदेश हमारी कलीसिया पर भी लागू होता है, क्योंकि कलीसिया ही सच्चा इस्राएल है। क्योंकि प्रभु—जो कलीसिया के मुखिया हैं—कलीसिया के साथ खड़े हैं, इसलिए चाहे हम पर कैसी भी मुसीबतें या ज़ुल्म आएं,

हमें उनकी मदद और छुटकारा मिलता है। प्रभु कलीसिया के साथ खड़े हैं, जो उनका शरीर है, और वे उसकी रक्षा और संभाल करते हैं। इसलिए, जब हम प्रभु इम्मानुएल की कृपा पर विचार करते हैं, जो हमेशा हमारे साथ हैं, तो हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए? हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए और उनकी स्तुति करनी चाहिए। आज के वचन के पद 6 को देखिए: "प्रभु की स्तुति हो, जिसने हमें उनके दाँतों से फाड़े जाने नहीं दिया।" भजनकार इसराइल के लोगों से परमेश्वर की स्तुति करने का आग्रह क्यों करते हैं? वे इसका कारण इस प्रकार बताते हैं: "हम चिड़ीमार के जाल से पक्षी की तरह बच निकले हैं; जाल टूट गया है, और हम बच गए हैं" (पद 7)। वे इसराइल को परमेश्वर की स्तुति करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं क्योंकि उन्होंने उन्हें उनके क्रूर दुश्मनों से बचाया और आज़ादी दी। हमारे पास भी हमेशा परमेश्वर की स्तुति करने का कारण है। कारण यह है कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र, यीशु को हमारे पापों के लिए प्रायश्चित का बलिदान बनाकर हमें छुड़ाया (यशायाह 43:1; 1 यूहन्ना 2:2)। इसके अलावा, परमेश्वर ने हमें अनंत आज़ादी—पाप से मुक्ति—दी है। जब हम इस कृपा पर विचार करते हैं, तो हम अपनी आखिरी साँस तक प्रभु की महिमा और महानता की स्तुति किए बिना नहीं रह सकते।

आज के वचन, भजन संहिता 124:8 में, भजनकार इस स्वीकारोक्ति के साथ अपनी बात समाप्त करते हैं: "हमारी मदद प्रभु के नाम में है, जो स्वर्ग और पृथ्वी के बनाने वाले हैं।" जो परमेश्वर हमारे पक्ष में खड़े हैं, वही हमारी मदद करने वाले परमेश्वर हैं। जो परमेश्वर हमारी मदद करते हैं, वे उद्धार के परमेश्वर हैं जिन्होंने अपनी कलीसिया को दुश्मन—शैतान—और उसकी ताकतों से बचाया। जैसे कोई पक्षी चिड़ीमार के जाल से बच निकलता है (पद 7), वैसे ही उन्होंने यीशु मसीह को क्रूस पर मरने देकर हमारा उद्धार और अनंत आज़ादी सुनिश्चित की। इसलिए, हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। हमें अपनी आखिरी साँस तक—बल्कि हमेशा-हमेशा के लिए—प्रभु की महिमा और महानता की स्तुति करनी चाहिए।

जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं

[भजन संहिता 125]

एक बार, मैंने रोमियों 4:1–8 के आधार पर इस बात पर मनन किया कि दुनिया में सबसे खुश लोग कौन हैं। बाइबल बताती है कि दुनिया में सबसे खुश वे लोग हैं—ऐसे पापी जिनके नाम पर कोई अच्छे काम या गुण नहीं हैं—जिन्हें यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा, केवल परमेश्वर की कृपा से धर्मी ठहराया गया है। तो फिर, उस खुशी का स्वरूप क्या है जो आप और मैं महसूस करते हैं—हम, जिन्हें बिना किसी अपनी योग्यता के परमेश्वर ने धर्मी माना है? रोमियों 4:7–8 को देखें: "धन्य हैं वे जिनके अधर्म के काम क्षमा कर दिए गए हैं, और जिनके पाप ढक दिए गए हैं; धन्य है वह मनुष्य जिसके पाप का हिसाब प्रभु नहीं लेगा।" संक्षेप में, हमारी खुशी इस बात में है कि हमारे सभी पाप क्षमा कर दिए गए हैं। यीशु मसीह में किस तरह के पाप क्षमा किए गए हैं? हमें यीशु मसीह में उन सभी कामों के लिए क्षमा मिली है जो खुलेआम परमेश्वर के विरुद्ध किए गए ["अधर्म के काम" (पद 7)]; कमजोरी में किए गए उन सभी पापों के लिए—ऐसे काम जो परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप नहीं थे ["पाप" (पद 7)]; और जीवन के सही मार्ग से भटकने वाली सभी नैतिक गलतियों के लिए ["पाप" (पद 8)] (पार्क युन-सन)। हमें क्षमा मिली है; हमारे सभी पाप दूर कर दिए गए हैं ["क्षमा" (पद 7) और "ढक दिए गए" (पद 7)], और परमेश्वर ने उन्हें मिटा दिया है, और अब उनका हिसाब हमारे खिलाफ नहीं ले रहा है ["पाप का हिसाब नहीं लेता" (पद 8)]। क्रूस पर यीशु के बहाए गए बहुमूल्य लहू के द्वारा, हमारे सभी पाप दूर कर दिए गए हैं। हमारे सभी पाप ढक दिए गए हैं। परमेश्वर ने हमारे हर एक पाप को मिटा दिया है। इसलिए, बाइबल कहती है कि दुनिया में सबसे खुश व्यक्ति वह है जो परमेश्वर की असीम कृपा से यीशु

मसीह पर विश्वास करता है और क्रूस पर बहाए गए उसके बहुमूल्य लहू के द्वारा सभी पापों की क्षमा प्राप्त करता है।

क्या आप खुश हैं? एक खुश व्यक्ति की एक विशेषता भजन 342, “जब हम प्रभु के साथ चलते हैं” (When We Walk with the Lord) के कोरस में झलकती है: “जैसे-जैसे दिन बीतते हैं, मैं केवल उस पर भरोसा करता हूँ; चाहे कुछ भी हो, मैं यीशु पर विश्वास करता हूँ।” आम तौर पर बच्चे बड़े होने पर अपने माता-पिता से आज़ाद होकर खुद काम करना चाहते हैं, लेकिन हममें से जो लोग यीशु पर विश्वास करते हैं—जैसे-जैसे हमारा विश्वास बढ़ता है—हम परमेश्वर से आज़ाद नहीं होते; बल्कि, हम उन पर और ज़्यादा निर्भर होने लगते हैं। खासकर खुश रहने वाले लोग मुश्किलों का सामना करते समय परमेश्वर पर ज़्यादा भरोसा करते हैं, क्योंकि उन्हें एहसास होता है कि उनका अपना विश्वास कितना कमज़ोर और छोटा है। इसलिए, खुश रहने वाला व्यक्ति ज़िंदगी के सबसे अंधेरे और खतरनाक पलों में परमेश्वर की मदद चाहता है। क्या आप भी जैसे-जैसे साल बीत रहे हैं, परमेश्वर पर ज़्यादा से ज़्यादा निर्भर रहने की खुशी का अनुभव कर रहे हैं?

आज के बाइबल पाठ, भजन संहिता 125:1 में, भजनकार कहता है: "जो लोग प्रभु पर भरोसा रखते हैं, वे सिय्योन पर्वत के समान हैं, जो कभी हिलता नहीं बल्कि हमेशा बना रहता है।" दूसरे शब्दों में, संदेश यह है कि जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वे सिय्योन पर्वत की तरह हमेशा अडिग रहेंगे। "पर्वत" "स्थिरता और आराम" का प्रतीक है (पार्क युन-सन)। पर्वत की तरह, जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वे किसी भी मुसीबत या मुश्किल के बीच मज़बूती से और बिना हिले-डुले खड़े रहेंगे, और वे हमेशा उस शांति और आराम का आनंद लेंगे जो परमेश्वर देता है। यह कैसे संभव है? इस पापी दुनिया में, जहाँ चिंताएँ, मुश्किलें और यहाँ तक कि मौत का खतरा भी है, कोई व्यक्ति पर्वत की तरह बिना हिले-डुले शांति और आराम का आनंद कैसे ले सकता है? ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर उन लोगों की रक्षा करता है जो उस पर भरोसा करते हैं। आयत 2 देखें: "जैसे पहाड़ यरूशलेम को घेरे हुए हैं, वैसे ही प्रभु अपने लोगों को अब से लेकर हमेशा तक घेरे रहता है।" भौगोलिक दृष्टि से, कहा जाता है कि यरूशलेम कई पहाड़ों से घिरा हुआ है (पार्क युन-सन)। जैसे ये कई पहाड़ यरूशलेम को घेरे हुए हैं, वैसे ही परमेश्वर उन लोगों को घेरे रहता है जो उस पर भरोसा करते हैं। ठीक वैसे ही जैसे पहाड़—अपनी स्थिर स्थिति के साथ—यरूशलेम को पास और दूर

से घेरे रहते हैं, परमेश्वर उन लोगों की मज़बूती से रक्षा और हिफ़ाज़त करता है जो उस पर भरोसा करते हैं। इसलिए, जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वे हमेशा उसकी उपस्थिति में रहते हैं और उसकी अनंत सुरक्षा पाते हैं।

हालाँकि, यहाँ हमें एक बात ध्यान में रखनी चाहिए: जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और उसकी सुरक्षा में रहते हैं, उन्हें भी दर्दनाक अनुभवों का सामना करना पड़ सकता है। भजन संहिता 125 की आयत 3 देखें, जो आज हमारा मुख्य पाठ है: "दुष्टों का राजदंड धर्मी लोगों को दी गई ज़मीन पर नहीं रहेगा, कहीं ऐसा न हो कि धर्मी लोग बुराई करने के लिए अपने हाथ बढ़ाएँ।" कभी-कभी, परमेश्वर बुरे लोगों को नेक लोगों (संतों) को सताने की इजाज़त देते हैं, ताकि वे सावधान हो जाएं (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब है कि जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, उनके जीवन में भी बुरे लोगों की वजह से दुखद स्थितियां आ सकती हैं। मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर हम जैसे लोगों के जीवन में ऐसी बातें क्यों होने देते हैं जो उन पर निर्भर हैं। इसका कारण हमें जगाना है। कुछ लोग यह भी कह सकते हैं कि परमेश्वर हमें बेहतर बनाने के लिए ऐसे दुख की इजाज़त देते हैं। मेरा मानना है कि इसका कारण परमेश्वर की अच्छी, सुखद और उत्तम इच्छा है, ताकि हम उन पर और भी ज़्यादा निर्भर हो सकें। दूसरे शब्दों में, जब हम परमेश्वर पर भरोसा करके जीते हैं, तो बुरे लोगों की वजह से हमें जो दुख और मुश्किलें झेलनी पड़ती हैं, वे असल में हमें उन पर और भी ज़्यादा निर्भर बनाती हैं। नतीजतन, जितनी ज़्यादा मुश्किलें और कठिनाइयाँ होती हैं, हम उतनी ही शिद्दत से परमेश्वर को पुकारते हैं।

तो, जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, उनकी प्रार्थना की क्या विनती होती है? भजनकार आज के हिस्से की आयत 4 और 5 में ऐसी दो विनतियों का ज़िक्र करता है।

पहली प्रार्थना की विनती भजन 125:4 में लिखी है: "हे यहोवा, जो अच्छे हैं और जिनके दिल सीधे हैं, उनके साथ भलाई कर।" यहाँ, "अच्छे" या "सीधे दिल वाले" शब्दों का मतलब है "वे लोग जो—बिना किसी धोखे के—सच्चे मन से परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और नेकी के रास्ते पर चलने की कोशिश करते हैं; दूसरे शब्दों में, संत" (पार्क युन-सन)। संक्षेप में, यह हिस्सा हमें सिखाता है कि संतों के तौर पर, हमें सच्चे मन से परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए और नेकी के रास्ते पर चलना चाहिए। अगर हम सच्चे विश्वासी हैं, तो हम परमेश्वर

पर भरोसा करके अपना जीवन जिएँगे। और अगर हम सच में परमेश्वर पर भरोसा कर रहे हैं, तो हम बिना किसी धोखे और सच्चे मन से उन पर भरोसा करते हुए नेकी के रास्ते पर चलने की कोशिश करेंगे। ऐसे नेक जीवन के बीच की गई प्रार्थनाओं को परमेश्वर कैसे अनसुना कर सकते हैं? यहाँ हमें यह समझने की ज़रूरत है कि प्रार्थना में क्या कहा गया है, यह तो ज़रूरी है ही, लेकिन प्रार्थना करने वाला व्यक्ति और भी ज़्यादा महत्वपूर्ण है। अगर कोई व्यक्ति परमेश्वर पर भरोसा करने का दावा करता है और उनसे प्रार्थना करता है, लेकिन ऐसा जीवन नहीं जीता जो उनकी नज़र में अच्छा हो, तो कोई भी यह सवाल उठा सकता है कि परमेश्वर ऐसे व्यक्ति की प्रार्थनाओं का जवाब कैसे दे सकते हैं। जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और उनसे भलाई दिखाने की प्रार्थना करते हैं, वे सीधे दिल वाले होते हैं; वे सच्चे होते हैं। ये वे लोग हैं जो परमेश्वर की भली इच्छा को जानते हैं और उसे पूरा करने की कोशिश करते हैं। जब ऐसे नेक और अच्छे लोग प्रार्थना करते हैं, "हमारा भला कर," तो वे रोमियों 8:28 के इन शब्दों पर पक्के विश्वास के साथ ऐसा करते हैं: "और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं और जिन्हें उसकी योजना के अनुसार बुलाया गया है, उनके लिए परमेश्वर सब बातों में भलाई ही करता है।"

प्रार्थना की दूसरी विनती आज के पाठ की 5वीं आयत में लिखी है: "जो लोग अपने टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर मुड़ जाते हैं, प्रभु उन्हें बुरे काम करने वालों के साथ दूर ले जाएगा। इस्राएल पर शांति हो।" यहाँ, "जो लोग अपने टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर मुड़ जाते हैं" का मतलब है "वे धर्मत्यागी जो परमेश्वर के सत्य से दूर हो जाते हैं" (पार्क युन-सन)। इसका मतलब है कि परमेश्वर ऐसे धर्मत्यागियों के साथ वैसा ही व्यवहार करेगा जैसा वह उन अविश्वासियों के साथ करता है जो पश्चाताप नहीं करते—यानी "वे जो बुराई करते हैं।" उनका अंजाम विनाश है। जैसे भजनकार ने परमेश्वर पर भरोसा करते हुए और उससे नेक दिल वालों पर भलाई करने की विनती करते हुए प्रार्थना की, वैसे ही उसने परमेश्वर से इन धर्मत्यागियों—जिन्होंने सत्य को छोड़ दिया है—के साथ भी वैसा ही व्यवहार करने की विनती की जैसा वह पश्चाताप न करने वाले बुरे काम करने वालों के साथ करता है। इसी बीच, उसने इस्राएल पर शांति के लिए प्रार्थना की।

आज के समय में, जब आर्थिक मंदी के कारण जीवन बहुत मुश्किल हो गया है, हमें पहले से कहीं ज़्यादा परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए। अगर हमने मत्ती 6:24 में यीशु की शिक्षा—कि कोई भी व्यक्ति परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकता—का उल्लंघन किया है और परमेश्वर के बजाय धन के लिए ज़्यादा

कोशिश की है, तो हमें अपने पाप को स्वीकार करना चाहिए और पश्चाताप करना चाहिए। हमें भौतिक चीज़ों पर भरोसा करना छोड़ देना चाहिए और पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए। हमें नेक और सच्चे दिल का होना चाहिए। इसके अलावा, हमें परमेश्वर की भली इच्छा को समझने और उसे पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए। ऐसा करते समय, हमें परमेश्वर से अपनी भलाई दिखाने के लिए कहना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम मज़बूती से और बिना डगमगाए खड़े रह सकते हैं; परमेश्वर उन लोगों की रक्षा और देखभाल करेगा जो उस पर भरोसा करते हैं।

“यह एक सपने जैसा था”

[भजन संहिता 126]

पिछले शुक्रवार को सुबह लगभग 4:20 बजे, मैं नींद में ज़ोर से हँसने के बाद जाग गया। सपने में, मैं स्वर्गीय पादरी किम चांग-ह्युक से मिला था; हम खुशी-खुशी बातें कर रहे थे और मज़ाक कर रहे थे, तभी मैं ज़ोर से हँस पड़ा—और जागने पर पता चला कि यह सिर्फ़ एक सपना था। उन्हें गुज़रे हुए लगभग एक साल हो चुका था, इसलिए उन्हें देखकर मुझे बहुत खुशी हुई, भले ही वह सिर्फ़ सपने में ही क्यों न हो। अगर यह सपना न होकर असलियत होती, तो क्या आप विश्वास करते? कोई भी इस पर विश्वास नहीं करता। मैं जानता हूँ कि अब मैं इस दुनिया में पादरी को नहीं देख सकता। इस जीवन में उनसे दोबारा मिलने की मुझे कोई उम्मीद नहीं है। जब मैं भी इस दुनिया को छोड़कर प्रभु के पास जाऊँगा, तभी स्वर्ग में उनसे दोबारा मिल पाऊँगा; बस यही उम्मीद मेरे मन में है। हालाँकि, अगर परमेश्वर पादरी को फिर से जीवित करके मेरे पास भेज दें—अगर मैं इस दुनिया में उनसे दोबारा मिल सकूँ—तो मैं ऐसी अविश्वसनीय घटना से पूरी तरह हैरान रह जाऊँगा। मैं खुद को चुटकी काटकर देखूँगा कि मैं जाग रहा हूँ या सपना देख रहा हूँ। आप अपनी ज़िंदगी में किस तरह के चमत्कार—ऐसी चीज़ जिस पर विश्वास करना लगभग नामुमकिन हो—के होने की उम्मीद करते हैं? दूसरे शब्दों में, वह कौन सी गहरी उम्मीद है जिसका आप सपना देखते हैं? भजन संहिता 126:1 में, भजनकार कहता है, "यह एक सपने जैसा था।" अतीत की किस अविश्वसनीय घटना ने उन्हें ऐसा कहने पर मजबूर किया? वह अविश्वसनीय, चमत्कारी घटना थी परमेश्वर द्वारा इस्राएल के लोगों को बेबीलोन की गुलामी से छुड़ाकर यहूदा की धरती पर वापस लाना (पार्क युन-सन)। परमेश्वर के इस महान उद्धार के काम पर विचार करते हुए, भजनकार और वापस लौटने वाले इस्राएली, दोनों को ही इस पर विश्वास करना लगभग असंभव लग रहा था। उनकी स्थिति पर ज़रा सोचिए: गुलामी के दौरान, उन्होंने दुख और आँसुओं के बीच

परमेश्वर से उद्धार की तड़प और विनती की थी (पद 5–6), और अक्सर निराश और हताश महसूस करते थे क्योंकि उनकी प्रार्थनाओं का जवाब मिलने में देरी हो रही थी। फिर, परमेश्वर के अद्‌भुत उद्धार के काम के ज़रिए, उन्हें गुलामी से आज़ादी मिली और वे मुक्त हो गए। उन्हें यह कितना अविश्वसनीय और चमत्कारी लगा होगा! इस प्रकार, परमेश्वर के उद्धार के उस इतिहास को याद करते हुए, भजनकार कहता है, "यह एक सपने जैसा था।" पिछले महीने, जब मैं अमेरिका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति बराक ओबामा के शपथ ग्रहण समारोह को देख रहा था, तो मैंने कई बुजुर्ग अश्वेत महिलाओं की आँखों में आँसू देखे। मुझे यकीन है कि उन्हें और कई अन्य अश्वेत नागरिकों को ऐसा लगा होगा जैसे वे कोई सपना देख रहे हों। एक ऐसी घटना हुई थी जिसकी पहले कभी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी और जिस पर विश्वास करना मुश्किल था। उन दिनों में जब अश्वेत लोग गोरे मालिकों की सेवा करते थे और गुलामों की तरह रहते थे, तो कौन—चाहे अश्वेत हो या गोरा—यह सपना देखने की हिम्मत करता कि कोई अश्वेत व्यक्ति राष्ट्रपति बन सकता है? हमें गुलामी के दौर तक पीछे मुड़कर देखने की भी ज़रूरत नहीं है; यहाँ तक कि 1960 के दशक में भी, मुझे नहीं लगता कि किसी ने यह सपना देखने की हिम्मत की होगी कि कोई अश्वेत व्यक्ति राष्ट्रपति बन सकता है। फिर भी, पिछले महीने राष्ट्रपति ओबामा के शपथ ग्रहण समारोह में... मुझे एहसास हुआ कि कई अश्वेत लोग मानते हैं कि डॉ. मार्टिन लूथर किंग जूनियर द्वारा 28 अगस्त, 1963 को वाशिंगटन, डी.सी. में लिंकन मेमोरियल पर 2,50,000 लोगों की भीड़ के सामने दिया गया "मेरा एक सपना है" (I Have a Dream) वाला भाषण सच हो गया है। उस विशाल भीड़ को संबोधित करते हुए, डॉ. किंग ने अपने उस सपने के बारे में बात की थी: "एक दिन, जॉर्जिया की लाल पहाड़ियों पर, पूर्व गुलामों के बेटे और गुलामों के मालिकों के बेटे भाईचारे की मेज पर एक साथ बैठ सकेंगे।" "यह एक सपना है कि एक दिन अलबामा के नस्लवादी लोग हट जाएँगे, और मेरा युवा बेटा और बेटी वहाँ गोरे लोगों के बेटों और बेटियों के साथ भाई-बहन की तरह हाथ में हाथ डालकर रहेंगे" (इंटरनेट)। आज संयुक्त राज्य अमेरिका को देखिए। न केवल डॉ. किंग का सपना सच हुआ है, बल्कि एक अश्वेत व्यक्ति को संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रपति बनते देखना—एक ऐसी घटना जो विशेष रूप से अश्वेत लोगों के लिए एक अविश्वसनीय सपने जैसी लगती होगी—हमें उस सोच की सच्चाई दिखाता है। अब, हम एशियाई लोग भी सपना देख सकते हैं। कौन कह सकता है कि मेरे बच्चों के समय में कोई एशियाई राष्ट्रपति नहीं बन सकता? आज के पाठ, भजन संहिता 126 में, भजनकार एक ऐसी घटना को याद करता है जो किसी सपने जैसी लगती थी—परमेश्वर के उद्धार के महान कार्य के द्वारा बेबीलोन की गुलामी से यहूदा की भूमि पर

वापसी—और वह इस प्रकार कहता है: "तब हमारे मुँह हँसी से और हमारी जीभ आनन्द के गीतों से भर गई। तब अन्य जातियों के बीच कहा गया, 'प्रभु ने उनके लिए महान कार्य किए हैं।' प्रभु ने हमारे लिए महान कार्य किए हैं, और हम आनन्द से भर गए हैं" (पद 2–3)। उस सपने जैसी घटना पर विचार करते हुए, वह उस पल में भरी हँसी और आनन्द में डूब गया। उसने याद किया कि कैसे, जब परमेश्वर ने वह महान कार्य किया (पद 3), तो लोगों ने मिलकर परमेश्वर की स्तुति की और उस उद्धार में आनन्द मनाया जो उसने दिया था। भजनकार हमें याद दिलाता है कि जब उन्होंने उद्धार की इस महान कृपा के लिए परमेश्वर की स्तुति की, तो अन्य जातियों के लोगों ने भी यह खबर सुनी और माना, "प्रभु ने उनके लिए [इस्राएल के लोगों के लिए] महान कार्य किए हैं" (पद 2)। इसके बीच, हम उसे अपने उन देशवासियों के लिए प्रार्थना करते हुए देख सकते हैं जो अभी भी विदेशी भूमि में थे और अभी तक यहूदा की भूमि पर नहीं लौटे थे। (पार्क युन-सन): "हे प्रभु, हमारी किस्मत को फिर से वैसा ही कर दे, जैसे दक्षिण में नदियाँ बहती हैं" (पद 4)। "दक्षिण में नदियों की तरह" वाक्यांश भजनकार की उस प्रार्थना को दर्शाता है कि इस्राएल के बंदी लोग सभी घर लौट आएँ, ठीक वैसे ही जैसे बारिश के मौसम में वे नदियाँ पानी से भर जाती हैं (पार्क युन-सन)। इस प्रार्थना के बीच, भजनकार को भरोसा था कि इसका उत्तर मिलेगा। हम इसे पाठ के पद 5–6 में देख सकते हैं: "जो लोग आँसुओं के साथ बोते हैं, वे आनन्द के साथ काटेंगे; जो रोते हुए बीज बोने के लिए बाहर जाता है, वह निस्संदेह आनन्द के साथ वापस आएगा और अपनी फसल साथ लाएगा।" गुलामी में रह गए अपने साथी इस्राएलियों के लिए प्रार्थना करते हुए, भजनकार—हालांकि उस दर्दनाक निर्वासन के बीच आँसू बहा रहा था—को विश्वास था कि परमेश्वर बचे हुए बंदियों को बचाएगा और उन्हें आनन्द के साथ यहूदा की भूमि पर वापस लाएगा, ठीक वैसे ही जैसे उसने पहले लोगों को गुलामी से छुड़ाकर और उन्हें उनकी मातृभूमि में वापस लाकर उद्धार का महान कार्य किया था।

प्रियजनों, जब हम आँसुओं के साथ प्रार्थना करते हैं, तो परमेश्वर की आनन्दपूर्ण स्तुति का दिन निश्चित रूप से आएगा। हमारे जीवन में ऐसी घटनाएँ घटेंगी जो किसी सपने जैसी लगेंगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार सपनों जैसी चीज़ों को भी हकीकत में बदलने की सामर्थ्य रखते हैं। वे ऐसे परमेश्वर हैं जो हमारी प्रार्थनाओं में बहाए गए आँसुओं को देखते हैं और उनका उत्तर देते हैं। वे ऐसे परमेश्वर हैं जो हमारी सच्ची विनतियों को सुनते हैं और उद्धार के महान कार्य करते हैं। हमारे परमेश्वर ही हमारे दुख को खुशी में बदलते हैं; वे हमें उद्धार देते हैं और हमें आनंदित होकर उनकी स्तुति करने की ओर ले जाते हैं।

आइए हम सब ऐसे लोग बनें जो उद्धार देने वाले इस परमेश्वर की ओर विश्वास से देखें और बड़े-बड़े सपने देखें।

जब तक प्रभु इसे न बनाए, तब तक सब व्यर्थ है।

[भजन संहिता 127]

भजन संहिता 90 में मूसा की प्रार्थना में लिखा है: "हमारे जीवन के दिन सत्तर वर्ष के होते हैं; और यदि बल के कारण वे अस्सी वर्ष के भी हों, तो भी उनका घमंड केवल परिश्रम और दुःख ही है; क्योंकि वे जल्द ही समाप्त हो जाते हैं, और हम उड़ जाते हैं।" इन शब्दों पर विचार करते हुए—कि सत्तर या अस्सी वर्ष का जीवन परिश्रम और दुःख के अलावा और कुछ नहीं है—मैंने उपदेशक (Ecclesiastes) की इन बातों पर भी मनन किया: "व्यर्थता ही व्यर्थता, सब कुछ व्यर्थ है" (उपदेशक 1:2)। जीवन बहुत तेज़ी से बीत जाता है; यह इतना छोटा है कि कोई अपना पूरा अस्तित्व परिश्रम और दुःख की दुनिया में, केवल ऐसे कामों में बिता दे जो अंततः अर्थहीन हैं। मैं खुद से फिर पूछता हूँ, "तो फिर, मुझे कैसे जीना चाहिए?" इस संदर्भ में, मैंने भजन संहिता 127 की शिक्षाओं पर विचार किया। मुझे यह स्वीकार करने और मानने के लिए मजबूर होना पड़ा कि वास्तव में सार्थक जीवन केवल प्रभु में ही संभव है। प्रभु से अलग किया गया कोई भी काम या परिश्रम कोई वास्तविक महत्व नहीं रखता। दूसरे शब्दों में, प्रभु के बिना हमारी सभी कोशिशें पूरी तरह व्यर्थ हैं। केवल तभी जब प्रभु हमारे साथ हों—हमारे भीतर और हमारे माध्यम से काम कर रहे हों—तब हमारा परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता।

भजन संहिता 127:1 में, भजनकार सुलैमान घोषणा करते हैं: "जब तक प्रभु घर न बनाए, उसे बनाने वाले व्यर्थ ही परिश्रम करते हैं; जब तक प्रभु नगर की रक्षा न करे, पहरेदार व्यर्थ ही जागता रहता है।" जैसा कि हम जानते हैं, सुलैमान वह राजा थे जिन्होंने यरूशलेम में मंदिर बनवाया था (2 इतिहास 2:1–5:1)। हालाँकि उनके पिता, राजा दाऊद, मंदिर बनाने की गहरी इच्छा रखते थे, लेकिन परमेश्वर ने उन्हें अनुमति नहीं दी; इसके बजाय, उन्होंने यरूशलेम मंदिर के निर्माण के लिए दाऊद के बेटे, राजा सुलैमान को नियुक्त किया।

इस काम के साथ सुलैमान के अपने अनुभव को देखते हुए, भजन संहिता 127:1 में उनकी घोषणा—"जब तक प्रभु घर न बनाए, बनाने वालों का परिश्रम व्यर्थ है"—एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब भी कोई मंडली—जिसमें पादरी और भवन निर्माण समितियाँ शामिल हैं—प्रभु के लिए मंदिर के निर्माण और समर्पण का काम हाथ में लेती है, तो उन्हें अक्सर कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है; सच तो यह है कि मंदिर बनाना कोई आसान काम नहीं है। इसके अलावा, जैसा कि हम जानते हैं, कई चर्चों को निर्माण कार्यों के कारण आध्यात्मिक चुनौतियों और अंदरूनी झगड़ों का सामना करना पड़ा है। पिछले शुक्रवार, मैंने एक बड़े चर्च के बारे में खबर देखी जो अपने पार्किंग लॉट को बड़ा करने के लिए अपनी दो अपार्टमेंट बिल्डिंग्स को गिराने की योजना बना रहा था—जिनमें कम आय वाले किराएदार रहते थे। गिराने की कानूनी प्रक्रिया पूरी हो चुकी थी, लेकिन कम आय वाले किराएदारों ने 'कोरियाटाउन लेबर अलायंस' जैसे समूहों के साथ मिलकर गिराने के विरोध में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की। उनका तर्क था कि इससे उनके घर का अधिकार छिन जाएगा। हालाँकि ऐसी चुनौतियाँ बाहरी कारणों से हो सकती हैं, लेकिन निर्माण के दौरान चर्च के अंदरूनी मुद्दे और झगड़े अक्सर और भी गंभीर होते हैं। इसलिए, परमेश्वर की मदद के बिना चर्च का निर्माण नहीं किया जा सकता। भजन संहिता 127:1 में, जब राजा सुलैमान कहते हैं कि "जब तक प्रभु घर नहीं बनाते," तो "घर" शब्द का अर्थ "मंदिर" है (पार्क युन-सन)। इसलिए, हमें इस सच्चाई को मानना होगा कि जब तक राजा सुलैमान के परमेश्वर मंदिर का निर्माण नहीं करते, तब तक बनाने वालों की मेहनत बेकार है। चर्च प्रभु का है; यह किसी एक व्यक्ति या समूह का चर्च नहीं है। इस प्रकार, प्रभु के चर्च का निर्माण स्वयं प्रभु द्वारा किया जाना चाहिए, जैसा कि मत्ती 16:18 में किए गए वादे के अनुसार है। हम केवल "बनाने वाले" हैं—प्रभु के हाथों में उपकरण। जिस तरह आर्किटेक्ट घर बनाते समय औजारों का इस्तेमाल करते हैं, उसी तरह हम बस वे उपकरण हैं जिनका इस्तेमाल प्रभु चर्च को बनाने के लिए करते हैं, जो उनका शरीर है। इसलिए, हमारी भूमिका बस प्रभु की आज्ञा मानना है जब वे चर्च का निर्माण करते हैं; जब वे हमें कुछ करने का आदेश देते हैं, तो हमें बस "हाँ" कहना होता है और उसे पूरा करना होता है।

सुलैमान ने न केवल यरूशलेम में मंदिर का निर्माण किया; बल्कि वह एक महान राजा भी थे जिन्होंने इज़राइल राष्ट्र पर बुद्धिमानी से शासन किया। उन्होंने धन या प्रसिद्धि के बजाय परमेश्वर से ज्ञान माँगा, ताकि वे परमेश्वर के लोगों पर प्रभावी ढंग से शासन कर सकें। इसके जवाब में, परमेश्वर ने उन्हें न केवल ज्ञान दिया, बल्कि धन और सम्मान भी दिया। परमेश्वर द्वारा दिए गए ज्ञान के साथ, सुलैमान ने बड़े-बड़े प्रोजेक्ट शुरू किए और

सात वर्षों में मंदिर तथा तेरह वर्षों में शाही महल का निर्माण पूरा किया। निर्माण के इन विशाल कार्यों के लिए अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के माध्यम से विदेशों से लकड़ी और पत्थर मँगाने की आवश्यकता थी। हालाँकि, दूसरे देशों के साथ इस संपर्क के कारण उन्हें विदेशी धर्मों को अपनाने की अनुमति देनी पड़ी। इसके अलावा, मज़दूरी के लिए लोगों को बड़े पैमाने पर जुटाने और भारी टैक्स लगाने से उनकी प्रजा और अधिकारियों में नाराज़गी फैल गई। नतीजतन, जैसा कि हम जानते हैं, राजा सुलैमान ने परमेश्वर की बात नहीं मानी और दूसरे देशों के देवताओं की पूजा करके मूर्ति-पूजा का पाप किया। राजा सुलैमान मानते हैं, "...जब तक प्रभु शहर की रक्षा नहीं करते, तब तक पहरेदार का जागना बेकार है" (पद 1)। यह अंश बताता है कि किसी देश का उत्थान और पतन पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा पर निर्भर करता है (पार्क युन-सन)। परमेश्वर ही वह है जो देशों को बनाता भी है और उन्हें नष्ट भी करता है या उनका विनाश करता है (यिर्मयाह 1:11)। यही वह परमेश्वर था जिसने दाऊद और सुलैमान के शासनकाल में इज़राइल राष्ट्र की स्थापना की थी, लेकिन बाद में सुलैमान के पाप के कारण सुलैमान के बेटे रहूबियाम के शासनकाल में इसे उत्तरी इज़राइल राज्य और दक्षिणी यहूदा राज्य में विभाजित कर दिया। केवल तभी जब परमेश्वर स्वयं सच्चे पहरेदार के रूप में कार्य करते हैं—अपनी कलीसिया और अपने राष्ट्र की रक्षा और सुरक्षा करते हैं—तभी वे मज़बूती से खड़े रह सकते हैं। प्रभु के ऐसे कार्य के बिना, इंसानी कोशिश बेकार है (भजन संहिता 127:1)।

आज के वचन, भजन संहिता 127:2 पर विचार करें: "सुबह जल्दी उठना और देर से सोना, और चिंता भरी मेहनत की रोटी खाना बेकार है; क्योंकि वह अपने प्रिय को नींद देता है।" यहाँ, सुलैमान बताते हैं कि यदि कोई व्यक्ति मेहनत करता है—दिन-रात कड़ी मेहनत भी करता है—लेकिन प्रार्थना के ज़रिए परमेश्वर पर भरोसा नहीं करता या उनकी बात नहीं मानता, तो वह सच्ची सफलता हासिल नहीं कर सकता (पार्क युन-सन)। इसलिए, वह हमें सलाह देते हैं कि हम मेहनत करते समय परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखें और उनकी बात मानें, ताकि हमारी कोशिशें बेकार न जाएँ। दूसरे शब्दों में, हमें विश्वास के साथ काम करना चाहिए। जो लोग ऐसे विश्वास के साथ मेहनत करते हैं, परमेश्वर उनसे प्यार करते हैं, और उन्हें नींद देते हैं। डॉ. पार्क युन-सन का सुझाव है कि परमेश्वर द्वारा अपने प्रिय को नींद देने की बात की व्याख्या तीन तरह से की जा सकती है: (1) पहला, इसका मतलब है कि परमेश्वर उन लोगों को शारीरिक नींद देते हैं जिनसे वे प्यार करते हैं; (2) दूसरा, यह आत्मा के उस नज़रिए को दर्शाता है जो परमेश्वर पर भरोसा करती है और उनमें विश्राम पाती है; और (3) तीसरा, इसका मतलब है कि जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और उनसे प्रेम करते हैं, उनके

कामों में परमेश्वर सफलता सुनिश्चित करते हैं, यहाँ तक कि उनके सोते समय भी। मेरा मानना है कि तीनों ही अर्थ सही हैं। परमेश्वर जिन्हें स्थापित करते हैं, उन्हें न केवल शारीरिक नींद बल्कि आध्यात्मिक विश्राम भी देते हैं। इसके अलावा, वे अपने प्रियजनों—यानी हम—के कामों को सफल बनाते हैं, भले ही हम सो रहे हों। वे उन लोगों को बच्चों का आशीर्वाद भी देते हैं जिनसे वे प्रेम करते हैं। आयत 3 को देखें: "बच्चे प्रभु की ओर से एक विरासत हैं, और गर्भ का फल एक इनाम है।"

अगर आप आजकल की खबरें देखते हैं, तो आपको नाद्या सुलेमान के बारे में खबरें ज़रूर दिखती होंगी, जिन्होंने एक साथ आठ बच्चों (ऑक्टुपलेट्स) को जन्म देकर दुनिया भर में सुर्खियां बटोरी थीं। इन आठ बच्चों के अलावा, उनके पहले से ही छह बच्चे थे जो 'इन विट्रो फर्टिलाइज़ेशन' (IVF) से हुए थे; वह एक सिंगल मदर हैं जिनका पिछले जनवरी में तलाक हो गया था, उनके पास पैसे की कमी है और वे सरकारी मदद पर निर्भर हैं। अब, अपने चौदह बच्चों की परवरिश के लिए, वे अपनी कहानी प्रकाशित करके और बेचकर 2 मिलियन डॉलर जुटाने की कोशिश कर रही हैं (ऑनलाइन रिपोर्ट के अनुसार)। मुझे जो आखिरी जानकारी मिली, उसके मुताबिक उनके माता-पिता का घर—जहाँ वे अभी रह रही हैं—ज़ब्त हो सकता है। हालाँकि शुरू में आठ बच्चों के जन्म से हर कोई हैरान था, लेकिन अब खबरों के ज़रिए माँ के बारे में और जानकर लोग और भी ज़्यादा हैरान हो रहे हैं। एक सिंगल मदर, जिन्होंने पहले ही IVF के ज़रिए छह बच्चों को जन्म दिया था, ने कहा कि उन्होंने आठ और बच्चों को जन्म देने का फैसला इसलिए किया क्योंकि उन्हें बच्चे बहुत पसंद हैं। कोई भी यह सवाल कर सकता है कि क्या इसे सचमुच "बच्चों का आशीर्वाद" कहा जा सकता है। आज के वचन में बताए गए बच्चों का आशीर्वाद वह इनाम है जो परमेश्वर उन परिवारों को देते हैं जिन्हें वे स्थापित करते हैं (भजन संहिता 127:3)। इसका मतलब है कि परमेश्वर उन जोड़ों को कृपा के रूप में बच्चे देते हैं जिन्हें वे एक साथ जोड़ते हैं। हमें परमेश्वर से बच्चे इसलिए नहीं मिलते कि हमने उन्हें कमाया है या हम उनके हकदार हैं; बल्कि, हमें वे परमेश्वर की असीम कृपा से एक उपहार के रूप में मिलते हैं। इसके अलावा, सुलैमान जवानी के दिनों में हुए बच्चों की तुलना योद्धा के हाथ में मौजूद तीरों से करते हैं (आयत 4)। युवा माता-पिता के बच्चे तब अपनी जवानी के चरम पर पहुँचते हैं जब उनके माता-पिता की उम्र ढलने लगती है। जब माता-पिता कमज़ोर होने लगते हैं, तो ये बच्चे स्वाभाविक रूप से उनकी मदद के लिए आगे आ सकते हैं और परिवार की रक्षा के लिए ढाल बन सकते हैं। अच्छी परवरिश वाले बच्चे महत्वपूर्ण तीरों की तरह होते हैं; अपने बड़े हो चुके बच्चों के साथ मिलकर, माता-पिता अपने घर को उन दुश्मनों से बचा सकते

हैं जो उसे नष्ट करना चाहते हैं। जिस परिवार में कई स्वस्थ बच्चे हों, वह बाहरी दुश्मनों के सामने आसानी से नहीं टूटता। इस लिहाज़ से, जिस परिवार में कई स्वस्थ बच्चे हों, वह खुशहाल परिवार होता है। बच्चे अपने माता-पिता को सुरक्षा का एहसास दिलाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे तीरों से भरा तरकश। ऐसी स्थिति में माता-पिता को किसी बात का डर नहीं होता, ठीक वैसे ही जैसे तीरों से पूरी तरह लैस योद्धा को नहीं होता। इसके अलावा, जब ऐसे माता-पिता शहर के दरवाज़े पर अपने दुश्मनों का सामना करेंगे, तो उन्हें शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा (पद 5)।

भजन संहिता 127 के ज़रिए आज परमेश्वर हमें यह सिखाते हैं कि हमारे भौतिक परिवार, हमारे आध्यात्मिक परिवार (कलीसिया) और यहाँ तक कि हमारे राष्ट्र भी व्यर्थ में ही बनते हैं, जब तक कि प्रभु उन्हें स्थापित न करें। इसके अलावा, परिवार के बारे में हमें यह सिखाया जाता है कि बच्चे परमेश्वर की ओर से मिला एक इनाम हैं; परिवार वास्तव में उनके उपहार से बनता है, न कि केवल इंसानी कोशिशों से। सच में आशीष पाया हुआ परिवार, कलीसिया या राष्ट्र वही है जिसे प्रभु ने स्थापित किया हो। मेरी प्रार्थना है कि हमारे परिवार, जिन कलीसियाओं की हम सेवा करते हैं, संयुक्त राज्य अमेरिका और हमारा देश कोरिया—ये सभी ऐसी ही जगहें बनें।

“जो प्रभु का भय मानते हैं”

[भजन संहिता 128]

पिछले हफ़्ते बुधवार की प्रार्थना सभा में, भजन संहिता 127 पर मनन करते हुए, हमने सीखा कि जब तक परमेश्वर हमारे घरों, हमारे चर्चों और हमारे देश का निर्माण नहीं करते, तब तक बनाने वालों की मेहनत बेकार है (पद 1)। दूसरे शब्दों में, हमने यह सच्चाई सीखी कि परमेश्वर पर विश्वास किए बिना की गई कोई भी मेहनत व्यर्थ है (पद 2)। हालाँकि, आज के अंश—भजन संहिता 128:1–2—में बाइबल कहती है: “धन्य है वह हर कोई जो प्रभु का भय मानता है, जो उसके मार्गों पर चलता है! तुम अपने हाथों की मेहनत का फल खाओगे; तुम धन्य होगे, और तुम्हारा भला होगा।” इस प्रकार, भजनकार हमें बताता है कि जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, उनकी मेहनत निश्चित रूप से आशीष का फल देती है। यहाँ, हम भजन संहिता 127 और भजन संहिता 128 के बीच संबंध देख सकते हैं। जहाँ भजन संहिता 127 हमें परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए मेहनत करने के लिए प्रेरित करती है, वहीं आज का अंश, भजन संहिता 128, हमें परमेश्वर का भय मानते हुए मेहनत करना सिखाता है। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारी मेहनत व्यर्थ नहीं जाती, और हमें परमेश्वर से आशीष मिलती है।

चूँकि आज का अंश बताता है कि जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, उनकी मेहनत आशीष लाती है, तो बाइबल हमें उन आशीषों के बारे में क्या सिखाती है जो परमेश्वर उन लोगों को देता है जो उसका भय मानते हैं? यह अंश तीन खास आशीषों पर ज़ोर देता है।

पहला, परमेश्वर उन लोगों की मेहनत और आजीविका को आशीष देता है जो उसका भय मानते हैं।

भजन संहिता 128:2 को देखें: “तुम अपने हाथों की मेहनत का फल खाओगे; तुम धन्य होगे, और तुम्हारा भला होगा।” पिछले गुरुवार को सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, हमने व्यवस्थाविवरण 8:18 पर मनन किया: “अपने प्रभु परमेश्वर को याद रखो, क्योंकि वही तुम्हें धन कमाने की क्षमता देता है, और इस प्रकार उस वाचा को पक्का करता है, जिसकी उसने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाई थी, जैसा कि आज है।” यह पद मूसा द्वारा इस्राएलियों को दी गई चेतावनी का हिस्सा है, जिसमें उन्हें याद दिलाया गया था कि कनान देश—जिसमें वे प्रवेश करने वाले थे—एक “अच्छा देश” (पद 7) था और एक ऐसा देश था जहाँ उन्हें “किसी चीज़ की कमी नहीं होगी” (पद 9)। चेतावनी यह थी कि जब वे इस भरपूर ज़मीन में पहुँच जाएँगे और "खा-पीकर तृप्त हो जाएँगे, अच्छे घर बनाकर बस जाएँगे," और देखेंगे कि उनके "पशु-धन बढ़ गए हैं और सोना-चाँदी व अन्य संपत्ति भी बढ़ गई है" (पद 12-13), तो उन्हें अपने मन में घमंड नहीं आने देना चाहिए (पद 14)। मूसा ने उनसे आग्रह किया कि वे घमंडी न बनें और अपने परमेश्वर यहोवा को न भूलें (पद 14); उन्हें डर था कि ऐसा घमंड उन्हें परमेश्वर के उद्धार की कृपा—मिस्र से छुटकारा और जंगल में चालीस साल तक भोजन, सुरक्षा और मार्गदर्शन—को भुला देगा और वे परमेश्वर की बात मानना छोड़ देंगे। मूसा को यही चिंता थी। उन्हें डर था कि कनान में—जहाँ दूध और शहद की नदियाँ बहती थीं—पहुँचने और वहाँ की भरपूरता का आनंद लेने के बाद, इस्राएली उस परमेश्वर को भूल सकते हैं जिसने जंगल में उन्हें बचाया और रास्ता दिखाया था, और इसके बजाय अपनी समृद्धि का श्रेय अपनी ही काबिलियत को दे सकते हैं। संक्षेप में, मूसा को डर था... कि कहीं इस्राएल के लोग अपने मन में यह न कहने लगें, "मेरी ही ताकत और मेरे ही हाथों के ज़ोर से मुझे यह दौलत मिली है" (पद 17)। इसलिए, मूसा ने इस्राएलियों से कहा, "अपने परमेश्वर यहोवा को याद रखो, क्योंकि वही तुम्हें दौलत कमाने की ताकत देता है" (पद 18)। हमें इस बात पर विश्वास करना चाहिए कि परमेश्वर ही हमें दौलत कमाने की काबिलियत देता है। हमें यह याद रखना चाहिए कि हम अपनी काबिलियत या अपने हाथों की ताकत से दौलत हासिल नहीं करते। जब परमेश्वर दौलत कमाने की ताकत देता है, तभी हम उसे हासिल कर सकते हैं और भरपूर जीवन का आनंद ले सकते हैं। इसके अलावा, जब हम परमेश्वर की कृपा से ऐसी भरपूरता का आनंद लेते हैं, तो हमें स्वर्ग के राज्य—सच्ची भरपूरता की ज़मीन—की ओर देखना चाहिए और उसकी चाहत रखनी चाहिए। हमें कभी भी इस दुनिया को अपना असली घर नहीं समझना चाहिए, सिर्फ़ इसलिए कि हम यहाँ भौतिक सुख-सुविधाओं का आनंद ले रहे हैं। हमें इस दुनिया में परमेश्वर

द्वारा दी गई आशीषों (पद 16) का समझदारी से आनंद लेना चाहिए, और साथ ही अपनी नज़रें एक बेहतर देश पर टिकाए रखनी चाहिए।

आज के अंश—भजन संहिता 128:1-2—में भजनकार कहता है कि भौतिक संपत्ति या अपनी आजीविका के संबंध में आशीष पाने के लिए मनुष्य को परमेश्वर का भय मानना चाहिए। जैसा कि हमने भजन संहिता 112:1 पर अपने पिछले मनन में देखा, भजनकार कहता है: "हल्लेलूयाह! धन्य है वह मनुष्य जो प्रभु का भय मानता है, और उसकी आज्ञाओं में बहुत आनंद लेता है।" दूसरे शब्दों में, जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, वे उसकी आज्ञाओं में आनंद लेते हैं। जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, वे उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। और बाइबल हमें बताती है कि जो लोग परमेश्वर की आज्ञाओं में आनंद लेते हैं और उनका पालन करते हैं, वे धन्य हैं। उन्हें मिलने वाले आशीषों में से एक है भरपूर धन-संपत्ति। भजन संहिता 112:3 को देखें: "उसके घर में धन-संपत्ति होगी, और उसकी धार्मिकता सदा बनी रहेगी।" जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, उन्हें भौतिक आशीषें मिलती हैं। दूसरे शब्दों में, जो व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता है, वही वास्तव में धनी है। हो सकता है कि एक सच्चे धनी व्यक्ति के पास बहुत अधिक भौतिक संपत्ति न हो, फिर भी क्योंकि परमेश्वर ही उसकी विरासत है, वह हमेशा संतुष्ट महसूस करता है और दूसरों को दान देता है। इसके विपरीत, यदि किसी के पास बहुत धन है लेकिन संतोष की कमी है, तो वह व्यक्ति केवल लालच, व्यर्थ इच्छा और कंजूसी का गुलाम है—वास्तव में धनी नहीं (पार्क युन-सन)। क्योंकि जो विश्वासी परमेश्वर का भय मानते हैं, वे उसके वचन का पालन करते हैं (128:1) और लगन व ईमानदारी से मेहनत करते हैं (पद 2), इसलिए परमेश्वर उनके काम और आजीविका पर आशीष देता है।

दूसरी बात, परमेश्वर उन लोगों के परिवारों को आशीष देता है जो उसका भय मानते हैं।

भजन संहिता 128:3 पर विचार करें: "तेरी पत्नी तेरे घर के भीतर फलदायी बेल के समान होगी, और तेरे बच्चे तेरी मेज के चारों ओर जैतून के पौधों के समान होंगे।" जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, उनके परिवारों को परमेश्वर जो आशीष देता है, वे उनकी पत्नियाँ और बच्चे ही हैं। यहाँ, पत्नी—परमेश्वर की ओर से एक आशीष के रूप में—उस स्त्री को दर्शाती है जो अपने पति पर निर्भर रहती है और पत्नी के कर्तव्यों को पूरा

करते हुए, शांत और सौम्य स्वभाव के साथ घर के भीतर चुपचाप मेहनत करती है (पार्क युन-सन)। उसे "फलदायी बेल के समान" बताने का अर्थ है कि वह बहुत से बच्चों को जन्म देती है और उनका अच्छी तरह से पालन-पोषण करती है (पार्क युन-सन)। ऐसी पत्नी वास्तव में एक गुणवती और धन्य स्त्री होती है (नीतिवचन 31:10–31) (पार्क युन-सन)। परमेश्वर ऐसे लोगों को, जो उसका भय मानते हैं, ऐसी पत्नी आशीष के रूप में देता है। इसलिए, नीतिवचन (Proverbs) का लेखक नीतिवचन 18:22 में कहता है: "जिसने पत्नी पाई, उसने भली वस्तु पाई, और यहोवा से अनुग्रह पाया।" बेशक, यहाँ जिस "पत्नी" की बात हो रही है, वह एक "गुणवती स्त्री" (12:4), एक "समझदार पत्नी" (19:14), और "नेक चरित्र वाली स्त्री" (31:10) है। ऐसी स्त्री का पत्नी के रूप में मिलना परमेश्वर की ओर से एक आशीष है। हमें इस आशीष के प्रति कैसा रवैया अपनाना चाहिए? उपदेशक (Ecclesiastes) 9:9 कहता है: "अपनी उस पत्नी के साथ, जिससे तुम प्रेम करते हो, अपने व्यर्थ जीवन के उन सभी दिनों में खुशी से रहो जो उसने तुम्हें सूरज के नीचे दिए हैं, तुम्हारे व्यर्थ जीवन के सभी दिनों में; क्योंकि जीवन में और सूरज के नीचे की गई मेहनत में यही तुम्हारा हिस्सा है।" इसके अलावा, परमेश्वर उन लोगों को आशीष के रूप में बच्चे देता है जो उसका भय मानते हैं। आज का वचन, भजन संहिता (Psalm) 128:3, कहता है: "तुम्हारे बच्चे तुम्हारी मेज़ के चारों ओर जैतून के पौधों के समान होंगे।" जैतून के पेड़ बड़े, सुंदर और मज़बूत होते हैं। बच्चों की तुलना "जैतून के पौधों" से करना—जो परमेश्वर का भय मानने वालों को दी गई आशीष है—एक ऐसे खुशहाल और सामंजस्यपूर्ण पारिवारिक जीवन की तस्वीर पेश करता है जहाँ छोटे बच्चे खाने की मेज़ के चारों ओर एक साथ बैठते हैं (पार्क युन-सन)। सचमुच, यह परिवार का एक सुंदर दृश्य है। ऐसे सुंदर और परमेश्वर की आशीष वाले परिवार के सपने को साकार करने के लिए, हमें परमेश्वर का भय मानना होगा। जब हम ऐसा करेंगे, तो हम सच्चे दिल और कृतज्ञता के साथ भजन 305 का तीसरा पद गा सकेंगे: "सुबह-शाम मेहनत करते हुए, पूरा परिवार मिलकर काम करता है; खाने-पीने के लिए एक मेज़ के चारों ओर इकट्ठा होना—यही हमारा स्वर्ग है।"

अंत में, तीसरी बात यह है कि परमेश्वर कलीसिया पर—यानी उन लोगों की सभा पर जो उसका भय मानते हैं—आशीष बरसाता है। भजन संहिता 128:5 को देखें: "यहोवा तुम्हें सिय्योन से आशीष दे; तुम अपने जीवन के सभी दिनों में यरूशलेम की समृद्धि देखो..." भजनकार एक आशीष की घोषणा करता है और परमेश्वर से उन लोगों को आशीष देने के लिए कहता है जो उसका भय मानते हैं; यहाँ 'सिय्योन' शब्द कलीसिया के लिए

एक रूपक (metaphor) के रूप में इस्तेमाल किया गया है (पार्क युन-सन)। इसका मतलब है कि एक व्यक्ति को आशीष इसलिए मिलती है क्योंकि सिय्योन (कलीसिया) के सामूहिक समूह पर आशीष बरसाई गई है। दूसरे शब्दों में, विश्वास करने वाले इसलिए धन्य हैं क्योंकि जिस कलीसिया से वे जुड़े हैं, उसे सबसे पहले परमेश्वर का आशीर्वाद मिलता है। इसलिए, विश्वासियों के तौर पर, हमें कलीसिया के लिए प्रार्थना करनी चाहिए ताकि उसे परमेश्वर का आशीर्वाद मिले (पार्क युन-सन)। हमें कलीसिया की भलाई के लिए पूरे दिल से कोशिश करनी चाहिए, क्योंकि कलीसिया मसीह का शरीर है; जब कलीसिया को आशीर्वाद मिलता है, तो हमें भी आशीर्वाद मिलता है। परमेश्वर उन लोगों को आशीर्वाद देते हैं जो उनका आदर और भय मानते हैं—न केवल उनकी आजीविका और परिवारों को, बल्कि कलीसिया को भी (जो उनके विश्वास का समुदाय है)—और इस तरह उनके परिवारों और आजीविका तक भी आशीर्वाद पहुँचाते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि जैसे कलीसिया को परमेश्वर का आशीर्वाद मिले, वैसे ही आप और मैं "अपने बच्चों के बच्चों" को देख सकें (वचन 6)। मैं प्रार्थना करता हूँ कि जब हम परमेश्वर का भय मानें और हमारी कलीसियाओं, परिवारों और आजीविका को आशीर्वाद मिले, तो हम अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों को मसीह के शरीर यानी कलीसिया में तेज़ी से बढ़ते हुए देख सकें।

आज की दुनिया में, जहाँ इतने सारे लोग आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं, हमें कैसे जीना चाहिए? हमें परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए मेहनत करनी चाहिए (भजन संहिता 127), और परमेश्वर का भय मानते हुए काम करना चाहिए (भजन संहिता 128)। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हमें हमारी आजीविका, हमारे परिवारों और कलीसिया के लिए आशीर्वाद देने का वादा करते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप इन अनमोल आशीर्वादों का अनुभव करें।

“वे मुझ पर हावी नहीं हो पाए”

[भजन संहिता 129]

मुझे यकीन है कि आप सभी ने पिछले हफ़्ते वह खबर सुनी होगी। यह रेडोंडो बीच इलाके में एक चर्च में सेवा करने वाले पादरी की दुखद कहानी थी, जिनकी जान उनके ही बेटे ने ले ली; बेटे को मानसिक बीमारी थी और उसने पादरी के शरीर के निचले हिस्से में चाकू घोंप दिया था। शुरुआती रिपोर्ट पढ़ने और ऑनलाइन और जानकारी देखने के बाद मुझे बहुत दुख हुआ; ऐसा लगा कि वे अपनी सेवा के काम में पहले से ही बहुत मुश्किल और दर्दनाक दौर से गुज़र रहे थे, और फिर अपने ही बच्चे के हाथों उनका इतना दुखद अंत हुआ। ऐसी खबरें सुनकर आपको कैसा लगता है? हम सचमुच ऐसी दुनिया में रहते हैं जो दुख, मुश्किलों, चिंताओं और जानलेवा त्रासदियों से भरी है। यह खबर सुनने से पहले, शुक्रवार सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, मैं व्यवस्थाविवरण 31 पर मनन कर रहा था—खासकर उन आखिरी शब्दों पर जो मूसा ने इस्राएल के लोगों, अपने उत्तराधिकारी यहोशू, लेवीय याजकों और इस्राएल के सभी बुज़ुर्गों से कहे थे, जब वे अपनी मौत का सामना कर रहे थे। उस हिस्से में, मूसा ने लोगों और यहोशू को मज़बूत और साहसी बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया, और यह हिम्मत इस बात पर आधारित थी कि परमेश्वर उनके साथ था। खासकर, व्यवस्थाविवरण 31:6 के दूसरे हिस्से में लिखा है कि मूसा ने लोगों से कहा, “क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे साथ चलता है; वह तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा और न ही त्यागेगा।” इसके बाद, उन्होंने प्रभु की उपस्थिति में परमेश्वर की आवाज़ सुनी। परमेश्वर ने मूसा को बताया कि जब इस्राएली कनान की समृद्ध भूमि में—एक ऐसी भूमि जहाँ दूध और शहद बहता था—प्रवेश करेंगे और पेट भरकर खा-पीकर समृद्ध हो जाएँगे, तो वे परमेश्वर को त्याग देंगे, उसके साथ किए गए वाचा को तोड़ देंगे और मूर्तिपूजा का पाप करेंगे (पद 20)। उस समय, इस्राएल के लोगों के खिलाफ परमेश्वर का क्रोध भड़क उठा; उसने उनसे अपना मुँह छिपा लिया और

घोषणा की कि उन पर “बहुत सी विपत्तियाँ और मुसीबतें” आएँगी (पद 17, 21)। उसने भविष्यवाणी की कि गैर-यहूदी राष्ट्र उन्हें निगल जाएँगे (पद 17)। परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तभी इस्राएल के लोग कहेंगे, “क्या इसलिए ये विपत्तियाँ हम पर नहीं आई हैं क्योंकि हमारा परमेश्वर हमारे बीच नहीं है?” (पद 17)। परमेश्वर का इस्राएल के लोगों के साथ न रहने और उनसे अपना मुँह छिपाने का कारण उनके पाप थे। नतीजतन, उन्हें अनिवार्य रूप से आपदा और मुसीबत का सामना करना पड़ा। अपने पापों के कारण, इज़राइल के लोगों को परमेश्वर के अनुशासन का सामना करना पड़ा और गैर-यहूदी राष्ट्रों के हाथों उत्पीड़न सहना पड़ा।

यही आज के पाठ, भजन संहिता 129 की पृष्ठभूमि है। मिस्र में अपने समय से ही इज़राइल के लोगों को शक्तिशाली गैर-यहूदी राष्ट्रों द्वारा सताया जाता रहा है। वास्तव में, यही इज़राइल का इतिहास है। राष्ट्र की स्थापना के शुरुआती दिनों से ही, इज़राइल को आस-पास के गैर-यहूदी राष्ट्रों से उत्पीड़न का सामना करना पड़ा है—एक ऐसी स्थिति जो आज भी बनी हुई है। इसे "चुने हुए लोगों के उत्पीड़न का इतिहास" कहा जाता है (पार्क युन-सन)। उत्पीड़न के इस इतिहास के बीच, भजनकार भजन संहिता 129 के दूसरे पद में घोषणा करता है: "उन्होंने मेरी जवानी से ही मुझे कई बार सताया है, फिर भी वे मुझ पर हावी नहीं हो पाए हैं।" इज़राइल का इतिहास शत्रुतापूर्ण गैर-यहूदी राष्ट्रों द्वारा बार-बार सताए जाने का रहा है—और आज भी है। पुराने नियम के समय में, इज़राइल के लोगों को गैर-यहूदी राष्ट्रों के आक्रमणों और उत्पीड़न के कारण बार-बार कष्ट सहना पड़ा—जिसकी शुरुआत मिस्र (मूसा के समय में) से हुई और जिसमें मोआब, एदोम, मिद्यान, पलिश्ती, अश्शूर, बेबीलोन और रोम शामिल थे। आज क्या स्थिति है? हालाँकि इज़राइल अब परमाणु हथियारों वाला एक शक्तिशाली राष्ट्र है, फिर भी फिलिस्तीनियों, लेबनान, सीरिया, मिस्र और ईरान जैसे पड़ोसियों के साथ संघर्ष के बीच उसे जो भारी कष्ट सहना पड़ता है, उस पर विचार करें। इस प्रकार, भजन संहिता 129 के पहले और दूसरे पद में—जो आज हमारा पाठ है—भजनकार बार-बार घोषणा करता है: "उन्होंने मेरी जवानी से ही मुझे कई बार सताया है।" हमारे लिए—परमेश्वर के पवित्र लोगों, कलीसिया जो मसीह की देह है—यहाँ सबक यह है कि हमें किसी भी समय दुश्मनों से उत्पीड़न का सामना करना पड़ सकता है।

हम इस सच्चाई को न केवल इज़राइल के इतिहास में बल्कि कलीसिया के इतिहास में भी देख सकते हैं। एक उल्लेखनीय उदाहरण रोमन सम्राट नीरो (64 ईस्वी) द्वारा ईसाइयों का उत्पीड़न है, जो पहला बड़ा उत्पीड़न था। 64 ईस्वी की गर्मियों में—प्रेरितों के युग के दौरान—साम्राज्य की राजधानी रोम में एक भयानक आग लग गई; छह दिनों तक भयंकर लपटें उठती रहीं, जिससे शहर के चौदह जिलों में से दस पूरी तरह बर्बाद हो गए। लोगों के बीच यह अफ़वाह फैल गई कि सम्राट नीरो ने शहर को अपनी सोच के अनुसार फिर से बनाने के लिए खुद ही आग लगाई थी। ये अफ़वाहें बढ़ती गईं और आखिरकार यह कहानी बन गईं कि जब रोम जल रहा था, तब सम्राट नीरो ने 'लायर' (एक तरह का वाद्य यंत्र) बजाया और गाना गाया। जब जनता का गुस्सा उनके ख़िलाफ़ हो गया, तो नीरो ने अपनी मुश्किल से बचने के लिए किसी और को दोषी ठहराने की कोशिश की और उन्होंने ईसाइयों को चुना। उन्होंने ईसाइयों पर रोम में आग लगाने का आरोप लगाया और उन पर ज़ुल्म ढाए। टैसिटस ने नीरो के शासनकाल में ईसाइयों पर हुए ज़ुल्मों का काफ़ी विस्तार से वर्णन किया है: "ईसाइयों को मारने से पहले, नीरो ने उनका इस्तेमाल लोगों के मनोरंजन के लिए किया। कुछ विश्वासियों को जानवरों की खाल में लपेट दिया गया और कुत्तों से उन्हें फाड़ डाला गया। दूसरों को सूली पर चढ़ा दिया गया। कुछ और लोगों को रात में रोशनी के लिए मशाल की तरह जला दिया गया। नीरो ने एम्फीथिएटर में ये तमाशे दिखाए, जिसमें वह रथ चलाने वाले की तरह कपड़े पहनकर अखाड़े में रथ दौड़ाता था। नतीजतन, नागरिकों को उन लोगों पर दया आने लगी जिन्हें सज़ा मिलनी चाहिए थी, क्योंकि उन्हें एहसास हुआ कि वे जनता की भलाई के लिए नहीं, बल्कि एक आदमी की क्रूरता को संतुष्ट करने के लिए मर रहे थे" (इंटरनेट)। नीरो के ज़ुल्मों के अलावा, चर्च के इतिहास में ज़ुल्म की अन्य बड़ी घटनाएँ भी दर्ज हैं, जैसे सम्राट डोमिटियन (81–96 ईस्वी) के समय हुआ ज़ुल्म—जो दूसरा ज़ुल्म था—और 303 ईस्वी में सम्राट डायोक्लेटियन (284–305) के समय हुआ ज़ुल्म। डायोक्लेटियन के समय हुए ज़ुल्म को सबसे बुरा माना जाता है; इस दौरान चर्चों को नष्ट कर दिया गया, बाइबिल जला दी गईं, ईसाइयों के अधिकार छीन लिए गए और ईसाइयों को मूर्तिपूजक देवताओं के सामने बलि के तौर पर भी चढ़ाया गया (इंटरनेट)। आखिरकार, परमेश्वर के लोगों को—चाहे वे भजनकार के समय के हों, शुरुआती चर्च के हों, आज के समय के हों, या प्रभु की वापसी तक के भविष्य के हों—लगातार मुसीबतों और ज़ुल्मों का सामना करना पड़ेगा।

तो फिर, इज़राइल के लोगों को अपने दुश्मनों के हाथों किस हद तक ज़ुल्म सहना पड़ा? भजन संहिता 129:3 में, जो आज हमारे सामने है, भजनकार इसका वर्णन इस प्रकार करता है: "हल चलाने वालों ने मेरी पीठ पर

हल चलाया है; उन्होंने लंबी-लंबी क्यारियां बनाई हैं।" यह एक रूपक है जो बताता है कि जिन लोगों ने इज़राइल पर ज़ुल्म किया, उन्होंने राष्ट्र को बर्बाद कर दिया और उन पर बेरहमी से अत्याचार किया, ठीक वैसे ही जैसे कोई किसान खेत जोतता है (पार्क युन-सन)। रॉबर्ट्स के अनुसार, फ़िलिस्तीन में सताए हुए व्यक्ति का अपने सताने वालों के बारे में यह कहना आम बात थी कि "उन्होंने मुझ पर हल चलाया है" (पार्क युन-सन)। संक्षेप में, इसका अर्थ यह है कि इज़राइल के लोग अपने दुश्मनों द्वारा किए गए अत्याचारों के कारण घोर दुर्दशा की स्थिति में पहुँच गए थे (पार्क युन-सन)। फिर भी, मुख्य बात यह है कि परमेश्वर ने इज़राइल के लोगों को इस घोर दुर्दशा से बचाया। आयत 4 को देखें: "यहोवा धर्मी है; उसने दुष्टों की रस्सियों को काट डाला है।" उन रस्सियों को काटकर जिनका उपयोग इज़राइल के दुश्मन उन्हें दबाने के लिए करते थे, परमेश्वर ने अपने प्रिय लोगों को उनके विरोधियों के हाथों से बचाया। ठीक वैसे ही जैसे कोई पक्षी शिकारी के जाल से बच निकलता है (124:7), परमेश्वर ने उन रस्सियों को काट दिया जो ऐसे जाल का काम करती थीं और इज़राइल के लोगों को बचाया। इस प्रकार, भजनकार विश्वास के साथ स्वीकार करता है: "मेरी जवानी के दिनों से ही उन्होंने मुझे कई बार सताया है, फिर भी वे मुझ पर हावी नहीं हो पाए हैं" (129:2)। दूसरे शब्दों में, हालाँकि इज़राइल के दुश्मनों ने उन्हें बार-बार सताया, लेकिन परमेश्वर ने उन दुश्मनों को हर बार असफल कर दिया, और इस तरह इज़राइल के लोगों को जीत दिलाई। जीत के इसी अनुभव और साथ मिले भरोसे के साथ भजनकार ने आज के पाठ में दिया गया गीत रचा—एक ऐसा गीत जो मंदिर की ओर जाते समय गाया जाता था। इसी तरह, जब हम प्रभु के घर आते हैं, तो हमें जीत के भरोसे और दुनिया की आध्यात्मिक लड़ाइयों के बीच परमेश्वर की मदद से मिली जीतों की याद के साथ आना चाहिए।

छुटकारे की इस कृपा पर विचार करते हुए, भजनकार ने प्रार्थना की: "सिय्योन से नफ़रत करने वाले सभी लोग शर्मिंदा हों और पीछे हट जाएँ; वे घर की छतों पर उगी घास की तरह हों, जो बढ़ने से पहले ही सूख जाती है" (129:5-6)। उसने धर्मी परमेश्वर से विनती की कि इज़राइल से नफ़रत करने वाले दुश्मन शर्मिंदा हों और न्याय का सामना करें। "घर की छतों पर उगी घास की तरह" (आयत 6) वाक्यांश का यही अर्थ है। छत पर उगी घास की जड़ें गहरी नहीं होतीं; वह थोड़े समय के लिए बढ़ती है लेकिन जल्द ही सूख जाती है (पार्क युन-सन)। भजनकार ने प्रार्थना की कि इज़राइल के दुश्मनों का भी ऐसा ही हश्र हो—कि वे उस घास की तरह गायब हो जाएँ जो एक पल के लिए उगती है और फिर जल्दी ही सूख जाती है। इसके अलावा,

उन्होंने कहा कि कोई भी इज़राइल के दुश्मनों को आशीर्वाद नहीं देगा—जो असल में परमेश्वर के दुश्मन थे (वचन 8)। इसका कारण यह है कि वे परमेश्वर के आशीर्वाद के दायरे से बाहर हैं (पार्क युन-सन)।

2 तीमुथियुस 3:12 में कहा गया है: "सच तो यह है कि जो कोई भी मसीह यीशु में परमेश्वर के अनुसार जीवन जीना चाहता है, उसे सताया जाएगा।" विश्वासियों को इस दुनिया में बहुत सताया जाता है। भले ही बहुत दुख, कठिनाई और तकलीफ हो, आइए हम विश्वास के साथ आगे बढ़ें और परमेश्वर से मिलने वाले उद्धार के भरोसे और जीत के पक्के यकीन को मज़बूती से थामे रहें। आइए हम यूहन्ना 16:33 के आखिरी हिस्से के शब्दों को थामे रखें: "...इस दुनिया में तुम्हें मुसीबत का सामना करना पड़ेगा। लेकिन हिम्मत रखो! मैंने दुनिया पर जीत हासिल कर ली है..."

इंतज़ार करना

[भजन संहिता 130]

जब मैं खुद को परखता हूँ, तो मुझे अपनी एक कमी "बेसब्री" नज़र आती है। कभी-कभी मेरी बेसब्री की वजह से मेरे शब्दों और कामों से दूसरों को तकलीफ़ या चोट पहुँचती है। मुझे यह भी लगता है कि बेसब्री के कारण मैं काम बिगाड़ देता हूँ। ऐसे में, परमेश्वर ने मुझे 2 तीमुथियुस 3:4 पर मनन करने के लिए प्रेरित किया—खासकर उस हिस्से पर जिसमें बताया गया है कि मुश्किलों भरे "आखिरी दिनों" (पद 1) में लोग "जल्दबाज़" (बेसब्र) होंगे। हम बेसब्र क्यों हो जाते हैं? ऐसा तब होता है जब हम खुद को यकीन दिला लेते हैं कि हम और इंतज़ार नहीं कर सकते और साथ ही सब्र करना छोड़ देते हैं। जब ऐसा होता है, तो हम अपनी मनमर्ज़ी से काम करते हैं। ऐसी बेसब्री हमें परमेश्वर की इच्छा से आगे भागने पर मजबूर करती है; उसकी योजना का इंतज़ार न करके, हम गलत योजनाएँ और तरीके अपनाते हैं, जिसका नतीजा आखिर में बहुत बुरा होता है। बेसब्री हमें दुनियावी और शारीरिक योजनाएँ और काम चुनने के लिए उकसाती है। अब्राहम और सारा इसका एक बेहतरीन उदाहरण हैं। हालाँकि उन्हें परमेश्वर का वादा मिला था, फिर भी वे बेसब्र हो गए और विश्वास का सब्र छोड़ दिया; नतीजतन, साराई ने अपने पति अब्राम से अपनी मिस्री दासी हाजरा के साथ संबंध बनाने को कहा (उत्पत्ति 16:1–2)। अब्राम ने यह सुझाव मान लिया, हाजरा के साथ संबंध बनाए और इस्माएल नाम के बेटे का पिता बना। फिर भी, जैसा कि हम जानते हैं, इस्माएल वह वादा किया हुआ वंश नहीं था; इसहाक था। इस तरह, बेसब्री का नतीजा विश्वास और सब्र को छोड़ देने जैसा भयानक होता है। शायद इसीलिए "इंतज़ार करना" एक गुण माना जाता है। इंतज़ार करना हमारे विश्वास के जीवन का एक ज़रूरी हिस्सा है। भजन संहिता 62:1 और 5 में, जिस पर हम पहले ही मनन कर चुके हैं, बाइबल हमसे कहती है: "मेरी आत्मा को केवल परमेश्वर में ही शांति मिलती है; मेरा उद्धार उसी से होता है... हे मेरी आत्मा, केवल परमेश्वर में ही शांति पा; मेरी आशा उसी से है।" इन आयतों के ज़रिए हमने सीखा कि हमें पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर रहना चाहिए—वही हमारा उद्धार, हमारी आशा, हमारी चट्टान और हमारा गढ़ है।

वजह यह है कि परमेश्वर पर चुपचाप और पूरी तरह से भरोसा करना ही हमारी ताकत बन जाता है (यशायाह 30:15)। हमें चुपचाप उसकी ओर देखते हुए उसके उद्धार का इंतज़ार करना चाहिए। उद्धार देने वाला परमेश्वर निश्चित रूप से हमें छुड़ाएगा। आज, भजन 130:6 में, भजनकार अपने इंतज़ार को इस तरह बताते हैं: "मेरी आत्मा प्रभु का इंतज़ार करती है, जैसे पहरेदार सुबह का इंतज़ार करते हैं—जैसे पहरेदार सुबह का इंतज़ार करते हैं।" भजनकार अपने इंतज़ार की तुलना उन पहरेदारों से करते हैं जो सुबह होने का इंतज़ार करते हैं। इस तुलना में, वे मानते हैं कि उनकी आत्मा प्रभु का इंतज़ार पहरेदारों के सुबह के इंतज़ार से भी ज़्यादा करती है। ये "पहरेदार" कौन हैं? वे लोग जो शहर की दीवारों पर रात भर पहरा देते हैं, ताकि अंदर के लोगों की रक्षा कर सकें और संभावित दुश्मन के हमलों के प्रति सतर्क और सावधान रहें। दूसरे शब्दों में, वे ऐसे रक्षक हैं जो दुश्मन के हमलों पर नज़र रखने के लिए अपनी नींद छोड़ देते हैं। ये पहरेदार सबसे ज़्यादा किस चीज़ का इंतज़ार करते हैं? वह है "सुबह।" वे बेसब्री से सुबह होने का इंतज़ार करते हैं (पार्क युन-सन)। इसी गहरी उत्सुकता के साथ भजनकार ने प्रभु का इंतज़ार किया—और इंतज़ार करते रहे। भजनकार प्रभु का इंतज़ार इतनी उत्सुकता से कर रहे थे जो सुबह का इंतज़ार करने वाले पहरेदारों से भी कहीं ज़्यादा थी। इसी गहरी उत्सुकता के बीच, मंदिर जाते समय भजनकार ने आज के अंश के शब्द गाए।

तो, भजनकार के इतने गहरे इंतज़ार का मकसद क्या था? वह था परमेश्वर का वचन। भजन 130 की आयत 5 देखें: "मैं प्रभु का इंतज़ार करता हूँ, मेरी आत्मा इंतज़ार करती है, और मुझे उनके वचन पर भरोसा है।" परमेश्वर का वह वचन जिसके लिए भजनकार इतनी बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे, वह यह भरोसा था कि परमेश्वर अपने बताए गए वचन के अनुसार माफ़ी और उद्धार देंगे (पार्क युन-सन)। इससे हम यह अंदाज़ा लगा सकते हैं कि भजनकार अपने पापों के लिए परमेश्वर की ओर से मिली सज़ा या अनुशासन के कारण एक दर्दनाक स्थिति से गुज़र रहे थे। उस दर्दनाक स्थिति का स्वरूप क्या था? आयत 1 देखें: "गहराई से मैंने तुझे पुकारा है, हे प्रभु।" पाप के कारण भजनकार जिस "गहराई" में फँसे थे, वह घोर संकट को दर्शाती है—एक ऐसी दम घुटने वाली स्थिति जो गहरे पानी में डूबने जैसी होती है (पार्क युन-सन)। योना की तरह, जो अपनी नाफ़रमानी के कारण गहराई में—समुद्र की तलहटी में एक बड़ी मछली के पेट में—फँस गए थे, योना और भजनकार दोनों ने गहरी चाहत के साथ प्रभु की ओर देखा और सच्ची प्रार्थनाएँ कीं। भजन संहिता 130

की आयत 1 और 2 को देखिए: "हे यहोवा, मैंने गहरे संकट में तुझसे पुकार की है; हे प्रभु, मेरी आवाज़ सुन! मेरी विनती की आवाज़ पर ध्यान दे।" इस सच्ची प्रार्थना के बीच, भजनकार को एहसास हुआ कि अगर प्रभु अतीत से लेकर वर्तमान तक किए गए सभी पापों का हिसाब रखें—यानी उन्हें नज़रअंदाज़ न करें—और सज़ा दें, तो कोई भी उनके सामने खड़ा नहीं हो पाएगा। इसलिए, वह पूछता है: "हे यहोवा, यदि तू पापों का हिसाब रखे, तो हे प्रभु, कौन खड़ा रह पाएगा?" (आयत 3)। अगर परमेश्वर हमारे पापों को माफ़ किए बिना हर पाप—अतीत, वर्तमान और भविष्य—का रिकॉर्ड रखें, तो इस दुनिया में एक भी व्यक्ति पवित्र प्रभु के सामने खड़े होने की हिम्मत नहीं करेगा। हालाँकि एक पापी पवित्र प्रभु के सामने खड़े होने की हिम्मत नहीं कर सकता, फिर भी भजनकार को परमेश्वर की क्षमा पर विश्वास था (आयत 4) और उसने विनम्रता और श्रद्धा भरे दिल से (आयत 4) अपने पापों की माफ़ी के लिए सच्ची प्रार्थना की। फिर उसने परमेश्वर के क्षमा के वचन का इंतज़ार किया। उसने कितनी बेसब्री से उसका इंतज़ार किया होगा! जब पाप करने और परमेश्वर की सज़ा के कारण गहरी निराशा में डूबने के बाद, हम उनकी ओर देखते हैं और माफ़ी के लिए सच्ची प्रार्थना करते हैं, तो हम यह सुनने के लिए तरसते हैं कि वे कहें: "मैंने तुम्हारे सभी पाप मिटा दिए हैं; मुझे वे अब याद नहीं हैं।" अगर हम परमेश्वर की वह आवाज़ सुनें, तो क्या हम आज़ादी और मुक्ति की खुशी में उछलेंगे-कूदेंगे नहीं, और उनकी स्तुति और आराधना नहीं करेंगे?

माफ़ी के लिए सच्ची प्रार्थना करने के बाद, भजनकार ने परमेश्वर के सामने विश्वास के साथ चुपचाप इंतज़ार किया और उनके क्षमा के वचन को सुनने की इच्छा की। ऐसा करते हुए, उसने इंतज़ार किया और साथ ही परमेश्वर से विनती की कि वे उसे—उस क्षमा के सबूत के तौर पर—उसके पापों के कारण पैदा हुई दर्दनाक स्थिति से बचाएँ; उसने गहरे संकट से उन्हें पुकारा। दूसरे शब्दों में, उसने परमेश्वर की बचाने वाली कृपा के लिए प्रार्थना की, उम्मीद की और इंतज़ार किया। भजनकार परमेश्वर की बचाने वाली कृपा के लिए प्रार्थना करने, उम्मीद करने और इंतज़ार करने में कैसे सक्षम हुआ? मुझे इसका जवाब आज के पाठ की आयत 7 और 8 में मिला: "हे इस्राएल, यहोवा पर आशा रख; क्योंकि यहोवा के साथ अटूट प्रेम और भरपूर छुटकारा है। और वह इस्राएल को उसके सभी पापों से छुटकारा दिलाएगा।" भजनकार को परमेश्वर के अटूट प्रेम और भरपूर छुटकारे पर भरोसा था, इसलिए वह पापों की क्षमा और परमेश्वर की बचाने वाली कृपा के लिए प्रार्थना कर सका, उम्मीद रख सका और इंतज़ार कर सका। क्या आप सच में परमेश्वर के अटूट प्रेम और

भरपूर छुटकारे पर विश्वास करते हैं? क्या आप मानते हैं कि परमेश्वर ही वह है जो आपको आपके सभी पापों से छुटकारा दिलाता है?

क्या यहाँ कोई ऐसा है जो भजनकार की तरह खुद को गहरी मुसीबत में पाता है? क्या आप बहुत बड़ी मुसीबत का सामना कर रहे हैं, और आपको ऐसा लग रहा है जैसे आप पानी में गिर गए हैं और गहरे डूबते जा रहे हैं? और क्या आपको पता है कि आप उस गहरी मुसीबत में इसलिए हैं क्योंकि आपने पाप किए हैं? अगर ऐसा है, तो आइए हम भी भजनकार की तरह विश्वास के साथ परमेश्वर के अटूट प्रेम और भरपूर छुटकारे की ओर देखें, और सच्चे दिल से पापों की क्षमा और परमेश्वर की बचाने वाली कृपा के लिए प्रार्थना करें, उम्मीद रखें और इंतज़ार करें। आइए हम प्रभु का इंतज़ार उतनी ही बेसब्री से करें जितनी बेसब्री से पहरेदार सुबह का इंतज़ार करते हैं। परमेश्वर ज़रूर आपके सभी पापों को माफ़ करेगा और आपको उस बड़ी मुसीबत से बाहर निकालेगा जिसमें आप फँसे हुए हैं।

अपनी आत्मा में शांति और ठहराव कैसे लाएँ

[भजन संहिता 131]

मुझे प्राइमरी स्कूल में सीखे गए एक गाने की थोड़ी-बहुत याद है: "प्लॉप, प्लॉप, चलो एक पत्थर फेंकें; चलो मेरी बहन को पता चले बिना एक पत्थर फेंकें..." ऐसा लगता है कि मैंने वह गाना तो मन लगाकर सीखा, लेकिन असल में यह नहीं समझा कि पत्थर क्यों फेंकना था। बच्चों का यह गाना मुझे इसलिए याद आया क्योंकि इसने मुझे भजन संहिता 131:1–3 के उस हिस्से को समझने में मदद की, जिसे मैंने आज पढ़ा। मैंने सोचा कि जब मेरी आत्मा शांत होती है, तो किस तरह का "पत्थर" उस शांति और ठहराव को तोड़ सकता है। ऐसे कई "पत्थर" हो सकते हैं। मुश्किल हालात, दूसरों की आलोचना, बिगड़े हुए रिश्ते, पैसों की तंगी, तनाव—अनगिनत तरह के "पत्थर" हमारी आत्मा की शांति को भंग कर सकते हैं। हालाँकि, मेरा मानना है कि सबसे खतरनाक "पत्थर" हमारे अंदर ही होता है। दूसरे शब्दों में, हमारे अंदर एक ऐसा "पत्थर" है जो परमेश्वर द्वारा दी गई आत्मिक शांति और ठहराव को खत्म कर देता है। वह "पत्थर" और कुछ नहीं, बल्कि "अहंकार" है (पद 1)। दूसरे तरीके से कहें तो, दाऊद "ऊँची नज़र" रखने की बात कर रहा है। ऊँची नज़र वाला व्यक्ति वह होता है जो "बड़ी-बड़ी बातों और ऐसी चीज़ों में उलझा रहता है जो उसकी समझ से बाहर हैं" (पद 1)। ऐसा व्यक्ति अपनी असलियत भूल जाता है, अपनी पहुँच से बाहर की बातों के बारे में सोचता है और उन पर अपनी ऊर्जा खर्च करता है। उदाहरण के लिए, सोचिए किसी को प्रभु से एक टैलेंट (योग्यता) मिला, लेकिन ऊँची नज़र होने के कारण वह लगातार उनसे जलता और चिढ़ता है जिन्हें दो या पाँच टैलेंट मिले हैं, और उनके हिस्से का काम करने की कोशिश करता है। ठीक उसी समय हम अपनी आत्मा की शांति और ठहराव खो देते हैं।

एक पास्टर के तौर पर, एक बार चर्च में ईसाई अखबार पढ़ते हुए मैंने कुछ समय के लिए अपनी आत्मा की शांति और ठहराव खो दिया था। कई जाने-माने पास्टरों और उनके कामों के बारे में लेख और तस्वीरें देखकर

मुझे लगा कि मेरी अंदरूनी शांति भंग हो रही है। सोचने पर मुझे एहसास हुआ कि ऐसा इसलिए हुआ—जैसा कि भजन संहिता 131 में बताया गया है—क्योंकि मैंने अपनी नज़रें बहुत ऊँची कर ली थीं। दूसरे शब्दों में, मेरे दिल में अहंकार आ गया था। इसीलिए मैं तुलना करने लगा और खुद को असलियत से कहीं ज़्यादा बड़ा समझने लगा। यह "अहंकार"—जो हमें हमारी असलियत भुला देता है और हमारे मन में अपनी छवि को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाता है—शैतान का एक खतरनाक हथियार है; यह हमें परमेश्वर के सामने अपनी असलियत देखने से रोकता है, खासकर तब जब इसमें मुकाबले की भावना जुड़ जाती है। इसलिए, मैंने कुछ कदम उठाए: मैंने अखबार पढ़ना बंद कर दिया और उन पादरियों के लिए भलाई की बातें कहने का संकल्प लिया।

इसलिए, अपनी आत्मा में शांति और सुकून लाने के लिए, सबसे पहले हमें "अहंकार" से लड़ना होगा। हमें "तुलना की कक्षा" में नहीं जाना चाहिए जहाँ हम खुद को दूसरों से तौलते हैं। हमें ऐसी "बड़ी या अद्भुत चीजों" को पाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए जो हमारी पहुँच से बाहर हों (पद 1)। हमें बस उन हुनर को पहचानना है जो परमेश्वर ने हमें दिए हैं और ईमानदारी व नम्रता से अपने कर्तव्य पूरे करने हैं। हमें ऐसे पदों, सफलताओं या कामों की लालसा नहीं करनी चाहिए जो हमारी पहुँच से बाहर हों। हमें परमेश्वर के प्रेम की नज़र से खुद को स्वीकार करना और प्यार करना चाहिए—वह प्रेम जो हमें वैसा ही अपनाता है जैसे हम हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम "खुद को उससे ज़्यादा बड़ा नहीं समझेंगे जितना हमें समझना चाहिए, बल्कि सही समझ के साथ खुद को देखेंगे, उस विश्वास के अनुसार जो परमेश्वर ने हममें से हर एक को दिया है" (रोमियों 12:3)।

"अहंकार" से लड़ते हुए, हमें साथ ही साथ अपनी नज़रें परमेश्वर पर टिकानी चाहिए (भजन संहिता 131:3)। ऐसा करने से हमें अपनी आत्मा के लिए शांति और सुकून मिलेगा। दाऊद हमें सिखाते हैं कि जब हम परमेश्वर की ओर देखते हैं, तो हमारे दिल में "माँ का दूध छोड़ चुके बच्चे" जैसा भाव होना चाहिए। विद्वान बताते हैं कि पुराने नियम के समय में हिब्रू माताएँ आमतौर पर अपने बच्चों का दूध दो या तीन साल की उम्र में छुड़ाती थीं। इससे मुझे अपनी दूसरी बेटी, ये-उन (एक साल की) और पहली बेटी, ये-री (तीन साल की) के बीच की अवस्था याद आती है। खासकर ये-उन के बारे में सोचते हुए, दूध छोड़ चुके बच्चे का दिल उस शांतिपूर्ण भाव में सबसे अच्छी तरह झलकता है जो बच्चे के चेहरे पर तब होता है जब वह अपनी माँ की गोद में सो जाता

है... मैं एक गहरी शांति और सुकून महसूस कर सकता था (पद 2)। उस पल, ये-उन ने इशारा किया कि उसे न तो अपने पिता की ज़रूरत है, न खाने की, और न ही खिलौनों की; उसे बस अपनी माँ की ज़रूरत थी। जब मैं यीउन को अपनी माँ की गोद में शांति से सोते हुए सोचता हूँ, तो आज के वचन—खासकर आयत 2—मेरे दिल को गहराई से छूते हैं। दाऊद ने घमंड को दूर रखा और दूध छुड़ाए हुए बच्चे के दिल के साथ प्रभु के करीब आया। उसने परमेश्वर पिता की गोद में समाने की चाहत में यह "ऊपर जाने का गीत" (Song of Ascents) रचा था। इसी तरह, जब हम रविवार की आराधना के लिए पवित्र स्थान पर जाते हैं, तो हमें परमेश्वर पिता की गोद में समाने की चाहत के साथ जाना चाहिए। उस प्यार भरी गोद में सच्ची शांति पाने के लिए, हमें अपने दिलों की जाँच करनी चाहिए कि क्या उनमें दूध छुड़ाए हुए बच्चे जैसी विनम्रता है। अगर हमारे मन में कोई घमंड है, तो हमें पछतावा करना चाहिए और पवित्र आत्मा को हमें परमेश्वर की कृपा के सिंहासन तक ले जाने देना चाहिए। उस सिंहासन के सामने, हमें अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर की स्तुति और आराधना करनी चाहिए और अपनी आत्मा को उसकी गोद में विश्राम करने देना चाहिए। तभी हमारी आत्मा सच्ची शांति और सुकून का अनुभव कर पाएगी।

दूध छुड़ाए हुए बच्चे जैसा दिल

[भजन संहिता 131]

हम जानते हैं कि परमेश्वर बाहरी दिखावे के बजाय दिल को देखता है (1 शमूएल 16:7)। यह सच्चाई बाइबल की उस घटना पर आधारित है जब परमेश्वर ने राजा शाऊल को अस्वीकार कर दिया और शमूएल को दाऊद के पिता यिशै के घर एक नए राजा का अभिषेक करने के लिए भेजा (अध्याय 16)। यिशै के घर पहुँचने और उस राजा को खोजने पर जिसका अभिषेक परमेश्वर करना चाहता था, शमूएल ने यिशै के आठ बेटों में सबसे बड़े एलीआब को देखा और मन ही मन सोचा, "निश्चित रूप से प्रभु का चुना हुआ व्यक्ति यहाँ प्रभु के सामने खड़ा है" (पद 6)। उसी क्षण, परमेश्वर ने शमूएल से कहा: "उसके रूप-रंग या उसकी लंबाई पर ध्यान न दे... प्रभु उन चीज़ों को नहीं देखता जिन्हें लोग देखते हैं। लोग बाहरी दिखावे को देखते हैं, लेकिन प्रभु दिल को देखता है" (पद 7)। इस बात पर विचार करते हुए कि जहाँ इंसान बाहरी दिखावे को देखता है, वहीं परमेश्वर दिल को देखता है, मुझे याद आता है कि विश्वासियों के तौर पर, हमें अपने बाहरी धार्मिक दिखावे के बजाय उस "दिल" पर ध्यान देना चाहिए—जिसे परमेश्वर देखता है। तो, हमारा दिल कैसा होना चाहिए? मुझे इस सवाल का जवाब दाऊद के दिल में मिलता है, जो परमेश्वर के मन के अनुसार चलने वाला व्यक्ति था (प्रेरितों के काम 13:22)। संक्षेप में, दाऊद का दिल—जो परमेश्वर के मन के अनुसार था—"दूध छुड़ाए हुए बच्चे जैसा" था (भजन संहिता 131:2)।

भजन संहिता 131:2 को देखें: "निश्चित रूप से मैंने अपनी आत्मा को शांत और स्थिर किया है, जैसे माँ के साथ दूध छुड़ाया हुआ बच्चा; मेरे भीतर मेरी आत्मा दूध छुड़ाए हुए बच्चे जैसी है।" "मेरी आत्मा दूध छुड़ाए हुए बच्चे जैसी है" वाक्यांश को समझने के लिए, हमें हिब्रू संस्कृति में बच्चे के विकास के चरणों पर विचार करने की आवश्यकता है। विकास के इन चरणों को आम तौर पर पाँच चरणों में वर्गीकृत किया गया है। (1)

पहला चरण "दूध पीने वाले" शिशु का है; यह अवधि जन्म से लेकर लगभग 30 दिन की आयु तक होती है। (2) दूसरा चरण "दूध छुड़ाए हुए बच्चे" का है—वही रूप जिसका उल्लेख आज के पाठ में किया गया है। यह चरण एक महीने से लेकर लगभग पाँच साल की उम्र तक की अवधि को कवर करता है; कहा जाता है कि हिब्रू बच्चों का दूध आमतौर पर तीन या चार साल की उम्र में छुड़ाया जाता था। (3) तीसरा चरण "टॉडलर" (toddler) का होता है, यानी वह बच्चा जो चलना सीख चुका है; कहा जाता है कि यह चरण पाँच से बीस साल की उम्र तक चलता है। (4) चौथा चरण यौवन (puberty) का है, जिसे हिब्रू में *एलेम* (elem) या *अलमाह* (almah) कहा जाता है। यह शब्द यौन रूप से परिपक्व युवा व्यक्ति को दर्शाता है, जिसका अर्थ संभवतः बीस वर्ष या उससे अधिक की आयु है। (5) इसके बाद के चरण वयस्कता और बुढ़ापे के हैं। जब हम भजनकार दाऊद के इस कथन पर विचार करते हैं—कि उसका आंतरिक मन दूध छुड़ाए हुए बच्चे जैसा था—तो इन विकास चरणों के संदर्भ में, मुझे अपनी माँ की गोद में बैठा दूध छुड़ाया हुआ बच्चा याद आता है। मैंने एक ऐसे बच्चे की कल्पना की जो अब दूध के लिए रोता या ज़िद नहीं करता, बल्कि अपनी माँ की गोद में शांति से आराम करता है और उसके चेहरे को निहारता है। यही वह छवि है जिससे दाऊद ने अपने दिल की तुलना की। दूसरे शब्दों में, दाऊद ने खुद की तुलना दूध छुड़ाए हुए बच्चे से की क्योंकि, जिस तरह ऐसा बच्चा केवल अपनी माँ के पास होने से ही संतुष्ट हो जाता है—बिना दूध के लिए रोए—उसी तरह दाऊद का दिल केवल परमेश्वर से ही संतुष्ट था। गॉस्पेल गीत "सैटिस्फाइड विद द लॉर्ड अलोन" (Satisfied with the Lord Alone) के बोल कुछ इस प्रकार हैं: "मैं केवल प्रभु से संतुष्ट हूँ; मैं उस प्रभु की स्तुति करता हूँ जो मेरा सब कुछ है। यीशु, मेरा अनंत जीवन—मैं तेरी स्तुति करने के लिए अपनी आवाज़ उठाता हूँ। हे प्रभु, मैं तेरे महान प्रेम की स्तुति करता हूँ; तू मेरी शक्ति और सामर्थ्य है, और तूने मेरे पूरे जीवन को बदल दिया है। मैं तेरे महान प्रेम की स्तुति करता हूँ।" कहा जाता है कि यह भजन 2 कुरिन्थियों 3:5 पर आधारित है: "ऐसा नहीं है कि हम अपने आप में कुछ भी दावा करने के योग्य हैं, बल्कि हमारी योग्यता परमेश्वर से आती है।" वास्तव में, हमारी संतुष्टि केवल परमेश्वर से ही मिलती है। दाऊद यह बात समझता था; अपने दिल की गहराइयों में, वह केवल परमेश्वर पिता से संतुष्ट था, ठीक उसी तरह जैसे दूध छुड़ाया हुआ बच्चा होता है। हमारे दिल भी ऐसे ही होने चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमारा आंतरिक मन उस दूध छुड़ाए हुए बच्चे जैसा होना चाहिए, ठीक दाऊद की तरह। हमें केवल प्रभु से ही पूरी तरह संतुष्ट होना चाहिए। फिर भी, हम अक्सर अपना जीवन इस तरह जीते हैं कि केवल परमेश्वर में संतुष्टि नहीं पा पाते। अक्सर, हमारी नज़रें परमेश्वर से

हटकर दूसरे लोगों या दूसरी चीज़ों पर केंद्रित हो जाती हैं। इसका एक कारण "ईर्ष्या भरी नज़र" है, जिसका ज़िक्र 1 शमूएल 18:9 में मिलता है। जहाँ कोरियाई बाइबल बस इतना कहती है, "उस दिन से शाऊल दाऊद पर कड़ी नज़र रखने लगा," वहीं बाइबल का 'न्यू इंटरनेशनल वर्ज़न' (NIV) इसे इस तरह कहता है, "उस समय से शाऊल दाऊद पर ईर्ष्या भरी नज़र रखने लगा।" उस दिन से—जब दाऊद पलिश्ती गोलियत को मारकर लौटा और इस्राएल के सभी शहरों की औरतें नाचते-गाते बाहर आईं (पद 6), "शाऊल ने हज़ारों को मारा है, और दाऊद ने दसियों हज़ारों को" (पद 7), जिससे शाऊल बहुत गुस्से में बोला, "उन्होंने दाऊद को दसियों हज़ारों का श्रेय दिया है, लेकिन मुझे सिर्फ़ हज़ारों का—अब उसे राज्य के अलावा और क्या चाहिए?" (पद 8)—शाऊल दाऊद को ईर्ष्या भरी नज़र से देखने लगा (पद 9)। ऐसी पापी, ईर्ष्या भरी नज़रें आखिर हमें परमेश्वर के बजाय लोगों या चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर करती हैं। तो फिर, हम इस पापी ईर्ष्या पर कैसे काबू पाएँ? मुझे इसका राज़ भजन संहिता 73 में मिला। भजनकार आसाफ़ ने उस ईर्ष्या पर तभी काबू पाया जो सांसारिक, शारीरिक और शैतानी थी, जब वह परमेश्वर के पवित्र स्थान में गया और उसने दुष्टों के अंत को समझा; इसके अलावा, उसने इस पर तब काबू पाया जब उसे समझ आया कि प्रभु के करीब आना अच्छा है और पृथ्वी पर प्रभु के अलावा उसकी कोई और चाहत नहीं है। दूसरे शब्दों में, जब हम परमेश्वर के नज़रिए से सिर्फ़ प्रभु की ओर देखते हैं, तो हम शाऊल जैसी पापी ईर्ष्या पर जीत हासिल कर सकते हैं। तब, प्रेरित पौलुस की तरह, हम परमेश्वर की काफ़ी अनुग्रह में संतुष्ट रह सकते हैं, भले ही हमें "शरीर में काँटा" सहना पड़े (2 कुरिन्थियों 12:9)।

सिर्फ़ प्रभु में संतुष्ट होने का क्या मतलब है? आज के वचन, भजन संहिता 131:1 को देखें: "हे यहोवा, मेरा मन घमंडी नहीं है, और न ही मेरी आँखें ऊँची हैं; मैं बड़ी बातों या ऐसी चीज़ों की चिंता नहीं करता जो मेरे लिए बहुत अद्‌भुत हैं।" दूध छुड़ाए हुए बच्चे जैसा मन—जो पूरी तरह से सिर्फ़ प्रभु में संतुष्ट हो—न केवल घमंड से मुक्त होता है बल्कि उसमें घमंड की गुंजाइश ही नहीं होती; दूसरे शब्दों में, ऐसा मन विनम्र होता है। हम यह इसलिए जानते हैं क्योंकि दाऊद ने ऊँची चीज़ों पर अपनी नज़र नहीं लगाई; उन्होंने दुनिया की शान-ओ-शौकत की चाहत नहीं की (पार्क युन-सन)। क्यों? क्योंकि उनकी नज़रें प्रभु, यानी सबसे ऊँचे परमेश्वर पर टिकी थीं। जो व्यक्ति सिर्फ़ प्रभु में ही संतुष्ट रहता है, उसके लिए प्रभु से बढ़कर और क्या हो सकता है? घमंडी लोगों के उलट, जो दुनिया में आगे बढ़ना चाहते हैं, दाऊद ने कहीं ऊँचा देखा—परमेश्वर की ओर (पार्क युन-सन)। नतीजतन, उन्होंने न तो "बड़े मामलों" या ऐसी "अद्‌भुत बातों" की चिंता की और

न ही उनमें दखल दिया जिन्हें समझना उनके बस की बात नहीं थी। संक्षेप में, दाऊद ने बेकार की महत्वाकांक्षा के कारण घमंड में आकर ऐसे बड़े काम करने की कोशिश नहीं की जो उनके लिए नहीं थे (पार्क युन-सन)। दाऊद की तरह, हमें भी इस दुनिया की बेकार इच्छाओं से बहकना नहीं चाहिए। हमें दुनिया की खोखली शान-ओ-शौकत नहीं चाहिए; हमें घमंड से बचना चाहिए। दाऊद जैसा दिल—जो सिर्फ़ प्रभु में संतुष्ट रहता है—उसमें "शांति और सुकून" होता है। क्योंकि दूध छुड़ाए हुए बच्चे जैसा दिल सिर्फ़ परमेश्वर में ही संतुष्टि पाता है, इसलिए वह शांति और सुकून का अनुभव करता है। यह शांति और सुकून जीवन जीने का एक तरीका है जो मन में उठने वाली महत्वाकांक्षाओं और उथल-पुथल भरी भावनाओं को काबू में करके और अपनी नज़रें सिर्फ़ परमेश्वर पर टिकाकर मिलता है (पार्क युन-सन)। दाऊद ऐसा शांत और सुकून भरा जीवन इसलिए जी पाए क्योंकि उनका दिल घमंड से मुक्त था—प्रभु में संतुष्टि के कारण—जिससे वे तरह-तरह की असंतुष्टि और उथल-पुथल भरी भावनाओं को शांत कर पाए (पार्क युन-सन)। दुनिया के लालच से न बहकते हुए, और परमेश्वर के वचन पर विश्वास करके और उसका पालन करके, उन्होंने अपने दिल में शांति और सुकून का अनुभव किया। इसलिए, वे न केवल इस्राएल के लोगों को बल्कि हमें भी सलाह देते हैं, "हे इस्राएल, अब से लेकर हमेशा तक प्रभु पर भरोसा रख" (पद 3)। हमें अब से लेकर हमेशा तक परमेश्वर की ओर क्यों देखना चाहिए? क्योंकि प्रभु हमारा चरवाहा है, और हमें किसी चीज़ की कमी नहीं होगी (भजन संहिता 23:1)। आइए हम सब दूध छुड़ाए हुए बच्चे जैसे दिल के साथ सिर्फ़ प्रभु में संतुष्टि पाएँ। आइए हम कभी भी लालच में आकर दुनिया की चीज़ों के पीछे न भागें; वे हमारी आत्मा को कभी संतुष्ट नहीं कर सकतीं। आइए हम अपने दिलों में घमंड न पालें, बल्कि प्रभु के सामने विनम्र बनें। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हमारी आत्माओं में शांति और सुकून लाएगा।

दूध छुड़ाए हुए बच्चे जैसी आत्मा

"सचमुच मैंने अपनी आत्मा को शांत और स्थिर किया है, जैसे माँ के साथ दूध छुड़ाया हुआ बच्चा होता है; मेरे भीतर की आत्मा दूध छुड़ाए हुए बच्चे जैसी है" (भजन संहिता 131:2)।

हमें खबर मिल रही है कि एशिया में आई भारी आपदा—भूकंप और सुनामी—से मरने वालों की संख्या 1 लाख से ज़्यादा हो गई है। अब ऐसी खबरें भी आ रही हैं कि संक्रामक बीमारियाँ फैल रही हैं। यह सचमुच एक डरावनी स्थिति है। लोग कहते हैं कि जल्द ही और भूकंप आने की संभावना है। इससे हमें कम से कम अप्रत्यक्ष रूप से यह एहसास होता है कि प्रकृति की ताकतों के सामने हम इंसान कितने बेबस हैं। कल मैंने समाचारों में एक फुटेज देखा जिसमें एक होटल के स्विमिंग पूल पर एक विशाल लहर टकरा रही थी। मैंने सुना कि उस लहर के कारण कई बच्चों की जान चली गई। खासकर, कई बच्चों की मौत तब हुई जब वे उन मछलियों को इकट्ठा कर रहे थे जो छोटी, शुरुआती लहरों के साथ किनारे पर आ गई थीं, और तभी एक विशाल लहर उन्हें बहा ले गई। यह सचमुच दिल दहला देने वाली त्रासदी है। जब भी मैं "लहर" शब्द सुनता हूँ, तो मुझे एक बुजुर्ग की कही बात याद आती है। मैं उनकी बातें कभी नहीं भूला: भले ही समुद्र की सतह पर लहरें टकराती हों, लेकिन पानी की गहराई में, सीप चुपचाप मोती बना रही होती है। सतह पर लहरें भले ही उग्र हों, लेकिन समुद्र की गहराई शांत और स्थिर रहती है। जहाँ हाल की विशाल लहरों में कई लोगों की जान चली गई, वहीं मैंने एक महिला के बारे में भी खबर सुनी जो इसलिए बच गई क्योंकि वह उस समय पानी के नीचे स्कूबा डाइविंग कर रही थी।

हमारी ज़िंदगी के सफ़र में कई तरह की "लहरें" आती हैं। इन लहरों की वजह से हम अक्सर बेचैन और डरे हुए महसूस करते हैं, और कभी-कभी हमें चोटें भी लगती हैं। फिर भी, इन सबके बीच, एक चीज़ जो हम

अक्सर नहीं सीख पाते, वह है अपनी आत्मा में शांति या स्थिरता बनाए रखना—ठीक वैसे ही जैसे टकराती हुई लहरों के नीचे समुद्र की गहराई शांत होती है। भजन संहिता 131:2 में, जिस अंश पर हम आज विचार कर रहे हैं, भजनकार एक शांत या सुकून भरी आत्मा का वर्णन "दूध छुड़ाए हुए बच्चे" जैसी आत्मा के रूप में करता है। वह इस खास उदाहरण का इस्तेमाल क्यों करता है? उन दिनों, यहूदी माताएँ आमतौर पर अपने बच्चों का दूध दो या तीन साल बाद छुड़ाती थीं। हालाँकि आज तौर-तरीके अलग हैं, लेकिन दूध छुड़ाने की प्रक्रिया अक्सर एक साल की उम्र के आसपास होती है। मैं अपनी सबसे छोटी बेटी, ये-उन के बारे में सोच रहा था—खासकर तब के बारे में जब एक साल की उम्र में (अमेरिकी हिसाब से) उसका दूध छुड़ाया गया था। मुझे अच्छी तरह याद है कि वह अपनी माँ की गोद में चुपचाप कैसे आराम करती थी, अपना सिर धीरे से माँ के कंधे पर टिकाकर। मेरा मानना है कि जो आत्मा "दूध छुड़ाए हुए बच्चे" जैसी होती है, वह परमेश्वर पिता की गोद में आराम करती है। मैं सोचता हूँ कि ऐसी आत्मा कितनी शांत और सुकून भरी होती होगी। मैं अपनी आत्मा को परमेश्वर पिता की प्यार भरी गोद में धीरे-धीरे सोते हुए, उनकी धड़कन और उनकी आवाज़ में गाई लोरी को सुनते हुए महसूस करता हूँ। मैं कल्पना करता हूँ कि मुझे कैसा लगेगा अगर परमेश्वर पिता मुझे एक हाथ से थामे रहें और दूसरे हाथ से धीरे-धीरे मेरी पीठ सहलाएँ, और मैं उनकी आवाज़ को अपनी आत्मा से बात करते हुए सुनूँ।

हम जिस शहर में रहते हैं, वहाँ की लगातार भागदौड़ ऐसी कई चीज़ें पैदा करती है जो हमारी आत्मा से शांति और सुकून छीन लेती हैं। चारों तरफ़ लोगों की आवाज़ों और दुनियादारी की बातों का शोर होता है; सबसे बढ़कर, हमारी अपनी भावनाओं और विचारों की अंदरूनी आवाज़ें अक्सर हमारी आत्मा में उथल-पुथल मचा देती हैं। नतीजतन, हमारी आत्मा वह खूबसूरत "शाहकार" (masterpiece) नहीं बना पाती जो परमेश्वर को खुश करे—ठीक वैसे ही जैसे सीप मोती बनाती है। हमें शांत रहकर परमेश्वर को परमेश्वर मानना चाहिए, फिर भी हमारी आत्माएँ "दूध छुड़ाए हुए बच्चे" जैसी बनने के बजाय महानता पाने की कोशिश करती दिखती हैं। उन किशोरों की तरह जो अपने पिता की गोद में नहीं आना चाहते, हमने अक्सर दुनिया के तूफ़ानों का सामना अपनी शर्तों पर करने की कोशिश की है, और नतीजा यह हुआ कि हम उनमें बह गए और अपनी आत्मा की शांति और सुकून खो बैठे। हमें इस शांति और सुकून को फिर से पाना होगा। हमारी आत्माओं को "दूध छुड़ाए हुए बच्चे" जैसी अवस्था में लौटना होगा और परमेश्वर पिता की गोद में आराम करना होगा। जब

हम उनकी गोद में रहकर विश्वास के रास्ते पर चलेंगे, तो हमारी आत्मा शांत और सुकून भरी रहेगी, चाहे कितने भी तूफ़ान क्यों न आएँ।

"जब शांति, एक नदी की तरह, मेरे रास्ते में हो, जब दुख समुद्र की लहरों की तरह उमड़ें; मेरी किस्मत में जो भी हो, तूने मुझे कहना सिखाया है, 'सब ठीक है, मेरी आत्मा के लिए सब ठीक है।'" (भजन 470)

कभी न बदलने वाले परमेश्वर

[भजन संहिता 132]

बाइबल के महत्वपूर्ण शब्दों में से एक है "वाचा" (covenant)। यह शब्द पूरे पवित्र शास्त्र में चलने वाले एक मुख्य विषय को दर्शाता है। वाचा का अर्थ है परमेश्वर और उनके लोगों के बीच बना रिश्ता; एक ऐसा रिश्ता जिसमें परमेश्वर खुद पहल करते हैं और शर्तें तय करते हैं। बाइबल में "वाचा" शब्द लगभग 296 बार आया है; पुराने नियम (Old Testament) में, हिब्रू शब्द *बेरित* (berit) का इस्तेमाल होता है, जिसका अर्थ है कसम, अनुबंध या पक्का वादा—खासकर, किसी मारे गए जानवर के टुकड़ों के बीच से गुज़रकर बनाया गया गठबंधन या समझौता।

आज के पाठ, भजन संहिता 132 में, "कसम" (oath) शब्द दो बार आया है—पद 2 और 11 में। पहली बार यह उस कसम का ज़िक्र करता है जो दाऊद ने परमेश्वर से खाई थी (पद 2), जबकि दूसरी बार यह उस कसम का ज़िक्र करता है जो परमेश्वर ने दाऊद से खाई थी (पद 11)। यह ध्यान देने वाली बात है कि जहाँ दाऊद की परमेश्वर से खाई कसम के वृत्तांत में "वफ़ादारी से" (faithfully) शब्द नहीं आता, वहीं परमेश्वर की दाऊद से खाई कसम के वृत्तांत में यह शब्द *आता* है। यहाँ एक स्पष्ट सच्चाई सामने आती है: भले ही हम अपने वाचा के रिश्ते में परमेश्वर से खाई कसमों को वफ़ादारी से निभाने में नाकाम रहें, परमेश्वर वफ़ादार बने रहते हैं; वे ऐसे परमेश्वर हैं जो हमसे खाई कसमों को हमेशा और वफ़ादारी से निभाते हैं। इसलिए, हमें उस परमेश्वर पर विश्वास के साथ प्रार्थना करनी चाहिए जो अपनी वाचा के प्रति वफ़ादार हैं।

आज के पाठ, भजन संहिता 132:11 में, भजनकार—सुलेमान—घोषणा करते हैं: "यहोवा ने दाऊद से कसम खाई, एक पक्की कसम जिसे वह कभी नहीं बदलेगा: 'मैं तेरे ही वंश में से किसी को तेरे सिंहासन पर

बिठाऊँगा।'" सुलेमान ने उस वादे को मजबूती से थामे हुए प्रार्थना की जो परमेश्वर ने उनके पिता दाऊद से किया था—कि दाऊद का ही कोई वंशज शाही सिंहासन पर बना रहेगा। उन्होंने परमेश्वर की कभी न बदलने वाली वफ़ादारी पर भरोसा करते हुए उनसे विनती की। इसीलिए उन्होंने पद 12 में परमेश्वर की वाचा ("मेरी वाचा") के बारे में बात की। यह "वाचा" क्या है? यह वह समझौता है जो परमेश्वर ने दाऊद के साथ किया था, जिसमें परमेश्वर का वादा और दाऊद की ज़िम्मेदारी, दोनों शामिल थे। सुलेमान ने इस वाचा को थामे हुए प्रार्थना की क्योंकि परमेश्वर का घर और दाऊद का घर, दोनों ही उनके दिल के बहुत करीब थे। दूसरे शब्दों में, उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए अपने पिता दाऊद की मंदिर के लिए गहरी इच्छा और उस इच्छा के कारण परमेश्वर द्वारा दाऊद से किए गए वादे को याद किया। इस तरह, भजन संहिता 132:1 में—जो आज हमारे सामने है—उन्होंने विनती की: "हे यहोवा, दाऊद और उसके सारे कष्टों को याद कर।" सुलैमान ने परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह दाऊद की गहरी इच्छा को याद रखे—खासकर, परमेश्वर के मंदिर के लिए उसकी दिली तड़प को (पद 1–5) (पार्क युन-सन)। ऐसा करते हुए, सुलैमान ने उस कभी न बदलने वाले और सच्चे परमेश्वर से गुहार लगाई, और उस वादे को थामे रखा जो परमेश्वर ने दाऊद से सच्चाई से किया था, यह जानते हुए कि परमेश्वर दाऊद की सच्ची प्रार्थना से वाकिफ थे (पद 11)। संक्षेप में, भजनकार सुलैमान ने परमेश्वर के वाचा को थामे रखा, परमेश्वर के मंदिर में गए और उनसे विनती की।

इस वाचा के बारे में, भजन संहिता 132 के पद 2 और 11 बताते हैं कि दाऊद और परमेश्वर ने एक-दूसरे से कसम खाई थी। परमेश्वर के प्रति दाऊद की कसम पर गौर करें: "उसने यहोवा की कसम खाई और याकूब के सामर्थी परमेश्वर से मन्नत मानी" (पद 2)। सुलैमान ने परमेश्वर से कहा कि वह उन सभी गहरी चिंताओं को याद रखे जो उनके पिता दाऊद को परमेश्वर के मंदिर के बारे में थीं (पद 1)। खास तौर पर, उन्होंने उस कसम और मन्नत को थामे रखकर परमेश्वर से प्रार्थना की जो उनके पिता ने मानी थी (पद 2)। दाऊद की कसम और मन्नत यह थी कि वह उस तंबू में नहीं जाएंगे जहाँ वह रहते थे और न ही अपने बिस्तर पर जाएंगे (पद 3), और न ही अपनी आँखों को नींद या पलकों को झपकी लेने देंगे (पद 4), जब तक कि उन्हें यहोवा के लिए रहने की जगह—याकूब के सामर्थी परमेश्वर के लिए एक पवित्र तंबू—नहीं मिल जाता (पद 5)। दूसरे शब्दों में, दाऊद की कसम और मन्नत का केंद्र परमेश्वर का मंदिर—परमेश्वर का पवित्र तंबू—था। दाऊद परमेश्वर का मंदिर बनाने के लिए बहुत उत्सुक थे क्योंकि, जहाँ वह खुद देवदार की लकड़ी से बने महल में

रहते थे, वहीं उन्हें इस बात का दुख था कि परमेश्वर के संदूक (आर्क) को रखने के लिए कोई मंदिर नहीं था। इसलिए, उन्होंने कसम खाई और मन्नत मानी कि जब तक परमेश्वर का मंदिर नहीं बन जाता, तब तक वह न तो अपने घर में जाएंगे और न ही चैन से सोएंगे। परमेश्वर की उपस्थिति के लिए दाऊद की तड़प इतनी गहरी थी कि... वह 'आर्क' (पवित्र संदूक) को रखने के लिए एक मंदिर भी बनाना चाहता था। इसी दौरान, 'आर्क ऑफ़ द कोवेनेंट' (नियम का संदूक)—जो परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक था (पद 6)—को खोजने से दाऊद को नई आध्यात्मिक शक्ति मिली और उसने परमेश्वर की आराधना की (पद 7–8); उसने याजकों को भी धार्मिक बनने के लिए कहा और घोषणा की कि प्रभु के पवित्र लोगों को खुशी से जय-जयकार करनी चाहिए (पद 9) (पार्क युन-सन)। सुलैमान, जो भजनकार भी था, ने अपने पिता दाऊद द्वारा प्रभु के घर के लिए दिखाए गए इसी जोश (69:9)—एक ऐसा जोश जिसने उसे अपनी शपथ और मन्नतें पूरी करने के लिए प्रेरित किया—के आधार पर प्रार्थना में परमेश्वर से विनती की: "अपने सेवक दाऊद के कारण, अपने अभिषिक्त जन का मुँह न मोड़ना" (132:10)। यह एक ऐसी प्रार्थना थी जिसमें सुलैमान ने परमेश्वर से विनती की कि वह अपने पिता दाऊद के कारण उसे—प्रभु के अभिषिक्त जन को—नकारे नहीं (पद 10)। यह विनती सुलैमान की अपनी स्वार्थी इच्छाओं पर आधारित नहीं थी, बल्कि उस वाचा (समझौते) पर आधारित थी जो परमेश्वर ने स्थापित की थी (पार्क युन-सन)।

तो फिर, परमेश्वर ने दाऊद से क्या शपथ खाई थी? आज के पाठ में भजन संहिता 132:11 को देखें: "यहोवा ने दाऊद से सचमुच शपथ खाई है; वह उससे पीछे नहीं हटेगा: 'मैं तेरी संतान को तेरे सिंहासन पर बिठाऊँगा।'" दाऊद से परमेश्वर के शपथ-युक्त वादों को पाँच बिंदुओं में संक्षेप में बताया जा सकता है:

पहला, परमेश्वर ने दाऊद के वंशजों को हमेशा के लिए सिंहासन देने का वादा किया।

भजन संहिता 132:12 को देखें: "यदि तेरे पुत्र मेरी वाचा और मेरी गवाही को मानेंगे जो मैं उन्हें सिखाऊँगा, तो उनके पुत्र भी हमेशा के लिए तेरे सिंहासन पर बैठेंगे।" यह अंश 2 शमूएल 7:12 पर आधारित एक वादा है, जिसमें परमेश्वर ने दाऊद से कहा था, "जब तेरे दिन पूरे हो जाएँगे और तू अपने पूर्वजों के साथ विश्राम करेगा, तो मैं तेरे बाद तेरी संतान को—तेरे ही खून-मांस से जन्मे व्यक्ति को—उठाऊँगा और उसके राज्य

को स्थापित करूँगा।" बेशक, इस वादे के साथ दाऊद और उसके वंशजों के लिए एक ज़िम्मेदारी भी जुड़ी है: परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना।

दूसरा, परमेश्वर ने सिय्योन को चुनने और हमेशा वहाँ निवास करने का वादा किया। भजन संहिता 132:13–14 को देखिए: "क्योंकि प्रभु ने सिय्योन को चुना है, उसने इसे अपने निवास के लिए चाहा है, और कहा है, 'यह हमेशा-हमेशा के लिए मेरा विश्राम-स्थान है; यहाँ मैं सिंहासन पर बैठूँगा, क्योंकि मैंने इसे चाहा है।'" यहाँ, "सिय्योन" का अर्थ है परमेश्वर के चुने हुए लोग। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का वादा यह है कि वह हमेशा अपने लोगों के साथ रहेगा।

तीसरी बात, परमेश्वर ने उस सिय्योन के लिए भरपूर भोजन देने का वादा किया जिसे उसने चुना था।

भजन संहिता 132:15 को देखिए: "मैं उसे भरपूर भोजन-सामग्री से आशीष दूँगा; उसके गरीबों को भोजन से तृप्त करूँगा।" यह एक वादा है कि परमेश्वर अपने लोगों पर भरपूर भौतिक आशीषें बरसाएगा।

चौथी बात, परमेश्वर ने अपने पवित्र लोगों को उद्धार में आनंदित करने का वादा किया।

भजन संहिता 132:16 को देखिए: "मैं उसके याजकों को उद्धार का वस्त्र पहनाऊँगा, और उसके पवित्र लोग आनंद से गाएँगे।" यह अंश परमेश्वर के उस वादे को दर्शाता है जिसके द्वारा वह अपने लोगों को आत्मिक आशीषें देता है (पार्क युन-सन)।

पाँचवीं बात, परमेश्वर ने दाऊद के लिए एक "सींग"—यानी मसीह—को उत्पन्न करने का वादा किया।

भजन संहिता 132:17–18 पर विचार करें: "वहाँ मैं दाऊद के लिए एक सींग उगाऊँगा; मैंने अपने अभिषिक्त के लिए एक दीपक तैयार किया है। मैं उसके शत्रुओं को लज्जा का वस्त्र पहनाऊँगा, लेकिन उस पर मुकुट चमकेगा।" यहाँ, दाऊद के लिए सींग उगाने का वादा मसीह की ओर संकेत करता है, जबकि "दीपक" उस प्रकाशन को दर्शाता है जो मसीह के माध्यम से आता है।

इस प्रकार, भजनकार सुलैमान परमेश्वर के घर में प्रार्थना करने गया, और उसने उस वादे को मजबूती से थामे रखा जो परमेश्वर ने उसके पिता दाऊद से किया था। उसने अपनी प्रार्थना का उत्तर दो कारणों से माँगा: (1) पहला, उसने उस प्रतिज्ञा पर भरोसा करके प्रार्थना की जो उसके पिता दाऊद ने संकट के समय परमेश्वर से की थी (पद 2); और (2) दूसरा, उसने उस शपथ पर भरोसा करके प्रार्थना की जो स्वयं परमेश्वर ने दाऊद से खाई थी (पद 11)।

हमारा वाचा निभाने वाला परमेश्वर वह है जो हमसे किए गए वादों को ईमानदारी से पूरा करता है। भले ही हम विश्वासघाती हो सकते हैं, हमारा परमेश्वर वह है जो हमसे खाई गई शपथ को निश्चित रूप से पूरा करता है। इसके अलावा, भले ही हम बदल सकते हैं, हमारा परमेश्वर अपरिवर्तनीय रहता है। हमें इस कभी न बदलने वाले, भरोसेमंद परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए कि वह अपना वादा पूरा करे। हमें आगे बढ़ना चाहिए और उसके कभी न बदलने वाले स्वभाव पर विश्वास रखते हुए, उन वादों का ऐलान करना चाहिए जो उसने हमें दिए हैं।

कलीसिया की एकता

[भजन संहिता 133]

पास्टर आन ही-ह्वान (चमसारंग चर्च) ने "अच्छा काम करने के बावजूद आलोचना झेलने वाली कलीसिया" शीर्षक से एक लेख लिखा, जिसमें उन्होंने बताया कि कलीसिया दुनिया में किस तरह सकारात्मक भूमिका निभाती है। उन्होंने रक्तदान का उदाहरण दिया; कोरिया इंस्टीट्यूट फॉर रिलीजियस सोशल एथिक्स के एक अध्ययन में 1998 से 2001 के बीच धर्म के आधार पर रक्तदान के आंकड़ों की तुलना की गई, जिसमें पाया गया कि प्रोटेस्टेंटों का योगदान 81.79% था। इसके विपरीत, कैथोलिक, वॉन बौद्ध धर्म और बौद्ध धर्म के आंकड़े क्रमशः केवल 10.54%, 0.55% और 0.86% थे, जिससे प्रोटेस्टेंटों की दर बहुत ज़्यादा रही। दूसरा उदाहरण अंग या बोन मैरो (अस्थि मज्जा) दान का है। 2000 से जून 2002 तक के रिकॉर्ड बताते हैं कि बोन मैरो दान में भी प्रोटेस्टेंटों का हिस्सा 38% था, जो बहुत ज़्यादा है। सूची में तीसरे और चौथे स्थान पर सामाजिक कल्याण सुविधाओं का संचालन और बेघर लोगों के लिए सहायता संगठनों का काम आता है। इन योगदानों के बावजूद, कलीसिया के बारे में लोगों की राय अच्छी नहीं है; असल में, अक्सर यह राय विरोधी होती है। हालाँकि कलीसिया दुनिया में "ज्योति और नमक" के रूप में अपनी भूमिका स्पष्ट रूप से निभाती है—और बड़े पैमाने पर ऐसा करती है—फिर भी उसे तारीफ़ से ज़्यादा आलोचना का सामना करना पड़ता है। पास्टर आन इसके लगभग छह कारण बताते हैं; इनमें वे भ्रष्ट पादरियों के शर्मनाक व्यवहार और कलीसिया के बंटवारे को मुख्य रूप से उजागर करते हैं। जब प्रमुख और प्रसिद्ध कलीसियाओं के पादरी चर्च के फंड का गबन या व्यभिचार जैसे अपराध करते हैं, तो इसके परिणाम बहुत गंभीर होते हैं। इसके अलावा, बड़े चर्चों का अक्सर बंटवारा होना और उनमें अव्यवस्था फैलना लोगों में आलोचना का कारण बनता है। जैसे-जैसे कलीसिया के बुरे पहलू दुनिया के सामने आते हैं, ईसाई-विरोधी गतिविधियाँ बढ़ती जा रही हैं। हम अक्सर ईसाई-विरोधियों को समूह बनाते, विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर घुसपैठ करते और प्रोटेस्टेंट धर्म की छवि

खराब करने में जुटे हुए देखते हैं। "एंटी-क्रिश्चियन सिविक कोएलिशन" नाम का एक समूह भी है जो सदस्यता शुल्क इकट्ठा करता है; उनका घोषित लक्ष्य ईसाई धर्म को खत्म करना है। ऐसे माहौल में, ईसाई समुदाय को पश्चाताप करना चाहिए और परमेश्वर की ओर लौटना चाहिए, और ऐसी कलीसिया बनने की कोशिश करनी चाहिए जो वास्तव में अपने बुलावे के अनुरूप हो। दुनिया और अधिक अंधेरी और बदसूरत होती जाएगी। ऐसे समय में, चर्च को इस अंधेरी दुनिया में अपनी रोशनी और तेज़ करनी चाहिए और बुराई के बीच अपनी असली सुंदरता दिखानी चाहिए।

तो फिर, चर्च की असली सुंदरता क्या है? यह प्रभु में भाइयों और बहनों के एकता में साथ रहने में है। भजन संहिता 133:1 को देखिए: "कितना अच्छा और सुखद है जब भाई एकता में साथ रहते हैं!" मुझे उस वचन की याद आती है जिस पर हमने पिछले हफ़्ते 'पैशन वीक' की सुबह की प्रार्थना सभाओं में मनन किया था—यशायाह 53:2: "वह उसके सामने एक कोमल अंकुर की तरह, और सूखी ज़मीन से निकली जड़ की तरह बढ़ा। उसमें हमें अपनी ओर आकर्षित करने के लिए कोई सुंदरता या भव्यता नहीं थी, उसके रूप-रंग में ऐसा कुछ नहीं था कि हम उसे चाहें।" यीशु में दुनिया को मोहित करने वाली कोई बाहरी सुंदरता या भव्यता नहीं थी; इसलिए, दुनिया के लोग उनमें कोई दिलचस्पी नहीं दिखाते। मेरा मानना है कि यह चर्च की मौजूदा हालत को दिखाता है। दुनिया के लोग चर्च के प्रति उदासीन लगते हैं। ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है क्योंकि उनकी नज़र में चर्च में ऐसी कोई सुंदरता नहीं है जिसकी तारीफ़ की जाए—या दूसरे शब्दों में, ऐसी कोई सुंदरता नहीं है जो लोगों को अपनी ओर खींचे। तो, जब हम ईसाई अपने चर्च को देखते हैं, तो क्या सच में उसमें तारीफ़ के लायक कोई सुंदरता है? मेरा मानना है कि इसका जवाब 'नहीं' है। यहाँ तक कि हमारी अपनी नज़रों में भी, चर्च ने अपना आकर्षण खो दिया है; उसमें ऐसी सुंदरता नहीं है जिसकी तारीफ़ की जाए। चर्च इस हालत में क्यों पहुँच गया है? उसमें वह सुंदरता क्यों नहीं है जो उसे आकर्षक बनाए—चाहे दुनिया के लिए या हमारे लिए? इसका कारण यह है कि हम यीशु की आज्ञा मानने में नाकाम रहे हैं, जो चर्च के मुखिया हैं। यीशु—जिनमें दुनिया या यहाँ तक कि हमारे लिए भी आकर्षक लगने वाली कोई बाहरी सुंदरता नहीं थी—परमेश्वर की नज़र में सुंदर हैं। यीशु परमेश्वर की नज़र में सुंदर क्यों हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने परमेश्वर पिता की इच्छा पूरी करने के लिए क्रूस पर मरने तक आज्ञा मानी (फिलिप्पियों 2:8)। दूसरे शब्दों में, आज्ञाकारी पुत्र के रूप में यीशु की छवि परमेश्वर पिता की नज़र में सुंदर है। यही प्रभु के चर्च की

सुंदरता है, और उनके चेले के तौर पर आपकी और मेरी सुंदरता भी यही है। हमारी सुंदरता प्रभु के वचन को मानने में है। जो चर्च प्रभु के वचन को मानता है, वह परमेश्वर की नज़र में सुंदर है। अगर चर्च की सुंदरता प्रभु की आज्ञाओं को मानने में है, तो चर्च की अच्छाई किसमें है? मुझे इसका जवाब रोमियों 8:28 और इफिसियों 2:10 में मिलता है। रोमियों 8:28 हमें बताता है कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं—जिन्हें उसकी योजना के अनुसार बुलाया गया है—उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही करती हैं। संक्षेप में, चर्च की अच्छाई परमेश्वर की अच्छाई का ही रूप है। इसके लिए, चर्च को लगातार और पूरी तरह से परमेश्वर की अच्छाई का अनुभव करना चाहिए (भजन संहिता 34:8)। इस तरह, जैसा कि इफिसियों 2:10 में कहा गया है, चर्च—जिसमें वे लोग शामिल हैं जिन्हें "मसीह यीशु में अच्छे कामों के लिए रचा गया है"—उन्हें अच्छे काम करके दुनिया के सामने अपनी अच्छाई दिखानी चाहिए। मत्ती 5:16 कहता है: "इसी तरह, अपनी ज्योति दूसरों के सामने चमकाओ, ताकि वे तुम्हारे अच्छे काम देख सकें और स्वर्ग में तुम्हारे पिता की महिमा कर सकें।"

भजन संहिता 133 में, भजनकार दाऊद—जो मंदिर जाने के लिए एक गीत रच रहा था—घोषणा करता है कि भाइयों का प्रभु में एकता के साथ मिलकर रहना सचमुच अच्छा और सुंदर है। इसका मतलब इस्राएलियों—परमेश्वर के लोगों—का खून के रिश्तों या वंश के आधार पर एकजुट होना नहीं है (पार्क युन-सन)। बल्कि, यह परमेश्वर के लोगों की आत्मिक एकता को दर्शाता है; यह प्रभु के चर्च की एकता की ओर इशारा करता है। परमेश्वर को यह कितना सुंदर लगता होगा जब चर्च एक-दूसरे से प्रेम करने की प्रभु की आज्ञा का पालन करता है—परमेश्वर के प्रेम से प्रेम करना, मिल-जुलकर रहना और चर्च की एकता बनाए रखना! जब दुनिया ऐसी एकता देखती है, तो लोग चर्च की बुराई नहीं करेंगे, आलोचना नहीं करेंगे या उंगली नहीं उठाएंगे; बल्कि, वे इसकी ओर खिंचे चले आएंगे। मसीही होने के नाते, जब हम प्रभु के वचन का पालन करते हैं और एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, और इस तरह चर्च की एकता बनाए रखते हैं, तो हम भी चर्च के भीतर यीशु की सुंदर छवि देखेंगे। इसलिए, हमें चर्च की एकता के बारे में परमेश्वर के वचन पर ध्यान देना चाहिए। यीशु मसीह की प्रायश्चित वाली मृत्यु के द्वारा, परमेश्वर ने अपने चुने हुए लोगों को बचाया और उन्हें मसीह में एक किया (इफिसियों 1:10)। इसलिए, चर्च को "शांति के बंधन के द्वारा आत्मा की एकता को बनाए

रखने का हर संभव प्रयास करना चाहिए" (इफिसियों 4:3)। कलीसिया, जो प्रभु का शरीर है, उसे "प्रेम में खुद को बढ़ाना" चाहिए (5:16)।

भजन संहिता 133:2–3a के आज के अंश में, भजनकार दाऊद दो उदाहरणों के ज़रिए परमेश्वर के लोगों—यानी कलीसिया—के एकता में साथ रहने की अच्छाई और सुंदरता को समझाते हैं।

(1) दाऊद इसे "सिर पर डाले गए उस कीमती तेल की तरह बताते हैं जो दाढ़ी पर बहता हुआ हारून की दाढ़ी से होता हुआ उसके वस्त्रों के कॉलर तक पहुँचता है" (पद 2)।

हारून के सिर पर डाला गया तेल खुशबूदार और गाढ़ा था, और उसमें फैलने का गुण था। जैसे हारून के सिर पर डाला गया तेल उसकी दाढ़ी से बहकर उसके वस्त्रों के कॉलर तक पहुँच गया था, वैसे ही भाईचारे का प्रेम वह प्रेम है जिसे परमेश्वर उंडेलता है और फैलाता है (पार्क युन-सन)। रोमियों 5:5 हमें बताता है कि परमेश्वर का प्रेम पवित्र आत्मा के ज़रिए हमारे दिलों में उंडेला गया है—जो हमें दिया गया था—हम जिन्हें यीशु पर विश्वास के कारण धर्मी ठहराया गया है। हमें परमेश्वर के इस उंडेले गए प्रेम को असल जीवन में अपनाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का यह फैलने वाला प्रेम कलीसिया के भीतर होना चाहिए। हमें परमेश्वर के इस फैलने वाले प्रेम के साथ एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो कलीसिया अपनी एकता बनाए रख सकती है। नतीजतन, यह कलीसिया की अच्छाई और सुंदरता को प्रकट कर सकती है।

(2) दाऊद परमेश्वर के लोगों—यानी कलीसिया—के एकता में साथ रहने की अच्छाई और सुंदरता की तुलना "हेर्मोन की ओस से करते हैं, जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरती है" (वचन 3)।

पास्टर जॉन मैकआर्थर के अनुसार, माउंट हेर्मोन उत्तरी फिलिस्तीन की एक बहुत ऊँची चोटी है, जिसकी ऊँचाई 9,200 फीट है। इसकी चोटी पर जमी बर्फ से नमी भाप बनकर दक्षिण की ओर जाती है और यहूदा की धरती पर ओस के रूप में गिरती है (पार्क युन-सन)। यहूदा के लिए ओस बहुत ज़रूरी है; इसके बिना फसलें जीवित नहीं रह सकतीं। इसलिए, जब दाऊद कलीसिया की एकता की तुलना सिय्योन पर गिरने वाली

हेर्मोन की ओस से करते हैं, तो उनका मतलब यह होता है कि—जैसे माउंट हेर्मोन की ऊँचाइयों से ओस नीचे की ओर फैलती है—वैसे ही परमेश्वर ऊपर से कलीसिया पर सच्चा ईश्वरीय प्रेम बरसाते हैं। इसके अलावा, वचन में कहा गया है, "क्योंकि वहीं प्रभु ने आशीष—हमेशा का जीवन—का आदेश दिया है" (वचन 3 का बाद वाला हिस्सा)। इसका मतलब है कि परमेश्वर ने यह तय किया है कि जहाँ भी उनका प्रेम मौजूद है, वहाँ "अनंत जीवन" की आशीष भी होती है (पार्क युन-सन)। सचमुच, जब परमेश्वर का प्रेम कलीसिया में बसता है, तो कलीसिया अनंत जीवन की आशीष का आनंद ले सकती है।

भजनकार दाऊद कहते हैं: "भाइयों का एकता में साथ रहना कितना अच्छा और सुखद है!" (वचन 1)। प्रभु की कलीसिया की अच्छाई और सुंदरता इसी बात में है कि भाई-बहन एकता में साथ रहें। परमेश्वर का प्रेम हमारे दिलों में उंडेला गया है। जैसे-जैसे वह प्रेम हमारे भाई-बहनों तक पहुँचता है, कलीसिया यीशु मसीह में एकता बनाए रखने में सक्षम होती है। जब ऐसा होता है, तो कलीसिया परमेश्वर की नज़र में अच्छी और सुंदर बन जाती है। मेरी प्रार्थना है कि हमारी कलीसिया ऐसी कलीसिया बने जो परमेश्वर की नज़र में अच्छी और सुंदर हो।

“प्रभु की स्तुति करो”

[भजन संहिता 134]

पिछले गुरुवार, मैंने “परमेश्वर के पर्याप्त अनुग्रह” पर विचार किया। मैंने 2 कुरिन्थियों 12:9 के इन शब्दों के आधार पर इस पर मनन किया: “पर उसने मुझसे कहा, ‘मेरा अनुग्रह तेरे लिए पर्याप्त है, क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है।’ इसलिए मैं अपनी निर्बलताओं पर और भी खुशी से घमंड करूँगा, ताकि मसीह की सामर्थ्य मुझ पर बनी रहे।” ये वे शब्द थे जो प्रभु ने प्रेरित पौलुस से तब कहे थे जब पौलुस ने उनसे तीन बार विनती की थी कि वे उसके “शरीर में लगे कांटे” को हटा दें। यह वचन पाकर, पौलुस को एहसास हुआ कि परमेश्वर के पर्याप्त अनुग्रह के द्वारा उसकी निर्बलता में परमेश्वर की सामर्थ्य सिद्ध होती है, और परिणामस्वरूप, वह बहुत आनन्दित हुआ। ज़रा सोचिए: पौलुस ने परमेश्वर से तीन बार अपने शरीर के उस कांटे को हटाने के लिए कहा था, लेकिन उसे वह जवाब नहीं मिला जिसकी उसे उम्मीद थी; इसके बजाय, उसे यह आश्वासन मिला, “मेरा अनुग्रह तेरे लिए पर्याप्त है।” ठीक इसी पर्याप्त अनुग्रह के कारण वह उस कांटे को सहते हुए भी बहुत आनन्दित हो सका। मेरे इस पर्याप्त अनुग्रह पर दोबारा विचार करने का कारण यह था कि पिछले गुरुवार, मेरे ससुर ने—तय सर्जरी न हो पाने के बावजूद—परमेश्वर के पर्याप्त अनुग्रह में अपने विश्वास को स्वीकार किया। जिस चर्च में वे सेवा करते हैं, वहाँ के पास्टर और बुजुर्गों के साथ मिलकर उन्होंने धन्यवाद दिया और बहुत आनन्द मनाया। हालाँकि मुझे पूरी जानकारी नहीं है, लेकिन मेरा मानना है कि ऐसी स्थिति में धन्यवाद देना और आनन्द मनाना आसान नहीं रहा होगा; उनकी प्रतिक्रिया देखकर, मैं यह माने बिना नहीं रह सका कि हमारा परमेश्वर सचमुच एक अच्छा परमेश्वर है। इसी बीच, गॉस्पेल गीत "गुड, गुड गॉड" (Good, Good God) याद आया: "अच्छा, अच्छा परमेश्वर, अच्छा, अच्छा परमेश्वर, मेरा सचमुच अच्छा परमेश्वर।" जिस तरह पौलुस और सीलास ने जेल में रहते हुए परमेश्वर की स्तुति की—जबकि

अगले ही दिन उन्हें मौत की सज़ा का सामना करना पड़ सकता था—वैसे ही परमेश्वर का पर्याप्त अनुग्रह हमें भी अपने जीवन में उसकी स्तुति करने में समर्थ बनाता है।

आज भजन संहिता 134:1–2 के अंश में, भजनकार "प्रभु की स्तुति करो" के आह्वान को दो बार दोहराता है। तो फिर, इस संदर्भ में "स्तुति करने" (bless) का क्या अर्थ है? बाइबल में ऐसे कई शब्द हैं जो "प्रशंसा" या "स्तुति" को दर्शाते हैं। इनमें से तीन शब्द सबसे ज़्यादा इस्तेमाल होते हैं। ये तीनों शब्द अलग-अलग नज़रिए और संदर्भों से 'स्तुति' (praise) का अर्थ समझाते हैं।

(1) पहला शब्द है "हिलेल" (hillel)।

पुराने नियम (Old Testament) में स्तुति के लिए सबसे ज़्यादा इस्तेमाल होने वाला यह शब्द है, और इसका मूल अर्थ है "बड़ाई करना" या "तारीफ़ करना"। इस क्रिया (verb) का इस्तेमाल लोगों की तारीफ़ करने (उत्पत्ति 12:15; 2 शमूएल 14:25; नीतिवचन 12:8) और परमेश्वर की स्तुति करने, दोनों ही स्थितियों में किया जाता है। इसके विपरीत, नए नियम (New Testament) में इसके समान ग्रीक क्रिया *aineo* का इस्तेमाल सिर्फ़ परमेश्वर के लिए किया जाता है। स्तुति की सेवा परमेश्वर की बड़ाई करने और उन्हें ऊँचा उठाने की सेवा है। इसमें यह समझना शामिल है कि परमेश्वर कितने महान हैं और उन्होंने कितने अद्‌भुत काम किए हैं, और फिर इन सच्चाइयों को देखकर विस्मय या श्रद्धा व्यक्त करना शामिल है। इस प्रकार, स्तुति परमेश्वर के स्वभाव और कामों पर ध्यान केंद्रित करने से शुरू होती है और आश्चर्य की भावना के साथ व्यक्त होती है। इसके अलावा, स्तुति के साथ प्रशंसा, उत्साह, गहरी भावना, गर्व और खुशी जैसी भावनाएँ जुड़ी होती हैं—ये भावनाएँ तब पैदा होती हैं जब हमारा अस्तित्व परमेश्वर के स्वभाव और कामों का अनुभव करता है। (2) दूसरा शब्द है "होदाह" (hodah)।

हालाँकि इसका अनुवाद अक्सर "धन्यवाद देना" के रूप में किया जाता है, लेकिन इसका मूल अर्थ है "स्वीकार करना" या "मानना" (confess)। नए नियम में इसके समान ग्रीक क्रिया *homologeo* का अर्थ भी "स्वीकार करना" है। *होदाह* का अर्थ हमारे समाज में "आभार" (gratitude) की अवधारणा से काफ़ी

अलग है—आभार वह प्रतिक्रिया है जो तब दिखाई जाती है जब कोई हमें कुछ अच्छा देता है या हम पर कोई उपकार करता है। इसके बजाय, *होदाह* और इसके संज्ञा रूप *तोदाह* (todah) का इस्तेमाल अक्सर मुश्किल हालात या संकट के संदर्भ में किया जाता है, जैसे भजन संहिता 50:14–15 और 2 इतिहास 20:21 में। दूसरे शब्दों में, *होदाह* मुश्किल हालात में परमेश्वर की स्तुति करने का काम है, यह याद रखते हुए कि भला और विश्वासयोग्य परमेश्वर पूरी दुनिया पर राज करता है और अपने बच्चों की रक्षा और देखभाल करता है। संकट के बीच परमेश्वर की स्तुति करने का मतलब है परेशानी से परे देखना और परमेश्वर के अधिकार, शक्ति और अद्भुत योजना को देखना; इसका मतलब है परमेश्वर पर भरोसा करना, तब भी जब हालात समझ से बाहर हों। स्तुति के ज़रिए की जाने वाली सेवा वह सेवा है जो परमेश्वर के अधिकार और शक्ति पर हमारी नज़र टिकाकर उन पर भरोसा बढ़ाती है। (3) तीसरा शब्द है "बेरेक" (berek), जो आज के पाठ, भजन संहिता 134:1–2 में आया है।

संशोधित कोरियाई संस्करण (गायेओक हंगुल) में, इस शब्द का अनुवाद विषय और कर्म (subject and object) के आधार पर तीन अलग-अलग तरीकों से किया गया है: (a) जब परमेश्वर किसी व्यक्ति को "बेरेक" करते हैं, तो इसका अनुवाद "आशीष देना" (आशीष प्रदान करना) होता है; (b) जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को "बेरेक" करता है, तो इसका अनुवाद "आशीष देना" (आशीष की कामना करना) होता है; और (c) अंत में, जब कोई व्यक्ति परमेश्वर को "बेरेक" करता है, तो इसका अनुवाद "स्तुति करना" या "आशीष देना" (महिमा करने के अर्थ में) होता है। यहाँ, परमेश्वर को आशीष देने का अर्थ यह स्वीकार करना या गवाही देना है कि परमेश्वर वास्तव में परमेश्वर हैं, न कि यह कि कोई मनुष्य परमेश्वर को आशीष दे रहा है। जहाँ पहले बताए गए शब्द *होदा* (hodah) का ध्यान परमेश्वर के स्वभाव पर होता है—जो स्तुति के दो पहलुओं में से एक है, जबकि दूसरा पहलू उनके कार्य हैं—वहीं *बेरेक* परमेश्वर के कार्यों, विशेष रूप से उनके द्वारा दी गई कृपा और आशीषों की गवाही देता है। इसके अलावा, जहाँ *होदा* में मुसीबत के समय परमेश्वर के स्वभाव को याद करना और स्वीकार करना शामिल है, वहीं *बेरेक* परमेश्वर की मदद से मुश्किलों से उबरने के लिए आभार व्यक्त करना है।

आज के पाठ में—जो 'ऊपर जाने का गीत' (Song of Ascents) है—भजनकार "प्रभु के सभी सेवकों" से परमेश्वर की स्तुति करने का आग्रह करता है, जो उनकी मदद से मुश्किलों से उबरने के लिए आभार व्यक्त

करना है (पद 1)। यहाँ, "प्रभु के सेवक" से तात्पर्य लेवियों (याजकों) से है जो पवित्र स्थान में परमेश्वर के लोगों की सेवा करते थे। विशेष रूप से, यह उन वफादार सेवकों की ओर इशारा करता है जो रात के समय भी प्रभु के पवित्र स्थान में सेवा करते थे। भजनकार इन सभी वफादार सेवकों से "प्रभु को आशीष देने" (यानी उनकी स्तुति करने) का आग्रह करता है। वह परमेश्वर के उन सभी सेवकों को—जिन्होंने परमेश्वर की वफादार मदद से पवित्र स्थान में निष्ठापूर्वक सेवा की—उन्हें आशीष देने के लिए बुलाता है। वह उन्हें "पवित्र स्थान की ओर [अपने] हाथ उठाकर" उन्हें आशीष देने का निर्देश देता है (पद 2)। यह आग्रह हृदय से, या पूरे अस्तित्व के साथ परमेश्वर को आशीष देने (स्तुति करने) का आह्वान करता है (पार्क युन-सन)। ऐसे लोगों के लिए परमेश्वर क्या करते हैं? बाइबल कहती है कि वे उन पर आशीष बरसाते हैं। आज के वचन का तीसरा पद देखिए: "स्वर्ग और पृथ्वी को बनाने वाले प्रभु, सिय्योन से तुम्हें आशीष दें।" जैसे भजनकार परमेश्वर के सभी वफादार सेवकों—जो रात में भी पवित्र स्थान में सेवा करते हैं—से प्रभु की स्तुति करने का आग्रह करता है, वैसे ही वह उन्हें आशीष भी देता है। खास तौर पर, उसने प्रार्थना की कि "स्वर्ग और पृथ्वी के रचयिता प्रभु" उन्हें आशीष दें; उन्हें "स्वर्ग और पृथ्वी के रचयिता प्रभु" कहकर संबोधित करने का कारण यह बताना है कि परमेश्वर के पास अपने सभी वफादार सेवकों को आशीष देने की असीम शक्ति है (पार्क युन-सन)। यही वह परमेश्वर है—जिसके पास आशीष देने की असीम शक्ति है—जो अपने सभी वफादार सेवकों को आशीष देता है।

परमेश्वर उन सभी सेवकों को आशीष देते हैं जो उनकी स्तुति करते हैं। चाहे हम किसी भी परिस्थिति में हों, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता से भरे हृदय के साथ उनकी स्तुति करें और उनकी पर्याप्त कृपा से समर्थित रहें।

प्रभु की स्तुति करो!

[भजन संहिता 135]

पिछले हफ़्ते बुधवार की प्रार्थना सभा में, हमने "प्रभु को धन्यवाद दो" विषय पर भजन संहिता 134 के आधार पर परमेश्वर के वचन पर मनन किया। हमें यह संदेश मिला कि परमेश्वर के सभी वफ़ादार सेवक—जो उसकी वफ़ादार मदद से विजयी जीवन जीते हैं—उन्हें धन्यवाद के साथ परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। इसके बाद, पिछले शुक्रवार और शनिवार को हमारे रात भर चलने वाले प्रार्थना शिविर के दौरान, हमने नहेमायाह अध्याय 8 पर मनन किया और एज्रा तथा इस्राएल के लोगों को परमेश्वर के वचन से शुरू हुई जागृति के बीच परमेश्वर की स्तुति करते देखा। उन्होंने परमेश्वर की स्तुति क्यों की? इसलिए क्योंकि महान परमेश्वर ने अपनी अद्‌भुत शक्ति से केवल 52 दिनों में यरूशलेम की दीवारों को फिर से बनाने का बहुत बड़ा काम पूरा किया था। इन अंशों से हमें क्या सीख मिलती है? यही कि हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। हमारा परमेश्वर स्तुति के योग्य है। जब हम उन उद्धार के कामों पर विचार करते हैं जो परमेश्वर ने हमारे जीवन में किए हैं, अभी कर रहा है और आगे करेगा, तो हम उसकी स्तुति करने के लिए प्रेरित होते हैं।

आज के अंश, भजन संहिता 135:1–3 में, भजनकार हमें चार बार "प्रभु की स्तुति करने" के लिए प्रोत्साहित करता है। वह बार-बार हमें इस तरह परमेश्वर की स्तुति करने के लिए क्यों कहता है? पाठ इसका कारण बताता है: "प्रभु की स्तुति करो, क्योंकि प्रभु भला है; उसके नाम का गुणगान करो, क्योंकि यह प्यारा है" (पद 3)। भजन की शुरुआत में ही, भजनकार हमें परमेश्वर की स्तुति करने के लिए बुलाता है क्योंकि वह भला है। यहाँ सीख यह है कि हमें परमेश्वर की स्तुति केवल इसलिए करनी चाहिए कि वह कौन है—क्योंकि वह परमेश्वर है। भजनकार स्वीकार करता है कि इस भले परमेश्वर की स्तुति करना एक आनंददायक काम है (पद 3 में इसे "सुहावना" या "सुंदर" बताया गया है)। क्या हम भी, भजनकार की तरह, आज परमेश्वर की

स्तुति करने का सच्चा आनंद महसूस करते हैं—ऐसा आनंद जो उसकी भलाई को चखने और यह जानने से मिलता है कि वह सचमुच भला है? भले ही हम उन कामों को पूरी तरह से न समझ सकें जो परमेश्वर हमारे जीवन में करता है, हमें यह भरोसा रखना चाहिए कि, क्योंकि वह भला है, वह सब कुछ भलाई के लिए करेगा; केवल उसकी भलाई पर भरोसा करते हुए, हमें विश्वास के साथ उसकी स्तुति करनी चाहिए।

पद 4 से शुरू करते हुए, भजनकार और विस्तार से बताता है कि हमें परमेश्वर की स्तुति क्यों करनी चाहिए। इसके लिए वे चार अलग-अलग कारण बताते हैं (जैसा कि पार्क युन-सन ने बताया है)। आज, मैं इन चार कारणों पर विचार करना चाहता हूँ। इस विचार-मंथन के ज़रिए, मुझे उम्मीद है कि हम सभी परमेश्वर की भलाई को समझ पाएँगे और उनकी स्तुति करने का आनंद ले पाएँगे।

पहला कारण यह है कि हमें परमेश्वर की स्तुति इसलिए करनी चाहिए क्योंकि उन्होंने हमें अपनी खास संपत्ति के रूप में चुना है।

भजन संहिता 135:4 पर विचार करें: "क्योंकि प्रभु ने याकूब को अपने लिए, इस्राएल को अपनी खास संपत्ति के रूप में चुना है।" भजनकार कहते हैं कि परमेश्वर ने इस्राएल को अपनी खास संपत्ति के रूप में "अपने लिए" चुना था। परमेश्वर इस्राएलियों जैसे लोगों को—जिनके दिल कठोर थे और जिन्हें पाप करने में मज़ा आता था—अपनी खास संपत्ति के रूप में "अपने लिए" कैसे चुन सकते थे? इस सवाल का जवाब पाने के लिए, हमें इस्राएलियों पर ध्यान नहीं देना चाहिए, जिन्हें चुना गया था। हम "अपने लिए" वाक्यांश का अर्थ तभी समझ सकते हैं जब हम परमेश्वर की ओर देखें, जिन्होंने उन्हें चुना था। परमेश्वर ने इस्राएलियों जैसे लोगों को "अपने लिए" क्यों चुना? इसका कारण यह है कि परमेश्वर उनसे प्रेम करते थे। व्यवस्थाविवरण 7:6–8 देखें: "क्योंकि तुम अपने प्रभु परमेश्वर के लिए एक पवित्र लोग हो; तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने तुम्हें अपने लिए एक खास लोग, पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोगों में से एक अनमोल खज़ाना बनने के लिए चुना है। प्रभु ने तुमसे प्रेम इसलिए नहीं किया और न ही तुम्हें इसलिए चुना क्योंकि तुम संख्या में किसी अन्य लोगों से ज़्यादा थे, क्योंकि तुम सभी लोगों में सबसे कम थे; बल्कि इसलिए क्योंकि प्रभु तुमसे प्रेम करते हैं..." परमेश्वर ने मुझे और आपको इसलिए चुना क्योंकि वे हमसे प्रेम करते हैं। चूँकि परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं, इसलिए उन्होंने हमें अपनी खास संपत्ति बनने के लिए चुना। यहाँ "खास संपत्ति" (या "अनमोल संपत्ति") शब्द का अर्थ

"अनमोल लोग" है (व्यवस्थाविवरण 26:18)। परमेश्वर ने न केवल मुझे और आपको अनमोल लोग बनाया है, बल्कि हमें ऐसा माना भी है (व्यवस्थाविवरण 26:18)। इसलिए, हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। परमेश्वर के प्रेम में उनके अनमोल लोगों के रूप में चुने जाने के कारण, हमें निश्चित रूप से उनकी स्तुति करनी चाहिए।

दूसरा कारण यह है कि हमें परमेश्वर की स्तुति इसलिए करनी चाहिए क्योंकि हम उनकी दी हुई आम कृपा का आनंद लेते हैं। भजन संहिता 135:6 को देखिए: "प्रभु जो कुछ चाहते हैं, वही करते हैं—स्वर्ग और पृथ्वी में, समुद्रों और सभी गहरी जगहों में।" महान परमेश्वर, जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की (पद 5), वही प्राकृतिक दुनिया की सभी चीज़ों को नियंत्रित करते हैं। वे प्रकृति की सभी घटनाओं—चाहे वे बड़ी हों या छोटी—को अपनी इच्छा के अनुसार संचालित करते हैं (पद 6), और यह काम वे अभी भी कर रहे हैं। परमेश्वर का सभी चीज़ों पर सर्वोच्च अधिकार है, और वे इस पृथ्वी पर रहने के लिए चुने गए अपने प्रिय लोगों की देखभाल के लिए प्राकृतिक दुनिया को भी संचालित करते हैं। उदाहरण के लिए, लूका 15 में 'खोए हुए बेटे' की कहानी पर विचार करें: परमेश्वर ने उस देश में भारी अकाल डाला जहाँ वह बेटा रह रहा था—जिसने अपने पिता की संपत्ति को गलत जीवनशैली में बर्बाद कर दिया था (पद 14); इसी तंगी ने उसे अपने पिता के पास लौटने के लिए मजबूर किया। एक और उदाहरण 'निर्गमन' (Exodus) का है, जब परमेश्वर ने फिरौन और मिस्रवासियों पर विपत्तियाँ—जैसे ओले और अंधेरा—भेजकर इस्राएलियों को फिरौन से छुड़ाया। इस तरह, परमेश्वर प्रकृति को संचालित करते हैं और हममें—यानी उनके चुने हुए लोगों में—काम करते रहते हैं। जहाँ परमेश्वर हमें भरपूर फसल के ज़रिए समृद्धि देते हैं, वहीं वे हमें सूखे के समय तंगी का अनुभव भी कराते हैं। जैसे उन्होंने राजा अहाब के पाप करने पर बारिश रोक दी थी और फिर एलिय्याह की प्रार्थना पर उसे दोबारा भेजा, वैसे ही परमेश्वर प्रकृति को नियंत्रित करते हैं ताकि हमें सही समय पर ज़रूरी बारिश मिल सके, या जब उन्हें उचित लगे तो वे उसे रोक सकें। सबसे ज़रूरी बात यह है कि हम विश्वास के साथ इन सभी घटनाओं में परमेश्वर के सर्वोच्च कार्यों को स्वीकार करें। इसके अलावा, हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए और उनकी सर्वोच्च इच्छा के तहत मिलने वाली प्राकृतिक कृपा (या सामान्य कृपा) के लिए उनका धन्यवाद करना चाहिए।

तीसरी बात, हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए क्योंकि उन्होंने हमें उद्धार की विशेष कृपा प्रदान की है।

भजन संहिता 135:12 को देखिए: "उन्होंने उनकी भूमि को विरासत के रूप में दिया, अपने लोगों—इस्राएल—को विरासत के रूप में दिया।" धर्मशास्त्र में, परमेश्वर की कृपा को दो प्रकारों में बांटा गया है: सामान्य कृपा (या प्राकृतिक कृपा) और विशेष कृपा। सामान्य कृपा वह कृपा है जो परमेश्वर पूरी मानवता पर बरसाते हैं—एक ऐसी कृपा जिसके लिए कोई योग्यता ज़रूरी नहीं है, और जिसके कारण बुरे लोग भी बारिश का लाभ उठाते हैं और खेती कर पाते हैं। वहीं, विशेष कृपा वह कृपा है जो परमेश्वर केवल संतों—यानी अपने लोगों—को प्रदान करते हैं। यह खास कृपा क्या है? यह हमारा उद्धार है। उद्धार पाए हुए लोगों के तौर पर, हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। आज के वचन, भजन संहिता 135:8–14 में, भजनकार परमेश्वर के उन महान कामों का ज़िक्र करता है जिनके ज़रिए उसने इज़राइल के लोगों—जिन्हें उसने प्यार किया और चुना था—को मिस्र से बाहर निकाला (निर्गमन के समय)। भजनकार शुरुआत में मिस्र पर परमेश्वर द्वारा भेजी गई दस चमत्कारी विपत्तियों का वर्णन करता है (वचन 9), और उनमें से सबसे बड़ी विपत्ति पर ज़ोर देता है—दसवीं विपत्ति, जिसमें इंसान और जानवर, दोनों की पहली संतान मारी गई (वचन 8)। फिर वह बताता है कि कैसे परमेश्वर ने अपनी शक्ति का इस्तेमाल करके कनान की जातियों को हराया, जब इज़राइल 'वादे की भूमि' में दाखिल हुआ (वचन 10–11), और कैसे उसने कनान को इज़राइलियों को उनकी विरासत के तौर पर दिया (वचन 12)। आखिर में, वचन 13–14 में, भजनकार कहता है कि परमेश्वर के उद्धार के काम का प्रचार हर पीढ़ी में किया जाना चाहिए। इसकी वजह यह है कि यह काम इज़राइल के लिए परमेश्वर के प्यार का सबूत है (पार्क युन-सन)। इसलिए, अगर हम परमेश्वर से प्यार करते हैं, तो हमें उद्धार की उसकी खास कृपा का प्रचार करना चाहिए। साथ ही, हमें उस उद्धार की कृपा को नहीं भूलना चाहिए जो परमेश्वर ने हमारे अतीत में दिखाई है; उसे याद करके और दूसरों को बताकर, हम परमेश्वर के उद्धार का भरोसा रख सकते हैं—न सिर्फ़ अपने वर्तमान जीवन में, बल्कि भविष्य में आने वाली मुश्किलों और परेशानियों के बीच भी। ऐसे भरोसे के साथ, हमें विश्वास में परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए।

चौथी और आखिरी बात, हमें परमेश्वर की स्तुति इसलिए करनी चाहिए क्योंकि सभी मूर्तियों के विपरीत, वही सच्चे परमेश्वर हैं।

भजन संहिता 135:15–17 पर विचार करें: "अन्य जातियों की मूर्तियाँ चाँदी और सोने की हैं, जो मनुष्यों के हाथों की कारीगरी हैं। उनके मुँह तो हैं, पर वे बोल नहीं सकतीं; आँखें हैं, पर देख नहीं सकतीं; कान हैं, पर सुन नहीं सकतीं; और न ही उनके मुँह में कोई साँस है।" यहाँ, भजनकार बताता है कि परमेश्वर के चुने हुए और अनमोल लोगों को—जो उद्धार देने वाले परमेश्वर पर विश्वास करते हैं—उनकी स्तुति क्यों करनी चाहिए। असल में, वह कहता है कि हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए क्योंकि केवल हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर ही सच्चे परमेश्वर हैं (पार्क युन-सन)। झूठी मूर्तियों के मुँह तो होते हैं पर वे बोल नहीं सकतीं, आँखें होती हैं पर देख नहीं सकतीं, और कान होते हैं पर सुन नहीं सकतीं। ये निर्जीव देवता, जो साँस भी नहीं ले सकते, पूरी तरह से झूठे हैं। इसलिए, भजनकार कहता है: "जो उन्हें बनाते हैं और जो उन पर भरोसा करते हैं, वे सब उन्हीं के समान हो जाएँगे" (पद 18)। क्योंकि मूर्ति-पूजा झूठ पर आधारित है, इसलिए यह उसे करने वालों के लिए केवल दुःख लाती है (पार्क युन-सन)। लेकिन परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया कि हमें अपने अनमोल लोगों के रूप में चुना और हमारा उद्धार किया। यीशु मसीह में स्थापित वाचा के माध्यम से, हम परमेश्वर की वाचा के लोग बन गए हैं और हमें एक अनंत विरासत—यानी अनंत जीवन—प्राप्त हुआ है। वह हमारे परमेश्वर बन गए हैं, और हम उनके लोग बन गए हैं। इसलिए, हमें सच्चे परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए जो हमारे उद्धारकर्ता हैं। आज के अंश, भजन संहिता 135:1–3 में, भजनकार हमें चार बार "प्रभु की स्तुति करने" के लिए प्रोत्साहित करता है; इसी तरह, अंतिम आयतों (19–20) में, "प्रभु को धन्य कहने" का आह्वान चार बार आता है: "हे इस्राएल के घराने, प्रभु को धन्य कहो! हे हारून के घराने, प्रभु को धन्य कहो! हे लेवी के घराने, प्रभु को धन्य कहो! तुम जो प्रभु का भय मानते हो, प्रभु को धन्य कहो!" जिस तरह भजनकार शुरुआत में हमें चार बार "प्रभु की स्तुति करने" के लिए प्रेरित करता है, उसी तरह वह अंत में भी हमें चार बार "प्रभु को धन्य कहने" के लिए प्रेरित करता है। वह हमें प्रभु की स्तुति करने के लिए बुलाता है क्योंकि परमेश्वर ने हमें अपनी खास संपत्ति के रूप में चुना है—हमें न केवल सामान्य कृपा का आशीर्वाद दिया है, बल्कि उद्धार की कृपा भी दी है—और इस तरह वह हमारा सच्चा परमेश्वर बन गया है। फिर वह यह अंतिम

बात कहता है: "यरूशलेम में रहने वाले प्रभु की स्तुति सिय्योन से हो। हालेलुयाह!" (पद 21)। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप और मैं प्रभु परमेश्वर की भलाई का अनुभव करें—जो हर तरह की स्तुति के योग्य है—और उसकी स्तुति करने का आनंद लें।

“प्रभु का धन्यवाद करो”

[भजन संहिता 136]

पिछले हफ़्ते शनिवार की सुबह की प्रार्थना सभा में, हमने “आध्यात्मिक फ़िल्टर” के विचार पर चिंतन किया। यह विचार एक टेक्नीशियन की वजह से आया जो हमारे चर्च का वॉटर प्यूरीफ़ायर ठीक करने आया था और उसने बताया कि समस्या फ़िल्टर में ही थी। जैसे वॉटर प्यूरीफ़ायर में खराब फ़िल्टर पीने के पानी के बहाव में रुकावट डालता है, वैसे ही मुझे एहसास हुआ कि हमारे चर्च के आध्यात्मिक फ़िल्टर में समस्या होने पर कुछ बातें सही ढंग से व्यक्त नहीं हो पातीं। यह चिंतन खास तौर पर इफिसियों 5:15–21 पर आधारित था। इस संदर्भ में, “आध्यात्मिक फ़िल्टर” का मतलब “बुद्धिमत्ता” है। दूसरे शब्दों में, हमने सीखा कि हमारे चर्च को आध्यात्मिक समझ का इस्तेमाल करना चाहिए—परमेश्वर से मिली बुद्धिमत्ता की अगुवाई में—ताकि हम उसे स्वीकार करें जिसे स्वीकार किया जाना चाहिए और उसे अस्वीकार करें जिसे नहीं किया जाना चाहिए। हमने सीखा कि हमें अपने समय का सही इस्तेमाल करना चाहिए, प्रभु की इच्छा को समझना चाहिए और पवित्र आत्मा से भरा जीवन जीना चाहिए; इसके अलावा, हमने सीखा कि ऐसा पवित्र आत्मा से भरा जीवन तीन तरीकों से ज़ाहिर होता है: “स्तुति/आराधना,” “धन्यवाद,” और “अधीनता।” यानी, जो लोग पवित्र आत्मा से भरे होते हैं, वे परमेश्वर की स्तुति और आराधना करते हैं, पिता परमेश्वर का दिल से लगातार धन्यवाद करते हैं, और मसीह के प्रति आदर के कारण एक-दूसरे के अधीन रहते हैं (पद 19–21)। क्या आप और मैं सचमुच पवित्र आत्मा से भरा जीवन जी रहे हैं?

पिछले हफ़्ते बुधवार की प्रार्थना सभा में, हमें भजन संहिता 135 के आधार पर “प्रभु की स्तुति करने” का प्रोत्साहन मिला। इसी भावना के साथ, आज के वचन—भजन संहिता 136:1—को देखते हुए, हम पाते हैं कि

भजनकार हमसे आग्रह कर रहा है: “प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसका प्रेम सदा बना रहता है।” भजनकार के परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिए प्रोत्साहित करने का कारण यह है कि परमेश्वर भला है। भजन संहिता 135 में, भजनकार ने हमें “प्रभु की स्तुति करने” के लिए प्रोत्साहित किया क्योंकि वह भला है, जबकि आज के अंश, भजन संहिता 136 में, वह हमें “प्रभु का धन्यवाद करने” के लिए प्रोत्साहित करता है। इस अंश में, परमेश्वर का धन्यवाद करने का आह्वान करते हुए, वह हर एक पद में—कुल छब्बीस बार—यह घोषित करता है कि “उसका अटूट प्रेम सदा बना रहता है।” हमें परमेश्वर का धन्यवाद इसलिए करना चाहिए क्योंकि वह हमसे हमेशा रहने वाला प्रेम करता है और अपनी भलाई हम पर प्रकट करता है। परमेश्वर ने अतीत में हम पर अपनी भलाई दिखाई है, वर्तमान में भी दिखा रहा है, और भविष्य में भी दिखाता रहेगा। परमेश्वर इस तरह से अपनी भलाई हम पर क्यों प्रकट करता है? ऐसा इसलिए है क्योंकि वह हमसे अपने अनंत प्रेम से प्रेम करता है।

इस संदर्भ में, भजनकार चार खास कारण बताता है कि हमें परमेश्वर का धन्यवाद क्यों करना चाहिए।

पहला कारण यह है कि हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए क्योंकि वह महान है (पद 1–3)।

भजन संहिता 136:2–3 को देखें: "देवताओं के परमेश्वर का धन्यवाद करो, क्योंकि उसका अटूट प्रेम सदा बना रहता है। प्रभुओं के प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि उसका अटूट प्रेम सदा बना रहता है।" भजनकार कहता है कि हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए क्योंकि वह सभी देवताओं और सभी प्रभुओं से श्रेष्ठ है—यानी वह देवताओं में सच्चा परमेश्वर और प्रभुओं में सच्चा प्रभु है। दूसरे शब्दों में, वह हमें बताता है कि हमें परमेश्वर का धन्यवाद इसलिए करना चाहिए कि वह कौन है। सुसमाचार का गीत "Name Above All Names" (सभी नामों से ऊपर नाम) याद आता है: "सभी नामों से ऊपर नाम, यीशु प्रभु है, यीशु प्रभु है / सब झुकें और आराधना करें; यीशु सबका प्रभु है / यीशु प्रभु है, यीशु प्रभु है; सारी सृष्टि ऊपर देखती है / उसके सिंहासन के सामने महिमा देती है; यीशु, यीशु, यीशु प्रभु है।" हमें परमेश्वर का धन्यवाद, स्तुति और आराधना इसलिए करनी चाहिए क्योंकि वह ऐसा परमेश्वर और प्रभु है जो अन्य सभी देवताओं और प्रभुओं से श्रेष्ठ है।

यह महान और भला परमेश्वर अभी भी आपसे और मुझसे अपने हमेशा रहने वाले प्रेम से प्रेम करता है। इसलिए, हमें अपने महान परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए।

दूसरा कारण, जिसके लिए हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, वह स्वर्ग और पृथ्वी की उसकी रचना के वृत्तांत में मिलता है (पद 4–9)।

भजन संहिता 136:4 को देखें: "उसका धन्यवाद करो जो अकेले ही महान चमत्कार करता है, क्योंकि उसका अटूट प्रेम सदा बना रहता है।" पिछले सप्ताह बुधवार की प्रार्थना सभा के दौरान, भजन संहिता 135 पर मनन करते हुए, हमने सीखा कि परमेश्वर की स्तुति करने का एक दूसरा खास कारण वह प्राकृतिक अनुग्रह है जो वह प्रदान करता है (पद 6–7)। जिस महान परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की (पद 5), वही प्राकृतिक दुनिया की हर चीज़ को नियंत्रित करता है। वह प्रकृति में होने वाली हर घटना—चाहे वह बड़ी हो या छोटी—को अपनी इच्छा के अनुसार संचालित करता है (पद 6); असल में, वह प्राकृतिक दुनिया को इस तरह से चलाता है कि उसके चुने हुए, अनमोल लोग पृथ्वी पर रह सकें। इस प्रकार, हमने सीखा कि हमें इस प्राकृतिक कृपा के लिए परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। आज के भाग, भजन संहिता 136:4–9 में, भजनकार हमें स्वर्ग और पृथ्वी की रचना में परमेश्वर द्वारा किए गए "महान चमत्कारों" के लिए धन्यवाद देने का आह्वान करता है। धन्यवाद देने का मुख्य कारण परमेश्वर का स्वभाव—यानी वह कौन है—बताने के बाद (पद 1–3), भजनकार पद 4 में उन "महान चमत्कारों" की ओर मुड़ता है जो परमेश्वर अकेले करता है। तो फिर, वे "महान चमत्कार" क्या हैं जो परमेश्वर अकेले करता है? भजनकार पद 5 से 9 तक इनका वर्णन करता है। वह हमें बताता है कि हमें सृष्टि के महान चमत्कारों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए: उसने "बुद्धि से स्वर्ग बनाया" (पद 5), "पानी के ऊपर पृथ्वी को फैलाया" (पद 6), "महान ज्योतियाँ बनाईं" (पद 7), "दिन पर शासन करने के लिए सूर्य को नियुक्त किया" (पद 8), और "रात पर शासन करने के लिए चंद्रमा और तारों को नियुक्त किया" (पद 9)। सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की, सृष्टि के सभी चमत्कारों के माध्यम से हमें अपनी महानता और महिमा दिखाता है। इसलिए, उसके द्वारा बनाए गए स्वर्ग और पृथ्वी के माध्यम से, हम उसकी महानता को [पहचानते] हैं और... जब हम उसकी महानता को देखते हैं तो हमें परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए। सुसमाचार गीत "ग्रेट इज़ द लॉर्ड" (प्रभु महान है) याद आता है: "परमेश्वर के नगर में, उसके पवित्र पर्वत पर महान प्रभु की महिमा करो; ऊँचाई में सुंदर, पूरी पृथ्वी का

आनंद—उत्तर में सिय्योन पर्वत, महान राजा का नगर। (कोरस) हालेलुयाह गाओ, हालेलुयाह गाओ, हालेलुयाह गाओ—महान राजा का नगर।" हमें परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए क्योंकि महान प्रभु ने महान कार्य किए हैं और अपनी महान महिमा प्रकट की है।

तीसरी बात, हमें परमेश्वर को धन्यवाद इसलिए देना चाहिए क्योंकि उसने हमें छुटकारा दिलाया है (पद 10–22)। आज के पाठ—भजन संहिता 136:10–22—में भजनकार हमें परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिए बुलाता है। वह याद दिलाता है कि कैसे परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाया, जंगल में बड़े चमत्कार किए (पद 4), उन्हें कनान के 'वादे की भूमि' तक पहुँचाया और वह ज़मीन उन्हें विरासत में दी। वह हमें धन्यवाद देने के लिए प्रेरित करता है और याद दिलाता है कि कैसे परमेश्वर ने—अपनी शक्तिशाली भुजा और फैले हुए हाथ से (पद 12)—मिस्र के पहलौठे बच्चों को मारा (पद 10) और इस्राएलियों को बाहर निकाला (पद 11); कैसे उन्होंने लाल सागर को दो भागों में बाँटा (पद 13), जिससे इस्राएली सूखी ज़मीन पर से पार जा सके (पद 14) और फिरौन तथा उसकी सेना को समुद्र में डुबो दिया (पद 15); कैसे उन्होंने जंगल में उनकी अगुवाई की (पद 16) और बड़े राजाओं (पद 17) तथा मशहूर राजाओं (पद 18) को हराया, जिनमें बाशान का राजा ओग भी शामिल था (पद 20); और कैसे आखिरकार उन्होंने कनान की 'वादे की भूमि' इस्राएल को विरासत में दी (पद 21–22)। यह पाठ उस खास कृपा के बारे में बताता है जो परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों पर करता है—वे लोग जिनसे उसने प्रेम किया और जिन्हें अपनी खास संपत्ति और अनमोल लोग बनाया (135:4)। दूसरे शब्दों में, हमें परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद इसलिए करना चाहिए क्योंकि उसने हमें बचाने वाली कृपा दी है। परमेश्वर की खास कृपा पाने वालों के तौर पर, हमें उसका धन्यवाद करना चाहिए—और बार-बार धन्यवाद करना चाहिए। क्योंकि उसने आपसे और मुझसे प्रेम किया... परमेश्वर, जिसने हमें चुना और शैतान के राज्य—जिसकी तुलना मिस्र से की गई है—से छुड़ाया, वह इस दुनिया में हमारी अगुवाई कर रहा है, जो एक जंगल की तरह है। उद्धार की कृपा पाने वालों के तौर पर, हमें परमेश्वर का अनंत धन्यवाद करना चाहिए, जिसने हमें हमेशा की विरासत और सदा का जीवन दिया है।

चौथी बात, हमें परमेश्वर का धन्यवाद इसलिए करना चाहिए क्योंकि वह हमारी देखभाल करता है (पद 23–26)।

अपनी देखभाल के ज़रिए, परमेश्वर उन लोगों के जीवन में काम करता है जिन्हें उसने चुना है और जिनसे वह प्यार करता है—वह उनकी रक्षा करता है, उन्हें रास्ता दिखाता है और उनकी ज़रूरतें पूरी करता है—और इस तरह अपनी महिमा ज़ाहिर करता है। भजन संहिता 136:23 में परमेश्वर की देखभाल का ज़िक्र है, जिसमें यह बात शामिल है कि उसने इस्राएल के लोगों को "मुसीबत या दीन-हीन हालत" में पड़ने दिया। यहाँ, "दीन-हीन हालत" का मतलब है बेबीलोन में उनकी गुलामी। परमेश्वर ने इस्राएलियों को ऐसी बुरी हालत में क्यों पड़ने दिया? ऐसा उनके पापों की वजह से हुआ। जब इस्राएल के लोगों ने पाप किया और पछतावा नहीं किया, तो परमेश्वर ने उन्हें उनके गलत कामों के नतीजे के तौर पर इस अपमान का अनुभव करने दिया। नतीजतन, उस बुरी हालत में रहते हुए, इस्राएलियों को अपने पापों का एहसास हुआ और उन्होंने पछतावा किया। परमेश्वर ने क्या किया? उसने उन्हें उनके दुश्मनों से छुड़ाया (पद 24)। हालाँकि परमेश्वर ने अपने प्यारे बच्चों—इस्राएल—को उनके पापों के लिए सुधारने के वास्ते बेबीलोन का इस्तेमाल किया था, लेकिन आखिर में उसने बेबीलोन को हरा दिया, अपने लोगों को उनके हाथों से बचाया और उन्हें यहूदा की ज़मीन पर लौटने का मौका दिया। इसके बाद, परमेश्वर ने उन्हें भोजन दिया (पद 25)। हमें अपनी रोज़ की रोटी देने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए। जब हमें अपनी रोज़ की ज़रूरत की चीज़ें मिलती हैं, तो हमें उस परमेश्वर के प्रति शुक्रगुज़ार होना चाहिए जो हमें ये चीज़ें देता है और हमसे प्यार करता है। हमें "स्वर्ग के परमेश्वर का धन्यवाद" करना चाहिए। क्यों? क्योंकि परमेश्वर का प्यार और दया हमेशा बनी रहती है (पद 26)।

आप किसी व्यक्ति के विश्वास का अंदाज़ा इस बात से लगा सकते हैं कि वह कितनी बार परमेश्वर का धन्यवाद करता है। जो विश्वासी परमेश्वर की कृपा और प्यार का अनुभव करते हुए उसका धन्यवाद करते हैं, वे सच में परिपक्व होते हैं। इसके उलट, चाहे कोई विश्वासी किसी भी ओहदे या पद पर हो, अगर उसकी बातों में शिकायत और असंतोष झलकता है, तो वह अपरिपक्व है। आइए हम सब परमेश्वर का धन्यवाद करें—सिर्फ़ इसलिए कि वह परमेश्वर है। हम उन महान चमत्कारों के बारे में सोचकर भी धन्यवाद करते हैं जो उसने किए हैं, जैसे स्वर्ग और पृथ्वी की रचना और उद्धार की कृपा। इसके अलावा, हमें परमेश्वर की देखभाल के लिए भी धन्यवाद करना चाहिए; आइए हम उस परमेश्वर का धन्यवाद करें जो हमें तब ऊपर उठाता है जब हम मुश्किल या दीन-हीन हालत में होते हैं और हमें हमारी रोज़ की रोटी देता है।

परमेश्वर का धन्यवाद करें!

“प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसकी करुणा सदा बनी रहती है” (भजन संहिता 136:1)।

हमें थैंक्सगिविंग (धन्यवाद दिवस) कैसे मनाना चाहिए? खासकर आज जब हम थैंक्सगिविंग संडे मना रहे हैं, तो हमें क्या करना चाहिए? हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए। आप किन कारणों से परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं?

जब हम बीते हुए साल पर नज़र डालते हैं, तो मैं चाहता हूँ कि हम सब मिलकर इस संयुक्त थैंक्सगिविंग संडे सर्विस के दौरान परमेश्वर का धन्यवाद करें। हालाँकि हमने न केवल संयुक्त राज्य अमेरिका में बल्कि पूरी दुनिया में आर्थिक कठिनाइयों का सामना किया है—और अभी भी कर रहे हैं—फिर भी आइए हम सब परमेश्वर की ओर देखें और ऐसी परिस्थितियों में भी धन्यवाद करें। हमें परमेश्वर का धन्यवाद क्यों करना चाहिए? इसके दो कारण हैं:

पहला कारण यह है कि परमेश्वर भला है।

क्या आप मानते हैं कि परमेश्वर भला है? यदि आपने "हाँ" या "आमीन" कहा है, तो क्या आप मानते हैं कि परमेश्वर *हमेशा* भला है? यदि आप अभी किसी कठिन समय से गुज़र रहे हैं, तो क्या आप तब भी यह स्वीकार कर सकते हैं कि परमेश्वर भला है? इस साल को पीछे मुड़कर देखते हुए, मेरा मानना है कि परमेश्वर ने हमारे चर्च परिवार के प्रति अपनी भलाई दिखाई है। चूँकि परमेश्वर भला है, इसलिए वह हम पर भलाई किए बिना नहीं रह सकता। इसलिए, मेरा मानना है कि पिछले साल की विभिन्न घटनाओं के माध्यम से,

परमेश्वर ने सब कुछ भलाई के लिए काम में लाया है—और आगे भी ला रहा है। तो आइए, हम सब उसकी भलाई पर भरोसा रखते हुए परमेश्वर का धन्यवाद करें। परमेश्वर भला है। हर समय!

दूसरा कारण जिसके लिए हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, वह यह है कि उसकी करुणा (प्रेम) सदा बनी रहती है।

दोस्तों, जिन आर्थिक कठिनाइयों या अन्य मुश्किलों का हम सामना करते हैं, वे ज़्यादा से ज़्यादा सत्तर या अस्सी साल तक ही रहती हैं—हालाँकि, असल में, वे शायद इतने लंबे समय तक नहीं टिकेंगी। लेकिन, हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम सत्तर या अस्सी साल की अवधि तक सीमित नहीं है; उसका प्रेम अनंत है। परमेश्वर ने दुनिया की नींव रखे जाने से पहले ही हमसे प्रेम किया और हमें चुना (इफिसियों 1:4)। उसने अपनी कृपा से हमें विश्वास का अनमोल उपहार दिया (2:8)। उसने हमें यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करने के योग्य भी बनाया। परिणामस्वरूप, उसने हमें अनंत जीवन का उपहार दिया है (रोमियों 6:23)। अगर हम परमेश्वर के इस अनंत प्रेम का थोड़ा सा भी हिस्सा समझ लें, तो क्या हम उनका धन्यवाद नहीं करेंगे? जब मैं इस साल को पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मैं खास तौर पर उस प्रेम के लिए आभारी हूँ जो परमेश्वर ने अपने वचन के ज़रिए हम पर ज़ाहिर किया है। दूसरे शब्दों में, मैं धन्यवाद देता हूँ क्योंकि मैंने परमेश्वर के वचन के ज़रिए उनके प्रेम का अनुभव किया है—और अब भी कर रहा हूँ। इस पूरे साल के दौरान—जो हमारा "वचन पर मनन करने का साल" था—जब आपने परमेश्वर के वचन को पढ़ा, सुना, उस पर मनन किया और उसका अध्ययन किया, तो निश्चित रूप से आपको उनसे अनुग्रह मिला होगा। उस अनुग्रह के ज़रिए मैंने परमेश्वर के जिस प्रेम का अनुभव किया, उसे मैंने संक्षेप में तीन बिंदुओं में बताया है:

(1) परमेश्वर ने अपने वचन के ज़रिए मुझे शक्ति दी।

खास तौर पर, उन्होंने रोमियों की पत्री के संदेश के ज़रिए मेरे विश्वास को बढ़ाकर मुझे मज़बूत किया। (2) परमेश्वर ने अपने वचन के ज़रिए मेरा मार्गदर्शन किया।

खास तौर पर, परमेश्वर ने भजन-संहिता के ज़रिए मेरा मार्गदर्शन किया और मुझे उनकी प्रभुता पर विश्वास के साथ प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया—उन्हें सच्चा परमेश्वर मानते हुए।

(3) परमेश्वर ने मुझे सबसे बड़ी खुशखबरी—यीशु मसीह का सुसमाचार—सुनने का मौका देकर मुझमें आशा जगाई।

परमेश्वर ने न केवल अपने वचन के ज़रिए मेरी आत्मा को नई ज़िंदगी दी, बल्कि उसी वचन के ज़रिए यीशु मसीह पर और गहराई से मनन करने का मौका देकर मुझमें आशा भी जगाई।

बीते हुए साल को पीछे मुड़कर देखते हुए आपको कैसा लग रहा है? आइए हम सब परमेश्वर का धन्यवाद करें और उस अनुग्रह को याद करें जो उन्होंने हमें तब दिया जब हम उनके वचन पर मनन कर रहे थे। हमारा परमेश्वर भला है। हमारे प्रति उसकी दया (प्रेम) हमेशा बनी रहती है। इसलिए, आइए हम सब धन्यवाद के साथ परमेश्वर की स्तुति और आराधना करें।

"प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसका प्रेम हमेशा बना रहता है" (भजन-संहिता 136:1)।

जब हम चर्च के बारे में सोचते हैं

[भजन संहिता 137]

14 मई, 2009 को, मुझे ऑनलाइन समाचार साइट *कुकमिन इल्बो मिशन लाइफ* पर एक लेख मिला, जिसका शीर्षक था "कोरियाई चर्च में आत्म-चिंतन का आग्रह करते हुए लगभग 300 ईसाई नेताओं द्वारा आपातकालीन घोषणा।" "पादरी (pastors) की इवेंजेलिकल (सुसमाचार-संबंधी) ज़िम्मेदारी और आत्म-शुद्धिकरण के लिए घोषणा" शीर्षक के तहत, उन्होंने आठ बातें बताईं: पहली, हम इवेंजेलिकल मूल्यों के प्रति वफादार न रह पाने के लिए पश्चाताप करते हैं; दूसरी, हम विभाजन और संघर्ष के बीच एक-दूसरे से प्रेम करने में चर्च की विफलता पर विचार करते हैं; तीसरी, हम पादरियों के बीच नैतिक ढिलाई को स्वीकार करते हैं और नैतिकता के उच्च स्तर को बनाए रखने का संकल्प लेते हैं; चौथी, हम विकास के जुनून के कारण चर्चों के बीच पैदा हुए ध्रुवीकरण को ठीक करने की आवश्यकता को पहचानते हैं; पांचवीं, हम सांसारिक डिग्रियां और सम्मान पाने के बजाय आध्यात्मिकता में अधिकार-प्राप्त बनने का प्रयास करेंगे; छठी, हम व्यक्तिगत पवित्रता विकसित करने और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने का प्रयास करेंगे; सातवीं, हम सुसमाचार (Gospel) पर आधारित स्वच्छ चर्च प्रशासन को अपनाएंगे; और आठवीं, हम दुनिया के लिए प्रकाश और नमक के रूप में सेवा करने वाले चर्च के मिशन के लिए खुद को समर्पित करेंगे। आपातकालीन घोषणा की इन आठ बातों को पढ़कर, मुझे वे वास्तव में मूल्यवान लगीं। यदि हमारे चर्च इस घोषणा के अनुसार चलें, तो वे वास्तव में चर्च के रूप में कार्य करेंगे और प्रभु की महिमा करेंगे। विशेष रूप से, मुझे लगा कि पहली बात उन सभी का मूल है—यानी, हमारे चर्च को इवेंजेलिकल मूल्यों के प्रति वफादार न रह पाने के लिए पश्चाताप करने की आवश्यकता है। यह लेख इस पहली बात को इस प्रकार विस्तार से बताता है: "मुक्ति के सुसमाचार की घोषणा करना—जिसे प्रेरितों ने पहुँचाया और जो यीशु मसीह के क्रूस पर बहाए गए लहू और मृत्यु के माध्यम से पूरा हुआ—और सुधारकों (Reformers) ने शहादत के माध्यम से जो हासिल किया, उसे बनाए

रखना..." "हम 'रिफॉर्म्ड परंपरा' (सुधारवादी परंपरा) को बनाए रखने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की घोषणा करते हैं। इस सुसमाचार पर बना चर्च एक ऐसा अस्पताल है जो आत्माओं को बचाता है और एक ऐसा स्कूल है जहाँ हम परमेश्वर के बारे में सीखते हैं। फिर भी, गहरे आत्म-चिंतन में शामिल होकर—यह पूछते हुए कि क्या हमने सुसमाचार के मूल्यों के बजाय सांसारिक सफलता को प्राथमिकता दी, क्या हमने नैतिक और सदाचारी जीवन के उच्च स्तर के लिए प्रयास किया, और क्या हमने अपने भाइयों से प्रेम करने और अपने पड़ोसियों की देखभाल करने की पूरी कोशिश की—हम दर्दनाक पश्चाताप करते हैं और आज से सुसमाचार के मूल्यों के अनुसार वफादारी से जीने का संकल्प लेते हैं" (इंटरनेट)। यह एक ऐसी बात है जिससे हर कोई सहमत होगा। मैं खास तौर पर इस बात से सहमत हूँ कि चर्च को अपनी उस आदत के लिए पछतावा करना चाहिए जिसमें वह सुसमाचार (Gospel) के मूल्यों के बजाय दुनियादारी की सफलता को ज़्यादा अहमियत देता है। जब आप चर्च के बारे में सोचते हैं, तो आपको क्या लगता है कि हमारे चर्च को—या ईसाई होने के नाते हमें—क्या करना चाहिए? चर्च के बारे में सोचते हुए हमें कैसा रवैया अपनाना चाहिए?

सबसे पहले, जब हम चर्च के बारे में सोचें, तो हमें रोना चाहिए।

भजन संहिता 137:1 को देखिए: "बाबुल की नदियों के किनारे हम बैठे और सिय्योन को याद करके रोए।" भजन रचने वाला, जो इस्राएल के लोगों के साथ बाबुल में बंदी बना लिया गया था, बाबुल की नदियों के किनारे बैठकर सिय्योन को याद करते हुए रोया—जिसे बाबुल ने नष्ट कर दिया था। सिय्योन को याद करते हुए वह क्यों रोया? ऐसा इसलिए था क्योंकि वह परमेश्वर की ओर से सब कुछ फिर से ठीक करने की कृपा (restoration) के लिए दिल से तड़प रहा था (पार्क युन-सन)। जब हमने पिछले हफ़्ते बुधवार की प्रार्थना सभा में भजन संहिता 136 पर—खासकर आयत 23 पर—सोचा-विचारा, तो हमने देखा कि परमेश्वर ने पहले ही बता दिया था कि इस्राएली अपने पापों के कारण "नीची हालत" (बाबुल) में बंदी बना लिए जाएँगे; सचमुच, इस्राएली आखिरकार अपने गुनाहों के कारण बंदी बन गए, और वहीं पर भजन रचने वाले ने यह कविता लिखी। बंदी जीवन के दुख को देखते हुए, आयत 2 और 3 में बताया गया है कि कैसे भजन रचने वाले ने अपनी वीणा (lyre) को विलो (willow) के पेड़ों पर टांग दिया ताकि वह उन्हें बंदी बनाने वालों की माँग को ठुकरा सके, जिन्होंने उन्हें सिय्योन के गीतों में से कोई एक गीत गाने का आदेश दिया था। उसने ऐसा इसलिए

किया क्योंकि वह नहीं चाहता था कि किसी पवित्र गीत का इस्तेमाल गैर-यहूदियों (Gentiles) के मनोरंजन के लिए किया जाए (पार्क युन-सन)। ज़रा सोचिए परमेश्वर के पवित्र लोगों की उस पीड़ा के बारे में—जिन्हें गैर-यहूदियों ने बंदी बना लिया था और उन पर ज़ुल्म ढा रहे थे—जब उन्हें सिर्फ़ मनोरंजन के लिए परमेश्वर के पवित्र गीत गाने के लिए मजबूर किया गया। इसलिए, भजन रचने वाला दुख जताते हुए कहता है: "हम परदेस में प्रभु का गीत कैसे गाएँ?" (आयत 4)। इस दुख और बंदी जीवन के अकेलेपन के बीच, वह सिय्योन के बारे में सोचते हुए बाबुल की नदियों के किनारे रोया; मैंने उन आँसुओं पर दो तरह से विचार किया है:

(1) भजन रचने वाले के बहाए आँसू... वे शायद पछतावे की प्रार्थना में बहाए गए आँसू थे।

भजन रचने वाले का रोना ज़रूर पछतावे की पीड़ा के साथ रहा होगा। जब कोई विश्वासी परमेश्वर की खोई हुई कृपा के बारे में सोचता है, तो वह अपने पापों को याद किए बिना नहीं रह सकता और परिणामस्वरूप, उसे गहरा पछतावा होता है (पार्क युन-सन)। "परमेश्वर की खोई हुई कृपा..." इस पर विचार करते हुए, मुझे पिछले बुधवार की अपनी स्थिति याद आती है। जब मैं परमेश्वर की कृपा से भरा होता हूँ, तो मेरा हृदय कृतज्ञता, शांति और आनंद से भर जाता है; लेकिन, जब मैं परमेश्वर की कृपा को भूल जाता हूँ, तो मैं खुद को भारीपन, बेचैनी और चिंता से घिरा हुआ पाता हूँ। उस स्थिति में, परमेश्वर ने मेरे पापों को उजागर किया, मुझे उन्हें स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया, और मुझे पाप से दूर जीवन जीने की चुनौती दी। ठीक अगली सुबह—गुरुवार को—सुबह की प्रार्थना सभा के बाद, मेरी आँखों में आँसू आ गए जब मैं प्रार्थना कर रहा था और मेरे हाथ में पिछले दिन का बचा हुआ केंटकी फ्राइड चिकन (KFC) का ब्रेड का टुकड़ा था। मैं भावुक हो गया क्योंकि मुझे वह संदेश याद आया जो मुझे बुधवार की सभा में देना था; मुझे हमारी रोज़ की रोटी देने के लिए परमेश्वर की देखभाल—उनकी कृपा—के प्रति गहरी कृतज्ञता महसूस हुई। जब हम खुद पर, अपने परिवारों पर और सबसे बढ़कर, कलीसिया—जो प्रभु का शरीर है—पर विचार करते हैं, तो हमें पश्चाताप के आँसू बहाने चाहिए। क्यों? क्योंकि कलीसिया परमेश्वर की कृपा को भूल रही है। जब प्रभु की कलीसिया परमेश्वर की कृपा को भूल जाती है, तो वह अनिवार्य रूप से उनके विरुद्ध पाप करती है। इसलिए, हमारी कलीसिया को परमेश्वर के सामने पश्चाताप करना चाहिए। तभी पश्चाताप के माध्यम से कलीसिया में सच्ची बहाली, मेल-मिलाप, सुधार और पुनरुद्धार हो सकता है।

(2) भजनकार ने बेबीलोन की नदियों के किनारे सिय्योन को याद करते हुए जो आँसू बहाए, वे संभवतः परमेश्वर की उद्धार करने वाली कृपा की लालसा से उपजे प्रार्थना के आँसू थे।

जो लोग वास्तव में पश्चाताप करते हैं, वे पहचानते हैं कि केवल परमेश्वर ही उनके उद्धारकर्ता हैं; परिणामस्वरूप, वे उद्धार के लिए उनसे गंभीरता से विनती किए बिना नहीं रह सकते। चूँकि भजनकार—इस्राएल के लोगों के साथ—अपने पापों के कारण बेबीलोन में बंधुआई में रह रहे थे, इसलिए उन्हें अपने अपराधों का एहसास हुआ और उन्होंने पश्चाताप किया, और उस प्रक्रिया में, परमेश्वर... उन्होंने संभवतः दया और कृपा के लिए विनती की, और बेबीलोन की बंधुआई से छुटकारा पाकर यहूदा की भूमि में अपने देश लौटने की प्रार्थना की। जैसे योना ने बड़ी मछली के पेट से प्रभु की ओर देखा और कहा, "मुक्ति प्रभु से ही मिलती है" (योना 2:9)—और परमेश्वर की बचाने वाली कृपा की चाह की—वैसे ही भजनकार ने भी, यह जानते हुए कि केवल परमेश्वर ही इस्राएल के लोगों को बचा सकते हैं, उनसे सच्चे मन से मुक्ति की प्रार्थना की। जब हम कलीसिया—जो प्रभु का शरीर है—के बारे में सोचते हैं, तो हमें सच्चे पश्चाताप और परमेश्वर की बचाने वाली कृपा की चाह रखने वाले हृदय के साथ अपनी प्रार्थनाएँ करनी चाहिए। हमें सभी गंदे और बुरे पापों से छुटकारा पाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। हमें यीशु, जो हमारे दूल्हे हैं, की पवित्र और शुद्ध दुल्हन के रूप में नया जन्म पाने के लिए विनती करनी चाहिए। ऐसा करते हुए, हमें ऐसी कलीसिया बनना चाहिए जो प्रभु के दूसरे आगमन के लिए तैयारी करे। मेरी प्रार्थना है कि जब भी हम कलीसिया के बारे में सोचें, तो हम पश्चाताप के आँसू बहाएँ और ऐसी प्रार्थना के आँसू बहाएँ जो परमेश्वर की बचाने वाली कृपा के लिए तरसते हों।

दूसरी बात, जब हम कलीसिया के बारे में सोचें, तो हमें इसे अपनी सबसे बड़ी खुशी मानना चाहिए।

भजन संहिता 137:6 को देखिए: "यदि मैं तुम्हें याद न रखूँ, तो मेरी जीभ मेरे मुँह के तालू से चिपक जाए—यदि मैं यरूशलेम को अपनी सबसे बड़ी खुशी से बढ़कर न मानूँ।" हालाँकि भजनकार बेबीलोन के गैर-यहूदी देश में बंदी बनकर रह रहा था, फिर भी वह मानता है कि उसने यरूशलेम को अपनी दुनिया की सबसे बड़ी खुशी से भी ज़्यादा अहमियत दी। दूसरे शब्दों में, उसने यरूशलेम को अपनी सबसे बड़ी खुशी

का स्रोत बनाया। इससे उसके परमेश्वर-केंद्रित और पवित्र जीवन का पता चलता है। परदेस में बंदी होने के बावजूद, भजनकार ने सिय्योन को याद किया, रोया और सच्चे दिल से परमेश्वर को खोजा। एक तरह से, जैसे घर से दूर रहने वाला बच्चा अपने माता-पिता और घर के लिए बहुत तड़पता है, वैसे ही बेबीलोन में बंदी रहने के दौरान यरूशलेम के लिए भजनकार की तड़प और बढ़ गई। चूँकि बेबीलोन ने यरूशलेम—परमेश्वर के शहर—को खंडहर बना दिया था, इसलिए उसने इसके पुनर्निर्माण और इसकी पुरानी खुशहाली को वापस पाने के लिए दिल से प्रार्थना की (कैल्विन)। हमारी भी यही सच्ची प्रार्थना होनी चाहिए। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि प्रभु अपनी कलीसिया—जो उसका शरीर है—को उसके खंडहरों से फिर से बनाए और उसे शुरुआती कलीसिया जैसी फलती-फूलती हालत में वापस लाए। कोई सोच सकता है कि क्या कलीसिया के लिए उस दौर से बेहतर कोई सुनहरा युग कभी रहा है। हमें आज अपनी कलीसिया के लिए कोशिश करनी चाहिए कि वह उस शुरुआती कलीसिया जैसी दिखे: एक ऐसा दौर जब प्रेरित, पवित्र आत्मा से भरे हुए, निडर होकर सुसमाचार का प्रचार करते थे और उसकी शक्ति दिखाते थे; जब पवित्र आत्मा रोज़ाना विश्वासियों को कलीसिया में जोड़ता था; और जब समुदाय प्यार पर बना था। हमें कलीसिया की ऐसी सच्ची उन्नति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। इसके अलावा, जब हम आज के दौर की कलीसिया को देखते हैं, तो हमें—भजनकार की तरह—पछतावे के आँसू बहाने चाहिए और परमेश्वर की बचाने वाली कृपा पाने के लिए प्रार्थना के आँसू बहाने चाहिए। हमें प्रभु से सच्चे दिल से विनती करनी चाहिए कि वह हमारे समय में भी वैसा ही सच्चा सुधार लाए, जैसा उसने 16वीं सदी के प्रोटेस्टेंट सुधार के दौरान किया था। जब हम कलीसिया के बारे में सोचते हैं तो हमें इस तरह प्रार्थना क्यों करनी चाहिए? इसका कारण यह है कि, जैसा कि भजनकार ने माना, कलीसिया हमारी सबसे बड़ी खुशी है। चूँकि प्रभु—जो कलीसिया का सिर है—हमारी सबसे बड़ी खुशी है, इसलिए उसका शरीर, यानी कलीसिया भी हमारी सबसे बड़ी खुशी बन जाती है। हम वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेकिज़्म के पहले सवाल, "इंसान का मुख्य मकसद क्या है?" के जवाब से वाकिफ़ हैं—यानी, "इंसान का मुख्य मकसद परमेश्वर की महिमा करना और हमेशा उसमें आनंद लेना है।" इसलिए, हमें हमेशा प्रभु में आनंद लेने के लिए बुलाया गया है; और जो लोग हमेशा प्रभु में आनंद लेते हैं, उन्हें उसकी कलीसिया में भी खुशी मिलती है। तो फिर, हम कलीसिया को अपनी सबसे बड़ी खुशी कैसे बना सकते हैं और उसमें आनंद कैसे ले सकते हैं? भजनकार की तरह, हमें सबसे पहले प्रभु की कलीसिया को याद करना चाहिए और रोना चाहिए। हमें पाप के कारण कलीसिया की वीरान हालत को आध्यात्मिक नज़रों से देखना चाहिए और पछतावे के आँसू बहाने

चाहिए। पछतावे के ऐसे सच्चे आँसुओं के बिना, हम उस काम का सच्चा आनंद नहीं ले सकते जिसके ज़रिए प्रभु अपनी कलीसिया को बचाता और स्थापित करता है। इसलिए, अगर हम प्रभु की कलीसिया को अपनी सबसे बड़ी खुशी बनाना चाहते हैं, तो हमें पछतावे के आँसू बहाने होंगे। इस बीच, हमें प्रभु से अपनी कलीसिया को बचाने की पुरज़ोर विनती करनी चाहिए। हमारी सच्ची प्रार्थनाएँ इस बात के लिए होनी चाहिए कि प्रभु अपनी कलीसिया को फिर से बनाए और स्थापित करे, जो उसका शरीर है। और जब प्रभु अपनी कलीसिया को स्थापित करता है, तो हमें आनंद के परमेश्वर—वह प्रभु जो हमारी सबसे बड़ी खुशी है—के करीब आना चाहिए और सिय्योन के गीतों के साथ उसकी स्तुति और आराधना करनी चाहिए। यह उस व्यक्ति का जीवन है जिसे प्रभु की कलीसिया में सबसे बड़ी खुशी और आनंद मिलता है।

तीसरी और आखिरी बात, जब हम कलीसिया के बारे में सोचते हैं तो हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

आज के हिस्से—भजन संहिता 137:7–9—में भजनकार परमेश्वर से प्रार्थना करता है और इसराइल के दुश्मन और विरोधी, बेबीलोन के खिलाफ़ उसके न्याय (सज़ा) की मांग करता है। प्रार्थना करते हुए वह विनती करता है, "हे प्रभु, याद रख कि यरूशलेम के पतन के दिन एदोमियों ने क्या किया था, और एदोम के वंशजों को नष्ट कर दे" (पद 7)। बेशक, एदोमी बेबीलोन नहीं थे; बल्कि, जब बेबीलोन ने यरूशलेम पर हमला किया तो वे खुश हुए थे। शुरू में इसराइल के लोगों के साथ भाईचारे का रिश्ता होने के बावजूद, वे इसराइल के कट्टर दुश्मन और परमेश्वर के क्रोध के पात्र बन गए थे (पार्क युन-सन)। इस प्रकार, पद 7–9 में बताए गए एदोम और बेबीलोन दोनों में एक बात समान है—वे दोनों परमेश्वर के क्रोध के पात्र हैं। इसका कारण यह है कि उन्होंने परमेश्वर के लोगों, यानी इस्राएल का विरोध किया और उन पर अत्याचार किया। भजनकार, जो सिय्योन को याद करते हुए बेबीलोन की नदियों के किनारे रोया था, उसने परमेश्वर से एदोमियों को नष्ट करने की प्रार्थना की—जिनकी तुलना बेबीलोन के उन लोगों से की जाती है जिन्होंने यरूशलेम को बर्बाद कर दिया था। इसी तरह, जब हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं, तो हमें यह प्रार्थना करनी चाहिए कि उसका क्रोध शैतान—जो कलीसिया का दुश्मन है—और उसके बुरे सेवकों पर गिरे। हो सकता है कि हम ऐसी प्रार्थनाओं के आदी न हों; लेकिन, मेरा मानना है कि बुरे लोगों के न्याय के लिए प्रार्थना किए बिना परमेश्वर के लोगों की मुक्ति के लिए प्रार्थना करना असंतुलित है। ऐसा इसलिए है क्योंकि, जैसा कि बाइबिल (खासकर पुराने नियम)

में देखा गया है, परमेश्वर की मुक्ति और परमेश्वर का न्याय एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। दूसरे शब्दों में, जब परमेश्वर अपने लोगों—कलीसिया—को बचाता है, तो वह उनके दुश्मनों का न्याय करके और उन्हें सज़ा देकर ऐसा करता है। इसलिए, हमें न केवल कलीसिया की मुक्ति के लिए, बल्कि उसके दुश्मनों के विनाश के लिए भी प्रार्थना करनी चाहिए। हमें परमेश्वर के सही न्याय के लिए प्रार्थना करनी चाहिए और उससे कलीसिया के दुश्मनों को सज़ा देने के लिए कहना चाहिए।

जब मैं विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च—मसीह की देह—के बारे में सोचता हूँ, तो दो बातें मन में आती हैं: मत्ती 16:18 में प्रभु का वादा, "मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा," और भजन 246, "हे प्रभु, मुझे तेरे राज्य से प्रेम है।" ऐसा इसलिए है क्योंकि, 'एसोसिएशन ऑफ़ पास्टर्स फ़ॉर चर्च रिन्यूअल' द्वारा आयोजित 2003 के एक रिट्रीट के दौरान, जब मुझे परमेश्वर का वचन मिला और मैंने आँसुओं के साथ उसकी स्तुति की, तो परमेश्वर ने विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च की बात मेरे मन में डाली। मुझे याद है कि उस समय कलीसिया के लिए तड़प और प्यार के आँसू मेरी आँखों से बह रहे थे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च प्रभु द्वारा स्थापित कलीसिया बने—एक ऐसी कलीसिया जो यीशु के ज्ञान में बढ़े, सही ढंग से उसे स्वीकार करे, और उस स्वीकारोक्ति के अनुसार जीवन जिए। मैं यह भी प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च को चट्टान पर मज़बूती से स्थापित करे। मेरी दिली उम्मीद है कि यह सचमुच एक विजयी कलीसिया बने—एक ऐसी कलीसिया जो स्वयं, संसार, पाप, शैतान और मृत्यु के विरुद्ध लड़ाई में जीत हासिल करे।

सबसे बड़ी खुशी

"अगर मैं तुम्हें याद न रखूँ, अगर मैं यरूशलेम को अपनी सबसे बड़ी खुशी न मानूँ, तो मेरी जीभ मेरे मुँह के तालू से चिपक जाए" (भजन संहिता 137:6)।

मैंने हेनरी नूवेन की एक किताब उठाई और उसे फिर से पढ़ना शुरू किया। पढ़ते समय, एक खास शब्द ने मेरा ध्यान खींचा: "खुद को नकारना" (self-rejection)। शायद यह शब्द इसलिए मेरे दिल को छू गया क्योंकि अपनी आस्था की यात्रा में, मैंने "खुद की इच्छाओं को त्यागने" (self-denial) और "खुद को नकारने" (self-rejection) के बीच के अंतर को नहीं समझा था। अक्सर, खुद को नकारने की वजह से मेरी आत्मा को चोट पहुँचती थी। इसे विनम्रता समझकर, मैं खुद को नकारते हुए जीती रही, और नतीजतन, मैं उस भरपूर जीवन को नहीं जी पाई जो प्रभु हमारे लिए चाहते हैं। इसीलिए इस विचार ने मेरा पूरा ध्यान खींचा।

मेरा मानना है कि खुद को नकारना असल में प्रभु के प्रेम से खुद से प्रेम न कर पाने जैसा है। हम अक्सर प्रभु के प्रेम से खुद से प्रेम करने को पाप मानते हैं। हालाँकि हम परमेश्वर और अपने पड़ोसियों से प्रेम करने की आज्ञाओं को अच्छी तरह जानते हैं, लेकिन किसी तरह हम प्रभु के प्रेम से खुद से प्रेम करने को स्वार्थ मानते हैं। नतीजतन, हमारी खुद के बारे में सोच अस्वस्थ—यहाँ तक कि बीमार—हो जाती है।

मुझे याद है कि कुछ समय पहले मैंने *Christian Self-Love* (ईसाई आत्म-प्रेम) नाम की एक किताब देखी थी। फिर भी, ऐसी किताबें हमारे बीच लोकप्रिय नहीं हैं। नतीजतन, हम प्रभु के प्रेम से खुद से प्रेम करना नहीं सीख पाए हैं। हम एक "बिगड़े हुए व्यक्तित्व" (deformed self) के साथ परमेश्वर और अपने पड़ोसियों से प्रेम करने की कोशिश करते हैं। हम अस्वस्थ व्यक्तित्व के साथ परमेश्वर और अपने पड़ोसियों से कैसे प्रेम कर सकते हैं? ऐसा कैसे हो सकता है? कभी-कभी मैं सोचती हूँ कि क्या यह सिर्फ़ पाखंड का असर है। हममें से बहुत से ईसाई अपराध-बोध से ग्रस्त हैं। हम कई तरह के अपराध-बोध से जूझते हैं, जिसमें पाखंडपूर्ण

जीवन जीने से जुड़ा अपराध-बोध भी शामिल है। इसके अलावा, हम अक्सर खुद को नुकसान पहुँचाने को विनम्रता समझ लेते हैं और इसी गलतफहमी में अपनी आस्था का जीवन जीते रहते हैं। मैं सोचती हूँ कि परमेश्वर की नज़र में हम कितने दयनीय बच्चे लगते होंगे। मैं गंभीरता से सवाल करती हूँ कि क्या सच में ऐसा जीवन परमेश्वर को खुश करता है।

आज भजन संहिता 137:6 में मुझे जो चुनौती दिखती है, वह भजनकार का यह स्वीकार करना है कि वह अपनी दुनिया की सबसे बड़ी खुशी से कहीं ज़्यादा प्रभु में खुशी मनाता है। उन्होंने ऐसा कैसे कह दिया? मेरा मानना है कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्हें अपनी सही पहचान का एहसास था। दूसरे शब्दों में, यह जानते हुए कि वे खुद परमेश्वर की सबसे बड़ी खुशी का कारण हैं, वे किसी भी सांसारिक खुशी से कहीं ज़्यादा परमेश्वर पिता को महत्व दे पाए। मुझे एक खास गॉस्पेल गीत याद आता है—जो बताता है कि परमेश्वर हमारे लिए अपनी खुशी को रोक नहीं पाते। मेरा मानना है कि जो लोग सभी सांसारिक खुशियों से बढ़कर परमेश्वर को महत्व देते हैं, वे ही यह समझ पाते हैं कि परमेश्वर खुद उनसे बेहद खुश होते हैं। उस खुशी और प्यार से भरे हुए, और प्रभु के प्यार को अपनाते हुए, वे खुद को सही नज़रिए से देखते हुए परमेश्वर और अपने पड़ोसियों, दोनों से प्यार कर पाते हैं।

वह कारण जिसकी वजह से मैं पूरे दिल से प्रभु का धन्यवाद और स्तुति करता हूँ

[भजन संहिता 138]

पिछले रविवार, मैंने रोमियों 6:15–23 पर ध्यान करते हुए "पाप का दास" और "आज्ञाकारिता का दास" (धार्मिकता का दास) होने के विचारों पर मनन किया। उस मनन के माध्यम से, हमने सीखा कि हमें "परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए" (पद 17)। हमें परमेश्वर का धन्यवाद क्यों करना चाहिए? इसलिए क्योंकि अब हम पाप के दास नहीं हैं। बल्कि, हमने सीखा कि हमें धन्यवाद देना चाहिए क्योंकि परमेश्वर की कृपा और यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा, हमें धर्मी ठहराया गया है और हम धार्मिकता के दास बन गए हैं। जब मैं विश्वास के जीवन पर विचार करता हूँ और धार्मिकता के दास द्वारा लाए गए फल के बारे में सोचता हूँ, तो दो बातें मन में आती हैं: "कृतज्ञता" और "आज्ञाकारिता।"

भजन संहिता 138:1 में, भजनकार दाऊद घोषणा करता है (और संकल्प लेता है): "मैं पूरे दिल से तेरा धन्यवाद करूँगा; मैं देवताओं के सामने तेरी स्तुति गाऊँगा।" दाऊद पूरे दिल से प्रभु का धन्यवाद और स्तुति करने का संकल्प क्यों लेता है? प्रभु की "करुणा और सच्चाई" के कारण (पद 2)। परमेश्वर की करुणा (प्रेम) और सच्चाई (विश्वसनीयता) का स्वरूप क्या था जिसका अनुभव दाऊद ने किया? पद 2 को देखें: "मैं तेरे पवित्र मंदिर की ओर मुड़कर आराधना करूँगा और तेरी करुणा और सच्चाई के लिए तेरे नाम का धन्यवाद करूँगा; क्योंकि तूने अपने वचन को अपने सारे नाम से ऊँचा किया है।" दाऊद ने जिस करुणा और सच्चाई का अनुभव किया, वह इस बात में निहित थी कि प्रभु ने अपने वचन को ऊँचा किया (पार्क युन-सन)। यहाँ, "अपने वचन को ऊँचा किया" वाक्यांश का अर्थ है कि प्रभु ने दाऊद से किए गए वादों को पूरा किया। प्रभु की करुणा और विश्वसनीयता का अनुभव करने के बाद, दाऊद पूरे दिल से प्रभु का धन्यवाद और स्तुति

करने का संकल्प लेता है (पद 1)। हम आज के अंश से इस संकल्प के लिए चार विशिष्ट कारणों की पहचान कर सकते हैं—यानी, वे विशिष्ट तरीके जिनसे उसने प्रभु की करुणा और विश्वसनीयता का अनुभव किया।

पहला, दाऊद के पूरे दिल से प्रभु की स्तुति और धन्यवाद करने का कारण यह है कि प्रभु ने उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया, उसे शक्ति दी और उसे मजबूत बनाया। भजन संहिता 138:3 को देखिए: "जब मैंने पुकारा, तो तूने मुझे उत्तर दिया; तूने मेरी आत्मा को साहसी और बलवान बनाया।" जब हम अपने बीते हुए जीवन को देखते हैं, तो हमें यह मानना ही पड़ता है कि एबेनेज़र के परमेश्वर ने ही हमें यहाँ तक पहुँचाने में मदद और मार्गदर्शन किया है। सचमुच, परमेश्वर ने हमें इस मुकाम तक पहुँचने में कैसे मदद की? उन्होंने हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देकर, हमें शक्ति देकर और हमें मज़बूत बनाकर हमें यहाँ तक पहुँचाया। जब हम दाऊद के जीवन पर विचार करते हैं, तो हम उसे परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए देखते हैं: "मेरी ओर मुड़ और मुझ पर दया कर; अपने सेवक को अपनी शक्ति दे..." (86:16)। इस दुनिया में रहने वाले दाऊद और हम सभी को प्रभु द्वारा दी जाने वाली शक्ति की कितनी ज़्यादा ज़रूरत है! जब दाऊद ने प्रभु से शक्ति के लिए विनती की, तो प्रभु ने न केवल उसे शक्ति दी, बल्कि वे स्वयं उसकी शक्ति बन गए। इसीलिए दाऊद ने भजन संहिता 18:1 में कहा: "हे प्रभु, मेरी शक्ति, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ।" डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "परमेश्वर हमारे हालात बदलने से पहले हमारी आत्मा को नया करना चाहते हैं। सबसे बढ़कर, हमें अपने दिलों में अनुग्रह पाना चाहिए (फिलिप्पियों 4:23)। ... यह कहने का कि उन्होंने '[उसकी] आत्मा को बलवान बनाया', अर्थ है कि परमेश्वर ने न केवल उसे एक अच्छा काम सौंपा, बल्कि उसे पूरा करने के लिए उसकी आत्मा को शक्ति भी दी" (पार्क युन-सन)। हमारे प्रभु ही हमें शक्ति देने वाले परमेश्वर हैं। वे ऐसे प्रभु नहीं हैं जो हमें कोई मिशन सौंपकर बस चुपचाप खड़े रहें; वे उस मिशन को पूरा करने के लिए हमें ज़रूरी शक्ति भी देते हैं। इसलिए, हमें भी परमेश्वर से वैसे ही प्रार्थना करनी चाहिए जैसे दाऊद ने की थी। ई. एम. बाउंड्स ने अपनी किताब *द एसेंशियल्स ऑफ़ प्रेयर* में लिखा है: "जैसे प्रार्थना उत्तर लाती है, वैसे ही उत्तर कृतज्ञता और प्रशंसा लाता है। जैसे प्रार्थना परमेश्वर को काम पर लगाती है, वैसे ही प्रार्थना का उत्तर धन्यवाद को काम पर लगाता है" (बाउंड्स)। मुझे गॉस्पेल गीत "अ पर्सन ऑफ़ ब्लेसिंग" (आशीष पाने वाला व्यक्ति) के बोल याद आते हैं: "तुम, जो प्रभु से शक्ति पाते हो और ज़ियोन का मार्ग अपने हृदय में बसाए हुए हो, परमेश्वर द्वारा आशीष पाए हुए व्यक्ति हो; प्रभु उस मार्ग से बहुत प्रसन्न होते हैं..." जब भी हम कमज़ोर या शक्तिहीन महसूस करें, तो आइए हम अपने प्रभु से प्रार्थना करें। जब हम प्रभु को पुकारेंगे, तो वे निश्चित रूप से न केवल दाऊद को,

बल्कि आपको और मुझे भी शक्ति देंगे और सामर्थ्यवान बनाएंगे। मेरी प्रार्थना है कि इस शक्ति को पाकर हम पूरे दिल से प्रभु का धन्यवाद और उनकी स्तुति करें।

दूसरी बात, दाऊद ने पूरे दिल से प्रभु का धन्यवाद और उनकी स्तुति इसलिए की क्योंकि पृथ्वी के राजाओं ने भी प्रभु का धन्यवाद और उनकी स्तुति की। भजन संहिता 138:4–5 देखें: "हे प्रभु, पृथ्वी के सब राजा तेरी स्तुति करें, क्योंकि उन्होंने तेरे मुख की बातें सुनी हैं। वे प्रभु के मार्गों के विषय में गाएं, क्योंकि प्रभु की महिमा महान है।" दाऊद की तरह अन्य जातियों के राजाओं ने प्रभु का धन्यवाद और उनकी स्तुति क्यों की? इसलिए क्योंकि प्रभु की महिमा महान है। परमेश्वर की महिमा न केवल दाऊद के द्वारा, बल्कि उसके माध्यम से अन्य जातियों के राजाओं पर भी प्रकट हुई। तो फिर, दाऊद के माध्यम से इन राजाओं पर परमेश्वर की महिमा कैसे प्रकट हुई? यह प्रभु के वचन के द्वारा प्रकट हुई। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने दाऊद से—जिसे वह प्रेम करते थे—एक वादा किया, और उस वादे को पूरा करके उन्होंने अन्य जातियों पर अपनी महिमा प्रकट की। भविष्यद्वक्ता यशायाह कहते हैं: "उठ, चमक, क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और प्रभु की महिमा तुझ पर उदय हुई है। देख, पृथ्वी पर अंधकार छाया है और लोगों पर घना अंधकार है, परन्तु प्रभु तुझ पर उदय होते हैं और उनकी महिमा तुझ पर दिखाई देती है। जातियां तेरे प्रकाश की ओर आएंगी, और राजा तेरी भोर की चमक की ओर" (यशायाह 60:1–3)। जैसे-जैसे परमेश्वर की महिमा पूरी दुनिया पर प्रकट होती है, अन्य जातियों के राजा उस महिमा को देखते हैं और प्रभु के प्रकाश और तेज की ओर आते हैं। दाऊद के माध्यम से अपनी महिमा प्रकट करके, प्रभु ने अन्य जातियों के राजाओं को उस महिमा को देखने और उनका धन्यवाद और स्तुति करने के लिए प्रेरित किया। मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर आपके और मेरे माध्यम से इस अंधकारमय संसार पर अपनी महान महिमा प्रकट करें, और इस प्रकार दुनिया के लोगों को परमेश्वर का धन्यवाद और स्तुति करने के लिए प्रेरित करें। जब हम ऐसा करेंगे, तो हम भी दाऊद की तरह परमेश्वर का धन्यवाद और स्तुति करने के लिए प्रेरित होंगे।

तीसरी बात, दाऊद ने पूरे दिल से प्रभु का धन्यवाद और उनकी स्तुति इसलिए की क्योंकि उन्हें विश्वास था कि प्रभु उनकी दीनता में उन्हें बचाएंगे। भजन संहिता 138:6–7 को देखिए: "भले ही प्रभु ऊँचे स्थान पर हैं, वे दीन-दुखियों पर ध्यान देते हैं, लेकिन घमंडी लोगों को वे दूर से ही पहचान लेते हैं। भले ही मैं मुश्किलों के बीच से गुज़रूँ, आप मेरी जान बचाते हैं; आप मेरे दुश्मनों के गुस्से के खिलाफ अपना हाथ बढ़ाते हैं, और

अपने दाहिने हाथ से मुझे बचाते हैं।" हमारे परमेश्वर, भले ही ऊँचे स्थान पर विराजमान हैं, दीन-दुखियों पर ध्यान देते हैं। यहाँ "ध्यान देने" का मतलब है खास प्यार से देखना। तो सवाल यह है कि क्या हम सच में दीन लोगों—यानी नम्र लोगों—में से हैं? एक साफ बात यह है कि नम्र यीशु की वजह से परमेश्वर आप और मुझ जैसे घमंडी लोगों को भी खास प्यार से देखते हैं। यह कितनी अद्‌भुत कृपा है! परमेश्वर की यह कृपा तब और भी खास तौर पर दिखाई दी जब नम्र दाऊद मुश्किलों में घिरा हुआ था; परमेश्वर ने दाऊद को नई ज़िंदगी दी, जो तकलीफों से जूझ रहा था। भजन संहिता 71:20 को देखिए: "आपने मुझे बहुत-सी और गंभीर मुश्किलें दिखाई हैं, आप मुझे फिर से नई ज़िंदगी देंगे; आप मुझे धरती की गहराइयों से फिर से ऊपर लाएँगे।" इसके अलावा, प्रभु ने अपने शक्तिशाली दाहिने हाथ से घमंडियों—दाऊद के दुश्मनों—को हराया (उनका न्याय किया) और दाऊद को उनके हाथों से बचाया (138:7)। जब हम खुद को मुश्किलों में पाते हैं, तब भी हमें—दाऊद की तरह—परमेश्वर की दया और सच्चाई पर भरोसा करना चाहिए, जो हमें खास प्यार से देखते हैं। हमारे परमेश्वर निश्चित रूप से ऐसे परमेश्वर नहीं हैं जो मुसीबत के समय हमें छोड़ देते हैं। वे ऐसे परमेश्वर हैं जो अपने वादे वाले वचन के ज़रिए हमें नई ज़िंदगी देते हैं और हमारी आत्मा को मज़बूत करते हैं। वे हमें मुसीबत और सतावट के बीच डटे रहने की ताकत देते हैं, और आखिर में घमंडियों—हमारे दुश्मनों—को हराकर हमें उनके हाथों से छुड़ाते हैं। इस परमेश्वर पर भरोसा करते हुए, दाऊद ने उन्हें धन्यवाद दिया और उनकी स्तुति की। दूसरे शब्दों में, मौजूदा मुश्किलों का सामना करते हुए भी, उसने विश्वास के साथ उद्धार करने वाले परमेश्वर की ओर देखा; छुटकारा मिलने के भरोसे से भरकर, उसने परमेश्वर की स्तुति की और धन्यवाद दिया। ठीक यही नज़रिया हमें भी अपनाना चाहिए। चाहे हम किसी भी मुश्किल या परेशानी का सामना करें, हमें—दाऊद की तरह—विश्वास के साथ परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए और उनकी स्तुति करनी चाहिए, और उद्धार के भरोसे को मज़बूती से थामे रखना चाहिए।

चौथी बात, डेविड ने पूरे दिल से प्रभु का धन्यवाद और उनकी स्तुति इसलिए की क्योंकि उन्हें विश्वास था कि प्रभु उनसे जुड़ी हर चीज़ को पूरा करेंगे।

भजन संहिता 138:8 पर विचार करें: “प्रभु मेरे लिए सब कुछ पूरा करेंगे; हे प्रभु, तेरी दया सदा बनी रहती है; अपने हाथों के कामों को न छोड़।” यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि मूल हिब्रू पाठ में, “जो मुझसे संबंधित है” (या “उनका उद्देश्य”) जैसा कोई खास वाक्यांश वास्तव में नहीं है। इसलिए, इसका शाब्दिक अनुवाद होगा: “प्रभु मेरे लिए [इसे] पूरा करेंगे।” तो फिर, प्रभु उनके लिए क्या पूरा करने जा रहे हैं? दूसरे शब्दों में, पाठ में जिस “मुझसे संबंधित चीज़”—या “उनके उद्देश्य”—का ज़िक्र है, वह क्या है? यह उस वादे की ओर इशारा करता है जो परमेश्वर ने 2 शमूएल 7 में डेविड से किया था। यह वह वादा है कि परमेश्वर डेविड को इज़राइल का शासक बनाएंगे और उनके नाम को महान बनाएंगे; कि वे इज़राइल के लोगों के लिए एक जगह तय करेंगे और उन्हें शांति देंगे; कि वे डेविड की संतान के ज़रिए परमेश्वर के लिए एक घर बनाएंगे; और यह कि डेविड का घर और राज्य हमेशा बना रहेगा, और उनका सिंहासन हमेशा के लिए स्थापित रहेगा। इस प्रकार, डेविड ने प्रार्थना की: “अब, हे प्रभु परमेश्वर, उस वचन को हमेशा के लिए पक्का कर दे जो तूने अपने सेवक और उसके घर के बारे में कहा है, और वैसा ही कर जैसा तूने कहा है” (पद 25)। परमेश्वर का यह वादा डेविड की वंशावली से मसीहा के आने और उस मसीहा के ज़रिए परमेश्वर के राज्य—सच्चे इज़राइल—की स्थापना के बारे में बताता है। तो फिर, डेविड से किया गया यह वादा हम पर—नए नियम के युग के विश्वासियों पर—कैसे लागू होता है? दूसरे शब्दों में, वह क्या है जिसे प्रभु आपके और मेरे लिए पूरा करेंगे? वह है हमारा उद्धार। रोमियों 8:30 को देखें: "और जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी; जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया; जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी।" इस प्रकार, पौलुस फिलिप्पियों 3:20–21 में कहते हैं: "लेकिन हमारी नागरिकता स्वर्ग में है। और हम वहाँ से एक उद्धारकर्ता, प्रभु यीशु मसीह का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं, जो उस शक्ति से, जिससे वह सब कुछ अपने नियंत्रण में ला सकते हैं, हमारे साधारण शरीरों को बदल देंगे ताकि वे उनके महिमामय शरीर जैसे हो जाएँ।" यह हमारे उद्धार का पूरा होना है—हमारे साधारण शरीरों का प्रभु यीशु मसीह के शानदार शरीर जैसा बदलना। इसलिए, उद्धार की इस उम्मीद को मज़बूती से थामे हुए, हमें आभारी दिल से प्रभु की स्तुति करनी चाहिए। साथ ही, इस धरती पर रहते हुए, हमें उस भरोसेमंद प्रभु पर निर्भर रहना चाहिए जिसने हमें यह वादा दिया है। हमें बिना किसी शक के अपने विश्वास के अनुसार जीना चाहिए और पौलुस जैसा पक्का भरोसा रखना चाहिए: "इस

बात का पूरा भरोसा रखते हुए कि जिसने तुममें एक अच्छा काम शुरू किया है, वह उसे मसीह यीशु के दिन तक पूरा करेगा" (1:6)।

प्रभु की दया और सच्चाई के लिए हमें पूरे दिल से परमेश्वर का धन्यवाद और स्तुति करनी चाहिए। खास तौर पर, हमें पूरे दिल से परमेश्वर का धन्यवाद और स्तुति करनी चाहिए क्योंकि प्रभु ने हमारी प्रार्थनाओं का जवाब दिया और हमें मज़बूत बनाया, हमें शक्ति दी (भजन संहिता 138:3)। हमें कुछ और खास वजहों से भी पूरे दिल से परमेश्वर का धन्यवाद और स्तुति करनी चाहिए: क्योंकि राजाओं ने प्रभु का धन्यवाद और स्तुति की (पद 4–5), क्योंकि उसे भरोसा था कि प्रभु उसकी दीनता में उसे बचाएंगे (पद 6–7), और क्योंकि उसे विश्वास था कि प्रभु उसके मामले को पूरा करेंगे (पद 8)।

मेरी आत्मा को मज़बूत करो!

"जब मैंने पुकारा, तो तूने मुझे उत्तर दिया; तूने मुझे बहुत हिम्मत दी" (भजन संहिता 138:3)।

कल, एक भाई हमारे घर आए। बाद में मेरी पत्नी ने मुझे बताया कि वह इसलिए आए थे क्योंकि उन्हें उस चर्च में दुख पहुँचा था जहाँ वे जाते हैं। वे लगभग बीस चर्चों के बीच होने वाली एक खेल प्रतियोगिता के लिए बहुत मेहनत से तैयारी कर रहे थे, लेकिन ऐसा लगता है कि कोच ने उनसे अगले मौके का इंतज़ार करने को कहा। हालाँकि, उन्हें दुख तब हुआ जब उन्हें—एक ईमेल के ज़रिए—पता चला कि उनकी जगह किसी दूसरे चर्च के एक कुशल खिलाड़ी को चुन लिया गया था। इसीलिए, पिछले शुक्रवार को अपनी चर्च की सभा में जाने के बजाय, वे हमारे घर आ गए। उनके जाने के बाद, अपनी पत्नी से बात करते हुए, मुझे एहसास हुआ कि जिस तरह का दुख उन्हें अपने चर्च में हुआ, वैसा ही दुख हमारे अपने चर्च, स्युंगरी चर्च में भी आसानी से हो सकता है। इसलिए, मैंने अपनी पत्नी को प्रोत्साहित किया कि चूँकि हम इंग्लिश मिनिस्ट्री में सेवा करते हैं, हमें कार्यक्रमों या आयोजनों से ज़्यादा लोगों को प्राथमिकता देनी चाहिए। मैंने उनसे कहा कि वे यह पक्का करें कि इंग्लिश मिनिस्ट्री टीम के लीडर एक-दूसरे को दिलासा दें, हिम्मत बढ़ाएँ और एक-दूसरे को उन आध्यात्मिक वरदानों का पूरा इस्तेमाल करने के लिए सशक्त बनाएँ जो उन्हें मिले हैं।

इस भाई की तरह, हम सभी ऐसे लोग हैं जिन्हें चर्च के अंदर आसानी से दुख पहुँच सकता है। भजन संहिता 143:4 और 7 में, भजनकार स्वीकार करते हैं, "मेरी आत्मा मेरे भीतर कमज़ोर पड़ रही है" और "मेरी आत्मा थक गई है।" उनकी आत्मा घायल और थकी हुई थी क्योंकि "दुश्मन ने मेरी आत्मा का पीछा किया" (पद 3)। दूसरे शब्दों में, "अंधेरी जगहों" (पद 3) में रहने के कारण भजनकार की आत्मा घायल और थकी हुई हो गई थी। मैं सोचता हूँ कि ऐसी कौन-सी चीज़ें हैं जो मेरी अपनी आत्मा को घायल और थका देती हैं। मेरा मानना है कि एक संभावित कारण दूसरों के लिए तय किए गए हमारे "उम्मीदों के पैमाने" हैं। दूसरे शब्दों में, यह

वैसा ही है जैसा भजन संहिता 131:1 में बताया गया है—बहुत ऊँची उम्मीदें रखना और ऐसी चीज़ों के लिए कोशिश करना जो मेरी पहुँच से बाहर हैं। मुझे बस अपनी सीमाओं को पहचानना चाहिए और जो वरदान मुझे मिले हैं, उनका इस्तेमाल करके लगन से सेवा करनी चाहिए; फिर भी, अक्सर मेरा मन दूसरे पादरियों और उनके पास मौजूद वरदानों को देखने का करता है, और यह आदत अक्सर मेरी आत्मा को थका देती है। कभी-कभी, मैं चर्च में आने वाले ईसाई अख़बारों को पढ़ने से भी बचता हूँ। ऐसी आध्यात्मिक स्थिति बिल्कुल भी अच्छी नहीं है। जैसे खुद के बारे में एक स्वस्थ सोच ज़रूरी है, वैसे ही हमारे विश्वास के जीवन के लिए एक स्वस्थ आत्मा भी ज़रूरी है। परमेश्वर हमें ऐसी स्वस्थ आत्मा देना चाहते हैं। आज, मैं इस बात पर विचार करना चाहता हूँ कि परमेश्वर हमारी आत्माओं को कैसे मज़बूत करते हैं, और इसके लिए हम अपने सामने दिए गए वचन पर ध्यान देंगे।

सबसे पहले, परमेश्वर स्तुति और आराधना के ज़रिए हमारी आत्माओं को मज़बूत करते हैं।

भजन संहिता 138:1–2 को देखिए: "मैं पूरे दिल से तेरा धन्यवाद करूँगा; मैं देवताओं के सामने तेरी स्तुति के गीत गाऊँगा। मैं तेरे पवित्र मंदिर की ओर झुककर प्रणाम करूँगा..." भजनकार कहता है कि हमें पूरे दिल से और धन्यवाद के साथ परमेश्वर की स्तुति और आराधना करनी चाहिए। हमें पूरे दिल से परमेश्वर का धन्यवाद क्यों करना चाहिए? क्योंकि प्रभु प्रेम करने वाले और विश्वासयोग्य हैं (वचन 6)। जब मैंने "तेरी दया" (loving-kindness) के अर्थ पर विचार किया, तो वचन 6 के शब्द मेरे दिल को छू गए: "भले ही प्रभु ऊँचे स्थान पर हैं, फिर भी वे दीन-हीन लोगों पर नज़र रखते हैं।" कल, मैं अपनी सबसे छोटी बेटी, ये-उन (Ye-eun) के साथ टहलने गया था। वह अभी एक साल से थोड़ी ही बड़ी है, इसलिए चलते समय मुझे उसका हाथ पकड़ना पड़ा। उसका हाथ पकड़ने के लिए मुझे झुकना पड़ा। हालाँकि मेरी पीठ में थोड़ा दर्द था, लेकिन ये-उन को देखकर मुझे बहुत सुकून और खुशी मिली, क्योंकि उसे अपने पापा का हाथ पकड़कर चलना पसंद है। इस पल ने मुझे अपनी बेटी के प्रति अपने दिल की भावनाओं पर सोचने के लिए प्रेरित किया। मैं परमेश्वर के प्रेम को महसूस कर सका जब मैंने सोचा कि कैसे परमेश्वर पिता मेरे साथ चलते हैं—वे मुझ जैसे दीन-हीन व्यक्ति पर देखभाल भरी नज़र रखते हुए मेरे साथ यात्रा करते हैं। मैंने वचन 7 के संदर्भ में "तेरी विश्वासयोग्यता" (वचन 2) वाक्यांश पर मनन किया: "भले ही मैं मुसीबत के बीच चलूँ, तू मुझे नया जीवन देगा; तू मेरे दुश्मनों के क्रोध के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाएगा, और तेरा दाहिना हाथ मुझे बचाएगा।" उदाहरण के

लिए, कल, ये-उन का हाथ पकड़ते हुए, मैंने बार-बार उसका हाथ छोड़ा ताकि उसे खुद चलने का अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित कर सकूँ। हर बार, वह गिर जाती थी, और रोते हुए अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाती थी। ठीक उसी पल की तरह, जब हम मुसीबत का सामना करते हुए गिरते हैं, तब भी प्रभु ही वह विश्वासयोग्य परमेश्वर हैं जो हमें बचाने के लिए अपना हाथ बढ़ाते हैं। हम भरोसा कर सकते हैं कि प्रभु—जिन्होंने हमें पहले बचाया है, अभी बचा रहे हैं और भविष्य में भी बचाएंगे—एक भरोसेमंद परमेश्वर हैं। दाऊद ने परमेश्वर की दया और सच्चाई के लिए पूरे दिल से धन्यवाद करते हुए उनकी स्तुति और आराधना की; ऐसा करने से परमेश्वर ने उसकी आत्मा को मज़बूत किया।

दूसरी बात, परमेश्वर अपने वचन के ज़रिए हमारी आत्मा को मज़बूत करते हैं।

भजन संहिता 138:2 और 4 के बाद वाले हिस्सों को देखें: "...क्योंकि तू ने अपने वचन को अपने सारे नाम से ऊँचा किया है" (पद 2), और "...जब वे तेरे मुँह की बातें सुनते हैं" (पद 4)। परमेश्वर ही हैं जो अपने वादे वाले वचन के ज़रिए हमारी आत्मा को मज़बूत करते हैं। वे ऐसे परमेश्वर हैं जो अपने वचन में किए गए वादों को पूरा करके उसे ऊँचा करते हैं। परमेश्वर के महान वचन ने दाऊद को मुश्किल समय में भी नई हिम्मत दी: "मेरी मुसीबत में यही मेरा दिलासा है, क्योंकि तेरे वचन ने मुझे जीवन दिया है" (भजन संहिता 119:50); "हे प्रभु, अपने वचन के अनुसार मुझे नया जीवन दे!" परमेश्वर के वचन से दाऊद की आत्मा मज़बूत हुई।

तीसरी और आखिरी बात, परमेश्वर प्रार्थना के ज़रिए हमारी आत्मा को मज़बूत करते हैं।

भजन संहिता 138:3 को देखें: "जिस दिन मैंने पुकारा, तूने मुझे जवाब दिया, और मेरी आत्मा में हिम्मत और ताक़त दी।" प्रार्थना का जवाब मिलने से दाऊद हिम्मतवाला बना और उसकी आत्मा मज़बूत हुई। उसने परमेश्वर से प्रार्थना कैसे की? उसने पूरे दिल से प्रभु का धन्यवाद किया (पद 1), उनकी दया और सच्चाई पर भरोसा किया (पद 2), प्रभु के वचन को थामे रखा (पद 2, 4), उद्धार का भरोसा रखा (पद 7), और इस विश्वास के साथ प्रार्थना की कि "प्रभु मेरे मामले को पूरा करेगा" (पद 8)। प्रार्थना की शक्ति से दाऊद मज़बूत हुआ।

हमारे विश्वास के जीवन में, अक्सर बाहरी चीज़ों—जैसे शब्द, काम, आदतें, कार्यक्रम, घटनाएँ, संख्याएँ वगैरह—पर बहुत ज़्यादा ध्यान देने की प्रवृत्ति होती है। हम अक्सर इन बाहरी मामलों की ओर इतने खिंचे चले जाते हैं कि अपनी आत्मा की परवाह करना भूल जाते हैं। आज, भजन संहिता 138 का यह अंश हमें बताता है कि हमें अपनी आत्मा को मज़बूत करना चाहिए। परमेश्वर स्तुति-आराधना, प्रभु के वचन और प्रार्थना के द्वारा हमारी आत्मा को बल देते हैं। "हे प्रभु, मेरी आत्मा को बल दे!"

वह परमेश्वर जो मुझे परखता और जानता है

[भजन संहिता 139]

एक सोमवार की शाम, सोने से पहले, मैं अपने बच्चों के कमरे में गया। वे तीनों पढ़ रहे थे; खासकर मेरी सबसे छोटी बेटी, ये-उन, बिस्तर पर लेटी हुई ध्यान से पढ़ रही थी और ज़ोर-ज़ोर से भी पढ़ रही थी। मैं सबसे पहले ये-री के पास गया, उसके बाल सहलाए, उससे कहा कि वह एक अच्छी लड़की है, और उसे लगन से पढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित किया। लेकिन ये-री ने अपने पापा की तरफ़ देखा तक नहीं; उसकी नज़रें अपनी किताब पर टिकी रहीं और वह ध्यान से पढ़ती रही। इसके बाद, मैं अपनी सबसे छोटी बेटी, ये-उन के पास गया, उसके बाल सहलाए, उससे कहा कि वह एक अच्छी लड़की है, और उसे पढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित किया। उसने भी मेरी तरफ़ नहीं देखा। बिना ज़्यादा सोचे-समझे, मैं अपने कमरे में लौट आया और बाइबल पढ़ने लगा। थोड़ी देर बाद, ये-उन मुँह में पानी की बोतल लिए मेरे कमरे में आई। उसने मेरे बिस्तर के पास नाइटस्टैंड पर रखी एक ईसाई किताब देखी और पूछा कि क्या मैं उसे पढ़ रहा हूँ। मैंने उससे कहा कि मैं उसे कभी-कभी पढ़ता हूँ, लेकिन अभी मैं बाइबल पढ़ रहा हूँ। उसने ईसाई किताब खोली, उसमें रेखांकित (अंडरलाइन) किए गए हिस्से देखे, और पूछा कि मैंने उसमें लाइनें क्यों खींची हैं। मैंने समझाया कि जो हिस्से मुझे महत्वपूर्ण लगते हैं, मैं उन्हें रेखांकित करता हूँ। फिर मैंने उसे वह बाइबल दिखाई जो मेरे हाथ में थी और बताया कि मैं उसमें भी महत्वपूर्ण हिस्सों को रेखांकित करता हूँ। ईसाई किताब की ओर इशारा करते हुए उसने कहा कि उसमें रेखांकित करना ठीक है, लेकिन ज़ोर देकर कहा कि बाइबल में रेखांकित नहीं करना चाहिए। मैं सोचने लगा कि उसे यह कैसे समझाऊँ—और साथ ही उसे यह भी सिखाना था कि बाइबल में बस यूँ ही कुछ भी नहीं लिखना चाहिए... थोड़ा सोचने के बाद, मैंने उससे मेरे पास आकर बैठने और यशायाह 8:17 पढ़ने के लिए कहा—एक ऐसा वचन जिसे मैं खुद पढ़ रहा था—क्योंकि मैंने उसे रेखांकित किया था: "मैं प्रभु की प्रतीक्षा करूँगा, जो याकूब के घराने से अपना मुँह छिपा रहा है। मैं उस पर भरोसा

रखूँगा।" उसे पढ़ने के बाद, ये-उन ने कहा कि चूँकि उस वचन में "प्रभु" शब्द आया है, इसलिए वह इतना महत्वपूर्ण है कि उसे रेखांकित किया जाए। इसलिए, मैंने उससे पूछा, "क्या तुम प्रभु पर भरोसा करती हो?" ठीक वैसे ही जैसे अंग्रेज़ी पाठ में लिखा है। उसने जवाब दिया, "हाँ।" मैं आपसे भी यही सवाल पूछना चाहता हूँ: क्या आप प्रभु पर भरोसा करते हैं? अगर आपका जवाब "हाँ" है, तो मैं पूछता हूँ: "आप प्रभु पर भरोसा क्यों करते हैं?" आज जब हम भजन संहिता 139 पर मनन करते हैं और उस परमेश्वर के स्वभाव के बारे में सीखते हैं जिस पर हम भरोसा करते हैं, तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी अपने प्रभु पर और भी गहराई से निर्भर हों और भरोसा करें।

भजन संहिता 139:1 में, भजनकार दाऊद परमेश्वर के बारे में यह स्वीकार करता है: "हे प्रभु, तूने मुझे परखा है और मुझे जाना है।" संक्षेप में, जिस परमेश्वर पर हम निर्भर हैं और भरोसा करते हैं, वह हमें परखता और जानता है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि जैसे-जैसे हम उस परमेश्वर के बारे में और अधिक सीखते हैं जो हमें परखता और जानता है, हम उस पर अपनी निर्भरता और भरोसे में बढ़ें और विश्वास का जीवन जिएँ।

सबसे पहले, जो परमेश्वर मुझे परखता और जानता है, वह मेरे हर काम और मेरे अस्तित्व से वाकिफ है (पद 1-4)। भजन संहिता 139:1-4 में, दाऊद स्वीकार करता है कि परमेश्वर जानता है कि वह कब बैठता है और कब उठता है, उसके विचारों को जानता है (पद 2), उसकी सभी चाल-चलन से अच्छी तरह वाकिफ है (पद 3), और उसकी ज़बान पर आने वाले हर शब्द को बोलने से पहले ही जानता है (पद 4)। संक्षेप में, दाऊद मानता है कि परमेश्वर सर्वज्ञ है। सब कुछ जानने वाले परमेश्वर के लिए दाऊद की बातों, कामों, मन के विचारों और गतिविधियों के हर पहलू से पूरी तरह वाकिफ होना कैसे संभव है? इसका कारण यह है कि परमेश्वर ने ही उसे बनाया है। दूसरे शब्दों में, चूँकि सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने दाऊद को बनाया है, इसलिए वह उसके बारे में सब कुछ जानता है। पद 13 को देखें: "क्योंकि तूने मेरे भीतरी अंगों को रचा; तूने मुझे मेरी माँ के गर्भ में बुना।" नतीजतन, दाऊद ने परमेश्वर का धन्यवाद किया (पद 14)। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि जिस तरह से परमेश्वर ने उसे बनाया था, वह अद्भुत और समझ से परे था (पद 14)। दूसरे शब्दों में कहें तो, दाऊद ने परमेश्वर का धन्यवाद इसलिए किया क्योंकि उसके बनने का तरीका इतना अद्भुत और रहस्यमय था कि वह इंसानी समझ से बाहर था।

कल, अय्यूब की पुस्तक पढ़ते समय, मैं अय्यूब 7:17-20a के अंश पर मनन करने के लिए रुका। मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मुझे लगा कि यह आज के वचन से गहराई से जुड़ा है: "इंसान क्या है, कि आप उसे इतना महत्व देते हैं, उस पर अपना दिल लगाते हैं, हर सुबह उससे मिलने आते हैं और हर पल उसकी परीक्षा लेते हैं? आप कब तक मुझसे नज़र नहीं हटाएँगे, या मुझे एक पल के लिए भी अकेला नहीं छोड़ेंगे ताकि मैं अपनी लार निगल सकूँ? हे इंसानों की रखवाली करने वाले।" इस बात पर विचार करते हुए कि प्रभु इंसानियत को इतना महत्व क्यों देते हैं—हम पर इतना ध्यान देते हैं और कभी भी नज़र नहीं हटाते—अय्यूब मानते हैं कि प्रभु "इंसानों के रखवाले" हैं। यह परमेश्वर न केवल यह जानते हैं कि हम कब बैठते और उठते हैं, बल्कि हमारे विचारों और हर काम को भी समझते हैं; वे जानते हैं कि हम क्या कहना चाहते हैं, इससे पहले कि शब्द हमारे होंठों से निकलें। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर हमारे रचयिता हैं। हमें इतने अद्भुत और रहस्यमय तरीके से बनाने के बाद, वे हमें किसी भी अन्य व्यक्ति से बेहतर जानते हैं। हमें इस सर्वज्ञ परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए—जो हमारी जाँच करते हैं और हमारे हर काम और हमारे अस्तित्व को पूरी तरह समझते हैं।

दूसरी बात, हम उस परमेश्वर से छिप नहीं सकते जो हमारी जाँच करते हैं और हमें जानते हैं (पद 5–12)।

भजन संहिता 139:7 पर विचार करें: "मैं आपके आत्मा से कहाँ जा सकता हूँ? या आपकी उपस्थिति से कहाँ भाग सकता हूँ?" यहाँ, दाऊद परमेश्वर की सर्वव्यापकता (हर जगह मौजूद होने) के बारे में बात करते हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर समय या स्थान से बंधे नहीं हैं; वे एक ही समय में हर जगह मौजूद हो सकते हैं। सर्वज्ञ परमेश्वर के रूप में, जो हमें सबसे अच्छी तरह जानते हैं, वे हमारे साथ होते हैं चाहे हम कहीं भी हों। इसलिए, हम परमेश्वर से बच नहीं सकते (यिर्मयाह 23:23–24; आमोस 9:2)। हम उनकी जाँच-परख से बच नहीं सकते। जैसा कि दाऊद बताते हैं, परमेश्वर हमें घेरे रहते हैं—हमें पूरी तरह से घेर लेते हैं ताकि हम उनकी नज़र से बच न सकें—और उनका हाथ लगातार हमें थामे रहता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि हम कभी भी उनकी देखभाल से बाहर न जाएँ (पद 5; पार्क युन-सन)। चूँकि दाऊद इस सच्चाई को जानते थे—कम से कम कुछ हद तक—अपने व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से, उन्होंने स्वीकार किया: "ऐसा ज्ञान मेरे लिए बहुत अद्भुत है, मेरे समझने की क्षमता से बहुत ऊँचा है" (पद 6)। उन्होंने माना कि हर जगह मौजूद

परमेश्वर से न तो बचा जा सकता है और न ही उनसे छिपा जा सकता है—चाहे स्वर्ग में हों, पाताल की गहराइयों में, समुद्र के छोर पर, या फिर घने अंधेरे में (पद 8–12)। इसीलिए उन्होंने पूछा, "मैं तेरी आत्मा से कहाँ जाऊँ? तेरी उपस्थिति से कहाँ भागूँ?" (पद 7)।

हमें भविष्यद्वक्ता यशायाह की इन बातों पर ध्यान देना चाहिए: "हाय उन पर जो प्रभु से अपनी योजनाएँ छिपाने के लिए बहुत गहराई में जाते हैं, जो अंधेरे में अपना काम करते हैं और सोचते हैं, 'हमें कौन देख रहा है? किसे पता चलेगा?'" (यशायाह 29:15)। अगर हम भी इस्राएल के लोगों की तरह सिर्फ़ होंठों से परमेश्वर का आदर करें, जबकि हमारा दिल उनसे दूर हो (पद 13)—अंधेरे में पाप करें और पूछें, "हमें कौन देख रहा है? किसे पता है?"—तो बाइबल कहती है कि हम पर "विपत्ति" आएगी। हम परमेश्वर के सब कुछ जानने और हर जगह मौजूद होने की सच्चाई से न तो छिप सकते हैं और न ही भाग सकते हैं। परमेश्वर हमारी हर हरकत को जानते हैं, और हम जहाँ भी हों, वे हमारे साथ होते हैं। यह परमेश्वर हमारे लिए 'इम्मानुएल' हैं—यानी 'परमेश्वर हमारे साथ'। परमेश्वर की हर जगह मौजूदगी की सच्चाई के साथ जीना एक सच्चा आशीर्वाद है—एक ऐसा परमेश्वर जो हमेशा हमारे साथ है, चाहे हम कहीं भी हों। जैसा कि भजन 121 बताता है, इस आशीर्वाद का मतलब है कि जब परमेश्वर हमारी रक्षा और देखभाल करते हैं, तो वे न तो ऊँघते हैं और न ही सोते हैं; वे यह पक्का करते हैं कि हम ठोकर न खाएँ (पद 3)। हमें इसी परमेश्वर पर भरोसा और विश्वास करना चाहिए।

तीसरी बात, जो परमेश्वर मुझे परखता और जानता है, वह मुझ पर अपना पूरा ध्यान लगाता है (पद 17–18)।

भजन संहिता 139:17–18 पर विचार करें: “हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे लिए कितने अनमोल हैं! उनकी गिनती कितनी बड़ी है! यदि मैं उन्हें गिनूँ, तो वे रेत के कणों से भी अधिक होंगे—जब मैं जागता हूँ, तो भी मैं तेरे साथ होता हूँ।” दाऊद कहता है, “तेरे विचार मेरे लिए कितने अनमोल हैं,” और वह इस बात पर आश्चर्य करता है कि सर्वज्ञ परमेश्वर—जो उसे सबसे अच्छी तरह जानता है और उससे सबसे अधिक प्रेम करता है—अपना सारा ध्यान और फोकस उस पर लगाता है, और उसके बारे में ऐसे विचार रखता है जिनकी संख्या रेत के कणों से भी अधिक है। दाऊद के दिल की हालत की कल्पना करें जब उसे एहसास हुआ कि जागने पर भी,

सर्वव्यापी परमेश्वर उसके साथ था और उसके बारे में अनगिनत विचार रखता था। यह महसूस करते हुए कि परमेश्वर का पूरा ध्यान और फोकस उस पर था, दाऊद परमेश्वर के अनमोल प्रेम के लिए धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सका (पद 14)। इसी कृतज्ञता के कारण, दाऊद को पक्का विश्वास था: क्योंकि परमेश्वर उससे बहुत अधिक प्रेम करता था, इसलिए वह दाऊद के शत्रुओं को नष्ट कर देगा—जो असल में परमेश्वर के भी शत्रु थे। इसके साथ ही, उसे भरोसा था कि परमेश्वर दुष्टों का न्याय करके उसे बचाएगा। यह भरोसा परमेश्वर के सर्वज्ञ होने, सर्वव्यापी होने और सबसे बढ़कर, उसकी दयालुता पर टिका था। संक्षेप में, क्योंकि दाऊद जानता था कि परमेश्वर उसे सबसे अच्छी तरह जानता है और उससे सबसे अधिक प्रेम करता है, इसलिए उसे यकीन था कि परमेश्वर दुष्टों का न्याय करके उसे बचाएगा।

व्यक्तिगत रूप से, मुझे भजन संहिता 139 का यह अंश बहुत प्रिय है। इसका कारण यह है कि, भले ही अपूर्ण रूप से, मैं अपनी ओर परमेश्वर के प्रेम को महसूस कर सकता हूँ। यह एहसास कि मुझ जैसे व्यक्ति के प्रति परमेश्वर के विचार—जो उसके अपार प्रेम से उपजे हैं—समुद्र के किनारे रेत के कणों जितने अनगिनत हैं, मुझे शक्ति देता है और कृतज्ञता से भर देता है। मैं चाहे कितनी भी गहराई से इस पर विचार करूँ, मैं खुद को ऐसे प्रेम के बिल्कुल अयोग्य पाता हूँ; फिर भी, परमेश्वर अनगिनत विचारों और कोमल देखभाल के साथ मुझे संजोता है। मैं इस महान प्रेम के लिए केवल गहरा धन्यवाद ही दे सकता हूँ। हमें इस परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए।

परमेश्वर हमें सबसे अच्छी तरह जानता है और हमसे सबसे अधिक प्रेम करता है; ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ हम उससे छिप सकें। इसलिए, जैसे दाऊद ने किया था, हमें भी परमेश्वर से यह प्रार्थना करनी चाहिए: "हे परमेश्वर, मुझे परख और मेरे मन को जान; मुझे आज़मा और मेरे बेचैन करने वाले विचारों को समझ। देख कि मुझमें कोई बुरा रास्ता तो नहीं है, और मुझे हमेशा बने रहने वाले रास्ते पर ले चल" (पद 23-24)। परमेश्वर के महान प्रेम का अनुभव करने वाले लोगों के तौर पर, हमें भी—दाऊद की तरह—यह प्रार्थना करनी चाहिए कि सब कुछ जानने वाला परमेश्वर हमारे दिलों की जाँच करे और उन्हें जाने। हमें उससे कहना चाहिए कि वह हमें परखे और हमारे असली इरादों को समझे। दाऊद की तरह, हमें यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारे दिल और इरादे उस परमेश्वर को पसंद आएँ जो सब कुछ जानने वाला, हर जगह मौजूद और प्रेम से भरा है। आइए हम सब पूरे दिल से प्रार्थना करें कि हमारे जीवन में कोई बुरा रास्ता न हो।

दुख सहने वालों का न्याय करने वाले परमेश्वर

[भजन संहिता 140]

पिछले शुक्रवार, मुझे ऑनलाइन न्यूज़ साइट "मिजू न्यूज़एनजॉय" (Miju Newsnjoy) पर एक दिलचस्प लेख मिला, जिसका शीर्षक था "'ईसाई वकील' कोरियाई चर्च के झगड़ों को सुलझाने के लिए आगे आए।" लेख में बताया गया कि लगभग चार कोरियाई-अमेरिकी ईसाई वकील और एक पादरी ने "कोरियाई विवाद समाधान समिति" (Korean Dispute Mediation Committee) बनाने के लिए हाथ मिलाया है। उनका मकसद दो तरह का है: चर्च के झगड़ों को सुलझाना और उन्हें होने से रोकने के बारे में शिक्षा देना। दूसरे शब्दों में, यह समूह बातचीत या मध्यस्थता में मदद करना चाहता है—यानी झगड़ों के कोर्ट तक पहुँचने से पहले ही पक्षों को मुद्दों को सुलझाने में मदद करना—और साथ ही झगड़ों को शुरू होने से रोकने या शुरुआती चरण में ही सुलझाने के लिए ट्रेनिंग देना। समिति के कानूनी विशेषज्ञों में से एक, सियो (Seo) नाम के वकील (जो लॉस एंजिल्स के एक चर्च में एल्डर भी हैं और 20 से 30 वर्षों से समुदाय की सेवा कर रहे हैं), ने एक लेक्चर के दौरान कहा: "लॉस एंजिल्स इलाके की एक अदालत के जज ने एक बार बहुत निराशा जताते हुए पूछा था, 'ऐसा क्यों है कि सिर्फ़ कोरियाई लोग ही अपने चर्च के झगड़ों को अदालत में ले जाते हैं, जबकि उन्हें चर्च के अंदर ही सुलझाया जा सकता है?' ... एक बार जब मुक़दमा शुरू हो जाता है, तो सिर्फ़ तथ्यों की जाँच-पड़ताल की प्रक्रिया में ही कम से कम $20,000 का खर्च आता है। मंडली द्वारा दिए गए कीमती दान को इस तरह क्यों खर्च किया जाए?" इस लेख को पढ़कर मुझे यूनिवर्सिटी के दिनों का अपना एक जूनियर साथी याद आया। वह अब एक वकील है और साल में एक बार दूसरे वकीलों के साथ भारत जाता है ताकि उन गरीब और बेबस लोगों की पैरवी कर सके जिनके साथ अन्याय हुआ है। उसके बारे में सोचते ही मुझे याकूब 1:27 की ये बातें याद आईं: "परमेश्वर पिता की नज़र में जो धर्म शुद्ध और बेदाग है, वह यह है: मुसीबत में अनाथों और विधवाओं की देखभाल करना और खुद को दुनिया की बुराइयों से दूर रखना।" बाइबल

सिखाती है कि मुसीबत में बेबस लोगों—जैसे अनाथों और विधवाओं—की देखभाल करना ही सच्चा धर्म और ईश्वरीय जीवन है। इसलिए, भजनकार आसाफ भी हमें सलाह देते हैं: "कमज़ोर और अनाथों का पक्ष लो; गरीब और दबे-कुचले लोगों के अधिकारों की रक्षा करो" (भजन संहिता 82:3)। न्याय बनाए रखने और अनाथों, विधवाओं, गरीबों और दबे-कुचले लोगों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करने के लिए समर्पित जीवन एक ऐसी सेवा है जिसे हम ईसाइयों को अपनाना चाहिए। ऐसा क्यों है? क्योंकि यह परमेश्वर का आदेश है, और यह परमेश्वर के अपने दिल और कामों को दिखाता है।

भजन संहिता 140:12 में, भजनकार दाऊद परमेश्वर के बारे में इस तरह कहता है: "मैं जानता हूँ कि प्रभु गरीबों को न्याय दिलाते हैं और ज़रूरतमंदों का पक्ष लेते हैं।" संक्षेप में, दाऊद मानता है कि परमेश्वर ही वह है जो पीड़ितों को न्याय दिलाता है और ज़रूरतमंदों के लिए न्याय स्थापित करता है। आज के अंश में हम देखते हैं कि दाऊद इसी परमेश्वर पर अपने विश्वास के आधार पर परमेश्वर से विनती कर रहा है। मैं उसकी प्रार्थना के दो पहलुओं पर विचार करना चाहूँगा।

पहला, दाऊद ने अपनी ओर से परमेश्वर से विनती की।

दाऊद ने अपने लिए परमेश्वर से क्या माँगा? उसने परमेश्वर से छुटकारा (मुक्ति) और सुरक्षा माँगी (पद 1-5)। भजन संहिता 140:1 को देखें: "हे प्रभु, मुझे बुरे लोगों से बचा; मुझे हिंसक लोगों से सुरक्षित रख।" दाऊद ने परमेश्वर से विनती की कि वह उसे दुष्ट और हिंसक लोगों से बचाए और सुरक्षित रखे क्योंकि उसके दुश्मन इतने बुरे थे कि वे उसे नुकसान पहुँचाने की गहरी मंशा रखते थे। वे न केवल दाऊद को नुकसान पहुँचाने की साजिश रचते थे और रोज़ाना उसके खिलाफ लड़ने के लिए इकट्ठा होते थे (पद 2), बल्कि वे ज़हरीले साँपों की तरह ज़हर उगलकर उसे मारना भी चाहते थे (पद 3)। नतीजतन, दाऊद ने परमेश्वर से विनती करते हुए कहा, "हे प्रभु, मुझे दुष्टों के हाथों से बचा; मुझे हिंसक लोगों से सुरक्षित रख" (पद 4)। ऐसा इसलिए था क्योंकि ये दुष्ट लोग उसे गिराने और उसे ठोकर खिलाने पर आमादा थे। यह ठीक शैतान का काम है। आज भी, शैतान काम कर रहा है, और किसी भी तरह से हममें से उन लोगों को, जो यीशु पर विश्वास करते हैं, ठोकर खिलाकर गिराने की कोशिश कर रहा है। उसका लक्ष्य हमें विश्वास की दौड़ के दौरान गिराना है—ताकि हम यीशु से मुँह मोड़ लें, उसे छोड़ दें और धर्मत्याग के रास्ते पर चल पड़ें। इस प्रकार, शैतान रोज़ाना

अपने बुरे सेवकों के साथ मिलकर हमें नुकसान पहुँचाने की साजिश रचता है। भजन संहिता 140:5 कहता है: "घमंडी लोगों ने मेरे लिए फंदा छिपाया है; उन्होंने रास्ते के किनारे रस्सियों का जाल फैलाया है और मेरे लिए जाल बिछाए हैं (सेलाह)।" अपने अहंकारी सेवकों के माध्यम से, शैतान न केवल दाऊद को, बल्कि आपको और मुझे भी नुकसान पहुँचाने के लिए फंदे, जाल और जाल बिछाता है। इसलिए, अगर हम ज़रा भी असावधान हुए, तो हम उन जाल में फँस सकते हैं और परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर सकते हैं। शैतान के जाल में फँसने से बचने के लिए, हमें परमेश्वर के वचन से लैस होना चाहिए और प्रार्थना में सतर्क और संयमित रहना चाहिए (1 पतरस 4:7)।

दूसरी बात, दाऊद ने अपने शत्रुओं के विषय में परमेश्वर से विनती की।

इन विनतियों को दो बिंदुओं में संक्षेप में बताया जा सकता है (मैकआर्थर):

(1) दाऊद ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसके शत्रुओं को विफल कर दे (भजन संहिता 140:6–8)। आज के वचन, भजन संहिता 140:8 को देखें: "हे यहोवा, दुष्टों को उनकी इच्छा पूरी न करने दे; उनकी बुरी योजनाओं को सफल न होने दे, कहीं ऐसा न हो कि वे घमंडी हो जाएँ (सेला)।" दाऊद ने परमेश्वर से उन बुरी योजनाओं को विफल करने की विनती की जो दुष्ट लोग उसे नुकसान पहुँचाने के लिए रोज़ बनाते थे। यह प्रार्थना करते समय, उसे परमेश्वर पर पक्का विश्वास और भरोसा था। भजन संहिता 140:6–7 को देखें: "मैंने यहोवा से कहा, 'तू मेरा परमेश्वर है; हे यहोवा, दया के लिए मेरी पुकार सुन।' हे प्रभु यहोवा, मेरे शक्तिशाली उद्धारकर्ता, तूने युद्ध के दिन मेरे सिर की रक्षा की।" अतीत में परमेश्वर की सुरक्षा और बचाने वाले कार्यों का अनुभव करने के बाद—जैसे जब परमेश्वर ने अहीतोफेल की सलाह को विफल किया और अबशालोम को हूशै की सलाह मानने के लिए प्रेरित किया, जिससे दाऊद की रक्षा हुई और अंततः वह बच गया—उसे विश्वास था कि परमेश्वर वर्तमान में भी उसकी रक्षा करेगा और उसे उसके शत्रुओं से बचाएगा। इसी भरोसे के साथ, उसने विश्वासपूर्वक प्रार्थना की कि परमेश्वर उसके शत्रुओं को विफल कर दे।

(2) दाऊद ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसके शत्रुओं को दंड दे (पद 9–11)।

भजन संहिता 140:9–11 को देखें: "उनके होंठों की बुराई उन्हें ही घेर ले जो मुझे घेरे हुए हैं। उन पर जलते हुए अंगारे गिरें; उन्हें आग में, गहरे गड्ढों में फेंक दिया जाए जहाँ से वे कभी उठ न सकें। निंदा करने वाले देश में स्थापित न हों; विपत्ति हिंसक लोगों का पीछा करे और उन्हें बर्बाद कर दे।" यहाँ, दाऊद परमेश्वर से विनती करता है कि वह अपने शत्रुओं पर विपत्ति लाकर उन्हें दंड दे, ताकि वे कभी दोबारा उठ न सकें। वह परमेश्वर से उनके विनाश की प्रार्थना करता है ताकि वे इस दुनिया में कभी दोबारा मज़बूती से खड़े न हो सकें। हमारी प्रार्थना भी यही होनी चाहिए। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर हमारे दुश्मनों—और अपने दुश्मनों—का विरोध करे और उन्हें नाकाम कर दे। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उनकी चालों को बिगाड़ दे और उन्हें खुद ही अपना विनाश करने पर मजबूर कर दे।

हम अक्सर खबरों में ऐसे लोगों की कहानियाँ सुनते हैं जिन्हें गलत तरीके से जेल में डाल दिया गया था, लेकिन बाद में DNA टेस्ट से वे बेगुनाह साबित हुए। जब हम ऐसे लोगों को देखते हैं—जो वकील का खर्च नहीं उठा सकते थे और ऐसे अपराधों के लिए दशकों तक जेल में रहे जो उन्होंने किए ही नहीं थे, और आखिर में रिहा हुए—तो हम यह सोचे बिना नहीं रह सकते कि वे खोए हुए साल कभी कैसे वापस मिल सकते हैं। मेरा मानना है कि आज भी ऐसे लोग हैं जो गलत तरीके से जेल की सज़ा काट रहे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि कानूनी माहौल बहुत भ्रष्ट हो गया है, जहाँ अक्सर सच के बजाय झूठ को सच की तरह पेश किया जाता है। सरकारी वकील कभी-कभी गलती से बेगुनाहों को जेल भेज देते हैं, जबकि बचाव पक्ष के वकील—जो बहुत पैसा कमाते हैं—अक्सर असली अपराधियों को बरी कराने की दलीलें देते हैं और उन्हें सज़ा से बचने में मदद करते हैं; कानूनी व्यवस्था में ऐसा ही पापपूर्ण माहौल फैला हुआ है। तो फिर, इस सच्चाई के बीच हमें कैसे जीना चाहिए? भजन संहिता 140 में दाऊद की तरह, हमें उस परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए जो पीड़ितों और ज़रूरतमंदों का पक्ष लेता है और न्याय बनाए रखता है। हमें उसकी बचाने वाली कृपा और सुरक्षा की तलाश करनी चाहिए। फिर भी, हमें बस यहीं नहीं रुकना चाहिए। हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमारे दुश्मनों को हराए और उन्हें सज़ा दे। इसलिए, मुझे उम्मीद है कि जब हम बुरे लोगों पर परमेश्वर के न्याय के ज़रिए नेक लोगों का उद्धार देखेंगे, तो आप और मैं परमेश्वर का धन्यवाद करेंगे।

लेकिन, हे प्रभु, मेरी आँखें आप पर टिकी हैं।

[भजन संहिता 141]

जब आप जीवन में मुश्किलों का सामना करते हैं तो क्या करते हैं? जब आप कितनी भी कोशिश कर लें, फिर भी आगे बढ़ना मुश्किल हो जाता है, तब आप क्या करते हैं? मुझे भजन संहिता 62:1 और 5 के शब्द याद आते हैं, जिन पर हमने पिछले हफ़्ते सुबह की प्रार्थना सभा में मनन किया था: "मेरी आत्मा चुपचाप केवल परमेश्वर की प्रतीक्षा करती है; मेरा उद्धार (आशा) उसी से आता है।" मुश्किलों का सामना करते समय कोई चुपचाप केवल परमेश्वर की ओर कैसे देख सकता है? इसका कारण यह है कि "शांति और भरोसे में ही तुम्हारी शक्ति है" (यशायाह 30:15)। मुश्किलों के बीच हमें चुपचाप परमेश्वर पर भरोसा क्यों करना चाहिए? क्योंकि हमारा उद्धार (और उसकी आशा) केवल प्रभु से ही आता है (भजन संहिता 62:1, 5)।

आज के अंश, भजन संहिता 141:7, 9 और 10 में, हम देखते हैं कि भजनकार दाऊद अपने दुश्मनों—दुष्ट लोगों—के कारण मुश्किलों का सामना कर रहा है। जिस मुश्किल का उसने सामना किया, उसमें न केवल वह खुद शामिल था, बल्कि उसके साथी भी शामिल थे, जिन्हें ये दुश्मन बर्बाद कर रहे थे (पद 7; पार्क युन-सन)। दाऊद के दुष्ट दुश्मनों ने उसे पकड़ने के लिए फंदे, जाल और जाल बिछाए (पद 9–10) और किसी भी तरह से उसे मारने की कोशिश की (पद 7)। ऐसी मुश्किल घड़ी में दाऊद ने क्या किया? मैं आज के पाठ से पाँच बातें बताना चाहूँगा।

पहली बात, दाऊद ने अपनी आँखें केवल प्रभु पर टिकाए रखीं।

भजन संहिता 141:8 को देखें: "लेकिन मेरी आँखें आप पर टिकी हैं, हे प्रभु परमेश्वर; मैं आप में शरण लेता हूँ—मेरी आत्मा को बेसहारा न छोड़ें।" हालाँकि बाइबल के कोरियाई संस्करणों में यह नहीं दिखता, लेकिन अंग्रेज़ी अनुवादों में पद 8 की शुरुआत "लेकिन" (But) शब्द से होती है। ऐसी मुश्किल परिस्थितियों के बीच, दाऊद कहता है, "लेकिन मेरी आँखें आप पर टिकी हैं, हे प्रभु परमेश्वर।" यह परमेश्वर की मदद की ओर देखने और उसकी प्रतीक्षा करने के नज़रिए को दर्शाता है (पार्क युन-सन)। दुख के समय निराश होने के बजाय एक विश्वासी का आशा के साथ परमेश्वर की ओर देखना ही अपने आप में एक चमत्कार है; तो फिर, क्या इससे उस विश्वास की पूर्ति नहीं होगी? (पार्क युन-सन)। सचमुच, यह एक चमत्कार है कि दुख के बीच—चाहे हमें कैसी भी रुकावटों या मुश्किलों का सामना करना पड़े—हम हिम्मत नहीं हारते; मुश्किल हालात पर ध्यान देने के बजाय, हम अपनी नज़रें प्रभु पर टिकाए रखते हैं, जो हमें उनसे बचाने और मदद करने में पूरी तरह सक्षम हैं।

इस बात पर विचार करने से कि दाऊद ने अपनी नज़रें प्रभु की ओर कैसे घुमाईं, इब्रानियों 12:2 का पहला हिस्सा याद आता है: "आइए हम अपनी नज़रें यीशु पर टिकाए रखें, जो हमारे विश्वास को शुरू करने वाले और उसे पूरा करने वाले हैं..." जब हम रुकावटों का सामना करते हैं या खुद को मुश्किलों और परेशानी में पाते हैं, तो हमारी नज़रें सिर्फ़ प्रभु पर टिकी होनी चाहिए—जो हमारे विश्वास को शुरू करने वाले और उसे पूरा करने वाले हैं। हमें मिस्र से निकलते समय लाल सागर का सामना करने वाले इस्राएलियों की तरह डरना नहीं चाहिए और न ही सामने समुद्र और पीछे पीछा करती मिस्र की सेना को देखकर शिकायत करनी चाहिए। मूसा की तरह, हमें अपनी नज़रें ऊपर उठानी चाहिए। हमें अपनी नज़रें परमेश्वर की ओर उठानी चाहिए—जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया है—और जो हमारी मदद करने वाले हैं (भजन संहिता 121:1–2)।

दूसरी बात, दाऊद ने अपने हाथ परमेश्वर की ओर उठाए थे।

भजन संहिता 141:2 पर विचार करें: "मेरी प्रार्थना आपके सामने धूप की तरह हो; मेरे हाथों का उठना शाम की बलि की तरह हो।" जब दाऊद ने मुश्किलों का सामना किया, तो उसने अपनी नज़रें प्रभु की ओर घुमाईं

और अपने हाथ उनकी ओर उठाए। "उसके हाथ प्रभु की ओर उठे थे" वाक्यांश का अर्थ है कि अपनी परीक्षाओं के बीच, दाऊद ने सच्ची प्रार्थना में अपनी आत्मा परमेश्वर को समर्पित कर दी (पार्क युन-सन)। सच्ची प्रार्थना की इस मुद्रा—अपनी आत्मा को परमेश्वर को समर्पित करने—की झलक हमें आज के पाठ के पहले पद में मिलती है: "हे प्रभु, मैं तुझे पुकारता हूँ; जल्दी मेरे पास आ। जब मैं तुझे पुकारूँ तो मेरी आवाज़ सुन।" दाऊद की प्रार्थना में "जल्दी" शब्द का इस्तेमाल यह दिखाता है कि वह परमेश्वर से तुरंत मदद की गुहार लगा रहा था; हालात सचमुच गंभीर थे। संक्षेप में, दाऊद की प्रार्थना परमेश्वर से तुरंत छुटकारा पाने की तड़प से निकली एक गुहार थी। इसलिए, उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसकी आत्मा को बेसहारा न छोड़ें (पद 8), वह सुरक्षा प्रदान करें (पद 9), और वह दुष्टों का न्याय करें जबकि दाऊद खुद सुरक्षित बच जाए (पद 10)। ऐसी ज़रूरी प्रार्थनाएँ करते हुए, दाऊद ने परमेश्वर के सामने अपना मन पूरी तरह खोल दिया। उसने "लगातार" (पद 5) प्रार्थना करने का संकल्प लिया और चाहा कि परमेश्वर उसकी प्रार्थनाओं को उसी खुशी के साथ स्वीकार करें, जैसी खुशी उन्हें शाम की बलि से मिलती थी (पार्क युन-सन)।

तो फिर, वह किस तरह की प्रार्थना है—शाम की बलि की तरह—जिसे परमेश्वर खुशी से स्वीकार करते हैं? भजन संहिता 51:17 याद आती है: "परमेश्वर को जो बलि चाहिए, वह है टूटा हुआ मन; हे परमेश्वर, तू टूटे और पछतावे से भरे हुए मन को तुच्छ नहीं जानेगा।" वह प्रार्थना जिसे परमेश्वर शाम की बलि की तरह खुशी से स्वीकार करते हैं, वह टूटे हुए मन और पछतावे से भरे दिल के साथ की गई प्रार्थना है। परमेश्वर उन प्रार्थनाओं से खुश होते हैं और उन्हें स्वीकार करते हैं जो ऐसे दिल से की जाती हैं जो पाप को पहचानता है, उसे स्वीकार करता है और पछतावा करता है। परमेश्वर उन प्रार्थनाओं से खुश होते हैं और उन्हें स्वीकार करते हैं जो ऊपर उठाए हुए हाथों और शुद्ध, साफ़ दिल के साथ की जाती हैं।

तीसरी बात, दाऊद का मन बुरे कामों की ओर नहीं झुका।

भजन संहिता 141:3 को देखें: "हे प्रभु, मेरे मुँह पर पहरा बिठा; मेरे होंठों के दरवाज़े पर नज़र रख।" जब हम परेशानी या दर्द और मुश्किलों में हों, तो हमें कम बोलना चाहिए। इसका कारण यह है कि ऐसे समय में, हमारे होंठों से परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने का बहुत ज़्यादा जोखिम होता है। जब हम आध्यात्मिक रूप से कमज़ोर हों, तो हमें अपनी बातचीत में विशेष रूप से सावधान रहना चाहिए। वास्तव में, शैतान की चालों को

देखने से पता चलता है कि वह हमें प्रार्थना करने से रोकने और हमारे दिलों को पाप की ओर मोड़ने के लिए हमारी नज़रें हमारी दर्दनाक, मुश्किल परिस्थितियों पर टिकाने की कोशिश करता है। ऐसा करके, शैतान हमें अपने होंठों से परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने के लिए उकसाता है। इसका एक उदाहरण अय्यूब 2:9 में अय्यूब की पत्नी के शब्दों में मिलता है: "... क्या तुम अभी भी अपनी ईमानदारी पर कायम हो? परमेश्वर को कोस दो और मर जाओ!" यह सुनकर, अय्यूब ने अपनी पत्नी को जवाब दिया: "... तुम वैसी ही बात करती हो जैसी मूर्ख औरतें करती हैं। क्या हम सचमुच परमेश्वर से अच्छाई स्वीकार करेंगे, और क्या हम मुसीबत स्वीकार नहीं करेंगे?" इन सबमें, अय्यूब ने अपने होंठों से पाप नहीं किया (पद 10)। जिन मुश्किलों का उसने सामना किया, उनके बीच भी अय्यूब ने अपने शब्दों से परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं किया। दाऊद की तरह, हमें प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमारे मुँह पर पहरा बिठाए और हमारे होंठों के दरवाज़े पर नज़र रखे। खासकर तब, जब हमें उन लोगों की वजह से तकलीफ़ और परेशानी उठानी पड़ती है जो हमें सताते हैं, तो हमें प्रार्थना में अपना ध्यान परमेश्वर पर लगाना चाहिए, अपने दिल की अच्छी तरह हिफ़ाज़त करनी चाहिए और कोशिश करनी चाहिए कि हम अपनी बातों से उसके ख़िलाफ़ कोई पाप न करें। ऐसे पलों में, दाऊद की तरह, हमारी बातें दूसरों को सुनने में अच्छी लगनी चाहिए (भजन संहिता 141:6)। अच्छी तरह बात करने का मतलब है ऐसी बातें कहना जिनसे सुनने वाले को खुशी और सुकून मिले। इससे प्रेरित पौलुस के कुलुस्सियों 4:6 के शब्द याद आते हैं: “तुम्हारी बातचीत हमेशा अनुग्रह भरी और नमक से स्वादिष्ट हो...।” हमारे मुँह से निकलने वाली बातें सुनने वालों तक अनुग्रह पहुँचाएँ।

पाँचवीं बात, दाऊद ने धर्मी लोगों की डाँट-फटकार को ठुकराया नहीं।

भजन संहिता 141:4 को देखें: "मेरे मन को बुराई की ओर न खींचने दे ताकि मैं बुरे काम करने वालों के साथ मिलकर बुरे कामों में हिस्सा न लूँ; मुझे उनके स्वादिष्ट भोजन न खाने दे।" जब हम मुश्किलों का सामना करते हैं, और अगर हम अपनी आँखें प्रभु की ओर नहीं घुमाते और प्रार्थना नहीं करते, तो हमारी आध्यात्मिक मज़बूती कमज़ोर हो जाती है, जिससे हम शैतान के प्रलोभनों का शिकार हो सकते हैं और परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर सकते हैं। आखिरकार, अगर हमारी आँखें और हाथ प्रभु की ओर नहीं होते, तो हम आध्यात्मिक रूप से कमज़ोर हो जाते हैं, और हमारे दिल आसानी से बुराई—पापपूर्ण कामों—की ओर झुक जाते हैं। डॉ. पार्क युन-सन ने कहा: "मुश्किल समय में, इंसान अपने मज़बूत विश्वास से समझौता करने और बुरे लोगों के

साथ मिल जाने की ओर प्रवृत्त होते हैं। इसलिए, हमें ऐसे अंजाम से बचने का संकल्प लेना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए। अपनी जान देकर भी, हमें ऐसे लोगों के कामों में शामिल नहीं होना चाहिए।" मेरा मानना है कि बात दो रास्तों में से एक पर आती है: या तो हम मुश्किलों से गुज़रकर आध्यात्मिक रूप से बेहतर बनते हैं और परमेश्वर की महिमा करते हैं, या हम आध्यात्मिक रूप से कमज़ोर हो जाते हैं और परमेश्वर के विरुद्ध पाप करते हैं। हम या तो दुख की भट्टी से गुज़रकर आध्यात्मिक रूप से मज़बूत बनते हैं—दुनिया और पाप से अलग होकर पवित्र जीवन जीते हैं—या हम आध्यात्मिक रूप से कमज़ोर हो जाते हैं, दुनिया और पाप के साथ मिल जाते हैं, बुरे लोगों के साथ घुल-मिल जाते हैं, और नास्तिकों से भी बुरा जीवन जीते हैं। मुझे चिंता होती है कि, कम से कम ऊपर से देखने पर, अक्सर ऐसा लगता है कि हम ईसाई ऐसी ज़िंदगी जी रहे हैं जो उन लोगों से भी कमतर है जो विश्वास नहीं करते। इसका क्या कारण है? ऐसा इसलिए है क्योंकि मुश्किलों और परेशानियों के बीच हमारे दिल कमज़ोर हो जाते हैं और बुराई की ओर झुकने लगते हैं। तो फिर, हम विश्वासियों को क्या करना चाहिए?

आज के हिस्से में, दाऊद ने अपनी नज़रें प्रभु पर टिकाईं और परमेश्वर की ओर अपने हाथ उठाए; उसने यह भी तय किया और परमेश्वर से प्रार्थना की कि उसका दिल बुराई की ओर न झुके और वह पाप न करे। भले ही बुरे लोगों का खाना किसी "स्वादिष्ट पकवान" जैसा आकर्षक लगता हो, उसका दिल आँखों की लालसा के प्रलोभन में नहीं फँसा, क्योंकि उसकी नज़रें पूरी तरह से प्रभु पर टिकी हुई थीं। इसके अलावा, क्योंकि प्रार्थना में परमेश्वर की ओर उठाए गए उसके हाथ पवित्रता और शुद्धता चाहते थे, इसलिए वह बुरे काम करने वालों के बुरे कामों में शामिल होने से बच सका। दाऊद की तरह, मुश्किलों के बीच कई प्रलोभनों का सामना करते समय भी, हमें प्रभु पर अपनी नज़रें टिकाकर और उनकी ओर हाथ उठाकर प्रार्थना में खुद को समर्पित करके अपने दिलों की रक्षा करनी चाहिए।

चौथा, दाऊद ने अपने मुँह पर पहरा बिठाया।

भजन संहिता 141:5 के पहले हिस्से को देखिए: "धर्मी मुझे मारे—यह एक भलाई है; वह मुझे डांटे—यह मेरे सिर के लिए तेल जैसा है; मेरा सिर इसे मना नहीं करेगा...।" मुश्किल समय में भी, दाऊद ने न केवल धर्मी व्यक्ति की डांट को ठुकराने से इनकार किया, बल्कि इसे कृपा का काम भी माना। मुसीबत के समय ऐसी

डांट को कृपा के रूप में देखना कैसे संभव है? जब हम परेशानी में होते हैं, तो हम स्वाभाविक रूप से उन भाई-बहनों से सांत्वना चाहते हैं जो हमसे प्यार करते हैं; कोई भी डांट नहीं सुनना चाहता। अगर हम पहले से ही संघर्ष कर रहे हों और हमें डांटा जाए, तो हमारा दिल शायद और भारी हो जाएगा। फिर भी, कोई सोच सकता है कि दाऊद ने इतने मुश्किल समय में धर्मी व्यक्ति की डांट को ठुकराने के बजाय उसे कृपा के रूप में कैसे अपनाया। इसका राज़ दो शब्दों में बताया जा सकता है: विनम्रता और समझदारी। पहला, विनम्रता का मतलब है मुश्किल, दर्द और विपरीत परिस्थितियों के बीच दाऊद का प्रभु पर ध्यान केंद्रित करना और—प्रार्थना के ज़रिए—परमेश्वर के सामने अपना दिल झुकाना। इसी विनम्रता ने दाऊद को धर्मी व्यक्ति की डांट को ठुकराने के बजाय कृपा के रूप में स्वीकार करने में मदद की। दूसरा, दाऊद में समझदारी थी। नीतिवचन के लेखक सुलैमान कहते हैं: "मज़ाक उड़ाने वाले को मत डांटो, वरना वह तुमसे नफ़रत करेगा; समझदार व्यक्ति को डांटो और वह तुमसे प्यार करेगा" (नीतिवचन 9:8)। हम अपनी ज़िंदगी में इस सच्चाई का अनुभव करते हैं। कोई व्यक्ति चाहे कितने भी प्यार से किसी घमंडी, अहंकारी इंसान को डांटे, वे नहीं सुनेंगे। भले ही डांट सावधानी से और घुमा-फिराकर दी जाए, वे उस पर ध्यान नहीं देते; इसके बजाय, वे नफ़रत से जवाब देते हैं। नतीजतन, हम ऐसे अहंकारी लोगों को डांटने से बचते हैं। हालाँकि, हम देखते हैं कि समझदार व्यक्ति, भले ही उसे सीधे डांटा जाए, सुनता है, अपनी गलतियों को सुधारने की कोशिश करता है और कृतज्ञता के साथ जवाब देता है। भले ही डांट के समय उन्हें अंदर से बुरा लग सकता है, लेकिन बाद में उनकी सच्ची सराहना परमेश्वर के वचन की सच्चाई की पुष्टि करती है: "समझदार को डांटो, और वह तुमसे प्यार करेगा" (पद 8)। क्योंकि दाऊद में ऐसी विनम्रता और समझदारी थी, इसलिए उसने मुश्किल समय में भी धर्मी व्यक्ति की डांट को ठुकराया नहीं; इसके बजाय, उसने इसे कृपा के काम के रूप में स्वीकार किया। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप और मुझमें भी ऐसी ही विनम्रता और समझदारी हो।

चाहे हमारे सामने कैसी भी मुश्किलें या मुसीबतें क्यों न हों, हम अपनी नज़रें प्रभु पर टिकाए रखें। आइए हम अपना ध्यान उन पर लगाए रखें, उन्हें पुकारें और प्रार्थना में अपने हाथ उनकी ओर उठाएँ। साथ ही, हम अपने दिलों की सावधानी से रक्षा करें ताकि वे बुराई की ओर न झुकें। आइए हम सब अपनी ज़बान पर पहरा रखें। जब हमें डाँटा-फटकारा जाए, तो हम उसे ठुकराएँ नहीं, बल्कि उसे कृपा मानकर स्वीकार करें। प्रभु हमारी प्रार्थनाएँ सुनेंगे और हमें बचाएँगे।

“जब मेरी आत्मा मुझमें कमज़ोर पड़ जाती है”

[भजन संहिता 142]

दोस्तों, क्या इन दिनों आपको कई तरह की तकलीफ़ों का सामना करना पड़ रहा है? ज़िंदगी अक्सर कांटों की झाड़ी जैसी लगती है, जो कई तरह के दर्द और मुश्किलों में उलझी हुई होती है। नतीजतन, बहुत से लोग चिंता, घबराहट और तनाव से पैदा होने वाली बीमारियों से जूझते हैं। इसीलिए मैं ज़िंदगी की तुलना कांटों की झाड़ी से करता हूँ; घटनाएँ इतनी बुरी तरह उलझ जाती हैं कि वे अक्सर हमारे दिलों पर भारी बोझ बन जाती हैं। ऐसे पलों में, हम खुद से पूछते हैं, “मेरी ज़िंदगी इतनी उलझी हुई क्यों है?” सचमुच, यह ज़िंदगी कांटों की झाड़ी जैसी है। जब मैं पूछता हूँ, “ऐसा क्यों है?” तो मुझे इसका जवाब यीशु की ‘बीज बोने वाले की दृष्टांत’ (Parable of the Sower) में मिलता है। इसकी मूल वजह है “दुनिया, चिंताएँ और धन का धोखा।” इस दुनिया में रहते हुए, हम दुनिया के कई तरह के लालच में फँस जाते हैं और परमेश्वर के खिलाफ़ पाप करते हैं; इससे दर्दनाक मुश्किलों का एक ऐसा जाल बन जाता है जो और भी उलझता जाता है और हमें बहुत परेशान करता है। इसके अलावा, हम इन गांठों को खुद सुलझाने की जितनी कोशिश करते हैं, वे उतनी ही ज़्यादा उलझती हुई लगती हैं। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए?

भजन संहिता 142 में, हम भजनकार दाऊद को एक ऐसी स्थिति का सामना करते हुए देखते हैं जहाँ दुख की कई वजहें कांटों की झाड़ी की तरह आपस में उलझी हुई हैं। हम इसे आयत 2 में साफ़ तौर पर देख सकते हैं: “मैं उसके सामने अपनी शिकायत रखता हूँ; मैं उसे अपनी परेशानी बताता हूँ।” यहाँ “शिकायत” के लिए इस्तेमाल किया गया हिब्रू शब्द है *सियाच* (siach), जिसका शाब्दिक अर्थ है “झाड़ी” या “घनी झाड़ी।” “घनी झाड़ी” शब्द का मतलब है कि दाऊद की ज़िंदगी बहुत सारी दर्दनाक मुश्किलों में उलझी हुई थी—बिल्कुल कांटों की झाड़ी की तरह—जिससे वह एक बेबस और दयनीय हालत में पहुँच गया था (पार्क

युन-सन)। दाऊद को इतनी सारी मुश्किलों का सामना क्यों करना पड़ा, जिससे उसकी हालत इतनी खराब हो गई? ऐसा इसलिए था क्योंकि शाऊल उसे सता रहा था (आयत 6; पार्क युन-सन)। शाऊल का ज़ुल्म इतना बढ़ गया था कि उसने दाऊद को पकड़ने के लिए उसके रास्ते में छिपे हुए जाल बिछा दिए थे (आयत 3)। आखिरकार, राजा शाऊल ने दाऊद की जान लेने की कोशिश की (1 शमूएल 18–24), जिससे दाऊद को भागना पड़ा और अदुल्लाम की गुफा में छिपना पड़ा (22:1)। बाहर से देखने पर, डेविड की हालत बिल्कुल निराशाजनक लग रही थी—एक ऐसी बुरी हालत जिसमें ईश्वरीय हस्तक्षेप के बिना बचने की कोई उम्मीद नहीं थी (मैकआर्थर)। आज के पाठ का मुख्य अंश इस निराशाजनक और उम्मीद खो चुकी हालत को आयत 6 में एक ही वाक्यांश में बताता है: "...मैं बहुत नीचे गिर गया हूँ।" दूसरे शब्दों में, शाऊल के सताने की वजह से डेविड बहुत ही गिरी हुई और कमज़ोर हालत में पहुँच गया था (आयत 6; पार्क युन-सुन)। यह बहुत ज़्यादा गिरी हुई और कमज़ोर हालत बाहर से भी दिख रही थी—जब वह राजा शाऊल से छिपकर अदुल्लाम की गुफ़ा में था (आयत 7)—और अंदर से भी, जहाँ उसका मन टूट चुका था और वह बहुत दुखी था (आयतें 2–3)। इसी बीच, आयत 4 बताती है कि डेविड को लगा कि उसे पूरी तरह अकेला छोड़ दिया गया है: "मेरे दाहिनी ओर देखो; कोई मुझे पहचानता नहीं, मेरे पास कोई पनाह नहीं है, और कोई मेरी आत्मा की परवाह नहीं करता।" डेविड अफ़सोस करता है कि वह जहाँ भी देखता है, कोई भी उसमें दिलचस्पी नहीं ले रहा, कोई उसकी मदद करने वाला नहीं है, और कोई उसे दिलासा देने वाला नहीं है। इंसानी नज़र से यह कितनी बुरी हालत लगती है। फिर भी, इसमें परमेश्वर की योजना छिपी है। ऐसा लगता है जैसे परमेश्वर डेविड के आस-पास के हर दूसरे रास्ते को बंद कर रहे थे। इसका कारण क्या था? परमेश्वर यह पक्का कर रहे थे कि डेविड प्रार्थना में अपना टूटा हुआ और दुखी मन केवल उन्हीं के सामने रखे। आज के पाठ की आयतें 1 और 2 देखें: "मैं ऊँची आवाज़ में प्रभु से पुकारता हूँ; मैं ऊँची आवाज़ में प्रभु से विनती करता हूँ। मैं उनके सामने अपनी शिकायत रखता हूँ; मैं उनके सामने अपनी परेशानी बताता हूँ।" अपनी गिरी हुई हालत में भी, डेविड ने हिम्मत नहीं हारी; बल्कि, उम्मीद से भरकर, उसने प्रार्थना में अपनी पूरी हालत परमेश्वर के सामने खुलकर रखी (पार्क युन-सुन)। आयत 3 देखें: "जब मेरा मन अंदर से बहुत परेशान था, तो आप मेरा रास्ता जानते थे। जिस रास्ते पर मैं चलता हूँ, वहाँ उन्होंने चुपके से मेरे लिए जाल बिछाया है।" इस प्रार्थना में, डेविड परमेश्वर के सामने अपने मन की गहरी भावनाएँ रख रहा है; वह अपना दिल उनके सामने हल्का कर रहा है। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसका मन अंदर से बहुत परेशान और टूटा हुआ था। डेविड बहुत परेशान था

क्योंकि उसके मन में शिकायत और दुख की भावना थी (आयत 2)। इसलिए, उन्होंने परमेश्वर के सामने अपने दिल की बातें कहीं।

यहाँ, मैं दाऊद की प्रार्थना के तीन पहलुओं पर विचार करना चाहता हूँ। दूसरे शब्दों में, मैं आयत 5 से 7 में दी गई दाऊद की प्रार्थना की बातों पर गौर करना चाहता हूँ और उन्हें अपने जीवन में लागू करना चाहता हूँ।

पहली बात, दाऊद की प्रार्थना ऐसी थी जिसमें परमेश्वर को परमेश्वर के रूप में माना गया था।

भजन संहिता 142:5 को देखिए: "हे यहोवा, मैंने तुझसे पुकारकर कहा; 'तू ही मेरी शरणस्थान है, जीवितों के देश में मेरा भाग है।'" दाऊद ने अपनी प्रार्थना की शुरुआत यह बताते हुए की कि परमेश्वर कौन हैं और उनके स्वभाव को मानते हुए की। उन्होंने यह कहते हुए शुरुआत की कि परमेश्वर "मेरी शरणस्थान" और "मेरा भाग" हैं। जब दाऊद ने अपने दाईं ओर देखा और पाया कि उन्हें जानने वाला कोई नहीं है, शरण लेने की कोई जगह नहीं है, और उनकी आत्मा की परवाह करने वाला कोई नहीं है (आयत 4), तो उन्होंने अपनी नज़रें परमेश्वर की ओर घुमाईं, जो उनकी सच्ची शरणस्थान हैं। जब हमारी आत्मा टूट जाती है और हमारे मन में गहरी नाराज़गी होती है, तो हम अपने आस-पास के लोगों के सामने अपने दिल की बात कह सकते हैं—लेकिन क्या हम पूरे भरोसे के साथ कह सकते हैं कि वे हमारी शरणस्थान हैं? लोगों को अपनी शरणस्थान बनाना खतरनाक है; यह रेत पर घर बनाने जैसा है। ऐसी नींव कमज़ोर होती है और उसका गिरना तय है, जिससे हम और भी बुरी हालत में पहुँच जाते हैं। हमें केवल परमेश्वर को ही अपनी शरणस्थान बनाना चाहिए। केवल हमारे प्रभु, जो हमारी शरणस्थान हैं, हमारी रक्षा कर सकते हैं, हमारी टूटी हुई आत्मा को दिलासा दे सकते हैं और हमारी मदद के लिए आ सकते हैं। दाऊद ने न केवल परमेश्वर को "मेरी शरणस्थान" माना और स्वीकार किया; बल्कि उन्होंने उन्हें "मेरा भाग" मानते हुए भी प्रार्थना की। इस संदर्भ में "मेरा भाग" का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि चूँकि परमेश्वर जीवन का स्रोत हैं, इसलिए केवल वे ही जीवन का सच्चा आनंद ले सकते हैं जिनके पास वे हैं (पार्क युन-सन)। इसीलिए हम कभी-कभी भजन 82 गाते हैं: "प्रभु, तू ही मेरा आनंद, मेरी आशा और मेरा जीवन है..." हमें अपने दुख और अपनी टूटी हुई आत्मा को प्रभु के पास लाना चाहिए—जो हमारी शरणस्थान और हमारा अनंत जीवन हैं—और सच्चे मन से उन्हें खोजना चाहिए।

दूसरी बात, दाऊद की प्रार्थना परमेश्वर से उद्धार पाने की प्रार्थना थी। भजन संहिता 142:6 को देखिए: "मेरी पुकार सुन, क्योंकि मुझे बहुत ज़रूरत है; मुझे उनका पीछा करने वालों से बचा, क्योंकि वे मुझसे बहुत ज़्यादा ताकतवर हैं।" पूरी तरह बेबस होने पर, डेविड ने राजा शाऊल से बचाने के लिए परमेश्वर से गुहार लगाई, जो उसे सता रहा था। उसे परमेश्वर से मदद माँगने के लिए मजबूर होना पड़ा क्योंकि राजा शाऊल और उसकी सेना उससे कहीं ज़्यादा ताकतवर थी। फिर भी, क्योंकि उनके सतावे के कारण वह बहुत कमज़ोर हो गया था, डेविड ने परमेश्वर—अपनी सच्ची पनाह—में शरण ली और सर्वशक्तिमान से उद्धार की कृपा माँगी। दुख और मुश्किलों के बीच, और अपने भाई-बहनों के साथ संगति करते हुए, मुझे अक्सर वह सुसमाचार गीत याद आता है: "जब मैं कमज़ोर होता हूँ, तो तुम मुझे ताकत देते हो।" शायद ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं देखता हूँ कि जब वे अलग-अलग मुश्किलों का सामना करते हैं, तो परमेश्वर उन्हें अपनी कमज़ोरी का एहसास कराता है। उन पलों में, जब वे अपनी कमज़ोरी में परमेश्वर की ओर देखते हैं, तो मुझे उन पर उसका शक्तिशाली हाथ दिखाई देता है। जब मैं कमज़ोरी के बीच परमेश्वर द्वारा दी गई अंदरूनी ताकत को उभरते हुए देखता हूँ, तो मैं परमेश्वर के बचाने वाले काम के लिए धन्यवाद देता हूँ। इसलिए, हमें पूरी तरह कमज़ोर होने से डरने की ज़रूरत नहीं है। इसके बजाय, हमें बहुत ज़्यादा कमज़ोरी के समय को परमेश्वर की बचाने वाली कृपा पाने की इच्छा करने के मौकों के तौर पर देखना चाहिए। जब हम कमज़ोर होते हैं, तो हमें परमेश्वर की ताकत पर भरोसा करना चाहिए और उसे पुकारना चाहिए; ऐसा करने से, वह हमें हमारी कमज़ोरी से छुटकारा दिलाएगा।

आखिर में, तीसरी बात यह है कि डेविड की प्रार्थना इस भरोसे के साथ थी कि प्रभु उसके साथ दया से पेश आएगा। भजन संहिता 142:7 को देखिए: "मुझे मेरी जेल से आज़ाद कर, ताकि मैं तेरे नाम की स्तुति कर सकूँ। तब धर्मी लोग मेरे चारों ओर इकट्ठा होंगे क्योंकि तूने मुझ पर भलाई की है।" हालाँकि डेविड राजा शाऊल से बचने के लिए अदुल्लाम की गुफा में छिपा हुआ था, लेकिन उसे विश्वास था कि परमेश्वर उसे उस जेल जैसी गुफा से छुड़ाएगा। संक्षेप में, उसे उद्धार का भरोसा था। उसे न केवल अपने उद्धार का भरोसा था, बल्कि यह भी यकीन था कि प्रभु उसे शाऊल के हाथों से बचाएगा और धर्मी लोगों को उसके चारों ओर इकट्ठा करेगा। इसका क्या मतलब है? आज के हिस्से की चौथी आयत में, डेविड दुख जताता है कि जब वह अपनी दाईं ओर देखता है, तो उसे जानने वाला कोई नहीं होता, कोई पनाह नहीं होती, और उसकी आत्मा की परवाह करने वाला कोई नहीं होता; फिर भी पाँचवीं आयत तक, वह मानता है कि परमेश्वर ही उसकी पनाह है और प्रार्थना में प्रभु की ओर मुड़ता है। आखिर में, सातवीं आयत में, हम देखते हैं कि उसे पूरा भरोसा

है कि धर्मी लोग उसके चारों ओर इकट्ठा होंगे। यह कैसे मुमकिन है? ऐसा इसलिए है क्योंकि डेविड ने उस परमेश्वर पर भरोसा किया जो दयालु है। भजन संहिता 116:7 में लिखा है: "हे मेरे मन, फिर से आराम कर, क्योंकि प्रभु ने तेरे साथ भलाई की है।" डेविड की तरह, जब हमारा मन परेशान हो, तो हमें प्रभु की दया पर भरोसा करना चाहिए और प्रार्थना के ज़रिए अपने मन को शांति की स्थिति में लाना चाहिए। जब हम प्रार्थना में परमेश्वर के सामने अपनी परेशानियाँ रखते हैं और उसकी बचाने वाली कृपा का अनुभव करते हैं, तो हमें परमेश्वर की शांति का आनंद लेना चाहिए—ऐसी शांति जो दुनिया नहीं दे सकती।

यह दुनिया बहुत-सी मुश्किलों और परेशानियों से भरी है; यहाँ पाप और मौत का साया छाया हुआ है। ऐसी दुनिया में हमारा जीवन काँटों की झाड़ी जैसा है; अक्सर हमारी आत्माएँ दर्दनाक आज़माइशों के जाल में फँसकर घायल हो जाती हैं। कभी-कभी हम बहुत अकेलापन महसूस करते हैं, और हमारे पास अपना दुख बाँटने के लिए कोई नहीं होता। ऐसे पलों में, आज के पाठ में बताए गए भजनकार दाऊद की तरह, हमें प्रार्थना में अपना दिल परमेश्वर के सामने खोल देना चाहिए। ऐसा करते समय, हमें सबसे पहले विश्वास के साथ यह कहना चाहिए कि परमेश्वर कौन है: वह "मेरी शरण" और "मेरा हिस्सा" है। हमें इसी परमेश्वर—जो हमारी शरण और हिस्सा है—से हमें बचाने की गुहार लगानी चाहिए। और जब हम गुहार लगाएँ, तो हमें उद्धार के भरोसे के साथ प्रार्थना करनी चाहिए, क्योंकि हमारा परमेश्वर हमारे साथ उदारता से पेश आता है। हम सब परमेश्वर के उद्धार की कृपा का अनुभव करें।

एक वीरान दिल

[भजन संहिता 143]

मेरा एक छोटा कज़िन है, जो बचपन में अंधेरे, घने अंधेरे वाले कमरों से बहुत डरता था। जहाँ तक मुझे याद है, इस डर की वजह यह थी कि बड़े होते समय, एक बार उसके पिता ने उसे अंधेरे कमरे में बंद कर दिया था—शायद उसे सुधारने के लिए—क्योंकि उसने अपने माता-पिता की बात नहीं मानी थी। मुझे याद है कि जब वह मिडिल स्कूल में था, तो वह एक प्रेयर सेंटर में चर्च रिट्रीट में गया था; क्योंकि वह बहुत शरारत कर रहा था, इसलिए हमारे चर्च के एक प्रचारक ने उसे वहाँ पहाड़ पर एक अंधेरी जगह पर अकेला छोड़ दिया था—यह कदम, मेरा मानना है, उसे सुधारने के लिए उठाया गया था। आज, भजन संहिता 143 पर मनन करते समय, मुझे उस कज़िन की याद आई जो ऐसी अंधेरी, घनी अंधेरी जगहों से डरता था। यह याद मुझे इस हिस्से की चौथी आयत से आई, जहाँ भजनकार दाऊद कहता है, "मेरे भीतर का दिल वीरान हो गया है।" यहाँ इस्तेमाल किए गए शब्द "वीरान" (या "उदास/दुखी") के अर्थ के बारे में, याहू ऑनलाइन डिक्शनरी कोरियाई डिक्शनरी की परिभाषाओं का हवाला देती है: (a) बहुत ही उदास और (b) डरावना या भयानक; हान्जा (चीनी अक्षर) डिक्शनरी इसे इस तरह परिभाषित करती है: (a) अंधेरा और उदास, (b) भयानक और उदास, या (c) (किसी स्थिति या अवस्था के बारे में) दुखी और निराशाजनक। जब दाऊद आज के हिस्से में अपने दिल को "वीरान" बताता है, तो इसके पीछे हिब्रू अर्थ यह है कि वह एक भयानक डर से घिरा हुआ था क्योंकि उसके पाप के कारण एक बड़ी मुसीबत—परमेश्वर का न्याय—उस पर आ पड़ी थी। दूसरे शब्दों में, दाऊद ने भजन संहिता 143 तब लिखी थी जब वह अपने पाप के कारण आई एक बड़ी मुसीबत का सामना कर रहा था; वह जीवन के एक बहुत ही अंधेरे और उदास दौर से गुज़र रहा था, उसकी आत्मा टूट चुकी थी और उसका दिल उदासी से भरा हुआ था।

भजन संहिता 143:4 में, दाऊद अपनी हालत का वर्णन इस प्रकार करता है: "इसलिए मेरी आत्मा मेरे भीतर कमज़ोर हो जाती है; मेरे भीतर का दिल वीरान हो गया है।" संक्षेप में, दाऊद "टूटी हुई आत्मा" और "वीरान दिल" की हालत में था। जैसा कि उन्होंने भजन 142:3 में कहा था—जिस पर हमने पिछले बुधवार को मनन किया था—कि उनकी आत्मा उनके भीतर बहुत परेशान थी, यहाँ भजन 143:4 में, वे फिर से अपनी आत्मा को कुचला हुआ और अपने दिल को वीरान बताते हैं। उनकी आत्मा क्यों कुचली हुई थी? उनका दिल क्यों वीरान था? इसका कारण आयत 3 में दिया गया है: "दुश्मन मेरा पीछा करता है; वह मुझे ज़मीन पर कुचल देता है और मुझे अंधेरे में रहने पर मजबूर करता है, जैसे वे लोग जो बहुत पहले मर चुके हैं।" दाऊद की आत्मा कुचली हुई थी और उनका दिल दुख से भरा हुआ था क्योंकि उनका दुश्मन उन्हें सता रहा था। जिस दुश्मन की बात हो रही है, वह उनका अपना बेटा अबशालोम लगता है। हम ऐसा इसलिए कह सकते हैं क्योंकि सेप्टुआजेंट (Septuagint) की कुछ पांडुलिपियों में इस भजन के लिए एक शीर्षक है: "जब उनके बेटे अबशालोम ने उनकी जान लेने के लिए उनका पीछा किया" (पार्क युन-सन)। जबकि भजन 142 में—जिस पर हमने पिछले बुधवार को मनन किया था—दाऊद को सताने वाला व्यक्ति राजा शाऊल था, आज के भजन 143 में उन्हें सताने वाला और उनकी जान लेने की कोशिश करने वाला व्यक्ति उनका बेटा अबशालोम था; इससे पता चलता है कि दाऊद का जीवन दुख और सतावट से भरा था, जिसने राजा बनने से पहले और बाद में भी उनकी आत्मा को कुचल दिया और उनके दिल को बहुत परेशान किया। हालाँकि, एक स्पष्ट अंतर है: राजा शाऊल के हाथों उन्हें जो सतावट झेलनी पड़ी, वह परमेश्वर के विरुद्ध किए गए किसी पाप के लिए ईश्वरीय सज़ा नहीं थी, जबकि इस भजन में अबशालोम से उन्हें जो सतावट झेलनी पड़ी, वह उनके अपने पाप का परिणाम थी। इसी कारण से, भजन 143 सात पश्चाताप वाले भजनों (भजन 6, 32, 38, 51, 102, 130 और 143) में अंतिम भजन है (पार्क युन-सन)। दाऊद जानते थे कि वे जो सतावट झेल रहे थे—और जिसके कारण उनकी आत्मा कुचली जा रही थी और दिल में दुख था—वह उनके अपने पाप के कारण थी। इस बात ने उनके दिल को और भी दुखी, परेशान और निराशा से भर दिया। स्थिति कितनी दुखद होती है जब किसी की जान लेने की कोशिश करने वाला कोई अजनबी नहीं, बल्कि उसका अपना बेटा, अबशालोम हो—जब दुश्मन जो सता रहा हो और जान लेने की धमकी दे रहा हो... क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं—अपना ही खून-रिश्ता? जब हम खुद को डेविड की जगह रखकर सोचते हैं, तो हम एक ऐसे पिता की कल्पना कर सकते हैं जो अपने ही बच्चे से भाग रहा है। इससे ज़्यादा दुखद या निराशाजनक

स्थिति और क्या हो सकती है? ऐसी हालत में, डेविड को लगा जैसे वह अंधेरे में रह रहा हो, जैसे कोई बहुत पहले मर चुका हो (पद 3)।

ऐसी निराशाजनक, दर्दनाक और सचमुच बर्बाद कर देने वाली स्थिति में डेविड ने क्या किया? आज के पाठ के आधार पर हम दो बातों पर गौर कर सकते हैं:

पहली बात, डेविड ने उन कामों को याद किया जो प्रभु ने अतीत में किए थे।

भजन संहिता 143:5 को देखिए: "मैं पुराने दिनों को याद करता हूँ; मैं आपके सभी कामों पर मनन करता हूँ; मैं आपके हाथों के कामों पर विचार करता हूँ।" जैसे-जैसे हम हर बुधवार को भजन संहिता पर मनन करते हैं, हम अक्सर भजनकार के प्रार्थना करने के तरीके को देखते हैं; ऐसा ही एक तरीका है प्रार्थना करते समय प्रभु के पुराने कामों को याद करना। व्यक्तिगत रूप से, मैं धीरे-धीरे इस आदत को अपना रहा हूँ—अतीत पर विचार करके परमेश्वर के उद्धार के इतिहास और उनकी कृपा पर सोचना। भजन संहिता पर मनन शुरू करने से पहले, अतीत को याद करने का मतलब अक्सर मुश्किल हालात, बुरी यादें, इंसानी कमज़ोरियों से भरी पापपूर्ण यादें और अपनी नाकामियों और गलतियों के बारे में सोचना होता था, न कि इस बात पर ध्यान देना कि परमेश्वर ने क्या किया था। हालाँकि, इस मनन के ज़रिए, पवित्र आत्मा मेरा ध्यान बदल रहा है। अब, जब पवित्र आत्मा मुझे पीछे मुड़कर देखने के लिए प्रेरित करता है, तो वह मेरा ध्यान परमेश्वर के कामों की ओर ले जाता है—खासकर इस बात पर कि कैसे उन्होंने मुझे बचाया और मुश्किल, परेशानी और निराशा के समय में मुझ पर अपनी कृपा बरसाई। इस प्रक्रिया में मिलने वाली कृपा ध्यान को सिर्फ़ इस बात से हटाकर कि परमेश्वर ने *क्या किया*, इस बात पर ले जाती है कि परमेश्वर *कौन हैं*—उनका स्वभाव क्या है—और मुझे विश्वास के साथ उनसे अपनी विनती करने की हिम्मत देती है।

आज के पाठ, भजन संहिता 143:5 के बारे में, मेरा मानना है कि जब डेविड—जो एक बहुत मुश्किल स्थिति का सामना कर रहा था जहाँ अब्सालोम के सताए जाने से उसकी जान को खतरा था—ने अतीत को याद किया और प्रभु के "सभी" कामों पर मनन किया, तो वह निश्चित रूप से उस बचाने वाली कृपा पर विचार

कर रहा था जो परमेश्वर ने उसे पहले दिखाई थी। वह पिछली घटना, जो भजन संहिता 142 की पृष्ठभूमि बनाती है, राजा बनने से पहले राजा शाऊल के सताए जाने से उसके बचाव से जुड़ी थी। इस विश्वास का एक कारण इन दोनों घटनाओं के बीच की ज़बरदस्त समानता है; भजन संहिता 142 (जिस पर हमने पिछले बुधवार को मनन किया था) और आज की भजन संहिता 143, दोनों में दाऊद की आंतरिक भावना... जब हम खुद को टूटी हुई और सचमुच बुरी हालत में पाते हैं—और जब हमारे जीवन में ऐसी ही स्थितियाँ बार-बार आती हैं—तो मेरा मानना है कि यह परमेश्वर की योजना का हिस्सा है, जो हमें उस बचाने वाली कृपा पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है जो उसने हमें पहले दिखाई है। इसका एक अच्छा उदाहरण यूहन्ना 21:9 से मिलता है। जब जी उठे यीशु तिबेरियस झील के किनारे अपने शिष्यों के सामने आए और पतरस से तीन बार पूछा, "शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझसे प्रेम करता है (इन सबसे बढ़कर)?" (पद 15, 16 और 17), तो वह माहौल बिल्कुल वैसा ही था जैसा तब था जब पतरस ने तीन बार यीशु का इनकार किया था। हम यह समानता देख सकते हैं क्योंकि दोनों ही मौकों पर "आग" (खासकर, कोयले की आग) मौजूद थी: जब पतरस ने तीन बार यीशु का इनकार किया था और जब जी उठे यीशु ने उससे तीन बार पूछा, "क्या तू मुझसे प्रेम करता है?" क्या आपको याद है? उस समय के बारे में जब पतरस ने तीन बार यीशु का इनकार किया था, लूका लिखते हैं: "जब उन्होंने आँगन के बीच में आग जलाई और सब साथ बैठ गए, तो पतरस भी उनके बीच बैठ गया" (लूका 22:55)। निश्चित रूप से, जब जी उठे यीशु ने कोयले की आग जलाई, उस पर मछली और रोटी रखी, और पतरस से—जो किनारे पर आया था—तीन बार पूछा, "क्या तू मुझसे प्रेम करता है?", तो पतरस को ज़रूर वह पाप याद आया होगा जब उसने पहले आग के पास बैठकर यीशु का इनकार किया था। ऐसा लगता है कि यीशु ने उस पुरानी स्थिति को फिर से बनाया ताकि पतरस को उसके अपराध-बोध से आज़ाद किया जा सके और उसे एक मिशन सौंपा जा सके। परमेश्वर का कितना अद्भुत प्रेम और योजना है यह! इसलिए, दाऊद की तरह, जब हम अपने मौजूदा जीवन में दर्द और मुश्किलों का सामना करते हैं—जिससे हमारी आत्मा टूट जाती है और दिल निराशा से भर जाता है—तो हमें भी उस कृपा को याद करना चाहिए जो प्रभु ने हमें पहले दी है... हमें उन कृपाओं को याद रखना चाहिए जो हमें मिली हैं। चाहे हमारी मौजूदा परिस्थितियाँ कितनी भी मुश्किल क्यों न हों, हमें परमेश्वर की बचाने वाली कृपा पर विचार और मनन करना चाहिए—यह याद करते हुए कि उसने हमें पहले और भी बड़ी मुश्किलों से कैसे बचाया था—ताकि हम अपनी वर्तमान स्थिति में भी धन्यवाद देने का कारण पा सकें। जिस परमेश्वर ने पहले हमारी प्रार्थनाएँ

सुनीं, उनका उत्तर दिया और हमें बचाया, वह आज हमारे सामने आने वाली किसी भी मुश्किल से हमें बचाने में पूरी तरह समर्थ है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु के पुराने कामों को याद करने और उन पर मनन करने से, हम सभी को उद्धार का यह भरोसा मिल सके।

दूसरी और आखिरी बात, दाऊद ने प्रभु से विनती की।

भजन संहिता 143:6 देखें: "मैं अपने हाथ तेरी ओर फैलाता हूँ; मेरी आत्मा प्यासी ज़मीन की तरह तेरी चाहत रखती है (सेलाह)।" अपने दुश्मनों के सताए जाने के बीच—जब उसकी आत्मा टूट चुकी थी, दिल निराशा से भरा था और मन गहरे दुख में था—दाऊद ने प्रभु की चाहत की, अपने हाथ उनकी ओर फैलाए और मदद के लिए विनती की। विनती करते समय, दाऊद को उम्मीद थी कि परमेश्वर उसकी प्रार्थना का जवाब "जल्दी" देंगे (आयत 7)। उसकी हालत बहुत खराब थी। दाऊद आयत 7 में इस गंभीर स्थिति का वर्णन करता है: "हे प्रभु, मुझे जल्दी जवाब दे; मेरी हिम्मत टूट रही है! मुझसे अपना मुँह न छिपा, कहीं ऐसा न हो कि मैं उन लोगों जैसा हो जाऊँ जो कब्र में उतर जाते हैं।" यहाँ, हम दाऊद की प्रार्थना के चार पहलुओं पर विचार कर सकते हैं और उन्हें अपनी प्रार्थना-जीवन में अपना सकते हैं:

(1) दाऊद ने अपनी बेवफाई और अधर्म पर ध्यान नहीं दिया; इसके बजाय, उसने प्रभु की वफादारी और धार्मिकता पर भरोसा करते हुए परमेश्वर से विनती की।

भजन संहिता 143:1 देखें: "हे प्रभु, मेरी प्रार्थना सुन; मेरी विनतियों पर कान लगा! अपनी वफादारी और धार्मिकता में मुझे जवाब दे।" जब उसकी आत्मा टूट गई थी और दिल दुख से भरा था, तो दाऊद ने अपनी परिस्थितियों पर ध्यान नहीं दिया; इसके बजाय, उसने उस परमेश्वर की ओर देखा जो उन परिस्थितियों पर राज करता है और उन्हें पूरी तरह नियंत्रित करता है। उसने परमेश्वर की वफादारी और धार्मिकता पर भरोसा करते हुए उनसे विनती की। पिछले बुधवार को, भजन संहिता 142 पर मनन करते हुए, मैंने हमें परमेश्वर के स्वभाव को बताते हुए—उन्हें परमेश्वर के रूप में स्वीकार करते हुए—अपनी प्रार्थनाएँ शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया था। भजन संहिता 143 में, हम दाऊद को भी ऐसा ही करते हुए देखते हैं; वह सबसे पहले

परमेश्वर के स्वभाव—खासकर उनकी वफादारी (सच्चाई) और धार्मिकता—पर भरोसा करते हुए प्रार्थना करता है। यह हमारे लिए एक सबक है, जो दिखाता है कि हमारी प्रार्थना-जीवन का तरीका भी ऐसा ही होना चाहिए। जब हम अपने पापों के लिए ईश्वरीय अनुशासन के रूप में दर्दनाक स्थितियों का सामना करते हैं, तो हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति खुद पर और अपनी तात्कालिक परिस्थितियों पर ध्यान केंद्रित करने की होती है; हम अपनी गलतियों के नतीजों को समझे बिना आसानी से शिकायत करने और नाराज़ होने लग सकते हैं। हालाँकि, हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। इसके बजाय, हमें ऐसी स्थितियों का इस्तेमाल परमेश्वर के सामने खुद को परखने के अवसर के रूप में करना चाहिए। हमें अपनी बेवफाई और अधर्म को पहचानना चाहिए। तभी हम पूरी तरह से परमेश्वर की वफ़ादारी और धार्मिकता पर निर्भर रहने के लिए मजबूर होंगे।

(2) दाऊद की प्रार्थना को देखें, तो हम पाते हैं कि जब उसकी आत्मा टूट गई थी और उसका दिल गहरे दुख में था, तब भी उसने परमेश्वर से विनती की कि वह उसे प्रभु का वचन सुनाए।

आज के पाठ, भजन संहिता 143 के वचन 8 को देखें: "सुबह मुझे अपनी दया की बातें सुना, क्योंकि मुझे तुझ पर भरोसा है; मुझे वह रास्ता बता जिस पर मुझे चलना चाहिए, क्योंकि मैं अपनी आत्मा को तेरी ओर उठाता हूँ।" टूटी हुई आत्मा और दुख से भरे दिल के साथ, दाऊद ने—परमेश्वर की सच्चाई और धार्मिकता पर भरोसा करते हुए—परमेश्वर से विनती की कि वह उसे सुबह प्रभु की दया का वचन सुनाए। वह प्रभु की दया का वचन क्यों सुनना चाहता था? वह इसे इसलिए सुनना चाहता था क्योंकि वह प्रभु पर भरोसा करते हुए उनके वचन से मार्गदर्शन पाना चाहता था। दूसरे शब्दों में, दाऊद प्रभु के दयालु वचन सुनना चाहता था क्योंकि वह प्रभु की इच्छा को जानना और उसे अमल में लाना चाहता था (वचन 10)। इसीलिए उसने परमेश्वर से प्रार्थना की, "मुझे वह रास्ता दिखा जिस पर मुझे चलना चाहिए" (वचन 8)। जब हम अपने पापों के कारण परमेश्वर के अनुशासन का सामना करते हैं, तो कई बार हमारी आत्मा टूट जाती है और उससे होने वाले दर्द और दुख के कारण हमारा दिल पीड़ा से भर जाता है। ऐसे पलों में, हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए और प्रभु के वचन के लिए तड़पना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया था। क्यों? क्योंकि प्रभु के वचन के ज़रिए हम उस रास्ते को पहचान सकते हैं जिस पर हमें चलना चाहिए, अपनी दिशा बदल सकते हैं, और उस रास्ते पर चल सकते हैं जिसे प्रभु चाहते हैं। भले ही हम दुख शुरू होने से पहले भटक गए हों और परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया हो, फिर भी हमें प्रभु की वफ़ादारी और धार्मिकता पर भरोसा करना चाहिए; प्रार्थना और

उनके वचन से मिलने वाले मार्गदर्शन के ज़रिए, हमें सच्चाई और धार्मिकता के उस रास्ते पर चलना चाहिए जिसे वे चाहते हैं।

(3) दाऊद ने परमेश्वर से छुटकारा पाने के लिए विनती की।

आज के पाठ, भजन संहिता 143:9 को देखें: "हे प्रभु, मुझे मेरे दुश्मनों से बचा, क्योंकि मैं तेरी शरण में आया हूँ।" जब डेविड का हौसला टूट गया और दुश्मनों के सताने से उसका दिल दुख से भर गया, तो उसने प्रभु की शरण ली। ठीक वैसे ही जैसे उसने भजन 142 में किया था—जिस पर हमने पिछले बुधवार को मनन किया था—डेविड को एहसास हुआ कि जब वह राजा शाऊल से भाग रहा था, तो उसके आस-पास कोई भी उसे पनाह नहीं दे सकता था; इसलिए, उसने किसी और का सहारा नहीं लिया (142:4) बल्कि सिर्फ़ प्रभु की शरण ली (पद 5)। इसी तरह, आज के हिस्से, भजन 143 में, वह प्रभु—अपनी शरण—के पास भागा और परमेश्वर से विनती की कि वह उसे दुश्मनों से बचाए। आज के पाठ, भजन 143:11 में बचाव के लिए डेविड की प्रार्थना को देखें: "हे प्रभु, अपने नाम की खातिर, मेरी जान बचा! अपनी धार्मिकता से मेरी आत्मा को मुसीबत से बाहर निकाल।" डेविड—और हम भी—परमेश्वर से ऐसी विनती कर सकते हैं क्योंकि वह हमारा उद्धारकर्ता है। इस प्रकार, उद्धार देने वाला परमेश्वर हमारे पापों को माफ़ करता है और हमें बचाता है जब हम पछतावा करते हैं और उसकी ओर लौटते हैं।

(4) डेविड ने परमेश्वर से अपने दुश्मनों का न्याय करने की विनती की।

आज के पाठ में भजन 143:12 को देखें: "अपनी दया से मेरे दुश्मनों को खत्म कर दे और उन सभी को नष्ट कर दे जो मेरी आत्मा को सताते हैं; क्योंकि मैं तेरा सेवक हूँ।" डेविड ने परमेश्वर से उन दुश्मनों को खत्म करने और नष्ट करने के लिए कहा जो उसकी आत्मा को सताते थे। वह यह विनती इसलिए कर सका क्योंकि वह प्रभु का सेवक था। इसका मतलब यह है कि जहाँ डेविड प्रभु का सेवक था, वहीं उसके दुश्मन नहीं थे; इसलिए, उसने प्रार्थना की कि प्रभु अपनी दया में अपने चुने हुए सेवक को याद रखें और उस पर ध्यान दें—दुष्टों को नष्ट करते हुए उसे बचाएँ। हमारी प्रार्थना भी यही होनी चाहिए। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि अपनी

दया के अनुसार, प्रभु अपने चुने हुए सेवकों को बचाएँ और हमारे दुश्मनों को नष्ट करें—वे जो प्रभु के सेवक नहीं हैं और जिन्हें उसने नहीं चुना है। इस तरह, परमेश्वर की दया (प्रेम) और न्याय प्रकट होते हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर की महिमा उद्धार और न्याय के माध्यम से—या न्याय के ज़रिए हासिल किए गए उद्धार के माध्यम से—प्रकट होती है। मुझे उम्मीद है कि चाहे हालात कितने भी मुश्किल क्यों न हों, हम—भजनकार दाऊद की तरह—प्रभु के उन कामों को याद रखेंगे जो उन्होंने पहले किए हैं, और जब हम उनके सामने प्रार्थना करेंगे, तो उनकी बचाने वाली कृपा का अनुभव करेंगे।

हमारी ज़िंदगी में बार-बार आने वाली स्थितियाँ

"मुझे पुराने दिन याद आते हैं; मैं तेरे सभी कामों पर मनन करता हूँ; मैं तेरे हाथों के कामों पर सोच-विचार करता हूँ" (भजन संहिता 143:5)।

हमारी ज़िंदगी में एक जैसी स्थितियाँ बार-बार क्यों आती हैं? हमें पक्का यकीन होता है कि हम ऐसी स्थिति का सामना पहले भी कर चुके हैं, फिर भी हम उसका सामना दोबारा कर रहे होते हैं। बेशक, अगर स्थिति मुश्किल और दर्दनाक हो, तो हो सकता है कि हम उस पल में इतने परेशान हों कि हमें यह एहसास ही न हो कि हमने इसका सामना पहले भी किया है। हालाँकि, अगर हम खुद को संभालें और शांति से और निष्पक्ष होकर स्थिति पर सोचें, तो हमें याद आ सकता है कि हम पहले भी ऐसी ही स्थिति में रह चुके हैं। तो फिर, हमें बार-बार आने वाली इन स्थितियों को कैसे देखना चाहिए? क्या हमें बस इन्हें इत्तेफ़ाक कहना चाहिए? ये निश्चित रूप से इत्तेफ़ाक नहीं हैं; ये हो ही नहीं सकते। परमेश्वर के यहाँ इत्तेफ़ाक जैसी कोई चीज़ नहीं होती। हमारी ज़िंदगी में एक जैसी स्थितियों को दोबारा लाने के पीछे परमेश्वर की सर्वोच्च योजना का एक साफ़ मकसद होता है। तो फिर, वह मकसद क्या है?

पहला, परमेश्वर हमारी ज़िंदगी में एक जैसी स्थितियाँ इसलिए दोबारा लाते हैं ताकि हम उनके द्वारा पहले किए गए उद्धार के कामों पर मनन कर सकें और ऐसा करते हुए, उनके लिए तड़प सकें।

भजन संहिता 143:5 में, हम दाऊद को देखते हैं—एक बहुत मुश्किल स्थिति में, जहाँ अब्सालोम के सताए जाने से उसकी जान को खतरा था—वह अतीत को याद कर रहा है और प्रभु द्वारा किए गए "सभी" कामों पर मनन कर रहा है। ऐसा करते हुए, उसने निश्चित रूप से उस बचाने वाली कृपा पर सोचा होगा जो परमेश्वर ने उसे तब दिखाई थी जब वह पहले राजा शाऊल के सताए जाने से बचा था—यही संदर्भ भजन संहिता 142

के पीछे भी है। मेरे ऐसा मानने का एक कारण यह है कि दोनों घटनाओं में बहुत समानताएँ हैं। बाइबल हमें बताती है कि दाऊद की आत्मा बहुत परेशान और कुचली हुई थी—चाहे वह राजा शाऊल द्वारा सताए जाने का समय हो (भजन संहिता 142) या बाद में, जब राजा के तौर पर पाप करने के बाद उसे अब्सालोम के सताए जाने का सामना करना पड़ा (भजन संहिता 143:4)। दाऊद की ज़िंदगी में ऐसी एक जैसी स्थितियाँ बार-बार क्यों आईं? इसका कारण यह है कि परमेश्वर चाहते थे कि दाऊद राजा शाऊल से अपने बचाव के इतिहास को याद रखे—और उस पर मनन करे। ऐसा करके, परमेश्वर ने उसे इस बात के लिए प्रेरित किया कि वह उनकी बचाने वाली कृपा को पाने के लिए दिल से तड़पे, भले ही वह अबशालोम के सतावे का सामना कर रहा था—जो आज के भजन 143 की पृष्ठभूमि है। इस तरह, दाऊद ने "अपने हाथ [परमेश्वर] की ओर फैलाए" और उसकी आत्मा "सूखी ज़मीन की तरह [परमेश्वर] के लिए प्यासी हो गई" (पद 6)। इस मुश्किल घड़ी में, उसने परमेश्वर से विनती की कि वह उसकी प्रार्थना का जल्द जवाब दें (पद 7)।

दूसरी बात, परमेश्वर हमारी ज़िंदगी में ऐसी ही स्थितियाँ फिर से आने देते हैं ताकि हमारे पाप सामने आ सकें, हम पछतावा करें और एक बार फिर प्रभु की इच्छा पूरी करने के लिए प्रेरित हों।

हालाँकि दाऊद भजन 143 और भजन 142, दोनों में ही ऐसी स्थितियों से गुज़रा, लेकिन उनमें एक मुख्य अंतर था। राजा शाऊल से उसे जो सतावा झेलना पड़ा (भजन 142), वह दाऊद के किसी पाप का नतीजा नहीं था। इसके उलट, यह राजा शाऊल की जलन का नतीजा था—जो औरतों के जयकारे से भड़की थी—जब दाऊद ने प्रभु के नाम से गोलियत को हराया और इस तरह परमेश्वर का काम पूरा किया। इसके विपरीत, आज का भजन—भजन 143—दाऊद द्वारा अपने बेटे अबशालोम से सताए जाने की घटना को दिखाता है; यह उस पाप का नतीजा था जो उसने बतशेबा के साथ गलत काम करके और अपनी गलती छिपाने की कोशिश में उसके पति, वफादार सैनिक उरिय्याह की जानबूझकर हत्या करवाकर किया था। इसलिए, भजन 143 के पद 8 और 10 में, दाऊद परमेश्वर के वचन से सीख पाने और प्रभु की इच्छा पूरी करने की अपनी इच्छा ज़ाहिर करता है। दाऊद को अपनी इच्छाओं के अनुसार किए गए पाप से मुड़ते और अब प्रभु की इच्छा पूरी करने की कोशिश करते देखकर मुझे यूहन्ना 21:9 और उसके बाद के पदों में दी गई पतरस की कहानी याद आ गई। उस घटना में, जब यीशु मरे हुओं में से जी उठे और तिबरियास झील के किनारे अपने

चेलों के सामने आए, तो उन्होंने पतरस से तीन बार पूछा, "शमौन, यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझसे (इन सबसे ज़्यादा) प्यार करता है?" (पद 15, 16 और 17)। वह स्थिति उस समय से बहुत मिलती-जुलती है जब पतरस ने तीन बार यीशु को पहचानने से इनकार कर दिया था। हम यह समानता इसलिए देख सकते हैं क्योंकि दोनों ही मौकों पर "आग" (खासकर कोयले की आग) मौजूद थी: जब पीटर ने तीन बार यीशु को पहचानने से इनकार किया और जब जी उठे यीशु ने उनसे तीन बार पूछा, "क्या तुम मुझसे प्यार करते हो?" क्या आपको याद है? उस पल के बारे में जब पीटर ने तीन बार यीशु को पहचानने से इनकार किया था, लेखक ल्यूक ने ल्यूक 22:55 में लिखा है: "जब उन्होंने आँगन के बीच में आग जलाई और सब साथ बैठ गए, तो पीटर भी उनके बीच बैठ गया।" पीटर को निश्चित रूप से अपने पुराने पाप की याद आई होगी—आग के पास बैठकर यीशु को पहचानने से इनकार करना—जब बाद में जी उठे यीशु ने कोयले की आग जलाई, उस पर मछली और रोटी रखी, और उनसे तीन बार पूछा, "क्या तुम मुझसे प्यार करते हो?" (यूहन्ना 21:9)। आखिरकार, उस पुराने दृश्य को फिर से बनाकर, यीशु ने पीटर को उसके अपराध-बोध से मुक्त करने और उसे प्रभु की इच्छा पूरी करने का काम सौंपने की कोशिश की। यह परमेश्वर का कितना अद्भुत प्रेम और मार्गदर्शन है!

जब हमारी अपनी ज़िंदगी में भी ऐसी ही स्थितियाँ दोबारा आती हैं, तो आइए हम परमेश्वर के सामने शांति से सोचने के लिए थोड़ा समय निकालें। अगर पवित्र आत्मा हमें अतीत के किसी ऐसे अनुभव की याद दिलाता है, तो आइए हम उस समय परमेश्वर द्वारा किए गए उद्धार के काम को याद करें और उस पर मनन करें। इसके बीच, आइए हम अपनी मौजूदा स्थिति के लिए उद्धार करने वाले परमेश्वर की ओर देखें और उनसे अपनी प्रार्थनाएँ करें। जब हम अतीत की उद्धार करने वाली कृपा पर मनन करते हैं, तो आइए—हमारे भीतर रहने वाले पवित्र आत्मा से मिले उद्धार के भरोसे को मज़बूती से थामे हुए—हम हिम्मत के साथ अपनी प्रार्थनाओं के ज़रिए उद्धार करने वाले परमेश्वर के पास जाएँ। इसके अलावा, अगर मनन के इस समय के दौरान पवित्र आत्मा हमें किसी ऐसे पाप के बारे में बताता है जिसे हमने अभी तक स्वीकार नहीं किया है, तो आइए हम यीशु मसीह के कीमती लहू पर भरोसा करके पवित्र परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार करें और उस परमेश्वर के सामने पश्चाताप करें जो दया, कृपा और प्रेम से भरपूर है। आइए हम अपनी इच्छा को क्रूस के चरणों में रख दें और खुद को प्रभु की इच्छा पूरी करने के लिए समर्पित कर दें। जब हम ऐसा

करते हैं, तो वह हमारी ज़िंदगी में आने वाली स्थितियों के ज़रिए अपना मकसद पूरा करेगा और खुद ही महिमा पाएगा।

"मुझे सुबह आपके प्यार भरे शब्द सुनने दें"

"मुझे सुबह आपके प्यार भरे शब्द सुनने दें, क्योंकि मुझे आप पर भरोसा है। मुझे वह रास्ता दिखाएँ जिस पर मुझे चलना चाहिए, क्योंकि मैं अपनी आत्मा को आपकी ओर उठाता हूँ" (भजन संहिता 143:8)।

भजनकार दाऊद कहते हैं, "कितना अच्छा और सुखद है जब भाई एकता में साथ रहते हैं!" (भजन संहिता 133:1)। प्रभु में भाई-बहनों का एकजुट होना और एक मन और एक हृदय से उनकी सेवा करना सचमुच बहुत सुंदर है। अपनी कलीसिया में आत्मा की एकता (इफिसियों 4:3) को बनाए रखने के लिए हमें क्या करना चाहिए? हमें ऐसे कानों की ज़रूरत है जो सुनने के लिए तैयार हों। हमें सुनने में तत्पर, बोलने में धीमे और क्रोध करने में धीमे होना चाहिए (याकूब 1:19)। परमेश्वर के जो बच्चे कलीसिया में एकता चाहते हैं, वे कलीसिया की शांति और मेल-मिलाप के लिए सुनने का मन रखते हैं। तो, हमें क्या सुनना चाहिए? आज के वचन (भजन संहिता 143:8) में भजनकार की तरह, हमें प्रभु के प्यार भरे शब्द सुनने चाहिए। उनके सुबह प्रभु के प्यार भरे शब्द सुनने की इच्छा रखने का कारण यह था कि वे प्रभु की आवाज़ सुनना चाहते थे और उस रास्ते पर चलना चाहते थे जो प्रभु चाहते थे। इसलिए, उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की, "मुझे वह रास्ता दिखाएँ जिस पर मुझे चलना चाहिए" (पद 8)। दूसरे शब्दों में, भजनकार प्रभु की इच्छा जानना चाहते थे। उन्होंने प्रार्थना की, "आप मेरे परमेश्वर हैं; मुझे अपनी इच्छा पूरी करना सिखाएँ..." (पद 10)। भजनकार की तरह, हमें भी सुबह प्रभु के घर जाना चाहिए और परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए: "आज सुबह मैं आप पर निर्भर हूँ। कृपया मुझे आपके प्यार भरे शब्द सुनने दें।" जब हम प्रार्थना करते हैं और परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं, तो हमें पवित्र आत्मा द्वारा कही गई परमेश्वर की दयालु आवाज़ को विनम्रता से सुनना चाहिए। भजनकार की तरह, हमें प्रभु की आवाज़ सुनने और उनकी इच्छा पूरी करने में आनंद लेना चाहिए।

आज सुबह, प्रभु ने भजन संहिता 141:5 से मुझसे एक दयालु वचन कहा: "धर्मी मुझे चोट पहुँचाए—यह एक भलाई है; वह मुझे डाँटे—यह मेरे सिर के लिए तेल जैसा है; मेरा सिर इसे मना नहीं करेगा..." आखिर हम दूसरों की डांट-फटकार को कृपा का काम कैसे मान सकते हैं? आम तौर पर, जब कोई हमें डांटता है तो हमें अच्छा नहीं लगता; गुस्से या जोश में हम अक्सर बिना सोचे-समझे कुछ भी बोल देते हैं। परमेश्वर के प्रति आदरपूर्ण डर न होने के कारण, हम अपनी ज़बान पर काबू नहीं रख पाते। जब हमें डांट पड़ती है, तो हम बिना सोचे-समझे तुरंत बोल पड़ते हैं। ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिए है क्योंकि भजनकार के विपरीत, हम सुबह प्रभु के कृपापूर्ण वचन को सुनने में नाकाम रहे हैं—या अगर हमने उसे सुना भी है, तो हम उसका पालन करने में नाकाम रहे हैं। हम इसलिए आज्ञा नहीं मानते क्योंकि हम प्रभु की इच्छा पूरी करने के बजाय अपनी मर्ज़ी चलाना चाहते हैं। हालाँकि, जो विश्वासी प्रभु के कृपापूर्ण वचन को सुनना और उसकी इच्छा को पूरा करना चाहता है, वह दूसरों की डांट-फटकार में भी परमेश्वर की सच्ची कृपा और असीम प्रेम को देख पाता है। ऐसे वचनों के ज़रिए—जो ऐसी डांट-फटकार के माध्यम से नए सिरे से सुने जाते हैं—खुद पर विचार करके वे परमेश्वर की कृपा को समझते हैं, जो उनके पापों को पूरी तरह से उजागर करती है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर हमारी बेवफाई को उजागर करते हैं ताकि हम उनकी सच्ची कृपा का अनुभव कर सकें। जब हम उस सच्ची कृपा का अनुभव करते हैं, तो किसी व्यक्ति की डांट में नफ़रत महसूस करने के बजाय—भले ही वह नफ़रत के बजाय प्यार से प्रेरित हो—हम अपने प्रति परमेश्वर के निरंतर और सच्चे प्रेम को महसूस करते हैं। नतीजतन, हम प्यार से की गई डांट को भी कृपा के एक अनमोल उपहार के रूप में संजोते हैं।

हमारी कलीसिया में विविधता के बीच एकता बनाए रखने के लिए, हमें प्रभु के कृपापूर्ण वचनों पर ध्यान देना चाहिए। भले ही अलग-अलग तरह के लोग इकट्ठा हों और अपने-अपने विचार रखें, हमारे मन के कान प्रभु द्वारा कहे गए दयालु वचनों के प्रति खुले रहने चाहिए। ऐसा करते हुए, हमें एक विनम्र हृदय विकसित करना चाहिए और प्रभु की इच्छा को पूरा करने तथा परमेश्वर की महिमा करने का प्रयास करना चाहिए। भले ही दूसरों के मुँह से कहे गए प्रभु के कृपापूर्ण वचन हमारे पापों को पूरी स्पष्टता के साथ उजागर करें, हमें उस पल में उनकी इच्छा पर विचार करना चाहिए और उसे पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। यदि हम ऐसी सोच के साथ जीते हैं, तो हम न केवल प्यारे भाई-बहनों की डांट-फटकार को, बल्कि दुश्मनों की बददुआओं

को भी कृपा के रूप में देख पाएँगे। ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने पाप करने के बाद महल से जंगल की ओर भागते समय बिन्यामीन गोत्र के शिमी के श्रापों को नम्रता से सहा, वैसे ही हम भी उन लोगों की झूठी बातों, कानाफूसी, निंदा और बुराइयों को नम्रता से स्वीकार कर सकते हैं जो हमसे नफ़रत करते हैं—बशर्ते हम आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ हों और अपने 'जंगल' में प्रभु के दयालु वचनों से पोषित हों। इसके अलावा, हम केवल सुनेंगे ही नहीं; बल्कि उन शब्दों में प्रभु की आवाज़ को स्पष्ट रूप से सुनेंगे, उसे अपने दिलों की पट्टियों पर अंकित करेंगे और ऐसा जीवन जिएंगे जो उनके वचन को दर्शाता हो। इस प्रकार, हम यह स्वीकार कर पाएँगे कि "प्रभु की आवाज़ के बिना कोई खुशी नहीं मिलती" (भजन 500), और परमेश्वर की सच्ची स्तुति कर पाएँगे।

ऐसे लोग धन्य हैं।

[भजन संहिता 144]

तो, "आशीष" क्या है? हम लगातार आशीषों की बात करते हैं, लेकिन बाइबल असल में आशीष की परिभाषा क्या देती है? बाइबल बच्चों और भौतिक धन-संपत्ति जैसी आशीषों की बात करती है। हालाँकि, सबसे बड़ी आशीष प्रभु के करीब आना है, जो सभी आशीषों का स्रोत है। यह सच्चाई भजन संहिता 73:28 में बताई गई है। भजनकार आसाफ दुष्टों की समृद्धि को देखकर ईर्ष्या के कारण लगभग भटक ही गया था; फिर भी, परमेश्वर के पवित्र स्थान में प्रवेश करने और दुष्टों (पद 17-20) तथा धर्मी लोगों (पद 24) के अंतिम परिणाम को समझने के बाद—साथ ही दुष्टों से ईर्ष्या करने में अपनी मूर्खता और अज्ञानता को पहचानते हुए, और प्रभु के सामने खुद को एक बेसमझ जानवर के समान मानते हुए (पद 22)—उसने यह स्वीकार किया: "परमेश्वर के निकट रहना मेरे लिए अच्छा है" (पद 28)। दूसरे शब्दों में, जहाँ परमेश्वर के निकट आना एक आशीष है, वहीं सच्ची आशीष इस बात में है कि परमेश्वर—जो आशीष का मूल स्रोत है—हमारे साथ है। क्या आप और मैं सचमुच उस आशीष के ज्ञान और आनंद के साथ जी रहे हैं?

भजन संहिता 144:15 में, बाइबल कहती है, "धन्य हैं वे लोग जिनका परमेश्वर यहोवा है।" इसका अर्थ है कि जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वे धन्य हैं (पार्क युन-सन)। भजनकार दाऊद ऐसा क्यों कहता है कि जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वे धन्य हैं? संक्षेप में इसका कारण यह है: क्योंकि परमेश्वर उन लोगों पर उद्धार की कृपा करता है जो उस पर भरोसा करते हैं। चूँकि उसने परमेश्वर पर भरोसा किया और उसकी उद्धार करने वाली कृपा का अनुभव किया, इसलिए उसने घोषणा की, "धन्य हैं वे लोग जिनका परमेश्वर यहोवा है।" परमेश्वर पर अपने भरोसे के माध्यम से उसकी उद्धार करने वाली कृपा का अनुभव करने के बाद, दाऊद आज के अंश में उद्धार करने वाले इस परमेश्वर का वर्णन तीन तरीकों से करता है। दाऊद का

वर्णन हमें सिखाता है कि अपना जीवन जीते समय हमें किस तरह के परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी इस सीख को विनम्रता और विश्वास के साथ ग्रहण करें, और इस प्रकार आशीष पाएँ।

पहला, दाऊद ने उस परमेश्वर का वर्णन किया जिस पर वह भरोसा करता था—और जिसके माध्यम से उसने उद्धार करने वाली कृपा का अनुभव किया था—उसे "विजय का परमेश्वर" कहा। भजन संहिता 144:1 को देखिए: "उस प्रभु की स्तुति हो जो मेरी चट्टान है, जिसने मेरे हाथों को युद्ध के लिए और मेरी उंगलियों को लड़ाई के लिए तैयार किया।" यहाँ दाऊद कहता है, "उस प्रभु की स्तुति हो जो मेरी चट्टान है," क्योंकि परमेश्वर ने उसके हाथों और उंगलियों को लड़ाई के लिए तैयार किया, जिससे वह युद्ध में जीत सका। क्या यह दिलचस्प नहीं है? वह परमेश्वर को ऐसे व्यक्ति के रूप में दिखाता है जो उसे लड़ाई में जीत हासिल करने के लिए तैयार करता है। सेप्टुआजेंट (LXX), वल्गेट, और साथ ही इथियोपियाई और अरबी संस्करण इसे "गोलियत पर दाऊद की जीत के बारे में लिखा गया भजन" बताते हैं (पार्क युन-सन)। अगर ऐसा है, तो दाऊद भजन संहिता 144:1—जो आज हमारे सामने है—तब लिख रहा है जब वह सोच रहा है कि कैसे परमेश्वर ने उसके हाथों और उंगलियों को लड़ाई के लिए तैयार किया। उसे याद आता है कि कैसे उसने नदी से पाँच चिकने पत्थर चुने, उन्हें अपनी चरवाहे की थैली में रखा, और सर्वशक्तिमान प्रभु के नाम पर गोलियत की ओर बढ़ा—जो पास आ रहा था (1 शमूएल 17:40, 45, 48)। उसे याद है कि उसने अपनी थैली में हाथ डाला, एक पत्थर निकाला, उसे गोफन से चलाया, और गोलियत के माथे पर मारा जिससे पत्थर अंदर धंस गया, और आखिरकार उसे जीत मिली (1 शमूएल 17:49–50)। दाऊद कह रहा है कि प्रभु परमेश्वर ही था जिसने उसे तब गोलियत को हराने में मदद की; परमेश्वर ने ही उसके हाथों और उंगलियों को तैयार किया, और उसे अपनी थैली से पत्थर निकालकर उसे चलाने और जीत हासिल करने के लिए मार्गदर्शन दिया। इसका क्या महत्व है? मेरा मानना है कि 1 शमूएल 17:47 इसका सही जवाब देता है: "और यह सारी सभा जान ले कि प्रभु तलवार और भाले से नहीं बचाता। क्योंकि लड़ाई प्रभु की है, और वह तुम्हें हमारे हाथों में सौंप देगा।" क्या यह सचमुच अद्भुत नहीं है? परमेश्वर ने दाऊद के हाथों और उंगलियों को पत्थर और गोफन का इस्तेमाल करके गोलियत को हराना सिखाया—गाथ का एक विशालकाय व्यक्ति जो छह हाथ और एक बालिश्त लंबा था, जिसके पास जुलाहे के लट्ठे जैसा डंडा और छह सौ शेकेल लोहे के वजन वाला

भाला था (1 शमूएल 17:4, 7)। जब हम इस बात पर विचार करते हैं कि उन्होंने ऐसा क्यों किया, तो एक कारण निश्चित रूप से यह सच्चाई सिखाना था कि युद्ध में जीत परमेश्वर की होती है; दूसरा कारण यह था कि इस्राएली यह घमंड न करें कि "मेरे अपने हाथ ने मुझे बचाया है" (न्यायियों 7:2)। इसके बजाय, उन्होंने इस्राएली सेना की विशाल टुकड़ियों के बजाय दाऊद—जो एक साधारण चरवाहा था—के हाथों और उंगलियों के ज़रिए गोलियत और पलिश्ती सेना को हराना चुना। यह परमेश्वर वही परमेश्वर है जो आपका और मेरा है। हम उस परमेश्वर पर भरोसा क्यों न करें जो युद्ध में जीत दिलाता है? मेरी प्रार्थना है कि जैसे-जैसे हम रोज़ परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं और अपने अंदर की आध्यात्मिक लड़ाइयों पर विचार करते हैं, हम जीत दिलाने वाले परमेश्वर पर भरोसा करें—जिसने गोलियत को हराने के लिए दाऊद के हाथों और उंगलियों को तैयार किया था—और इस तरह परमेश्वर की उद्धार की कृपा का अनुभव करें।

दूसरी बात, दाऊद उस परमेश्वर का वर्णन करता है जिस पर उसने भरोसा किया—और जिसकी बचाने वाली कृपा का उसने अनुभव किया—उसे "प्रेम का परमेश्वर" कहता है।

भजन संहिता 144:2 को देखिए: "वह मेरी करुणा और मेरा गढ़, मेरा मज़बूत स्थान और मेरा छुड़ाने वाला, मेरी ढाल और वह है जिसमें मैं शरण लेता हूँ, जो मेरे लोगों को मेरे अधीन करता है।" गोलियत और पलिस्तियों पर जीत के अलावा, दाऊद के कई ऐसे अनुभव थे जहाँ परमेश्वर ने उसे युद्ध में जीत दिलाई थी। इन बचाने वाली कृपाओं पर विचार करते हुए, दाऊद ने स्वीकार किया कि परमेश्वर वास्तव में उसके लिए कौन है (पद 2)। उस स्वीकारोक्ति की शुरुआत में ही, दाऊद घोषणा करता है, "प्रभु मेरी करुणा (प्रेम) है।" परमेश्वर की बचाने वाली कृपा पर विचार करते हुए—जो युद्ध में उसका गढ़, मज़बूत स्थान, ढाल और शरण रहा था—दाऊद ने परमेश्वर के प्रेम को इतनी गहराई से महसूस किया कि वह यह कहे बिना न रह सका, "परमेश्वर मेरी करुणा है।" इस प्रेम का अनुभव करने पर, उसने कहा: "हे प्रभु, मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुधि लेता है? या मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उसका ध्यान रखता है? मनुष्य एक साँस के समान है; उसके दिन गुज़रती हुई छाया के समान हैं" (पद 3–4)। हम जितना ज़्यादा परमेश्वर के प्रेम को महसूस करते हैं, उतना ही—दाऊद की तरह—हमें यह समझना मुश्किल लगता है कि प्रभु हमें पहचानता है और हमारी परवाह करता

है। यह आश्चर्य की भावना तब और गहरी हो जाती है जब हमें एहसास होता है कि हम वास्तव में कितने तुच्छ हैं, एक गुज़रती हुई छाया की तरह। आज के हिस्से की आयतों 2-4 पर मनन करते समय, मैंने उन्हें भजन संहिता 8:4 और भजन संहिता 18:1-2 के साथ रखकर देखा, क्योंकि इन भजनों में बहुत समानताएँ हैं। उदाहरण के लिए, आज के हिस्से की आयत 2 भजन संहिता 18:1-2 की याद दिलाती है: "हे यहोवा, मेरी शक्ति, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ। यहोवा मेरी चट्टान, मेरा गढ़ और मेरा छुड़ानेवाला है; मेरा परमेश्वर, मेरी शक्ति, जिस पर मैं भरोसा करूँगा; मेरी ढाल और मेरे उद्धार का सींग, मेरा मज़बूत गढ़।" इसके अलावा, आज के हिस्से (भजन संहिता 144) की आयतें 3-4 भजन संहिता 8:4 से बहुत मिलती-जुलती हैं: "मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुधि लेता है, और मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उससे मिलने आता है?" इन समानताओं पर विचार करते हुए, मैं खुद से पूछता हूँ, "मुझमें ऐसी क्या बात है कि प्रभु मुझसे इतना गहरा प्रेम करते हैं?" मैं बस अपनी उस असमर्थता को स्वीकार कर सकता हूँ कि मैं उस अनुग्रह और प्रेम को पूरी तरह समझ नहीं सकता जो प्रभु को—जो हमारी चट्टान, गढ़, शरणस्थान, ढाल, मज़बूत गढ़ और उद्धार के परमेश्वर हैं—हम जैसे लोगों से प्रेम करने और हमारी शक्ति बनने के लिए प्रेरित करते हैं, जबकि हम तो बस क्षणभंगुर परछाईं के समान हैं। इसीलिए, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने भजन संहिता 18:1 में स्वीकार किया था, हम भी कहते हैं: "हे यहोवा, मेरी शक्ति, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ।"

तीसरी बात, डेविड उस परमेश्वर का वर्णन करता है जिस पर वह भरोसा करता है—और जिसकी बचाने वाली कृपा का उसने अनुभव किया है—कि वह उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है।

भजन संहिता 144:5–11 में, हम डेविड को उद्धारकर्ता परमेश्वर से विनती करते हुए देखते हैं। संक्षेप में, उसकी प्रार्थना अपने शत्रुओं से छुटकारा पाने की विनती है (पार्क युन-सन)। जैसा कि हमने भजन संहिता 142 और 143 पर अपने पिछले मनन में देखा है, डेविड के शत्रुओं में राजा शाऊल और अबशालोम शामिल थे। बेशक, यह देखते हुए कि डेविड ने बहुत खून बहाया था, निश्चित रूप से उसके कई अन्य शत्रु भी रहे होंगे; वास्तव में, क्या गोलियत—जिसका उल्लेख इसी भजन में किया गया है—भी उसका एक शत्रु नहीं था? आज के अंश में, डेविड विशेष रूप से आयतों 8 और 11 में अपने शत्रुओं का वर्णन करता है: "उनके मुँह धोखे की बातें करते हैं, और उनके दाहिने हाथ झूठ के हाथ हैं... मुझे विदेशियों के हाथों से बचाओ और छुड़ाओ, जिनके मुँह धोखे की बातें करते हैं और जिनके दाहिने हाथ झूठ के हाथ हैं।" हालाँकि वह बताता है

कि उनके मुँह धोखे की बातें करते हैं, यह दिलचस्प है कि वह दो बार उनके हाथों को "विदेशियों के हाथ" कहता है और उनके दाहिने हाथों को "झूठ के दाहिने हाथ" बताता है। शत्रु का यह धोखेबाज दाहिना हाथ डेविड के अपने हाथ के विपरीत है—वह हाथ जो, जैसा कि आयत 1 में बताया गया है, परमेश्वर से निर्देश प्राप्त करता है। अंततः, शत्रु का धोखेबाज दाहिना हाथ डेविड के हाथ के विरुद्ध सफल नहीं हो सकता, जिसे परमेश्वर की उपस्थिति से मार्गदर्शन और शिक्षा मिलती है। इसलिए, आज के अंश की आयतों 5–7 में, जिस परमेश्वर से डेविड छुटकारा पाने के लिए प्रार्थना करता है, वह "स्वर्गीय योद्धा है जो डेविड की ओर से परमेश्वर के शत्रुओं के विरुद्ध पृथ्वी पर लड़ने आता है" (मैकआर्थर)। वास्तव में, वह इन आयतों में परमेश्वर को इस स्वर्गीय योद्धा के रूप में चित्रित करने के लिए बहुत ही लाक्षणिक भाषा का प्रयोग करता है (मैकआर्थर)। वह इस परमेश्वर से विनती करता है और कहता है, "शत्रुओं को तितर-बितर कर दे और अपने तीर चला; उन्हें हरा दे" (आयत 6)। इसके अलावा, आयत 10 में, हम डेविड को "उद्धारकर्ता परमेश्वर" से अपील करते हुए देखते हैं—वह जो "डेविड को जानलेवा तलवार से बचाता है।" जब वह स्वर्गीय योद्धा परमेश्वर से यह प्रार्थना करता है, तो डेविड आयत 9 में संकल्प करता है: "हे परमेश्वर, मैं तेरे लिए एक नया गीत गाऊँगा; मैं दस-तारों वाले वाद्ययंत्र के साथ तेरी स्तुति करूँगा।" वह एक नए गीत के साथ प्रभु की स्तुति करने का निश्चय करता है, जो परमेश्वर की बचाने वाली कृपा का गुणगान करता है। वह यह संकल्प इसलिए ले पाता है क्योंकि उसे भरोसा है कि परमेश्वर उसकी प्रार्थना का उत्तर देंगे और उसे छुटकारा दिलाएंगे; उद्धार का यही भरोसा उसे एक नए गीत के साथ परमेश्वर की स्तुति करने के लिए प्रेरित करता है। शायद इसीलिए प्रार्थना और स्तुति साथ-साथ चलती हैं—ठीक वैसे ही जैसे पौलुस और सीलास ने जेल में प्रार्थना करते और परमेश्वर की स्तुति के गीत गाते हुए उद्धार की कृपा का अनुभव किया था। आइए, हम भी प्रार्थना में परमेश्वर की बचाने वाली कृपा को सच्चे मन से खोजें और उनके द्वारा दिए गए उद्धार के भरोसे पर टिके रहकर विश्वास के साथ उनकी स्तुति करें। जब हम ऐसा करेंगे, तो हम अपने वास्तविक जीवन में इस सच्चाई का अनुभव करेंगे कि "उद्धार प्रभु का है" (योना 2:9)। आइए, हम उद्धार देने वाले उस परमेश्वर से प्रार्थना करना न छोड़ें। उद्धार का कार्य उनके समय पर और उनकी इच्छा के अनुसार पूरा होगा।

तो फिर, जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और उद्धार की यह कृपा पाते हैं, उन्हें कौन-कौन से आशीष मिलते हैं? आज के पाठ—भजन संहिता 144—के लेखक दाऊद, आयत 12 से 14 में उन लोगों के लिए तीन आशीषों की बात करते हैं जिनका परमेश्वर ही प्रभु है।

(1) जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, उन्हें मिलने वाला एक आशीष यह है कि उनके बच्चे आशीष पाते हैं।

आयत 12 को देखें: "तब हमारे बेटे अपनी जवानी में अच्छी तरह से पोषित पौधों की तरह होंगे, और हमारी बेटियाँ महल की शोभा बढ़ाने वाले नक्काशीदार खंभों की तरह होंगी।"

(2) जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, उन्हें मिलने वाला एक आशीष भौतिक समृद्धि है।

आयत 13 और 14 के पहले भाग को देखें: "हमारे खलिहान हर तरह की सामग्री से भरे होंगे। खेतों में हमारे झुंड हज़ारों और दसियों हज़ारों की संख्या में बढ़ेंगे, और हमारे बैल बोझ से लदे होंगे..."

(3) जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, उन्हें मिलने वाला एक आशीष शांति है।

आयत 14 के दूसरे भाग को देखें: "...दीवारों में कोई सेंध नहीं लगेगी, कोई गुलामी में नहीं जाएगा, और हमारी सड़कों पर दुख-दर्द की कोई पुकार नहीं होगी।"

मेरी प्रार्थना है कि आप और मैं परमेश्वर पर भरोसा करके इन अनमोल आशीषों का आनंद लें।

हे प्रभु, मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुधि लेता है?

“हे प्रभु, मनुष्य क्या है कि तू उसे पहचानता है, और इंसान क्या है कि तू उसके बारे में सोचता है? मनुष्य तो बस एक सांस के समान है; उसके दिन गुज़रती हुई परछाईं जैसे हैं” (भजन संहिता 144:3-4)।

पिछले शुक्रवार को, विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च की स्थापना की 34वीं वर्षगांठ मनाने के लिए एक विशेष सभा आयोजित की गई थी, जहाँ मैं सेवा करता हूँ। अतिथि वक्ता के माध्यम से, परमेश्वर ने इफिसियों 1:3-14 पर आधारित “मुक्ति के अनुग्रह” का संदेश दिया। उस संदेश को सुनने के बाद, जब मैंने प्रार्थना की और त्रिएक परमेश्वर के मुक्ति देने वाले अनुग्रह पर मनन किया, तो मुझे एक वचन याद आया जिस पर मैंने पहले भी मनन किया था—भजन संहिता 8:4 का पहला भाग: “मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुधि लेता है...?” मैंने परमेश्वर से कहा: “हे परमेश्वर, मनुष्य क्या है कि तू उससे इतना प्रेम करता है? हे परमेश्वर, मैं कौन हूँ कि तू मुझ पर मुक्ति का इतना बड़ा अनुग्रह करता है?” इसके बाद, आज सुबह की प्रार्थना सभा में भजन संहिता 144—जिस पर मैंने पिछली रात मनन किया था—साझा करने के बाद, मैं एक बार फिर उस अंश के वचनों 3 और 4 पर विचार कर रहा हूँ। विशेष रूप से, मैं वचन 3 के बाद वाले हिस्से पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ: “इंसान क्या है कि तू उसके बारे में सोचता है?”

मेरी राय में, पति-पत्नी एक-दूसरे से कितना भी प्रेम क्यों न करते हों, वे दिन भर में अनगिनत बार एक-दूसरे के बारे में नहीं सोचते। मैं सोचता हूँ—भले ही वे अक्सर एक-दूसरे के बारे में सोचते हों, क्या यह संख्या दिन में एक हज़ार बार तक पहुँचती होगी? मुझे संदेह है कि क्या कोई ऐसा जोड़ा है जो एक-दूसरे के बारे में दस हज़ार बार तक सोचता हो। यहाँ तक कि जो जोड़ा इतनी बार एक-दूसरे के बारे में सोचता है, उसके लिए

भी यह निश्चित है कि वे पूरे दिन एक-दूसरे के बारे में नहीं सोच सकते। आखिरकार, जब वे रात में सो रहे होते हैं तो वे एक-दूसरे के बारे में कैसे सोच सकते हैं? बेशक, भले ही जीवनसाथी सपनों में आए, कोई पूरी रात उनके बारे में सपने नहीं देखता; इस प्रकार, पति और पत्नी के बीच साझा किया गया प्रेम और विचार अनिवार्य रूप से सीमित होते हैं। हालाँकि, हमारे प्रति परमेश्वर के विचार सीमित नहीं हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर, जो हमसे प्यार करते हैं और हमारे बारे में सोचते हैं, न तो ऊँघते हैं और न ही सोते हैं (भजन संहिता 121:4)। इसके अलावा, क्योंकि परमेश्वर अनंत हैं (यशायाह 40:28), इसलिए हमारे प्रति उनके विचार भी अनंत हैं।

भजन संहिता 139:17–18 में हमारे प्रति परमेश्वर के विचारों का वर्णन इस प्रकार किया गया है: "हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे लिए कितने अनमोल हैं! उनकी संख्या कितनी विशाल है! यदि मैं उन्हें गिनने लगूँ, तो वे रेत के कणों से भी अधिक होंगे—जब मैं जागता हूँ, तो भी मैं तेरे साथ होता हूँ।" बाइबल हमें बताती है कि प्रभु, जो हमसे प्रेम करते हैं, हमारे बारे में ऐसे अनमोल विचार रखते हैं जिनकी संख्या रेत के कणों से भी अधिक है। भला हम रेत के कणों को कैसे गिन सकते हैं? हम उन्हें गिनने की कोशिश भी नहीं करेंगे, क्योंकि उनकी संख्या बहुत विशाल है। सच तो यह है कि मनुष्य की क्षमता उन्हें गिनने के लिए अपर्याप्त है; हम इस काम को शुरू भी नहीं कर सकते। बाइबल बताती है कि हमारे प्रति परमेश्वर के अनमोल विचार भी उसी हद तक अनगिनत हैं। फिर भी, और भी आश्चर्य की बात यह है कि परमेश्वर हम मनुष्यों के प्रति ऐसे अनगिनत विचार रखते हैं—हम जो "साँस के समान हैं; [जिनके] दिन एक क्षणभंगुर छाया के समान हैं" (भजन संहिता 144:4)। यदि हमारा जीवन उस छाया के समान है जो सूरज डूबने पर गायब हो जाती है, या उस साँस के समान है जो एक पल में गायब हो जाती है—यदि हमारे दिन घास के समान हैं (भजन संहिता 103:15)—तो प्रभु हमारे बारे में इतनी बार क्यों सोचते हैं? क्या इसलिए नहीं कि वे हमसे प्रेम करते हैं? जब हमारी साँसें थम जाती हैं, तो हम मिट्टी में मिल जाते हैं, और उस दिन, हमारे अपने विचार भी नष्ट हो जाते हैं (भजन संहिता 146:4)। फिर भी, हमारे प्रति परमेश्वर के विचार—भले ही हम कितने भी कमज़ोर क्यों न हों, जैसे कि एक साँस या गुज़रती हुई छाया—कभी नष्ट नहीं होते, और न ही वे कभी समाप्त हो सकते हैं; क्योंकि हमारे परमेश्वर अनंत हैं।

यह समझ से परे है कि अनंत परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं—हम जैसे नश्वर मनुष्य जो साँस या छाया की तरह क्षणभंगुर हैं—और लगातार हमारे बारे में सोचते हैं, यहाँ तक कि हमारे उद्धार के लिए अपने अनंत पुत्र, यीशु को क्रूस पर मरने के लिए इस पृथ्वी पर भेजते हैं। मैं उस अनुग्रह और प्रेम को पूरी तरह से नहीं समझ सकता जिसने परमेश्वर के अनंत पुत्र को मनुष्य का रूप लेने और मुझ जैसे पापी को बचाने के लिए क्रूस पर मरने के लिए प्रेरित किया। इसलिए, मैं बस ईश्वर से यही प्रार्थना कर सकता हूँ: "हे प्रभु, मनुष्य क्या है कि आप मेरे बारे में सोचते हैं?" और "मैं क्या हूँ कि आप मुझे अपने विचारों में रखते हैं?"

मैं प्रभु की महिमा करता हूँ।

[भजन संहिता 145]

मुझे गॉस्पेल गीत "आ पर्सन ऑफ़ ब्लेसिंग" (आशीष पाने वाला व्यक्ति) गाना बहुत पसंद है। इसके कोरस के बोल हैं: "आपकी सेवा एक सुंदर भजन है; आपकी भक्ति एक सुगंधित प्रार्थना है; आप जहाँ भी कदम रखेंगे, प्रभु का नाम ऊँचा किया जाएगा।" जब भी मैं यह गीत गाता हूँ—खासकर कोरस—तो मुझे अपने जीवन में मिले "आशीष पाने वाले लोगों" की याद आती है और मैं प्रार्थना करता हूँ कि वे जहाँ भी जाएँ, प्रभु का नाम ऊँचा हो। जब मैं उनके बारे में सोचता हूँ, तो पूरे यकीन के साथ गाता हूँ कि उनकी सेवा एक सुंदर भजन है और उनकी भक्ति सचमुच एक सुगंधित प्रार्थना है। इसी भावना के साथ, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मैं और विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च का पूरा परिवार परमेश्वर के ऐसे लोग बनें जो—आशीष पाए हुए लोगों के तौर पर—जहाँ भी हों और जो कुछ भी करें, प्रभु के नाम की महिमा करें। असल में, यह हमारे चर्च के तीन मुख्य उद्देश्यों में से एक है: ऐसा चर्च बनना जो प्रभु का स्वागत करे, उनके जैसा बने और उनकी महिमा करे। हमारे पादरी एमेरिटस, जिन्होंने ये तीन उद्देश्य तय किए और प्रभु की कलीसिया—विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च—की सेवा की, वे रिटायरमेंट के बाद भी मिशन के काम में प्रभु के नाम की महिमा कर रहे हैं।

भजन संहिता 145:1 में, हम भजनकार दाऊद का समर्पण देखते हैं: "हे मेरे परमेश्वर, हे राजा, मैं तेरी महिमा करूँगा; और मैं सदा-सर्वदा तेरे नाम को धन्य कहूँगा।" दाऊद ने खुद को प्रभु की महिमा करने और हमेशा उनके नाम की स्तुति करने के लिए समर्पित किया; आखिर वह किस तरह के प्रभु की महिमा करना चाहता था?

सबसे पहले, दाऊद "मेरे परमेश्वर, राजा" की महिमा करना चाहता था। भजन संहिता 145:1 देखिए: "हे मेरे परमेश्वर, हे राजा, मैं तेरी महिमा करूँगा; और मैं सदा-सर्वदा तेरे नाम को धन्य कहूँगा।" आप शायद गॉस्पेल गीत "माई गॉड, माई किंग" (मेरे परमेश्वर, मेरे राजा) से परिचित होंगे, है ना? "मेरे परमेश्वर, मेरे राजा, मैं तेरी महिमा करूँगा और सदा तेरे नाम को धन्य कहूँगा।" यह परमेश्वर, जो हमारा राजा है, वही है जो अपने राज्य पर राज करता है (पद 13)। प्रभु का राज्य—जिस पर हमारे परमेश्वर और राजा का शासन है—हमेशा रहने वाला है (पद 13) और उसमें महिमा और प्रताप है (पद 11-12)। हमारे परमेश्वर और राजा के राज वाले इस शानदार और महिमामयी राज्य में, हम प्रभु की शक्ति को देखते और महसूस करते हैं (पद 11–12)। प्रभु की इस महिमा, शान और शक्ति का अनुभव करने के बाद, दाऊद ने खुद को "मेरे परमेश्वर, मेरे राजा" के अद्भुत कामों पर मनन करने के लिए समर्पित कर दिया। आज के हिस्से के पद 5 को देखिए: "मैं तेरी महिमा के शानदार वैभव और तेरे अद्भुत कामों पर मनन करूँगा।" पिछले हफ़्ते, बच्चों के समर बाइबल स्कूल के दौरान, मैंने हमारे चर्च के एजुकेशन पास्टर और उनके एक साथी पास्टर दोस्त से बातचीत की। हमने इस बात पर चर्चा की कि सेवकों के तौर पर हमारे लिए यह ज़रूरी है कि हम रुकें, अपने पिछले जीवन को देखें और अपने जीवन में प्रभु—जो कुम्हार है—के स्पर्श पर विचार करें। इसका कारण यह है कि ऐसा चिंतन हमें मौजूदा हालात में ऐसे फ़ैसले लेने में मदद करता है जो परमेश्वर की नज़र में सही हों। खासकर आज के हिस्से को देखते हुए, क्योंकि "मेरे परमेश्वर, मेरे राजा" हमारे जीवन पर राज करते हैं, मेरा मानना है कि हम—जो उनके राज में रहते हैं—के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि हम अतीत में परमेश्वर की महिमा देखने और उनकी शक्ति का अनुभव करने की यादों पर विचार और मनन करें। इसका कारण यह है कि जब हम अतीत में परमेश्वर द्वारा किए गए अद्भुत कामों पर मनन करते हैं, तो हमें और भी पक्का यकीन हो जाता है कि प्रभु, हमारे राजा, अभी हमारे जीवन पर शासन और राज कर रहे हैं। इस भरोसे के साथ, चाहे हम किसी भी हालात का सामना करें, हम प्रभु की महिमा कर सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया था।

दूसरी बात, दाऊद ने "महान परमेश्वर" की महिमा करने की कोशिश की।

भजन संहिता 145:3 को देखिए: "प्रभु महान है और स्तुति के सबसे योग्य है; उसकी महानता को कोई समझ नहीं सकता।" आप शायद "ग्रेट इज़ द लॉर्ड" (प्रभु महान है) गॉस्पेल गाने से परिचित होंगे। इसके बोल कुछ इस तरह हैं: "प्रभु महान है; हमारे परमेश्वर के शहर, उसके पवित्र पर्वत पर उसकी स्तुति करो। उसने हमें

जीत दिलाई है और हमारे सभी दुश्मनों को हराया है। आओ हम झुकें और अपने प्रभु की आराधना करें... (कोरस) उसके महान नाम की महिमा करें और हमारे लिए किए गए उसके महान कामों के लिए धन्यवाद दें। ओह, उसका सच्चा प्रेम पूरी धरती और स्वर्ग पर फैला हुआ है; केवल उसका नाम ही हमेशा बना रहता है।" आज के हिस्से का 8वाँ वचन हमें बताता है कि यह महान परमेश्वर आपसे और मुझसे "बहुत प्यार" करता है। हमें यह कैसे पता चलता है? वचन 14 को देखिए: "प्रभु उन सभी को संभालता है जो गिर जाते हैं और उन्हें उठाता है जो झुके हुए हैं।" पिछले शुक्रवार की सुबह की प्रार्थना सभा में, यशायाह 41:10 पर मनन करते हुए, हमने परमेश्वर के इस वादे पर भी विचार किया: "मैं अपने धर्मी दाहिने हाथ से तुम्हें थामे रहूँगा।" हमने सीखा है कि डरावनी और चौंकाने वाली स्थितियों में भी, इम्मानुएल—यानी हमारे साथ रहने वाला परमेश्वर—हमारे कमज़ोर और शक्तिहीन दाहिने हाथों को थामता है (वचन 13), हमारी ताकत को बहाल करता है और हमें ऊपर उठाता है। आज के हिस्से, भजन संहिता 145:14 में, दाऊद कहता है कि महान परमेश्वर, अपने अपार प्रेम के कारण, हमें तब थामता और ऊपर उठाता है जब हम मुसीबत और सतावट के कारण लड़खड़ाते हैं। हम वचन 18 और 19 को देखकर और भी अच्छी तरह समझ सकते हैं कि यह महान परमेश्वर हमसे कितना गहरा प्रेम करता है: "प्रभु उन सभी के करीब है जो उसे पुकारते हैं, जो सच्चाई से उसे पुकारते हैं। वह उनका मनचाहा पूरा करता है जो उससे डरते हैं; वह उनकी पुकार भी सुनता है और उन्हें बचाता है।" यह महान और शक्तिशाली परमेश्वर आपसे और मुझसे अपने अपार प्रेम से प्यार करता है, और "उन सभी के करीब आता है जो उसे पुकारते हैं, जो सच्चाई से उसे पुकारते हैं" (वचन 18)। इसके अलावा, जब हम आदर के साथ अपनी विनती करते हैं, तो वह हमारी पुकार सुनता है और हमें बचाता (छुटकारा देता) है। उसके महान प्रेम का अनुभव करने के बाद—जैसा कि हम देखते हैं कि वह हमें कैसे थामता है (वचन 14) और हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है (वचन 18-19)—यह महान परमेश्वर हम सभी की "रक्षा" करता है जो उससे प्रेम करते हैं (वचन 20)। इसलिए, दाऊद की तरह, हमें खुद को इस "महान परमेश्वर" की भरपूर स्तुति और महिमा करने के लिए समर्पित करना चाहिए। आज के हिस्से के वचन 3, 4 और 6 को देखिए: "प्रभु महान है और स्तुति के योग्य है; उसकी महानता को कोई समझ नहीं सकता। एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को तुम्हारे कामों के बारे में बताती है; वे तुम्हारे शक्तिशाली कामों का वर्णन करते हैं... वे तुम्हारे अद्भुत कामों की शक्ति के बारे में बताते हैं—और मैं तुम्हारे महान कामों का प्रचार करूँगा।" जब दाऊद ने महान परमेश्वर द्वारा अपनी अपार शक्ति से किए गए उद्धार के महान कार्यों पर विचार किया, तो वह उनकी भरपूर स्तुति और महिमा किए बिना न रह सका। दाऊद की तरह, हमें भी अपने जीवन में परमेश्वर के अपार प्रेम

और उद्धार के उनके महान कार्यों का अनुभव करने के बाद, अपने महान प्रभु की महिमा और स्तुति करने के लिए खुद को समर्पित करना चाहिए।

तीसरी बात, दाऊद ने "दयालु परमेश्वर" की महिमा करने की कोशिश की।

भजन संहिता 145:8 को देखिए: "यहोवा दयालु और करुणा से भरा है, क्रोध करने में धीमा और दया में महान है।" जब दाऊद ने परमेश्वर के राजा होने पर मनन किया और अपने जीवन में परमेश्वर की महानता को देखा, तो वह उनकी स्तुति किए बिना नहीं रह सका; ऐसा इसलिए था क्योंकि उसे परमेश्वर की दया के स्वभाव का एहसास हो गया था। उसे परमेश्वर की भरपूर दया की गहरी समझ तब मिली जब उसने सोचा कि कैसे उस महान राजा ने अपने बड़े प्रेम से उसके जीवन में उद्धार के अद्भुत काम किए थे। खास तौर पर, उसने देखा और महसूस किया कि कैसे दयालु परमेश्वर "सबके प्रति भला है, और उसकी कोमल दया उसके सभी कामों पर है" (पद 9)। उसने यह भी देखा और महसूस किया कि कैसे दयालु परमेश्वर "हर जीवित प्राणी की इच्छा पूरी करता है" (पद 16)। इस प्रकार, दाऊद ने स्वीकार किया: "यहोवा अपने सभी कामों में धर्मी है, अपने सभी कामों में दयालु है" (पद 17)। उसने खुद को इस "दयालु परमेश्वर" को याद करने के लिए समर्पित कर दिया। पद 7 को देखिए: "वे तेरी महान भलाई को याद करेंगे, और तेरी धार्मिकता के गीत गाएंगे।" परमेश्वर ही वह है जो बहुत प्रेम के कारण अपने लोगों (अपनी संतानों) के साथ भलाई करता है, उन पर दया करता है और उनकी इच्छाओं को पूरा करता है। जब हम उस महान दया को याद करते हैं जो परमेश्वर ने अतीत में हमारे जीवन पर की है और वर्तमान में उस दया का गुणगान करते हैं, तो हमारी स्वाभाविक प्रतिक्रिया क्या होती है? पद 10 को देखिए: "हे यहोवा, तेरे सभी काम तेरी स्तुति करेंगे, और तेरे पवित्र लोग तुझे धन्यवाद देंगे।" हम परमेश्वर का धन्यवाद किए बिना नहीं रह सकते, और हम स्तुति के माध्यम से अपना आभार व्यक्त करने के लिए प्रेरित होते हैं। इस प्रकार, पद 21 में—जो आज के अंश का अंतिम पद है—दाऊद खुद को (फिर से) समर्पित करने का यह संकल्प लेता है: "मेरा मुँह यहोवा की स्तुति करेगा, और सभी लोग हमेशा-हमेशा के लिए उसके पवित्र नाम का गुणगान करेंगे।"

हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जो प्रभु की महिमा करे, क्योंकि वही परमेश्वर है जो वास्तव में सारी महिमा के योग्य है। वह हमारा राजा है; वह ऐसा परमेश्वर है जो हम पर शासन करता है और राज करता है। सम्मान,

शक्ति और महिमा उसी की है। वह एक महान और अद्भुत परमेश्वर है। और यह महान परमेश्वर आपसे और मुझसे अपने असीम प्रेम से प्यार करता है। वही परमेश्वर हमें तब संभालता है जब हम मुश्किलों और सतावटों में लड़खड़ाते हैं, और हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। इसके अलावा, हमारा परमेश्वर दयालु है; वह हमारे साथ भलाई से पेश आता है और हम पर दया करता है। इसलिए, जब हम अतीत में प्रभु द्वारा किए गए महान कार्यों पर मनन करते हैं, तो हमें उस अनुग्रह को याद रखना चाहिए जो उसने हम पर दिखाया है। हमें धन्यवाद के साथ इस महान प्रभु के पास आना चाहिए और उसकी भरपूर स्तुति करनी चाहिए। मेरी यही प्रार्थना है कि हम सब ऐसे लोग बनें जो प्रभु की महिमा करते हैं।

महान प्रभु की महिमा करें

"प्रभु महान हैं और स्तुति के योग्य हैं; उनकी महानता को कोई नहीं समझ सकता" (भजन संहिता 145:3)।

कोरिया की राष्ट्रीय युवा सॉकर टीम अभी ब्राज़ील के खिलाफ़ मैच खेल रही है। मुझे लगता है कि बहुत से कोरियाई सॉकर प्रशंसक यह मैच देख रहे होंगे और उम्मीद कर रहे होंगे कि खिलाड़ी पार्क चू-यंग वैसे ही गोल करेंगे जैसे उन्होंने नाइजीरिया के खिलाफ़ मैच में किया था। मैं जानता हूँ कि पार्क चू-यंग, जो एक ईसाई हैं, गोल करने के बाद हमेशा घुटने टेककर प्रार्थना करते हैं। मुझे भी टीवी समाचारों में ऐसा करते हुए उन्हें देखना याद है। मेरा मानना है कि जब इतने सारे लोग सामने या टेलीविज़न पर मैच देख रहे हों, तब घुटने टेककर प्रार्थना करना एक ईसाई सॉकर खिलाड़ी के लिए परमेश्वर की महिमा करने का एक तरीका है। हालाँकि, हममें से हर कोई पार्क चू-यंग की तरह मशहूर नहीं है। फिर भी, हममें से हर एक की यह ज़िम्मेदारी है कि हम अपने जीवन में महान प्रभु की महिमा करें। आज के शास्त्र-पाठ पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं इस बात पर विचार करना चाहता हूँ कि भजनकार दाऊद ने महान प्रभु की महिमा कैसे की और हम इसे अपने जीवन में कैसे अपना सकते हैं।

सबसे पहले, दाऊद ने महान प्रभु की "महान कृपा" को याद किया।

भजन संहिता 145:7 देखें: "वे आपकी भरपूर भलाई का गुणगान करेंगे..." दाऊद ने प्रभु की महान कृपा को याद किया और उसका गुणगान किया। हम महान प्रभु की उस महान कृपा को याद करके और उसका गुणगान करके उनकी महिमा कर सकते हैं जो उन्होंने हममें से हर एक पर की है। फिर भी, अक्सर हम परमेश्वर द्वारा हम पर की गई "महान कृपा" को या तो कम महत्व देते हैं या भूल जाते हैं। इसीलिए दाऊद ने परमेश्वर की आशीषों को गिनने की समझ माँगी। हमें भी ऐसी ही समझ की ज़रूरत है। जब हम अपने जीवन

को पीछे मुड़कर देखते हैं और परमेश्वर की कृपा के निशानों पर विचार करते हैं, तो हमें उस महान कृपा को याद करना चाहिए।

हमें महान परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए। ऐसा करने के लिए, हमें सबसे पहले अपने जीवन को पीछे मुड़कर देखने के लिए समय निकालना होगा। ऐसा करते समय, हमें परमेश्वर की "महान कृपा" को याद करना और उसका गुणगान करना चाहिए।

दूसरे, दाऊद ने महान परमेश्वर की "महान स्तुति" की।

भजन संहिता 145:3 देखें: "प्रभु महान हैं और स्तुति के योग्य हैं..." "महान स्तुति" करने का अर्थ है प्रभु के शक्तिशाली कार्यों या महान, प्रभावशाली कामों की "बहुत अधिक प्रशंसा करना" (पद 4)। इसलिए, प्रभु की "बहुत ज़्यादा तारीफ़" करने के लिए, हमें—दाऊद की तरह—"आपकी महिमा के शानदार वैभव और आपके अद्‌भुत कामों" पर मनन करना चाहिए (पद 5)। खासकर, जब हम प्रभु के "अद्‌भुत कामों" पर मनन करते हैं, तो हमें उस भलाई (पद 9) और दया (पद 9) पर सोचना चाहिए जो परमेश्वर ने हमें दिखाई है। उनकी भलाई और उनकी महान दया के बिना, हम यहाँ तक नहीं पहुँच पाते। इसके अलावा, हमें प्रभु की धार्मिकता और अनुग्रह पर मनन करना चाहिए (पद 17)। क्योंकि प्रभु, जो "गिरने वालों को संभालते हैं और झुके हुओं को उठाते हैं" (पद 14), उन्होंने हमारी इच्छाओं को भी पूरा किया है (पद 16), इसलिए हमें महान प्रभु की बहुत तारीफ़ करनी चाहिए।

मुझे याद है कि 'यूथ विद ए मिशन' (YWAM) के पादरी होंग सुंग-गियोन ने "तारीफ़" (praise) और "आराधना" (worship) के बीच अंतर बताया था; उन्होंने कहा था कि तारीफ़ में उन कामों का जश्न मनाना शामिल है जो परमेश्वर ने हमारे जीवन में किए हैं। अपनी व्यस्त ज़िंदगी के बीच, हमें शांत मन से रुककर अपनी ज़िंदगी पर सोचने की अच्छी आदत डालनी चाहिए। इन सबके बीच, हमें—आत्मा की आँखों से—उन कामों को देखने में सक्षम होना चाहिए जो परमेश्वर हमारे जीवन में कर रहे हैं। मेरा मानना है कि यह ऐसी चीज़ है जिसे केवल विश्वास के ज़रिए ही समझा जा सकता है। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम अपने महान प्रभु की ज़बरदस्त तारीफ़ करने के लिए प्रेरित होते हैं। अपनी आराधना में, हमें सबसे पहले उनके वचन पर

केंद्रित प्रार्थना के ज़रिए अपने दिलों को तैयार करना चाहिए। जब हम परमेश्वर के अपार अनुग्रह पर मनन करते हैं और उन महान कामों को याद करते हैं जो उन्होंने हमारे लिए किए हैं, तो हमें कृतज्ञता और श्रद्धा से भरी हुई ज़बरदस्त तारीफ़ करनी चाहिए। हालाँकि, अगर हम ज़ोर-ज़ोर से तारीफ़ करते हैं लेकिन अपने दिल की गहराई में परमेश्वर के कामों से अनजान रहते हैं, तो उनकी नज़र में इसका कोई मतलब नहीं है। असल में, यह उनके कानों के लिए बुरा लग सकता है। परमेश्वर को महिमा तब मिलती है जब दिल से ज़बरदस्त तारीफ़ निकलती है—ऐसी तारीफ़ जो उनके महान अनुग्रह और ज़बरदस्त कामों को याद करने से पैदा होती है और सच्ची कृतज्ञता और श्रद्धा से भरी होती है।

तीसरी बात, दाऊद ने हिम्मत के साथ परमेश्वर की महानता का "प्रचार" किया।

भजन संहिता 145:6 देखें: "... और मैं आपकी महानता का प्रचार करूँगा।" दाऊद ने सिर्फ़ अपने होंठों से परमेश्वर की महानता की तारीफ़ नहीं की; उन्होंने सचमुच अपने जीवन के ज़रिए इसका प्रचार किया। मुझे लगता है कि यहीं हम अक्सर चूक जाते हैं। हो सकता है कि हम ज़ोर-ज़ोर से परमेश्वर की महानता का बखान करें, लेकिन असल में हमारा जीवन एक ऐसे परमेश्वर को दिखाता है जो बहुत "छोटा" है। शक और चिंता में फँसे होने के कारण हम एक महान परमेश्वर पर पूरा भरोसा नहीं कर पाते, और अपने आस-पास के उन लोगों के सामने एक छोटे परमेश्वर की छवि पेश करते हैं जो परमेश्वर को नहीं मानते। नतीजतन, वे पूछते हैं, "क्या उस व्यक्ति का परमेश्वर सचमुच इतना छोटा है?" हमारा "छोटा सा प्यार" ही यह बात साफ़ कर देता है। हम ज़ोर-शोर से पड़ोसियों से प्यार करने की बात तो करते हैं, लेकिन क्या उनके प्रति हमारा असल प्यार बहुत छोटा नहीं होता? मैं सोचता हूँ कि अगर पड़ोसियों के लिए हमारा प्यार परमेश्वर की महानता जितना ही बड़ा होता, तो क्या हमारा समाज आज भी ऐसी हालत में होता? महान परमेश्वर को दिखाने के बजाय, हमारा जीवन अक्सर दुनिया के सामने झगड़े, बँटवारे, जलन और ईर्ष्या वाले परमेश्वर को पेश करता है। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। दाऊद की तरह, हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जो परमेश्वर की महानता को दिखाए। हमें कभी भी "छोटे परमेश्वर" की छवि दिखाकर उन्हें कमतर नहीं आंकना चाहिए और न ही उनकी शानदार महिमा को धुंधला करना चाहिए।

यह लेख लिखते समय, मुझे खबर मिली कि कोरिया की राष्ट्रीय युवा सॉकर टीम ब्राज़ील से हार गई है। खिलाड़ी पार्क चू-यंग ने गोल का जश्न नहीं मनाया, जैसा कि बहुत से लोग उम्मीद कर रहे थे। मैंने याहू न्यूज़

पर कुछ ऐसी टिप्पणियाँ देखीं: "ईसाइयों, हम क्यों हारे? यह हमारे देश की ईसाई राष्ट्रीय टीम थी—कोच से लेकर खिलाड़ियों तक सभी ईसाई थे... क्या ब्राज़ील की तुलना में हमारे पास 'प्रार्थना की शक्ति' कम थी?" और "राष्ट्रीय टीम नहीं हारी; 'जीसस-फ्रीक' (यीशु के दीवाने) टीम हारी... हिम्मत मत हारो।" "जीसस-फ्रीक टीम हार गई" वाली बात के बारे में आप क्या सोचते हैं? दुनिया हमें देख रही है—हम "जीसस-फ्रीक" लोगों को। हम परमेश्वर की संतान हैं और हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने महान प्रभु की महिमा करें। तो फिर, हम महान प्रभु की महिमा कैसे कर सकते हैं? क्या सॉकर की तरह गोल करके? हमें परमेश्वर की "महान कृपा" का जश्न मनाकर महान प्रभु की महिमा करनी चाहिए। हमें "महान परमेश्वर की भरपूर प्रशंसा" करके भी उनकी महिमा करनी चाहिए। हमें अपने जीवन के ज़रिए परमेश्वर की अपार महानता का निडरता से "प्रचार" करके प्रभु की महिमा करनी चाहिए।

लोगों पर नहीं, बल्कि परमेश्वर पर भरोसा रखें।

[भजन संहिता 146]

क्या आपके साथ कभी धोखा हुआ है? क्या आपको कभी किसी ऐसे प्रिय व्यक्ति से धोखा मिला है जिस पर आपने बहुत भरोसा किया था? क्या आपने कभी इस बात पर विचार किया है कि कहीं *आप* तो परमेश्वर को धोखा नहीं दे रहे हैं? कल सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, मैंने यिर्मयाह 11:15 पर मनन किया: "मेरे प्रिय को मेरे घर में क्या अधिकार है, जब उसने इतने सारे बुरे काम किए हैं? क्या पवित्र मांस तुम्हारी विपत्ति को टाल सकता है? जब तुम बुराई करते हो, तो तुम खुश होते हो।" यहूदा के लोगों से—जिन्होंने कई मूर्तियों की पूजा और सेवा करके बड़े पैमाने पर आध्यात्मिक व्यभिचार किया, फिर भी बलिदान चढ़ाने के लिए परमेश्वर के घर आए (शायद अपने पापपूर्ण कार्यों को छिपाने की कोशिश में) और बुराई करने में खुश हुए—परमेश्वर ने पूछा, "तुम मेरे घर में क्या कर रहे हो?" जब मैंने इन शब्दों पर मनन किया, तो मैंने खुद से पूछा: "मैं क्या कर रहा हूँ—मेरा परिवार क्या कर रहा है, और हमारा आध्यात्मिक परिवार, विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च, क्या कर रहा है—परमेश्वर के घर में?" क्या मैं, यहूदा के लोगों की तरह, अपने होंठों से परमेश्वर का सम्मान कर रहा हूँ जबकि मेरा दिल बहुत दूर है? क्या मैं रविवार को पूजा के लिए भेंट लेकर प्रभु के घर आ रहा हूँ, और साथ ही दूसरी देवताओं की सेवा करके मूर्तिपूजा का आध्यात्मिक व्यभिचार भी कर रहा हूँ...? परमेश्वर की आवाज़ पूछ रही है, "तुम मेरे घर में क्या कर रहे हो?" यिर्मयाह 11:9 में, बाइबिल यहूदा के लोगों द्वारा की गई मूर्तिपूजा के इस पाप को "बगावत" बताती है। इस शब्द पर विचार करते हुए, मैंने सोचा कि क्या परमेश्वर को यहूदा के लोगों से धोखा महसूस हुआ होगा। इज़राइल के लोगों पर विचार करते समय—जिन्होंने मूर्तियों के पीछे भागने और आध्यात्मिक व्यभिचार करने के लिए परमेश्वर से मुँह मोड़ लिया था—कोई भी उस धोखे की भावना की कल्पना कर सकता है जो परमेश्वर ने अपने भटकते हुए लोगों के प्रति महसूस की

होगी। इस विचार ने मुझे यह पूछने के लिए प्रेरित किया: "क्या इंसानों पर सचमुच भरोसा किया जा सकता है? क्या लोग वास्तव में हमारे भरोसे के लायक हैं?" इसके अलावा, मैंने खुद से पूछा, "क्या मैं ऐसा व्यक्ति हूँ जिस पर दूसरे भरोसा कर सकें?" मैं खुद को ऐसा व्यक्ति मानता हूँ जो खुद पर भी पूरी तरह भरोसा नहीं कर सकता। आप क्या सोचते हैं?

आज का अंश, भजन संहिता 146, पाँच "हलेलुयाह भजनों" (भजन संहिता 146 से 150) में से पहला है। इस तरह, भजनकार यह कहते हुए शुरुआत करता है: "हल्लेलुयाह! हे मेरे मन, यहोवा की स्तुति कर। मैं जीवन भर यहोवा की स्तुति करता रहूँगा; जब तक मैं जीवित हूँ, अपने परमेश्वर का गुणगान करता रहूँगा" (पद 1-2)। भजनकार हमें "हल्लेलुयाह"—जिसका अर्थ है "यहोवा की स्तुति करो"—कहने के लिए बुलाता है और हमें जीवन भर मिलकर परमेश्वर की स्तुति करने के लिए प्रेरित करता है। इसका कारण क्या है? हमें जीवन भर मिलकर परमेश्वर की स्तुति क्यों करनी चाहिए? इसका कारण यह है कि जहाँ इंसानों पर भरोसा नहीं किया जा सकता, वहीं केवल परमेश्वर ही हमेशा भरोसेमंद है। इसीलिए भजनकार पद 3 में कहता है: "राजकुमारों पर या किसी इंसान पर भरोसा न करो, जिनसे कोई मदद नहीं मिल सकती।" संक्षेप में, वह हमें लोगों पर भरोसा न करने की सलाह देता है। और स्पष्ट रूप से कहें तो, वह हमें "राजकुमारों"—यानी "जो दूसरों की नज़र में प्रभावशाली दिखते हैं" (पार्क युन-सन) या साधारण इंसानों—पर निर्भर न रहने के लिए कहता है। इसका कारण क्या है? हमें दूसरे लोगों पर निर्भर क्यों नहीं रहना चाहिए? कारण यह है कि लोगों में मदद करने की शक्ति नहीं होती (पद 3)। इस प्रकार, भजनकार उन लोगों के बारे में बात करता है जिनमें मदद करने की शक्ति नहीं है: "जब उनकी साँस निकल जाती है, तो वे मिट्टी में मिल जाते हैं; उसी दिन उनकी सारी योजनाएँ खत्म हो जाती हैं" (पद 4)। हम इंसान कमज़ोर हैं; मरने पर हम निश्चित रूप से मिट्टी में मिल जाते हैं, और हमारी योजनाएँ हवा में गायब हो जाती हैं। तो फिर, हम ऐसे लोगों पर कैसे भरोसा कर सकते हैं? डॉ. पार्क युन-सन ने लोगों पर भरोसा करने के मामले पर टिप्पणी की: "इंसानों पर भरोसा करना एक बुरी सोच है जो परमेश्वर पर भरोसा करने के रास्ते में रुकावट डालती है। इसलिए, भजनकार सबसे पहले इंसानों पर भरोसा करने के पाप को मना करता है ताकि दूसरों को परमेश्वर पर भरोसा करने की ओर ले जा सके।" जिन लोगों में मदद करने की शक्ति नहीं है, उन पर भरोसा करना हमें परमेश्वर पर भरोसा करने से रोकता है, जो हमारा सच्चा मददगार है। इसलिए, भजनकार की सलाह मानते हुए, हमें सबसे पहले उन इंसानों पर निर्भर रहना बंद करना होगा जिनमें मदद करने की शक्ति नहीं है। हमें लोगों पर निर्भर रहने की आदत छोड़ देनी चाहिए।

भजनकार हमें इस प्रकार प्रेरित करता है: "धन्य है वह जिसकी मदद याकूब का परमेश्वर करता है, जिसकी आशा अपने परमेश्वर यहोवा पर है" (पद 5)। सचमुच, धन्य है वह व्यक्ति जो परमेश्वर पर आशा रखता है। धन्य है वह जो परमेश्वर को अपनी सहायता बनाता है। इसलिए, हमें मदद के लिए कमज़ोर इंसानों की ओर नहीं, बल्कि परमेश्वर की ओर देखना चाहिए। जो ऐसा करते हैं, वे धन्य हैं। तो फिर, भजनकार हमें परमेश्वर को अपनी सहायता बनाने और उस पर आशा रखने के लिए क्यों प्रेरित करता है? इसका कारण क्या है?

पहला कारण यह है कि परमेश्वर ही वह सच्चा और सर्वशक्तिमान परमेश्वर है जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की है।

भजन संहिता 146:6 के पहले भाग को देखें: "यहोवा ने स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र और उनमें जो कुछ है, उन सबको बनाया है..." हमें किस पर भरोसा करना चाहिए—किसी साथी इंसान पर (जो खुद एक रचना है) या सृष्टिकर्ता परमेश्वर पर? हम इसका जवाब पहले से जानते हैं। यह सचमुच हैरानी की बात है कि हम अक्सर परमेश्वर के बजाय लोगों पर भरोसा करते हैं, जबकि हम अच्छी तरह जानते हैं कि हमें बनाई गई चीज़ों के बजाय सृष्टिकर्ता परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए। हमें सृष्टिकर्ता परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए। क्यों? क्योंकि हमारा सृष्टिकर्ता परमेश्वर ही वह सच्चा और सर्वशक्तिमान परमेश्वर है जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की है। केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही मुसीबत के समय आपकी और मेरी मदद कर सकता है। इंसान—जो मिट्टी से बने हैं और मिट्टी में ही मिल जाते हैं—उनमें हमारी मदद करने की शक्ति नहीं होती। इसलिए, हमें सृष्टिकर्ता परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए, जो सच्चा और सर्वशक्तिमान परमेश्वर है।

दूसरा कारण कि हमें परमेश्वर को अपनी सहायता क्यों बनाना चाहिए, वह यह है कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है।

भजन संहिता 146:6 के दूसरे भाग को देखें: "...जो सदा सच्चाई बनाए रखता है।" जिन लोगों पर हम अक्सर भरोसा करते हैं, वे विश्वासयोग्य नहीं होते। हम इंसान अक्सर धोखेबाज़ और अविश्वसनीय होते हैं। लेकिन परमेश्वर एक विश्वासयोग्य परमेश्वर है। वह विश्वासयोग्य है—खासकर, वह अपने लोगों के साथ किए गए वादे

(covenant) को पूरा करने में हमेशा विश्वासयोग्य रहता है (पार्क युन-सन)। भले ही हम परमेश्वर के साथ अपने वादे के रिश्ते की ज़िम्मेदारियों के प्रति विश्वासघाती हो जाएं, फिर भी वह हमेशा विश्वासयोग्य रहता है, क्योंकि वह भरोसेमंद है और खुद का इनकार नहीं कर सकता। इसलिए, हमें विश्वासयोग्य परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए।

तीसरी बात, हमें परमेश्वर को अपना मददगार इसलिए मानना चाहिए क्योंकि वह दयालु और प्रेम करने वाले परमेश्वर हैं।

भजन संहिता 146:8 पर विचार करें: "यहोवा अंधे की आँखें खोलता है, यहोवा झुके हुओं को उठाता है, यहोवा धर्मी लोगों से प्रेम करता है।" हमें परमेश्वर को अपना मददगार बनाना चाहिए क्योंकि वह हमसे प्रेम करते हैं। तो फिर, परमेश्वर आपसे और मुझसे कैसे प्रेम करते हैं? वह हमारे लिए न्याय करते हैं (पद 7)। हमारे परमेश्वर न्याय करने वाले परमेश्वर हैं। इसलिए, जब हम ज़ुल्म का सामना करते हैं, तो वह सच्चाई और न्याय के साथ फ़ैसला करते हैं और बुरे लोगों को सज़ा देते हैं (पद 9 का बाद का हिस्सा), और इस तरह हमें बचाते हैं (पद 7)। इसलिए, हमें न्याय करने वाले परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए। इसके अलावा, हमारे परमेश्वर हमें हमारी रोज़ की रोटी देते हैं; यानी, प्रेम करने वाले परमेश्वर हमारी ज़रूरतों को पूरा करते हैं (पद 7)। प्रेम करने वाले परमेश्वर भूखों को भोजन देते हैं, और अनाथों और विधवाओं की देखभाल करते हैं (पद 7 और 9)। दूसरे शब्दों में, हमारे परमेश्वर ही अनाथों और विधवाओं को सहारा देते हैं और उनकी मदद करते हैं। इसलिए, हमें उस परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए जो हमें सहारा देते हैं और हमारी मदद करते हैं। साथ ही, प्रेम करने वाले परमेश्वर ही हमें चंगा करते हैं (पद 8)। "अंधे" शब्द का अर्थ केवल शारीरिक रूप से अंधा होना नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक रूप से अंधा होना भी है। इसलिए, यह बात कि परमेश्वर अंधे की आँखें खोलते हैं, इसका मतलब है कि वह न केवल हमारी देखने की शारीरिक अक्षमता को ठीक करते हैं, बल्कि हमारी आत्मा के अंधेपन को भी दूर करते हैं। इसलिए, हमें उस परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए जो हमें चंगा करते हैं। प्रेम करने वाले परमेश्वर ही झुके हुओं को उठाते हैं (पद 8)। यहाँ, "झुके हुए" का अर्थ है वे लोग जिन्हें नीचा दिखाया गया है या जो दीन-हीन हो गए हैं (पार्क युन-सन)। दूसरे शब्दों में, हमारे परमेश्वर ही दीन-हीनों को ऊँचा उठाते हैं। प्रेम करने वाले परमेश्वर ही दीन-हीनों को ऊँचा उठाते हैं। इसलिए, जब हम खुद को दीन-हीन अवस्था में पाते हैं, तो हमें उस परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए जो हमें ऊँचा उठाते हैं। प्रेम करने वाले परमेश्वर ही परदेसी की रक्षा करते हैं (पद 9)। भले ही हम इस दुनिया में परदेसी

की तरह रहते हैं, हमारे परमेश्वर आपकी और मेरी रक्षा करते हैं। इसलिए, उनकी सुरक्षा पाकर, हमें परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए। हमें ऐसे लोगों पर भरोसा नहीं करना चाहिए जिनमें मदद करने की क्षमता नहीं है। अगर हम दूसरों पर निर्भर रहते हैं, तो हो सकता है कि हमें उनके धोखे का सामना करना पड़े; क्योंकि तभी हम लोगों पर निर्भर रहना छोड़ेंगे। आज के पाठ में, भजनकार हमें सिर्फ़ परमेश्वर पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करते हैं। वे हमें सिर्फ़ परमेश्वर पर उम्मीद रखने के लिए कहते हैं। सच्ची आशीष वहीं है। हमें परमेश्वर पर भरोसा क्यों करना चाहिए? इसलिए क्योंकि वही सच्चे और सर्वशक्तिमान परमेश्वर हैं जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की है। इसके अलावा, हमें मदद के लिए परमेश्वर की ओर देखना चाहिए क्योंकि वह भरोसेमंद हैं। चूँकि हमारे परमेश्वर प्रेम और दया से भरे हैं, इसलिए हमें उन्हें ही अपनी मदद का स्रोत बनाना चाहिए।

अपने परमेश्वर की स्तुति करना अच्छा और सुंदर है।

[भजन संहिता 147]

भजन संहिता 147:1 में, भजनकार कहता है: "प्रभु की स्तुति करो! क्योंकि हमारे परमेश्वर की स्तुति करना अच्छा है; क्योंकि उसकी स्तुति करना सुखद और उचित है।" वह ऐसा क्यों कहता है कि परमेश्वर की स्तुति करना अच्छा, सुंदर और उचित है? इसका कारण क्या है? कारण यह है कि प्रभु यरूशलेम को बनाता है। आयत 2 को देखें: "प्रभु यरूशलेम को बनाता है; वह इस्राएल के निकाले हुओं को इकट्ठा करता है।" यहाँ, इस बात का कि प्रभु यरूशलेम को बनाता है, अर्थ है कि वह परमेश्वर के लोगों को बना रहा है—यानी, वह कलीसिया का निर्माण कर रहा है। प्रभु कलीसिया का निर्माण क्यों कर रहा है? इसलिए क्योंकि वह कलीसिया से प्रेम करता है और उसमें आनंद लेता है। आज के अंश की आयतों 10–11 को देखें: "वह घोड़े की ताकत में आनंद नहीं लेता; वह मनुष्य की टांगों में कोई खुशी नहीं पाता। प्रभु उन लोगों में खुशी पाता है जो उसका भय मानते हैं, जो उसकी दया पर आशा रखते हैं।" सच्ची कलीसिया उन लोगों का समूह है जो परमेश्वर का भय मानते हैं और उसकी दयालुता पर आशा रखते हैं। चूँकि प्रभु ऐसी कलीसिया का निर्माण कर रहा है, इसलिए हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए।

तो, प्रभु वास्तव में कलीसिया का निर्माण कैसे कर रहा है? हम आज के अंश में पाँच बिंदुओं के माध्यम से इसका उत्तर पा सकते हैं।

पहला, प्रभु बिखरे हुओं को इकट्ठा करके और टूटे हुए दिलों को चंगा करके कलीसिया का निर्माण करता है। भजन संहिता 147:2–3 पर विचार करें: "प्रभु यरूशलेम को बनाता है; वह इस्राएल के निकाले हुओं को इकट्ठा करता है। वह टूटे हुए दिलों को चंगा करता है और उनके घावों पर पट्टी बाँधता है।" इस भजन की

पृष्ठभूमि को समझने से परमेश्वर द्वारा बिखरे हुओं को इकट्ठा करने और टूटे हुओं को चंगा करने का अर्थ स्पष्ट होता है। यह भजन एज्रा और नहेमायाह के युग में रचा गया था, जब लोग यरूशलेम की दीवारों, मंदिर और अपनी मातृभूमि के पुनर्निर्माण के लिए बंधुआई से लौटे थे (पार्क युन-सन)। इस प्रकार, यह घोषणा कि परमेश्वर बिखरे हुओं को इकट्ठा करता है और टूटे हुओं को चंगा करता है, यह दर्शाती है कि वह इस्राएल के लोगों को बंधुआई से वापस लाता है और उन्हें बहाल करता है। परमेश्वर के लिए यह कोई कठिन कार्य नहीं है। सचमुच, भजनकार प्रभु का वर्णन ऐसे व्यक्ति के रूप में करता है जो तारों की गिनती करता है और उन सभी को उनके नाम से बुलाता है (पद 4)—एक ऐसा परमेश्वर जो महान है, शक्ति में सामर्थी है और ज्ञान में असीम है (पद 5)। वह इतनी महानता और शक्ति वाले परमेश्वर हैं कि इस्राएल के बिखरे हुए लोगों को इकट्ठा करना उनके लिए कोई मुश्किल काम नहीं है। अपनी कलीसिया को बनाने में, प्रभु उन लोगों को इकट्ठा करते हैं जो बिखरे हुए हैं। इसके अलावा, वह केवल बिखरे हुए लोगों को इकट्ठा ही नहीं करते; अपनी कलीसिया की स्थापना करते समय, वह टूटे हुए दिलों को चंगा करते हैं और उनके घावों पर पट्टी बांधते हैं (पद 3)। इस्राएल के लोगों को उनके पापों के कारण परमेश्वर की ओर से अनुशासन के रूप में बेबीलोन में बंदी बनाकर ले जाया गया था; फिर भी, जब उन्होंने पश्चाताप किया और वापस लौटे, तो परमेश्वर ने उन्हें फिर से यरूशलेम में इकट्ठा किया और उनके टूटे हुए दिलों और घावों को चंगा किया और उन पर पट्टी बांधी। इस प्रकार, भविष्यद्वक्ता होशे ने उस समय इस्राएल के लोगों से आग्रह किया: "आओ, हम प्रभु के पास लौटें। उसने हमें टुकड़े-टुकड़े कर दिया है लेकिन वह हमें चंगा करेगा; उसने हमें घायल किया है लेकिन वह हमारे घावों पर पट्टी बांधेगा" (होशे 6:1)। आप क्या सोचते हैं? क्या हम देखते हैं—और अनुभव करते हैं—कि प्रभु बिखरे हुए लोगों को इकट्ठा करते हैं और टूटे हुओं को चंगा करते हैं, जैसा कि वह मत्ती 16:18 के अनुसार अपनी कलीसिया, यानी मसीह की देह, को बनाने का अपना वादा पूरा करते हैं? यदि आपका उत्तर "हाँ" है, तो परमेश्वर की भलाई का अनुभव करने वाले लोगों के रूप में, आपको उनकी स्तुति करनी चाहिए। परमेश्वर की ऐसी स्तुति अच्छी और सुंदर है।

दूसरी बात, प्रभु दीन लोगों को सहारा देकर कलीसिया का निर्माण करते हैं।

भजन संहिता 147:6 को देखें: "प्रभु दीन लोगों को सहारा देते हैं लेकिन दुष्टों को ज़मीन पर गिरा देते हैं।" परमेश्वर के अनुशासन के माध्यम से इस्राएल के लोगों को दीन किया गया था। बेबीलोन के माध्यम से परमेश्वर द्वारा अनुशासित होने के बाद, उन्होंने विनम्रतापूर्वक खुद को उनके सामने झुकाया। तब परमेश्वर ने इस्राएल

के उन लोगों को सहारा दिया जो इस तरह से दीन हो गए थे। मुझे यशायाह 41:10 और 13 के वचन याद आते हैं, जिन पर मैंने एक बार सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान मनन किया था। परमेश्वर ने अपने धर्मी दाहिने हाथ से हमारा दाहिना हाथ थामने का वादा किया है। उस वादे के अनुसार, हमारे प्रभु सचमुच हमारे कमज़ोर हाथों को थामे हुए हैं। अपने धर्मी हाथ से हमारी कलीसिया को थामकर ही वह इसकी स्थापना करते हैं। लेकिन, अगर चर्च परमेश्वर के सामने घमंडी हो जाता है, तो प्रभु—चर्च को बनाने की प्रक्रिया में—सबसे पहले हमारे घमंड को तोड़ेंगे और हमें विनम्र बनाएंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर विनम्र लोगों पर कृपा करते हैं। इसलिए, हमारे चर्च को परमेश्वर के सामने विनम्र होना चाहिए। ऐसा करते हुए, हमें विश्वास के ज़रिए यह महसूस करना चाहिए कि प्रभु हमारे कमज़ोर हाथों को थामे हुए हैं। जब ऐसा होता है, तो हम परमेश्वर की स्तुति किए बिना नहीं रह सकते और पुकार उठते हैं, "हल्लेलुयाह!" परमेश्वर की ऐसी स्तुति अच्छी और सुंदर होती है।

तीसरी बात, प्रभु हमारी ज़रूरतों को पूरा करके चर्च का निर्माण करते हैं।

भजन संहिता 147:8–9 को देखें: "वह आकाश को बादलों से ढँक देते हैं, पृथ्वी के लिए बारिश तैयार करते हैं, पहाड़ों पर घास उगाते हैं, और जंगली जानवरों और चिल्लाते हुए कौवे के बच्चों को भोजन देते हैं।" अगर सृष्टिकर्ता परमेश्वर उन जीवों की देखभाल करते हैं जिन्हें उन्होंने बनाया है, तो वे हमारी देखभाल और कितनी ज़्यादा करेंगे, जिन्हें उन्होंने अपने ही स्वरूप में बनाया है? ज़रूरतों को पूरा करने में, वे ऐसे परमेश्वर हैं जो पृथ्वी पर बारिश भेजते हैं और जंगली जानवरों और कौवे के बच्चों को खिलाते हैं। इस प्रकार, भजनकार कहते हैं: "...वह तुम्हें सबसे अच्छे गेहूँ से तृप्त करते हैं" (पद 14)। परमेश्वर ही हैं जो हमारे चर्च के लिए भरपूर इंतज़ाम करते हैं। हालाँकि कमी का हमारा अनुभव निश्चित रूप से पाप के कारण हो सकता है, लेकिन यह परमेश्वर द्वारा दिए गए भरपूर संसाधनों का समझदारी से—एक प्रबंधक की सोच के साथ—इस्तेमाल न कर पाने के कारण भी हो सकता है। आज के अंश में, भजनकार हमें सिखाते हैं कि हमें भोजन की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है (पार्क युन-सन)। पहाड़ी उपदेश में—खासकर मत्ती 6:30b–33 में—यीशु हमसे कहते हैं: "...हे कम विश्वास रखने वालों, चिंता न करो और न कहो, 'हम क्या खाएँगे?' या 'हम क्या पिएँगे?' या 'हम क्या पहनेंगे?' क्योंकि अन्यजाति इन सब चीज़ों की खोज में रहते हैं, और तुम्हारे स्वर्गीय पिता जानते हैं कि तुम्हें इन सबकी ज़रूरत है। लेकिन पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, और ये

सब चीज़ें तुम्हें मिल जाएँगी।" क्या खाएँ, पिएँ या पहनें, इसकी चिंता करने से समस्या हल नहीं होती; फिर भी, क्योंकि हमारा विश्वास कमज़ोर है, हम अक्सर अपनी आजीविका के बारे में वैसे ही परेशान होते हैं जैसे अविश्वासी होते हैं। यह बात न केवल व्यक्तियों और परिवारों पर, बल्कि एक समुदाय के रूप में चर्च पर भी लागू होती है। भजनकार का आज का संदेश यह है कि हमें चिंता नहीं करनी चाहिए। वह हमें भरोसा दिलाता है कि जैसे प्रभु कलीसिया—जो उनका शरीर है—को स्थापित करते हैं, वैसे ही वे उसकी सभी ज़रूरतों को पूरा करते हैं। जब हम विश्वास के ज़रिए इस सच्चाई का अनुभव करते हैं, तो परमेश्वर की स्तुति करना अच्छा और सुंदर होता है।

चौथी बात, प्रभु अपनी कलीसिया की रक्षा करते हैं।

भजन संहिता 147:13 को देखिए: "क्योंकि उसने तुम्हारे फाटकों की बेड़ियों को मज़बूत किया है; उसने तुम्हारे भीतर तुम्हारे बच्चों को आशीष दी है।" यह वचन बताता है कि जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, वह उनकी भूमि की सुरक्षित रक्षा करते हैं (पार्क युन-सन)। जब इसे कलीसिया पर लागू किया जाता है, तो प्रभु—जो कलीसिया के सिर हैं—उन संतों की सुरक्षित रक्षा करते हैं जो उन पर भरोसा करते हैं। जैसा कि हमने पहले भजन संहिता 146:9 पर मनन किया था, हमने सीखा कि परमेश्वर ही वह है जो "परदेशी की रक्षा करता है।" इसके अलावा, भजन संहिता 145:20 हमें बताती है कि परमेश्वर "उन सभी की रक्षा करता है जो उससे प्रेम करते हैं।" परमेश्वर, जो इस प्रकार परदेशी और उन सभी की रक्षा करता है जो उससे प्रेम करते हैं, कलीसिया से भी प्रेम करता है और उसकी रक्षा करता है—जिसे उसने अपने एकलौते पुत्र, यीशु के लहू से मोल लिया था। नतीजतन, कलीसिया परमेश्वर की सुरक्षा के कारण "शांति" का आनंद लेती है (147:14)। और जो कलीसिया ऐसी शांति का आनंद लेती है, उसे परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। यह परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा और सुंदर है।

अंत में, पांचवीं बात यह है कि प्रभु अपना वचन भेजकर कलीसिया का निर्माण करते हैं।

भजन संहिता 147:18–19 को देखिए: "वह अपना वचन भेजता है और उन्हें पिघला देता है; वह अपनी हवा चलाता है और पानी बहने लगता है। वह याकूब को अपना वचन, और इस्राएल को अपनी विधियां और अपने

न्याय बताता है।" परमेश्वर ही वह है जो न केवल हमें अपना वचन भेजता है, बल्कि उस वचन को हम पर प्रकट भी करता है। दूसरे शब्दों में, प्रभु हमसे—कलीसिया से—बात करते हैं और उस वचन का अर्थ प्रकट करते हैं। इस प्रकार, मत्ती 16 में, पतरस यह स्वीकार कर पाया कि "तू मसीह है, जीवित परमेश्वर का पुत्र" (पद 16), जब यीशु ने पूछा, "तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?" (पद 15), और यह परमेश्वर के प्रकाशन के कारण हुआ (पद 17)। जब परमेश्वर के वचन के इस प्रकाशन के माध्यम से विश्वास की सच्ची स्वीकारोक्ति की जाती है, तो कलीसिया चट्टान पर मज़बूती से खड़ी होती है। प्रभु सक्रिय रूप से कलीसिया—जो उनका शरीर है—को इतनी मज़बूती से स्थापित करने का कार्य कर रहे हैं। इसलिए, हमारे लिए परमेश्वर की स्तुति करना सही है; यह उनकी दृष्टि में अच्छा है। परमेश्वर की स्तुति करना हमारे लिए अच्छा, सुंदर और उचित है (भजन संहिता 147:1)। इसका कारण यह है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं और हमसे प्रसन्न होते हैं, और इस प्रकार वे हमारी कलीसिया का निर्माण कर रहे हैं (पद 2)। प्रभु कलीसिया का निर्माण कैसे करते हैं? पहला, वे बिखरे हुए लोगों को इकट्ठा करके और टूटे हुए दिलों को चंगा करके कलीसिया का निर्माण करते हैं (पद 2-3)। दूसरा, वे दीन-हीन लोगों को सहारा देकर कलीसिया का निर्माण करते हैं (पद 6)। तीसरा, वे हमारी ज़रूरतों को पूरा करके कलीसिया का निर्माण करते हैं (पद 8-9)। चौथा, वे अपनी कलीसिया की रक्षा करते हैं (पद 13)। अंत में, वे अपना वचन भेजकर कलीसिया का निर्माण करते हैं (पद 18-19)। इसलिए, हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। परमेश्वर की स्तुति करना अच्छा और सुंदर है।

परमेश्वर की स्तुति हो!

"प्रभु की स्तुति करो। हमारे परमेश्वर के गीत गाना कितना अच्छा है, उनकी स्तुति करना कितना सुखद और उचित है!" (भजन संहिता 147:1)।

आज सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान, हमने भजन 204, "ब्लेस्ड एश्योरेंस" (कोरियाई शीर्षक: "यीशु मेरा उद्धारकर्ता है") गाया। जब मैं कोरस गा रहा था, तो अंग्रेज़ी वाक्यांश "यह मेरी कहानी है..." ने मेरा ध्यान खींचा और मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया। "मेरी कहानी"—पिछले पचास वर्षों में मेरे जीवन की गवाही क्या है? विशेष रूप से, जैसे-जैसे हम विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च की 25वीं वर्षगांठ के करीब पहुँच रहे हैं, मैंने इन पच्चीस वर्षों में चर्च की कहानी पर विचार किया। इस उम्मीद के साथ कि हमारी 25वीं वर्षगांठ की सेवा प्रभु की महान स्तुति का समय होगी—जो विश्वासयोग्य, दयालु, करुणामयी, सहानुभूतिपूर्ण, क्षमाशील और अनुशासित करने वाले भी हैं—मैंने प्रार्थना सभा के दौरान भजन संहिता 147:1–3 से संदेश दिया। यह देखते हुए कि भजनकार परमेश्वर की स्तुति को अच्छा, सुखद और उचित बताते हैं, मैं उन तीन कारणों पर विचार करना चाहूँगा कि ऐसा क्यों है, और उसके बाद 25वीं वर्षगांठ से आगे बढ़ते हुए हमारे लिए प्रभु की इच्छा के तीन पहलुओं पर विचार करूँगा।

पहला, परमेश्वर की स्तुति करना अच्छा है क्योंकि वह ऐसे परमेश्वर हैं जो निर्माण करते हैं।

भजन संहिता 147:2 को देखें: "प्रभु यरूशलेम का निर्माण करते हैं..." पिछले साल के अंत से, हमारा चर्च रविवार की आराधना सेवाओं के दौरान नहेमायाह की पुस्तक पर मनन कर रहा है। जब हम नहेमायाह की पुस्तक पर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं कि परमेश्वर ने यरूशलेम की दीवारों को बनाने के लिए नहेमायाह और इस्राएल के लोगों का उपयोग किया। फिर भी, नहेमायाह ने स्वीकार किया कि यह पुनर्निर्माण केवल

उनके या लोगों के प्रयासों से नहीं, बल्कि "मुझ पर मेरे परमेश्वर के दयालु हाथ" के माध्यम से हुआ था (नहेमायाह 2:8, 18)। इसी तरह, हम, विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के परिवार को यह स्वीकार करना चाहिए कि हमारा चर्च उनके दयालु हाथ की मदद से बनाया जा रहा है। हमें मत्ती 16:18 में पाए गए वादे के विश्वासयोग्य पूरा होने का अनुभव करना चाहिए—जहाँ प्रभु ने अपने चर्च, मसीह की देह, को बनाने का वचन दिया था। इसलिए, हमें परमेश्वर की भलाई का अनुभव करना चाहिए और उनकी स्तुति करनी चाहिए। ऐसी स्तुति के ज़रिए और परमेश्वर की भलाई की कृपा से शक्ति पाकर, हमें उस अच्छे काम में हिस्सा लेना चाहिए जिसे परमेश्वर पूरा कर रहे हैं। जब प्रभु कलीसिया का निर्माण करते हैं, तो वे हमारे जीवन को तोड़कर—हमारी कमियों को उजागर करके—शुरुआत करते हैं ताकि हम सचमुच बन सकें; इस प्रक्रिया में, हमें एक-दूसरे को बनाने की सेवा करने के लिए बुलाया गया है। खासकर 25वीं सालगिरह की सेवा के बाद, हमें प्रभु के इस काम में एक मन होकर जुड़ना चाहिए, और टूटे हुए लोगों, टूटे हुए परिवारों और टूटी हुई कलीसिया को फिर से बनाने और जोड़ने की अपनी-अपनी ज़िम्मेदारियों को ईमानदारी से पूरा करना चाहिए। हम खुद को बनाए बिना अपने परिवारों को नहीं बना सकते, और न ही अपने परिवारों को बनाए बिना प्रभु की कलीसिया को बना सकते हैं। आखिरकार, जैसा कि प्रभु ने मत्ती 16:18 में वादा किया था, वही कलीसिया का निर्माण करते हैं; जब हम इसके ज़रिए परमेश्वर की भलाई का अनुभव करते हैं, तो हमें उनकी स्तुति करनी चाहिए। दूसरी बात, परमेश्वर की स्तुति करना बहुत सुंदर है क्योंकि वे बिखरे हुए लोगों को इकट्ठा करते हैं।

भजन संहिता 147:2 को देखिए: "...वह इस्राएल के निकाले हुओं को इकट्ठा करता है।" बाइबल में ऐसी घटनाएँ बताई गई हैं जब परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को तब बिखेर दिया था जब वे पाप करने के बाद पछताने में नाकाम रहे। उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 4:27–30 में बताया गया है कि कैसे परमेश्वर ने उनके पापों की सज़ा के तौर पर उन्हें अलग-अलग देशों में बिखेर दिया, और बस कुछ ही लोग बचे। फिर भी, अपने दुख और तकलीफ़ के बीच, इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर को पुकारा और उनसे मुलाकात की। आखिरकार, परमेश्वर उन्हें अपने पास वापस ले आए और उन्हें अपने वचन का पालन करने के लिए प्रेरित किया। परमेश्वर के काम का यह तरीका आज भी जारी है। जब हम—कलीसिया, यानी परमेश्वर के लोग—पाप करते हैं और पछताते नहीं हैं, तो परमेश्वर हमें बिखेर देते हैं। जब परमेश्वर पाप के कारण कलीसिया को बिखेर देते हैं, तो बस कुछ ही लोग बचते हैं। हैरानी की बात है कि ऐसे दुख और दर्द के बीच भी हम अक्सर परमेश्वर से प्रार्थना नहीं करते। यहाँ तक कि जब कलीसिया दुनिया के लिए रोशनी बनने में नाकाम रहती

है—और इसके बजाय परमेश्वर की महिमा को छिपाती है, उनके पवित्र नाम को बदनाम करती है और दुनिया के मज़ाक का पात्र बनती है—तब भी हम अपने दर्द, ज़ख्मों और तकलीफ़ों के बावजूद उन्हें नहीं पुकारते। नतीजतन, हम परमेश्वर से मिल नहीं पाते; न तो हम उनके पास लौटते हैं और न ही उनके वचन पर ध्यान देते हैं। तो फिर, हमारी ज़िम्मेदारी क्या है? हमें प्रभु के उस काम में हिस्सा लेना चाहिए जिसमें वे अपने बिखरे हुए लोगों को इकट्ठा करते हैं। बहुत सारे ईसाई भटक रहे हैं; उन्होंने चर्च छोड़ दिया है और बिखर गए हैं—चाहे चर्च के अंदर उन्हें जो भी चोटें या दुख मिले हों, उनकी वजह कुछ भी रही हो। परमेश्वर, जो उन्हें फिर से इकट्ठा करना चाहते हैं, वे हमारा भी इस्तेमाल करना चाहते हैं। इसलिए, परमेश्वर की बिखेरने और इकट्ठा करने की योजना की सुंदरता को समझते हुए, हमें पूरे दिल से खुशी-खुशी परमेश्वर के बिखरे हुए लोगों को इकट्ठा करने के काम में खुद को लगाना चाहिए। साथ ही, परमेश्वर की सुंदरता को देखते हुए, हमें उनकी स्तुति करनी चाहिए।

आखिरकार, परमेश्वर की स्तुति करने का तीसरा कारण यह है कि वही घावों को भरते और पट्टी बांधते हैं।

भजन संहिता 147:3 पर विचार करें: "वह टूटे हुए दिलों को चंगा करता है और उनके घावों पर पट्टी बांधता है।" यहाँ परमेश्वर की चंगा करने की सेवा को देखते हुए, हम पाते हैं कि वे सबसे पहले टूटे हुए दिलों—यानी अंदर से टूटे हुए इंसान—को चंगा करते हैं। उसके बाद ही वे बाहरी घावों को भरते हैं। परमेश्वर के चंगा करने का यह तरीका कितना अद्भुत है! फिर भी, इससे भी ज़्यादा खास बात यह है कि हमारे स्वर्गीय पिता ही सच्चे "घाव सहकर चंगा करने वाले" (Wounded Healer) हैं (यह विचार हेनरी नूवेन ने मशहूर किया था)। यह प्रभु ही हैं—जो स्वर्ग में भी क्रूस के घाव लिए हुए हैं—जो हमारे घावों को भरते और उन पर पट्टी बांधते हैं। फिर भी, हम अक्सर परमेश्वर—उस 'घाव सहकर चंगा करने वाले'—के स्पर्श को ठुकरा देते हैं, जो हमें चंगा करना और हमारे घावों को भरना चाहते हैं। होशे के समय में, इज़राइल के लोगों ने कम से कम उस परमेश्वर से, जो घाव देता और भरता है, कहा था, "आओ, हम... लौट चलें" (होशे 6:1); इसके उलट, हम अक्सर परमेश्वर से और दूर भागते जाते हैं। इसका एक कारण यह सोच हो सकती है कि परमेश्वर ने ही हमें ये घाव दिए हैं। बेशक, हम शायद हमेशा इसे ज़ोर से न कहें। हम अक्सर खुद में योना की झलक देखते हैं—

नाराज़गी में परमेश्वर से मुँह मोड़ लेना और उन्हें पीछे छोड़ देना, क्योंकि हम सवाल करते हैं कि एक प्यार करने वाला परमेश्वर हमें दर्द और घाव क्यों सहने देता है। फिर भी, हम एक ज़रूरी सच्चाई को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। जब पिता परमेश्वर—जो 'घाव सहकर चंगा करने वाले' हैं—खड़े होकर देख रहे थे कि कैसे उनके एकलौते बेटे, यीशु, को पापियों ने घायल किया, तो अद्भुत सच्चाई यह है कि जब *हम* घायल होते हैं, तो वे सिर्फ़ खड़े होकर देखते नहीं रहते। परमेश्वर हमारे घावों को भरना और उन्हें ठीक करना चाहते हैं। इसलिए, जब हम उनके चंगा करने और बहाल करने के अद्भुत काम का अनुभव करते हैं, तो यह उचित है कि हम उनकी स्तुति करें।

हमें महान प्रभु की उनकी अपार कृपा के लिए भरपूर स्तुति करनी चाहिए (भजन संहिता 145:3, 7)। हमारे महान परमेश्वर की स्तुति करना अच्छा, सुंदर और सही है, क्योंकि वही हमें स्थापित करते हैं, बिखरे हुओं को इकट्ठा करते हैं, और हमारे टूटे-फूटे, घायल दिलों को चंगा करते और उन्हें ठीक करते हैं। परमेश्वर की स्तुति और आराधना करने के बाद, हमें प्रभु के इन तीन कामों में शामिल होना चाहिए: हमें स्थापित करना, बिखरे हुओं को इकट्ठा करना, और हमारे घावों को भरना और उन्हें ठीक करना। ऐसा करते हुए, हमें ईमानदारी से वह काम करना चाहिए जो उनकी नज़र में अच्छा, सुंदर और सही हो।

अपने परमेश्वर की स्तुति करना अच्छा है।

“यहोवा की स्तुति करो! क्योंकि हमारे परमेश्वर का गुणगान करना अच्छा है; उसकी स्तुति करना सुखद और उचित है” (भजन संहिता 147:1)।

बुधवार को शाम 6:00 बजे, मैंने शव-पेटिका बंद करने की प्रार्थना-सभा का संचालन किया। लगभग डेढ़ साल पहले, इसी जगह और इसी मंच के सामने, मैंने अपने प्रिय तीसरे चाचाजी, जो एक पादरी भी थे, के लिए शव-पेटिका बंद करने की सभा का संचालन किया था। सभा के बाद, जब मैंने शोक मनाने वालों को शोकाकुल परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते देखा, तो मैं विचारों में खो गया। परिवार और शोक मनाने वालों के बीच आंसुओं भरी गले मिलने की घटना को देखकर, मैंने उपदेशक 7:2 के इन शब्दों पर मनन किया: “...क्योंकि यही सब मनुष्यों का अंत है; और जीवित लोग इसे अपने दिल में उतारेंगे।” यह जानते हुए कि हमें भी एक दिन मृत्यु का सामना करना है, मैंने जीवितों में से एक के रूप में गहराई से सोचने के लिए समय निकाला। परिवार द्वारा शोक मनाने वालों का अभिवादन पूरा करने के बाद, हम मृतक की शव-पेटिका के सामने प्रार्थना करने के लिए आखिरी बार एक साथ हुए। बच्चों के रोने की आवाज़ सुनाई देती रही। मेरा दिल बहुत दुखी हुआ। यह एक ऐसा क्षण था जिसने एक बार फिर इस बात की पुष्टि की कि यीशु ही इस पृथ्वी पर एकमात्र आशा हैं।

चूंकि बुधवार की प्रार्थना सभा शव-पेटिका बंद करने की सभा के ठीक बाद निर्धारित थी, इसलिए मैं शोकाकुल परिवार के साथ भोजन करने के बजाय चर्च लौट आया। परमेश्वर की स्तुति करते हुए, मैंने भजन “आई लव यू, माई जीसस” (हे यीशु, मैं आपसे प्रेम करता हूँ) गाया। मैंने इसे इसलिए गाया क्योंकि मैं यीशु के प्रति अपने प्रेम को स्वीकार करना चाहता था—गीत के माध्यम से प्रभु के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करना

चाहता था, जो मेरी सच्ची आशा, आनंद और जीवन हैं। इसी बीच, जब मैंने भजन संहिता 147 से परमेश्वर के वचन का प्रचार करना शुरू किया, तो मैं पहली ही आयत पर रुक गया: "हल्लेलूयाह! क्योंकि हमारे परमेश्वर का गुणगान करना अच्छा है; उसकी स्तुति करना सुखद और उचित है।" हालाँकि मैंने पूरे उपदेश की तैयारी कर ली थी—शुरू से लेकर आखिरी आयत (आयत 20) तक उस हिस्से पर मनन किया था—लेकिन आखिर में मैं सिर्फ़ पहली आयत पर ही रुका रहा। मुझे उस एक आयत में ही इतनी गहरी कृपा मिली, और उसने मेरी आत्मा को भरपूर एहसास से भर दिया। इसलिए, मैंने अपना ध्यान पहली आयत पर केंद्रित किया और उसे तीन अलग-अलग नज़रियों से समझा।

पहली बात, हमारे परमेश्वर की स्तुति करना अच्छा है।

हमारे परमेश्वर अच्छे हैं। जो विश्वासियों ने चखा और देखा है कि प्रभु अच्छे हैं (भजन संहिता 34:8), वे उनकी स्तुति किए बिना नहीं रह सकते। खासकर वे लोग जिन्होंने परमेश्वर के अच्छे कामों का अनुभव किया है—जिसके तहत "जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसकी योजना के अनुसार बुलाए गए हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं" (रोमियों 8:28)—वे उसकी भलाई की स्तुति करने के लिए प्रेरित होते हैं। इसीलिए हम "भले परमेश्वर" की स्तुति के गीत गाते हैं। यहाँ तक कि जब हम किसी प्रियजन की मृत्यु से होने वाले दुख को देखते हैं, तब भी हम प्रभु के कारण परमेश्वर की भलाई की स्तुति कर सकते हैं, क्योंकि वही हमारी आशा है। हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि हमें भरोसा है कि अपनी सर्वोच्च इच्छा और योजना के अनुसार, परमेश्वर इन घटनाओं के ज़रिए भी अपनी भलाई ज़ाहिर करेंगे। हमें पक्का यकीन है कि भला परमेश्वर हमारे दुख को खुशी में बदल देगा। इसलिए, आज भी, मैं परमेश्वर की भलाई की स्तुति करता हूँ। दूसरी बात, हमारे परमेश्वर की स्तुति करना सुंदर है।

एक दिन, अंतिम संस्कार में शामिल होकर घर लौटते समय, मेरी पत्नी ने कहा, "मैंने इंसान की महिमा देखी।" उसकी यह बात सुनकर—और इसकी तुलना उस समय से करते हुए जब उसने मेरे तीसरे चाचा, स्वर्गीय रेवरेंड किम चांग-ह्युक के अंतिम संस्कार में परमेश्वर की महिमा देखी थी—मुझे लगा कि उसकी बातों में बहुत सच्चाई थी। जब कोई परमेश्वर की महिमा के लिए जीता और मरता है, तो प्रभु में वह मृत्यु सचमुच सुंदर होती है। जब हम ऐसी सुंदर मृत्यु के अंतिम संस्कार के ज़रिए परमेश्वर की महिमा को देखते हैं, तो हम प्रभु

की महानता और बड़प्पन की स्तुति किए बिना नहीं रह सकते (भजन 40)। जब हम एक सुंदर मृत्यु के ज़रिए परमेश्वर की सुंदरता को देखते हैं, तो हम उनकी स्तुति करने के लिए प्रेरित होते हैं। हमारे परमेश्वर सुंदर हैं। जो विश्वासी आत्मिक आँखों से उस दिव्य सुंदरता को देखते हैं, वे परमेश्वर की स्तुति करते हैं। मुझे भजन संहिता 27:4 याद आती है: "मैंने प्रभु से एक ही बात माँगी है, और उसी की खोज करूँगा: कि मैं अपने जीवन के सभी दिनों तक प्रभु के घर में रहूँ, प्रभु की सुंदरता को देखूँ और उनके मंदिर में उनसे विनती करूँ।" मेरी इच्छा है कि मैं उनके घर में उनकी सुंदरता को देखते हुए हमेशा परमेश्वर की स्तुति करूँ।

तीसरी बात, हमारे परमेश्वर की स्तुति करना उचित है।

हमारे परमेश्वर स्तुति के योग्य हैं। जो विश्वासी उनकी भलाई और सुंदरता का अनुभव करते हैं, वे स्वाभाविक रूप से उनकी स्तुति करते हैं। चाहे हमारी परिस्थितियाँ कितनी भी दर्दनाक या कठिन क्यों न हों, जो लोग भले और सुंदर परमेश्वर में विश्वास करते हैं, वे उनकी स्तुति करेंगे। इसका कारण यह है कि विश्वासी जानते हैं कि चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ हों, परमेश्वर की स्तुति करना उचित है। प्रेरितों के काम अध्याय 16 में पौलुस और सीलास के साथ ऐसा ही हुआ था; जेल में होने के बावजूद, उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की और उनकी स्तुति में गीत गाए (पद 25)। स्तुति परिस्थितियों से प्रभावित नहीं होती; बल्कि, वह उनसे ऊपर उठकर परमेश्वर तक पहुँचती है। इसलिए, हम केवल विश्वास के द्वारा ही परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं। हम विश्वास से उनकी स्तुति करते हैं क्योंकि हम समझते हैं कि ऐसा करना सही और उचित है।

मुझे आज भी याद है जब मैं अपने दादाजी से मिलने गया था, जो कैंसर से पीड़ित थे। वे बिस्तर पर लेटने की स्थिति से उठकर बैठ गए और मुझसे भजन नंबर 82 गाने के लिए कहा। मुझे याद है कि मैंने ये शब्द गाए थे: (पद 1) "हे प्रभु, तू ही मेरी खुशी, मेरी आशा और मेरा जीवन है; भले ही मैं दिन-रात तेरी स्तुति करूँ, फिर भी मैं हमेशा तेरी और अधिक स्तुति करने की इच्छा रखता हूँ।" (पद 4) "यीशु, जिसे मैं सचमुच बहुत प्यार करता हूँ—तेरी आवाज़ कितनी सुखद है; तू ही मेरा जीवन और मेरी सच्ची आशा है।" मैं यीशु की स्तुति करता हूँ, जो मेरी खुशी, मेरा जीवन और मेरी सच्ची आशा हैं। मेरी इच्छा है कि मैं अपनी आखिरी साँस तक प्रभु की महानता और महिमा की स्तुति करूँ। मेरी इच्छा है कि मैं अपनी मृत्यु के क्षण तक परमेश्वर के अपार प्रेम की स्तुति करूँ। इसका कारण यह है कि उनकी स्तुति करना अच्छा, सुंदर और उचित है।

स्वर्ग और पृथ्वी की सभी चीज़ें, परमेश्वर की स्तुति करें!

[भजन संहिता 148]

पिछले हफ़्ते बुधवार की प्रार्थना सभा में, भजन संहिता 147 पर ध्यान देते हुए, हमने सीखा कि चूँकि प्रभु अपनी कलीसिया—जो उनका शरीर है—को बना रहे हैं, इसलिए हमारे लिए परमेश्वर की स्तुति करना अच्छा, सुंदर और उचित है (पद 1)। सच्ची कलीसिया की स्थापना में—जो ऐसे संतों से बनी है जो परमेश्वर का भय मानते हैं और उनकी दया पर भरोसा रखते हैं—प्रभु इसे इस तरह बनाते हैं: (1) बिखरे हुए लोगों को इकट्ठा करके और टूटे हुए दिलों को चंगा करके; (2) दीन-हीन लोगों को सहारा देकर; (3) हमारी ज़रूरतों को पूरा करके; (4) हमारी रक्षा करके; और (5) अपना वचन हमें भेजकर और प्रकट करके। इसलिए, हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए; हमने सीखा कि यह अच्छा, सुंदर और उचित है।

आज भजन संहिता 148 के पद 1 और 7 को देखें तो शास्त्र कहता है: "स्वर्ग से यहोवा की स्तुति करो..." (पद 1) और "...पृथ्वी से यहोवा की स्तुति करो" (पद 2)। भजनकार घोषणा करता है कि स्वर्ग और पृथ्वी की हर चीज़ को परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। यहाँ, "स्वर्ग की सभी चीज़ों" (पद 1–6) का अर्थ है "उनके सभी स्वर्गदूत" और "उनकी सभी सेनाएँ" (पद 2)। दूसरे शब्दों में, भजनकार कह रहा है कि स्वर्ग के सभी स्वर्गदूतों को परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। स्वर्गदूतों के अलावा, भजनकार कहता है कि न केवल "सूर्य और चंद्रमा" और "चमकते तारे" परमेश्वर की स्तुति करें (पद 3), बल्कि "सबसे ऊँचे स्वर्ग" और "स्वर्ग के ऊपर का जल" भी उनकी स्तुति करें (पद 4)। यहाँ, "सबसे ऊँचे स्वर्ग" का अर्थ है सबसे ऊँचा स्वर्गीय स्थान, और "स्वर्ग के ऊपर का जल" का अर्थ है बादलों में मौजूद जल (पार्क युन-सन)। संक्षेप में, भजनकार स्वर्ग की सभी चीज़ों से—चाहे वह स्वयं स्वर्ग का स्थान हो या वह आकाश जहाँ बादल तैरते हैं—परमेश्वर की स्तुति करने का आह्वान कर रहा है। हम आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि स्वर्ग में स्वर्गदूत परमेश्वर की स्तुति

कर रहे हैं। बेशक, यहाँ जिन स्वर्गदूतों का ज़िक्र है, वे गिरे हुए स्वर्गदूत—शैतान और उसकी सेना—नहीं हैं। हालाँकि उन्हें भी परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए, लेकिन वे उनका विरोध करते हैं और ऐसा कभी नहीं करेंगे। पद 2 में बताए गए "उनके सभी स्वर्गदूत" और "उनकी सभी सेनाएँ" उन निष्पाप स्वर्गदूतों की ओर इशारा करते हैं जो परमेश्वर की स्तुति करते हैं। जब मैं इन निष्पाप स्वर्गदूतों को परमेश्वर की स्तुति में पूरी तरह लीन देखता हूँ, और फिर सोचता हूँ कि जिस दिन यीशु वापस आएँगे, हम भी उनके जैसे हो जाएँगे—शानदार, निष्पाप, आध्यात्मिक शरीरों से सुसज्जित होकर पवित्र परमेश्वर की स्तुति करेंगे—तो मैं बहुत उत्सुकता और उम्मीद से भर जाता हूँ। मैं उस दिन के आने की प्रार्थना करता हूँ, उसकी आशा करता हूँ और उसका इंतज़ार करता हूँ। हालाँकि, हमारे लिए यह कल्पना करना मुश्किल है कि सूरज, चाँद और चमकते तारे—साथ ही सबसे ऊँचे स्वर्ग और उनके ऊपर का पानी (बादलों में मौजूद पानी)—कैसे परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं। यह सच है कि परमेश्वर की रचनाएँ होने के नाते उन्हें अपने रचनाकार की स्तुति करनी चाहिए, लेकिन यह तुरंत स्पष्ट नहीं होता कि ऐसी चीज़ें असल में स्तुति कैसे कर सकती हैं। फिर भी, डॉ. पार्क युन-सन की व्याख्या पर विचार करने पर मुझे एहसास हुआ कि सूरज, चाँद और तारों का अपने मौजूदा रूप में अस्तित्व में होना ही उस रचनाकार परमेश्वर की स्तुति है जिसने उन्हें बनाया है। बेशक, यह उस मौखिक स्तुति से अलग है जिसकी हम आम तौर पर कल्पना करते हैं। जबकि हम आम तौर पर मुँह खोलकर और अपनी आवाज़ का इस्तेमाल करके—अक्सर पियानो और अन्य वाद्ययंत्रों के साथ—परमेश्वर की स्तुति करते हैं, सूरज, चाँद और तारे जैसे खगोलीय पिंड उस तरह से स्तुति नहीं कर सकते जैसे हम करते हैं। फिर भी, हम समझदार इंसानों के विपरीत, वे सचमुच परमेश्वर की स्तुति करते हैं। इस नज़रिए से देखने पर, सूरज, चाँद और तारों द्वारा परमेश्वर की स्तुति करने का विचार समझना आसान हो जाता है। मुख्य बात यह नहीं है कि वे *कैसे* स्तुति करते हैं, बल्कि यह है कि स्वर्ग में मौजूद हर चीज़ को परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। ऐसा क्यों है? इसका कारण क्या है? आज के पाठ के पद 5 और 6 को देखें: "वे प्रभु के नाम की स्तुति करें, क्योंकि उसके आदेश से ही उनकी रचना हुई थी। उसने उन्हें हमेशा-हमेशा के लिए स्थापित किया—एक ऐसा नियम जो कभी नहीं बदलेगा।" स्वर्ग में मौजूद हर चीज़ का परमेश्वर की स्तुति करने का कारण यह है कि उसने उन सभी को अपने आदेश से बनाया है। दूसरे शब्दों में, चूँकि परमेश्वर ने बोलकर स्वर्ग की सभी चीज़ों—स्वर्गदूतों, सूरज, चाँद, तारों और अन्य चीज़ों—की रचना की और उन्हें उनकी जगहों पर हमेशा के लिए स्थापित किया, इसलिए वे उसकी स्तुति करने के लिए बाध्य हैं। भजनकार कहते हैं कि न केवल स्वर्ग

में मौजूद हर चीज़ को परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए, बल्कि पृथ्वी पर मौजूद हर चीज़ को भी ऐसा ही करना चाहिए (पद 7–14)। वह पूरी सृष्टि से परमेश्वर की स्तुति करने का आग्रह करते हैं: "समुद्र के बड़े जीव और गहरे जल" (पद 7); "आग और ओले, बर्फ और कोहरा" और "तूफानी हवाएँ" (पद 8); "पहाड़ और सभी पहाड़ियाँ, फलदार पेड़ और देवदार के पेड़" (पद 9); और "जंगली जानवर और पालतू पशु, रेंगने वाले जीव और उड़ने वाले पक्षी" (पद 10)। वह "पृथ्वी के राजा और सभी लोग, राजकुमार और पृथ्वी के सभी न्यायाधीश" (पद 11), और साथ ही "जवान पुरुष और युवतियाँ, वृद्ध और बच्चे" (पद 12) से परमेश्वर की स्तुति करने का आग्रह करते हैं। यह अंश पृथ्वी पर मौजूद सभी प्राणियों—इंसानों और प्रकृति की सभी चीज़ों—को परमेश्वर की स्तुति करने के लिए बुलाता है। जिस तरह स्वर्ग में सूरज, चाँद और तारे अपने अस्तित्व से ही परमेश्वर की स्तुति करते हैं, वही बात पृथ्वी की सभी प्राकृतिक चीज़ों पर भी लागू होती है। उनका अस्तित्व—जो परमेश्वर के अधिकार में रचा गया है और इस पृथ्वी पर है—रचने वाले की शक्ति की महानता को दिखाता है और इस तरह परमेश्वर की स्तुति करता है (पार्क युन-सन)। इसके अलावा, भजनकार का पृथ्वी के सभी लोगों से परमेश्वर की स्तुति करने का आग्रह एक तरह की फटकार भी है: अगर बेजान चीज़ें भी अपने तरीके से परमेश्वर की स्तुति करती हैं, तो हमें इंसानों को उनकी स्तुति और कितनी ज़्यादा करनी चाहिए? (पार्क युन-सन)। इसीलिए वह सभी को परमेश्वर की स्तुति करने के लिए बुलाते हैं। चाहे वे विश्वासी हों जो यीशु पर भरोसा करते हैं या अविश्वासी जो नहीं करते, सभी को परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए (पार्क युन-सन)। खास तौर पर, भजनकार परमेश्वर के चुने हुए लोगों—"संतों" जो उनके करीब हैं—को परमेश्वर की स्तुति करने के लिए बुलाते हैं (पद 14)। इसका कारण क्या है? इसका कारण यह है कि "उन्होंने अपने लोगों की शक्ति को बढ़ाया है" (पद 14)। दूसरे शब्दों में, क्योंकि परमेश्वर ने सभी संतों को बचाया है, इसलिए उनके लिए उनकी स्तुति करना उचित है। हम वे संत हैं जिन्हें परमेश्वर ने बचाया है। हम परमेश्वर के लोग और उनकी संतान हैं, जिनका उनके साथ गहरा रिश्ता है। हम परमेश्वर के लोग हैं, जो मसीह यीशु में नई सृष्टि बन गए हैं। इसलिए, परमेश्वर की संतान होने के नाते, जिन्हें उद्धार मिला है, हमारे लिए यह उचित है कि हम अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर की स्तुति करें।

भजनकार हमें प्रोत्साहित करते हैं: "वे प्रभु के नाम की स्तुति करें, क्योंकि केवल उसी का नाम महान है; उसकी महिमा पृथ्वी और आकाश से भी ऊपर है" (पद 13)। स्वर्ग और पृथ्वी की सभी चीज़ों को परमेश्वर के

नाम की स्तुति करनी चाहिए। क्यों? क्योंकि केवल परमेश्वर का नाम ही महान है, और उसकी महिमा स्वर्ग और पृथ्वी की हर चीज़ से बढ़कर है। आइए हम सब प्रभु की महानता की स्तुति करें (भजन 40)।

परमेश्वर जो नम्र लोगों को उद्धार से सुंदर बनाते हैं

[भजन संहिता 149]

आप जीवन को कैसे देखते हैं? मेरा मानना है कि "जीवन सुंदर है।" इसीलिए, दिसंबर 2007 में, मैंने "जीवन सुंदर है" शीर्षक के तहत ये शब्द लिखे थे:

"जीवन सुंदर है—दुखों के बीच भी जीवन सुंदर है।

जीवन सुंदर है—जीवन सुंदर है क्योंकि प्रार्थना के आँसू हैं।

जीवन सुंदर है—जीवन सुंदर है क्योंकि परिवार है, प्यार का समुदाय है।

जीवन सुंदर है—जीवन सुंदर है क्योंकि बहाली और बदलाव है।

जीवन सुंदर है—जीवन सुंदर है क्योंकि हम अपने भीतर यीशु की छवि देख सकते हैं।

जीवन सुंदर है—जीवन सुंदर है क्योंकि हम परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करते हैं।

जीवन सुंदर है—जीवन सुंदर है क्योंकि परमेश्वर की महिमा प्रकट होती है।"

मुझे ये शब्द भजन संहिता 149:4 के इस वचन के कारण याद आए: "क्योंकि प्रभु अपने लोगों से प्रसन्न होते हैं; वह नम्र लोगों को उद्धार से सुंदर बनाते हैं।" भजनकार घोषणा करता है कि परमेश्वर नम्र लोगों को उद्धार से सुंदर बनाएंगे। हालाँकि कोरियाई अनुवाद वर्तमान काल में लग सकता है, लेकिन अंग्रेजी संस्करण भविष्य की घटना की ओर इशारा करते हैं—कि परमेश्वर नम्र लोगों को उद्धार से सुंदर *बनाएंगे*। दूसरे शब्दों में, यह वचन अंत के समय से संबंधित है; यह उस उद्धार की ओर इशारा करता है जो अंत के समय में संतों को मिलेगा। अंत के समय में हमारी प्रतीक्षा कर रहे इस उद्धार के संबंध में, परमेश्वर अंततः अपने संतों को विजय

प्रदान करेंगे (वचन 6–9; पार्क युन-सन)। यह विजय वह "महिमा" है जो परमेश्वर अपने संतों को प्रदान करते हैं (वचन 9)। तो फिर, परमेश्वर हमें, अपने संतों को, यह महिमा और विजय कैसे प्रदान करते हैं? कृपया आज के पाठ के वचन 6 से लेकर वचन 9 के पहले भाग तक देखें: "उनके मुँह में परमेश्वर की ऊँची स्तुति हो और उनके हाथों में दोधारी तलवार हो, ताकि वे राष्ट्रों से बदला ले सकें और लोगों को दंड दे सकें, उनके राजाओं को बेड़ियों से और उनके रईसों को लोहे की जंजीरों से बाँध सकें, और उनके विरुद्ध लिखे गए फैसले को पूरा कर सकें..." परमेश्वर हमें अपने मुँह से सम्मान और महिमा की ऊँची स्तुति करने में सक्षम बनाते हैं, और वह परमेश्वर के वचन—एक दोधारी तलवार—को हमारे हाथों में सौंपते हैं; इसके ज़रिए, वह देशों पर बदला लेकर और न्याय करके हमें जीत दिलाते हैं। हालाँकि, हमें इस हिस्से को सिर्फ़ अंत के समय में पूरी होने वाली भविष्यवाणी के तौर पर नहीं देखना चाहिए। इसकी वजह यह है कि परमेश्वर के उद्धार का यह सुंदर, भविष्य का काम—भले ही अभी पूरी तरह से पूरा नहीं हुआ है—आज हम विश्वासियों के जीवन में आंशिक रूप से पूरा हो रहा है। दूसरे शब्दों में, जबकि परमेश्वर यीशु के दूसरे आगमन के समय विनम्र लोगों—यानी इस धरती पर दुख सहने वाले संतों—को उद्धार से सजाएँगे, वह अभी भी हमें हमारे जीवन में आने वाली मुश्किलों और दुखों से बचाकर सुंदर बना रहे हैं। इसे दूसरे तरीके से कहें तो, हम आज इस धरती पर रहते हुए भी उस भविष्य के उद्धार की पूर्णता का अनुभव कर रहे हैं—कम से कम आंशिक रूप से—जो हमें सजाएगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि यीशु ने लगभग 2,000 साल पहले क्रूस पर अपनी मृत्यु और अपने पुनरुत्थान के ज़रिए उद्धार का काम पूरा किया था। हमें पहले ही उद्धार मिल चुका है। क्रूस पर यीशु की मृत्यु और उनके पुनरुत्थान में उनके साथ जुड़े होने के नाते, हमारे सभी पाप पहले ही माफ़ कर दिए गए हैं, और उनके पुनरुत्थान के ज़रिए हमें धर्मी घोषित किया गया है। इसलिए, हम यह कह सकते हैं: परमेश्वर ने हमें क्रूस पर यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ जोड़कर पहले ही सुंदर बना दिया है। परमेश्वर हमें ऐसी बचाने वाली कृपा से सुंदर क्यों बनाते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर, जिन्होंने हमें बनाया (पद 2), हममें—यानी अपने संतों में—खुशी पाते हैं (पद 4)।

जब हम इस धरती पर रहते हैं और परमेश्वर के उद्धार के काम से हमें सुंदर बनाने वाली इस कृपा का अनुभव करते हैं—कम से कम आंशिक रूप से—तो हमें अपने जीवन में उस कृपा के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए? दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने उद्धार के ज़रिए हमें पहले ही सुंदर बना दिया है और भविष्य में भी सुंदर

बनाएँगे; तो, हम—जो "पहले ही हो चुका है" और "अभी नहीं हुआ है" के बीच के तनाव में जी रहे संत हैं—परमेश्वर की नज़र में सुंदर जीवन कैसे जिएँ? संक्षेप में, हमें परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। हमें उस परमेश्वर की खुशी और आनंद के साथ स्तुति करनी चाहिए (पद 5) जो हममें खुशी पाते हैं और उद्धार के ज़रिए हमें सुंदर बनाते हैं। हमें उस परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए जो अपने संतों को महिमा देते हैं (पद 5, 9)। आयत 1, 2, 3 और 5 को देखिए: "हल्लेलूयाह! प्रभु के लिए एक नया गीत गाओ, और पवित्र लोगों की सभा में उसकी स्तुति करो" (आयत 1); "इस्राएल अपने बनाने वाले में आनन्दित हो; सिय्योन की सन्तान अपने राजा में खुश हो" (आयत 2); "वे नाचते हुए उसके नाम की स्तुति करें और डफ और वीणा के साथ उसके लिए संगीत बजाएँ" (आयत 3); "पवित्र लोग महिमा में आनन्दित हों और अपने बिस्तरों पर खुशी से गाएँ" (आयत 5)। जब हम उस अनुग्रह पर विचार करते हैं जिसके द्वारा परमेश्वर ने यीशु मसीह में उद्धार के माध्यम से हमें पहले ही सुंदर बना दिया है, तो हमें कृतज्ञता और आनन्दित हृदय से उसकी स्तुति करनी चाहिए। इसके अलावा, जैसे-जैसे हम परमेश्वर के बचाने वाले अनुग्रह का अनुभव करते हैं—जो हमें हमारे दैनिक जीवन में आध्यात्मिक युद्ध के दर्द और कठिनाइयों के बीच बचाता है और जीत दिलाता है—हमें एक नए गीत के साथ उसकी स्तुति करनी चाहिए। उससे भी आगे, उस शानदार उद्धार की आशा करते हुए जो परमेश्वर हमें यीशु की वापसी पर देगा—वह उद्धार जो हमें सुंदर बनाएगा—हमें विश्वास के साथ परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। हमें अपनी आखिरी सांस तक परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। परमेश्वर की स्तुति करना एक सुंदर बात है।

फरवरी 2008 के आसपास—दिसंबर 2007 में "जीवन सुंदर है" (Life is Beautiful) शीर्षक से एक लेख लिखने के लगभग दो महीने बाद—मैंने "मृत्यु भी सुंदर है" (Even Death is Beautiful) शीर्षक से एक लेख लिखा:

"मृत्यु भी सुंदर है; दुख के बीच भी, मृत्यु सुंदर है।
मृत्यु भी सुंदर है; यह सुंदर है क्योंकि इसमें प्यार के आँसू होते हैं।
मृत्यु भी सुंदर है; यह सुंदर है क्योंकि, एक पल के बिछड़ने में, हमेशा के लिए फिर से मिलने की एक जीवित आशा छिपी होती है।

मृत्यु भी सुंदर है; यह सुंदर है क्योंकि एक सुंदर जीवन जिया गया था।
मृत्यु भी सुंदर है; यह सुंदर है क्योंकि कोई यीशु की सुंदरता को देखता है।
मृत्यु भी सुंदर है; यह सुंदर है क्योंकि हम मिलकर प्रभु की महानता और बड़प्पन की स्तुति करते हैं।
मृत्यु भी सुंदर है; यह सुंदर है क्योंकि परमेश्वर की महान महिमा प्रकट होती है।"

हे भगवान, कृपया मुझे सुंदर बना दीजिए।

“क्योंकि प्रभु अपने लोगों से प्रसन्न होते हैं; वे नम्र लोगों को उद्धार से सुंदर बनाते हैं” (भजन संहिता 149:4)।

नए साल की सुबह—जब मुझे एक उम्मीद भरी नई शुरुआत का स्वागत करना चाहिए था—मैं भारी मन से जल्दी जाग गई। शारीरिक रूप से थकी होने के साथ-साथ, मेरी आत्मा भी बहुत थकी हुई महसूस हो रही थी; बेचैन और यह न समझ पाने के कारण कि क्या करूँ, मैं बिस्तर पर करवटें बदल रही थी। तभी, मेरे सबसे बड़े बेटे, डायलन ने मुझे बताया कि बच्चों के बाथरूम के कूड़ेदान में लगभग सौ चींटियाँ थीं। मैं झटके से बिस्तर से उठी, चींटी मारने वाली दवा ली और देखने गई, तो वहाँ केवल दस-बारह चींटियाँ ही मिलीं। मैंने दवा छिड़की, कूड़े को थैली में भरा और फेंक दिया। कूड़ेदान को धोकर उसकी जगह पर रखने के बाद, मैं फिर से लेट गई, लेकिन नींद नहीं आ रही थी; मन में तरह-तरह के विचार आ रहे थे। उन विचारों के बीच, मुझे अपने चर्च की क्वोन-सा-निम (एक वरिष्ठ डीकनेस) से मिलने की तीव्र इच्छा हुई, जो एक नर्सिंग होम में रह रही थीं। जब भी मेरा मन भारी और बोझिल होता था, तो इस प्यारी डीकनेस से मिलना—उनके सामने बैठकर "माई सोल हैज़ फ़ाउंड अ रेस्टिंग प्लेस" (भजन 495) गाना—आँसुओं के ज़रिए मेरे मन का बोझ हल्का कर देता था और मुझे प्रभु की शक्ति से नया अनुभव कराता था; इसलिए, मैंने अपने थके हुए शरीर को संभाला और नर्सिंग होम की ओर चल पड़ी। वहाँ पहुँचकर और उनके कमरे में घुसकर, मैं उन्हें ऑक्सीजन मास्क पहने और उनके होंठ बुरी तरह सूजे हुए देखकर हैरान रह गई। उनकी खराब सेहत को देखकर चिंतित होकर, मैंने फिलीपीना देखभाल करने वाली महिला से—जो कमरे में एक और बुजुर्ग महिला की मदद कर रही थी—उनकी हालत के बारे में पूछा; उसने कहा कि उसे पता नहीं है और सुझाव दिया कि मैं इंचार्ज नर्स से पूछूँ। जब मैंने उस प्यारी *ग्वोनसा-निम* (वरिष्ठ डीकनेस) को देखा, जिन्होंने इतनी

कठिनाइयाँ झेली थीं—और जो अब डिमेंशिया के कारण कुछ भी याद नहीं रख पाती थीं—तो मैं उन यादों के बारे में सोचने लगी जो तब से बनी थीं जब परमेश्वर उन्हें हमारे चर्च और मेरे जीवन में लाए थे। उनसे मिलने के दौरान कही गई दो खास बातें मुझे याद आईं: "स्यूंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च *हमारा* चर्च है," और "मैंने बहुत दुख सहा है।" स्यूंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च के लिए उनके गहरे प्यार को याद करके—एक ऐसा प्यार जो आज भी कायम है—मुझे भी चर्च से और ज़्यादा प्यार करने की प्रेरणा मिली। मुझे अपने गुज़र चुके दादा-दादी की भी याद आई; मुझे याद आया कि वे भी स्यूंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च से कितना प्यार करते थे और उन्होंने मुझे—अपने पोते और एक पादरी को—मरते समय एक आखिरी बात कही थी: "स्यूंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च की रक्षा करना।" इसके अलावा, उनकी ये बातें याद करके कि "मैंने बहुत दुख सहा है," मैंने खुद को चर्च की सेवा में और पूरी तरह से समर्पित करने का संकल्प लिया। इन ख्यालों के बीच, मुझे भजन संहिता 149:4 याद आया, जिस पर मैंने उस बुधवार सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान मनन किया था। मैंने मन ही मन प्रार्थना की, "हे परमेश्वर, कृपया मुझे सुंदर बना।" जब मैंने यह प्रार्थना की—परमेश्वर से अपने दिल का बोझ हटाने और मुझे सुंदर बनाने के लिए कहा—तो मैं उस प्यारी *ग्वोंसा-निम* (वरिष्ठ सेविका) को देखता रहा, जिन्हें डिमेंशिया की वजह से अब पुरानी बातें याद नहीं रहती थीं। प्यारी *ग्वोंसा-निम* पार्क, जिनसे परमेश्वर बहुत प्यार करते हैं: मुझे इस बात से सुकून मिला कि परमेश्वर आपको याद रखते हैं—और वह मुझ जैसे कमज़ोर इंसान को भी याद रखते हैं—भले ही आपको अपनी कोई बात याद न हो। वहाँ रहते हुए, मैंने कमरे में एक महिला देखभाल करने वाली को सुना—जो व्हीलचेयर पर बैठी बुजुर्ग कोरियाई महिला को खाना खिला रही थी—वह कोरियाई भाषा में कह रही थी, "दादी, इसे थूक दो, इसे थूक दो।" उन शब्दों को सुनकर मैंने सोचा कि *मुझे* अपने दिल से क्या थूकने या बाहर निकालने की ज़रूरत है। बाद में मुझे इंचार्ज नर्स से पता चला कि *ग्वोंसा-निम* पार्क के होंठ सूज गए थे क्योंकि गैस्ट्रिक ट्यूब से दिए जा रहे पोषक तत्व उन्हें बार-बार उल्टी के ज़रिए बाहर निकल रहे थे; इससे मेरे मन में यह इच्छा हुई कि मैं भी अपने दिल से उन विचारों को बाहर निकाल दूँ जो मुझे बुराई या लालच की ओर ले जा सकते हैं। मैंने परमेश्वर से सच्चे दिल से प्रार्थना की कि वह ऐसे सभी पापपूर्ण विचारों को दूर करने में मेरी मदद करें, मुझे बुराई से बचाएँ, मुझे छुटकारा दिलाएँ और अपनी नज़रों में मुझे सुंदर बनाएँ। इसी बीच, मुझे भजन संहिता 147:11 याद आया—कि परमेश्वर उन लोगों से खुश होते हैं जो उनका आदर करते हैं और जो उनकी दया पर भरोसा रखते हैं। मैं

परमेश्वर की दया पाने के लिए तरस रहा था। मैंने भगवान के सामने अपना दिल खोलकर रख दिया और इच्छा जताई कि नए साल में मैं उनकी दया और प्रेम को और ज़्यादा महसूस करूँ और उसी प्रेम के साथ अपने भाई-बहनों से प्यार करूँ। मैंने प्रार्थना की कि आने वाला साल प्यार और माफ़ी का साल हो।

प्यारी *ग्वोंसा-निम* पार्क से मिलने के बाद, मैं अपनी कार में बैठी और एक CD चलाई; उसमें गॉस्पेल गाना "होपिंग फॉर अनदर फ्रूट" (एक और फल की उम्मीद) बजने लगा। सबसे पहले मेरे कानों में "कीमती इंसान" (precious being) शब्द पड़े। भगवान की नज़र में मैं कितनी कीमती हूँ, इस सच्चाई से मुझे सुकून मिला और मैं विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च की ओर चल पड़ी। और अब, नए साल के इस पहले दिन, मैं विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च के पादरी के ऑफ़िस में हूँ—एक ऐसी जगह जिसे प्रभु बहुत प्यार करते हैं और जहाँ उन्होंने वादा किया था, "मैं अपना चर्च बनाऊँगा" (मत्ती 16:18)—यहाँ मैं भगवान के वचन पर मनन कर रही हूँ और ये विचार लिख रही हूँ। नए साल में, जब भी आप थक जाएँ और हिम्मत हारने लगें, या भारी मन के साथ अकेले खड़े हों, तो मेरी प्रार्थना है कि आप भगवान के वादों को याद रखें और "अपनी तकलीफ़ में सुकून" पाएँ (भजन संहिता 119:49-50)। प्रभु का वचन हम सभी को जीवन देगा। प्रभु हमें उम्मीद से भर देंगे। मेरी प्रार्थना है कि हम उस उम्मीद में खुशी मनाएँ और प्रभु की वापसी के लिए और भी ज़्यादा निष्ठा से तैयारी करें। जिस दिन वे फिर से आएँगे, वे हम सभी को बहुत सुंदर और तेजस्वी बना देंगे।

“जिस किसी में भी साँस है, वह प्रभु की स्तुति करे”

[भजन संहिता 150]

आज, मैं आखिरकार भजन संहिता 150 पर मनन करने आया हूँ, जो कि आखिरी भजन है। 21 सितंबर, 2005 को बुधवार के दिन भजन संहिता 1 पर मनन शुरू किए हुए चार साल और नौ दिन हो चुके हैं; आज—30 सितंबर, 2009—वह दिन है जब मैं भजन संहिता 150 पर मनन कर रहा हूँ। लगभग तीन या चार हफ़्ते पहले, शनिवार की सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान प्रार्थना करते हुए, मैंने सोचा कि—अगर प्रभु की इच्छा हुई तो—शायद एक दिन मैं इन मनन-चिंतनों को एक किताब के रूप में प्रकाशित करूँ; इसलिए, हाल के समय में मैं भजन संहिता 1 से शुरू करके सामग्री को फिर से देख रहा हूँ। व्यक्तिगत रूप से, मैं परमेश्वर का गहरा धन्यवाद करता हूँ। मैं आभारी हूँ कि भजनों पर इन चार वर्षों के मनन के माध्यम से, उन्होंने मुझे—बिना मेरे एहसास के ही—भजन रचने वालों जैसा बनने में मदद की है, भले ही बहुत थोड़े ही सही। मैं विशेष रूप से उस कृपा के लिए आभारी हूँ जो परमेश्वर ने मुझे भजन रचने वालों की प्रार्थनाओं का अनुकरण करने में मदद करके दिखाई है। उसी अनुकरण को ध्यान में रखते हुए, कल सुबह की सेवा में संदेश देने के बाद अपने व्यक्तिगत प्रार्थना के समय में, मैंने परमेश्वर की भलाई की स्तुति की। उन्होंने मुझे गॉस्पेल गीत “गुड, गुड फादर” (या “गॉड इज़ सो गुड”) और “आई विल नॉट ट्रेड द लॉर्ड फॉर एनीथिंग” गाने के लिए प्रेरित किया, जिससे मैं परमेश्वर की स्तुति कर सका कि वे वास्तव में कैसे हैं। ठीक वैसे ही जैसे भजन रचने वालों ने किया, और जैसे पौलुस और सिलास ने जेल में रहते हुए परमेश्वर की प्रार्थना और स्तुति की—जैसा कि प्रेरितों के काम 16 में दर्ज है—मैं भी परमेश्वर की प्रार्थना और स्तुति में बिताए समय में खुशी और आनंद पाता हूँ। और व्यक्तिगत रूप से, मैं आप सभी के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। पिछले चार

वर्षों में मुझ जैसे अयोग्य सेवक के माध्यम से भजन संहिता 1 से भजन संहिता 150 तक परमेश्वर के वचन को सुनना निश्चित रूप से आसान नहीं रहा होगा; मैं आप सभी का धन्यवाद करता हूँ कि आपने अंत तक भजनों के इस सफर में ईमानदारी से साथ दिया।

आज, मैं भजन संहिता 150, जो कि अंतिम भजन है, पर मनन करना चाहता हूँ। "हलेलुयाह" भजनों की श्रृंखला—जिसमें भजन 146 से 150 तक शामिल हैं—के आखिरी भजन के तौर पर, भजन 150 "हलेलुयाह के चरम बिंदु" (पार्क युन-सन) को दर्शाता है। आखिरी आयत, यानी आयत 6 में, भजनकार स्तुति के इस शिखर पर पहुँचता है और घोषणा करता है: "जिसमें भी प्राण हैं, वह सब प्रभु की स्तुति करे। हलेलुयाह।" इस आयत और "जिसमें भी प्राण हैं, वह सब प्रभु की स्तुति करे" विषय पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं स्तुति के चार पहलुओं पर विचार करना चाहूँगा (पास्टर मैकआर्थर की टीका के आधार पर)।

विचार करने योग्य पहली बात यह सवाल है: जिनमें प्राण हैं, उन्हें परमेश्वर की स्तुति कहाँ करनी चाहिए?

भजन 150:1 को देखें: "हलेलुयाह! परमेश्वर की स्तुति उसके पवित्र स्थान में करो; उसकी स्तुति उसके शक्तिशाली आकाश में करो।" भजनकार हमें परमेश्वर की स्तुति "उसके पवित्र स्थान में" और "उसके शक्तिशाली आकाश में" करने का निर्देश देता है। इसका क्या अर्थ है? यहाँ, "उसके पवित्र स्थान" का अर्थ यरूशलेम का मंदिर है, जबकि "उसके शक्तिशाली आकाश" का अर्थ स्वर्ग—यानी स्वर्गीय लोक—है। संक्षेप में, इस अंश का अर्थ है कि जिनमें भी प्राण हैं, उन्हें पृथ्वी और स्वर्ग दोनों जगह परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए (148:1, 7; मैकआर्थर)। संक्षेप में, हमें स्तुति के योग्य हर संभव स्थान पर परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए (पार्क युन-सन)। हमें हर जगह परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। हमें न केवल इस पृथ्वी पर रहते हुए, बल्कि स्वर्ग में भी हमेशा उसकी स्तुति करनी चाहिए।

विचार करने योग्य दूसरी बात यह सवाल है: जिनमें प्राण हैं, उन्हें परमेश्वर की स्तुति क्यों करनी चाहिए?

भजनकार क्यों हर उस व्यक्ति को, जिसमें प्राण हैं, प्रभु की स्तुति करने के लिए प्रेरित करता है? इसका कारण क्या है? इसके दो कारण हैं:

(1) जिनमें प्राण हैं, उन सभी के लिए प्रभु की स्तुति करने का कारण परमेश्वर के शक्तिशाली कार्य हैं।

भजन 150:2 के पहले भाग को देखें: "उसके शक्तिशाली कार्यों के लिए उसकी स्तुति करो..." परमेश्वर के शक्तिशाली कार्य क्या हैं? उदाहरण के लिए, परमेश्वर का हमें संभालना, मार्गदर्शन करना और हमारी रक्षा करना—ये सभी उसके शक्तिशाली कार्य हैं। विशेष रूप से, जब हम परमेश्वर के शक्तिशाली कार्यों पर चर्चा करते हैं, तो हम उसकी बचाने वाली शक्ति को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। हमें परमेश्वर के महान कामों के लिए उनकी स्तुति करनी चाहिए क्योंकि हमने उनकी दिखाई गई शक्ति का अनुभव किया है, अभी भी कर रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे—जैसे जब उन्होंने इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाया और उन्हें कनान की प्रतिज्ञा की हुई भूमि में पहुँचाया, और जंगल और कनान, दोनों जगहों पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया।

(2) हर उस व्यक्ति को, जिसमें साँस है, प्रभु की स्तुति इसलिए करनी चाहिए क्योंकि उनकी महानता सबसे बढ़कर है।

भजन संहिता 150:2 का दूसरा भाग देखिए: "...उनकी महानता के अनुसार उनकी स्तुति करो।" हमारे परमेश्वर महानता में सबसे बढ़कर हैं। हमें इस अत्यंत महान परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। खासकर, जब हम उद्धार की कृपा पर विचार करते हैं—जिसके द्वारा इस अत्यंत महान परमेश्वर ने आप और मुझ जैसे मामूली लोगों से बहुत प्रेम किया और अपनी महान शक्ति से हमें बचाया—तो हम उनकी स्तुति करने के लिए प्रेरित होते हैं। हमें परमेश्वर के महान कामों और उनकी महानता के लिए उनकी स्तुति करनी चाहिए।

तीसरी बात जिस पर विचार करना है, वह यह सवाल है: जिन लोगों में साँस है, उन्हें परमेश्वर की स्तुति कैसे करनी चाहिए?

भजन संहिता 150:3–5 देखिए: "नरसिंगे की ध्वनि के साथ उनकी स्तुति करो; वीणा और सारंगी के साथ उनकी स्तुति करो! डफ और नृत्य के साथ उनकी स्तुति करो; तार वाले वाद्ययंत्रों और बाँसुरी के साथ उनकी स्तुति करो! ऊँची आवाज़ वाले झाँझ के साथ उनकी स्तुति करो; टकराने वाले झाँझ के साथ उनकी स्तुति

करो!" भजनकार हमें नरसिंगे, वीणा, सारंगी, डफ, तार वाले वाद्ययंत्रों, बाँसुरी और झाँझ का उपयोग करके परमेश्वर की स्तुति करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसका क्या अर्थ है? संक्षेप में, इसका अर्थ है कि हमें परमेश्वर की स्तुति करने के लिए उपलब्ध हर संगीत वाद्ययंत्र का उपयोग करना चाहिए (पार्क युन-सन)।

चौथी और आखिरी बात जिस पर हम विचार करना चाहते हैं, वह यह है: परमेश्वर की स्तुति किसे करनी चाहिए?

भजन संहिता 150:6 को देखिए: "जिस-जिस में प्राण हैं, वे सब यहोवा की स्तुति करें। हालेलुयाह।" संक्षेप में, यह आयत उन सभी लोगों को एकजुट होकर परमेश्वर की स्तुति और आराधना करने के लिए बुलाती है जो ऐसा कर सकते हैं (पार्क युन-सन)। हमें हर पूजा-स्थल और हर वाद्य-यंत्र का उपयोग करके परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए, लेकिन सबसे बढ़कर, उन सभी लोगों को शामिल करके जो स्तुति-गीत गा सकते हैं। स्वर्ग और पृथ्वी पर मौजूद हर चीज़ को परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। न केवल स्वर्ग के स्वर्गदूतों को, बल्कि पृथ्वी पर सांस लेने वाले हर जीवित प्राणी को परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए।

आइए, इस समय हम सब मिलकर खड़े हों और "हे मेरे प्राण, स्तुति कर" (हे मेरे प्राण, धन्यवाद कर; हे मेरे प्राण, आनंद मना) गाते हुए परमेश्वर की स्तुति करें।

निष्कर्ष

धन्य व्यक्ति दिन-रात परमेश्वर के वचन पर मनन करता है। उसे सुबह प्रभु के दयालु वचन को सुनने में खुशी मिलती है; इसलिए, वह बेसब्री से प्रभु के वचन का इंतज़ार करता है और उसकी ओर तेज़ी से बढ़ता है। उस वचन का पालन करते हुए, वह धर्मी लोगों के रास्ते पर चलता है, पाप के विचार से ही कांपता है और पाप करने से बचता है। अपने दिल में वचन को संजोकर, वह पाप से दूर रहता है और अपना चाल-चलन पवित्र रखता है। परमेश्वर के वचन को अपना बनाकर वह आध्यात्मिक लड़ाइयों में जीत हासिल करता है। सचमुच, धन्य व्यक्ति वही है जो परमेश्वर के वचन को अमल में लाता है।

किसी भी सतावट या मुश्किल के बीच, धन्य व्यक्ति पूरी तरह से प्रभु पर निर्भर रहता है, लोगों पर नहीं, बल्कि सिर्फ़ उसी पर नज़र रखता है। डरावनी स्थितियों में जहाँ कोई और मदद नहीं कर सकता, वह चुपचाप अपनी नज़रें परमेश्वर पर टिकाए रखता है। वह अपना बोझ उसे सौंप देता है और उद्धार करने वाले परमेश्वर को पुकारता है जो उसे बचाता है। वह ज़ोरदार प्रार्थना करता है और विनती करता है, "हे परमेश्वर, मेरी जल्दी मदद कर।" यह मानते हुए कि "मैं प्रार्थना करने वाला व्यक्ति हूँ," वह नम्रता से अपनी इच्छाएँ प्रभु के सामने रखता है और प्रार्थना में खुद को समर्पित करता है, और कहता है, "मैं भोर को जगाऊँगा।" वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि उसने हमेशा प्रभु पर भरोसा रखा है और उसे विश्वास है कि वह उसकी प्रार्थनाएँ सुनता है और उनका जवाब देता है। नतीजतन, वह संकल्प करता है, "मैं अपने जीवन के सभी दिनों में प्रार्थना करूँगा।" प्रार्थना का जवाब मिलने के भरोसे से परमेश्वर के महान प्रेम को महसूस करते हुए—और उस परमेश्वर को पहचानते हुए जो बड़े पाप के बीच भी भरपूर अनुग्रह देता है—धन्य व्यक्ति अपना जीवन प्रार्थना में लगा देता है।

धन्य व्यक्ति पूरे दिल से प्रभु का धन्यवाद करता है। वह उस प्रभु का धन्यवाद करता है, जो उसके दिल की इच्छा वाली प्रार्थना को ठुकराता नहीं है बल्कि नम्रता से उसकी इच्छा पूरी करता है, उसे बचाता है, और उसे उद्धार का अनुग्रह देता है। वह उस प्रभु का भी धन्यवाद करता है, जो उसका सिर ऊँचा करता है और

उसकी धार्मिकता के अनुसार उसे इनाम देता है। वह उसे ताकत और शक्ति देने के लिए प्रभु का धन्यवाद करता है। प्रभु के प्रति इतना आभारी होने का कारण प्रभु का कभी न खत्म होने वाला प्रेम है। वह जानता है कि उसके बारे में प्रभु के विचार अनगिनत हैं। वह प्रभु का धन्यवाद करता है क्योंकि वह दुख को भी फायदे में बदल देता है, उसे कमजोरी के बीच अपनी ताकत का अनुभव कराता है, और उसकी आत्मा को संभालता है। जो धन्य व्यक्ति इस तरह प्रभु का धन्यवाद करता है, वह परमेश्वर द्वारा दी गई सभी भलाइयों को न तो भूलता है और न ही भूल सकता है। इसलिए, वह प्रभु से कहता है: "हे प्रभु, मेरी शक्ति, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ।"

धन्य व्यक्ति को परमेश्वर में ही सबसे अधिक आनंद मिलता है। उसके लिए, परमेश्वर ही "परम आनंद का स्रोत" हैं। वह परमेश्वर की उपस्थिति में रहता है और उस परम आनंद देने वाले परमेश्वर से संगति करता है। वह केवल प्रभु से संतुष्ट रहता है और प्रभु में आनंद मनाता है, जो उसे सबसे ऊँचा स्थान देते हैं। वह प्रभु के कभी न बदलने वाले, अनंत प्रेम के लिए धन्यवाद देता है—उस परमेश्वर के लिए जो उसके बारे में अनगिनत विचार रखते हैं, जो उसकी भलाई में आनंद लेते हैं, जो उसके मार्ग को स्थिर करते हैं, जो उसे सामर्थ्य देते हैं, और जो मृत्यु के दिन तक उसका मार्गदर्शन करते हैं। इस प्रकार, वह कृतज्ञता से भरे हृदय के साथ परमेश्वर की स्तुति करता है। वह पूरे मन से परमेश्वर का धन्यवाद करने और सदा प्रभु की स्तुति करने में खुद को समर्पित कर देता है। धन्य व्यक्ति जब तक जीवित रहता है, तब तक परमेश्वर की स्तुति करता रहता है।